لا إله إلا الله محمد رسول الله

जिल्द-1

हदीस नं. 1-2222

مشكاة المصابيح

मिश्कातुल मसाबिह

वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने

अब्दुल्लाह अल ख़तीब तबरेज़ी (वफ़ात 740 ही.)

तहकिम व तखरिज

हाफिज जुबैर अली ज़ई(वफ़ात 10 Nov. 2013)

उर्दू तर्जुमा

अबू अनस मुहम्मद सरवर गौहर

हिंदी तर्जुमा(Transliteration)

मुहम्मद शोएब इब्ने डॉ. अब्दुल करीम

नज़र ए शानी

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

किताबुल ईमान

किताबुल इल्म

किताबुल तहारत

किताबुस्सलात

किताबुल जनाइज़

किताबुज्ज़कात

किताबुस्सौम

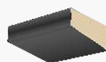
कुरआन की फ़ज़ीलत का बयान

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

मुकद्दमा हिंदी तर्जुमा

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, अल्लाह तआला फैसल भाई पर रहम करे जिन्होंने मुझे मिशाकतुल मसाबिह के हिंदी तर्जुमे के इस मुक़द्दस काम पे चलाया, इस के आगे के पढ़ने वाले आगे पढ़े मैं कुछ पढ़ने वालों के लिए कुछ बाते कहना चाहता हूँ,

1. अल्हम्दुलिल्लाह, मिश्कातुल मसाबिह का तर्जुमा आज 7 नवम्बर 2022 के रोज़ तक मुकम्मल हो चूका है|
2. आज 29 जनवरी 2023 को पिछले संस्करण का सुधरा हुआ संस्करण अपलोड किया जा रहा है
3. वैसे ये तर्जुमा तो देवनागरी लिपि मैं है लेकिन इन को जहाँ तक हो सके आसान उर्दू और हिंदी के मिले जुले अलफ़ाज़ से किया गया है, और तर्जुमा करते वक़्त पूरी कोशीश की गई है के वो अलफ़ाज़ का इस्तेमाल किया जाए जो आम बोलचाल में इस्तेमाल हो रहे हों|
4. फिर भी इंसान होने के नाते मुझ से जो गलती हुई है उस के लिए मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ और अल्लाह की मगफिरत चाहता हूँ, कोई इंसान गलती से पाक नहीं हो सकता गलती से पाक सिर्फ अल्लाह की ज़ात है| और आगे मेरी कोशिश होगी के में इस मजीद गलतियों में सुधार ला सकूं| और इस की जो भी गलती की निशानदेही की जाएगी उसे सुधार के pdf को http://archive.org पे अपलोड कर दिया जाएगा इन्शालाह उस की लिंक ये है 
5. इस किताब में जो अरबी मतन है उसकी तहकिम शैख़ अल्बानी ﷺ की है और जो हिंदी मतन मैं तहकिम है वो शैख़ जुबैर अली ज़ई ﷺ की है|
6. इस तर्जुमे मैं जो तखरिज और तहकिम का हिंदी तर्जुमा का काम अभी बाकी है, और इंशाअल्लाह जैसे है वो मुकम्मल होगा वैसे ही उसका pdf book भी online कर दी जाएगी|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मेरे वालिद मरहूम डॉ. अब्दुलकरीम और मुहतरम फैसल भाई के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

मुहम्मद शोएब इब्ने अब्दुल करीम इब्ने दोस्त मुहम्मद

7 नवम्बर 2022

गुजारिश

मैं ने मिश्कातुल मसाबीह के इस हिन्दी तर्जुमे को पढा है और बहुत सारी जगहों पर तसहीह भी की है । खास तौर पर उसके बाब और फसल के तर्जुमें को बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की है । इस में कोइ बड़ी गलती नहीं है । इस को छापना और फैलाना बहुत अज़ीम काम है ।

इस किताब की तयारी में असल मेहनत मोहतरम मोहम्मद शुऐब साहब ने की है । उन के अलावह इरफान अली और दुसरे भाइयौं ने उन का साथ दिया है । हम सब की मेहनत के बावजुद इस में गलतीयौं का इमकान है । कारेइने किराम से दरखास्त है कि इसको हिदायत और सवाब की नियत से पढें और दूसरों तक पहुंचाएं । कोइ भी गलती मिलने पर हमें इत्तेला करें ताकि दूसरी बार छापने से पहले इसलाह कर सकें । अल्लाह से दुआ है कि इस किताब की तैयारी, छापने, पढने, अमल करने और फैलाने वाले सारे लोगों को जज़ाए खैर दे, दुनिया और आखिरत दोनों की कामयाबी अता फरमाए । आमीन ।

आप का दीनी भाइ

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

नेपाली जुबान में कुरआन का मुतर्जिम

हरीनगर- 7, सुन्सरी नेपाल

पी एच डी स्कालर, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

एम ए, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

सुल्तान शरीफ अली इस्लामिक युनिवरसीटी ब्रुनाइ दारुस्सलाम

बी ए आनर्स, इस्लामिक स्टडीज (अकीदा व कमपेरेटिभ रिलिजियन) इन्टरनेश्नल इस्लामिक युनिवर्सीटी इस्लामाबाद, पाकिस्तान

आलिमियत फजीलत, जामेअतुल फलाह बिलेरया गंज आजमगढ, यू पी इन्डिया

मुकद्दमा तखरिज व तहकिम मिश्कातुल मसाबिह

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

आठवीं सदी हीजरी में अल्लामा वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह अल ख़तीब अल उमरी अल तबरेज़ी राहिमुल्लाह (वफात करीब 740 ही.) ने मशहूर सिका मुहद्दिस अब मुहम्मद हुसैन बिन मसूद बिन मुहम्मद अल फराअ अल बगवी राहिमुल्लाह (वफात 516 ही.) की किताब **मसाबिह अल सुन्नाह** को हदिसे इज़ाफो के साथ **मिश्कात उल मसाबिह** के नाम से मुरत्तब किया और इसे बर्रे सगीर पाक व हिन्द बलके आलमे इस्लाम में खूब पज़ेराई मिली, नेज़ बहुत से मदारिस में ये किताब दाखले निसाब भी है|

तबरेज़ी मज़कुर के बारे में उन के दोस्त अल्लामा शरफुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल तय्बी राहिमुल्लाह (वफात 743 ही.) ने फ़रमाया: “दिनी भाई यकीं में हिस्सेदार यानी काबिल इ एतमाद साथी. औलिया में बाकी रह जाने वाले...”(**अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन** जास 18)

तय्बी मजकुर ने **“अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन”** के नाम से मिश्कातुल मसाबिह की मशहूर और अज़ीम शरह लिखी जो बारह (12) जिल्दों में मअल फहारिस मतबूअ है|

इस लिखनेवाले ने अल्लाह तआला के फज़ल व करम से मिश्कातुल मसाबिह पर “इज़ाअअल मसाबिह” के नाम से जो बड़े और अहम काम किए है वो निचे लिखे है:

1. तर्जुमा
2. तखरिज व तहकीक
3. सेहत व जईफ के लिहाज़ से हर रिवायत पर हुक्म
4. फिकहल हदीस के उनवान से मसाइल व फवाइद के इस्तंबात

इस की पहली जिल्द (हदीस अता 280) जो किताबुल इमान और किताबुल इल्म पर मुश्तमिल है, मुक्कम्मल हुई, और मेरे मुहतरम दोस्त मौलाना मुहम्मद सरूर आसिम हाफ़िज़ उल्लाह के अज़ीम क़ुतुब खाने (मक्तबा ए इस्लामिया फैसलाबाद लाहोर) से आला मीअयार पर मतबूअ है|

बाकी हिस्सा अभी ज़ैरे तकमील है और इस पर मक्दुर भर काम जारी है| जब दूसरी जिल्द मुकम्मल होगी तो इसे भी शै कर दिया जाए गा इंशाअल्लाह|

मिश्कात की मकबूलियत और अवाम की ज़रूरत के पेशे नज़र फिलहाल मक्तबा इ इस्लामिया की शाए करदा मिश्कात को ही तहकीक व तखरिज के साथ तीन जिल्दो में शाए किया जा रहा है|

मेरे नज़दीक सहीहैन(सहीह बुखारी और मुस्लिम) की तमाम मर्फुअ मुसनद मुत्तसिल रिवायत बिलकुल सहीह है और इन में से बाज़ रिवायत हसन लिज़ाती भी है, यानी हुज्जत है, नेज़ सहीहैन में मज़कूरा शर्त के मुताबिक़एक भी जईफ रिवायत नहीं, लिहाज़ा सहीहैन की अहादीस की सिर्फ तखरिज पर इक्तेफा किया गया है और उन के अलावा तमाम रिवायात की तखरिज व तहकीक कर दी गई है और ज़ईफ़ रिवायात की वजह ज़ईफ़ भी बयान करदी है, ताके जो ज़िन्दा रहे दलील देख कर जिए और जो मरे तो दलील देख कर मरे|

इस किताब की तर्किम(अहादीस की नंबरिंग) दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरुत,लेबनान के दो जिल्दो में मतबूअ नुस्खे और मक्तबा इ इस्लामिया की शाएशुदा मिश्कातूल मसाबिह के ऐन मुताबिक़ है|

एक अहम् तरीन बात ये है के हदीस नंबर से लेकर नंबर 5972 तक ये तमाम नंबर मशहूर मुहद्दिस शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अल्बानी राहिमुल्लाह की तहकीक व तालिक वाल्ली मिश्कातुल मसाबिह के भी मुकम्मल मुवाफिक है और 5973 से आखिर तक मामूली फर्क है|

तंबीह: साहबे मिश्कात कई मकामत पर हदीस को जिस किताब के हवाले से ज़िक्र करते है, मसलन कॉल: रवाह मुस्लिम या रवाह अल बुखारी तो बाज़ मकामात पर असल किताब को देखने के बाद मालुम होता है के ये अलफ़ाज़ मिन्नोअन (बिलकुल समान) वो किताब में नहीं है, बलके इन्हें बतौर मफ्हुमया बतौर ए मुख्तलिफ रिवायत बयान किया गया है| लिहाज़ाहदीस का हवाला असल ज़िक्र की गई किताब से मिला लेना चाहिए, या फिर मिश्कात के ज़रिए से हवाला लिखते वक्त मिश्कात का ही ज़िक्र किया जाए, यानी वल लफ्ज़ की सराहत कर दी जाए, ताकि किसी किस्म का भ्रम बाकी न रहे|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मुहतरम मुहम्मद सरवर आसिम हाफिज़ाउल्लाह के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

हाफ़िज़ जुबैर अली ज़इ

26 जून 2011 इसवी

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

इमाम तबरेज़ी ﷺ का मुकद्दमा

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, जिस ने उन्हें इस हालात में मबउस फ़रमाया के ईमान की राहों के निशान मिट चुके थे, इस के अनवार बुझ चुके थे, इस के अरकान कमज़ोर हो चुके थे और इस की जगहें मझहुल हो चुकी थी, तो आप ﷺ ने इस के निशानात, जो के मिट चुके थे, को बुलंद और उजागर किया, और आप ने कलमा ए तौहीद की ताईद में ऐसे इलिय्यिल शख्स को जो के (जहन्नम के) किनारे पर पहुँच चूका था, बचाया और आप ने राहे हिदायत के तलबगार पर इस रोशन राह को वाज़ेह किया, और आप ने सआदत के खज़ानो को इन पर वाज़ेह किया जो इन के मिल्कीयत का इरादा रखते है|

अम्मा बाद! नबी ए अकरम ﷺ की सीरत के साथ तमसिक तब ही टिकाऊ और लंबे वक्त तक चल सकता है जब आप से जारी होने वाले अहकामात (हुक्म) की इत्तेबा की जाए, और अल्लाह तआला की रस्सी (कुरान ए करीम) के साथ तमसिक आप ﷺ की सुन्नत के बयान के साथ ही मुकम्मल हो सकता हैं, और "किताब अल मसाबिह" जिसे मुह्यी अल सुनना और कातेअ बिदात इमाम अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसउद अल फराअ अल बगवी, अल्लाह तआला इन के दरजात बुलंद फरमाए, ने लिखी, इस मौज़ू पर एक निहायत जामेअ किताब थी, और मुतफ़र्रिक अहादीस को एक जगह इकट्ठा करने के हवाले से इन्तहाई मुरत्तब किताब थी और जब मुसन्निफ़ ﷺ ने इख्तेसार का उस्लूब इख्तियार करते हुए सनदों को ख़त्म कर दिया तो बाज़ नाकेदीन (आलोचक) ने इस पर कलाम किया अगर छे इस का विश्वास के साथ नक़ल करना (और सनदों को ख़त्म करना) इन के ज़िक्र करने की तरह ही है, लेकिन जो इसनादें बयान बलाग हैं वो इस्नाद ख़त्म करने में नहीं, पस मैंने इस्तिखारा के ज़रिए तौफीके इलाही तलब करते हुए जिस चीज़ की तरफ इन्होंने तवज्जो नहीं की इस की निशानदेही कर दी और हर हदीस को बिला तक्दिम व ताखीर मुनासिब जगह पर लिख दिया, जैसा की मुत्तकिन व सिका और रसिखे इल्म आइम्मा ने इसे रिवायत किया, जैसे अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माइल बुखारी, अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी, अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस अस्बई,अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरिस शाफीअ, अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल शैबानी, अबू इसा मुहम्मद बिन इसा तिरमिज़ी, अबू दावुद सुलेमान बिन अशअष सिजिस्तानी, अबू अब्दुल रहमान अहमद बिन शुएब नसई, अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा क़ज्विनी,अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रहमान दारमी, अबूल हसनअली बिन उमर दारकुतनी, अबू बक्र अहमद बिन ,हुसैन बय्हकी, अबुल हुसैन राजीन बिन मुआविया अब्दरी ﷺ और इन के अलावा भी कुछ इन्ही के मिस्ल है जिन्होंने रिवायत किया है जबके वो क़लील है| और जब मैंने हदीस को इन आइम्मा की तरफ मंसूब कर दिया तो गोया मैंने इस हदीस को नबी ﷺ तक पहुंचा दिया, क्यूंकि वो (आइम्मा) इस (इस्नाद) से गरीग हो चुके और उन्होंने हमें भी नियाज़ कर दिया, और मैंने कुतब (जैसे किताबुल इल्म वगैरा) और अबवाब को वैसे ही रखा जैसे उन्होंने (इमाम बगवी ﷺ) ने तरतीब दिया था, और इस बारे में मैंने इन की इत्तेबा की, मैंने हर बाब को गालब तौर पर तीन फसलों में तकसीम किया| पहली फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन्हें इमाम बुखारी और मुस्लिम दौनों ने रिवायत किया है या उन में से एक ने, और आर इस हदीस के इन के सिवा किसी और ने भी रिवायत किया है तो मैंने रिवायत में इन दोनों के आला दर्जे पर फैज़ होने की वजह से इन दोनों की रिवायत पर इक्तेफा किया हैं|

दूसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम के अलावा पहले ज़िक्र किए गए आइम्मा में से किसी ने रिवायत किया है, और तीसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल है जो मानी बाब पर मुश्तमिल हो और मनासब मुल्हकात में से हो, लेकिन यहाँ भी (रावी और रिवायत नक़ल करने वाले इमाम के ज़िक्र की) शर्त का ख़याल रखा गया है, अगर वो सलफ (सहबा किराम) और खल्फ (ताबेइन) से मन्कुल व मरवी हो|

फिर अगर आप किसी बाब में कोई हदीस न पाए तो वो इस लिए है, की मैंने तकरार की वजह से इसे नक़ल नहीं किया, और अगर आप हदीस का कुछ हिस्सा मतरुक पाए तो वो इस का इक्तेसार या इस के साथ मिला हुआ इस का इत्माम इस की अहमियत की वजह से होगा, और अगर आप को दोनों फसलो में कोई इख्तिलाफ नज़र आए के पहली फस्ल में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम के अलावा कोई हदीस है और फस्ल दुम में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की कोई हदीस है, तो आप जान ले के मैंने अल जामेअ बैन अल सहीहैन ली हुमैदी और जामेअ अल उसूल दानों किताबो की पूरी छानबीन के बाद मैंने शेखैन और इन दोनों के मतन पर ऐतमाद किया है|

और अगर आप हदीस के मतन में इख्तिलाफ देखें तो वो हदीस के मुख्तलिफ तरिक की वजह से हैं, मुमकिन है के मुझे इस रिवायत का पता न चला हो जिसे अल शैख़ इमाम बगवी ﷺ ने (मसाबिह में) नक़ल किया हो, और आप ये बहुत कम पाएंगे के में कहूँ: मैंने ये रिवायत कुतुबे असल में नहीं पाई, या मैंने इस से मुखतलिफ़ इस में पाई है, पस जब आप को ऐसी बात का पता चले तो आप मेरी समझ की कमी की वजह इस तासीर को मेरी तरफ मंसूब करे जनाब शैख़, अल्लाह तआला दारेनमें इन की कदर व मंज़िलात बढ़ाए, की तरफ नहीं, इस (तकसीर को जनाब अल शैख़ की तरफ मंसूब करने) से अल्लाह तआला की पनाह, जिस शख्स को, अल्लाह तआला इस पर रहम फरमाए, इस बारे में पता चले तो वो इस के मुतल्लिक हमें आगाह करे और दुरुस्त तारिक की तरफ हमारी रहनुमाई फरमाए, मैंने वुसअत व ताकत के मुताबिक़ (तर्क हदीस और इख्तिलाफ अलफ़ाज़ की) तहकीक व तफतीस में कोई कमी नहीं छोड़ी, और मैंने जिसे पाया वो इख्तिलाफ नक़ल कर दिया, और अल शैख़ ﷺ ने जहाँ हदीस के गरीब या जईफ होने की तरफ इशारा किया है, मैंने ग़ालिब तौर पर वहां इस की वजह बयान कर दी हैं, और

जहाँ उन्होंने जो के अलसौल (मसलन मुन्कते, मौकूफ, मुरसल) यही हैं, इशारा नहीं किया तो, किसी मसलिहत के पेशे नज़र चंद मकामत के सिवा, मैंने भी इन की इत्तेबा में उसे वैसे ही छोड़ दिया, और बसा अवकात आप कुछ ऐसे मकामात पाएंगे जो के मह्मुल और वो इस लिए है के मुझे इस के रावी का पता नहीं चला, तो मैंने वहाँ कुछ नहीं लिखा इसे वैसे छोड़ दिया, पास अगर आप को पता चले तो आप इसे वहां लिख दे, अल्लाह तआला आप को बेहतर बदला अता फरमाए| मैंने किताब का नाम **"मिश्कतुल मस्सबिह"** रखा है, मैंने अल्लाह तआला से तौफिक और मदद करें, हिदायत दें और हमारी हिफाज़त फरमाए(गलती और लग्ज़िशसे बचाओ) अपने मकसद की तेसर तलब करता हो, और दरख्वास्त करता हूँ, वो हयात और बाद अलममात मुझे और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फाइदा पहुंचाए| मेरे लिए अल्लाह ही काफी है और वो बतारिन कारज़ाश है|

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْأَعْمَال بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لكل امْرِئٍ مَا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهجرَته إِلَى مَا هَاجر إِلَيْهِ»

1. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम आमाल का दारोमदार नियतो पर है, हर शख़्स को वही कुछ मिलेगा जो उस ने नियत की, पस जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की खातिर हुई तो उसकी हिजरत अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की खातिर है, और जिस की हिजरत हुसूले दुनिया या किसी औरत से शादी करने की खातिर हुई तो उसकी हिजरत इस की खातिर है, जिस की खातिर उस ने हिजरत की"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1 ، 54 ، 2529 ، 3898 ، 5070 ، 6689 ، 6953) و مسلم (1907 ، الامارة : 155)، (4927) [و النسائى ، الايمان و النذور : النية فى الميمن ح 3825 ، السلفية 2 / 135 ، و اللفظ له الا عنده ’’ لدنيا ‘‘ بدل ’’ الى دنيا ‘‘ وجاء فى بعض نسخ النسائى ’’ الى دنيا ‘‘]

ईमान का बयान • كتاب الْإِيمَان

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢ - (صَحِيح) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ إِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ شَدِيدُ سَوَادِ الشَّعْرِ لَا يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ حَتَّى جَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فأسند رُكْبَتَيْهِ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلَى فَخِذَيْهِ وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَخْبِرْنِي عَنِ الْإِسْلَامِ قَالَ: " الْإِسْلَامُ: أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَتُقِيمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَتَصُومَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ". قَالَ: صَدَقْتَ. فَعَجِبْنَا لَهُ يَسْأَلُهُ وَيُصَدِّقُهُ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِيمَانِ. قَالَ: «أَنْ تُؤْمِنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ» . قَالَ صَدَقْتَ. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِحْسَانِ. قَالَ: «أَنْ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ» . قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنِ السَّاعَةِ. قَالَ: «مَا المسؤول عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ» . قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ أَمَارَاتِهَا. قَالَ: «أَنْ تَلِدَ الْأَمَةُ رَبَّتَهَا وَأَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ رِعَاءَ الشَّاءِ يَتَطَاوَلُونَ فِي الْبُنْيَانِ» . قَالَ: ثُمَّ انْطَلَقَ فَلَبِثْتُ مَلِيًّا ثُمَّ قَالَ لِي: «يَا عُمَرُ أَتَدْرِي مَنِ السَّائِلُ» ؟ قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «فَإِنَّهُ جِبْرِيل أَتَاكُم يعلمكم دينكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

2. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की इस असना में एक आदमी हमारे पास आया, जिसके कपड़े बहोत ही सफ़ेद और बाल इन्तिहाई सियाह थे, उस पर न सफ़र के आसार नज़र आते थे और न हम में से कोई उसे जानता था, हत्ता कि वह दो ज़ानो हो कर नबी ﷺ के सामने बैठ गया और उस ने अपने दोनों हाथ अपनी रानो पर रख लिए, और कहा: मुहम्मद ﷺ इस्लाम के मुतल्लिक मुझे बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस्लाम यह है कि तुम गवाही दो की अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल! है, नमाज़ कायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और अगर इस्तिताअत हो तो बैतुल्लाह का हज करो”, उस ने कहा: आप ने सच फ़रमाया, हमें उस से ताज्जुब हुआ की वह आप से पूछता है और आप की तस्दीक भी करता है, उस ने कहा: ईमान के बारे में मुझे बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि तुम अल्लाह पर, उस के फरिश्तो, उसकी किताबो, उस के रसूलो और आखिरत के दिन पर ईमान लाओ और तुम तकदीर के अच्छा और बुरा होने पर ईमान लाओ‘‘, उस ने कहा: आप ने सच फ़रमाया, फिर उस ने कहा: इहसान के बारे में मुझे बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख सके तो वह यक़ीनन तुम्हें देख रहा है”, उस ने कहा: कियामत के बारे में मुझे बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ सवाल करने वाला उस के मुतल्लिक साइल से ज़्यादा नहीं जानता”, उस ने कहा: उसकी निशानियो के बारे में मुझे बता दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि लौंडी अपने मालिक को जन्म देगी, और यह कि तुम नंगे पाँव, नंगे बदन, तंग दस्त बकरियों के चरवाहों को बुलंद व बाला इमारतों की तामीर और इन पर फख्र करते हुए देखोगे”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: फिर वह शख़्स चला गया, मैं कुछ देर ठहरा, फिर आप ﷺ ने मुझ से पूछा: “उमर! क्या तुम जानते हो, साइल

कौन था? मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जिब्राइल अलैहिस्सलाम थे, वह तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने के लिए तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए थे”| (सहीह)

رواه مسلم (الايمان ج 1 ص 28 29 ح 8، (93) و اللفظ له الا عنده ’’ بينما ‘‘ بدل ’’ بينا ‘‘ وجاء فی اکمال اکمال المعلم لمحمد بن خليفة الابی 1 ص 102 ’’ بينا ‘‘)

٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَرَوَاهُ أَبُو هُرَيْرَة مَعَ اخْتِلَافٍ وَفِيهِ: " وَإِذَا رَأَيْتَ الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الصُّمَّ الْبُكْمَ مُلُوكَ الْأَرْضِ فِي خَمْسٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ. ثُمَّ قَرَأَ: (إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ) الْآيَة

3. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने इस हदीस को कुछ अल्फाज़ के इख्तिलाफ के साथ रिवायत किया है, इस हदीस में है: “जब तुम नंगे पाँव, नंगे बदन, बहरे, गूंगे लोगों को मुल्क के बादशाह देखोगे और यह (वाकिया कियामत) पांच चीजों में से है जिन्हें सिर्फ अल्लाह ही जानता है, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “बेशक कियामत का इल्म अल्लाह ही के पास है और वही बारिश नाज़िल करता है ‘‘‘‘‘‘‘”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (50 ، 4777) و مسلم (الايمان : 9)، (97)

٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ "

4. इब्ने उमर बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर रखी गई है, गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (8) و مسلم (16 / 21)، (113)

٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ " الْإِيمَانُ بضع وَسَبْعُونَ شُعْبَة فأفضلها: قَول لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَدْنَاهَا: إِمَاطَةُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ والحياء شُعْبَة من الايمان "

5. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ईमान की सत्तर से कुछ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) शाखें है, उनमें से सबसे अफज़ल यह कहना है की अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और सबसे अदना यह है कि रास्ते से तकलीफदेह चीज़ को हटा देना और हया भी ईमान की एक शाख है”|(मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (9) و مسلم (35 / 58 و اللفظ له)، (153)

٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللَّهُ عَنْهُ» هَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ وَلِمُسْلِمٍ قَالَ: " إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْمُسْلِمِينَ خَيْرٌ؟ قَالَ: مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ من لِسَانه وَيَده "

6. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुसलमान वह है जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसलमान महफूज़ रहे, और मुहाजिर वह है जो अल्लाह की मना करदा चीजों को छोड़ दे"| यह सहीह बुखारी की रिवायत के अल्फाज़ है, जबकि सहीह मुस्लिम की रिवायत के अल्फाज़ है: फ़रमाया के किसी आदमी ने नबी ﷺ से दरियाफ्त किया, कौन सा मुसलमान बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसलमान महफूज़ हो" | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (10) و مسلم (40 / 64)، (161)

٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ»

7. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता हत्ता कि मैं उसे उस के वालिद, उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब हो जाऊं"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (15) و مسلم (44 / 70)، (169)

٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ " ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلَاوَةَ الْإِيمَانِ: مَنْ كَانَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا وَمَنْ أَحَبَّ عَبْدًا لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلَّهِ ص:١ وَمَنْ يَكْرَهُ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ بَعْدَ أَنْ أَنْقَذَهُ اللَّهُ مِنْهُ كَمَا يكره أَن يلقى فِي النَّار "

8. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स में तीन खसलते हो उस ने उन के ज़रिए ईमान की लज्ज़त व हलावत को पा लिया, जिस को अल्लाह और उस के रसूल सबसे ज़्यादा महबूब हो, जो शख़्स किसी से महज़ अल्लाह की रज़ा की खातिर मुहब्बत करता हो, और जो शख़्स दोबारा काफ़िर बनना उस के बाद के अल्लाह ने इसे उस से बचा लिया, इसे नापसंद करता हो जैसे वह आग में डाला जाना नापसंद करता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (21) و مسلم (43 / 67)، (165)

٩ - (صَحِيح) وَعَن الْعَبَّاس بن عبد الْمطلب قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَاقَ طَعْمَ الْإِيمَانِ مَنْ رَضِيَ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

9. अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के रसूल होने पर राज़ी हो गया उस ने ईमान की लज्ज़त को पा लिया"| (सहीह)

رواه مسلم (34 / 56)، (151)

١٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَا يسمع بِي أحدق مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ يَهُودِيٌّ وَلَا نَصْرَانِيٌّ ثُمَّ يَمُوتُ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَّا كَانَ من أَصْحَاب النَّار» . رَوَاهُ مُسلم

10. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है! इस उम्मत के जिस यहूदी और ईसाई ने मेरे मुतल्लिक सुन लिया और फिर वह मुझ पर उतारे गए दीन व शरियत पर ईमान लाए बगैर फौत हो जाए तो वह जहन्नमी है"| (सहीह)

رواه مسلم (153 / 240)، (386)

١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَهُمْ أَجْرَانِ: رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمَنَ بِنَبِيِّهِ وَآمَنَ بِمُحَمَّدٍ وَالْعَبْدُ الْمَمْلُوكُ إِذَا أَدَّى حَقَّ اللَّهِ وَحَقَّ مَوَالِيهِ وَرَجُلٌ كَانَتْ عِنْدَهُ أَمَةٌ يَطَؤُهَا فَأَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا وَعَلَّمَهَا فَأَحْسَنَ تَعْلِيمَهَا ثُمَّ أَعْتَقَهَا فَتَزَوَّجَهَا فَلَهُ أَجْرَانِ "

11. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन किस्म के लोगों के लिए दो अज़र है, अहले किताब में से वह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और फिर मुहम्मद ﷺ पर ईमान लाया, ममलुक गुलाम जब वह अल्लाह का हक अदा करे और अपने मालिको का भी हक अदा करे और एक वह शख़्स जिसके पास कोई लौंडी हो, वह उस से हमबिस्तरी करता हो, पस वह इसे आदाब सिखाए और अच्छी तरफ से मुअदब बनाए, उस को बेहतरीन ज़ेवर, तालीम से आरास्ता करे, फिर उस को आज़ाद कर दे और उस के बाद उस से शादी कर ले तो उस के लिए दो अज़र है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (97 و الادب المفرد : 203) و مسلم (154 / 241)، (387)

١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَق الْإِسْلَام وحسابهم على الله. إِلَّا أَنَّ مُسْلِمًا لَمْ يَذْكُرْ» إِلَّا بِحَقِّ الْإِسْلَام "

12. इब्ने उमर बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुझे लोगों से किताल करने का हुक्म दिया गया है, हत्ता कि वह गवाही दे के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, और वह नमाज़ कायम करे और ज़कात दें, जब इन का यह तर्ज़े अमल होगा तो उन्होंने हुदूदे

इस्लाम के अलावा अपनी जानो और अपने मालो को मुझ से बचा लिया, सिवाय कि हुदूद ए इस्लाम के और उनका हिसाब अल्लाह के जिम्मे है"| बुखारी, मुस्लिम, अलबत्ता इमाम मुस्लिम ने "हुदूद ए इस्लाम" का ज़िक्र नहीं किया | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (25 و اللفظ له) و مسلم (22 / 36)، (129)

١٣ - (صَحِيح) وَعَن أنس أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا وَأَكَلَ ذَبِيحَتَنَا فَذَلِكَ الْمُسْلِمُ الَّذِي لَهُ ذِمَّةُ اللَّهِ وَذِمَّةُ رَسُولِهِ فَلَا تُخْفِرُوا اللَّهَ فِي ذمَّته» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

13. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स हमारी नमाज़ की तरह नमाज़ पढ़े, हमारे किब्ले की तरफ रुख करे और हमारा ज़बिहा खाए तो वह ऐसा मुसलमान है जिसे अल्लाह और उस के रसूल की अमान हासिल है, सो तुम अल्लाह की अमान और जिम्मे को न तोड़ो"| (सहीह)

رواه البخارى (391)

١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى أَعْرَابِيٌّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ إِذَا عَمِلْتُهُ دَخَلْتُ الْجَنَّةَ. قَالَ: «تَعْبُدُ اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا وَتُقِيمُ الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ ص:١ وَتُؤَدِّي الزَّكَاةَ الْمَفْرُوضَةَ وَتَصُومُ رَمَضَانَ» . قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا أَزِيدُ عَلَى هَذَا شَيْئًا وَلَا أَنْقُصُ مِنْهُ. فَلَمَّا وَلَّى قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْجنَّة فَلْينْظر إِلَى هَذَا»

14. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक देहाती नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मुझे कोई ऐसा अमल बताइए जिसके करने से मैं जन्नत में दाखिल हो जाऊं, आप ने फ़रमाया: "तुम अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी किस्म का शिर्क न करो, फ़र्ज़ नमाज़ कायम करो, फ़र्ज़ ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो", उस ने कहा: उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं इस में कोई कमी बेशी नहीं करूँगा, जब वह चला गया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स को पसंद हो के वह जन्नती शख़्स को देखे तो वह इसे देख ले| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1397) و مسلم (14 / 15)، (107)

١٥ - (صَحِيح) وَعَن سُفْيَان بن عبد الله الثَّقَفِيّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قُلْ لِي فِي الْإِسْلَامِ قَوْلًا لَا أَسْأَلُ عَنْهُ أَحَدًا بَعْدَكَ وَفِي رِوَايَةٍ: غَيْرَكَ قَالَ: " قُلْ: آمَنْتُ بِاللَّه ثمَّ اسْتَقِم. رَوَاهُ مُسلم

15. सुफियान बिन अब्दुलाह सक्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! मुझे इस्लाम के मुतल्लिक कोई ऐसी बात बताइए कि मैं उस के मुतल्लिक आप के बाद किसी से न

पूछु, और एक रिवायत में है आप के सिवा किसी से न पूछु, आप ﷺ ने फ़रमाया: "कहो मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर साबित कदम हो जाओ"। (सहीह)

رواه مسلم (38 / 62)، (159)

١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَهْلِ نَجْدٍ ثَائِرُ الرَّأْسِ نَسْمَعُ دَوِيَّ صَوْتِهِ وَلَا نَفْقَهُ مَا يَقُولُ حَتَّى دَنَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا هُوَ يَسْأَلُ عَنِ الْإِسْلَامِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَمْسُ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ» . فَقَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُنَّ؟ فَقَالَ: " لَا إِلَّا أَنْ تَطَّوَّعَ. قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَصِيَامُ شَهْرِ رَمَضَانَ ". قَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهُ؟ قَالَ: «لَا إِلَّا أَنْ تَطَّوَّعَ» . قَالَ: وَذَكَرَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الزَّكَاةَ فَقَالَ: هَلْ عَلَيَّ غَيْرُهَا؟ فَقَالَ: " لَا إِلَّا أَنْ تَطَّوَّعَ. قَالَ: فَأَدْبَرَ الرَّجُلُ وَهُوَ يَقُولُ: وَاللَّهِ لَا أَزِيدُ عَلَى هَذَا وَلَا أَنْقُصُ مِنْهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْلح الرجل إِن صدق»

16. तल्हा बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अहले नज़द से परेशानहाल बिखरे बालो वाला एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, हम उसकी आवाज़ की गुनगुनाहट सुन रहे थे, लेकिन हम उसकी बात नहीं समझ रहे थे, हत्ता कि वह रसूलुल्लाह ﷺ के करीब हुआ, और वह इस्लाम के मुतल्लिक पूछने लगा, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दिन और रात में पांच नमाज़े'', उस ने अर्ज़ किया: क्या इन के अलावा भी कोई चीज़ मुझ पर फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, मगर यह कि तुम नफ्ल पढ़ो'', रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया." और माहे रमज़ान के रोज़े'', उस ने पूछा: क्या उस के अलावा भी मुझ पर कोई चीज़ लाज़िम है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, इल्ला यह कि तुम नफ्ली रोज़ा रखो'', रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे ज़कात के मुतल्लिक बताया तो उस ने कहा: क्या उस के अलावा मुझ पर कोई चीज़ फ़र्ज़ है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, इल्ला यह कि तुम नफ्ली सदका करो'', रावी बयान करते हैं, वह आदमी यह कहते हुए वापस चला गया: अल्लाह की क़सम! मैं इस में किसी किस्म की कमी बेशी नहीं करूँगा, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया." अगर उस ने सच कहा है तो वह कामियाब हो गया"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (46) و مسلم (11 / 8)، (100)

١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ وَفْدَ عَبْدِ الْقَيْسِ لَمَّا أَتَوُا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنِ الْقَوْمُ؟ أَوْ: مَنِ الْوَفْدُ؟ " قَالُوا: رَبِيعَةُ. قَالَ: " مَرْحَبًا بِالْقَوْمِ أَوْ: بِالْوَفْدِ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا نَدَامَى ". قَالُوا: يَا رَسُول الله إِنَّا لَا نستطيع أَن نَأْتِيَكَ إِلَّا فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ وَبَيْنَنَا وَبَيْنَكَ هَذَا الْحَيُّ مِنْ كُفَّارِ مُضَرَ فَمُرْنَا بِأَمْرٍ فصل نخبر بِهِ مَنْ وَرَاءَنَا وَنَدْخُلُ بِهِ الْجَنَّةَ وَسَأَلُوهُ عَنِ الْأَشْرِبَةِ. فَأَمَرَهُمْ بِأَرْبَعٍ وَنَهَاهُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: ص:١ أَمَرَهُمْ بِالْإِيمَانِ بِاللَّهِ وَحْدَهُ الَ: «أَتَدْرُونَ مَا الْإِيمَانُ بِاللَّهِ وَحْدَهُ؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَصِيَامِ رَمَضَانَ وَأَنْ تُعْطُوا مِنَ الْمَغْنَمِ الْخُمُسَ» وَنَهَاهُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: عَنِ الْحَنْتَمِ وَالدُّبَّاءِ وَالنَّقِيرِ وَالْمُزَفَّتِ وَقَالَ: «احْفَظُوهُنَّ وَأَخْبِرُوا بِهِنَّ مَنْ وَرَاءَكُمْ»

وَلَفظه لِلْبُخَارِيّ

17. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि जब अब्दुल कैस का वफद नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ”ये कौन लोग है या कौन सा वफद है?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम रबिआ कबिले के लोग है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कौम या वफद! खुशामदीद, तुम कुशादा जगह आए और तुम न रुसवा हुए न नादिम’‘, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम सिर्फ हुरमत वाले महिनो में आप की खिदमत में हाज़िर हो सकते है, हमारे और आप के दरमियान में मुदार के कुफ्फार का यह कबिले आबाद है, आप किसी फैसलाकुन अमीर के मुतल्लिक हुक्म फरमा दीजिए, ताकि हम अपने पिछले साथियो को उस के मुतल्लिक बताए और हम सब उसकी वजह से जन्नत में दाखिल हो जाए, और उन्होंने आप से मशरुबात के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो आप ने चार चीजों के मुतल्लिक उन्हें हुक्म फ़रमाया और चार चीजों से उन्हें मना फ़रमाया, आप ने एक अल्लाह पर ईमान लाने के मुतल्लिक उन्हें हुक्म दिया: “फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के एक अल्लाह पर ईमान लाने से किया मुराद है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, नमाज़ कायम करना, ज़कात अदा करना और रमज़ान के रोज़े रखना और यह कि तुम माले गनीमत में से पांचवा हिस्सा अदा करो’‘, और आप ने उन्हें चार मना फ़रमाया, आप ने अल-हंतम, अल-दूबाअ अल-नकीर, और अल-मुउजफ्फत (ये उन बर्तनों के नाम है जिन में शराब रखी जाती थी) से मना फ़रमाया और फ़रमाया: “उन्हें याद रखो और अपने पिछले साथियो को उन के मुतल्लिक बता दो”| बुखारी व मुस्लिम, हदीस के अल्फाज़ बुखारी के हैं | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (53) و مسلم (17 / 24)، (116)

١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: " بَايِعُونِي عَلَى أَنْ لَا تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا تَسْرِقُوا وَلَا تَزْنُوا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ وَلَا تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ وَلَا تَعْصُوا فِي مَعْرُوفٍ فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ بِهِ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا ثُمَّ سَتَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ إِلَى اللَّهِ: إِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ وَإِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ " فَبَايَعْنَاهُ عَلَى ذَلِك

18. उबादा बिन अस-सामित(र) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जबकि आप के सहाबा किराम की एक जमाअत आप के इर्दगिर्द थी फ़रमाया: “तुम इस बात पर मेरी बैत करो की तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं बनाओगे, तुम न चोरी करोगे न ज़िना करोगे, तुम ना अपनी औलाद को क़त्ल करोगे न अपनी तरफ से किसी पर बोहतान लगाओगे और ना ही अच्छे काम में नाफ़रमानी करोगे, पस तुम में से जो शख़्स (ये अहद) वफ़ा करेगा तो उस का अज़्र अल्लाह के जिम्मे है और जिस ने उनमें से किसी चिज़ का इर्तिकाब किया और इसे दुनिया में उसकी सज़ा मिल गई तो उस के लिए कफ्फारा है और जिस ने उनमें से किसी चिज़ का इर्तिकाब किया फिर अल्लाह ने उसकी परदापोशी फरमाई उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द

है, अगर वह चाहे तो उस से दरगुज़र फरमाए और अगर चाहे तो उसे सज़ा दे”, पस हमने उस पर आप की बैत कर ली | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (18) و مسلم (1709 / 41)، (4461)

١٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَضْحًى أَوْ فِطْرٍ إِلَى الْمُصَلَّى فَمَرَّ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ فَإِنِّي أُرِيتُكُنَّ أَكْثَرَ ص:١ أَهْلِ النَّارِ فَقُلْنَ وَبِمَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ تُكْثِرْنَ اللَّعْنَ وَتَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ مَا رَأَيْتُ مِنْ نَاقِصَاتِ عَقْلٍ وَدِينٍ أَذْهَبَ لِلُبِّ الرجل الحازم من إحداكن قُلْنَ وَمَا نُقْصَانُ دِينِنَا وَعَقْلِنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ أَلَيْسَ شَهَادَةُ الْمَرْأَةِ مِثْلَ نِصْفِ شَهَادَةِ الرَّجُلِ قُلْنَ بَلَى قَالَ فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَان عقلهَا أَلَيْسَ إِذَا حَاضَتْ لَمْ تَصِلِّ وَلَمْ تَصُمْ قُلْنَ بَلَى قَالَ فَذَلِكَ مِنْ نُقْصَانِ دِينِهَا

19. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ईद उल अदहा या ईद उल फ़ित्र के मौके पर ईदगाह की तरफ तशरीफ़ लाए तो आप औरतों के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: “औरतों की जमाअत! सदका करो क्योंकि मैंने जहन्नम में तुम्हारी अक्सरियत देखी है”, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! किस वजह से, आप ﷺ ने फ़रमाया: तुम लान-तान ज़्यादा करती हो और खाविंद की नाशुक्री करती हो, मैंने तुम से ज़्यादा किसी को दीन और अक़्ल में नुक्स रखने के बावजूद पुख्ता राय मर्द की अक़्ल को ले जाने वाला नहीं पाया”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे दीन और हमारी अक़्ल का क्या नुकसान है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या औरत की गवाही मर्द की गवाही से आधी नहीं?” उन्होंने कहा: जी हाँ, क्यों नहीं! आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उसकी अक़्ल का नुक्स है”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या जब इसे हैज़ आता है तो इस वक़्त वह नमाज़ और रोज़ा तर्क नहीं करती?” उन्होंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! ऐसे ही है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उस के दीन के नुक्स में से है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (304) و مسلم (132 / 80)، (243)

٢٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: " قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اللَّهُ كَذبَنِي ابْن آدم وَلم يكن لَهُ ذَلِك وَشَتَمَنِي وَلم يكن لَهُ ذَلِك أما تَكْذِيبه إِيَّايَ أَن يَقُول إِنِّي لن أُعِيدهُ كَمَا بَدأته وَأما شَتمه إِيَّايَ أَن يَقُول اتخذ الله ولدا وَأَنا الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ أَلِدْ وَلَمْ أُولَدْ وَلَمْ يكن لي كُفؤًا أحد (لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفؤًا أحد)»» كُفؤًا وكفيئا وكفاء وَاحِد

20. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है, इब्ने आदम ने मेरी तकज़ीब की हालाँकि यह उस के लिए मुनासिब नहीं, और उस ने मुझे बुरा-भला कहा, हालाँकि यह उस के लायक नहीं था, रहा उस का मुझे झुठलाना, तो वह उस का यह कहना है की वह मुझे दोबारा पैदा नहीं करेगा, जैसे उस ने शुरू में मुझे पैदा किया था, हालाँकि पहली बार पैदा करना मेरे लिए दोबारा पैदा करने से ज़्यादा आसान नहीं? और रहा उस का मुझे बुरा-भला कहना तो वह उस का यह

कहना है, अल्लाह की औलाद है, हालाँकि मैं यकता बेनियाज़ हूँ, जिस की ना औलाद है न वालिदेन और न कोई मेरा हमसर है”। (सहीह)

رواه البخارى (4974 ، 4975)

٢١ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَة عَن ابْنِ عَبَّاسٍ: " وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ: لِي وَلَدٌ وَسُبْحَانِي أَنْ أَتَّخِذَ صَاحِبَةً أَوْ وَلَدًا "

21. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस में है: “और रहा उस का मुझे गाली देना, तो वह उस का यह कहना है, मेरी औलाद है, हालाँकि मैं उस से पाक हूँ कि ना मेरी बीवी हो ना मेरी औलाद हो”। (सहीह)

رواه البخارى (4482)

٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: يُؤْذِينِي ابْنُ آدَمَ يَسُبُّ الدَّهْرَ وَأَنَا الدَّهْرُ بِيَدِيَ الْأَمْرُ أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ "

22. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इब्ने आदम ज़माने को गाली देने के बाईस मुझे तकलीफ पहुंचाता है, हालाँकि मैं ज़माना हूँ, तमाम मुआमलात मेरे हाथ में है, मैं ही दिन-रात को बदलता हूँ। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4826 ، 7491) و مسلم (2246 / 2)، (5863)

٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَحَدٌ أَصْبَرُ عَلَى أَذًى يَسْمَعُهُ مِنَ اللَّهِ يَدْعُونَ لَهُ الْوَلَدَ ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ»

23. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तकलीफदेह बात सुन कर उस पर सब्र करने वाला अल्लाह से बढ़कर कोई नहीं, वह उस के लिए औलाद का दावा करते हैं, लेकिन वह फिर भी उन से दरगुज़र करता है और उन्हें रिज़्क़ बहम पहुंचाता है। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7378) و مسلم (2804 / 49)، (7080)

٢٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن معَاذ رَضِي الله عَنهُ قَالَ كُنْتُ رِدْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم على حمَار يُقَال لَهُ عفير فَقَالَ يَا معَاذ هَل تَدْرِي حَقُّ اللَّهِ عَلَى عِبَادِهِ وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللَّهِ؟ قُلْتُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ فَإِنَّ حَقَّ اللَّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللَّهِ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا أُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ قَالَ لَا تُبَشِّرْهُمْ فَيَتَّكِلُوا

24. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के पीछे गधे पर सवार था, मेरे और आप के दरमियान सिर्फ पालान की एक लकड़ी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुआज़! क्या तुम जानते हो के अल्लाह का अपने बंदो पर क्या हक़ है?" मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह का बंदो पर यह हक़ है के वह उसकी इबादत करे और उस के साथ किसी को शरीक न बनाएं, और बंदो का अल्लाह पर यह हक़ है के वह इस शख़्स को अज़ाब न दे जो उस के साथ किसी किस्म का शिर्क न करता हो'', मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या मैं लोगों को उसकी बशारत ना दे दूं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन्हें बशारत न दो वरना वह इस बात पर तवक्कुल कर लेंगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2856) و مسلم (30 / 48 ، 49)، (143 و 144)

٢٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمُعَاذٌ رديفه على الرحل قَالَ: «يَا معَاذ بن جبل قَالَ لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَسَعْدَيْكَ قَالَ يَا مُعَاذُ قَالَ لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَسَعْديك ثَلَاثًا قَالَ مَا مِنْ أَحَدٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ صِدْقًا مِنْ قَلْبِهِ إِلَّا حَرَّمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا أُخْبِرُ بِهِ النَّاس فيستبشروا قَالَ إِذا يتكلوا وَأَخْبر بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَأَثُّمًا»

25. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ सवारी पर थे जबकि मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु आप के पीछेबैठे थे आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुआज़!" उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! सआदतमंदी के साथ हाज़िर हूँ, आप ने फिर फ़रमाया: "मुआज़!" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! सआदतमंदी के साथ हाज़िर हूँ, आप ने फिर फ़रमाया: "मुआज़!" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! सआदतमंदी के साथ हाज़िर हूँ, तीन मर्तबा ऐसे हुआ, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स सच्चे दिल से यह गवाही देता है के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, तो अल्लाह उस पर जहन्नम की आग हराम कर देता है", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मैं उस के मुतल्लिक लोगों को न बता दू ताकि वह खुश हो जाए? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तब तो वह तवक्कुल कर लेंगे'', फिर मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु ने गुनाह से बचने के लिए अपने मौत के करीब उस के मुतल्लिक बताया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (128) و مسلم (32 / 53)، (148)

٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ أَبْيَضُ وَهُوَ نَائِمٌ ثُمَّ أَتَيْتُهُ وَقَدِ اسْتَيْقَظَ فَقَالَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ثُمَّ مَاتَ عَلَى ذَلِكَ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ قُلْتُ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ قَالَ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ قُلْتُ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ قَالَ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ قُلْتُ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ قَالَ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ عَلَى رَغْمِ أَنْفِ أَبِي ذَرٍّ وَكَانَ أَبُو ذَرٍّ إِذَا حَدَّثَ بِهَذَا قَالَ وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أَبِي ذَر»

26. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप सफ़ेद कपड़ा ओढ़े सो रहे थे, मैं फिर दोबारा हाज़िर हुआ तो आप बेदार हो चुके थे, तब आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस

शख़्स ने यह इकरार किया के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, फिर वह इसी पर फौत हो गया, तो वह जन्नत में दाखिल होगा”, मैंने अर्ज़ किया: अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो”, मैंने फिर अर्ज़ किया: अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो”, मैंने अर्ज़ किया: अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगरचे उस ने ज़िना किया हो और चोरी की हो ख्वाह अबू ज़र को नागवार हो”| अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु जब यह हदीस बयान करते तो यह अल्फाज़ भी बयान करते थे, अगरचे अबू ज़र को नागवार गुज़रे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5827) و مسلم (94 / 154)، (273)

٢٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ وَابْنُ أَمَتِهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ وَالْجَنَّةُ وَالنَّارُ حَقٌّ أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ عَلَى مَا كَانَ من الْعَمَل»

27. उबादा बिन अस-सामित(र) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स यह गवाही दे की अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं, और यह कि इसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे उस के रसूल और उसकी बंदी के बेटे है, उस का कलिमा है, जिसे उस ने मरियम अलैहिस्सलाम की तरफ डाला और उसकी तरफ एक रूह है, जन्नत और जहन्नम हक़ है, अल्लाह इस शख़्स को जन्नत में दाखिल फरमाएगा ख्वाह उस के आमाल कैसे भी हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3435) و مسلم (28 / 46)، (140)

٢٨ - (صَحِيح) وَعَن عَمْرو بن الْعَاصِ قَالَ: «أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فقلت ابْسُطْ يَمِينك فلأبايعك ص:١ فَبسط يَمِينه قَالَ فَقَبَضْتُ يَدِي فَقَالَ مَا لَكَ يَا عَمْرُو قلت أردْت أَن أشْترط قَالَ تَشْتَرِطُ مَاذَا قُلْتُ أَنْ يُغْفَرَ لِي قَالَ أما علمت أَنَّ الْإِسْلَامَ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ وَأَنَّ الْهِجْرَةَ تَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهَا وَأَنَّ الْحَجَّ يهدم مَا كَانَ قبله» ؟»» وَالْحَدِيثَانِ الْمَرْوِيَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: «أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ» . والاخر: «الْكِبْرِيَاء رِدَائِي» سَنَذْكُرُهُمَا فِي بَابِ الرِّيَاءِ وَالْكِبْرِ إِنْ شَاءَ الله تَعَالَى

28. अम्र बिन आस ﷺ बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया: अपना दायाँ हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप की बैत करू, आप ने दायाँ हाथ बढ़ाया तो मैंने अपना हाथ खींच लिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अम्र! तुम्हें क्या हुआ?” मैंने अर्ज़ किया: मैं शर्त कायम करना चाहता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बताओ क्या शर्त कायम करना चाहते हो? मैंने अर्ज़ किया: यह कि मुझे बख्श दिया जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अम्र! क्या तुम्हें मालुम नहीं के इस्लाम पहले (हालते कुफ्र वाले) गुनाह मिटा देता है, हिजरत अपने से पहले किए हुए गुनाह मिटा देती है और बेशक हज भी उन गुनाहों को मिटा देता है जो

उस से पहले किए होते हैं”| और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी दो हदीसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “मैं शरीको के शिर्क से बेनियाज़ हूँ” और दूसरी हदीस: “कब्र मेरी चादर है” मैं इन दोनों हदीसो को इंशाअल्लाह तआला “بَاب الرِّيَاء والسمعة (रिया और शोहरत का बयान)” और “بَاب الْغَضَب وَالْكبر (गुस्से और तकबीर का बयान)” में बयान करूँगा| (सहीह)

رواہ مسلم (121 / 192)، (321) 0 حدیث :’’ قال اللہ تعالیٰ : انا اغنی الشرکاء عن الشرک ‘‘ سیاتی (5315) و حدیث :’’ الکبریاء ردائی ‘‘ سیاتی (5110)

كتاب الْإِيمَان • ईमान का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٩ - (لم تتمّ دراسته) عَن معَاذ بن جبل قَالَ كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سفر فَأَصْبَحت يَوْمًا قَرِيبا مِنْهُ وَنحن نسير فَقلت يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ وَيُبَاعِدني عَن النَّار قَالَ لقد سَأَلتنِي عَن عَظِيمٍ وَإِنَّهُ لَيَسِيرٌ عَلَى مَنْ يَسَّرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ تَعْبُدُ اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا وَتُقِيمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَتَصُومَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْت ثُمَّ قَالَ أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى أَبْوَابِ الْخَيْرِ الصَّوْمُ جُنَّةٌ وَالصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيئَةُ كَمَا يُطْفِئُ المَاء النَّار وَصَلَاة الرجل من جَوف اللَّيْل قَالَ ثمَّ تَلا (تَتَجَافَى جنُوبهم عَن الْمضَاجِع)»» حَتَّى بَلَغَ (يَعْمَلُونَ)»» ثُمَّ قَالَ أَلَا أَدُلُّكَ بِرَأْس الْأَمر كُله وَعَمُودِهِ وَذِرْوَةِ سَنَامِهِ قُلْتُ بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ رَأْسُ الْأَمْرِ الْإِسْلَامُ وَعَمُودُهُ الصَّلَاةُ وَذِرْوَةُ سَنَامِهِ الْجِهَادُ ثُمَّ قَالَ أَلَا أُخْبِرُكَ بِمِلَاكِ ذَلِكَ كُلِّهِ قُلْتُ بَلَى يَا نَبِيَّ اللَّهِ فَأَخَذَ بِلِسَانِهِ فَقَالَ كُفَّ عَلَيْكَ هَذَا فَقُلْتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَإِنَّا لَمُؤَاخَذُونَ بِمَا نتكلم بِهِ فَقَالَ ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا مُعَاذُ وَهَلْ يَكُبُّ النَّاسَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ أَوْ عَلَى مَنَاخِرِهِمْ إِلَّا حَصَائِدُ أَلْسِنَتِهِمْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

29. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा अमल बताइए जो मुझे जन्नत में दाखिल कर दे और जहन्नुम से दूर कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने एक बहोत बड़ी बात के मुतल्लिक पूछा है, लेकिन वह ऐसे शख़्स के लिए आसान है, जिस पर अल्लाह तआला इसे आसान फरमादे, तुम अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न बनाओ, नमाज़ कायम करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज”, फिर फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें अबवाबे खैर के मुतल्लिक बताऊँ? रोज़ा ढाल है, सदका गुनाहों को ऐसे मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है, और रात के अवकात में आदमी का नमाज़ पढ़ना (गुनाहों को मिटा देता है)“| फिर आप ने सूरत-उल सज़दा की आयत तिलावत फरमाई: “उन के पहलु बिस्तरो से दूर रहते है”, हत्ता कि आप ने “वो अमल किया करते थे” तक तिलावत मुकम्मल फरमाई फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें दीन की बुनियाद उस के सुतून और उसकी चोटी के मुतल्लिक बताऊँ?” मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं? अल्लाह के रसूल! ज़रूर बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “दीन की बुनियाद इस्लाम है? उस का सुतून नमाज़ और उसकी चोटी जिहाद है”, फिर फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें उन सबसे बड़ी चीज़ के मुतल्लिक बताऊँ?” मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं? अल्लाह के नबी! ज़रूर बताइए, आप ने अपनी ज़ुबान को पकड़ कर फ़रमाया: “इसे रोक लो”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! हम उस से जो कलाम करते हैं क्या उस पर हमारा मुआखज़ा होगा आप

ﷺ ने फ़रमाया: “मुआज़ तेरी माँ तुझे गम पाए लोगों को उनकी ज़ुबान की काट ही उन के चेहरे या नथुनों के बल जहन्नम में गिराएगी”। (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 231 ح 22366) و الترمذی (2616 وقال : هذا حديث حسن صحيح) و ابن ماجه (3973) [و للحديث شواهد عند احمد (5 / 236237 ، 248) وغيره وهوبها حسن]

٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَحَبَّ لِلَّهِ وَأَبْغَضَ لِلَّهِ ص:١ وَأَعْطَى لِلَّهِ وَمَنَعَ لِلَّهِ فَقَدِ اسْتكْمل الْإِيمَان» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

30. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अल्लाह के लिए मुहब्बत की, अल्लाह की खातिर बुग्ज़ रखा, अल्लाह की रज़ा की खातिर अता किया और अल्लाह के लिए रोक लिया तो उस ने ईमान मुकम्मल कर लिया”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4681)

٣١ - (لم تتمّ دراسته) رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ مَعَ تَقْدِيمٍ وَتَأْخِير وَفِيه: «فقد اسْتكْمل إِيمَانه»

31. और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने मुआज़ बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु से अल्फाज़ की तकदिम ताखीर के साथ इसे यूँ रिवायत किया है: “इस शख़्स ने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2521 وقال : هذا حديث منكر) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (2 / 164) و وافقه الذهبی : الصواب انه حسن ، خلافًا لمن اعله]

٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ الْحُبُّ فِي اللَّهِ وَالْبُغْضُ فِي اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

32. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की रज़ा की खातिर मुहब्बत करना और अल्लाह की रज़ा की खातिर बुग्ज़ रखना आमाल में सबसे अफज़ल अमल है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4599) * فيه رجل مجهول ، لم نعرف اسمه ، و يزيد بن ابی زياد ضعيف مدلس مختلط و لبعض حديثه شواهد عند الترمذی (2521) وغيره

٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ وَالْمُؤْمِنُ مَنْ أَمِنَهُ النَّاسُ عَلَى دِمَائِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

33. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान वह है जिस की

जुबान और जिसके हाथ से मुसलमान महफ़ूज़ रहे, और मोमिन वह है जिस से लोग अपने जानो और मालो के बारे में बेखोफ और पुर अमन हो”। (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2627 وقال : هذا حديث حسن صحيح) و النسائى (8 / 104 ، 105 ح 4998) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 180) و الحاكم (1 / 10) على شرط مسلم و وافقه الذهبى] * ابن عجلان مدلس و عنعن و للحديث شواهد كثيرة وهوبها صحيح

٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَزَادَ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» . بِرِوَايَةِ فَضَالَةَ: «وَالْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ فِي طَاعَةِ اللَّهِ وَالْمُهَاجِر من هجر الْخَطَايَا والذنُوب»

34. इमाम बय्हकी ने फ़ुज़ालह और मुजाहिद की रिवायत से यह इज़ाफा नकल किया है: “मुजाहिद वह है जो अल्लाह की इताअत के बारे में अपने नफ्स से जिहाद करे जबकि मुहाजिर वह है जो खताओं और गुनाहों से किनाराकशी हो जाए”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (11123) [و احمد (6 / 21 ، 22 ح 24458 ، 24467) و ابن ماجه (3934) و صححه ابن حبان (الموارد : 25) و الحاكم (1 / 10 ، 11)]

٣٥ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَلَّمَا خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا قَالَ: «لَا إِيمَانَ لِمَنْ لَا أَمَانَةَ لَهُ وَلَا دِينَ لِمَنْ لَا عَهْدَ لَهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

35. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब भी हमें ख़िताब करते तो फरमाते: “जिस शख़्स में अमानत नहीं उस का ईमान ही नहीं, और जिस शख़्स का अहद नहीं उस का कोई दीन ही नहीं”। (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4352 و السنن الكبرى 6 / 288) [و احمد (3 / 135 ح 12410 ، و 3 / 154 ، 210 ، 251) و اورده الضياء فى المختارة (5 / 74 ح 1699 ، 7 / 224 ح 26602663) و للحديث شواهد عند ابن حبان (الاحسان : 194 ، و سنده حسن) و ابن خزيمة (3335) وغيرهما وهوبها حسن]



ईमान का बयान • كتاب الْإِيمَان

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ حَرَّمَ الله عَلَيْهِ النَّار»

36. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स गवाही दे की अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह ने उस को जहन्नम पर हराम कर दिया है”| (सहीह)

مسلم ، كتاب الايمان ، باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعًا ، رقم : (142)، ترمذی ، رقم : 2638

٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ مُسلم

37. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को इस हालत में मौत आए के वह जानता हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं तो वह जन्नत में दाखिल होगा”| (सहीह)

مسلم ، كتاب الايمان ، باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعًا ، رقم : (136)، احمد ، 1 / 65 ، رقم : 464 ، ابن حبان ، رقم : 201

٣٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثِنْتَانِ مُوجِبَتَانِ. ص:١ قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الْمُوجِبَتَانِ؟ قَالَ: (مَنْ مَاتَ يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ وَمَنْ مَاتَ لَا يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا دخل الْجنَّة)»» (رَوَاهُ مُسلم)

38. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो खसलते बाईस मौजुब है”, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह दो मौजुब क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता हुआ फौत हो जाए, तो वह जहन्नम में दाखिल होगा, और जो शख़्स इस हाल में फौत हो के वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाता हो तो वह जन्नत में दाखिल होगा”| (सहीह)

مسلم ، كتاب الايمان ، باب الدليل على من مات لا يشرك بالله شيئًا دخل الجنة ، رقم : (269)، احمد ، 3 / 391 ، رقم : 15270

٣٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا قُعُودًا حَوْلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ معنا أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فِي نَفَرٍ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَيْنَ أَظْهُرِنَا فَأَبْطَأَ عَلَيْنَا وَخَشِينَا أَنْ يُقْتَطَعَ دُونَنَا وَفَزِعْنَا فَقُمْنَا فَكُنْتُ أَوَّلَ مَنْ فَزِعَ فَخَرَجْتُ أَبْتَغِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَتَيْتُ حَائِطًا لِلْأَنْصَارِ لِبَنِي النَّجَّارِ فَدُرْتُ بِهِ هَلْ أَجِدُ لَهُ بَابًا فَلَمْ أَجِدْ فَإِذَا رَبِيعٌ يَدْخُلُ فِي جَوْفِ حَائِطٍ مِنْ بِئْرٍ خَارِجَةٍ وَالرَّبِيعُ الْجَدْوَلُ فاحتفزت كَمَا يحتفز الثَّعْلَب فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَقُلْتُ نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ مَا شَأْنُكَ قُلْتُ كُنْتَ بَيْنَ أَظْهُرِنَا فَقُمْتَ فَأَبْطَأْتَ عَلَيْنَا فَخَشِينَا أَنْ تُقْتَطَعَ دُونَنَا فَفَزِعْنَا فَكُنْتُ أَوَّلَ مَنْ فَزِعَ فَأَتَيْتُ هَذَا الْحَائِطَ فَاحْتَفَزْتُ كَمَا يَحْتَفِزُ الثَّعْلَبُ وَهَؤُلَاء النَّاس ورائي فَقَالَ يَا أَبَا هُرَيْرَة وَأَعْطَانِي نَعْلَيْه قَالَ اذْهَبْ بنعلي هَاتين فَمن لقِيت من وَرَاء هَذَا الْحَائِط يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُسْتَيْقِنًا بِهَا قَلْبُهُ فَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ فَكَانَ أَوَّلُ مَنْ لَقِيتُ عُمَرَ فَقَالَ مَا هَاتَانِ النَّعْلَانِ يَا أَبَا هُرَيْرَة فَقلت هَاتَانِ نَعْلَا

رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَنِي بِهِمَا مَنْ لَقِيتُ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُسْتَيْقِنًا بِهَا قَلْبُهُ بَشرته بِالْجنَّةِ فَضرب عمر بِيَدِهِ بَيْنَ ثَدْيَيَّ فَخَرَرْتُ لِاسْتِي فَقَالَ ارْجِعْ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ فَرَجَعْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فأجهشت بكاء وركبني عمر فَإِذا هُوَ على أثري فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:١ مَا لَك يَا أَبَا هُرَيْرَة قلت لقِيت عمر فَأَخْبَرته بِالَّذِي بعثتني بِهِ فَضرب بَين ثديي فَخَرَرْت لاستي قَالَ ارْجع فَقَالَ لَهُ رَسُول الله يَا عُمَرُ مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا فَعَلْتَ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَبَعَثْتَ أَبَا هُرَيْرَةَ بِنَعْلَيْكَ مَنْ لَقِيَ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُسْتَيْقِنًا بِهَا قَلْبُهُ بَشَّرَهُ بِالْجَنَّةِ قَالَ نَعَمْ قَالَ فَلَا تَفْعَلْ فَإِنِّي أَخْشَى أَنْ يَتَّكِلَ النَّاسُ عَلَيْهَا فخلهم يعْملُونَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فخلهم ". رَوَاهُ مُسلم

39. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के इर्दगिर्दबैठे हुए थे, जबकि अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु सहाबा की एक जमाअत के साथ हमारे साथ थे के रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास से उठ कर चले गए, आप ने हमारे पास वापस आने में ताखीर की तो हमें अंदेशा हुआ की हमारी गैर मौजूदगी में आप को कोई तकलीफ न पहुंचाई जाए, पस हम (आप की तलाश में) उठ खड़े हुए, तो सबसे पहला शख़्स मैं था जो परेशान हुआ तो मैं वहा से रसूलुल्लाह ﷺ को तलाश करने के लिए रवाना हुआ, हत्ता कि मैं अंसार कबिले के एक खानदान बनू नजार के एक बाग़ के पास आया तो मैंने उस का चक्कर लगाया, ताकि मुझे उस का कोई दरवाज़ा मिल जाए लेकिन मैंने कोई दरवाज़ा न पाया, लेकिन वहां एक बैरूनी कुंवा था, जिस से एक नाली बाग की दिवार से अंदर जाती थी, पस मैं सिमट कर उस रास्ते से रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पहुँच गया, तो आप ﷺ ने पूछा: अबू हुरैरा! मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ, अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें क्या हुआ? (के यहाँ चले आए?) मैंने अर्ज़ किया: आप हमारे पास तशरीफ़ फरमा थे, की आप उठ कर गए और हमारे पास वापस आने में ताखीर की तो हमें अंदेशा हुआ की हमारी गैर मौजूदगी में आप को कोई तकलीफ न पहुंचाई जाए, पस हम घबरा गए, मैं पहला शख़्स था जो परेशानी का शिकार हुआ, पस मैं इस बाग़ के पास पहुंचा तो मैं सुकड़ कर इस नाले के ज़रिए अन्दर आ गया जिस तरह लोमड़ी सुकड़ और सिमट जाती है, और वह लोग मेरे पीछे है, और आप ﷺ ने अपने नालेन मुबारक मुझे देकर फ़रमाया: “ए अबू हुरैरा! मेरे यह जूते ले जाओ और इस दिवार के बाहर ऐसा जो शख़्स तुम्हें मिले दिल के यकीन के साथ गवाही देता हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, तो उसे जन्नत की बशारत दे दो”, तो सबसे पहले उमर रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात हुई, उन्होंने पूछा: अबू हुरैरा! यह दोनों जूते कैसे है, मैंने कहा: यह दोनों जूते रसूलुल्लाह ﷺ के है, आप ने यह दे कर मुझे भेजा है की मैं ऐसे जिस शख़्स से मिलु, जो दिल के यकीन के साथ गवाही देता हो के, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मैं उसे जन्नत की बशारत दू, (ये सुन कर) उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मेरे सीने पर मारा तो मैं सुरिन के बल गिर पड़ा, उन्होंने कहा: अबू हुरैरा वापस चले जाओ, मैं रोता हुआ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में वापस आया, जबकि उमर रदियल्लाहु अन्हु भी मेरे पीछे पीछे चले आए रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अबू हुरैरा! तुम्हें क्या हुआ?” मैंने अर्ज़ किया: मैं उमर रदियल्लाहु अन्हु से मिला तो उन्होंने मेरे सिने पर इस ज़ोर से मारा की मैं सुरिन के बल गिर पड़ा, और कहा के वापस चले जाओ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उमर तुम्हें ऐसा करने पर किस चीज़ ने अमादा किया?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, क्या आप ने अपने जूते दे कर अबू हुरैरा को भेजा था के तुम जिस ऐसे शख़्स को मिलो जो दिल के यकीन के साथ गवाही देता हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, उस को जन्नत की खुशखबरी सुना दो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हाँ”, उन्होंने अर्ज़ किया, आप ऐसे न करे, मुझे अंदेशा है के लोग इस बात पर तवक्कुल कर लेंगे, आप उन्हें छोड़ दे ताकि वह अमल करते रहे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:

“उन्हें (अपने हाल पर) छोड़ दो (ताकि अमल करते रहे)”| (सहीह)

مسلم ،كتاب الايمان ، باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعًا ، رقم : (147)

٤٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: «قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَفَاتِيحُ الْجَنَّةِ شَهَادَةُ أَنْ لَا إِلَه إِلَّا الله» . رَوَاهُ أَحْمد

40. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं जन्नत की चाबी है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 242 ح 22453) * شهر بن حوشب : عن معاذ ، منقطع

٤١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رِجَالًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَزِنُوا عَلَيْهِ حَتَّى كَادَ بَعْضُهُمْ يُوَسْوِسُ قَالَ عُثْمَان وَكنت مِنْهُم فبينا أَنا جَالس فِي ظلّ أَطَم من الْآطَام مر عَليّ عمر رَضِي الله عَنهُ فَسلم عَليّ فَلم أشعر أَنه مر وَلَا سلم فَانْطَلق عمر حَتَّى دخل على أبي بكر رَضِي الله عَنهُ فَقَالَ لَهُ مَا يُعْجِبك أَنِّي مَرَرْت على عُثْمَان فَسلمت عَلَيْهِ فَلم يرد عَليّ السَّلَام وَأَقْبل هُوَ وَأَبُو بكر فِي وِلَايَةَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ حَتَّى سلما عَليّ جَمِيعًا ثمَّ قَالَ أَبُو بكر جَاءَنِي أَخُوك عمر فَذكر أَنه مر عَلَيْك فَسلم فَلم ترد عَلَيْهِ السَّلَام فَمَا الَّذِي حملك على ذَلِك قَالَ قُلْتُ مَا فَعَلْتُ فَقَالَ عُمَرُ بَلَى وَاللَّهِ لقد فعلت وَلكنهَا عبيتكم يَا بني أُميَّة قَالَ قُلْتُ وَاللَّهِ مَا شَعَرْتُ أَنَّكَ مَرَرْتَ وَلَا سَلَّمْتَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ صَدَقَ عُثْمَانُ وَقد شَغَلَكَ عَنْ ذَلِكَ أَمْرٌ فَقُلْتُ أَجَلْ قَالَ مَا هُوَ فَقَالَ عُثْمَان رَضِي الله عَنهُ توفى الله عز وَجل نَبِيَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَهُ عَنْ نَجَاةِ هَذَا الْأَمْرِ قَالَ أَبُو بكر قد سَأَلته عَن ذَلِك قَالَ فَقُمْت إِلَيْهِ فَقلت لَهُ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَنْتَ أَحَقُّ بِهَا قَالَ أَبُو بَكْرٍ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا نَجَاةُ هَذَا الْأَمْرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٢ مَنْ قَبِلَ مِنِّي الْكَلِمَةَ الَّتِي عَرَضْتُ عَلَى عَمِّي فَرَدَّهَا فَهِيَ لَهُ نجاة. رَوَاهُ أَحْمد

41. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ ने वफात पाई तो आप के सहाबा किराम आप की वफात पर ग़मज़दा हो गए, हत्ता कि करीब था उनमें से बाज़ वसवसे का शिकार हो जाते, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, और मैं भी उन्हीं में से था, पस मैं बैठा हुआ था, के इस असना में उमर रदियल्लाहु अन्हु पास से गुज़रे और उन्होंने मुझे सलाम किया, लेकिन (शिद्दते ग़म की वजह से) मुझे उस का कोई पता नहीं चला, पस उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से शिकायत की, फिर वह दोनों आए हत्ता कि इन दोनों ने एक साथ मुझे सलाम किया, तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: आप ने किस वजह से अपने भाई उमर के सलाम का जवाब नहीं दिया, मैंने कहा: मैंने तो ऐसे नहीं किया, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: क्यों नहीं, अल्लाह की क़सम! आप ने ऐसे किया है, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैंने कहा: अल्लाह की क़सम! मुझे आप के गुज़रने का पता है ना सलाम करने का, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस्मान ने सच फ़रमाया, किसी अहम काम ने आप को उस से

गाफ़िल रखा होगा? तो मैंने कहा: आप ने ठीक कहा, उन्होंने पूछा: वह कौन सा अहम काम है? मैंने कहा: अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को वफात दे दि उस से पहले के हम आप से इस मुआमले की निजात के बारे में दरियाफ्त कर लेते, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने उस के मुतल्लिक आप से पूछ लिया था, मैं इन की तरफ मुतवज्जे हुआ और उन्हें कहा: मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, आप ही उस के ज़्यादा हक़दार थे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने कहा: अल्लाह के रसूल! इस मुआमले का हल क्या है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने मुझ से वह कलिमा, जो मैंने अपने चचा पर पेश किया लेकिन उसने इनकार कर दिया, कबूल कर लिया तो वही उस के लिए निजात है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 6 ح 20) * فيه رجل من الانصار من اهل الفقه : لم اعرفه ولم يوثقه الزهرى

٤٢ - (صَحِيح) عَن الْمِقْدَاد بن الْأسود قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ لَا يَبْقَى عَلَى ظَهْرِ الْأَرْضِ بَيْتُ مَدَرٍ وَلَا وَبَرٍ إِلَّا أَدْخَلَهُ اللَّهُ كلمة الاسلام بعز عَزِيز أَو ذل ذليل إِمَّا يعزهم الله عز وَجل فَيَجْعَلُهُمْ مِنْ أَهْلِهَا أَوْ يُذِلُّهُمْ فَيَدِينُونَ لَهَا»» رَوَاهُ أَحْمد

42. मिकदाद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अल्लाह रुए ज़मीन के हर शहर बस्ती के हर घर में कलिमा ए इस्लाम दाखिल फरमादेगा, ख्वाह इसे कोई इज्ज़त के साथ कबूल कर ले या ज़िल्लत के साथ जिंदा रहे, वह लोग जिन्हें अल्लाह इज्ज़त अता फरमाएगा तो वह इनको उस का अहल (मुहाफ़िज़) बना देगा या इनको ज़लील कर देगा तो वह उसकी इताअत इख़्तियार कर लेंगे", मैंने कहा: गोया दीन पुरे का पूरा इसी का हो जाएगा| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (6 / 4 ح 24315) [و صححه ابن حبان (موارد : 1631 ، 1632) و الحاكم (4 / 430) على شرط الشيخين و وافقه الذهبى]

٤٣ - (٤٢ (لم تتمّ دراسته) عَن وهب بن مُنَبّه قِيلَ لَهُ: أَلَيْسَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ قَالَ بَلَى وَلَكِنْ لَيْسَ مِفْتَاحٌ إِلَّا لَهُ أَسْنَانٌ فَإِنْ جِئْتَ بِمِفْتَاحٍ لَهُ أَسْنَانٌ فَتَحَ لَكَ وَإِلَّا لَمْ يَفْتَحْ لَكَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَة بَاب

43. वहबी बिन मुनब्बाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्हें कहा गया क्या (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ) (अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं) जन्नत की चाबी नहीं? उन्होंने कहा: क्यों नहीं!, लेकिन हर चाबी के दन्दाने होते हैं, अगर तुम दन्दान वाली चाबी लाओगे तो आप के लिए उसे खोल दिया जाएगा, वरना नहीं खोला जाएगा| (सहीह)

رواه البخارى (كتاب الجنائز باب : 1 قبل ح 1237)

٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِذَا أَحْسَنَ أَحَدُكُمْ إِسْلَامَهُ فَكُلُّ حَسَنَةٍ

يَعْمَلُهَا تُكْتَبُ لَهُ بِعشر أَمْثَالهَا إِلَى سبع مائَة ضعف وكل سَيِّئَة يعملها تكْتب لَهُ بِمِثْلِهَا "

44. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई अपने इस्लाम को संवार ले तो उस का हर नेक अमल दस गुना से सातसो गुना तक बढ़ाकर लिखा जाएगा, जबकि उसकी हर बुराई उतनी ही लिखी जाएगी हत्ता कि वह अल्लाह से जा मिले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (42) و مسلم (129 / 205)، (336)۔

٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا الْإِيمَانُ قَالَ إِذَا سَرَّتْكَ حَسَنَتُكَ وَسَاءَتْكَ سَيِّئَتُكَ فَأَنْتَ مُؤْمِنٌ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَمَا الْإِثْمُ قَالَ إِذَا حَاكَ فِي نَفْسِكَ شَيْءٌ فَدَعْهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

45. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया, ईमान क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: जब तेरी नेकी तुझे खुश कर दे और तेरी बुराई तुझे ग़मगीन कर दे तो तू मोमिन है”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! तो गुनाह क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब कोई चीज़ तेर दिल में खटके तो उसे छोड़ दो”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 251 ح 22519) [و صححه ابن حبان (الموارد : 103) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 14) و وافقه الذهبى]

٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَمْرو بن عبسة قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٢ فَقُلْتُ يَا رَسُول الله من تبعك عَلَى هَذَا الْأَمْرِ قَالَ حُرٌّ وَعَبْدٌ قُلْتُ مَا الْإِسْلَامُ قَالَ طِيبُ الْكَلَامِ وَإِطْعَامُ الطَّعَامِ قُلْتُ مَا الْإِيمَانُ قَالَ الصَّبْرُ وَالسَّمَاحَةُ قَالَ قُلْتُ أَيُّ الْإِسْلَامِ أَفْضَلُ قَالَ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ قَالَ قُلْتُ أَيُّ الْإِيمَانِ أَفْضَلُ قَالَ خُلُقٌ حَسَنٌ قَالَ قُلْتُ أَيُّ الصَّلَاةِ أَفْضَلُ قَالَ طُولُ الْقُنُوتِ قَالَ قُلْتُ أَيُّ الْهِجْرَةِ أَفْضَلُ قَالَ أَنْ تَهْجُرَ مَا كره رَبك عز وَجل قَالَ قلت فَأَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ قَالَ مَنْ عُقِرَ جَوَادُهُ وَأُهْرِيقَ دَمُهُ قَالَ قُلْتُ أَيُّ السَّاعَاتِ أَفْضَلُ قَالَ جَوف اللَّيْل الآخر. . . رَوَاهُ أَحْمد

46. अमर बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इस दीन पर आप के साथ और कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आज़ाद और गुलाम’‘,मैंने अर्ज़ किया: इस्लाम क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छी और पाकिज़ा गुफ्तगू और अच्छा खाना खिलाना’‘, मैंने अर्ज़ किया: ईमान क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सब्र व इस्तिकामत’‘, रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: कौन सा मुसलमान अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की ज़ुबान और हाथ से मुसलमान महफूज़ रहे’‘, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: कौन सा ईमान अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छे अख़लाक़’‘, रावी बयान करते हैं, मैं अर्ज़ किया: कौन सी नमाज़ अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “लम्बी कयाम वाली’‘, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: कौन सी हिजरत बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तू अपने रब की नापसंद चीजों से किनाराकशी हो जा’‘, उन्होंने कहा: मैंने पूछा, कौन सा

जिहाद अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस के घोड़े की टांगे काट दी जाए और इसे शहीद कर दिया जाए’‘, रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: कौन सा वक़्त बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “रात का आखिरी हिस्सा’‘। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 385 ح 19655) [و ابن ماجه : 2794 مختصرًا] * فيه محمد بن ذكوان : ضعيف ، و لبعض الحديث شواهد عند مسلم (294)، (1930) و الحاكم (1 / 164) وغيرهما و حديث ابن ماجه (2794) حسن

٤٧ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ لَقِيَ اللَّهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئا يُصَلِّي الْخَمْسَ وَيَصُومُ رَمَضَانَ غُفِرَ لَهُ قُلْتُ أَفَلَا أُبَشِّرُهُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ دَعْهُمْ يَعْمَلُوا» . رَوَاهُ أَحْمد

47. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स इस हालत में अल्लाह से मुलाकात करे के वह उस के साथ किसी को शरीक न ठहराता हो, पांचो नमाज़े पढ़ता हो और रमज़ान के रोज़े रखता हो तो इसे बख्श दीया जाएगा’‘, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या मैं उन्हें बशारत ना सुना दू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें छोड़ दो, ताकि वह अमल करते रहे”। (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 232 ح 22378) [و الترمذى (2530) و اعله وله شاهد صحيح عند الترمذى (2531) و صححه الحاكم (1 / 80)]

٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن معَاذ أَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَفْضَلِ الْإِيمَانِ قَالَ: «أَنْ تُحِبَّ لِلَّهِ وَتُبْغِضَ لِلَّهِ وَتُعْمِلَ لِسَانَكَ فِي ذِكْرِ اللَّهِ قَالَ وماذا يَا رَسُول الله قَالَ وَأَن تحب للنَّاس مَا تحب لنَفسك وَتَكْرَهُ لَهُمْ مَا تَكْرَهُ لِنَفْسِكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

48. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने नबी ﷺ से ईमान की बेहतरीन खसलत के बारे में दरियाफ्त किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अल्लाह के लिए मुहब्बत करो, अल्लाह के लिए बुग्ज़ रखो और अपने जुबान को अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ रखो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस के बाद क्या करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम लोगों के लिए वही कुछ पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो और इन के लिए इस चीज़ को नापसंद करो जिसे अपने लिए नापसंद करते हो”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 247 ح 22481) * زبان و تلميذه رشدين : ضعيفان ، ورشدين : تابعه ابن لهيعة

बَاب الْكَبَائِر وعلامات النِّفَاق • कबीराह गुनाहों और निफाक की अलामतो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ قَالَ أَنْ تَدْعُوَ لِلَّهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ قَالَ ثُمَّ أَيٌّ قَالَ ثمَّ أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ قَالَ ثمَّ أَي قَالَ ثمَّ أَن تُزَانِي بحليلة جَارك فَأنْزل الله عز وَجل تَصْدِيقَهَا (وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يزنون وَمن يفعل ذَلِك يلق أثاما)»» الْآيَة

49. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह के नज़दीक कौन सा गुनाह सबसे बड़ा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि तू अल्लाह का शरीक बनाए, हालाँकि उस ने तुम्हें पैदा फ़रमाया, उस ने कहा: फिर कौन सा? आप ने फ़रमाया: “यह कि तु इस अंदेशे के पेशे नज़र अपने बच्चे को क़त्ल कर दे के वह तुम्हारे साथ खाएगा’‘, उस ने अर्ज़ किया: फिर कौन सा? आप ने फ़रमाया: “यह कि तू अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे’‘, अल्लाह ने इस मसअले की तस्दीक में यह आयत नाज़िल फरमाई: “और वह लोग है जो अल्लाह के साथ और माबुदो को नहीं पुकारते और जिसके क़त्ल करने को अल्लाह ने हराम करार दिया है उसे नाहक क़त्ल नहीं करते और ना ही वह ज़िना करते हैं”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6861) و مسلم (86 / 142)، (258) و اللفظ له

٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْكَبَائِرُ الْإِشْرَاكُ بِاللَّهِ وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ وَقَتْلُ النَّفْسِ وَالْيَمِين الْغمُوس» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

50. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह के साथ शरीक बनाना, वालिदेन की नाफ़रमानी करना, कत्ले नफ्स और झूठी कसम उठाना कबीरा गुनाह है। (सहीह)

رواه البخاری (6675)

٥١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ أَنَسٍ: «وَشَهَادَةُ الزُّورِ» بَدَلُ: «الْيَمِينُ الْغمُوس»

51. अनस रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में झूठी क़सम की बजाए झूठी गवाही का ज़िक्र है। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2653) و مسلم (88 / 144)، (261)

٥٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا هُنَّ قَالَ الشِّرْكُ بِاللَّهِ وَالسِّحْرُ وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ ص:٢ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَكْلُ الرِّبَا وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ»

52. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सात खतरनाक चीजों से बचा करो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, जिसके क़त्ल करने को अल्लाह ने हराम करार दिया है/ इसे नाहक क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम का माल खाना, लड़ाई के दिन मैदान ए जिहाद से पीठ फेर कर फरार होना और पाक दामन औरतो पर तोहमत लगाना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2766) و مسلم (89 / 145)، (262)

٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَا يشرب الْخمر حِين يشْربهَا وَهُوَ مُؤمن وَلَا يَسْرِقُ السَّارِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَا ينتهب نهبة ذَات شرف يرفع النَّاس إِلَيْهِ أَبْصَارهم فِيهَا حِينَ يَنْتَهِبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَا يَغُلُّ أَحَدُكُمْ حِين يغل وَهُوَ مُؤمن فإياكم إِيَّاكُمْ»

53. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस वक़्त ज़ानि ज़िना करता है तो वह इस वक़्त मोमिन नहीं होता, जिस वक़्त चोर चोरी करता है तो इस वक़्त वह मोमिन नहीं होता, जब वह शराब पीता है तो शराब नौशी के वक़्त वह मोमिन नहीं होता, जब लूटने वाला लूटता है तो वह लूटने के वक़्त मोमिन नहीं होता, जबकि लोगों इसे देख रहे होते हैं और जब खयानत करने वाला खयानत करता है तो वह इस वक़्त मोमिन नहीं होता है, पस तुम बच जाओ बच जाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2475) و مسلم (57 / 100)، (202)

٥٤ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَة ابْن عَبَّاس: «وَلَا يَقْتُلُ حِينَ يَقْتُلُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ» . قَالَ عِكْرِمَةُ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: كَيْفَ يُنْزَعُ الْإِيمَانُ مِنْهُ؟ قَالَ: هَكَذَا وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ ثُمَّ أَخْرَجَهَا فَإِنْ تَابَ عَادَ إِلَيْهِ هَكَذَا وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ وَقَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: لَا يَكُونُ هَذَا مُؤْمِنًا تَامًّا وَلَا يَكُونُ لَهُ نُورُ الْإِيمَان. هَذَا لفظ البُخَارِيّ

54. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है: “जिस वक़्त कातिल क़त्ल करता है तो इस वक़्त वह मोमिन नहीं होता”, इकरमा बयान करते हैं, मैंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से पूछा उस से ईमान कैसे निकाल लिया जाता है, उन्होंने ने फ़रमाया: इस तरह और उन्होंने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों मैं डाली और फिर उन्हें निकाल लिया, पस अगर वह तौबा कर ले तो ईमान उसकी तरफ इस तरहलौट आता है, और उन्होंने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों मैं डाली और अबू अब्दुल्लाह इमाम बुखारी (रह)) ने फ़रमाया: ना ऐसा शख़्स कामिल (सर्वोत्तम) मोमिन होगा ना उस के लिए नूर ईमान

होगा”, यह बुखारी के अल्फाज़ है| (सहीह)

رواه البخارى (6809) * وقول البخارى : لم اجده

٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: («آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ» . زَادَ مُسْلِمٌ: «وَإِنْ صَامَ وَصَلَّى وَزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ» . ثُمَّ اتَّفَقَا: «إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ وَإِذَا اؤتمن خَان»

55. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुनाफ़िक़ की तीन निशानिया हैं, जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे खिलाफर्ज़ी करे और जब उस के पास अमानत रखी जाए तो खयानत करे”| # इमाम मुस्लिम ने अल्फाज़ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नकल किए है: “अगरचे वह रोज़ा रखे नमाज़ पढ़े और वह मुसलमान होने का दावा करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (33) و مسلم (59 / 107 ، 109)، (211 و 213)

٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَرْبَعٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ كَانَ مُنَافِقًا خَالِصًا وَمَنْ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنْهُنَّ كَانَتْ فِيهِ خَصْلَةٌ مِنَ النِّفَاقِ حَتَّى يَدَعَهَا إِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ وَإِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَإِذَا عَاهَدَ غَدَرَ وَإِذا خَاصم فجر»

56. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स में चार खसलते हो वह खालिस (पक्का) मुनाफ़िक़ है, और जिस में उनमें से एक खसलत हो तो उस में निफ़ाक़ की एक खसलत है, हत्ता कि वह इसे छोड़ दे, जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में खयानत करे, जब बात करे झूठ बोले, जब अहद करे तो दगाबाज़ी करे और जब झगड़ा करे तो गाली गलोच पर उतर आए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (34 و اللفظ له) و مسلم (58 / 106)، (210)

٥٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مثل الْمُنَافِق كَمثل الشَّاة الْعَائِرَةِ بَيْنَ الْغُنْمَيْنِ تَعِيرُ إِلَى هَذِهِ مَرَّةً وَإِلَى هَذِه مرّة» . رَوَاهُ مُسلم

57. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुनाफ़िक़ की मिसाल इस भ्रमित (कन्फ्यूज्ड) बकरी की तरह है जो दो झुंड के दरमियान हो कभी वह उसकी तरफ जाती है कभी उसकी तरफ”| (सहीह)

رواه مسلم (2784 / 17)، (7043)

कबीराह गुनाहों और निफाक की अलामतो का बयान • بَاب الْكَبَائِرِ وعلامات النِّفَاق

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٨ - (ضَعِيف) عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ قَالَ: قَالَ يَهُودِيٌّ لصَاحبه اذْهَبْ بِنَا إِلَى هَذَا النَّبِي فَقَالَ صَاحِبُهُ لَا تَقُلْ نَبِيٌّ إِنَّهُ لَوْ سَمِعَكَ كَانَ لَهُ أَرْبَعَة أَعْيُنٍ فَأَتَيَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَاهُ عَنْ تِسْعِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَقَالَ لَهُم: «لَا تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا تَسْرِقُوا وَلَا تَزْنُوا وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا تَمْشُوا بِبَرِيءٍ إِلَى ذِي سُلْطَانٍ لِيَقْتُلَهُ وَلَا تَسْحَرُوا وَلَا تَأْكُلُوا الرِّبَا وَلَا تَقْذِفُوا مُحصنَة وَلَا توَلّوا الْفِرَار يَوْمَ الزَّحْفِ وَعَلَيْكُمْ خَاصَّةً الْيَهُودَ أَنْ لَا تَعْتَدوا فِي السبت» . قَالَ فقبلوا يَده وَرجله فَقَالَا نَشْهَدُ أَنَّكَ نَبِيٌّ قَالَ فَمَا يَمْنَعُكُمْ أَنْ تتبعوني قَالُوا إِن دَاوُد دَعَا ربه أَن لَا يزَال فِي ذُرِّيَّتِهِ نَبِيٌّ وَإِنَّا نَخَافُ إِنْ تَبِعْنَاكَ أَنْ تَقْتُلَنَا الْيَهُودُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

58. सफवान बिन अस्साल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी यहूदी ने अपने साथी से कहा हमें इस नबी के पास ले चलो, तो उस ने अपने साथी से कहा: तुम नबी ना कहो: क्योंकि अगर उस ने तुम्हारी बात सुन ली तो वह बहोत खुश होगा, पस वह दोनों रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, तो उन्होंने वाज़ेह निशानियो के बारे में आप से दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाओ, न ज़िना करो, न किसी ऐसी जान को जिसका क़त्ल अल्लाह ने हराम करार दिया है और न किसी बेगुनाह शख़्स को किसी अधिकार वाले के पास ले जाओ के वह इसे क़त्ल कर दे, ना जादू करो ना सूद खाओ, पाक दामन औरत पर तोहमत न लगाओ, न लड़ाई के दिन मैदान ए जिहाद से पीठ फेर कर भागो, और तुम बिलखुसुस यहूद पर लाज़िम है के तुम हफ्ते के दिन के बारे में ज़्यादती न करो", रावी बयान करते हैं, इन दोनों ने आप ﷺ के हाथ और पाँव चूमे और कहा, हम गवाही देते हैं की आप ﷺ नबी है, आप ने फ़रमाया: "तो फिर कौन सी चीज़ तुम्हें मेरी इत्तेबा नहीं करने देती?" उन्होंने अर्ज़ किया: दाउद (अ) ने अपने रब से दुआ की थी के नबूवत का सिलसिला उसकी औलाद में जारी रहे, और हम डरते हैं की अगर हमने आप ﷺ की इत्तेबा कर ली तो यहूद हमें क़त्ल कर देंगे | (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2733 وقال : ھذا حدیث حسن صحیح ، 3144) و ابوداؤد (لم اجده) و النسائی (7 / 111 ح 4083) [و ابن ماجه (3705)] قلت : فیه عبدالله بن سلمة : حسن الحدیث علی الراجح

٥٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «ثَلَاث من أَصْلِ الْإِيمَانِ الْكَفُّ عَمَّنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا الله وَلَا نكفره بذنب وَلَا نخرجهُ من الْإِسْلَام بِعَمَل ص:٢ وَالْجِهَادُ مَاضٍ مُنْذُ بَعَثَنِي اللَّهُ إِلَى أَنْ يُقَاتل آخر أمتِي الدَّجَّالَ لَا يُبْطِلُهُ جَوْرُ جَائِرٍ وَلَا عَدْلُ عَادل وَالْإِيمَان بالأقدار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

59. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन (खसलते) ईमान की असल बुनियाद है (لَا إِلَهَ إِلَّا الله) (अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं)| का इकरार करने वाले शख़्स के दर पै होने से रुक जाना, किसी गुनाह या किसी और खिलाफे शरह अमल की वजह से किसी को इस्लाम से ख़ारिज मत करो, जिहाद जारी है, जब से अल्लाह ने मुझे मबउस फ़रमाया है, और यह इस वक़्त तक

जारी रहेगा जब इस उम्मत का आखिरी शख़्स दज्जाल से किताल करेगा,ना किसी ज़ालिम का जुल्म इसे रोक सकेगा न किसी आदिल का अदल और तकदीर पर ईमान रखना"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2532) * فيه يزيد بن ابى شيبة وهو مجهول

٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا زَنَى الْعَبْدُ خَرَجَ مِنْهُ الْإِيمَانُ فَكَانَ فَوْقَ رَأْسِهِ كَالظُّلَّةِ فَإِذا خرج من ذَلِك الْعَمَل عَاد إِلَيْهِ الايمان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

60. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब बंदा ज़िना करता है तो ईमान उस से निकल कर छत्री की तरह उस के सर पर हो जाता है, जब वह इस अमल से रुजू कर लेता है तो ईमान भी उसकी तरफ पलट आता है"। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (معلقًا بعد ح 2625) و ابوداؤد (4690) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين 1 / 22 و وافقه الذهبى]

بَاب الْكَبَائِر وعلامات النِّفَاق • कबीराह गुनाहों और निफाक की अलामतो का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ مُعَاذٍ قَالَ: أَوْصَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَشْرِ كَلِمَاتٍ قَالَ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ شَيْئًا وَإِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتُ وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَيْكَ وَإِنْ أَمَرَاكَ أَنْ تَخْرُجَ مِنْ أَهْلِكَ وَمَالِكَ وَلَا تَتْرُكَنَّ صَلَاةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّدًا فَإِنَّ مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مَكْتُوبَةً مُتَعَمِّدًا فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللَّهِ وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَإِنَّهُ رَأَس كُلِّ فَاحِشَةٍ وَإِيَّاكَ وَالْمَعْصِيَةَ فَإِنَّ بالمعصية حل سخط الله عز وَجل وَإِيَّاكَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَإِنْ هَلَكَ النَّاسُ وَإِذا أصَاب النَّاس موتان وَأَنت فيهم فَاثْبتْ وَأنْفق عَلَى عِيَالِكَ مِنْ طَوْلِكَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْهُمْ عَصَاكَ أَدَبًا وَأَخِفْهُمْ فِي اللَّهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ

61. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे दस चीजों का हुक्म देते हुए फ़रमाया: "अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाना ख्वाह तुझे क़त्ल कर दिया जाए और जला दिया जाए, वालिदेन की नाफ़रमानी न करना ख्वाह वह तुम्हें हुक्म दे की तू अपने अहल व माल से अलग हो जा, फ़र्ज़ नमाज़ जान बुझकर तर्क न करना, क्योंकि जिस ने जान बुझकर फ़र्ज़ नमाज़ तर्क कर दी तो उन से अल्लाह की अमान ख़त्म हो गई, शराब न पीना क्योंकि वह हर बेहयाई की बुनियाद है, नज़र अंदाज़गी से बचते रहना क्योंकि नज़र अंदाज़गी अल्लाह की नाराज़ी का बाईस बनती है, मैदान ए जिहाद से फरार न होना ख्वाह लोग हलाक हो जाए, जब लोग (ताऊन की वजह से) मौत का शिकार हो जाए और तुम उनमें मौजूद हो तो फिर वहीँ रहो, अपने इस्तिताअत के मुताबिक अपने माल में से अपने औलाद पर खर्च कर, अदब सिखाने

की खातिर उन से कोई समझोता न कर, (मारने की ज़रूरत पड़े तो मार) और अल्लाह के बारे में उन्हें डराते रहो”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (5 / 238 ح 22425) * سنده منقطع ، و للحديث شاهد مختصر عند ابن ماجه (4034 وهو حسن) وقوله :’’ وان امراک ان تخرج من اهلک و مالک ‘‘ لا شاهد له

٦٢ - (صَحِيح) وَعَن حُذَيْفَة قَالَ: إِنَّمَا كَانَ النِّفَاق عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَّا الْيَوْمَ فَإِنَّمَا هُوَ الْكفْر بعد الايمان. رَوَاهُ البُخَارِيّ

62. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, निफाक तो रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में था, जबकि अब तो कुफ्र है या ईमान है| (सहीह)

رواه البخاری (7114)

بَاب الوسوسة • वसवसो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا وَسْوَسَتْ بِهِ صُدُورُهَا مَا لم تعْمل بِهِ أَو تَتَكَلَّم»

63. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने मेरी उम्मत के दिलों में पैदा होने वाले वस्वसो से दरगुज़र फ़रमाया है जब तक वह उन के मुताबिक अमल न कर ले या बात न कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواه البخاری (2528) و مسلم (127 / 202)، (332)

٦٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلُوهُ: إِنَّا نَجِدُ فِي أَنْفُسِنَا مَا يَتَعَاظَمُ أَحَدُنَا أَنْ يَتَكَلَّمَ بِهِ. قَالَ: «أَو قد وجدتموه» قَالُوا: نعم. قَالَ: «ذَاك صَرِيح الْإِيمَان» . رَوَاهُ مُسلم

64. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के चंद सहाबा नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, तो उन्होंने आप से दरियाफ्त किया: हम अपने दिलों में ऐसे वसवसे पाते है की उन्हें बयान करना हम बहोत गिराह समझते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम भी ऐसा महसूस करते हो?' उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये तो वाज़ेह ईमान है"| (सहीह)

رواه مسلم (132 / 209)، (340)

٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ: مَنْ خلق كَذَا؟ مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ حَتَّى يَقُولَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا بَلَغَهُ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ وَلْيَنْتَهِ "

65. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शैतान तुम्हारे किसी शख़्स के पास आता है तो वह कहता है: उस को किस ने पैदा किया? उस को किसने पैदा किया? हत्ता कि कहता है तेरे रब को किसने पैदा किया है? पस जब तुम में से कोई इस हद तक पहुँच जाए तो वह अल्लाह की पनाह तलब करे और इस शैतानी ख्याल को छोड़ दे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3276) و اللفظ له ، و مسلم (134 / 214)، (345)

٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَزَالُ النَّاسُ يَتَسَاءَلُونَ حَتَّى يُقَالَ هَذَا خَلَقَ اللَّهُ الْخَلْقَ فَمَنْ خَلَقَ اللَّهَ؟ فَمَنْ وَجَدَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَلْيَقُلْ: آمنت بِاللَّهِ وَرُسُله "

66. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लोग आपस में सवाल करते रहेंगे हत्ता कि कहा जाएगा: इस मखलूक को तो अल्लाह ने पैदा फ़रमाया है, तो अल्लाह को किस ने पैदा किया है? पस जो इस तरह की सूरत महसूस करे तो वह कहे: मैं अल्लाह और उसके रसूलो पर ईमान लाया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7296 مختصرًا بذكر ابليس لعنه الله) و مسلم (213 ، 212 / 134)، (343 و 344)

٦٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا وَقَدْ وُكِّلَ بِهِ قَرِينُهُ مِنَ الْجِنِّ وَقَرِينُهُ مِنَ الْمَلَائِكَةِ. قَالُوا: وَإِيَّاكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: وَإِيَّايَ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَعَانَنِي عَلَيْهِ فَأَسْلَمَ فَلَا يَأْمُرُنِي إِلَّا بِخَيْرٍ ". رَوَاهُ مُسلم

67. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से हर शख़्स के साथ उस का एक जिन्न और एक फ़रिश्ता साथी मामूर कर दिया गया है", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ﷺ के साथ भी? आप ने फ़रमाया: "मेरे साथ भी, लेकिन अल्लाह ने उस के खिलाफ मेरी इआनत की तो वह मुतीअ हो गया, वह मुझे सिर्फ खैर व भलाई की बात ही कहता है"| (सहीह)

رواه مسلم (69 / 2814)، (7108)

٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنَ الانسان مجْرى الدَّم»

68. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शैतान इंसान में खून की तरह गर्दिश करता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2038) و مسلم (2175 / 24) كلاهما من حديث صفية به ، و مسلم (23 / 2174)، (5678 و 5679) من حديث انس رضى الله عنه فقط

٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ بَنِي آدَمَ مَوْلُودٌ إِلَّا يَمَسُّهُ الشَّيْطَانُ حِينَ يُولَدُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ مَسِّ الشَّيْطَانِ غَيْرَ مَرْيَمَ وَابْنِهَا»

69. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मरयम और उन के बेटे (इसा (अस)) के सिवा औलाद ए आदम के यहाँ पैदा होने वाले हर बच्चे को शैतान उसकी विलादत के वक़्त डंक मारता है तो वह चीख मारके रोता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3431) و مسلم (2366 / 145)، (6133)

٧٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صِيَاحُ الْمَوْلُودِ حِينَ يَقَعُ نَزْغَةٌ من الشَّيْطَان»

70. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब बच्चा पैदाइश के वक़्त चीखता है तो उस का यह चीखना शैतान के डंक की वजह से होता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (لم اجده ، وله عنده طريق آخر بغير هذا اللفظ : 4548) و مسلم (148 / 2367)، (6136)

٧١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ إِبْلِيسَ يَضَعُ عَرْشَهُ عَلَى المَاء ثمَّ يبْعَث سراياه فَأَدْنَاهُمْ مِنْهُ مَنْزِلَةً أَعْظَمُهُمْ فِتْنَةً يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ فَعَلْتُ كَذَا وَكَذَا فَيَقُولُ مَا صَنَعْتَ شَيْئًا قَالَ ثُمَّ يَجِيءُ أَحَدُهُمْ فَيَقُولُ مَا تَرَكْتُهُ حَتَّى فَرَّقْتُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ امْرَأَتِهِ قَالَ فَيُدْنِيهِ مِنْهُ وَيَقُولُ نَعَمْ أَنْتَ قَالَ الْأَعْمَشُ أرَاهُ قَالَ «فيلتزمه» . رَوَاهُ مُسلم

71. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शैतान अपना तख़्त पानी पर सजाता है, फिर वह अपने लश्करो को रवाना करता है, वह लोगों को गुमराह करते हैं, उनमें से उस का ज़्यादा मुकर्रब वह होता है, जो उनमें सबसे ज़्यादा गुमराहकुन हो, उनमें से एक आता है तो वह बताता है, मैंने यह यह किया, तो वह कहता है: तूने कुछ भी नहीं किया'', आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर उनमें से एक आता है तो वह कहता है: मैंने फलां का पीछा नहीं छोड़ा हत्ता कि मैंने उस के और उसकी बीवी के दरमियान जुदाई डाल दी'', आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो (शैतान) इसे अपने करीब कर लेता है और कहता है: "हाँ, तुम

बहोत खूब हो'', आमश बयान करते हैं, मेरा ख्याल है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तो वह शैतान इसे गले लगा लेता है"| (सहीह)

رواه مسلم (67 / 2813)، (7106)

٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِن الشَّيْطَان قد أيس أَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّونَ فِي جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَلَكِنَّ فِي التحريش بَينهم» . رَوَاهُ مُسلم

72. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "शैतान इस बात से मायूस हो चूका है की जज़ीरा अरब में नमाज़ी इस की पूजा करे, लकिन वह इन्हें आपस में लड़ाने की कोशिश करता रहेगा| (सहीह)

رواه مسلم (65 / 2812)، (7103)

वसवसो का बयान • بَاب الوسوسة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٧٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنِّي أُحَدِّثُ نَفْسِي بِالشَّيْءِ لَأَنْ أَكُونَ حُمَمَةً أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَتَكَلَّمَ بِهِ. قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي رَدَّ أَمْرَهُ إِلَى الْوَسْوَسَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

73. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया: मेरा दिल में कुछ ऐसा वसवसे पैदा होता है के इसे बयान करने से कोयला बन जाना मुझे ज़्यादा पसंद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह का शुक्र है जिस ने इस मुआमले को वसवसे में बदल दिया"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5112) [و النسائی فی الکبری (10503) و صححه ابن حبان (الموارد : 46)]

٧٤ - (ضَعِيف) وَعَن بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ لِلشَّيْطَانَ لَمَّةً بِابْنِ ص:٢ آدَمَ وَلِلْمَلَكِ لَمَّةً فَأَمَّا لَمَّةُ الشَّيْطَانَ فَإِيعَادٌ بِالشَّرِّ وَتَكْذِيبٌ بِالْحَقِّ وَأَمَّا لَمَّةُ الْمَلَكِ فَإِيعَادٌ بِالْخَيْرِ وَتَصْدِيقٌ بِالْحَقِّ فَمَنْ وَجَدَ ذَلِكَ فَلْيَعْلَمْ أَنَّهُ من الله فليحمد اللَّهَ وَمَنْ وَجَدَ الْأُخْرَى فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ثُمَّ قَرَأَ (الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ ويأمركم بالفحشاء)»» الْآيَة)»» أخرجه التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

74. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शैतान इब्ने आदम के दिल

में ख्याल डालता है और फ़रिश्ता भी ख्याल डालता है, रहा शैतान का वसवसे डालना तो वह शर और हक़ के झुठलाने का वादा देता है, रहा फ़रिश्ते का ख्याल डालना तो वह खैर और तस्दीक हक़ का वादा देता है, जो शख़्स इस तरह का ख्याल महसूस करे तो वह जान ले के यह अल्लाह की तरफ से है, पस वह अल्लाह का शुक्र अदा करे और जो शख़्स दूसरा ख्याल पाए तो वह शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह तलब करे, फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई." शैतान तुम्हें मुफलिसी का वादा देता है और बुरे काम की तरगीब व हुक्म देता है"| तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2988) [و النسائی فی الکبری (11051 / التفسیر :71) و ابن حبان (الموارد : 40)] * عطاء بن السائب اختلط و الراوی عنه بعد اختلاطه (انظر النکواکب النیرات وغیره) و الحدیث : اخرجه الطبری فی تفسیره (3 / 59) بسند حسن عن عبدالله (بن مسعود) رضی الله عنه من قوله وهو الصواب و للموقوف شواهد وله حکم الرفع

٧٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: " لَا يَزَالُ النَّاسُ يَتَسَاءَلُونَ حَتَّى يُقَالَ: هَذَا خَلَقَ اللَّهُ الْخَلْقَ فَمَنْ خَلَقَ اللَّهَ؟ فَإِذَا قَالُوا ذَلِك فقولُوا الله أحد الله الصَّمد لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كفوا أحد ثمَّ ليتفل عَن يسَاره ثَلَاثًا وليستعذ من الشَّيْطَان ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

75. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ने फ़रमाया: "लोग एक दूसरे से सवाल करते रहेंगे हत्ता कि यूँ भी कहा जाएगा: इस मखलूक को तो अल्लाह ने तखलीक किया, तो अल्लाह को किस ने पैदा किया? जब वह यह कहे तो तुम कहना अल्लाह यकता है, अल्लाह बेनियाज़ है, उसकी ना औलाद है न वालिदेन और न कोई उस का हमसर है, फिर तीन मर्तबा अपने बाएँ जानिब थूक दे, और शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह तलब करे"| अबू दावुद, और हम अम्र बिन अह्व से मरवी हदीस इंशाअल्लाह बाब खुतबा यौम उल नहर में ज़िक्र करेंगे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4723 ، 4721) و اللفظ مرکب [و النسائی فی الکبری (10497 ، و عمل الیوم و اللیلة : 661)] 0 حدیث عمرو بن الاحوص یاتی (2670)

वसवसो का बयान • بَاب الوسوسة
तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٧٦ - (صَحِيح) عَن أنس بن مَالك يَقُول قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَنْ يَبْرَحَ النَّاسُ يَتَسَاءَلُونَ حَتَّى يَقُولُوا هَذَا الله خَالق كل شَيْء فَمن خلق الله» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَلِمُسْلِمٍ: " قَالَ: قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجل: إِن أمتك لَا يزالون يَقُولُونَ: مَا كَذَا؟ مَا كَذَا؟ حَتَّى يَقُولُوا: هَذَا اللَّهُ خَلَقَ الْخَلْقَ فَمَنْ خَلَقَ اللَّهَ عَزَّ وَجل؟ "

76. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोग एक दूसरे से सवाल करते रहेंगे हत्ता कि वह कहेंगे, इन सब चीजों को अल्लाह ने पैदा फ़रमाया, तो फिर अल्लाह अज्ज़वजल को किस ने पैदा किया? इसे बुखारी ने रिवायत किया | # और मुस्लिम की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अज्ज़वजल ने फ़रमाया: आप की उम्मत के लोग इस तरह कहते रहेंगे, यह क्या है? इसे क्यों पैदा किया है? हत्ता कि वह कहेंगे इस मखलूक को तो अल्लाह ने पैदा फ़रमाया तो फिर अल्लाह अज्ज़वजल को किस ने पैदा किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7296) و مسلم (217 / 136)، (351)

٧٧ - (صَحِيح) عَن عُثْمَان بن أبي الْعَاصِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ حَالَ بيني وَبَين صَلَاتي وقراءتي يُلَبِّسُهَا عَلَيَّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاكَ شَيْطَانٌ يُقَالُ لَهُ خِنْزِبٌ فَإِذَا أَحْسَسْتَهُ فَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْهُ وَاتْفُلْ عَلَى يسارك ثَلَاثًا قَالَ فَفَعَلْتُ ذَلِكَ فَأَذْهَبَهُ اللَّهُ عَنِّي» . رَوَاهُ مَسْلِمٌ

77. उस्मान बिन अबिल आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ! बेशक शैतान मेरे, मेरी नमाज़ और मेरी किराअत के दरमियान हाइल हो जाता है और वह नमाज़ को मुझ पर मुल्ताबिस कर देता है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शैतान है उसे खंज़ब कहा जाता है, पस जब तुम महसूस करो तो उस से अल्लाह की पनाह तलब करो और तीन बार अपने बाएँ जानिब थूक दो”, (वो बयान करते हैं) पस मैंने ऐसे किया तो अल्लाह ने इसे मुझ से दूर कर दिया”| (सहीह)

رواه مسلم (68 / 2203)، (5738)

٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَهُ فَقَالَ: «إِنِّي أهم فِي صَلَاتي فيكثر ذَلِك عَليّ فَقَالَ الْقَاسِم بن مُحَمَّد امْضِ فِي صَلَاتك فَإِنَّهُ لن يذهب عَنْكَ حَتَّى تَنْصَرِفَ وَأَنْتَ تَقُولُ مَا أَتْمَمْتُ صَلَاتي» . رَوَاهُ مَالك

78. कासिम बिन मुहम्मद से रिवायत है के किसी आदमी ने उन से मसअला दरियाफ्त किया तो कहा: नमाज़ में मेरा ख्याल किसी दूसरी तरफ चला जाता है, और अक्सर ऐसा होता है, तो उन्होंने कहा: अपने नमाज़ जारी रखो, क्योंकि तुम्हारे नमाज़ से फारिग़ होने तक यह आते रहेंगे, और (नमाज़ के इख्तिताम) पर तुम कहोगे: मैंने अपनी नमाज़ मुकम्मल नहीं की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک فی الموطا (1 / 100 ح 222) * هذا من البلاغات ، لم اجد له سندًا صحيحًا ولا حسنًا

तकदीर पर ईमान लाने का बयान • بَاب الْإِيمَان بِالْقدرِ

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٧٩ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَتَبَ اللَّهُ مقادير الْخَلَائق قبل أَن يخلق السَّمَوَات وَالْأَرْض بِخَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ» قَالَ: «وَكَانَ عَرْشُهُ على المَاء» . رَوَاهُ مُسلم

79. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने ज़मीन व आसमान की तखलीक से पचास हज़ार साल पहले मखलूक की तकदीर लिखी, और उस का अर्श पानी पर था”। (सहीह)

رواه مسلم (16 / 2653)، (6748) [و الخطيب فی تاريخ بغداد (2 / 252)]

٨٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ شَيْءٍ بِقَدَرٍ حَتَّى الْعَجز والكيس» . رَوَاهُ مُسلم

80. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर चीज़ हत्ता कि आजिज़ी व दानाई तकदीर के मुताबिक है”। (सहीह)

رواه مسلم (18 / 2655)، (6751)

٨١ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى عَلَيْهِمَا السَّلَام عِنْدَ رَبِّهِمَا فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى قَالَ مُوسَى أَنْتَ آدَمُ الَّذِي خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلَائِكَتَهُ وَأَسْكَنَكَ فِي جَنَّتِهِ ثُمَّ أَهَبَطْتَ النَّاسَ بِخَطِيئَتِكَ إِلَى الأَرْض فَقَالَ آدَمُ أَنْتَ مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللَّهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلَامِهِ وَأَعْطَاكَ الْأَلْوَاحَ فِيهَا تِبْيَانُ كُلِّ شَيْءٍ وَقَرَّبَكَ نَجِيًّا فَبِكَمْ وَجَدْتَ اللَّهِ كَتَبَ التَّوْرَاةَ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ قَالَ مُوسَى بِأَرْبَعِينَ عَامًا قَالَ آدَمُ فَهَلْ وَجَدْتَ فِيهَا (وَعَصَى آدَمُ ربه فغوى)»» قَالَ نَعَمْ قَالَ أَفَتَلُومُنِي عَلَى أَنْ عَمِلْتُ عَمَلًا كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيَّ أَنْ أَعْمَلَهُ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي بِأَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى» . رَوَاهُ مُسلم

81. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदम और मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने रब के यहाँ मुनाज़रा व मुबाह्शा किया, तो आदम (अस), मूसा अलैहिस्सलाम पर ग़ालिब रहे, मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: आप आदम अलैहिस्सलाम है जिन्हें अल्लाह ने अपने हाथ से तखलीक फ़रमाया, उस में अपनी रूह फूंकी, अपने फरिश्तो से आप को सजदाह कराया, आप को अपनी जन्नत में बसाया फिर आप ने अपनी गलती से लोगों को ज़मीन पर उतारा, आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: आप मूसा अलैहिस्सलाम है जिन्हें अल्लाह ने अपनी रिसालत और अपने कलाम के लिए मुन्तखब फ़रमाया, आप को तख्तिया अता की जिन में हर चिज़ का बयान है, आप को किसी वास्ते के बगैर सरगोशी

का सोभाग्य (सम्मान) बख्शा, आप के ख्याल में मेरी तखलीक से कितना अरसा कबल अल्लाह तआला ने तौरात लिखी होगी? मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: चालीस बरस, आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्या आप ने उस में यह चीज़ भी पाई: आदम अलैहिस्सलाम ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह भटक गए? उन्होंने ने फ़रमाया: जी हाँ, आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्या आप मुझे ऐसे अमल करने पर मलामत करते हैं जिस का करना अल्लाह ने मुझे पैदा करने से भी चालीस बरस पहले मुझ पर लाज़िम कर दिया था", रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आदम अलैहिस्सलाम मूसा अलैहिस्सलाम पर ग़ालिब गए''| (सहीह)

رواه مسلم (15 / 2652)، (6744) [و البخاری (6614 وغیرہ) مختصرًا]

٨٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عبد الله بن مَسْعُود قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ الصَّادِق المصدوق: «إِن أحدكُم يجمع خلقه فِي بطن أمه أَرْبَعِينَ يَوْمًا ثمَّ يكون فِي ذَلِك علقَة مثل ذَلِك ثمَّ يكون فِي ذَلِك مُضْغَة مثل ذَلِك ثمَّ يُرْسل الْملك فينفخ فِيهِ الرّوح وَيُؤمر بِأَرْبَع كَلِمَات بكتب رزقه وأجله وَعَمله وشقي أَو سعيد فوالذي لَا إِلَه غَيره إِن أحدكُم لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُهَا وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا»

82. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जो के सच्चे और मुखलिस है, फ़रमाया: "तुम में से हर एक की तखलीक उसकी माँ के पेट में इस तरह मुकम्मल की जाती है के वह चालीस रोज़ तक नुत्फा रहता है, फिर इतनी मुद्दत जमा हुआ खून रहता है, फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त का लोथड़ा रहता है, फिर अल्लाह चार बाते लिखने के लिए उसकी तरफ एक फ़रिश्ता भेजता है, पस वह उस का अमल, उसकी उमर, उस का रिज़क़ और उस का बदनसीब या सआदत मंद होना लिखता है, फिर उस में रूह फूंक दी जाती है, पस उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, बेशक तुम में से कोई शख़्स अहल ए जन्नत के से अमल करता रहता है, हत्ता कि उस के और जन्नत के दरमियान में सिर्फ एक हाथ का फासला रह जाता है, तो वह लिखी हुई तकदीर उस पर ग़ालिब आ जाती है तो वह जहन्नुमियो का सा कोई अमल कर बैठता है, तो वह उस में दाखिल हो जाता है, और (इसी तरह) तुम में से कोई जहन्नुमियो के से अमल करता रहता है, हत्ता कि उस के और जहन्नम के दरमियान सिर्फ एक हाथ का फासला रह जाता है, तो वह लिखी हुई तकदीर उस पर ग़ालिब जाती है और वह अहल ए जन्नत का सा अमल कर लेता है, तो वह उस में दाखिल हो जाता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6594) و مسلم (1 / 2643)، (6723) [و ابوداؤد (4708)]

٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن سهل بن سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ وَإِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّة وَإِنَّهُ من أهل النَّار وَإِنَّمَا الْعمَّال بالخواتيم»

83. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ′′ बंदा जहन्नुमियो के से अमल करता रहता है हालांकि वह जन्नती होता है, दूसरा आदमी जन्नतियो वाले अमल करता रहता है,

हालाँकि वह जहन्नमी होता है, आमाल तो वह काबिले एतबार है जो आखिरी है” | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6607 و اللفظ له) و مسلم (179 / 112)، (306)

٨٤ - (صَحِيح) عَن عَائِشَة أم الْمُؤمنِينَ قَالَتْ: «دُعِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى جِنَازَةِ صَبِيٍّ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ طُوبَى لِهَذَا عُصْفُورٌ مِنْ عَصَافِيرِ الْجَنَّةِ لَمْ يَعْمَلِ السُّوءَ وَلَمْ يُدْرِكْهُ قَالَ أَوَ غَيْرُ ذَلِكِ يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ لِلْجَنَّةِ أَهْلًا خَلَقَهُمْ لَهَا وَهُمْ فِي أَصْلَابِ آبَائِهِمْ وَخَلَقَ لِلنَّارِ أَهْلًا خَلَقَهُمْ لَهَا وهم فِي أصلاب آبَائِهِم» . رَوَاهُ مُسلم

84. आइशा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसुलुल्लाह ﷺ को एक अंसारी बच्चे के जनाज़े की दावत दी गई, तो मैंने कहा: अल्लाह के रसूल! जन्नत की इस चिड़िया के लिए बशारत है, इस ने कोई बुराई की ना इस का वक़्त पाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: आइशा! क्या इसी के अलावा कोई बात है, बेशक अल्लाह ने जन्नत के लिए कुछ लोग पैदा फरमाए, उन्हें जन्नत ही के लिए पैदा फ़रमाया, जबकि वह अपने आबाओ के पुष्ट मैं थे और (इसी तरह) जहन्नम के लिए कुछ लोग पैदा किए, उन्हें जहन्नम ही के लिए पैदा फ़रमाया जबकि वह अपने आबाओ के सलब में थे| (सहीह)

رواه مسلم (31 / 2662)، (6768)

٨٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عَليّ رَضِي الله عَنهُ قَالَ كُنَّا فِي جَنَازَة فِي بَقِيع الْغَرْقَد فَأَتَانَا النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقعدَ وقعدنا حوله وَمَعَهُ مخصرة فَنَكس فَجعل ينكت بمخصرته ثمَّ قَالَ مَا مِنْكُم من أحد مَا من نفس منفوسة إِلَّا كتب مَكَانهَا من الْجنَّة وَالنَّار وَإِلَّا قد كتب شقية أَو سعيدة فَقَالَ رجل يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا نَتَّكِلُ عَلَى كِتَابِنَا وَنَدع الْعَمَل فَمن كَانَ منا من أهل السَّعَادَة فسيصير إِلَى عمل أهل السَّعَادَة وَأما من كَانَ منا من أهل الشقاوة فسيصير إِلَى عمل أهل الشقاوة قَالَ أما أهل السَّعَادَة فييسرون لعمل السَّعَادَة وَأما أهل الشقاوة فييسرون لِعَمَلِ الشَّقَاوَةِ ثُمَّ قَرَأَ ص:٣ (فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصدق بِالْحُسْنَى)»» الْآيَة

85. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से हर एक की जहन्नम में और जन्नत में जगह लिख दी गई है”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम फिर अपने लिखी हुई तकदीर पर भरोसा कर ले और अमल करना छोड़ दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अमल करते रहो, हर एक को जिसके लिए इसे पैदा किया गया है, मयस्सर कर दिया जाता है, जो शख़्स सआदतमंदो में से होगा तो उस के लिए अहले सआदत के अमल आसान कर दिए जाएँगे और जो शख़्स बदनसीबो में से हुआ तो उस के लिए बदनसीबी वाले अमल आसान कर दिए जाएँगे, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “जिस किसी ने अल्लाह की राह में दिया और डरता रहा और अच्छी बात की तस्दीक की तो हम बहोत जल्द उस के लिए नेकी की राहे आसान कर देंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1362) و مسلم (6 / 2647)، (6731) [و البیهقی فی کتاب القضاء و القدر (47)]

٨٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَا أَدْرَكَ ذَلِكَ لَا مَحَالَةَ فَزِنَا الْعَيْنِ النَّظَرُ وَزِنَا اللِّسَانِ الْمَنْطِقُ وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي وَالْفَرْجُ يصدق ذَلِك كُله ويكذبه»»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «كُتِبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ نَصِيبُهُ مِنَ الزِّنَا مُدْرِكٌ ذَلِكَ لَا مَحَالة فالعينان زِنَاهُمَا النَّظَرُ وَالْأُذُنَانِ زِنَاهُمَا الِاسْتِمَاعُ وَاللِّسَانُ زِنَاهُ الْكَلَامُ وَالْيَدُ زِنَاهَا الْبَطْشُ وَالرِّجْلُ زِنَاهَا الْخُطَا وَالْقَلْبُ يَهْوَى وَيَتَمَنَّى وَيُصَدِّقُ ذَلِكَ الْفَرْجُ وَيُكَذِّبُهُ»

86. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने औलाद ए आदम पर उस के ज़िना का हिस्सा लिख दिया है, जिसे वह ज़रूर पा कर रहेगा, आँख का ज़िना देखना है, जुबान का ज़िना बोलना है, जबकि नफ्स तमन्ना और आरज़ू करता है, और शर्मगाह उसकी तस्दीक या तकज़ीब करती है”| और मुस्लिम की रिवायत में है: “अल्लाह ने इब्ने आदम पर उस के ज़िना का हिस्सा लिख दिया है, जिसे वह ज़रूर पा कर रहेगा, आँख का ज़िना देखना है, कानों का ज़िना सुनना है, जुबान का ज़िना बात करना है, हाथ का ज़िना पकड़ना है, टांग का ज़िना चल कर जाना है, जबकि नफ्स तमन्ना और आरज़ू करता है और शर्मगाह उसकी तस्दीक या तकज़ीब करती है” | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6612 ، 6243) و مسلم (20 / 2657)، (6754)

٨٧ - (صَحِيح) وَعَن عمرَان بن حضين: إِن رجلَيْنِ من مزينة أَتَيَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَا يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ مَا يَعْمَلُ النَّاسُ الْيَوْمَ وَيَكْدَحُونَ فِيهِ أَشِيءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ وَمَضَى فيهم من قدر قد سَبَقَ أَوْ فِيمَا يَسْتَقْبِلُونَ بِهِ مِمَّا أَتَاهُمْ بِهِ نَبِيُّهُمْ وَثَبَتَتِ الْحُجَّةُ عَلَيْهِمْ فَقَالَ لَا بَلْ شَيْءٌ قُضِيَ عَلَيْهِمْ وَمَضَى فِيهِمْ وَتَصْدِيقُ ذَلِكَ فِي كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ (وَنَفْسٍ وَمَا سواهَا فألهمها فجورها وتقواها)»» رَوَاهُ مُسلم

87. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के मज़िना कबिले के दो आदमियों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! लोग जो आज अमल कर रहे हैं और उस के लिए मेहनत व कोशिश कर रहे हैं, क्या यह ऐसी चीज़ है जिस का फैसला किया जा चुका है और पहले से जो तकदीर है के नाफ़िज़ हो चुकी है, या वह इस चीज़ की तरफ जा रहे हैं जो उन के नबी उन के पास लेकर आए और उन के खिलाफ हुज्जत कायम की? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि यह एक ऐसी चीज़ है जिस का उन के मुतल्लिक फैसला हो चूका है और इन के बारे में नाफ़िज़ हो चुकी, और उसकी तस्दीक अल्लाह अज्ज़वजल की किताब में है: “और नफ्स की क़सम और उसकी जो कुछ उस ने दुरुस्त किया, फिर बदकारी और परहेज़गारी दोनों की इसे समझ अता की”| (सहीह)

رواه مسلم (10 / 2650)، (6739)

٨٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي رَجُلٌ شَابٌّ وَأَنَا أَخَافُ عَلَى نَفْسِي الْعَنَتَ وَلَا أَجِدُ مَا أَتَزَوَّجُ بِهِ النِّسَاءَ كَأَنَّهُ يَسْتَأْذِنُهُ فِي الِاخْتِصَاءِ قَالَ: فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا هُرَيْرَةَ جَفَّ الْقَلَمُ بِمَا أَنْتَ لَاقٍ فَاخْتَصِ ص:٣ على ذَلِك أَو ذَر» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

88. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं जवान आदमी हूँ और मुझे अपने मुतल्लिक ज़िना का अंदेशा है, जबकि मेरे पास शादी करने के लिए कुछ भी नहीं, गोया के वह आप से खस्सी होने की इजाज़त तलब करते हैं, रावी बयान करते हैं, आप ने मुझे कोई जवाब न दिया, फिर मैंने वही बात अर्ज़ की, आप फिर ख़ामोश रहे, मैंने फिर वही अर्ज़ किया, आप फिर ख़ामोश रहे, कोई जवाब न दिया, मैंने फिर वही बात अर्ज़ की तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अबू हुरैरा तुमने जो कुछ करना है या तुम्हारे साथ जो कुछ होना है उस के मुतल्लिक कलम लिख कर खुश्क हो चूका, अब उस के बावजूद तुम खस्सी हो जाओ या छोड़ दो”| (सहीह)

رواه البخارى (5076)

٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَقُول إِنَّ قُلُوبَ بَنِي آدَمَ كُلَّهَا بَيْنَ أُصْبُعَيْنِ من أَصَابِعِ الرَّحْمَن كقلب وَاحِد يصرفهُ حَيْثُ يَشَاءُ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الله مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ صَرِّفْ قُلُوبَنَا عَلَى طَاعَتِكَ» . رَوَاهُ مُسلم

89. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औलाद ए आदम के तमाम कुलूब, कल्बे वाहिद (अकेले दिल) की तरह रहमान की दो उंगलियों में है, वह जिसे चाहता है उसे बदलता रहता है”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह दिलों को फेरने वाले हमारे दिलों को अपने इताअत पर फेर देना (यानी साबित कदम)”| (सहीह)

رواه مسلم (17 / 2654)، (6750)

٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ كَانَ يحدث قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ ثُمَّ يَقُول أَبُو هُرَيْرَة رَضِي الله عَنهُ (فطْرَة الله الَّتِي فطر النَّاس عَلَيْهَا)»» الْآيَة»

90. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर पैदा होने वाला बच्चा फितरत (इस्लाम) पर पैदा किया जाता है, पस उस के वालिदेन इसे यहूदी बना देते है, या इसे नसरानी बना देते है, या इसे मजूसी बना देते है, जैसे जानवर सहीह सालिम जानवर को जन्म देता है, क्या तुम उस में से किसी का कान कटा हुआ महसूस करते हो? फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी: “ये वह फितरत है, जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है, और अल्लाह की इस बनाई हुई चीज़ में कोई तबदीली न करो यही दुरुस्त दीन है” | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1358) و مسلم (22 / 2658)، (6755)

٩١ - (صَحِيح) وَعَن أبي مُوسَى قَالَ قَامَ فِينَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِخَمْسِ كَلِمَاتٍ فَقَالَ: «إِنَّ اللَّهَ عز وَجل لَا

يَنَامُ وَلَا يَنْبَغِي لَهُ أَنْ يَنَامَ يَخْفِضُ الْقِسْطَ وَيَرْفَعُهُ يُرْفَعُ إِلَيْهِ عَمَلُ اللَّيْلِ قَبْلَ عَمَلِ النَّهَارِ وَعَمَلُ النَّهَارِ قَبْلَ عَمَلِ اللَّيْل حجابه النُّور» . رَوَاهُ مُسلم

91. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने खड़े हो कर हमें पांच चीजों के मुतल्लिक खबर देते हुए फ़रमाया: “बेशक अल्लाह न सोता है न यह उसकी शान के लायक है के वह सो जाए, वह मीज़ान को ऊपर नीचे करता रहता है, रात का अमल दिन के अमल से पहले और दिन का अमल रात के अमल से पहले, उसकी तरफ पहुंचा दिया जाता है, उस का हिजाब नूर है, अगर वह इस हिजाब को उठा दे तो उस के चेहरे के अनवार वहां तक इस मखलूक को जला दे जहाँ तक उसकी निगाह पहुँचती है”। (सहीह)

رواه مسلم (293 / 179)، (445)

٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَدُ اللَّهِ مَلْأَى لَا تَغِيضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُذْ خَلَقَ السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ؟ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ وَبِيَدِهِ الْمِيزَانُ يَخْفِضُ وَيرْفَع» ص:٣»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «يَمِينُ اللَّهِ مَلْأَى قَالَ ابْنُ نُمَيْرٍ مَلْآنُ سَحَّاءُ لَا يُغِيضُهَا شَيْءٌ اللَّيْل والنهار»

92. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह का हाथ भरा हुआ है, रात दिन की सखावत इसे कम नहीं करती, तुमने देखा के उस ने ज़मीन व आसमान की तखलीक के वक्त से जो खर्च किया उस ने उस के हाथ के खज़ाने में कोई कमी नहीं की और उस का अर्श पानी पर है और मीज़ान उस के हाथ में है वह इसे पस्त करता और बुलंद करता है”। # और मुस्लिम की रिवायत में है: “अल्लाह का दायाँ हाथ भरा हुआ है”, इब्ने नमीर ने कहा: “दोनों हाथ भरे हुए हैं रात और दिन की सखावत उसमें कोई कमी नहीं करती‘’। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4684) و مسلم (37 / 993)، (2308 و 2309)0 یمین الله ملای الخ ، رواه مسلم (36 / 993)

٩٣ - وَعَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَرَّارِيِّ الْمُشْرِكِينَ قَالَ: «اللَّهُ أعلم بِمَا كَانُوا عاملين»

93. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से मुशरिकीन की औलाद के बारे में दरियाफ्त किया गया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन के आमाल के मुतल्लिक अल्लाह बेहतर जानता है”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1384) و مسلم (27 / 2659)، (6763)

بَاب الْإِيمَان بِالْقدرِ • तकदीर पर ईमान लाने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٩٤ - (ضَعِيف) وَعَن عبَادَة بن الصَّامِت قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول «إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللَّهُ الْقَلَمُ فَقَالَ اكْتُبْ فَقَالَ مَا أَكْتُبُ قَالَ اكْتُبِ الْقَدَرَ مَا كَانَ وَمَا هُوَ كَائِنٌ إِلَى الْأَبَدِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا

94. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने सबसे पहले कलम को पैदा फ़रमाया तो उसे फ़रमाया: “लिखो उस ने अर्ज़ किया, क्या लिखू? फ़रमाया : तकदीर लिखो उस ने जो कुछ हो चूका था और जो कुछ होना था सब लिख दिया”| तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया, यह हदीस सनद के लिहाज़ से ग़रीब है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3319 وقال : حسن غریب ، 2155) * و للحدیث المرفوع طرق وھو بھا صحیح روی ابو یعلی فی مسندہ عن ابن عباس عن النبی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم قال : ان اول شئی خلقه اللہ القلم و امرہ فکتب کل شی ، (2329 و اسندہ صحیح)

٩٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُسلم بن يسَار قَالَ سُئِلَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ هَذِهِ الْآيَةِ (وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ)»» قَالَ عُمَرُ ص:٣ بْنُ الْخَطَّابِ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يسْأَل عَنْهَا فَقَالَ: «خلق آدم ثمَّ مسح ظَهره بِيَمِينِهِ فأستخرج مِنْهُ ذُرِّيَّةً فَقَالَ خَلَقْتُ هَؤُلَاءِ لِلْجَنَّةِ وَبِعَمَلِ أهل الْجنَّة يعْملُونَ ثمَّ مسح ظَهره فَاسْتَخْرَجَ مِنْهُ ذُرِّيَّةً فَقَالَ خَلَقْتُ هَؤُلَاءِ لِلنَّارِ وبعمل أهل النَّار يعْملُونَ فَقَالَ رجل يَا رَسُول الله فَفِيمَ الْعَمَل يَا رَسُول الله قَالَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ اللَّهَ إِذَا خَلَقَ الْعَبْدَ لِلْجَنَّةِ اسْتَعْمَلَهُ بِعَمَلِ أهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَمُوتَ عَلَى عَمَلٍ من أَعمال أهل الْجنَّة فيدخله الله الْجَنَّةَ وَإِذَا خَلَقَ الْعَبْدَ لِلنَّارِ اسْتَعْمَلَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى يَمُوتَ عَلَى عَمَلٍ مِنْ أَعمال أهل النَّار فيدخله الله النَّار» . رَوَاهُ مَالك وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

95. मुस्लिम बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से इस आयत के बारे में पूछा गया: “जब तेरे रब ने बनी आदम की पुश्त से उनकी औलाद को पैदा किया”, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को जब उन से इस आयत के बारे में दरियाफ्त किया गया तो फरमाते हुए सुना: “बेशक अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, फिर अपना दायाँ हाथ उनकी पुश्त पर फेरा तो उन से कुछ औलाद निकाली और फ़रमाया मैंने उन्हें जन्नत के लिए पैदा किया है और वह अहल ए जन्नत के से अमल करेंगे, फिर उनकी पुश्त पर हाथ फेरा तो उन से कुछ औलाद निकाली तो फ़रमाया मैंने उन्हें जहन्नम के लिए पैदा किया है, और वह अहल ए जहन्नम से अमल करेंगे, (ये सुन कर) किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! तो फिर अमल किस लिए करना है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह किसी बंदे को जन्नत के लिए पैदा फरमाता है तो इसे अहल ए जन्नत के आमाल पर लगा देता है, हत्ता कि वह अहल ए जन्नत के से आमाल पर ही फौत होता है, अल्लाह तआला इस वजह से इसे जन्नत में दाखिल फरमा देता है, और जब वह किसी बंदे को जहन्नम के लिए पैदा फरमाता है तो इसे जहन्नुमियो वाले आमाल पर लगा देता है, हत्ता कि वह जहन्नुमियो वाले आमाल पर ही फौत होता है, तो वह

इस वजह से उस को जहन्नम में दाखिल कर देता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه مالك فى الموطا (2 / 898 ح 1726) و الترمذى (3075 وقال : حسن و مسلم [بن يسار] لم يسمع من عمر) و ابوداؤد (4703) [و البغوى فى شرح السنة (1 / 138 ، 139 ح 77)] * مسلم بن يسار سمعه من نعيم بن ربيعة وهو رجل مجهول ، وثقه ابن حبان وحده و لبعض الحديث شواهد معنوية : انظر الاستذكار (8 / 261)

٩٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي يَده كِتَابَانِ فَقَالَ: «أَتَدْرُونَ مَا هَذَانِ الكتابان فَقُلْنَا لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا أَنْ تُخْبِرَنَا فَقَالَ لِلَّذِي فِي يَدِهِ الْيُمْنَى هَذَا كِتَابٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ فِيهِ أَسْمَاءُ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَأَسْمَاء آبَائِهِم وقبائلهم ثمَّ أجمل على آخِرهم فَلَا يُزَادُ فِيهِمْ وَلَا يُنْقَصُ مِنْهُمْ أَبَدًا ثُمَّ قَالَ لِلَّذِي فِي شِمَالِهِ هَذَا كِتَابٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ فِيهِ أَسْمَاءُ أَهْلِ النَّارِ وَأَسْمَاء آبَائِهِم وقبائلهم ثمَّ أجمل على آخِرهم فَلَا يُزَادُ فِيهِمْ وَلَا يُنْقَصُ مِنْهُمْ أَبَدًا فَقَالَ أَصْحَابُهُ فَفِيمَ الْعَمَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنْ كَانَ أَمْرٌ قَدْ فُرِغَ مِنْهُ فَقَالَ سَدِّدُوا وَقَارِبُوا فَإِنَّ صَاحِبَ الْجَنَّةِ يُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنْ عَمِلَ أَيَّ عَمَلٍ وَإِنَّ صَاحِبَ النَّارِ يُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ وَإِنْ عَمِلَ أَيَّ عَمَلٍ ص:٣ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدَيْهِ فَنَبَذَهُمَا ثُمَّ قَالَ فَرَغَ رَبُّكُمْ مِنَ الْعِبَادِ فريق فِي الْجنَّة وفريق فِي السعير» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ صَحِيح

96. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ के हाथो में दो किताबे थी, आप ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के यह दो किताबे क्या है?‘‘ हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! जब तक आप न बताए, हम नहीं जानते, तो आप ﷺ ने अपने दाएँ हाथ वाली किताब के बारे में फ़रमाया: “ये किताब रब्बुल आलमीन की तरफ से है, उस में जन्नतियो, उन के आबाअ और उन के क़बीलो के नाम है, फिर उन के आख़िर पर पूरा हिसाब कर दिया गया है, लिहाज़ा उनमें कोई कमी बेशी नहीं की जा सकती”, फिर आप ने अपनी बाएँ हाथ वाली किताब के बारे में फ़रमाया: “ये किताब रब्बुल आलमीन की तरफ से है उस में जह्न्नुमियो, उन के आबाअ और उन के क़बीलो के नाम है, फिर उन के आख़िर पर पूरा हिसाब कर दिया गया है, लिहाज़ा उस में कोई कमी बेशी नहीं की जा सकती”, तो आप के सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जब फैसला हो चुका है तो फिर अमल किस लिए करना है? आप ने फ़रमाया: “मियाने रिवाय से दुरुस्त आमाल करते रहो, क्योंकि जन्नती शख़्स से आखिरी अमल जन्नतियो वाला कराया जाएगा, अगरचे पहले उस ने कैसे भी अमल किए हो, और जहन्नमी से आखिरी अमल जह्न्नुमियो वाला कराया जाएगा ख्वाह उस से पहले उस ने कैसे भी अमल किए हो”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथो से वह किताबे रख कर फ़रमाया: “तुम्हारा रब बंदो (के मुआमले) से फारिग़ हो चूका, पस एक गिरोह जन्नत में और एक गिरोह जहन्नम में जाएगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2141 وقال : هذا حديث حسن صحيح غريب)

٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي خزامة عَن أَبِيه قَالَ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ رُقًى نَسْتَرْقِيهَا وَدَوَاءً نَتَدَاوَى بِهِ وَتُقَاةً نَتَّقِيهَا هَلْ تَرُدُّ مِنْ قَدَرِ اللَّهِ شَيْئًا قَالَ: «هِيَ مِنْ قَدَرِ الله» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

97. अबू खुज़ामा अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! रहनुमाई फरमाइए, दम, जिसके ज़रिए हम दम कराते है, दवाई, जिसके ज़रिए हम इलाज करते हैं, और बचाव की चीज़े (मसलन ढाल वगैरा) जिन के ज़रिए हम बचाव करते हैं, क्या यह अल्लाह की तकदीर से कुछ रोक सकती है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो असबाब इख़्तियार करना भी अल्लाह की तकदीर में से है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (3 / 421 ح 1555115554) و الترمذى (2065 وقال : هذا حديث حسن) و ابن ماجه (3437) * ابن ابى خزامة مجهول الحال ، وثقه الترمذى وحده و لبعض الحديث شواهد ، انظر الحديث الآتى (99)

٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وَنَحْنُ نَتَنَازَعُ فِي الْقَدَرِ فَغَضِبَ حَتَّى احْمَرَّ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّمَا فُقِئَ فِي وجنتيه الرُّمَّانِ فَقَالَ أَبِهَذَا: «أُمِرْتُمْ أَمْ بِهَذَا أُرْسِلْتُ إِلَيْكُمْ إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلُكُمْ حِينَ تنازعوا فِي هَذَا الْأَمر عزمت عَلَيْكُم أَلا تتنازعوا فِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ هَذَا الْوَجْهِ من حَدِيث صَالح المري وَله غرائب يتفرد بهَا لَا يُتَابع عَلَيْهَا قلت: لَكِن يشْهد لَهُ الَّذِي بعده

98. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम तकदीर के बारे में बहस कर रहे थे, इसी दौरान रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ ले आए और आप सख्त नाराज़ हुए हत्ता कि आप का चेहरा मुबारक सुर्ख हो गया, गोया आप के रुखसारो पर अनार के दाने निचोड़ दिए गए है, तो आप ने फ़रमाया: "क्या तुम्हें इस (तक़दीर के मसअले पर बहस करने) का हुक्म दिया गया? क्या मुझे इस चीज़ के साथ तुम्हारी तरफ भेजा गया है? तुम से पहली कौमो ने इस मुआमले में बहस व तनाज़ा किया तो वह हलाक हो गई, मैं तुम्हें क़सम देता हूँ और तुम पर वाजिब करता हूँ कि तुम इस मसअले पर बहस व तनाज़ा न करो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2133 وقال : هذا حديث غريب ، الخ) * صالح المرى ضعيف ، و انظر الحديث الآتى (99) فهو شاهد لبعضه

٩٩ - (حسن) وروى ابْن مَاجَه فِي الْقدر نَحْوَهُ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ

99. इब्ने माजा ने अम्र बिन शुऐब अन अबी अन जदह की सनद से इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (85)

١٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ آدَمَ مِنْ قَبْضَةٍ قَبَضَهَا مِنْ جَمِيعِ الْأَرْضِ فَجَاءَ بَنُو آدَمَ عَلَى قَدْرِ الْأَرْضِ مِنْهُمُ الْأَحْمَرُ وَالْأَبْيَضُ ص:٣ وَالْأَسْوَدُ وَبَيْنَ ذَلِكَ وَالسَّهْلُ وَالْحَزْنُ وَالْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

100. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को एक मुठ्ठी (भर मिट्टी) से जो उस ने सारी सतह ज़मीन से हासिल की थी, पैदा

फ़रमाया, आदम अलैहिस्सलाम की औलाद ज़मीन (की रंगत) की माकूल से पैदा हुई, उनमें से कुछ सुर्ख है, कुछ सफ़ेद और कुछ काले और कुछ सुर्ख व सफ़ेद के दरमियानमें, कुछ नरम मिज़ाज और कुछ सख्त मिज़ाज, कुछ बुरी आदत वाले और कुछ पाकिज़ा सिफात वाले”। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 400 ح 19811) و الترمذی (2955 وقال : هذا حديث حسن صحيح) و ابوداؤد (4693) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2083) و الحاكم (2 / 261 ، 262) و وافقه الذهبی]

١٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ خَلَقَ خَلْقَهُ فِي ظُلْمَةٍ فَأَلْقَى عَلَيْهِمْ مِنْ نُورِهِ فَمَنْ أَصَابَهُ مِنْ ذَلِكَ النُّورِ اهْتَدَى وَمَنْ أَخْطَأَهُ ضَلَّ فَلذَلِك أَقُول: جف الْقلب على علم الله ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

101. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूल अल्लाह को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह ने अपने मखलूक को अंधेरे में पैदा फ़रमाया, फिर इन पर अपना नूर डाला, पस जिस को यह नूर मयस्सर गया वह हिदायत पा गया और जो उस से महरूम रहा वह गुमराह हो गया, पस मैं इसीलिए कहता हूँ, अल्लाह के इल्म पर कलम खुश्क हो चूका है”। (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (2 / 176 ح 6644 ب) و الترمذی (2642 وقال : هذا حديث حسن) [و صححه ابن حبان (الموارد : 1812) و الحاكم (1 / 30) و وافقه الذهبی]

١٠٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ: «يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ» فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ آمَنَّا بِكَ وَبِمَا جِئْتَ بِهِ فَهَلْ تَخَافُ عَلَيْنَا؟ قَالَ: «نَعَمْ إِنَّ الْقُلُوبَ بَيْنَ أُصْبُعَيْنِ مِنْ أَصَابِعِ اللَّهِ يُقَلِّبُهَا كَيْفَ يَشَاءُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

102. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ कसरत के साथ यह दुआ किया करते थे: दिलों को बदलने वाले! मेरा दिल को अपने दीन पर साबित रखना, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! हम आप पर और आप की शरियत पर ईमान ला चुके, तो क्या आप को हमारे बारे में अंदेशा है? आप ने फ़रमाया: हाँ, क्योकि दिल अल्लाह की दो उंगलियों के दरमियान है, वह जिस तरह चाहता है इन्हें बदलता रहता है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2140 وقال : هذا حديث حسن) و ابن ماجه (3834) [و صححه الحاكم (1 / 526) و وافقه الذهبی] * فی سند الترمذی : الاعمش مدلس و عنعن وفی سند ابن ماجه : يزيد بن ابان الرقاشی ضعيف و حديث مسلم (2654)، (6750) يغنی عنه و انظر الحديث السابق (89)

١٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْقَلْبِ كَرِيشَةٍ بِأَرْضِ فَلَاةٍ يُقَلِّبُهَا الرِّيَاحُ ظَهْرًا لِبَطْنٍ» . رَوَاهُ أَحْمد

103. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: दिल की मिसाल ऐसे है जैसे किसी बियाबान में कोई (परिंदे का) पर हो, जिसे हवाए हर वक़्त उलट पलट करती हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 408 ح 19895) [و ابن ماجه (88) و البغوى فى شرح السنة (1 / 164 ح 87 و اللفظ له)] * يزيد الرقاشى ضعيف وقال ابو موسى الاشعرى رضى الله عنه : انما سمى القلب قلبًا لتقلبه و انما مثل القلب مثل ريشة بفلاة من الارض ، (مسند على بن الجعد : 1450 و سنده صحيح)

١٠٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّى يُؤْمِنَ بِأَرْبَعٍ: يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ بَعَثَنِي بِالْحَقِّ وَيُؤْمِنُ بِالْمَوْتِ وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَيُؤْمِنُ بِالْقَدَرِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

104. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई बंदा मोमिन नहीं हो सकता हत्ता कि वह चार चीजों पर ईमान ले आए, वह गवाही दे की अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और मैं अल्लाह का रसूल हूँ, उस ने मुझे हक़ के साथ मबउस किया है, वह मौत और मौत के बाद जिंदा किए जाने पर ईमान रखता हो और वह तकदीर पर ईमान रखता हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2145) و ابن ماجه (81) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 178) و الحاكم (1 / 33) و وافقه الذهبى] * رواه ربعى عن رجل عن على رضى الله عنه فالسند معلل

١٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " صِنْفَانِ مِنْ أُمَّتِي لَيْسَ لَهُمَا فِي الْإِسْلَامِ نَصِيبٌ: الْمُرْجِئَةُ وَالْقَدَرِيَّةُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

105. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के दो गिरोह ऐसे है जिन का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं यानी मरजिया और कदरिया”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2149 وقال : هذا حديث حسن غريب) [و ابن ماجه (62)] * نزار ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

١٠٦ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يَكُونُ فِي أُمَّتِي خَسْفٌ وَمَسْخٌ وَذَلِكَ فِي الْمُكَذِّبِينَ بِالْقَدَرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وروى التِّرْمِذِيّ نَحوه

106. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरी उम्मत में ज़मीन में धंस जाना और सूरते बदल जाना होगा और यह हाल तकदीर को झुठलाने वालो में होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4613) و الترمذى (2153 و اللفظ له و 2152 و حسنه) [و ابن ماجه (4061) و سياتى طرفه (116)]

١٠٧ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْقَدَرِيَّةُ مَجُوسُ هَذِهِ الْأُمَّةِ إِنْ مَرِضُوا فَلَا تَعُودُوهُمْ وَإِنْ مَاتُوا فَلَا تشهدوهم» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

107. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कदरिया इस उम्मत के मजूसी है, पस अगर वह बीमार हो जाए तो उनकी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) न करो और अगर वह फौत हो जाए तो उन के जनाज़े में न जाओ”| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف و الحديث صحيح ، رواه احمد (2 / 86 ح 5584 ، 2 / 125 ح 6077) و ابوداؤد (4691 و اللفظ له) * ابو حازم سلمة بن دينار لم يسمع من ابن عمر رضی الله عنه فالسند منقطع وله شاهد صحيح عند الطبرانی فی الاوسط (5 / 114 ح 4217)

١٠٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُجَالِسُوا أَهْلَ الْقَدَرِ وَلَا تفاتحوهم» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

108. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कदरियो को अपने मजलिसो में ना बिठाओ न उन्हें सलाम करने में पहल करो| (और न उन से फैसले कराओ और ना ही उन से मुनाज़रा करो)”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4710 ، 4720) [و صححه ابن حبان : الموارد 1825] * حكيم بن شريک مجهول الحال وثقه ابن حبان وحده و سکت الحاکم علی حديثه (1 / 85) ولم يصححه

١٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " سِتَّةٌ لَعَنْتُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَكُلُّ نَبِيٍّ يُجَابُ: الزَّائِدُ فِي كِتَابِ اللَّهِ وَالْمُكَذِّبُ بِقَدَرِ اللَّهِ ص:٣ وَالْمُتَسَلِّطُ بِالْجَبَرُوتِ لِيُعِزَّ مَنْ أَذَلَّهُ اللَّهُ وَيُذِلَّ مَنْ أَعَزَّهُ اللَّهُ وَالْمُسْتَحِلُّ لِحَرَمِ اللَّهِ وَالْمُسْتَحِلُّ مِنْ عِتْرَتِي مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَالتَّارِكُ لِسُنَّتِي ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي الْمدْخل ورزين فِي كِتَابه

109. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “छे किस्म के लोगों पर मैंने लानत की और अल्लाह ने भी इन पर लानत की, और हर नबी की दुआ कबूल होती है, अल्लाह की किताब में इज़ाफा करने वाला, अल्लाह की तकदीर को झुठलाने वाला, ताकत के बल कुर्सी पर मुसल्लत होने वाला शख़्स ताकि वह किसी ऐसे शख़्स को मुअज्ज़ज़ बनाए जिसे अल्लाह ने ज़लील बनाया हो, और किसी ऐसे शख़्स को ज़लील बना दे जिसे अल्लाह ने मुअज्ज़ज़ बनाया हो, अल्लाह के हरम की बेहुरमती करने वाला, मेरी औलाद की बेहुरमती करने वाला और मेरी सुन्नत को तर्क करने वाला”| (हसन)

حسن ، رواه البيهقی فی المدخل (لم اجده ، و رواه فی شعب الايمان : 4010 ، 4011) و رزين فی کتابه (لم اجده) [و الترمذی (2154) و صححه ابن حبان (الموارد : 52) و الحاکم (1 / 36 علی اختلاف فی السند) و وافقه الذهبی]

١١٠ - (صَحِيح) وَعَن مطر بن عكام قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَضَى اللَّهُ لِعَبْدٍ أَنْ يَمُوتَ بِأَرْضٍ جَعَلَ لَهُ إِلَيْهَا حَاجَةً» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ

110. मतर बिन उकामस बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह किसी बंदे के मुतल्लिक फैसला फरमाता है के इसे फलां जगह मौत आ जाए तो वह इस शख़्स के लिए इस जगह कोई ज़रूरत पैदा कर देता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 227 ح 22332) و الترمذى (2146 وقال : هذا حديث حسن غريب و 2147) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (1 / 42 ، 347) و وافقه الذهبى]

١١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَرَارِيُّ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: «مِنْ آبَائِهِمْ» . فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بِلَا عَمَلٍ؟ قَالَ: «اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ» . قُلْتُ فذراري الْمُشْرِكِينَ؟ قَالَ: «مِنْ آبَائِهِمْ» . قُلْتُ: بِلَا عَمَلٍ؟ قَالَ: «اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

111. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मोमिनो के बच्चे (इन के बारे में क्या हुक्म है)? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने आबाअ के साथ होंगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अमल के बगैर ही आप ने फ़रमाया: “उन्होंने जो करना था अल्लाह उस से बखूबी वाकिफ़ है”, मैंने अर्ज़ किया: तो मुशरिकीन के बच्चे? आप ने फ़रमाया: “वो भी अपने आबाअ के साथ, मैंने अर्ज़ किया: अमल के बगैर ही, आप ने फ़रमाया: “उन्होंने जो करना था अल्लाह उस से बखूबी वाकिफ़ था”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4712) [و الاجرى فى الشريعة ص 195 ح 405] * بقية : صرح بالسماع و تابعه محمد بن حرب ، و للحديث طريق آخر عند احمد (4 / 76)

١١٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الوائدة والموؤدة فِي النَّار ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

112. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिंदा दफ़नाने वाली और जिस की खातिर जिंदा दफनाया गया जहन्नमी है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4717) [و ابن حبان ، الموارد : 67] * و للحديث شواهد

तकदीर पर ईमान लाने का बयान • بَاب الْإِيمَان بِالْقدرِ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١١٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي الدَّرْدَاء قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ فَرَغَ إِلَى كُلِّ عَبْدٍ مِنْ خَلْقِهِ مِنْ خَمْسٍ: مِنْ أَجَلِهِ وَعَمَلِهِ وَمَضْجَعِهِ وَأَثَرِهِ وَرِزْقِهِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ

113. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह अज्ज़वजल

हर बंदे की तखलीक से मुतल्लिक उसकी पांच चीजों, उसकी उमर, उस के अमल, उस के मरने और दफन होने की जगह, उस के नुक्स और उस के रिज़्क़ से फारिग़ हो चूका”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 197 ح 22066 و 22065) [و ابن ابى عاصم فى السنة : 303 و صححه ابن حبان ، الموارد : 1811] * فرج بن فضالة : تابعه مروان بن محمد و للحديث طرق

١١٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ تَكَلَّمَ فِي شَيْءٍ مِنَ الْقَدَرِ سُئِلَ عَنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ لَمْ يَتَكَلَّمْ فِيهِ لم يسْأَل عَنهُ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

114. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने तकदीर के मुतल्लिक ज़र्रा भी बात की तो रोज़ ए कियामत उस से उस के मुतल्लिक पूछताछ होगी और जिस ने उस के मुतल्लिक कोई बात न की उस से पूछताछ नहीं होगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (84) * وقال : البوصيرى :’’ هذا اسناد ضعيف لا تفاقهم على ضعف يحيى بن عثمان ، و شيخه (يحيى بن عبدالله بن ابى مليكة) لين الحديث ‘‘

١١٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ الدَّيْلَمِيِّ قَالَ: أَتَيْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ فَقُلْتُ لَهُ: قَدْ وَقَعَ فِي ص:٤ نَفْسِي شَيْء من الْقدر فَحَدثني بِشَيْء لَعَلَّ الله أَن يذهبه من قلبِي قَالَ لَو أَن الله عَذَّبَ أَهْلَ سَمَاوَاتِهِ وأَهْلَ أَرْضِهِ عَذَّبَهُمْ وَهُوَ غَيْرُ ظَالِمٍ لَهُمْ وَلَوْ رَحِمَهُمْ كَانَتْ رَحْمَتُهُ خَيْرًا لَهُمْ مِنْ أَعْمَالِهِمْ وَلَوْ أَنْفَقْتَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا قَبِلَهُ اللَّهُ مِنْكَ حَتَّى تُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ وَتَعْلَمَ أَنَّ مَا أَصَابَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَأَنَّ مَا أَخْطَأَكَ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيبَكَ وَلَوْ مُتَّ عَلَى غَيْرِ هَذَا لَدَخَلْتَ النَّارَ قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ فَقَالَ مِثْلَ ذَلِكَ قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُ حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ فَقَالَ مثل ذَلِك قَالَ ثُمَّ أَتَيْتُ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ فَحَدَّثَنِي عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَ ذَلِكَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

115. इब्ने दयल्मि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं उबई बिन काब के पास आया तो मैंने उन्हें कहा: मेरे दिल में तकदीर के मुतल्लिक कुछ शुबा सा है, पस आप मुझे कोई हदीस सुनाइए, उम्मीद है अल्लाह इसे मेरे दिल से दूर कर दे, तो उन्होंने ने फ़रमाया: अगर अल्लाह अज्ज़वजल आसमान और ज़मीन वालो को अज़ाब देना चाहे तो वह उन्हें अज़ाब देने में ज़ालिम नहीं होगा, और अगर वह इन पर रहम फरमाए, तो इन के लिए उसकी रहमत उन के आमाल से बेहतर होगी, और अगर तुम ओहद पहाड़ के बराबर सोना अल्लाह की राह में खर्च कर दो तो अल्लाह इसे कबूल नहीं करेगा, हत्ता कि तुम तकदीर पर ईमान ले आओ और तुम जान लो के जो कुछ तुम्हें पहुंचा वह तुम से दूर नहीं हो सकता था, और कुछ तुम से दूर हो गया वह तुम्हें पहुँच नहीं सकता था, और अगर तुम इस अकीदे के अलावा किसी और अकीदे पर फौत हो गए तो तुम जहन्नम में जाओगे, इब्ने दयल्मि बयान करते हैं, फिर मैं इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु के पास आया तो उन्होंने भी इसी तरह फ़रमाया, फिर मैं हुज़ैफ़ा बिन यमान रदियल्लाहु अन्हु की खिदमत में आया तो

उन्होंने भी यही फ़रमाया, फिर मैं ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु के पास आया तो उन्होंने मुझे इसी की मिस्ल नबी ﷺ से हदीस बयान की”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 182 ، 183 ح 21922 و 5 / 185 ح 21947 و 5 / 189 ح 21992) و ابوداؤد (4699) و ابن ماجه (77) [و البيهقى فى كتاب القضاء و القدر (200) و صححه ابن حبان (الموارد : 1817)]

١١٦ - (حسن) عَن نَافِع أَن ابْن عمر جَاءَهُ رجل فَقَالَ إِنَّ فُلَانًا يَقْرَأُ عَلَيْكَ السَّلَامَ فَقَالَ لَهُ إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّهُ قَدْ أَحْدَثَ فَإِنْ كَانَ قَدْ أَحْدَثَ فَلَا تُقْرِئْهُ مِنِّي السَّلَامَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول يكون فِي هَذِه الْأمة أَو فِي أمتِي الشَّك مِنْهُ خَسْفٌ أَوْ مَسْخٌ أَوْ قَذْفٌ فِي أَهْلِ الْقَدَرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ

116. नाफेअ से रिवायत है के एक आदमी इब्ने उमर के पास आया तो उस ने कहा: फलां शख़्स आप को सलाम कहता है, तो उन्होंने कहा: मुझे पता चला है के उस ने बिदअत इजाद की, पस अगर तो उस ने बिदअत इजाद की है तो फिर मेरी तरफ से इसे सलाम न कहना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरी उम्मत में या इस उम्मत में, ज़मीन में धंसना, सूरते मसख हो जाना या आसमान से हथोड़ो की बारिश होना होगा”। तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा इमाम तिरमिज़ी ने कहा यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2152) و ابوداؤد 4613) و ابن ماجه (4061) [و تقدم طرفه : 106]

١١٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَليّ رَضِي الله عَنهُ قَالَ سَأَلت خَدِيجَة النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ وَلَدَيْنِ مَاتَا لَهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " هُمَا فِي النَّارِ قَالَ فَلَمَّا رأى الْكَرَاهِيَة فِي وَجْهِهَا قَالَ لَوْ رَأَيْتِ مَكَانَهُمَا لَأَبْغَضْتِهِمَا قَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَوَلَدِي مِنْكَ قَالَ فِي الْجنَّة قَالَ ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الْمُؤْمِنِينَ وَأَوْلَادَهُمْ فِي الْجَنَّةِ وَإِنَّ الْمُشْرِكِينَ وَأَوْلَادَهُمْ فِي النَّارِ ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذرياتهم)

117. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, खदीजा रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से ज़माने जाहिलियत में वफात पाने वाले अपने दो बच्चो के बारे में दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो जहन्नम में है”, रावी बयान करते हैं, जब आप ने उन के चेहरे पर नागवारी के असरात देखा तो फ़रमाया: “अगर आप इन दोनों की जगह देख ले तो आप उन से बुग्ज़ रखे”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप से जो मेरी औलाद पैदा हुई है? आप ने फ़रमाया: “जन्नत में”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन और उनकी औलाद जन्नत में, मुशरिक और उनकी औलाद जहन्नम में”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने ईमान लाने मैं इन की पैरवी की तो हम उनकी औलाद को भी उन के साथ मिला देंगे”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه [عبدالله بن] احمد (فى زوائد المسند 1 / 134 ، 135 ح 1131) * محمد بن عثمان : مجهول لم يوثقه غير ابن حبان ، وللحديث شواهد ضعيفة

١١٨ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ آدم مسح ظَهره فَسقط من ظَهْرِهِ كُلُّ نَسَمَةٍ هُوَ خَالِقُهَا مِنْ ذُرِّيَّتِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَجَعَلَ بَيْنَ عَيْنَيْ كُلِّ إِنْسَانٍ مِنْهُمْ وَبِيصًا مِنْ نُورٍ ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى آدَمَ فَقَالَ أَيْ رَبِّ مَنْ هَؤُلَاءِ قَالَ هَؤُلَاءِ ذُرِّيَّتُكَ فَرَأَى رَجُلًا مِنْهُمْ فَأَعْجَبَهُ وَبِيصُ مَا بَين عَيْنَيْهِ فَقَالَ أَي رب من هَذَا فَقَالَ هَذَا رجل من آخر الْأُمَم من ذريتك يُقَال لَهُ دَاوُدُ فَقَالَ رَبِّ كَمْ جَعَلْتَ عُمُرَهُ قَالَ سِتِّينَ سنة قَالَ أَي رب زده من عمري أَرْبَعِينَ سنة فَلَمَّا قضي عمر آدم جَاءَهُ ملك الْمَوْت فَقَالَ أَوَلَمْ يَبْقَ مِنْ عُمُرِي أَرْبَعُونَ سَنَةً قَالَ أولم تعطها ابْنك دَاوُد قَالَ فَجحد آدم فَجحدت ذُرِّيَّته وَنسي آدم فنسيت ذُرِّيَّته وخطئ آدم فخطئت ذُرِّيَّته» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

118. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया तो उनकी पुश्त पर हाथ फेरा तो उनकी पुश्त से वह तमाम रूहें, जिन्हें उस ने उनकी औलाद से रोज़ ए कियामत तक पैदा करना था, निकल आई और उनमें से हर इंसान की पेशानी पर नूर का एक निशान लगा दिया, फिर उन्हें आदम अलैहिस्सलाम पर पेश किया तो उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे परवरदिगार! यह कौन है? फ़रमाया: तुम्हारी औलाद, पस उन्होंने उनमें एक शख़्स को देखा तो उसकी पेशानी का निशान उन्हें बहोत अच्छा लगा, तो उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे परवरदिगार! यह कौन है? फ़रमाया: दाउद अलैहिस्सलाम तो उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे परवरदिगार आप ने उसकी कितनी उमर मुकर्रर की है? फ़रमाया: साठ साल, उन्होंने अर्ज़ किया, परवरदिगार मेरी उमर से चालीस साल इसे मज़ीद अता फरमा दें”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदम अलैहिस्सलाम की उमर के चालीस बरस बाकी रह गई तो मलिकुल मौत उन के पास आया तो आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: क्या मेरी उमर के चालीस बरस बाकी नहीं रहती? उस ने जवाब दिया, क्या आप ने वह अपने बेटे दाऊद (अ) को नहीं दी थी? आदम अलैहिस्सलाम ने इनकार कर दिया, इसी तरह उसकी औलाद ने भी इनकार किया, आदम अलैहिस्सलाम भूल गए और इस दरख्त से कुछ खा लिया, तो अब उसकी औलाद भी भूल जाती है, और आदम अलैहिस्सलाम ने गलती की और उसकी औलाद भी खताकार है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3076 وقال : هذا حديث حسن صحيح) [و صححه الحاکم 2 / 586]

١١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خَلَقَ اللَّهُ آدَمَ حِينَ خَلَقَهُ فَضَرَبَ كَتِفَهُ الْيُمْنَى فَأَخْرَجَ ذُرِّيَّةً بَيْضَاءَ كَأَنَّهُمُ الذَّرُّ وَضَرَبَ كَتِفَهُ الْيُسْرَى فَأَخْرَجَ ذُرِّيَّةً سَوْدَاءَ كَأَنَّهُمُ الْحُمَمُ فَقَالَ لِلَّذِي فِي يَمِينِهِ إِلَى الْجَنَّةِ وَلَا أُبَالِي وَقَالَ للَّذي ص:٤ فِي كَفه الْيُسْرَى إِلَى النَّارِ وَلَا أُبَالِي» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

119. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, जब उन्हें पैदा फ़रमाया तो अल्लाह तआला ने उन के दाएँ कंधे पर मारा और सफ़ेद औलाद को निकाला, जैसे चीटियाँ हो, और उस ने उन के बाएँ कंधे पर मारा तो कालि औलाद निकाली जैसे कोयला हो, तो अल्लाह ने उनकी दाएँ तरफ वालो के मुतल्लिक फ़रमाया: यह जन्नती है और मुझे कोई परवाह नहीं, और जो उन के बाएँ कंधे की तरफ थे उन के मुतल्लिक फ़रमाया: यह जहन्नमी है, और मुझे कोई परवाह नहीं“| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 441 ح 28036)

١٢٠ - (صَحِيح) وَعَن أبي نَضرة أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يُقَالُ لَهُ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ دَخَلَ عَلَيْهِ أَصْحَابُهُ يَعُودُونَهُ وَهُوَ يَبْكِي فَقَالُوا لَهُ مَا يُبْكِيكَ أَلَمْ يَقُلْ لَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُذْ مِنْ شَارِبِكَ ثُمَّ أَقِرَّهُ حَتَّى تَلْقَانِي قَالَ بَلَى وَلَكِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ قَبَضَ بِيَمِينِهِ قَبْضَةً وَأُخْرَى بِالْيَدِ الْأُخْرَى وَقَالَ هَذِهِ لِهَذِهِ وَهَذِه لهَذِهِ وَلَا أُبَالِي فَلَا أَدْرِي فِي أَيِّ الْقَبْضَتَيْنِ أَنَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

120. अबू नजरह से रिवायत है के नबी ﷺ के अबू अब्दुल्लाह नामी सहाबी बीमार हो गए तो उनके साथी उनकी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए आए तो वह रो रहे थे, उन्होंने कहा: आप क्यों रो रहे हैं? क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने आप से यह नहीं फरमाया अपनी मूंछे कतराओ, फिर उस पर कायम रहो हत्ता कि तुम (होज़े कौसर) पर मुझ से आ मिलो? उन्होंने कहा: क्यों नहीं! ज़रूर फ़रमाया था, लेकिन मैंने रसूल अल्लाह को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह अज्ज़वजल ने अपने दाएँ हाथ से मुठ्ठी भरी, और दूसरे हाथ से दूसरी, और फ़रमाया यह इस (जन्नत) के लिए है, और यह इस (जहन्नम) के लिए है, और मुझे कोई परवाह नहीं”, जबकि मुझे मालुम नहीं, की मैं इन दो मुट्ठियों में से किस में हूँ”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 68 ح 20944 ، 4 / 176 ح 17736)

١٢١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: " أَخذ الله الْمِيثَاق من ظهر آدم بنعمان يَعْنِي عَرَفَة فَأخْرج من صلبه كل ذُرِّيَّة ذَرَاهَا فَنَثَرَهُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ كَالذَّرِّ ثُمَّ كَلَّمَهُمْ قِبَلًا قَالَ: (أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غافلين أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ المبطلون)»» رَوَاهُ أَحْمد

121. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने अरफा के नज़दीक मक़ाम ए नअमान पर औलाद ए आदम से अहद लेने का इरादा फ़रमाया तो उनकी सलब से (उन की) तमाम औलाद को“ जिसे पैदा करना था” निकाली तो उन्हें इन के सामने बिखेर दिया, जैसे चीटियाँ हो, फिर उन से बराएरास्त ख़िताब किया तो फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने कहा, क्यों नहीं! हम उस पर गवाह है (ये इकरार इसलिए लिया गया) के कहीं कियामत के दिन तुम यह कहो के हम तो इस हकीक़त से महज़ बेखबर थे, या यूँ कहो के शिर्क तो हमारे आबाअ ने किया था, हम तो उनकी औलाद है जो उन के बाद आए, क्या तू हमें उन गलत कारो के कामो पर हलाक कर देगा”| (हसन)

سنده حسن ، رواه احمد (1 / 272 ح 2455) [و النسائى فى الكبرى (6 / 347 ح 11191) و صححه الحاكم (1 / 27 ، 2 / 544) و وافقه الذهبى] * و للحديث شواهد منها ما رواه الطبرى فى تفسيره (9 / 75 ، 76) بسند صحيح عن ابن عباس موقوفًا وله حكم المرفوع

١٢٢ - (حسن) عَن أبي بن كَعْب فِي قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ (وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورهمْ ذرياتهم وأشهدهم على أنفسهم)»» الْآيَة قَالَ جمعهم فجعلهم أرواحا ثُمَّ صَوَّرَهُمْ فَاسْتَنْطَقَهُمْ فَتَكَلَّمُوا ثُمَّ أَخَذَ ص:٤ عَلَيْهِمُ الْعَهْدَ وَالْمِيثَاقَ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالَ فَإِنِّي أشهد عَلَيْكُم السَّمَوَات السَّبْعَ وَالْأَرَضِينَ السَّبْعَ وَأُشْهِدُ عَلَيْكُمْ أَبَاكُمْ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلَام أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَمْ نَعْلَمْ بِهَذَا اعْلَمُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ غَيْرِي وَلَا رَبَّ غَيْرِي فَلَا تُشْرِكُوا بِي شَيْئا وَإِنِّي سَأُرْسِلُ إِلَيْكُمْ رُسُلِي يُذَكِّرُونَكُمْ عَهْدِي وَمِيثَاقِي وَأُنْزِلُ عَلَيْكُمْ كُتُبِي قَالُوا شَهِدْنَا بِأَنَّكَ رَبُّنَا وَإِلَهُنَا لَا رب لَنَا غَيْرُكَ فَأَقَرُّوا بِذَلِكَ وَرُفِعَ

عَلَيْهِمْ آدَمُ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ فَرَأَى الْغَنِيَّ وَالْفَقِيرَ وَحَسَنَ الصُّورَةِ وَدُونَ ذَلِكَ فَقَالَ رَبِّ لَوْلَا سَوَّيْتَ بَيْنَ عِبَادِكَ قَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ أَنْ أَشْكُرَ وَرَأَى الْأَنْبِيَاءَ فِيهِمْ مِثْلَ السُّرُجِ عَلَيْهِمُ النُّورُ خُصُّوا بِمِيثَاقٍ آخَرَ فِي الرِّسَالَةِ وَالنُّبُوَّةِ وَهُوَ قَوْلُهُ تَعَالَى (وَإِذ أَخذنَا من النَّبِيين ميثاقهم)»» إِلَى قَوْله (عِيسَى ابْن مَرْيَم)»» كَانَ فِي تِلْكَ الْأَرْوَاحِ فَأَرْسَلَهُ إِلَى مَرْيَمَ فَحُدِّثَ عَنْ أُبَيٍّ أَنَّهُ دَخَلَ مِنْ فِيهَا. رَوَاهُ أَحْمد

122. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह अज्ज़वजल के फरमान: “जब आप के रब ने बनी आदम से उनकी पुश्त से उनकी नसल को निकाला‘‘ की तफसीर में फ़रमाया: उस ने इनको जमा किया तो उनकी मुख्तलिफ किस्म बना दी, फिर उनकी तस्वीर कशी की, उन्हें बोलने को कहा तो उन्होंने कलाम किया, फिर उन से अहद व मिशाक लिया और उन्हें उनकी जानो पर गवाह बनाया: “क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?” उन्होंने कहा: क्यों नहीं!” फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मैं सातों आसमानों, सातों ज़मीनों और तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम को तुम पर गवाह बनाता हूँ, के कहीं तुम रोज़ ए कियामत यह न कहो: हमें उस का पता नहीं, जान लो के मेरे सिवा ना कोई माबूद ए बरहक़ है न कोई रब, मेरे साथ, किसी को शरीक न बनाना, मैं अपने रसूल तुम्हारी तरफ भेजूंगा, वह मेरा अहद व मिशाक तुम्हें याद दिलाते रहेंगे, और मैं अपने किताबे तुम पर नाज़िल फर्माऊंगा, तो उन्होंने कहा: हम गवाही देते हैं की, तू हमारा रब है और हमारा माबूद है, ना तेरे सिवा हमारा कोई रब है न माबूद, उन्होंने उस का इकरार कर लिया, और आदम अलैहिस्सलाम को इन पर ज़ाहिर किया गया, वह उन्हें देखने लगी तो उन्होंने गनी व फ़क़ीर और खुबसूरत व बदसूरत को देखा तो अर्ज़ किया, परवरदिगार! तूने अपने बंदो में बराबरी क्यों नहीं की? अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मैं पसंद करता हूँ, के मेरा शुक्र किया जाए, और उन्होंने अंबिया अलैहिस्सलाम को देखा, उनमें चिरागो की तरह थे, इन पर नूर (बरस रहा) था, और उन से रिसालत व नबूवत के बारे में खुसूसी अहद लिया गया, अल्लाह तआला के फरमान से यही अहद मुराद है “और जब हमने तमाम नबियों से, आप से, नुह, इब्राहीम, मूसा, और इसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम से अहद लिया था”, इसा अलैहिस्सलाम इन अरवाह में थे, तो अल्लाह ने उन्हें मरयम (अहस) की तरफ भेजा, अबी रदियल्लाहु अन्हु से बयान किया गया के इस (रूह) को मरयम (अहस) के मुंह के ज़रिए दाखिल किया गया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه [عبدالله بن] احمد (5 / 135 ح 21552) [و الفريابى فى كتاب القدر : 52] * سليمان التيمى مدلس و عنعن و باقى السند حسن و للحديث شاهد ضعيف عند الحاكم (2 / 323324 ح 3255)

١٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَتَذَاكَرُ مَا يَكُونُ إِذْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِذَا سَمِعْتُمْ بِجَبَلٍ زَالَ عَن مَكَانَهُ فصدقوا وَإِذَا سَمِعْتُمْ بِرَجُلٍ تَغَيَّرَ عَنْ خُلُقِهِ فَلَا تصدقوا بِهِ وَإِنَّهُ يَصِيرُ إِلَى مَا جُبِلَ عَلَيْهِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ

123. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के पासबैठे मुस्तकबिल में पेश आने वाले वाकिअत के बारे में बाहम बात चित कर रहे थे की अचानक रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम किसी पहाड़ के बारे में सुनो के वह अपने जगह से हट गया है तो इस बात की तस्दीक कर दो और जब तुम किसी आदमी के बारे में सुनो, उस ने अपनी आदत बदल ली है तो उस के मुतल्लिक बात की तस्दीक न

करो, क्योंकि वह अपने जिबिल्लत (स्वाभाविकता-आदत) पर कारबंद रहेगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 443 ح 28047) * الزهرى عن ابى الدرداء رضى الله عنه : منقطع

١٢٤ - (ضَعِيف) وَعَن أم سَلمَة يَا رَسُول الله لَا يزَال يصيبك كُلَّ عَامٍ وَجَعٌ مِنَ الشَّاةِ الْمَسْمُومَةِ الَّتِي أَكَلْتَ قَالَ: «مَا أَصَابَنِي شَيْءٌ مِنْهَا إِلَّا وَهُوَ مَكْتُوبٌ عَلَيَّ وَآدَمُ فِي طِينَتِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

124. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने जो ज़हर आलूद बकरी खाई थी, उसकी वजह से आप हर साल तकलीफ महसूस करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे उस से जो भी तकलीफ पहुंची है, वह तो मेरे मुतल्लिक इस वक़्त लिख दी गई थी, जब आदम अलैहिस्सलाम अभी मिट्टी की सूरत में थे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3546) * ابوبكر العنسى مجهول كما قال ابن عدى وقال الحافظ ابن حجر فى تقريب التهذيب :’’ وانا احسب انه ابن ابى مريم الذى تقدم ‘‘ و ابوبكر بن ابى مريم ضعيف مختلط

अज़ाब ए कब्र के अस्बात का बयान • بَاب إِثْبَات عَذَاب الْقَبْر

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٢٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الْمُسْلِمُ إِذَا سُئِلَ فِي الْقَبْرِ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ فَذَلِكَ قَوْلُهُ (يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَة)»» وَفِي رِوَايَةٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِت)»» نَزَلَتْ فِي عَذَابِ الْقَبْرِ يُقَالُ لَهُ: مَنْ رَبك؟ فَيَقُول: رَبِّي الله ونبيي مُحَمَّد

125. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब मुसलमान से कब्र में (इस के रब नबी और दीन के बारे में) सवाल किया जाए और वह गवाही देता है के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, यह कहना अल्लाह के इस फरमान के मुताबिक है| “ अल्लाह उन लोगों को जो इमान लाते है सच्ची बात पर दुनिया व आखिरत में साबित कदम रखता है”, और एक रिवायत में नबी ﷺ से मरवी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِيْنَ امَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّبِتِ فِى الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ) “अज़ाब ए कब्र के बारे में नाज़िल हुई, पूछा जाएगा तेरा रब कौन है? तो वह कहेगा मेरा रब अल्लाह है और मेरे नबी मुहम्मद ﷺ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4699) و مسلم (2871 / 73)، (7219) و الرواية الثانية له

١٢٦ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أنه حَدثهمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا وُضِعَ

فِي قَبْرِهِ وَتَوَلَّى عَنْهُ أَصْحَابُهُ وَإِنَّهُ لَيَسْمَعُ قَرْعَ نِعَالِهِمْ أَتَاهُ مَلَكَانِ فَيُقْعِدَانِهِ فَيَقُولَانِ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَيَقُولُ أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ فَيُقَالُ لَهُ انْظُرْ إِلَى مَقْعَدِكَ مِنَ النَّارِ قَدْ أَبْدَلَكَ اللَّهُ بِهِ مَقْعَدًا مِنَ الْجنَّة فَيَرَاهُمَا جَمِيعًا قَالَ قَتَادَة وَذكر لنا أَنه يفسح لَهُ فِي قَبره ثمَّ رَجَعَ إِلَى حَدِيث أنس قَالَ وَأَمَّا الْمُنَافِقُ وَالْكَافِرُ فَيُقَالُ لَهُ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرَّجُلِ فَيَقُولُ لَا أَدْرِي كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُ النَّاسُ فَيُقَالُ لَا دَرَيْتَ وَلَا تَلَيْتَ وَيُضْرَبُ بِمَطَارِقَ مِنْ حَدِيدٍ ضَرْبَةً فَيَصِيحُ صَيْحَةً يَسْمَعُهَا مَنْ يَلِيهِ غَيْرَ الثقلَيْن» وَلَفظه للْبُخَارِيّ

126. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब बंदे को उसकी कब्र में रख दिया जाता है, और उस के साथी वापस चले जाते हैं, तो वह उन के जूतो की आवाज़ सुनता है, (इसी असना में) दो फ़रिश्ते उस के पास आते है तो वह इसे बिठाकर पूछते है: तुम इस शख़्स मुहम्मद ﷺ के बारे में क्या कहा करते थे? जो मोमिन है, तो वह कहता है: मैं गवाही देता हूँ कि वह अल्लाह के बंदे और उस के रसूल हैं, इसे कहा जाता है: जहन्नम में अपने ठिकाने को देख लो, अल्लाह ने उस के बदले में तुम्हें जन्नत में ठिकाना दे दिया है, वह इन दोनों को एक साथ देखता है, रहा मुनाफ़िक व काफ़िर शख्स, तो उसे भी कहा जाता है तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहा करते थे? तो वह कहता है: मैं नहीं जानता, मैं वही कुछ कहता था जो लोग कहा करते थे, इसे कहा जाएगा: ना तुमने (हक़ बात) समझने की कोशिश की न पढ़ने की, इसे लोहे के हथोड़े के साथ एक साथ मारा जाएगा तो वह चीखता चिल्लाता है, जिसे जिन्न व इन्स के सिवा उस के करीब हर चीज़ सुनती है"| बुखारी, मुस्लिम, और यह अल्फाज़ बुखारी के हैं | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1374) و مسلم (2870 / 70)، (7216)

١٢٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا مَاتَ عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ إِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَمِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَمِنْ أَهْلِ النَّارِ فَيُقَالُ هَذَا مَقْعَدُكَ حَتَّى يَبْعَثك الله يَوْم الْقِيَامَة»

127. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई शख़्स फौत हो जाता है, तो सुबह व शाम उस का ठिकाना इसे दिखाया जाता है, अगर तो वह जन्नती है तो वह अहल ए जन्नत से है, और अगर वह जहन्नमी है तो फिर वह अहल ए जहन्नम में से, पस इसे कहा जाएगा: यह तुम्हारा ठिकाना है, हत्ता कि अल्लाह कियामत के दिन तुम्हें उस के लिए दोबारा जिंदा करेगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1379) و مسلم (65 / 2866)، (7211)

١٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ يَهُودِيَّةً دَخَلَتْ عَلَيْهَا فَذَكَرَتْ عَذَابَ الْقَبْرِ فَقَالَتْ لَهَا أَعَاذَكِ اللَّهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ فَسَأَلَتْ عَائِشَةُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَذَابِ الْقَبْرِ فَقَالَ: «نَعَمْ عَذَابُ الْقَبْر قَالَت عَائِشَة رَضِي الله عَنْهَا فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بعد صلى صَلَاة إِلَّا تعوذ من عَذَاب الْقَبْر»

128. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के एक यहूदी औरत उन के पास आई तो उस ने अज़ाब ए कब्र का ज़िक्र किया और उन से कहा: अल्लाह आप को अज़ाब ए कब्र से बचाए, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अज़ाब ए कब्र के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ने फ़रमाया: हाँ, अज़ाब ए कब्र है" आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने देखा के आप उस के बाद जब भी नमाज़ पढ़ते तो अज़ाब ए कब्र से अल्लाह की पनाह तलब करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1372) و مسلم (125 / 586)، (1321)

١٢٩ - (صَحِيح) عَن زيد بن ثَابت قَالَ بَيْنَمَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَائِطٍ لِبَنِي النَّجَّارِ عَلَى بَغْلَةٍ لَهُ وَنَحْنُ مَعَهُ إِذْ حَادَتْ بِهِ فَكَادَتْ تُلْقِيهِ وَإِذَا أَقْبُرٌ سِتَّةٍ أَو خَمْسَة أَو أَرْبَعَة قَالَ كَذَا كَانَ يَقُول الْجريرِي فَقَالَ: «من يعرف أَصْحَاب هَذِه الأقبر فَقَالَ رجل أَنا قَالَ فَمَتَى مَاتَ هَؤُلَاءِ قَالَ مَاتُوا فِي الْإِشْرَاك فَقَالَ إِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ تُبْتَلَى فِي قُبُورِهَا فَلَوْلَا أَنْ لَا تَدَافَنُوا لَدَعَوْتُ اللَّهَ أَنْ يُسْمِعَكُمْ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ الَّذِي أَسْمَعُ مِنْهُ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ عَذَاب النَّار فَقَالَ تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّه من عَذَاب الْقَبْر قَالَ تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ قَالَ تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ قَالُوا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

129. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के रसूलुल्लाह ﷺ अपने खच्चर पर सवार बनू नजार के बाग़ में थे जबकि हम भी आप के साथ थे की अचानक खच्चर बिदका, करीब था के वह आप को गिरा देता, वहां पांच छे कबरे थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन क़बरो वालो को कौन जानता है?" एक आदमी ने अर्ज़ किया: मैं, आप ने फ़रमाया: "वो कब फौत हुए थे? उस ने कहा: हालत ए शिर्क में, आप ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक इस उम्मत के लोगों का उनकी क़बरो में इम्तिहान लिया जाएगा, अगर ऐसे न होता की तुम दफन करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह से दुआ करता के वह अज़ाब ए कब्र तुम्हें सुना दे जो मैं सुन रहा हूँ, फिर आप ﷺ ने अपना रूखे अनवर (चेहरा) हमारी तरफ करते हुए फ़रमाया: "जहन्नम के अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करो", उन्होंने अर्ज़ किया: हम अज़ाब ए जहन्नम से अल्लाह की पनाह तलब करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अज़ाब ए कब्र से अल्लाह की पनाह तलब करो", उन्होंने कहा: हम अज़ाब ए कब्र से अल्लाह की पनाह तलब करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ज़ाहिर व बातिनी फ़ितनो से अल्लाह की पनाह तलब करो", उन्होंने कहा: हम ज़ाहिर व बातिनी फ़ितनो से अल्लाह की पनाह चाहते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "दज्जाल के फितने से अल्लाह की पनाह तलब करो", उन्होंने कहा: हम दज्जाल के फितने से अल्लाह की पनाह चाहते है"| (सहीह)

رواه مسلم (67 / 2867)، (7213)

بَاب إِثْبَات عَذَاب الْقَبْر • अज़ाब ए कब्र के अस्बात का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٣٠ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قُبِرَ الْمَيِّتُ أَتَاهُ مَلَكَانِ ص:٤ أَسْوَدَانِ أَزْرَقَانِ يُقَالُ لِأَحَدِهِمَا الْمُنْكَرُ وَالْآخَرُ النَّكِيرُ فَيَقُولَانِ مَا كُنْتَ تَقُولُ فِي هَذَا الرجل فَيَقُول مَا كَانَ يَقُول هُوَ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ فَيَقُولَانِ قَدْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُولُ هَذَا ثُمَّ يُفْسَحُ لَهُ فِي قَبْرِهِ سَبْعُونَ ذِرَاعًا فِي سَبْعِينَ ثُمَّ يُنَوَّرُ لَهُ فِيهِ ثُمَّ يُقَالُ لَهُ نَمْ فَيَقُولُ أَرْجِعُ إِلَى أَهْلِي فَأُخْبِرُهُمْ فَيَقُولَانِ نَمْ كَنَوْمَةِ الْعَرُوسِ الَّذِي لَا يُوقِظُهُ إِلَّا أَحَبُّ أَهْلِهِ إِلَيْهِ حَتَّى يَبْعَثَهُ اللَّهُ مِنْ مَضْجَعِهِ ذَلِكَ وَإِنْ كَانَ مُنَافِقًا قَالَ سَمِعت النَّاس يَقُولُونَ فَقُلْتُ مِثْلَهُ لَا أَدْرِي فَيَقُولَانِ قَدْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُولُ ذَلِكَ فَيُقَالُ لِلْأَرْضِ الْتَئِمِي عَلَيْهِ فتلتئم عَلَيْهِ فتختلف فِيهَا أَضْلَاعُهُ فَلَا يَزَالُ فِيهَا مُعَذَّبًا حَتَّى يَبْعَثَهُ الله من مضجعه ذَلِك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

130. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मय्यत को कब्र में दफन कर दिया जाता है, तो सियाह फाम नीली आंखो वाले दो फ़रिश्ते उस के पास आते है, उनमें से एक को मुनकर और दूसरे को नकिर कहते, पस वह कहते हैं, तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहा करते थे? तो वह कहता है: वह अल्लाह के बंदे और उस के रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं, वह दोनों फ़रिश्ते कहते हैं: हमें पता था के तुम यही कहोगे, फिर उसकी कब्र को टूल व अर्ज़ में सत्तर सत्तर हाथ कुशादा कर दिया जाता है, फिर उस के लिए उस में रोशनी कर दी जाती है, फिर इसे कहा जाता है, सो जाओ वह कहता है: मैं अपने घरवालो के पास वापस जाना चाहता हूँ ताकि उन्हें बताऊँ, लेकिन वह कहते हैं, दुल्हन की तरह सो जा, जिसे उस के घर का अज़ीज़ तरीन फर्द ही बेदार करता है, हत्ता कि अल्लाह इसे उसकी ख्वाबगाह से बेदार करेगा, और अगर वह मुनाफ़िक़ हुआ, तो वह कहेगा: मैंने लोगों को एक बात करते हुए सुना तो मैंने भी वैसे ही कह दिया, मैं कुछ नहीं जानता, वह फ़रिश्ते कहते हैं: हमें पता था के तुम यही कहोगे पस, ज़मीन से कहा जाता है: उस पर तंग हो जा, वह उस पर तंग हो जाती है, उस से उसकी इधर की पसलिया उधर आ जाएगी, पस इसे उस में मुसलसल अज़ाब होता रहेगा हत्ता कि अल्लाह उसकी इस ख्वाबगाह से इसे दोबारा जिंदा करेगा”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1071 وقال : حسن غریب) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 3107)]

١٣١ - (صَحِيح) عَن الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وَيَأْتِيهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهِ فَيَقُولَانِ لَهُ مَنْ رَبُّكَ فَيَقُولُ رَبِّيَ اللَّهُ فَيَقُولَانِ لَهُ مَا دِينُكَ فَيَقُولُ دينيَ الْإِسْلَام فَيَقُولَانِ لَهُ مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ قَالَ فَيَقُول هُوَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُولَانِ وَمَا يُدْرِيكَ فَيَقُولُ قَرَأْتُ كِتَابَ اللَّهِ فَآمَنْتُ بِهِ وَصَدَّقْتُ زَاد فِي حَدِيث جرير فَذَلِك قَول الله عز وَجل (يثبت الله الَّذين آمنُوا بالْقَوْل الثَّابِت)»» الْآيَة ثمَّ اتفقَا قَالَ فينادي مُنَاد من السَّمَاء أَن قد صدق عَبدِي فأفرشوه مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوا لَهُ بَابًا إِلَى الْجَنَّةِ وألبسوه من الْجنَّة قَالَ فيأتيه من روحها وطيبها قَالَ وَيفتح لَهُ فِيهَا مد بَصَره قَالَ وَإِن الْكَافِر فَذكر مَوته قَالَ وتعاد رُوحُهُ فِي جَسَدِهِ وَيَأْتِيهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهِ فَيَقُولَانِ لَهُ مَنْ رَبُّكَ فَيَقُولُ

هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي ص:٤ فَيَقُولَانِ لَهُ مَا دِينُكَ فَيَقُولُ هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي فَيَقُولَانِ مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ فَيَقُولُ هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي فَيُنَادِي مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ أَنَّ كَذَبَ فَأَفْرِشُوهُ مِنَ النَّارِ وَأَلْبِسُوهُ مِنَ النَّارِ وَافْتَحُوا لَهُ بَابًا إِلَى النَّارِ قَالَ فَيَأْتِيهِ مِنْ حَرِّهَا وَسَمُومِهَا قَالَ وَيُضَيَّقُ عَلَيْهِ قَبْرُهُ حَتَّى تَخْتَلِفَ فِيهِ أَضْلَاعُهُ ثمَّ يقيض لَهُ أعمى أبكم مَعَهُ مِرْزَبَّةٌ مِنْ حَدِيدٍ لَوْ ضُرِبَ بِهَا جبل لصار تُرَابا قَالَ فَيَضْرِبُهُ بِهَا ضَرْبَةً يَسْمَعُهَا مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمغْرب إِلَّا الثقلَيْن فَيصير تُرَابا قَالَ ثمَّ تُعَاد فِيهِ الرّوح» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

131. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो फ़रिश्ते उस के पास आते है तो उसे बिठाकर पूछते है: तेरा रब कौन है? तो वह कहता है: मेरा रब अल्लाह है, फिर वह पूछते है: तेरा दीन क्या है? तो वह कहता है: मेरा दीन इस्लाम है, फिर वह पूछते है: यह आदमी जो तुम में मबउस किए गए थे वह कौन थे? वह जवाब देगा: वह अल्लाह के रसूल! है, वह दोनों फ़रिश्ते कहते हैं तुम्हें किस ने बताया, वह कहता है: मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी, तो मैं उस पर ईमान ले आया और तस्दीक की, उस का यह जवाब देना अल्लाह तआला के इस फरमान के मुताबिक है, “अल्लाह उन लोगों को जो इमान लाते है, सच्ची बात पर साबित कदम रखता है”, फ़रमाया आसमान से आवाज़ देने वाला आवाज़ देता है, मेरे बंदे ने सच कहा, इसे जन्नती बिछोना बिछादो, जन्नती लिबास पहना दो और उस के लिए जन्नत की तरफ एक दरवाज़ा खोल दो, वह खोल दिया जाता है, वहां से इत्र जैसी खुश्बू उस के पास आती है और उसकी हद्दे निगाह तक उसकी कब्र कुशादा कर दी जाती है, फिर आप ﷺ ने काफ़िर की मौत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया, उसकी रूह को उस के जिस्म में लौटाया जाता है, दो फ़रिश्ते उस के पास आते है तो वह इसे बिठाकर पूछते है: तेरा रब कौन है? वह कहता है: हाए! हाए! मैं नहीं जानता, फिर वह पूछते है: तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है, हाए! हाए! मैं नहीं जानता, फिर वह पूछते है: वह शख़्स जो तुम में मबउस किए गए थे कौन थे? फिर वही जवाब देता है, हाए! हाए! मैं नहीं जानता, आसमान से आवाज़ देने वाला आवाज़ देता है, उस ने झूठ बोला, लिहाज़ा इसे जहन्नम से बिस्तर बिछादो, जहन्नम से लिबास पहना दो और उस के लिए जहन्नम की तरफ एक दरवाज़ा खोल दो, फ़रमाया जहन्नम की हरारत और वहां की गरम लौ उस तक पहुंचेगी, फ़रमाया उसकी कब्र उस पर तंग कर दी जाती है, हत्ता कि उसकी इधर की पसलिया इधर निकल जाती है, फिर एक अंधा और बहरा दारोगा उस पर मुसल्लत कर दिया जाता है, जिसके पास लोहे का बड़ा हथोड़ा होता है, अगर इसे पहाड़ पर मारा जाए तो वह मिट्टी हो जाए, वह उस के साथ इसे मारता है तो जिन्न व इन्स के सिवा, मशरिक व मगरिब के दरमियान में मौजूद हर चीज़ इस मार को सुनती है, वह मिट्टी हो जाता है तो फिर रूह को दोबारा उस में लौटा दिया जाता है”। (हसन)

حسن ، دون قوله :’’ فيصير ترابًا ثم يعاد فيه الروح ‘‘ لان فيه الاعمش مدلس ولم يصرح بالسماع فی هذا اللفظ رواه احمد (4 / 287 ، 288 ح 18733) و ابوداؤد (3212 ، 4753) [و رواه الحاكم (1 / 3738 ح 107) و الطبرانى فى الاحاديث الطوال (المعجم الكبير 25 / 238240 ح 25) و سنده حسن و صححه البيهقى فى شعب الايمان : 395]

١٣٢ - (حسن) وَعَن عُثْمَان رَضِي الله عَنهُ أَنه إِذَا وَقَفَ عَلَى قَبْرٍ بَكَى حَتَّى يَبُلَّ لِحْيَتَهُ فَقِيلَ لَهُ تُذْكَرُ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ فَلَا تَبْكِي وَتَبْكِي مِنْ هَذَا فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْقَبْرَ أَوَّلُ مَنْزِلٍ مِنْ مَنَازِلِ الْآخِرَةِ فَإِنْ نَجَا مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ أَيْسَرُ مِنْهُ وَإِنْ لَمْ يَنْجُ مِنْهُ فَمَا بَعْدَهُ أَشَدُّ مِنْهُ قَالَ وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَأَيْت منْظرًا قطّ إِلَّا الْقَبْرُ أَفْظَعُ مِنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

132. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है जब आप किसी कब्र के पास खड़े होते तो वहां इस क़दर रोते के आप की दाढ़ी तर हो जाती, आप से पूछा गया आप जन्नत और जहन्नम का तज़किरह करते हुए नहीं रोते, मगर कब्र का ज़िक्र कर के रोते हो, तो उन्होंने बताया की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक कब्र आखिरत की मंजिलो में से पहली मंजिल है, पस अगर उस से बच गए तो उस के बाद जो मनाज़िल है वह उस से आसान तर है, और अगर उस से निजात न हुई तो उस के बाद जो मनाज़िल है वह उस से ज़्यादा सख्त है”, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने कब्र से ज़्यादा सख्त और बुरा मंजर कभी नहीं देखा”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2308 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4267) [و صححه الحاكم و الذهبى فى تلخيص المستدرك (1 / 371 ، 4 / 330331)]

١٣٣ - (صَحِيح) وَعَن عُثْمَان رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ وَقَفَ عَلَيْهِ فَقَالَ: «اسْتَغْفِرُوا لِأَخِيكُمْ ثُمَّ سَلُوا لَهُ بِالتَّثْبِيتِ فَإِنَّهُ الْآنَ يُسْأَلُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

133. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ मय्यत को दफन करने से फारिग़ होते तो उस के पास खड़े हो कर फरमाते: “अपने भाई के लिए मगफिरत तलब करो, उस के लिए सवाब व जवाब के मौके पर साबित कदमी की दरख्वास्त करो, क्योंकि अब उस से सवाल किया जाएगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3221) [و صححه الحاكم 1 / 37 و وافقه الذهبى]

١٣٤ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «يُسَلط عَلَى الْكَافِرِ فِي قَبْرِهِ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ تِنِّينًا تنهشه وتلدغه حَتَّى تقوم السَّاعَة وَلَو أَنَّ تِنِّينًا مِنْهَا نَفَخَ ص:٤ فِي الْأَرْضِ مَا أَنْبَتَتْ خَضِرًا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ نَحْوَهُ وَقَالَ: «سَبْعُونَ بدل تِسْعَة وَتسْعُونَ»

134. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “काफ़िर पर उसकी कब्र में निन्यानवेअज़दहा मुसल्लत कर दिए जाते हैं, वह कयामे कियामत तक इसे दसते रहेंगे, अगर उनमें से एक अज़दहा ज़मीन पर फूंक मार दे, तो ज़मीन किसी किस्म का सब्ज़ा (हरियाली) न उगाए”| दारमी इमाम तिरमिज़ी ने इस तरह रिवायत किया है, उन्होंने निन्यानवेके बजाए सत्तर अज़दहा का ज़िक्र किया है| (हसन)

حسن ، رواه الدارمى (1 / 331 ح 2818 و سنده حسن) و الترمذى (2460 وقال : غريب) و سنده ضعيفانظر انوار الصحيفة (ص 258) و حديث الدارمى يغنى عنه ، قلت : دراج صدوق و حديثه عن ابى الهيشم حسن لذاته

अज़ाब ए कब्र के अस्बात का बयान • بَاب إِثْبَات عَذَاب الْقَبْر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٣٥ - (ضَعِيف) عَن جَابر بن عبد الله قَالَ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ حِين توفّي قَالَ فَلَمَّا صَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَوُضِعَ فِي قَبْرِهِ وَسُوِّيَ عَلَيْهِ سَبَّحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَبَّحْنَا طَوِيلًا ثُمَّ كَبَّرَ فَكَبَّرْنَا فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ سَبَّحْتْ ثُمَّ كَبَّرْتَ قَالَ: «لقد تضايق على هَذَا العَبْد الصَّالح قَبره حَتَّى فرجه الله عز وَجل عَنهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

135. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु ने वफात पाई तो हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ उन के जनाज़े के लिए गए, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी और उन्हें कब्र में रख कर ऊपर मिट्टी डाल दी गई, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने तस्बीह बयान की और हमने भी तवील तस्बीह बयान की, फिर आप ने (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर पढ़ा तो हमने भी (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर पढ़ा, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! आप ने तस्बीह क्यों बयान की, फिर आप ने तकबीर बयान की आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस सालेह बंदे पर उसकी कब्र तंग हो गई थी, हत्ता कि अल्लाह ने इसे कुशादा कर दिया"। (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 360 ح 14934) * محمود و يقال محمد بن عبد الرحمن بن عمرو بن الجموح : ثقة ، وثقه ابو زرعة الرازى (كتاب الجرح و التعديل 7 / 316) و ابن حبان (5 / 373) و باقى السند حسن

١٣٦ - (صَحِيح) وَعَن ابْنِ عُمَرَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «هَذَا الَّذِي تَحَرَّكَ لَهُ الْعَرْشُ وَفُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَشَهِدَهُ سَبْعُونَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ لَقَدْ ضُمَّ ضَمَّةً ثُمَّ فُرِّجَ عَنْهُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

136. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये (सईद बिन मुआज़ (र)) वह शख़्स है जिस की खातिर अर्श लरज़ गया, उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए और उसकी नमाज़ ए जनाज़ा में सत्तर हज़ार फरिश्तो ने शिरकत की, लेकिन इसे भी कब्र में दबाया गया, फिर उनकी कब्र को कुशादा कर दिया गया"। (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه النسائى (4 / 100 ، 101 ح 2057) * وقال الذهبى : هذا الضمة ليست من عذاب القبر فى شى ، بل هو امريجده المومن كما يجد الم فقد ولده و حميمه فى الدنيا وكما يجد من الم مرضه و الم خروج نفسه ،،،(سير اعلام النبلاء 1 / 290)

١٣٧ - (صَحِيح) عَن أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا تقول قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطِيبًا فَذكر فتْنَة الْقَبْر الَّتِي يفتتن فِيهَا الْمَرْءُ فَلَمَّا ذَكَرَ ذَلِكَ ضَجَّ الْمُسْلِمُونَ ضَجَّةً. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ هَكَذَا وَزَادَ النَّسَائِيُّ: حَالَتْ بَيْنِي وَبَيْنَ أَنْ أَفْهَمَ كَلَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا سَكَنَتْ ص:٥ ضَجَّتُهُمْ قُلْتُ لِرَجُلٍ قَرِيبٍ مِنِّي: أَيْ بَارَكَ اللَّهُ فِيكَ مَاذَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ قَوْلِهِ؟ قَالَ: «قَدْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّكُمْ تُفْتَنُونَ فِي الْقُبُورِ قَرِيبًا من فتْنَة الدَّجَّال»

137. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खुत्बा इरशाद फरमाने के लिए खड़े हुए तो आप ﷺ ने फितने कब्र का ज़िक्र फ़रमाया, जिस में आदमी को आज़माया जाएगा, पस जब आप ﷺ ने इस का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसलमान ज़ोर से रोने लगे”। इमाम नसई ने इज़ाफा नकल किया है: यह रोना मेरे और रसूलुल्लाह ﷺ का कलाम समझने के दरमियान में हाइल हो गया, जब इन का यह रोना और शोर थमा तो मैंने अपने पास वाले एक आदमी से कहा: अल्लाह तआला तुम्हें बरकत अता फरमाए, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने कलाम के आख़िर पर क्या फ़रमाया? उस ने बताया: आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे वही के ज़रिए बताया गया है के तुम क़बरो में फितने दज्जाल के करीब करीब आज़माए जाओगे”। (सहीह)

رواه البخاری (1373) و النسائی (4 / 103 ، 104 ح 2064)

١٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا أَدْخِلَ الْمَيِّتُ الْقَبْرَ مَثَلَتْ لَهُ الشَّمْسُ عِنْدَ غُرُوبِهَا فَيَجْلِسُ يَمْسَحُ عَيْنَيْهِ وَيَقُولُ: دَعونِي أُصَلِّي ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

138. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ने फ़रमाया: “जब मय्यत को कब्र में दाखिल किया जाता है तो इसे सूरज ऐसे दिखाया जाता है जैसे वह करीब गुरूब हो, पस वह बैठ जाता है और अपने आँखे मलते हुए कहता है, मुझे छोड़ दो मैं नमाज़ पढ़ लु”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4272) [و ابن حبان ، الموارد : 779] * سليمان الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شاهد عند البيهقى فى اثبات القبر (64 بتحقيقى) بدون قوله :’’ و يمسح عينيه ‘‘ و صححه ابن حبان (الموارد : 781) و الحاكم على شرط مسل (1 / 379 ، 380) و وافقه الذهبى و سنده حسن كما قال الهيثمى فى مجمع الزوائد (3 / 52) فالحديث حسن دون قوله :’’ ويمسح عينيه ‘‘

١٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْمَيِّتَ يَصِيرُ إِلَى الْقَبْرِ فَيَجْلِسُ الرَّجُلُ الصَّالح فِي قَبره غير فزِع وَلَا مشعوف ثمَّ يُقَال لَهُ فِيمَ كُنْتَ فَيَقُولُ كُنْتُ فِي الْإِسْلَامِ فَيُقَالُ لَهُ مَا هَذَا الرَّجُلُ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَصَدَّقْنَاهُ فَيُقَالُ لَهُ هَلْ رَأَيْتَ اللَّهَ فَيَقُولُ مَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ أَنْ يَرَى اللَّهَ فَيُفْرَجُ لَهُ فُرْجَةً قِبَلَ النَّارِ فَيَنْظُرُ إِلَيْهَا يُحَطِّمُ بَعْضُهَا بَعْضًا فَيُقَالُ لَهُ انْظُرْ إِلَى مَا وَقَاكَ اللَّهُ ثمَّ يفرج لَهُ قِبَلَ الْجَنَّةِ فَيَنْظُرُ إِلَى زَهْرَتِهَا وَمَا فِيهَا فَيُقَال لَهُ هَذَا مَقْعَدك وَيُقَال لَهُ عَلَى الْيَقِينِ كُنْتَ وَعَلَيْهِ مِتَّ وَعَلَيْهِ تُبْعَثُ إِن شَاءَ الله وَيجْلس الرجل السوء فِي قَبره فَزعًا مشعوفا فَيُقَال لَهُ فِيمَ كُنْتَ فَيَقُولُ لَا أَدْرِي فَيُقَالُ لَهُ مَا هَذَا الرَّجُلُ فَيَقُولُ سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُولُونَ قولا فقلته فيفرج لَهُ قِبَلَ الْجَنَّةِ فَيَنْظُرُ إِلَى زَهْرَتِهَا وَمَا فِيهَا فَيُقَالُ لَهُ انْظُرْ إِلَى مَا صَرَفَ اللَّهُ عَنْك ثمَّ يفرج لَهُ فُرْجَةً قِبَلَ النَّارِ فَيَنْظُرُ إِلَيْهَا يُحَطِّمُ بَعْضُهَا بَعْضًا فَيُقَالُ لَهُ هَذَا مَقْعَدُكَ عَلَى الشَّك كنت وَعَلِيهِ مت وَعَلِيهِ تبْعَث إِن شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

139. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मय्यत कब्र की तरफ जाती है, तो (स्वालेह) आदमी किसी किस्म की घबराहट के बगैर अपने कब्र में बैठ जाता है, फिर कहा जाता है: तुम किस दीन पर थे वह कहेगा? इस्लाम पर, उस से पूछा जाएगा: यह आदमी कौन थे? वह कहेगा: अल्लाह के रसूल! मुहम्मद ﷺ , वह अल्लाह की तरफ से मोअजिज़ात लेकर हमारे पास तशरीफ़

लाए तो हमने उनकी तस्दीक की, उस से पूछा जाएगा: क्या तुम ने अल्लाह को देखा? वह जवाब देगा किसी के लिए (दुनिया) में अल्लाह को देखना सहीह व लायक नहीं, इस के बाद उस के लिए जहन्नम की तरफ एक सुराख़ कर दिया जाता है, तो वह उसकी तरफ देखता है के जहन्नम के बाज़ हिस्से बाज़ को खा रहे हैं, इसे कहा जाता है: इसे देखो जिस से अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया, फिर उस के लिए जन्नत की तरफ एक सुराख़ कर दिया जाता है, तो वह उसकी और उसकी नेअमतो की रोनक व खूबसूरती को देखता है, तो उसे बताया जाता है के यह तुम्हारा ठिकाना है, तुम यकीन पर थे इसी पर तुम फौत हुए और इंशाअल्लाह तुम इसी पर उठाए जाओगे, फिर बुरे आदमी को उसकी कब्र में बिठाया जाएगा तो वह बहोत घबराया सा होगा, उस से पूछा जाएगा: तुम किस दीन पर थे? तो वह कहेगा मैं नहीं जानता, फिर उस से पूछा जाएगा: यह शख़्स कौन थे? वह कहेगा मैंने लोगों को एक बात करते हुए सुना तो मैंने भी वैसे ही कह दिया, (इस के बाद) उस के लिए जन्नत की तरफ एक सुराख़ कर दिया जाएगा, तो वह उसकी और उसकी नेअमतो की रोनक व खूबसूरती को देखेगा, तो उसे कहा जाएगा: उस को देखो जिसे अल्लाह ने तुझ से दूर कर दिया, फिर उस के लिए जहन्नम की तरफ एक सुराख़ कर दिया जाएगा तो वह इसे देखेगा के उस का बाज़ हिस्सा बाज़ को खा रहा है, इसे कहा जाएगा: यह तेरा ठिकाना है, तू शक पर था इसी पर फौत हुआ और इंशाअल्लाह इसी पर उठाया जाएगा"। (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابن ماجه (4268) [و صححه البوصیری]

كتاب الْإِيمَان •	**किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़ने का बयान**
الْفَصْلُ الأول •	**पहली फस्ल**

١٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رد»

140. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने हमारे इस अम्र (दीन) में कोई ऐसा काम जारी किया जो के उस में नहीं वह मरदूद है"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2697) و مسلم (17 / 1718)، (4492)

١٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ خَيْرَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

141. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हम्द व सना और सलातु वस

सलाम के बाद सबसे बेहतरीन कलाम, अल्लाह की किताब है, और बेहतरीन तरीका मुहम्मद ﷺ का तरीका है, बदतरीन उमूर वह है जो नए जारी किए जाए और हर बिदअत गुमराही है”। (सहीह)

رواه مسلم (43 / 867)، (2005) [و زاد النسائی (3 / 189 ، 188 ح 1579) ’’ و کل ضلالة فی النار‘‘ و سنده سند مسلم]

١٤٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى الله ثَلَاثَة ملحد فِي الْحرم ومبتغ فِي الْإِسْلَام سنة الْجَاهِلِيَّة ومطلب دم امرىء بِغَيْر حق ليهريق دَمه» رَوَاهُ البُخَارِيّ

142. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोग अल्लाह को सख्त नापसंदीदा है, हरम में जुल्म व नाइंसाफी करने वाला, इस्लाम में जाहिलियत का तरीका तलाश करने वाला और बड़ी जद्दोजहद के बाद किसी मुसलमान को नाहक क़त्ल करने वाला”। (सहीह)

رواه البخاری (6882)

١٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى. قِيلَ: وَمَنْ أَبَى؟ قَالَ: مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ عَصَانِي فقد أَبى " رَوَاهُ البُخَارِيّ

143. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी सारी उम्मत जन्नत में जाएगी, सिवाय उस शख़्स के जिस ने इनकार किया”, अर्ज़ किया गया: किस ने इनकार किया? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा और जिस ने मेरी नाफ़रमानी की गोया उस ने इनकार कर दिया”। (सहीह)

رواه البخاری (7280)

١٤٤ - (صَحِيح) عَن جَابر بن عبد الله يَقُول جَاءَتْ مَلَائِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَائِم فَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَة وَالْقلب يقظان فَقَالُوا إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هَذَا مَثَلًا فَاضْرِبُوا لَهُ مثلا فَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا وَجَعَلَ فِيهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ ص:٥ دَاعِيًا فَمَنْ أَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ فَقَالُوا أَوِّلُوهَا لَهُ يفقهها فَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَة وَالْقلب يقظان فَقَالُوا فالدار الْجنَّة والداعي مُحَمَّد صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَمن أَطَاع مُحَمَّدًا صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فقد أَطَاع الله وَمن عصى مُحَمَّدًا صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فقد عصى الله وَمُحَمّد صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فرق بَين النَّاس. رَوَاهُ البُخَارِيّ

144. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कुछ फ़रिश्ते नबी ﷺ के पास आए, आप सो रहे थे, उन्होंने कहा: तुम्हारे इस साथी की एक मिसाल है, वह मिसाल इन के सामने बयान कर दो, उनमें से बाज़ फरिश्तो ने कहा वह तो सोए हुए है, जबकि बाज़ ने कहा बेशक आँखे सोई हुई है लेकिन दिल बेदार है, पस उन्होंने

कहा: उनकी मिसाल इस शख़्स जैसी है, जिस ने एक घर बनाया, उस में दस्तरखान लगाया और एक दाई को भेजा, पस जिस शख़्स ने दाई की दावत को कबूल कर लिया, वह घर में दाखिल होगा और दस्तरखान से खाना भी खाएगा और जिस ने दाई की दावत को कबूल न किया, ना यह घर में दाखिल हुआ न दस्तरखान से खाना खाया, फिर उन्होंने कहा: उसकी मज़ीद वज़ाहत कर दो, ताकि वह इसे समझ सके, फिर उनमें से किसी ने कहा के वह तो सोए हुए है, और बाज़ ने कहा आँख सोई हुई है और दिल बेदार है, पस उन्होंने कहा: घर जन्नत है, दाई मुहम्मद ﷺ, पस जिस शख़्स ने मुहम्मद ﷺ की इताअत की तो उस ने अल्लाह की इताअत की और जिस ने मुहम्मद ﷺ की नाफ़रमानी की तो उस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की और मुहम्मद ﷺ लोगों के दरमियान फर्क करने वाले हैं”| (सहीह)

رواه البخارى (7281)

١٤٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ جَاءَ ثَلَاثَة رَهْط إِلَى بيُوت أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُونَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا أخبروا كَأَنَّهُمْ تقالوها فَقَالُوا وَأَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ قَالَ أحدهم أما أَنا فَإِنِّي أُصَلِّي اللَّيْل أبدا وَقَالَ آخر أَنا أَصوم الدَّهْر وَلَا أفطر وَقَالَ آخر أَنَا أَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلَا أَتَزَوَّجُ أَبَدًا فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: «أَنْتُمُ الَّذِينَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا أَمَا وَاللَّهِ إِنِّي لَأَخْشَاكُمْ لِلَّهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهُ لَكِنِّي أَصُومُ وَأُفْطِرُ وَأُصَلِّي وَأَرْقُدُ وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مني»

145. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तीन शख़्स नबी ﷺ की इबादत के मुतल्लिक पूछने के लिए नबी ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात के पास आए, जब उन्हें उस के मुतल्लिक बताया गया, तो गोया उन्होंने इसे कम महसूस किया, चुनान्चे उन्होंने कहा: हमारी नबी ﷺ से क्या निस्बत? अल्लाह ने तो उनकी अगली पिछली तमाम खताए मुआफ़ फरमा दी है, उनमें से एक ने कहा: मैं तो हमेशा सारी रात नमाज़ पढूँगा, दूसरे ने कहा: मैं दिन के वक़्त हमेशा रोज़ा रखूँगा और इफ्तार नहीं करूँगा और तीसरे ने कहा: मैं औरतो से बचा करूँगा और मैं कभी शादी नहीं करूँगा, नबी ﷺ उन के पास आए और पूछा: तुम वह लोग हो जिन्होंने इस तरह इस तरह कहा है, अल्लाह की क़सम! मैं तुम से ज़्यादा अल्लाह से डरता हूँ और तुम से ज़्यादातक़्वा रखता हूँ, लेकिन मैं रोज़ा भी रखता हूँ और इफ्तार भी करता हूँ, रात को नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ और मैं औरतो से शादी भी करता हूँ, पस जो शख़्स मेरी सुन्नत से एअराज़ करे वह मुझ से नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5063) و مسلم (5 / 1403)، (3403)

١٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا فَرَخَّصَ فِيهِ فَتَنَزَّهَ عَنْهُ قَوْمٌ فَبَلَغَ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَطَبَ فَحَمِدَ اللَّهَ ثُمَّ قَالَ: «مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَتَنَزَّهُونَ عَنِ الشَّيْءِ أَصْنَعُهُ فَوَاللَّهِ إِنِّي لأعلمهم بِاللَّه وأشدهم لَهُ خشيَة»

146. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कोई काम किया, फिर आप ने उस में

रुखसत दे दी तो कुछ लोगों ने रुखसत को कबूल करने से इजतनाब किया, पस रसूलुल्लाह ﷺ को इस बारे में पता चला, तो आप ﷺ ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया, अल्लाह की हम्द बयान की फिर फ़रमाया: “लोगो को क्या हो गया कि जो काम मैं करता हूँ वह उन से दूर रहते है, अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह के मुतल्लिक उन से ज़्यादा जानता हूँ और उन से इसे ज़्यादा डरता हूँ”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6101) و مسلم (127 / 2356)، (6109)

١٤٧ - (صَحِيح) وَعَن رَافع بن خديج قَالَ: قَدِمَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وهم يأبرون النَّخْلَ فَقَالَ: «مَا تَصْنَعُونَ» قَالُوا كُنَّا نَصْنَعُهُ قَالَ «لَعَلَّكُمْ لَوْ لَمْ تَفْعَلُوا كَانَ خَيْرًا» ص:٥ فَتَرَكُوهُ فنفضت قَالَ فَذَكَرُوا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ إِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَيْءٍ مِنْ دِينِكُمْ فَخُذُوا بِهِ وَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَيْءٍ مِنْ رَأْيٍ فَإِنَّمَا أَنَا بشر» . رَوَاهُ مُسلم

147. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो वह अहले मदीना खजूरो की पेवनकारी किया करते थे, आप ﷺ ने पूछा: “तुम क्या करते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम ऐसे ही करते रहे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम (पेवनकारी) न करो तो शायद तुम्हारे लिए बेहतर हो”, उन्होंने ऐसा करना छोड़ दिया तो उस से पैदावार कम हो गई, रावी बयान करते हैं, उन्होंने उस के मुतल्लिक आप से बात की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं एक इंसान हूँ, जब मैं तुम्हें तुम्हारे दीन के किसी मुआमले के बारे में तुम्हें हुक्म दूँ तो उसकी तामिल करो, और जब में अपने राय से किसी चीज़ के मुतल्लिक तुम्हें कोई हुक्म दू तो मैं एक इंसान हूँ”। (सहीह)

رواه مسلم (140 / 2362)، (6127)

١٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللَّهُ بِهِ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنِي وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ فَالنَّجَاءَ النَّجَاءَ فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهِ فَأَدْلَجُوا فَانْطَلَقُوا عَلَى مَهْلِهِمْ فَنَجَوْا وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَأَصْبَحُوا مَكَانَهُمْ فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَأَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ أَطَاعَنِي فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهِ وَمثل من عَصَانِي وَكذب بِمَا جِئْتُ بِهِ مِنَ الْحَقِّ»

148. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी और जिस चीज़ के साथ अल्लाह ने मुझे मबउस किया है, उसकी मिसाल इस शख़्स जैसी है जो किसी कौम के पास आया और उस ने कहा मेरी कौम मैंने अपनी आंखो से लश्कर देखा है, और मैं वाज़ेह और हकीकी तौर पर आगाह करने वाला हूँ, लिहाज़ा तुम जल्दी से बचाव कर लो, पस उसकी कौम का एक गिरोह उसकी बात मान कर सरशाम इत्मिनान के साथ रवाना हो गया, और वह बच गया, जबकि उन के एक गिरोह ने इस शख़्स की बात को झुठलाया और अपनी जगह पर डटे रहे तो सुबह होते ही इस लश्कर ने इन पर धावा बोल दिया, और उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दिया, पस यह इस शख़्स की मिसाल है जिस ने मेरी इताअत की, और मेरी लाइ हुई शरियत की इत्तेबा की, और इस शख़्स की मिसाल है जिस ने मेरी नाफ़रमानी की और

मेरे लाए हुए हक़ की तकज़ीब की”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7283) و مسلم (16 / 2283)، (5954)

١٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّمَا مثلي وَمثل النَّاس كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حوله جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّار يقعن فِيهَا وَجعل يحجزهن ويغلبنه فيقتحمن فِيهَا فَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ وَأَنْتُمْ يقتحمون فِيهَا» . هَذِهِ رِوَايَةُ الْبُخَارِيِّ وَلِمُسْلِمٍ نَحْوَهَا وَقَالَ فِي آخرهَا: ص:٥ " فَذَلِكَ مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ أَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ: هَلُمَّ عَنِ النَّارِ هَلُمَّ عَنِ النَّارِ فَتَغْلِبُونِي تَقَحَّمُونَ فِيهَا "

149. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी मिसाल इस शख़्स कि सी है जिस ने आग जलाई, पस जब इस (आग) ने अपने इर्दगिर्द को रोशन कर दिया, तो परवाने और आग में गिरने वाले खशरात वगैरा उस में गिरना शुरू हो गए, और वह शख़्स उन्हें रोकने लगा लेकिन वह बज़ोर उस में गिरने लगे, पस मैं तुम्हें कमर से पकड़ कर आग से रोक रहा हूँ, जबकि तुम बज़ोर इसी में गिर रहे हो”। यह बुखारी की रिवायत है और मुस्लिम की रिवायत भी इसी तरह है और उस के आख़िर में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी और तुम्हारी मिसाल इस तरह है की मैं तुम्हें कमर से पकड़ कर आग से बचा रहा हूँ, आग से बच कर मेरी तरफ आ जाओ, आग से बच कर मेरी तरफ आ जाओ, लेकिन तुम मुझ से बज़ोर उस में गिर रहे हो”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6483) و مسلم (18 / 2284)، (5957)

١٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللَّهُ بِهِ مِنَ الْهُدَى وَالْعلم كَمثل الْغَيْث الْكثير أصَاب أَرضًا فَكَانَ مِنْهَا نقية قَبِلَتِ الْمَاءَ فَأَنْبَتَتِ الْكَلَأَ وَالْعُشْبَ الْكَثِيرَ وَكَانَتْ مِنْهَا أَجَادِبُ أَمْسَكَتِ الْمَاءَ فَنَفَعَ اللَّهُ بِهَا النَّاس فَشَرِبُوا وَسقوا وزرعوا وأصابت مِنْهَا طَائِفَةً أُخْرَى إِنَّمَا هِيَ قِيعَانٌ لَا تُمْسِكُ مَاءً وَلَا تُنْبِتُ كَلَأً فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ فَقُهَ فِي دِينِ اللَّهِ وَنَفَعَهُ مَا بَعَثَنِي اللَّهُ بِهِ فَعَلِمَ وَعَلَّمَ وَمَثَلُ مَنْ لَمْ يَرْفَعْ بِذَلِكَ رَأْسًا وَلَمْ يَقْبَلْ هُدَى اللَّهِ الَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ»

150. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने जो हिदायत और इल्म दे कर मुझे मबउस किया है, वह किसी ज़मीन पर बरसने वाली मुसलाधार बारिश की तरह है, पस इस ज़मीन का एक टुकड़ा बहोत अच्छा था, उस ने पानी को कबूल किया और उस ने बहोत सा घास और सब्ज़ा (हरियाली) उगाया, और इस ज़मीन का कुछ टुकड़ा सख्त था, उस ने पानी को रोक लिया, पस अल्लाह ने उस के ज़रिए लोगों को फ़ायदा पहुँचाया, लोगों ने खुद पिया, जानवरों को पिलाया और आबे पाशी की, जबकि ज़मीन का एक टुकड़ा साफ़ चटील था, वहां बारिश हुई तो वह ना पानी रोकती है, न सब्ज़ा (हरियाली) उगाती है, बस यही मिसाल इस शख़्स की है जिसे अल्लाह के दीन में समझ बुझ अता की गई और अल्लाह ने जो तालीमात दे कर मुझे मबउस फ़रमाया, उन से इसे फ़ायदा पहुँचाया, पस उस

ने खुद सिखा और दुसरो को सिखाया और यही इस शख़्स की मिसाल है, जिस ने (अज़राहे तकब्बुर) उसकी तरफ सर न उठाया और अल्लाह ने जो हिदायत दे कर मुझे मबउस फ़रमाया इसे कबूल न किया”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (79) و مسلم (15 / 2282)، (5953)

١٥١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: تَلَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَات محكمات)»» وَقَرَأَ إِلَى: (وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ)»» قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَإِذَا رَأَيْتَ وَعِنْدَ مُسْلِمٍ: رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ سَمَّاهُمُ الله فاحذروهم "

151. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ने यह आयत तिलावत फरमाई: “अल्लाह ही वह ज़ात है जिस ने आप पर यह किताब नाज़िल की, उसकी बाज़ आयते साफ़ वाज़ेह है और मुहकम है”, और यहाँ तक तिलावत फरमाई: “और वाज़ व नसीहत को सिर्फ वही लोग समझते है जो अकलमंद है”, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तू देखे”, जबकि मुस्लिम की रिवायत में है: “जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मुख्तलिफ मानी की मुतहम्मल आयात तलाश करते हैं, तो वह ऐसे लोग है जिन का अल्लाह ने (दिलो में कजी रखने वाले) नाम रखा है, तो तुम उन से बचो”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4547) و مسلم (1 / 2665)، (6775)

١٥٢ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: هَجَّرْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا قَالَ: فَسَمِعَ أَصْوَاتَ رَجُلَيْنِ اخْتَلَفَا فِي آيَةٍ فَخَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْرَفُ فِي ص:٥ وَجْهِهِ الْغَضَبُ فَقَالَ: «إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ باختلافهم فِي الْكتاب» . رَوَاهُ مُسلم

152. अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं सुबह सवेरे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने दो आदमियों की आवाज़ सुनी जो के किसी आयत के बारे में झगड़ रहे थे, रसूलुल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में हमारे पास तशरीफ़ लाए, गुस्से के आसार आप के चेहरे पर नुमाया थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम से पहली कौमे किताब में इख्तिलाफ करने की वजह से हलाक हुई”। (सहीह)

رواه مسلم (2 / 2666)، (6776)

١٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أَن أعظم الْمُسلمين فِي لامسلمين جُرْمًا مَنْ سَأَلَ عَنْ شَيْءٍ لَمْ يُحَرَّمْ على النَّاس فَحرم من أجل مَسْأَلته»

153. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमानों के

हक़ में वह मुसलमान सबसे बड़ा मुजरिम है जिस ने किसी ऐसी चीज़ के बारे में (अपने नबी से) दरियाफ्त किया जो पहले हराम नहीं थी, लेकिन उस के दरियाफ्त करने की वजह से इसे हराम कर दिया गया"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (7289) و مسلم (132 / 2358)، (6116)

١٥٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ فِي آخِرِ الزَّمَانِ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ يَأْتُونَكُمْ مِنَ الْأَحَادِيثِ بِمَا لَمْ تَسْمَعُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ فَإِيَّاكُمْ وَإِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّونَكُمْ وَلَا يَفْتِنُونَكُمْ» . . رَوَاهُ مُسلم

154. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आखिरी दौर में फरेबकार झूठे लोग होंगे, वह तुम्हारे पास ऐसी अहादीस लाएंगे जो ना तुमने सुनी होगी न तुम्हारे आबाअ ने, पस अपने आप को उन से और उन्हें अपने आप से दूर रखो, ताकि वह तुम्हें गुमराही और फितने में मुब्तिला न कर दे"। (सहीह)

رواه مسلم (7 / 7)، (16)

١٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أهل الْكتاب يقرؤون التَّوْرَاةَ بِالْعِبْرَانِيَّةِ وَيُفَسِّرُونَهَا بِالْعَرَبِيَّةِ لِأَهْلِ الْإِسْلَامِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلَا تُكَذِّبُوهُمْ وَ (قُولُوا آمنا بِاللَّه وَمَا أنزل إِلَيْنَا» الْآيَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

155. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अहले किताब तौरात इबरानी ज़ुबान में पढ़ा करते थे और अहले इस्लाम के लिए अरबी ज़ुबान में उसकी तफसीर बयान किया करते थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अहले किताब की ना तस्दीक करो न तकज़ीब, बल्के, कहो हम अल्लाह पर और जो हमारी तरफ नाज़िल किया गया उस पर ईमान लाए"। (सहीह)

رواه البخاری (7542)

١٥٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سمع» . رَوَاهُ مُسلم

156. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आदमी के झूठा होने के लिए बस यही काफी है के वह हर सुनी सुनाई बात (तहकीक किए बगैर) बयान कर दे"। (सहीह)

رواه مسلم (5 / 5)، (7)

١٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا من نَبِي بَعثه الله فِي أمة قبلي إِلَّا كَانَ لَهُ من أُمَّتِهِ حَوَارِيُّونَ وَأَصْحَابٌ يَأْخُذُونَ بِسُنَّتِهِ وَيَقْتَدُونَ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِنَّهَا تَخْلُفُ مِنْ بَعْدِهِمْ خُلُوفٌ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ وَيَفْعَلُونَ مَا لَا يُؤْمَرُونَ فَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِيَدِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِلِسَانِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَمَنْ ص:٥ جَاهَدَهُمْ بِقَلْبِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ وَلَيْسَ وَرَاءَ ذَلِكَ مِنَ الْإِيمَانِ حَبَّةُ خَرْدَلٍ» . رَوَاهُ مُسلم

157. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने मुझ से पहले जिस नबी को मबउस फ़रमाया तो इस नबी के उसकी उम्मत में कुछ मददगार और कुछ आम साथी होते हैं, वह उसकी सुन्नत को कबूल करते और उस के हुक्म की इत्तेबा करते हैं, फिर उन के बाद बुरे जानशीन आजाएँगे, वह ऐसी बाते करेंगे जिस पर उनका अमल नहीं होगा, और ऐसे काम करेंगे जिन का उन्हें हुक्म नहीं दिया गया होगा, पस जो शख़्स अपने हाथ के साथ उन से जिहाद करेगा वह मोमिन है, जो अपने ज़ुबान के साथ उन से जिहाद करेगा वह मोमिन है, और दिल से उन से जिहाद करेगा तो वह भी मोमिन है और उस के बाद राइ के दाने के बराबर भी ईमान नहीं”| (सहीह)

رواه مسلم (80 / 50)، (179)

١٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى كَانَ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلُ أُجُورِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئا» . رَوَاهُ مُسلم

158. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स हिदायत की तरफ दावत दे, तो उसे भी इस हिदायत की इत्तेबा करने वालो की मिस्ल सवाब मिलेगा, और यह उन के अज़्र में कोई कमी नहीं करेगा, और जो शख़्स किसी गुमराही की तरफ दावत दे तो उसे भी इस गुमराही की इत्तेबा करने वालो की मिस्ल गुनाह मिलेगा, और यह उन के गुनाह में कोई कमी नहीं करेगा”| (सहीह)

رواه مسلم (16 / 2674)، (6804)

١٥٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَدَأَ الْإِسْلَامُ غَرِيبًا وَسَيَعُودُ كَمَا بَدَأَ فَطُوبَى للغرباء» . رَوَاهُ مُسلم

159. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस्लाम अजनबियत के आलम में शुरू हुआ, और अनकरीब इसी हालत में लौट जाएगा जैसे शुरू हुआ, पस अजनबियों (जिन्होंने इस्लाम के इब्तिदाई दौर और आखिरी दौर में इस्लाम का साथ दिया) के लिए खुशखबरी है”| (सहीह)

رواه مسلم (232 / 145)، (372)

١٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْإِيمَانَ لَيَأْرِزُ إِلَى الْمَدِينَةِ كَمَا تأرز الحيية إِلَى جحرها»

160. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक ईमान मदीना की तरफ सिमट आएगा जिस तरह सांप अपने बिल की तरफ सिमट आता है”| # हम इंशाअल्लाह तआला अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस (ذرونی ما ترکتکم) किताब मनासिक में और मुआविया व जाबिर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीसे (لايزال من امتى) और (ولا يزال طائفة من امتى) बाब सवाब हाज़ल अमत में ज़िक्र करेंगे (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1872) و مسلم (233 / 147)، (374) 0 حدیث ’’ ذرونی ماترکتکم ‘‘ یاتی (2505) و حدیث ’’ لا یزال من امتی ‘‘ یاتی (6276 حدیث معاویة ، 5507 حدیث جابر) و حدیث ’’ لا یزال طائفة من امتی ‘‘ یاتی (6283)

كتاب الْإِيمَان •	किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़ने का बयान
الْفَصْل الثَّانِي •	दूसरी फस्ल

١٦١ - (ضَعِيف) عَن ربيعَة الجرشِي يَقُول أتِي النَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقِيلَ لَهُ لِتَنَمْ عَيْنُكَ وَلِتَسْمَعْ أُذُنُكَ وَلِيَعْقِلْ قَلْبُكَ قَالَ فَنَامَتْ عَيْنَايَ وَسَمِعَتْ أُذُنَايَ وَعَقَلَ قَلْبِي قَالَ فَقِيلَ لِي سيد بنى دَارا فصنعَ مَأْدُبَةً وَأَرْسَلَ دَاعِيًا فَمَنْ أَجَابَ ص:٥ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ وَرَضِيَ عَنْهُ السَّيِّدُ وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلم يطعم مِنَ الْمَأْدُبَةِ وَسَخِطَ عَلَيْهِ السَّيِّدُ قَالَ فَاللَّهُ السَّيِّدُ وَمُحَمَّدٌ الدَّاعِي وَالدَّارُ الْإِسْلَامُ وَالْمَأْدُبَةُ الْجَنَّةُ. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

161. रबीअ जुरशी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की खिदमत में एक फ़रिश्ता हाज़िर हुआ, और आप से अर्ज़ किया गया: आप की आँखे सोई हुई हो (किसी और तरफ न देखे) आप के कान तवज्जो से सुनते हो और आप का दिल समझता हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी आँखे सो गई, मेरे कान गौर से सुनते रहे और मेरा दिल समझता रहा”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे कहा गया: किसी सरदार ने कोई घर बनाया, उस में दस्तरखान लगाया और किसी दावत देने वाले को भेजा, पस जिस शख़्स ने दाई की दावत को कबूल कर लिया, वह घर में दाखिल हुआ, खाना खाया और वह सरदार उन से खुश हो गया, और जिस शख़्स ने दाई की दावत कबूल न की तो वह ना घर में दाखिल हुआ न खाना खाया और सरदार भी उस पर नाराज़ हुआ”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह सरदार है, मुहम्मद ﷺ दाई है घर से मुराद इस्लाम और दस्तरखान से मुराद जन्नत है”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الدارمی (1 / 7 ح 11) * عباد بن منصور ضعیف مدلس و عنعن و الحدیث السابق (144) یغنی عنه

١٦٢ - (صَحِيح) وَعَن أبي رَافع وَغَيره رَفعه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ مُتَّكِئًا عَلَى أَرِيكَتِهِ يَأْتِيهِ أَمر مِمَّا أَمَرْتُ بِهِ أَوْ نَهَيْتُ عَنْهُ فَيَقُولُ لَا أَدْرِي مَا وَجَدْنَا فِي كِتَابِ اللَّهِ اتَّبَعْنَاهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة. وَقَالَ التِّرْمِذِيّ حسن صَحِيح

162. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं तुम में से किसी को अपने मुसनद पर टेक लगाए हुए न पाऊ के उस के पास मेरा कोई अम्र आए, जिसके मुतल्लिक मैंने हुक्म दिया हो या मैंने उस से मना किया हो, तो वह शख़्स यूँ कहे, मैं (इसे) नहीं जानता, हमने जो कुछ अल्लाह की किताब में पाया, हम उसकी इत्तेबा करेंगे”| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (6 / 8 ح 24362 ، اطراف المسند 6 / 218) و ابوداؤد (605) و الترمذی (2663 وقال : حسن) و ابن ماجه (13) و البیهقی فی دلائل النبوۃ (1 / 25 ، 6 / 549) [و صححه ابن حبان (الموارد : 13) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 108 ، 109) و وافقه الذھبی]

١٦٣ - (صَحِيح) وَعَن الْمِقْدَام بن معدي كرب عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أنه قَالَ: «أَلا إِنِّي أُوتيت الْكتاب وَمِثْلَهُ مَعَهُ أَلَا يُوشِكُ رَجُلٌ شَبْعَانٌ عَلَى أَرِيكَتِهِ يَقُولُ عَلَيْكُمْ بِهَذَا الْقُرْآنِ فَمَا وَجَدْتُمْ فِيهِ مِنْ حَلَالٍ فَأَحِلُّوهُ وَمَا وَجَدْتُمْ فِيهِ مِنْ حَرَامٍ فَحَرِّمُوهُ وَإِنَّ مَا حَرَّمَ رَسُولُ الله كَمَا حَرَّمَ اللَّهُ أَلَا لَا يَحِلُّ لَكُمُ لحم الْحِمَارُ الْأَهْلِيُّ وَلَا كُلُّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبع وَلَا لُقَطَةُ مُعَاهَدٍ إِلَّا أَنْ يَسْتَغْنِيَ عَنْهَا صَاحِبُهَا وَمَنْ نَزَلَ بِقَوْمٍ فَعَلَيْهِمْ أَنْ يُقْرُوهُ فَإِنْ لَمْ يَقْرُوهُ فَلَهُ أَنْ يُعْقِبَهُمْ بِمِثْلِ قِرَاهُ» رَوَاهُ ص:٥ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى الدَّارِمِيُّ نَحْوَهُ وَكَذَا ابْنُ مَاجَهْ إِلَى قَوْلِهِ: «كَمَا حَرَّمَ الله»

163. मिक्दाम बिन मुअदी करीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! मुझे कुरान और उसके साथ उसकी मिस्ल अता की गई है, सुन लो! करीब है के कोई शक्म सैर शख़्स अपनी मुसनद पर यूँ कहे: तुम इस कुरान को लाज़िम पकड़ो, पस तुम जो चीज़ उस में हलाल पाओ इसे हलाल समझो और तुम जो चीज़ उस में हराम पाओ तो उसे हराम समझो, हालाँकि अल्लाह के रसूल! ﷺ ने जिस चीज़ को हराम करार दिया है के ऐसे ही है जैसे अल्लाह ने हराम करार दिया है, सुन लो, पालतू गधे, नुकीले दांत वाले दरिन्दे और ज़मीन की गिरी पड़ी कोई चीज़, इल्ला यह कि वह खुद उन से बेनियाज़ हो जाए, तुम्हारे लिए हलाल नहीं, और जो शख़्स किसी कौम के यहाँ पड़ाव डाले तो उन लोगों पर लाज़िम है के वह उसकी दावत करे, और अगर वह उसकी दावत न करे तो फिर इसे हक़ हासिल है के वह अपने खाने के बराबर उन से वुसुल करे”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (4604) و الدارمی (1 / 144 ح 592) و ابن ماجه (12) [و صححه ابن حبان ، الموارد : 97]

١٦٤ - (ضَعِيف) وَعَن الْعِرْبَاض بن سَارِيَة قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أيحسب أحدكُم متكأ عَلَى أَرِيكَتِهِ يَظُنُّ أَنَّ اللَّهَ لَمْ يُحَرِّمْ شَيْئًا إِلَّا مَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ أَلَا وَإِنِّي وَاللَّهِ قَدْ أَمَرْتُ وَوَعَظْتُ وَنَهَيْتُ عَنَ أَشْيَاءَ إِنَّهَا لَمِثْلُ الْقُرْآنِ أَوْ أَكْثَرُ وَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يُحِلَّ لَكُمْ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتَ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا بِإِذْنٍ وَلَا ضَرْبَ نِسَائِهِمْ وَلَا أَكْلَ ثِمَارِهِمْ إِذَا أَعْطَوْكُمُ الَّذِي عَلَيْهِمْ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي إِسْنَادِهِ: أَشْعَثُ بْنُ شُعْبَة المِصِّيصِي قد تكلم فِيهِ

164. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हुए और फ़रमाया: “क्या

तुम में से कोई अपने मुसनद पर टेक लगा कर यह गुमान करता है की अल्लाह ने सिर्फ वही कुछ हराम करार दिया है जिस का ज़िक्र कुरान में है? सुन लो! अल्लाह की क़सम! मैंने भी कुछ चीजों के बारे में हुक्म दिया है, वाज़ व नसीहत की और कुछ चीजों से मना किया, बिलाशुबा वह भी कुरान की मिस्ल है बल्कि उस से भी ज़्यादा हैं, बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल नहीं किया की तुम बिला इजाज़त अहले किताब (ज़िम्मियो) के घरो में दाखिल हो जाओ और जब तक वह तुम्हें जिज़िया देते रहे, उनकी औरतों को मारना और उन के फल खाना तुम्हारे लिए हलाल नहीं"| अबू दावुद, उसकी सनद में अशअस बिन शुऐब मिस्सिसी रावी है जिस पर कलाम किया गया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3050) * اشعث بن شعبة وثقه ابن حبان وحده و ضعفه ابو زرعة وغيره و ضعفه راجح ولم يثبت توثيقه عن ابی داود وقال فيه الذهبی : ليس بالقوی ، (ديوان الضعفاء : 473)

١٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْهُ: قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَوَعَظَنَا مَوْعِظَةً بَلِيغَةً ذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُونُ وَوَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوبُ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ كَأَنَّ هَذِهِ مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَأَوْصِنَا قَالَ: «أُوصِيكُمْ بِتَقْوَى اللَّهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ كَانَ عبدا حَبَشِيًّا فَإِنَّهُ من يَعش مِنْكُم يرى اخْتِلَافًا كَثِيرًا فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِينَ الْمَهْدِيِّينَ تَمَسَّكُوا بِهَا وَعَضُّوا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُورِ فَإِنَّ كُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّهُمَا لَمْ يَذْكُرَا الصَّلَاةَ

165. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ पढ़ाई, फिर आप ने अपना रूखे अनवर (चेहरा) हमारी तरफ किया तो एक बड़े बलिग़ अंदाज़ में हमें वाज़ व नसीहत फरमाई, जिस से आँखे अश्कबार हो गई और दिल डर गए, एक आदमी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! यह तो अलविदाई नसीहतें मालुम होती, पस आप हमें वसीयत फरमाइए, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करने, सुनने और इताअत करने की वसीयत करता हूँ, ख्वाह वह (अमिर) हब्शी गुलाम हो, क्योंकि तुम में से जो शख़्स मेरे बाद जिंदा रहेगा वह बहोत इख्तिलाफ देखेगा, पस तुम पर मेरी और हिदायत याफ्ता खुलफ़ा ए राशेदीन की सुन्नत लाज़िम है, पस तुम उस से तमसिक इख़्तियार करो और दाढ़ो के साथ इसे पकड़ लो, और दीन में नए काम जारी करने से बचो, क्योंकि दीन में हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है"| अहमद अबू दावुद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने नमाज़ का ज़िक्र नहीं किया| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 126 ، 127 ح 17275) و ابوداؤد (4607) و الترمذی (2676 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (43) [و صححه ابن حبان (الموارد : 102) و الحاكم (1 / 95 ، 96) و وافقه الذهبی]

١٦٦ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ خَطَّ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطًّا ثُمَّ ص:٥ قَالَ: «هَذَا سَبِيلُ اللَّهِ ثُمَّ خَطَّ خُطُوطًا عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ وَقَالَ هَذِهِ سُبُلٌ عَلَى كُلِّ سَبِيلٍ مِنْهَا شَيْطَانٌ يَدْعُو إِلَيْهِ» ثمَّ قَرَأَ (إِن هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ)»» الْآيَة. رَوَاهُ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

166. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमारे लिए एक लकीर

खिचां, फिर फ़रमाया: "ये अल्लाह की राहे है", फिर आप ﷺ ने उस के दाएँ बाएँ कुछ ख़त खिंचे और फ़रमाया: "ये और राहें है, और उनमें से हर राह पर एक शैतान है, जो इस राह की तरफ बुलाता है", फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "ये मेरी सीधी राह है, पस उसकी इत्तेबा करो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 435 ح 4142) و النسائی (فی الکبری : 11174 ، التفسیر : 194) و الدارمی (1 / 67 ، 68 ح 208) [و صححه ابن حبان (الموارد : 1741 ، 1742) و الحاکم (2 / 318) و رواه ابن ماجه (11)]

١٦٧ - (سَنَده ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُونَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئْتُ بِهِ» رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةَ وَقَالَ النَّوَوِيُّ فِي أَرْبَعِينِهِ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ رَوَيْنَاهُ فِي كتاب الْحجَّة بِإِسْنَاد صَحِيح

167. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता हत्ता कि उसकी ख्वाहिशात मेरी लाइ हुई शरियत के ताबेअ हो जाए"| इमाम बगवी ने शरह सुन्ना में उसे रिवायत किया है, इमाम नववी ने अरबईन में फ़रमाया: यह हदीस सहीह है और हमने इसे किताब अल हुज्जा में सहीह सनद के साथ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (1 / 212 ، 213 ح 104) و النووی فی الاربعین (41) [و قوام السنة فی کتاب الحجة (1 / 251 ح 103)] * ھشام بن حسان مدلس و عنعن واما نعیم بن حماد فثقة صدوق کما حققته فی '' ارشاد العباد فی توثیق نعیم بن حماد '' و حدیثه لا ینزل عن درجة الحسن ابدًا فی غیر ما انکر علیه ومن تکلم فیه فقد اخطا ولا بن رجب الحنبلی علل باطلة فی تضعیف ھذا الحدیث ، فی کتابه '' جامع العلوم و الحکم '' اجبت عنھا فی رسالة خاصة و الحمدلله

١٦٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ بِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ الْمُزَنِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من أَحْيَا سُنَّةً مِنْ سُنَّتِي قَدْ أُمِيتَتْ بَعْدِي فَإِنَّ لَهُ مِنَ الْأَجْرِ مِثْلَ أُجُورِ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا وَمَنِ ابْتَدَعَ بِدْعَةً ضَلَالَةً لَا يَرْضَاهَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ مِثْلُ آثَامِ مَنْ عَمِلَ بِهَا لَا يَنْقُصُ من أوزارهم شَيْئا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

168. बिलाल बिन हारिस मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने मेरी किसी ऐसी सुन्नत कोअहया (जिंदा) किया, जिसे मेरे बाद तर्क कर दिया गया था, तो इसे भी उस पर अमल करने वालो के बराबर सवाब मिलेगा और उन के अज़र में कोई कमी नहीं होगी, और जिस ने बिदअत व ज़लालत को जारी किया, उसे अल्लाह और उस के रसूल पसंद नहीं करते, तो उसे भी इतना ही गुनाह मिलेगा जितना उस पर अमल करने वालो को मिलेगा और उन के गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه الترمذی (2677 وقال : ھذا حدیث حسن) [و ابن ماجه : 209 ببعض الاختلاف و انظر الحدیث الآتی : 169] * فیه کثیر بن عبدالله العوفی : ضعیف جدًا متھم بالکذاب ، ضعفه الجمھور و اخطا من قواه

١٦٩ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ كَثِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ

169. इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया है और इब्ने माजा ने यह रिवायत कसीर बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र अन अबी अन जदह के तरीक से बयान की है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (210) * فيه كثير بن عبدالله بن عوف ضعيف جدًا متهم ، انظر الحديث السابق : 168

١٧٠ - (سَنَده ضَعِيف) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الدِّينَ لَيَأْرِزُ إِلَى الْحِجَازِ كَمَا تَأْرِزُ الْحَيَّةُ إِلَى جُحْرِهَا وَلَيَعْقِلَنَّ الدِّينُ مِنَ الْحِجَازِ مِعْقَلَ الْأُرْوِيَّةِ مِنْ رَأْسِ الْجَبَلِ إِنَّ الدِّينَ بَدَأَ غَرِيبًا وَسَيَعُودُ كَمَا بَدَأَ فَطُوبَى لِلْغُرَبَاءِ وَهُمُ الَّذِينَ يُصْلِحُونَ مَا أَفْسَدَ النَّاسُ مِنْ بَعْدِي من سنتي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

170. अमर बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दीन हज्जाज़ की तरफ इस तरह सिमट जाएगा जिस तरह सांप अपने बिल की तरफ सिमट जाता है, और दीन हज्जाज़ में इस तरह महफ़ूज़ होगा जिस तरह पहाड़ी बकरी पहाड़ की चोटी पर पनाह लेती है, बेशक दीन का आगाज़ अजनबियत के आलम में हुआ और वह अनकरीब इसी हालत मेंलौट जाएगा जैसे शुरू हुआ, ऐसे अजनबियों के लिए खुशखबरी है, और यही वह लोग है जो मेरी सुन्नत की इस्लाह व अहया (जिंदा) करेंगे जिसे लोगों ने मेरे बाद ख़राब कर दिया होगा”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (2630 وقال : حسن) * فيه كثير بن عبدالله العوفى ضعيف جدًا متهم ، تقدم : 168

١٧١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أُمَّتِي مَا أَتَى عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ حَذْوَ النَّعْلِ بِالنَّعْلِ حَتَّى إِنَّ كَانَ مِنْهُمْ مَنْ أَتَى أُمَّهُ عَلَانِيَةً لَكَانَ فِي أُمَّتِي مَنْ يَصْنَعُ ذَلِكَ وَإِنَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ تَفَرَّقَتْ عَلَى ثِنْتَيْنِ وَسَبْعِينَ مِلَّةً وَتَفْتَرِقُ أُمَّتِي عَلَى ثَلَاثٍ وَسَبْعِينَ مِلَّةً كُلُّهُمْ فِي النَّارِ إِلَّا مِلَّةً وَاحِدَةً قَالُوا وَمن هِيَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ مَا أَنَا عَلَيْهِ وأصحابي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

171. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत पर ऐसा वक़्त आएगा जैसे बनी इसराइल पर आया था, और वह मुमासलत में ऐसे होगा जैसे जूता जूते के बराबर होता है, हत्ता कि अगर उनमें से किसी ने अपने माल से एलानिया बदकारी की होगी तो मेरी उम्मत में भी ऐसा करने वाला शख़्स होगा, बेशक बनी इसराइल बहत्तर फिरको में तकसीम हुए और मेरी उम्मत तिहत्तर फिरको में तकसीम होगी, एक मिल्लत के सिवा बाकी सब जहन्नम में होंगे”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ﷺ वह एक मिल्लत कौन सी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस पर मैं और मेरे सहाबा है”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2641 وقال : حسن غريب) * ابن انعم الافريقى ضعيف (تقريب التهذيب : 3862) و للحديث شواهد ضعيفة

١٧٢ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ أَحْمَدَ وَأَبِي دَاوُدَ عَنْ مُعَاوِيَةَ: «ثِنْتَانِ وَسَبْعُونَ فِي النَّارِ وَوَاحِدَةٌ فِي الْجَنَّةِ وَهِيَ الْجَمَاعَةُ وَإِنَّهُ سَيَخْرُجُ فِي أُمَّتِي أَقْوَامٌ تَتَجَارَى بِهِمْ تِلْكَ الْأَهْوَاءُ كَمَا يَتَجَارَى الْكَلْبُ بِصَاحِبِهِ لَا يَبْقَى مِنْهُ عِرْقٌ وَلَا مَفْصِلٌ إِلَّا دخله»

172. अहमद और अबू दावुद में मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रिवायत में है: “बहत्तर जहन्नम में जाएँगे और एक जन्नत में जाएगा, और अनकरीब मेरी उम्मत में ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे उनमें यह बिदआत इस तरह सरायत कर जाएगी जिस तरह बावले कुत्ते का असर कटे हुए शख़्स के रग व रेशे में सरायत कर जाता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 102 ح 17061) و ابوداؤد (4597)

١٧٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ لَا يَجْمَعُ أُمَّتِي أَوْ قَالَ: أُمَّةَ مُحَمَّدٍ عَلَى ضَلَالَةٍ وَيَدُ اللَّهِ عَلَى الْجَمَاعَةِ وَمَنْ شَذَّ شَذَّ فِي النَّار ". . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

173. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला मेरी उम्मत को”, या फ़रमाया: “मुहम्मद ﷺ की उम्मत को गुमराही पर जमा नहीं करेगा और अल्लाह तआला का हाथ जमाअत पर है और जो शख़्स जमाअत से जुदा हुआ वह जहन्नम में अलग डाला जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2167 وقال : هذا حديث غريب) * سليمان بن سفيان المدنی ضعيف و للحديث شواهد عند الحاكم (1 / 116 ح 399 و سنده صحيح) وغيره دون قوله :’’ ومن شذ شذ فی النار ‘‘ فهو ضعيف و الباقی صحيح

١٧٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اتَّبِعُوا السَّوَادَ الْأَعْظَمَ فَإِنَّهُ مَنْ شَذَّ شَذَّ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ من حَدِيث أنس

174. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सवाद ए आज़म की इत्तेबा करो, क्योंकि जो अलग हुआ वह जहन्नम में डाला जाएगा”, इमाम इब्ने माजा ने यह हदीस अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه [الحاكم فی المستدرک (1 / 115 ، 116) و ابن ماجه (3950 بالفاظ مختلفة) من حديث انس رضی الله عنه بسند ضعيف جدًا ، معان : لين الحديث ، و ابو خلف : متروک رماه ابن معين بالكذب* و للحديث شواهد ضعيفة جدًا عند ابی نعيم فی اخبار اصبهان (2 / 208) وغيره

١٧٥ - (ضَعِيف) وَعَن أنس قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا بُنَيَّ إِنْ قَدَرْتَ أَنْ تصبح وتمسي لَيْسَ فِي قَلْبِكَ غِشٌّ لِأَحَدٍ فَافْعَلْ» ثُمَّ قَالَ: «يَا بني وَذَلِكَ من سنتي وَمن أَحْيَا سُنَّتِي فَقَدْ أَحَبَّنِي وَمَنْ أَحَبَّنِي كَانَ مَعِي فِي الْجنَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

175. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “बेटा! अगर तो सुबह व शाम इस हालत में कर सके के तुम्हार दिल में किसी के लिए बद्ख्वाही न हो तो ऐसा कर”, फिर फ़रमाया: “बेटा! यह तर्ज़े अमल मेरी सुन्नत है और जिस ने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की तो उस ने मुझ से मुहब्बत की, और जिस ने मुझ से मुहब्बत की तो वह जन्नत में मेरे साथ होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2678 وقال : هذا حديث حسن غريب) * فيه علی بن زيد بن جدعان وهو ضعيف

١٧٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أجر مائَة شَهِيد»

176. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने मेरी उम्मत के फसाद के वक़्त मेरी सुन्नत पर अमल किया तो उस के लिए सौ शहीद का सवाब है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه [البيهقى فى الزهد (209) و ابن عدى (2 / 739) و عندهما الحسن بن قتيبة ضعفه الجمهور و عبدالخالق بن المنذر لا يعرف ، انظر لسان الميزان (3 / 401) و رواه الطبرانى فى الاوسط (5410) و فيه محمد بن صالح العدوى ، قال الهيشمى :’’ ولم ارمن ترجمه ‘‘ (مجمع الزوائد 1 / 172 و انظر 3 / 208) فالحديث ضعيف كما فى الانوار للبغوى بتحقيقى (1237)]

١٧٧ - (حسن) وَعَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ أَتَاهُ عُمَرُ فَقَالَ إِنَّا نَسْمَعُ أَحَادِيثَ مِنْ يَهُودَ تُعْجِبُنَا أَفْتَرَى أَنْ نَكْتُبَ بَعْضَهَا؟ فَقَالَ: «أَمُتَهَوِّكُونَ أَنْتُم كَمَا تَهَوَّكَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى؟ لَقَدْ جِئْتُكُمْ بِهَا بَيْضَاءَ نَقِيَّةً وَلَوْ كَانَ مُوسَى حَيًّا مَا وَسِعَهُ إِلَّا اتِّبَاعِي» . رَوَاهُ أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي كتاب شعب الايمان

177. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, के जब उमर रदियल्लाहु अन्हु उन के पास आए तो उन्होंने कहा, हम यहूद से कुछ ताज्जुब अंगेज़ बाते सुनते है, क्या आप इजाज़त मरहमत फरमाते हैं की हम उनमें से बाज़ लिख लिया करे, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम भी यहूद व नसारा की तरह (अपने दीन के बारे में हैरान हो), जबकि मैं तुम्हारे पास साफ़ और वाज़ेह दीन लेकर आया हूँ, अगर मूसा अलैहिस्सलाम भी जिंदा होते तो इन के लिए भी मेरी इत्तेबा के सिवा किसी और चीज़ की इत्तेबा जाईज़ न होती”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (3 / 387 ح 15223) و البيهقى فى كتاب شعب الايمان (176) [و الدارمى 1 / 115 ، 116 ح 441] * مجالد : ضعيف ، ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة عند الرويانى (1 / 175 ح 225) وغيره

١٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ أَكَلَ طَيِّبًا وَعَمِلَ فِي سُنَّةٍ وَأَمِنَ النَّاسُ بَوَائِقَهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِن هَذَا الْيَوْم لكثيرفي النَّاسِ قَالَ: «وَسَيَكُونُ فِي قُرُونٍ بَعْدِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

178. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने हलाल खाया, सुन्नत के मुवाफिक अमल किया और लोग उसकी शरान्गेज़ियो से महफूज़ रहे तो वह जन्नत में दाखिल होगा”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इस दौर में तो इस तरह के बहोत से लोग है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “और मेरे बाद के अदवार में भी होंगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2520 وقال : حديث غريب) [و صححه الحاكم (4 / 104) و تناقض قول الذهبى فيه] * ابوبشر مجهول الحال وثقه الحاكم وحده وتناقض قول الذهبى فيه فتساقط

١٧٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّكُم فِي زمَان تَرَكَ مِنْكُمْ عُشْرَ مَا أُمِرَ بِهِ هَلَكَ ثُمَّ يَأْتِي زَمَانٌ مَنْ عَمِلَ مِنْهُمْ بِعُشْرِ مَا أَمر بِهِ نجا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

179. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम इस दौर में हो के तुम में से जिस ने अहकाम शरिया के दसवें हिस्से पर अमल न किया तो वह हलाक हो जाएगा, फिर एक ऐसा दौर आएगा के उनमें से जिस ने अहकामात शरिया के दसवें हिस्से पर अमल कर लिया तो वह निजात पा जाएगा”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2267 وقال : هذا حديث غريب) * نعيم بن حماد حسن الحديث (كما تقدم : 167) ولكن هذا مما انكر عليه ، و سفيان بن عيينة مدلس و عنعن

١٨٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا ضَلَّ قَوْمٌ بَعْدَ هُدًى كَانُوا عَلَيْهِ إِلَّا أُوتُوا الْجَدَلَ» . ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الْآيَةَ: (مَا ضَرَبُوهُ ص:٦ لَكَ إِلَّا جدلا بل هم قوم خصمون)»» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

180. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कोई कौम हिदायत याफ्ता होने के बाद गुमराही इख़्तियार कर लेती है, तो बाहमी निज़ाअ उनका पेशा बन जाता है”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: (مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جدلا بل هم قوم خصمون) “वो आप से यह बाते महज़ झगड़ा पैदा करने के लिए करते हैं बल्कि यह लोग है ही झगड़ालू”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 252 ح 22517 ، 5 / 256 ح 22558) و الترمذی (3253 وقال : حسن صحيح)و ابن ماجه (48) [و صححه الحاکم (2 / 448) و وافقه الذهبی]

١٨١ - (ضَعِيف) وَعَن أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: لَا تُشَدِّدُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ فَيُشَدِّدَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَإِنَّ قَوْمًا شَدَّدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ فَشَدَّدَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ فَتِلْكَ بَقَايَاهُمْ فِي الصَّوَامِعِ والديار (رَهْبَانِيَّة ابتدعوها مَا كتبناها عَلَيْهِم)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

181. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “अपने आप को मशक्कत में न डाला करो, वरना अल्लाह भी तुम्हें मशक्कत में डाल देगा, क्योंकि एक कौम ने अपने आप पर सख्ती की तो अल्लाह ने भी इन पर सख्ती की, यहूद व नसारा की इबादतगाहो में यह सख्तिया इन्ही की बाकियात हैं”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: (رَهْبَانِيَّة ابتدعوها مَا كتبناها عَلَيْهِم) “रह्बानियत उन्होंने खुद इजाद की थी हमने इसे इन पर फ़र्ज़ नहीं किया था”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4904) * سعيد بن عبد الرحمن بن ابی العمياء وثقه ابن حبان وحده و لبعض الحديث شاهد عند البخاری فی التاريخ الكبير (4 / 94) و سنده حسن وهو يغنی عنه

١٨٢ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " نَزَلَ الْقُرْآنُ عَلَى خَمْسَةِ أَوْجُهٍ: حَلَالٍ وَحَرَامٍ وَمُحْكَمٍ وَمُتَشَابِهٍ وَأَمْثَالٍ. فَأَحِلُّوا الْحَلَالَ وَحَرِّمُوا الْحَرَامَ وَاعْمَلُوا بِالْمُحْكَمِ وَآمِنُوا بِالْمُتَشَابِهِ وَاعْتَبِرُوا بِالْأَمْثَالِ ". هَذَا لَفْظُ الْمَصَابِيحِ. وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الايمان وَلَفْظُهُ: «فَاعْمَلُوا بِالْحَلَالِ وَاجْتَنِبُوا الْحَرَامَ وَاتَّبِعُوا الْمُحْكَمَ»

182. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान पांच उमूर के मुतल्लिक नाज़िल हुआ, हलाल व हराम, मुहकम व मुतशाबिहात और इमसाल, तुम हलाल को हलाल और हराम को हराम समझो, मुहकम पर अमल करो और मुतशाबिहात पर ईमान लाओ और इमसाल पहली उम्मतो के वाकिआत से इबरत हासिल करो”| यह मसाबिह के अल्फाज़ हैं, बयहकी ने शौबुल ईमान मैं इन अल्फाज़ से नकल किया है: “हलाल पर अमल करो, हराम से बचा करो और मुहकम की इत्तेबा करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (2293) * فیه معارک بن عباد : ضعیف ، و عبدالله بن سعید بن ابی سعید المقبری : متروک

١٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْأَمْرُ ثَلَاثَةٌ: أَمْرٌ ص:٦ بَيِّنٌ رُشْدُهُ فَاتَّبِعْهُ وَأَمْرٌ بَيِّنٌ غَيُّهُ فَاجْتَنِبْهُ وَأَمْرٌ اخْتُلِف فِيهِ فَكِلْهُ إِلَى اللَّهِ عَزَّ وَجل)»» رَوَاهُ أَحْمد

183. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अम्र (हुक्म) तीन किस्म के है, एक अम्र (हुक्म) वह है जिस की रशद व भलाई वाज़ेह है, पस उसकी इत्तेबा करो, एक अम्र (हुक्म) वह है जिस की गुमराही वाज़ेह है जिस से बचा करो, और एक अम्र (हुक्म) वह है जिसके मुतल्लिक इख्तिलाफ किया गया है, पस इसे अल्लाह अज्ज़वजल के सुपुर्द करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه احمد (لم اجده) [و الطبرانی فی الکبیر (10 / 386 ح 10774)] * فیه ابو المقدام هشام بن زیاد : متروک

किताब व सुन्नत को मज़बूती से पकड़ने का बयान	• كتاب الْإِيمَان
तीसरी फस्ल	• الْفَصْل الثَّالِث

١٨٤ - (ضَعِيف) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ ذِئْبُ الْإِنْسَانِ كَذِئْبِ الْغَنَمِ يَأْخُذُ الشَّاذَّةَ وَالْقَاصِيَةَ وَالنَّاحِيَةَ وَإِيَّاكُمْ وَالشِّعَاب وَعَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ وَالْعَامَّةِ» . رَوَاهُ أَحْمد

184. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक शैतान इंसान के लिए भेड़िया है, जैसे बकरियों के लिए भेड़िया होता है, वह अलग होने वाली, दूर जाने वाली और एक जानिब होने वाली बकरी को पकड़ता है, पस तुम घाटियों (अलग अलग होने) से बचो और तुम आम जमात

को लाज़िम पकड़ लो"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 243 ح 22458 و 5 / 232 ح 22379) [و عبد بن حميد فی مسنده (114 ، المنتخب)] * السند منقطع ، العلاء بن زياد و شهر بن حوشب لم يسمعا من سيدنا معاذ رضی الله عنه و حديث ابی داود (547) يغنی عنه

١٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شبْرًا فقد خلع رقة الْإِسْلَامِ مِنْ عُنُقِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

185. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने जमाअत से बालिश्त बराबर अलायेदगी इख़्तियार की तो उस ने अपने गर्दन से इस्लाम की रस्सी (यानी पाबन्दी) उतार दी"। (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 180 ح 21894) و ابوداؤد (4758) * و روی ابن ابی عاصم فی السنة (1053) ، بسند حسن عن خالد بن وهبان عن ابی ذر بلفظ :'' من فارق الجماعة والاسلام فقد خلع ربقة الاسلام من عنقه '' و خالد هذا تابعی معروف و ثقه ابن حبان و جهله الحافظ فی تقريب التهذيب و اشار الحاكم (1 / 117) بان العلماء يحتجون بحديثه و حديثه حسن بالشواهد وله شاهد عند الترمذی (2863) وهو حديث صحيح

١٨٦ - (حسن) وَعَن مَالك بن أنس مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تَرَكْتُ فِيكُمْ أَمْرَيْنِ لَنْ تَضِلُّوا مَا تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا: كِتَابَ اللَّهِ وَسُنَّةَ رَسُولِهِ «. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ»

186. मालिक बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु मुरसल रिवायत बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं तुम में दो चीज़े छोड़ कर जा रहा हूँ, पस जब तक तुम इन दोनों पर अमल करते रहोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे, (यानी) अल्लाह की किताब और उस के रसूल की सुन्नत"। (हसन)

حسن ، رواه مالک فی الموطا (2 / 899 ح 1727) * السند منقطع و للحديث شواهد كثيرة جدًا ، منها ما رواه الحاكم (1 / 93 ح 318 بلفظ :'' انی قد تركت فيكم ما ان اعتصمتم به فلن تضلوا ابدًا : كتاب الله و سنة نبيه صلی الله عليه و آله وسلم و سنده حسن) و عموم القرآن يؤيده

١٨٧ - (ضَعِيف) وَعَن غُضَيْف بن الْحَارِث الثمالِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (مَا أَحْدَثَ قَوْمٌ بِدْعَةً إِلَّا رُفِعَ مِثْلُهَا مِنَ السُّنَّةِ فَتَمَسُّكٌ بِسُنَّةٍ خَيْرٌ مِنْ إِحْدَاث بِدعَة)»» رَوَاهُ أَحْمد

187. गदिफ बिन हारिस सीमाली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब कोई कौम बिदअत इजाद करती हैं तो इसी की मिस्ल सुन्नत उठा ली जाती है, पस सुन्नत पर अमल करना बिदअत इजाद करने से बेहतर है"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 105 ح 17095) * ابوبكر بن ابی مريم : ضعيف (تقدم : 124) و بقية صدوق مدلس و عنعن

١٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ حَسَّانَ قَالَ: «مَا ابْتَدَعَ قَوْمٌ بِدْعَةً فِي دِينِهِمْ إِلَّا نَزَعَ اللَّهُ مِنْ سُنَّتِهِمْ مِثْلَهَا ثُمَّ لَا يُعِيدُهَا إِلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَة.» رَوَاهُ الدَّارمِيّ "

188. हस्सान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब कोई कौम अपने दीन में कोई बिदअत इजाद करती हैं तो अल्लाह उसकी मिस्ल उनकी सुन्नत छीन लेता है, फिर वह इसे रोज़ ए कियामत तक उनकी तरफ नहीं लौटाता"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمى (1 / 45 ح 99)

١٨٩ - (ضَعِيف) وَعَن إِبْرَاهِيم بن ميسرَة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ أَعَانَ عَلَى هَدْمِ الْإِسْلَامِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الايمان مُرْسلا

189. इब्राहीम बिन मय्सराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने किसी बिदअती की ताज़ीम व नुसरत की तो उस ने इस्लाम के गिराने पर मदद की"| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9464) [و السند منقطع وله الوان عند اللالكائى (فى السنة المنسوبة اليه 1 / 139 ح 273) و الهروى فى ذم الكلام (ص 219 ح 927 ، 928) و للحديث شاهد حسن عند ابن عساكر فى تاريخ دمشق (28 / 318 ، 319) و الاجرى فى الشريعة (ص 962 ح 2040) فيه العباس بن يوسف الشكلى ترجمته فى تاريخ بغداد (12 / 153 ، 154) و تاريخ دمشق وغيرهما وقال الصفدى :'' وهو مقبول الرواية '' والوافى بالوفيات (16 / 373 ت 5932) و كذا قال الذهبى فى تاريخ الاسلام (23 / 479 وفيات 314 ه) فهو حسن الحديث فالحديث حسن ، وبنحوه صح عن فضيل بن عياض (انظر حلية الاولياء 8 / 103) و ابراهيم بن ميسرة (انظر ذم الكلام : 928) من قولهما]

١٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: من تعلم كتاب الله ثمَّ ابتع مَا فِيهِ هَدَاهُ اللَّهُ مِنَ الضَّلَالَةِ فِي الدُّنْيَا وَوَقَاهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ سُوءَ الْحِسَابِ»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: مَنِ اقْتَدَى بِكِتَابِ اللَّهِ لَا يَضِلُّ فِي الدُّنْيَا وَلَا يَشْقَى فِي الْآخِرَةِ ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ: (فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يضل وَلَا يشقى)»» رَوَاهُ رزين

190. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने अल्लाह की किताब की तालीम हासिल की, फिर उस के मुताबिक अमल किया तो अल्लाह इस शख़्स को दुनिया में गुमराही से बचाता है और कियामत के दिन इसे हिसाब की तकलीफ से बचाएगा"| और एक रिवायत में है, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने अल्लाह की किताब की इक्तेदा की तो वह ना दुनिया में गुमराह होगा न आखिरत में तकलीफ उठाएगा, फिर इस आयत की तिलावत फरमाई: "जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह ना गुमराह होगा न तकलीफ में पड़ेगा"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه رزين (كم اجده) [رواه عبدالرزاق (3 / 382 ح 6033 فيه ثلاث علل : عبد الرزاق و سفيان بن عيينة مدلسان و عنعنا ، و عطاءبن السائب لم يدرک ابن عباس رضى الله عنه فالسند ضعيف منقطع) و ابن ابى شيبة (10 / 467 ، 468 ح 29946 و سنده ضعيف من اجل اختلاط عطاء بن السائب ، 13 / 371 ، 372 ح 34770 ، ابو خالد الاحمر مدلس و عنعن) و الحاكم (2 / 381 ح 3438 و عنه البيهقى فى شعب الايمان : 2029) و صححه و وافقه الذهبى ، و رواه الطبرى فى تفسيره (ج 16 ص 163 ، نسخة محققة 7 / 931 ح 24434) و الحديث الموقوف سنده ضعيف ، عند الحاكم و الطبرى و ابن ابى شيبة فى الرواية الاولى عطاء بن السائب اختلط]

١٩١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا وَعَنْ جَنْبَتَيِ الصِّرَاطِ سُورَانِ فِيهِمَا أَبْوَابٌ مُفَتَّحَةٌ وَعَلَى الْأَبْوَابِ سُتُورٌ مُرَخَاةٌ وَعِنْدَ رَأْسِ الصِّرَاطِ دَاعٍ يَقُولُ: اسْتَقِيمُوا عَلَى الصِّرَاطِ وَلَا تَعْوَجُّوا وَفَوْقَ ذَلِكَ دَاعٍ يَدْعُو كُلَّمَا هَمَّ عَبْدٌ أَنْ يَفْتَحَ شَيْئًا مِنْ تِلْكَ الْأَبْوَابِ قَالَ: وَيْحَكَ لَا تَفْتَحْهُ فَإِنَّكَ إِنْ تَفْتَحْهُ تَلِجْهُ ". ثُمَّ فَسَّرَهُ فَأَخْبَرَ: " أَنَّ الصِّرَاطَ هُوَ الْإِسْلَامُ وَأَنَّ الْأَبْوَابَ الْمُفَتَّحَةَ مَحَارِمُ اللَّهِ وَأَنَّ السُّتُورَ الْمُرَخَاةَ حُدُودُ اللَّهِ وَأَنَّ الدَّاعِيَ عَلَى رَأْسِ الصِّرَاطِ هُوَ الْقُرْآنُ وَأَنَّ الدَّاعِيَ مِنْ فَوْقِهِ وَاعِظُ اللَّهِ فِي قَلْبِ كُلِّ مُؤمن)»» رَوَاهُ رزين وَأحمد

191. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने सिरातुल मुस्तकीम की मिसाल बयान फरमाई, के रास्ते के दोनों तरफ दो दीवारे हैं, उनमें दरवाज़े खुले हुए हैं और दरवाज़ो पर परदे लटक रहे है, रास्ते के सिरे पर एक दाई है, वह कह रहा है, सीधे चलते जाओ, टेढ़े मत होना, और उस के ऊपर एक और दाई है, जब कोई शख़्स उन दरवाज़ो में से किसी चीज़ को खोलने का इरादा करता है तो वह कहता है: तुम पर अफ़सोस है, इसे मत खोलो, क्योंकि अगर तुमने उसे खोल दिया तो तुम उस में दाखिल हो जाओगे”, फिर आप ﷺ ने उसकी वज़ाहत करते हुए फ़रमाया: “रास्ता इस्लाम है, खुले हुए दरवाज़े अल्लाह की हराम करदा अशियाअ हैं, लटके हुए परदे अल्लाह की हुदूद हैं, रास्ते के सिरे पर दाई कुरान है, और उस के ऊपर जो दाई है, वह हर मोमिन का दिल में अल्लाह का वाइज़ है”। (इस की कोई असल इन अल्फाज़ के साथ नहीं रवाह रजिन मझे नहीं मिली.)

لا اصل له بهذا اللفظ ، رواه رزين (لم اجده) [و الاجرى فى الشريعة (ص 12 ح 16 بلفظ آخر مختصر جدًا و سنده صحيح) و انظر الحديث الآتى فهو شاهد له]

١٩٢ - (صَحِيح) وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ وَكَذَا التِّرْمِذِيُّ عَنْهُ إِلَّا أَنَّهُ ذَكَرَ أخصر مِنْهُ

192. इमाम अहमद और बयहकी ने शौबुल ईमान में नवासी बिन समआन रदियल्लाहु अन्हु से और इसी तरह इमाम तिरमिज़ी ने इन्ही से रिवायत किया है, अलबत्ता उन्होंने उस से मुख़्तसर रिवायत किया है। (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 182 ، 183 ح 17784) و البيهقى فى شعب الايمان (7216) و الترمذى (2859 وقال : غريب) [و صححه الحاكم على شرط مسلم 1 / 73 و وافقه الذهبى]

١٩٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: مَنْ كَانَ مُسْتَنًّا فليسن بِمَنْ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ الْحَيَّ لَا تُؤْمَنُ عَلَيْهِ الْفِتْنَةُ. أُولَئِكَ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانُوا أَفْضَلَ هَذِهِ الْأُمَّةِ أَبَرَّهَا قُلُوبًا وَأَعْمَقَهَا عِلْمًا وَأَقَلَّهَا تَكَلُّفًا اخْتَارَهُمُ اللَّهُ لِصُحْبَةِ نَبِيِّهِ وَلِإِقَامَةِ دِينِهِ ص:٦ فَاعْرِفُوا لَهُمْ فَضْلَهُمْ وَاتَّبِعُوهُمْ عَلَى آثَارِهِمْ وَتَمَسَّكُوا بِمَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ أَخْلَاقِهِمْ وَسِيَرِهِمْ فَإِنَّهُمْ كَانُوا عَلَى الْهَدْيِ الْمُسْتَقِيمِ. رَوَاهُ رزين

193. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जो कोई किसी शख़्स की राहे अपनाना चाहे तो वह उन शख़्स की राहे अपनाए जो फौत हो चुके हैं, क्योंकि जिंदा शख़्स फितने से महफ़ूज़ नहीं रहा, और वह (फौतशुदा लोग) मुहम्मद ﷺ के साथी हैं, वह इस उम्मत के बेहतरीन लोग थे, वह दिल के साफ़ इल्म में मुन्सिफ और तकल्लुफ व तसनीअ में बहोत कम थे, अल्लाह ने अपने नबी ﷺ की सोहबत और अपने दीन

की इकामत के लिए उन्हें मुन्तखब फ़रमाया, पस उनकी फ़ज़ीलत को पहचानो, उन के आसार की इत्तेबा करो और उन के अख़लाक़ व किरदार को अपनाने की मुनासिब कोशिश करो, क्योंकि वह हिदायत मुस्तकीम पर थे”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) [و ابن عبدالبر فى جامع بيان العلم و فضله (2 / 97)] * فيه سنيد ضعيف و قتادة عن ابن مسعود : منقطع و روى احمد عن عبدالله بن مسعود قال : ان الله نظر فى قلوب العباد فوجد قلب محمد صلى الله عليه و آله وسلم خير قلوب العباد فاصطفاه لنفسه فابتعثه برسالته ثم نظر فى قلوب العباد بعد قلب محمد فوجد قلوب اصحابه خير قلوب العباد فجعلهم وزراء نبيه يقاتلون على دينه فما راى المسلمون حسنا فهو عند الله حسن وما راوه سيئًا فهو عند الله سى (1 / 379 ح 3600) و سنده حسن

١٩٤ - (حسن) عَن جَابِرٍ: (أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنُسْخَةٍ مِنَ التَّوْرَاةِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذِهِ نُسْخَةٌ مِنَ التَّوْرَاةِ فَسَكَتَ فَجَعَلَ يقْرَأ وَوجه رَسُول الله يَتَغَيَّرُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ ثَكِلَتْكَ الثَّوَاكِلُ مَا تَرَى مَا بِوَجْهِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَظَرَ عُمَرُ إِلَى وَجْهِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَعُوذُ بِاللَّه من غضب الله وَغَضب رَسُوله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ بَدَا لَكُمْ مُوسَى فَاتَّبَعْتُمُوهُ وَتَرَكْتُمُونِي لَضَلَلْتُمْ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ وَلَوْ كَانَ حَيًّا وَأَدْرَكَ نُبُوَّتِي لَاتَّبَعَنِي)»» رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

194. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु तौरात का एक नुस्खा लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह तौरात का नुस्खा है, आप ख़ामोश रहे और उन्होंने इसे पढ़ना शुरू कर दिया, जबकि रसूल अल्लाह के चेहरा मुबारक का रंग बदलने लगा, अबू बक्र ने फ़रमाया: गुम करने वाली तुम्हें गुम पाए, तुम रसूलुल्लाह ﷺ के रूखे अनवर (चेहरा) की तरफ नहीं देख रहे, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ का चेहरा मुबारक देखा तो फ़ौरन कहा, मैं अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के गज़ब से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, मैं अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के नबी होने पर राज़ी हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है, अगर मूसा अलैहिस्सलाम भी तुम्हारे सामने आजाए और तुम मुझे छोड़ कर उनकी इत्तेबा करने लगो तो तुम सीधी राह से गुमराह हो जाओगे और अगर वह जिंदा होते और वह मेरी नबूवत (का ज़माना) पा लेते तो वह भी मेरी ही इत्तेबा करते”। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 115 ، 116 ح 441) * مجالد ضعيف (تقدم : 188) و للحديث شواهد ضعيفة

١٩٥ - (مَوْضُوع) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَلَامِي لَا يَنْسَخُ كَلَامَ اللَّهِ وَكَلَامُ اللَّهِ يَنْسَخُ كَلَامِي وَكَلَامُ اللَّهِ يَنْسَخُ بعضه بَعْضًا»

195. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: “मेरा कलाम, अल्लाह के कलाम को मंसूख नहीं कर सकता, जबकि अल्लाह का कलाम मेरे कलाम को मंसूख कर सकता है और अल्लाह का कलाम एक दूसरे को मंसूख कर सकता है”। (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه الدارقطنى (4 / 145) * فيه جبرون بن واقد : متهم

١٩٦ - (مَوْضُوع) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحَادِيثَنَا يَنْسَخُ بَعْضهَا بَعْضًا كنسخ الْقُرْآن»

196. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारी अहादीस भी एक दूसरे को मंसूख कर देती है, जिस तरह कुरान का बाज़ हिस्सा दूसरे हिस्से को मंसूख कर देता है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا منكر ، رواه الدارقطنى (4 / 145) * فيه محمد بن الحارث و محمد بن عبد الرحمن البيلمانى و ابوه : ضعفاء كلهم ، ’’ و محمد بن عبد الرحمن : حدث عن ابيه بنسخة شبيهًا بماتى حديث ، كلها موضوعة ‘‘ قاله ابن حبان

١٩٧ - (ضَعِيف) وَعَن أبي ثَعْلَبَة الْخُشَنِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ فَرَضَ فَرَائِضَ فَلَا تُضَيِّعُوهَا وَحَرَّمَ حُرُمَاتٍ فَلَا تَنْتَهِكُوهَا وَحَدَّ حُدُودًا فَلَا تَعْتَدُوهَا وَسَكَتَ عَنْ أَشْيَاءَ مِنْ غَيْرِ نِسْيَانٍ فَلَا تَبْحَثُوا عَنْهَا» . رَوَى الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ الدَّارَقُطْنِيُّ

197. अबू सअलबा अल खुशैनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने फ़राइज़ मुकर्रर किए है, उन्हें ज़ाए न करो, उस ने हुरुमात को हराम करार दिया, पस उन के करीब न जाओ और अल्लाह ने हुदूद मुतय्यीन की है पस उन से तजावुज़ न करो और उस ने जानते बुजते कुछ चीजों से सुकूत फ़रमाया, पस उन के मुतल्लिक बहस न करो”। मज़कुरह तीनो अहादीस को दार कुतनी ने बयान किया है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (4 / 183 ، 184) [و البيهقى (10 / 12 ، 13)] * مكحول لم يدرک ابا ثعلبة رضى الله عنه فالسند منقطع ، و للحديث شواهد ضعيفة

इल्म और उसकी फ़ज़ीलत का बयान • كتاب الْعلم

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

١٩٨ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً وَحَدِّثُوا عَنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا حَرَجَ وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

198. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी तरफ से पहुंचा दो ख्वाह एक आयत ही हो, बनी इसराइल के वाकिआत बयान करो उस में कोई हर्ज नहीं, और जो शख़्स जानबूझकर मुझ पर झूठ बोले वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| (सहीह)

رواه البخارى (3461)

١٩٩ - (صَحِيح) وَعَن سَمُرَة بن جُنْدُب وَالْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَدَّثَ عَنِّي بِحَدِيثٍ يَرَى أَنَّهُ كَذِبٌ فَهُوَ أَحَدُ الْكَاذِبِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

199. समुरह बिन जुन्दुब और मुगिरह बिन शौबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मुझ से हदीस बयान करे वह जानता हो के यह झूठ है तो वह भी झूठी हदीस वज़ा करने वालो में से एक है”| (सहीह)

رواه مسلم (1)

٢٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَاللَّهِ يُعْطِي»

200. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो उसे दीन के मुतल्लिक समझ बुझ अता फरमा देता है, मैं तो सिर्फ (इल्म) तकसीम करने वाला हूँ जबकि (फहम) अल्लाह अता करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (71) و مسلم (98 / 1037)، (2389)

٢٠١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «النَّاسُ مَعَادِنُ كَمَعَادِنِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَقِهُوا» . رَوَاهُ مُسلم

201. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इंसान भी सोने और चांदी की खानों की तरह एक खान है, उनमें से जो दौरे जाहिलियत में अच्छे थे, वह इस्लाम में भी अच्छे है, बशर्ते कि वह दीन में समझ बुझ पैदा करे”| (सहीह)

رواه مسلم (199 / 2526)، (6454) [و البخارى : 3493 ، 3496 مختصرًا]

٢٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا حَسَدَ إِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ رَجُلٍ آتَاهُ اللَّهُ مَالًا فَسَلَّطَهُ عَلَى هَلَكَتِهِ فِي الْحَقِّ وَرَجُلٍ آتَاهُ اللَّهُ ص:٧ الْحِكْمَة فَهُوَ يقْضِي بهَا وَيعلمهَا)

202. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो किस्म के लोगों पर रश्क करना जाईज़ है, एक वह आदमी जिसे अल्लाह ने माल अता किया, और फिर उस को राह ए हक़ में उसे खर्च करने की तौफिक दी, और एक वह आदमी जिसे अल्लाह ने हिकमत अता की और वह उस के मुताबिक फैसला करता है और इसे (दुसरो को) सिखाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (73) و مسلم (268 / 816)، (1896)

٢٠٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةِ أَشْيَاءَ: صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ أوعلم ينْتَفع بِهِ أوولد صَالح يَدْعُو لَهُ)»» رَوَاهُ مُسلم

203. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब इंसान फौत हो जाता है तो तीन कामो, सदका ए जारिया, वह इल्म जिस से इस्तेफ़ादा किया जाए और नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करे, के सिवा उस के आमाल का सिलसिला मुन्कतेअ हो जाता है”| (सहीह)

رواه مسلم (14 / 1631)، (4223)

٢٠٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمِنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ وَمَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نسبه» . رَوَاهُ مُسلم

204. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी मोमिन से दुनिया की कोई तकलीफे दूर की, तो अल्लाह उस से कियामत के दिन की कोई तकलीफ दूर फरमादेगा, जिस शख़्स ने किसी तंग दस्त पर आसानी की तो अल्लाह उस पर दुनिया व आखिरत में आसानी फरमाएगा, जिस ने किसी मुसलमान की ऐबपोशी की तो अल्लाह उसकी दुनिया व आखिरत में ऐबपोशी फरमाएगा, अल्लाह बंदे

की मदद फरमाता रहता है जब तक बंदा अपने भाई की मदद करता रहता है, और जिस शख़्स ने तलब ए इल्म के लिए कोई सफ़र किया तो अल्लाह इस वजह से उस के लिए राहे जन्नत आसान फरमा देता है, और जब कुछ लोग अल्लाह के किसी घर में इकठ्ठे हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और आपस में पढ़ते पढ़ाते है तो इन पर सकिनत नाज़िल होती है, रहमत उन्हें ढांप लेती है, फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते है और अल्लाह अपने पास फरिश्तो में उनका तज़किरह फरमाता है, और जिसके अमल ने इसे पीछे कर दिया तो नसब इसे आगे नहीं पढ़ा सकेगा”| (सहीह)

رواه مسلم (38 / 2699)، (6853)

٢٠٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن أول النَّاس يقْضى عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ اسْتُشْهِدَ فَأُتِيَ بِهِ فَعَرَّفَهُ نِعَمَهُ فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيهَا؟ قَالَ قَاتَلْتُ فِيكَ حَتَّى اسْتُشْهِدْتُ قَالَ كَذَبْتَ وَلَكِنَّكَ قَاتَلْتَ لِأَنْ يُقَالَ جَرِيءٌ فَقَدْ قِيلَ ثُمَّ أَمر بِهِ فسحب على وَجهه حَتَّى ألقِي فِي النَّارِ وَرَجُلٌ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ وَعَلَّمَهُ وَقَرَأَ الْقُرْآنَ فَأُتِيَ بِهِ فَعَرَّفَهُ نِعَمَهُ فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيهَا قَالَ تَعَلَّمْتُ الْعِلْمَ وَعَلَّمْتُهُ وَقَرَأْتُ فِيكَ الْقُرْآنَ قَالَ كَذَبْتَ وَلَكِنَّكَ تَعَلَّمْتَ الْعلم ليقال عَالِمٌ وَقَرَأْتَ الْقُرْآنَ لِيُقَالَ هُوَ قَارِئٌ فَقَدْ قِيلَ ثُمَّ أُمِرَ بِهِ فَسُحِبَ عَلَى وَجْهِهِ حَتَّى أُلْقِيَ فِي النَّارِ وَرَجُلٌ وَسَّعَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَعْطَاهُ مِنْ أَصْنَافِ الْمَالِ كُلِّهِ فَأُتِيَ بِهِ فَعَرَّفَهُ ص:٧ نِعَمَهُ فَعَرَفَهَا قَالَ فَمَا عَمِلْتَ فِيهَا؟ قَالَ مَا تَرَكْتُ مِنْ سَبِيلٍ تُحِبُّ أَنْ يُنْفَقَ فِيهَا إِلَّا أَنْفَقْتُ فِيهَا لَكَ قَالَ كَذَبْتَ وَلَكِنَّكَ فَعَلْتَ لِيُقَالَ هُوَ جَوَادٌ فَقَدْ قِيلَ ثُمَّ أُمِرَ بِهِ فَسُحِبَ عَلَى وَجْهِهِ ثُمَّ أُلْقِيَ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

205. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत सबसे पहले शहीद का फैसला सुनाया जाएगा, इसे पेश किया जाएगा, तो अल्लाह इसे अपने नेअमतें याद कराएगा और वह उनका एतराफ़ करेगा, फिर अल्लाह फरमाएगा: तूने उन के बदले में (शुक्र के तौर पर) क्या किया? वह अर्ज़ करेगा: मैंने तेरी खातिर जिहाद किया हत्ता कि मुझे शहीद कर दिया गया, अल्लाह फरमाएगा: तूने झूठ कहा, क्योंकी तूने दाद सजाअत हासिल करने के लिए जिहाद किया था, पस वह कह दिया गया, फिर उस के मुतल्लिक हुक्म दिया जाएगा तो उसे मुंह के बल घंसिट कर जहन्नम में डाल दीया जाएगा, दूसरा शख़्स जिस ने इल्म हासिल किया, और इसे दुसरो को सिखाया, और कुरआन ए करीम की तिलावत की, इसे भी पेश किया जाएगा, तो अल्लाह इसे अपने नेअमतें याद कराएगा, वह उनका एतराफ़ करेगा, अल्लाह पूछेगा की तूने उन के बदले में क्या किया? वह अर्ज़ करेगा: मैंने इल्म सिखा और इसे दुसरो को सिखाया और मैं तेरी रज़ा की खातिर कुरान की तिलावत करता रहा, अल्लाह फरमाएगा: तूने झूठ कहा, अलबत्ता तूने इल्म इसलिए हासिल किया था के तुम्हें आलिम कहा जाए और कुरान पढ़ा ताकि तुम्हें कारी कहा जाए, वह कह दिया गया, फिर उस के मुतल्लिक हुक्म दिया जाएगा तो उसे मुंह के बल घंसिट कर जहन्नम में डाल दीया जाएगा, और तीसरा वह शख़्स जिसे अल्लाह तआला ने माल व ज़र की जुमला इक्साम से खूब नवाज़ा होगा, इसे पेश किया जाएगा तो अल्लाह इसे अपने नेअमतें याद कराएगा, वह उन्हें पहचान लेगा तो अल्लाह पूछेगा तूने उन के बदले में क्या किया? वह अर्ज़ करेगा: मैंने उन तमाम मुवाके पर जहाँ खर्च करना तुझे पसंद था खर्च किया, अल्लाह फरमाएगा: तूने झूठ कहा तूने तो

इसलिए खर्च किया के तुझे बड़ा सखी कहा जाए, पस वह कह दिया गया, फिर उस के मुतल्लिक हुक्म दिया जाएगा तो उसे मुंह के बल घंसिट कर जहन्नम में डाल दीया जाएगा"| (सहीह)

رواه مسلم (152 / 1905)، (4923)

٢٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا يَقْبِضُ الْعِلْمَ انْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ حَتَّى إِذَا لَمْ يُبْقِ عَالِمًا اتَّخَذَ النَّاسُ رُءُوسًا جُهَّالًا فَسُئِلُوا فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ فضلوا وأضلوا»

206. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह इल्म को बंदो के सीनों से नहीं निकालेगा, बल्कि वह उलमाअ की रूहें कब्ज़ कर के इल्म को उठा लेगा, हत्ता कि जब वह किसी आलिम को बाकी नहीं रखेगा तो लोगबेवकूफ सरदार बना लेंगे, जब उन से मसअला दरियाफ्त किया जाएगा, तो वह इल्म के बगैर फ़तवा देंगे, वह खुद गुमराह होंगे और दुसरो को गुमराह करेंगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (100) و مسلم (13 / 2673)، (6796)

٢٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن شَقِيق: كَانَ عبد الله يُذَكِّرُ النَّاسَ فِي كُلِّ خَمِيسٍ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ لَوَدِدْتُ أَنَّكَ ذكرتنا كُلِّ يَوْمٍ قَالَ أَمَا إِنَّهُ يَمْنَعُنِي مِنْ ذَلِكَ أَنِّي أَكْرَهُ أَنْ أُمِلَّكُمْ وَإِنِّي أَتَخَوَّلُكُمْ بِالْمَوْعِظَةِ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَوَّلُنَا بِهَا مَخَافَةَ السَّآمَةِ عَلَيْنَا

207. शकिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु हर जुमेरात लोगों को वाज़ व नसीहत किया करते थे, किसी आदमी ने उन से कहा: अबू अब्दुलरहमान मैं चाहता हूँ कि आप हर रोज़ हमें वाज़ व नसीहत किया करे, उन्होंने ने फ़रमाया: सुन लो! हर रोज़ वाज़ व नसीहत करने से मुझे यही चीज रोकती है की मैं तुम्हें उकताहट में डालना नापसंद करता हूँ, मैं वाज़ व नसीहत के ज़रिए तुम्हारा वैसे ही ख्याल रखता हूँ जैसे रसूलुल्लाह ﷺ इस अंदेशे के पेशे नज़र के हम उकता न जाए हमारा ख्याल रखा करते थे"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (68) و مسلم (82 / 2821)، (7127)

٢٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَلَاثًا حَتَّى تُفْهَمَ عَنْهُ وَإِذَا أَتَى عَلَى قَوْمٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ سَلَّمَ عَلَيْهِمْ ثَلَاثًا ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

208. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ कोई गुफ्तगू फरमाते, तो आप एक जुमले को तीन मर्तबा दोहराते हत्ता कि इसे समझ और याद कर लिया जाए, और जब आप किसी कौम के पास तशरीफ़ लाते

और उन्हें सलाम करने का इरादा फरमाते, तो तीन मर्तबा सलाम करते”| (बुखारी)

رواه البخارى (95)

٢٠٩ - (صَحِيح) عَن أبي مَسْعُود الْأَنْصَارِيِّ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي أَبْدِعَ بِي فَاحْمِلْنِي فَقَالَ مَا عِنْدِي فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَا أَدُلُّهُ عَلَى مَنْ يَحْمِلُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مثل أجر فَاعله» . رَوَاهُ مُسلم

209. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया: मेरी सवारी हलाक हो गई है, आप मुझे सवारी इनायत फरमादे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे पास तो कोई सवारी नहीं”, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं उसे ऐसे आदमी के मुतल्लिक बताता हूँ जो इसे सवारी दे देगा, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खैर व भलाई की तरफ रहनुमाई करने वाले को इस भलाई को सरंजाम देने वाले की मिस्ल अज्र व सवाब मिलेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (133 / 1893)، (4899)

٢١٠ - (صَحِيح) وَعَن جرير قَالَ: (كُنَّا فِي صدر النهارعند رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَهُ قَوْمٌ عُرَاةٌ مُجْتَابِي النِّمَارِ أَوِ الْعَبَاءِ مُتَقَلِّدِي السُّيُوفِ عَامَّتُهُمْ مِنْ مُضَرَ بَلْ كُلُّهُمْ مِنْ مُضَرَ ص:٧ فَتَمَعَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَا رَأَى بِهِمْ مِنَ الْفَاقَةِ فَدَخَلَ ثُمَّ خَرَجَ فَأَمَرَ بِلَالًا فَأَذَّنَ وَأَقَامَ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ فَقَالَ: (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ)»» إِلَى آخَرِ الْآيَةِ (إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رقيبا)»» وَالْآيَةُ الَّتِي فِي الْحَشْرِ (اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ)»» تَصَدَّقَ رَجُلٌ مِنْ دِينَارِهِ مِنْ دِرْهَمِهِ مِنْ ثَوْبِهِ مِنْ صَاعِ بُرِّهِ مِنْ صَاعِ تَمْرِهِ حَتَّى قَالَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ قَالَ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ بِصُرَّةٍ كَادَتْ كَفُّهُ تَعْجَزُ عَنْهَا بل قد عجزت قَالَ ثُمَّ تَتَابَعَ النَّاسُ حَتَّى رَأَيْتُ كَوْمَيْنِ مِنْ طَعَامٍ وَثِيَابٍ حَتَّى رَأَيْتُ وَجْهَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَهَلَّلُ كَأَنَّهُ مُذْهَبَةٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْءٌ وَمَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيْءٌ» . رَوَاهُ مُسلم

210. जरीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम दिन के पहले पहर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की एक कौम आप के पास आई, उन के बदन नंगे थे, उन्होंने ऊनी धारीदार आम चादरे पहन रखी थी, और वह तलवारे उठाए हुए थे, उनमें से ज़्यादातर, बल्कि सब के सब मुज़िर कबिले के थे, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इन पर फाका के आसार देखे तो गम की वजह से आप के चेहरे का रंग बदल गया, आप घर तशरीफ़ ले गए फिर बाहर आए, आप ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया तो उन्होंने और इकामत कही, आप ﷺ ने नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा इरशाद फ़रमाया: “लोगो! अपने रब से डर जाओ, जिस ने तुम्हें नफ्से वाहिद से पैदा फ़रमाया, और इसी से उस का जोड़ा पैदा किया और इन दोनों की नसल से बहोत से मर्द और औरते फैला दी, और इस अल्लाह से डरो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और कराबतदारी (के तालुकात मुन्कतेअ करने) से डरो, यकीन जानो के अल्लाह तुम पर निगरान है”, और सूरतुल खशर की आयत तिलावत फरमाई: “इमानवालो! अल्लाह से डरो, और चाहिए के हर मुतनफ्स देख ले के वह कल के लिए क्या कुछ आगे भेजता है, और तुम अल्लाह

से डरो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है", पस किसी ने दीनार सदका किया, किसी ने दिरहम, किसी ने कपड़ा, किसी ने गंदुम का साअ और किसी ने एक साअ खजूरे सदका की, हत्ता कि आप ﷺ ने फ़रमाया: "ख्वाह खजूर का टुकड़ा सदका करो", रावी बयान करते हैं, अंसार में से एक आदमी एक थेली उठाए हुए आया करीब था के उस का हाथ इसे उठाने से आजिज़ आ जाता, बल्कि आजिज़ ही आ गया, फिर लोग मुसलसल आने लगे, हत्ता कि मैंने अनाज और कपड़ो के दो ढेर देखे, हत्ता कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरा मुबारक को सोने की तरह दमकता हुआ देखा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने इस्लाम में कोई अच्छा तरीका शुरू किया तो उसे उस का और उस के बाद उस पर अमल करने वालो का सवाब मिलता है, और उन के सवाब में कोई कमी नहीं की जाती, और जिस शख़्स ने इस्लाम में कोई बुरा तरीका शुरू किया तो उस को उस का और उस के बाद उस पर अमल करने वालो का गुनाह मिलता है और उन के गुनाह में कोई कमी नहीं की जाती"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 1017)، (2351)

٢١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلَّا كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الْأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِهَا لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ الْقَتْلَ» . وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ مُعَاوِيَةَ: «لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي» فِي بَابِ ثَوَابِ هَذِهِ الْأُمَّةِ إِنْ شَاءَ الله تَعَالَى

211. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स को ना जायज़ क़त्ल किया जाता है तो उस के क़त्ल का कुछ हिस्सा आदम अलैहिस्सलाम के पहले बेटे पर होता है, क्योंकि उस ने क़त्ल का तरीका इजाद किया था"| # हदीस ए मुआविया यअती हम हदीस मुआविया (र) (لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي) बाब इस उम्मत के सवाब में ज़िक्र करेंगे इंशाअल्लाह तआला| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (3335) و مسلم (27 / 1677)، (4379) 0 حدیث معاویة ، یاتی (6276)

كتاب الْعلم • इल्म और उसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢١٢ - (حسن) عَن كثير بن قيس قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي الدَّرْدَاءِ فِي مَسْجِد دمشق فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا أَبَا الدَّرْدَاءِ إِنِّي جِئْتُكَ مِنْ مَدِينَةِ الرَّسُولِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا جِئْتُ لِحَاجَةٍ قَالَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَطْلُبُ فِيهِ عِلْمًا سَلَكَ اللَّهُ بِهِ طَرِيقًا مِنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ وَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ أَجْنِحَتَهَا رِضًا لِطَالِبِ الْعِلْمِ وَإِنَّ الْعَالِمَ يسْتَغْفر لَهُ من فِي السَّمَوَات وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالْحِيتَانُ فِي جَوْفِ الْمَاءِ وَإِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلَى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ وَإِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْأَنْبِيَاءِ وَإِنَّ الْأَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوا دِينَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَإِنَّمَا وَرَّثُوا الْعِلْمَ فَمَنْ أَخَذَهُ أَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَسَمَّاهُ التِّرْمِذِيُّ قَيْسَ بن كثير

212. कसीर बिन कैस बयान करते हैं, मैं अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु के साथ दमिश्क की मस्जिद में बैठा हुआ था के एक आदमी उन के पास आया और उस ने कहा: अबू दरदा! मैं रसूलुल्लाह ﷺ के शहर से एक हदीस की खातिर तुम्हारे पास आया हूँ, मुझे पता चला है के आप इसे रसूलुल्लाह ﷺ से (बराहएरास्त) बयान करते हैं, मैं किसी और काम के लिए नहीं आया, उन्होंने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स तलब ए इल्म के लिए सफ़र करता है तो अल्लाह इसे जन्नत की राहे पर गामज़न कर देता है, फ़रिश्ते तालिब ए इल्म की रज़ामंदी के लिए अपने पर बिछाते है, ज़मीन व आसमान की हर चीज़ और पानी की गहराई में मछलिया तालिब ए इल्म के लिए मगफिरत तलब करती है, बेशक आलिम की आबिद पर इस तरह फ़ज़ीलत है जिस तरह चौदहवीं रात के चाँद को बाकी सितारों पर बढ़त है, बेशक उलेमा, अंबिया अलैहिस्सलाम के वारिस है, और अंबिया अलैहिस्सलाम दिरहम व दीनार नहीं छोड़ कर जाते, बल्कि वह तो सिर्फ इल्म छोड़ कर जाते हैं, पस जिस ने इसे हासिल कर लिया उस ने वाफिर हिस्सा हासिल कर लिया”| इमाम तिरमिज़ी ने रावी का नाम कैस बिन कसीर ज़िक्र किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 196 ح 22058) و الترمذى (2682 وقال : وليس اسناده عندى بمتصل(و ابوداؤد (3641) و ابن ماجه (223) و الدارمى (1 / 99 ح 349) [و ابن حبان ، الموارد : 80] * داود بن جميل و كثير بن قيس ضعيفان و للحديث شواهد ضعيفة و حديث مسلم (السابق : 204) يغنى عنه

٢١٣ - (حسن) وَعَن أبي أَمَامَة الْبَاهِلِيّ قَالَ: " ذُكِرَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلَانِ أَحَدُهُمَا عَابِدٌ وَالْآخَرُ عَالِمٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِي عَلَى أَدْنَاكُمْ» ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ وَأَهْلَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ حَتَّى النَّمْلَةَ فِي جُحْرِهَا وَحَتَّى الْحُوتَ لَيُصَلُّونَ عَلَى معلم النَّاس الْخَيْر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ حسن غَرِيب

213. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दो आदमियों का ज़िक्र किया गया, उनमें से एक आबिद और दूसरा आलिम है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आलीम की आबिद पर इस तरह फ़ज़ीलत है जिस तरह मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना आदमी पर है”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह, उस के फ़रिश्ते, ज़मीन व आसमान की मखलूक हत्ता कि चींटी अपने बिल में और मछलिया लोगों को खैर व भलाई की तालीम देने वाले के लिए दुआएं खैर करती है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (2685 وقال : غريب) وله شواهد وهوبها حسن

٢١٤ - (حسن) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ مَكْحُولٍ مُرْسَلًا وَلَمْ يَذْكُرْ: رَجُلَانِ وَقَالَ: فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِي عَلَى أَدْنَاكُمْ ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ: (إِنَّمَا يخْشَى الله من عباده الْعلمَاء)»» وسرد الحَدِيث إِلَى آخِره

214. दारमी ने मकहुल से मुरसल रिवायत बयान की है, और उन्होंने “दो आदमियों” का ज़िक्र नहीं किया और उन्होंने (मकहुल) ने कहा: आलिम की आबिद पर इस तरह फ़ज़ीलत है जिस तरह मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना आदमी पर है”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई!” (إِنَّمَا يخْشَى الله من عباده الْعلمَاء) “उस के बंदो में

से सिर्फ उलेमा ही अल्लाह से डरते हैं"| और फिर मुकम्मल हदीस बयान की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 88 ح 295) * السند مرسل وله شواهد دون قوله :'' ثم تلا هذا الآية : (و انما يخشى الله من عباده العلماء)'' فهو ضعيف و الباقى حسن ، انظر الحديث السابق (213) فائدة : قال رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم لطالب العلم : مرحبا بطالب العلم ! ان طالب العلم لتحف به الملائكة و تظله باجنحتها بعضًا حتى يبلغوا السماء الدنيا من حبهم لما طلب ، (الجرح و التعديل 2 / 13 ، و سنده حسن)

٢١٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ النَّاسَ لَكُمْ تَبَعٌ وَإِنَّ رِجَالًا يَأْتُونَكُمْ مِنْ أَقْطَارِ الْأَرْضِ يَتَفَقَّهُونَ فِي الدِّينِ فَإِذَا أَتَوْكُمْ فَاسْتَوْصُوا بهم خيرا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

215. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक लोग तुम्हारे ताबेअ है, क्योंकि लोग दीन में समझ बुझ हासिल करने के लिए ज़मीन के अतराफ व अक्नाफ से तुम्हारे पास आएँगे, पस जब वह तुम्हारे पास आए तो उन के साथ खैर व भलाई के साथ पेश आना"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، جدًا (بل موضوع) ، رواه الترمذى (2650 و اشار الى ضعفه من اجل ابى هارون العبدى) [و رواه ابن ماجه : 249] * ابو هارون عمارة بن جوين ضعيف جدًا ، متهم بالكذب

٢١٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْكَلِمَةُ الْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْحَكِيمِ فَحَيْثُ وَجَدَهَا فَهُوَ أَحَقُّ بِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ الْفَضْلِ الرَّاوِي يضعف فِي الحَدِيث

216. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दानाई की बात, दाना शख़्स की गुमशुदा चीज़ है, पस वह इसे जहाँ पाए तो वहां वही उस का ज़्यादा हक़दार है"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और इब्राहीम बिन फज़ल रावी हदीस के मुआमले में जईफ करार दिया गया है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (2687) و ابن ماجه (4169) * ابراهيم بن الفضل المخزومى : متروک ، فائدة : وقال عبدالله بن عباس رضى الله عنه : خذ الحكمة ممن سمعتها فان الرجل ينطق بالحكمة وليس من اهلها فتكون كالرمية خرجت من غير رام (رواه الخائطى فى مساوى الاخلاق : 390 و سنده حسن ، باب ماجاء فى سوء الجوار من الكاهة و الذم)

٢١٧ - (مَوْضُوع) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَقِيهٌ وَاحِدٌ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ أَلْفِ عَابِدٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه)

217. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "एक फ़की, शैतान पर, हज़ार इबादत गुज़ारो से ज़्यादा सख्त होता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (2681 وقال : غريب) و ابن ماجه (222) * روح بن جناح ضعفه الجمهور و اتهمه ابن حبان وغيره و الجرح فيه مقدم

٢١٨ - (حسن) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ وَوَاضِعُ الْعِلْمِ عِنْدَ غير أَهله كمقلد الْخَنَازِيرِ الْجَوْهَر واللؤلؤ وَالذَّهَبَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ إِلَى قَوْلِهِ مُسْلِمٍ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ مَتْنُهُ مَشْهُورٌ وَإِسْنَادُهُ ضَعِيفٌ وَقَدْ رُوِيَ من أوجه كلهَا ضَعِيف

218. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तलब ए इल्म हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, किसी ऐसे शख़्स को जो उसकी अहलियत न रखता हो पढ़ानेवाला, खिंज़िरो के गले में हीरे ज़वारत और सोने के हार डालने वाले की तरह है”| इब्ने माजा, जबकि बयहकी ने (मुस्लिम) तक शौबुल ईमान में रिवायत किया है, और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस का मतन मशहूर है जबकि सनद जईफ है, और यह रिवायत मूतअद्दद तरीक से मरवी है,, लेकिन वह सब जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدًا و الحدیث ضعیف ، رواه ابن ماجه (224) و البیھقی فی شعب الایمان (1543) * حفص بن سلیمان : متروک ، و للحدیث طرق کثیرة نحو الخمسین وکلھا ضعیفة و صححه بعض الائمة من اجل کثرة الطرق (!) والله اعلمفائدة : وقال شعبة : رآنی الاعمش یومًا و انا احدث ، قال : ویحک او ویلک یا شعبة ! لا تعلق الدرفی اعناق الخنازیر (مسند علی بن الجعد : 812 و سنده صحیح) وقال الاعمش : انظر والا تنشروا ھذه الدنانیر علی الکنائس یعنی الحدیث (مسند علی بن الجعد : 764 و سنده صحیح) وقال : ابوداؤد الطیالسی : نا زائدة بن قدامة الثقفی ،،، وکان لا یحدث قدریًا ولا صاحب بدعة یعرفه ، (الجامع للخطیب 1 / 524 ح 758 و سنده صحیح)

٢١٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خَصْلَتَانِ لَا تَجْتَمِعَانِ فِي مُنَافِقٍ: حُسْنُ سَمْتٍ وَلَا فِقْهٌ فِي الدّين ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

219. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो खसलते किसी मुनाफ़िक़ में इकट्ठी नहीं हो सकती, अच्छे अख़लाक़ और दीन में समझ बुझ”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2684 وقال : غریب لا اعرفه الا من حدیث خلف بن ایوب العامری) * خلف ھذا صدوق مبتدع ، حدث عن عوف و قیس بمناکیر و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابن المبارک (الزھد : 459) وغیره

٢٢٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَرَجَ فِي طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يرجع» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

220. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स तलब ए इल्म के लिए सफ़र करता है तो वह वापस आने तक अल्लाह की राह में रहता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2647 وقال : حسن غریب) و الدارمی (لم اجده) * خالد بن یزید و ابو جعفر الرازی و الربیع بن انس : کلھم حسن الحدیث فی غیر ما انکر علیه وقال ابن حبان فی ربیع بن انس :’’ و الناس یتقون حدیثه ما کان من روایة [ابی] جعفر عنه لان فیھا اضطراب کثیر ‘‘ (کتاب الثقات 4 / 228) فالجرح خاص و الخاص مقدم علی العامفائدة : وروی الحاکم فی المستدرک من حدیث ابی ھریرة عن النبی صلی الله علیه و آله وسلم قال : من جاء مسجدنا ھذا یتعلم خیرًا و یعلمه فھو کالمجاھد فی سبیل الله ،،، (1 / 91 ح 309) و سنده حسن

٢٢١ - (ضَعِيف) وَعَن سَخْبَرَة الْأَزْدِيّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ طَلَبَ الْعِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِمَا مَضَى»

. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ ضَعِيفُ ص:٧ الْإِسْنَادِ وَأَبُو دَاوُدَ الرَّاوِي يُضَعَّفُ

221. सख्बर अज़दी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इल्म हासिल करता है तो यह उस के पिछले गुनाहों का कफ्फारा बन जाता है”| इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस की सनद को जईफ करार दिया है और इस रिवायत में अबू दावुद रावी जईफ है| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جدا موضوع ، رواه الترمذی (2648 وقال : هذا حديث الاسناد) والدارمی (1 / 139 ح 567) * ابوداؤد الاعمی : نفيع كذاب ، و محمد بن حميد الرازی ضعيف جدًا على الراجح ضعفه الجمهور

٢٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَنْ يَشْبَعَ الْمُؤْمِنُ مِنْ خَيْرٍ يَسْمَعُهُ حَتَّى يَكُونَ مُنْتَهَاهُ الْجنَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

222. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन खैर (की बाते) सुन सुन कर सैर नहीं होता हत्ता कि उसकी अच्छी कोशिश व इन्तहा जन्नत हो जाती है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2686 وقال : حسن غريب) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2385) و الحاكم (4 / 130) و وافقه الذهبی] * دراج ابو السمح : حسن الحديث عن ابی الهيشم و عن غيره

٢٢٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ عَلِمَهُ ثُمَّ كَتَمَهُ أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

223. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाए, जिसे वह जानता हो, फिर वह इसे छुपाए तो रोज़ ए कियामत इसे आग की लगाम डाली जाएगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 263 ح 7561 و 2 / 305 ح 8035) و ابوداؤد (3658) و الترمذی (2649 و حسنه) [و ابن ماجه : 261]

٢٢٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْن مَاجَه عَن أنس

224. इब्ने माजा ने इसे अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (264 و سنده ضعيف و الحديث حسن) انظر الحديث السابق (223) فهو شاهد له

٢٢٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ لِيُجَارِيَ بِهِ الْعُلَمَاءَ أَوْ لِيُمَارِيَ بِهِ السُّفَهَاءَ أَوْ يصرف بِهِ وُجُوه النَّاس إِلَيْهِ أَدخل الله النَّار» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

225. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स उलेमा से मुनाज़रा करने, नादानों को शुबहात में मुब्तिला करने और लोगों की तवज्जो हासिल करने के लिए इल्म हासिल करता है तो अल्लाह इसे जहन्नम में दाखिल फरमाएगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2654 وقال : غريب) * اسحاق بن يحيى ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

٢٢٦ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ ابْن مَاجَه عَن ابْن عمر

226. इब्ने माजा ने इसे इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (253) * فيه حماد بن عبد الرحمن الكلبى ضعيف و ابو ايوب الازدى مجهول

٢٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّا يُبْتَغَى بِهِ وَجْهُ اللَّهِ لَا يَتَعَلَّمُهُ إِلَّا لِيُصِيبَ بِهِ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا لَمْ يَجِدْ عَرْفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . ص:٧ يَعْنِي رِيحَهَا. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

227. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ऐसा इल्म, जिसके ज़रिए अल्लाह की रज़ामंदी हासिल की जाती है, महज़ दुनिया का माल व मताअ हासिल करने के लिए सीखता है तो वह रोज़ ए कियामत जन्नत की खुशबू भी नहीं पाएगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 338 ح 8438) و ابوداؤد (3664) و ابن ماجه 252) [و صححه ابن حبان (الموارد : 89) و الحاكم (1 / 85) و وافقه الذهبى]

٢٢٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَضَّرَ اللَّهُ عَبْدًا سَمِعَ مَقَالَتِي فَحَفِظَهَا وَوَعَاهَا وَأَدَّاهَا فَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ غَيْرِ فَقِيهٍ وَرُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ إِلَى مَنْ هُوَ أَفْقَهُ مِنْهُ. ثَلَاثٌ لَا يَغِلُّ عَلَيْهِنَّ قَلْبُ مُسْلِمٍ إِخْلَاصُ الْعَمَلِ لِلَّهِ وَالنَّصِيحَةُ لِلْمُسْلِمِينَ وَلُزُومُ جَمَاعَتِهِمْ فَإِنَّ دَعْوَتَهُمْ تُحِيطُ مِنْ ورائهم» . رَوَاهُ الشَّافِعِي وَالْبَيْهَقِيّ فِي الْمدْخل

228. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस शख़्स के चेहरे को तरोताजा रखे जिस ने मेरी हदीस को सुना, इसे याद किया, उसकी हिफाज़त की और फिर इसे आगे बयान किया, बसा-अवक़ात अहल ए इल्म फ़की नहीं होते, और बसा-अवक़ात फ़की अपने से ज़्यादा फ़की तक बात पहुंचा देता है, तीन खसलते ऐसी है जिन के बारे में मुसलमान का दिल खयानत नहीं करता: अमल खालिस अल्लाह की रज़ा के लिए हो, मुसलमानों के लिए खैरख्वाही हो, और उनकी जमाअत के साथ लगे रहना, क्योंकि उनकी दावत उन्हें सब तरफ से घेर लेगी (हिफाज़त करेगी)”| (सहीह)

صحيح ، رواه الشافعى (فى الرسالة ص 401 فقرة : 1102 وهو فى مختصر المزنى ص 423) و البيهقى فى المدخل (لم اجده فى المطبوع ، وهو فى شعب الايمان : 1738) [و الترمذى (2658) و احمد (1 / 436)] * و للحديث شواهد كثيرة وهوبها صحيح ، انظر الاحاديث الآتية (229231)

٢٢٩ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ. إِلَّا أَنَّ التِّرْمِذِيّ وَأَبا دواد لَمْ يَذْكُرَا: «ثَلَاثٌ لَا يَغِلُّ عَلَيْهِنَّ» . إِلَى آخِره

229. अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा और दारमी ने ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| अलबत्ता तिरमिज़ी और अबू दावुद ने (ثَلَاثٌ لَا يَغِلُّ عَلَيْهِنَّ) से आख़िर तक ज़िक्र नहीं किया| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 183 ح 21924) و الترمذی (2656 وقال : حسن) و ابوداؤد (3660) و ابن ماجه (230) و الدارمی (1 / 75 ح 235) [و صححه ابن حبان (الموارد : 72 ، 73)]

٢٣٠ - (صَحِيح) وَعَن ابْن مَسْعُودٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «نَضَّرَ اللَّهُ امْرَأً سَمِعَ مِنَّا شَيْئًا فَبَلَّغَهُ كَمَا سَمِعَهُ فَرُبَّ مُبَلَّغٍ أَوْعَى لَهُ مِنْ سَامِعٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

230. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह इस शख़्स के चेहरे को तरोताजा रखे जिस ने हम से कोई ऐसी चीज़ सुनी, तो उस ने जैसे इसे सुना था वैसे ही इसे आगे पहुंचा दिया, क्योंकि बसा-अवक़ात जिसे बात पहुंचाई जाती है के उस की, इस सुनने वाले की निस्बत ज़्यादा हिफाज़त करने वाला होता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2657 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (232) [و صححه ابن حبان (الموارد : 7476) و انظر الحديث السابق (228)]

٢٣١ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيّ عَن أبي الدَّرْدَاء

231. दारमी ने इसे अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمی (1 / 75 ح 236)

٢٣٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اتَّقُوا الْحَدِيثَ عَنِّي إِلَّا مَا عَلِمْتُمْ فَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

232. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझ से हदीस बयान करते वक़्त एहतियात किया करो और सिर्फ वही हदीस बयान करो जिसके बारे में तुम्हें इल्म हो (की यह मेरी हदीस है), पस जिस ने जान बुझकर मुझ पर झूठ बांधा तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2951 وقال : حسن) [و ابن ابی شيبة فی مسنده کما فی ’’ بيان الوهم و الايهام ‘‘ لابن القطان 5 / 253 ح 2459] * عند الترمذی و ابن ابی شيبة :’’ عبدالاعلی الثعلبی ‘‘ وهو ضعيف : ضعفه الجمهور و اخطا ابن القطان فقال :’’ فالحديث صحيح من هذا الطريق ‘‘ و انظر الحديث الآتی (233)

٢٣٣ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ وَجَابِرٍ وَلَمْ يَذْكُرِ: «اتَّقُوا الْحَدِيثَ عَنِّي إِلَّا مَا علمْتُم»

233. इब्ने माजा ने इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है लेकिन इब्ने माजा ने यह अल्फ़ाज़: “मुझ से हदीस बयान करते वक़्त एहतियात करो और वही हदीस बयान करो जिसके बारे में तुम्हें इल्म हो”, ज़िक्र नहीं किए| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (30 ، 33) [و الترمذی : 2257 وقال : حسن صحیح] * ھذا الحدیث متواتر

٢٣٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِغَيْرِ عِلْمٍ فليَتَبَوَّأ مَقْعَده من النَّار» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

234. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कुरान के बारे में अपने राय से कुछ कहे तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| # और एक दूसरी रिवायत में है: “जो शख़्स कुरान के बारे में इल्म के बगैर कोई बात कहे तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2950 وقال : حسن ، 2951) * عبدالاعلی الثعلبی ضعیف ، تقدم (232) فالسند غیر حسن

٢٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فقد أَخطَأ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

235. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कुरान के बारे में अपने राय से कुछ कहे और अगर वह दुरुस्त भी हो तब भी उस ने गलती की”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2952 وقال : ھذا حدیث غریب وقد تکلم بعض اھل الحدیث فی سھیل بن ابی حزم) و ابوداؤد (3652) * سھیل بن عبداللہ ھو ابن مھران وھو ابن ابی حزم : ضعیف کما فی تقریب التھذیب (2672)

٢٣٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمِرَاءُ فِي الْقُرْآنِ كُفْرٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

236. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान के बारे में इख्तिलाफ व झगड़ा करना कुफ्र है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (2 / 286 ح 7835 ، 2 / 503 ح 10546) و ابوداؤد (4603) [و صححه ابن حبان (الموارد : 73) و الحاکم (2 / 223) و وافقه الذھبی]

٢٣٧ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قوما ص:٨ يتدارؤون فِي الْقُرْآنِ فَقَالَ: " إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِهَذَا: ضَرَبُوا كِتَابَ اللَّهِ بَعْضَهُ بِبَعْضٍ وَإِنَّمَا نَزَلَ كِتَابُ اللَّهِ يُصَدِّقُ بَعْضُهُ بَعْضًا فَلَا تُكَذِّبُوا بَعْضَهُ بِبَعْضٍ فَمَا عَلِمْتُمْ مِنْهُ فَقُولُوا وَمَا جَهِلْتُمْ فَكِلُوهُ إِلَى عَالِمِهِ ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

237. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: नबी ﷺ ने कुछ लोगों को कुरान के बारे में झगड़ा करते हुए पाया तो फ़रमाया: “तुम से पहले लोग भी इसी वजह से हलाक हुए उन्होंने अल्लाह की किताब के बाज़ हिस्सों का बाज़ हिस्सों से रद्द किया, हालाँकि अल्लाह की किताब तो इसलिए नाज़िल हुई के वह एक दूसरे की तस्दीक करता है, पस तुम कुरान के बाज़ हिस्से से बाज़ की तकज़ीब न करो, उस से जो तुम जान लो तो उसे बयान करो और जिस का तुम्हें पता न चले इसे उस के जानने वाले के सुपुर्द कर दो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 185 ح 6741 فيه الزهرى وهو مدلس و عنعن) و ابن ماجه (85) [و صححه البوصيرى فى زوائد ابن ماجه]
قلت : سند ابن ماجه حسن : تقدم (99)

٢٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُنْزِلَ الْقُرْآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ لِكُلِّ آيَةٍ مِنْهَا ظَهْرٌ وَبَطْنٌ وَلِكُلِّ حَدٍّ مَطْلَعٌ» رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

238. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान सात कीराअत में नाज़िल किया गया, उस में से हर आयत का ज़ाहिर और बातिन है, और हर सतह का मफ्हुम समझने के लिए मुनासिब इस्तिअदाद की ज़रूरत है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (1 / 263 بعد ح 122 معلقًا) [و الطبرانى فى تفسيره (1 / 10 ، 11) بسندين ضعيفين ، فيه مجهول وفى الآخر : ابراهيم بن مسلم الهجرى ضعيف] * وله شواهد ضعيفة عند ابن حبان (الموارد : 1781) و ابى يعلى فى مسنده (9 / 81 ح 5149) وغيرهما

٢٣٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْعِلْمُ ثَلَاثَةٌ: آيَةٌ مُحْكَمَةٌ أَوْ سُنَّةٌ قَائِمَةٌ أَوْ فَرِيضَةٌ عَادِلَةٌ وَمَا كَانَ سِوَى ذَلِكَ فَهُوَ فضل ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

239. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इल्म तीन है: आयते मुहकम या सुन्नत साबिता या फ़राइज़ आदिला (हर वह फ़र्ज़ जिस की फर्ज़ियत पर मुसलमानों का इज्मा है) और जो उस के सिवा हो वह अफज़ल है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2885) و ابن ماجه (54) * عبد الرحمن بن زياد بن انعم الافريقى و شيخه عبد الرحمن بن رافع : ضعيفان ، و الحديث ضعفه الذهبى فى تلخيص المستدرک (4 / 332)

٢٤٠ - (صَحِيح) وَعَن عَوْف بن مَالك الْأَشْجَعِيّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَقُصُّ إِلَّا أَمِيرٌ أَوْ مَأْمُورٌ أَو

مختال» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

240. ऑफ बिन मालिक अशजई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अमीर या जिसे वह इजाज़त दे वही ख़िताब करने का मिजाज़ है या फिर मुतकब्बर शख़्स वाज़ करता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3665)

٢٤١ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ وَفِي رِوَايَته بدل «أَو مختال»

241. दारमी ने अम्र बिन शुऐब अन अबी अन जदह की सनद से रिवायत बयान की है, उस में (مختال) “ मुतकब्बर” के बजाए (مراء) “ रियाकार” का लफ़्ज़ है | (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 319 ح 2782)

٢٤٢ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَفْتَى بِغَيْرِ عِلْمٍ كَانَ إِثْمُهُ عَلَى مَنْ أَفْتَاهُ وَمَنْ أَشَارَ عَلَى أَخِيهِ بِأَمْرٍ يَعْلَمُ أَنَّ الرُّشْدَ فِي غَيْرِهِ فَقَدْ خانه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

242. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने इल्म के बगैर फ़तवा दिया तो उस का गुनाह इसे फ़तवा देने वाले पर है، और जिस शख़्स ने अपने (मुसलमान) भाई को किसी मुआमले में मशवरा दिया हालाँकि वह जानता है के भलाई व बेहतरी उस के अलावा किसी दूसरी सूरत में है तो उस ने उस से खयानत की”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3657) [و صححه الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 126) و وافقه الذھبی و رواه ابن ماجه (53) مختصرًا]

٢٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْأُغْلُوطَاتِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

243. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने गलती में डालने वाले सवालो से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3656) * عبدالله بن سعد : لم یوثقه غیر ابن حبان وقال الساجی : ضعفه اهل الشام

٢٤٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ وَالْقُرْآنَ وَعَلِّمُوا النَّاسَ فَإِنِّي مَقْبُوضٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

244. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इल्म ए मीरास और कुरान की

तालीम हासिल करो और लोगों को सिखाओ, क्योंकि अनकरीब मेरी रूह कब्ज़ कर ली जाएगी| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الترمذی (2091 وقال : فیه اضطراب و محمد بن القاسم الاسدی ضعفه احمد وغیرہ) * محمد بن القاسم الاسدی : کذبوہ ، و الفضل بن دلھم لین و رمی بالاعتزال ، و سلیمان بن جابر و تلمیذہ مجھولان ، و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابن ماجه (2719) وغیرہ

٢٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَخَصَ بِبَصَرِهِ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ قَالَ: «هَذَا أَوَانٌ يُخْتَلَسُ فِيهِ الْعِلْمُ مِنَ النَّاسِ حَتَّى لَا يَقْدِرُوا مِنْهُ على شَيْء» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

245. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे तो आप ने आसमान की तरफ नज़र उठाकर फ़रमाया: “ये वह वक़्त है जिस में लोगों से इल्म सलब कर लिया जाएगा हत्ता कि वह उस से किसी चीज़ पर भी कुदरत नहीं रखेंगे”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2653 وقال : حدیث حسن غریب) [و صححه الحاکم (1 / 99) و وافقه الذھبی]

٢٤٦ - (ضَعِيف) وَعَن أبي هُرَيْرَة رِوَايَةً: «يُوشِكُ أَنْ يَضْرِبَ النَّاسُ أَكْبَادَ الْإِبِلِ يَطْلُبُونَ الْعِلْمَ فَلَا يَجِدُونَ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْ عَالم الْمَدِينَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ فِي جَامِعِهِ. قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: إِنَّهُ مَالِكُ بْنُ أنس وَمثله عَن عبد الرَّزَّاق قَالَ اسحق بْنُ مُوسَى: وَسَمِعْتُ ابْنَ عُيَيْنَةَ أَنَّهُ قَالَ: هُوَ الْعُمَرِيُّ الزَّاهِدُ وَاسْمُهُ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عبد الله

246. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अनकरीब लोग तलब ए इल्म में ऊटों पर सफ़र करेंगे, लेकिन वह आलिमे मदीना से ज़्यादा आलिम किसी को नहीं पाएँगे, और उनकी जामेअ में है की इब्ने उयेना रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उस से मुराद मालिक बिन अनस रहिमहुल्लाह हैं इन्ही के मिसल अब्दुल रज्ज़ाक से मरवी है, इसहाक बिन मूसा ने बयान किया, मैंने इब्ने उयेना से सुना, तो उन्होंने कहा: उस से मुराद उमरी ज़ाहिद है और उनका नाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2680 وقال : حسن صحیح) [و صححه الحاکم علی شرط مسلم (1 / 91 ح 307) و وافقه الذھبی] * ابن جریج و ابو الزبیر مدلسان و عنعنا و للحدیث شاھد منقطع عند ابن عبدالبر فی الانتقاء (ص 20)

٢٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ فِيمَا أَعْلَمُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْعَثُ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ عَلَى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنْ يُجَدِّدُ لَهَا دِينَهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

247. रावी ए हदीस अबू अलक़मा बयान करते हैं, कि मेरी मालूमात के मुताबिक अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रसूलुल्लाह ﷺ से मरफ़ुअ रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अज्ज़वजल इस उम्मत के लिए हर सौ साल के आख़िर पर किसी ऐसे शख़्स को भेजेगा जो उस के लिए उस के दीन की तजदीद करेगा”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (4291) [و الحاکم فی المستدرک (4 / 522) و سکتا علیه ، ھو و الذھبی]

٢٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْعُذْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «يَحْمِلُ هَذَا الْعِلْمَ مِنْ كُلِّ خَلَفٍ عُدُولُهُ يَنْفُونَ عَنْهُ تَحْرِيفَ الْغَالِينَ وَانْتِحَالَ الْمُبْطِلِينَ وَتَأْوِيلَ الْجَاهِلِين» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

248. इब्राहीम बिन अब्दुलरहमान उज़री रहिमहुल्लाह (मुरसल रिवायत) बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस इल्म को बाद में आने वाले हर तबके के साहब ए तक़्वा लोग हासिल करेंगे, वह इस (इल्म) से गुलू करने वालो की तहरीफ़, झूठे लोगों की जाल साज़ी और जुहला की तावील की नफी करेंगे”| बयहकी ने अल मद्खल में मुरसल रिवायत किया है हम जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी (فانما شفاء العی السوال) को तयम्मुम का बयान में इनशाअल्लाह बयान करेंगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی (10 / 209) [و ابن وضاح فی البدع و النھی عنھا : 1] * معان بن رفاعۃ : ضعیف و السند مرسل ، 0 حدیث جابر یاتی (531)

كتاب الْعلم • इल्म और उसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٤٩ - (ضَعِيف) عَنِ الْحَسَنِ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ جَاءَهُ الْمَوْتُ وَهُوَ يَطْلُبُ الْعِلْمَ لِيُحْيِيَ بِهِ الْإِسْلَامَ فَبَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّبِيِّينَ دَرَجَةٌ وَاحِدَةٌ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

249. हसन बसरी रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को अहयाए इस्लाम के लिए इल्म हासिल करते हुए मौत आ जाए तो जन्नत में उस के और अंबिया अलैहिस्सलाम के दरमियान में सिर्फ (नबूवत का) एक दर्जा होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الدارمی (1 / 100 ح 360) * عمرو بن کثیر و نصر بن القاسم و محمد بن اسماعیل : لم اعرفھم و السند مرسل

٢٥٠ - (حسن) وَعَنْهُ مُرْسَلًا قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رَجُلَيْنِ كَانَا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ أَحَدُهُمَا كَانَ عَالِمًا يُصَلِّي الْمَكْتُوبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ وَالْآخَرُ يَصُومُ النَّهَارَ وَيَقُومُ اللَّيْلَ أَيُّهُمَا أَفْضَلُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَضْلُ هَذَا الْعَالِمِ الَّذِي يُصَلِّي الْمَكْتُوبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ عَلَى الْعَابِدِ الَّذِي يَصُومُ النَّهَارَ وَيَقُومُ اللَّيْلَ كَفَضْلِي عَلَى أَدْنَاكُمْ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

250. हसन बसरी से मुरसल रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ से बनी इसराइल के दो आदमियों का तज़किरह किया गया, उनमें से एक आलिम था, वह फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ कर बैठ जाता और लोगों को खैर (इल्म) की तालीम देता, जबकि दूसरा शख़्स दिन को रोज़ा रखता और रात को कयाम करता था, आप ﷺ से दरियाफ्त किया गया कि इन दोनों में कौन अफज़ल है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस आलिम की, जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ कर बैठ जाता है और लोगों को खैर की तालीम देता है, उस पर आबिद जो दिन को रोज़ा रखता है और रात को कयाम करता

है इस तरह फ़ज़ीलत है, जिस तरह मेरी तुम्हारे अदना पर फ़ज़ीलत है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 98 ح 347) * السند مرسل

٢٥١ - (مَوْضُوع) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ الرَّجُلُ ص:٨ الْفَقِيهُ فِي الدِّينِ إِنِ احْتِيجَ إِلَيْهِ نَفَعَ وَإِنِ اسْتُغْنِيَ عَنْهُ أَغْنَى نَفْسَهُ» . رَوَاهُ رزين

251. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दीन का फ़की शख़्स क्या ही अच्छा है अगर उसकी तरफ रुजू किया जाए तो वह फ़ायदा पहुंचाता है, और अगर उस से बेनियाज़ी बरती जाए तो वह भी अपने आप को बेनियाज़ कर लेता है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه رزين (لم اجده) [و رواه ابن عساكر فى تاريخ دمشق (48 / 203) فيه عيسى بن عبدالله بن محمد بن عمر بن على عن ابيه الخ قال ابن حبان : يروى عن آبائه اشياء موضوعة]

٢٥٢ - (صَحِيح) وَعَن عِكْرِمَة أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: حَدِّثِ النَّاسَ كُلَّ جُمُعَةٍ مَرَّةً فَإِنْ أَبَيْتَ فَمَرَّتَيْنِ فَإِنْ أَكْثَرْتَ فَثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَلَا تُمِلَّ النَّاسَ هَذَا الْقُرْآنَ وَلَا أُلْفِيَنَّكَ تَأْتِي الْقَوْمَ وَهُمْ فِي حَدِيثٍ مِنْ حَدِيثِهِمْ فَتَقُصُّ عَلَيْهِمْ فَتَقْطَعُ عَلَيْهِمْ حَدِيثَهُمْ فَتُمِلَّهُمْ وَلَكِنْ أَنْصِتْ فَإِذَا أَمَرُوكَ فَحَدِّثْهُمْ وَهُمْ يَشْتَهُونَهُ وَانْظُرِ السَّجْعَ مِنَ الدُّعَاءِ فَاجْتَنِبْهُ فَإِنِّي عَهِدْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ لَا يَفْعَلُونَ ذَلِك " رَوَاهُ البُخَارِيّ

252. इकरिमा से रिवायत है के इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: “हर जुमा (सात दिन) में लोगों से एक मर्तबा वाज़ करो, अगर तुम (इस से) इनकार करते हो तो फिर हफ्ते में दो मर्तबा, अगर ज़्यादा करते हो तो फिर तीन मर्तबा, लोगों को इस कुरान से उकता न दो, मैं तुम्हें न पाऊ की तुम लोगों के पास आओ और वह अपने गुफ्तगू में मसरूफ हो और तुम उनकी बात काट कर के उन्हें वाज़ करना शुरू कर दो, इस तरह तुम उन्हें उकता दोगे, बल्कि तुम (वहां जा कर) ख़ामोशी इख़्तियार करो, जब वह तुम्हें कहे तो उन्हें वाज़ करो, हालाँकि वह उसकी ख्वाहिश रखते हो और काफीया बंदी में दुआ करने से बचा करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ और आप के सहाबा को देखा के वह ऐसे नहीं किया करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (6337)

٢٥٣ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ فَأَدْرَكَهُ كَانَ لَهُ كِفْلَانِ مِنَ الْأَجْرِ فَإِنْ لَمْ يُدْرِكْهُ كَانَ لَهُ كفل من الْأجر» . رَوَاهُ الدَّارِمِي

253. वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इल्म तलाश करे और इसे पा ले तो उस के लिए दो अज़र है, और अगर इसे न पा सके तो उस के लिए एक अज़र है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الدارمى (1 / 97 ح 342) * فيه يزيد بن ربيعة الصنعانى وهو متروك

٢٥٤ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِمَّا يَلْحَقُ ص:٨ الْمُؤْمِنَ مِنْ عَمَلِهِ وَحَسَنَاتِهِ بَعْدَ مَوْتِهِ عِلْمًا علمه ونشره وَولدا صَالحا تَركه ومصحفا وَرَّثَهُ أَوْ مَسْجِدًا بَنَاهُ أَوْ بَيْتًا لِابْنِ السَّبِيلِ بَنَاهُ أَوْ نَهْرًا أَجْرَاهُ أَوْ صَدَقَةً أخرجهَا من مَاله فِي صِحَّته وحياته يلْحقهُ من بعد مَوته» . رَوَاهُ بن مَاجَه وَالْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

254. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन को अपने मौत के बाद अपने आमाल व हसनात में जिन का सवाब पहुँचता रहता है, उनमें से एक इल्म है जो उस ने सिखाया और इसे नशर किया, (दूसरा) नेक औलाद जो उस ने छोड़ी, या कुरान मजीद जो उस ने किसी को विरासत किया, या मस्जिद है जो उस ने बना दी, या मुसाफ़िर खाना है जो उस ने बनाया, या नहर है जो उस ने जारी किया या वह सदका है जो उस ने अपने सेहत व हयात में अपने माल से किया, पस यह वह आमाल है जिन का सवाब उसकी मौत के बाद भी इसे पहुँचता रहता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (242) و البيهقى فى شعب الايمان (3448) [و صححه ابن خزيمة (2490) و للحديث شواهد معنوية] * الوليد بن مسلم كان يدلس تدليس التسوية ولم يصرح بالسماع المسلسل و مرزوق بن ابى الهذيل ضعفه الجمهور

٢٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ أَوْحَى إِلَيَّ أَنَّهُ مَنْ سَلَكَ مَسْلَكًا فِي طَلَبِ الْعِلْمِ سَهَّلْتُ لَهُ طَرِيقَ الْجَنَّةِ وَمَنْ سَلَبْتُ كَرِيمَتَيْهِ أَثَبْتُهُ عَلَيْهِمَا الْجَنَّةَ. وَفَضْلٌ فِي عِلْمٍ خَيْرٌ مِنْ فَضْلٍ فِي عِبَادَةٍ وَمِلَاكُ الدِّينِ الْوَرَعُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

255. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, उन्होंने कहा की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह अज्ज़वजल ने मेरी तरफ वही फरमाई की जो शख़्स तलब ए इल्म में कोई सफ़र करता है तो मैं उस के लिए राहे जन्नत आसान कर देता हूँ, और मैं जिस की दोनों आँखे सलब कर लेता हूँ तो मैं उस के बदले इसे जन्नत अता कर देता हूँ, इल्म में ज्यादती, इबादत में ज्यादती से बेहतर है, और दीन की असल तक़्वा है”| (मौज़ू)

سنده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5751) * فيه محمد بن عبدالملک الانصاری و کان يضع الحديث و يكذب

٢٥٦ - (ضَعِيف) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: تَدَارُسُ الْعِلْمِ سَاعَةً مِنَ اللَّيْلِ خَيْرٌ من إحيائها. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

256. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रात की एक घड़ी की दर्स तदरीस रातभर इबादत करने से बेहतर है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 149 ح 620) * السند منقطع ، ابن جريج لم يدرک ابن عباس ، و حفص بن غياث مدلس و عنعن

٢٥٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِمَجْلِسَيْنِ فِي مَسْجِدِهِ فَقَالَ: «كِلَاهُمَا عَلَى خَيْرٍ وَأَحَدُهُمَا أَفْضَلُ مِنْ صَاحِبِهِ أَمَّا هَؤُلَاءِ فَيَدْعُونَ اللَّهَ وَيَرْغَبُونَ إِلَيْهِ فَإِنْ شَاءَ أَعْطَاهُمْ وَإِنْ شَاءَ مَنَعَهُمْ. وَأَمَّا هَؤُلَاءِ فَيَتَعَلَّمُونَ الْفِقْهَ أَوِ الْعِلْمَ وَيُعَلِّمُونَ الْجَاهِلَ فَهُمْ ص:٨ أَفْضَلُ وَإِنَّمَا بُعِثْتُ مُعَلِّمًا» ثمَّ جلس فيهم. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

257. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद ए नबवी में दो हलको के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: "दोनों खैर व भलाई पर है, लेकिन उनमें एक दूसरे से अफज़ल है, रहे वह लोग जो अल्लाह से दुआ कर रहे हैं और उस के मुश्ताक है, पस अगर वह चाहे तो उन्हें अता फरमाए और अगर चाहे तो अता न फरमाए, और रहे वह लोग जो फिकह या इल्म सिखा रहे हैं और जाहिलो को तालीम दे रहे हैं, तो वह बेहतर है, और मुझे तो मुअल्लिम बना कर भेजा गया है", फिर आप इस हलके में बैठ गए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 99 ، 100 ح 355) * عبد الرحمن بن رافع ضعيفان تقدما (239) وقال رسول الل صلی الله علیه و آله وسلم ان الله تعالیٰ لم يبعثنى معنتًا ولا متعنتًا ولكن بعثنى معلمًا ميسرًا ، (رواه مسلم : 1478 ، دارالسلام : 3690)

٢٥٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا حَدُّ الْعِلْمِ الَّذِي إِذَا بَلَغَهُ الرَّجُلُ كَانَ فَقِيهًا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من حَفِظَ عَلَى أُمَّتِي أَرْبَعِينَ حَدِيثًا فِي أَمْرِ دِينِهَا بَعَثَهُ اللَّهُ فَقِيهًا وَكُنْتُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَة شافعا وشهيدا»

258. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूल अल्लाह से दरियाफ्त किया गया के इल्म की वह क्या हद है जहाँ पहुँच कर इंसान फ़की बन जाता है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने उमूर ए दीन के मुतल्लिक चालीस अहादीस याद की और उन्हें आगे उम्मत तक पहुचाएगा तो अल्लाह इसे फ़की की हैसियत से उठाएगा और रोज़ ए कियामत में उस के हक़ में शफाअत करूँगा और गवाही दूंगा"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1726 و سنده موضوع) * نوح بن ذكوان ضعيف و اخوه ايوب : منكر الحديث ، و الحسن البصرى عنعن ، و عبدالملک بن هارون بن عنترة كذان و للحديث طرق كثيرة كلها ضعيفة

٢٥٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَنْ أَجْوَدُ جُودًا؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «اللَّهُ تَعَالَى أَجْوَدُ جُودًا ثُمَّ أَنَا أَجْوَدُ بَنِي آدَمَ وَأَجْوَدُهُمْ مِنْ بَعْدِي رَجُلٌ عَلِمَ عِلْمًا فَنَشَرَهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمِيرًا وَحده أَو قَالَ أمة وَحده»

259. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क्या तुम जानते हो सबसे बड़ा सखी कौन है?" सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला सबसे बड़ा सखी है, फिर औलाद ए आदम में सबसे बड़ा सखी मैं हूँ, और मेरे बाद वह शख़्स सखी है जिस ने इल्म हासिल किया और इसे बढ़ावा दिया, रोज़ ए कियामत वह इस हैसियत से आएगा के वह अकेले ही अमीर होगा." या फ़रमाया: "अकेला ही एक उम्मत होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1767) * فيه سويد بن عبدالعزيز : ضعفه الجمهور ، و نوح بن ذكوان ضعيف و ايوب بن ذكوان مجروح منكر الحديث

٢٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْهُومَانِ لَا يَشْبَعَانِ: مَنْهُومٌ فِي الْعِلْمِ لَا يَشْبَعُ مِنْهُ وَمَنْهُومٌ

فِي الدُّنْيَا لَا يَشْبَعُ مِنْهَا «. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ " وَقَالَ: قَالَ الْإِمَامُ أَحْمَدُ فِي حَدِيثِ أَبِي الدَّرْدَاءِ: هَذَا مَتْنٌ مَشْهُورٌ فِيمَا بَين النَّاس وَلَيْسَ لَهُ إِسْنَاد صَحِيح

260. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “दो किस्म के भूके हरिस लोग कभी सैर नहीं होते, इल्म का हरिस शख़्स कभी इल्म से सैर नहीं होता और दुनिया का हरिस कभी दुनिया से सैर नहीं होता”, बयहकी ने यह तीनो अहादीस शौबुल ईमान में बयान की है, और इमाम अहमद ने अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस के बारे में फ़रमाया इस हदीस का मतन तो लोगों में मशहूर है, लेकिन उसकी इसनाद सहीह नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (10279 ، و سقط منه ذکر حمید الطویل ، نسخة محققة : 9798، و فی المدخل : 50) [و ابن عدی فی الکامل (6 / 2298) و عنه ابن الجوزی فی العلل المتناهیة (113) و فی سنده : محمد بن احمد بن یزید مجروح] * فیه ابو الفضل العباس بن الحسین بن احمد الصفار لم اجده و للحدیث شواهد ضعیفة عند الحاکم (1 / 92) و ابی خیشمة فی العلم (141) وغیرهما ، وقال کعب الاحبار لابی هریرة رضی الله عنه : اما انک لم تجد احدًا یطلب شیئًا الا یشبع منه یومًا من الدهر الا طالب علم و طالب دنیا ، (رواه الحاکم 1 / 92 ح 313 و سنده صحیح)

٢٦١ - (ضَعِيف) عَن عَوْنٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ: مَنْهُومَانِ لَا يَشْبَعَانِ صَاحِبُ الْعِلْمِ وَصَاحِبُ الدُّنْيَا وَلَا يَسْتَوِيَانِ أَمَّا صَاحِبُ الْعِلْمِ فَيَزْدَادُ رِضًى لِلرَّحْمَنِ وَأَمَّا صَاحِبُ الدُّنْيَا فَيَتَمَادَى فِي الطُّغْيَانِ. ثُمَّ قَرَأَ عَبْدُ اللَّهِ (كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَى)»» قَالَ وَقَالَ الْآخَرُ (إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عباده الْعلمَاء. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

261. ऑन रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: “दो भूके हरिस लोग सैर नहीं होते, साहब ए इल्म और साहब ए दुनिया और यह दोनों बराबर भी नहीं हो सकते, रहा साहब ए इल्म तो वह रहमान की रज़ामंदी में बढ़ता चला जाता है, और रहा साहब ए दुनिया तो वह सरकशी में बढ़ता चला जाता है, फिर अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने यह आयत तिलावत फरमाई: (كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَى أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَى) “हाँ, बिलाशुबा इंसान सरकश हो जाता है, जब वह अपने आप को बेनियाज़ समझता है”, रावी बयान करते हैं, उन्होंने दूसरे के लिए यह आयत तिलावत फरमाई: (إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عباده الْعلمَاء) “बात सिर्फ यह है कि अल्लाह के बंदो में से उलेमा ही उस से डरते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الدارمی (1 / 96 ح 339) * عون بن عبدالله بن عتبة بن مسعود لم یسمع من ابن مسعود رضی الله عنه فالسند منقطع

٢٦٢ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: " إِنَّ أَنَاسًا مِنْ أُمَّتِي سَيَتَفَقَّهُونَ فِي الدِّينِ ويقرءون الْقُرْآن يَقُولُونَ نَأْتِي الْأُمَرَاءَ فَنُصِيبُ مِنْ دُنْيَاهُمْ وَنَعْتَزِلُهُمْ بِدِينِنَا وَلَا يَكُونُ ذَلِكَ كَمَا لَا يُجْتَنَى مِنَ الْقَتَادِ إِلَّا الشَّوْكُ كَذَلِكَ لَا يُجْتَنَى مِنْ قُرْبِهِمْ إِلَّا - قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ: كَأَنَّهُ يَعْنِي - الْخَطَايَا ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

262. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत में से कुछ लोग दीन में तौफ़ीक़ हासिल करने का दावा करेंगे, वह कुरान पढ़ेंगे, वह कहेंगे: हम उमरा (हुक्मरान) के पास जा कर उन से उनकी दुनिया से कुछ हासिल करते हैं, और हम अपने दीन को उन से बचाकर रखते है, हालांकि ऐसे नहीं हो सकता, जैसे कताद (सख्त कांटेदार जंगली दरख्त) से सिर्फ कांटे ही जने जा सकते है, इसी तरह उन (अमरा)

के कुर्ब से सिवाय", मुहम्मद बिन सबाह ने कहा: गोया आप ﷺ यह कहना चाहते है की "उन के पास जाने से गुनाह हासिल होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (255) * الوليد بن مسلم مدلس و عنعن و فيه علة أخرى و هى جهالة عبيدالله بن ابى بردة

٢٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَوْ أَنَّ أَهْلَ الْعِلْمِ صَانُوا الْعِلْمَ وَوَضَعُوهُ عِنْدَ أَهْلِهِ لَسَادُوا بِهِ أَهْلَ زَمَانِهِمْ وَلَكِنَّهُمْ بَذَلُوهُ لِأَهْلِ الدُّنْيَا لِيَنَالُوا بِهِ مِنْ دُنْيَاهُمْ فَهَانُوا عَلَيْهِمْ سَمِعْتُ نَبِيَّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ جَعَلَ الْهُمُومَ هَمًّا وَاحِدًا هَمَّ آخِرَتِهِ كَفَاهُ اللَّهُ هَمَّ دُنْيَاهُ ص:٨ وَمَنْ تَشَعَّبَتْ بِهِ الْهُمُومُ فِي أَحْوَالِ الدُّنْيَا لَمْ يُبَالِ اللَّهُ فِي أَيِّ أَوْدِيَتِهَا هَلَكَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

263. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: अगर अहल ए इल्म, इल्म की हिफाज़त करते और इसे उस के अहल लोगों तक पहुंचाते तो वह उस के ज़रिए अपने ज़माने के लोगों पर सियादत व हुक्मरानी करते, लेकिन उन्होंने दुनिया दारो के लिए मखसूस कर दिया ताकि वह उस के ज़रिए उनकी दुनिया से कुछ हासिल कर ले, तो इस तरह वह इन के सामने बेआबरू हो गए, मैंने तुम्हारे नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना है, "जो शख़्स अपने ग़मो को समेट कर फ़क़त अपनी (आखिरत को) एक गम बना लेता है तो अल्लाह उस के दुनिया के गमो से उस के लिए काफी हो जाता है, और जिस शख़्स को दुनिया के ग़म व फिकर मुन्तशर रखे तो फिर अल्लाह को उसकी कोई परवाह नहीं के वह किसी वादी में हलाक होता है"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابن ماجه (257) [و سنده ضعيف جدًا ، نهشل : متروک ، كذبه ابن راهويه ، و انظر الحديث الآتى : 264]

٢٦٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ مِنْ قَوْلِهِ: «مَنْ جَعَلَ الْهُمُومَ» إِلَى آخِره

264. बयहकी ने शौबुल ईमान में इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से आप ﷺ के कौल (من جعل الهموم ،،،،) से आख़िर तक रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1888) [و الحاكم فى المستدرک 4 / 328 ، 329] * فيه يحيى بن المتوكل ابو عقيل وهو ضعيف

٢٦٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «آفَةُ الْعِلْمِ النِّسْيَانُ وَإِضَاعَتُهُ أَنْ تُحَدِّثَ بِهِ غَيْرَ أَهْلِهِ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ مُرْسلا

265. आमश रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "भूल जाना इल्म के लिए आफत है, और जो इल्म की अहलियत नहीं रखते उन से इसे बयान करना इसे ज़ाए करना है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 150 ح 630) * السند مرسل

٢٦٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ سُفْيَانَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لِكَعْبٍ: مَنْ أَرْبَابُ الْعِلْمِ؟ قَالَ: الَّذِي يَعْمَلُونَ بِمَا يَعْلَمُونَ. قَالَ: فَمَا أَخْرَجَ الْعِلْمَ مِنْ قُلُوبِ الْعُلَمَاءِ؟ قَالَ الطَّمَعُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

266. सुफियान सौरी से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने काब रदियल्लाहु अन्हु से पूछा: अहल ए इल्म कौन है? उन्होंने कहा: जो अपने इल्म के मुताबिक अमल करते हैं, फिर पूछा: कौन सी चीज़ उलेमा के दिलों से इल्म निकाल देती है? उन्होंने कहा: (दुनिया का) ताअम| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 144 ح 590) * السند منقطع ، سفيان ولد بعد شهادة سيدنا عمر رضى الله عنه وللاثر شاهد ضعيف

٢٦٧ - (ضَعِيف) وَعَن الْأَحْوَص بن حَكِيم عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ النَّبِيَّ صَلَّى الله عَلَيْهِ سلم عَنِ الشَّرِّ فَقَالَ: «لَا تَسْأَلُونِي عَنِ الشَّرِّ وَسَلُونِي عَنِ الْخَيْرِ» يَقُولُهَا ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: ص:٨ «أَلَا إِنَّ شَرَّ الشَّرِّ شِرَارُ الْعُلَمَاءِ وَإِنَّ خير الْخَيْر خِيَار الْعلمَاء» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

267. अह्वस बिन हकिम अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: किसी आदमी ने नबी ﷺ से शर के बारे में पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझ से शर के बारे में मत पूछो, मुझ से खैर के बारे में पूछो”, आप ने तीन मर्तबा ऐसे फ़रमाया: फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! सबसे बड़ा शर उलेमाए सु है और सबसे बड़ी खैर उलेमाए खैर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 104 ح 376) * بوية مدلس و عنعن و الاحوص بن حكيم : ضعيف الحفظ وكان عابدًا ، والسند مرسل

٢٦٨ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: " إِنَّ مِنْ أَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللَّهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ: عَالِمٌ لَا ينْتَفع بِعِلْمِهِ ". رَوَاهُ الدَّارمِيّ

268. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं,: “रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ सबसे बुरा मक़ाम इस आलिम का होगा जो अपने इल्म से फ़ायदा हासिल नहीं करता”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه الدارمى (1 / 82 ح 268) * فيه ابن القاسم وكان يضع الحديث

٢٦٩ - (صَحِيح) وَعَن زِيَاد بن حدير قَالَ: قَالَ لِي عُمَرُ: هَلْ تَعْرِفُ مَا يَهْدِمُ الْإِسْلَامَ؟ قَالَ: قُلْتُ: لَا. قَالَ: يَهْدِمُهُ زَلَّةُ الْعَالِمِ وَجِدَالُ الْمُنَافِقِ بِالْكِتَابِ وَحُكْمُ الْأَئِمَّةِ المضلين ". رَوَاهُ الدِّرَامِي

269. ज़ियाद बिन हुदैर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझ से पूछा: की तुम जानते हो कौन सी चीज़ इस्लाम की इज्ज़त में कमी करती हैं? मैंने कहा: नहीं, उन्होंने ने फ़रमाया: आलिम की लगजिश, मुनाफ़िक़ का कुरान के साथ जिदाल करना और गुमराह हुक्मरानों का फैसले करना”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمى (1 / 71 ح 220) * ابواسحاق هو سليمان بن ابى سليمان الشيبانى و للاثر طرق عن الشعبى رحمه الله

٢٧٠ - (ضَعِيف) وَعَن الْحسن قَالَ: «الْعِلْمُ عِلْمَانِ فَعِلْمٌ فِي الْقَلْبِ فَذَاكَ الْعلم النافع وَعلم على اللِّسَان فَذَاك حُجَّةُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى ابْنِ آدَمَ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

270. हसन बसरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, इल्म की दो इक्साम है, एक इल्म दिल में है, वह इल्म नफ़ामंद है, और एक इल्म ज़ुबान पर है, वह अल्लाह अज्ज़वजल की इब्ने आदम के खिलाफ हुज्जत होगी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (1 / 102 ح 370) * فیه ھشام بن حسان مدلس و عنعن

٢٧١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: «حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وِعَاءَيْنِ فَأَمَّا أَحَدُهُمَا فَبَثَثْتُهُ فِيكُمْ وَأَمَّا الْآخَرُ فَلَوْ بَثَثْتُهُ قُطِعَ هَذَا الْبُلْعُومُ يَعْنِي مجْرى الطَّعَام» رَوَاهُ البُخَارِيّ

271. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से (इल्म के) दो ज़र्फ़ याद किए, उनमें से एक मैंने तुम्हारे दरमियान नशर कर दिया, रही दूसरी किस्म तो अगर में उसे नशर करदू तो मेरा गला काट दिया जाए| (बुखारी)

رواه البخاری (120)

٢٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ عَلِمَ شَيْئًا فَلْيَقُلْ بِهِ وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلِ اللَّهُ أعلم فَإِن من الْعلم أَن يَقُول لِمَا لَا تَعْلَمُ اللَّهُ أَعْلَمُ. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ (قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنا من المتكلفين)

272. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: लोगो! जिस शख़्स को किसी चीज़ का इल्म हो तो वह उस के मुतल्लिक बात करे, और जिसे इल्म न हो तो वह कहे (अल्लाहु आलम) अल्लाह बेहतर जानता है, क्योंकि जिस चिज़ का तुझे इल्म न हो उस के मुतल्लिक तुम्हारा यह कहना के अल्लाह बेहतर जानता है, यह भी इल्म की बात है, अल्लाह तआला ने अपने नबी से फ़रमाया: “कह दीजिए मैं उस पर तुम से कोई अज़्र नहीं मांगता और मैं तकलीफ करने वालो में से भी नहीं हूँ” | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (4809) و مسلم (39 / 2798)، (7066)

٢٧٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ: إِنَّ هَذَا الْعِلْمَ دِينٌ فَانْظُرُوا عَمَّنْ تَأْخُذُونَ دِينَكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

273. इब्ने सिरिन रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: बेशक यह इल्म ए दीन है, पस तुम देखो की तुम अपना दीन किसी से हासिल करते हो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 7 بعده ، باب بیان ان الاسناد من الدین ، و ترقیم دارالسلام : 26)

٢٧٤ - (صَحِيح) وَعَن حُذَيْفَة قَالَ: يَا مَعْشَرَ الْقُرَّاءِ اسْتَقِيمُوا فَقَدْ سَبَقْتُمْ سَبْقًا بَعِيدًا وَإِنْ أَخِذْتُمْ يَمِينًا وَشِمَالًا لَقَدْ ضللتم ضلالا بَعيدا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

274. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: ए कुर्रा की जमाअत! सीधी राह पर साबित कदम रहो, इसलिए की तुम सबसे आगे हो, और अगर तुम दाएँ बाएँ चले गए तो तुम बहोत दूर गुमराही में चले जाओगे| (बुखारी)

رواه البخارى (7282)

٢٧٥ - (ضَعِيف جِدًّا) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ جُبِّ الْحَزَنِ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا جُبُّ الْحَزَنِ؟ قَالَ: «وَادٍ فِي جَهَنَّمَ تَتَعَوَّذُ مِنْهُ جَهَنَّم كل يَوْم أَرْبَعمِائَة مرّة» . قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَنْ يَدْخُلُهَا قَالَ: «الْقُرَّاءُ الْمُرَاءُونَ بِأَعْمَالِهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَكَذَا ابْنُ مَاجَهْ وَزَادَ فِيهِ: «وَإِنَّ مِنْ أَبْغَضِ الْقُرَّاءِ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى الَّذِينَ يَزُورُونَ الْأُمَرَاءَ» . قَالَ الْمُحَارِبِيُّ: يَعْنِي الجورة

275. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(ग़मनाक घड़े) से अल्लाह की पनाह तलब करो”, सहाबा ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ग़मनाक घड़े से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जहन्नम में एक वादी है, जिस से जहन्नम (की दीगर वादियाँ) हर रोज़ चार सौ मर्तबा पनाह मांगती है”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल ﷺ उस में कौन दाखिल होगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने आमाल के ज़रिए रियाकारी करने वाले कुर्रा”| # इसी तरह इब्ने माजा ने रिवायत किया है, और उन्होंने उसमें यह इज़ाफा किया है: “अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसंदीदा कुर्रा वह है जो उमरा (हुक्मरान) के पास जाते हैं”, मुहारबी ने कहा: उस से ज़ालिम उमरा (हुक्मरान) मुराद है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2383 وقال : غريب و فى نسخة : حسن غريب) و ابن ماجه (256) * فيه عمار : ضعيف الحديث وكان عابدًا ، و شيخه : مجهول

٢٧٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُوشِكُ أَنْ يَأْتِيَ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقَى مِنَ الْإِسْلَامِ إِلَّا اسْمُهُ وَلَا يَبْقَى مِنَ الْقُرْآنِ إِلَّا رَسْمُهُ مَسَاجِدُهُمْ عَامِرَةٌ وَهِيَ خَرَابٌ مِنَ الْهُدَى عُلَمَاؤُهُمْ شَرُّ مَنْ تَحْتَ أَدِيمِ السَّمَاءِ مِنْ عِنْدِهِمْ تَخْرُجُ الْفِتْنَةُ وَفِيهِمْ تَعُودُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

276. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “करीब है के लोगों पर एक ऐसा दौर आए जब इस्लाम का सिर्फ नाम और कुरान का सिर्फ रस्मुलखत बाकी रह जाएगा, उनकी मसाजिद आबाद होगी लेकिन वह हिदायत से खाली होगी, उन के उलेमा आसमान तले बदतरीन लोग होंगे, उन के पास से फितने ज़ाहिर होगा और उन्हीं मेंलौट जाएगा”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1908)* فى سنده رجل : لم اعرفه ، وله طريق آخر موقوف ، سنده ضعيف ، عبدالله بن دكين ضعيف : ضعفه الجمهور

٢٧٧ - (صَحِيح) وَعَن زِيَاد بن لبيد قَالَ ذَكَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا فَقَالَ: «ذَاكَ عِنْدَ أَوَانِ ذَهَابِ الْعِلْمِ» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يَذْهَبُ الْعِلْمُ وَنحن نَقْرَأُ الْقُرْآن ونقرئه أبناءنا ويقرؤه ابناؤنا أَبْنَاءَهُم إِلَى يَوْم الْقِيَامَة قَالَ: «ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ زِيَادُ إِنْ كُنْتُ لَأُرَاكَ مِنْ أَفْقَهِ رَجُلٍ بِالْمَدِينَةِ أَوَلَيْسَ هَذِهِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى يَقْرَءُونَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ لَا يَعْمَلُونَ بِشَيْءٍ مِمَّا فِيهِمَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ عَنهُ نَحوه

277. ज़ियाद बिन लबीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने किसी (खौफनाक) चीज़ का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: “ये इल्म के रुखसत हो जाने के वक़्त होगी”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इल्म कैसे रुखसत हो जाएगा, जबकि हम कुरान पढ़ते है, और हम इसे अपने औलाद को पढ़ा रहे हैं, और हमारी औलाद अपने औलाद को पढ़ाएगी और यह सिलसिला कियामत तक जारी रहेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ज़ियाद! तेरी माँ तुम्हें ग़ुम पाए, मैं तो तुम्हें मदीना का बड़ा फ़की शख़्स समझता था, क्या यह यहूद व नसारा, तौरात व इन्जील नहीं पढ़ते, लेकिन वह उन के मुताबिक अमल नहीं करते”| अहमद इब्ने माजा और तिरमिज़ी ने भी इन्ही से इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (4 / 160 ح 17612 ، و اللفظ له) و ابن ماجه (4048 و حديثه حسن بالشواهد) و الترمذى (2653 من حديث ابى الدرداء وقال :’’ حسن غريب ‘‘ و سنده صحيح ، وهو دون قوله :’’ الى يوم القيامة ‘‘ فالحديث صحيح دون هذا) * الاعمش مدلس و عنعن و سالم بن ابى الجعد لم يسمع من زياد بن لبيد رضى الله عنه

٢٧٨ - (ضَعِيف) وَكَذَا الدَّارِمِيّ عَن أبي أُمَامَة

278. और दारमी ने भी अबू उमामा से इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 77 ، 78 ح 246) * حجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و عنعن

٢٧٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَعَلِّمُوهُ النَّاسَ تَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ وَعَلِّمُوهَا النَّاسَ تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ وَعَلِّمُوهُ النَّاسَ فَإِنِّي امْرُؤٌ مَقْبُوضٌ وَالْعِلْمُ سَيُقْبَضُ وَتَظْهَرُ الْفِتَنُ حَتَّى يَخْتَلِفَ اثْنَانِ فِي ص:٩ فَرِيضَةٍ لَا يَجِدَانِ أَحَدًا يَفْصِلُ بَيْنَهُمَا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَالدَّارَقُطْنِيّ

279. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “इल्म सीखो और इसे दुसरो को सिखाओ, फ़राइज़ (इल्म ए मीरास) सीखो और इसे लोगों को सिखाओ, कुरान सीखो और इसे लोगों को सिखाओ, क्योंकि मेरी रूह कब्ज़ कर ली जाएगी, और (मेरे बाद) इल्म भी उठा लिया जाएगा, फितने ज़ाहिर हो जाएँगे हत्ता कि दो आदमी किसी फ़रीज़े में इख्तिलाफ करेंगे लेकिन वह अपने दरमियान फैसला करने वाला कोई नहीं पाएँगे”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الدارمى (1 / 72 ، 73 ح 227) و الدارقطنى (4 / 82) [و الترمذى (2091) مختصرًا ، انظر الحديث المتقدم (244)] * سليمان بن جابر الهجرى : مجهول و عوف الاعرابى لم يسمعه منه ، بينهما رجل مجهول

٢٨٠ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ عِلْمٍ لَا يُنْتَفَعُ بِهِ كَمَثَلِ كَنْزٍ لَا يُنْفَقُ مِنْهُ فِي سَبِيل الله» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

280. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस इल्म से फ़ायदा न उठाया जाए वह इस खज़ाने की तरह है जिस में से अल्लाह की राह में खर्च न किया जाए”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه احمد (2 / 499 ح 10481) و الدارمی (1 / 138 ح 562) * ابراھیم بن مسلم الھجری ضعیف

पाकीज़गी का बयान • كتاب الطَّهَارَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٨١ - (صَحِيح) عَن أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الطُّهُورُ شَطْرُ الْإِيمَانِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَأُ الْمِيزَانَ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَآنِ - أَوْ تَمْلَأُ - مَا بَيْنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالصَّلَاةُ نُورٌ وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ وَالْقُرْآنُ حُجَّةٌ لَكَ أَوْ عَلَيْكَ كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو فَبَائِعٌ نَفْسَهُ فَمُعْتِقُهَا أَوْ مُوبِقُهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ تَمْلَآنِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . لَمْ أَجِدْ هَذِهِ الرِّوَايَةَ فِي الصَّحِيحَيْنِ وَلَا فِي كِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ وَلَا فِي «الْجَامِعِ» وَلَكِنْ ذَكَرَهَا الدَّارِمِيُّ بدل «سُبْحَانَ الله وَالْحَمْد لله»

281. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पाकीज़गी आधा ईमान है, (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह मीज़ान को भर देता है, (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह और (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह दोनो या (इन में से हर कलमा) ज़मीन व आसमान के माबिन को भर देता है, नमाज़ नूर है, सदका बुरहान है, सब्र ज़िया है और कुरान तेरे हक़ मे या तेरे खिलाफ दलील होगा, हर आदमी सुबह के वक़्त अपने नफ्स का सौदा करता, पस वह इसे आज़ाद करा लेता है या हलाक कर देता है”| # और एक दूसरी रिवायत में है : (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ) (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है) ज़मीन व आसमान के दरमियानमें हर चीज़ को भर देते है”, मैंने यह रिवायत सहीहैन में पाई है न के हुमैदी की किताब में और ना ही जामेअमें लेकिन दारमी ने इसे (سُبْحَانَ الله وَالْحَمْد لله) (अल्लाह पाक है और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है) के बदले ज़िक्र किया है| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (1 / 223)، (534) و الدارمی (1 / 167 ح 659) [و النسائی فی الکبری : 9996]

٢٨٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللَّهُ بِهِ الْخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ؟ " قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «إِسْبَاغُ الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ وَكَثْرَةُ الْخُطَى إِلَى الْمَسَاجِدِ وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاة فذلكم الرِّبَاط»

282. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल बताऊँ जिसके ज़रिए अल्लाह खताए मुआफ़ कर देता है और दरजात बुलंद करता है? सहाबा ने अर्ज़ किया: क्यों नहीं! अल्लाह के रसूल! ज़रूर बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: “नागवारी के बावजूद मुकम्मल तौर पर वुज़ू करना, मसाजिद की तरफ ज़्यादा कदम चल कर जाना और नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतज़ार करना, यही सरहदी छावनी की हिफाज़त है”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (41 / 251)، (587)

٢٨٣ - وَفِي حَدِيث مَالك بن أنس: «فَذَلِك الرِّبَاطُ فَذَلِكُمُ الرِّبَاطُ» . رَدَّدَ مَرَّتَيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَة التِّرْمِذِيّ ثَلَاثًا

283. मालिक बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में : (فَذَلِك الرِّبَاطُ فَذَلِكُمُ الرِّبَاطُ) के अल्फाज़ दो मर्तबा हैं मुस्लिम और तिरमिज़ी की रिवायत में तीन मर्तबा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 251)، (587) و الترمذی (52)

٢٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ حَتَّى تخرج من تَحت أَظْفَاره»

284. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वुज़ू करे और खूब अच्छी तरह वुज़ू करे तो उसकी खताए उस के जिस्म से निकल जाती है, हत्ता कि उस के नाख़ून के नीचे से भी निकल जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (لم اجده) و مسلم (33 / 245)، (578)

٢٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا تَوَضَّأَ الْعَبْدُ الْمُسْلِمُ أَوِ الْمُؤْمِنُ فَغَسَلَ وَجْهَهُ خَرَجَ مِنْ وَجْهِهِ كُلُّ خَطِيئَةٍ نَظَرَ إِلَيْهَا بِعَيْنَيْهِ مَعَ المَاء مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ فَإِذَا غَسَلَ يَدَيْهِ خرجت من يَدَيْهِ كل خَطِيئَة بَطَشَتْهَا يَدَاهُ مَعَ الْمَاءِ أَوْ مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ فَإِذَا غَسَلَ رِجْلَيْهِ خَرَجَ كُلُّ خَطِيئَةٍ مَشَتْهَا رِجْلَاهُ مَعَ الْمَاءِ أَوْ مَعَ آخِرِ قَطْرِ الْمَاءِ حَتَّى يَخْرُجَ نَقِيًّا مِنَ الذُّنُوب)»» (رَوَاهُ مُسلم)

285. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मुसलमान या मोमिन बंदा वुज़ू करता है और वह अपना चेहरा धोता है तो आंखो के देखने से होने वाली तमाम खताए पानी के साथ या पानी के आखिरी कतरे के साथ उस के चेहरे से निकल जाती है, पस जब वह अपने हाथ धोता है, तो उस के हाथ से जो खताए सरज़द होती है, वह पानी के साथ या पानी के आखिरी कतरे के साथ उस के हाथो से निकल जाती, पस जब वह अपने पाँव धोता है तो उस के पाँव से जो खताए सरज़द होती है पानी के साथ या पानी के आखिरी कतरे के साथ उस के पाँव से निकल जाती है, हत्ता कि वह गुनाहों से साफ़ हो जाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 244)، (577)

٢٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ تَحْضُرُهُ صَلَاةٌ مَكْتُوبَةٌ فَيُحْسِنُ وُضُوءَهَا وَخُشُوعَهَا وَرُكُوعَهَا إِلَّا كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا قَبْلَهَا مِنَ الذُّنُوبِ مَا لَمْ يُؤْتِ كَبِيرَةً وَذَلِكَ الدَّهْرَ كُلَّهُ» . رَوَاهُ مُسلم

286. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कोई मुसलमान फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त होने पर उस के लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है और उस के खुशुअ व रुकू का अच्छी तरह इह्तेमाम

करता है तो वह इस (नमाज़) से पहले किए हुए गुनाहों का कफ्फारा बन जाती है शर्त है की कबिराह गुनाहों का इर्तिकाब न किया हो, और यह (फ़र्ज़ नमाज़ से सगिरह गुनाहों का मुआफ़ हो जाना) हमेशा के लिए है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 228)، (543)

٢٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّهُ تَوَضَّأَ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ ثَلَاثًا ثُمَّ تَمَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْمِرْفَقِ ثَلَاثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُسْرَى إِلَى الْمِرْفَقِ ثَلَاثًا ثُمَّ مَسَحَ بِرَأْسِهِ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُمْنَى ثَلَاثًا ثُمَّ الْيُسْرَى ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: " رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوئِي هَذَا ثُمَّ قَالَ: «مَنْ تَوَضَّأَ وُضُوئِي هَذَا ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ لَا يُحَدِّثُ نَفسه فيهمَا بِشَيْءٍ إِلَّا غفر لَهُ مَا تقدم من ذَنبه» . وَلَفظه للْبُخَارِيّ

287. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने वुज़ू किया तो तीन मर्तबा अपने हाथो पर पानी डाला, फिर कुल्ली की और नाक झाड़ी, फिर तीन बार अपना चेहरा धोया, फिर तीन मर्तबा कोहनी समेत अपना दायाँ हाथ धोया, फिर तीन मर्तबा कोहनी समेत अपना बायाँ हाथ धोया, फिर अपने सर का मसाह किया, फिर तीन मर्तबा अपना दायाँ पाँव धोया, फिर तीन मर्तबा बायाँ, फिर फ़रमाया: मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को देखा, आप ने मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू किया, फिर फ़रमाया: "जो शख़्स मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकते पढ़ता है और वह इस दौरान अपने दिल में किसी किस्म का ख्याल न लाए तो उस के पिछले गुनाह बख्श दिए जाते हैं"| बुखारी, मुस्लिम, हदीस के अल्फाज़ बुखारी के हैं | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1934) و مسلم (3 ، 4 / 226)، (538)

٢٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَتَوَضَّأُ فَيُحْسِنُ وُضُوءَهُ ثُمَّ يَقُومُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ مقبل عَلَيْهِمَا بِقَلْبِهِ وَوَجْهِهِ إِلَّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ» . رَوَاهُ مُسلم

288. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो मुसलमान वुज़ू करता है और वह अपना वुज़ू अच्छी तरह करता है फिर खड़ा हो कर मुकम्मल तवज्जो के साथ दो रकते पढ़ता है तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 234)، (553)

٢٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبْلِغُ أَوْ فَيُسْبِغُ الْوُضُوءَ ثُمَّ يَقُولُ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ وَفِي رِوَايَةٍ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ ". هَكَذَا رَوَاهُ مُسْلِمٌ فِي صَحِيحِهِ وَالْحُمَيْدِيُّ فِي أَفْرَاد مُسلم وَكَذَا ابْن الْأَثِير فِي جَامع الْأُصُول»» وذكر الشَّيْخ مُحي الدِّينِ النَّوَوِيُّ فِي آخِرِ حَدِيثِ مُسْلِمٍ عَلَى مَا رويناهُ وَزَاد التِّرْمِذِيّ: «اللهُ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ» ص:٩»» وَالْحَدِيثُ الَّذِي رَوَاهُ مُحْيِي السُّنَّةِ فِي الصِّحَاحِ: «مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ» إِلَى آخِرِهِ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ فِي جَامِعِهِ بِعَيْنِهِ إِلَّا

كَلِمَةَ «أَشْهَدُ» قَبْلَ «أَن مُحَمَّدًا»

289. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से जो शख़्स वुज़ू करता है और अच्छी तरह मुकम्मल वुज़ू करता है फिर कहता है: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं", और एक दूसरी रिवायत में है: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं", तो उस के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, वह जिस से चाहे दाखिल हो जाए"| # इमाम मुस्लिम ने इसे इस तरह अपनी सहीह में रिवायत किया है| हुमैदी ने " अफराद मुस्लिम" में और इसी तरह इब्ने असीर ने "जामेअ अल असवल" में रिवायत किया है, अल शैख़ मुह्युद्दीन अल नववी ने मुस्लिम की हदीस के आख़िर में ज़िक्र किया है, और इमाम तिरमिज़ी ने यह अल्फाज़ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नकल किए है, "अल्लाह मुझे तौबा करने वालो और पाक रहने वालो में से बना दे", वह हदीस जिसे मुह्यी अल सुन्नी " अल सिहाह" में रिवायत किया है: "जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छी तरह वुज़ू करे", आख़िर तक इमाम तिरमिज़ी ने इसे बिलकुल इसी तरह अपने जामेअ में रिवायत किया है लेकिन (أَن مُحَمَّدًا) से पहले (أَشْهَدُ) का ज़िक्र नहीं | (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 234)، (553) و ابن الاثير فی جامع الاصول (9 / 336 ح 7017) * زيادة الترمذی (55) ضعيفة ، انظر تعليق الحافظ احمد شاكر علی سنن الترمذی (1 / 7982) فيه ابو ادريس : لم يسمع هذا الحديث من عمر ، و ابو عثمان متاخر ، غير النهدی : لم يسمع من عمر شيئًا و اختلف فيه من هو ؟

٢٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «إِن أُمَّتِي يُدْعَوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ غُرًّا مُحَجَّلِينَ مِنْ آثَارِ الْوُضُوءِ فَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يُطِيلَ غرته فَلْيفْعَل»

290. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक मेरी उम्मत के लोगों को कियामत के दिन बुलाया जाएगा, तो वुज़ू के निशानात की वजह से उन के हाथ पाँव और पेशानी चमकती होगी, पस तुम में से जो शख़्स अपने चमक को बढ़ाना चाहे तो वह बढ़ा ले"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (136) و مسلم (35 / 246)، (580)

٢٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَبْلُغُ الْحِلْيَةُ مِنَ الْمُؤْمِنَ حَيْثُ يبلغ الْوضُوء» . رَوَاهُ مُسلم

291. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन का ज़ेवर वहां तक होगा जहाँ तक उस के वुज़ू का पानी पहुँचता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (40 / 250)، (586)

पाकीज़गी का बयान • كتاب الطَّهَارَة
दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٩٢ - (صَحِيح) عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَقِيمُوا وَلَنْ تُحْصُوا وَاعْلَمُوا أَنَّ خَيْرَ أَعْمَالِكُمُ الصَّلَاةُ وَلَا يُحَافِظُ عَلَى الْوُضُوءِ إِلَّا مُؤْمِنٌ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

292. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुरुस्त रहो, और तुम उसकी ताकत नहीं रखते, और जान लो के नमाज़ तुम्हारा बेहतरीन अमल है, और वुज़ू की हिफाज़त सिर्फ मोमिन शख़्स ही कर सकता है”| (हसन)

حسن ، رواہ مالک (فی الموطا 1 / 34 ح 65) و احمد (5 / 280 ح 22778) و ابن ماجه (277) و الدارمی (1 / 169 ح 661) [و صححه الحاکم (1 / 130 ح 449) علی شرط الشیخین و و افقه الذهبی]

٢٩٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ عَلَى طُهْرٍ كُتِبَ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

293. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वुज़ू होने के बावजूद वुज़ू करे तो उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (59 وقال : اسنادہ ضعیف) [و ابوداؤد : 62] * عبد الرحمن بن زیاد الافریقی ضعیف (تقدم : 239)

पाकीज़गी का बयान • كتاب الطَّهَارَة
तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٩٤ - (ضَعِيف) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِفْتَاحُ الْجَنَّةِ الصَّلَاةُ وَمِفْتَاحُ الصَّلَاة الطّهُور» . رَوَاهُ أَحْمد

294. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत की चाबी नमाज़ है और नमाज़ की चाबी तहारत (वुज़ू) है”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (3 / 340 ح 14717) [و الترمذی (4)] * سلیمان بن قرم هو سلیمان بن معاذ ضعیف و ابو یحیی القتات لین الحدیث

٢٩٥ - (ضَعِيف) وَعَن شبيب بن أبي روح عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى صَلَاةَ الصُّبْحِ فَقَرَأَ الرُّومَ فَالْتَبَسَ عَلَيْهِ فَلَمَّا صَلَّى قَالَ: «مَا بَالُ أَقْوَامٍ يُصَلُّونَ مَعَنَا لَا يُحْسِنُونَ الطُّهُورَ فَإِنَّمَا يلبس علينا الْقُرْآن أُولَئِكَ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

295. शबिब बिन अबी रुहा, रसूलुल्लाह ﷺ के किसी सहाबी से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए फज़र अदा की तो सूरत उल रोम की तिलावत फरमाई, आप भूल गए, जब आप ﷺ नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया: “लोगो को क्या हो गया है के वह हमारे साथ नमाज़ पढ़ते है लेकिन वह अच्छी तरह वुज़ू नहीं करते, यही लोग तो हमें कुरान भुला देते है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (2 / 156 ح 948) * عبدالملک بن عمیر : صرح بالسماع عند احمد (3 / 471 ح 15968)

٢٩٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ قَالَ: عَدَّهُنَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي يَدِي أَوْ فِي يَدِهِ قَالَ: «التَّسْبِيحُ نِصْفُ الْمِيزَانِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ يَمْلَؤُهُ وَالتَّكْبِيرُ يَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَالصَّوْمُ نِصْفُ الصَّبْرِ وَالطُّهُورُ نِصْفُ الْإِيمَانِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

296. बनू सलीम के एक आदमी से रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें मेरे हाथ पर या अपने हाथ पर शुमार किया, फ़रमाया: “(سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहना आधा मीज़ान है, और (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहना इसे भर देता है. और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर ज़मीन व आसमान के दरमियान को भर देता है. रोज़ा आधा सब्र है जबकि तहारत आधा ईमान है”| तिरमिज़ी और इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस को हसन कहा है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3519) * جری بن کلیب : حسن الحدیث ، فثقه العجلی المعتدل و ابن حبان (4 / 117) و الترمذی (وغیرهم و تکلم فیه ابو حاتم الرازی وقال ابن المدینی :’’ مجهول ‘‘ و توثیقه هو الراجح

٢٩٧ - (صَحِيح) عَن عبد الله الصنابحِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «إِذَا تَوَضَّأَ ص:٩ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ فَمَضْمَضَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ فِيهِ وَإِذَا اسْتَنْثَرَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ أَنفه فَإِذَا غَسَلَ وَجْهَهُ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ وَجْهِهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَشْفَارِ عَيْنَيْهِ فَإِذَا غسل يَدَيْهِ خرجت الْخَطَايَا مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِ يَدَيْهِ فَإِذَا مَسَحَ بِرَأْسِهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رَأْسِهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ أُذُنَيْهِ فَإِذَا غَسَلَ رِجْلَيْهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رِجْلَيْهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِ رِجْلَيْهِ ثُمَّ كَانَ مَشْيُهُ إِلَى الْمَسْجِدِ وَصَلَاتُهُ نَافِلَةً لَهُ» . رَوَاهُ مَالك وَالنَّسَائِيّ

297. अब्दुल्लाह सुनाबिह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बंदा मोमिन वुज़ू करता है और कुल्ली करता है तो खताए उस के मुंह से निकल जाती है, जब नाक झाड़ता है तो खताए उसकी नाक से निकल जाती है, जब अपना चेहरा धोता है तो खताए उस के चेहरे से निकल जाती है, हत्ता कि उसकी आंखो की पलकों के नीचे से भी निकल जाती है, चुनांचे जब वह अपने हाथ धोता है तो खताए उस के हाथो से निकल जाती है, हत्ता कि उस के हाथो के नाख़ून के नीचे से निकल जाती है, चुनांचे जब वह अपने सर का मसाह करता है तो खताए उस के सर से हत्ता कि उस के कानों से निकल जाती है, जब वह अपने पाँव धोता है तो खताए

उस के पाँव हत्ता कि पाँव के नाख़ून के नीचे से निकल जाती है, फिर उस का मस्जिद की तरफ चलना और उसकी नमाज़ उस के लिए इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हो जाती है"| (सहीह)

صحيح ، رواه مالك (1 / 31 ح 59) و النسائى (1 / 74 ، 75 ح 103)

٢٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم أَتَى الْمَقْبَرَةَ فَقَالَ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ وَدِدْتُ أَنَّا قَدْ رَأَيْنَا إِخْوَانَنَا قَالُوا أَوَلَسْنَا إِخْوَانَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ أَنْتُمْ أَصْحَابِي وَإِخْوَانُنَا الَّذِينَ لَمْ يَأْتُوا بَعْدُ فَقَالُوا كَيْفَ تَعْرِفُ مَنْ لَمْ يَأْتِ بَعْدُ مِنْ أُمَّتِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ رَجُلًا لَهُ خَيْلٌ غُرٌّ مُحَجَّلَةٌ بَيْنَ ظَهْرَيْ خَيْلٍ دُهْمٍ بُهْمٍ أَلَا يَعْرِفُ خَيْلَهُ قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ فَإِنَّهُمْ يَأْتُونَ غُرًّا مُحَجَّلِينَ مِنَ الْوُضُوءِ وَأَنَا فَرَطُهُمْ عَلَى الْحَوْض» . رَوَاهُ مُسلم

298. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ कब्रिस्तान तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: "उन घरो के रहने वाले मोमिनो तुम पर सलामती हो, अगर अल्लाह ने चाहा तो हम भी यक़ीनन तुम्हारे पास पहुँचने वाले हैं", मेरी ख्वाहिश थी के हम अपने भाइयो को देखते", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम आप के भाई नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम मेरे साथी हो, और हमारे भाई वह हैं जो अभी नहीं आए", सहाबा ने फिर अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप अपनी उम्मत के उन लोगों को कैसे पहचानेंगे जो अभी नहीं आए और वह बाद में आएंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे बताओ, अगर किसी शख़्स का सफ़ेद टांगो और सफ़ेद पेशानी वाला घोड़ा, सियाह घोड़ो में हो तो क्या यह अपने घोड़े को नहीं पहचानेगा ?" सहाबा ने अर्ज़ किया: क्यों नहीं! अल्लाह के रसूल! ज़रूर पहचान लेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: "पस वह आएँगे तो वुज़ू की वजह से उन के हाथ पाँव और पेशानी चमकती होगी जबकि मैं होज़े कौसर पर उनका पेशरो होऊंगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (39 / 249)، (584)

٢٩٩ - (صَحِيح) عَن أبي الدَّرْدَاء قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (أَنَا أَوَّلُ مَنْ يُؤْذَنُ لَهُ بِالسُّجُودِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَنَا أَوَّلُ مَنْ يُؤْذَنُ لَهُ أَنْ يرفع رَأسه فَأَنْظر إِلَى بَيْنَ يَدِي فَأَعْرِفُ أُمَّتِي مِنْ بَيْنِ الْأُمَمِ وَمِنْ خَلْفِي مِثْلُ ذَلِكَ وَعَنْ يَمِينِي مِثْلُ ذَلِك وَعَن شمَالي مثل ذَلِك ". فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَعْرِفُ أُمَّتَكَ مِنْ بَيْنِ الْأُمَمِ ص:٩ فِيمَا بَيْنَ نُوحٍ إِلَى أُمَّتِكَ؟ قَالَ: «هُمْ غُرٌّ مُحَجَّلُونَ مِنْ أَثَرِ الْوُضُوءِ لَيْسَ أَحَدٌ كَذَلِكَ غَيْرَهُمْ وَأَعْرِفُهُمْ أَنَّهُمْ يُؤْتونَ كتبهمْ بأيمانهم وأعرفهم يسْعَى بَين أَيْديهم ذُرِّيتهمْ» . رَوَاهُ أَحْمد

299. अबू दरदा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत सबसे पहले मुझे सजदाह करने की इजाज़त दी जाएगी और सबसे पहले मुझे सजदे से सर उठाने की इजाज़त दी जाएगी, पस मैं अपने सामने देखूंगा तो तमाम उम्मतो में से अपनीउम्मत पहचान लूँगा, और इसी तरह अपने पीछे, इसी तरह अपने दाएँ और इसी तरह अपने बाएँ तरफ, तो किसी शख़्स ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप तमाम उम्मतो में से अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे जबकि नूह अलैहिस्सलाम से लेकर आप की उम्मत तक कितनी उम्मते है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "वुज़ू के निशानात की वजह से उन के हाथ पाँव और पेशानी चमकती होगी, उन के अलावा कोई और

ऐसा नहीं होगा और मैं उन्हें इसलिए भी पहचान लूँगा के उन्हें उनका नाम ए आमाल दाएँ हाथ में दीया जाएगा और मैं उन्हें पहचान एक और अलामत से भी पहचान लूँगा के उनकी औलाद उन के आगे दोड़ रही होगी”। (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 199 ح 22080) [و سنده حسن ، ابن لهيعة صرح بالسماع و للحديث شواهد كثيرة]

بَاب مَا يُوجب الْوضُوء • वुज़ू के वाजिब होने के अस्बाब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقْبَلُ صَلَاةُ مَنْ أَحْدَثَ حَتَّى يتَوَضَّأ»

300. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स का वुज़ू टूट जाए, तो जब तक वह वुज़ू न करे उसकी नमाज़ कबूल नहीं होती”। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (135) و مسلم (2 / 225)، (537)

٣٠١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقْبَلُ صَلَاةٌ بِغَيْرِ طُهُورٍ وَلَا صَدَقَةٌ مِنْ غُلُولٍ» . رَوَاهُ مُسلم

301. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वुज़ू के बगैर ना नमाज़ कबूल की जाती है न माल ए हराम से सदका”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (2 / 224)، (535)

٣٠٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَليّ قَالَ: كُنْتُ رَجُلًا مَذَّاءً فَكُنْتُ أَسْتَحْيِي أَنْ أَسْأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَكَانِ ابْنَتِهِ فَأَمَرْتُ الْمِقْدَادَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ: «يَغْسِلُ ذَكَرَهُ وَيتَوَضَّأ»

302. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुझे कसरत से मज़ी आती थी, लेकिन में नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त करते हुए शरम महसूस करता था, क्योंकि आप मेरे सुसर थे, पस मैंने मिकदाद रदियल्लाहु अन्हु से कहा तो उन्होंने आप से दरियाफ्त किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो शर्मगाह धोए और वुज़ू करे”। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (269) و مسلم (17 / 303)، (695)

٣٠٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «توضؤوا مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَام الْأَجَل محيي السّنة C: هَذَا مَنْسُوخ بِحَدِيث ابْن عَبَّاس:

303. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आग पर पकी हुई चीज़ खाने पर वुज़ू करो”, अल शैख़ अल इमाम अल अजली मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: मज़कुरह बाला हदीस इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस की वजह से मंसूख है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (90 / 352)، (788) * قول محيى السنة فى مصابيح السنة (205)

٣٠٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكَلَ كَتِفَ شَاةٍ ثُمَّ صلى وَلم يتَوَضَّأ

304. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया के रसूलुल्लाह ﷺ ने बकरी के शाने का गोश्त खाया, फिर आप ﷺ ने नमाज़ पढ़ी और (नया) वुज़ू न किया | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (207) و مسلم (91 / 354)، (790)

٣٠٥ - (صَحِيح) وَعَن جَابر بن سَمُرَة أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُومِ الْغَنَمِ؟ قَالَ: «إِنْ شِئْتَ فَتَوَضَّأْ وَإِنْ شِئْتَ فَلَا تَتَوَضَّأْ» . قَالَ أَنَتَوَضَّأُ مِنْ لُحُومِ الْإِبِلِ؟ قَالَ: «نَعَمْ فَتَوَضَّأْ مِنْ لُحُومِ الْإِبِلِ» قَالَ: أُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ قَالَ: «نَعَمْ» قَالَ: أُصَلِّي فِي مبارك الْإِبِلِ؟ قَالَ: «لَا» . رَوَاهُ مُسلم

305. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया: क्या हम बकरी का गोश्त खा कर वुज़ू करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम चाहो वुज़ू करो और अगर चाहो तो न करो”, उस ने फिर दरियाफ्त किया: क्या हम ऊंट का गोश्त खा कर वुज़ू करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ऊंट का गोश्त खा कर वुज़ू कर”, इस शख़्स ने पूछा क्या बकरियों के बाड़े में नमाज़ पढ़ लु? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, उस ने पूछा ऊटों के बाड़े में नमाज़ पढ़ु? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (97 / 360)، (802)

٣٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وَجَدَ أَحَدُكُمْ فِي بَطْنِهِ شَيْئًا فَأَشْكَلَ عَلَيْهِ أَخَرَجَ مِنْهُ شَيْءٌ أَمْ لَا فَلَا يَخْرُجَنَّ مِنَ الْمَسْجِدِ حَتَّى يَسْمَعَ صَوْتًا أَوْ يَجِدَ رِيحًا» . رَوَاهُ مُسلم

306. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स अपने पेट में कुछ गड़बड़ महसूस करे और उस पर मुआमला मुश्तबाह हो जाए के आया उस से कोई चीज़ निकली है या नहीं तो वह मस्जिद से न निकले हत्ता कि वह कोई आवाज़ सुन ले या बदबू महसूस करले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 362)، (805)

٣٠٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَرِبَ لَبَنًا فَمَضْمَضَ وَقَالَ: «إِنَّ لَهُ دسما»

307. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, के रसूलुल्लाह ﷺ ने दूध पिया तो कुल्ली की और फ़रमाया: “उस में चिकनाहट होती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (211) و مسلم (95 / 358)، (798)

٣٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الصَّلَوَات يَوْم الْفَتْح بِوضُوء وَاحِد وَمسح عل خُفَّيْهِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: لَقَدْ صَنَعْتَ الْيَوْمَ شَيْئًا لَمْ تَكُنْ تَصْنَعُهُ فَقَالَ: «عَمْدًا صَنَعْتُهُ يَا عمر» . رَوَاهُ مُسلم

308. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फतह मक्का के रोज़ एक वुज़ू से (मूतअद्दद) नमाज़े पढ़ाइ और मोज़ो पर मसाह किया, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, आप ने इस तरह पहले तो कभी नहीं किया था? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमर मैंने जान बुझकर ऐसे किया है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (86 / 277)، (642)

٣٠٩ - (صَحِيح) وَعَن سُوَيْد ابْن النُّعْمَان: أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ خَيْبَرَ حَتَّى إِذَا كَانُوا بالصهباء وَهِيَ أَدْنَى خَيْبَرَ صَلَّى الْعَصْرَ ثُمَّ دَعَا بِالْأَزْوَادِ فَلَمْ يُؤْتَ إِلَّا بِالسَّوِيقِ فَأَمَرَ بِهِ فَثُرِيَ فَأَكَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:١٠ وَأَكَلْنَا ثُمَّ قَامَ إِلَى الْمَغْرِبِ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا ثمَّ صلى وَلم يتَوَضَّأ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

309. सुवैद बिन नुअमान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के गजवा ए खैबर के मौके पर वह रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुए, हत्ता कि खैबर के ज़रीर इलाके सहबा पर पहुंचे तो आप ﷺ ने नमाज़ ए असर अदा की, फिर आप ने नाश्ता तलब किया तो सिर्फ सत्तू आप की खिदमत में पेश किए गए, आप के फरमान के मुताबिक उन्हें भिगो दिया गया तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने और हमने इसे खाया, फिर आप नमाज़ ए मग़रिब के लिए खड़े हुए तो कुल्ली की और हमने भी कुल्ली की फिर आप ने नमाज़ पढ़ी और नया वुज़ू न फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخارى (209)

वुज़ू के वाजिब होने के अस्बाब का बयान • بَاب مَا يُوجب الْوضُوء

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٣١٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا وُضُوءَ إِلَّا مِنْ صَوْتٍ أَوْ رِيحٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

310. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आवाज़ या बदबू (महसूस होने) की सूरत में वुज़ू वाजिब होता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 41 ح 9301) و الترمذی (74 وقال : حسن صحیح) [و ابن ماجه : 515]

٣١١ - (صَحِيح) وَعَن عَلِيٍّ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الْمَذْيِ فَقَالَ: «مِنَ الْمَذْيِ الْوُضُوءُ وَمِنَ الْمَنِيِّ الْغسْل» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

311. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने मज़ी के मुतल्लिक नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मज़ी से वुज़ू और मनी से ग़ुस्ल वाजिब होता है”| (ज़ईफ़,हसन,मुस्लिम)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (114 وقال : حسن صحیح) [و ابن ماجه : 504] * یزید بن ابی زیاد ضعیف مدلس مختلط و حدیث ابی داود (210) و البخاری (132 ، 269) و مسلم (303)، (697) یغنی عنه

٣١٢ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مِفْتَاحُ الصَّلَاةِ الطُّهُورُ وَتَحْرِيمُهَا التَّكْبِيرُ وَتَحْلِيلُهَا التَّسْلِيمُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ والدارمي

312. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तहारत नमाज़ की चाबी तकबीर (اللَّهُ أَكْبَرُ), उसकी तहरिमा (इस तकबीर से नमाज़ शुरू करने से पहले जो काम मुबाह थे वह हराम हो जाते हैं) और तस्लीम (السلام علیکم ورحمة الله) उसकी तहलील है”| (यानी सलाम फेरने से नमाज़ की सूरत में हराम होने वाले काम हलाल हो जाते हैं) | (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (61) و الترمذی (3) و الدارمی (1 / 175 ح 693) [و ابن ماجه (275)] * و للحدیث شاھد موقوف عند البیھقی (2 / 16) و سنده صحیح وله حکم الرفع فالحدیث به حسن

٣١٣ - (حسن) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْهُ وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ

313. इब्ने माजा ने अली रदियल्लाहु अन्हु और अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (276) [و انظر الحدیث السابق : 312]

٣١٤ - (حسن) وَعَن عَليّ بن طلق قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا فسا أحدكُم فَليَتَوَضَّأ وَلَا تأتو النِّسَاءَ فِي أَعْجَازِهِنَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

314. अली बिन तलक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में कोई आवाज़ के बगैर हवा ख़ारिज करे तो वह वुज़ू करे और तुम औरतो से उनकी पीठ में मुजामअत न करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1164 وقال : حسن) و ابوداؤد (205) [و صححه ابن حبان (الموارد : 203)]

٣١٥ - (حسن لغيره) وَعَن مُعَاوِيَة بن أبي سُفْيَان أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ: «إِنَّمَا الْعَيْنَانِ وِكَاءُ السَّهِ فَإِذَا نَامَتِ الْعَيْنُ اسْتَطْلَقَ الوكاء» . رَوَاهُ الدِّرَامِي

315. मुआविया बिन अबी सुफियान रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “आँखे दुबर का तस्मिया है, जब आँखे सो जाती हैं, तो तस्मिया खुल जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الدارمی (1 / 184 ح 728) * ابوبکر بن ابی مریم ضعیف و فی السند علة أخرى

٣١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وِكَاءُ السَّهِ الْعَيْنَانِ فَمَنْ نَامَ فَلْيَتَوَضَّأ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد»» قَالَ الشَّيْخ الإِمَام محيي السّنة C: هَذَا فِي غير الْقَاعِد لما صَحَّ:

316. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पीठ का तस्मिया दोनों आँखे, पस जो शख़्स सो जाए तो वह वुज़ू करे”| अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: सहीह हदीस की रोशनी में यह हुक्म लेट कर सोने वाले शख़्स के लिए है, (बेठेबैठे सो जाने वाले के लिए नहीं है) | (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (203) [و ابن ماجه : 477] عبد الرحمن بن عائذ عن علی رضی الله عنه مرسل (ای منقطع) و حدیث صفوان بن عسال (ت 96) يغنى عنه

٣١٧ - (صَحِيح) عَن أنس قَالَ: كَانَ أَصَابَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْتَظِرُونَ الْعشَاء حَتَّى تخفق رؤوسهم ثمَّ يصلونَ وَلَا يتوضؤون. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ إِلَّا ص:١٠ أَنه ذكرفيه: ينامون بدل: ينتظرون الْعشَاء حَتَّى تخفق رؤوسهم

317. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम नमाज़ ए ईशा का इंतज़ार करते रहते हत्ता कि (नींद की वजह से) उन के सर झुक जाते, फिर वह नमाज़ पढ़ते लेकिन वह (नया) वुज़ू न करते, अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने रिवायत में इंतज़ार के बदले सो जाने का ज़िक्र किया है, के वह ईशा के वक़्त बैठें बैठे सो जाते हत्ता कि उन के सर झुक जाते| (सहीह,मुस्लिम)

صحیح ، رواه ابوداؤد (200) و الترمذی (78 وقال : حسن صحيح) [و رواه مسلم : 376، (835) مختصرًا] * زيادة ’’ تخفقرؤسهم ‘‘ غريبة ،

٣١٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ الْوُضُوءَ عَلَى مَنْ نَامَ مُضْطَجِعًا فَإِنَّهُ إِذَا اضْطَجَعَ اسْتَرْخَتْ مفاصله. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

318. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक जो शख़्स चित्ता लेट कर सो जाए, उस पर वुज़ू करना लाज़िम है, क्योंकि जब वह चित्ता लेट जाता है तो उस के जोड़ ढीले हो जाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (77 و اعله) و ابوداؤد (202 وقال : هو حديث منكر) * ابو خالد الدالانی مدلس و عنعن

٣١٩ - (صَحِيح) وَعَن بسرة قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَسَّ أَحَدُكُمْ ذَكَرَهُ فَلْيَتَوَضَّأْ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه والدارمي

319. बूसराह रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई अपने शर्मगाह को हाथ लगाए तो वह वुज़ू करे”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 42 ح 88) و احمد (6 / 406 ، 407 ح 2783627838) و ابوداؤد (181) و الترمذی (82 و صححه) و النسائی (1 / 100 ح 163) و ابن ماجه (479) و الدارمی (1 / 184 ح 730) * و تکلم بعض الناس فی ھذا الحديث بكلام باطل

٣٢٠ - (صَحِيح) وَعَن طلق بن عَلِيّ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ مَسِّ الرَّجُلِ ذَكَرَهُ بَعْدَمَا يَتَوَضَّأُ. قَالَ: «وَهَلْ هُوَ إِلَّا بَضْعَةٌ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ نَحوه ص:١٠»» قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحْيِي السُّنَّةِ رَحِمَهُ اللَّهُ: هَذَا مَنْسُوخٌ لِأَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَسْلَمَ بَعْدَ قدوم طلق

320. तलक बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आदमी के वुज़ू कर लेने के बाद अपने शर्मगाह को हाथ लगाने के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया गया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो शर्मगाह भी उस के गोश्त का एक टुकड़ा है”| अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह मंसूख है, क्योंकि अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु तलक रदियल्लाहु अन्हु की आमद के बाद मुसलमान हुए| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (182) و الترمذی (85) و النسائی (1 / 101 ح 165) و ابن ماجه (483) * كلام محيی السنة فی مصابيح السنة (221)

٣٢١ - (ضَعِيف) وَقد روى أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَفْضَى أَحَدُكُمْ بِيَدِهِ إِلَى ذَكَرِهِ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا شَيْءٌ فَلْيَتَوَضَّأْ» . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ والدراقطني

321. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की सनद से रसूलुल्लाह ﷺ से मरवी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से

कोई शख़्स अपना हाथ अपने शर्मगाह को लगाए जबकि इस (हाथ) और इस (शर्मगाह) के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो तो वह वुज़ू करे"| (हसन)

حسن ، رواه الشافعی فی الام (1 / 19) و الدارقطنی (1 / 147 ح 525) و ابن حبان (الاحسان : 1115) و الطبرانی فی الصغیر بلفظ : اذا افضی احدکم بیده الی فرجه ولیس بینهما ستر ولا حجاب فلیتوضأ ، (1 / 42 ح 103) اللفظ لابن حبان و سنده حسنو انظر المستدرک (1 / 138 تحت ح 479) * فیه یزید بن عبدالملک النوفلی وهو ضعیف ولکن تابعه نافع بن ابی نعیم القاری وهو حسن الحدیث فالحدیث حسن ، و رواه النسائی (1 / 100 ح 163) نحوالمعنی عن مروان موقوفًا و سنده صحیح فائدة : حدیث طلق رضی الله عنه محمول علی مس الذکر من غیر ستر ولا حجاب

٣٢٢ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْ بُسْرَةَ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يذكر: «لَيْسَ بَينه بَينهَا شَيْء»

322. इमाम नसई ने इसे बूसराह रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है, अलबत्ता उन्होंने यह ज़िक्र नहीं किया, "उस के और उस के माबिन कोई चीज़ हाइल न हो"| (मझे नहीं मिली रवाह नसई (मुझे नहीं मिली इन अल्फाज़ के साथ और वो बातिल है) देखिए ह 319)

لم اجده ، رواه النسائی (لم اجده بهذا اللفظ وهو باطل) و انظر ح 319

٣٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَبِّلُ بَعْضَ أَزْوَاجِهِ ثُمَّ يُصَلِّي وَلَا يَتَوَضَّأُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: لَا يَصِحُّ عِنْدَ أَصْحَابِنَا بِحَالٍ إِسْنَادُ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ وَأَيْضًا إِسْنَادُ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْهَا»» وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا مُرْسل وَإِبْرَاهِيم التَّيْمِيّ لم يسمع من عَائِشَة

323. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ अपने किसी ज़ौजा ए मोहतरमा का बोसा ले लिया करते थे, फिर आप नमाज़ पढ़ते और वुज़ू नहीं करते थे, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उरवा अन आइशा रदियल्लाहु अन्हा और इब्राहीम अत्तमी अन आइशा रदियल्लाहु अन्हा की सनद से यह हदीस हमारे असहाब के यहाँ सहीह नहीं, और अबू दावुद रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस मुरसल है और इब्राहीम अत्तमी ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से नहीं सुना| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابوداؤد (178 ، ابراهیم التیمی لم یسمع من عائشة رضی الله عنها 179 ، الاعمش و حبیب بن ابی ثابت مدلسان و حبیب لم یسمعه من عروة فالسند معلول) و الترمذی (86 ، الاعمش و حبیب عنعنا) و النسائی (1 / 104 ح 170 ، ابراهیم التیمی عن عائشة منقطع) و ابن ماجه (502 ، الاعمش و حبیب عنعنا) * و للحدیث شاهد ضعیف عند الدار قطنی (1 / 137 ح 486) و البزار (انظر نصب الرایة 1 / 171) حدیث عبد الکریم بن مالک الجزری عن عطاء حدیث ردی فالسند ضعیف ، و له شاهد آخر عند الدارقطنی (1 / 136 ح 482) فیه حاجب بن سلیمان ، قال الدارقطنی : تفرد به حاجب عن وکیع و وهم فیه

٣٢٤ - (حسن) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: أَكَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتِفًا ثُمَّ مَسَحَ ص:١٠ يَده بِمِسْحٍ كَانَ تَحْتَهُ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه وَأحمد

324. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दस्ती का गोश्त खाया फिर अपने नीचे

बिछी हुई चादर से अपना हाथ साफ़ किया फिर खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (189) و ابن ماجه (488) * سماک عن عكرمة سلسلة ضعيفة

٣٢٥ - (صَحِيح) وَعَن أم سَلمَة أَنَّهَا قَالَتْ: قَرَّبْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَنْبًا مَشْوِيًّا فَأَكَلَ مِنْهُ ثُمَّ قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. رَوَاهُ أَحْمَدُ

325. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने भुनी हुई पसली (चांप) नबी ﷺ की खिदमत में पेश की तो आप ﷺ ने उस में से तनावुल फ़रमाया, फिर नमाज़ के लिए उठे और वुज़ू नहीं किया| (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه احمد (6 / 307 ح 27157) [و الترمذی (1829 وقال : حسن صحيح غريب) و النسائی الکبری (4690)]

बَاب مَا يُوجب الْوضُوء • वुज़ू के वाजिब होने के अस्बाब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٦ - (صَحِيح) عَن أبي رَافع قَالَ: أَشْهَدُ لَقَدْ كُنْتُ أَشْوِي لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَطْنَ الشَّاةِ ثُمَّ صلى وَلم يتَوَضَّأ. رَوَاهُ مُسلم

326. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं गवाही देता हूँ कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के लिए बकरी की कलेजी और दिल वगैरा भुना करता था, (आप ने इसे खाया) फिर नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं किया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (94 / 357)، (797)

٣٢٧ - (ضَعِيف) وَعَنْهُ قَالَ: أَهْدِيَتْ لَهُ شَاةٌ فَجَعَلَهَا فِي الْقِدْرِ فَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ مَا هَذَا يَا أَبَا رَافِعٍ فَقَالَ شَاةٌ أُهْدِيَتْ لَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَطَبَخْتُهَا فِي الْقِدْرِ قَالَ نَاوِلْنِي الذِّرَاعَ يَا أَبَا رَافِعٍ فَنَاوَلْتُهُ الذِّرَاعَ ثُمَّ قَالَ نَاوِلْنِي الذِّرَاعَ الْآخَرَ فَنَاوَلْتُهُ الذِّرَاعَ الْآخَرَ ثُمَّ قَالَ ناولني الذِّرَاع الآخر فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّمَا لِلشَّاةِ ذِرَاعَانِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَا إِنَّكَ لَوْ سَكَتَّ لَنَاوَلْتَنِي ذِرَاعًا فَذِرَاعًا مَا سَكَتُّ ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَتَمَضْمَضَ فَاهُ وَغَسَلَ أَطْرَافَ أَصَابِعِهِ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى ثُمَّ عَادَ إِلَيْهِمْ فَوَجَدَ عِنْدَهُمْ لَحْمًا بَارِدًا فَأَكَلَ ثُمَّ دَخَلَ ص:١٠ الْمَسْجِدَ فَصَلَّى وَلَمْ يَمَسَّ مَاءً. رَوَاهُ أَحْمد

327. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उन्हें एक बकरी हदिया के तौर पर दी गई, तो उन्होंने इसे हंडिया में डाल दिया, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “अबी राफीअ! यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! एक बकरी हमें बतौर हदिया दी गई थी तो मैंने इसे हंडिया में पकाया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबी राफीअ मुझे दस्ती दो”, मैंने दस्ती आप को दे दी, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे दूसरी दस्ती दो”, मैंने

दूसरी दस्ती भी आप को दे दी, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे और दस्ती दो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बकरी की सिर्फ दो दस्तियाँ होती है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अगर तुम ख़ामोश रहते और जब तक ख़ामोश रहते तो मुझे एक बाद दीगर दस्ती मिलती रहती”, फिर आप ने पानी मंगवाया, कुल्ली की और अपने उंगलियों के किनारे धोए, फिर खड़े हुए तो नमाज़ पढ़ी, फिर दोबारा उन के पास तशरीफ़ लाए, तो उन के वहां ठंडा गोश्त पाया तो उसे खाया, फिर आप मस्जिद में तशरीफ़ ले गए तो नमाज़ पढ़ी, और पानी को हाथ तक न लगाया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (6 / 392 ح 27737) * شرجیل بن سعد .: ضعیف ضعفه الجمھور و انظر الحدیث الآتی (328)

٣٢٨ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ إِلَى آخِرِهِ

328. दारमी ने अबू उबैदा से रिवायत किया है, लेकिन उन्होंने: “फिर पानी मंगवाया”, से आख़िर तक ज़िक्र नहीं किया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الدارمی (1 / 22 ح 45) [و احمد (3 / 484 ، 485 ح 16063) و الترمذی فی الشمائل (168)] * فیه قتادۃ مدلس و عنعن و انظر الحدیث السابق (327)

٣٢٩ - (جيد الْإِسْنَاد) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأَبِي وَأَبُو طَلْحَةَ جُلُوسًا فَأَكَلْنَا لَحْمًا وَخُبْزًا ثُمَّ دَعَوْتُ بِوَضُوءٍ فَقَالَا لِمَ تَتَوَضَّأُ فَقُلْتُ لِهَذَا الطَّعَامِ الَّذِي أَكَلْنَا فَقَالَا أَتَتَوَضَّأُ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَمْ يَتَوَضَّأْ مِنْهُ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْك. رَوَاهُ أَحْمد

329. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं उबई बिन काब और अबू तल्हा (र)बैठे हुए थे, पस हमने गोश्त रोटी खाई, फिर मैंने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया, तो इन दोनों ने कहा; तुम वुज़ू क्यों करते हो? मैंने कहा इस खाने की वजह से जो हमने खाया है, तो उन्होंने कहा: क्या तुम पाकिज़ा चीजों से वुज़ू करते हो? यह चीज़े खा कर तो इस शख्शियत (यानी नबी ﷺ) ने वुज़ू नहीं किया जो तुम से बेहतर है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (4 / 30 ح 16479)

٣٣٠ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر كَانَ يَقُولُ: قُبْلَةُ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ وَجَسُّهَا بِيَدِهِ مِنَ الْمُلَامَسَةِ. وَمَنْ قَبَّلَ امْرَأَتَهُ أَوْ جَسَّهَا بِيَدِهِ فَعَلَيهِ الْوضُوء. رَوَاهُ مَالك وَالشَّافِعِيّ

330. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा कहा करते थे: आदमी का अपने अहलिया का बोसा लेना और इसे अपने हाथ से छुना मलामस के ज़िमरे में है और जो शख़्स अपने अहलिया का बोसा ले या इसे अपने हाथ से छुए तो उस पर वुज़ू करना लाज़िम है | (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک فی الموطا (1 / 43 ح 93) و الشافعی فی الام (1 / 15)

٣٣١ - (صَحِيح) وَعَن ابْن مَسْعُود كَانَ يَقُولُ: مِنْ قُبْلَةِ الرَّجُلِ امْرَأَتَهُ الْوُضُوءُ. رَوَاهُ مَالك

331. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे: अपनी अहलिया का बोसा लेने से वुज़ू करना ज़रूरी है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک فی الموطا (1 / 44 ح 94) * و اخرجه البیھقی (1 / 124) بسند حسن عن ابن مسعود به وللاثر طرق

٣٣٢ - (ضَعِيف) وَعَن ابْن عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِن الْقبْلَة من اللَّمْس فتوضؤوا مِنْهَا

332. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: बेशक बोसा लेना, लम्स के ज़िमरे में आता है, पस इस वजह से वुज़ू करो| (ज़ईफ़)

ضعیف رواہ الدارقطنی (1 / 144) * الزھری مدلس و عنعن و فیه آخری و الصواب انه من قول ابن عمر کما رواہ مالک عن نافع عنه به ، انظر الحدیث السابق (330)

٣٣٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ تَمِيمِ الدَّارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوُضُوءُ مِنْ كُلِّ دَمٍ سَائِلٍ» . رَوَاهُمَا الدَّارَقُطْنِيُّ وَقَالَ: عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ لَمْ يَسْمَعْ مِنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ وَلَا رَآهُ وَيَزِيدُ بن خَالِد وَيزِيد بن مُحَمَّد مَجْهُولَانِ

333. उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर किस्म के बहते खून की वजह से वुज़ू करना ज़रूरी है”| दोनों हदीसो को दार कुतनी ने रिवायत किया, और उन्होंने कहा: उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह ने तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु से ना सुना है न उन्हें देखा, जबकि यज़ीद बिन खालिद और यज़ीद बिन मुहम्मद दोनों मजहूल है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الدارقطنی (1 / 157 ح 571) * بقیة مدلس و عنعن و زبیزید بن خالد و یزید بن محمد مجھولان و فیه علل أخری

بَاب آدَاب الْخَلَاء • कज़ा ए हाजत के आदाब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَتَيْتُمُ الْغَائِطَ فَلَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ وَلَا تَسْتَدْبِرُوهَا وَلَكِنْ شَرِّقُوا أَوْ غَرِّبُوا»»» قَالَ الشَّيْخ الإِمَام محيي السّنة C: هَذَا الْحَدِيثُ فِي الصَّحْرَاءِ وَأَمَّا فِي الْبُنْيَانِ فَلَا بَأْس لما رُوِيَ:

334. अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम कजाए हाजत के लिए जाओ तो ना किब्ले की तरफ मुंह करो न पुश्त, बल्कि मशरिक या मग़रिब की तरफ मुंह करो”| # अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी (रह) ने फ़रमाया(मह्यी अल सुन्नत फी मासाबिह 226): यह हदीस सहराअ के बारे में है, रहा इमारत वगैरा में कजाए हाजत करना तो उसमें कोई हरज नहीं जैसा के अब्दुल्लाह बिन उमर (र अ) से मरवी है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (394) و مسلم (59 / 264)، (609) * قول محی السنة فی مصابیح السنة (226)

٣٣٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عبد الله بن عمر قَالَ: ارْتَقَيْتُ فَوْقَ بَيْتِ حَفْصَةَ لِبَعْضِ حَاجَتِي فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْضِي حَاجته مستدبر الْقبْلَة مُسْتَقْبل الشَّام

335. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं अपने किसी ज़रूरत के तहत उम्मुल मुअमिनिन हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा के घर की छत पर चढ़ा तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को किब्ले की तरफ पुश्त और शाम की तरफ मुंह कर के कजाए हाजत करते हुए देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (148) و مسلم (62 / 266)، (612)

٣٣٦ - (صَحِيح) وَعَن سلمَان قَالَ: نَهَانَا يَعْنِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةَ لِغَائِطٍ أَوْ بَوْل أَو أَن نستنتجي بِالْيَمِينِ أَوْ أَنْ نَسْتَنْجِيَ بِأَقَلَّ مِنْ ثَلَاثَةِ أَحْجَارٍ أَوْ ص:١١ أَنْ نَسْتَنْجِيَ بِرَجِيعٍ أَوْ بِعَظْمٍ. رَوَاهُ مُسلم

336. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने पेशाब व पाखाना के लिए किब्ले की तरफ मुंह करने या दाएँ हाथ से इस्तिंजा करने या तीन से कम ढेलों से इस्तिंजा करने या लीदिया हड्डी के साथ इस्तिंजा करने से हमें मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 262)، (606)

٣٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْخَلَاءَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخبث والخبائث»

337. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ बैतूलखला में दाखिल होते तो फरमाते : (اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخبث والخبائث) “ए अल्लाह! मैं नापाक जिन्नो और नापाक मादा जिन्नात से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (142) و مسلم (122 / 375)، (831)

٣٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَبْرَيْنِ فَقَالَ إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا أَحدهمَا فَكَانَ لَا يَسْتَتِرُ مِنَ الْبَوْلِ - وَفِي رِوَايَةٍ لمُسلم: لَا يستنزه مِنَ الْبَوْلِ - وَأَمَّا الْآخَرُ فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ ثمَّ أَخذ جَرِيدَة رطبَة فَشَقهَا نِصْفَيْنِ ثُمَّ غَرَزَ فِي كُلِّ قَبْرٍ وَاحِدَةً قَالُوا يَا رَسُول الله لم صنعت هَذَا قَالَ لَعَلَّه يُخَفف عَنْهُمَا مَا لم ييبسا

338. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ दो क़बरो के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: "इन दोनों को अज़ाब दिया जा रहा है, और उन्हें किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब नहीं दिया जा रहा, उनमें से एक पेशाब करते वक़्त परदा नहीं किया करता था, और मुस्लिम की रिवायत में है पेशाब करते वक़्त एहतियात नहीं किया करता था, जबकि दूसरा शख़्स चुगलखोर था", फिर आप ने एक ताज़ा शाख लेकर उस के दो टुकड़े कर दिए, फिर हर कब्र पर एक टुकड़ा गाड़ दिया, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने यह क्यों किया? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुमकिन है इन के खुश्क होने तक उन के अज़ाब में तखफिफ कर दी जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (216) و مسلم (111 / 292)، (677)

٣٣٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اتَّقُوا اللَّاعِنَيْنِ. ص:١١ قَالُوا: وَمَا اللَّاعِنَانِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ . قَالَ: «الَّذِي يَتَخَلَّى فِي طَرِيقِ النَّاس أَو فِي ظلهم» . رَوَاهُ مُسلم

339. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लानत का बाईस बनने वाली दो चीजों से बचो", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! लानत का सबब बनने वाली दो चीज़े क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो लोगों की राहगुज़र या उन के साए की जगह में पेशाब व पाखाना करता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (68 / 269)، (618)

٣٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا شرب أحدكُم فَلَا ينتنفس فِي الْإِنَاءِ وَإِذَا أَتَى الْخَلَاءَ فَلَا يَمَسَّ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَلَا يَتَمَسَّحْ بِيَمِينِهِ»

340. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई शख़्स कोई चीज़ पिए तो वह बर्तन में सांस न ले, और जब बैतूलखला में जाए तो अपने दाएँ हाथ से अपने शर्मगाह को ना छुए और दाएँ से इस्तिंजा भी ना करे"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (153) و مسلم (63 / 267)، (613)

٣٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ تَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْثِرْ وَمَنِ اسْتَجْمَرَ فليوتر "

341. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वुज़ू करे तो वह नाक झाड़े और जो ढेलों से इस्तिंजा करे तो वह ढेले ताक अदद में ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (161) و مسلم (22 / 237)، (562)

٣٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُ الْخَلَاءَ فَأَحْمِلُ أَنَا وَغُلَامٌ إِدَاوَةً مِنْ مَاءٍ وَعَنَزَةً يستنجي بِالْمَاءِ

342. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बैतूलखला में जाते तो मैं और एक दूसरा लड़का पानी का बर्तन और बरछी उठाते, और आप पानी से इस्तिंजा करते”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (150) و مسلم (70 / 271)، (620)

कज़ा ए हाजत के आदाब का बयान • بَاب آدَاب الْخَلَاء

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٤٣ - (ضَعِيف) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْخَلَاءَ نَزَعَ خَاتَمَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ»» وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: هَذَا حَدِيثٌ مُنْكَرٌ. وَفِي رِوَايَتِهِ وَضَعَ بَدَلَ نزع

343. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जब बैतूलखला में जाने का इरादा फरमाते, तो आप अपने अंगूठी उतार देते| इसे अबू दावुद, नसई और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और अबू दावुद रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह रिवायत मुनकर है, उनकी रिवायत में (نزع) के बजाए (وضع) का लफ्ज़ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (19) و النسائی (8 / 178 ح 5216) و الترمذی (1746) [و ابن ماجه 303] * ابن جریج مدلس و عنعن

٣٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ الْبَرَازَ انْطَلَقَ حَتَّى لَا ص:١١ يرَاهُ أحد. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

344. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ पेशाब व पाखाना का इरादा फरमाते, तो आप (सहरा की तरफ) चलते जाते हत्ता कि आप नज़रों से ओजल हो जाते| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2) [و ابن ماجه 335] * اسماعیل بن عبدالملک ضعیف ضعفه الجمهور و احادیث ابی داود (2549) و النسائی (16) و السراج (المسند :17) و غیرهم تغنی عنه

٣٤٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَأَرَادَ أَنْ يَبُولَ فَأَتَى دَمِثًا فِي أَصْلِ جِدَارٍ فَبَالَ ثُمَّ قَالَ: «إِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ أَنْ يَبُولَ فليرتد لبوله» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

345. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक रोज़ नबी ﷺ के साथ था, आप ने पेशाब करने का इरादा किया तो आप दिवार की बुनियाद के पास नरम जगह आए और पेशाब किया, फिर फ़रमाया: “जब तुम में से कोई पेशाब करने का इरादा करे तो वह पेशाब करने के लिए मुनासिब जगह तलाश करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3) * فيه شيخ : لم اعرفه

٣٤٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم إِذَا أَرَادَ الْحَاجَةَ لَمْ يَرْفَعْ ثَوْبَهُ حَتَّى يَدْنُوَ مِنَ الْأَرْض. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

346. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ कजाए हाजत का इरादा फरमाते, तो आप (बैठते वक़्त) ज़मीन के करीब हो कर अपना कपड़ा उठाया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (14) و ابوداؤد (14) و الدارمی (1 / 171 ح 672) * رجل : مجهول ، وجاء عند البیهقی و غیره من طریق الاعمش عن القاسم بن محمد عن عمر به و الاعمش مدلس و عنعن

٣٤٧ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ مِثْلُ الْوَالِدِ لِوَلَدِهِ أَعَلِّمُكُمْ إِذَا أَتَيْتُمُ الْغَائِطَ فَلَا تَسْتَقْبِلُوا الْقِبْلَةَ وَلَا تَسْتَدْبِرُوهَا وَأَمَرَ بِثَلَاثَةِ أَحْجَارٍ وَنَهَى عَنِ الرَّوْثِ وَالرِّمَّةِ وَنَهَى أَنْ يَسْتَطِيبَ الرَّجُلُ بِيَمِينِهِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

347. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं तुम्हारे लिए इसी तरह हूँ, जिस तरह वालिद अपने बच्चे के लिए होता है, मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ, जब तुम पेशाब व पाखाना के लिए जाओ तो ना किब्ले की तरफ मुंह करो न पुश्त, आप ने (इस्तेंजा के लिए) तीन पत्थर इस्तेमाल करने का हुक्म फ़रमाया, आप ने लेंडी और हड्डी से (इस्तेंजा करने से) मना फ़रमाया और दाएँ हाथ से इस्तिंजा करने से मना फ़रमाया”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (313) و الدارمی (1 / 172 ح 680) [و ابوداؤد (8) و النسائی (1 / 38 ح 40)]

٣٤٨ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: كَانَتْ يَدُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْيُمْنَى لِطَهُورِهِ ص:١١ وَطَعَامِهِ وَكَانَتْ يَدُهُ الْيُسْرَى لِخَلَائِهِ وَمَا كَانَ مِنْ أَذًى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

348. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ का दायाँ हाथ वुज़ू, और खाने के लिए था, जबकि बायाँ हाथ इस्तिंजा और नापसंदीदा कामो के लिए था”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (33) * سعید بن ابی عروبة مدلس و حدیث ابی داود (32) یغنی عنه

٣٤٩ - (حَسَنٌ) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا ذَهَبَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْغَائِطِ فَلْيَذْهَبْ مَعَهُ بِثَلَاثَةِ أَحْجَارٍ يَسْتَطِيبُ بِهِنَّ فَإِنَّهَا تُجْزِئُ عَنْهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

349. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई पेशाब व पाखाना के लिए जाए तो वह इस्तिंजा करने के लिए अपने साथ तीन ढेले ले जाए, यह उस के लिए काफी होंगे"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 108 ح 25280) و ابوداؤد (40) و النسائى (1 / 41 ، 42 ح 44) و الدارمى (1 / 171 ، 172 ح 676) [و الدارقطنى (1 54 ، 55 و سنده حسن]

٣٥٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْتَنْجُوا بِالرَّوْثِ وَلَا بِالْعِظَامِ فَإِنَّهَا زَادُ إِخْوَانِكُمْ مِنَ الْجِنِّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: «إِخْوَانكُمْ من الْجِنّ»

350. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "गोबर और हड्डी के साथ इस्तिंजा न करो, क्योंकि वह तुम्हारे जिन भाइयो की खुराक है"| तिरमिज़ी, नसई, अलबत्ता इमाम नसई ने "तुम्हारी जिन भाइयो की खुराक" के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं है | (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه الترمذى (18) و النسائى (1 / 37 ، 38 ح 39) [و رواه مسلم : 450، (1007)]

٣٥١ - (صَحِيح) وَعَن رويفع بن ثَابت قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رُوَيْفِعُ لَعَلَّ الْحَيَاةَ سَتَطُولُ بِكَ بَعْدِي فَأَخْبِرِ النَّاسَ أَنَّ مَنْ عَقَدَ لِحْيَتَهُ أَوْ تَقَلَّدَ ص:١١ وَتَرًا أَوِ اسْتَنْجَى بِرَجِيعِ دَابَّة أَو عظم فَإِن مُحَمَّدًا بَرِيء مِنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

351. रवय्फी बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "रवय्फी! शायद मेरे बाद तुम्हारी उमर दराज़ हो जाए, लोगों को बता देना कि जिस ने अपने दाढ़ी को गिरह दी या गले में तानत डाली या जानवर की लीदिया हड्डी से इस्तिंजा किया तो मुहम्मद ﷺ उस से बरी है"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (36) [و النسائى (8 / 135 ، 136 ح 5070]

٣٥٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ اكْتَحَلَ فَلْيُوتِرْ مَنْ فَعَلَ فَقَدْ أَحْسَنَ وَمَنْ لَا فَلَا حَرَجَ وَمَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْيُوتِرْ مَنْ فَعَلَ فَقَدْ أَحْسَنَ وَمَنْ لَا فَلَا حرج وَمن أكل فَمَا تخَلّل فليلفظ وَمَا لَاكَ بِلِسَانِهِ فَلْيَبْتَلِعْ مَنْ فَعَلَ فَقَدْ أَحْسَنَ وَمَنْ لَا فَلَا حَرَجَ وَمَنْ أَتَى الْغَائِط فليستتر وَمن لَمْ يَجِدْ إِلَّا أَنْ يَجْمَعَ كَثِيبًا مِنْ رَمْلٍ فَلْيَسْتَدْبِرْهُ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَلْعَبُ بِمَقَاعِدِ بَنِي آدَمَ مَنْ فَعَلَ فَقَدْ أَحْسَنَ وَمَنْ لَا فَلَا حَرَجَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

352. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सुरमा लगाए तो वह ताक अदद में लगाए, जिस ने ऐसे किया उस ने अच्छा किया, और जिस ने ऐसे न किया तो कोई हरज नहीं, जो शख़्स ढेले से इस्तिंजा करे तो वह भी ताक अदद में ढेले इस्तेमाल करे, जिस ने ऐसे किया तो उस ने अच्छा किया और जिस ने न किया तो कोई हरज नहीं, जो शख़्स कोई चीज़ खाए तो जो उसने किसी चीज़ इस्तेमाल करने से निकाली उन्हें फेंक दे और जो अपने ज़ुबान के ज़रिए निकाली तो उन्हें निगल जाए, जिस ने ऐसा किया उस ने अच्छा किया और जिस ने न किया तो कोई हरज नहीं, और जो शख़्स पेशाब व पाखाना के लिए जाए तो वह परदा करे, अगर वह कोई चीज़ न पाए तो वह रेत का एक टीला सा बनाए और उसकी तरफ पुश्त कर ले क्योंकि शैतान, औलाद ए आदम की मकअद के साथ खेलता है, जिस ने ऐसे किया उस ने अच्छा किया और जिस ने न किया तो कोई हरज नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (35) و ابن ماجه (337 ، 338) و الدارمی (1 / 169 ، 170 ح 668) * حصين : مجهول الحال

٣٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَبُولَنَّ أَحَدُكُمْ فِي مُسْتَحَمِّهِ ثُمَّ يَغْتَسِلُ فِيهِ أَوْ يَتَوَضَّأُ فِيهِ فَإِنَّ عَامَّةَ الْوَسْوَاسِ ص:١١ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ إِلَّا أَنَّهُمَا لم يذكرَا: «ثمَّ يغْتَسل فِيهِ أويتوضأ فِيهِ»

353. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई अपने ग़ुस्ल खाने में पेशाब न करे, फिर वह उस में ग़ुस्ल करे या वुज़ू करे क्योंके, ज़्यादातर वसवसे इसी (पेशाब) से होते हैं”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, अलबत्ता इन दोनों ने “ फिर उस में ग़ुस्ल करे या वुज़ू करे”, के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं है| (ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (27) و الترمذی (21) و النسائی (1 / 34 ح 36) [و ابن ماجه : 304] * الحسن البصری مدلس و عنعن و حديث ابی داود (28) يغنی عنه

٣٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن سرجس قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَبُولَنَّ أَحَدُكُمْ فِي جُحْرٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

354. अब्दुल्लाह बिन सरजिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई बिल (कीड़े मकोड़े की जगह) में पेशाब न करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد 29) و النسائی (1 / 33 ، 34 ح 34) * قتادة مدلس و عنعن

٣٥٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " اتَّقُوا الْمَلَاعِنَ الثَّلَاثَةَ: الْبَرَازَ فِي الْمَوَارِدِ وَقَارِعَةِ الطَّرِيقِ وَالظِّلِّ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

355. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन बातो से बचो, जिन के करने वाले पर लानत की जाती है, पानी के घाट, रास्ते के दरमियान और साए में पेशाब व पाखाना करने से”| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (26) و ابن ماجه (328) * ابو سعيد الحميرى لم يدرک معاذ بن جبل رضى الله عنه فالسند منقطع و للحديث شاهد ضعيف عند احمد (1 / 299) و حديث مسلم (269)، (618) يغنى عنه

٣٥٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَخْرُجِ الرَّجُلَانِ يَضْرِبَانِ الْغَائِطَ كَاشِفَيْنِ عَنْ عَوْرَتِهِمَا يَتَحَدَّثَانِ فَإِنَّ اللَّهَ يَمْقُتُ عَلَى ذَلِكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

356. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो शख़्स पेशाब व पाखाना करते वक़्त उरिया हालत में बाहम बाते न करे, क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर नाराज़ होता है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (3 / 36 ح 11330) و ابوداؤد (15) و ابن ماجه (342) * عکرمة بن عمار عن يحيى بن ابى کثير مضطرب الحديث شاهدان ضعيفان

٣٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ هَذِهِ الْحُشُوشَ مُحْتَضَرَةٌ فَإِذَا أَتَى أَحَدُكُمُ الْخَلَاءَ فَلْيَقُلْ: أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْخُبْثِ والخبائث ". ص:١١ رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

357. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उन मकामात पर जिन्नात की रिहाईश रहती है लिहाज़ा जब तुम में से कोई बैतूलखला जाए तो यह दुआ पढ़े: “मैं नर और मादा नापाक जिन्नात से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (6) و ابن ماجه (296)

٣٥٨ - (صَحِيح لغيره) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَتْرُ مَا بَيْنَ أَعْيُنِ الْجِنِّ وَعَوْرَاتِ بَنِي آدَمَ إِذَا دَخَلَ أَحَدُهُمُ الْخَلَاءَ أَنْ يَقُولَ بِسْمِ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَإِسْنَاده لَيْسَ بِقَوي

358. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब उनमें से कोई बैतूलखला में जाए तो वह (بسم الله) बिस्मिल्लाह (अल्लाह के नाम से) कहे, यह जिन्नो की आंखो और औलाद ए आदम की परदा की चीजों (शर्मगाह वगैरा) के दरमियान परदा और आड़ है”| तिरमिज़ी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और उसकी इसनाद क़वी नहीं | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (606) [و ابن ماجه : 297] * ابو اسحاق مدلس و عنعن

٣٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ قَالَ «غفرانك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

359. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ बैतूलखला से बाहर तशरीफ़ लाते तो यह दुआ (غفرانك) “मैं तेरी मगफिरत चाहता हूँ” पढ़ा करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (7 وقال : غريب حسن) و ابن ماجه (300) و الدارمى (1 / 174 ح 686) [و ابوداؤد :30]

٣٦٠ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتَى الْخَلَاءَ أَتَيْتُهُ بِمَاءٍ فِي تَوْرٍ أَوْ رَكْوَةٍ فَاسْتَنْجَى ثُمَّ مَسَحَ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ ثُمَّ أَتَيْتُهُ بِإِنَاءٍ آخَرَ فَتَوَضَّأَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وروى الدَّارِمِيّ وَالنَّسَائِيّ مَعْنَاهُ

360. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ बैतूलखला जाते तो मैं मिट्टी के बरतन या चमड़े की छागिल में आप को पानी पेश करता, आप इस्तिंजा करते, फिर अपना हाथ ज़मीन पर फिराते, फिर मैं एक दूसरा बर्तन पेश खिदमत करता तो आप वुज़ू फरमाते”| अबू दावुद, दारमी और नसई ने भी इन्ही के मानी में रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه ابوداؤد (45) و الدارمى (1 / 173 ح 684) و النسائى (1 / 45 ح 50 و سنده حسن وهو حديث صحيح كما قال النسائى) [و ابن ماجه :358]

٣٦١ - (صَحِيح) وَعَن الحكم بن سُفْيَان قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا بَالَ تَوَضَّأَ وَنَضَحَ فَرْجَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

361. हकम बिन सुफियान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ पेशाब करते तो वुज़ू फरमाते और अपने शर्मगाह पर पानी के छींटे मारते थे”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (166) و النسائى (1 / 86 ح 134) [و ابن ماجه :461] * فى السند بعض الاختلاف وهو لا يضر و للحديث شواهد

٣٦٢ - (حسن) وَعَن أُمَيْمَة بنت رقيقَة قَالَتْ: كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:١١ قَدَحٌ مِنْ عَيْدَانٍ تَحْتَ سَرِيرِهِ يَبُولُ فِيهِ بِاللَّيْلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

362. उमैमा बिन्ते रक़ीका रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ की चारपाई के नीचे लकड़ी का एक प्याला होता था जिस में आप ﷺ रात के वक़्त पेशाब किया करते थे| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (24) و النسائى (1 / 31 ح 32)

٣٦٣ - (ضَعِيف) وَعَن عمر قَالَ: رَآنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَبُولُ قَائِمًا فَقَالَ: «يَا عُمَرُ لَا تَبُلْ قَائِمًا» فَمَا بُلْتُ قَائِمًا بَعْدُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجهْ»» قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحْيِي السّنة C: قد صَحَّ:

363. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझे देखा, जबकि मैं खड़ा पेशाब कर रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमर खड़े हो कर पेशाब न करो”, पस उस के बाद मैंने कभी खड़े हो कर पेशाब नहीं किया |अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस साबित है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (12 ، معلقاً) و ابن ماجه (308) * فیه عبد الکریم بن ابی المخارق : ضعیف ضعفه الجمهور و قال عمر : ما بلت قائمًا منذ اسلمت (رواه ابن ابی شیبة 1 / 124 ح 1324 ، و سنده صحیح)

٣٦٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سباطة قوم فَبَال قَائِما . قيل: كَانَ ذَلِك لعذر

364. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ किसी कौम के कूड़े कड़कट के ढेर पर आए तो आप ने खड़े हो कर पेशाब किया | इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है और कहा गया है के यह (खड़े हो कर पेशाब करना) किसी उज़्र की वजह से था| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (224) و مسلم (73 / 273)، (624) و قول محی السنة فی مصابیح السنة (1 / 200 ح 256)

بَاب آدَاب الْخَلَاء • कज़ा ए हाजत के आदाब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٦٥ - (ضَعِيف) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: «مَنْ حَدَّثَكُمْ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَبُولُ قَائِمًا فَلَا تُصَدِّقُوهُ مَا كَانَ يَبُول إِلَّا قَاعِدا» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

365. आइशा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जो शख़्स तुम्हें यह बताए के नबी ﷺ खड़े हो कर पेशाब किया करते थे, तो उसकी तस्दीक न करो, आप तो सिर्फ बैठ कर पेशाब किया करते थे | (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 192 ح 26124) و الترمذی (12) و النسائی (1 / 26 ح 29)

٣٦٦ - (حسن) وَعَن زيد بن حَارِثَة عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَّ جِبْرِيلَ أَتَاهُ فِي أَوَّلِ ص:١١ مَا أُوحِيَ إِلَيْهِ فَعَلَّمَهُ الْوُضُوءَ وَالصَّلَاةَ فَلَمَّا فَرَغَ مِنَ الْوُضُوءِ أَخَذَ غُرْفَةً مِنَ الْمَاءِ فَنَضَحَ بِهَا فَرْجَهُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالدَّارَقُطْنِيّ

366. ज़ैद बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की “ जब जिब्राइल पहली मर्तबा उन के पास वही लेकर आए तो उन्होंने आप को वुज़ू और नमाज़ सिखाई, जब वुज़ू से फारिग़ हुए तो चुल्लू में पानी

लिया और इसे अपने शर्मगाह पर छिड़क दिया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 161 ح 17619) و الدارقطنی (1 / 111) [و ابن ماجه : 362] * ابن لهیعة مدلس و عنعن و حدیث : 361 یغنی عنه

٣٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " جَاءَنِي جِبْرِيلُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِذَا تَوَضَّأْتَ فَانْتَضِحْ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَسَمِعْتُ مُحَمَّدًا يَعْنِي الْبُخَارِيَّ يَقُولُ: الْحَسَنُ بْنُ عَلِيّ الْهَاشِمِي الرَّاوِي مُنكر الحَدِيث

367. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिब्राइल मेरे पास आए तो उन्होंने कहा: मुहम्मद ﷺ! जब आप वुज़ू करे तो (इस के बाद शर्मगाह पर) पानी छिड़क लिया करे “| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और मैंने मुहम्मद यानी इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह से सुना के हसन बिन अलियुल हाश्मी रावी मुनकर उल हदीस है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (50)

٣٦٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: " بَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ عُمَرُ خَلْفَهُ بِكُوزٍ مِنْ مَاءٍ فَقَالَ: مَا هَذَا يَا عمر؟ قَالَ: مَاءٌ تَتَوَضَّأُ بِهِ. قَالَ: مَا أُمِرْتُ كُلَّمَا بُلْتُ أَنْ أَتَوَضَّأَ وَلَوْ فَعَلْتُ لَكَانَتْ سُنَّةً «.» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه "

368. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने पेशाब किया तो उमर रदियल्लाहु अन्हु पानी का लौटा लिए आप के पीछे खड़े थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमर यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया, पानी है, आप उस से वुज़ू फरमाइएगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे यह हुक्म नहीं दिया गया कि जब में पेशाब करूँ तो वुज़ू भी करू, अगर में ऐसा करूँ तो यह सुन्नत बन जाएगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (42) و ابن ماجه (327) * عبدالله بن یحیی التوام : ضعیف

٣٦٩ - (صَحِيح لغيره) وَعَن أبي أَيُّوب وَجَابِر وَأنس: أَن هَذِه الْآيَة نَزَلَتْ (فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يحب المطهرين)»» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَارِ إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَثْنَى عَلَيْكُمْ فِي الطَّهُورِ فَمَا طَهُورُكُمْ قَالُوا نَتَوَضَّأُ لِلصَّلَاةِ وَنَغْتَسِلُ مِنَ الْجَنَابَةِ وَنَسْتَنْجِي بِالْمَاءِ قَالَ فَهُوَ ذَاك فعليكموه» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

369. अबू अय्यूब जाबिर और अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब यह आयत: (فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يحب المطهرين) “उस में ऐसे लोग है जो इस बात को पसंद करते हैं की पाक साफ़ रहे, और अल्लाह पाक साफ़ रहने वालो को पसंद करता है: “नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अंसार की जमाअत! अल्लाह ने पाकीज़गी के बारे में तुम्हारी तारीफ़ की है, तुम्हारी पाकीज़गी क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया, हम हर

नमाज़ के लिए वुज़ू करते हैं, ग़ुस्ल ए जनाबत करते हैं और पानी से इस्तिंजा करते हैं, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “पस यही वजह है, चुनांचे तुम उसकी पाबन्दी करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (355)

٣٧٠ - (صَحِيح) وَعَن سلمَان قَالَ قَالَ لَهُ بعض الْمُشْرِكين وَهُوَ يستهزئ بِهِ إِنِّي لأرى صَاحبكُم يعلمكم كل شَيْء حَتَّى الخراءة قَالَ أَجَلْ أَمَرَنَا أَنْ لَا نَسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةَ وَلَا نَسْتَنْجِيَ بِأَيْمَانِنَا وَلَا نَكْتَفِيَ بِدُونِ ثَلَاثَةِ أَحْجَارٍ لَيْسَ فِيهَا رَجِيعٌ وَلَا عَظْمٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأحمد وَاللَّفْظ لَهُ

370. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी मुशरिक ने अजराः मज़ाक कहा मेरा ख्याल है की तुम्हारा साथी (रसूलुल्लाह ﷺ) तुम्हें पेशाब व पाखाना के आदाब भी सिखाता है, मैंने कहा हाँ बिलकुल ठीक है, आप ﷺ ने हमें हुक्म दिया है के हम पेशाब व पाखाना के वक़्त ना किब्ले की तरफ मुंह करे न दाएँ हाथ से इस्तिंजा करे, और हम (इस्तेंजा के लिए) तीन ढेलों से कम इस्तेमाल न करे, और उनमें लेंडी और हड्डी न हो”| इसे मुस्लिम और अहमद ने रिवायत किया है मज़कुरह अल्फाज़ अहमद के है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 262)، (606) و احمد (5 / 437 ح 24103)

٣٧١ - (صَحِيح) وَعَن عبد الرَّحْمَن بن حَسَنَةَ قَالَ: " خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي يَده كَهَيئَةِ الدَّرَقَةُ فَوَضَعَهَا ثُمَّ جَلَسَ فَبَالَ إِلَيْهَا فَقَالَ بَعْضُهُمْ: انْظُرُوا إِلَيْهِ يَبُولُ كَمَا تَبُولُ الْمَرْأَةُ فَسَمعهُ فَقَالَ أَو مَا عَلِمْتَ مَا أَصَابَ صَاحِبَ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانُوا إِذا أَصَابَهُم شَيْء من الْبَوْلُ قَرَضُوهُ بِالْمَقَارِيضِ فَنَهَاهُمْ فَعُذِّبَ فِي قَبْرِهِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

371. अब्दुल रहमान बिन हसन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए, आप के हाथ में चमड़े की ढाल थी, आप ने इसे रखा, फिर बैठ कर उसकी तरफ रुख कर के पेशाब किया, तो उनमें से किसी ने कहा: उन्हें देखो, कैसे औरत की तरह (छुप कर) पेशाब कर रहे हैं, नबी ﷺ ने उसकी बात सुन ली और फ़रमाया: “तुम पर अफ़सोस है, क्या तुम उस से बाखबर नहीं जो बनी इसराइल के एक साथी के साथ हुआ की जब उन्हें पेशाब लग जाता तो वह इस हिस्से को कैची से काट दिया करते थे, चुनांचे इस शख़्स ने इनको मना कर दिया, जिस की वजह से इसे उसकी कब्र में अज़ाब दिया गया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (22) و ابن ماجه (346) * الاعمش مدلس و عنعن

٣٧٢ - وَرَوَاهُ النَّسَائِيّ عَنهُ عَن أبي مُوسَى

372. इमाम नसई ने यह रिवायत उन (अब्दुल रहमान बिन हसन (र)) की सनद से अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه النسائى (1 / 26 ، 28 ح 30) * عن عبد الرحمن بن حسنة فقط دون ذكر ابى موسىؓ

٣٧٣ - (حسن) عَن مَرْوَان الْأَصْفَر قَالَ: «رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ ثُمَّ جَلَسَ يَبُولُ إِلَيْهَا فَقُلْتُ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَلَيْسَ قَدْ نُهِيَ عَنْ هَذَا قَالَ بلَى إِنَّمَا نُهِيَ عَنْ ذَلِكَ فِي الْفَضَاءِ فَإِذَا كَانَ بَيْنَكَ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ شَيْءٌ يَسْتُرُكَ ص:١٢ فَلَا بَأْس» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

373. मरवान अस्फर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को देखा के उन्होंने अपने सवारी को किबले रुख बिठाया, फिर उस के रुख बैठ कर पेशाब किया, मैंने अर्ज़ किया: अबू अब्दुलरहमान! क्या उस से मना नहीं किया गया? उन्होंने ने फ़रमाया: (नहीं) बल्कि सिर्फ खुली फिज़ा में उस से मना किया गया है, अगर तुम्हारे और किबले के दरमियान में कोई ऐसी चीज़ हो जो तुम्हारे लिए परदा हो तो फिर (किब्ला रुख पेशाब करने में) कोई हरज नहीं “| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (11) * الحسن بن ذكوان ضعيفه الجمهور و حديثه فى صحيح البخارى متابعة وهو مدلس ايضًا و عنعن

٣٧٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي الْأَذَى وَعَافَانِي» . رَوَاهُ أبن مَاجَه

374. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ बैतूलखला से बाहर तशरीफ़ लाए तो यह दुआ पढ़ते: “हर किस्म की तारीफ़ व शुक्र अल्लाह के लिए है जिस ने मुझ से तकलीफे दूर की और मुझे आफियत अता फरमाई”| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (301) * اسماعيل بن مسلم المكى : ضعيف الحديث و فيه علل أخرى

٣٧٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: " لَمَّا قَدِمَ وَفْدُ الْجِنِّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ انْهَ أُمَّتَكَ أَنْ يَسْتَنْجُوا بِعَظْمٍ أَوْ رَوْثَةٍ أَوْ حُمَمَةٍ فَإِنَّ اللَّهَ جَعَلَ لَنَا فِيهَا رِزْقًا فَنَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

375. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब जिन्नो का वफद नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ! अपनी उम्मत को हड्डी या लीदिया, कोइले से इस्तिंजा करने से मना फरमाइए, क्योंकि अल्लाह ने उन चीजों में हमारे लिए रिज़्क़ रखा है, पस रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें उस से मना फरमा दिया | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (39)

मिस्वाक करने का बयान • بَاب السِّوَاك

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٧٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْلَا أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لَأَمَرْتُهُمْ بِتَأْخِيرِ الْعشَاء وبالسواك عِنْد كل صَلَاة»

376. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अगर मुझे अपनी उम्मत पर मशक़्क़त का अंदेशा न होता तो मैं उन्हें नमाज़ ए ईशा ताखीर से पढ़ने और हर नमाज़ के साथ मिस्वाक करने का हुक्म फरमाता"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (887) و مسلم (42 / 252)، (589)

٣٧٧ - (صَحِيح) وَعَن شُرَيْح بن هَانِئ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: بِأَيِّ شَيْءٍ كَانَ يَبْدَأُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دخل بَيته؟ قَالَت: بِالسِّوَاكِ. رَوَاهُ مُسلم

377. शरीह बिन हानी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया, जब रसूलुल्लाह ﷺ घर तशरीफ़ लाते तो आप सबसे पहले कौन सा काम किया करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: मिस्वाक| (मुस्लिम)

رواه مسلم (43 / 253)، (590)

٣٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ لِلتَّهَجُّدِ مِنَ اللَّيْلِ يَشُوصُ فَاهُ بِالسِّوَاكِ

378. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ रात तहज्जुद के लिए उठते तो आप मिस्वाक से अपने मुंह को साफ़ करते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (245) و مسلم (46 / 255)، (593)

٣٧٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَشْرٌ مِنَ الْفِطْرَة: قَصُّ الشَّارِبِ وَإِعْفَاءُ اللِّحْيَةِ وَالسِّوَاكُ وَاسْتِنْشَاقُ الْمَاءِ وَقَصُّ الْأَظْفَارِ وَغَسْلُ الْبَرَاجِمِ وَنَتْفُ الْإِبِطِ وَحَلْقُ الْعَانَةِ وَانْتِقَاصُ الْمَاءِ)»» يَعْنِي الِاسْتِنْجَاءَ - قَالَ الرَّاوِي: ونسيت الْعَاشِرَة إِلَّا أَن تكون الْمَضْمَضَة. رَوَاهُ مُسلم»» وَفِي رِوَايَةٍ «الْخِتَانُ» بَدَلَ «إِعْفَاءُ اللِّحْيَةِ» لَمْ أَجِدْ هَذِهِ الرِّوَايَةَ ص:١٢ فِي «الصَّحِيحَيْنِ» وَلَا فِي كِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ»» وَلَكِنْ ذَكَرَهَا صَاحِبُ «الْجَامِعِ» وَكَذَا الْخطابِيّ فِي «معالم السّنَن» :

379. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दस खसलते फितरत से है, मूंछे कतरना, दाढ़ी बढ़ाना, मिस्वाक करना, नाक में पानी झाड़ना, नाख़ून कतरना, उंगलियों के जोड़ धोना, बगलों के बाल उखेड़ना, ज़ेरे नाफ़ बाल मूंदना और इस्तिंजा करना रावी बयान करते हैं, दसवी खसलत में भूल गया हूँ, मुमकिन है के कुल्ली करना हो, एक रिवायत में दाढ़ी बढ़ाने के बजाए खत्ने का ज़िक्र है, मैंने यह रिवायत ना सहीहैन में पाई है न किताब अल हुमैदी में लेकिन साहब "अल जामेअ" और इसी तरह अल खत्ताबी ने "मआलिम अल सुनन" में उसे ज़िक्र किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (56 / 261)، (604)

٣٨٠ - (صَحِيح) عَن أبي دَاوُد بِرِوَايَة عمار بن يَاسر

380. अबू दावुद ने अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से ज़िक्र किया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (54) * على بن زيد بن جدعان ضعيف ضعفه الجمهور

मिस्वाक करने का बयान • بَاب السِّوَاك

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٨١ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ» . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَأَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَاهُ الْبُخَارِيّ فِي صَحِيحه بِلَا إِسْنَاد

381. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मिस्वाक मुंह को साफ़ करने वाली और रब की रज़ामंदी का बाईस है"| शाफ़ई, अहमद, दारमी, नसई और इमाम बुखारी ने इसे अपने सहीह में मुअल्लक बयान किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الشافعى فى الام (1 / 23) و احمد (6 / 47 ح 24707) و الدارمى (1 / 174 ح 690) و النسائى (1 / 10 ح 5) و البخارى (كتاب الصوم باب : 27 قبل ح 1934 معلقاً)

٣٨٢ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَرْبَعٌ مِنْ سُنَنِ الْمُرْسَلِينَ: الْحَيَاءُ وَيُرْوَى الْخِتَانُ وَالتَّعَطُّرُ وَالسِّوَاكُ وَالنِّكَاحُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

382. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "चार चीज़े तमाम रसूलो की

सुन्नत है: हया, किसी रिवायत में खतने का ज़िक्र है, इत्र लगाना, मिस्वाक करना और निकाह करना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1080 وقال : حسن غريب) * حجاج بن ارطاة : مدلس و عنعن و ابو الشمائل : مجهول ، و للحديث شواهد ضعيفة

٣٨٣ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَرْقُدُ مِنْ لَيْلٍ وَلَا نَهَارٍ فَيَسْتَيْقِظُ إِلَّا يَتَسَوَّكُ قَبْلَ أَنْ يَتَوَضَّأَ. رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

383. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ रात या दिन के किसी हिस्से में सोते तो आप बेदार हो कर वुज़ू करने से पहले मिस्वाक किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 160 ح 25787) و ابوداؤد (57) * على بن زيد بن جدعان ضعيف و ام محمد : لم اجد من و ثقها

٣٨٤ - (حَسَنٌ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَاكُ فَيُعْطِينِي السِّوَاكَ لِأَغْسِلَهُ فَأَبْدَأُ بِهِ فَأَسْتَاكُ ثُمَّ أَغْسِلُهُ وَأَدْفَعُهُ إِلَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

384. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ मिस्वाक किया करते थे, फिर आप मिस्वाक मुझे दे देते, ताकि मैं उसे धो दू तो मैं धोने से पहले खुद मिस्वाक करती, फिर इसे धो कर आप को लौटा देती”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (52)

मिस्वाक करने का बयान • بَاب السِّوَاك

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٣٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أَرَانِي فِي الْمَنَامِ أَتَسَوَّكُ بِسِوَاكٍ فَجَاءَنِي رَجُلَانِ أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ الْآخَرِ فَنَاوَلْتُ السِّوَاكَ الْأَصْغَرَ مِنْهُمَا فَقِيلَ لِي: كبر فَدَفَعته إِلَى الْأَكْبَرِ مِنْهُمَا "

385. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने अपने आप को ख्वाब में मिस्वाक करते हुए देखा, चुनांचे इस दौरान दो आदमी मेरे पास आए, उनमें से एक दूसरे से बड़ा था, मैंने उनमें से छोटे को मिस्वाक दे दी, तो मुझे कहा गया बड़े को दो चुनांचे मैंने बड़े को दे दि”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (246) و مسلم (246 / 2271)، (5933)

٣٨٦ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا جَاءَنِي جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَطُّ إِلَّا أَمَرَنِي بِالسِّوَاكِ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ أُحْفِيَ مُقَدِّمَ فِيَّ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

386. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम जब भी मेरे पास तशरीफ़ लाते तो आप मुझे मिस्वाक करने का हुक्म फरमाते, मुझे तो अंदेशा हुआ की में कहीं अपने मुंह सामने का हिस्सा न छिल दू”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (5 / 263 ح 22625) * على بن يزيد الالهانى : ضعيف جدًا ، و عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرٍ : ضعيف ، ضعفه الجمهور

٣٨٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ أَكْثَرْتُ عَلَيْكُمْ فِي السِّوَاك» رَوَاهُ البُخَارِيّ

387. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने तुम्हें मिस्वाक के बारे में बहोत मर्तबा कहा है”| (बुखारी)

رواه البخارى (888)

٣٨٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَنُّ وَعِنْدَهُ رَجُلَانِ أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ الْآخَرِ فَأُوحِيَ إِلَيْهِ فِي فَضْلِ السِّوَاكِ أَنْ كَبِّرْ أَعْطِ السِّوَاك أكبرهما. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

388. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मिस्वाक कर रहे थे और आप के पास दो आदमी थे, उनमें से एक दूसरे से बड़ा था, चुनांचे आप ﷺ ने छोड़ी हुई मिस्वाक के बारे में आप की तरफ वही आई के यह बड़े को दे दी”| (सहीह)

سنده صحيح ، رواه ابوداؤد (50)

٣٨٩ - (ضَعِيف) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَفْضُلُ الصَّلَاةُ الَّتِي ص:١٢ يُسْتَاكُ لَهَا عَلَى الصَّلَاةِ الَّتِي لَا يُسْتَاكُ لَهَا سَبْعِينَ ضعفا» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

389. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मिस्वाक कर के पढ़ी गई नमाज़, मिस्वाक के बगैर पढ़ी गई नमाज़ से सत्तर गुना अफज़ल है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2774 ، 2773) و السنن الكبرىٰ (1 / 38) * فيه معاوية بن يحيى الصدفى ضعيف ، و محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة جدًا

٣٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَوْلَا أَنْ

أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لَأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ وَلَأَخَّرْتُ صَلَاةَ الْعِشَاءِ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ» قَالَ فَكَانَ زَيْدُ بْنُ خَالِدٍ يَشْهَدُ الصَّلَوَاتِ فِي الْمَسْجِدِ وَسِوَاكُهُ عَلَى أُذُنِهِ مَوْضِعَ الْقَلَمِ مِنْ أُذُنِ الْكَاتِبِ لَا يَقُومُ إِلَى الصَّلَاةِ إِلَّا اسْتَنَّ ثُمَّ رَدَّهُ إِلَى مَوْضِعِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: «وَلَأَخَّرْتُ صَلَاةَ الْعِشَاءِ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ» . وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حسن صَحِيح

390. अबू सलमा रहिमहुल्लाह ज़ैद बिन खालिद जुहनी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: अगर मुझे अपनी उम्मत पर मशक़्क़त का अंदेशा न होता तो मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता और नमाज़ ए ईशा को तिहाई रात तक मोअख़्ख़र करता"| ज़ैद बिन खालिद मस्जिद में नमाज़े पढ़ने के लिए आते तो कातिब के कलम की तरह उनकी मिस्वाक उन के कान पर होती थी, और वह जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो मिस्वाक करते और फिर इसे उसकी जगह (कान) पर रख देते| तिरमिज़ी, अबू दावुद, अलबत्ता उन्होंने " मैं नमाज़ ए ईशा को तिहाई रात तक मोअख़्ख़र करता के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं किए| इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (23) و ابوداؤد (47) * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و الحديث المرفوع صحيح ، انظر مسند الامام احمد (4 / 116 ح 17048)

वुज़ू की सुन्नतो का बयान — بَاب سنَن الْوضُوء

पहली फस्ल — الْفَصْل الأول

٣٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ مِنْ نَوْمِهِ فَلَا يَغْمِسْ يَدَهُ فِي الْإِنَاءِ حَتَّى يَغْسِلَهَا فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي أَيْنَ بَاتَتْ يَدُهُ»

391. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई नींद से बेदार हो तो वह अपना हाथ बर्तन में न डाले, हत्ता कि इसे तीन मर्तबा धोले, क्योंकि वह नहीं जानता के उस के हाथ ने रात कहाँ बसर की"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (162) و مسلم (87 / 278)، (643)

٣٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَيْقَظَ أَحَدُكُمْ مِنْ مَنَامه فليستنثر ثَلَاثًا فَإِن الشَّيْطَان يبيت على خيشومه»

392. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई शख़्स नींद से बेदार हो कर वुज़ू करे तो वह तीन मर्तबा नाक झाड़े क्योंकि शैतान उसकी नाक में रात बसर करता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (3295) و مسلم (23 / 238)، (564)

٣٩٣ - (صَحِيح) وَقيل لعبد الله بن زيد: كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَوَضَّأُ؟ فَدَعَا بِوَضُوءٍ فَأَفْرَغَ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثَلَاثًا ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثًا ثُمَّ غَسَلَ يَدَيْهِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ بِيَدَيْهِ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ ثُمَّ ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ ثُمَّ ردهما حَتَّى يرجع إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي بَدَأَ مِنْهُ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالنَّسَائِيُّ وَلِأَبِي دَاوُدَ نَحْوُهُ ذكره صَاحب الْجَامِع

393. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया गया के रसूलुल्लाह ﷺ कैसे वुज़ू किया करते थे? पस उन्होंने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया तो “अपने हाथो पर पानी डाला और दो दो मर्तबा हाथ धोए, फिर तीन मर्तबा कुल्ली की और नाक झाड़ी, फिर तीन मर्तबा अपना चेहरा धोया, फिर दोनों हाथो को कहोनियो समेत दो दो मर्तबा धोया, फिर अपने हाथो से सर का मसाह किया और उन्हें सर की अगली तरफ से गुद्दी तक ले गए और फिर सर की अगली तरफ जहाँ से शुरू किया था वापस ले आए, फिर अपने दोनों पाँव धोए”| मालिक, नसई, और अबू दावुद में इसी तरह है साहब “ अल जामेअ” ने भी इसे ज़िक्र किया है | (सहीह)

صحيح [متفق عليه] ، رواه مالک فی الموطا (1 / 18 ح 31) و النسائی (1 / 71 ح 97) و ابوداؤد (118) * و انظر الحديث الآتی فهو طرف منه (394)

٣٩٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي الْمُتَّفَقِ عَلَيْهِ: قِيلَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَاصِمٍ: تَوَضَّأْ لَنَا وُضُوءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَعَا بِإِنَاءٍ فَأَكْفَأَ مِنْهُ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَهُمَا ثَلَاثًا ثُمَّ أَدْخَلَ يَدَهُ ص:١٢ فَاسْتَخْرَجَهَا فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ مِنْ كَفٍّ وَاحِدَةٍ فَفَعَلَ ذَلِكَ ثَلَاثًا ثُمَّ أَدْخَلَ يَدَهُ فَاسْتَخْرَجَهَا فَغَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثًا ثُمَّ أَدْخَلَ يَدَهُ فَاسْتَخْرَجَهَا فَغَسَلَ يَدَيْهِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ أَدْخَلَ يَدَهُ فَاسْتَخْرَجَهَا فَمَسَحَ بِرَأْسِهِ فَأَقْبَلَ بِيَدَيْهِ وَأَدْبَرَ ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ثُمَّ قَالَ هَكَذَا كَانَ وُضُوءُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» وَفِي رِوَايَةٍ: فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ بَدَأَ بِمُقَدَّمِ رَأْسِهِ ثُمَّ ذَهَبَ بِهِمَا إِلَى قَفَاهُ ثُمَّ رَدَّهُمَا حَتَّى رَجَعَ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي بَدَأَ مِنْهُ ثُمَّ غَسَلَ رجلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَة: فَمَضْمض واستنشق واستنثر ثَلَاثًا بِثَلَاث غَرَفَاتٍ مِنْ مَاءٍ»» وَفِي رِوَايَةٍ أُخْرَى: فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ مِنْ كَفَّةٍ وَاحِدَةٍ فَفَعَلَ ذَلِكَ ثَلَاثًا»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: فَمَسَحَ رَأْسَهُ فَأَقْبَلَ بِهِمَا وَأَدْبَرَ مَرَّةً وَاحِدَةً ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَيْهِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ»» وَفِي أُخْرَى لَهُ: فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ ثَلَاثَ مَرَّات من غرفَة وَاحِدَة

394. और सहीहैन में है की अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम रदियल्लाहु अन्हु से कहा गया के हमें रसूलुल्लाह ﷺ का वुज़ू कर के दिखाइए, पस उन्होंने पानी का एक बर्तन मंगवाया, “और उस में से कुछ पानी अपने हाथो पर उंडेला, और उन्हें तीन मर्तबा धोया, फिर अपने हाथ को पानी के बर्तन में डाला और उस में पानी लेकर एक ही चुल्लू से कुल्ली की और नाक में पानी डाला, उन्होंने यह तीन मर्तबा किया, फिर उन्होंने अपना हाथ बर्तन में डालकर उस से पानी निकाला और तीन मर्तबा अपना चेहरा धोया, फिर अपना हाथ बर्तन में डाला और पानी निकाल कर दो दो मर्तबा हाथो को कहोनियो समेत धोया, फिर अपना हाथ बर्तन में डालकर उस से और पानी निकाल कर अपने सर का मसाह किया, अपने हाथो को आगे ले गए और वापस लाए, फिर उन्होंने टखनो तक पाँव धोए”, फिर उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ का वुज़ू इसी की मिस्ल था, एक रिवायत में है: “सर का मसाह करते वक़्त हाथो को सर की अगली जानिब से गुद्दी तक ले गए और फिर उन्हे वहीँ वापस ले आए जहाँ से शुरू किया था, फिर अपने दोनों पाँव धोए”, एक दूसरी रिवायत में है: “आप ने तीन मर्तबा कुल्ली की नाक में पानी डाला और नाक झाड़ी और ऐसा तीन चुल्लू पानी के साथ किया” एक और रिवायत में है: आप ने एक चुल्लू के साथ ही कुल्ली की और नाक में पानी डाला और आप ने ऐसा तीन मर्तबा किया, बुखारी की रिवायत में है: “आप ने सर का मसाह किया, आप हाथो को आगे ले गए और वापस लाए, आप ने यह एक मर्तबा किया, फिर आप ने

टखनो तक दोनों पाँव धोए और बुखारी की दूसरी रिवायत में है आप ने एक ही चुल्लू से तीन मर्तबा कुल्ली की और नाक झाड़ी"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (185 ، 186 ، 191 ، 192 ، 199) و مسلم (18 / 235)، (555)

٣٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: تَوَضَّأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّةً مَرَّةً لَمْ يَزِدْ عَلَى هَذَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

395. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक एक मर्तबा आज़ाए वुज़ू को धोया और उस से ज़्यादा नहीं किया| (बुखारी)

رواه البخاری (157)

٣٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

396. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने दो दो मर्तबा आज़ाए वुज़ू को धोया| (बुखारी)

رواه البخاری (158)

٣٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ تَوَضَّأَ بِالْمَقَاعِدِ فَقَالَ: أَلَا أُرِيكُمْ وُضُوءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَتَوَضَّأَ ثَلَاثًا ثَلَاثًا. رَوَاهُ مُسلم

397. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने मकाइड (मदीना के पास जगह) पर वुज़ू किया, तो फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें रसूलुल्लाह ﷺ का तरीका ए वुज़ू न दिखाऊ? चुनांचे उन्होंने वुज़ू करते वक़्त तीन तीन बार आज़ाए वुज़ू को धोया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 230)، (545)

٣٩٨ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: رَجَعْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَكَّةَ إِلَى الْمَدِينَةِ حَتَّى إِذا كُنَّا بِمَاء بِالطَّرِيقِ تعجل قوم عِنْد الْعَصْر فتوضؤوا وهم عِجَال فَانْتَهَيْنَا إِلَيْهِم وَأَعْقَابُهُمْ تَلُوحُ لَمْ يَمَسَّهَا الْمَاءُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلٌ لِلْأَعْقَابِ من النَّار أَسْبغُوا الْوضُوء» . رَوَاهُ مُسلم

398. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मक्का से मदीना वापस आ रहे थे, हत्ता कि हम रास्ते में पानी के पास से गुज़रे, कुछ लोगों ने नमाज़ ए असर के लिए जल्दी की है,

पस उन्होंने जल्दबाज़ी में वुज़ू किया, चुनान्चे जब हम उन के पास पहुंचे तो देखा के उनकी एड़िया (खुश्क होने की वजह से) चमक रही थी, उन तक पानी नहीं पहुंचा था, पस रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एड़ियो के लिए जहन्नम की आग है, वुज़ू खूब अच्छी तरह मुकम्मल करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 241)، (570)

٣٩٩ - (صَحِيح) وَعَن الْمُغيرَة بن شُعْبَة قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ فَمَسَحَ بِنَاصِيَتِهِ وَعَلَى الْعِمَامَةِ وَعَلَى الْخُفَّيْنِ. رَوَاهُ مُسلم

399. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने वुज़ू किया तो आप ने अपनी पेशानी, इमामे और मोज़ो पर मसाह किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (83 / 274)، (636)

٤٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ: فِي طهوره وَترَجله وتنعله

400. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने अपने तमाम उमूर (मसलन) वुज़ू करने, कंघी करने और जूता पहनने में दाएँ तरफ से शुरू करना मक्दोर भर पसंद किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (426) و مسلم (67 / 268)، (617)

वुज़ू की सुन्नतो का बयान • بَاب سنَن الْوضُوء

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٠١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذا لبستم وَإِذا توضأتم فابدؤوا بأيامنكم» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

401. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम लिबास पहनो और जब तुम वुज़ू करो तो अपने दाएँ तरफ से शुरू करो”| (सहीह,ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 354 ح 8637) و ابوداؤد (4141) [و ابن ماجه (402) و صححه ابن خزيمة (158) و ابن حبان (147 ، 1452)
* الاعمش مدلس و عنعن و حديث الترمذی (1766) صحيح وهو يغنی عنه

٤٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعيد بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا وُضُوءَ لِمَنْ لَمْ يَذْكُرِ اسْمَ الله عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

402. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वुज़ू करते वक़्त (بِسْمِ اللَّهِ) “अल्लाह के नाम से” ना पढ़े उस का वुज़ू नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (25) و ابن ماجه (398) [و له شاهد حسن عند ابن ماجه : 397 ، یاتی : 404]

٤٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

403. अहमद और अबू दावुद ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 418 ح 9408) و ابوداؤد (101) [و ابن ماجه : 399]

٤٠٤ - (لم تتمّ دراسته) والدارمي عَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ عَن أَبِيه وَزَادُوا فِي أَوله:

404. और दारमी ने अबू सईद खुदरी अन अबी की सनद से रिवायत किया है, और उस के शुरू में इज़ाफा किया है: “जिस का वुज़ू नहीं, उसकी नमाज़ नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (1 / 176 ح 697 وسنده حسن [ابن ماجه (397])حسن ، رواه الدارمی (1 / 176 ح 697 وسنده حسن [ابن ماجه (397])

٤٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ لَقِيطِ بْنِ صَبِرَةَ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخْبِرْنِي عَنِ الْوُضُوءِ. قَالَ: «أَسْبِغِ الْوُضُوءَ وَخَلِّلْ بَيْنَ الْأَصَابِعِ وَبَالِغْ فِي الِاسْتِنْشَاقِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ صَائِمًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَه والدارمي إِلَى قَوْله: بَين الْأَصَابِع

405. लकिट बिन सबुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे वुज़ू के मुतल्लिक बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वुज़ू अच्छी तरह करो, उंगलियों के दरमियान खिलाल करो और रोज़ा की हालत के अलावा नाक में पानी खूब चढ़ाओ”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, और इब्ने माजा और दारमी ने (بَين الْأَصَابِ) तक रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

صحیح ، رواه ابوداؤد (142) و الترمذی (788 وقال : حسن صحیح) و النسائی (1 / 66 ح 87 ، 1 / 79 ح 114) و ابن ماجه (407 ، 448) و الدارمی (1 / 179 ح 711) [و صححه ابن خزیمة (150 ، 168) و ابن حبان (الموارد : 159) و الحاکم (1 / 147 ، 148) و وافقه الذهبی]

٤٠٦ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا تَوَضَّأْتَ فَخَلِّلْ بَيْنَ أَصَابِعِ يَدَيْكَ وَرِجْلَيْكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ نَحْوَهُ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

406. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम वुज़ू करो तो अपने हाथो और अपने पाँव की उंगलियों का खिलाल करो”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा ने भी इसी तरह रिवायत किया है, और तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی 39) و ابن ماجه (447)

٤٠٧ - (صَحِيح) وَعَن الْمُسْتَوْرد بن شَدَّاد قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَوَضَّأَ يُدَلِّكُ أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ بِخِنْصَرِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

407. मुसतवरिद बिन सद्दाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की जब आप ﷺ वुज़ू फरमाते, तो अपने छोटी ऊँगली के साथ पाँव की उंगलियों को खूब मलते| (हसन)

صحيح ، رواه الترمذی (40 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (148) و ابن ماجه (446)

٤٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَوَضَّأَ أَخَذَ كَفًّا مِنْ مَاءٍ فَأَدْخَلَهُ تَحْتَ حَنَكِهِ فَخَلَّلَ بِهِ لحيته وَقَالَ: «هَكَذَا أَمرنِي رَبِّي» . ص:١٢ رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

408. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ वुज़ू फरमाते, तो चुल्लू में पानी लेकर ठोड़ी के नीचे दाखिल करते और उस से अपने दाढ़ी का खिलाल करते और फरमाते: “मेरे रब ने मुझे इसी तरह हुक्म फ़रमाया है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (145) * الوليد بن زوران لين الحديث و عند الحاكم طريق آخر (1 / 149 ح 529) و فيه الزهری مدلس و عنعن و للحديث طريق آخر عند الحاكم (530) و قال ابو حاتم الرازی : الخطا من مروان (بن محمد الطاطری) ،، (انظر علل الحديث : 16)

٤٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُخَلِّلُ لِحْيَتَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

409. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ अपने दाढ़ी का खिलाल किया करते थे| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذی (31 وقال : هذا حديث حسن صحيح) و الدارمی (1 / 179 ح 710) [و ابن ماجه : 430]

٤١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي حَيَّةَ قَالَ رَأَيْتُ عَلِيًّا تَوَضَّأَ فَغَسَلَ كَفَّيْهِ حَتَّى أَنْقَاهُمَا ثُمَّ مَضْمَضَ ثَلَاثًا واستنشق ثَلَاثًا وَغسل وَجهه ثَلَاثًا وذراعيه ثَلَاثًا وَمسح بِرَأْسِهِ مرّة ثمَّ غسل قَدَمَيْهِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ثُمَّ قَامَ فَأَخَذَ فَضْلَ طَهُورِهِ فَشَرِبَهُ وَهُوَ قَائِمٌ ثُمَّ قَالَ أَحْبَبْتُ أَنْ أريكم كَيفَ كَانَ طَهُور رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

410. अबू हय्य रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अली रदियल्लाहु अन्हु को देखा के उन्होंने वुज़ू किया तो अपने हाथ धोए और उन्हें खूब अच्छी तरह साफ़ किया, फिर तीन मर्तबा कुल्ली की तीन बार नाक साफ़ की, तीन बार चेहरा धोया, तीन बार बाज़ू धोए, एक मर्तबा सर का मसाह किया, फिर टखनो तक पाँव धोए, फिर खड़े हुए और वुज़ू से बचा हुआ पानी खड़े हो कर पिया, फिर फ़रमाया मैंने चाहा के तुम्हें दिखाऊ के रसूलुल्लाह ﷺ का वुज़ू कैसे था| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (48) و النسائی (1 / 70 ، 71 ح 96) [و ابوداؤد : 116]

٤١١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ خَيْرٍ قَالَ: نَحْنُ جُلُوسٌ نَنْظُرُ إِلَى عَلِيٍّ حِينَ تَوَضَّأَ فَأَدْخَلَ يَدَهُ الْيُمْنَى فَمَلَأَ فَمَهُ فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ وَنَثَرَ بِيَدِهِ الْيُسْرَى فَعَلَ هَذَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَالَ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى طَهُورِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهَذَا طَهُورُهُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

411. अब्दी खैर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जब अली रदियल्लाहु अन्हु ने वुज़ू किया तो हम बैठें उन्हें देख रहे थे, चुनांचे उन्होंने अपना दायाँ हाथ बर्तन में डाला (और उस से पानी ले कर) अपने मुंह और नाक में डाला, फिर बाएँ हाथ से नाक साफ़ की, आप ने तीन मर्तबा ऐसे ही किया, फिर फ़रमाया: जिसे पसंद हो के वह रसूलुल्लाह ﷺ का वुज़ू देखे तो यह आप का वुज़ू है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الدارمی (1 / 178 ح 707) [و النسائی 1 / 67 ح 91]

٤١٢ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن زيد قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ مِنْ كَفٍّ وَاحِدَةٍ فَعَلَ ذَلِك ثَلَاثًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

412. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप ने एक ही चुल्लू से कुल्ली की और नाक में पानी डाला, और आप ने तीन मर्तबा ऐसे ही किया| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (119) و الترمذی (28 وقال : حسن غریب) [و ھو متفق علیه / رواہ البخاری (191) و مسلم (235)، (555)]

٤١٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَسَحَ بِرَأْسِهِ وَأُذُنَيْهِ: بَاطِنَهُمَا بِالسَّبَّاحَتَيْنِ وَظَاهِرَهُمَا بإبهاميه)»» (رَوَاهُ النَّسَائِيّ)

413. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने अपने सर का मसाह किया, और आप ने कानों के अन्दर के हिस्सों का शहादत की उंगलियों से और बाहर के हिस्सों का अंगूठो से मसाह किया| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ النسائی (1 / 74 ح 102) [و الترمذی (36) و ابن ماجه (439)]

٤١٤ - (حسن) وَعَن الرّبيع بنت معوذ: أَنَّهَا رَأَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَوَضَّأُ قَالَتْ فَمَسَحَ رَأْسَهُ مَا أَقْبَلَ مِنْهُ وَمَا أَدْبَرَ وَصُدْغَيْهِ وَأُذُنَيْهِ مَرَّةً وَاحِدَةً»» وَفِي رِوَايَةٍ أَنَّهُ تَوَضَّأَ فَأَدْخَلَ أُصْبُعَيْهِ فِي جُحْرَيْ أُذُنَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ الرِّوَايَةَ الأولى وَأحمد وَابْن مَاجَه الثَّانِيَة

414. रुब्बीअ बिन्ते मुअव्विज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को वुज़ू करते हुए देखा, उन्होंने कहा: आप ने अपने सर की अगली जानिब और पिछली जानिब (पुरे सर का) दोनों कनपटियों और दोनों कानों का एक मर्तबा मसाह किया, और एक रिवायत में है की आप ﷺ ने वुज़ू किया तो अपने दो उंगलिया अपने दोनों कानों के सुराखों मैं डाली| अबू दावुद, तिरमिज़ी ने पहली रिवायत बयान की जबकि अहमद और इब्ने माजा ने दूसरी| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (129 ، [131 حسن]) و الترمذی (34) و احمد (6 / 359 ح 27559) و ابن ماجه (441) * عبدالله بن محمد بن عقيل : ضعيف ضعفه الجمهور كما حققته فی تحقيق سنن ابی داود (128) و قوله :’’ و صدغيه ‘‘ لم اجد له شاهدا و الباقی حسن بالشواهد ، رواية الترمذی و ابن ماجة : حسنة بالشواهد

٤١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ: أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ وَأَنَّهُ مَسَحَ رَأْسَهُ بِمَاءٍ غَيْرِ فَضْلِ يَدَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَرَوَاهُ مُسلم مَعَ زَوَائِد

415. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को देखा के आप ने वुज़ू किया और यह कि आप ने अपने हाथो के साथ लगे हुए पानी के अलावा अलग पानी से सर का मसाह किया| तिरमिज़ी जबकि मुस्लिम ने कुछ ज़वाईद के साथ रिवायत किया है| (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه الترمذی (35 وقال : حسن صحيح) و مسلم (19 / 236)، (559)

٤١٦ - (صَحِيح) وَعَن أبي أُمَامَة ذَكَرَ وُضُوءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَكَانَ يَمْسَحُ الْمَاقَيْنِ وَقَالَ: الْأُذُنَانِ مِنَ الرَّأْسِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَذَكَرَا: قَالَ حَمَّادٌ: لَا أَدْرِي: الْأُذُنَانِ مِنَ الرَّأْسِ مِنْ قَوْلِ أَبِي أُمَامَةَ أَمْ مِنْ قَوْلُ ص:١٣ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

416. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ के वुज़ू का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया, आप ﷺ दोनों गोशे चश्म (दोनों आंखो के नाक से मिलने वाले हिस्से) का मसाह किया करते थे, निज़ आप ﷺ ने फ़रमाया के “कान सर का हिस्सा है”| # और दोनों इमाम अबू दावुद और इमाम तिरमिज़ी, ने ज़िक्र किया के हम्माद ने कहा: मुझे मालुम नहीं की “कान सर का हिस्सा है”, यह अबू उमामा का कौल है या रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (444) و ابوداؤد (134) و الترمذی (37 و اعله) [و للحديث شواهد وهوبها حسن]

٤١٧ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جده قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُهُ عَنِ الْوُضُوءِ

فَأَرَاهُ ثَلَاثًا ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: «هَكَذَا الْوُضُوءُ فَمَنْ زَادَ عَلَى هَذَا فَقَدْ أَسَاءَ وَتَعَدَّى وَظَلَمَ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ مَعْنَاهُ

417. अम्र बिन शुऐब अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की एक देहाती नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने आप से वुज़ू के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने तीन तीन मर्तबा आज़ाए वुज़ू धो कर इसे दिखाए, फिर फ़रमाया: “इस तरह (मुकम्मल) वुज़ू है, पस जिस ने उस से ज़्यादा मर्तबा किया उस ने बुरा किया हद से तजावुज़ किया और ज़ुल्म किया “| नसई, इब्ने माजा जबकि अबू दावुद ने इसी मानी में रिवायत किया है | (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (1 / 88 ح 140) و ابن ماجه (422) و ابوداؤد (135) [و ابن خزيمة : 174]

٤١٨ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن الْمُغَفَّل أَنه سمع ابْنه يَقُول: الله إِنِّي أَسْأَلُكَ الْقَصْرَ الْأَبْيَضَ عَنْ يَمِينِ الْجَنَّةِ قَالَ: أَيْ بُنَيَّ سَلِ اللَّهَ الْجَنَّةَ وَتَعَوَّذْ بِهِ مِنَ النَّارِ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «إِنَّه سَيكون فِي هَذِهِ الْأُمَّةِ قَوْمٌ يَعْتَدُونَ فِي الطَّهُورِ وَالدُّعَاءِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

418. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अपने बेटे को दुआ करते हुए सुना: “ए अल्लाह! मैं तुझ से जन्नत के दाएँ तरफ सफ़ेद महल की दरख्वास्त करता हूँ, तो उन्होंने ने फ़रमाया: बेटा! अल्लाह से जन्नत की दरख्वास्त करो और जहन्नम से उसकी पनाह तलब करो, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अनकरीब मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग होंगे जो वुज़ू (के आज़ाअ धोने) और दुआ करने में हद से तजावुज़ करेंगे”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 87 ح 16924) و ابوداؤد (96) و ابن ماجه (3864) [و صححه ابن حبان (الموارد : 171 ، 172) و الحاكم (1 / 540) و وافقه الذهبى]

٤١٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ لِلْوُضُوءِ شَيْطَانًا يُقَالُ لَهُ الْوَلَهَانُ فَاتَّقُوا وَسْوَاسَ الْمَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ عِنْدَ أَهْلِ الْحَدِيثِ لِأَنَّا لَا نَعْلَمُ أَحَدًا أَسْنَدَهُ غَيْرَ خَارِجَةَ وَهُوَ لَيْسَ بِالْقَوِيّ عِنْد أَصْحَابنَا

419. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दौरान वुज़ू वसवसे डालने वाले शैतान का नाम “वल्हान” है, चुनांचे पानी के इस्तेमाल के वक़्त वस्वसो से बचो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (57) و ابن ماجه (421) * خارجة بن مصعب : متروک مدلس عن الكذابين

٤٢٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَوَضَّأَ مسح وَجهه ص:١٣ بِطرف ثَوْبه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

420. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप ने वुज़ू किया तो अपने कपड़े के किनारे से अपने चेहरे को साफ़ किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (54 و ضعفه) * رشدين و عبد الرحمن بن انعم ضعيفان

٤٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِرْقَةٌ يُنَشِّفُ بِهَا أَعْضَاءَهُ بَعْدَ الْوُضُوءِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ بِالْقَائِمِ وَأَبُو مُعَاذٍ الرَّاوِي ضَعِيف عِنْد أهل الحَدِيث

421. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास कपड़े का एक टुकड़ा था, आप उस के साथ वुज़ू के बाद अपने आज़ाअ साफ़ किया करते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस सहीह नहीं, अबू मुआज़ रावी मुहद्दीसिन के नज़दीक जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (53) * ابو معاذ سليمان بن ارقم : ضعيف



वुज़ू की सुन्नतो का बयान • بَاب سنَن الْوضُوء

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٢٢ - (ضَعِيف) عَنْ ثَابِتِ بْنِ أَبِي صَفِيَّةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي جَعْفَرٍ هُوَ مُحَمَّدٌ الْبَاقِرُ حَدَّثَكَ جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ مرّة مرّة ومرتين مرَّتَيْنِ وَثَلَاثًا ثَلَاثًا. قَالَ: نعم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

422. साबित बिन अबू सफिया रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अबू जाफर मुहम्मद अल बाकिर रहिमहुल्लाह से कहा, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने आप को यह हदीस बयान की है के नबी ﷺ ने एक एक मर्तबा दो दो मर्तबा और तीन तीन मर्तबा वुज़ू किया है उन्होंने कहा: हाँ| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (45) و ابن ماجه (410) * ثابت بن ابی صفية ضعيف رافضی و حديث البخاری (157 ، 158 ، 159) يغنی عن هذا الحديث

٤٢٣ - (لَا أصل لَهُ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ وَقَالَ: هُوَ «نُورٌ عَلَى نُورٍ»

423. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दो दो मर्तबा वुज़ू किया और फ़रमाया: "वो नूर पर नूर (सोने पे सुहागा है)"| (रजिन मझे नहीं मिली)

لا اصل له ، رواه رزين (لم اجده) * و انظر الترغيب و الترهيب (1 / 163 ح 315) للمنذری ، و تخريج احياء علوم الدين للعراقی (1 / 135)

٤٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَوَضَّأَ ثَلَاثًا ثَلَاثًا وَقَالَ: «هَذَا وُضُوئِي وَوُضُوءُ الْأَنْبِيَاءِ قَبْلِي وَوُضُوءُ إِبْرَاهِيمَ» . رَوَاهُمَا رَزِينٌ وَالنَّوَوِيُّ ضَعَّفَ الثَّانِي فِي شرح مُسلم

424. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, के रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन तीन मर्तबा वुज़ू किया और फ़रमाया: “ये मेरा, मुझ से पहले अंबिया अलैहिस्सलाम और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वुज़ू है, रजिन ने दोनों रिवायतों की, जबकि इमाम नववी ने शरह सहीह मुस्लिम में दूसरी रिवायत को जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) و ضعفه النووى فى شرح صحيح مسلم (3 / 114) [رواه ابن ماجه (419 فيه عبد الرحيم بن زيد العمى كذاب و ابوه ضعيف و معاوية بن قرة : لم يلق ابن عمر ، و 420 و سنده ضعيف) و للحديث شواهد ضعيفة]

٤٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَوَضَّأُ لِكُلِّ صَلَاةٍ وَكَانَ ص:١٣ أَحَدُنَا يَكْفِيهِ الْوُضُوءُ مَا لَمْ يُحْدِثْ. رَوَاهُ الدَّرَامِي

425. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हर नमाज़ के लिए वुज़ू किया करते थे, जबकि हमारे किसी के लिए (पहला) वुज़ू काफी रहता है जब तक उस का वुज़ू न टूटे| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمى (1 / 183 ح 726) [و البخارى (214]

٤٢٦ - (حسن) وَعَن مُحَمَّد بن يحيى بن حبَان الْأَنْصَارِيّ ثمَّ الْمَازِنِي مَازِن بني النجار عَن عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ قلت لَهُ أَرَأَيْتَ وُضُوءَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ لِكُلِّ صَلَاةٍ طَاهِرًا كَانَ أَوْ غَيْرَ طَاهِرٍ عَمَّنْ أَخَذَهُ؟ فَقَالَ: حَدَّثَتْهُ أَسْمَاءُ بِنْتُ زَيْدِ بْنِ الْخَطَّابِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ حَنْظَلَةَ بْنِ أَبِي عَامر ابْن الْغَسِيلِ حَدَّثَهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ أُمِرَ بِالْوُضُوءِ لِكُلِّ صَلَاةٍ طَاهِرًا كَانَ أَوْ غَيْرَ طَاهِرٍ فَلَمَّا شَقَّ ذَلِكَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُمِرَ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ وَوُضِعَ عَنْهُ الْوُضُوءُ إِلَّا مِنْ حَدَثٍ قَالَ فَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ يَرَى أَنَّ بِهِ قُوَّةً عَلَى ذَلِكَ كَانَ يَفْعَله حَتَّى مَاتَ. رَوَاهُ أَحْمد

426. मुहम्मद बिन याह्या बिन हब्बान रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से कहा: तुमने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को हर नमाज़ के लिए वुज़ू करते हुए देखा है? कतअ नज़र उस के की वह पहले ही बा-वुज़ू थे या बे-वुज़ू, निज़ उन्होंने यह मसअले कहाँ से लिया है? उन्होंने कहा: अस्मा बिन्ते ज़ैद बिन ख़िताब ने उन्हें हदीस बयान की के अब्दुल्लाह बिन हंजल बिन अबी आमिर अल गसील ने उन्हें हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ को वुज़ू होने या वुज़ू न होने हर दो सूरतो में हर नमाज़ के लिए वुज़ू करने का हुक्म दिया गया, चुनांचे जब रसूलुल्लाह ﷺ पर यह हुक्म दुश्वार हुआ, तो आप को हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म दिया गया और वुज़ू का हुक्म ख़त्म कर दिया गया, अलबत्ता वुज़ू न होने की सूरत में वुज़ू करने का हुक्म बाकी रहा, रावी बयान करते हैं, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु समझते थे की उन्हें हर नमाज़ के लिए नया वुज़ू करने की इस्तिताअत हासिल है लिहाज़ा वह मरते दम तक उस अमल पर कायम रहे| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 225 ح 22306) [و ابوداؤد (48) و صححه ابن خزيمه (15) و الحاكم علىٰ شرط مسلم (1 / 156) و وافقه الذهبى]

٤٢٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَرَّ بِسَعْدٍ وَهُوَ يَتَوَضَّأُ فَقَالَ: «مَا هَذَا السَّرَفُ يَا سَعْدُ» . قَالَ: أَفِي الْوُضُوءِ سَرَفٌ؟ قَالَ: «نَعَمْ وَإِنْ كُنْتَ عَلَى نَهْرٍ جَارٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

427. अब्दुल्लाह बिन अम्र और बिन आस रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ साद रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे जबकि वह वुज़ू कर रहे थे, आप ने फ़रमाया: “साद यह कैसा फिजूलखर्ची है?” उन्होंने अर्ज़ किया, क्या वुज़ू करने में भी फिजूलखर्ची है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ख्वाह तुम बहती नहर पर हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 221 ح 7065) و ابن ماجه (425) [و ضعفه البوصیری فی الزوائد] * عبدالله بن لهيعة مدلس و عنعن

٤٢٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَابْنِ مَسْعُودٍ وَابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ تَوَضَّأَ وَذَكَرَ اسْمَ اللَّهِ فَإِنَّهُ يُطَهِّرُ جَسَدَهُ كُلَّهُ وَمَنْ تَوَضَّأَ وَلَمْ يَذْكُرِ اسْمَ الله لم يطهر إِلَّا مَوضِع الْوضُوء»

428. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु इब्ने मसउद और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने वुज़ू किया और (بِسْمِ اللَّهِ) “अल्लाह के नाम से” पढ़ी उस ने अपना पूरा जिस्म पाक कर लिया, और जो शख़्स वुज़ू करे लेकिन (بِسْمِ اللَّهِ) “अल्लाह के नाम से” ना पढ़े तो वह सिर्फ आज़ाए वुज़ू ही पाक करता है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الدارقطنی (1 / 73 ، 75) * حدیث ابی ہریرۃ : رواه الدارقطنی (1 / 74 ح 229) فیه مرداس بن محمد ضعیفحدیث ابن مسعود : رواه الدارقطنی (1 / 74 ح 228) فیه یحیی بن ہاشم ضعیفحدیث ابن عمر : رواه الدارقطنی (ح230) فیه عبدالله بن حکیم ابوبکر الداھری وھو ضعیف جدًا

٤٢٩ - (ضَعِيف) وَعَن أبي رَافع قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا تَوَضَّأَ وُضُوءَ الصَّلَاةِ ص:١٣ حَرَّكَ خَاتَمَهُ فِي أُصْبُعه. رَوَاهُمَا الدَّارَقُطْنِيّ. وروى ابْن مَاجَه الْأَخير

429. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए वुज़ू करते तो आप अपने अंगूठी को ऊँगली में हिलाते थे | और दोनों रिवायत दार कुतनी ने रिवायत की है और इब्ने माजा ने आखिरी को रिवायत की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الدارقطنی (1 / 83 وقال : معمر (بن محمد بن عبیدالله) و ابوه ضعیفان ولا یصح ھذا) و ابن ماجه (449 وقال البوصیری : ھذا اسناد ضعیف لضعف معمر و ابیه)

गुसल का बयान • بَاب الْغسْل

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٤٣٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذا جلس بَيْنَ شُعَبِهَا الْأَرْبَعِ ثُمَّ جَهَدَهَا فَقَدْ وَجَبَ الْغسْل وَإِن لم ينزل»

430. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई इस (यानी अपने अहलिया) की चार शाखों के दरमियान बैठें फिर इसे मशक़्क़त में मुब्तिला (यानी जिमाअ) करे तो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है, ख्वाह कुछ निकला न हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (291) و مسلم (87 / 348)، (783)

٤٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحْيِي السّنة C: هَذَا مَنْسُوخ

431. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पानी (गुसल) पानी (मनी के निकलने) से है”| # अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी (रह) ने फ़रमाया: यह हदीस मंसूख है (मुस्लिम)

رواه مسلم (81 ، 80 / 343)، (776) * و انظر شرح السنة لمحى السنة البغوی (2 / 6 بعد ح 243)

٤٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّمَا الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ فِي الِاحْتِلَامِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَلَمْ أَجِدْهُ فِي الصَّحِيحَيْنِ

432. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: पानी पानी से है, यह इहतिलाम के बारे में है, तिरमिज़ी, और मैंने इसे सहीहैन में नहीं पाया| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (112) * فیه شریک القاضی مدلس و عنعن و باقی السند حسن

٤٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ فَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ من غسل إِذا احْتَلَمت قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «إِذا رَأَتِ الْمَاءَ» فَغَطَّتْ أُمُّ سَلَمَةَ وَجْهَهَا وَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوَتَحْتَلِمُ الْمَرْأَةُ قَالَ: «نعم تربت يَمِينك فَبِمَ يشبهها وَلَدهَا؟»

433. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बेशक अल्लाह हक़ बात से नहीं शरमाता, जब औरत को इहतिलाम हो जाए तो क्या उस पर ग़ुस्ल करना

वाजिब है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, जब वह पानी (मनी के आसार) देखे”, (ये सुन कर) उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा ने अपना चेहरा ढांप लिया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या औरत को भी एहतिलाम होता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, तेरा दायाँ हाथ खाक आलूद हो, तो फिर उस का बच्चा उस से कैसे मुशाबिहत इख़्तियार करता ?” (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (130) و مسلم (32 / 313)، (712)

٤٣٤ - (صَحِيح) وَزَادَ مُسْلِمٌ بِرِوَايَةِ أَمِّ سُلَيْمٍ: «أَنَّ مَاءَ الرَّجُلِ غَلِيظٌ أَبْيَضُ وَمَاءَ ص:١٣ الْمَرْأَةِ رَقِيقٌ أَصْفَرُ فَم أَيِّهِمَا عَلَا أَوْ سَبَقَ يَكُونُ مِنْهُ الشَّبَهُ»

434. इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा के तरीक से जो रिवायत बयान की है उस में यह इज़ाफा नकल किया है: “आदमी का पानी गाढ़ा सफ़ेद होता है, जबकि औरत का पानी पतला ज़र्द होता है, पस इन दोनों में से जिस का पानी ग़ालिब आ जाए या सबकत ले जाए तो बच्चे की मुशाबिहत इसी पर हो जाती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (30 / 311)، (710)

٤٣٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَةُ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ بَدَأَ فَغَسَلَ يَدَيْهِ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ كَمَا يَتَوَضَّأُ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ يُدْخِلُ أَصَابِعَهُ فِي الْمَاءِ فَيُخَلِّلْ بِهَا أُصُولَ شَعَرِهِ ثمَّ يصب على رَأسه ثَلَاث غرف بيدَيْهِ ثمَّ يفِيض المَاء على جلده كُله»»   وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: يَبْدَأُ فَيَغْسِلُ يَدَيْهِ قَبْلَ أَنْ يُدْخِلَهُمَا الْإِنَاءَ ثُمَّ يُفْرِغُ بِيَمِينِهِ عَلَى شِمَاله فَيغسل فرجه ثمَّ يتَوَضَّأ

435. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ग़ुस्ल ए जनाबत फरमाते, तो आप सबसे पहले हाथ धोते, फिर वुज़ू फरमाते जैसे नमाज़ के लिए वुज़ू किया जाता है, फिर अपने उंगलिया पानी में दाखिल करते और उस से अपने बालो की जड़ो का खिलाल करते, फिर अपने सर पर तीन चुल्लू पानी डालते, फिर अपने पुरे जिस्म पर पानी बहाते | मुत्तफ़िक़ अलैह: और मुस्लिम की रिवायत में है आप ﷺ ग़ुस्ल फरमाते, तो आप ﷺ अपने हाथो को किसी बर्तन में डालने से पहले धोते, फिर अपने दाएँ हाथ से बाएँ हाथ पर पानी डालते और अपने शर्मगाह को धोते फिर वुज़ू फरमाते| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (248) و مسلم (35 / 316)، (718)

٤٣٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ قَالَتْ مَيْمُونَةُ: وَضَعْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُسْلًا فَسَتَرْتُهُ بِثَوْبٍ وَصَبَّ عَلَى يَدَيْهِ فَغَسَلَهُمَا ثُمَّ صَبَّ بِيَمِينِهِ عَلَى شَمَالِهِ فَغَسَلَ فَرْجَهُ فَضَرَبَ بِيَدِهِ الْأَرْضَ فَمَسَحَهَا ثُمَّ غَسَلَهَا فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ وَغَسَلَ وَجْهَهُ وَذِرَاعَيْهِ ثُمَّ صَبَّ عَلَى رَأْسِهِ وَأَفَاضَ عَلَى جَسَدِهِ ثُمَّ تَنَحَّى فَغَسَلَ قَدَمَيْهِ فَنَاوَلْتُهُ ثَوْبًا فَلَمْ يَأْخُذْهُ فَانْطَلق وَهُوَ ينفض يَدَيْهِ. وَلَفظه لِلْبُخَارِيّ

436. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैमुना रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: मैंने नबी ﷺ के लिए ग़ुस्ल करने के लिए पानी रखा, और एक कपड़े से आप पर परदा किया, आप ने अपने दोनों हाथो पर पानी डाला तो उन्हें धोया, फिर आप ने अपने हाथो पर पानी डाला तो उन्हें धोया, फिर अपने दाएँ हाथ से बाएँ हाथ पर पानी डालकर शर्मगाह को धोया, फिर आप ने अपना हाथ ज़मीन पर मला और इसे धोया, फिर आप ने कुल्ली की, नाक में पानी डाला, अपना चेहरा और बाज़ू धोए, फिर सर पर पानी डाला, और सारे जिस्म पर पानी बहाया, फिर आप ﷺ ने इस जगह से हट कर पाँव धोए, मैंने आप को कपड़ा दिया, लेकिन आप ने न लिया, फिर आप ﷺ हाथो से पानी साफ़ करते तशरीफ़ ले गए और यह अल्फाज़ बुखारी के है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (276) و مسلم (37 / 317)، (722)

٤٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: عَنِ غُسْلِهَا مِنَ الْمَحِيضِ فَأَمَرَهَا كَيْفَ تَغْتَسِل قَالَ: «خُذِي فِرْصَةً مِنْ مَسْكٍ فَتَطَهَّرِي بِهَا» قَالَت كَيفَ أتطهر قَالَ «تطهري ص:١٣ بهَا» قَالَت كَيف قَالَ «سُبْحَانَ الله تطهري» فاجتبذتها إِلَيّ فَقلت تتبعي بهَا أثر الدَّم

437. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, अंसार की एक खातून ने ग़ुस्ल ए हैज़ के मुतल्लिक नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया, आप ﷺ ने इसे बताया के वह कैसे ग़ुस्ल करेगी, फिर फ़रमाया: “कस्तूरी लगा हुआ रुई का एक टुकड़ा लेकर उस से तहारत हासिल करो”, उस ने अर्ज़ किया, मैं उस से कैसे तहारत हासिल करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस से तहारत हासिल करो”, उस ने फिर अर्ज़ किया, मैं उस से कैसे तहारत हासिल करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “(سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह उस से तहारत हासिल करो”, (आइशा रदियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं) पस मैंने इसे अपने तरफ खींच लिया और बताया इसे खून की जगह (शर्मगाह) पर रख ले| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (314) و مسلم (60 / 332)، (748)

٤٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ قُلْتُ: يَا رَسُولَ الله إِنِّي امْرَأَة أَشد ضفر رَأْسِي فأنقضه لغسل الْجَنَابَة قَالَ «لَا إِنَّمَا يَكْفِيكِ أَنْ تَحْثِي عَلَى رَأْسِكِ ثَلَاثَ حَثَيَاتٍ ثُمَّ تُفِيضِينَ عَلَيْكِ الْمَاءَ فَتَطْهُرِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

438. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं एक ऐसी औरत हूँ की मैं अपने सर के बालो को मज़बूत गूंधती हूँ, तो क्या मैं ग़ुस्ल ए जनाबत के लिए उसे खोल दिया करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, तुम्हारे लिए यही काफी है के तुम अपने सर पर तीन चुल्लू पानी डालो, फिर अपने जिस्म पर पानी बहा लो, पस तुम पाक हो जाओगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 330)، (744)

٤٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَوَضَّأُ بِالْمُدِّ وَيَغْتَسِلُ بِالصَّاعِ إِلَى خَمْسَةِ أَمْدَادٍ

439. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ एक मुद (तकरीबन छेस्सो ग्राम मिली लीटर) से वुज़ू और एक साअ (चार मुद) से पांच मुद तक पानी से ग़ुस्ल किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (201) و مسلم (51 / 325)، (737)

٤٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ إِنَاءٍ بيني وَبَينه وَاحِد فَيُبَادِرُنِي حَتَّى أَقُولَ دَعْ لِي دَعْ لِي قَالَت وهما جنبان

440. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: मैं और रसूलुल्लाह ﷺ एक बर्तन से, जो के हमारे दरमियान होता था, ग़ुस्ल किया करते थे, आप मुझ से जल्दी फरमाते थे हत्ता कि मैं कहती: मेरे लिए (पानी) रहने दें, मेरे लिए रहने दें, जबकि वह दोनों जुनुबी होते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، [رواه البخاری (250) من حدیث عروة عنها] و مسلم (46 / 321)، (732)

بَاب الْغسْل • गुसल का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٤١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الرَّجُلِ يَجِدُ الْبَلَلَ وَلَا يَذْكُرُ احْتِلَامًا قَالَ «يَغْتَسِلُ» وَعَنِ الرَّجُلِ يَرَى أَنه قد احْتَلَمَ وَلم يَجِدُ بَلَلًا قَالَ: «لَا غُسْلَ عَلَيْهِ» قَالَتْ أم سَلمَة يَا رَسُول الله هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ تَرَى ذَلِكَ ص:١٣ غُسْلٌ قَالَ «نَعَمْ إِنَّ النِّسَاءَ شَقَائِقُ الرِّجَالِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَرَوَى الدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَى قَوْله: «لَا غسل عَلَيْهِ»

441. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से इस आदमी के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया गया जो (अपने जिस्म या कपड़ो पर) नमी पाता है लेकिन इसे इहतिलाम याद नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो ग़ुस्ल करेगा”, और फिर इस शख़्स के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया गया जो समझता है के इसे इहतिलाम हुआ है लेकिन वह कोई नमी नहीं पाता, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस पर ग़ुस्ल लाज़िम नहीं”, उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया: क्या आप औरत पर भी यह ग़ुस्ल वाजिब समझते है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, क्योंकि औरते भी तखलीक व तिब्ब में मर्दों की तरह है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, दारमी और इब्ने माजा ने (لَا غسل عَلَيْهِ) तक रिवायत किया है| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (113 و اعله) و ابوداؤد (236) و الدارمی (1 / 195 ، 196 ح 771) و ابن ماجه (612) * عبدالله العمری ضعیف عن غیر نافع و لبعض الحدیث شواهد عند مسلم (314)، (715) و غیره

٤٤٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا جَاوَزَ الْخِتَانُ الْخِتَانَ وَجَبَ الْغُسْلُ. فَعَلْتُهُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاغْتَسَلْنَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

442. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करतीहैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मर्द की शर्मगाह औरत की शर्मगाह में दाखिल हो जाए तो ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है, मैं और रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसा किया तो हम ने ग़ुस्ल किया| (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (108 ، 109 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (608) [و صححه ابن حبان الاحسان : 1172]

٤٤٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «تَحت كل شَعْرَة جَنَابَةٌ فَاغْسِلُوا الشَّعْرَ وَأَنْقُوا الْبَشْرَةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَالْحَارِثُ بْنُ وَجِيهٍ الرَّاوِي وَهُوَ شيخ لَيْسَ بذلك

443. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया हर बाल के नीचे जनाबत है, बाल धोओ और जिस्म को साफ करो| अबू दावुद तिरमिज़ी इब्ने माजा, इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस गरीब है, हारिस बिन वजिही रावी उमर रसीदा है, और इस की रिवायत की तौशिक नहीं की जा सकती | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (248) و الترمذى (106) و ابن ماجه (597) * الحارث بن وجيه : ضعيف

٤٤٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ تَرَكَ مَوْضِعَ شَعَرَةٍ مِنْ جَنَابَةٍ لَمْ يَغْسِلْهَا فعل بهَا كَذَا وَكَذَا من النَّار» . قَالَ عَلِيٌّ فَمن ثمَّ عاديت رَأْسِي ثَلَاثًا فمن ثمَّ عاديت رَأْسِي ثَلَاثًا فَمِنْ ثَمَّ عَادَيْتُ رَأْسِي ثَلَاثًا. ص:١٣ (رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَأَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ إِلَّا أَنَّهُمَا لَمْ يُكَرِّرَا: فَمن ثمَّ عاديت رَأْسِي)

444. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने बाल बराबर जाए जनाबत छोड़ दी और इसे न धोया तो इसे जहन्नम में इस इस तरह की सज़ा दी जाएगी, अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने इसलिए अपना सर मुंडा लिया, मैंने इसीलिए अपना सर मुंडा लिया, मैंने इसीलिए अपना सर मुंडा लिया, यह जुमला आपने तीन मर्तबा फ़रमाया| अबू दावुद अहमद दारमी| अलबत्ता इन दोनों (अहमद और दारमी) ने मैंने इसीलिए अपना सर मुंडा लिया का तकरार ज़िक्र नहीं किया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (249) و احمد (1 / 94 ح 727 ، 1 / 101 ح 1121) و الدارمى (1 / 192 ح 757) [و ابن ماجه (599)] * حماد بن سلمة سمع من عطاء بن السائب قبل اختلاطه عند الجمهور ، و صححه الحافظ ابن حجر فى التلخيص الحبير (1 / 142) و ذكر كلامًا

٤٤٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يتَوَضَّأ بعد الْغسْل. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

445. आएशा (र.अ.) बयान करतीहैं। नबी ﷺ ग़ुस्ल के बाद वुज़ू नहीं किया करते थे। (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (250) و الترمذی (107) و النسائی (1 / 137 ح 253) و ابن ماجه (579) [و صححه الحاکم علیٰ شرط الشیخین (1 / 153) و وافقه الذهبی] * ابو اسحاق السبیعی مدلس و لم یصرح بالسماع فی هذا اللفظ

٤٤٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْسِلُ رَأْسَهُ بِالْخِطْمِيِّ وَهُوَ جُنُبٌ يَجْتَزِئُ بِذَلِكَ وَلَا يَصُبُّ عَلَيْهِ الْمَاءَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

446. आएशा (र.अ.) बयान करतीहैं, नबी ﷺ ख़त्मी से अपना सर धोया करते थे जबकि आप जुनुबी होते थे, आप उसी पर इक्तिफ़ा फरमाते और उसपर पानी नहीं डालते थे। (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (256) * رجل من بنی سواة : مجهول

٤٤٧ - (حسن) وَعَن يعلى: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَجُلًا يَغْتَسِلُ بِالْبَرَازِ فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَحَمِدَ الله وَأَثْنى عَلَيْهِ وَقَالَ: «إِن الله عز وَجل حيِيّ ستير يحب الْحيَاء والستر فَإِذَا اغْتَسَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَتِرْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَفِي رِوَايَتِهِ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ سِتِّيرٌ فَإِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ أَنْ يَغْتَسِلَ فَلْيَتَوَارَ بِشَيْءٍ»

447. यअला रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी शख़्स को खुले मैदान में (उरियाँ) ग़ुस्ल करते हुए देखा, तो आप ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया: "बेशक अल्लाह हयादार, पर्दा पोशी करने वाला है, वह हयादारी और पर्दा पोशी को पसंद फ़रमाता है, पस जब तुम में से कोई नहाए तो वह पर्दा करे।" अबू दाऊद, नसई। और नसई की एक रिवायत में है: "बेशक अल्लाह पर्दा पोशी करने वाला है, पस जब तुम में से कोई ग़ुस्ल करना चाहे तो वह किसी चीज़ से पर्दा करले। (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (4012) و النسائی (1 / 200 ح 406) * بین عطاء و یعلی : صفوان بن یعلی کما بینته فی نیل المقصود (1819)

बَاب الْغسْل • गुसल का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٤٨ - (صَحِيح) عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: إِنَّمَا كَانَ الْمَاءُ مِنَ الْمَاءِ رُخْصَةً فِي أَوَّلِ الْإِسْلَامِ ثُمَّ نهي عَنْهَا

448. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं। पानी (ग़ुस्ल), पानी (अन्ज़ाल) की वजह से वाजिब होता है, इस बारे में शुरू इस्लाम में रुख़सत थी, फिर उस से मना कर दिया गया। (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (110) و ابوداؤد (214) و الدارمی (1 / 194 ح 765) [و ابن ماجه (609) و ابن خزیمة (226)]

٤٤٩ - (ضَعِيف) وَعَن عَليّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنِّي اغْتَسَلْتُ مِنَ الْجَنَابَةِ وَصليت الْفجْر ثمَّ أَصبحت فَرَأَيْتُ قَدْرَ مَوْضِعِ الظُّفُرِ لَمْ يُصِبْهُ الْمَاءُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كُنْتَ مَسَحْتَ عَلَيْهِ بِيَدِكَ أَجْزَأَكَ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

449. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने ग़ुस्ल ए जनाबत किया और मैं ने नमाज़-ए-फ़ज्र अदा की, फिर मैंने नाख़ून बराबर ख़ुश्क देखी जहाँ पानी नहीं पहुँचा था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम अपना गीला हाथ उसपर फेर देते तो वह तुम्हारे लिए काफ़ी होता।” (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (664)* قال البوصيرى :'' هذا اسناد ضعيف لضعف محمد بن عبدالله العيرزمى '' وهو متروک کما فی التقریب

٤٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن عمر قَالَ كَانَتِ الصَّلَاةُ خَمْسِينَ وَالْغُسْلُ مِنَ الْجَنَابَةِ سبع مرار وَغسل الْبَوْل من الثَّوْب سبع مرار فَلَمْ يَزَلْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْأَلُ حَتَّى جعلت الصَّلَاة خمْسا وَالْغسْل من الْجَنَابَة مرّة وَغسل الْبَوْل من الثَّوْب مرّة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

450. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नमाज़ें पचास थीं, ग़ुस्ल-ए-जनाबत सात मर्तबा था, कपड़े से पेशाब धोना भी सात मर्तबा था, रसूलुल्लाह ﷺ मुसलसल (तख़फ़ीफ़ के लिए अपने रब से) सवाल करते रहे हत्ता कि नमाज़ें पाँच, ग़ुस्ल-ए-जनाबत एक मर्तबा और पेशाब की वजह से कपड़े का धोना एक मर्तबा कर दिया गया। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (247) * ايوب بن جابر : ضعيف

जुनुबी शख़्स से मेलजोल रखने और इस के लिए मुबाह उमूर का बयान • بَاب مُخَالطَة الْجنب

पहली फ़स्ल • الْفَصْل الأول

٤٥١ - (صَحِيح) عَن أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا جُنُبٌ فَأَخَذَ بِيَدِي فمشيت مَعَهُ حَتَّى قَعَدَ فَانْسَلَلْتُ فَأَتَيْتُ الرَّحْلَ فَاغْتَسَلْتُ ثُمَّ جِئْتُ وَهُوَ قَاعِدٌ فَقَالَ: «أَيْنَ كُنْتَ يَا أَبَا هُرَيْرَة» فَقُلْتُ لَهُ فَقَالَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ إِنَّ الْمُؤْمِنَ لَا يَنْجَسُ» . هَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ وَلِمُسْلِمٍ مَعْنَاهُ وَزَادَ بَعْدَ قَوْلِهِ: فَقُلْتُ لَهُ: لَقَدْ لَقِيتَنِي وَأَنَا جُنُبٌ فَكَرِهْتُ أَنْ أُجَالِسَكَ حَتَّى أَغْتَسِلَ. وَكَذَا الْبُخَارِيّ فِي رِوَايَة أُخْرَى

451. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की मुझ से मुलाक़ात हुई मैं उस वक़्त जुनुबी था, पस आप ने मुझे हाथ से पकड़ा तो मैं ने आप के साथ चलना शुरू किया हत्ता कि आप बैठ गए तो मैं वहाँ से चुपके से उठा और घर आकर ग़ुस्ल करके फिर ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप वहीं तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ﷺ

ने फ़रमाया: “अबू हुरैरा! तुम कहाँ थे ?” मैं ने अर्ज़ किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुबहानल्लाह! मोमिन नजिस नहीं होता।” यह बुख़ारी के अलफ़ाज़ हैं। और मुस्लिम की रीवायत भी इस के हम मानी है। और उन्होंने “मैंने आप ﷺ को बताया” के बाद दर्ज ज़ेल अलफ़ाज़ का इज़ाफ़ा नक़ल किया है: “जब आप ﷺ मुझे मिले थे तो मैं जुनुबी था, पस मैं ने ग़ुस्ल किये बगैर आप ﷺ के साथ हम नशीं होना नापसंद किया।” बुख़ारी की दूसरी रिवायत भी इसी तरह है। (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (285) و مسلم (115 / 371)، (824)

٤٥٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنه قَالَ: ذَكَرَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ تُصِيبُهُ الْجَنَابَةُ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَوَضَّأْ وَاغْسِلْ ذَكَرَكَ ثُمَّ نم»

452. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब ने रसूलुल्लाह ﷺ को बताया के वह रात को जुनुबी हो जाते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “वुज़ू कर इस्तिंजा कर और सो जा|| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (290) و مسلم (25 / 306)، (704)

٤٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم إِذَا كَانَ جُنُبًا فَأَرَادَ أَنْ يَأْكُلَ أَوْ ينَام تَوَضَّأ وضوءه للصَّلَاة

453. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ जुनुबी होते और आप खाने या सोने का इरादा फरमाते, तो आप नमाज़ के वुज़ू जैसे वुज़ू फरमाते | (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (288) و مسلم (22 / 305)، (700)

٤٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:١٤ «إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ أَهْلَهُ ثُمَّ أَرَادَ أَنْ يَعُودَ فَلْيَتَوَضَّأْ بَينهمَا وضُوءًا» . رَوَاهُ مُسلم

454. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई अपने अहलिया से जिमाअ करे और फिर वह दोबारा जिमाअ करना चाहे तो वह इन दोनों के दरमियान वुज़ू कर ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (27 / 308)، (707)

٤٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يطوف على نِسَائِهِ وَبِغسْلِ وَاحِد. رَوَاهُ مُسلم

455. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने अज़्वाज ए मूतहरात के पास ग़ुस्ल ए वाहिद के साथ चक्कर लगा लिया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (28 / 309)، (708)

٤٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْكُرُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَحَدِيثُ ابْنِ عَبَّاسٍ سَنَذْكُرُهُ فِي كِتَابِ الْأَطْعِمَةِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

456. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ हर हालत में अल्लाह अज्ज़वजल का ज़िक्र किया करते थे, रवाह मुस्लिम, और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस हम इंशाअल्लाह तआला (كتاب الْأَطْعِمَة) किताब खानों का बयान में ज़िक्र करेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (117 / 373)، (826) 0 حديث ابن عباس ، يأتى (4209)

بَاب مُخَالطَة الْجنب • जुनुबी शख्स से मेलजोल रखने और इस के लिए मुबाह उमूर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٥٧ - (صَحِيح) عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ اغْتَسَلَ بَعْضُ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَفْنَةٍ فَأَرَادَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم إِن يَتَوَضَّأَ مِنْهُ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كُنْتُ جُنُبًا فَقَالَ «إِنَّ الْمَاءَ لَا يُجْنِبُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ. وَرَوَى الدَّارِمِيّ نَحوه

457. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ की किसी ज़ौजा ए मोहतरमा ने एक टब में ग़ुस्ल किया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने उस से ग़ुस्ल करना चाहा तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं तो जुनुबी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “पानी जुनुबी नहीं होता”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा जबकि दारमी ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (65 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (68) و ابن ماجه (370) و الدارمى (1 / 187 ح 740) * سلسلة سماک بن حرب عن عكرمة سلسلة ضعيفة

٤٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ عَنْهُ عَنْ مَيْمُونَةَ بِلَفْظِ المصابيح

458. शरह अल सुनना में मय्मुना अन इब्ने अब्बास मसाबिह के अलफ़ाज़ से मरवी है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (2 / 27 ح 259 من رواية سماک عن عکرمة) [و اصله عند ابن ماجه (372) سماک عن عکرمة] * و انظر الحديث السابق لعلته

٤٥٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْتَسِلُ مِنَ الْجَنَابَةِ ثُمَّ ص:١٤ يَسْتَدْفِئُ بِي قَبْلَ أَنْ أَغْتَسِلَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وروى التِّرْمِذِيّ نَحوه

459. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ग़ुस्ल ए जनाबत किया करते फिर आप मुझ से गर्माइश हासिल करते जबकि मैंने अभी ग़ुस्ल नहीं किया होता था, इब्ने माजा तिरमिज़ी ने भी इसी तरह रिवायत किया है, शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (580) و الترمذى (123 وقال : ليس بإسباده باس !) و البغوى فى شرح السنه (2 / 30 ، 31) * حريث بن ابى مطر : ضعيف

٤٦٠ - (ضَعِيف) وَعَن عَليّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْرُجُ مِنَ الْخَلَاءِ فَيُقْرِئُنَا الْقُرْآنَ وَيَأْكُلُ مَعَنَا اللَّحْم وَلم يكن يَحْجُبْهُ أَوْ يَحْجُزْهُ عَنِ الْقُرْآنِ شَيْءٌ لَيْسَ الْجَنَابَةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ نَحوه

460. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ बैतूलखला से बाहर तशरीफ़ लाते तो हमें क़ुरान पढ़ाते और हमारे साथ गोश्त तनावुल फरमाते और जनाबत के अलावा कोई और चीज़ आप ﷺ को क़ुरान से मानेअ नहीं थी| अबू दावुद, नसई, जबकि इब्ने माजा ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (229) و النسائى (1 / 144 ح 266) و ابن ماجه (594) [و الترمذى : 146 و صححه] * اعل هذا الحديث بما لا يقدح و الحق انه من قبل الحسن ، و صححه ابن خزيمة (208) و ابن حبان (192 ، 193) و ابن الجارود (94) و الحاكم (4 / 107) و وافقه الذهبى و للحديث شواهد و قال الحافظ ابن حجر :'' و الحق انه من قبيل الحسن يصلح للحجة '' (فتح البارى (1 / 408 ح 305)

٤٦١ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقْرَأِ الْحَائِضُ وَلَا الْجُنُبُ شَيْئًا مِنَ الْقُرْآنِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

461. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हाइज़ा और जुनुबी शख़्स क़ुरान से कुछ न पढ़े”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (131 ، و نقل عن البخارى قال : ان اسماعيل بن عياش يروى عن اهل الحجاز و اهل العراق احاديث مناكير) [و ابن ماجه : 595] * روايات اسماعيل بن عياش عن الحجازيين ضعيفة و هذا منها

٤٦٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَجِّهُوا هَذِهِ الْبُيُوتَ عَنِ الْمَسْجِدِ فَإِنِّي لَا أُحِلُّ الْمَسْجِدَ لِحَائِضٍ وَلَا جنب» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

462. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उन घरो के दरवाज़े मस्जिद के दूसरी तरफ कर लो, क्योंकि मैं हाइज़ा और जुनुबी के लिए मस्जिद को हलाल करार नहीं देता”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن رواه ابوداؤد (232) [و صححه ابن خزيمة : 1327] * لا ينزل حديث جسرة عن درجة الحسن و اخطا من ضعف هذا السند

٤٦٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تدخل الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ ص:١٤ صُورَةٌ وَلَا كَلْبٌ وَلَا جنب» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

463. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस घर में तस्वीर, कुत्ता और जुनुबी हो वहां (रहमत व बरकत के) फ़रिश्ते नहीं जाते”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (227) و النسائی (1 / 141 ح 262) [و ابن ماجه (3650) و صححه ابن حبان (الاحسان : 1202) و الحاکم (1 / 171) و وافقه الذهبی] * و اعل بما لا يقدح

٤٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثٌ لَا تَقْرَبُهُمُ الْمَلَائِكَةُ جِيفَةُ الْكَافِرِ وَالْمُتَضَمِّخُ بِالْخَلُوقِ وَالْجُنُبُ إِلَّا أَن يتَوَضَّأ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

464. अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोग है की (रहमत व बरकत के) फ़रिश्ते उन के करीब भी नहीं जाते, काफ़िर की लाश, खुलुक (ज़ाफ़रान की खुशबु) से लथड़े हुए शख़्स और जुनुबी इल्ला यह कि वह वुज़ू कर ले”| (ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4180) * الحسن البصری مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند البزار (كشف الاستار ، 1 / 355) و غيره

٤٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ: أَنَّ فِي الْكِتَابِ الَّذِي كَتَبَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم لعَمْرو بن حزم: «أَن لَا يَمَسَّ الْقُرْآنَ إِلَّا طَاهِرٌ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالدَّارَقُطْنِيُّ

465. अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़म से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अम्र बिन हज़म के नाम जो ख़त लिखा उस में तहरीर था: “सिर्फ पाक शख़्स ही कुरान को हाथ लगा सकता है”| (हसन)

حسن ، رواه مالک فی الموطا (1 / 199 ح 470) و الدارقطنی (1 / 121 ، 122)

٤٦٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: انْطَلَقْتُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ فِي حَاجَة إِلَى ابْن عَبَّاس فَقَضَى ابْنُ عُمَرَ حَاجَتَهُ وَكَانَ مِنْ حَدِيثِهِ

يَوْمَئِذٍ أَنْ قَالَ مَرَّ رَجُلٌ فِي سِكَّةٍ مِنَ السِّكَكِ فَلَقِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ خَرَجَ مِنْ غَائِطٍ أَوْ بَوْلٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ حَتَّى ص:١٤ كَادَ الرَّجُلُ أَنْ يَتَوَارَى فِي السِّكَّةِ ضَرَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدَيْهِ عَلَى الْحَائِطِ وَمَسَحَ بِهِمَا وَجْهَهُ ثُمَّ ضَرَبَ ضَرْبَةً أُخْرَى فَمَسَحَ ذِرَاعَيْهِ ثُمَّ رَدَّ عَلَى الرَّجُلِ السَّلَامَ وَقَالَ: «إِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرُدَّ عَلَيْكَ السَّلَامَ إِلَّا أَنِّي لَمْ أَكُنْ على طهر» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

466. नाफेअ बयान करते हैं, मैं किसी काम की गर्ज़ से इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के साथ गया, पस जब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने अपना काम मुकम्मल कर लिया तो उन्होंने इस दिन एक हदीस सुनाई के एक आदमी किसी गली से गुज़रा तो वह रसूलुल्लाह ﷺ से मिला जबकि आप पेशाब व पाखाना से फारिग़ हो कर आ रहे थे, इस शख़्स ने आप को सलाम किया, लेकिन आप ने इसे जवाब न दिया, हत्ता कि करीब था के वह आदमी गली में से ओजल हो जाता, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने दोनों हाथ दिवार पर मारे और उन्हें अपने चेहरे पर मला, फिर दोबारा हाथ मारे तो उन्हें बाज़ुओ पर मल लिया, फिर आप ﷺ ने इस आदमी को सलाम का जवाब दिया, और फ़रमाया: "तुम्हारे सलाम का जवाब देने में सिर्फ हमें एक रुकावट थी की मैं इस वक़्त बा वुज़ू नहीं था"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (330) * محمد بن ثابت العبدى : ضعيف ضعفه الجمهور ، و الخبر منكر

٤٦٧ - (صَحِيح) وَعَن المُهَاجر بن قنفذ: أَنَّهُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَبُولُ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ حَتَّى تَوَضَّأ ثمَّ اعتذر إِلَيْهِ فَقَالَ: «إِنِّي كرهت أَن أذكر الله عز وَجل إِلَّا على طهر أَو قَالَ على طَهَارَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى النَّسَائِيُّ إِلَى قَوْلِهِ: حَتَّى تَوَضَّأَ وَقَالَ: فَلَمَّا تَوَضَّأَ رَدَّ عَلَيْهِ

467. मुहाजिर कुन्फुज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए जबकि आप पेशाब कर रहे थे, पस उन्होंने आप को सलाम किया लेकिन आप ने वुज़ू कर लेने तक सलाम का जवाब न दिया, फिर आप ﷺ ने उस से माज़रत की और फ़रमाया: "मैंने वुज़ू के बगैर अल्लाह का ज़िक्र करना ना पसंद किया"| अबू दावुद, जईफ और इमाम नसई रहिमहुल्लाह ने (حَتَّى تَوَضَّأَ) तक रिवायत किया, और फ़रमाया जब आप ﷺ ने वुज़ू किया तो उस के सलाम का जवाब दिया| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (17) و النسائی (1 / 37 ح 38) [و ابن ماجه (350) و صححه ابن خزيمة (206) و ابن حبان (الموارد : 189) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 167 ، 3 / 479) و وافقه الذهبى (!)] * الزهرى عنعن و للحديث شواهد دون قوله : حتى توضا

بَاب مُخَالطَة الْجنب • जुनुबी शख्स से मेलजोल रखने और इस के लिए मुबाह उमूर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٦٨ - (ضَعِيف) عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُجْنِبُ ثُمَّ يَنَامُ ثُمَّ يَنْتَبِهُ ثُمَّ يَنَامُ. رَوَاهُ أَحْمد

468. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जुनुबी हो जाते, फिर सो जाते, फिर बेदार होते और फिर सो जाते| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (6 / 298 ح 27087) * شريک القاضی : مدلس و عنعن

٤٦٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ شُعْبَةَ قَالَ: إِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ إِذَا اغْتَسَلَ مِنَ الْجَنَابَةِ يفرغ بِيَدِهِ الْيُمْنَى عَلَى يَدِهِ الْيُسْرَى سَبْعَ مِرَارٍ ثُمَّ يَغْسِلُ فَرْجَهُ فَنَسِيَ مَرَّةً كَمْ أَفْرَغَ فَسَأَلَنِي كم أفرغت فَقُلْتُ لَا أَدْرِي فَقَالَ لَا أُمَّ لَكَ وَمَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَدْرِيَ ثُمَّ يَتَوَضَّأُ وُضُوءَهُ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ يُفِيضُ عَلَى جِلْدِهِ الْمَاءُ ثُمَّ يَقُولُ هَكَذَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يتَطَهَّر. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

469. शुअबा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, के जब इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ग़ुस्ल ए जनाबत करते तो वह सात मर्तबा दाएँ हाथ से बाएँ हाथ पर पानी डालते, फिर शर्मगाह धोते, पस वह यह भूल गए के उन्होंने कितनी मर्तबा पानी डाला, उन्होंने मुझ से पूछा तो मैंने कहा: मैं नहीं जानता , उन्होंने कहा: तेरी माँ न रहे, तुम्हें किस ने रोका की तुम न जानो, फिर वह नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू करते, फिर अपने जिस्म पर पानी बहाते, फिर फरमाते रसूलुल्लाह ﷺ इसी तरह ग़ुस्ल किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (246) * شعبة مولى ابن عباس : ضعيف الجمهور

٤٧٠ - (حسن) وَعَن أَبِي رَافِعٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَافَ ذَاتَ يَوْمٍ عَلَى نِسَائِهِ يَغْتَسِلُ عِنْدَ هَذِهِ وَعِنْدَ هَذِهِ قَالَ فَقُلْتُ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تَجْعَلُهُ غُسْلًا وَاحِدًا آخِرًا قَالَ: «هَذَا أَزْكَى وَأطيب وأطهر» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

470. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रोज़ अपने अज़वाज ए मूतहरात के पास गए, और हर एक के पास जाते वक़्त ग़ुस्ल फ़रमाया, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्यों न आप सबसे आख़िर पर एक ही ग़ुस्ल फरमा लेते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये ज़्यादा पाकिज़ा, ज़्यादा अच्छा और ज़्यादा साफ़ है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 8 ح 24363) و ابوداؤد (219) [و ابن ماجه : 590]

٤٧١ - (صَحِيح) وَعَن الحكم بن عَمْرو قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَتَوَضَّأَ الرَّجُلُ بِفَضْلِ طَهُورِ الْمَرْأَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالتِّرْمِذِيُّ: وَزَادَ: أَوْ قَالَ: بِسُؤْرِهَا. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

471. हकम बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मर्द को औरत के ग़ुस्ल से बचे हुए पानी से वुज़ू करने से मना फ़रमाया| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (82) و ابن ماجه (373) و الترمذی (64) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 1257)]

٤٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْ حُمَيْدٍ الْحِمْيَرِيِّ قَالَ لَقِيتُ رَجُلًا صَحِبَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَ سِنِينَ كَمَا صَحِبَهُ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَغْتَسِلَ وَالْمَرْأَة بِفَضْلِ الرَّجُلِ أَوْ يَغْتَسِلَ الرَّجُلُ بِفَضْلِ الْمَرْأَةِ. زَادَ مُسَدَّدٌ: وَلْيَغْتَرِفَا جَمِيعًا رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ ص:١٤ وَالنَّسَائِيّ وَزَاد أَحْمد فِي أَوله: نهى أَنْ يَمْتَشِطَ أَحَدُنَا كُلَّ يَوْمٍ أَوْ يَبُولَ فِي مغتسل

472. हुमैद अल हिमयरी बयान करते हैं, मैं एक आदमी से मिला जिसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की तरह नबी ﷺ से चार साल सोहबत का सोभाग्य (सम्मान) हासिल था, उस ने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने औरत को मर्द के ग़ुस्ल से बचे हुए पानी से और मर्द को औरत के ग़ुस्ल से बचे हुए पानी से ग़ुस्ल करने से मना फ़रमाया", मुसद्दद ने इज़ाफा नकल किया" चाहिए के दोनों इकठ्ठे चुल्लू भरें"| अबू दावुद, नसई, सहीह और इमाम अहमद ने उस के शुरू में यह इज़ाफा नकल किया आप ﷺ हर रोज़ कंघी करने या ग़ुस्ल खाने में पेशाब करने से हमें मना फ़रमाया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (81) و النسائی (1 / 130 ح 239) و احمد (4 / 114) [و صححه الحافظ فی بلوغ المرام (6) بتحقیقی]

٤٧٣ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سرجس

473. इब्ने माजा ने इसे अब्दुल्लाह बिन सरजिस से रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواه ابن ماجه (374) [و انظر الحدیث السابق : 472] * و اعل بما لا یقدح و للحدیث شواهد

بَاب الْمِيَاه • पानी के अहकाम का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٧٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَبُولَنَّ أَحَدُكُمْ فِي الْمَاءِ الدَّائِمِ الَّذِي لَا يجْرِي ثمَّ يغْتَسل فِيهِ»»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «لَا يَغْتَسِلُ أَحَدُكُمْ فِي الْمَاءِ الدَّائِمِ وَهُوَ جُنُبٌ» . قَالُوا: كَيْفَ يَفْعَلُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ؟ قَالَ: يَتَنَاوَلُهُ تَنَاوُلًا

474. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई शख़्स खड़े पानी में जो के बहता न हो, पेशाब न करे, फिर वह उस में ग़ुस्ल करे"| मुत्तफ़िक़ अलैह: और मुस्लिम की रिवायत में है", तुम में से कोई शख़्स खड़े पानी में ग़ुस्ल ए जनाबत न करे", लोगों ने पूछा अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु वह कैसे करे? फ़रमाया वह वहां से पानी ले और (दूसरी जगह पर ग़ुस्ल करे) | (सहीह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (239) و مسلم (96 / 282)، (657 و 658) [الروایة الثانیة فی مصابیح السنة (325) و صحیح مسلم (97 / 283)]

٤٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُبَالَ فِي الْمَاءِ الراكد. رَوَاهُ مُسلم

475. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खड़े पानी में पेशाब करने से मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (94 / 281)، (655)

٤٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن السَّائِب بن يزِيد قَالَ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لي بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ تَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ ثُمَّ قُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَين كَتفيهِ مثل زر الحجلة

476. साइब बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी खाला मुझे नबी ﷺ के पास ले गई और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरा भांजा मरीज़ है, चुनांचे आप ने मेरे सर पर हाथ फेरा और बरकत के लिए दुआ की, फिर आप ने वुज़ू किया, तो मैंने आप के वुज़ू का पानी पिया, फिर मैं आप के पीछे खड़ा हो गया तो मैंने आप ﷺ के कंधो के दरमियान में चकोर के अंडे की मिस्ल महोर ए नबूवत देखी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (190) و مسلم (111 / 2345)، (6087)

بَاب الْمِيَاه • पानी के अहकाम का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٧٧ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمَاءِ يَكُونُ فِي الْفَلَاةِ مِنَ الْأَرْضِ وَمَا يَنُوبُهُ مِنَ الدَّوَابِّ وَالسِّبَاع فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَانَ الْمَاءُ قُلَّتَيْنِ لَمْ يَحْمِلِ الْخَبَثَ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ والدارمي وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي أُخْرَى لِأَبِي دَاوُدَ: «فَإِنَّهُ لَا ينجس»

477. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से इस पानी के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया जो जंगल में हो और वहां चोपाये और दरिन्दे पानी पीने के लिए आते जाते हो, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब पानी दो मटके (तकरीबन साड़े छे मन) हो तो वह नजासत कबूल नहीं करता”| अहमद अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, दारमी, इब्ने माजा और अबू दावुद की दूसरी रिवायत में है: “वो नजस नहीं होता”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (2 / 27 ح 4803) و ابوداؤد (63) و الترمذی (67) و النسائی (1 / 46 ح 52) و الدارمی (1 / 187 ح 738) و ابن ماجه (517)

٤٧٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيِّ قَالَ: قيل يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَتَوَضَّأُ مِنْ بِئْرِ بُضَاعَةَ وَهِيَ بِئْرٌ يُلْقَى فِيهَا الْحِيَضُ وَلُحُومُ

الْكِلَابِ وَالنَّتْنُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمَاءَ طَهُورٌ لَا يُنَجِّسُهُ شَيْءٌ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

478. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह के रसूल! से मसअला दरियाफ्त किया गया, क्या हम बुज़ाअ के कुंवो से वुज़ू कर लिया करे जबकि वह ऐसा कुंवा है, जहाँ हैज़ आलूद कपड़े, कुत्तो के गोश्त और बदबूदार चीज़े फेंकी जाती है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक पानी पाक है, इसे कोई चीज़ नापाक नहीं करती”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 31 ح 11277) و الترمذی (66 وقال : حدیث حسن) و ابوداؤد (66) و النسائی (1 / 174 ح 327)

٤٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَرْكَبُ الْبَحْرَ وَنَحْمِلُ مَعَنَا الْقَلِيلَ مِنَ الْمَاءِ فَإِنْ تَوَضَّأْنَا بِهِ عَطِشْنَا أفنتوضأ من مَاء الْبَحْرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هُوَ الطَّهُورُ مَاؤُهُ الْحِلُّ مَيْتَتُهُ» . رَوَاهُ مَالك وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

479. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया, हम समुंदरी सफ़र करते हैं और थोड़ा पानी अपने साथ ले जाते हैं, अगर हम उस से वुज़ू करते हैं तो फिर प्यासे रह जाते हैं, तो क्या हम समुन्दर के पानी से वुज़ू कर लिया करे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस का पानी पाक है और उस का मुरदार हलाल है”| (सहीह,हसन)

اسناده صحیح ، رواه مالک فی الموطا (1 / 22 ح 40) و الترمذی (69 وقال : حسن صحیح) و النسائی (1 / 50 ح 59) و ابن ماجه (386) و الدارمی (1 / 186 ح 735) [و ابوداؤد : 83]

٤٨٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي زَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ لَيْلَةَ الْجِنِّ: «مَا فِي إِدَاوَتِكَ» قَالَ: قلت: نَبِيذ. فَقَالَ: «تَمْرَةٌ طَيِّبَةٌ وَمَاءٌ طَهُورٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَزَادَ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ: فَتَوَضَّأَ مِنْهُ»» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: أَبُو زيد مَجْهُول وَصَحَّ

480. अबू ज़ैद अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की जिस रात जिन आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो नबी ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम्हारे मशक में क्या है? वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: नबिज़ है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खजूर उम्दा चीज़ है पानी पाक है”| अबू दावुद, इमाम अहमद और इमाम तिरमिज़ी ने यह इज़ाफा नकल किया: आप ﷺ ने उस से वुज़ू फ़रमाया और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: अबू ज़ैद मजहूल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (84) و احمد (1 / 450 ح 4301) و الترمذی (88) [و ابن ماجه : 384] * ابوزید : مجھول کما قال الترمذی وغیره

٤٨١ - (صَحِيح) عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَمْ أَكُنْ لَيْلَةَ الْجِنِّ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

481. और अल्कमह से सहीह सनद से साबित है के अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जिस रात जिन्न आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए है, इस रात रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नहीं था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (152 / 450)، (1010)

٤٨٢ - (صَحِيح) وَعَن كَبْشَة بنت كَعْب بن مَالك وَكَانَتْ تَحْتَ ابْنِ أَبِي قَتَادَةَ: أَنَّ أَبَا قَتَادَة دخل فَسَكَبَتْ لَهُ وَضُوءًا فَجَاءَتْ هِرَّةٌ تَشْرَبُ مِنْهُ فَأَصْغَى لَهَا الْإِنَاءَ حَتَّى شَرِبَتْ قَالَتْ كَبْشَةُ فَرَآنِي أَنْظُرُ إِلَيْهِ فَقَالَ أَتَعْجَبِينَ يَا ابْنَةَ أخي فَقُلْتُ نَعَمْ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّهَا لَيست بِنَجس إِنَّهَا من الطوافين عَلَيْكُم والطوافات» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ»» وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

482. अबू क़तादा के बेटे की अहलिया कब्शा बिन्ते काब बिन मालिक से रिवायत है, की अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु उन के पास तशरीफ़ लाए तो उस ने उन के वुज़ू के लिए बर्तन में पानी डाला, इतने में एक बिल्ली आ कर उस से पीने लगी तो उन्होंने उस के लिए बर्तन झुका दिया हत्ता कि उस ने पि लिया, कब्शा बयान करती हैं, उन्होंने मुझे देखा की मैं उनकी तरफ देख रही हूँ, तो उन्होंने ने फ़रमाया: भतीजी! क्या तुम ताज्जुब करती हो? वह बयान करती हैं, मैंने कहा: जी हां! उन्होंने कहा: के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये नजस नहीं, क्योंकि वह तुम्हारे पास कसरत से आने वाले खादिमो और कसरत से आने वाली लोंदियो के ज़िमरे में है”| (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه مالک فی الموطا (1 / 22 ، 23 ح 41) و احمد (5 / 303 ح 22950) و الترمذی (92 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (75) و النسائی (1 / 55 ح 68 و ح 341) و ابن ماجه (367) و الدارمی (1 / 186 ح 736)

٤٨٣ - (صَحِيح) وَعَن دَاوُد بن صَالح بن دِينَار التمار عَنْ أُمِّهِ أَنَّ مَوْلَاتَهَا أَرْسَلَتْهَا بِهَرِيسَةٍ إِلَى عَائِشَةَ قَالَتْ: فَوَجَدْتُهَا تُصَلِّي فَأَشَارَتْ إِلَيَّ أَنْ ضَعِيهَا فَجَاءَتْ هِرَّةٌ فَأَكَلَتْ مِنْهَا فَلَمَّا انْصَرَفَتْ عَائِشَةُ مِنْ صَلَاتِهَا أَكَلَتْ مِنْ حَيْثُ أَكَلَتِ الْهِرَّةُ فَقَالَتْ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّهَا لَيست بِنَجس إِنَّمَا ص:١٥ هِيَ من الطوافين عَلَيْكُم» . وَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يتَوَضَّأ بفضلها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

483. दावुद बिन स्वालेह बिन दीनार रहिमहुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं की उन्होंने अपने आज़ाद करदा लौंडी के हाथ आइशा रदियल्लाहु अन्हा के लिए हरिसः (हलिम की तरह का खाना) भेजा, वह बयान करती हैं, मैंने उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए पाया तो उन्होंने इसे रख देने का मुझे इशारा फ़रमाया, एक बिल्ली आई और उस ने उस में से खा लिया, जब आइशा रदियल्लाहु अन्हा नमाज़ से फारिग़ हुई तो उन्होंने इसी जगह से खाया जहाँ से बिल्ली ने खाया था और उन्होंने कहा: के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो नजस नहीं, क्योंकि वह तुम्हारे पास कसरत से आने वाले खादिमो के ज़िमरे में से है”, और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को उस के बचे हुए पानी से वुज़ू करते हुए देखा है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (76) * ام داود بن صالح : لم اجد من و ثقها

٤٨٤ - (ضَعِيف) وَعَن جَابر قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَتَوَضَّأُ بِمَا أَفْضَلَتِ الْحُمُرُ؟ قَالَ: «نَعَمْ وَبِمَا أَفْضَلَتِ السِّبَاعُ كُلُّهَا» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

484. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया गया, क्या हम गधे के बचे हुए पानी से वुज़ू कर ले? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ दरिंदो के बचे हुए (झूठे) पानी से भी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (2 / 71 ح 287) * فيه حصين والد داود وهو ضعيف ، ابراهيم بن اسماعيل بن ابى حبيبة الاشهلى ضعيف مشهور وله شاهد موقوف فى الموطا (ياتى : 486)

٤٨٥ - (حسن) وَعَن أم هَانِئٍ قَالَتْ: اغْتَسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هُوَ وَمَيْمُونَةُ فِي قَصْعَةٍ فِيهَا أَثَرُ الْعَجِين. رَوَاهُ النَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

485. उम्मे हानि रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ और मैमुना रदियल्लाहु अन्हा ने बर्तन में ग़ुस्ल किया जिस में आटे का निशान था| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه النسائى (1 / 131 ح 241) و ابن ماجه (378) * ابن ابى نجيح مدلس و عنعن و حديث النسائى (415 سنده حسن) يغنى عنه

पानी के अहकाम का बयान • بَاب الْمِيَاه

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٨٦ - (ضَعِيف) عَن يَحْيَى بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: إِنَّ عُمَرَ بن الْخطاب خَرَجَ فِي رَكْبٍ فِيهِمْ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ حَتَّى وَرَدُوا حَوْضًا فَقَالَ عَمْرٌو: يَا صَاحِبَ الْحَوْضِ هَلْ تَرِدُ حَوْضَكَ السِّبَاعُ فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَا صَاحِبَ الْحَوْضِ لَا تُخْبِرْنَا فَإِنَّا نَرِدُ عَلَى السِّبَاعِ وَتَرِدُ عَلَيْنَا. رَوَاهُ مَالك

486. याह्या बिन अब्दुल रहमान बयान करते हैं, कि उमर रदियल्लाहु अन्हु कुछ सवारों के साथ, जिन में अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु भी थे, रवाना हुए, हत्ता कि वह एक हौज़ पर पहुंचे, तो अम्र रदियल्लाहु अन्हु ने फरमाया: हौज़ के मालिक| क्या तेरे हौज़ पर दरिन्दे भी पानी पीते आते है? उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हौज़ के मालिक! हमें न बताना, क्योंकि दरिंदों के बाद हम पीने जाते हैं और हमारे बाद वह आ जाते हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالك (1 / 23 ، 24 ح 42) * فى سماع يحيى بن عبد الرحمن بن حاطب من عمر رضى الله عنه نظر

٤٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَزَاد رزين قَالَ: زَاد بعض الرواة فِي قَول عمر: وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ:

«لَهَا مَا أَخَذَتْ فِي بُطُونِهَا وَمَا بَقِي فَهُوَ لنا طهُور وشراب»

487. रजीन ने कहा: बाज़ रावियो ने उमर रदियल्लाहु अन्हु के कौल में यह इज़ाफा नकल किया है की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो उन (दरिंदो) के पेट में चला गया वह उनका और जो बचा रहा वह हमारे लिए पाक है और बाईस ए तहारत और पीने के लायक है"| (ला असल लहू रवाह रजिन (मझे नहीं मिली))

لا اصل له ، رواه رزين (لم اجده)

٤٨٨ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنِ الْحِيَاضِ الَّتِي بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ تَرِدُهَا السبَاع وَالْكلاب والحمر وَعَن الطُّهْرِ مِنْهَا فَقَالَ: " لَهَا مَا حَمَلَتْ فِي بُطُونِهَا وَلَنَا مَا غَبَرَ طَهُورٌ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

488. अबू सईद खुदरी से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ से मक्का और मदीना के दरमियान वाकेअ उन तालाबो से तहारत हासिल करने में मसअला दरियाफ्त किया गया जहाँ से दरिन्दे, कुत्ते और गधे पानी पीते हैं, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन्होंने जो पि लिया वह उनका और जो बच गया वह हमारे लिए पाक है"| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (519) * فيه عبد الرحمن بن زيد بن اسلم وهو ضعيف جدًا ، روى عن عبيه احاديث موضوعة

٤٨٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَا تَغْتَسِلُوا بِالْمَاءِ الْمُشَمَّسِ فَإِنَّهُ يُورِثُ البرص. رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

489. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, धुप से गरम किए गए पानी से ग़ुस्ल न करो क्योंकि वह बरस (फिल बहरी) का मर्ज़ पैदा करता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (1 / 39 ح 85) [و البيهقى (1 / 6] * حسان بن ازهر : وثقه ابن حبان وحده فهو مجهول الحال

बَاب تَطْهِير النَّجَاسَات • नजासत दूर करने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا شَرِبَ الْكَلْبُ فِي إِنَاء أحدكُم فليغسله سبع مَرَّات»» وَفِى رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «طَهُورُ إِنَاءِ أَحَدِكُمْ إِذَا وَلَغَ فِيهِ الْكَلْبُ أَنْ يَغْسِلَهُ سَبْعَ مَرَّاتٍ أولَاهُنَّ بِالتُّرَابِ»

490. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब कुत्ता तुम्हारे किसी शख़्स के बर्तन में से पि ले तो उसे सात मर्तबा धोओ"| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की रिवायत में है: "जब कुत्ता

तुम्हारे किसी शख़्स के बर्तन में मुंह डाल दे तो इस बर्तन की पाकीज़गी इस तरह हासिल होगी के इसे सात मर्तबा धोया जाए, उनमें से पहली मर्तबा मिट्टी से साफ़ किया जाए’’|| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (172) و مسلم (90 / 279)، (650) [و رواية الثانية فى مصابيح السنة (339)

٤٩١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: قَامَ أَعْرَابِيٌّ فَبَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَتَنَاوَلَهُ النَّاسُ فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعُوهُ وَهَرِيقُوا عَلَى بَوْلِهِ سَجْلًا مِنْ مَاءٍ أَوْ ذَنُوبًا مِنْ مَاءٍ فَإِنَّمَا بُعِثْتُمْ مُيَسِّرِينَ وَلَمْ تُبْعَثُوا مُعَسِّرِينَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

491. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक देहाती खड़ा हुआ तो उस ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग उसे डांटने लगे नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इसे कुछ न कहो और उस के पेशाब पर एक डोल पानी बहा दो क्योंकि तुम्हे, तो आसानी के लिए भेजा गया तंगी पैदा करने के लिए नहीं “| (बुखारी)

رواه البخارى (220)

٤٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنس قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَقَامَ يَبُولُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَهْ مَه قَالَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُزْرِمُوهُ دَعُوهُ» فَتَرَكُوهُ حَتَّى بَالَ ثُمَّ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ص:١٥ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ: «إِنَّ هَذِهِ الْمَسَاجِدَ لَا تصلح لشَيْء من هَذَا الْبَوْل وَلَا القذر إِنَّمَا هِيَ لذكر الله عز وَجل وَالصَّلَاةِ وَقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ» أَوْ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَأمر رَجُلًا مِنَ الْقَوْمِ فَجَاءَ بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فسنه عَلَيْهِ

492. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मस्जिद मेंबैठे हुए थे की इस असना में एक आराबी आया और वह खड़ा हो कर मस्जिद में पेशाब करने लगा, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने कहा, रुक जा, रुक जा, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस का पेशाब न रोको इसे कुछ न कहो छोड़ दो”, चुनांचे उन्होंने इसे छोड़ दिया हत्ता कि उस ने पेशाब कर लिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे बुलाकर फ़रमाया: “ये जो मसाजिद है यह पेशाब और गंदगी वगैरा के लिए मौज़ू नहीं | यह तो अल्लाह के ज़िक्र, नमाज़ और किराअत ए कुरान के लिए है या फिर जैसे रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने उन लोगों में से किसी शख़्स को हुक्म फ़रमाया तो वह पानी का डोल ले आया तो आप ने वह इस (पेशाब) पर बहा दिया | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (لم اجده) و مسلم (100 / 285)، (661)

٤٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ الصّديق أَنَّهَا قَالَتْ: سَأَلَتِ امْرَأَةٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إحدانا إِذا أَصَاب ثوبها الدَّم من الْحَيْضَة كَيْفَ تَصَنُّعُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذا أَصَاب ثوب إحداكن الدَّم مِنَ الْحَيْضَةِ فَلْتَقْرُصْهُ ثُمَّ لِتَنْضَحْهُ بِمَاءٍ ثُمَّ لتصلي فِيهِ»

493. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक औरत ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए के अगर हम में से किसी के कपड़े को हैज़ का खून लग जाए तो वह क्या करे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी के कपड़े को हैज़ का खून लग जाए तो वह इसे नाख़ून से खुरच ले फिर इसे पानी के साथ धोए और फिर इस (कपड़े) में नमाज़ पढ़े”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (307) و مسلم (110 / 291)، (675)

٤٩٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنِ الْمَنِيِّ يُصِيبُ الثَّوْبَ فَقَالَتْ كُنْتُ أَغْسِلُهُ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَخْرُجُ إِلَى الصَّلَاةِ وَأَثَرُ الْغَسْلِ فِي ثَوْبه بقع المَاء

494. सुलेमान बिन यस्सार रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने कपड़े को लग जाने वाली मनी के बारे में आइशा रदियल्लाहु अन्हा से मसअला दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: में इसे रसूलुल्लाह ﷺ के कपड़े से धो दिया करती थी, पस आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते जबकि धोने का निशान आप के कपड़े में होता | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (230) و مسلم (108 / 289)، (672)

٤٩٥ - (صَحِيح) وَعَن الْأسود وَهَمَّام عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَفْرُكُ الْمَنِيَّ مِنْ ثَوْبِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

495. असवद और हम्माम रहिमहुल्लाह आइशा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: मैं रसूलुल्लाह ﷺ के कपड़े से मनी रगड़ दिया करती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 288)، (669)

٤٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَبِرِوَايَةِ عَلْقَمَةَ وَالْأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ نَحْوَهُ وَفِيهِ: ثمَّ يُصَلِّي فِيهِ

496. अल्कमा बिन असवद रहिमहुल्लाह की सनद से आइशा रदियल्लाहु अन्हा से इसी तरह मरवी है, निज़ इस रिवायत में यह भी है, फिर आप इस (कपड़े) में नमाज़ पढ़ते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 288)، (668)

٤٩٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أم قيس بنت مُحصن: أَنَّهَا أَتَتْ بِابْنٍ لَهَا صَغِيرٍ لَمْ يَأْكُلِ ص:١٥ الطَّعَامَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّم فَأَجْلَسَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حِجْرِهِ فَبَالَ عَلَى ثَوْبِهِ فَدَعَا بِمَاء فنضحه وَلم يغسلهُ

497. उम्म कैस बिन्ते मुह्सन रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के वह अपने छोटे शिरख्वार बेटे को लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे अपने गोद में बेठा लिया, उस ने आप के कपड़े पर पेशाब कर दिया तो आप ﷺ ने पानी मंगा कर उस पर छिड़क दिया और इसे धोया नहीं | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (223) و مسلم (103 / 287)، (665)

٤٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «إِذَا دُبِغَ الْإِهَابُ فَقَدْ طَهُرَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

498. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब चमड़े को रंग दिया जाता है तो वह पाक हो जाता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 366)، (812)

٤٩٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عبَّاس قَالَ: تُصُدِّقَ عَلَى مَوْلَاةٍ لِمَيْمُونَةَ بِشَاةٍ فَمَاتَتْ فَمَرَّ بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «هَلَّا أَخَذْتُمْ إِهَابَهَا فَدَبَغْتُمُوهُ فَانْتَفَعْتُمْ بِهِ» فَقَالُوا: إِنَّهَا مَيْتَةٌ فَقَالَ: «إِنَّمَا حُرِّمَ أكلهَا»

499. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैमुना रदियल्लाहु अन्हा की आज़ाद करदा लौंडी को सदके के तौर पर एक बकरी दी गई, पस वह मर गई, रसूलुल्लाह ﷺ उस के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: “तुमने उसकी खाल क्यों न उतार ली, पस तुम उसे रंग देते और उस से फ़ायदा उठाते”, उन्होंने अर्ज़ किया, यह तो मुरदार है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सिर्फ उस का खाना हराम करार दिया गया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1492) و مسلم (100 / 363)، (806)

٥٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ سَوْدَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: مَاتَتْ لَنَا شَاةٌ فَدَبَغْنَا مَسْكَهَا ثُمَّ مَا زِلْنَا نَنْبِذُ فِيهِ حَتَّى صَارَ شنا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

500. नबी ﷺ की ज़ौजा ए मोहतरमा सवदा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हमारी बकरी मर गई तो हमने उसकी खाल को रंग लिया, फिर हम उस में नबिज़ तैयार करते रहे हत्ता कि वह पोशीदा हो गई| (बुखारी)

رواه البخارى (6686)

नजासत दूर करने का बयान • بَاب تَطْهِير النَّجَاسَات

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٠١ - (صَحِيح) عَن لبَابَة بنت الْحَارِث قَالَتْ: كَانَ الْحُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فِي حِجْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَبَال عَلَيْهِ فَقُلْتُ الْبَسْ ثَوْبًا وَأَعْطِنِي ص:١٥ إِزَارَكَ حَتَّى أَغْسِلَهُ قَالَ: «إِنَّمَا يُغسَلُ مِنْ بَوْلِ الْأُنْثَى وَيُنْضَحُ مِنْ بَوْلِ الذَّكَرِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

501. लुबाब बिन्ते हारिस रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हुसैन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ की गोद में थे, उन्होंने आप के कपड़े पर पेशाब कर दिया, मैंने अर्ज़ किया: आप दूसरा कपड़ा पहन लें और अपना आज़ार मुझे दे दे ताकि में उसे धो दू आप ﷺ ने फ़रमाया: “सिर्फ लड़की के पेशाब से कपड़ा धोया जाता है और लड़के के पेशाब से कपड़े पर छींटे मारे जाते हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (6 / 339 ، 340 ح 27416) و ابوداؤد (375) و ابن ماجه (522) [و صححه ابن خزيمة (282) و الحاكم (1 / 166) و وافقه الذهبى]

٥٠٢ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ وَالنَّسَائِيِّ عَنْ أَبِي السَّمْحِ قَالَ: يُغْسَلُ مِنْ بَوْلِ الْجَارِيَةِ وَيُرَشُّ من بَوْل الْغُلَام

502. अबू दावूद और नसाई में अबुस सम्ह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बच्ची के पेशाब से कपड़ा धोया जाता है, जबकि लड़के के पेशाब से कपड़े पर छींटे मारे जातेहैं”। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (376) و النسائى (1 / 158 ح 305) [و ابن ماجه (526) و صححه ابن خزيمة (283) و الحاكم (1 / 166) و وافقه الذهبى]

٥٠٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وَطِئَ أَحَدُكُمْ بِنَعْلِهِ الْأَذَى فَإِنَّ التُّرَابَ لَهُ طَهُورٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَلِابْنِ مَاجَه مَعْنَاهُ

503. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स के जूते को गंदगी लग जाए तो मिट्टी इसे पाक कर देती है”| अबू दावुद और इब्ने माजा में भी इसी के हममानी है| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (385 سنده منقطع كما هو الظاهر) و ابن ماجه (532 فى سنده ابن ابى حبيبة ضعيف و الراوى عنه مجهول الحال [و صححه الحاكم (1 / 166 ح 590) و وافقه الذهبى ، وفى سنده محمد بن كثير المصيصى ضعيف و محمد بن عجلان مدلس و عنعن و الحديث الآتى (504) يغنى عنه]

٥٠٤ - (صَحِيح) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ لَهَا امْرَأَةٌ: إِنِّي امْرَأَةٌ أُطِيلُ ذَيْلِي وَأَمْشِي فِي الْمَكَانِ الْقَذِرِ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُطَهِّرُهُ مَا بَعْدَهُ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالا: الْمَرْأَة أم ولد لإِبْرَاهِيم ابْن عبد الرَّحْمَن بن عَوْف

504. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के एक औरत ने उन्हें कहा; में अपने कपड़े का दामन लम्बा रखती हूँ जबकि मैं नापाक जगह से गुज़रती हूँ, उन्होंने बताया रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो इस नापाक जगह के बाद है वह इसे पाक कर देगी”| मालिक, अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, दारमी इमाम अबू दावुद और इमाम दारमी ने बताया के वह औरत इब्राहीम बिन अब्दुल रहमान बिन ऑफ की वालिदा थी| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه مالک (1 / 24 ح 44) و احمد (6 / 290 ح 27021) و الترمذی (143) و ابوداؤد (383) و الدارمی (1 / 191 ح 748) [و ابن ماجه (531) و صححه ابن الجارود (142) و للحديث شواهد

٥٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْمِقْدَام بن معدي كرب قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لُبْسِ جُلُودِ السِّبَاعِ وَالرُّكُوبِ عَلَيْهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

505. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दरिंदो की खाल पहनने और इन पर सवारी करने से मना फ़रमाया है| (हसन)

حسن رواه ابوداؤد (4131) و النسائی (7 / 176 ، 177 ح 4260)

٥٠٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الْمَلِيحِ بْنِ أَسَامَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَهَى عَنْ جُلُودِ السِّبَاعِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ وَزَاد التِّرْمِذِيّ والدارمي: أَن تفترش

506. अबुल मलिहा बिन उसामा अपने वालिद से और वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, नबी ﷺ ने दरिंदो की खालो (के इस्तेमाल) से मना फ़रमाया है| अहमद, अबू दावुद, नसई, इमाम तिरमिज़ी और दारमी ने इज़ाफा नकल किया है यह कि उनका बिस्तर बनाया जाए| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 74 ، 75 ح 20982) و ابوداؤد (4132) و النسائی (7 / 176 ح 4258) و الترمذی (1770 ، 1771) و الدارمی (2 / 85 ح 1989)

٥٠٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي الْمليح: أَنه ذكره ثمن جُلُود السبَاع. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ فِي اللبَاس من جَامعه وَسَنَده جيد

507. अबुल मलिहा से रिवायत है के आप ने दरिंदो की खालो की कीमत (यानी बेअ) को नापसंद फ़रमाया है, इस रिवायत को इमाम तिरमिज़ी ने “आप ने दरिंदो के चमड़े को नापसंद फ़रमाया है” के अल्फाज़ के साथ ज़िक्र किया है और उसकी सनद जय्यिद है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1770) [و انظر الحديث السابق : 506]

٥٠٨ - (ضَعِيف) وَعَن عبد الله بن عكيم قَالَ: أَتَانَا كِتَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْ لَا تَنْتَفِعُوا مِنَ الْمَيْتَةِ بِإِهَابٍ وَلَا عَصَبٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

508. अब्दुल्लाह बिन उकैम रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमें रसूलुल्लाह ﷺ का ख़त मौसुल हुआ की “मुरदार के चमड़े से फ़ायदा उठाओ न उस के अअसाब (पट्ठो) से”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1729 وقال : هذا حديث حسن ،،،) و ابوداؤد (4127 ، 4128) و النسائی (7 / 175 ح 4255) و ابن ماجه (3613)* و اعل بما لا يقدح

٥٠٩ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَمَرَ أَنْ يُسْتَمْتَعَ بِجُلُودِ الْمَيْتَةِ إِذَا دُبِغَتْ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد

509. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हुक्म फ़रमाया के “ जब मुरदार का चमड़ा रंगा जाए तब उस से फ़ायदा हासिल किया जाए”| (हसन)

حسن ، رواه مالک (2 / 498 ح 1101) و ابوداؤد (4124) [و ابن ماجه (3612) و النسائی (7 / 176 ح 4257)] * ام محمد بن عبد الرحمن : و ثقها ابن حبان و ابن عبدالبر و يعقوب بن سفيان الفارسی (المعرفة و التاريخ : 1 / 349 ، 350 ، 425) فالسند حسن

٥١٠ - (حسن) وَعَن مَيْمُونَة مر على النَّبِي الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رِجَالٌ مِنْ قُرَيْشٍ يَجُرُّونَ شَاةً لَهُمْ مِثْلَ الْحِمَارِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ أَخَذْتُمْ إِهَابَهَا» قَالُوا إِنَّهَا مَيْتَةٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُطَهِّرُهَا الْمَاءُ والقرظ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

510. मय्मुना रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कुरैश के कुछ लोग अपने (मुर्दार) बकरी को गधे की मिस्ल घसीटते हुए नबी ﷺ के पास से गुज़रे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “तुम उस का चमड़ी ही उतार लेते”, उन्होंने अर्ज़ किया, यह मुरदार है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पानी और क़रज़ (केकड़ के मुशाबह (अनुरूप) दरख्त और उस के पत्ते) इसे पाक कर देते”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 334 ح 27370) و ابوداؤد (4126) [و النسائی (7 / 174 ، 175 ح 4253) و حسنه ابن الملقن فی تحفة المحتاج (131)]

٥١١ - (حسن) وَعَن سَلمَة ابْن المحبق: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَة تَبُوك أَتَى على بَيْتٍ فَإِذَا قِرْبَةٌ مُعَلَّقَةٌ فَسَأَلَ الْمَاءَ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا مَيْتَةٌ: «فَقَالَ دِبَاغُهَا طهورها» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

511. सलमा बिन मुहब्बक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि गज़वा ए तबुक के मौके पर रसूलुल्लाह ﷺ एक घराने के पास तशरीफ़ लाए तो वहां एक मश्किज़ा लटक रहा था, आप ने पानी तलब किया, तो उन्होंने आप से

अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह तो मुरदार है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे रंग देना ही उसकी तहारत है”| (सहीह,ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعيف ، رواه احمد (3 / 476 ح 16003 ، 16004) و ابوداؤد (4125) [و النسائی (7 / 173 ، 174 ح 4248) و صححه الحاکم (4 / 141) و وافقه الذهبی] * الحسن البصری عنعن

بَاب تَطْهِير النَّجَاسَات • नजासत दूर करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥١٢ - (صَحِيح) وَعَن امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي عَبْدِ الْأَشْهَلِ قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لَنَا طَرِيقًا إِلَى الْمَسْجِد مُنْتِنَة فَكيف نَفْعل إِذا مُطِرْنَا قَالَ: «أَلَيْسَ بعْدهَا طَرِيق ص:١٥ هِيَ أطيب مِنْهَا قَالَت قلت بلَى قَالَ فَهَذِهِ بِهَذِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

512. बनू अब्द अल अशहल की एक खातून बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मस्जिद की तरफ हमारा जो रास्ता है के इन्तिहाई गंदा और बदबूदार है जब बारिश हो जाए तो फिर हम क्या करे? वह बयान करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस के बाद उस से कोई ज़्यादा बेहतर और पाकिज़ा रास्ता नहीं ?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की नजासत उस से दूर हो जाती है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (384) [و ابن ماجه (533)

٥١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا نَتَوَضَّأ من الموطئ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

513. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे और हम गंदगी पर चल कर जाने की वजह से वुज़ू नहीं किया करते थे| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (معلقاً بعد ح 143) و ابوداؤد (204) و صححه الحاکم (1 / 139)] * الاعمش مدلس و عنعن و شک فيمن حدثه فالسند لعلل

٥١٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَتِ الْكِلَابُ تُقْبِلُ وَتُدْبِرُ فِي الْمَسْجِدِ فِي زَمَانِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَكُونُوا يَرُشُّونَ شَيْئا من ذَلِك. رَوَاهُ البُخَارِيّ

514. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूल अल्लाह के ज़माने में कुत्ते मस्जिद में आते जाते रहते

थे और वह (सहाबा किराम) उसकी किसी चीज़ को धोया नहीं करते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (174)

٥١٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:: «لَا بَأْسَ بِبَوْلِ مَا يُؤْكَلُ لَحْمُهُ»

515. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस जानवर का गोश्त खाया जाता हो उसके पेशाब में कोई बुराई नहीं"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الدارقطنی (1 / 128) * فيه مصعب بن سوار وهو سوار بن مصعب : ضعيف جدًا متروک

٥١٦ - (ضَعِيف) وَفِي رِوَايَةِ جَابِرٍ قَالَ: «مَا أُكِلَ لَحْمُهُ فَلَا بَأْس ببوله» . رَوَاهُ أَحْمد وَالدَّارَقُطْنِيّ

516. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस का गोश्त खाया जाए उस के पेशाब में कोई बुराई नहीं"| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه احمد (لم اجده) و الدارقطنی (1 / 128) * فيه يحيى بن العلاء : متهم و متروک ، و عمرو بن حصين : متروک

بَاب الْمسْح على الْخُفَّيْنِ • मोज़ो पर मसाह करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥١٧ - (صَحِيح) عَن شُرَيْح بن هَانِئ قَالَ: سَأَلْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ الْمَسْحِ عَلَى الْخُفَّيْنِ فَقَالَ: جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيَهُنَّ لِلْمُسَافِرِ وَيَوْمًا وَلَيْلَةً لِلْمُقِيمِ. رَوَاهُ مُسلم

517. शरीह बिन हानी बयान करते हैं, मैंने अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से मोज़ो पर मसाह करने (की मुद्दत) के बारे में मसअला दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसाफ़िर के लिए तीन दिन और मुकीम के लिए एक दिन मुद्दत मुकर्रर फरमाई है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (85 / 276)، (639)

٥١٨ - (صَحِيح) وَعَن عُرْوَة بن الْمُغيرَة بن شُعْبَة عَن أَبِيه قَالَ: أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ تَبُوكَ. قَالَ الْمُغِيرَةُ: فَتَبَرَّزَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِبَلَ الْغَائِط فَحملت مَعَه إدواة قَبْلَ الْفَجْرِ فَلَمَّا رَجَعَ أَخَذْتُ أُهَرِيقُ

عَلَى يَدَيْهِ من الإدواة فغسل كفيه وَوَجْهَهُ وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ مِنْ ص:١٦ صُوفٍ ذَهَبَ يَحْسِرُ عَن ذِرَاعَيْهِ فَضَاقَ كم الْجُبَّة فَأخْرج يَده مِنْ تَحْتِ الْجُبَّةِ وَأَلْقَى الْجُبَّةَ عَلَى مَنْكِبَيْهِ وَغسل ذِرَاعَيْهِ وَمسح بناصيته وعَلى الْعِمَامَة وعَلى خفيه ثُمَّ رَكِبَ وَرَكِبْتُ فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَوْمِ وَقَدْ قَامُوا فِي الصَّلَاة يُصَلِّي بِهِمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَقَدْ رَكَعَ بِهِمْ رَكْعَةً فَلَمَّا أَحَسَّ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم ذهب يتَأَخَّر فَأَوْمأ إِلَيْهِ فصلى بهم فَلَمَّا سلم قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقُمْتُ فَرَكَعْنَا الرَّكْعَة الَّتِي سبقتنا. رَوَاهُ مُسلم

518. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ गज़वा ए तबुक में शिरकत की, मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ फजर से पहले पेशाब व पाखाना के लिए खुली जगह तशरीफ़ ले गए, मैं पानी का बर्तन उठाकर आप के साथ गया, पस जब आप वापस तशरीफ़ लाए तो मैंने बर्तन से आप के हाथो पर पानी डाला, तो आप ने अपने हाथ और चेहरा धोया, आप ने ऊनी जुब्बा पहन रखा था, आप ने बाज़ू नंगे करने की कोशिश की, लेकिन जुब्बा की आस्तीन तंग थी, लिहाज़ा आप ने जुब्बा के नीचे से हाथ निकाले और जुब्बे को अपने कंधो पर डाल लिया और अपने बाज़ू धोए फिर, आप ने पेशानी और इमामे पर मसाह किया, मैं आप के मोज़े उतारने के लिए झुका तो आप ने फ़रमाया: "उन्हें छोड़ दो क्योंकि मैंने उन्हें हालत ए वुज़ू में पहना था", आप ने इन पर मसाह किया फिर आप सवारी पर सवार हुए और मैं भी सवार हुआ, जब हम लश्कर के पास पहुंचे तो वह नमाज़ खड़ी कर चुके थे और अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु उन्हें नमाज़ पढ़ा रहे थे और वह उन्हें एक रक्अत पढ़ा चुके थे चुनांचे जब उन्हें नबी ﷺ की आमद का एहसास हुआ तो वह पीछे हटने लगे, आप ने उन्हें इरशाद किया के नमाज़ पढ़ते रहो, नबी ﷺ ने एक रक्अत उन के साथ पा ली जब उन्होंने (अब्दुल रहमान बिन ऑफ (र)) ने सलाम फेरा तो नबी ﷺ खड़े हो गए, और मैं भी आप ﷺ के साथ खड़ा हो गया, तो हमने वह रक्अत पढ़ी जो हम से पहले पढ़ी जा चुकी थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 ، 81 ، 105 / 274)، (631 و 633)

بَاب الْمسْح على الْخُفَّيْنِ • मोज़ो पर मसाह करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥١٩ - (حسن) عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ رَخَّصَ لِلْمُسَافِرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيَهُنَّ وَلِلْمُقِيمِ يَوْمًا وَلَيْلَةً إِذَا تَطَهَّرَ فَلَبِسَ خُفَّيْهِ أَنْ يَمْسَحَ عَلَيْهِمَا. رَوَاهُ الْأَثْرَمُ فِي سُنَنِهِ وَابْنُ خُزَيْمَةَ وَالدَّارَقُطْنِيّ وَقَالَ الْخَطَّابِيُّ: هُوَ صَحِيحُ الْإِسْنَادِ هَكَذَا فِي الْمُنْتَقى

519. अबू बकरह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने मुसाफ़िर को तीन दिन और मुकीम को एक दिन मोज़ो पर मसाह करने की रुखसत इनायत फरमाई, बशर्तेकी उन्होंने वुज़ू के बाद मोज़े पहने हो"| अषरम ने अपने सुनन में, इब्ने खुजैमा और दार कुतनी ने इसे रिवायत किया है, खत्ताबी ने कहा वह सहीह अल असनाद है, मुन्तका मैं भी इसी तरह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الاثرم فى سننه (لم اجده) و ابن خزيمة (1 / 96 ح 192) و الدارقطنى (1 / 194) [و ابن ماجه : 556] و قول الخطابى فى منتقى الاخبار (305 ، و نيل الاوطار 1 / 282 ح 232)

٥٢٠ - (صَحِيح) وَعَن صَفْوَان بن عَسَّال قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:١٦ يَأْمُرُنَا إِذَا كُنَّا سَفَرًا أَنْ لَا نَنْزِعَ خِفَافَنَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَلَيَالِيَهُنَّ إِلَّا مِنْ جَنَابَةٍ وَلَكِنْ مِنْ غَائِطٍ وَبَوْلٍ وَنَوْمٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

520. सफवान बिन अस्साल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम मुसाफ़िर होते तो रसूलुल्लाह ﷺ हमें हुक्म फरमाते के हम जनाबत के अलावा पेशाब व पाखाना और नींद की सूरत में तीन दिन तक अपने मोज़े न उतारे| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (96 وقال : حدیث صحیح) و النسائی (1 83 ، 84 ح 127)

٥٢١ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: وَضَّأْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَمَسَحَ أَعْلَى الْخُفِّ وَأَسْفَلَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ مَعْلُولٌ وَسَأَلْتُ أَبَا زُرْعَةَ وَمُحَمَّدًا يَعْنَى الْبُخَارِيَّ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ فَقَالَا: لَيْسَ بِصَحِيحٍ. وَكَذَا ضعفه أَبُو دَاوُد

521. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने गज़वा ए तबुक के मौके पर नबी ﷺ को वुज़ू कराया तो आप ﷺ ने मोज़ो के ऊपर और नीचे मसाह किया| अबू दावुद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस मअलुवल है मैंने अबू ज़ुरअत और मुहम्मद यानी इमाम बुखारी से इस हदीस के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह नहीं और इसी तरह अबू दावुद ने भी इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (165) و الترمذی (97 و اعله) و ابن ماجه (550)* ثور : لم یسمع من رجاء وجاء تصریحه بالسماع فی السند الضعیف ، ورجاء لم یسمعه من کاتب المغیرة رضی الله عنه

٥٢٢ - (صَحِيح) وَعنهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يمسح على الْخُفَّيْنِ على ظاهرهما. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

522. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने कहा: मैंने नबी ﷺ को मोज़ो के ऊपर मसाह करते हुए देखा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (98 وقال : حسن) و ابوداؤد (161)

٥٢٣ - (صَحِيح) وَعَن الْمُغِيرَة بن شُعْبَة قَالَ: تَوَضَّأَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَسَحَ عَلَى الْجَوْرَبَيْنِ وَالنَّعْلَيْنِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

523. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने वुज़ू फ़रमाया और आप ने जुराबो और जूतो पर मसाह किया| (ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعیف ، رواه احمد (4 / 252 ح 18393) و الترمذی (99 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (159) و ابن ماجه (559) * سنده ضعیف من اجل عنعنة سفیان الثوری فإنه مدلس مشهور و للحدیث شواهد و اجماع الصحابة یؤیده

मोज़ो पर मसाह करने का बयान • بَاب الْمسْح على الْخُفَّيْنِ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

S

٥٢٤ - (ضَعِيف) وَعَن الْمُغيرَة بن شُعْبَة قَالَ: مَسَحَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْخُفَّيْنِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ نسيت؟ قَالَ: بل أَنْت نسيت بِهَذَا أمرنِي رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ. رَوَاهُ ص:١٦ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

524. मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मोज़ो पर मसाह किया तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या आप भूल गए है? आप ने फ़रमाया: (नहीं), बल्कि तुम भूले हो, मेरे रब अज्ज़वजल ने मुझे इसी का हुक्म फ़रमाया“| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 253 ح 18407) و ابوداؤد (156) * بكير بن عامر : ضعيف ، ضعفه الجمهور

٥٢٥ - (صَحِيح) وَعَن عَليّ رَضِي الله عَنهُ قَالَ: لَوْ كَانَ الدِّينُ بِالرَّأْيِ لَكَانَ أَسْفَلُ الْخُفِّ أَوْلَى بِالْمَسْحِ مِنْ أَعْلَاهُ وَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ على ظَاهر خفيه رَوَاهُ أَبُو دَاوُد للدارمي مَعْنَاهُ

525. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अगर दीन का दारोमदार अक्ल व राय पर होता तो मोज़ो पर नीचे मसाह करना उन के ऊपर मसाह करने से अफज़ल व बेहतर होता, जबकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मोज़ो के ऊपर मसाह करते हुए देखा है| अबू दावुद, और दारमी ने भी इसी मानी में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (162) و الدارمى (1 / 181 ح 721) * ابو اسحاق السبيعى عنعن و حديث الحميدى (47) يغنى عنه

तयम्मुम का बयान • بَاب التَّيَمُّم

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٢٦ - (صَحِيح) عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فُضِّلْنَا عَلَى النَّاسِ بِثَلَاثٍ جُعِلَتْ صُفُوفُنَا كَصُفُوفِ الْمَلَائِكَةِ وَجُعِلَتْ لَنَا الْأَرْضُ كلهَا مَسْجِدا وَجعلت تربَتهَا لنا طَهُورًا إِذَا لَمْ نَجِدِ الْمَاءَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

526. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमें बाकी उम्मतो पर तीन चीजों से फ़ज़ीलत दी गई है, हमारी सफों को फरिश्तो की सफों जैसे करार दिया गया, हमारे लिए सारी ज़मीन मस्जिद करार दी गई और उसकी मिट्टी को जब हम पानी न पाए बाईस ए तहारत बनाया गया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (4 / 522)، (1165)

٥٢٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عمرَان بن حُصَيْن الْخُزَاعِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رأى رجلا مُعْتَزِلا لم يصل فِي الْقَوْم فَقَالَ: «يَا فلَان مَا مَنعك أَن تصلي فِي الْقَوْم فَقَالَ يَا رَسُول الله أَصَابَتْنِي جَنَابَةٌ وَلَا مَاءَ قَالَ عَلَيْكَ بِالصَّعِيدِ فَإِنَّهُ يَكْفِيك»

527. इमरान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के साथ सफ़र पर थे आप ने लोगों को नमाज़ पढ़ाई, पस जब आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो आप ﷺ ने एक आदमी को अलग बैठा हुआ देखा, जिस ने बा जमाअत नमाज़ नहीं पढ़ी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “फलां शख्स! तुम्हें बा जमाअत नमाज़ अदा करने से क्या मानेअ था? उस ने अर्ज़ किया, मैं जुनुबी हो गया था और मैंने पानी नहीं पाया, आप ने फ़रमाया: “तुम मिट्टी इस्तेमाल करते वह तुम्हारे लिए काफी थी‘‘ | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (344) و مسلم (312 / 682)، (1563)

٥٢٨ - (صَحِيح) وَعَن عمار قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَقَالَ: إِنِّي أَجْنَبْتُ فَلَمْ أُصِبِ الْمَاءَ فَقَالَ عمار بن يَاسر لعمر بن الْخطاب أَمَا تَذْكُرُ أَنَّا كُنَّا فِي سَفَرٍ أَنَا وَأَنْتَ فَأَمَّا أَنْتَ فَلَمْ تُصَلِّ وَأَمَّا أَنَا فتمعكت فَصليت فَذكرت للنَّبِي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكَ هَكَذَا فَضَرَبَ النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم بكفيه الْأَرْض وَنفخ فيهمَا ثمَّ مسح بهما وَجْهَهُ وَكَفَّيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَلِمُسْلِمٍ نَحْوُهُ وَفِيهِ قَالَ: إِنَّمَا يَكْفِيكَ أَنْ تَضْرِبَ بِيَدَيْكَ الْأَرْضَ ثمَّ تنفخ ثمَّ تمسح بهما وَجهك وكفيك

528. अम्मार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के पास आया और उस ने अर्ज़ किया, मैं जुनुबी हो गया हूँ लेकिन मुझे पानी नहीं मिला, (ये सुन कर) अम्मार ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से कहा: क्या आप को याद नहीं, के हम एक मर्तबा सफ़र में थे, आप ने नमाज़ न पढ़ी, जबकि मैं मिट्टी मेंलौट पोट हुआ और नमाज़ पढ़ ली, फिर मैंने नबी ﷺ से उस का तज़किरह किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे लिए इस तरह करना काफी था”, चुनांचे नबी ﷺ ने अपने हाथ ज़मीन पर मारे और उनमें फूंक मारी, फिर उन से अपने चेहरे और हाथो पर मसाह किया बुखारी, | मुत्तफ़िक़ अलैह: और मुस्लिम में भी इसी तरह है और इस में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे लिए काफी था के तुम अपने हाथ ज़मीन पर मारते फिर उस में फूंक मारते और फिर उन के साथ अपने चेहरे और हाथो पर मसाह करते”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (338) و مسلم (112 / 368)، (820)

٥٢٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الْجُهَيْمِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ الصِّمَّةِ قَالَ: مَرَرْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَبُولُ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ حَتَّى قَامَ إِلَى جِدَارٍ فَحَتَّهُ بِعَصًى كَانَتْ مَعَهُ ثُمَّ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى الْجِدَارِ فَمَسَحَ وَجْهَهُ وَذِرَاعَيْهِ ثُمَّ رَدَّ عَلَيَّ. وَلَمْ أَجِدْ هَذِهِ الرِّوَايَةَ فِي الصَّحِيحَيْنِ وَلَا فِي كِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ وَلَكِنْ ذَكَرَهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث حسن

529. अबिल जुह्मी बिन हारिस बिन सिम्मी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के पास से गुज़रा, जबकि आप पेशाब कर रहे थे, मैंने आप को सलाम किया तो आप ने मुझे जवाब न दिया, हत्ता कि आप एक दिवार की तरफ गए और अपने लाठी से इसे कुरेदा, फिर अपने हाथ दिवार पर रखे, और अपने चेहरे और बाज़ुओ

का मसाह किया, फिर मुझे सलाम का जवाब दिया| यह रिवायत मुझे सहीहैन में मिली न किताब अल हुमैदी में लेकिन उन्होंने शरह सुन्ना में उसे ज़िक्र किया है और फ़रमाया यह हदीस हसन है| (सहीह,ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الحسين بن مسعود البغوى فى شرح السنة (2 / 114 ، 115 ح 310 وقال : هذا حديث حسن !) [و رواه الشافعى فى مسنده (1 / 45) و البيهقى (1 / 205] * فيه ابراهيم بن محمد بن ابى يحيى الاسلمى متروک متهم و السند منقطع و الصواب : مسح وجهه و يده کما سياتى (535)

بَاب التَّيَمُّم • तयम्मुम का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٣٠ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الصَّعِيدَ الطَّيِّبَ وَضُوءُ الْمُسلم وَإِن لم يجد لاماء عشر سِنِين فغذا وجد المَاء فليمسه بشره فَإِنَّ ذَلِكَ خَيْرٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ»» وَرَوَى النَّسَائِيُّ نَحْوَهُ إِلَى قَوْلِهِ: عَشْرَ سِنِين

530. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "पाक मिट्टी मुसलमान के लिए वुज़ू के पानी की तरह है ख्वाँ वह दस साल तक पानी न पाए, लेकिन जब पानी दस्तियाब हो जाए तब उस से अपने जिल्द तर करे क्योंकि यह बेहतर है"| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद और इमाम नसई ने (दस साल) तक इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 155 ح 21698) و الترمذى (124 وقال : حسن) و ابوداؤد (332) و النسائى (1 / 171 ح 323) [و صححه ابن خزيمة (2292) و ابن حبان (1308 ، 1309) و الحاكم (1 / 176 ، 177) و وافقه الذهبى]

٥٣١ - (حسن لغيره) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: خَرَجْنَا فِي سَفَرٍ فَأَصَابَ رجلا منا حجر ص:١٦ فَشَجَّهُ فِي رَأسه ثمَّ احْتَلَمَ فَسَأَلَ أَصْحَابه فَقَالَ هَل تَجِدُونَ لي رخصَة فِي التَّيَمُّم فَقَالُوا مَا نجد لَك رخصَة وَأَنت تقدر على الْمَاءِ فَاغْتَسَلَ فَمَاتَ فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أخبر بذلك فَقَالَ قَتَلُوهُ قتلهمْ الله أَلا سَأَلُوا إِذْ لَمْ يَعْلَمُوا فَإِنَّمَا شِفَاءُ الْعِيِّ السُّؤَالُ إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيهِ أَن يتَيَمَّم ويعصر أَو يعصب شكّ مُوسَى عَلَى جُرْحِهِ خِرْقَةً ثُمَّ يَمْسَحَ عَلَيْهَا وَيَغْسِلَ سَائِر جسده. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

531. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक सफ़र पर रवाना हुए तो हम में से एक आदमी को पत्थर लगा जिस ने उस का सर ज़ख्मी कर दिया, और इसी दौरान इसे इहतिलाम हो गया, उस ने अपने साथियो से दरियाफ्त करते हुए कहा, क्या तुम मेरे लिए तयम्मुम की रुखसत पाते हो? उन्होंने कहा, हम तुम्हारे लिए कोई रुखसत नहीं पाते क्योंकि तुम्हें पानी मयस्सर है, पस उस ने ग़ुस्ल किया जिस से उसकी मौत वाकेअ हो गई, जब हम नबी ﷺ के पास आए तो आप को इस बारे में बताया गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन्होंने इसे मार डाला, अल्लाह उन्हें हलाक करे, जब उन्हें मसअला मालुम नहीं था तो उन्होंने पूछा क्यों नही, ला इल्मी का इलाज पूछ लेना है, उस के लिए यही काफी था के वह तयम्मुम करता, जख्म पर पट्टी बांध लेता, फिर उस पर मसाह कर

लेता और बाकी सारे जिस्म को धो लेता"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (336) * الزبير بن خريق : وثقه ابن حبان وحده و ضعفه الدارمی و غيره و ضعفه راجح

٥٣٢ - (حسن) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاح عَن ابْن عَبَّاس

532. इब्ने माजा ने अता बिन अबी रबाह की सनद से इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (572) [و الحاكم (1 / 178) و ابوداؤد (337 و سنده صحيح)]

٥٣٣ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: خَرَجَ رَجُلَانِ فِي سَفَرٍ فَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ وَلَيْسَ مَعَهُمَا مَاءٌ فَتَيَمَّمَا صَعِيدًا طَيِّبًا فَصَلَّيَا ثُمَّ وَجَدَا الْمَاءَ فِي الْوَقْتِ فَأَعَادَ أَحَدُهُمَا الصَّلَاة وَالْوُضُوء وَلَمْ يَعُدِ الْآخَرُ ثُمَّ أَتَيَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فذكرا ذَلِك لَهُ فَقَالَ لِلَّذِي لَمْ يُعِدْ: «أَصَبْتَ السُّنَّةَ وَأَجْزَأَتْكَ صَلَاتُكَ» وَقَالَ لِلَّذِي تَوَضَّأَ وَأَعَادَ: «لَكَ الْأَجْرُ مَرَّتَيْنِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَرَوَى النَّسَائِيُّ نَحوه

533. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दो आदमी सफ़र पर रवाना हुए, नमाज़ का वक़्त हो गया, जबकि उन के पास पानी नहीं था, चुनांचे उन्होंने पाक मिट्टी से तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, फिर उन्होंने नमाज़ के वक्त ही में पानी पा लिया, तो उनमें से एक ने वुज़ू कर के नमाज़ लौटाई, जबकि दूसरे ने न लौटाई, फिर वह दोनों रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और इस वाकिए का तज़किरह किया, आप ﷺ ने इस शख़्स से जिस ने नमाज़ न लौटाई फ़रमाया: "तुमने सुन्नत पर अमल किया और तुम्हारी नमाज़ तुम्हारे लिए काफी है", और आप ﷺ ने जिस शख़्स ने वुज़ू कर के नमाज़ लौटाई थी इसे फ़रमाया: "तुम्हारे लिए दोहरा अज़्र है"| अबू दावुद, दारमी और नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (338) و الدارمی (1 / 190 ح 750) و النسائی (1 / 213 ح 433)

٥٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَقَدْ رَوَى هُوَ وَأَبُو دَاوُدَ أَيْضًا عَنْ عَطاء بن يسَار مُرْسلا

534. इमाम नसई और अबू दावुद ने भी अता बिन यस्सार से मुरसल रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (339) [و انظر الحديث السابق (533) فهو شاهد له]

तयम्मुम का बयान • بَاب التَّيَمُّم

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٣٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي الْجُهَيْم الْأَنْصَارِيّ قَالَ: أَقْبَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ نَحْوِ بِئْرِ جَمَلٍ فَلَقِيَهُ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَقْبَلَ عَلَى الْجِدَارِ فَمَسَحَ بِوَجْهِهِ وَيَدَيْهِ ثُمَّ رَدَّ عَلَيْهِ السَّلَام

535. अबुल जुहय्म बिन हारिस बिन सिम्मी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ बईरे जमल (कुंवे का नाम) की तरफ से आए तो एक आदमी आप ﷺ से मीला, उस ने आप को सलाम किया तो नबी ﷺ ने इसे जवाब न दिया हत्ता कि आप दिवार के पास तशरीफ़ लाए, अपने चेहरे और हाथो का मसाह किया, फिर इसे सलाम का जवाब दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (237) و مسلم (114 / 369)، (822)

٥٣٦ - (صَحِيح) وَعَن عمار بن يَاسر: أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّهُمْ تَمَسَّحُوا وَهُمْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالصَّعِيدِ لِصَلَاةِ الْفَجْرِ فَضَرَبُوا بِأَكُفِّهِمُ الصَّعِيدَ ثُمَّ مَسَحُوا وُجُوههم مَسْحَةً وَاحِدَةً ثُمَّ عَادُوا فَضَرَبُوا بِأَكُفِّهِمُ الصَّعِيدَ مَرَّةً أُخْرَى فَمَسَحُوا بِأَيْدِيهِمْ كُلِّهَا إِلَى الْمَنَاكِبِ وَالْآبَاطِ مِنْ بُطُونِ أَيْدِيهِمْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

536. अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के वह बयान करते हैं, कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ में नमाज़ ए फज़र के लिए मिट्टी से तयम्मुम किया तो उन्होंने अपने हाथ मिट्टी पर मारे, फिर एक मर्तबा अपने चेहरो पर मसाह किया, फिर उन्होंने दोबारा दूसरी मर्तबा अपने हाथ मिट्टी पर मारा तो अपने सारे हाथो पर कंधो और बगलों समेत मुकम्मल तौर पर मसाह किया| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (318)

गुस्ल ए मस्नुन का बयान • بَاب الْغسْل الْمسنون

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمُ الْجُمُعَةَ فَلْيَغْتَسِلْ»

537. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई (नमाज़ ए) जुमा के लिए आए तो वह ग़ुस्ल करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (877) و مسلم (2 / 844)، (1952)

٥٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غُسْلُ يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُحْتَلِمٍ»

538. अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जुमा के दिन ग़ुस्ल करना हर बालिग़ शख़्स पर वाजिब है” | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (879) و مسلم (5 / 846)، (1957)

٥٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا يَغْسِلُ فِيهِ رَأسه وَجَسَده»

539. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हफ्ते में एक रोज़ ग़ुस्ल करना हर मुसलमान पर लाज़िम है, जिस में वह अपना सर और जिस्म (अच्छी तरह) धोए”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (897) و مسلم (9 / 849)، (1963)

بَاب الْغسْل الْمسنون • गुस्ल ए मस्नुन का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٤٠ - (حسن) عَن سَمُرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَبِهَا وَنِعْمَتْ وَمَنِ اغْتَسَلَ فَالْغُسْلُ أَفْضَلُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ والدارمي

540. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने जुमा के रोज़ वुज़ू किया तो उस ने अच्छा किया, और जिस ने ग़ुस्ल न किया तो ग़ुस्ल करना अफज़ल है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 8 ح 20349) و ابوداؤد (354) و الترمذی (497 وقال : حسن) و النسائی (3 / 94 ح 1381) و الدارمی (1 / 361 ، 362 ح 1548) [و صححه ابن خزیمة (1757)
فائده : الحسن البصریؒ صرح بالسماع عند الطواسی فی مختصر الاحکام (3 / 10 ح 334 / 467) و حدیثه عن سمرة صحیح ولو لم یصرح بالسماع لانه یروی عن کتاب سمرة و الروایة عن کتاب : صحیحة مالم یثبت الجرح فیه و الحمدلله]

٥٤١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ غَسَّلَ مَيِّتًا فَلْيَغْتَسِلْ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ»» وَزَادَ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ: «وَمَنْ حمله فَلْيَتَوَضَّأْ»

541. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स मय्यत को ग़ुस्ल दे तो वह खुद भी ग़ुस्ल करे"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (1463) و احمد (2 / 272 ح 7675) و الترمذی (993 وقال : حسن) و ابوداؤد (3161 ، 3162) [و للحديث طرق و شواهد]

٥٤٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يَغْتَسِلُ مِنْ أَرْبع: من الْجَنَابَة وَمن يَوْم الْجُمُعَة وَمن الْحجام وَمن غسل الْمَيِّت. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

542. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ चार चीजों: जनाबत, जुमा के दिन, संगी लगाने और मय्यत को ग़ुस्ल देने के बाद ग़ुस्ल किया करते थे| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (348 و 3160) [و ابن خزيمة (256) و الحاکم (1 / 163 ح 582) علی شرط الشيخين و وافقه الذهبی] * مصعب بن شيبة وثقه الجمهور و حديثه لا ينزل عن درجه الحسن

٥٤٣ - (صَحِيح) وَعَن قيس بن عَاصِم: أَنَّهُ أَسْلَمَ فَأَمَرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَغْتَسِلَ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

543. कैस बिन आसिम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने इस्लाम कबूल किया तो नबी ﷺ ने उन्हें हुक्म दिया के वह पानी में बैरी के पत्ते डालकर ग़ुस्ल करे| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه الترمذی (605 وقال : حسن) و ابوداؤد (355) و النسائی (1 / 109 ح 188 و سنده حسن) [و صححه ابن خزيمة (254 ، 255) و ابن حبان (232) و ابن الجارود (14) و غيرهم و للحديث شواهد ،]

بَاب الْغسْل الْمسنون • गुस्ल ए मस्नुन का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٤٤ - (حسن) عَن عِكْرِمَة: إِنَّ نَاسًا مِنْ أَهْلِ الْعِرَاقِ جَاءُوا فَقَالُوا يَا ابْنَ عَبَّاسٍ أَتَرَى الْغُسْلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاجِبًا قَالَ لَا وَلَكِنَّهُ أَطْهَرُ وَخَيْرٌ لِمَنِ اغْتَسَلَ وَمَنْ لَمْ يَغْتَسِلْ فَلَيْسَ عَلَيْهِ بِوَاجِبٍ. وَسَأُخْبِرُكُمْ كَيْفَ بَدْءُ الْغُسْلِ: كَانَ النَّاسُ مَجْهُودِينَ يَلْبَسُونَ الصُّوفَ وَيَعْمَلُونَ عَلَى ظُهُورِهِمْ وَكَانَ مَسْجِدُهُمْ ضَيِّقًا مُقَارِبَ السَّقْفِ إِنَّمَا هُوَ عَرِيشٌ فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي يَوْمٍ حَارٍّ وَعَرِقَ النَّاسُ فِي ذَلِكَ الصُّوفِ حَتَّى ثَارَتْ مِنْهُمْ رِيَاحٌ آذَى بِذَلِكَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا. فَلَمَّا وَجَدَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تِلْكَ الرّيح قَالَ: «أَيُّهَا النَّاسُ إِذَا كَانَ هَذَا الْيَوْمُ فَاغْتَسِلُوا وَلْيَمَسَّ أَحَدُكُمْ أَفْضَلَ مَا يَجِدُ مِنْ دُهْنِهِ

وَطِيبِهِ» . قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ثُمَّ جَاءَ اللَّهُ بِالْخَيْرِ وَلَبِسُوا غَيْرَ الصُّوفِ وَكُفُوا الْعَمَلَ وَوُسِّعَ مَسْجِدُهُمْ وَذَهَبَ بَعْضُ الَّذِي كَانَ يُؤْذِي بَعْضُهُمْ بَعْضًا مِنَ الْعَرَقِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

544. इकरिमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि अहल ए इराक से कुछ लोग आए और उन्होंने अर्ज़ किया, इब्ने अब्बास! क्या आप जुमा के रोज़ ग़ुस्ल करना वाजिब समझते है? उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, लेकिन पाकीज़गी का बाईस और बेहतर है, और जो शख़्स ग़ुस्ल न करे तो उस पर वाजिब नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि ग़ुस्ल का आगाज़ कैसे हुआ, लोग मेहनत कश थे, ऊनी लिबास पहनते थे, वह अपने कमर पर बोझ उठाते थे, उनकी मस्जिद तंग थी और छत ऊँची नहीं थी, पस वह एक छप्पर सा था, रसूलुल्लाह ﷺ गर्मियों के दिन तशरीफ़ लाए तो लोग इस ऊनी लिबास में पसीने से शराबोर थे, हत्ता कि उन से बू फ़ैल गई और वह एक दूसरे के लिए बाईस अज़ीयत बन गई, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने यह बू महसूस की तो फ़रमाया: “लोगो! जब यह (जुमा का) दिन हो तो ग़ुस्ल करो और जो बेहतरीन तेल और खुशबू मयस्सर हो वह इस्तेमाल करो”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: फिर अल्लाह ने माल अता कर दिया तो उन्होंने गैर ऊनी कपड़े पहन लिए, काम करने की ज़रूरत न रही, उनकी मस्जिद की तोशीअ कर दी गई और एक दूसरे को अज़ीयत पहुँचाने वाली वह पसीने की बू जाती रही| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (353) [و صححه ابن خزيمة (1755) و الحاكم على شرط البخارى (1 / 280 ، 281) و وافقه الذهبى (!) و حسنه الحافظ فى فتح البارى (2 / 362)]

بَاب الْحيض • हैज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٤٥ - (صَحِيح) عَن أنس: إِنَّ الْيَهُودَ كَانُوا إِذَا حَاضَتِ الْمَرْأَةُ فِيهِمْ لَمْ يُؤَاكِلُوهَا وَلَمْ يُجَامِعُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ فَسَأَلَ أَصْحَاب النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى (ويسألونك عَن الْمَحِيض قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ)»» الْآيَة. فَبَلَغَ ذَلِكَ الْيَهُودَ. فَقَالُوا: مَا يُرِيدُ هَذَا الرَّجُلُ أَنْ يَدَعَ مِنْ أَمْرِنَا شَيْئًا إِلَّا خَالَفَنَا فِيهِ فَجَاءَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ فَقَالَا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْيَهُودَ تَقُولُ كَذَا وَكَذَا أَفَلَا نُجَامِعُهُنَّ؟ فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنْ قَدْ وَجَدَ عَلَيْهِمَا. فَخَرَجَا فَاسْتَقْبَلَتْهُمَا هَدِيَّةٌ مِنْ لَبَنٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَرْسَلَ فِي آثَارِهِمَا فَسَقَاهُمَا فعرفا أَن لم يجد عَلَيْهِمَا. رَوَاهُ مُسلم

545. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, यहूदियों का यह तर्ज़े अमल था की जब उनमें किसी औरत को हैज़ आ जाता तो वह ना उस के साथ खाते न उन्हें घर में साथ रखते, पस नबी ﷺ के सहाबा ने आप से मसअला दरियाफ्त किया तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “वो आप से हैज़ के बारे में मसअला दरियाफ्त करते हैं”, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिमाअ के अलावा सब कुछ करो”, चुनांचे यहूदियों को इस का इल्म हुआ तो उन्होंने कहा: यह आदमी (नबी ﷺ) क्या चाहता है के तमाम मुआमलात में हमारी मुखालिफत ही करता है, चुनांचे उसैद बिन हुजैर और अब्बाद बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हुमा हाज़िर ए खिदमत हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यहूदी यह यह कहते हैं, क्या हम उन से (हालत ए हैज़) में जिमाअ

न करे? इस पर रसूलुल्लाह ﷺ के चेहरे का रंग बदल गया, हत्ता कि इन दोनों ने ख्याल किया के आप इन दो पर नाराज़ हो गए, पस वह वहां से चल दिए, उन्हें दूध का हदिया मीला जो नबी ﷺ की खिदमत में भेजा गया था, चुनांचे आप ﷺ ने किसी शख़्स को उन के पीछे भेजा और उन्हें दूध पिलाया जिस से उन्होंने पहचान लिया के आप इन पर नाराज़ नहीं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 302)، (694)

٥٤٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ص:١٧ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ وَكِلَانَا جُنُبٌ وَكَانَ يَأْمُرُنِي فَأَتَّزِرُ فَيُبَاشِرُنِي وَأَنَا حَائِضٌ وَكَانَ يُخْرِجُ رَأْسَهُ إِلَيَّ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فَأَغْسِلُهُ وَأَنَا حَائِض

546. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं और नबी ﷺ एक ही बर्तन से ग़ुस्ल किया करते थे, जबकि हम दोनों जुनुबी होते थे, आप मुझे हुक्म देते तो मैं आज़ार पहन लेती, फिर आप मेरे साथ लेट जाते, जबकि मैं हैज़ से होती, आप एअतेकाफ़ की हालत में अपना सर मुबारक मेरी तरफ कर देते, तो में उसे धो देती हालांकि में हैज़ से होती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,सहीह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (299 ، 301) و مسلم (1 / 293)، (679)

٥٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَشْرَبُ وَأَنَا حَائِضٌ ثُمَّ أُنَاوِلُهُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَيَضَعُ فَاهُ عَلَى مَوْضِعِ فِيَّ فَيَشْرَبُ وَأَتَعَرَّقُ الْعَرْقَ وَأَنَا حَائِضٌ ثُمَّ أُنَاوِلُهُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَيَضَع فَاه على مَوضِع فِي. رَوَاهُ مُسلم

547. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं हालत ए हैज़ में कोई चीज़ पीती फिर मैं उसे नबी ﷺ को दे देती तो आप इसी जगह अपना मुंह लगाते, जहाँ मैंने मुंह लगाया था, और मैं हड्डी वाली बोटी खाती जबकि मैं हैज़ से होती थी, फिर मैं उसे नबी ﷺ को दे देती तो आप इसी जगह मुंह लगाते जहाँ मेरा मुंह लगा था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 300)، (692)

٥٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يتكئ على حجري وَأَنا حَائِض ثمَّ يقْرَأ الْقُرْآن

548. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ मेरी गोद में टेक लगाते और कुरान ए हकिम की तिलावत फरमाते हालाँकि में इस वक़्त मखसूस अय्याम में होती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (297) و مسلم (15 / 301)، (693)

٥٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَاوِلِينِي الْخُمْرَةَ مِنَ الْمَسْجِدِ» . فَقُلْتُ: إِنِّي حَائِضٌ

فَقَالَ: «إِنَّ حَيْضَتَكِ لَيْسَتْ فِي يدك» . رَوَاهُ مُسلم

549. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “मुझे मस्जिद से चटाई पकड़ा दो”, मैंने अर्ज़ किया: में हैज़ से हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक तेरा हैज़ तेरे हाथ में नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 298)، (689)

٥٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي مِرْطٍ بَعْضُهُ عَلَيَّ وَبَعْضُهُ عَلَيْهِ وَأَنا حَائِض

550. मेमुना रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ एक ऊनी चादर में नमाज़ पढ़ा करते थे, इस का कुछ हिस्सा मुझ पर होता और कुछ आप पर होता, जबकि मैं हैज़ से थी| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (379) و مسلم (273 / 513)، (1146)

बَاب الْحيض • हैज़ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٥١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَتَى حَائِضًا أَوِ امْرَأَةً فِي دُبُرِهَا أَوْ كَاهِنًا فَقَدْ كَفَرَ بِمَا أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَتِهِمَا: «فَصَدَّقَهُ بِمَا يَقُولُ فَقَدْ كَفَرَ»»   وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: لَا نَعْرِفُ هَذَا الْحَدِيثَ إِلَّا من حَدِيث حَكِيم الْأَثْرَم عَن أبي تَيْمِية عَن أبي هُرَيْرَة

551. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने हाइज़ा से जिमाअ किया या औरत से लवाटत किया या वह किसी काहिन के पास गया तो उस ने मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल की गई शरियत का इनकार कर दिया”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा, दारमी, हसन: और इब्ने माजा और दारमी की रिवायत में है: “अगर उस ने इस (काहिन की) बात को सच्चा जाना तो बिलाशुबा उस ने कुफ्र किया”| इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: हम यह हदीस सिर्फ हकिमुल अषरम अन अबी तमीम अन अबी हुरैरा की सनद से जानते हैं| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (135) و ابن ماجه (639) و الدارمی (1 / 260 ح 1141) [و اعل بما لا یقدح]

٥٥٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُول الله مَا تحل لِي مِنِ امْرَأَتِي وَهِيَ حَائِضٌ؟ قَالَ: «مَا فَوْقَ الْإِزَارِ وَالتَّعَفُّفُ عَنْ ذَلِكَ أَفْضَلُ» . رَوَاهُ رَزِينٌ وَقَالَ مُحْيِي السُّنَّةِ: إِسْنَادُهُ لَيْسَ بِقَوِيٍّ

552. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! जब मेरी अहलिया हालत ए हैज़ में हो तो उसकी क्या चीज़े मेरे लिए हलाल है? आप ने फ़रमाया: “जो चीज़ आज़ार से ऊपर है, लेकिन उस से भी बचना अफ़ज़ल है” रजिन ने इसे रिवायत किया और मुह्यी अल सुन्नी ने फ़रमाया: उसकी इसनाद क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه رزین (لم اجده) [و ابوداؤد (213)] و انظر مصابیح السنه (1 / 246 ح 385) لقول محیی السنة البغوی رحمه الله* عبد الرحمن بن عائذ : لم یدرک معاذ بن جبل رضی الله عنه (और انظر جامع التحصیل ص 223)

٥٥٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وَقَعَ الرَّجُلُ بِأَهْلِهِ وَهِيَ حَائِضٌ فَلْيَتَصَدَّقْ بِنِصْفِ دِينَارٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد النَّسَائِيّ والدارمي وَابْن مَاجَه

553. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी अपने अहलिया से अय्याम ए हैज़ में मुजामअत करे तो वह आधा दीनार सदका करे”| (सहीह,ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (136) و ابوداؤد (266) و النسائی (1 / 153 ح 290) و الدارمی (1 / 254 ح 1110 ، 1112) و ابن ماجه (640) [و صححه الحاکم (1 / 171 ، 172) و وافقه الذهبی] * خصیف ضعیف ضعفه الجمهور و شریک القاضی مدلس و عنعن و اسانید هذا الحدیث کلها ضعیفة معلولة

٥٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا كَانَ دَمًا أَحْمَرَ فَدِينَارٌ وَإِذَا كَانَ دَمًا أَصْفَرَ فَنِصْفُ دِينَارٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

554. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ने फ़रमाया: “जब (हैज़ का) खून सुर्ख हो तो (जिमाअ करने की सूरत में) एक दीनार और जब खून ज़र्द हो तो आधा दीनार”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (137) [و البیهقی (1 / 316 ، 317) و ابن ماجه (650)] * فیه عند الکریم ابوامیه کما فی النکت الظراف (5 / 248 ح 6491) و السنن الکبری للبیهقی و غیرهما وهو ضعیف



हैज़ का बयान • بَاب الْحيض

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٥٥٥ - (صَحِيح) عَن زيد بن أسلم قَالَ: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا يَحِلُّ لِي مِنَ امْرَأَتِي وَهِيَ حَائِضٌ؟ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَشُدُّ عَلَيْهَا إِزَارَهَا ثُمَّ شَأْنُكَ بِأَعْلَاهَا» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالدَّارِمِيُّ مُرْسلا

555. ज़ैद बिन असलम रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त करते

हुए अर्ज़ किया, जब मेरी अहलिया हालत ए हैज़ में हो तो उसकी क्या चीज़े मेरे लिए हलाल है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस का आज़ार कस कर बांध, फिर उस से ऊपर का हिस्सा तेरे लिए हलाल है”| मालिक और दारमी ने मुरसल रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه مالک (1 / 57 ح 122) و الدارمی (1 / 241 ح 1037) * السند مرسل وله شاهد عند ابی داود (212) و سنده حسن

٥٥٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ إِذَا حِضْتُ نَزَلْتُ عَنِ الْمِثَال على الْحَصِير فَلم نقرب رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ ندن مِنْهُ حَتَّى نطهر. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

556. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब मुझे हैज़ आता तो मैं बिस्तर से चटाई पर आ जाती और जब तक हम पाक न हो जाती हम आप ﷺ के करीब न जाती| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (271) * ابو الیمان الرجال : مستور و ام ذرة : مجهولة الحال

بَاب الْمُسْتَحَاضَة • मुस्तहाजा का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٥٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ بِنْتُ أَبِي حُبَيْشٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي امْرَأَةٌ أُسْتَحَاضُ فَلَا أطهر أفأدع الصَّلَاة فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا إِنَّمَا ذَلِكِ عِرْقٌ وَلَيْسَ بِحَيْضٍ فَإِذَا أَقْبَلَتْ حَيْضَتُكِ فَدَعِي الصَّلَاةَ وَإِذَا أَدْبَرَتْ فَاغْسِلِي عَنْكِ الدَّمَ ثمَّ صلي»

557. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, फ़ातिमा बिन्ते अबी हुबैश नबी ﷺ की खिदमत में आई और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं इस्तिहाज़ा की मरीज़ हूँ, मैं पाक नहीं रहती, क्या मैं नमाज़ छोड़ दूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं वह तो एक रग का खून है, हैज़ नहीं, पस जब तुम्हें हैज़ आए तो नमाज़ छोड़ दो, और जब वह जाता रहे तो खून साफ़ कर (यानी ग़ुस्ल कर) और फिर नमाज़ पढ़ो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (228) و مسلم (62 / 333)، (753)

بَاب الْمُسْتَحَاضَة • मुस्तहाजा का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٥٥٨ - (حسن) عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ أَبِي حُبَيْشٍ: أَنَّهَا كَانَتْ تُسْتَحَاضُ فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ دم الْحيض فَإِنَّهُ دم أسود يعرف فَأَمْسِكِي عَنِ الصَّلَاةِ فَإِذَا كَانَ الْآخَرُ فَتَوَضَّئِي وَصَلِّي فَإِنَّمَا هُوَ عِرْقٌ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

558. उरवा बिन जुबैर रहिमहुल्लाह फ़ातिमा बिन्ते अबी हुबैश रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की उन्हें इस्तिहाज़ा का मर्ज़ था, नबी ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “जब हैज़ का खून होगा तो वह सियाह रंग का होगा और वह आसानी से पहचाना जाता है, जब वह हो तो नमाज़ न पढ़ो और जब दूसरा (खून) हो तो फिर वुज़ू कर और नमाज़ पढ़ो वह तो महज़ रग का खून है”| (सहीह,ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (286) و النسائی (1 / 185 ح 362) [و صححه ابن حبان (الاحسان : (1345) و الحاکم (1 / 174) علی شرط مسلم و وافقه الذهبی] * الزهری مدلس و عنعن

٥٥٩ - (صَحِيح) وَعَن أم سَلمَة: إِنَّ امْرَأَةً كَانَتْ تُهْرَاقُ الدَّمَ عَلَى عَهْدِ ص:١٧ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَفْتَتْ لَهَا أم سَلمَة رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «لِتَنْظُرْ عَدَدَ اللَّيَالِي وَالْأَيَّامِ الَّتِي كَانَتْ تَحِيضُهُنَّ مِنَ الشَّهْرِ قَبْلَ أَنْ يُصِيبَهَا الَّذِي أَصَابَهَا فَلْتَتْرُكِ الصَّلَاةَ قَدْرَ ذَلِكَ مِنَ الشَّهْرِ فَإِذَا خلفت ذَلِك فلتغتسل ثمَّ لتستثفر بِثَوْب ثمَّ لتصل» . رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد والدارمي وروى النَّسَائِيّ مَعْنَاهُ

559. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में एक औरत को इस्तिहाज़ा का खून आता था, उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा ने उस के बारे में नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ने फ़रमाया: “इसे चाहिए के इस मर्ज़ में मुब्तिला होने से पहले, इसे महीने में जितने दिन हैज़ का खून आता था, उन्हें शुमार कर के इतने दिन महीने में नमाज़ छोड़ दे, और जब वह दिन गुज़र जाए तो वह ग़ुस्ल करे और कपड़े का लंगोट बांध ले और फिर नमाज़ पढ़े”| मालिक, अबू दावुद, दारमी जबकि नसई ने भी इसी मानी में रिवायत किया है| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعیف ، رواه مالک (1 / 62 ح 133) و ابوداؤد (274) و الدارمی (1 / 200 ح 786) و النسائی (1 / 119 ، 120 ح 209) * سلیمان بن یسار لم یسمعه من ام سلمةؓ بل اخبره رجل به و الرجل مجهول و حدیث مسلم (333) یغنی عنه

٥٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ - قَالَ يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ: جَدُّ عَدِيٍّ اسْمُهُ دِينَارٌ - عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ فِي الْمُسْتَحَاضَةِ: «تَدَعُ الصَّلَاةَ أَيَّامَ أَقْرَائِهَا الَّتِي كَانَتْ تَحِيضُ فِيهَا ثُمَّ تَغْتَسِلُ وَتَتَوَضَّأُ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ وَتَصُومُ وَتُصَلِّي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

560. अदि बिन साबित अपने बाप से और वह इस (अदि) के दादा से रिवायत करते हैं, याह्या बिन मुईन ने कहा: अदि के दादा का नाम दीनार है, उन्होंने नबी ﷺ से रिवायत किया के आप ﷺ ने इस्तिहाज़ा में मुब्तिला औरत के बारे में फ़रमाया: "वो अपने अय्याम ए हैज़ का लिहाज़ रखते हुए इतने दिन नमाज़ न पढ़े फिर वह ग़ुस्ल करे और हर नमाज़ के लिए वुज़ू करे और वह रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (126 ، 127) و ابوداؤد (297)[و ابن ماجه : 625] * ابو اليقظان عثمان بن عمير ضعيف مدلس مختلط ، غال فى الشيخ (و انظر الفتح المبين فى تحقيق طبقات المدلسين ص : (105) و والد عدى بن ثابت مجهول الحال

٥٦١ - (حسن) وَعَن حمْنَة بنت جحش قَالَتْ: كُنْتُ أَسْتَحَاضُ حَيْضَةً كَثِيرَةً شَدِيدَةً فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَسْتَفْتِيهِ وَأُخْبِرُهُ فَوَجَدْتُهُ فِي بَيْتِ أُخْتِي زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُسْتَحَاضُ حَيْضَةً كَثِيرَةً شَدِيدَةً فَمَا تَأْمُرُنِي فِيهَا؟ قَدْ مَنَعَتْنِي الصَّلَاةَ وَالصِّيَامَ. قَالَ: «أَنْعَتُ لَكِ الْكُرْسُفَ فَإِنَّهُ يُذْهِبُ ص:١٧ الدَّمَ» . قَالَتْ: هُوَ أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: «فَتَلَجَّمِي» قَالَتْ هُوَ أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: «فَاتَّخِذِي ثَوْبًا» قَالَتْ هُوَ أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ إِنَّمَا أَثُجُّ ثَجًّا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَآمُرُكِ بِأَمْرَيْنِ أَيَّهُمَا صَنَعْتِ أَجْزَأَ عَنْكِ مِنَ الْآخَرِ وَإِنْ قَوِيتِ عَلَيْهِمَا فَأَنت أعلم» فَقَالَ لَهَا: " إِنَّمَا هَذِهِ رَكْضَةٌ مِنْ رَكَضَاتِ الشَّيْطَانِ فتحيضي سِتَّة أَيَّام أَو سَبْعَة أَيَّام فِي عِلْمِ اللَّهِ ثُمَّ اغْتَسِلِي حَتَّى إِذَا رَأَيْتِ أَنَّكِ قَدْ طَهُرْتِ وَاسْتَنْقَأْتِ فَصَلِّي ثَلَاثًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً أَوْ أَرْبَعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً وَأَيَّامَهَا وصومي وَصلي فَإِن ذَلِك يجزئك وَكَذَلِكَ فافعلي كَمَا تَحِيضُ النِّسَاءُ وَكَمَا يَطْهُرْنَ مِيقَاتُ حَيْضِهِنَّ وَطُهْرِهِنَّ وَإِنْ قَوِيتِ عَلَى أَنْ تُؤَخِّرِينَ الظُّهْرَ وتعجليين الْعَصْر فتغتسلين وتجمعين الصَّلَاتَيْنِ: الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَتُؤَخِّرِينَ الْمَغْرِبَ وَتُعَجِّلِينَ الْعِشَاءَ ثُمَّ تَغْتَسِلِينَ وَتَجْمَعِينَ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ فَافْعَلِي وَتَغْتَسِلِينَ مَعَ الْفَجْرِ فَافْعَلِي وَصُومِي إِنْ قَدَرْتِ عَلَى ذَلِكَ ". فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَهَذَا أَعْجَبُ الْأَمْرَيْنِ إِلَيَّ» . رَوَاهُ أَحْمَدَ وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

561. हमन बिन्ते जहश रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मुझे निहायत शदीद किस्म का मर्ज़ इस्तिहाज़ा था, मैं नबी ﷺ की खिदमत में आई ताकि आप को उस के मुतल्लिक बताऊँ और मसअला दरियाफ्त करू, चुनांचे मैंने उन्हें अपने बहन जैनब बिन्ते जहश रदियल्लाहु अन्हु के घर पाया तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे शदीद किस्म का इस्तिहाज़ा लाहक है, आप इस बारे में मुझे क्या हुक्म फरमाते हैं? इस ने तो मुझे नमाज़ रोज़े से रोक रखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें रुई इस्तेमाल करने का मशवरा देता हूँ, क्योंकि वह खून रोक देगी", उन्होंने अर्ज़ किया, वह उस से कही ज़्यादा हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तो फिर लंगोट कस ले", उन्होंने अर्ज़ किया, वह उस से भी है ज़्यादा हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर लंगोट के नीचे कोई कपड़ा रख ले", उन्होंने अर्ज़ किया, मुआमला उस से कही ज़्यादा शदीद है, मैं तो पानी की तरह खून बहाती हूँ, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें दो उमूर का हुक्म देता हूँ, तुमने उनमें से जो भी कर लिया, वह दूसरे से किफ़ायत कर जाएगा, और अगर तुम दोनों की ताकत रखो तो फिर तुम (अपनी हालत के मुतल्लिक) बेहतर जानती हो", आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: "ये तो एक शैतानी बीमारी है, तुम मामूल के मुताबिक छे या सात दिन तक अपने आप को हाइज़ा तसव्वुर कर लिया करो, फिर ग़ुस्ल करो हत्ता कि जब तुम समझो की तुम पाक साफ़ हो गई हो तो तेईस या चोबीस दिन नमाज़ पढ़ो और रोज़ा रखो, यह तुम्हारे लिए काफी होगा, और तुम हर माह इसी तरह किया करो जिस तरह हैज़ वाली औरते अपने मखसूस अय्याम में और उस से पाक होने के बाद करती है, और अगर तुम यह ताकत रखो के नमाज़ ए ज़ुहर को मोअख़्ख़र कर लो और नमाज़ ए असर को जल्दी कर लो, फिर ज़ुहर व असर को इकट्ठा पढ़ लो, इसी तरह मग़रिब को मोअख़्ख़र कर लो और ईशा को पहले कर लो, फिर ग़ुस्ल कर के दोनों नमाज़े इकट्ठी पढ़ लो,

पस ऐसे किया करो और नमाज़ ए फज़र के लिए ग़ुस्ल करो और रोज़ा रखो, अगर तुम ऐसा कर सको तो करो”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “और दोनों उमूर में से मुझे यह (ग़ुसल कर के नमाज़ जमा करना) ज़्यादा पसंदीदा है”| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 439 ح 28022) و ابوداؤد (287) و الترمذی (128 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه : 622 ، 627] * عبدالله بن محمد بن عقيل : ضعيف على الراجح ، تقدم (414)

بَاب الْمُسْتَحَاضَة • मुस्तहाजा का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٦٢ - (صَحِيح) عَن أَسمَاء بنت عُمَيْس قَالَت: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ أَبِي حُبَيْشٍ اسْتُحِيضَتْ مُنْذُ كَذَا وَكَذَا فَلَمْ تُصَلِّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ إِنَّ هَذَا مِنَ الشَّيْطَانِ لِتَجْلِسَ فِي مِرْكَنٍ فَإِذَا رَأَتْ صُفَارَةً فَوْقَ الْمَاءِ فَلْتَغْتَسِلْ لِلظُّهْرِ وَالْعَصْرِ غُسْلًا وَاحِدًا وَتَغْتَسِلْ لِلْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ غُسْلًا وَاحِدًا وَتَغْتَسِلْ لِلْفَجْرِ غُسْلًا وَاحِدًا وَتَوَضَّأُ فِيمَا بَيْنَ ذَلِكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَقَالَ:

562. अस्मा बिन्ते उमैश रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ फ़ातिमा बिन्ते हुबैश रदियल्लाहु अन्हा इतनी मुद्दत से इस्तिहाज़ा में मुब्तिला है, और उस ने इस दौरान नमाज़ नहीं पढ़ी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुबहानल्लाह! यह इस्तिहाज़ा शैतान की तरफ से है, वह एक बर्तन में बेठे, अगर वह पानी के ऊपर ज़र्दी देखे तो वह ज़ुहर व असर के लिए एक ग़ुस्ल करे, मग़रिब व ईशा के लिए एक ग़ुस्ल करे और फज़र के लिए एक ग़ुस्ल करे और उन के माबिन ज़ुहर व असर के ग़ुस्ल के माबिन वुज़ू कर ले”| (सहीह,ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (296) [و صححه الحاكم على شرط مسلم (1 / 174) و وافقه الذهبی] * الزهری عنعن

٥٦٣ - (مَوْقُوف) رَوَى مُجَاهِدٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: لَمَّا اشْتَدَّ عَلَيْهَا الْغُسْلُ أَمَرَهَا أَنْ تَجْمَعَ بَيْنَ الصَّلَاتَيْنِ

563. और उस ने कहा के मुजाहिद ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है, जब उस के लिए ग़ुस्ल करना मुश्किल हो गया तो आप ने इसे दो नमाज़े इकट्ठी पढ़ने का हुक्म फ़रमाया| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه [الدارمی (1 / 221 ح 908 و سنده حسن) و الطحاوی فی معانی الآثار (1 / 101 ، 102)]

नमाज़ का बयान • كتاب الصَّلَاة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٥٦٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ وَالْجُمُعَةُ إِلَى الْجُمُعَةِ وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ مُكَفِّرَاتٌ لَمَّا بَيْنَهُنَّ إِذَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرِ» . رَوَاهُ مُسلم

564. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब कबिराह गुनाहों से बचा जाए तो पांच नमाज़े, जुमा दूसरे जुमा तक और रमज़ान दूसरे रमज़ान तक होने वाले सगिरह गुनाहों का कफ्फारा है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 233)، (552)

٥٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهْرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ فِيهِ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسًا هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ؟ قَالُوا: لَا يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ. قَالَ: فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ يَمْحُو اللَّهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا "

565. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुझे बताओ अगर तुम में से किसी शख़्स के घर के सामने नहर हो और वह हर रोज़ उस में पांच मर्तबा ग़ुस्ल करता हो तो क्या उस के जिस्म पर कोई मेल बाकी रह जाएगा? सहाबा ने अर्ज़ किया, उस के जिस्म पर कोई मेल बाकी नहीं रहेगी आप ने फ़रमाया: यही पांच नमाज़ो की मिसाल है, अल्लाह उन के ज़रिए खताए मिटा देता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (528) و مسلم (283 / 667)، (1522)

٥٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا أَصَابَ مِنِ امْرَأَةٍ قُبْلَةً فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْل إِن الْحَسَنَات يذْهبن السَّيِّئَات)»» فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلِي هَذَا؟ قَالَ: «لِجَمِيعِ أُمَّتِي كُلِّهِمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لِمَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ أُمَّتِي»

566. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने किसी औरत का बोसा ले लिया फिर उस ने आकर नबी ﷺ को बताया, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: "दिन के दोनों अतराफ़ और रात की चंद साअतो में नमाज़ पढ़ा करे, यक़ीनन नेकियाँ बुराइओ को दूर कर देती है", इस आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह मेरे लिए खास है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी सारी उम्मत के लिए है" और एक रिवायत में है: "जिस ने मेरी उम्मत में से उस पर अमल किया"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (526) و مسلم (42 / 2763)، (7004)

٥٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فأقمه عَليّ قَالَ وَلم يسْأَله عَنهُ قَالَ وَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَصَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا قَضَى النَّبِيُّ ص:١٨ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّلَاة قَامَ إِلَيْهِ الرَّجُلُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ حَدًّا فأقم فِي كتاب الله قَالَ أَلَيْسَ قَدْ صَلَّيْتَ مَعَنَا قَالَ نَعَمْ قَالَ فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ غَفَرَ لَكَ ذَنْبَكَ أَو قَالَ حدك "

567. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी आया उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं मौजुब हद वाला अमल कर बैठा हूँ लिहाज़ा आप मुझ पर हद कायम फरमाइए, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने उस से इस (अमल) के मुतल्लिक कुछ दरियाफ्त न किया, इतने में नमाज़ का वक़्त हो गया, तो इस ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी, जब नबी ﷺ नमाज़ अदा कर चुके तो वह आदमी खड़ा हुआ और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं (ऐसा काम किया है के) हद को पहुँच चूका हूँ, लिहाज़ा आप मेरे मुतल्लिक अल्लाह का हुक्म नाफ़िज़ फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने तुम्हारे गुनाह या तुम्हारी हद को मुआफ़ फरमा दिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (6733) و مسلم (44 / 2764)، (7006)

٥٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَي الْأَعْمَال أحب إِلَى الله قَالَ: «الصَّلَاةُ لِوَقْتِهَا» قُلْتُ ثُمَّ أَيُّ قَالَ: «بِرُّ الْوَالِدَيْنِ» قُلْتُ ثُمَّ أَيُّ قَالَ: «الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» قَالَ حَدَّثَنِي بِهِنَّ وَلَوِ استزدته لزادني

568. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ से दरियाफ्त किया के अल्लाह को कौन सा अमल सबसे ज़्यादा महबूब है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वक़्त पर नमाज़ अदा करना”, मैंने अर्ज़ किया: फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वालिदेन से अच्छा सुलूक करना”, मैंने अर्ज़ किया: फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की राह में जिहाद करना”, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आप ने मुझे यह बाते बताइ, अगर में मज़ीद दरियाफ्त करता तो आप मुझे और ज़्यादा बताते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (527) و مسلم (139 / 85)، (254)

٥٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَ الْعَبْدِ وَبَيْنَ الْكُفْرِ ترك الصَّلَاة» . رَوَاهُ مُسلم

569. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन बंदे और कुफ्र के दरमियान फर्क नमाज़ का तर्क करना है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (134 / 82)، (246)

नमाज़ का बयान • كتاب الصَّلَاة
दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٥٧٠ - (صَحِيح) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَمْسُ صَلَوَاتٍ افْتَرَضَهُنَّ اللَّهُ تَعَالَى مَنْ أَحْسَنَ وُضُوءَهُنَّ وَصَلَّاهُنَّ لوقتهن وَأتم ركوعهن خشوعهن كَانَ لَهُ عَلَى اللَّهِ عَهْدٌ أَنْ يَغْفِرَ لَهُ وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ فَلَيْسَ لَهُ عَلَى اللَّهِ عَهْدٌ إِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُ وَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَرَوَى مَالك وَالنَّسَائِيّ نَحوه

570. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने पांच नमाज़े फ़र्ज़ की है, जिस शख़्स ने इन के लिए अच्छी तरह वुज़ू किया, उन्हें उन के वक़्त पर अदा किया और उन के रुकूअ व खुशु को मुकम्मल किया तो अल्लाह का उस के लिए अहद है के वह इसे मुआफ़ फरमादेगा और जिस ने ऐसे न किया तो उस से अल्लाह का कोई अहद नहीं, अगर वह चाहे तो इसे मुआफ़ फरमादे, और अगर चाहे तो उसे सज़ा दे”| अहमद, अबू दावुद, जबकि मालिक और इमाम नसई ने भी उसकी तरह रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (5 / 317 ح 23080) و ابوداؤد (1420) و مالک (1 / 123 ح 267) و النسائی (1 / 230 ح 462) [و ابن ماجہ (1401) و صححہ ابن حبان (252 ، 253)

٥٧١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلُّوا خَمْسَكُمْ وَصُومُوا ص:١٨ شَهْرَكُمْ وَأَدُّوا زَكَاةَ أَمْوَالِكُمْ وَأَطِيعُوا ذَا أَمْرِكُمْ تدْخلُوا جنَّة ربكُم» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

571. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपनी पांच (फ़र्ज़) नमाज़े पढ़ो, अपने माह (ए रमज़ान) के रोज़े रखो, अपने अमवाल की ज़कात दो, और अमीर की इताअत करो तो इस तरह तुम अपने रब की जन्नत में दाखिल हो जाओगे”| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (5 / 251 ح 22514) و الترمذی (616 وقال : حسن صحیح) [و صححہ الحاکم علی شرط مسلم 1 / 9 و وافقہ الذھبی]

٥٧٢ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مُرُوا أَوْلَادَكُمْ بِالصَّلَاةِ وَهُمْ أَبْنَاءُ سَبْعِ سِنِينَ وَاضْرِبُوهُمْ عَلَيْهَا وَهُمْ أَبْنَاءُ عَشْرِ سِنِين وَفَرِّقُوا بَيْنَهُمْ فِي الْمَضَاجِعِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَكَذَا رَوَاهُ فِي شرح السّنة عَنهُ

572. अम्र बिन शुऐब रहिमहुल्लाह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम्हारे बच्चे सात बरस के हो जाए तो उन्हें नमाज़ के मुतल्लिक हुक्म दो, और जब वह दस बरस के हो जाए (और वह उस में कोताही करे) तो उन्हें उस पर सज़ा दो, और उन के बिस्तर अलग

कर दो”| अबू दावुद, और शरह सुन्ना मैं भी इस तरह रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواہ ابوداؤد (495) و البغوی فی شرح السنة (2 / 406 ح 505)

٥٧٣ - (حسن) وَفِي المصابيح عَن سُبْرَة بن معبد

573. मसाबिह में सबरह बिन मअबद रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है| (सहीह)

صحيح ، رواہ البغوی فی المصابیح (1 / 253 ح 400) [و ابوداؤد (494) و الترمذی (407 و صححه)]

٥٧٤ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

574. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारे और उन (मुनाफिकिन) के दरमियान में नमाज़ अहद है पस जिस ने इसे तर्क किया तो उस ने कुफ्र किया”| (सहीह,हसन)

اسنادہ صحیح ، رواہ احمد (5 / 346 ح 23325) و الترمذی (2621 وقال : حسن صحیح غریب) و النسائی (1 / 231 ، 232 ح 464) و ابن ماجه (1079) [و صححه ابن حبان (255) و الحاکم (1 / 6 ، 7) و وافقه الذھبی]

كتاب الصَّلَاة • नमाज़ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٥٧٥ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي عَالَجْتُ امْرَأَةً فِي أَقْصَى الْمَدِينَةِ وَإِنِّي أَصَبْتُ مِنْهَا مَا دُونَ أَنْ أَمَسَّهَا فَأَنَا هَذَا فَاقْضِ فِيَّ مَا شِئْتَ. فَقَالَ عُمَرَ لَقَدْ سَتَرَكَ اللَّهُ لَو سترت نَفْسِكَ. قَالَ وَلَمْ يَرُدَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ شَيْئًا فَقَامَ الرَّجُلُ فَانْطَلَقَ فَأَتْبَعَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا فَدَعَاهُ وتلا عَلَيْهِ هَذِه الْآيَة (أَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَات يذْهبن السَّيِّئَات ذَلِك ذكرى لِلذَّاكِرِينَ)»» فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ هَذَا لَهُ خَاصَّة قَالَ: «بل للنَّاس كَافَّة» . رَوَاهُ مُسلم

575. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने मदीना के दूसरे किनारे एक औरत से तिब्ब आज़माई की, मैंने जिमाअ के अलावा उस के साथ सब कुछ किया, चुनान्चे में हाज़िर हूँ, आप मेरे मुतल्लिक जो चाहे फैसला फरमाइए, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने इसे कहा: अल्लाह ने तुम्हारी परदापोशी की थी काश की तुम भी अपने परदापोशी करते, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ ने इसे कोई जवाब न दिया, और वह आदमी खड़ा हुआ और चला गया, चुनांचे नबी ﷺ ने किसी आदमी को उस के पीछे भेजा तो उसे बुलाकर यह आयत सुनाई: “दिन के दोनों अतराफ़

और रात की चंद साअतो में नमाज़ पढ़ा करे, यक़ीनन नेकियाँ बुराइओ को दूर कर देती है और यह नसीहत कबूल करने वालो के लिए नसीहत है”, हाज़िरिन में से किसी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! यह उस के लिए खास है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि तमाम लोगों के लिए है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 2763)، (7004)

٥٧٦ - (حسن) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خَرَجَ زَمَنَ الشِّتَاءِ وَالْوَرَقُ يَتَهَافَتُ فَأَخَذَ بِغُصْنَيْنِ مِنْ شَجَرَةٍ قَالَ فَجَعَلَ ذَلِكَ الْوَرَقُ يَتَهَافَتُ قَالَ فَقَالَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ» قُلْتُ لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «إِنَّ العَبْد الْمُسلم ليصل الصَّلَاة يُرِيد بهَا وَجه الله فتهافت عَنهُ ذنُوبه كَمَا يتهافت هَذَا الْوَرَقُ عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

576. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ पतझड़ में बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने दो शाखों को पकड़ा, रावी ने बयान किया के पत्ते गिरने लगे और आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अबू ज़र! मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हाज़िर हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक मुसलमान बंदा अल्लाह की रज़ा के लिए नमाज़ पढ़ता है तो उस से गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे इस दरख्त से पत्ते गिरते है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 179 ح 21889) * فيه مزاحم بن معاوية الضبى مجهول الحال وثقه ابن حبان وحده من المتقدمين و للحديث شواهد ضعيفة ، انظر تنقيح الرواة (1 / 100)

٥٧٧ - (حسن) وَعَن زيد بن خَالِد الْجُهَنِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى سَجْدَتَيْنِ لَا يَسْهُو فِيهِمَا غَفَرَ اللَّهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

577. ज़ैद बिन खालिद अल जुहनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स हुज़ूर ए क़ल्ब से दो रकते पढ़ता है तो अल्लाह उस के पिछले गुनाह मुआफ़ फरमा देता है”| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

حسن ، رواه احمد (5 / 194 ح 22033) [و ابوداؤد (905 مطولاً) و صححه الحاكم على شرط مسلم (1 / 132) و وافقه الذهبى]

٥٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلَاةَ يَوْمًا فَقَالَ: «مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُورًا وَبُرْهَانًا وَنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمن لم يحافظ عَلَيْهَا لم يكن لَهُ نور وَلَا برهَان وَلَا نجاة وَكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ قَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

578. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने एक रोज़ नमाज़ का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया: “जिस ने नमाज़ की हिफाज़त व पाबन्दी की तो वह इस शख़्स के लिए रोज़

ए कियामत नूर, दलील और निजात होगी, और जिस ने उसकी हिफ़ाज़त व पाबन्दी न की तो रोज़ ए कियामत उस के लिए नूर, दलील और निजात नहीं होगी और वह कारून, फिरोन, हामान और अबी बिन खल्फ के साथ होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 169 ح 6576) و الدارمی (2 / 301 ، 302 ح 2724) و البیهقی فی شعب الایمان (2823) * عیسی بن هلال : وثقه الحاکم و الجمهور وهو حسن الحدیث (انظر نیل المقصود : 1399)

٥٧٩ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن شَقِيق قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَرَوْنَ شَيْئًا مِنَ الْأَعْمَالِ تَركه كفر غير الصَّلَاة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

579. अब्दुल्लाह बिन शकिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा आमाल में सिर्फ तर्क ए नमाज़ को कुफ्र तसव्वुर किया करते थे| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2622) [و للحدیث لون آخر عند الحاکم (1 / 7 ح 12)]

٥٨٠ - (حسن) وَعَن أبي الدَّرْدَاء قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيلِي أَنْ لَا تُشْرِكَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَإِنْ قُطِّعْتَ وَحُرِّقْتَ وَلَا تَتْرُكْ صَلَاةً مَكْتُوبَة مُتَعَمدا فَمن تَركهَا مُتَعَمدا فقد بَرِئت مِنْهُ الذِّمَّةُ وَلَا تَشْرَبِ الْخَمْرَ فَإِنَّهَا مِفْتَاحُ كل شَرّ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

580. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे खलील (नबी ﷺ) ने मुझे वसीयत फरमाई के अल्लाह के साथ किसी को शरीक न बनाना ख्वाह तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और ख्वाह तुम्हें जला दिया जाए, और जान बुझ कर फ़र्ज़ नमाज़ तर्क न करना, जिस ने जान बुझकर इसे तर्क कर दिया तो उस से ज़िम्मा उठ गया, और शराब न पीना क्योंकि वह तमाम बुराइओ की चाबी है”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (4034) [و حسنه البوصیری] * فیه شهر بن حوشب : حسن الحدیث و للحدیث شواهد

بَاب الْمَوَاقِيت • नमाज़ के वक्तो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٨١ - (صَحِيح) عَن عبد اللَّهِ ابْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَقْتُ الظُّهْرِ إِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ وَكَانَ ظِلُّ الرَّجُلِ كَطُولِهِ مَا لَمْ يَحْضُرِ الْعَصْرُ وَوَقْتُ الْعَصْرِ مَا لَمْ تَصْفَرَّ الشَّمْسُ وَوَقْتُ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ مَا لَمْ يَغِبِ الشَّفَقُ وَوَقْتُ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى نِصْفِ اللَّيْلِ الْأَوْسَطِ وَوَقْتُ صَلَاةِ الصُّبْحِ مِنْ طُلُوعِ الْفَجْرِ مَا لَمْ تَطْلُعِ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ فَأَمْسِكْ عَنِ الصَّلَاة فَإِنَّهَا تطلع بَين قَرْنَي شَيْطَان» . رَوَاهُ مُسلم

581. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ ए ज़ुहर का वक़्त ज़वाल ए आफ़ताब से शुरू होता है और आदमी का साया उस के कद के बराबर हो जाने और असर का वक़्त न होने तक रहता है, और असर का वक़्त सूरज के ज़र्द हो जाने से पहले तक रहता है, और मग़रिब का वक़्त शफ़क़(गुरूब ए आफ़ताब के बाद अफक पर जो सुरखी होती है) के रहने तक रहता है, और ईशा का वक़्त आधी रात तक रहता है जबकि नमाज़ ए फज़र का वक़्त तुलुए फज़र से तुलुए आफ़ताब से पहले तक रहता है, और जब सूरज तुलुअ होने लगे तो फिर नमाज़ न पढ़ो क्योंकि वह शैतान के सींगो के दरमियान से तुलुअ होता है”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (173 / 612)، (1388)

٥٨٢ - (صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ وَقْتِ الصَّلَاةِ فَقَالَ لَهُ: «صَلِّ مَعَنَا هَذَيْنِ» يَعْنِي الْيَوْمَيْنِ فَلَمَّا زَالَتِ الشَّمْسُ أَمَرَ بِلَالًا فَأَذَّنَ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الظُّهْرَ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ بَيْضَاءُ نَقِيَّةٌ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْمَغْرِبَ حِينَ غَابَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْعِشَاءَ حِينَ غَابَ الشَّفَقُ ثُمَّ أَمَرَهُ فَأَقَامَ الْفَجْرَ حِينَ طَلَعَ الْفَجْرُ فَلَمَّا أَنْ كَانَ ص:١٨ الْيَوْمُ الثَّانِي أَمَرَهُ فَأَبْرَدَ بِالظُّهْرِ فَأَبْرَدَ بِهَا فَأَنْعَمَ أَنْ يُبْرِدَ بِهَا وَصَلَّى الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ أَخَّرَهَا فَوْقَ الَّذِي كَانَ وَصَلَّى الْمَغْرِبَ قَبْلَ أَنْ يَغِيبَ الشَّفَقُ وَصَلَّى الْعِشَاءَ بَعْدَمَا ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ وَصَلَّى الْفَجْرَ فَأَسْفَرَ بِهَا ثُمَّ قَالَ أَيْنَ السَّائِلُ عَنْ وَقْتِ الصَّلَاةِ فَقَالَ الرَّجُلُ أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «وَقْتُ صَلَاتكُمْ بَين مَا رَأَيْتُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

582. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी आदमी ने नमाज़ो के अवकात के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “तुम दो दिन हमारे साथ नमाज़ पढ़ो”, जब सूरज ढल गया तो आप ने बिलाल को हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने आज़ान दी, फिर आप ने हुक्म दिया तो उन्होंने इकामत कही, फिर आप ने उन्हें हुक्म दिया तो उन्होंने असर के लिए इकामत कही, जबकि सूरज बुलंद साफ़ चमक दार था, फिर आप ने उन्हें हुक्म दिया तो उन्होंने सूरज गुरूब हो जाने पर मग़रिब के लिए इकामत कही, और फिर जब शफ़क़गायब हो गई तो आप ने उन्हें नमाज़ ए ईशा के लिए इकामत कहने का हुक्म फ़रमाया, फिर जब फज़र तुलुअ हो गया तो आप ने उन्हें नमाज़ ए फज़र के लिए इकामत कहने का हुक्म फ़रमाया, दूसरे रोज़ आप ने उन्हें ज़ुहर को ठंडा करने का हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने इसे खूब मोअख़्ख़र किया, आप ने असर पढ़ी जबकि सूरज बुलंद था, आप ने गुज़िश्ता रोज़ से इसे मोअख़्ख़र किया, आप ने शफ़क़गायब हो जाने से पहले मग़रिब पढ़ी और तिहाई रात गुज़र जाने के बाद ईशा पढ़ी, और फज़र तुलुअ फज़र के रोशन हो जाने पर पढ़ी, फिर फ़रमाया: “नमाज़ो के अवकात मालुम करने वाला शख़्स कहाँ है?” तो इस आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं हाज़िर हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी नमाज़ो का वक़्त उन अवकात के दरमियान में है जिस का तुम मुलाहेज़ा कर चुके हो”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (176 / 613)، (1391)

नमाज़ के वक्तो का बयान	بَاب الْمَوَاقِيت •
दूसरी फस्ल	الْفَصْل الثَّانِي •

٥٨٣ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَّنِي جِبْرِيلُ عِنْدَ الْبَيْتِ مَرَّتَيْنِ فَصَلَّى بِيَ الظُّهْرَ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ وَكَانَتْ قَدْرَ الشِّرَاكِ وَصَلَّى بِيَ الْعَصْرَ حِين كَانَ ظلّ كل شَيْء مثله وَصلى بِي يَعْنِي الْمغرب حِين أفطر الصَّائِم وَصلى بِي الْعشَاء حِينَ غَابَ الشَّفَقُ وَصَلَّى بِيَ الْفَجْرَ حِينَ حَرُمَ الطَّعَامُ وَالشَّرَابُ عَلَى الصَّائِمِ فَلَمَّا كَانَ الْغَدُ صَلَّى بِيَ الظُّهْرَ حِينَ كَانَ ظِلُّهُ مِثْلَهُ وَصَلَّى بِيَ الْعَصْرَ حِينَ كَانَ ظِلُّهُ مِثْلَيْهِ وَصَلَّى بِيَ الْمَغْرِبَ حِينَ أَفْطَرَ الصَّائِمُ وَصَلَّى بِيَ الْعِشَاءَ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ وَصَلَّى بِيَ الْفَجْرَ فَأَسْفَرَ ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَيَّ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ هَذَا وَقْتُ الْأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِكَ وَالْوَقْتُ مَا بَيْنَ هَذَيْنِ الْوَقْتَيْنِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

583. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह के करीब मुझे दो मर्तबा नमाज़ पढ़ाई, (एक मर्तबा) जब सूरज तस्मिया के बराबर ढल गया तो उन्होंने मुझे ज़ुहर पढ़ाई, और जब हर चिज़ का साया इस (चीज़) के मिसल हो गया तो उन्होंने मुझे असर पढ़ाई, जिस वक़्त रोज़दार इफ्तार करता है इस वक़्त मुझे मग़रिब पढ़ाई, और शफ़क़ख़त्म हो जाने पर मुझे ईशा पढ़ाई, और जिस वक़्त रोज़दार पर खाना पीना हराम हो जाता है जिस वक़्त मुझे फ़ज़र पढ़ाई, पस अगला रोज़ हुआ तो उन्होंने मुझे ज़ुहर इस वक़्त पढ़ाई जब हर चिज़ का साया इस (चीज़) के मिसल हो गया और जब हर चिज़ का साया दो मिसल हो गया तो मुझे असर पढ़ाई, और जिस वक़्त रोज़दार इफ्तार करता है इस वक़्त मुझे मग़रिब पढ़ाई, और तिहाई रात गुज़रने पर मुझे ईशा पढ़ाई, और सुबह रोशन हो जाने पर नमाज़ ए फ़ज़र पढ़ाई, फिर वह मेरी तरफ मुतवज्जे हुए और फ़रमाया मुहम्मद यह आप से पहले अंबिया अलैहिस्सलाम का वक़्त है और नमाज़ो का वक़्त इन्ही दो अवकात के दरमियान में है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (393) و الترمذی (149) [و صححه ابن خزیمة (325) و ابن الجارود (149 ، 150) و الحاکم (1 / 193)]

नमाज़ के वक्तो का बयान	بَاب الْمَوَاقِيت •
तीसरी फस्ल	الْفَصْل الثَّالِث •

٥٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ أَخَّرَ الْعَصْرَ شَيْئًا فَقَالَ لَهُ عُرْوَةُ: أَمَا إِنَّ جِبْرِيلَ قَدْ نَزَلَ فَصَلَّى أَمَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: اعْلَمْ مَا تَقُولُ يَا عُرْوَةُ فَقَالَ: سَمِعْتُ بَشِيرَ بْنَ أَبِي مَسْعُودٍ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا مَسْعُودٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «نَزَلَ جِبْرِيلُ فَأَمَّنِي فَصَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ ثُمَّ صَلَّيْتُ مَعَهُ» يحْسب بأصابعه خمس صلوَات

584. इब्ने शिहाब ज़ुहरी रहिमहुल्लाह से रिवायत है के उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह ने नमाज़ ए असर

में कुछ ताखीर की तो उरवा (बिन जुबैर (रह)) ने उन्हें कहा: आगाह रहो के जिब्राइल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के आगे नमाज़ पढ़ी, तो उमर रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उरवा तुम्हें पता होना चाहिए की तुम क्या कर रहे हो, उन्होंने कहा: मैंने बशीर बिन अबी मसउद रहिमहुल्लाह को बयान करते हुए सुना, उन्होंने कहा: मैंने अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु से सुना वह बयान करते हैं, के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो उन्होंने मेरी इमामत कराइ तो मैंने उन के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उन के साथ (दूसरी) नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उन के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उन के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर मैंने उन के साथ नमाज़ पढ़ी”, यूँ पांच दफा अपने उंगलियों पर शुमार किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (3221) و مسلم (166 / 160)، (1379)

٥٨٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى عُمَّالِهِ إِنَّ أَهَمَّ أُمُورِكُمْ عِنْدِي الصَّلَاة فَمن حَفِظَهَا وَحَافَظَ عَلَيْهَا حَفِظَ دِينَهُ وَمَنْ ضَيَّعَهَا فَهُوَ لِمَا سِوَاهَا أَضْيَعُ ثُمَّ كَتَبَ أَنْ صلوا الظّهْر إِذا كَانَ الْفَيْءُ ذِرَاعًا إِلَى أَنْ يَكُونَ ظِلُّ أَحَدِكُمْ مِثْلَهُ وَالْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ بَيْضَاءُ نَقِيَّةٌ قَدْرَ مَا يَسِيرُ الرَّاكِبُ فَرْسَخَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةً قبل مغيب الشَّمْس وَالْمغْرب إِذا غربت الشَّمْسُ وَالْعِشَاءَ إِذَا غَابَ الشَّفَقُ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ فَمَنْ نَامَ فَلَا نَامَتْ عَيْنُهُ فَمَنْ نَامَ فَلَا نَامَتْ عَيْنُهُ فَمَنْ نَامَ فَلَا نَامَتْ عَيْنُهُ وَالصُّبْحَ وَالنُّجُومُ بَادِيَةٌ مُشْتَبِكَةٌ. رَوَاهُ مَالك

585. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के आप ने अपने गवर्नर के नाम ख़त लिखा के मेरे नज़दीक तुम्हारा सबसे अहम काम नमाज़ है, जिस ने उसकी हिफाज़त व पाबन्दी की उस ने अपने दीन की हिफाज़त की, और जिस ने इसे ज़ाए किया तो फिर वह उस के अलावा दीगर उमूर ए दीन को ज़्यादा ज़ाए करने वाला है, फिर आप ने लिखा के नमाज़ ए ज़ुहर का वक़्त यह है कि साया एक हाथ हो और यह इस वक़्त तक रहता है के तुम में से हर एक का साया इस (आदमी) के साए के बराबर हो जाए, और नमाज़ ए असर का वक़्त यह है कि सूरज बुलंद, सफ़ेद और चमक दार हो और इतना वक़्त हो के सवार गुरूब ए आफ़ताब से पहले दो या तीन फ़रसख (तकरीबन दस या पन्द्रह किलो मीटर) का फासला तेअ कर सके और नमाज़ ए मग़रिब का वक़्त वह है जब सूरज गुरूब हो जाए, और नमाज़ ए ईशा का वक़्त शफ़क़ख़त्म होने से शुरू होता है और तिहाई रात तक रहता है, पस जो शख़्स सो जाए तो (अल्लाह करे) उसकी आँख को आराम हासिल न हो, जो शख़्स सो जाए तो उसकी आँख को आराम हासिल न हो, जो सो जाए तो (अल्लाह करे) उसकी आँख को आराम हासिल न हो और सुबह का वक़्त वह है की जब सुबह सादिक हो जाए लेकिन सितारे अभी नुमाया हो| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 6 ، 7 ح 5) * السند منقطع و للاثر طرق كثيرة عند مالک و غيره (انظر الموطا 1 / 7 و سنده صحيح)

٥٨٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ قَدْرُ صَلَاةِ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم الظّهْر فِي الصَّيْفِ ثَلَاثَةَ أَقْدَامٍ إِلَى خَمْسَةِ أَقْدَامٍ وَفِي الشِّتَاءِ خَمْسَةَ أَقْدَامٍ إِلَى سَبْعَةِ أَقْدَامٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

586. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मौसमे गर्मी में नमाज़ ए ज़ुहर इस वक़्त पढ़ते

थे जब आदमी का साया तीन कदम से पांच कदम तक होता जबकि मौसमे सरमा में साया पांच से सात कदम तक होता| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (400) و النسائى (1 / 250 ، 251 ح 504)

بَاب تَعْجِيل الصَّلَوَات • अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٥٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ سَيَّارِ بْنِ سَلَامَةَ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَأَبِي عَلَى أَبِي بَرْزَةَ الْأَسْلَمِيِّ فَقَالَ لَهُ أَبِي كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي الْمَكْتُوبَةَ فَقَالَ كَانَ يُصَلِّي الْهَجِيرَ الَّتِي تَدْعُونَهَا الْأُولَى حِينَ تَدْحَضُ الشَّمْسُ وَيُصلي الْعَصْر ثُمَّ يَرْجِعُ أَحَدُنَا إِلَى رَحْلِهِ فِي أَقْصَى الْمَدِينَةِ وَالشَّمْسُ حَيَّةٌ وَنَسِيتُ مَا قَالَ فِي الْمغرب وَكَانَ يسْتَحبّ أَن يُؤَخر الْعشَاء الَّتِي تَدْعُونَهَا الْعَتَمَةَ وَكَانَ يَكْرَهُ النَّوْمَ قَبْلَهَا والْحَدِيث بعْدهَا وَكَانَ يَنْفَتِل مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حِينَ يَعْرِفُ الرَّجُلُ جَلِيسَهُ وَيَقْرَأُ بِالسِتِّينَ إِلَى الْمِائَةِ. وَفِي رِوَايَةٍ: وَلَا يُبَالِي بِتَأْخِيرِ الْعِشَاءِ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ وَلَا يُحِبُّ النَّوْمَ قَبْلَهَا وَالْحَدِيثَ بَعْدَهَا

587. सय्यार बिन सलाम रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं और मेरे वालिद अबू बुरैज़ा असलमी रदियल्लाहु अन्हु के पास गए तो मेरे वालिद ने उन से रसूलुल्लाह ﷺ की फ़र्ज़ नमाज़ की कैफियत के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप नमाज़ ए ज़ुहर, जिसे तुम पहली नमाज़ कहते हो, इस वक़्त पढ़ा करते थे जब सूरज ढल जाता, आप नमाज़ ए असर पढ़ते तो फिर हम में से कोई मदीना के आखिरी किनारे वाकेअ अपने रिहाइश गाह पर वापस जाता तो सूरज बिलकुल सफ़ेद और चमक दार होता था, रावी बयान करते हैं, मैं मग़रिब के बारे में भूल गया के उन्होंने क्या कहा था, और जब आप नमाज़ ए ईशा जिसे तुम (अतमह) कहते हो, को ताखीर से पढ़ना पसंद फरमाते थे, आप इस (नमाज़ ए ईशा) से पहले सो जाना और उस के बाद बाते करना, ना पसंद फरमाते थे, और आप नमाज़ ए फज़र में सलाम फेर कर नमाज़ियो की तरफ रुख फरमाते तो इस वक़्त हर नमाज़ी अपने साथ वाले नमाज़ी को पहचान लेता था, और आप साठ से सौ आयात तक तिलावत फ़रमाया करते थे, और एक रिवायत में है आप ﷺ नमाज़ ए ईशा को तिहाई रात तक बगैर किसी परवाह के मोअख़्ख़र कर दिया करते थे, और आप नमाज़ ए ईशा से पहले सोना और उस के बाद बाते करने को ना पसंद किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (541) و مسلم (235 / 647)، (1462)

٥٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن مُحَمَّد بن عَمْرو هُوَ ابْن الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ قَالَ: سَأَلْنَا جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ صَلَاةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ كَانَ يُصَلِّي الظُّهْرَ بِالْهَاجِرَةِ وَالْعَصْرَ وَالشَّمْسُ حَيَّةٌ وَالْمَغْرِبَ إِذَا وَجَبَتْ وَالْعِشَاءَ إِذَا كَثُرَ النَّاسُ عَجَّلَ وَإِذَا قَلُّوا أَخَّرَ وَالصُّبْح بِغَلَس

588. मुहम्मद बिन अम्र बिन हसन बिन अली रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमने जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से नबी ﷺ की नमाज़ो के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप नमाज़ ए ज़ुहर ज़वाल ए आफ़ताब के फ़ौरन बाद जबकि असर इस वक़्त पढ़ते जब सूरज खूब रोशन और चमक दार होता, और मग़रिब इस वक़्त पढ़ते जब सूरज गुरूब हो जाता, जबकि ईशा के बारे में ऐसे था की जब लोग ज़्यादा इकठ्ठे हो जाते तो आप ﷺ जल्दी पढ़ लेते और जब नमाज़ी कम होते तो उसे ताखीर से पढ़ते और फज़र की नमाज़ तारीकी में पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (565) و مسلم (233 / 646)، (1488)

٥٨٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالظَّهَائِرِ سَجَدْنَا على ثيابنا اتقاء الْحر

589. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम नबी ﷺ के पीछे नमाज़ ए ज़ुहर पढ़ा करते थे तो हम गर्मी से बचने के लिए अपने कपड़ो पर (सर रख कर) सजदाह किया करते थे| बुखारी, मुस्लिम, और मज़कुरह अल्फाज़ सहीह बुखारी के है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (542) و مسلم (191 / 620)، (1407)

٥٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ فَأَبْرِدُوا بِالصَّلَاةِ»

590. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब गर्मी शदीद हो तो फिर नमाज़ ए ज़ुहूर पढ़ने में ताखीर करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (533) و مسلم (180 / 615)، (1395) 0 حدیث ابی سعید : رواه البخاری (538)

٥٩١ - وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ: " بِالظُّهْرِ فَإِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ وَاشْتَكَتِ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا فَقَالَتْ: رَبِّ أَكَلَ بَعْضِي بَعْضًا فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيْنِ نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيْفِ أَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْحر وَأَشد مَا تَجِدُونَ من الزَّمْهَرِير ". وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: «فَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْحَرِّ فَمِنْ سَمُومِهَا وَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْبرد فَمن زمهريرها»

591. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से ज़ुहर के मुतल्लिक बुखारी की रिवायत में है: “क्योंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम की भांप की वजह से है, जहन्नम ने अपने रब से शिकायत करते हुए अर्ज़ किया, मेरे रब! मेरे बाज़ हिस्से ने बाज़ को खा लिया, चुनांचे अल्लाह तआला ने इसे दो सांस, एक सांस मौसमे सरमा में और एक सांस मौसमे

गर्मी में, लेने की इजाज़त फरमाई, तुम जो ज़्यादा गर्मी और ज़्यादा शर्दी पाते हो वह इसी वजह से है” बुखारी, मुस्लिम, | और बुखारी की रिवायत में है ،” पस तुम जो गर्मी की शिद्दत पाते हो तो वह उसकी गरम हवा की वजह से है, और तुम जो ज़्यादा शर्दी पाते हो तो वह उसकी ठंडक की वजह से है|‘‘ (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (537) و مسلم (186 / 617)، (1402) کلاهما من حدیث ابی هریرة رضی الله عنه ، و لحدیث ابی سعید انظر الحدیث السابق (590)

٥٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي الْعَصْرَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ حَيَّةٌ فَيَذْهَبُ الذَّاهِبُ إِلَى الْعَوَالِي فَيَأْتِيهِمْ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ وَبَعْضُ الْعَوَالِي مِنَ الْمَدِينَةِ على أَرْبَعَة أَمْيَال أَو نَحوه

592. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ असर पढ़ा करते थे जबकि सूरज बुलंद चमक दार होता था, जाने वाला शख़्स (नमाज़ ए असर मस्जिद ए नबवी में अदा करने के बाद) “ अवाली” (मदीना की नज़दीक बस्तियों में) जाता तो सूरज बुलंद होता और बाज़ बस्तियां मदीना से तकरीबन चार मील की मुसाफ़त पर थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (550) و مسلم (192 / 621)، (1408)

٥٩٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تِلْكَ صَلَاةُ الْمُنَافِقِ: يَجْلِسُ يَرْقُبُ الشَّمْسَ حَتَّى إِذَا اصْفَرَّتْ وَكَانَتْ بَيْنَ قَرْنَيِ الشَّيْطَانِ قَامَ فَنَقَرَ أَرْبَعًا لَا يَذْكُرُ اللَّهَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلا ". رَوَاهُ مُسلم

593. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये मुनाफ़िक़ शख़्स की नमाज़ है जो बैठ कर सूरज का इंतज़ार करता रहता है हत्ता कि जब वह ज़र्द और शैतान के सींगो के दरमियान में पहुँचने के करीब हो जाता है तो वह खड़ा हो कर चार थोंगिया मारता है और उनमें अल्लाह तआला का बहोत कम ज़िक्र करता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (195 / 622)، (1412)

٥٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الَّذِي تَفُوتُهُ صَلَاةُ الْعَصْرِ فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ»

594. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स की नमाज़ ए असर फौत हो गई तो गोया उस का घर बार लुट गया”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (552) و مسلم (200 / 626)، (1417)

٥٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ تَرَكَ صَلَاةَ الْعَصْرِ فقد حَبط عمله. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

595. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने नमाज़ ए असर तर्क कर दी तो उस का अमल ज़ाए हो गया”| (बुखारी)

رواه البخارى (553)

٥٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي الْمَغْرِبَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَنْصَرِف أَحَدنَا وَإِنَّهُ ليبصر مواقع نبله "

596. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मग़रिब पढ़ा करते थे, तो हम में से कोई वापस जाता तो वह अपने तीर के गिरने की जगह को देख लेता था”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (559) و مسلم (217 / 637)، (1441)

٥٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانُوا يُصَلُّونَ الْعَتَمَةَ فِيمَا بَيْنَ أَنْ يغيب لاشفق إِلَى ثلث اللَّيْل الأول

597. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, सहाबा किराम गुरूब ए शफ़क़ और रात के तिहाई अव्वल के दरमियान में नमाज़ ए ईशा पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (864) و مسلم (لم اجده)

٥٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيُصَلِّي الصُّبْحَ فَتَنْصَرِفُ النِّسَاءُ مُتَلَفِّعَاتٌ بمروطهن مَا يعرفن من الْغَلَس

598. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ ए फज़र पढ़ते तो औरतें अपनी चादरों में लपटी हुई वापस जाती और वह तारीकी की वजह से पहचानी नहीं जाती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (867) و مسلم (232 / 645)، (1459)

٥٩٩ - (صَحِيح) وَعَن قَتَادَة وَعَن أَنَسٍ: أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَزَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ تَسَحَّرَا فَلَمَّا فَرَغَا مِنْ سَحُورِهِمَا قَامَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الصَّلَاةِ فَصَلَّى. قُلْنَا لِأَنَسٍ: كَمْ كَانَ بَيْنَ فَرَاغِهِمَا مِنْ سَحُورِهِمَا وَدُخُولِهِمَا فِي الصَّلَاة؟ قَالَ: قَدْرُ مَا يَقْرَأُ الرَّجُلُ خَمْسِينَ آيَةً. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

599. क़तादाह रहिमहुल्लाह अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ और ज़ैद बिन साबित ने सहरी खाई, पस जब वह अपनी सहरी खाने से फारिग़ हुए तो नबी ﷺ नमाज़ के लिए खड़े हुए तो आप ने नमाज़ पढ़ाई, हमने अनस रदियल्लाहु अन्हु से पूछा: उन के सहरी खा कर नमाज़ शुरू करने के दरमियान में कितने वक़्त का वक्फा था, उन्होंने ने फ़रमाया: जितने वक़्त में आदमी पचास आयात की तिलावत कर लेता है| (बुखारी)

رواه البخاری (576)

٦٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كَيْفَ أَنْتَ إِذَا كَانَتْ عَلَيْكَ أُمَرَاءُ يُمِيتُونَ الصَّلَاةَ أَوْ قَالَ: يُؤَخِّرُونَ الصَّلَاةَ عَنْ وَقْتِهَا؟ قُلْتُ: فَمَا تَأْمُرُنِي؟ قَالَ: " صَلِّ الصَّلَاةَ لِوَقْتِهَا فَإِنْ أَدْرَكْتَهَا مَعَهُمْ فَصَلِّ فَإِنَّهَا لَكَ نَافِلَةٌ. رَوَاهُ مُسلم

600. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम पर ऐसे (हुक्मरान) होंगे जो नमाज़े ज़ाया करेंगे या फ़रमाया: वह नमाज़ो को उन वक़्त से मोअख़्ख़र करेंगे तो इस वक़्त तुम्हारी क्या कैफियत होगी? मैंने अर्ज़ किया: आप मुझे क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नमाज़ को उस के वक़्त पर पढ़ना, और अगर तुम उन के साथ भी पा लो तो फिर (नमाज़) पढ़ लो, तो वह तुम्हारे लिए बतौर नफ्ल होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (238 مختصرًا)، (1465) [و ابوداؤد : 431 و اللفظ له]

٦٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصُّبْحِ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَقَدْ أَدْرَكَ الصُّبْحَ. وَمَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الْعَصْرِ قَبْلَ أَنْ تغرب الشَّمْس فقد أدْرك الْعَصْر»

601. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने तुलुअ ए आफ़ताब से पहले नमाज़ ए फज़र की एक रक्अत पा ली तो उस ने नमाज़ ए फज़र पा ली, और जिस ने गुरूब ए आफ़ताब से पहले, नमाज़ ए असर की एक रक्अत पा ली तो उस ने नमाज़ ए असर पा ली”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (579) و مسلم (163 / 608)، (1374)

٦٠٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَدْرَكَ أَحَدُكُمْ سَجْدَةً مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ فَلْيُتِمَّ صَلَاتَهُ وَإِذَا أَدْرَكَ سَجْدَةً مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَلْيُتِمَّ صَلَاتَهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

602. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई गुरूब ए आफ़ताब से पहले नमाज़ ए असर की एक रक्अत पा ले तो वह अपने नमाज़ मुकम्मल करे, और जब वह तुलुअ ए आफ़ताब से पहले नमाज़ ए फज़र की एक रक्अत पा ले तो वह अपने नमाज़ मुकम्मल करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (556)

٦٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ نَسِيَ صَلَاةً أَوْ نَامَ عَنْهَا فَكَفَّارَتُهُ أَنْ يُصَلِّيَهَا إِذَا ذَكَرَهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا كَفَّارَةَ لَهَا إِلَّا ذَلِك»

603. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जो शख़्स कोई नमाज़ पढ़ना भूल जाये या वह उस वक़्त सो जाये तो उस का कफ्फारा यह है के जब याद आये पढ़ ले। # और एक दूसरी रिवायत में है: इस (नमाज़ पढ़ लेने) के सिवा इस का कोई और कफ्फारा नहीं) (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (597) و مسلم (315 / 684)، (1568)

٦٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَيْسَ فِي النَّوْمِ تَفْرِيطٌ إِنَّمَا التَّفْرِيطُ فِي الْيَقَظَةِ. فَإِذَا نَسِيَ أَحَدُكُمْ صَلَاةً أَوْ نَامَ عَنْهَا فَلْيُصَلِّهَا إِذَا ذَكَرَهَا فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ: (وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لذكري)»» رَوَاهُ مُسلم

604. अबु क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: हालत ए नींद में (नमाज़ में ताख़ीर हो जाने पर) कोई तक्सीर और गुनाह नहीं, तक्सीर तो महज़ हालत ए बेदारी में (नमाज़ मोअख़्ख़र करने में) है, जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ पढ़ना भूल जाये या वह उस वक़्त सो जाये तो जब उसे याद आये पढ़ ले, क्यूंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मुझे याद करने के लिए नमाज़ पढ़ा करो। (मुस्लिम)

رواه مسلم (311 / 681)، (1562)

بَاب تَعْجِيل الصَّلَوَات • अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٠٥ - (حسن) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا عَلِيُّ ثَلَاثٌ لَا تُؤَخِّرْهَا الصَّلَاةُ إِذَا أَتَتْ وَالْجِنَازَةُ إِذَا حَضَرَتْ وَالْأَيِّمُ إِذَا وَجَدْتَ لَهَا كُفُؤًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

605. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: अली! तीन चीज़ों में देरी न करना, एक जब नमाज़ का वक़्त आ जाये, जनाज़ा जब तय्यार हो जाये, और बेवा (विधवा), तलाकशुदा और कुंवारी ख़ातून (के निकाह में) जब तुम्हें उन का जोड़ मिल जाए। (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (171 وقال : حدیث غریب حسن) * سعید بن عبدالله : وثقه الامام المعتدل العجلی (الذی کان یعد کاحمد و ابن معین) و الجمهور و حدیثه لا ینزل عن درجة الحسن ، و حدیث عمر بن علی عن ابیه صححه الحاکم و ابن جریر الطبری (انظر اتحاف المهرة 11 / 585)

٦٠٦ - (مَوْضُوع) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوَقْتُ الْأَوَّلُ مِنَ الصَّلَاةِ رِضْوَانُ اللَّهِ وَالْوَقْتُ الْآخَرُ عَفْوُ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

606. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ना अल्लाह की रज़ामंदी और आख़िर वक़्त अल्लाह की माफ़ी का बाईस है। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (172) * یعقوب بن الولید المدنی : متھم بالکذب ، کذبه احمد و غیرہ و حدیث ابن عباس ضعیف جدًا ، فیه نافع ابوھرمز : متروک

٦٠٧ - (صَحِيح) وَعَن أم فَرْوَة قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «الصَّلَاةُ لِأَوَّلِ وَقْتِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ»» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: لَا يُرْوَى الْحَدِيثُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ الْعُمَرِيِّ وَهُوَ لَيْسَ بِالْقَوِيِّ عِنْد أهل الحَدِيث

607. उम्मे फर्वाह रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ से अफ़ज़ल अमल के बारे में दरयाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: अव्वल वक़्त में नमाज़ अदा करना| इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस सिर्फ अब्दुल्लाह (बिन हफ्स बिन आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब मदनी) से मरवी है, और वह मुहद्दीसीन के यहाँ क़वी नहीं। (सहीह,ज़ईफ़)

صحیح ، رواہ احمد (6 / 374 ، 375 ح 27644 ، 27645) و الترمذی (170) و ابوداؤد (426) * السند ضعیف وله شواھد صحیحة عند ابن خزیمة (327) وغیرہ

٦٠٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً لِوَقْتِهَا الْآخِرِ مَرَّتَيْنِ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ تَعَالَى. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

608. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ दो मर्तबा नमाज़ को आख़िर वक़्त में पढ़ा है। (सहीह,हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (174 وقال : غریب ولیس اسنادہ بمتصل) [و وصله الحاکم (1 / 190) و صححه علی شرط الشیخین و وافقه الذھبی ، و للحدیث شواھد]

٦٠٩ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَزَالُ أُمَّتِي بِخَيْرٍ أَوْ قَالَ: عَلَى الْفِطْرَةِ مَا لَمْ يُؤَخِّرُوا الْمَغْرِبَ إِلَى أَنْ تَشْتَبِكَ النُّجُومُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

609. अबु अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरी उम्मत हमेशा खैर और भलाई पर रहेगी| या यह फ़रमाया: फितरत पर रहेगी, जब तक वह सितारे ज़ाहिर होने से पहले नमाज़ ए मग़रिब पढ़ती रहेगी। (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (418) [و صححه ابن خزیمة (339) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 190 ، 191) و وافقه الذھبی]

٦١٠ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيّ عَن الْعَبَّاس

610. दारमी ने इसे अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (1 / 275 ح 1213) [و ابن ماجه (689) و صححه ابن خزیمة (340) و الحدیث حسنه البوصیری]

٦١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْلَا أَن أشق على أمتِي لأمرتهم أَنْ يُؤَخِّرُوا الْعِشَاءَ إِلَى ثُلُثِ اللَّيْلِ أَوْ نصفه» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

611. अब हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अगर मुझे अपनी उम्मत पर मशक़्क़त का अंदेशा न होता तो मैं उन्हें, नमाज़ ए इशा तिहाई रात या आधी रात तक मोअख़्ख़र करने का हुक्म फरमाता। (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 250 ح 7406) و الترمذی (167 وقال : حسن صحيح)و ابن ماجه (691)

٦١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَعْتِمُوا بِهَذِهِ الصَّلَاةِ فَإِنَّكُمْ قَدْ فُضِّلْتُمْ بِهَا عَلَى سَائِرِ الْأُمَمِ وَلَمْ تُصَلِّهَا أُمَّةٌ قَبْلَكُمْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

612. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: इस नमाज़ (इशा) को देर से पढ़ो, क्यूंकि इस की वजह से तुम्हें, दीगर उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी गई है, तुम से पहले किसी उम्मत ने यह नमाज़ नहीं पढ़ी। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (421)

٦١٣ - (صَحِيح) وَعَن النُّعْمَان بن بشير قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ بِوَقْتِ هَذِهِ الصَّلَاةِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ الْآخِرَةِ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيهَا لِسُقُوطِ الْقَمَرِ لِثَالِثَةٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

613. नोमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं इस नमाज़ यानी इशा के वक़्त के बारे में खूब जानता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ तीसरी रात के चाँद गुरूब होने के वक़्त इसे पढ़ा करते थे। (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (419) و الدارمی (1 / 275 ح 1214) [و الترمذی (165) و النسائی (1 / 264 ، 265 ح 530]

٦١٤ - (حسن) وَعَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَسْفِرُوا بِالْفَجْرِ فَإِنَّهُ أَعْظَمُ لِلْأَجْرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَلَيْسَ عِنْدَ النَّسَائِيِّ: «فَإِنَّهُ أَعْظَمُ لِلْأَجْرِ»

614. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, नमाज़ ए फजर, रोशन हो जाने पर पढ़ो, क्यूंकि वह जादा बाईस ए अजर है| तिरमिज़ी, अबु दावूद, दारमी, और नसई में यह अलफ़ाज़ नहीं: के वह ज़्यादा बाईस ए अज़र है। (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (154 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (424) و الدارمی (1 / 277 ح 1220) و النسائی (1 / 272 ح 549 ، 550) [و ابن ماجه (672) و صححه ابن حبان (263)]

بَاب تَعْجِيل الصَّلَوَات • अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: «كُنَّا نُصَلِّي الْعَصْرَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ تُنْحَرُ الْجَزُورُ فَتُقْسَمُ عَشْرَ قِسَمٍ ثُمَّ تُطْبَخُ فَنَأْكُلُ لَحْمًا نَضِيجًا قَبْلَ مَغِيبِ الشَّمْس»

615. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए असर अदा करते, फिर ऊँट नहर (जिबह) किया जाता, उस के दस हिस्से किए जाते, फिर उसे पकाया जाता तो हम गुरूब ए आफ़ताब से पहले पका हुआ गोश्त खा लेते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (2485) و مسلم (198 / 625)، (1415)

٦١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: مَكَثْنَا ذَاتَ لَيْلَةٍ نَنْتَظِرُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِصَلَاةِ الْعِشَاءِ الْآخِرَةِ فَخَرَجَ إِلَيْنَا حِينَ ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ أَوْ بَعْدَهُ فَلَا نَدْرِي أَشَيْءٌ شَغَلَهُ فِي أَهْلِهِ أَوْ غَيْرُ ذَلِكَ فَقَالَ حِينَ خَرَجَ: «إِنَّكُمْ لَتَنْتَظِرُونَ صَلَاةً ص:١٩ مَا يَنْتَظِرُهَا أَهْلُ دِينٍ غَيْرُكُمْ وَلَوْلَا أَنْ يَثْقُلَ عَلَى أُمَّتِي لَصَلَّيْتُ بِهِمْ هَذِهِ السَّاعَةَ» ثُمَّ أَمَرَ الْمُؤَذِّنَ فَأَقَامَ الصَّلَاة وَصلى. رَوَاهُ مُسلم

616. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक रात हम नमाज़ ए इशा के लिए रसूलुल्लाह ﷺ का इंतज़ार कर रहे थे, पस आप तिहाई रात गुज़रने या इस के बाद तशरीफ़ लाये, हम नहीं जानते के किसी काम ने आप को अपने अहले ख़ाना में मसरूफ रखा या इस के अलावा कोई काम था, पस जब आप ﷺ (अपने हुजरे से) बाहर तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया: तुम नमाज़ का इंतज़ार कर रहे हो, तुम्हारे अलावा कोई अहले दीन इस का इंतज़ार नहीं कर रहा, अगर उम्मत के लिए तकलीफ देह न होता में इन्हें इसी वक़्त नमाज़ पढ़ाता, फिर आप ने मुअज़्ज़िन को हुक्म दिया तो उस ने इक़ामत कही और आप ने नमाज़ पढ़ाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (220 / 639)، (1446)

٦١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي الصَّلَوَاتِ نَحْوًا مِنْ صَلَاتِكُمْ وَكَانَ يُؤَخِّرُ الْعَتَمَةَ بَعْدَ صَلَاتكُمْ شَيْئا وَكَانَ يخف الصَّلَاة. رَوَاهُ مُسلم

617. जाबिर बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हारी नमाज़ों के औक़ात के मुताबिक़ ही नमाज़ पढ़ा करते थे, लेकिन आप नमाज़ ए इशा तुम्हारी नमाज़ से कुछ देरी से पढ़ा करते थे, और आप नमाज़ हलकी पढ़ाया करते थे। (मुस्लिम)

رواه مسلم (227 / 643)، (1454)

٦١٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الْعَتَمَة فَلم يخرج إِلَيْنَا حَتَّى مَضَى نَحْوٌ مِنْ شَطْرِ اللَّيْلِ فَقَالَ: «خُذُوا مَقَاعِدَكُمْ» فَأَخَذْنَا مَقَاعِدَنَا فَقَالَ: «إِنَّ النَّاسَ قد صلوا وَأخذُوا مضاجعهم وَإِنَّكُمْ لم تَزَالُوا فِي صَلَاةٍ مَا انْتَظَرْتُمُ الصَّلَاةَ وَلَوْلَا ضَعْفُ الضَّعِيفِ وَسَقَمُ السَّقِيمِ لَأَخَّرْتُ هَذِهِ الصَّلَاةَ إِلَى شَطْرِ اللَّيْلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

618. अबु सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए इशा पढ़ने का इरादा किया, तो आप ﷺ तकरीबन आधी रात गुज़रने के बाद तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया: अपनी जगह पर बैठें रहो, चुनांचे हम अपनी जगह पर बैठ गए, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: बेशक लोग नमाज़ पढ़ कर सो चुके, और जब के तुम इस वक़्त तक नमाज़ ही में रहोगे जब तक तुम नमाज़ के इंतज़ार में रहोगे और अगर ज़ईफ़ के ज़ोअफ़, बीमार की बीमारी का अंदेशा न होता तो मैं इस नमाज़ को आधी रात तक मोअख़्ख़र करता| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (422) و النسائی (1 / 268 ح 539) [و ابن ماجه (693) و صححه ابن خزيمة (345)]

٦١٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشَدَّ تَعْجِيلًا لِلظُّهْرِ مِنْكُمْ وَأَنْتُمْ أَشَدُّ تَعْجِيلًا لِلْعَصْرِ مِنْهُ. رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

619. उम्मे सलमाह रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नमाज़ ए ज़ोहर जल्द पढ़ने में रसूलुल्लाह ﷺ तुम से ज़्यादा सख्त थे, और नमाज़ ए असर जल्दी पढ़ने में तुम उन से ज़्यादा सख्त हो| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (6 / 289 ح 27011) و الترمذی (161 وقال : حسن)

٦٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ الْحَرُّ أَبْرَدَ بِالصَّلَاةِ وَإِذَا كَانَ الْبَرْدُ عَجَّلَ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

620. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ का यह मामूल था के गर्मी होती तो आप नमाज़ (ज़ोहर) देर से पढ़ते और जब सर्दी होती तो जल्दी फरमाते थे। (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (1 / 248 ح 500) [و البخاری : 906]

٦٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهَا سَتَكُونُ عَلَيْكُمْ بَعْدِي أُمَرَاءُ يَشْغَلُهُمْ أَشْيَاءُ عَنِ الصَّلَاةِ لِوَقْتِهَا حَتَّى يَذْهَبَ وَقْتُهَا فَصَلُّوا الصَّلَاةَ لِوَقْتِهَا» . فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُصَلِّي مَعَهم؟ قَالَ: «نعم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

621. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फरमाया: मेरे बाद तुम्हारे कुछ ऐसे अमराअ (हाकिम) होंगे के चंद चीजें उन्हें वक़्त पर नमाज़ पढ़ने से ग़ाफ़िल कर देगी हत्ता के उस का वक़्त गुज़र जाएगा चुंनांचे (जब यह सूरत हो) तुम नमाज़ें वक़्त पर अदा करना, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मैं उन के साथ भी पढ़ लूं? आप ﷺ ने फरमाया हां। (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (433) [و ابن ماجه : 1257]

٦٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ قَبِيصَةَ بْنِ وَقَّاصٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ عَلَيْكُمْ أُمَرَاءُ مِنْ بَعْدِي يُؤَخِّرُونَ الصَّلَاةَ فَهِيَ لَكُمْ وَهِيَ عَلَيْهِمْ فَصَلُّوا مَعَهُمْ مَا صَلَّوُا الْقِبْلَةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

622. क़बीसह बिन वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: मेरे बाद तुम्हारे कुछ ऐसे (हुक्मरान) होंगे जो नमाज़ें देर से पढ़ेंगे, चुंनांचे वह तुम्हारे लिए सवाब का ज़रिया और उन के लिए गुनाह का ज़रिया होंगी, पस जब तक वह किबलाह रुख़ नमाज़ पढ़ते रहें तो तुम उन के साथ नमाज़ पढ़ो। (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (434) * فيه صالح بن عبيد مجهول الحال و ثقه ابن حبان و حده و حديث البخارى (694) يغنى عنه

٦٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ: أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى عُثْمَانَ وَهُوَ مَحْصُورٌ فَقَالَ: إِنَّكَ إِمَامُ عَامَّةٍ وَنَزَلَ بِكَ مَا تَرَى وَيُصلي لنا إِمَام فتْنَة ونتحرج. فَقَالَ: الصَّلَاة أحسن مَا يعْمل النَّاس فَإِذا أحسن النَّاس فَأَحْسن مَعَهم وَإِذا أساؤوا فاجتنب إساءتهم. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

623. उबैदुल्लाह बिन अदि बिन ख़यार रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के पास गए जबकि व महसूर (क़ैद) थे तो उन्होंने कहा: आप अमीर उल मोमिनीन हैं और आप परेशानी में मुब्तिला है, जबकि फ़ितने का सरग़ना हमें नमाज़ पढ़ाता है, और हम उसे गुनाह समझते है, उन्होंने (उस्मान (र)) ने फरमाया: नमाज़ मुसलमानों का बेहतरीन अमल है, जब लोग अच्छा काम करें, तो तुम भी उन के साथ मिल कर अच्छा काम करो, और जब वह बुरा करें तो तुम उन की बुराई से दूर रहो। (बुख़ारी)

رواه البخارى (695)

بَاب فَضَائِل الصَّلَاة • फ़ज़ाइल ए नमाज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦٢٤ - (صَحِيح) عَن عمَارَة بن روبية قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَنْ يَلِجَ النَّارَ أَحَدٌ صَلَّى قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا» يَعْنِي الْفَجْرَ وَالْعصر. (رَوَاهُ مُسلم)

624. उमारा बिन रुवेबह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: जो शख़्स सूरज निकलने से पहले और सूरज डूबने से पहले यानी नमाज़ ए फ़ज्र और नमाज़ ए असर पढ़े तो वह जहन्नुम में नहीं जायेगा। (मुस्लिम)

رواه مسلم (213 / 634)، (1436)

٦٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «من صَلَّى الْبَرْدَيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ»

625. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स दो ठंडी नमाज़ें (फ़ज्र व असर) पढ़ेगा वह जन्नत में दाखिल होगा ||। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (574) و مسلم (215 / 635)، (1438)

٦٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم قَالَ: «يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلَائِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلَائِكَةٌ بِالنَّهَارِ وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ الْعَصْرِ ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي فَيَقُولُونَ تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يصلونَ وأتيناهم وهم يصلونَ»

626. अबु हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: रात और दिन के वक़्त फ़रिश्ते एक के बाद एक तुम्हारे पास आते रहते है और वह नमाज़ ए फ़जर और नमाज़े असर में जमा होतेहैं, फिर वह फ़रिश्ते जिन्होंने तुम्हारे यहाँ रात गुज़री होती है, ऊपर चढ़ते हैं, उन का रब उन से पूछता है, जबकि वह उन से बेहतर जानता है, तुम ने मेरे बंदो को किस हाल पर छोड़ कर आये हो? वह अर्ज़ करते हैं, जब हम उन के पास आये तो वह उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे और जब उन के पास गए थे तब भी वह नमाज़ पढ़ रहे थे। (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (555) و مسلم (210 / 632)، (1432)

٦٢٧ - (صَحِيح) وَعَن جُنْدُب الْقَسرِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى صَلَاةَ الصُّبْحِ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللَّهِ فَلَا يَطْلُبَنَّكُمُ اللَّهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ فَإِنَّهُ مَنْ يَطْلُبْهُ مِنْ ذِمَّتِهِ بِشَيْءٍ يُدْرِكْهُ ثُمَّ يَكُبُّهُ عَلَى وَجْهِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ» . ص:١٩

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي بَعْضِ نُسَخِ الْمَصَابِيحِ الْقشيرِي بدل الْقَسرِي

627. जूंदूब कसरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स नमाज़े फ़जर पढ़ लेता है तो वह अल्लाह के अहद और अमान में आ जाता है, चुनांचे तुम ऐसा कोई काम न करना जिसके वजह से अल्लाह अपने अहद व अमान के बारे में तुम्हारी पकड़ करे, क्यूंकि वह अपने अहद व अमान के बारे में जिस शख़्स की पकड़ करेगा तो वह उसे पकड़ कर ओंधे मुँह जहन्नुम में डाल देगा। # और मसाबीह के बाज़ नुस्खों में अल्क़स्री के बजाये अल कुशेरी मज़कूर है) (मुस्लिम)

رواه مسلم (261 / 657)، (1493)

٦٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوا وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لَاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لأتوهما وَلَو حبوا»

628. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बियान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अगर लोग अज़ान और पहली सफ की फ़ज़ीलत के बारे में जान लें, फ़िर उन्हें इस के हासिल करने के लिए अगर क़ुराअंदाज़ी भी करनी पड़े तो वह ज़रूर क़ुराअंदाज़ी करेंगे, और अगर वह नमाज़ को जल्दी आने की फ़ज़ीलत के बारे में जान लें तो वह इस की तरफ ज़रूर सबक़त हासिल करें, और अगर इन्हें नमाज़े ईशा और नमाज़े फ़जर की एहमियत का पता चल जाये तो वह इन्हें पढ़ने के लिए (मस्जिद में) ज़रूर आएं चाहे उन्हें सुरीन (पीठ) या पाऊँ और घुटनों के बल चल कर आना पड़े। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه، رواه البخارى (615) و مسلم (129 / 437)، (981)

٦٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ صَلَاةٌ أَثْقَلَ عَلَى الْمُنَافِقِ مِنَ الْفَجْرِ وَالْعِشَاءِ وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِيهِمَا لأتوهما وَلَو حبوا»

629. अबु हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बियान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, नमाज़ ए फजर और नमाज़े इशा मुनाफिकों पर सब से ज़्यादा भारी नमाज़ें हैं, लेकिन अगर उन्हें इन के अज्र ओ सवाब का पता चल जाये तो वह इन्हें पढ़ने के लिए ज़रूर (मस्जिद में) आएं, ख्वा उन्हें सुरीन (पीठ) या पाँव और घुटनों के बल चल कर आना पढ़े| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (657) و مسلم (252 / 651)، (1482)

٦٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «مَنْ صَلَّى الْعِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ وَمَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا صَلَّى اللَّيْل كُله» . رَوَاهُ مُسلم

630. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बियान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने नमाज़े इशा जमात के साथ अदा की, तो गोया उस ने आधी रात क़याम किया, और जिस ने नमाज़े फजर भी जमात जमात से अदा की तो गोया उस ने पूरी रात क़याम किया| (सहीह,मुस्लिम)

رواه مسلم (260 / 656)، (1491)

٦٣١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَغْلِبَنَّكُمُ الْأَعْرَابُ على اسْم صَلَاتكُمْ الْمغرب» . قَالَ: «وَتقول الْأَعْرَاب هِيَ الْعشَاء»

631. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बियान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: देहाती लोग तुम्हारी नमाज़े मग़रिब के नाम के बारे में, तुम पर ग़ालिब ना आजाए. रावी कहता है देहाती उसे इशा का नाम देते है| (सहीह)

صحيح ، رواه مسلم (لم اجده) [و رواه البخارى (563) من حديث عبدالله بن مغفل رضى الله عنه به ، وكذا فى مصابيح السنة (438)]

٦٣٢ - (صَحِيح) وَقَالَ: " لَا يَغْلِبَنَّكُمُ الْأَعْرَابُ عَلَى اسْمِ صَلَاتِكُمُ الْعِشَاءِ فَإِنَّهَا فِي كِتَابِ اللَّهِ الْعِشَاءُ فَإِنَّهَا تعتم بحلاب الْإِبِل. رَوَاهُ مُسلم

632. और फ़रमाया: देहाती लोग, तुम्हारी नमाज़े इशा के नाम के बारे में तुम पर ग़ालिब न आ जायें, क्यूंकि उस का नाम तो अल्लाह तआला की किताब में इशा है, क्यूंकि वह ऊंटों का दूध दोहने के कारण उसे अत्मह कहते हैं| (सहीह,मुस्लिम)

رواه مسلم (229 / 644)، (1456)

٦٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ: " حَبَسُونَا عَنْ صَلَاةِ الْوُسْطَى: صَلَاةِ الْعَصْرِ مَلَأَ اللَّهُ بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا)»» (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ)

633. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने खंदक की जंग के दिन फ़रमाया: उन्होने हमें नमाज़े असर से रोक दिया, अल्लाह उन के घरों और कब्रों को आग से भर दे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (4533) و مسلم (205 / 627)، (1425)

फ़ज़ाइल ए नमाज़ का बयान • بَاب فَضَائِلِ الصَّلَاة

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٦٣٤ - (صَحِيح) عَن ابْن مَسْعُود وَسمرَة بن جُنْدُب قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الْوُسْطَى صَلَاةُ الْعَصْرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

634. इब्ने मसउद और समुरह बिन जुनदुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया दर्मियानी नमाज़ से मुराद असर है| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه الترمذی (181 حدیث ابن مسعود و قال : حدیث حسن صحیح ، 182 ، حدیث سمرۃ بن جندب و قال : حدیث حسن) [و رواہ مسلم : 628، (1426) من حدیث ابن مسعود رضی اللہ عنہ۔]

٦٣٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: (إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا)»» قَالَ: «تَشْهَدُهُ مَلَائِكَةُ اللَّيْلِ وَمَلَائِكَةُ النَّهَارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

635. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ अल्लाह तआला का फरमान बयान करते हैं, बेशक नमाज़े फजर का पढ़ना फरिश्तो की हाज़री का वक्त है के बारे में रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया वह रात और दिन के फरिश्तो की हाज़री का वक्त है (सहीह,हसन,मुस्लिम)

صحیح ، رواہ الترمذی (3135 وقال : حسن صحیح) [و ابن ماجہ (670) و صححہ ابن خزیمۃ (1474) و الحاکم (1 / 210 ، 211) و وافقہ الذھبی]

फ़ज़ाइल ए नमाज़ का बयान • بَاب فَضَائِلِ الصَّلَاة

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٦٣٦ - (حسن) عَن زيد بن ثَابت وَعَائِشَة قَالَا: الصَّلَاةُ الْوُسْطَى صَلَاةُ الظُّهْرِ رَوَاهُ مَالِكٌ عَن زيد وَالتِّرْمِذِيّ عَنْهُمَا تَعْلِيقا

636. ज़ैद बिन साबित और आइशा बयान करते हैं, दरम्यान वाली नमाज़ से मुराद नमाज ए ज़ोहर है इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने ज़ैद से और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने इन दोनों से मुअल्लक़रिवायत किया है | (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (1 / 139 ح 313) و الترمذی (182) [ولہ شواھد عند ابن ابی شیبۃ (2 / 504 ح 8602) وغیرہ]

٦٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي الظُّهْرَ بِالْهَاجِرَةِ وَلَمْ يَكُنْ يُصَلِّي صَلَاةً أَشَدَّ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهَا فَنَزَلَتْ (حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى)»» وَقَالَ إِنَّ قَبْلَهَا صَلَاتَيْنِ وَبَعْدَهَا صَلَاتَيْنِ. رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

637. ज़ैद बिन साबित बयान करते हैं, रसूलुल्लाह नमाज़ जोहर बहुत जल्दी पढ़ा करते थे, रसूलुल्लाह के सहाबा पर सब से ज़्यादा मशक्क़त नमाज़ यही थी| पस यह आयत नाजिल हुई “नामजो की पाबंदी और हिफाजत करो और बिल्खुसुस नमाज़ ए वुस्ता की ” रावी ने कहा क्यूंकि इस से पहले भी नमाज़े है और इस के बाद भी दो नमाज़े है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 183 ح 21931) و ابوداؤد (411) [و النسائی فی الکبریٰ (357) و صححه ابن حزم فی المحلی (4 / 250) و ذکر کلامًا]

٦٣٨ - (ضَعِيف) وَعَن مَالك بَلَغَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبَّاسٍ كَانَا يَقُولَانِ: الصَّلَاةُ الْوُسْطَى صَلَاة الصُّبْح. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

638. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि इन्होंने अली बिन अबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के मुताल्लिक़ पता चला के वह कहा करते थे की दरमियान वाली नमाज़ से मुराद नमाज़ ए फजर है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک فی الموطا (1 / 139 ح 314) * هذا من البلاغات و ثبت نحوه عن ابن عباس (ابن ابی شيبة فی المصنف 2 / 506 ح 8627) واما علی رضی الله عنه ففی السند اليه حسين بن عبدالله بن ضميرة وهو متروک

٦٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ عَن ابْن عَبَّاس وَابْن عمر تَعْلِيقا

639. इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने इब्ने अब्बास और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से इस मुअल्लक़ रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (182) [و البيهقی (1 / 461 ، 462] * وللاثرين طرق

٦٤٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَلْمَانَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ غَدَا إِلَى صَلَاةِ الصُّبْحِ غَدَا بِرَايَةِ الْإِيمَانِ وَمَنْ غَدَا إِلَى السُّوقِ غَدَا بِرَايَةِ إِبْلِيسَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

640. सुलेमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना “जो शख़्स नमाज़ ए फजर के लिए जाता है तो वह इमान का परचम उठा के जाता है और जो शख़्स बाज़ार की तरफ जाता है तो वह इब्लीस का परचम उठा कर जाता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (2234) * فيه عبيس بن ميمون : متفق على ضعفه ، وقال الهيثمی : هو ضعيف متروک

अज़ान का बयान • بَاب الْأَذَان

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٦٤١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنس قَالَ: ذَكَرُوا النَّارَ وَالنَّاقُوسَ فَذَكَرُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى فَأُمِرَ بِلَالٌ أَنْ يَشْفَعَ الْأَذَانَ وَأَنْ يُوتِرَ الْإِقَامَةَ. قَالَ إِسْمَاعِيلُ: فَذَكَرْتُهُ لِأَيُّوبَ. فَقَالَ: إِلَّا الْإِقَامَة

641. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बाज़ सहाबा ने (एलाने नमाज़ के लिए) आग जलने और नाकूस बजने का ज़िक्र किया और बाज़ सहाबा ने यहूद और नसारा (से मुशाबेहत) का ज़िक्र किया तो बिलाल को हुक्म दिया गया कि वह कलामाते आज़ान दो दो मर्तबा और कलामाते इकामत एक एक मर्तबा कहे| इस्माइल बयान करते हैं, मैंने अय्यूब से इस हदीस का ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया मगर ((قد قامت الصلٰوة)) दो मरतबा“ | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (603) و مسلم (3 / 378)، (839)

٦٤٢ - (صَحِيح) وَعَن أبي مَحْذُورَة قَالَ: أَلْقَى عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التَّأْذِينَ هُوَ بِنَفْسِهِ فَقَالَ: " قُلِ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. ثُمَّ تَعُودَ فَتَقُولَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ. اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

642. अबू महज़ूराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने बानफ़्से नफ़ीस मुझे आज़ान सिखाई चुनांचे आप ने फ़रमाया कहो आल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, आल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, फिर दो बार तुम यह कहो मैं गवाही देता हूं अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, नमाज़ की तरफ आओ, नमाज़ की तरफ आओ, फलाह की तरफ आओ, फलाह की तरफ आओ, आल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, ||। (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 379)، (842)

अज़ान का बयान • بَاب الْأَذَان

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٦٤٣ - (حسن) عَن ابْن عمر قَالَ: كَانَ الْأَذَانُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّتَيْنِ مَرَّتَيْنِ وَالْإِقَامَةُ مَرَّةً مَرَّةً غَيْرَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

643. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर मैं आज़ान के कलिमात दो दो मरतबा और इकामत के कलिमात “قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ” के सिवा एक एक मर्तबा थे| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه ابوداؤد (510) و النسائی (2 / 20 ، 21 ح 669 و 629) و الدارمی (1 / 270 ح 1195) * سنده حسن و صححه ابن خزیمة (374) و ابن حبان (290 ، 291) و الحاکم (1 / 197 ، 198) و وافقه الذھبی و للحدیث شواھد

٦٤٤ - (حسن) وَعَنْ أَبِي مَحْذُورَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَّمَهُ الْأَذَانَ تِسْعَ عَشْرَةَ كَلِمَةً وَالْإِقَامَةَ سَبْعَ عَشْرَةَ كَلِمَةً. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

644. अबू महज़ूराह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने इन्हें आज़ान के उन्नीस कलीमात और इकामत सतरह कलिमात सिखाए| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

صحيح ، رواه احمد (3 / 405 ح 15456) و الترمذی (192 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (502) و النسائی (2 / 4 ح 631) و الدارمی (1 / 271 ح 1200) و ابن ماجه (709) [و اصله عند مسلم ، انظر الحدیث السابق : 642]

٦٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ عَلِّمْنِي سنة الْأَذَان قَالَ: فَمسح مقدم رَأسه. وَقَالَ: " وتقول اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ تَرْفَعُ بِهَا صَوْتَكَ ثُمَّ تَقُول: أَشْهَدُ أَن لَا إِلَه إِلَّا الله أشهد أَن لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ تَخْفِضُ بِهَا صَوْتَكَ ثُمَّ تَرْفَعُ صَوْتَكَ بِالشَّهَادَةِ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَن لَا إِلَه إِلَّا الله أشهد أَن مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ فَإِنْ كَانَ صَلَاةُ الصُّبْحِ قُلْتَ: الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ " رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

645. अबू महज़ूराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अलाल्ह के रसूल मुझे अज़ान का तरीक़ा सिखा दे, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने अपनी पेशानी पर हाथ फेर कर फ़रमाया, “ कहो आल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्ला सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अपनी आवाज़ बुलंद करो, फिर कहो मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, यह कलिमात कहते हुए अपनी आवाज़ पस्त रखो फिर यह कहो की मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद ﷺ अल्लाह

के रसूल! है, मैं गवाही देता हूं मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है, अपनी आवाज़ बुलंद करो, नमाज़ की तरफ आओ, नमाज़ की तरफ आओ, कामयाबी की तरफ आओ, कमियाबी की तरफ आओ, अगर फज्र की नमाज़ हो तो कहो नमाज़ नींद से बेहतर है, नमाज़ नींद से बेहतर है, आल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (500) * فيه الحارث بن عبيد الابادى ضعيف و حديث النسائى (634) الذى صححه ابن خزيمة (385) يغنى عنه

٦٤٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ بِلَالٍ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُثَوِّبَنَّ فِي شَيْءٍ مِنَ الصَّلَوَاتِ إِلَّا فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: أَبُو إِسْرَائِيلَ الرَّاوِي لَيْسَ هُوَ بِذَاكَ الْقَوِيِّ عِنْدَ أهل الحَدِيث

646. बिलाल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया, ”नमाज़ ए फज्र की आज़ान के अलावा किसी नमाज़ की आज़ान मैं “الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ” (नमाज़ नींद से बेहतर है) न कहना| तिरमिज़ी इब्ने माज़ा, इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया अबू इसराइल रावी मुहद्दिसीन के नजदीक क़वी नहीं हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (198) و ابن ماجه (715) * فيه ابو اسراعيل الملائى : ضعيف ، و علہ أخرى

٦٤٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِبِلَالٍ: «إِذَا أَذَّنْتَ فَتَرَسَّلْ وَإِذا أَقمت فاحدر وَاجعَل بَيْنَ أَذَانِكَ وَإِقَامَتِكَ قَدْرَ مَا يَفْرُغُ الْآكِلُ مِنْ أَكْلِهِ وَالشَّارِبُ مِنْ شُرْبِهِ وَالْمُعْتَصِرُ إِذَا دَخَلَ لِقَضَاءِ حَاجَتِهِ وَلَا تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: لَا نعرفه إِلَّا ن حَدِيث عبد الْمُنعم وَهُوَ إِسْنَاد مَجْهُول

647. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: ”जब तुम अज़ान कहो तो ठहर ठहर कर इत्मिनान के साथ कहो और जब इकामत कहो तो जल्दी जल्दी कहो और अपनी अज़ान और इकामत के दरम्यान इतना वक्फा रखो कि खाना खाने वाला शख़्स अपना खाना खा ले, पीने वाला शख़्स अपने मशरूब से जबकि कज़ा ए हाजात के लिए जाने वाला शख़्स अपनी हाजत से फारिग़ हो जाए और जब तक मुझे देख न लो नमाज़ के लिए खड़े न हुआ करो |तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया हम इसे सिर्फ अब्दुल मूनअम की हदीस से पहचानते है और इस की इस्नाद मजहूल हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (195 ، 196) * عبدالمنعم : منكر الحديث وله طريق آخر ضعيف جدًا عند الحاكم (1 / 204)

٦٤٨ - (ضَعِيف) وَعَن زِيَاد بن الْحَارِث الصدائي قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن أؤذن فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ» فَأَذَّنْتُ فَأَرَادَ بِلَالٌ أَنْ يُقِيمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ص:٢٠ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن أَخا صداء قد أذن وَمن أَذَّنَ فَهُوَ يُقِيمُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

648. ज़ियाद बिन हारिस सुदाई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे अज़ान देने का हुक्म फ़रमाया तो मैंने अज़ान दी तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने इकामत कहने का इरादा किया तो रसूलुल्लाह ﷺ

ने फ़रमाया: सुदाई काबिले के शख़्स ने आज़ान दी है और जो अज़ान दे वही इकामत कहे | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (199 وقال : انما نعرفه من حديث الافريقی وهو ضعيف عند اهل الحديث) و ابوداؤد (514) و ابن ماجه (717)



بَاب الْأَذَان • अज़ान का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٦٤٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ الْمُسْلِمُونَ حِينَ قدمُوا الْمَدِينَة يَجْتَمعُونَ فيتحينون الصَّلَاة لَيْسَ يُنَادِي بِهَا أَحَدٌ فَتَكَلَّمُوا يَوْمًا فِي ذَلِكَ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: اتَّخِذُوا مِثْلَ نَاقُوسِ النَّصَارَى وَقَالَ بَعْضُهُمْ: قَرْنًا مِثْلَ قَرْنِ الْيَهُودِ فَقَالَ عُمَرُ أَوَلَا تَبْعَثُونَ رَجُلًا يُنَادِي بِالصَّلَاةِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا بِلَالُ قُم فَنَادِ بِالصَّلَاةِ»

649. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब मुसलमान मदीना तशरीफ़ लाए तो वह इकठ्ठा जाते और नमाज़ के वक्त का अंदाज़ा लगाते जबकि नमाज़ के लिए कोई मुनादी नहीं करता था, एक रोज़ उन्होंने इस बारे में बातचीत की तो इनमें किसी ने कहा नसारा जैसा नाकूस बना लो और किसी ने कहा की यहूदी की नुर्संग बजा ले उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम किसी आदमी को क्यूँ नहीं भेज देते की वह नमाज़ के लिए मुनादी (एलान) करे चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया बिलाल उठो और नमाज़ के लिए एलान कर दो| | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (604) و مسلم (1 / 377)، (837)

٦٥٠ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن زيد بن عبد ربه قَالَ: لَمَّا أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّاقُوسِ يُعْمَلُ لِيُضْرَبَ بِهِ لِلنَّاسِ لِجَمْعِ الصَّلَاةِ طَافَ بِي وَأَنَا نَائِمٌ رَجُلٌ يَحْمِلُ نَاقُوسًا فِي يَدِهِ فَقُلْتُ يَا عَبْدَ اللَّهِ أَتَبِيعُ النَّاقُوسَ قَالَ وَمَا تَصْنَعُ بِهِ فَقلت نَدْعُو بِهِ إِلَى الصَّلَاةِ قَالَ أَفَلَا أَدُلُّكَ عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ مِنْ ذَلِكَ فَقُلْتُ لَهُ بَلَى قَالَ فَقَالَ تَقُولَ اللَّهُ أَكْبَرُ إِلَى آخِرِهِ وَكَذَا الْإِقَامَةُ ص:٢٠ فَلَمَّا أَصْبَحْتُ أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا رَأَيْتُ فَقَالَ: «إِنَّهَا لَرُؤْيَا حَقٌّ إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَقُمْ مَعَ بِلَالٍ فَأَلْقِ عَلَيْهِ مَا رَأَيْتَ فَلْيُؤَذِّنْ بِهِ فَإِنَّهُ أَنْدَى صَوْتًا مِنْك» فَقُمْت مَعَ بِلَال فَجعلت ألقيه عَلَيْهِ وَيُؤَذِّنُ بِهِ قَالَ فَسَمِعَ بِذَلِكَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ فَخَرَجَ يَجُرُّ رِدَاءَهُ وَيَقُول وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَقَدْ رَأَيْتُ مِثْلَ مَا أَرَى فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَلِلَّهِ الْحَمْدُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرِ الْإِقَامَةَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ لَكِنَّهُ لَمْ يُصَرح قصَّة الناقوس

650. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर अब्द रब्बिह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि जब रासुल्लुल्लाह ﷺ ने लोगों को नमाज़ के लिए जमा करने के लिए नाकूस बजाने का हुक्म फ़रमाया तो मैंने ख्वाब मैं एक शक्स को हाथ मैं नाकूस उठाए हुए देखा मैंने कहा: अल्लाह के बंदे क्या तुम नाकूस बेचते हो? इस ने कहा: तुम इससे क्या करोगे? मैंने कहा: हम इस के ज़रिए नमाज़ के लिए बुलाएँगे, इस ने कहा: क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज़ न बताऊ? मैंने कहा: क्यूँ नहीं! ज़रूर बताओ, रावी बयान करते हैं, इस ने कहा: तुम (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर से आखिरी

आज़ान तक कहो और इस तरह इकामत, पस जब सुबह हुई तो मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत मैं हाज़िर हुआ और इन्हें अपना ख्वाब सुनाया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "इंशा अल्लाह यह सच्चा ख्वाब है" आप बिलाल के साथ खड़े हो और आप ने जो देखा है वह बिलाल को सिखा दो वह इन कलिमात के साथ आज़ान दे क्यूंकि इस की आवाज़ ज़्यादा बुलंद है, चुनांचे मैं बिलाल के साथ खड़े हो कर इनहे आज़ान के कलिमात सिखाता रहा और वह इन के साथ आज़ान देते रहे रावी बयान करते हैं, उनर बिन खत्ताब ने अपनी घर मैं आज़ान की आवाज़ सुनी तो वह अपनी चादर घसीटते हुए तशरीफ़ ले आए और कहने लगे अल्लाह के रसूल! इस ज़ात की क़सम जीसने आप को हक के साथ मबऊस फ़रमाया जो कुछ इन्हें दिखाया गया वही कुछ मैं ने देखा है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है | अबू दावुद, दारमी, इब्ने माज़ा, अलबत्ता इन्होंने इअक्मत का ज़िक्र नहीं किया और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस सहीह है लेकिन वाकिया ए नाकूस की सराहत नहीं की| (सहीह)

حسن ، رواه ابوداؤد (499) و الدارمی (1 / 268 ، 269 ح 1190 ، 1191) و ابن ماجه (706) و الترمذی 189) [و صححه ابن خزیمة (371) و ابن حبان (287)]

٦٥١ - (ضَعِيف) وَعَن أبي بكرَة قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِصَلَاةِ الصُّبْحِ فَكَانَ لَا يَمُرُّ بِرَجُلٍ إِلَّا نَادَاهُ بِالصَّلَاةِ أَوْ حَرَّكَهُ بِرِجْلِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

651. अबू बकराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नमाज़ ए फजर के लिए नबी ﷺ के साथ रवाना हुआ तो आप जिस आदमी के पास से गुज़रते तो इस नमाज़ के लिए आवाज़ देते या अपनी पाँव के साथ इसे हिला देते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1264) * ابوالفضل الانصاری : مجهول ، جهله ابو الحسن ابن القطان الفاسی وغیره

٦٥٢ - (ضَعِيف) وَعَن مَالك بَلَغَهُ أَنَّ الْمُؤَذِّنَ جَاءَ عُمَرَ يُؤْذِنُهُ لِصَلَاةِ الصُّبْحِ فَوَجَدَهُ نَائِمًا فَقَالَ: الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ فَأَمَرَهُ عُمَرُ أَنْ يَجْعَلَهَا فِي نِدَاءِ الصُّبْحِ. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

652. मालिक से रिवायत है कि इन्हें पता चला की मुअज़्ज़िन उमर को नमाज़ ए फजर की इत्तेला करने आया तो इस ने इन्हें सोया हुआ देखकर कहा: “नमाज़ नींद से बेहतर है “-उमर ने इसे हुक्म फ़रमाया की इन कलिमात को सुबह की आज़ान मैं शामिल कर लो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک فی الموطا (1 / 72 ح 151) * هذا من بلاغات وله شاهد ضعيف عند ابن ابی شيبة فی المصنف (1 / 208 ح 2159) فيه رجل يقال له اسماعيل ، قال ابن عبدالبر : لا اعرفه

٦٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدِ بْنِ عَمَّارِ بْنِ سَعْدٍ مُؤَذِّنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِلَالًا أَنْ يَجْعَلَ أُصْبُعَيْهِ فِي أُذُنَيْهِ وَقَالَ: «إِنَّه أرفع لصوتك» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

653. अब्दुल रहमान बिन सअद बिन अम्मार बिन सअद बयान करते हैं, कि मुझे मेरे वालिद ने अपने वालिद से और इस ने सअदि बिन अम्मार के दादा सअद बिन आइज़ जो की मुअज़्ज़िन ए रसूलुल्लाह ﷺ थे, के हवाले से हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ ने बिलाल को कानों में उंगलिया दाखिल करने का हुक्म देते हुए फ़रमाया : इस से तुम्हारी आवाज़ ज़्यादा बुलंद हो जाएगी | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (710) * قال البوصيرى :’’ هذا اسناده ضعيف لضعف اولاد سعد القرظ : عمار و سعد و عبد الرحمن‘‘ و بلال كان يؤذن و ’’ اصبعاه فى اذنيه ‘‘ رواه الترمذى (197) وهو حديث صحيح

بَابُ فَضْلِ الْأَذَانِ وَإِجَابَةِ الْمُؤَذِّنِ • अज़ान देने और अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٦٥٤ - (صَحِيح) عَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْمُؤَذِّنُونَ أَطْوَلُ النَّاسِ أعناقا يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

654. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: कियामत के दिन मुअज़्ज़िन हज़रात की गर्दने सब से लम्बी होगी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 387)، (852)

٦٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «إِذا نُودي للصَّلَاة أدبر الشَّيْطَان وَله ضُرَاطٌ حَتَّى لَا يَسْمَعَ التَّأْذِينَ فَإِذَا قَضَى النِّدَاءَ أَقْبَلَ حَتَّى إِذَا ثُوِّبَ بِالصَّلَاةِ أَدْبَرَ حَتَّى إِذَا قَضَى التَّثْوِيبَ أَقْبَلَ حَتَّى يَخْطِرَ بَيْنَ الْمَرْءِ وَنَفْسِهِ يَقُولُ اذْكُرْ كَذَا اذْكُرْ كَذَا لِمَا لَمْ يَكُنْ يَذْكُرُ حَتَّى يَظَلَّ الرجل لَا يدْرِي كم صلى»

655. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब नमाज़ के लिए आज़ान कही जाती है तो शैतान हवा ख़ारिज करता हुआ पीठ फेर कर भाग जाता है, हत्ता कि वह आज़ान की आवाज़ नहीं सुनता है पस जब आज़ान मुकम्मल हो जाती है तो वह वापस जाता है और फिर जब नमाज़ के लिए इकामत कही जाती है तो वह पीठ फेर कर भाग जाता है और फिर जब इकामत मुकम्मल हो जाती है तो वह वापस जाता है और वह आदमी का दिल में वसवसे डालता है और कहता है फलां चीज़ याद कर फलां चीज़ याद कर ऐसी बाते याद कराता है जो इसे याद नहीं थी, हत्ता कि आदमी की यह कैफियत हो जाती है कि इसे पता नहीं चलता कि उस ने कितनी रकते पढ़ी है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (608) و مسلم (19 / 389)، (859)

٦٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَسْمَعُ مَدَى صَوْتِ الْمُؤَذِّنِ جِنٌّ وَلَا إِنْسٌ وَلَا شَيْءٌ إِلَّا شَهِدَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

656. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुअज़्ज़िन की आवाज़ को जिन्न व इन्स और जो दूसरी चीज़े सुनती हैं वह सब कियामत के दिन उस के हक़ में गवाही देंगी"| (बुखारी)

رواه البخارى (609)

٦٥٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ص:٢٠ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِذَا سَمِعْتُمُ الْمُؤَذِّنَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ ثُمَّ صَلُّوا عَلَيَّ فَإِنَّهُ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا ثُمَّ سَلُوا اللَّهَ لِيَ الْوَسِيلَةَ فَإِنَّهَا مَنْزِلَةٌ فِي الْجَنَّةِ لَا تَنْبَغِي إِلَّا لِعَبْدٍ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَنَا هُوَ فَمَنْ سَأَلَ لِيَ الْوَسِيلَةَ حَلَّتْ عَلَيْهِ الشَّفَاعَةُ. رَوَاهُ مُسلم

657. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम मुअज़्ज़िन को सुने तो तुम भी वही कहो जो मुअज़्ज़िन कहता है, फिर मुझ पर दुरुद पढ़ो क्योंकि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पढ़ता है तो अल्लाह उस पर दस रहमते नाज़िल फरमाता है, फिर तुम अल्लाह से मेरे लिए वसिले तलब करो क्योंकि वह जन्नत में एक मक़ाम है, जो अल्लाह के सिर्फ एक बंदे के शियाए शान है, मैं उम्मीद करता हूँ कि वह में होगा चुनांचे जिस शख़्स ने मेरे लिए वसिले की दुआ की उस के लिए मेरी शफाअत वाजिब हो गई"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 384)، (849)

٦٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَالَ الْمُؤَذِّنُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ فَقَالَ أَحَدُكُمُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ قَالَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ ثُمَّ قَالَ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ قَالَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ثُمَّ قَالَ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ قَالَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مِنْ قَلْبِهِ دخل الْجنَّة» . رَوَاهُ مُسلم

658. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब मुअज़्ज़िन कहता है, (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर " अल्लाह सबसे बड़ा है '', और तुम में से भी कोई खुलूसे क़ल्ब से (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहता है, फिर वह कहता है: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और वह शख़्स भी हमें कलिमात कहता है, फिर वह कहता है: मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, और वह शख़्स भी यही कलिमात कहता है, फिर वह कहता है: नमाज़ की तरफ आओ तो वह शख़्स कहता है لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ (ला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह)" गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से है '- फिर वह कहता है: कामयाबी की तरफ आओ तो वह शख़्स कहता है, ((ला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह)), फिर वह कहता है: (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर तो वह शख़्स भी (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहता है,

फिर वह कहता है (لا اله الا الله) तो वह शख़्स भी कहता है, (لا اله الا الله) अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं”- तो वह जन्नत में दाखिल होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 385)، (850)

٦٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

659. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख्स आज़ान सुन कर यह दुआ पढ़े, ऐ अल्लाह! इस दावत कामिल(सर्वोत्तम) और कायम होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसिला व फ़ज़ीलत अता फरमा और उन्हें मक़ाम ए महमूद पर फाईज़ फ़रमा जिसका तूने उन से वादा फ़रमाया है, तो उस के लिए रोज़ ए कियामत मेरी शफाअत वाजिब हो जाएगी”| (बुखारी)

رواه البخارى (614)

٦٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُغِيرُ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ وَكَانَ يَسْتَمِعُ الْأَذَانَ فَإِنْ سَمِعَ أَذَانًا أَمْسَكَ وَإِلَّا أَغَارَ فَسَمِعَ رَجُلًا يَقُولُ اللَّهُ أَكْبَرُ ص:٢٠ اللَّهُ أَكْبَرُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَى الْفِطْرَةِ» ثُمَّ قَالَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَرَجْتَ من النَّار» فنظروا فَإِذا هُوَ راعي معزى. رَوَاهُ مُسلم

660. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब फज्र तुलुअ हो जाती तो नबी ﷺ हमला किया करते थे और आप बड़े गौर से आज़ान सुनने की कोशिश करते अगर आप आज़ान सुन लेते तो हमला न करते वरना हमला कर देते एक मर्तबा आप ने किसी शख़्स को “ अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, कहते हुए सुना तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शख़्स फितरत ए दीन पर है”, फिर इस शख़्स ने कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम जहन्नम से आज़ाद हो गए”, पस सहाबा ने इसे देखा तो वह बकरियों का चरवाहा था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 382)، (847)

٦٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ الْمُؤَذِّنَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا غُفِرَ لَهُ ذَنبه» . رَوَاهُ مُسلم

661. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स आज़ान सुन कर यह कहता है, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का

कोई शरीक नहीं और यह कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं में अल्लाह के रब होने मुहम्मद ﷺ के रसूल और इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हो तो उस के गुनाह बख्श दिए जाते हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 386)، (851)

٦٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلَاةٌ بَيْنَ كُلِّ أَذَانَيْنِ صَلَاةٌ» ثُمَّ قَالَ فِي الثَّالِثَةِ «لِمَنْ شَاءَ»

662. अब्दुल्लाह बिन मग़फल बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर दो आज़ानो आज़ान व इक़ामत के दरमियान नफ्ल नमाज़ है, हर दो आज़ानो के बिच में नमाज़ है, फिर तीसरी मर्तबा फ़रमाया: “उस शख़्स के लिए जो पढ़ना चाहे|”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (627) و مسلم (304 / 838)، (1940)

بَابُ فَضْلِ الْأَذَانِ وَإِجَابَةِ الْمُؤَذِّنِ • अज़ान देने और अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٦٦٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْإِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مؤتمن الله أَرْشِدِ الْأَئِمَّةَ وَاغْفِرْ لِلْمُؤَذِّنِينَ» . رَوَاهُ ص:٢١ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالشَّافِعِيُّ وَفِي أُخْرَى لَهُ بِلَفْظِ المصابيح

663. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इमाम (नमाज़ का) निगेहबान है जबकि मुअज़्ज़िन अवक़ात (नमाज़ का) अमानतदार है? अल्लाह इमामों की रहनुमाई फरमा और आज़ान देने वालों की मग़फिरत फरमा”, अहमद अबू दावुद, तिरमिज़ी, शाफ़ई और इमाम शाफ़ई की दूसरी रिवायत मसाबिह के अल्फाज़ इसे मरवी है| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 561 ح 9943) و ابوداؤد (517 ، 518) و الترمذى (207) [و صحيح ابن خزيمة (1531) و ابن حبان (362) و الشافعى فى الام (1 / 87 وسنده ضعيف) وهو حسن بالشواهد]

٦٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «من أذن سبع سِنِين محتسبا كتبت لَهُ بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه.

664. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सवाब की नियत से सात बरस आज़ान देता है तो उस के लिए जहन्नम से खलासी लिख दी जाती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (206 وقال : غريب) و ابوداؤد (لم اجده) و ابن ماجه (727) * فيه جابر بن يزيد الجعفى وهو ضعيف جدًا مدلس

٦٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَعْجَبُ رَبُّكَ مِنْ رَاعِي غَنَمٍ فِي رَأْسِ شَظِيَّةٍ لِلْجَبَلِ يُؤَذِّنُ بِالصَّلَاةِ وَيُصَلِّي فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ انْظُرُوا إِلَى عَبْدِي هَذَا يُؤَذِّنُ وَيُقِيمُ الصَّلَاةَ يَخَافُ مِنِّي قَدْ غَفَرْتُ لِعَبْدِي وَأَدْخَلْتُهُ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

665. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तेरा रब पहाड़ की चोटी पर बकरिया चराने वाले उस शख़्स से खुश होता है जो नमाज़ के लिए आज़ान कहता है और नमाज़ पढ़ता है, चुनांचे अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है, मेरे इस बंदे को देखो वह आज़ान कहता है और नमाज़ पढ़ता है, वह मुझ से डरता है, मैंने अपने बंदे को बख्श दिया और इसे जन्नत में दाखिल फरमा दिया”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1203) و النسائی (2 / 20 ح 667) [و صححه ابن حبان (260)

٦٦٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثَةٌ عَلَى كُثْبَانِ الْمِسْكِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَبْدٌ أَدَّى حَقَّ اللَّهِ وَحَقَّ مَوْلَاهُ وَرَجُلٌ أَمَّ قَوْمًا وَهُمْ بِهِ راضون وَرجل يُنَادي بالصلوات الْخمس فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

666. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन शख़्स रोज़ ए कियामत कस्तूरी के टीलो पर होंगे, वह गुलाम जिसने अल्लाह और अपने मालिक का हक़ अदा किया, वह इमाम जिस से उस के मुक्तदी खुश हो और वह शख़्स जो रोज़ाना पांचो नमाज़ो के लिए आज़ान देता है” तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1986 وقال : حسن غریب) * ابو الیقظان ضعیف و سفیان الثوری مدلس و عنعن

٦٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤَذِّنُ يُغْفَرُ لَهُ مد صَوْتِهِ وَيَشْهَدُ لَهُ كُلُّ رَطْبٍ وَيَابِسٍ وَشَاهِدُ الصَّلَاة يكْتب لَهُ خمس وَعِشْرُونَ حَسَنَة وَيُكَفَّرُ عَنْهُ مَا بَيْنَهُمَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى النَّسَائِيُّ إِلَى قَوْلِهِ: «كُلُّ رَطْبٍ وَيَابِسٍ» . وَقَالَ: «وَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ من صلى»

667. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुअज़्ज़िन को उसकी आवाज़ के मुताबिक मगफिरत से नवाज़ा जाता है, हर खुश्क व तर उस के हक़ में गवाही देती है और नमाज़ के लिए आने वाले शख़्स के लिए पच्चीस नमाज़ो का सवाब लिखा जाता है, और उस से दो नमाज़ो के बिच में होने वाले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”, अहमद, अबू दावुद, इब्ने माजा इसनाद हसन इमाम नसई ने “हर खुश्क व तर” के अल्फाज़ तक रिवायत किया है और फ़रमाया: “नमाज़ पढ़ने वाले की मिस्ल इसे भी अज़र मिलता है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 411 ح 9317) و ابوداؤد (515) و ابن ماجه (724) و النسائی (2 / 13 ح 646) [و صححه ابن خزیمة (390) و ابن حبان (292)]

٦٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ قَالَ قُلْتُ: يَا رَسُول الله اجْعَلنِي إِمَام قومِي فَقَالَ: «أَنْتَ إِمَامُهُمْ وَاقْتَدِ بِأَضْعَفِهِمْ وَاتَّخِذْ مُؤَذِّنًا لَا يَأْخُذُ عَلَى أَذَانِهِ أَجْرًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

668. उस्मान बिन अबी अल आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे मेरी कौम का इमाम मुक़र्रर फरमा दें, आप ﷺ ने फ़रमाया: " तुम इन के इमाम हो, इन के कमज़ोर लोगों का ख्याल रखते हुए इमामत करना, किसी ऐसे शख़्स को मुअज़्ज़िन बनाना जो अज़ान देने पर उजरत वसूल न करे| (सहीह,मुस्लिम)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 217 ح 18066) و ابوداؤد (531) و النسائی (2 / 23 ح 673) [و ابن ماجه (987) و صححه الحاكم على شرط مسلم (1 / 199 ، 201) و وافقه الذهبى]

٦٦٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن أَقُول عِنْد أَذَان الْمغرب: «اللَّهُمَّ إِن هَذَا إِقْبَالُ لَيْلِكَ وَإِدْبَارُ نَهَارِكَ وَأَصْوَاتُ ص:٢١ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

669. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे तालीम दी की मैं मग़रिब की आज़ान के वक़्त यह दुआ पढ़ु: “अल्लाह यह (यानी आज़ान मग़रिब) तेरी रात आने, तेरे दिन के जाने और मुअज़्ज़िन की आवाज़ का वक़्त है, मुझे बख्श दे”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (530) و البيهقى فى الدعوات الكبير (2 / 96 ح 333) [و الترمذى (3589) و صححه الحاكم (1 / 199) و وافقه الذهبى] قلت ابوكثير : حسن الحديث

٦٧٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ أَوْ بَعْضِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ بِلَالًا أَخَذَ فِي الْإِقَامَةِ فَلَمَّا أَنْ قَالَ قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقَامَهَا اللَّهُ وَأَدَامَهَا» وَقَالَ فِي سَائِرِ الْإِقَامَة: كنحو حَدِيث عمر رَضِي الله عَنهُ فِي الْأَذَان. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

670. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हा या रसूलुल्लाह ﷺ के कोई दूसरे सहाबी बयान करते हैं, कि बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने इकामत शुरू की पस जब उन्होंने कहा: “नमाज़ खड़ी हो चुकी”, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इसे कायम व दाइम रखे”, और बाकी इकामत में आज़ान के मुतल्लिक उमर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस की तरह कलिमात कहे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (528) * محمد بن ثابت العبدى ضعيف و رجل من اهل الشام : مجهول

٦٧١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُرَدُّ الدُّعَاءُ بَيْنَ الْأَذَان وَالْإِقَامَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

671. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अजान व इकामत के बीच में दुआ

रद्द नहीं की जाती”|1 (सहीह)

صحيح ، رواہ ابوداؤد (521) و الترمذی (212) [و صححه ابن خزيمة (446 ، 447) و ابن حبان (296) و للحديث شواھد]

٦٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثِنْتَانِ لَا تُرَدَّانِ أَوْ قَلَّمَا تُرَدَّانِ الدُّعَاءُ عِنْدَ النِّدَاءِ وَعِنْدَ الْبَأْسِ حِينَ يُلْحِمُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا» وَفِي رِوَايَةٍ: «وَتَحْتَ الْمَطَرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ «وَتَحْت الْمَطَر»

672. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो दुआए रद्द नहीं की जाती या फ़रमाया कम ही रद्द की जाती हैं, आज़ान के वक़्त की जाने वाली दुआ और घमासान की लड़ाई के वक़्त की जाने वाली दुआ और एक रिवायत में है बारिश के वक़्त (की जाने वाली दुआ)”| अबू दावुद, दारमी लेकिन दारमी ने “ बारिश के वक़्त” का ज़िक्र नहीं किया| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (2540) و الدارمی (1 / 272 ح 1203) [و صححه ابن خزيمة (419) الحاکم (2 / 114) و وافقه الذھبی (!)] و سنده حسن ، و للحديث شواھد عند ابن حبان (1717 ، 1761) وغيره* رزق بن سعيد و ثقه الحاکم و الذھبی / و موسی بن يعقوب حسن الحديث

٦٧٣ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْمُؤَذِّنِينَ يَفْضُلُونَنَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُلْ كَمَا يَقُولُونَ فَإِذَا انْتَهَيْتَ فسل تعط» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

673. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुअज़्ज़िन तो हम पर फ़ज़ीलत ले गए रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जैसे वह कहे वैसे ही तुम कहो, पस जब तुम (जवाब देने से) फारिग़ हो जाओ तो (अल्लाह से) मांगो तुम्हें अता किया जाएगा”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (524) [و صححه ابن حبان (295)]

بَابُ فَضْلِ الْأَذَانِ وَإِجَابَةِ الْمُؤَذِّنِ — अज़ान देने और अज़ान का जवाब देने की फ़ज़ीलत

الْفَصْلُ الثَّالِث — तीसरी फस्ल

٦٧٤ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ بِالصَّلَاةِ ذَهَبَ حَتَّى يَكُونَ مَكَانَ الرَّوْحَاءِ» . رَوَاهُ مُسلم

674. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब शैतान नमाज़ के लिए

आज़ान सुनता है तो वह मक़ाम रौहा तक भाग जाता है" रावी बयान करते हैं, रव्हा मदीना से छत्तीस मील की मुसाफ़त पर है| १ (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 388)، (854)

٦٧٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ قَالَ: (إِنِّي لَعِنْدَ مُعَاوِيَةَ إِذْ أَذَّنَ مُؤَذِّنُهُ فَقَالَ مُعَاوِيَةُ كَمَا قَالَ مُؤَذِّنُهُ حَتَّى إِذَا قَالَ: حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ: قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فَلَمَّا قَالَ: حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ وَقَالَ بَعْدَ ذَلِكَ مَا قَالَ الْمُؤَذِّنُ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ ذَلِك. رَوَاهُ أَحْمد

675. अल्कमा बिन वक़्क़ास रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के पास था जब उन के मुअज़्ज़िन ने आज़ान कही तो मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने भी अपने मुअज़्ज़िन के कलिमात कहे हत्ता कि जब उस ने कहा: حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ (आओ नमाज़ की तरफ) तो उन्होंने कहा: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ (ला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) "गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से मुमकिन है" पस जब उस ने कहा: حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ (हय्य अलल फलाह), तो उन्होंने कहा: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ (ला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलियुल अज़ीम) और उस के बाद जैसे मुअज़्ज़िन ने कहा: वैसे ही उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना आप ﷺ ने ऐसे ही फ़रमाया| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 91 ، 92 ح 16956) [و النسائى (2 / 25 ح 678) و للحديث شواهد] * و ليس عندهم '' العلى العظيم '' وهى زيادة منكرة فى هذا الرواية

٦٧٦ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ بِلَالٌ يُنَادِي فَلَمَّا سَكَتَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَ مِثْلَ هَذَا يَقِينا دخل الْجنَّة» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

676. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे बिलाल रदियल्लाहु अन्हु खड़े हो कर आज़ान देने लगे चुनांचे जब वह ख़ामोश हो गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स खुलूस दिलसे यह कलिमात कहेगा वह जन्नत में दाखिल होगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (2 / 24 ح 675) [و صححه ابن حبان (293) و الحاكم (1 / 204) و وافقه الذهبى] * سقط من المستدرک '' النضر بن سفيان '' و اثبته الحافظ ابن حجر فى اتحاف المهرة (15 / 634 ح 20041) و النضر و ثقه الذهبى (الكاشف : 3 / 179) و غيره

٦٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَمِعَ الْمُؤَذِّنَ يَتَشَهَّدُ قَالَ: «وَأَنَا وَأَنَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

677. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ मुअज़्ज़िन को अल्लाह के माबूद होने और मुहम्मद ﷺ के रसूल होने की गवाही देते हुए सुनते तो फरमाते: "और मैं भी और मैं भी (गवाही देता हूँ) | (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (526) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 1681) و الحاكم (1 / 204)]

٦٧٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَذَّنَ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَكُتِبَ لَهُ بِتَأْذِينِهِ فِي كُلِّ يَوْمٍ سِتُّونَ حَسَنَةً وَلِكُلِّ إِقَامَة ثَلَاثُونَ حَسَنَة» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

678. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स बारह साल आज़ान दे तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है और उसकी आज़ान की वजह से उस के हक़ में साठ नेकियाँ और हर इकामत के बदले तीस नेकियाँ लिखी जाती हैं”| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (728) [و صححه الحاكم (1 / 205) و وافقه الذهبى و سنده ضعيف] * ابن جريج مدلس و عنعن

٦٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُؤْمَرُ بِالدُّعَاءِ عِنْدَ أَذَانِ الْمغرب. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

679. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, आज़ान ए मग़रिब के वक़्त हमें दुआ करने का हुक्म दिया जाता था| (सनद सख्त ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (2 / 98 ح 335) * فيه عبد الرحمن بن اسحاق الواسطى ضعيف جدًا ضعفه الجمهور ، و ابو معاوية مدلس و عنعن

بَاب تَأْخِير الْأَذَان • अज़ान में ताखीर करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٦٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن بِلَالًا يُؤَذن بِلَيْلٍ فَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يُنَادِيَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُوم» ثمَّ قَالَ: وَكَانَ رَجُلًا أَعْمَى لَا يُنَادِي حَتَّى يُقَالَ لَهُ: أَصبَحت أَصبَحت

680. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बिलाल तुलुअ ए फज्र से पहले रात के वक़्त आज़ान देते हैं, पस जब तक उम्म मक्तूम आज़ान न दें तुम सहरी खाते रहो”, रावी बयान करते हैं, इब्ने मक्तूम रदियल्लाहु अन्हु नाबीना शख़्स थे और जब तक उन्हें यह न कहा जाता के सुबह हो गई वह आज़ान नहीं देते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (617) و مسلم (3637 / 1092)، (2536)

٦٨١ - (صَحِيح) وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَمْنَعَنَّكُمْ مِنْ سُحُورِكُمْ أَذَانُ بِلَالٍ وَلَا الْفَجْرُ الْمُسْتَطِيلُ وَلَكِنِ الْفَجْرُ الْمُسْتَطِيرُ فِي الْأُفق» رَوَاهُ مُسلم وَلَفظه لِلتِّرْمِذِي

681. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज़ान ए बिलाल और फज्र काज़िब तुम्हें सहरी खाने पीने से न रोके लेकिन उफ़क़ में फ़ैल जाने वाली (सुबह सुबह सादिक होने पर खाने पीने से रुक जाओ)”, मुस्लिम, और यह अल्फाज़ तिरमिज़ी के है| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (43 / 1094)، (2546) و الترمذی (706)

٦٨٢ - (صَحِيح) وَعَن مَالك بن الْحُوَيْرِث قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَابْنُ عَمٍّ لِي فَقَالَ: «إِذَا سَافَرْتُمَا فأذنا وأقيما وليؤمكما أكبركما» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

682. मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और मेरा चचाज़ाद नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम सफ़र करो तो तुम आज़ान दो एक आज़ान दे दूसरा जवाब दे और इकामत कहो और तुम में से जो बड़ा है के तुम्हारी इमामत कराए”| (मुस्लिम)

رواہ البخاری (628) [و مسلم 293 / 674]، (1538)

٦٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي فَإِذا حضرت الصَّلَاة فليؤذن لكم أحدكُم وليؤمكم أكبركم»

683. मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें फ़रमाया: “तुम वैसे नमाज़ पढ़ो जैसे तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है, जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तुम में से कोई आज़ान दे फिर तुम में से जो बड़ा हो, वह इमामत कराए|”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (631) و مسلم (292 / 674، (1535) مختصرًا دون قولہ :’’ صلوا کما رایتمونی اصلی‘‘)

٦٨٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَفَلَ مِنْ غَزْوَةِ خَيْبَرَ سَارَ لَيْلَةً حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْكَرَى عَرَّسَ وَقَالَ لِبِلَالٍ: " اكْلَأْ لَنَا اللَّيْلَ. فَصَلَّى بِلَالٌ مَا قُدِّرَ لَهُ وَنَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ فَلَمَّا تَقَارَبَ الْفَجْرُ اسْتَنَدَ بِلَال إِلَى رَاحِلَته موجه الْفَجْرِ فَغَلَبَتْ بِلَالًا عَيْنَاهُ وَهُوَ مُسْتَنِدٌ إِلَى رَاحِلَتِهِ فَلَمْ يَسْتَيْقِظْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا بِلَالٌ وَلَا أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِهِ حَتَّى ضَرَبَتْهُمُ الشَّمْسُ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوَّلَهُمُ اسْتِيقَاظًا فَفَزِعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَيْ بِلَالُ» فَقَالَ بِلَالٌ أَخَذَ بِنَفْسِي الَّذِي أَخَذَ بِنَفْسِكَ قَالَ: «اقْتَادُوا» فَاقْتَادُوا رَوَاحِلَهُمْ شَيْئًا ثُمَّ تَوَضَّأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ بِلَالًا فَأَقَامَ الصَّلَاةَ فَصَلَّى بِهِمُ الصُّبْحَ فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ قَالَ: " مَنْ نَسِيَ الصَّلَاةَ فَلْيُصَلِّهَا إِذَا ذكرهَا فَإِن الله قَالَ (أَقِم الصَّلَاة لذكري)»» رَوَاهُ مُسلم

684. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते कि जब रसूलुल्लाह ﷺ गजवा ए खैबर से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने रातभर सफ़र जारी रखा हत्ता कि आप को ऊंघ आने लगी तो आप ने रात के आखिरी हिस्से में नींद की गर्ज़ से पड़ाव डाला और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “आप रात के वक़्त पहरा दें”, चुनांचे बिलाल

रदियल्लाहु अन्हु ने इस क़दर नवाफिल पढ़े जिस क़दर उन के मुकद्दर में थे जबकि रसूलुल्लाह ﷺ आप के सहाबा सो गए जब फज्र का वक़्त करीब पहुंचा तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने फज्र मशरिक की तरफ रुख कर के अपने सवारी के साथ टेक लगा ली तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु पर नींद का ग़लबा हो गया और वह अपने सवारी के साथ टेक लगाए हुए सो गए, रसूलुल्लाह ﷺ बेदार न हुए और न बिलाल रदियल्लाहु अन्हु और न ही आप का कोई और सहाबी हत्ता कि उन पर धूप आ गई। तो उनमें से सबसे पहले रसूलुल्लाह ﷺ बेदार हुए। रसूलुल्लाह ﷺ ने घबरा कर फ़रमाया: “बिलाल!" बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, (अल्लाह के रसूल!) जो चीज़ आप पर ग़ालिब आई वही चीज़ मुझ पर ग़ालिब गई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(यहाँ से) अपने जानवरों को चलाओ”, उन्होंने थोड़ी दूर तक अपने जानवरों को हांका। रसूलुल्लाह ﷺ ने वुज़ू किया और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने नमाज़ के लिए इकामत कही और आप ने उन्हें नमाज़ पढ़ाई, जब आप ﷺ नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया: “जो शख्स नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो वह उस के याद आने पर इसे पढ़ ले, क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “मेरे ज़िक्र के लिए नमाज़ कायम करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (309 / 680)، (1560)

٦٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا تَقُومُوا حَتَّى تَرَوْنِي قَدْ خرجت "

685. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब नमाज़ के लिए इकामत कही जाए तो तुम खड़े न हुआ करो हत्ता कि तुम मुझे देख लो की मैं (हुजरे शरीफ से) बाहर आ चूका हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (637) و مسلم (156 / 604)، (1365)

٦٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أُقِيمَت الصَّلَاة فَلَا تأتوها تَسْعَوْنَ وَأْتُوهَا تَمْشُونَ وَعَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا وَمَا فاتكم فَأتمُّوا» ص:٢١»» »» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا كَانَ يَعْمِدُ إِلَى الصَّلَاةِ فَهُوَ فِي صَلَاةٍ»»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّانِ

686. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब नमाज़ के लिए इकामत कह दि जाए तो फिर नमाज़ की तरफ दौड़ते हुए मत आओ, बल्कि इत्मीनान व सुकून और वक़ार (गरिमा) के साथ आओ, पस तुम जो पा लो पढ़ लो और जो तुम से रह जाए इसे पूरा कर लो”, बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की एक रिवायत में है: “क्योंकि जब तुम में से कोई नमाज़ का क़सद करता है तो वह नमाज़ ही में होता है”|1 (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (908) و مسلم (151 / 602)، (1360)

وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّانِ

यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है

अज़ान में ताखीर करने का बयान • بَاب تَأْخِير الْأَذَان

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٦٨٧ - (صَحِيح) عَن زيد بن أسلم أنه قَالَ: عَرَّسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةً بِطَرِيقِ مَكَّةَ وَوَكَّلَ بِلَالًا أَنْ يُوقِظَهُمْ لِلصَّلَاةِ فَرَقَدَ بِلَالٌ وَرَقَدُوا حَتَّى اسْتَيْقَظُوا وَقَدْ طَلَعَتْ عَلَيْهِمُ الشَّمْسُ فَاسْتَيْقَظَ الْقَوْمُ وَقَدْ فَزِعُوا فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَرْكَبُوا حَتَّى يَخْرُجُوا مِنْ ذَلِكَ الْوَادِي وَقَالَ: «إِنَّ هَذَا وَادٍ بِهِ شَيْطَانٌ» . فَرَكِبُوا حَتَّى خَرَجُوا مِنْ ذَلِكَ الْوَادِي ثُمَّ أَمَرَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْزِلُوا وَأَنْ يَتَوَضَّئُوا وَأَمَرَ بِلَالًا أَنْ يُنَادِيَ لِلصَّلَاةِ أَوْ يُقِيمَ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّاسِ ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَيْهِم وَقَدْ رَأَى مِنْ فَزَعِهِمْ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ اللَّهَ قَبَضَ أَرْوَاحَنَا وَلَوْ شَاءَ لَرَدَّهَا إِلَيْنَا فِي حِينٍ غَيْرِ هَذَا فَإِذَا رَقَدَ أَحَدُكُمْ عَنِ الصَّلَاةِ أَوْ نَسِيَهَا ثُمَّ فَزِعَ إِلَيْهَا فَلْيُصَلِّهَا كَمَا كَانَ يُصَلِّيهَا فِي وَقْتِهَا» ثُمَّ الْتَفَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَقَالَ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ أَتَى بِلَالًا وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فأضجعه فَلم يَزَلْ يُهَدِّئُهُ كَمَا يُهَدَّأُ الصَّبِيُّ حَتَّى نَامَ» ثُمَّ دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَالًا فَأَخْبَرَ بِلَالٌ ص:٢١ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الَّذِي أَخْبَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَا بَكْرٍ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ. رَوَاهُ مَالك مُرْسلاييييي

687. ज़ैद बिन असलम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक रात तरीक़ ए मक्का में रात के आखिरी हिस्से में पड़ाव डाला और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म फ़रमाया कि वह उन्हें नमाज़ के लिए बेदार करें, पस बिलाल रदियल्लाहु अन्हु और वह सब सो गए हत्ता कि वह सब बेदार हुए तो सूरज तुलुअ हो चुका था। जब वो बेदार हुए तो घबरा गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें इस वादी से निकल जाने का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया इस वादी में शैतान है, पस सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम सवार हुए हत्ता कि वह इस वादी से निकल गए। फिर रसूल ﷺ ने उन्हें हुक्म फ़रमाया कि वह पड़ाव डालें और वुज़ू करें। आप ﷺ ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को नमाज़ के लिए आज़ान या इकामत कहने का हुक्म फ़रमाया। रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ाई। जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो उनकी बेचेनी देख कर फ़रमाया: “लोगो! बेशक अल्लाह ने हमारी रूहें कब्ज़ कीं। अगर वह चाहता तो उन्हें इस वक़्त के अलावा किसी और वक़्त तुलुअ ए आफ़ताब से पहले हमारी तरफ लौटा देता जब तुम में से कोई नमाज़ के वक़्त सो जाए या वह इसे भूल जाए फिर इसे उस के मुतल्लिक आगाही हो जाए तो वो इसे वैसे ही पढ़े जैसे वो इसे उस के वक़्त में पढ़ा करता था ‘‘, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु की तरफ मुतावज्जे हो कर फ़रमाया: “शैतान बिलाल के पास आया जबकि वह नमाज़ पढ़ रहे थे। उस ने उन्हें लेटा दिया। फिर वह उन्हें थपकी देता रहा जैसे बच्चे को थपकी दी जाती है, हत्ता कि वह सो गए। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को बुलाया तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ को वैसे ही बताया जैसे रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु को बताया था। अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैं गवाही देता हूँ कि आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।" इमाम मालिक राहिमुल्लाह ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (1 / 14 ، 15 ح 25) * سندہ ضعیف لا رسالہ ولہ شواھد کثیرۃ عند مسلم (680)، (1560) و غیرہ

٦٨٨ - وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خَصْلَتَانِ مُعَلَّقَتَانِ فِي أَعْنَاقِ الْمُؤَذِّنِينَ لِلْمُسْلِمِينَ: صِيَامُهُمْ وَصَلَاتُهُمْ ". رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهيييبي

688. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमानों के दो उमूर की ज़िम्मेदारी व हिफाज़त मुअज़्ज़िनो की गर्दनों में मुअल्लक़ है, उन के रोज़े और उनकी नमाज़ें ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (712) * مروان بن سالم : متروک متهم ، و بقية مدلس و عنعن

بَاب الْمَسَاجِد ومواضع الصَّلَاة — मसाजिद और नमाज़ पढ़ने के मकामात का बयान

الْفَصْل الأول — पहली फस्ल

٦٨٩ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَيْتَ دَعَا فِي نَوَاحِيهِ كُلِّهَا وَلَمْ يُصَلِّ حَتَّى خَرَجَ مِنْهُ فَلَمَّا خَرَجَ رَكَعَ رَكْعَتَيْنِ فِي قُبُلِ الْكَعْبَةِ وَقَالَ: «هَذِه الْقبْلَة» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

689. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ बैतुल्लाह के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो आप ने उस के तमाम अतराफ़ में दुआ फरमाई, लेकिन आप ने नमाज़ नहीं पढ़ी हत्ता कि आप वहां से बाहर तशरीफ़ ले आए। पस जब बाहर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने काबा के सामने दो रकते पढ़ाईं और फ़रमाया: “ये काबा ही क़िब्ला है”| (बुखारी)

رواه البخاری (398)

٦٩٠ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ مُسْلِمٌ عَنْهُ عَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ

690. इमाम मुस्लिम ने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से और उन्होंने उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (395 / 1330)، (3237)

٦٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دخل الْكَعْبَة وَأُسَامَة بن زيد وبلال وَعُثْمَان بن طَلْحَة الحَجبي فَأَغْلَقَهَا عَلَيْهِ وَمَكَثَ فِيهَا فَسَأَلْتُ بِلَالًا حِينَ خَرَجَ مَاذَا صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: جعل عمودا عَنْ يَسَارِهِ وَعَمُودَيْنِ عَنْ يَمِينِهِ وَثَلَاثَةَ أَعْمِدَةٍ وَرَاءَهُ وَكَانَ الْبَيْتُ يَوْمَئِذٍ عَلَى سِتَّةِ أَعْمِدَةٍ ثُمَّ صلى

691. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ उसामा बिन ज़ैद, उस्मान बिन तल्हा, हजबिय्य और बिलाल बिन रबाह रदी अल्लाह अन्हुम काबा के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो उस्मान ने बैतुल्लाह का दरवाज़ा बंद कर दिया, आप ﷺ थोड़ी देर के लिए वहां ठहरे और जब बाहर तशरीफ़ लाए तो मैंने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से पूछा रसूलुल्लाह ﷺ ने अंदर किया गया उन्होंने ने फ़रमाया: आप ने एक सुतून अपने बाएं, दो सुतून अपने दाएं और तीन सुतून अपने पीछे कर लिए। उन दिनों बैतुल्लाह छः सुतून पर था फिर आप ﷺ ने नमाज़ पढ़ी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (505) و مسلم (388 / 1329)، (3230)

٦٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةٌ فِي مَسْجِدِي هَذَا خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ صَلَاةٍ فِيمَا سِوَاهُ إِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَام»

692. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी इस मस्जिद (मस्जिद ए नबवी) में एक नमाज़ मस्जिद ए हराम के अलावा दीगर मसाजिद की हज़ार नमाज़ से बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1190) و مسلم (505 / 1394)، (3374)

٦٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ إِلَّا إِلَى ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ: مَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْمَسْجِدِ الْأَقْصَى وَمَسْجِدِي هَذَا "

693. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन मसाजिद मस्जिद ए हराम मस्जिद ए अक्सा और मेरी इस मस्जिद के सिवा किसी और मस्जिद के लिए रखते सफ़र न बांधा जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1197) و مسلم (415 / 827 بعد ح 1338)، (3384)

٦٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ ومنبري على حَوْضِي

694. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरमियान जो जगह है वह जन्नत का बागीचा है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ (कौसर) पर होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1196) و مسلم (502 / 1391)، (3370)

٦٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْتِي مَسْجِدَ قبَاء كل سبت مَا شيا وراكبا فَيصَلي فِيهِ رَكْعَتَيْنِ

695. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ हर हफ्ते कभी पैदल और कभी सवारी पर मस्जिद ए कुबा तशरीफ़ ले जाया करते थे और वहां दो रकते पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1193) و مسلم (516 / 1399 ، 521 / 1399)، (3390 و 3396)

٦٩٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحَبُّ الْبِلَادِ إِلَى اللَّهِ مَسَاجِدُهَا وَأَبْغَضُ الْبِلَاد إِلَى الله أسواقها» . رَوَاهُ مُسلم

696. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा मक़ामात मसाजिद है और सबसे ज़्यादा नापसंदीदा जगह बाज़ार है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (288 / 671)، (1528)

٦٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ بَنَى لِلَّهِ مَسْجِدًا بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ»

697. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की ख़ातिर मस्जिद बनाता है तो अल्लाह उस के लिए जन्नत में घर बनाता है” (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (450) و مسلم (24 / 533)، (1189)

٦٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ أَوْ رَاحَ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ»

698. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सुबह व शाम जितनी मर्तबा मस्जिद में जाता है, अल्लाह उस के लिए उतनी मर्तबा ही जन्नत में खाने का इह्तेमाम फरमाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (622) و مسلم (285 / 669)، (1524)

٦٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْظَمُ النَّاسِ أَجْرًا فِي الصَّلَاةِ أَبْعَدُهُمْ فَأَبْعَدُهُمْ مَمْشًى وَالَّذِي يَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ حَتَّى يُصَلِّيَهَا مَعَ الْإِمَامِ أَعْظَمُ أجرا من الَّذِي يُصَلِّي ثمَّ ينَام»

699. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जितनी दूर से चल कर नमाज़ पढ़ने आता है तो वह इसी क़दर ज़्यादा अजर हासिल करता है और जो शख़्स नमाज़ का इंतज़ार करता रहता है हत्ता कि वह इमाम के साथ नमाज़ पढ़ता है तो वह इस शख़्स से ज़्यादा अजर हासिल करता है जो अकेला नमाज़ पढ़ कर सो जाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخارى (651) و مسلم (277 / 662)، (1513)

٧٠٠ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: خَلَتِ الْبِقَاعُ حَوْلَ الْمَسْجِدِ فَأَرَادَ بَنُو سَلِمَةَ أَنْ يَنْتَقِلُوا قُرْبَ الْمَسْجِدِ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُمْ: «بَلَغَنِي أَنَّكُمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَنْتَقِلُوا قُرْبَ الْمَسْجِدِ» . قَالُوا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ أَرَدْنَا ذَلِكَ. فَقَالَ: «يَا بَنِي سَلِمَةَ دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُم دِيَارَكُمْ تكْتب آثَارَكُم» . رَوَاهُ مُسلم

700. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मस्जिद ए नबवी के आस पास कुछ जगह खाली हुई तो बनू सलमा ने मस्जिद के करीब मुन्तकिल होने का इरादा किया, नबी ﷺ को पता चला तो आप ने उन्हें फ़रमाया: “मुझे पता चला है के तुम मस्जिद के करीब आना चाहते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल! हमारा इरादा तो यही है आप ﷺ ने फ़रमाया: “बनू सलमा अपने घर ही में रहो तुम्हारे कदम लिखे जाते हैं अपने घर ही में रहो तुम्हारे मस्जिद की तरफ उठने वाले कदम लिखे जाते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (280 / 665)، (1519)

٧٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «سَبْعَة يظلهم الله تَعَالَى فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ إِمَامٌ عَادِلٌ وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللَّهِ وَرجل قلبه مُعَلّق بِالْمَسْجِدِ وَرَجُلَانِ تَحَابًّا فِي اللَّهِ اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللَّهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ وَرجل دَعَتْهُ امْرَأَة ص:٢٢ ذَات منصب وَجَمَالٍ فَقَالَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ»

701. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सात खुश नसीब ऐसे है जिन्हें अल्लाह अपना साया नसीब फरमाएगा जिस रोज़ उस के साये के सिवा कोई साया नहीं होगा, आदिल हुक्मरान, वह नौजवान जो अल्लाह की इबादत में परवान चढ़ा, वह आदमी जिस का दिल मस्जिद के साथ मुअल्लक़ है, जब मस्जिद से निकलता है तो वह मस्जिद से ला ताअल्लुक़ नहीं होता हत्ता कि वह वहां लौट जाता है, वह दो आदमी जो अल्लाह की रज़ा की खातिर बाहम मुहब्बत करते हैं इसी बुनियाद पर इकठ्ठे होते हैं और अगर जुदा होते हैं तो भी इस मुहब्बत पर कायम रहते है, वह आदमी जिस ने तन्हाई में अल्लाह को याद किया तो उसकी आँखे अश्कबार हो गईं, वह आदमी जिसे हसब व जमाल वाली औरत ने (बुराई की) दावत दी तो उस ने कहा: मैं अल्लाह से डरता हूँ और वह आदमी जिस ने जो सदका किया उस ने इसे इस क़दर छुपा रखा हत्ता कि उस का बायाँ हाथ नहीं जानता कि उस के दाएं हाथ ने क्या खर्च किया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخارى (660) و مسلم (91 / 1031)، (2380)

٧٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الرَّجُلِ فِي الْجَمَاعَةِ تُضَعَّفُ عَلَى صَلَاتِهِ فِي بَيْتِهِ وَفِي سُوقِهِ خَمْسًا وَعِشْرِينَ ضِعْفًا وَذَلِكَ أَنَّهُ إِذَا تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الْمَسْجِدِ لَا يُخْرِجُهُ إِلَّا الصَّلَاةُ لَمْ يَخْطُ خُطْوَةً إِلَّا رُفِعَتْ لَهُ بِهَا دَرَجَةٌ وَحُطَّ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ فَإِذَا صَلَّى لَمْ تَزَلِ الْمَلَائِكَةُ تُصَلِّي عَلَيْهِ مَا دَامَ فِي مُصَلَّاهُ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ الله ارْحَمْهُ وَلَا يَزَالُ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاةٍ مَا انْتَظَرَ الصَّلَاةَ» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ كَانَتِ الصَّلَاةُ تَحْبِسُهُ» . وَزَادَ فِي دُعَاءِ الْمَلَائِكَةِ: " اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ تُبْ عَلَيْهِ. مَا لَمْ يُؤْذِ فِيهِ مَا لَمْ يُحْدِثْ فِيهِ

702. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी जो नमाज़ बा जमाअत अदा करता है उसकी वह नमाज़ उस के घर या बाज़ार में पढ़ी जाने वाली नमाज़ से पच्चीस गुना ज़्यादा अज्र व सवाब रखती है, वह इसलिए कि जब वह वुज़ू करता है और अच्छी तरह वुज़ू करता है और फिर वह महज़ नमाज़ अदा करने के लिए रवाना होता है तो उस के हर कदम पर उस का एक दर्जा बुलंद कर दिया जाता है और उसकी वजह से उस का एक गुनाह मुआफ़ कर दिया जाता है, पस जब वह नमाज़ पढ़ कर अपने जाए नमाज़ पर बैठा रहता है तो फ़रिश्ते उस के लिए दुआए करते रहते है, ऐ अल्लाह! इस पर रहमतें नाज़िल फरमा। ऐ अल्लाह! उस पर रहम फरमा। और जब कोई शख़्स नमाज़ के इंतज़ार में रहता है तो वह (हुक्म व सवाब के लिहाज़ से) नमाज़ में होता है”| # और एक रिवायत में है फ़रमाया: “जब वह मस्जिद में आए और नमाज़ इसे मस्जिद में रोके रखे”, इमाम मुस्लिम (रह) ने फरिश्तों की दुआ में यह इज़ाफा नकल किया है: “अल्लाह इसे बख्श दे ए अल्लाह! उसकी तौबा कबूल फरमा और जब तक वह किसी को तकलीफ पहुंचाए न उस का वुज़ू टूटे तो फरिश्तों की दुआ का सिलसिला जारी रहता है ‘‘ (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (647) و مسلم (272 / 649 بعد ح 661)، (1506)

٧٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَسَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَقُلِ: اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ. وَإِذَا خَرَجَ فَلْيَقُلِ: الله إِنِّي أَسأَلك من فضلك ". رَوَاهُ مُسلم

703. अबू उसैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो वह यह दुआ पढ़े: “अल्लाह मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े खोल दे और जब वह मस्जिद से बाहर आए तो यह दुआ पढ़े: “अल्लाह मैं तुझ से तेरे फ़ज़ल का सवाल करता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (68 / 713)، (1652)

٧٠٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يجلس»

704. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो वह बैठने से पहले दो रकतें पढ़े”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (444) و مسلم (69 / 714)، (1654)

٧٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ إِلَّا نَهَارًا فِي الضُّحَى فَإِذَا قَدِمَ بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ فَصَلَّى فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثمَّ جلس فِيهِ "

705. क़ाब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ चाश्त के वक़्त सफ़र से मदीना वापस आया करते थे। जब आप वापस तशरीफ़ लाते तो सबसे पहले मस्जिद में तशरीफ़ लाते और वहां दो रकते पढ़ते फिर वहां बैठ जाते”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (3088) و مسلم (74 / 716)، (1659)

٧٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ ص:٢٢ سَمِعَ رَجُلًا يَنْشُدُ ضَالَّةً فِي الْمَسْجِدِ فَلْيَقُلْ: لَا رَدَّهَا اللَّهُ عَلَيْكَ فَإِنَّ الْمَسَاجِد لم تبن لهَذَا ". رَوَاهُ مُسلم

706. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी आदमी को गुमशुदा जानवर (या कोई भी चीज़) के मुतल्लिक मस्जिद में एलान करते सुने तो वह शख़्स कहे अल्लाह तुम्हारी वह चीज़ तुम्हें वापस न लौटाए क्योंकि मस्जिदें इसलिए तो नहीं बनाई गईं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 / 568)، (1260)

٧٠٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَكَلَ مِنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ الْمُنْتِنَةِ فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَتَأَذَّى مِمَّا يَتَأَذَّى مِنْهُ الْإِنْسُ»

707. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इस बदबूदार पौधे, प्याज़, लहसुन वगैरा से कुछ खा ले तो वह हमारी मस्जिद में न आए क्योंकि फ़रिश्ते इस चीज़ से तकलीफ महसूस करते हैं, जिस से इंसान तकलीफ महसूस करते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (854 ، 855) و مسلم (72 / 564)، (1252)

٧٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْبُزَاقُ فِي الْمَسْجِد خَطِيئَة وكفارتها دَفنهَا»

708. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मस्जिद में थूकना गुनाह है और उस का कफ्फारा इसे दफन कर देना है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (415) و مسلم (55 / 552)، (1231)

٧٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عُرِضَتْ عَلَيَّ أَعْمَالُ أُمَّتِي حَسَنُهَا

وَسَيِّئُهَا فَوَجَدْتُ فِي محَاسِنِ أَعمالهَا الْأَذَى يماط عَن الطَّرِيق وَوَجَدْتُ فِي مَسَاوِئِ أَعْمَالِهَا النُّخَاعَةَ تَكُونُ فِي الْمَسْجِد لَا تدفن» . رَوَاهُ مُسلم

709. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के अच्छे बुरे तमाम आमाल मुझ पर पेश किए गए, मैंने रास्ते से तकलीफदेह चीज़ को दूर कर देना, उस के मुहसिन आमाल में पाया और वह थूक जो मस्जिद में हो और इसे साफ़ न किया जाए तो मैंने इसे उस के बुरे आमाल में पाया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 554)، (1233)

٧١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلَا يَبْصُقْ أَمَامَهُ فَإِنَّمَا يُنَاجِي اللَّهَ مَا دَامَ فِي مُصَلَّاهُ وَلَا عَنْ يَمِينِهِ فَإِنَّ عَنْ يَمِينِهِ مَلَكًا وَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ فَيَدْفِنُهَا»

710. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ पढ़ रहा हो तो वह अपने सामने न थूके क्योंकि
वह जब तक नमाज़ में होता है अपने रब से हम कलाम होता है और वह अपने दाएं तरफ भी न थूके क्योंकि उस के दाएं जानिब फ़रिश्ता है और अगर ज़रूरत हो तो अपने बाएं जानिब या अपने पाँव के नीचे थूके और इसे दफ्न कर दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (416) و مسلم (53 / 550)، (1230)

٧١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ أَبِي سَعِيدٍ: «تَحْتَ قدمه الْيُسْرَى»

711. और अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: “अपने बाएँ पाँव के नीचे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (408 ، 409) و مسلم (52 / 548)، (1225)

٧١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: «لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِد»

712. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने इस मर्ज़ के दौरान जिस से आप ﷺ सेहतयाब न हो सके फ़रमाया: “अल्लाह यहूदी और नसारा पर लानत फरमाए उन्होंने अपने अंबिया अलैहिस्सलाम की क़ब्रो को सजदाह गाह बना लिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (4443 ، 4444) و مسلم (22 / 531)، (1187)

٧١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جُنْدُب قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَلَا وَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَانُوا يَتَّخِذُونَ قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ أَلَا فَلَا تَتَّخِذُوا الْقُبُورَ مَسَاجِدَ إِنِّي أَنْهَاكُمْ عَنْ ذَلِكَ» . رَوَاهُ مُسلم

713. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सुन लो! तुम से पहले लोग अपने अंबिया अलैहिस्सलाम और अपने स्वालेह लोगों की क़बरो को सजदाह गाह बना लिया करते थे ख़बरदार तुम क़ब्रो को सजदाह गाह न बनाना बेशक मैं तुम्हें उस से मना करता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (23 / 532)، (1188)

٧١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اجْعَلُوا فِي بُيُوتِكُمْ مِنْ صَلَاتِكُمْ وَلَا تَتَّخِذُوهَا قُبُورًا»

714. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने नफ्ल नमाज़ अपने घरो में पढ़ा करो उन्हें कब्रिस्तान न बनाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاري (432) و مسلم (208 / 777)، (1820)

बाब अलमसाजिद व मवाज़े • بَاب الْمَسَاجِد ومواضع الصَّلَاة	**मसाजिद और नमाज़ पढ़ने के मकामात का बयान**
• الْفَصْل الثَّانِي	**दूसरी फस्ल**

٧١٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ قِبْلَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

715. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किब्ला मशरिक व मगरिब के बीच में है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (344 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه (1011) من طريق آخر]

٧١٦ - (حسن) وَعَنْ طَلْقِ بْنِ عَلِيٍّ قَالَ: خَرَجْنَا وَفْدًا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَايَعْنَاهُ وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَأَخْبَرْنَاهُ أَنَّ بِأَرْضِنَا بِيعَةً لَنَا فَاسْتَوْهَبْنَاهُ مِنْ فَضْلِ طَهُورِهِ. فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ وتمضمض ثمَّ صبه فِي إِدَاوَةٍ وَأَمَرَنَا فَقَالَ: «اخْرُجُوا فَإِذَا أَتَيْتُمْ أَرْضَكُمْ فَاكْسِرُوا بِيعَتَكُمْ وَانْضَحُوا مَكَانَهَا بِهَذَا الْمَاءِ وَاتَّخِذُوهَا مَسْجِدًا» قُلْنَا: إِنَّ الْبَلَدَ بَعِيدٌ وَالْحَرَّ شَدِيدٌ وَالْمَاءَ يُنْشَفُ فَقَالَ: «مُدُّوهُ مِنَ الْمَاءِ فَإِنَّهُ لَا يَزِيدُهُ إِلَّا طِيبًا» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

716. तलक़ बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम वफद की सूरत में रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश हुए तो हमने आप की बैत की, आप के साथ नमाज़ पढ़ी और आप को बताया हमारे मुल्क में हमारा एक गिरजा है, आप हमें अपने वुज़ू से बचा हुआ पानी इनायत फरमा दें। चुनांचे आप ﷺ ने पानी मंगवाया, वुज़ू किया और कुल्ली की। फिर इसे हमारे लिए एक बर्तन में डाल दिया और हमें जाने की इजाज़त देते हुए फ़रमाया: “जब तुम अपने सर ज़मीन पर पहुंचे तो अपने गिरजे को तोड़ दो। उस जगह पर यह पानी छिड़को और वहां मस्जिद बनाओ”, हमने अर्ज़ किया: हमारा मुल्क दूर है जबकि गर्मी शदीद है, इसलिए यह पानी तो खुश्क हो जाएगा। आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस में और पानी मिला लेना क्योंकि उस से उसकी बरकत मज़ीद बढ़ जाएगी”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائى (1 / 38 ح 702) [و صححه ابن حبان : 304]

٧١٧ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَت: أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِبِنَاءِ الْمَسْجِدِ فِي الدُّورِ وَأَنْ يُنَظَّفَ وَيَطَيَّبَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

717. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुहल्लों में मस्जिद बनाने और उन्हें पाक साफ़ रखने का हुक्म फ़रमाया”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (455) و الترمذى (594) و ابن ماجه (758) [و صححه ابن حبان : 306]

٧١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَمَرْتُ بِتَشْيِيدِ الْمَسَاجِدِ» . قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَتُزَخْرِفُنَّهَا كَمَا زَخْرَفَتِ الْيَهُود وَالنَّصَارَى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

718. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे मसाजिद को चूने का लेप करने का हुक्म नहीं दिया गया”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: "तुम उन्हें इस तरह सजावट करोगे जैसे यहूदी और नसारा ने सजावट किया। " (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (448) [و صححه ابن حبان (305) و قول ابن عباس علقه البخارى (فتح البارى : 1 / 539 قبل ح 446)] * سفيان الثورى عنعن

٧١٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يَتَبَاهَى النَّاسُ فِي الْمَسَاجِدِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

719. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अलामात ए कियामत में से एक निशानी यह है कि लोग मसाजिद के बारे में बाहम फख्र करेंगे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (449) و النسائى (2 / 32 ح 690) و الدارمى (1 / 327 ح 1415) و ابن ماجه (739) [و صححه ابن خزيمة (1322 ، 1323) و ابن حبان (308)]

٧٢٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «عُرِضَتْ عَلَيَّ أُجُورُ أُمَّتِي حَتَّى الْقَذَاةُ يُخْرِجُهَا الرَّجُلُ مِنَ الْمَسْجِدِ وَعُرِضَتْ عَلَيَّ ذُنُوبُ أُمَّتِي فَلَمْ أَرَ ذَنْبًا أَعْظَمَ مِنْ سُورَةٍ مِنَ الْقُرْآنِ أَوْ آيَةٍ أُوتِيهَا رَجُلٌ ثُمَّ نَسِيَهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

720. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत के आमाल का सवाब मुझ पर पेश किया गया हत्ता कि वह तिनका भी जिसे आदमी मस्जिद से उठाकर बाहर फेंक देता है इस का सवाब भी लिखा हुआ था , और मेरी उम्मत के गुनाह भी मुझ पर पेश किए गए तो मैंने उस से बड़ा कोई गुनाह नहीं देखा कि किसी आदमी को कुरान की कोई सूरत या कोई आयत अता की गई और उस ने याद करने के बाद उसे भुला दिया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2916 وقال : غريب) و ابوداؤد (461) * ابن جريج مدلس وبل يسمع من مطلب شيئاً و المطلب : لم يسمع من سيدنا انس رضى الله عنه

٧٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَشِّرِ الْمَشَّائِينَ فِي الظُّلَمِ إِلَى الْمَسَاجِدِ بِالنُّورِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

721. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अंधेरे में चल कर मस्जिद की तरफ आने वालों को रोज़ ए कियामत मुकम्मल नूर की खुशखबरी सुना दो”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (223 وقال : غريب) و ابوداؤد (561) [و للحديث شواهد]

٧٢٢ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ وَأنس

722. इमाम इब्ने माजा ने सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु और अनस रदियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (780 عن سهل و صححه الحاكم على شرط الشيخين 1 / 212 ح 768 و وافقه الذهبى ، ابن ماجه 781 عن انس رضى الله عنه) و الحاكم (1 / 212 عن انس رضى الله عنه و قال : رواية مجهولة)]

٧٢٣ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَتَعَاهَدُ الْمَسْجِد فَاشْهَدُوا لَهُ بِالْإِيمَان فَإِن الله تَعَالَى يَقُولُ (إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّه وَالْيَوْم الآخر وَأَقَام الصَّلَاة وَآتى الزَّكَاة)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

723. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस आदमी को मस्जिद की आबादी के लिए कोशां देखो तो उस के ईमान की गवाही दो , क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है “अल्लाह

की मस्जिदों को सिर्फ वही लोग आबाद कर सकते है जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हों”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2617 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (802) و الدارمی (1 / 278 ح 1226) [و صححه ابن حبان (الموارد : 310)] * والراجح ان دراجًا حسن الحديث عن ابی الهيشم و عن غيره

٧٢٤ - (ضَعِيف) وَعَن عُثْمَان بن مَظْعُون قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ائْذَنْ لَنَا فِي الِاخْتِصَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَصَى وَلَا اخْتَصَى إِنَّ خِصَاءَ أُمَّتِي الصِّيَامُ» . فَقَالَ ائْذَنْ لَنَا فِي السِّيَاحَةِ. فَقَالَ: «إِنْ سِيَاحَةَ أُمَّتِي الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . فَقَالَ: ائْذَنْ لَنَا فِي التَّرَهُّبِ. فَقَالَ: «إِن ترهب أمتِي الْجُلُوس فِي الْمَسَاجِد انتظارا للصَّلَاة» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

724. उस्मान बिन मज़उन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने अर्ज़ किया, "अल्लाह के रसूल! हमें खस्सी होने की इजाज़त अता फरमाइए, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने किसी को खस्सी किया या अपने आप को खस्सी किया तो वह हम में से नहीं क्योंकि मेरी उम्मत का खस्सी होना रोज़ा रखना है।" उन्होंने कहा: हमें सफ़र की इजाज़त मरहमत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत की सफ़र जिहाद फी सबिलिल्लाह है” उन्होंने अर्ज़ किया, हमें रह्बानियत इख़्तियार करने की इजाज़त दे दें। आप ﷺ ने फ़रमाया: “नमाज़ के इंतज़ार में मसाजिद में बैठना मेरी उम्मत की रह्बानियत है।" (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (2 / 370 ح 484) * فيه رشدين بن سعد عن ابن انعم (الافريقی) وهما ضعيفان ، واما قوله :’’ ان سياحة امتی الجهاد فی سبيل الله ‘‘ فصحيح ، رواه ابوداؤد (2486)

٧٢٥ - (صَحِيح) وَعَن عبد الرَّحْمَن بن عائش قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " رَأَيْتُ رَبِّيَ عَزَّ وَجَلَّ فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ قَالَ: فَبِمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الْأَعْلَى؟ قُلْتُ: أَنْتَ أَعْلَمُ قَالَ: فَوَضَعَ كَفَّهُ بَيْنَ كَتِفِيَّ فَوَجَدْتُ بَرْدَهَا بَيْنَ ثَدْيَيَّ فَعَلِمْتُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَتَلَا: (وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ ص:٢٢ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ من الموقنين)»» رَوَاهُ الدَّارِمِيّ مُرْسلا وللترمذي نَحوه عَنهُ

725. अब्दुल रहमान बिन आइश रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने ख्वाब में अपने रब अज्ज़वजल को बेहतरीन सूरत में देखा, उस ने फ़रमाया मुकर्रब फ़रिश्ते किसी चीज़ के बारे में बहस व मुबाहसा कर रहे हैं मैंने अर्ज़ किया: "तू बेहतर जानता है", आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने मेरे कंधो के दरमियान अपना हाथ रखा तो मैंने उसकी ठंडक अपने क़ल्ब व सदर में महसूस की और मैंने ज़मीन व आसमान की हर चीज़ जान ली”, और फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई: “और इसी तरह हमने इब्राहीम को आसमानों की और ज़मीन की बादशाहत दिखाई ताकि वह यकीन रखने वालों में से हो जाए”, दारमी ने मुरसल रिवायत किया और तिरमिज़ी में भी उन्हीं से इसी की मिस्ल है। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (2 / 126 ح 2155) و الترمذی (من حديث معاذ بن جبل رضی الله عنه : 3235 وقال : حسن) * عبد الرحمن بن عائش له صحبة ، رضی الله عنه

٧٢٦ - وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَمُعَاذِ بْنِ جبل وَزَادَ فِيهِ: قَالَ: يَا مُحَمَّدُ {هَلْ تَدْرِي فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلَأُ الْأَعْلَى؟ قُلْتُ: نَعَمْ فِي الْكَفَّارَاتِ. وَالْكَفَّارَاتُ: الْمُكْثُ فِي الْمَسَاجِدِ بَعْدَ الصَّلَوَاتِ وَالْمَشْيِ عَلَى الْأَقْدَامِ إِلَى الْجَمَاعَاتِ وَإِبْلَاغِ الْوَضُوءِ فِي الْمَكَارِهِ فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ عَاشَ بِخَيْرٍ وَمَاتَ بِخَيْرٍ وَكَانَ مِنْ خَطِيئَتِهِ كَيَوْمَ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ} إِذَا صَلَّيْتَ فَقُلِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ وَإِذَا أَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِي إِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُونٍ. قَالَ: وَالدَّرَجَاتُ: إِفْشَاءُ السَّلَامِ وَإِطْعَامُ الطَّعَامِ وَالصَّلَاةُ بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ. وَلَفْظُ هَذَا الْحَدِيثِ كَمَا فِي الْمَصَابِيحِ لَمْ أَجِدْهُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن إِلَّا فِي شرح السّنة.

726. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने उस में यह इज़ाफा किया है: “अल्लाह ने फ़रमाया: मुहम्मद ﷺ क्या आप जानते हैं कि मुकर्रब फ़रिश्ते किसी चीज़ के बारे में बहस व मुबाहसा कर रहे हैं?" मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! गुनाह ख़त्म करने वाले आमाल के बारे में बहस कर रहे हैं और गुनाह ख़त्म करने वाले आमाल यह हैं: नमाज़ों के बाद मस्जिद में बैठें रहना, बा जमाअत नमाज़ पढ़ने के लिए पैदल चल कर जाना और नागवारी के बावजूद खूब अच्छी तरह वुज़ू करना। पस जो यह करेगा वह बेहतर जिंदगी बसर करेगा और उसकी मौत भी अच्छी होगी और वह गुनाहों से ऐसे पाक हो जाएगा जैसे उसकी माँ ने इसे आज जन्म दिया हो और फ़रमाया "मुहम्मद जब आप नमाज़ से फारिग़ हो जाओ तो यह दुआ किया करो: ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक काम बजा लाने, बुरे काम छोड़ देने और मसाकिन से मुहब्बत करने की दरख्वास्त करता हूँ और जब तू अपने बंदों को किसी आज़माइश वा फितने से दो चार करने का इरादा फरमाए, तो मुझे उस से दो चार किए बगैर अपने तरफ उठा लेना”, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “बुलंदी दरजात वाले आमाल यह हैं, सलाम आम करना, खाना खिलाना और जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ना।”, और इस हदीस के अल्फाज़ जैसे के मसाबिह में हैं मैंने अब्दुल रहमान की सनद से शरहुल सुन्नाह में पाए हैं। (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (4 / 35 ، 37 ح 924 من حدیث عبد الرحمن بن عائش المصری رضی الله عنه) مصابیح السنة (1 / 290 ح 512) و رواه الترمذی (3234 ، 3235) و انظر الحدیث السابق (725)

٧٢٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي أَمَامَة الْبَاهِلِيّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «ثَلَاثَة كلهم ضَامِن ص:٢٢ على الله عز وَجل رَجُلٌ خَرَجَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ ضَامِن على الله حَتَّى يتوفاه فيدخله الْجنَّة أَو يردهُ بِمَا نَالَ من أجرأوغنيمة وَرَجُلٌ رَاحَ إِلَى الْمَسْجِدِ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى الله حَتَّى يتوفاه فيدخله الْجنَّة أَو يردهُ بِمَا نَالَ مِنْ أَجْرٍ وَغَنِيمَةٍ وَرَجُلٌ دَخَلَ بَيْتَهُ بِسَلَامٍ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

727. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन आदमियों की मुकम्मल हिफाज़त करना अल्लाह के जिम्मे है, वह आदमी जो अल्लाह की राह में जिहाद के लिए रवाना हो तो वह अल्लाह की हिफाज़त में है हत्ता कि अल्लाह इसे फौत कर के जन्नत में दाखिल फरमा दे, या इसे हासिल होने वाले अज्र या माले गनीमत के साथ वापस लौटा दे, वह आदमी जो मस्जिद की तरफ जाए तो वह भी अल्लाह की हिफाज़त में है और वह आदमी जो अपने घर में दाखिल होते वक़्त सलाम करता है वह भी अल्लाह की हिफाज़त में है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2494) [و صححه الحاکم 2 / 73 ، 74 و وافقه الذهبی]

٧٢٨ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «مَنْ خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ مُتَطَهِّرًا إِلَى صَلَاةٍ مَكْتُوبَة فَأَجره كَأَجر الْحَاج الْمُحْرِمِ وَمَنْ خَرَجَ إِلَى تَسْبِيحِ الضُّحَى لَا يُنْصِبُهُ إِلَّا إِيَّاهُ فَأَجْرُهُ كَأَجْرِ الْمُعْتَمِرِ وَصَلَاةٌ عَلَى إِثْرِ صَلَاةٍ لَا لَغْوَ بَيْنَهُمَا كِتَابٌ فِي عليين» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

728. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स बा वुज़ू होकर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए अपने घर से रवाना होता है तो उस का अजर इहराम बांध कर हज के लिए रवाना होने वाले के अजर की तरह है, और जो शख़्स सिर्फ नमाज़ चाश्त के लिए रवाना होता है उस के लिए उमरा करने वाले की मिस्ल अजर है, और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ इस तरह पढ़ना कि उन के दरमियान कोई लग्व बात न हो उस का अमल इल्लिय्यीन में लिख दिया जाता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 268 ح 22660) و ابوداؤد (558)

٧٢٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «إِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوا» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ؟ قَالَ: «الْمَسَاجِدُ» . قُلْتُ: وَمَا الرَّتْعُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالله أكبر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

729. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम जन्नत के बाग़ों के पास से गुज़रो तो कुछ खा पी लिया करो”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! जन्नत के बाग़ात क्या है? आप ने फ़रमाया: “मसाजिद!" पूछा गया अल्लाह के रसूल! खाने पीने से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: (سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالله أكبر) “ अल्लाह पाक है, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3509 وقال : غریب) * حمید المکی مجھول الحال ، و تکلم فیه البخاری وغیره و ضعفه راجح

٧٣٠ - (حَسَنٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَتَى الْمَسْجِدَ لِشَيْءٍ فَهُوَ حَظُّهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

730. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जिस चीज़ के लिए मस्जिद में जाता है वही उस का नसीब होगी (जो इसे आखिरत में मिलेगी”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (472) * عثمان بن ابی العاتکة ضعیف ضعفه الجمهور

٧٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْحُسَيْنِ عَنْ جَدَّتِهَا فَاطِمَةَ الْكُبْرَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ» وَإِذَا خَرَجَ صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ وَقَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَتِهِمَا

قَالَتْ: إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ وَكَذَا إِذَا خَرَجَ قَالَ: «بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ» بَدَلَ: صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَّمَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِمُتَّصِلٍ وَفَاطِمَةُ بِنْتُ الْحُسَيْنِ لَمْ تدْرك فَاطِمَة الْكُبْرَى

731. फ़ातिमा बिन्ते हुसैन रहिमहुल्लाह अपने दादी फातिमतुल कुबरा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करती हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: जब नबी ﷺ मस्जिद में दाखिल होते तो यह दुआ पढ़ते मुहम्मद ﷺ पर सलात व सलाम हो और फरमाते मेरे रब मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े खोल दे और जब आप मस्जिद से बाहर निकलते तो फरमाते मुहम्मद ﷺ पर सलात व सलाम हो और फरमाते: "मेरे रब मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिए फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे। तिरमिज़ी, अहमद इब्ने माजा और इन दोनों की रिवायत में है उन्होंने फ़रमाया: जब आप ﷺ मस्जिद में दाखिल होते और इसी तरह जब आप बाहर तशरीफ़ लाते तो " मुहम्मद पर सलात व सलाम हो" के बजाए: "अल्लाह के नाम से और रसूल अल्लाह पर सलाम हो", के अल्फाज़ पढ़ते थे। इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: उसकी सनद मुत्तसिल नहीं? फ़ातिमा बिन्ते हुसैन रहिमहुल्लाह की फतिमतुल कुबरा रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात साबित नहीं| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (314) و احمد (6 / 282 ح 26948) و ابن ماجه (771) * ليث بن ابی سليم ضعيف من جهة حفظه ، و مدلس و السند منقطع ، و حديث مسلم (713 ب)، (1652) يغنی عنه

٧٣٢ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ تَنَاشُدِ الْأَشْعَارِ فِي الْمَسْجِدِ وَعَنِ الْبَيْعِ وَالِاشْتِرَاءِ فِيهِ وَأَنْ يَتَحَلَّقَ النَّاسُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ قَبْلَ الصَّلَاةِ فِي الْمَسْجِدِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

732. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जिद में शेरगोइ, खरीद व फरोख्त और जुमा के रोज़ नमाज़ से पहले मस्जिद में हलक़े बना कर बैठने से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1079) و الترمذی (322 وقال : حديث حسن) [و ابن ماجه (749 ، 766 ، 1133) و النسائی (2 / 47 ، 48 ح 715) و محمد بن عجلان صرح بالسماع عند احمد (2 / 179 ، و اطراف المسند 4 / 32 ح 5171)]

٧٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا رَأَيْتُمْ مَنْ يَبِيعُ أَوْ يَبْتَاعُ فِي الْمَسْجِدِ فَقُولُوا: لَا أَرْبَحَ اللَّهُ تِجَارَتَكَ. وَإِذَا رَأَيْتُمْ مَنْ يَنْشُدُ فِيهِ ضَالَّةً فَقُولُوا: لَا رَدَّ اللَّهُ عَلَيْكَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

733. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद में खरीद व फरोख्त करते हुए देखो तो तुम कहो: अल्लाह तेरी तिजारत को नफ़ामंद न बनाए और जब तुम किसी शख़्स को उस में गुमशुदा जानवर का एलान करते हुए देखो तो तुम कहो: अल्लाह करे वह चीज़ तुम्हें न मिले"| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1321 وقال : حسن غريب) و الدارمی (1 / 326 ح 1408) [و صححه ابن خزيمة (1305) و ابن حبان (313) و الحاكم علی شرط مسلم (2 / 56)، (1260) و وافقه الذهبی ، و للحديث طريق آخر عند مسلم (568)]

٧٣٤ - (حسن) وَعَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُسْتَقَادَ فِي الْمَسْجِدِ وَأَنْ يُنْشَدَ فِيهِ الْأَشْعَارُ وَأَنْ تُقَامَ فِيهِ الْحُدُودُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ فِي ص:٢٢ سُنَنِهِ وَصَاحِبُ جَامِعِ الْأُصُولِ فِيهِ عَنْ حَكِيمٍ

734. हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जिद में किसास का मुतालबा करने, अशआर पढ़ने और हुदूद कायम करने से मना फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4490) و ذكره ابن الاثير فى جامع الاصول (3 / 346) * وفى سماع زفر بن وثيمة من حكيم بن حزام نظر ، [و لبعض الحديث شواهد ضعيفة عند ابن ماجه (2599) و غيره]

٧٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي المصابيح عَن جَابر

735. मसाबिह में जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، ذكر البغوى فى مصابيح السنة (1 / 297 ح 520) من حديث جابر رضى الله عنه من غير ان يعزو الى احد ، و اشار الترمذى الى حديث جابر : 322 و لم اجده من اخرجه) [و لبعض الحديث شواهد ضعيفة عند احمد (3 / 434) وغيرہو انظر الحديث السابق : 734]

٧٣٦ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاوِيَة بن قُرَّة عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ هَاتَيْنِ الشَّجَرَتَيْنِ يَعْنِي الْبَصَلَ وَالثُّومَ وَقَالَ: «مَنْ أَكَلَهُمَا فَلَا يَقْرَبَنَّ مَسْجِدنَا» . وَقَالَ: «إِن كُنْتُم لابد آكليهما فأميتوهما طبخا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

736. मुआविया बिन कुर्रत रहिमहुल्लाह अपने वालिद से बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इन दो पौधों यानी प्याज़ और लहसुन से मना किया और फ़रमाया: “जो उन्हें खाए वह हमारी मस्जिद में न आए”, और फ़रमाया: “अगर तुमने उन्हें ज़रूर ही खाना है तो फिर पका कर उनकी बू ज़ाइल कर दो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3827) [و النسائى فى الكبرىٰ (6681) و احمد (4 / 19)]

٧٣٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْأَرْضُ كُلُّهَا مَسْجِدٌ إِلَّا الْمَقْبَرَةَ وَالْحَمَّامَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ والدارمي

737. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कब्रिस्तान और हमाम के अलावा सारी ज़मीन मस्जिद है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (492) و الترمذى (317) و الدارمى (1 / 323 ح 1397) [و ابن ماجه (745) و صححه ابن حبان (338 ، 339) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 251) و وافقه الذهبى]

٧٣٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُصَلَّى فِي سَبْعَةِ مَوَاطِنَ: فِي الْمَزْبَلَةِ وَالْمَجْزَرَةِ

وَالْمَقْبَرَةِ وَقَارِعَةِ الطَّرِيقِ وَفِي الْحَمَّامِ وَفِي مَعَاطِنِ الْإِبِلِ وَفَوْقَ ظَهْرِ بَيْتِ اللَّهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

738. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सात जगहों कूड़े करकट के ढेर, जिबह खाना, कब्रिस्तान, शारा ए आम, हमाम, ऊँटों के बाड़े और बैतुल्लाह की छत पर नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذى (346) و ابن ماجه (746) * زيد بن جبيرة متروك و للحديث شاهد ضعيف عند ابن ماجه (747)

٧٣٩ - وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلُّوا فِي مَرَابِضِ ص:٢٣ الْغَنَمِ وَلَا تُصَلُّوا فِي أَعْطَانِ الْإِبِلِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

739. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बकरियों के बाड़े में नमाज़ पढ़ो लेकिन ऊटों के बाड़े में नमाज़ न पढ़ो”| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذى (348 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه (768) و صححه ابن خزيمة (795) و ابن حبان (336) و للحديث شواهد]

٧٤٠ - (حَسَنٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَائِرَاتِ الْقُبُورِ وَالْمُتَّخِذِينَ عَلَيْهَا الْمَسَاجِدَ وَالسُّرُجَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمذِيّ وَالنَّسَائِيّ

740. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ब्रो की ज़ियारत करने वाली औरतो पर और क़ब्रो को सजदागाह बनाने वालों और इन पर चराग़ाँ करने वालों पर लअनत फरमाई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3236) و الترمذى (320 وقال : حسن) و النسائى (4 95 ح 2045) [و ابن ماجه : 1575] * ابو صالح باذام مولى ام هانى ضعيف مدلس و حدث بهذا الحديث بعد ما كبر اى بعد ما اختلط

٧٤١ - (حسن) وَعَن أبي أَمَامَة قَالَ: إِنَّ حَبْرًا مِنَ الْيَهُودِ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْبِقَاعِ خَيْرٌ؟ فَسَكَتَ عَنْهُ وَقَالَ: «أَسْكُتُ حَتَّى يَجِيءَ جِبْرِيلُ» فَسَكَتَ وَجَاءَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَسَأَلَ فَقَالَ: مَا المسؤول عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ وَلَكِنْ أَسْأَلُ رَبِّيَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى. ثُمَّ قَالَ جِبْرِيلُ: يَا مُحَمَّدُ إِنِّي دَنَوْتُ مِنَ اللَّهِ دُنُوًّا مَا دَنَوْتُ مِنْهُ قَطّ. قَالَ: وَكَيفَ كَانَ ياجبريل؟ قَالَ: كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ حِجَابٍ مِنْ نُورٍ. فَقَالَ: شَرُّ الْبِقَاعِ أَسْوَاقُهَا وَخَيْرُ الْبِقَاع مساجدها

741. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी यहूदी आलिम ने नबी ﷺ से सवाल किया: कौन सा हिस्सा ज़मीन बेहतर है, आप ख़ामोश हो गए और फ़रमाया: “मैं जिब्राइल अलैहिस्सलाम के आने तक ख़ामोश रहूँगा”, आप ख़ामोश रहे और जिब्राइल अलैहिस्सलाम आए तो आप ﷺ ने दरियाफ्त किया तो उन्होंने कहा: इस बारे में सवाल करने वाला साइल से ज़्यादा नहीं जानता, लेकिन मैं अपने रब तबारक व तआला से दरियाफ्त करूँगा। फिर जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मुहम्मद ﷺ मैं अल्लाह के इतना करीब हुआ कि में उस से पहले कभी इतना करीब नहीं हुआ। आप ﷺ ने पूछा: “जिब्राइल वह क़रीब होना कैसे था ?” उन्होंने ने फ़रमाया:

मेरे और उस के माबैन नूर के सत्तर हज़ार पर्दे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: बदतरीन मक़ामात बाज़ार और बेहतरीन मक़ामात मसाजिद हैं| (इसका कोई असल नहीं)

لا اصل له بهذا اللفظ ، لم اجده عن ابی امامة رضی الله عنه* ولاصل الحديث شواهد عند ابن حبان (الموارد : 1599 عن ابن عمر) و الطبرانی فی كبير (2 / 128 ح 1545) و احمد (4 / 81 ح 16865) و الحاكم (2 / 7) من حديث جبير بن مطعم رضی الله عنه ، و الطبرانی فی الاوسط (7140) من حديث انس رضی الله عنه بالفاظ أخرى

بَاب الْمَسَاجِد ومواضع الصَّلَاة • मसाजिद और नमाज़ पढ़ने के मकामात का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٧٤٢ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ جَاءَ مَسْجِدِي هَذَا لم يَأْته إِلَّا لِخَيْرٍ يَتَعَلَّمُهُ أَوْ يُعَلِّمُهُ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَنْ جَاءَ لِغَيْرِ ذَلِكَ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ يَنْظُرُ إِلَى مَتَاعِ غَيْرِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

742. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स मेरी इस मस्जिद में महज़ कोई खैर व भलाई सीखने या सिखाने की गर्ज़ से आए तो वह अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले के मक़ाम व मर्तबा पर है और जो शख़्स उस के अलावा किसी और गर्ज़ से आए तो वह इस आदमी की तरह है जो किसी के माल पर नज़र रखता हो"| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (227) و البيهقی فی شعب الايمان (1698) [و صححه ابن حبان (الموارد : 81) و الحاكم (1 / 91) و وافقه الذهبی]

٧٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْحَسَنِ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَكُونُ حَدِيثُهُمْ فِي مَسَاجِدِهِمْ فِي أَمْرِ دُنْيَاهُمْ. فَلَا تُجَالِسُوهُمْ فَلَيْسَ لِلَّهِ فِيهِمْ حَاجَةٌ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

743. हसन बसरी से मुरसल रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लोगो पर एक ऐसा दौर आएगा कि उनकी मसाजिद में उनकी गुफ्तगू का मौज़ू उन के दुनियवी उमूर होंगे। पस तुम उन के साथ न बैठो। अल्लाह को उनकी कोई हाजत नहीं।" (ज़ईफ़,हसन)

ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (لم اجده) * و رواه الحاكم (4 / 323) وغيره باسناد موضوع عن سفيان الثوری عن عون بن ابی جحيفة عن الحسن بن ابی الحسن عن انس به نحو المعنى و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن حبان (311 فيه علل ، منها عنعنة الاعمش) وغيره

٧٤٤ - (صَحِيح) وَعَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: كُنْتُ نَائِمًا فِي الْمَسْجِدِ فحصبني ص:٢٣ رجل فَنَظَرت فَإِذا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ اذْهَبْ فَأْتِنِي بِهَذَيْنِ فَجِئْتُهُ بِهِمَا فَقَالَ: مِمَّنْ أَنْتُمَا أَوْ مِنْ أَيْنَ أَنْتُمَا قَالَا: مِنْ أَهْلِ الطَّائِفِ. قَالَ: لَوْ كُنْتُمَا مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ

لَأَوْجَعْتُكُمَا تَرْفَعَانِ أَصْوَاتَكُمَا فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

744. साइब बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मस्जिद में सोया हुआ था तो किसी आदमी ने मुझे कंकरी मारी। मैंने देखा तो वह उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु थे। उन्होंने ने फ़रमाया: जाओ और इन दोनों आदमियों को मेरे पास लाओ। मैं उन्हें उन के पास ले आया तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम किस कबिले से हो और कहाँ से हो? उन्होंने कहा: अहले ताईफ से। उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर तुम अहले मदीना से होते तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता। तुम रसूलुल्लाह ﷺ की मस्जिद में अपनी आवाज़े बुलंद करते हो। (बुखारी)

رواه البخاری (470)

٧٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَالك قَالَ: بَنَى عُمَرُ رَحَبَةً فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ تُسَمَّى الْبُطَيْحَاءَ وَقَالَ مَنْ كَانَ يُرِيدُ أَنَّ يَلْغَطَ أَوْ يُنْشِدَ شِعْرًا أَوْ يَرْفَعَ صَوْتَهُ فَلْيَخْرُجْ إِلَى هَذِهِ الرَّحَبَةِ. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأِ

745. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद के कोने में बुत्याहा नामी एक सहन तैयार किया और फ़रमाया: जो शख़्स फ़िज़ूल बातें करना चाहे या शेर पढ़ना चाहे या अपने आवाज़ बुलंद करना चाहे तो वह इस सहन की तरफ चला जाए| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه مالک فی الموطا (1 / 175 ح 424) * هذا من البغات و اسند عن سالم عن عمرو وهو منقطع ، و جاء فی الاستذکار (2 / 368) و شرح الزرقانی (424) و هم فی السند

٧٤٦ - (صَحِيح) وَعَن أنس: رَأَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُخَامَةً فِي الْقِبْلَةِ فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِ حَتَّى رُئِيَ فِي وَجهه فَقَامَ فحكه بِيَدِهِ فَقَالَ: «إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَامَ فِي صلَاته فَإِنَّمَا يُنَاجِي ربه أَو إِن رَبَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ فَلَا يَبْزُقَنَّ أَحَدُكُمْ قِبَلَ قِبْلَتِهِ وَلَكِنْ عَنْ يَسَارِهِ أَوْ تَحْتَ قَدَمِهِ» ثُمَّ أَخَذَ طَرَفَ رِدَائِهِ فَبَصَقَ فِيهِ ثُمَّ رَدَّ بَعْضَهُ عَلَى بَعْضٍ فَقَالَ: «أَوْ يفعل هَكَذَا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

746. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने किब्ले (की तरफ दिवार) में थूक देखा तो यह आप पर इस क़दर शाक गुज़रा कि उस के असरात आप के चेहरे पर नुमाया हो गए, पस आप खड़े हुए और अपने हाथ से इसे साफ़ किया, फिर फ़रमाया: “जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ता है तो वह अपने रब से हम कलाम होता है, क्योंकि उस का रब उसके और किबले के बीच में होता है। पस तुम में से कोई अपने किब्ले की तरफ न थूके बल्कि अपने बाएं तरफ या अपने पाँव के नीचे”, फिर आप ﷺ ने अपनी चादर का किनारा पकड़ा फिर उस में थूका और इस कपड़े को एक दूसरे के साथ मल दिया और फ़रमाया : ’या फिर वह इस तरह कर ले|' (बुखारी)

رواه البخاری (405)

٧٤٧ - (صَحِيح) وَعَن السَّائِب بن خَلاد - وَهُوَ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنْ رَجُلًا أَمَّ قَوْمًا فَبَصَقَ

فِي الْقِبْلَةِ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْظُرُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ فَرَغَ: «لَا يُصَلِّي لَكُمْ» . فَأَرَادَ بَعْدَ ذَلِك أَن يُصَلِّي لَهُم فمنعوه وَأَخْبرُوهُ بِقَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: نَعَمْ وَحَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ: «إِنَّكَ آذيت الله وَرَسُوله» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

747. साइब बिन खल्लाद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया: किसी आदमी ने कुछ लोगों की इमामत करायी तो उस ने किब्ले रुख थूक दिया, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ इसे देख रहे थे। जब वह नमाज़ से फारिग़ हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी कौम से फ़रमाया: “ये तुम्हें नमाज़ न पढ़ाए”, फिर उस के बाद उस ने नमाज़ पढ़ाना चाही तो उन्होंने इसे रोक दिया और इसे रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान से आगाह किया। जिस शख़्स ने आप से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "हाँ मैंने रोका है”, रावी बयान करते हैं, मेरा ख्याल है कि आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने अल्लाह और उस के रसूल को अज़ीयत पहुंचाई है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (481) [و صححه ابن حبان (334) وله شاهد من حديث ابن عمر رضى الله عنه]

٧٤٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: احْتَبَسَ عَنَّا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٢٣ ذَاتَ غَدَاة عَن صَلَاة الصُّبْح حَتَّى كدنا نتراءى عين الشَّمْس فَخرج سَرِيعا فثوب بِالصَّلَاةِ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَجَوَّزَ فِي صَلَاتِهِ فَلَمَّا سَلَّمَ دَعَا بِصَوْتِهِ فَقَالَ لَنَا عَلَى مَصَافِّكُمْ كَمَا أَنْتُمْ ثُمَّ انْفَتَلَ إِلَيْنَا ثُمَّ قَالَ أَمَا إِنِّي سَأُحَدِّثُكُمْ مَا حَبَسَنِي عَنْكُمُ الْغَدَاةَ إِنِّي قُمْتُ مِنَ اللَّيْلِ فَتَوَضَّأْتُ وَصَلَّيْتُ مَا قُدِّرَ لِي فَنَعَسْتُ فِي صَلَاتِي حَتَّى اسْتَثْقَلْتُ فَإِذَا أَنَا بِرَبِّي تَبَارَكَ وَتَعَالَى فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ قُلْتُ لَبَّيْكَ رَبِّ قَالَ فِيمَ يخْتَصم الْمَلأ الْأَعْلَى قلت لَا أَدْرِي رب قَالَهَا ثَلَاثًا قَالَ فَرَأَيْتُهُ وَضَعَ كَفَّهُ بَيْنَ كَتِفَيَّ حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ أَنَامِلِهِ بَيْنَ ثَدْيَيَّ فَتَجَلَّى لِي كُلُّ شَيْءٍ وَعَرَفْتُ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ قُلْتُ لَبَّيْكَ رَبِّ قَالَ فِيمَ يَخْتَصِمُ الْمَلأُ الْأَعْلَى قلت فِي الْكَفَّارَات قَالَ مَا هُنَّ قُلْتُ مَشْيُ الْأَقْدَامِ إِلَى الْجَمَاعَاتِ وَالْجُلُوسُ فِي الْمَسَاجِد بَعْدَ الصَّلَوَاتِ وَإِسْبَاغُ الْوَضُوءِ حِينَ الْكَرِيهَاتِ قَالَ ثُمَّ فِيمَ؟ قُلْتُ: فِي الدَّرَجَاتِ. قَالَ: وَمَا هن؟ إِطْعَام الطَّعَام ولين الْكَلَام وَالصَّلَاة وَالنَّاس نيام. ثمَّ قَالَ: سل قل اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ وَأَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي وَإِذَا أَرَدْتَ فِتْنَةً قوم فتوفني غير مفتون أَسأَلك حَبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَحْبُكُ وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُنِي إِلَى حبك ". فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهَا حَقٌّ فَادْرُسُوهَا ثُمَّ تَعَلَّمُوهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ وَسَأَلْتُ مُحَمَّد ابْن إِسْمَاعِيل عَن هَذَا الحَدِيث فَقَالَ: هَذَا حَدِيث صَحِيح

748. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ हमें नमाज़ ए फजर पढ़ाने के लिए तशरीफ़ न लाए। करीब था कि हम सूरज तुलुअ होने का मुशाहबा कर लेते। फिर आप बहुत तेज़ी से तशरीफ़ लाए, चुनांचे नमाज़ के लिए इकामत कही गई। रसूलुल्लाह ﷺ ने इख्तिसार के साथ नमाज़ पढ़ाई, पस जब आप ﷺ ने सलाम फेरा तो बा आवाज़े बुलंद फ़रमाया: “अपनी जगहों पर ऐसे ही बैठें रहो।” फिर आप ﷺ ने हमारी तरफ मुतवज्जे हो कर फ़रमाया: “मैं अभी तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हें नमाज़ पढ़ाने के लिए क्यों नहीं आया। मैं रात को बेदार हुआ, वुज़ू किया और जिस क़दर मुकद्दर में था मैंने नमाज़ पढ़ी। मुझे नमाज़ में ऊंघ आने लगी, हत्ता कि वह मुझ पर ग़ालिब गई। तब मैंने अपने रब तबारक व तआला को बेहतरीन सूरत में देखा चुनांचे उस ने फ़रमाया, "मुहम्मद" मैंने अर्ज़ किया: "मेरे रब हाज़िर हूँ।" फ़रमाया फ़रिश्ते किसी चीज़ के बारे में बहस व मुबाहसा कर रहे हैं, मैंने अर्ज़ किया: "मैं नहीं जानता ”, अल्लाह तआला ने तीन मर्तबा ऐसे फ़रमाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने इसे देखा के उस ने अपना हाथ मेरे कंधो के दरमियान रखा, हत्ता कि मैंने उसकी उंगलियों के पोरों की ठंडक अपने कल्ब व सदर में महसूस की और मेरे सामने हर चीज़ वाज़ेह हो गई और मैंने पहचान

ली। फिर रब तआला ने फ़रमाया: मुहम्मद मैंने अर्ज़ किया: मेरे रब में हाज़िर हूँ, फ़रमाया "मुकर्रब फ़रिश्ते किसी चीज़ के बारे में बहस व मुबाहसा कर रहे हैं", मैंने अर्ज़ किया: "गुनाह मिटा देने वाले आमाल के बारे में। फ़रमाया, वह क्या है? मैंने अर्ज़ किया: बा जमाअत नमाज़ पढ़ने के लिए चल कर जाना, नमाज़ के बाद मसाजिद में बैठें रहना, नागवारी के बावजूद अच्छी तरह वुज़ू करना। फ़रमाया, फिर वह किसी चीज़ के बारे में बहस कर रहे हैं? मैंने अर्ज़ किया: दरजात के बारे में। फ़रमाया वह क्या है, मैंने अर्ज़ किया: खाना खिलाना, नरमी से बात करना और जब लोग सो रहे हों नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ना। फ़रमाया कुछ मांग लें", आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! तुझ से नेक आमाल बजा लाने, बुरे काम छोड़ देने और मसाकीन से मुहब्बत करने की तौफिक मांगता हूँ और यह कि तू मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा और जब तू किसी कौम को फितने से दो चार करना चाहे तो मुझे उस में मुब्तिला किए बगैर फौत कर देना। मैं तुझ से तेरी मुहब्बत, तुझ से मुहब्बत करने वालों की मुहब्बत और ऐसे अमल की मुहब्बत का सवाल करता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत के करीब कर दे।" फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये ख्वाब हक़ है, पस इसे याद करो और फिर इसे दूसरों को बताओ।" अहमद; तिरमिज़ी। इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है और मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल (इमाम बुखारी) रहिमहुल्लाह से इस हदीस के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 243 ح 22465) و الترمذی (3235) [و نقل عن البخاری انه صححه]

٧٤٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ إِذا دخل الْمَسْجِد قَالَ: «أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ» قَالَ: «فَإِذَا قَالَ ذَلِكَ قَالَ الشَّيْطَان حفظ مني سَائِر الْيَوْم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

749. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में दाखिल होते तो यह दुआ किया करते: "मैं शैतान मरदूद से अल्लाह अज़ीम उसकी ज़ात करीम और उसकी क़दीम बादशाहत व कुदरत के ज़रिए पनाह चाहता हूँ" आप ﷺ ने फ़रमाया: "पस जब कोई शख़्स यह दुआ पढ़ता है तो शैतान कहता है, यह अब सारा दिन मुझ से महफ़ूज़ रहेगा"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (466)

٧٥٠ - (صَحِيح) وَعَن عَطاء بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «اللَّهُمَّ لَا تجْعَل قَبْرِي وثنا يعبد اشْتَدَّ غَضَبُ اللَّهِ عَلَى قَوْمٍ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائهمْ مَسَاجِد» . رَوَاهُ مَالك مُرْسلا

750. अता इब्ने यस्सार रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह मेरी कब्र को बुत न बनाना के उसकी पूजा की जाए अल्लाह उन लोगों पर सख्त नाराज़ हो जिन्होंने अंबिया अलैहिस्सलाम की क़बरो को सजदाह गाह बना लिया", इमाम मालिक ने इसे मुरसल रिवायत किया| (सहीह)

صحیح ، رواه مالک (1 / 172 ح 415) * هذا مرسل وله شواهد عند احمد (2 / 246) و غیره

٧٥١ - (لم تتمّ دراسته) (وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَحِبُّ الصَّلَاةَ فِي الْحِيطَانِ. قَالَ بَعْضُ رُوَاتِهِ يَعْنِي الْبَسَاتِينَ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ الْحَسَنِ بن أبي جَعْفَر وَقد ضعفه يحيى ابْن سعيد وَغَيره

751. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ बाग़ात में नफ्ल नमाज़ पढ़ना पसंद फ़रमाया करते थे”, इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ हसन बिन अबी जाफर के वास्ते से जानते हैं जबकि याह्या बिन सईद वगैरा ने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (334) * الحسن بن ابى جعفر : ضعيف

٧٥٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الرَّجُلِ فِي بَيْتِهِ بِصَلَاةٍ وَصَلَاتُهُ فِي مَسْجِدِ الْقَبَائِلِ بِخَمْسٍ وَعِشْرِينَ صَلَاةً وَصَلَاتُهُ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي يجمع فِيهِ بخمسمائة صَلَاةٍ وَصَلَاتُهُ فِي الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى بِخَمْسِينَ أَلْفِ صَلَاةٍ وَصَلَاتُهُ فِي مَسْجِدِي بِخَمْسِينَ أَلْفِ صَلَاةٍ وَصلَاته فِي الْمَسْجِد الْحَرَام بِمِائَة ألف صَلَاة» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

752. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी की अपने घर में पढ़ी हुई नमाज़ (सवाब के लिहाज़ से) एक नमाज़ है, उसकी इस मस्जिद में नमाज़ जिस में मुख्तलिफ कबिले नमाज़ पढ़ते है पच्चीस नमाज़ो की तरह है और जिस मस्जिद में जुमा होता हो उस में उसकी नमाज़ पांच सौ नमाज़ो की तरह है, मस्जिद ए अक्सा में उसकी नमाज़ पचास हज़ार नमाज़ो की तरह है, उसकी मेरी मस्जिद में पढ़ी गई नमाज़ पचास हज़ार नमाज़ो की तरह है और मस्जिद ए हराम में उसकी नमाज़ एक लाख नमाज़ो की तरह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1413) * ابو الخطاب الدمشقى : مجهول

٧٥٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ مَسْجِدٍ وُضِعَ فِي الْأَرْضِ أَوَّلُ؟ قَالَ: «الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ» قَالَ: قُلْتُ: ثُمَّ أَيْ؟ قَالَ: «ثُمَّ الْمَسْجِدُ الْأَقْصَى» . قُلْتُ: كَمْ بَيْنَهُمَا؟ قَالَ: «أَرْبَعُونَ عَامًا ثُمَّ الْأَرْضُ لَكَ مَسْجِدٌ فَحَيْثُمَا أَدْرَكَتْكَ الصَّلَاةُ فصل»

753. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! रुए ज़मीन पर सबसे पहले कौन सी मस्जिद? तामीर की गई आप ﷺ ने फ़रमाया: “मस्जिद हराम”, रावी कहते हैं मैंने अर्ज़ किया: फिर कौन सी मस्जिद? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मस्जिद अक्सा”, मैंने अर्ज़ किया: इन दोनों की तामीर के दरमियान कितना वक्फा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “चालीस साल फिर सारी ज़मीन तेरे लिए मस्जिद है, जहाँ नमाज़ का वक़्त हो जाए नमाज़ पढ़ लो |-‘‘| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (3366) و مسلم (2 / 520)، (1162)

بَاب السّتْر • सतर का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٧٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عمر بن أبي سَلمَة قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُشْتَمِلًا بِهِ فِي بَيْتِ أُمِّ سَلَمَةَ وَاضِعًا طَرَفَيْهِ عَلَى عَاتِقيهِ

754. उमर बिन अबी सलमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के घर एक कपड़े में लपटे हुए नमाज़ पढ़ते देखा आप ने इस कपड़े के दो किनारे अपने कंधो पर रखे हुए थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (355 ، 356) و مسلم (278 / 517)، (1152)

٧٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا يصلين أحدكُم فِي الثَّوْب الْوَاحِد لَيْسَ على عَاتِقيهِ مِنْهُ شَيْء»

755. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई शख़्स एक कपड़े में इस तरह नमाज़ न पढ़े के उस के कंधो पर कोई चीज़ न हो|"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (359) و مسلم (277 / 517)، (1151)

٧٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ صَلَّى فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ فليخالف بَين طَرفَيْهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

756. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स एक कपड़े में नमाज़ पढ़े तो वह उस के दोनों किनारों को एक दूसरे के मुखालिफ सिम्त कर ले (दाए किनारे को बाएँ कंधे पर और बाएँ किनारे को दाएँ कंधे पर)| (बुखारी)

رواه البخارى (360)

٧٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي خَمِيصَةٍ لَهَا أَعْلَامٌ فَنَظَرَ إِلَى أَعْلَامِهَا نَظْرَةً فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: «اذْهَبُوا بِخَمِيصَتِي هَذِهِ إِلَى أَبِي جَهْمٍ وَأْتُونِي بِأَنْبِجَانِيَّةِ أَبِي جهم فَإِنَّهَا ألهتني آنِفا عَن صَلَاتِي» ص:٢٣»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ قَالَ: " كُنْتُ أَنْظُرُ إِلَى علمهَا وَأَنا فِي الصَّلَاة فَأَخَاف أَن يفتنني

757. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूल अल्लाह ने एक मन्कश चादर में नमाज़ पढ़ी, आप ने उस के नक्श व निगार को देखा, आप ﷺ जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “मेरी यह चादर अबू जहम के पास ले जाओ और अबू जहम की नक्श व निगार की बगैर चादर ले आओ, इस ने तो मेरी नमाज़ में खलल डाल दिया था”, बुखारी, मुस्लिम और बुखारी की एक रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उस के नक्श व निगार देख रहा था जबकि मैं नमाज़ में था मुझे अंदेशा हुआ की यह मुझे किसी फितने का शिकार न कर दे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (373) و مسلم (62 / 556)، (1239)

٧٥٨ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: كَانَ قِرَامٌ لِعَائِشَةَ سَتَرَتْ بِهِ جَانِبَ بَيْتِهَا فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمِيطِي عَنَّا قِرَامَكِ هَذَا فَإِنَّهُ لَا يَزَالُ تَصَاوِيرُهُ تَعْرِضُ لِي فِي صَلَاتِي» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

758. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास एक परदा था जिसके साथ उन्होंने अपने घर की एक जानिब को ढांप रखा था, नबी ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अपने इस परदे को इससे दूर कर दे, क्योंकि उसकी तसाविर मेरी नमाज़ में मुसलसल मेरे सामने आती रही| (बुखारी)

رواه البخاری (374)

٧٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: أَهْدِيَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرُّوجَ حَرِيرٍ فَلَبِسَهُ ثُمَّ صَلَّى فِيهِ ثُمَّ انْصَرَفَ فَنَزَعَهُ نَزْعًا شَدِيدًا كَالْكَارِهِ لَهُ ثمَّ قَالَ: " لَا يَنْبَغِي هَذَا لِلْمُتقين

759. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को एक रेशमी कोट तोहफे में दिया गया तो आप ने इसे पहन कर नमाज़ पढ़ी, फिर नमाज़ से फारिग़ हो कर सख्त ना पसंदगी के आलम में उसे उतार दिया और फ़रमाया: “ये मुत्तकी लोगों के शियाए शान नहीं| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (375) و مسلم (23 / 2075)، (5427)

بَاب السّتْر • सतर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٧٦٠ - (حسن) عَن سَلمَة بن الْأَكْوَع قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي رَجُلٌ أَصِيدُ أَفَأُصَلِّي فِي الْقَمِيصِ الْوَاحِدِ؟ قَالَ: نَعَمْ وَازْرُرْهُ وَلَوْ بِشَوْكَةٍ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى النَّسَائِيّ نَحوه

760. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं शिकारी आदमी हूँ, क्या मैं एक कमीज़ में नमाज़ पढ़ लिया करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ टांक लिया करो चाहे काँटों का इस्तेमाल कर लो| अबू दावुद, इमाम नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (632) و النسائی (2 / 70 ح 766) [و صححه ابن خزیمة (777 ، 778) و ابن حبان (الاحسان : 2291) و الحاکم (1 / 250) و وافقه الذهبی و اعله البخاری فی صحیحه (فتح : 1 / 465 قبل ح 351]

٧٦١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: بَيْنَمَا رَجُلٌ يُصَلِّي مسبلا إِزَارِهِ قَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اذْهَبْ فَتَوَضَّأ» فَذهب وَتَوَضَّأَ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَكَ أَمَرْتَهُ أَنْ يَتَوَضَّأَ؟ قَالَ: «إِنَّهُ كَانَ يُصَلِّي وَهُوَ مُسْبِلٌ إِزَارَهُ وَإِنَّ اللَّهَ ص:٢٣ تَعَالَى لَا يَقْبَلُ صَلَاةَ رَجُلٍ مُسْبِلٍ إِزَارَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

761. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी अपना तहबंद लटकाए नमाज़ पढ़ रहा था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “जाओ वुज़ू करो”, वह गया और वुज़ू कर के फिर हाज़िर हुआ तो किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने इसे वुज़ू करने का हुक्म क्यों फ़रमाया? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो अपना तहबंद लटकाए हुए नमाज़ पढ़ रहा था, जबकि अल्लाह तहबंद लटका कर नमाज़ पढ़ने वाले शख़्स की नमाज़ कबूल नहीं फरमाता”| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (638) [و صححه ابن حبان (2406) و رواه البیھقی (2 / 242) عن رجل من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم نحوہ و سندہ حسن لذاته و خطا من ضعفه] * فیه ابو جعفر المدنی الموذن و ثقه الجمھور و حدثه لا ینزل عن ردجة الحسن

٧٦٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقْبَلُ صَلَاةُ حَائِضٍ إِلَّا بِخِمَارٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

762. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी बालिगा औरत की नंगे सर नमाज़ कबूल नहीं होती| (सहीह,मुस्लिम)

صحیح ، رواه ابوداؤد (641) و الترمذی (377 وقال : حسن) [و صححه ابن خزیمة (775) و ابن حبان (الاحسان : 1708 ، 1709) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 251) و وافقه الذھبی]

٧٦٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتُصَلِّي الْمَرْأَةُ فِي درع وخمار لَيْسَ عَلَيْهَا إِزَارٌ؟ قَالَ: «إِذَا كَانَ الدِّرْعُ سَابِغًا يُغَطِّي ظُهُورَ قَدَمَيْهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَذَكَرَ جمَاعَة وَقَفُوهُ على أم سَلمَة

763. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया क्या औरत तहबंद के बगैर सिर्फ कमीज़ और दुपट्टे में नमाज़ पढ़ सकती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ जब कमीज़ इस क़दर कामिल(सर्वोत्तम) और कुशादा हो के वह उस के पाँव ढांपती हो| अबू दावुद, और उन्होंने रावियो की एक

जमाअत का ज़िक्र किया, उन्होंने इस हदीस को उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा पर मौकूफ करार दिया है| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (640) [و صححه الحاكم على شرط البخارى (1 / 250) واختلف قول الذهبى فيه] * ام محمد بن زيد مجهولة الحال و ثقها الحاكم وحده

٧٦٤ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَهَى عَنِ السَّدْلِ فِي الصَّلَاةِ وَأَنْ يُغَطِّيَ الرَّجُلُ فَاهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

764. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने दौरान ए नमाज़ गले में कपड़ा लटकाने और मुंह ढांपने से मना फ़रमाया| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (643) و الترمذى (378) * فيه الحسن بن ذكوان مدلس و عنعن و فى السند الثانى : عسل بن سفيان ضعيفانوار الصحيفه (د 643)

٧٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَالِفُوا الْيَهُودَ فَإِنَّهُمْ لَا يُصَلُّونَ فِي نِعَالِهِمْ وَلَا خِفَافِهِمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

765. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: यहूदियों की मुखालिफत करो क्योंकि वह अपने जूतो और मोज़ो में नमाज़ नहीं पढ़ते| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (652) [و صححه ابن حبان (357) و الحاكم (1 / 260) و وافقه الذهبى]

٧٦٦ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يُصَلِّي ص:٢٣ بِأَصْحَابِهِ إِذْ خلع نَعْلَيْه فَوَضَعَهُمَا عَنْ يَسَارِهِ فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ الْقَوْمُ أَلْقَوْا نِعَالَهُمْ فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاتَهُ قَالَ: «مَا حَمَلَكُمْ على إلقائكم نعالكم؟» قَالُوا: رَأَيْنَاك ألقيت نعليك فَأَلْقَيْنَا نِعَالَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ جِبْرِيلَ أَتَانِي فَأَخْبَرَنِي أَنَّ فيهمَا قذرا إِذا جَاءَ أحدكُم إِلَى الْمَسْجِدَ فَلْيَنْظُرْ فَإِنْ رَأَى فِي نَعْلَيْهِ قَذَرًا أَو أَذَى فَلْيَمْسَحْهُ وَلِيُصَلِّ فِيهِمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

766. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस दौरान के रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा को नमाज़ पढ़ा रहे थे की आप ﷺ ने अचानक अपने जूते उतार कर अपने बाएँ तरफ रख दिए, जब सहाबा ने यह देखा तो उन्होंने भी अपने जूते उतार दिए, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया: “तुम्हें किसी चीज़ ने जूते उतारने पर अमादा किया ?” उन्होंने अर्ज़ किया, हमने आप ﷺ को जूते उतारते हुए देखा तो हमने भी उतार दिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिब्राइल मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने मुझे बताया की उनमें नजासत

है, जब तुम में से कोई मस्जिद में आए तो वह देखे अगर वह अपने जूतो में नजासत देखे तो वह इसे साफ़ करे फिर उनमें नमाज़ पढ़ ले| (सहीह,मुस्लिम)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (650) و الدارمى (1 / 320 ح 1385) [و صححه ابن خزيمة (1017) و ابن حبان (360) و الحاكم على شرط مسلم (1 / 260) و وافقه الذهبى]

٧٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلَا يَضَعْ نَعْلَيْهِ عَنْ يَمِينِهِ وَلَا عَنْ يَسَارِهِ فَتَكُونَ عَنْ يَمِينِ غَيْرِهِ إِلَّا أَنْ لَا يَكُونَ عَنْ يسَاره أحد وليضعهما بَيْنَ رِجْلَيْهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «أَوْ لِيُصَلِّ فِيهِمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ مَعْنَاهُ

767. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो वह अपने जूते अपने दाएँ तरफ न रखे न बाएँ तरफ क्योंकि उसकी बाएँ जानिब किसी दूसरे शख़्स की दाएँ जानिब होगी, वहां अगर उस के बाएँ तरफ कोई न हो तो फिर बाएँ तरफ रख ले वरना उन्हें अपने पाँव के दरमियान रखे"| अबू दावुद इब्ने माजा ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (654) و ابن ماجه (1432) [و صححه ابن خزيمة (1016) و ابن حبان (361) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 259) و وافقه الذهبى]

بَاب السّتْر • सतर का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٧٦٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَيْتُهُ يُصَلِّي عَلَى حَصِيرٍ يَسْجُدُ عَلَيْهِ. قَالَ: وَرَأَيْتُهُ يُصَلِّي فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ مُتَوَشِّحًا بِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

768. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप को चटाई पर नमाज़ पढ़ते और उस पर सजदाह करते हुए देखा और उन्होंने बयान किया के मैंने आप को एक कपड़े में इस तरह नमाज़ पढ़ते हुए देखा के आप ने अपने जिस्म को एक कपड़े में ढांप रखा था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (284 / 519)، (1159)

٧٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ ص:٢٤ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي حافيا ومتنعلا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

769. अम्र बिन शुऐब रहिमहुल्लाह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने

रसूलुल्लाह ﷺ को कभी नंगे पाँव और कभी जूतो में नमाज़ पढ़ते हुए देखा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (653) [و ابن ماجه : 1038]

٧٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: صَلَّى جَابِرٌ فِي إِزَارٍ قَدْ عَقَدَهُ مِنْ قِبَلِ قَفَاهُ وثيابه مَوْضُوعَة على المشجب قَالَ لَهُ قَائِلٌ تُصَلِّي فِي إِزَارٍ وَاحِدٍ فَقَالَ إِنَّمَا صَنَعْتُ ذَلِكَ لِيَرَانِيَ أَحْمَقُ مِثْلُكَ وَأَيُّنَا كَانَ لَهُ ثَوْبَانِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

770. मुहम्मद बिन मुन्कदिर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने एक तहबंद में इस तरह नमाज़ पढ़ी के उन्होंने इसे गर्दन की तरफ बांधा हुआ था, जबकि उन के कपड़े मिश्जब घरोंची पर रखे हुए थे, किसी ने उन से कहा: आप एक कपड़े में नमाज़ पढ़ रहे हैं उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने यह महज इसलिए किया है ताकि आप जैसे अहमक शख़्स मुझे देख ले रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में हम में से कौन शख़्स था जिसके पास दो कपड़े होते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (352)

٧٧١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: الصَّلَاةُ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ سُنَّةٌ كُنَّا نَفْعَلُهُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا يُعَابُ عَلَيْنَا. فَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: إِنَّمَا كَانَ ذَاكَ إِذْ كَانَ فِي الثِّيَاب قلَّة فَأَما إِذْ وَسَّعَ اللَّهُ فَالصَّلَاةُ فِي الثَّوْبَيْنِ أَزْكَى. رَوَاهُ أَحْمد

771. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक कपड़े में नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, हम रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी में ऐसा किया करते थे और हमें मना नहीं किया जाता था, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: यह तब था जब कपड़ो की किल्लत थी, पस जब अल्लाह फराखी अता फरमादे तो फिर दो कपड़ो में नमाज़ पढ़ना बेहतर व अफज़ल है| (सहीह)

صحيح ، رواه [عبدالله بن] احمد (5 / 141 ح 21599) * حدث به الجريرى قبل اختلاطه و للحديث شاهد عند ابى داود (635) و غيره

بَاب السِتْرَة • सूतरे का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٧٧٢ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْدُو إِلَى الْمُصَلَّى وَالْعَنَزَةُ بَيْنَ يَدَيْهِ تُحْمَلُ وَتُنْصَبُ بِالْمُصَلَّى بَيْنَ يَدَيْهِ فَيصَلي إِلَيْهَا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

772. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ सुबह के वक़्त ईदगाह की तरफ जाते, एक छोटा नैज़ा आप के आगे आगे उठा कर ले जाया जाता और इसे ईदगाह में आप के सामने गाड़ दिया जाता, फिर आप उसकी तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़ते| (बुखारी)

رواه البخاری (973)

٧٧٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ وَهُوَ بِالْأَبْطَحِ فِي قُبَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ وَرَأَيْتُ بِلَالًا أَخَذَ وَضُوءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَأَيْتُ النَّاسَ يبتدرون ذَاك الْوَضُوءَ فَمَنْ أَصَابَ مِنْهُ شَيْئًا تَمَسَّحَ بِهِ وَمن لم يصب مِنْهُ شَيْئا أَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهِ ثُمَّ رَأَيْتُ بِلَالًا أَخَذَ عَنَزَةً فَرَكَزَهَا وَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مُشَمِّرًا صَلَّى إِلَى الْعَنَزَةِ بِالنَّاسِ رَكْعَتَيْنِ وَرَأَيْت النَّاس وَالدَّوَاب يَمرونَ من بَين يَدي العنزة

773. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मक्का में देखा जबकि आप वादी बतहा में चमड़े के एक सुर्ख खैमे में थे, और मैंने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को देखा के वह रसूलुल्लाह ﷺ के वुज़ू का पानी लिए खड़े है, और मैंने लोगों को देखा के वह वुज़ू के इस पानी को हासिल करने के लिए एक दूसरे पर सबकत ले जाने की कोशिश कर रहे हैं, चुनांचे जिसे तो उस में से कुछ मिल जाता है उसे अपने जिस्म पर मल लेता है, और जिसे उस में से कुछ न मिलता तो वह अपने साथी के हाथ की नमी हासिल कर लेता, फिर मैंने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को देखा के उन्होंने छोटा नैज़ा लेकर गाड़ दिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ सुर्ख जोड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) किए हुए तेज़ी से तशरीफ़ लाए, आप ने छोटे नेज़े की तरफ रुख कर के लोगों को दो रकते पढ़ाइ और मैंने लोगों और चोपायो को आप के आगे से गुज़रते हुए देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (376 ، 633) و مسلم (249 / 503)، (1119)

٧٧٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعَرِّضُ رَاحِلَتَهُ ص:٢٤ فَيصَلي إِلَيْهَا. وَزَادَ الْبُخَارِيُّ قُلْتُ: أَفَرَأَيْتَ إِذَا هَبَّتِ الرِّكَابُ. قَالَ: كَانَ يَأْخُذُ الرَّحْلَ فَيُعَدِّلُهُ فَيُصَلِّي إِلَى آخرته

774. नाफेअ इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ अपने सवारी बेठा दिया करते और फिर उसकी तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़ा करते थे| बुखारी, मुस्लिम # और इमाम बुखारी ने यह इज़ाफा नकल किया है रावी बयान करते हैं, मैंने कहा: जब ऊंट चरने के लिए जाते थे (तो फिर क्या करते थे ?) उन्होंने कहा: वह पालान व कजावा पकड़ते और इसे सामने रख कर उस के आखिरी हिस्सा की तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़ लिया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (507) و مسلم (247 / 502)، (1117)

٧٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا وَضَعَ أَحَدُكُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ مِثْلَ مُؤْخِرَةِ الرَّحْلِ فَلْيصل وَلَا يبال من مر وَرَاء ذَلِك» . رَوَاهُ مُسلم

775. तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स पालान की पिछली लकड़ी के बराबर कोई चीज़ अपने आगे रख ले तो वह नमाज़ पढ़े और जो उस से पर गुज़रे उसकी कोई परवाह न करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (241 / 499)، (1111)

٧٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي جهيم قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّي مَاذَا عَلَيْهِ لَكَانَ أَنْ يَقِفَ أَرْبَعِينَ خَيْرًا لَهُ مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ» . قَالَ أَبُو النَّضر: لَا أَدْرِي قَالَ: «أَرْبَعِينَ يَوْمًا أَوْ شَهْرًا أَو سنة»

776. अबिल जुह्मी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले शख़्स को पता चल जाए के इसे कितना गुनाह या नुकसान होगा तो उस के लिए उस के आगे से गुज़रने से चालीस तक खड़े रहना बेहतर होता”| अबू नज़र ने फ़रमाया: मैं नहीं जानता के आप ﷺ ने चालीस दिन या माह या चालीस साल फरमाया| | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (510) و مسلم (261 / 507)، (1132)

٧٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى شَيْءٍ يَسْتُرُهُ مِنَ النَّاسِ فَأَرَادَ أَحَدٌ أَنْ يَجْتَازَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلْيَدْفَعْهُ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ» . هَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ وَلمُسلم مَعْنَاهُ

777. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी चीज़ की तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़े, जो इसे लोगों से छिपा रही हो यानी किसी चीज़ को सुतरह बना कर नमाज़ पढ़े और फिर भी कोई शख़्स उस के आगे से गुज़रना चाहे तो वह इसे रोके, लेकिन अगर वह बाज़ न आए तो फिर वह उस से लड़े क्योंकि वह शैतान है”| यह बुखारी के अल्फाज़ है और मुस्लिम के अल्फाज़ भी इसी मानी में है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (509) و مسلم (259 / 505)، (1129)

٧٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَقْطَعُ الصَّلَاةَ الْمَرْأَةُ وَالْحِمَارُ وَالْكَلْبُ. وَيَقِي ذَلِك مثل مؤخرة الرحل» . رَوَاهُ مُسلم

778. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत, गधा और कुत्ता नमाज़ी के आगे से गुज़र कर नमाज़ तोड़ देते है, जबकि पालान की आखिरी लकड़ी की मिस्ल कोई चीज़ उस से बचाती है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (266 / 511)، (1139)

٧٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَأَنَا مُعْتَرِضَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ كَاعْتِرَاضِ الْجَنَازَةِ

779. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ा करते थे जबकि मैं आप के और किबले के दरमियान इस तरह लेटी होती थी जिस तरह इमाम के आगे जनाज़ा रखा होता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (383 ، 384) و مسلم (267 / 512)، (1140)

٧٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَقْبَلْتُ رَاكِبًا عَلَى أَتَانٍ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ قَدْ نَاهَزْتُ الِاحْتِلَامَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي بِالنَّاسِ بِمِنًى إِلَى غَيْرِ جِدَارٍ فَمَرَرْتُ بَين يَدي الصَّفّ فَنزلت فَأرْسلت الْأَتَانَ تَرْتَعُ وَدَخَلْتُ فِي الصَّفِّ فَلَمْ يُنْكِرْ ذَلِك عَليّ أحد

780. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं एक दिन गधे पर सवार हो कर आया, मैं इन दिनों करिबुल बुलुग था, जबकि रसूल अल्लाह इस वक़्त किसी दिवार की ओट लिए बगैर मीना में नमाज़ पढ़ा रहे थे, पस मैं एक सफ के आगे से गुज़रा फिर मैं गधे से उतरा और इसे चरने के लिए छोड़ दिया, और खुद सफ में शामिल हो गया और किसी ने भी मुझ पर एतराज़ न किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (493) و مسلم (254 / 504)، (1124)

सूतरे का बयान • بَاب السُتْرَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٧٨١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَجْعَلْ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ شَيْئًا فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيَنْصِبْ عَصَاهُ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ عَصَى فَلْيَخْطُطْ خَطًّا ثُمَّ لَا يَضُرُّهُ مَا مَرَّ أَمَامه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

781. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो वह अपने सामने कोई चीज़ रख ले अगर कोई चीज़ न पाए तो फिर अपने लाठी गाड़ ले, और अगर उस के पास लाठी भी न हो तो फिर एक लकीर खींच ले फिर उस के आग इसे जो भी गुज़र जाए वह उस के लिए मुज़िर नहीं होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (689) و ابن ماجه (943) * هذا الحديث ضعيفه سفيان بن عيينة و الداقطنى و الجمهور وهو الصواب

٧٨٢ - (صَحِيح) وَعَن سهل بن أبي حثْمَة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى سُتْرَةٍ فَلْيَدْنُ مِنْهَا لَا يَقْطَعِ الشَّيْطَانُ عَلَيْهِ صَلَاتَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

782. सहल बिन अबी हशम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स सुतरह की तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़े तो वह उस के करीब हो जाए ताकि शैतान उसकी नमाज़ कतअ न कर सके”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (695) [و النسائی (2 / 62 ح 749) و صححه ابن خزيمة (803) و ابن حبان (409) و الحاکم علی شرط الشيخين (1 / 251 ، 252) و وافقه الذهبی]

٧٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْأَسْوَدِ قَالَ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي إِلَى عُودٍ وَلَا عَمُودٍ وَلَا شَجَرَةٍ إِلَّا جَعَلَهُ عَلَى حَاجِبِهِ الْأَيْمَنِ أَوِ الْأَيْسَرِ وَلَا يصمد لَهُ صمدا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

783. मिकदाद बिन असवद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को जब भी किसी लकड़ी सुतून और दरख्त की तरफ रुख कर के नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आप इसे अपने दाएँ या बाएँ अबरो के सामने करते थे और आप उस के बिलकुल सामने खड़े नहीं होते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (693) * ضباعة لاتعرف و المهلب : مجهول ، و الوليد بن کامل لين الحديث

٧٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِي بَادِيَةٍ لَنَا وَمَعَهُ عَبَّاسٌ فَصَلَّى فِي صَحْرَاءَ لَيْسَ بَيْنَ يَدَيْهِ سُتْرَةٌ وَحِمَارَةٌ لَنَا وَكَلْبَةٌ تعبثان بَين يَدَيْهِ فَمَا بالى ذَلِك. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وللنسائي نَحوه

784. फ़ज़ल बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम जंगल में थे के रसूलुल्लाह ﷺ अब्बास रदियल्लाहु अन्हु की साथ में हमारे पास तशरीफ़ लाए आप ने सुतरह के बगैर सहरा में नमाज़ अदा की, जबकि हमारी गधे और कुतिया आप के आगे खेल रही थी आप ने इसे कोई अहमियत न दिया| अबू दावुद, नसई की रिवायत भी इसी तरह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (718) و النسائی (2 / 65 ح 754) * عباس بن عبيدالله لم يدرک عمه الفضل بن عباس رضی الله عنه فالسند منقطع

٧٨٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَقْطَعُ الصَّلَاةَ شَيْء وادرؤوا مَا اسْتَطَعْتُمْ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

785. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई चीज़ नमाज़ को नहीं तोड़ती, पस मक्दोर भर इसे रोको क्योंकि वह गुजरने वाला शैतान है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (719) [و للحديث شاهد قوی عند الدارقطنی (1 / 367)]



सूतरे का बयान — بَاب السترَة •

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث •

٧٨٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عَائِشَة قَالَتْ: كُنْتُ أَنَامُ بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرِجْلَايَ فِي قِبْلَتِهِ فَإِذَا سَجَدَ غَمَزَنِي فَقَبَضْتُ رِجْلِيَ وَإِذَا قَامَ بَسَطْتُهُمَا قَالَتْ: وَالْبُيُوتُ يَوْمَئِذٍ لَيْسَ فِيهَا مَصَابِيحُ

786. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के आगे सो जाया करती थी, जबकि मेरे पाँव आप ﷺ के सजदाह की जगह पर होते थे, जब आप सजदाह करते तो आप मुझे हाथ से दबा देते तो मैं अपने पाँव समेट लेती और जब आप ﷺ खड़े हो जाते तो मैं उन्हें फैला देती उन्होंने बताया उन दिनों घरो में चिराग नहीं हुआ करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (513) و مسلم (272 / 512)، (1145)

٧٨٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ يَعْلَمُ أَحَدُكُمْ مَا لَهُ فِي أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْ أَخِيهِ مُعْتَرِضًا فِي الصَّلَاةِ كَانَ لَأَنْ يُقِيمَ مِائَةَ عَامٍ خَيْرٌ لَهُ مِنَ الْخُطْوَةِ الَّتِي خَطَا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

787. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम में किसी को नमाज़ में मशगुल अपने भाई के आगे से गुज़रने का गुनाह मालुम हो तो उस के लिए सौ बरस खड़े रहना एक कदम उठाने से बेहतर होता| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابن ماجہ (946) * عبید اللہ بن عبد الرحمن بن موھب : و ثقہ الجمھور و عمہ حسن الحدیث

٧٨٨ - (مَوْقُوف) وَعَنْ كَعْبِ الْأَحْبَارِ قَالَ: لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّي مَاذَا عَلَيْهِ لَكَانَ أَنْ يُخْسَفَ بِهِ خَيْرًا مِنْ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: أَهْوَنَ عَلَيْهِ. رَوَاهُ مَالِكٌ

788. काब अह्बार रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को पता चल जाता के इसे उस पर कितना गुनाह मिलेगा तो वह समझता के इसे धंसा दीया जाना तो यह उस के लिए उस के आगे से गुज़रने से बेहतर होता और एक रिवायत में है उस पर आसान होता| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ مالک (1 / 155 ح 363) * زید بن اسلم بری من التدلیس کما حققتہ فی الفتح المبین تحقیق کتاب المدلسین لابن حجر (ص 23 ت 11 / 1) * قولہ :'' علیہ '' لم اجدہ و اللہ اعلم

٧٨٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ إِلَى غَيْرِ السُّتْرَةِ فَإِنَّهُ يَقْطَعُ صَلَاتَهُ الْحِمَارُ وَالْخِنْزِيرُ وَالْيَهُودِيُّ وَالْمَجُوسِيُّ وَالْمَرْأَةُ وَتُجْزِئُ عَنْهُ إِذَا مَرُّوا بَيْنَ يَدَيْهِ عَلَى قَذْفَةٍ بِحَجَرٍ»

. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

789. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स सुतरह के बगैर नमाज़ पढ़े तो गधा, खिंजिर, यहूदी, मजूसी और औरत गुज़र कर उसकी नमाज़ तोड़ देते हैं और अगर वह पत्थर फ़ेकने के फासले के बराबर उस के आगे से गुज़र जाए तो फिर उसकी नमाज़ हो जाएगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (704) * شک الراوی فی اتصاله بقوله : احسبه

بَاب صفة الصَّلَاة • नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٧٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا دَخَلَ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «وَعَلَيْك السَّلَام ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّك لَمْ تُصَلِّ» . فَرَجَعَ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ فَقَالَ: «وَعَلَيْكَ السَّلَامُ ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ» فَقَالَ فِي الثَّالِثَةِ أَوْ فِي الَّتِي بَعْدَهَا عَلِّمْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: «إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ فَأَسْبِغِ الْوُضُوءَ ثُمَّ اسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ فَكَبِّرْ ثُمَّ اقْرَأْ بِمَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَسْتَوِيَ قَائِمًا ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَسْتَوِيَ قَائِمًا ثمَّ افْعَل ذَلِك فِي صَلَاتك كلهَا»

790. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी मस्जिद में आया, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद के एक जानिब तशरीफ़ फरमा थे, पस उस ने नमाज़ पढ़ी फिर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर सलाम अर्ज़ किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे सलाम का जवाब दे कर फ़रमाया: “वापिस जा कर नमाज़ पढ़ो, क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह गया और नमाज़ दोहराई, फिर आकर सलाम अर्ज़ किया, तो आप ﷺ ने सलाम का जवाब दे कर फ़रमाया: “वापिस जा कर नमाज़ पढ़ो, क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी”, पस तीसरी या चोथी मर्तबा उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ﷺ !मुझे सिखा दें आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम नमाज़ पढ़ने का क़सद करे तो खूब अच्छी तरह वुज़ू करो, फिर किबले रुख खड़े हो कर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो, फिर जिस क़दर कुरान तुम्हें याद हो पढ़ो, फिर इत्मिनान के साथ रुकू करो, फिर सीधे खड़े हो जाओ, फिर इत्मिनान के साथ सजदाह करो, फिर उठो हत्ता कि इत्मिनान के साथ बैठ जाओ, फिर इत्मिनान के साथ सजदाह करो, फिर उठो हत्ता कि इत्मिनान के साथ बैठ जाओ”, और एक दूसरी रिवायत में है: “फिर उठो हत्ता कि तुम इत्मिनान के साथ खड़े हो जाओ फिर अपने तमाम फ़र्ज़ व नफ्ल नमाज़ो में ऐसे ही किया करो|”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (757) و مسلم (45 / 397)، (885)

٧٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَفْتِحُ الصَّلَاةَ بِالتَّكْبِيرِ وَالْقِرَاءَةِ بِ (الْحَمْدُ لِلَّهِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ)»» وَكَانَ إِذَا رَكَعَ لَمْ يُشْخِصْ ص:٢٤ رَأْسَهُ وَلَمْ يُصَوِّبْهُ وَلَكِنْ بَيْنَ ذَلِكَ وَكَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ لَمْ يَسْجُدْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَائِمًا وَكَانَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السَّجْدَةِ لَمْ يَسْجُدْ حَتَّى يَسْتَوِيَ جَالِسًا وَكَانَ يَقُولُ فِي كُلِّ رَكْعَتَيْنِ التَّحِيَّةَ وَكَانَ يَفْرِشُ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَيَنْصِبُ رِجْلَهُ الْيُمْنَى وَكَانَ يَنْهَى عَنْ عُقْبَةِ الشَّيْطَانِ وَيَنْهَى أَنْ يَفْتَرِشَ الرَّجُلُ ذِرَاعَيْهِ افْتِرَاشَ السَّبُعِ وَكَانَ يخْتم الصَّلَاة بِالتَّسْلِيمِ. رَوَاهُ مُسلم

791. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर से और किराअत ((अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन)) से शुरू किया करते थे जब आप रुकू करते तो अपना सर मुबारक ना ऊपर उठाते थे न नीचे झुकाते थे बल्कि इन दोनों सूरतो के दरमियान बराबर रखते थे, जब रुकू से सर उठाते तो बिलकुल सीधा खड़े होते और फिर सजदाह करते जब सजदे से सर उठाते तो फिर इत्मिनान से बैठ जाते और फिर दूसरा सजदाह करते, आप हर दो रक्अतो के बाद अत्तहियात पढ़ते थे, आप बाएँ पाँव को बिछा देते और दाएँ पाँव को खड़ा रखते थे आप शैतान की तरह बैठनेसिरिन के बल बैठ कर टांगे खड़ी कर लेना और हाथ ज़मीन पर लगा देना से और दरिंदो की तरह बाज़ू बिछा कर सजदाह करने से मना किया करते थे और आप السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ “ ﷺ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)” पर नमाज़ ख़त्म किया करते थे|. (मुस्लिम)

رواه مسلم (240 / 498)، (1110) و اعل بما لا يقدح

٧٩٢ - (صَحِيح) وَعَن أبي حميد السَّاعِدِيّ قَالَ: فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا أَحْفَظُكُمْ لِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَيْتُهُ إِذَا كَبَّرَ جَعَلَ يَدَيْهِ حِذَاءَ مَنْكِبَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ أَمْكَنَ يَدَيْهِ مِنْ رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ هَصَرَ ظَهْرَهُ فَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ اسْتَوَى حَتَّى يَعُودَ كُلُّ فَقَارٍ مَكَانَهُ فَإِذَا سَجَدَ وَضَعَ يَدَيْهِ غَيْرَ مُفْتَرِشٍ وَلَا قَابِضِهِمَا وَاسْتَقْبَلَ بِأَطْرَافِ أَصَابِعِ رِجْلَيْهِ الْقِبْلَةَ فَإِذَا جَلَسَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ جَلَسَ على رجله الْيُسْرَى وَنصب الْيُمْنَى وَإِذا جَلَسَ فِي الرَّكْعَةِ الْآخِرَةِ قَدَّمَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْأُخْرَى وَقَعَدَ عَلَى مَقْعَدَتِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

792. अबू हुमैद साअदि रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा की एक जमाअत में फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के मुतल्लिक में तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ, मैंने आप ﷺ को देखा जब आप ने (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा तो अपने हाथ कंधो के बराबर कर लिए, जब आप ने रुकू किया तो अपने हाथ घुटनों पर रखे, फिर अपने कमर को झुकाया, जब रुकू से सर उठाया तो बिलकुल सीधे खड़े हो गए, हत्ता कि हर हड्डी अपने जगह पर गई, जब सजदाह किया तो आप ने हाथ रखे जो के ना बिछे हुए थे न समटे हुए थे और आप ने पाँव की उंगलियों के किनारों को किब्ले की तरफ किया था, जब आप दो रक्अतो में बैठते तो आप अपने बाएँ पाँव परबैठे और दाएँ पाँव को खड़ा किया और जब आखिरी रक्अत में बैठते तो बाएँ पाँव को आगे बढ़ाकर सुरिन पर बैठ गए और दाएँ पाँव को खड़ा किया| (बुखारी)

رواه البخاری (828)

٧٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ وَإِذَا كَبَّرَ لِلرُّكُوعِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ رَفَعَهُمَا كَذَلِكَ وَقَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ وَكَانَ لَا يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي

السُّجُودِ

793. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब नमाज़ शुरू करते रुकू के लिए (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते और जब रुकू से सर उठाते तो रफअ अल यदेन किया करते थे और आप ﷺ रुकूअ से उठते वक़्त फरमाते: "अल्लाह ने सुन ली जिस ने उसकी हम्द बयान की हमारे रब तमाम हम्द शिताइश तेरे ही लिए है" और आप सजदो के बिच में यह रफअ अल यदेन नहीं किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (735) و مسلم (21 / 390)، (861)

٧٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ: أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا رَكَعَ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ وَإِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ رَفَعَ يَدَيْهِ وَرَفَعَ ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

794. नाफेअ उसे रिवायत है कि जब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नमाज़ शुरू करते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते और हाथ उठाते थे जब रुकू करते तो हाथ उठाते जब " समिअल्लाहू लीमन हमीदह" कहता तो हाथ उठाते और जब दो रकते पढ़ कर खड़े होते तो हाथ उठाते थे जबकि इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने इस हदीस को नबी ﷺ से मरफुअ रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخاری (739) * و اعل بما لا یقدح و صححه جمهور المحدثین ، جعلنا الله فی زمرتهم

٧٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن مَالك بن الْحُوَيْرِث قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَبَّرَ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا أُذُنَيْهِ وَإِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَقَالَ: سَمِعَ اللَّهُ ص:٢٤ لِمَنْ حَمِدَهُ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِك. وَفِي رِوَايَة: حَتَّى يُحَاذِيَ بهما فروع أُذُنَيْهِ

795. मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहता तो अपने हाथ उठाते हत्ता कि वह उन्हें कानों के बराबर ले आते जब रुकू से सर उठाते और " समिअल्लाहू लीमन हमीदह" कहता तो भी इसी तरह करते और एक दूसरी रिवायत में हत्ता कि वह उन्हें कानों की लो के बराबर कर लेते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (737) و مسلم (25 / 391)، (865) * و جاء فی روایة ضعفة عند النسائی (2 / 205206 ح 1086) :'' و اذا سجد و اذا رفع راسه من السجود '' یعنی رفع یدیه ، و سند ضعیف ، قتادة مدلس و عنعن ولم یرو عنه شعبة ، بل رواه سعید بن ابی عروبة عنه

٧٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَإِذَا كَانَ فِي وِتْرٍ مِنْ صَلَاتِهِ لَمْ يَنْهَضْ حَتَّى يَسْتَوِيَ قَاعِدًا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

796. मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा जब

आप नमाज़ की ताक रक्अत में होते तो इत्मिनान से बैठ जाते और फिर दूसरी रक्अत के लिए खड़े होते| (बुखारी)

رواه البخارى (823)

٧٩٧ - (صَحِيح) وَعَن وَائِل بن حجرأنه رأى النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم رفع يَدَيْهِ حِينَ دَخَلَ فِي الصَّلَاةِ كَبَّرَ ثُمَّ الْتَحَفَ بِثَوْبِهِ ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ أَخْرَجَ يَدَيْهِ من الثَّوْب ثمَّ رفعهما ثمَّ كبر فَرَكَعَ فَلَمَّا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمَّا سَجَدَ سَجَدَ بَيْنَ كَفَّيْهِ. رَوَاهُ مُسلم

797. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को देखा की जब आप ने नमाज़ शुरू की तो हाथ उठाकर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा, फिर अपना कपड़ा लपेट लिया, फिर दायाँ हाथ बाएँ पर रखा जब रुकू करने का इरादा किया तो कपड़े से हाथ निकाले रफअ अल यदेन किया और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा फिर रुकू किया, जब " समिअल्लाहू लीमन हमीदह" कहा तो रफअ अल यदेन किया और जब सजदाह किया तो दोनों हाथो के दरमियान सजदाह किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 401)، (896)

٧٩٨ - (صَحِيح) وَعَن سهل بن سعد قَالَ: كَانَ النَّاسُ يُؤْمَرُونَ أَنْ يَضَعَ الرَّجُلُ الْيَدَ الْيُمْنَى عَلَى ذِرَاعِهِ الْيُسْرَى فِي الصَّلَاةِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

798. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, लोगों को हुक्म दिया जाता था के हर आदमी दौरान ए नमाज़ अपना दायाँ हाथ बाएँ बाज़ू पर रखे| (बुखारी)

رواه البخارى (740)

٧٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ يُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَرْكَعُ ثُمَّ يَقُولُ: «سَمِعَ ص:٢٥ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» حِينَ يَرْفَعُ صُلْبَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ ثُمَّ يَقُولُ وَهُوَ قَائِمٌ: «رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ» ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يَهْوِي ثُمَّ يُكَبِّرُ حِينَ يسْجد ثمَّ يكبر حِين يرفع رَأسه يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي الصَّلَاةِ كُلِّهَا حَتَّى يَقْضِيَهَا وَيُكَبِّرُ حِينَ يَقُومُ مِنَ الثِّنْتَيْنِ بَعْدَ الْجُلُوسِ

799. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए खड़े हो जाते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब रुकू करते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब रुकू से सर उठाते तो " समिअल्लाहू लीमन हमीदह" फरमाते फिर आप हालत कयाम में " रब्बना लकल हम्द" पढ़ते फिर जब सजदाह के लिए झुकते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब सजदे से सर उठाते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब सजदाह करते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर जब सजदे से सर उठाते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ)

अल्लाहु अकबर कहते, फिर नमाज़ मुकम्मल होने तक इसी तरह करते और जब दो रकते पढ़ कर बैठनेके बाद खड़े होते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (789) و مسلم (28 / 392)، (868)

٨٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصَّلَاةِ طُولُ الْقُنُوتِ» . رَوَاهُ مُسلم

800. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लम्बी कयाम वाली नमाज़ सबसे अफज़ल है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (164 / 756)، (1768)

نमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान • بَاب صفة الصَّلَاة

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٨٠١ - (صَحِيح) عَن أبي حميد السَّاعِدِيّ قَالَ فِي عشرَة مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَا أَعْلَمُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا فاعْرِضْ. قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاة يرفع يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يُكَبِّرُ ثُمَّ يَقْرَأُ ثُمَّ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ يَرْكَعُ وَيَضَعُ رَاحَتَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ ثُمَّ يَعْتَدِلُ فَلَا يُصَبِّي رَأْسَهُ وَلَا يُقْنِعُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَيَقُولُ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» ثُمَّ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُ أَكْبَرُ» ثُمَّ يَهْوِي إِلَى الْأَرْضِ سَاجِدًا فَيُجَافِي يَدَيْهِ عَن جَنْبَيْهِ ويفتح أَصَابِعَ رِجْلَيْهِ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيُثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى ص:٢٥ فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا ثُمَّ يَعْتَدِلُ حَتَّى يَرْجِعَ كل عظم إِلَى مَوْضِعِهِ مُعْتَدِلًا ثُمَّ يَسْجُدُ ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُ أَكْبَرُ» وَيَرْفَعُ وَيَثْنِي رِجْلَهُ الْيُسْرَى فَيَقْعُدُ عَلَيْهَا ثُمَّ يَعْتَدِلُ حَتَّى يَرْجِعَ كُلُّ عَظْمٍ إِلَى مَوْضِعِهِ ثُمَّ يَنْهَضُ ثُمَّ يَصْنَعُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ إِذَا قَامَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ كَبَّرَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى يُحَاذِيَ بِهِمَا مَنْكِبَيْهِ كَمَا كَبَّرَ عِنْدَ افْتِتَاحِ الصَّلَاةِ ثُمَّ يَصْنَعُ ذَلِكَ فِي بَقِيَّةِ صَلَاتِهِ حَتَّى إِذَا كَانَتِ السَّجْدَةُ الَّتِي فِيهَا التَّسْلِيمُ أَخَّرَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَقَعَدَ مُتَوَرِّكًا عَلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ ثُمَّ سَلَّمَ. قَالُوا: صَدَقْتَ هَكَذَا كَانَ يُصَلِّي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ مَعْنَاهُ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ مِنْ حَدِيثِ أَبِي حُمَيْدٍ: ثُمَّ رَكَعَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ كَأَنَّهُ قَابِضٌ عَلَيْهِمَا وَوَتَّرَ يَدَيْهِ فَنَحَّاهُمَا عَنْ جَنْبَيْهِ وَقَالَ: ثُمَّ سَجَدَ فَأَمْكَنَ أَنْفَهُ وَجَبْهَتَهُ الْأَرْضَ وَنَحَّى يَدَيْهِ عَنْ جَنْبَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ حَذْوَ مَنْكِبَيْهِ وَفَرَّجَ بَيْنَ فَخِذَيْهِ غَيْرَ حَامِلٍ بَطْنَهُ عَلَى شَيْءٍ مِنْ فَخِذَيْهِ حَتَّى فَرَغَ ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَأَقْبَلَ بِصَدْرِ الْيُمْنَى عَلَى قِبْلَتِهِ وَوَضَعَ كَفَّهُ الْيُمْنَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُمْنَى وَكَفَّهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِأُصْبُعِهِ يَعْنِي السَّبَّابَةَ. وَفِي أُخْرَى لَهُ: وَإِذَا قَعَدَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ قَعَدَ عَلَى بَطْنِ قَدَمِهِ الْيُسْرَى وَنَصَبَ الْيُمْنَى وَإِذَا كَانَ فِي الرَّابِعَةِ أَفْضَى بِوَرِكِهِ الْيُسْرَى إِلَى الْأَرْضِ وَأَخْرَجَ قَدَمَيْهِ مِنْ نَاحِيَةٍ وَاحِدَة

801. अबू हुमैद साअदि रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ के दस सहाबा की मौजूदगी में फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के मुतल्लिक में तुम सबसे ज़्यादा जानता हूँ, उन्होंने ने फ़रमाया: बयान करो उन्होंने ने फ़रमाया: जब नबी ﷺ नमाज़ का इरादा फरमाते, तो कंधो के बराबर हाथ उठाते, फिर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर

किराअत करते फिर (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कह कर कंधो के बराबर हाथ उठाते, फिर रुकू करते और अपने हथेलियों घुटनों पर रख देते, फिर बराबर हो जाते, आप सर को ना झुकाते न बुलंद करते, फिर सर उठाते तो “ समिअल्लाहू लीमन हमीदह” कहते, फिर कंधो के बराबर हाथ उठाते और इत्मिनान के साथ बराबर खड़े हो जाते, फिर (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते और सजदाह के लिए ज़मीन की तरफ झुक जाते, आप अपने हाथ पहलु से दूर रखते, पाँव की उंगलिया खोलते, फिर सर उठाते, बाएँ पाँव को मोड़ते और उस पर बैठ जाते और इस क़दर इत्मिनान से बैठते के हर हड्डी अपने जगह पर जाती और इत्मिनान सेबैठे रहते फिर सजदाह करते, फिर (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते हुए उठते, बायाँ पाँव मोड़ते और उस पर बैठ जाते और इस क़दर इत्मिनान से बैठते के हर हड्डी अपने जगह पर जाती, फिर खड़े होते, फिर दूसरी रकअत में इसी तरह करते, फिर जब दूसरी रकअत के बाद खड़े होते तो (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कह कर कंधो के बराबर रफअ अल यदेन करते, जैसे के नमाज़ शुरू करते वक़्त किया था, फिर अपने बकिया नमाज़ मैं भी ऐसे ही किया करते थे, हत्ता कि जब आखिरी सजदाह होता जिसके बाद सलाम फेरना होता तो, आप अपना बायाँ पाँव बाहर निकाल लिया करते और बाएँ सुरिन पर बैठ जाते, और फिर सलाम फिराते, उन्होंने दस सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने फ़रमाया: आप ने दुरुस्त कहा, आप ﷺ ऐसे ही नमाज़ पढ़ा करते थे| अबू दावुद, दारमी जबकि तिरमिज़ी, और इब्ने माजा ने भी इसी मानी में रिवायत किया है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है, अबू दावुद में अबू हुमैद से मरवी हदीस में है फिर आप ने रुकू किया तो हाथ घुटनों पर रखे गोया, आप ने उन्हें पकड़ा हुआ है, आप ने हाथो को कमान के छल्ले की तरह कर दिया और उन्हें पहलु से दूर रखा, और उन्होंने बयान किया के आप ﷺ ने फिर सजदाह किया तो नाक और पेशानी को ज़मीन पर रखा, हाथो को पहलु से दूर रखा और हथेलियों को कंधो के बराबर रखा और रानो को कुशादा रखा और पेट का कोई हिस्सा उन के साथ लगने न दिया, हत्ता कि (सजदे से) फारिग़ हो गए फिर बैठ गए तो बाएँ पाँव को बिछा दिया और दाएँ पाँव के पंजे को किबले रुख कर लिया, दाएँ हाथ को दाएँ घुटने पर और बाएँ हाथ को बाएँ घुटने पर रख दिया और अन्गुंश्ते शहादत से इरशाद किया, अबू दावुद की दूसरी रिवायत में है, जब आप दो रकअतो के बाद बैठते तो आप बाएँ पाँव परबैठे और दाएँ पाँव को खड़ा किया और जब चोथी रकअत के बाद बैठते तो आप ने बाएँ सुरिन को ज़मीन के साथ मिला दिया यानी बाएँ सुरिन परबैठे और दोनों पाँव एक ही तरफ निकाल दिए| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (730) و الدارمی (1 / 313 ، 314 ح 1363) و الترمذی (304 ، 305) و ابن ماجه (1061) [و صححه ابن خزيمة (587 ، 588) و ابن حبان (442 ، 491 ، 492)] * الرواية الثانية و الثالثة لابی داود (734 ، 735 ، 731) * عبد الحميد بن جعفر ثقه و ثقه الجمهور و محمد بن عمرو بن عطاء سمعه من ابی حميد و غيره ، و اعل بما لا يقدح

٨٠٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ: أَنَّهُ أَبْصَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ ص:٢٥ قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى كَانَتَا بِحِيَالِ مَنْكِبَيْهِ وحاذى بإبهاميه أُذُنَيْهِ ثُمَّ كَبَّرَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: يَرْفَعُ إِبْهَامَيْهِ إِلَى شَحْمَةِ أُذُنَيْهِ

802. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को देखा की जब आप नमाज़ के लिए खड़े हुए तो हाथो को कंधो के बराबर उठाया और अंगूठो को कानों के बराबर किया, फिर (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और अबू दावुद ही की रिवायत में है आप ﷺ अंगूठो को कानों की लो तक उठाया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (724) * عبد الجبار بن وائل : لم يسمع من ابيه

٨٠٣ - (حسن) وَعَنْ قَبِيصَةَ بْنِ هُلْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَؤُمُّنَا فَيَأْخُذُ شِمَالَهُ بِيَمِينِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

803. कबिस बिन हुल्ब रहिमहुल्लाह अपने वालिद हुल्ब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ हमें नमाज़ पढ़ाते तो आप दाएँ हाथ से बाएँ को पकड़ लेते| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (252 وقال : حسن) و ابن ماجه (809) و عند احمد (5 / 226) :'' یضع ھذا علی صدره '' و سند حسن]

٨٠٤ - (صَحِيح) وَعَن رِفَاعَة بن رَافع قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ فَصَلَّى فِي الْمَسْجِدِ ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعِدْ صَلَاتَكَ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ» . فَقَالَ: عَلِّمْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أُصَلِّي؟ قَالَ: «إِذَا تَوَجَّهْتَ إِلَى الْقِبْلَةِ فَكَبِّرْ ثُمَّ اقْرَأْ بِأُمِّ الْقُرْآنِ وَمَا شَاءَ اللَّهُ أَنْ تَقْرَأَ فَإِذَا رَكَعْتَ فَاجْعَلْ رَاحَتَيْكَ عَلَى رُكْبَتَيْكَ وَمَكِّنْ رُكُوعَكَ وَامْدُدْ ظَهْرَكَ فَإِذَا رَفَعْتَ فَأَقِمْ صُلْبَكَ وَارْفَعْ رَأْسَكَ حَتَّى تَرْجِعَ الْعِظَامُ إِلَى مَفَاصِلِهَا فَإِذَا سَجَدْتَ فَمَكِّنِ السُّجُودَ فَإِذَا رَفَعْتَ فَاجْلِسْ عَلَى فَخِذِكَ الْيُسْرَى ثُمَّ اصْنَعْ ذَلِكَ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ وَسَجْدَةٍ حَتَّى تَطْمَئِنَّ. هَذَا لَفْظُ» الْمَصَابِيحِ ". وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ مَعَ تَغْيِيرٍ يَسِيرٍ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ مَعْنَاهُ. وَفِي رِوَايَةٍ ص:٢٥ لِلتِّرْمِذِيِّ قَالَ: «إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ فَتَوَضَّأْ كَمَا أَمَرَكَ اللَّهُ بِهِ ثُمَّ تَشَهَّدْ فَأَقِمْ فَإِنْ كَانَ مَعَكَ قُرْآنٌ فَاقْرَأْ وَإِلَّا فَاحْمَدِ اللَّهَ وَكَبِّرْهُ وَهَلله ثمَّ اركع»

804. रफाअ बिन राफीअ बयान करते हैं, एक आदमी आया उस ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी फिर नबी ﷺ को सलाम किया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “नमाज़ दोबारा पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे सिखा दें की मैं कैसे नमाज़ पढ़ू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम किबले रुख हो जाओ तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो, फिर सुरह फातिहा और जो चाहो सूरत पढ़ो, जब (रुकूअ से) उठो तो कमर सीधी करो और सर उठाओ हत्ता कि हड्डिया अपने जोड़ो में वापस आजाए, जब सजदाह करे तो खूब अच्छी तरह सजदाह करो जब (सजदे से) उठो तो बाएँ रान पर बेठो, फिर हर रुकू व सुजूद में ऐसे ही करो हत्ता कि इत्मिनान हो जाए”, यह मसाबिह के अल्फाज़ हैं, इमाम अबू दावुद ने कुछ तबदीली के साथ इसे रिवायत किया है, इमाम तिरमिज़ी और इमाम नसई ने इसी मानी में रिवायत किया है, और तिरमिज़ी की रिवायत में है फ़रमाया: “जब तुम नमाज़ का इरादा करे तो अल्लाह की तालीम व हुक्म के मुताबिक वुज़ू करो, फिर कलिमा शहादत पढ़ो (बाज़ ने कहा आज़ान दो) फिर इकामत कहो, अगर तुम्हें कुरान याद हो तो कुरान पढ़ो, वरना الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर और لا اله الا الله पढ़ो और फिर रुकू करो| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (859) و الترمذی (302 وقال : حدیث حسن) و النسائی (2 / 193 ح 1054) [و صححه ابن خزیمة (638) و ابن حبان (484)]

٨٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الصَّلَاةُ مَثْنَى مثنى تشهد فِي كل رَكْعَتَيْنِ وَتَخَشُّعٌ وَتَضَرُّعٌ وَتَمَسْكُنٌ ثُمَّ تُقْنِعُ يَدَيْكَ يَقُول ك تَرْفَعُهُمَا إِلَى رَبِّكَ مُسْتَقْبِلًا بِبُطُونِهِمَا وَجْهَكَ وَتَقُولُ يَا رَبِّ يَا رَبِّ وَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَهُوَ كَذَا وَكَذَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَهُوَ خداج» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

805. फ़ज़ल बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ दो रक्अत है,

हर दो रक्अत के बाद तशह्हुद पढ़ो खुशु व खुजू और आजिज़ी व बेचारगी का इज़हार कर, फिर हाथ बुलंद कर के अपने रब से दुआ कर और जिस ने ऐसे न किया तो वह इस तरह इस तरह है”| और एक दूसरी रिवायत में है: “तो वह नाकिस है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (385) * عبدالله بن نافع بن العمياء : مجهول ، بل ضعفه الجمهور و السند معلل

नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान • بَاب صفة الصَّلَاة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٨٠٦ - (صَحِيح) عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ الْمُعَلَّى قَالَ: صَلَّى لَنَا أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ فَجَهَرَ بِالتَّكْبِيرِ حِينَ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ وَحِينَ سَجَدَ وَحِينَ رَفَعَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ وَقَالَ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

806. सईद बिन हारिस बिन मुअल्ली रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु ने हमें नमाज़ पढ़ाइ तो उन्होंने जब सजदो से सर उठाया, जब सजदाह किया और जब दो रक्अतो के बाद खड़े हुए तो बुलंद आवाज़ से (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और फ़रमाया, मैंने नबी ﷺ को इसी तरह करते देखा है|(बुखारी)

رواه البخاری (825)

٨٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عِكْرِمَةَ قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ شَيْخٍ بِمَكَّةَ فَكَبَّرَ ثِنْتَيْنِ ص:٢٥ وَعِشْرِينَ تَكْبِيرَةً فَقُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّهُ أَحْمَقُ فَقَالَ: ثَكَلَتْكَ أُمُّكَ سُنَّةُ أَبِي الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

807. इकरिमा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने मक्का में एक बुज़ुर्ग के पीछे नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने बाईस मर्तबा (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा तो मैंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से कहा: यह तो अहमक है, उन्होंने कहा: तेरी माँ तुझे गम पाए यह तो अबुल कासिम ﷺ की सुन्नत है| (बुखारी)

رواه البخاری (788)

٨٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ مُرْسَلًا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَبِّرُ فِي الصَّلَاة كلما خفض وَرفع فَلم تزل صلَاته حَتَّى لَقِي الله تَعَالَى. رَوَاهُ مَالك

808. अली बिन हुसैन उसे मुरसल रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ में जब झुकते और जब उठते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा करते थे, आप ﷺ पूरी जिंदगी इसी तरह नमाज़ पढ़ते रहे| (सहीह)

صحیح ، رواه مالک (1 / 76 ح 161) * السند مرسل و للحدیث شواهد کثیرة وهو بها صحیح

٨٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: قَالَ لَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ: أَلَا أَصَلِّي بكم صَلَاة رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَصَلَّى وَلَمْ يَرْفَعْ يَدَيْهِ إِلَّا مَرَّةً وَاحِدَةً مَعَ تَكْبِيرَةِ الِافْتِتَاحِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ. وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: لَيْسَ هُوَ بِصَحِيح على هَذَا الْمَعْنى

809. अल्कमा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: क्या मैं तुम है रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ न पढ़ाऊ, चुनांचे उन्होंने सिर्फ नमाज़ के आगाज़ पर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते हुए हाथ उठाए तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और अबू दावुद ने फ़रमाया: इस मानी में यह हदीस सहीह नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (257 وقال : حدیث حسن) و ابوداؤد (748) و النسائی (2 / 195 ح 1059) * و صححه ابن حزم و ضعفه ابن المبارک و الشافعی و الجمھور ، وفی سفیان الثوری وھو مدلس مشھور و عنعن و ھذا العلة و حدھا کافیه لضعف الحدیث و الحق انه حدیث ضعیف و اخطا من قال :'' انه حدیث صحیح و اسناد صحیح علی شرط مسلم '' و کیف یکون السند صحیحا و فیه مدلس مشھور و کان یدلس عن الضعفاء و المجروحین و عنعن !!

٨١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ: الله أكبر. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

810. अबू हुमैद साअदि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए खड़े होते तो किबले रुख हो कर हाथ उठाते और " अल्लाहु अकबर" कहते| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابن ماجه (803) [و تقدم طرفه : 801]

٨١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظّهْر وَفِي مُؤخر الصُّفُوف رجل فَأَسَاءَ الصَّلَاةَ فَلَمَّا سَلَّمَ نَادَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا فُلَانُ ص:٢٥ أَلَا تَتَّقِي اللَّهَ؟ أَلَا تَرَى كَيْفَ تُصَلِّي؟ إِنَّكُمْ تُرَوْنَ أَنَّهُ يَخْفَى عَلَيَّ شَيْءٌ مِمَّا تَصْنَعُونَ وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَى مِنْ خَلْفِي كَمَا أَرَى من بَين يَدي» رَوَاهُ أَحْمد

811. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ ए ज़ुहर पढ़ाई पिछली सफों में किसी आदमी ने नमाज़ में खराबी की, जब सलाम फेरा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे बुलाया: "फलां शख़्स क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते, क्या तुम नहीं देखते की तुम केसी नमाज़ पढ़ते हो, क्या तुम समझते हो के तुम जो करते हो वह मुझ पर छुपा रहता है, अल्लाह की क़सम! मैं जिस तरह अपने आगे देखता हूँ वैसे ही अपने पीछे देखता हूँ"| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (2 / 449 ح 9795) * ابن اسحاق صرح بالسماع عند ابن خزیمة (474) و للحدیث شواھد عند البخاری وغیره انظر (ح 869)

بَابُ مَا يُقْرَأُ بَعْدَ التَّكْبِيرِ • तकबीर ए तहरिमा के बाद पढ़ी जाने वाली चीजों का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٨١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يسكت بَين التَّكْبِير وَبَين الْقِرَاءَة إسكاتة قَالَ أَحْسبهُ قَالَ هنيَّة فَقلت بِأبي وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ إِسْكَاتُكَ بَيْنَ التَّكْبِيرِ وَالْقِرَاءَة مَا تَقُولُ قَالَ: «أَقُولُ اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ والثلج وَالْبرد»

812. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तकबीर तहरिमा और किराअत के दरमियान कुछ देर सुकूत फ़रमाया करते थे, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरे वालिदेन आप ﷺ पर कुरबान हो आप तकबीर तहरिमा और किराअत के दरमियान जो सुकूत फरमाते हैं उस में क्या पढ़ते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: में यह दुआ पढ़ता हूँ, “ए अल्लाह! मेरे और मेरे गुनाहों के दरमियान ऐसे दूरी डाल दे जैसी तूने मशरिक व मगरिब के बिच में दूरी डाली है, अल्लाह मुझे गुनाहों से ऐसे पाक साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मेल से साफ़ कर दिया जाता है, अल्लाह मेरे गुनाहों को पानी बर्फ और ओलो से धो दे.” (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (744) و مسلم (147 / 598)، (1354)

٨١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ وَفِي رِوَايَةٍ: كَانَ إِذَا افْتَتَحَ الصَّلَاةَ كَبَّرَ ثُمَّ قَالَ: «وَجَّهْتُ وَجْهِي لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْض حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أَمَرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ ص:٢٥ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي جَمِيعًا إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِي يَدَيْكَ وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ» وَإِذَا رَكَعَ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ خَشَعَ لَكَ سَمْعِي وبصري ومخي وعظمي وعصبي» فَإِذا رفع قَالَ: «اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وملء الأَرْض وملء مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ»»» وَإِذَا سَجَدَ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصُوَّرَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ»»» ثُمَّ يَكُونُ مِنْ آخِرِ مَا يَقُولُ بَيْنَ التَّشَهُّدِ وَالتَّسْلِيمِ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَسْرَفْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلشَّافِعِيِّ: «وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ وَالْمَهْدِيُّ مَنْ هَدَيْتَ أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ لَا مَنْجَى مِنْكَ وَلَا مَلْجَأَ إِلَّا إِلَيْكَ تَبَارَكْتَ»

813. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ नमाज़ का इरादा फरमाते और एक रिवायत में है जब आप ﷺ नमाज़ शुरू किया करते, तो तकबीर कह कर यह दुआ पढ़ा करते, “मेंने यक्सू हो कर अपने चेहरे को उस ज़ात की तरफ मुतवज्जे किया जिस ने ज़मीन व आसमान को अदम से तखलीक फ़रमाया और मैं मुशरिको में से नहीं हूँ, बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना दोनों जहाँ के रब अल्लाह के लिए है, उस का कोई शरीक नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है, और मैं मुसलमानों (इताअत गुज़ार) में से होऊँ, ऐ अल्लाह!

तू मालिक है, तू मेरा रब है और मैं तेरा बंदा हूँ, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, मैंने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, अब तू मेरे सारे गुनाह मुआफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाह बख्श नहीं सकता, बेहतरीन अख़लाक़ की तरफ मेरी रहनुमाई फरमा, अच्छे अख़लाक़ की तरफ सिर्फ तू ही रहनुमाई कर सकता है, बुरे अख़लाक़ मुझ से दूर कर दे, क्योंकि सिर्फ तू ही बुरे अख़लाक़ मुझ से दूर कर सकता है, मैं तेरी इबादत पर कायम हूँ और यह मेरे लिए बाईस सआदत है, तमाम खैर व भलाई तेरे हाथो में है, जबकि बुराई तेरी तरफ मंसूब नहीं की जा सकती, मैं तेरे हुक्म व तौफिक से हूँ, औरलौट कर तेरी ही तरफ आना है, तू बरकत वाला बुलंद शान वाला है, मैं तुझ से मगफिरत तलब करता हूँ, और तेरी तरफ रुजू करता हूँ, ” और जब आप ﷺ रुकू करते तो यह दुआ पढ़ते: “ए अल्लाह! मैंने तेरे लिए रुकू किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरी इताअत इख़्तियार की, मेरे कान, मेरी आँखे, मेरा दिमाग, मेरी हड्डियों और मेरे अअसाब ने तेरे लिए ही आजिज़ी इख़्तियार की, ” जब आप ﷺ (रुकूअ से) सर उठाते तो यह दुआ पढ़ते: “अल्लाह हमारे रब हर किस्म की तारीफ़ तेरे ही लिए है, जिस से आसमान व ज़मीन और जो उस के दरमियान है भर जाए और उस के बाद इस चीज़ के भराव के बराबर जब तू चाहे, ” और जब आप ﷺ सजदाह करते तो यह दुआ करते: “अल्लाह मैंने तेरे लिए सजदाह किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरी इताअत इख़्तियार की, मेरे चेहरे ने उस ज़ात को सजदाह किया जिस ने इसे पैदा फ़रमाया, उसकी तस्वीर व सूरत बनाई, उस को समाअ व बसर से नवाज़ा, बरकत वाला अल्लाह बेहतरीन तखलीक करने वाला है.” फिर आख़िर पर तशह्हुद और सलाम फेरने के दरमियान यह दुआ करते: “अल्लाह तू मेरे अगले, पिछले, पोशीदा और ज़ाहिर गुनाह और जो मैंने ज़्यादती की और वह गुनाह जिन के मुतल्लिक तू मुझ से भी ज़्यादा जानता है, सब मुआफ़ फरमा, तू ही तरक्की देने वाला और तू ही गिरावट की जानिब ले जाने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूद नही”, और शाफ़ई रहिमहुल्लाह की रिवायत में है: “और बुराई तेरी तरफ मंसूब नहीं की जा सकती, हिदायत वाला वह है जिसे तू हिदायत अता फरमाए, मैं तेरी तौफिक से हूँ और मेरा लौटना भी तेरी ही तरफ है? निजा हो पनाह सिर्फ तुझ से मिल सकती है, तू बरकत वाला है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (201 / 771)، (1812) و الشافعی فی الام (1 / 106 و سند صحيح)

٨١٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَجُلًا جَاءَ فَدَخَلَ الصَّفَّ وَقد حفزه النَّفس فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاتَهُ قَالَ: ص:٢٥ «أَيُّكُمُ الْمُتَكَلِّمُ بِالْكَلِمَاتِ؟» فَأَرَمَّ الْقَوْمُ. فَقَالَ: «أَيُّكُمُ الْمُتَكَلِّمُ بِالْكَلِمَاتِ؟» فَأَرَمَّ الْقَوْمُ. فَقَالَ: «أَيُّكُمُ الْمُتَكَلِّمُ بِهَا فَإِنَّهُ لَمْ يَقُلْ بَأْسًا» فَقَالَ رَجُلٌ: جِئْتُ وَقَدْ حَفَزَنِي النَّفْسُ فَقَلْتُهَا. فَقَالَ: «لَقَدْ رَأَيْتُ اثْنَيْ عَشَرَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا أَيُّهُمْ يرفعها» . رَوَاهُ مُسلم

814. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी कर सफ में शामिल हो गया, उसकी सांस फूली हुई थी, उस ने कहा अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के लिए हम्द है, हम्द बहोत ज़्यादा पाकिज़ा और बा बरकत, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो फ़रमाया: “तुम में से यह कलिमात किस ने कहे थे ?” तमाम सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ख़ामोश रहे फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कलिमात किस ने कहे थे ?” वह फिर ख़ामोश रहे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कलिमात किस ने कहे थे, उस ने कोई काबिल मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) बात नहीं की”, एक आदमी ने अर्ज़ किया, मैं आया तो मेरी सांस फुल चुकी थी, चुनांचे वह कलिमात मैंने कहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने बारह फरिश्तो को उन कलिमात की तरफ सबकत करते हुए

देखा के उनमें से कौन उन्हें ऊपर लेकर जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 / 600)، (1357)

بَابُ مَا يُقْرَأُ بَعْدَ التَّكْبِيرِ • तकबीर ए तहरिमा के बाद पढ़ी जाने वाली चीजों का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٨١٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ افْتَتَحَ الصَّلَاةَ قَالَ: «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

815. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ शुरू करते तो यह दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! तू पाक है, तेरी तारीफ़ के साथ हम तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, तेरा नाम बा बरकत है, तेरी शान बुलंद है और तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (243) و ابوداؤد (776) [و ابن ماجه (806) من طریق آخر و صححه الحاكم (1 / 235)]

٨١٦ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ»» وَقَالَ التِّرمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ حَارِثَةَ وَقَدْ تُكُلِّمَ فِيهِ مِنْ قِبَلِ حفظه

816. इब्ने माजा ने इसे अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: हम इस हदीस को सिर्फ हारिस के वास्ते से जानते हैं, जबकि उसकी कमज़ोर कुव्वत याददाश्त की वजह से उस पर कलाम किया गया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (804) [و ابوداؤد كما سياتى (1217) و صححه ابن خزيمة (467)]

٨١٧ - (ضَعِيف) وَعَن جُبَير بن مطعم: أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي صَلَاةً قَالَ: «اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَان الله بكرَة وَأَصِيلا» ثَلَاثًا «أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ مِنْ نَفْخِهِ وَنَفْثِهِ وَهَمْزِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: «وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا» . وَذَكَرَ فِي آخِرِهِ: «مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ» وَقَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: نَفْخُهُ الْكِبْرُ وَنَفْثُهُ الشِّعْرُ وهمزه الموتة

817. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो इस वक़्त आप ﷺ यह पढ़ रहे थे फ़रमाया: “अल्लाह बहोत ही बड़ा है, अल्लाह बहोत ही बड़ा है, अल्लाह बहोत ही बड़ा है, अल्लाह के लिए बहोत ज़्यादा तारीफ़ है, अल्लाह के लिए बहोत ज़्यादा तारीफ़ है, अल्लाह के लिए

बहोत ज़्यादा तारीफ़ है, तीन मर्तबा फ़रमाया अल्लाह के लिए सुबह व शाम पाकीज़गी है, मैं शैतान से उसकी फूंक, उस के वसवसे और उस के खतरे से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ"| अबू दावुद, इब्ने माजा अलबत्ता इब्ने माजा ने ((وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا)) का ज़िक्र नहीं किया और उन्होंने आख़िर पर : ((مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ)) का ज़िक्र किया और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उसकी फूंक से मुराद कब्र उस के वसवसे से मुराद अशआर और उस के खतरे से जीन मुराद है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (764) و ابن ماجه (807) [و صححه ابن حبان (443 ، 444) و ابن الجارود (180) و الحاكم (1 / 235) و وافقه الذهبی]

٨١٨ - (ضَعِيف) وَعَن سَمُرَة بن جُنْدُب: أَنَّهُ حَفِظَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَكْتَتَيْنِ: سَكْتَةً إِذَا كَبَّرَ وَسَكْتَةً إِذَا فَرَغَ مِنْ قِرَاءَةِ (غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالّين)»» فَصَدَّقَهُ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وروى التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي نَحوه

818. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से दो सकते याद किए एक सकता जब आप ﷺ तकबीर तहरिमा कहते और एक सकता जब आप غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالّين) ﷺ) की किराअत से फारिग़ होते, उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु ने उनकी तस्दीक की अबू दावुद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा और दारमी ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (779) و الترمذی (251 وقال : حسن) و ابن ماجه (844) و الدارمی (1 / 283 ح 1246) [و صححه ابن خزیمة (1578) و ابن حبان (448) و الحاكم (1 / 215) علی شرط الشیخین و وافقه الذهبی]

٨١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَهَضَ مِنَ الرَّكْعَة الثَّانِيَة استفتح الْقِرَاءَة ب «الْحَمد لله رب الْعَالمين» وَلَمْ يَسْكُتْ. هَكَذَا فِي صَحِيحِ مُسْلِمٍ. وَذَكَرَهُ الْحُمَيْدِيُّ فِي أَفْرَادِهِ وَكَذَا صَاحِبُ الْجَامِعِ عَنْ مُسلم وَحده

819. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ दूसरी रक्अत के लिए खड़े होते तो अलहम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन से किराअत शुरू करते थे और आप ﷺ सकता नहीं फरमाते थे सहीह मुस्लिम में इसी तरह है, हुमैदी ने इसे इमाम मुस्लिम के मुफ़्रदात में ज़िक्र किया और इसी तरह साहब जामेअ ने इसे सिर्फ मुस्लिम से रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (148 / 599)، (1356)

بَابُ مَا يُقْرَأُ بَعْدَ التَّكْبِيرِ • तकबीर ए तहरिमा के बाद पढ़ी जाने वाली चीजों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٨٢٠ - (صَحِيحٌ) عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَفْتَحَ الصَّلَاةَ كَبَّرَ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أَمَرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسلمين اللَّهُمَّ اهدني لِأَحْسَنِ الْأَعْمَالِ وَأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَقِنِي سَيِّئَ الْأَعْمَالِ وَسَيِّئَ الْأَخْلَاقِ لَا يَقِي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

820. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ नमाज़ शुरू करते तो तकबीर कह कर यह दुआ पढ़ा करते थे: "बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह दोनों जहानों के रब के लिए है, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला इताअत गुज़ार हूँ ऐ अल्लाह! बेहतरीन आमल व अख़लाक़ की तरफ मेरी रहनुमाई फरमा उन बेहतरीन आमल व अख़लाक़ की तरफ सिर्फ तू ही रहनुमाई कर सकता है, बुरे आमाल और बुरे अख़लाक़ से मुझे बचा उन बुरे आमल व अख़लाक़ से सिर्फ तू ही बचा सकता है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائى (2 / 129 ح 897)

٨٢١ - (صَحِيح) وَعَن مُحَمَّد بن مسلمة قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَامَ يُصَلِّي تَطَوُّعًا قَالَ: «اللَّهُ أَكْبَرُ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْض ص:٢٦ حَنِيفا مُسلما وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ» . وَذَكَرَ الْحَدِيثَ مِثْلَ حَدِيثِ جَابِرٍ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: «وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ» . ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ» ثُمَّ يَقْرَأُ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

821. मुहम्मद बिन मुस्लिम, रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नफ्ल नमाज़ के लिए खड़े होते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कह कर यह दुआ फरमाते: "मैंने यक्सू हो कर अपने चेहरे को उस ज़ात की तरफ मुतवज्जे कर लिया जिस ने अदम से ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया और मैं मुशरिको में से नहीं हूँ" और उन्होंने मुहम्मद बिन मसलमाह) ने जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस के मिसल ज़िक्र किया अलबत्ता उन्होंने ((अन्ना मीनल मुस्लिमीन)) " मैं मुसलमान हूँ" ज़िक्र किया है, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और हम तेरी हम्द के साथ तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं,"| फिर आप ﷺ किराअत फरमाते| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (2 / 131 ح 899 ببعض الاختلاف)

नमाज़ में किराअत का बयान • بَاب الْقِرَاءَة فِي الصَّلَاة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٨٢٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا صَلَاةَ لمن لم يقْرَأ بِفَاتِحَة الْكتاب»»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِأُمِّ الْقُرْآن فَصَاعِدا»

822. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने नमाज़ में सुरह फातिहा नहीं पढ़ी उसकी कोई नमाज़ नहीं”| बुखारी, मुस्लिम # और मुस्लिम की रिवायत में है: “इस की नमाज़ नहीं होती जो सुरह फातिहा और कुछ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) न पढ़े”, (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (756) و مسلم (34 / 394)، (874 و 877) و الرواية الثانية له (37 ، 36 / 394)

٨٢٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ فَهِيَ خِدَاجٌ ثَلَاثًا غَيْرُ تَمَامٍ» فَقِيلَ لِأَبِي هُرَيْرَةَ: إِنَّا نَكُون وَرَاء الإِمَام فَقَالَ اقْرَأْ بِهَا فِي نَفْسِكَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «قَالَ اللَّهُ تَعَالَى قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي نِصْفَيْنِ وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ فَإِذَا قَالَ الْعَبْدُ (الْحَمد لله رب الْعَالمين)»» قَالَ اللَّهُ تَعَالَى حَمِدَنِي عَبْدِي وَإِذَا قَالَ (الرَّحْمَن الرَّحِيم)»» قَالَ اللَّهُ تَعَالَى أَثْنَى عَلَيَّ عَبْدِي وَإِذَا قَالَ (مَالك يَوْم الدّين)»» قَالَ مجدني عَبدِي وَقَالَ مرّة فوض إِلَيّ عَبدِي فَإِذا قَالَ (إِيَّاك نعْبد وَإِيَّاك نستعين)»» قَالَ هَذَا بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ فَإِذَا قَالَ (اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالّين)»» قَالَ هَذَا لِعَبْدِي وَلِعَبْدِي مَا سَأَلَ» رَوَاهُ مُسلم .

823. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने नमाज़ पढ़ी लेकिन उस में सुरह फातिहा न पढ़ी तो वह नमाज़ नाकिस है”, आप ﷺ ने यह तीन मर्तबा फ़रमाया: “मुकम्मल नहीं” अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से कहा गया हम इमाम के पीछे होते हैं उन्होंने ने फ़रमाया: इसे अपने दिल में पढ़ो क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मैंने नमाज़ यानी सुरह फातिहा को अपने और अपने बंदे के दरमियान आधा आधा तकसीम कर दिया और मेरे बंदे ने जो सवाल क्या यह इसे मिल गया, चुनांचे जब बंदा कहता है “ हर किस्म की हम्द अल्लाह ही के लिए है जो तमाम जहानों का रब है” अल्लाह तआला फरमाता है, मेरे बंदे ने मेरी हम्द बयान की और जब बंदा कहता है “ जो बहोत मेहरबान निहायत रहम वाला है” अल्लाह तआला फरमाता है, मेरे बंदे ने मेरी सना बयान की जब कहता है “ यौमे जज़ा का मालिक है” अल्लाह फरमाता है, मेरे बंदे ने मेरी शान व शौकत बयान की जब बंदा कहता है “ हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते है”, अल्लाह फरमाता है, यह मेरे और मेरे बंदे के दरमियान है और मेरे बंदे के लिए वह कुछ है जो उस ने सवाल किया और जब बंदा कहता है “ हमें सीधी राह दिखा उन लोगों की राहे जिन पर तूने इनाम किया उनकी नहीं जिन पर तेरा गज़ब हुआ और न उन लोगों की राहे जो गुमराह हुए”,

अल्लाह तआला फरमाता है " यह मेरे बंदे के लिए है और मेरे बंदे के लिए वह है जिस का उस ने सवाल किया"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (38 / 395)، (878)

٨٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا بكر وَعمر رَضِي الله عَنْهُمَا كَانُوا يَفْتَتِحُونَ الصَّلَاةَ بِ «الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالمين»)»» رَوَاهُ مُسلم

824. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ और अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु अलहम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन से नमाज़ शुरू किया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (52 / 399)، (892)

٨٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَمَّنَ الْإِمَامُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تقدم من ذَنبه)»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: " إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: (غَيْرِ المغضوب عَلَيْهِم وَلَا الضَّالّين)»» فَقُولُوا: آمِينَ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ ". هَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ وَلِمُسْلِمٍ نَحْوُهُ»» وَفِي أُخْرَى لِلْبُخَارِيِّ قَالَ: «إِذَا أَمَّنَ الْقَارِئُ فَأَمِّنُوا فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تُؤَمِّنُ فَمَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلَائِكَةِ غفر لَهُ مَا تقدم من ذَنبه»

825. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब इमाम आमीन कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिस की आमीन फरिश्तो की आमीन के मुवाफिक साथ हो गई उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं", बुखारी, मुस्लिम, और एक रिवायत में है: "जब इमाम (غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالّين) कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिस का कौल फरिश्तो के कौल के मुवाफिक हो गया उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं. " यह अल्फाज़ बुखारी के हैं और मुस्लिम की रिवायत भी इसी तरह है| # और बुखारी की दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब कारी इमाम आमीन कहे तो तुम आमीन कहो, क्योंकि फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं, जिस की आमीन फरिश्तो की आमीन के मुवाफिक हो गई, उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं|" (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (780) و مسلم (72 / 410)، (915 و 920) والرواية الثانيه للبخارى (642) و مسلم (76 / 410) و الرواية الثانيه للبخارى (782)

٨٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا صَلَّيْتُمْ فَأَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمْ أَحَدُكُمْ فَإِذَا كَبَّرَ فكبروا وَإِذ قَالَ (غير المغضوب عَلَيْهِم وَلَا الضَّالّين)»» فَقُولُوا آمِينَ يُجِبْكُمُ اللَّهُ فَإِذَا كَبَّرَ وَرَكَعَ فَكَبِّرُوا وَارْكَعُوا فَإِنَّ الْإِمَامَ يَرْكَعُ قَبْلَكُمْ وَيَرْفَعُ قبلكُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَتِلْكَ بِتِلْكَ» قَالَ: «وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ يسمع الله لكم» . رَوَاهُ مُسلم

826. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम नमाज़ पढ़ने का इरादा करे तो सफे दुरुस्त करो, फिर तुम में से तुम्हें कोई नमाज़ पढ़ाए, पस जब वह (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहे तो तुम (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो और जब वह (غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالّين) कहे तो तुम आमीन कहो, अल्लाह तुम्हारी दुआ कबूल फरमाएगा जब वह (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहे और रुकू करे तो तुम (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो और रुकू करो क्योंकि इमाम तुम से पहले रुकू करता है और तुम से पहले (रुकूअ से) उठता है” रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये पहले सर उठाना उस के पहले रुकू जाने का बदला है और जब वह कहे سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ (समिअल्लाहू लीमन हमीदह) “अल्लाह ने सुन लिया जिस ने उसकी तारीफ़ की”, तो तुम कहो ऐ अल्लाह! हर किस्म की हम्द तेरे ही लिए है, अल्लाह तुम्हारी दुआ सुनता और कबूल फरमाता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 404)، (904)

٨٢٧ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَقَتَادَةَ: «وَإِذا قَرَأَ فأنصتوا»

827. और मुस्लिम की अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस में है: “और जब वह किराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 404)، (905)

٨٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْرَأ فِي الظُّهْرِ فِي الْأُولَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ وَسُورَتَيْنِ وَفِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُخْرَيَيْنِ بِأُمِّ الْكِتَابِ وَيُسْمِعُنَا الْآيَةَ أَحْيَانًا وَيطول فِي الرَّكْعَة الأولى مَا لَا يطول فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ وَهَكَذَا فِي الْعَصْرِ وَهَكَذَا فِي الصُّبْح

828. अबू क़तादा बयान करते हैं, नबी ﷺ ज़ुहर की पहली दो रक्अतो में सुरह फातिहा और दो सूरते जबकि दूसरी दो रक्अतो में सुरह फातिहा पढ़ा करते थे और कभी कभार आप हमें कोई आयत सुना दिया करते थे, आप जिस क़दर पहली रक्अत में किराअत लम्बी किया करते थे, इस क़दर दूसरी में लम्बी नहीं किया करते थे, और आप इसी तरह असर में और इसी तरह फज्र में किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (776) و مسلم (154 / 451)، (1012)

٨٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كُنَّا نَحْزُرُ قِيَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فَحَزَرْنَا قِيَامَهُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ قَدْرَ قِرَاءَةِ (الم تَنْزِيلُ)»» السَّجْدَةِ - وَفِي رِوَايَةٍ: فِي كُلِّ رَكْعَةٍ قَدْرَ ثَلَاثِينَ آيَةً - وَحَزَرْنَا قِيَامَهُ فِي الْأُخْرَيَيْنِ قَدْرَ النّصْف من ذَلِك وحزرنا قِيَامَهُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ مِنَ الْعَصْرِ عَلَى قَدْرِ قِيَامِهِ فِي الْأُخْرَيَيْنِ مِنَ الظُّهْرِ وَفِي الْأُخْرَيَيْنِ مِنَ الْعَصْرِ عَلَى النِّصْفِ مِنْ ذَلِكَ. رَوَاهُ مُسلم

829. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नमाज़ ए ज़ुहर व असर मैं रसूलुल्लाह ﷺ के कयाम का अंदाज़ा लगाया करते थे, पस हमने ज़ुहर की पहली दो रक्अतो में आप ﷺ के कयाम का अंदाज़ा सुरह सजदाह की किराअत के बराबर लगाया और एक दूसरी रिवायत में है हर रक्अत में तीस आयात के बराबर था और हमने आखिरी दो रक्अतो में आप ﷺ के कयाम का अंदाज़ा लगाया तो वह उस से आधा था, हमने असर की पहली दो रक्अतो का अंदाज़ा लगाया तो वह ज़ुहर की आखिरी दो रक्अतो के कयाम के बराबर था, जबकि असर की आखिरी दो रकते उसकी पहली दो रक्तो से आधी थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (156 / 452)، (1014)

٨٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الظُّهْرِ ب (اللَّيْل إِذا يغشى)»» وَفِي رِوَايَةٍ بِ (سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى)»» وَفِي الْعَصْرِ نَحْوَ ذَلِكَ وَفِي الصُّبْحِ أَطْوَلَ من ذَلِك. رَوَاهُ مُسلم

830. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ नमाज़ ए ज़ुहर में (،،،، والليل اذا يغشیٰ) और एक दूसरी रिवायत में है (،،،، سبح اسم ربک الاعلیٰ) और असर में इसी तरह जबकि नमाज़ ए फजर में उस से ज़्यादा लम्बी किराअत किया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (170 / 459)، (1029)

٨٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِ «الطُّورِ»

831. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ ए मग़रिब में सुरह तौर पढ़ते हुए सुना| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (765) و مسلم (174 / 463)، (1035)

٨٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقْرَأ فِي الْمغرب ب (المرسلات عرفا)

832. उम्म फ़ज़ल बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ ए मग़रिब में (،،،، والمرسلات عرفاً) पढ़ते हुए सुना| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (763) و مسلم (173 / 462)، (1033)

٨٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ مُعَاذُ يُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَأْتِي فَيَؤُمُّ قَوْمَهُ فَصَلَّى لَيْلَةً مَعَ

النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِشَاءَ ثُمَّ أَتَى قَوْمَهُ فَأَمَّهُمْ فَافْتَتَحَ بِسُورَةِ الْبَقَرَةِ فَانْحَرَفَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ ثُمَّ صَلَّى وَحْدَهُ وَانْصَرَفَ فَقَالُوا لَهُ أَنَافَقْتَ يَا فُلَانُ قَالَ لَا وَاللَّهِ وَلَآتِيَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فلأخبرنه فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا أَصْحَابُ نَوَاضِحَ نَعْمَلُ بِالنَّهَارِ وَإِنَّ مُعَاذًا صَلَّى مَعَكَ الْعِشَاءَ ثُمَّ أَتَى قَوْمَهُ فَافْتَتَحَ بِسُورَةِ الْبَقَرَةِ فَأَقْبَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى مُعَاذٍ فَقَالَ: " يَا مُعَاذُ أَفَتَّانٌ؟ أَنْتَ اقْرَأْ: (الشَّمْس وَضُحَاهَا " (وَالضُّحَى)»» (وَاللَّيْل إِذا يغشى)»» و (وَسبح اسْم رَبك الْأَعْلَى)

833. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के साथ नमाज़ ए ईशा पढ़ा करते थे फिर जा कर अपने कौम की इमामत कराते थे, एक रात उन्होंने नबी ﷺ के साथ नमाज़ ए ईशा पढ़ी, फिर अपने कौम के पास गए और उन्हें नमाज़ पढ़ाइ तो उन्होंने सुरह बकरह शुरू कर दी, एक आदमी ने अलग हो कर सलाम फेर दिया, फिर अकेले ही नमाज़ पढ़ कर चला गया तो सहाबा ने इसे कहा ए फलां क्या तू मुनाफ़िक़ हो गया है? उस ने कहा: नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर आप से शिकायत करूँगा, चुनांचे वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल, हम ऊटों पर पानी लाकर खेतो और बाग़ात को सेराब करने वाले लोग है, दिन फिर काम काज करते हैं और यह मुआज़ है की उन्होंने आप के साथ नमाज़ ए ईशा अदा की, फिर अपने कौम के पास आए तो उन्होंने सुरह बकरह शुरू कर दी, पस (ये सुन कर) रसूलुल्लाह ﷺ मुआज़ की तरफ मुतवज्जे हुए और फ़रमाया: “मुआज़ क्या तुम लोगों को फितने में मुब्तिला करना चाहते हो तुम (والليل اذا يغشىٰ) (،،،، الشَّمْس وَضُحَاهَا ،،،،) और سبح اسم ربک الاعلیٰ ،،،،) पढ़ा करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (705) و مسلم (178 / 465)، (1040)

٨٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن الْبَراء قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْرأ فِي الْعشَاء: (والتين وَالزَّيْتُون)»» وَمَا سَمِعت أحدا أحسن صَوتا مِنْهُ

834. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को नमाज़ ए ईशा में (والتين وَالزَّيْتُون) पढ़ते हुए सुना और मैंने आप ﷺ से ज़्यादा खुश अल्हान कोई और नहीं सुना| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (767) و مسلم (177 / 464)، (1039)

٨٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الْفَجْرِ ب (ق وَالْقُرْآن الْمجِيد)»» وَنَحْوِهَا وَكَانَتْ صَلَاتُهُ بَعْدُ تَخْفِيفًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

835. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ नमाज़ ए फजर में (،،،، ق وَالْقُرْآن الْمجِيد) और इस तरह की सूरते पढ़ा करते थे और इस यानी नमाज़ ए फजर के बाद आप ﷺ की बाकी नमाज़े मुख़्तसर होती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (168 / 458)، (1027)

٨٣٦ - (صَحِيح) وَعَن عَمْرو بن حُرَيْث: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْرَأ فِي الْفجْر (وَاللَّيْل إِذا عسعس)»» رَوَاهُ مُسلم

836. अमर बिन हुरैस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को नमाज़ ए फजर में (والليل اذا عسعس ،،،،) पढ़ते हुए सुना| (मुस्लिम)

رواه مسلم (164 / 456)، (1023)

٨٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ السَّائِبِ قَالَ: صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصُّبْحَ ص:٢٦ بِمَكَّةَ فَاسْتَفْتَحَ سُورَةَ (الْمُؤْمِنِينَ)»» حَتَّى جَاءَ ذِكْرُ مُوسَى وَهَارُونَ أَوْ ذِكْرُ عِيسَى أَخَذَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَعْلَةٌ فَرَكَعَ. رَوَاهُ مُسلم

837. अब्दुल्लाह बिन साइब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें मक्का में नमाज़ ए फजर पढ़ाइ तो आप ने सुरह मोमिनुन शुरू की हत्ता कि मूसा व हारून अलैहिस्सलाम का ज़िक्र आया तो नबी ﷺ को रोने की वजह से खांसी आने लगी जिस पर आप ने रुकू कर दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (163 / 455)، (1022)

٨٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْرَأ فِي الْفجْر يَوْم الْجُمُعَة ب (الم تَنْزِيلُ)»» فِي الرَّكْعَةِ الْأُولَى وَفِي الثَّانِيَةِ (هَل أَتَى على الْإِنْسَان)

838. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जुमा के रोज़ नमाज़ ए फजर की पहली रक्अत में सुरह सजदाह और दूसरी रक्अत में सुरह हर पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (891) و مسلم (65 / 880)، (2034)

٨٣٩ - (صَحِيح) وَعَن عبيد الله بن أبي رَافع قَالَ: اسْتَخْلَفَ مَرْوَانُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَلَى الْمَدِينَةِ وَخَرَجَ إِلَى مَكَّةَ فَصَلَّى لَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ الْجُمُعَةَ فَقَرَأَ سُورَةَ (الْجُمُعَةِ)»» فِي السَّجْدَةِ الْأُولَى وَفِي الْآخِرَة: (إِذا جَاءَك الْمُنَافِقُونَ)»» فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقْرَأ بهما يَوْم الْجُمُعَة. رَوَاهُ مُسلم

839. अब्दुल्लाह बिन अबी राफीअ बयान करते हैं, मरवान अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु को मदीना का खलीफा मुकर्रर कर के खुद मक्का तशरीफ़ ले गए, चुनांचे उन्होंने हमें नमाज़ ए जुमा पढ़ाइ तो उन्होंने पहली रक्अत में सूरत अल जुमा और दूसरी रक्अत में सूरत अल मुनाफिकुन पढ़ी, तो फिर उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को जुमा के रोज़ यह सूरते पढ़ते हुए सुना| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 877)، (2026)

٨٤٠ - (صَحِيح) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الْعِيدَيْنِ وَفِي الْجُمُعَةِ بِ (سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى)»» و (هَل أَتَاك حَدِيث الغاشية)»» قَالَ: وَإِذَا اجْتَمَعَ الْعِيدُ وَالْجُمُعَةُ فِي يَوْمٍ وَاحِدٍ قَرَأَ بِهِمَا فِي الصَّلَاتَيْنِ. رَوَاهُ مُسلم

840. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ ए इदैन और नमाज़ ए जुमा में (سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى) और (هَل أَتَاك حَدِيث الغاشية) पढ़ा करते थे और उन्होंने ने फ़रमाया: अगर ईद जुमा के रोज़ जाती तो फिर आप ﷺ दोनों नमाज़ो में यही दोनों सूरते तिलावत फरमाते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 878)، (2028)

٨٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ سَأَلَ أَبَا وَاقِدٍ اللَّيْثِيَّ: (مَا كَانَ يَقْرَأُ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَضْحَى وَالْفِطْرِ؟ فَقَالَ: كَانَ يَقْرَأُ فِيهِمَا: ب (ق وَالْقُرْآن الْمجِيد)»» و (اقْتَرَبت السَّاعَة)»» رَوَاهُ مُسلم

841. अब्दुल्लाह उसे रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने अबू वाकिद लयस रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया के रसूलुल्लाह ﷺ ईद उल अदहा और ईद उल फ़ित्र में कौन सी सूरते तिलावत किया करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ इन दोनों में (ق وَالْقُرْآن الْمجِيد) और (اقْتَرَبت السَّاعَة) तिलावत किया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 891)، (2059)

٨٤٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ فِي رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ: (قُلْ يَا أَيهَا الْكَافِرُونَ)»» و (قل هُوَ الله أحد)»» رَوَاهُ مُسلم

842. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फज्र की दो रक्अतो सुन्नतो में (قُلْ يَا أَيهَا الْكَافِرُونَ) और (قل هُوَ الله أحد) तिलावत फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (98 / 726)، (1690)

٨٤٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقْرَأ فِي رَكْعَتي الْفَجْرِ: (قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا)»» وَالَّتِي فِي آلِ عِمْرَانَ (قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ)»» رَوَاهُ مُسلم

843. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ फजर की रक्अतो में सूरत अल बकरह की आयात (قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا) और सुरह आले इमरान से (قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ) पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (100 / 727)، (1692)

नमाज़ में किराअत का बयान • بَاب الْقِرَاءَة فِي الصَّلَاة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٨٤٤ - (لم تتمدراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْتَتِحُ صَلَاتَهُ بِ (بِسم الله الرَّحْمَن الرَّحِيم)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِذَاكَ

844. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने नमाज़ (بِسم الله الرَّحْمَن الرَّحِيم) से शुरू किया करते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस की सनद क़वी नहीं| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (245) * قلت : اخطا الامام الترمذی فضعفه

٨٤٥ - (صَحِيح) وَعَن وَائِل بن حجر قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقْرَأ: (غير المغضوب عَلَيْهِم وَلَا الضَّالّين)»» فَقَالَ: آمِينَ مَدَّ بِهَا صَوْتَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي وَابْن مَاجَه

845. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना के आप ने (غير المغضوب عليهم ولا الضالين) पढ़ा तो बुलंद आवाज़ से “ आमीन” कहा| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (248 وقال : حدیث حسن) و ابوداؤد (932) و الدارمی (1 / 284 ح 1250) و ابن ماجه (855) و النسائی (2 / 145 ح 933] * وجاء فی بعض الروایات ’’ رفع بها صوته ‘‘ و ’’ جهر بآمین ‘‘ و الکل صحیح و روایة سفیان الثوری عن سلمة کهیل قویة لانه کان لا یدلس عنه کما نقل عن البخاری رحمه اللهو هذا الحدیث رواه عنه یحیی القطان و روایة یحیی القطان عن سفیان الثوری محمولة علی سماع الثوری من شیخه

٨٤٦ - (ضَعِيف) وَعَن أبي زُهَيْر النميري قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتِ يَوْمٍ فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ قَدْ أَلَحَّ فِي الْمَسْأَلَةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» أَوْجَبَ إِنْ خَتَمَ ". فَقَالَ: ص:٢٦ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: بِأَيِّ شَيْءٍ يَخْتِمُ؟ قَالَ: «بآمين» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

846. अबू ज़ोहरी नुमैरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक रात रसूलुल्लाह ﷺ के साथ निकला तो हम एक आदमी के पास से गुज़रे जो बड़ी आजिज़ी के साथ अल्लाह से दुआ कर रहा था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अगर उस ने दुआ ख़त्म की तो जन्नत व मगफिरत वाजिब कर ली”, लोगों में से किसी आदमी ने अर्ज़ किया, वह किस चीज़ के साथ ख़त्म करे फ़रमाया : ” आमीन के साथ| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (938) * فيه صبيح بن محرز : مجهول الحال لم يوثقه غير ابن حبان

٨٤٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الْمَغْرِبَ بِسُورَةِ (الْأَعْرَافِ)»»

فَرَّقَهَا فِي رَكْعَتَيْنِ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

847. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए मग़रिब की दो रक्अतो में सुरह आराफ़ तिलावत फरमाई| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائى (2 / 170 ح 992)

٨٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: كُنْتُ أَقُودُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاقَتَهُ فِي السَّفَرِ فَقَالَ لِي: «يَا عُقْبَةُ أَلَا أُعَلِّمُكَ خَيْرَ سُورَتَيْنِ قُرِئَتَا؟» فَعَلَّمَنِي (قُلْ أَعُوذُ بِرَبّ الفلق)»» و (قل أَعُود بِرَبّ النَّاس)»» قَالَ: فَلَمْ يَرَنِي سَرَرْتُ بِهِمَا جَدًّا فَلَمَّا نَزَلَ لِصَلَاةِ الصُّبْحِ صَلَّى بِهِمَا صَلَاةَ الصُّبْحِ لِلنَّاسِ فَلَمَّا فَرَغَ الْتَفَتَ إِلَيَّ فَقَالَ: «يَا عُقْبَةَ كَيْفَ رَأَيْتَ؟» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

848. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं दौरान ए सफ़र रसूलुल्लाह ﷺ की ऊंटनी की महार थाम कर आगे आगे चला करता था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उक्बा क्या मैं तुम्हें पढ़ी जाने वाली दो बेहतरीन सूरते न सिखाऊ ?” आप ने सूरत अल फलक (قُلْ أَعُوذُ بِرَبّ الفلق) और सूरत अल नास (قل أَعُود بِرَبّ النَّاس) मुझे सिखाई, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने उन सूरतो की वजह से मुझे ज़्यादा खुश न देखा, पस जब आप नमाज़ सुबह के लिए तशरीफ़ लाए, तो आप ने नमाज़ ए फजर पढ़ाते हुए हमें दो सूरते तिलावत फरमाइ, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो मेरी तरफ तवज्जो करते हुए फ़रमाया: “उक्बा तुमने (इन सूरतो की अज़मत को) कैसे देखा ?” (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 149 ح 17483) و ابوداؤد (1462) و النسائى (2 / 158 ح 954) [و صححه ابن حبان (1776 ، 1777) و الحاكم (2 / 540) و وافقه الذهبى] * و للحديث طريق آخر عند مسلم (814)، (1891) وغيره

٨٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي صَلَاةِ الْمَغْرِبِ لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ: (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ)»» و (قل هُوَ الله أحد)»» رَوَاهُ فِي شرح السّنة

849. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जुमा की रात नमाज़ ए मग़रिब में सूरतुल काफिरून (قُلْ يَا أَيهَا الْكَافِرُونَ) और सूरत अल इखलास (قل هُوَ الله أحد) तिलावत किया करते थे| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنه (3 / 81 تحت ح 605 بدون سند) [و البيهقى (2 / 391)] باسناد ضعيف* سعيد بن سماك بن حرب : ضعيف على الراجح

٨٥٠ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ ابْنِ عُمَرَ إِلَّا أَنه لم يذكر «لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ»

850. इब्ने माजा ने इसे इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है लेकिन उन्होंने जुमा की रात का ज़िक्र नहीं किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (833) * احمد بن بديل حدث عن حفص بن غياث و غيره احاديث انكرت عليه ، و الحديث ضعفه ابو زرعة الرازى وغيره

٨٥١ - (حسن) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: مَا أحصي مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَفِي الرَّكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْفَجْرِ: بِ (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ)»» و (قل هوا الله أحد)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

851. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मग़रिब के बाद दो रक्अतो में और फज्र से पहले दो रक्अतो में सूरतुल काफिरून (قُلْ يَا أَيهَا الْكَافِرُونَ) और सूरत अल इखलास (قل هُوَ الله أحد) इतनी मर्तबा पढ़ते हुए सुना की मैं शुमार नहीं कर सकता| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (431 وقال : غريب) * عبدالملک بن معدان ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

٨٥٢ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ إِلَّا أَنه لم يذكر: «بعد الْمغرب»

852. इब्ने माजा ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है लेकिन उन्होंने “ मग़रिब के बाद” का ज़िक्र नहीं किया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (1148) [بلفظ : قبل الفجر ، و رواه مسلم (98 / 726)، (1690)]

٨٥٣ - (حسن) وَعَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: مَا صَلَّيْتُ وَرَاءَ أَحَدٍ أَشْبَهَ صَلَاةً بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ فلَان. قَالَ سُلَيْمَان: صَلَّيْتُ خَلْفَهُ فَكَانَ يُطِيلُ الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ مِنَ الظّهْر ويخفف الْأُخْرَيَيْنِ ويخفف الْعَصْر وَيَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِقِصَارِ الْمُفَصَّلِ وَيَقْرَأُ فِي الْعِشَاءِ بِوَسَطِ الْمُفَصَّلِ وَيَقْرَأُ فِي الصُّبْحِ بِطِوَالِ الْمُفَصَّلِ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ إِلَى ويخفف الْعَصْر

853. सुलेमान बिन यस्सार रहिमहुल्लाह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने फलां शख़्स के सिवा किसी के पीछे ऐसी नमाज़ नहीं पढ़ी, जो रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के बहोत मुशाबह (अनुरूप) हो, सुलेमान रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने इस फलां शख़्स के पीछे नमाज़ पढ़ी तो वह ज़ुहर की पहली दो रकते लम्बी और आखिरी दो रकते हल्की पढ़ा करते थे और नमाज़ ए असर हल्की पढ़ा करते थे जबकि नमाज़ ए मग़रिब में छोटी मुफ़स्सल ईशा में दरमियानी मुफ़स्सल और फज्र में लम्बी मुफ़स्सल सूरत पढ़ा करते थे नसई, और इब्ने माजा ने “ नमाज़ ए असर हल्की पढ़ा करते थे” तक रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (2 / 167 / ح 983) و ابن ماجه (827) [و صححه ابن خزيمة (520) و ابن حبان (الاحسان : 1837)]

٨٥٤ - (حسن) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: كُنَّا خَلْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي صَلَاةِ الْفَجْرِ فَقَرَأَ فَثَقُلَتْ عَلَيْهِ الْقِرَاءَةُ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ: «لَعَلَّكُمْ تقرؤون ص:٢٧ خَلْفَ إِمَامِكُمْ؟» قُلْنَا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: «لَا تَفْعَلُوا إِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ فَإِنَّهُ لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَلِلنَّسَائِيِّ مَعْنَاهُ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُد قَالَ: «وَأَنا أَقُول مَالِي يُنَازِعنِي الْقُرْآن؟ فَلَا تقرؤوا بِشَيْءٍ مِنَ الْقُرْآنِ إِذَا جَهَرْتُ إِلَّا بِأُمِّ الْقُرْآن»

854. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नमाज़ ए फजर में नबी ﷺ के पीछे थे, आप ने किराअत की तो आप पर किराअत गिराह हो गई, चुनांचे जब आप ﷺ (नमाज़ से) फारिग़ हो गए तो फ़रमाया: “शायद की तुम अपने इमाम के पीछे किराअत करते हो?” हमने अर्ज़ किया: जी हाँ! अल्लाह के रसूल, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुरह फातिहा के अलावा किराअत न किया करो, क्योंकि जो इसे नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं होती”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई इन्ही माने और अबू दावुद की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं भी अपने दिल में कहता था के कुरान पढ़ना मुझ पर दुश्वार क्यों है? जब में बुलंद आवाज़ से किराअत करूँ तो तुम सुरह फातिहा के सिवा कुछ न पढ़ा करो| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (823 [824 و سنده حسن لذاته ، فيه نافع بن محمود ثقه و ثقه الداقطنى و الذهبى و غيرهما و اخطا من جهله] و الترمذى (311 وقال : حديث حسن) و النسائى (2 / 141 ح 921) * مكحول التابعى برى من التدليس و للحديث شواهد عند ابى داود (824) وغيره فالحديث صحيح كما حققته فى ’’ الكواكب الدرية فى وجوب الفاتحة خلف الامام فى الجهرية ‘‘ و الحديث يدل على وجوب الفاتحة خلف الامام لان فيه قال للمنذرى :’’ فانه لا صلوة لمن لم يقرا بها‘‘

٨٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْصَرَفَ مِنْ صَلَاةٍ جَهَرَ فِيهَا بِالْقِرَاءَةِ فَقَالَ: «هَلْ قَرَأَ مَعِي أَحَدٌ مِنْكُمْ آنِفًا؟» فَقَالَ رَجُلٌ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: " إِنِّي أَقُولُ: مَا لِي أُنَازَعُ الْقُرْآنَ؟ «. قَالَ فَانْتَهَى النَّاسُ عَنِ الْقِرَاءَةِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا جَهَرَ فِيهِ بِالْقِرَاءَةِ مِنَ الصَّلَوَاتِ حِينَ سَمِعُوا ذَلِكَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ نَحْوَهُ

855. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अपने किसी जहरी किराअत वाली नमाज़ से फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “क्या तुम में से किसी शख़्स ने अभी अभी मेरे साथ किराअत की है? तो एक आदमी ने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं भी दिल में कहता था मुझे क्या हुआ है? मुझ से कुरान छीना जा रहा है ‘ रावी बयान करते हैं, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने जब रसूलुल्लाह ﷺ से यह बात सुनी तो वह जहरी किराअत वाली नमाज़ो मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ किराअत करने से रुक गए| मालिक, अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, और इब्ने माजा ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالك (1 / 86 ح 190) و احمد (2 / 240 ح 7268) و الترمذى (312 وقال : حسن) و النسائى (2 / 140 ، 141 ح 920) و ابن ماجه (848) * و الحديث لا يدل على نهى الفاتحة خلف الامام كما حققه الامام الترمذى رحمه اللهوقوله : فانتهى الناس الخ مدرج

٨٥٦ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر والبياضي قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُصَلِّيَ يُنَاجِي رَبَّهُ فَلْيَنْظُرْ مَا يُنَاجِيهِ بِهِ وَلَا يَجْهَرْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ بِالْقُرْآنِ» . رَوَاهُ أَحْمد

856. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और बयादी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:

“नमाज़ी अपने रब से कलाम करता है, पस इसे गौर करना चाहिए के वह उस के साथ क्या कलाम कर रहा है, एक दूसरे के पास बुलंद आवाज़ से कुरान न पढ़ा करो”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (2 / 67 ح 5349 ، 2 / 36 ، 129 ، حديث ابن عمر ، 4 / 344) و مالک (1 / 80 ح 174 حديث البياضی) * و للحديث شواهد ، انظر سنن ابی داود (1332)

٨٥٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا وَإِذَا قَرَأَ فَأَنْصِتُوا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

857. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इमाम तो इसलिए बनाया जाता है के उसकी इक्तेदा की जाए, पस जब वह (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कह चुके तो फिर तुम (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो और जब वह किराअत करे तो तुम ख़ामोश रहो”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (604) و النسائی (2 / 142 ح 923) و ابن ماجه (846) و هذا الحديث منسوخ بدليل فتوى ابی هريرة بقراة الفاتحة خلف الامام فی الصلوة الجهرية بعد وفاة رسول الله صلی الله عليه و آله وسلم ، اخرجه الحميدی (980 بتحقيقی) و اصله عند مسلم (395) وله شاهد صحيح فی جزء القراء للبخاری (بتحقيقی / نصر الباری : 273 ، 283)

٨٥٨ - (حسن) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي لَا أَسْتَطِيعُ أَنْ آخُذَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْئًا فَعَلِّمْنِي مَا يُجْزِئُنِي قَالَ: «قُلْ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» . قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا لِلَّهِ فَمَاذَا لِي؟ قَالَ: «قُلْ اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي» . فَقَالَ هَكَذَا بِيَدَيْهِ وَقَبَضَهُمَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَّا هَذَا فَقَدَ مَلَأَ يَدَيْهِ مِنَ الْخَيْرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَانْتَهَتْ رِوَايَةُ النَّسَائِيِّ عِنْد قَوْله: «إِلَّا بِاللَّه»

858. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मैं कुरान से कुछ भी याद नहीं कर सकता, लिहाज़ा मुझे आप कुछ सिखा दें जो मेरे लिए काफी हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कहो ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ)) “ अल्लाह पाक है, हर किस्म की हम्द शिताइश इसी के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है, और गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से है” इस शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह तो अल्लाह के लिए है, तो मेरे लिए किया है आप ﷺ ने फ़रमाया: “कहो ((اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي)) “ अल्लाह मुझ पर रहम फरमा मुझे आफियत अता फरमा मुझे हिदायत नसीब फरमा और मुझे रिज़्क़ अता फरमा”, पस इस शख़्स ने अपने हाथो से इरशाद किया और उन्हें बंद किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहाँ तक इस आदमी का ताल्लुक है तो उस ने अपने हाथ खैर से भर लिए”| अबू दावुद, और इमाम नसई रहिमहुल्लाह की रिवायत ((الا بالله)) तक है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (832) و النسائی (2 / 143 ح 925) [و صححه ابن خزيمة (544) و ابن حبان (475) و الحاكم (1 / 241) علی شرط البخاری و وافقه الذهبی]

٨٥٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ ص:٢٧ إِذَا قَرَأَ (سبح اسْم رَبك الْأَعْلَى)»» قَالَ: (سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

859. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ जब (سبح اسم ربک الاعلیٰ) पढ़ते तो आप ﷺ फरमाते : ((سبحان ربی الاعلیٰ)) | (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (1 / 232 ح 2066) و ابوداؤد (883) [و صححه الحاکم علی شرط الشيخين (1 / 263 ، 264 و وافقه الذهبی) * ابو اسحاق مدلس و عنعن و ثبت نحوه موقوفًا عن ابی موسی الاشعری و ابن الزبير و عمران بن حصين رضی الله عنهم

٨٦٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " من قَرَأَ مِنْكُم ب (التِّين وَالزَّيْتُون)»» فَانْتهى إِلَى (أَلَيْسَ الله بِأَحْكَم الْحَاكِمين)»» فَلْيَقُلْ: بَلَى وَأَنَا عَلَى ذَلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ. وَمن قَرَأَ: (لَا أقسم بِيَوْم الْقِيَامَة)»» فَانْتَهَى إِلَى (أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَادِرٍ عَلَى أَن يحيي الْمَوْتَى)»» فَلْيَقُلْ بَلَى. وَمَنْ قَرَأَ (وَالْمُرْسَلَاتِ)»» فَبَلَغَ: (فَبِأَيِّ حَدِيث بعده يُؤمنُونَ)»» فَلْيَقُلْ: آمَنَّا بِاللَّهِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ إِلَى قَوْلِهِ: (وَأَنَا عَلَى ذَلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ)

860. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से जो शख़्स सूरत अत्तिन (التِّين وَالزَّيْتُون) की तिलावत करे और जब वह सूरत की आखिरी आयात (اليس الله باحكم الحاكمين) पर पहुंचे तो वह कहे ((بلیٰ : وانا علیٰ ذلک من الشاهدين)) ’ “ क्यों नहीं” ऐसे ही है और मैं उस पर गवाह हूँ” और जो शख़्स सूरत अल कियामत की तिलावत करे और आखिरी आयत (اليس ذلک بقادر علیٰ ان يحی الموتیٰ) “ क्या यह उस पर कादिर नहीं के वह मर्दों को जिंदा करे”, पर पहुंचे तो वह कहे ((بلیٰ)) “ क्यों नहीं वह ज़रूर कादिर है” और जो शख़्स अल मुरसलात की तिलावत करे और वह (فبای حديث بعده يومنون) “ उस के बाद वह किसी हदीस पर ईमान लाएँगे ‘‘- पर पहुंचे तो वह कहे ((اامنا بالله)) “ हम अल्लाह पर ईमान लाए”| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने (وانا علیٰ ذلک من الشاهدين) तक रिवायत किया है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (887) و الترمذی (3347) * رجل بدوی : مجهول ، و للحديث طرق ضعيفة

٨٦١ - (حَسَنٌ) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَصْحَابه فَقَرَأَ عَلَيْهِم سُورَةَ الرَّحْمَنِ مِنْ أَوَّلِهَا إِلَى آخِرِهَا فَسَكَتُوا فَقَالَ: «لَقَدْ قَرَأْتُهَا عَلَى الْجِنِّ لَيْلَةَ الْجِنِّ فَكَانُوا أَحْسَنَ مَرْدُودًا مِنْكُمْ كُنْتُ كُلَّمَا أَتَيْتُ على قَوْله (فَبِأَيِّ آلَاء رَبكُمَا تُكَذِّبَانِ)»» قَالُوا لَا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

861. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें पूरी सुरह रहमान सुनाई तो वह ख़ामोश रहे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस रात जिन्न आए, मैंने जब (فبای الاء ربکما تكذبن) “ तुम अपने रब की कौन कौन से नेअमतो को झुठलाओगे”| पढ़ा तो उन्होंने बहोत अच्छा जवाब दिया था, कहा: हमारे रब हम तेरी नेअमतो में से किसी चीज़ को भी नहीं झुठलाते और हर किस्म की हम्द तेरे लिए है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3291) و صححه الحاکم علی شرط الشيخين (2 / 473) و وافقه الذهبی] * سنده ضعيف و للحديث شاهد حسن عند البزار (کشف الاستار : 3 / 74 ح 2269) و الطبری فی تفسيره (27 / 72) وهو به حسن



नमाज़ में किराअत का बयान • بَاب الْقِرَاءَة فِي الصَّلَاة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٨٦٢ - (صَحِيح) عَن معَاذ بن عبد الله الْجُهَنِيّ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا مِنْ جُهَيْنَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَرَأَ فِي الصُّبْح (إِذا زلزلت)»» فِي الرَّكْعَتَيْنِ كلتهما فَلَا أَدْرِي أَنَسِيَ أَمْ قَرَأَ ذَلِكَ عَمْدًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

862. मुआज़ बिन जुह्नी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि जुहय्न कबिले के एक आदमी ने उन्हें बताया की उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना के आप ने फज्र की दो रक्अतो में सूरत अल ज़ुलज़ला तिलावत फरमाई मैं नहीं जानता के आप ﷺ ने भूल कर ऐसे किया या जान बुझकर| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (816)

٨٦٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُرْوَةَ قَالَ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ صَلَّى الصُّبْحَ فَقَرَأَ فِيهِمَا بِ (سُورَةِ الْبَقَرَةِ)»» فِي الرَّكْعَتَيْنِ كِلْتَيْهِمَا. رَوَاهُ مَالك

863. उरवा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ ए फजर पढ़ी तो उन्होंने दोनों रक्अतो में सूरत अल बकरह तिलावत फरमाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (1 / 82 ح 179) * السند منقطع ، عروة : لم يدرک سيدنا ابابکر الصديق رجی الله عنه

٨٦٤ - (صَحِيح) وَعَن الفرافصة بن عُمَيْر الْحَنَفِيّ قَالَ: مَا أَخَذْتُ سُورَةَ يُوسُفَ إِلَّا مِنْ قِرَاءَةِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ إِيَّاهَا فِي الصُّبْحِ وَمن كَثْرَة مَا كَانَ يُرَدِّدهَا. رَوَاهُ مَالك

864. फराफिसत बिन उमैर हनफी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने सुरह युसूफ उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु की किराअत से याद की के वह नमाज़ ए फजर में कसरत के साथ उसकी तिलावत किया करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 82 ح 181)

٨٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: صلينَا وَرَاء عمر ابْن الْخطاب الصُّبْح فَقَرَأَ فيهمَا بِسُورَةِ يُوسُفَ وَسُورَةِ الْحَجِّ قِرَاءَةً بَطِيئَةً قِيلَ لَهُ: إِذًا لَقَدْ كَانَ يَقُومُ حِينَ يَطْلُعُ الْفجْر قَالَ: أجل. رَوَاهُ مَالك

865. आमिर बिन रबिआ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमने उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़ ए फजर पढ़ी तो उन्होंने दोनों रक्अतो में तजविद के साथ सुरह युसूफ और सुरह हज तिलावत फरमाई, उन से

पूछा गया के तब तो वह तुलुअ ए फज्र के साथ ही नमाज़ शुरू करते होंगे उन्होंने कहा: हां| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 82 ح 180)

٨٦٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: مَا مِنَ الْمُفَصَّلِ سُورَةٌ صَغِيرَةٌ وَلَا كَبِيرَةٌ إِلَّا قَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَؤُمُّ بِهَا النَّاسَ فِي الصَّلَاة الْمَكْتُوبَة. رَوَاهُ مَالك

866. अम्र बिन शुऐब रहिमहुल्लाह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने मुफ़स्सल सूरतो (यानी अल हुजुरात से आख़िर तक) में से हर छोटी बड़ी सूरत को रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ुबान मुबारक से सुना के आप फ़र्ज़ नमाज़ो की इमामत कराते हुए उनकी तिलावत फ़रमाया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (لم اجده) [و ابوداؤد (814)] * فیه محمد بن اسحاق بن یسار : مدلس و عنعن

٨٦٧ - (مُرْسل حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي صَلَاةِ الْمَغْرِبِ بِ (حم الدُّخَانِ)»» رَوَاهُ النَّسَائِيّ مُرْسلا

867. अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसउद बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए मग़रिब में सूरत अल दुखान तिलावत फरमाई इमाम नसई ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (2 / 169 ح 89) * عبدالله بن عتبة بن مسعود : ممن رای النبی صلی الله علیه و آله وسلم وهو صحابی صغیر رضی الله عنه

بَاب الرُّكُوع • रुकू का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٨٦٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقِيمُوا الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ فَوَاللَّهِ إِنِّي لأَرَاكُمْ من بعدِي»

868. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आप ﷺ ने फरमाया रुकु और सुजूद मुकम्मल किया करो अल्लाह की कसम मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता हूं| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (742) و مسلم (110 / 425)، (959)

٨٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: كَانَ رُكُوعُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسُجُودُهُ وَبَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ وَإِذَا رَفَعَ مِنَ الرُّكُوعِ مَا خَلَا الْقيام وَالْقعُود قَرِيبا من السوَاء

869. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ का रुकु और आपका सजदो के दरम्यान बेठना (जलसा ए इस्तराहत) और जब आप रुकु से खड़े होते (कौमा) तो कयाम और तशह्हूद के अलावा यह सब तकरीबन बराबर थे| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (792) و مسلم (193 / 471)، (1057)

٨٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» قَامَ حَتَّى نَقُولَ: قَدْ أَوْهَمَ ثُمَّ يَسْجُدُ وَيَقْعُدُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ حَتَّى نَقُولَ: قَدْ أوهم. رَوَاهُ مُسلم

870. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जब (سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ) अल्लाहने सुना जीसने उसकी तारीफ की कहते हैं तो आप खड़े रहते हत्ताकी हम (दील में) कहते की आपको वहम डाल दीया गया है, फिर आप सजदा करते और आप दो सजदो के दरम्यान बेठते, हत्ता कि हम (दिल में) कहते की आप को वहम डाल दीया गया है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (196 / 473)، (1061)

٨٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي» يَتَأَوَّلُ الْقُرْآن

871. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं नबी ﷺ अपने रुकु और सुजुद में कसरत के साथ यह दुआ किया करते थे; "سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي" "ए हमारे परवरदीगार तू पाक है हम तेरी तारीफ़ बयान करते हैं, मुझे बख्श दे."आप ﷺ कुरान पर अमल करते थे | (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (817) و مسلم (217 / 484)، (1085)

٨٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: «سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رب الْمَلَائِكَة وَالروح» . رَوَاهُ مُسلم

872. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रीवायत है कि नबी ﷺ अपने रुकु और सुजुद में यह दुआ किया करते थे ;"سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ ربُّ الْمَلَائِكَة وَالرُّوْح” (मेरे रुकु और सजदा इस जात के लिए है जो फरीश्तो और जीब्रील अलैहिस्सलाम का रब निहायत पाक और मुकद्दस है "| (मुस्लिम)

رواه مسلم (223 / 487)، (1091)

٨٧٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَقْرَأَ الْقُرْآنَ رَاكِعًا أَوْ سَاجِدًا فَأَمَّا الرُّكُوعُ فَعَظِّمُوا فِيهِ الرَّبَّ وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنٌ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

873. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया;"मुझे रुकु और सुजुद में कुरान पढ़ने से मना किया गया है रहा रुकु तो इस में रब की अझमत बयान करो, और सजदो में खुब दुआ करो, पस तुम्हारी दुआ कबुलीयत के लायक होगी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (207 / 479)، (1074)

٨٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تقدم من ذَنبه "

874. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जब इमाम سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ "अल्लाह ने सुन लिया जिस ने उसकी तारीफ़ की" कहे तो तुम اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْد (ए अल्लाह हमारे रब, सारी तारीफ़ तेरे लिए है) कहो क्योंकि जीसका यह कौल फरिश्तों की कौल से मील गया तो उसका पीछले गुनाह बख्श दिए जाएंगे| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (796) و مسلم (71 / 409)، (913)

٨٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَفَعَ ظَهْرَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ من شَيْء بعد» . رَوَاهُ مُسلم

875. अब्दुल्लाह बिन अबी अवफी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ रुकु से अपनी कमर उठाते तो आप यह दुआ पढ़ते थे ; (سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ من شَيْء بعد) "अल्लाह ने सुना जीसने उसकी तारीफ की, ऐ अल्लाह! हमारे रब, सारी तारीफ तेरे लिए है आसमानों और ज़मीन और हर एसी चीज की जो इसके बराबर हो जो तू चाहे" | (मुस्लिम)

رواه مسلم (202 / 476)، (1067)

٨٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: «اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ أَهْلُ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجد» . رَوَاهُ مُسلم

876. अबु सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ रुकू से सर उठाते तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे ; ऐ अल्लाह! हमारे रब हर किस्म की तारीफ सिर्फ तेरे लिए है, आसमान और जमीन और हर एसी चीज

के बराबर जो तू चाहे और बंदों ने जो तेरी तारीफ और शान बयान कि वह तेरे ही लायक है, हम सब तेरे ही बंदे हैं, अल्लाह जो चीजें तू अता कर दे इसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिस चीज को तू रोक ले इसे कोई अता करने वाला नहीं और दौलतमंद की दौलत तेरे यहां कोई फायदा नहीं दे सकती| (मुस्लिम)

رواه مسلم (205 / 477)، (1071)

٨٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي وَرَاءَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» . فَقَالَ رَجُلٌ وَرَاءَهُ: رَبَّنَا وَلَكَ ص:٢٧ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: «مَنِ الْمُتَكَلِّمُ آنِفًا؟» قَالَ: أَنَا. قَالَ: «رَأَيْتُ بِضْعَةً وَثَلَاثِينَ مَلَكًا يَبْتَدِرُونَهَا أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أول» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

877. रीफाअत बिन राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम ने नबी ﷺ के पीछे नमाज पढ़ी जब आप ﷺ ने रुकू से सर उठाया तो फरमाया سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ "अल्लाह ने सुन लिया जिस ने उसकी तारीफ़ की" आप ﷺ के पीछे एक आदमी ने कहा; رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ (हमारे रब तेरे ही वास्ते तारीफ है बहुत ज़्यादा पाकीजा और बाबरकत तारीफ) जब आप ﷺ नमाज से फारिग़ हुए तो फरमाया, अभी बोलने वाला कौन था? इस आदमी ने कहा मैं, आप ﷺ ने फरमाया मैंने तीस से ज़्यादा फरिश्तों को देखा कि वह जल्दी कर रहे थे कि इनका सवाब सबसे पहले कौन लिखता है| (बुखारी)

رواه البخارى (799)

रुकू का बयान • بَاب الرُّكُوع

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٨٧٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي مَسْعُودِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُجْزِئُ صَلَاةُ الرَّجُلِ حَتَّى يُقِيمَ ظَهْرَهُ فِي الرُّكُوعِ وَالسُّجُودِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

878. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जब तक आदमी रूकु और सुजुद में अपनी कमर मुकम्मल तौर पर बराबर नहीं करता इस की नमाज दुरुस्त नहीं होती| "अबू दाऊद तिरमिजी, नसई, इब्ने माजा, दारमी और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया यह हदीस हसन सही है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (855) و الترمذی (265) و النسائی (2 / 183 ح 1028) و ابن ماجه (870) و الدارمی (1 / 304 ح 1333)

٨٧٩ - (حسن) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ (فسبح باسم رَبك الْعَظِيم)»» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:

«اجْعَلُوهَا فِي رُكُوعِكُمْ» فَلَمَّا نَزَلَتْ (سَبِّحِ اسْمَ رَبك الْأَعْلَى)»» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اجْعَلُوهَا فِي سُجُودِكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه والدارمي

879. उकबा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं जब "فسبح باسم رَبك الْعَظِيم" नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया इसे अपने रुकु में पढ़ा करो और जब "سَبِّحِ اسْمَ رَبك الْأَعْلَى" नाजिल हुइ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया इसे सजदे में पढ़ा करो| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (869) و ابن ماجه (887) و الدارمی (1 / 299 ح 1311) [و صححه ابن خزيمة (600 ، 601 ، 670) و ابن حبان (506) و الحاكم (2 / 477) و وافقه الذهبی] * اياس بن عامر و ثقه الجمهور و حديثه لا ينزل عن درجة الصحة

٨٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَوْنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا رَكَعَ أَحَدُكُمْ فَقَالَ فِي رُكُوعِهِ: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ فَقَدْ تَمَّ رُكُوعُهُ وَذَلِكَ أَدْنَاهُ وَإِذَا سَجَدَ فَقَالَ فِي سُجُودِهِ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى ثَلَاثَ مَرَّاتٍ فَقَدْ تَمَّ سُجُودُهُ وَذَلِكَ أَدْنَاهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد ابْن ص:٢٧ مَاجَهْ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِمُتَّصِلٍ لِأَنَّ عونا لم يلق ابْن مَسْعُود

880. औन बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से बयान करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जब तुम में से कोई एक रुकु करता है और अपनी रूकु में तीन मर्तबा سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ पढ़ता है तो अपना रुकू मुकम्मल कर लेता है, और यह इसका कम से कम दर्जा है, और जब वह सजदा करता है और अपने सजदे में 3 मर्तबा سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى पढ़ लेता है तो वह अपना सजदा मुकम्मल करता है और यह तादाद इसका कम से कम दर्जा है| तिरमिजी, अबू दाऊद, इब्ने माजा| इमाम तिर्मिज़ी रहिमहुल्लाह ने फरमाया इस की सनद मुत्तसर नहीं क्योंकि औन की इब्ने मसउद से मुलाकात नहीं हुई| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (261) و ابوداؤد (886) و ابن ماجه (890) * اسحاق بن يزيد مجهول و السند منقطع

٨٨١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ: أَنَّهُ صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ: «سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ» وَفِي سُجُودِهِ: «سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى» . وَمَا أَتَى عَلَى آيَةِ رَحْمَةٍ إِلَّا وَقَفَ وَسَأَلَ وَمَا أَتَى عَلَى آيَةِ عَذَابٍ إِلَّا وَقَفَ وَتَعَوَّذَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَرَوَى النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَى قَوْلِهِ: «الْأَعْلَى» . وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

881. हुज़ैफा रदियल्लाहु अन्हु से रीवायत है कि नबी ﷺ के साथ नमाज पढ़ी आप अपने रुकु में " سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ" और सजदो में "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى" पढ़ा करते थे, जब आप किसी आयते रहमत पर पहुंचते तो वक्फ फरमाकर रहमत तलब करते और जब किसी आयते अज़ाब पर पहुंचते तो वक्फ फरमाकर अल्लाह की पनाह तलब करते | तिरमिजी, अबूदाऊद, दारमी, नसई, इब्नेमाजा ने (عليالا) तक रिवायत किया और इमाम तिर्मिज़ी ने फरमाया यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

صحيح ، رواه الترمذی (262 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (871) و الدارمی (1 / 299 ح 1312) و النسائی (1 / 190 ح 1047) و ابن ماجه (888 من طريق آخر و سنده ضعيف وهو حسن بالشواهد) [و رواه مسلم فی صحيحه : ، 487، (1814) مطولاً)



रुकू का बयान — بَاب الرُّكُوع

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٨٨٢ - (صَحِيح) عَن عَوْف بن مَالك قَالَ: قُمْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَكَعَ مَكَثَ قَدْرَ سُورَةِ الْبَقَرَةِ وَيَقُولُ فِي رُكُوعِهِ: «سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ والملكوت والكبرياء وَالْعَظَمَة» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

882. औफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हालते नमाज में कयाम किया जब आप ﷺ ने रुकु किया तो फिर सुरतुल बकरा की किराअत के बराबर रुकु में रहे और यह दुआ करते रहें «سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ والملكوت والكبرياء وَالْعَظَمَة" एक ताकतवर बादशाह, किबरियाई और अजमत वाला रब पाक है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (1 / 191 ح 1050) [و ابوداؤد (873) و الترمذی فی الشمائل (312)]

٨٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: مَا صَلَّيْتُ وَرَاءَ أَحَدٍ بَعْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشْبَهَ صَلَاةً بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ هَذَا الْفَتَى يَعْنِي عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قَالَ: فَحَزَرْنَا رُكُوعَهُ عَشْرَ تَسْبِيحَاتٍ وَسُجُودَهُ عَشْرَ تَسْبِيحَاتٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

883. इब्ने ज़ुबैर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के बाद किसी ऐसे शख़्स को पीछे नमाज नहीं पढ़ी जिसकी नमाज इस नौजवान उमर बिन अब्दुल अजीज की नमाज के सिवा रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज के जैसी हो | रावि ने कहा अनस बिन मालिक ने फरमाया कि आप ﷺ के रुकु और सुजुद की तस्बीहात का अंदाज़ा दस दस मर्तबा का लगाया | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (888) و النسائی (2 / 224 ، 225 ح 1136) * وهب بن مانوس و ثقه الذهبی و ابن حبان وهو حسن الحديث ولا عبرة بمن جهله

٨٨٤ - (صَحِيح) وَعَن شَقِيق قَالَ: إِنَّ حُذَيْفَةَ رَأَى رَجُلًا لَا يُتِمُّ رُكُوعَهُ وَلَا ص:٢٧ سُجُودَهُ فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ حُذَيْفَةُ: مَا صَلَّيْتَ. قَالَ: وَأَحْسَبُهُ قَالَ: وَلَوْ مِتَّ مِتَّ عَلَى غَيْرِ الْفِطْرَةِ الَّتِي فطر الله مُحَمَّدًا صلى الله عَلَيْهِ وَسلم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

884. शकीक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हुज़ेफा रदियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी नामुकम्मल रुकु और सुजुद करते हुए देखा, जब वह नमाज पढ़ चुका तो उन्होने उसे बुलाया, हुज़ेफा रदियल्लाहु अन्हु ने उसे फरमाया तुमने नमाज नहीं पढ़ी, रावी बयान करते हैं, मेरा ख्याल है कि उन्होंने कहा: अगर इस तरह फौत हो जाते तो तुम इस फितरत और मिल्लत पर फौत न होते जिस पर अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को पैदा फरमाया | (बुखारी)

رواه البخاری (389 ، 808)

٨٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَسْوَأُ النَّاسِ سَرِقَةً الَّذِي يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ؟ قَالَ: لَا يتم ركوعها وَلَا سجودها ". رَوَاهُ أَحْمد

885. अबु कतादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया सबसे से बड़ा चोर वह है जो अपनी नमाज की चोरी करता है, सहाबी ने अर्ज किया अल्लाह के रसूल! वह अपनी नमाज की चोरी कैसे करता है, आप ने फ़रमाया वह इसका रुकु और सुजुद मुकम्मल नहीं करता| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 310 ح 23019) [و للحديث شواهد عند الحاكم 1 / 229 وغيره]

٨٨٦ - (صَحِيح) وَعَن النُّعْمَان بن مرّة أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا تَرَوْنَ فِي الشَّارِبِ وَالزَّانِي وَالسَّارِقِ؟ " وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ تُنْزَلَ فِيهِمُ الْحُدُودُ قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «هُنَّ فَوَاحِشُ وَفِيهِنَّ عُقُوبَةٌ وَأَسْوَأُ السَّرِقَةِ الَّذِي يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ» . قَالُوا: وَكَيف يسرق م صَلَاتِهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «لَا يُتِمُّ ركوعها وَلَا سجودها» . رَوَاهُ مَالك وَأحمد وروى الدَّارمِيّ نَحوه

886. नौमान बिन मुर्राह से रीवायत है की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया तुम शराब नोशी, ज़ानी और चोर के बारे में क्या गुमान करते हो? रावि कहते हैं यह इनके बारे में हद नाजिल होने से पहले की बात है, सहाबी ने अर्ज किया अल्लाह और इसके रसूल बेहतर जानतेहैं, आप ﷺ ने फरमाया वह कबीरा गुनाह है और उन पर सजा है और सबसे बड़ी चोरी वह है जो अपनी नमाज की चोरी करता है, सहाबी ने अर्ज किया अल्लाह के रसूल! वह अपनी नमाज कि कैसे चोरी करता है? आप ﷺ ने फरमाया, वह इसका रुकु और सुजुद मुकम्मल नहीं करता| मालिक अहमद दारमी इस तरह रिवायत की है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه مالك (1 / 167 ح 402 و سند ضعيف لا رسله ، النعمان بن مرة تابعى ثقة و وهم من ذكره فى الصحابة) [و احمد (3 / 56 ح 11553 من حديث ابى سعيد الخدرى و سنده ضعيف ، فيه على بن زيد بن جدعان ضعيف) و الدارمى (1 / 304 ، 305 ح 1334 من حديث ابى قتادة و سنده ضعيف ، فيه الوليد بن مسلم و يحيى بن ابى كثير مدلسان و عنعنا)]

سजदा और उस की फ़ज़ीलत का बयान • بَاب السُّجُود وفضله

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٨٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُمِرْتُ أَنْ أَسْجُدَ عَلَى سَبْعَةِ أَعْظُمٍ عَلَى الْجَبْهَةِ وَالْيَدَيْنِ وَالرُّكْبَتَيْنِ وَأَطْرَافِ الْقَدَمَيْنِ وَلَا نَكْفِتَ الثِّيَاب وَلَا الشّعْر»

887. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मुझे सात आजा ;पेशानी,

दोनों हाथो, दोनों घुटनों और दोनों पाँव की उंगलिया के किनारों पर सजदा करने और (दोराने नमाज़) कपड़ो और बालो को न समेटने का हुकुम दिया गया है| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (812) و مسلم (230 / 490)، (1098)

٨٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلَا يَبْسُطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعَيْهِ انْبِسَاطَ الْكَلْبِ»

888. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सुजूद मैं एतदाल रखो, तुम में से कोई शख़्स अपने बाजू कुत्ते की तरह न बिछाओ| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (822) و مسلم (223 / 492)، (1102)

٨٨٩ - وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِذَا سَجَدْتَ فضع كفيك وارفع مرفقيك رَوَاهُ مُسلم

889. बार बिन आजिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया; जब तुम सज़दा करो तो अपनी हथेलिया (जानामाज़ पर) रख और अपने कोहनिया (ज़मिनसे) बुलंद रखो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (234 / 494)، (1104)

٨٩٠ - (صَحِيح) وَعَن مَيْمُونَة قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَجَدَ جَافَى بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى لَوْ أَنَّ بَهْمَةً أَرَادَتْ أَنْ تَمُرَّ تَحْتَ يَدَيْهِ مرت. هَذَا لفظ أبي دَاوُد كَمَا صَرَّحَ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ بِإِسْنَادِهِ ص:٢٨»» وَلِمُسْلِمٍ بِمَعْنَاهُ: قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سجد لوشاءت بهمة أَن تمر بَين يَدَيْهِ لمرت

890. मैमुना रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ सजदा करते तो अपने हाथो को बगल से दूर रखते थे, हत्ता कि अगर बकरे का बच्चा आप के हाथो के नीचे से गुजरना चाहता तो वह गुज़र जाता था| यह अबू दावुद की रिवायत के अल्फाज़ है, जैसा के बग्वी रहिमहुल्लाह ने शरह अल सुनन मैं अपने सनद से बयान किया और मुस्लिम में इस मायने की रिवायत है; ”मैमुना रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करती जब नबी ﷺ सजदा करते तो अगर बकरी का बच्चा आप ﷺ के नीचे से गुज़रना चाहता तो वह गुज़र सकता था| (मुस्लिम)

صحیح ، رواه ابوداؤد (898) و البغوی فی شرح السنة (3 / 145 ، 146) و مسلم (237 / 496)، (1107)

٨٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ بن بُحَيْنَة قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَجَدَ فَرَّجَ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى يَبْدُوَ بَيَاض إبطَيْهِ

891. अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन युहैना रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं; नबी ﷺ जब सजदा करते तो अपने हाथो के बीच फासला रखते हत्ता कि आप ﷺ की बगलों की सफेदी नज़र आ जाती| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (390) و مسلم (235 / 495)، (1105)

٨٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي سُجُودِهِ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَأَوَّلَهُ وَآخره وعلانيته وسره» . رَوَاهُ مُسلم

892. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने सजदो मैं यह दुआ किया करते थे; (اللّهُمّ اغفرلي ذنبي كُلَّهُ, دِقَّهُ وجُلَّهُ واولهُ واخِرهُ، وعلانِيَةَهُ وسِرَّهُ) "ए अल्लाह! मेरे छोटे बड़े पहले पिछले ज़ाहिर और पोशिदाह तमाम गुनाह माफ़ फारमा दे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (216 / 483)، (1084)

٨٩٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: فَقَدْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةً مِنَ الْفِرَاشِ فَالْتَمَسْتُهُ فَوَقَعَتْ يَدِي عَلَى بَطْنِ قَدَمَيْهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ وَهُمَا مَنْصُوبَتَانِ وَهُوَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخْطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نفسك» . رَوَاهُ مُسلم

893. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने एक रात रसूलुल्लाह ﷺ को बिश्तर पर ना पाया तो मैंने (अपने हात से) आप को तटोला तो मेरे हाथ आप के पाँव के तलवे पर लगा, आप नमाज़ में हालते सजदे मैं थे जब के आप के पाँव खड़े थे, और आप दुआ कर रहे थे, " ऐ अल्लाह! मैं तेरी रजा मंदी के ज़रीये तेरी गुस्से से तेरी आफियत के जरिये तेरी सजा से और तेरी रहमत के ज़रिये तेरे अजाब से पनाह चाहता हूँ में तेरी तारीफ को शुमार नहीं कर सकता तू वैसा ही है जिस तरह तुने अपनी तारीफ खुद फरमाई"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (222 / 486)، (1090)

٨٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ ساجد فَأَكْثرُوا الدُّعَاء» . رَوَاهُ مُسلم

894. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलअल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "बन्दा सजदे की हालत मैं अपने रब के इन्तिहाई करीब होता है | बस (सजदे की हालत में) ज़्यादा दुआ किया करो | (मुस्लिम)

رواه مسلم (215 / 482)، (1083)

٨٩٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا قَرَأَ ابْنُ آدَمَ السَّجْدَةَ فَسَجَدَ اعْتَزَلَ الشَّيْطَانُ يَبْكِي يَقُولُ: يَا وَيْلَتِي أُمِرَ ابْنُ آدَمَ بِالسُّجُودِ فَسَجَدَ فَلَهُ الْجَنَّةُ وَأُمِرْتُ بِالسُّجُودِ فَأَبَيْتُ فَلِيَ النَّارُ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

895. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलअल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, ”जब इब्ने आदम आयाते सजदा तिलावत करके सजदा करता है, तो शैतान अलग हो कर रोने लगता है, और कहता है हाए अफ़सोस इब्ने आदम को सजदे का हुक्म दिया तो इस ने सजदा कर लिया तो वह जन्नत का मुस्ताहिक करार पाया, जबकि मुझे सजदे का हुक्म दिया गया तो मैंने इंकार कर दिया और जहन्नाम मेरे मुकद्दर ठहरी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (133 / 81)، (244)

٨٩٦ - (صَحِيح) وَعَن ربيعَة بن كَعْب قَالَ: كُنْتُ أَبِيتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُهُ بِوَضُوئِهِ وَحَاجَتِهِ فَقَالَ لِي: «سَلْ» فَقُلْتُ: أَسْأَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ. قَالَ: «أَو غير ذَلِكَ؟» . قُلْتُ هُوَ ذَاكَ. قَالَ: «فَأَعِنِّي عَلَى نَفسك بِكَثْرَة السُّجُود» . رَوَاهُ مُسلم

896. रबीअ बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलअल्लाह ﷺ के यहाँ रात बसर किया करता था आप के लिए वुजू का पानी और आप की दीगर ज़रुरियात का इंतजाम किया करता था, आप ﷺ ने मुझसे फ़रमाया: “मुझसे कोई चीज़ मांगो मैंने अर्ज़ किया: मैं आप से जन्नत मैं आप के साथ होने का सवाल करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया क्या इस के अलावा कुछ और? “मैंने अर्ज़ किया, बस यही है आप ﷺ ने फ़रमाया “बस अपनी जात के लिए कसरत ए सुजूद से मेरी मदद कर| (मुस्लिम)

رواه مسلم (226 / 489)، (1094)

٨٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ مَعْدَانَ بْنِ طَلْحَةَ قَالَ: لَقِيتُ ثَوْبَانَ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٢٨ فَقلت: أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ أَعْمَلُهُ يُدْخِلُنِي اللَّهُ بِهِ الْجَنَّةَ فَسَكَتَ ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَسَكَتَ ثُمَّ سَأَلْتُهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: سَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «عَلَيْكَ بِكَثْرَةِ السُّجُودِ لِلَّهِ فَإِنَّكَ لَا تَسْجُدُ لِلَّهِ سَجْدَةً إِلَّا رَفَعَكَ اللَّهُ بِهَا دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْكَ بِهَا خَطِيئَةً» . قَالَ مَعْدَانُ: ثُمَّ لَقِيتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ لِي مِثْلَ مَا قَالَ لِي ثَوْبَانُ. رَوَاهُ مُسلم

897. मअदाद बिन तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के आजाद करदा गुलाम सुबान से मीला तो मैंने कहा: मुझे कोई ऐसा अमल बताए जीसे करके मैं जन्नत मैं दाखील हो जाऊ, वह खामोश रहे फिर मैं ने इन से सवाल किया तो वह खामोश रहे फिर मैंने इन तीसरी मर्तबा इन से सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया, मैंने इस के मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया था तू अल्लाह की रजा की खातिर कसरत से सजदा करो, क्यूंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सजदा करोगे तो अल्लाह इस के ज़रिये तुम्हारा एक दर्जा बढ़ा देगा और इस के जरिये तुम्हारा एक गुनाह मिटा देगा, “मअदाद बयान करते हैं, फिर मैं अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से मिला तो मैंने इन से भी पूछा तो उन्होंने मुझे वैसे ही बताया जैसे सुबान ने मुझे बताया था | (मुस्लिम)

رواه مسلم (225 / 488)، (1093)

بَاب السُّجُود وفضله • सजदा और उस की फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٨٩٨ - (ضَعِيف) عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَجَدَ وَضَعَ رُكْبَتَيْهِ قَبْلَ يَدَيْهِ وَإِذَا نَهَضَ رَفَعَ يَدَيْهِ قَبْلَ رُكْبَتَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

898. वाईल बिन हुजर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की जब वह सजदा करते तो आप ﷺ अपने दोनों हाथो से पहले अपने घुटने को नीचे लगाते और जब (कयाम के लिए) खड़े होते तो घुटनों से पहले हाथ उठाते थे| (हसन)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (838) و الترمذی (268 وقال : غریب حسنالخ) و النسائی (2 / 207 ح ح 1090) و ابن ماجه (882) و الدارمی (1 / 303 ح 1326) * شریک القاضی مدلس ولم اجد تصریح سماعه

٨٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَجَدَ أَحَدُكُمْ فَلَا يَبْرُكْ كَمَا يبرك الْبَعِير وليضع يَدَيْهِ قَبْلَ رُكْبَتَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ ص:٢٨ وَالنَّسَائِيُّ. وَالدَّارِمِيُّ قَالَ أَبُو سُلَيْمَانَ الْخَطَّابِيُّ: حَدِيثُ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ أَثْبَتُ مِنْ هَذَا وَقِيلَ: هَذَا مَنْسُوخ

899. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया "जब तुम में से कोई सजदा करे तो वह (हाथो से पहले घुटने लगा कर) ऊंट की तरह न बेठे, वह घुटने से पहले अपने हाथ नीचे लगाए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (840) و النسائی (2 / 207 ح 1092) و الدارمی (1 / 303 ح 1327) * و اعل بما لا یقدح و قول الخطابی خطا لا دلیل علیه

٩٠٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

900. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ दो सजदो के दरमियान यह दुआ किया करते थे: "अल्लाह मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम फरमा, मेरी रहनुमाई फरमा, मुझे आफियत में रख और मुझे रिज़्क़ अता फरमा"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (850) و الترمذی (284) [و ابن ماجه (898) و سندهم ضعیف من اجل تدلیس حبیب بن ابی ثابت و لبعضه شاهد فی صحیح مسلم (2697)، (6850) من غیر ذکر الجلوس بین السجدتین و ثبت نحو المعنی عن الامام مکحول رحمه الله (رواه ابن ابی شیبة 3 / 634 ح 8922 و سنده صحیح)]

٩٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ حُذَيْفَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ: «رَبِّ اغْفِرْ لِي» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ والدارمي

901. हुजैफा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ दो सजदो के दरम्यान यह दुआ पढ़ा करते थे, - رَبِّ اغفِرلِيْ मेरे रब मुझे बख्श दे| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (2 / 199 ح 200 ، 2 / 231 ح 1146) و الدارمی (1 / 303 ، 304 ح 1330) [و ابوداؤد (874 مطولاً) و ابن ماجه (897)]

بَاب السُّجُود وفضله • सजदा और उस की फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٩٠٢ - (حسن) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شِبْلٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن نَقْرَةِ الْغُرَابِ وَافْتِرَاشِ السَّبُعِ وَأَنْ يُوَطِّنَ الرَّجُلُ الْمَكَانَ فِي الْمَسْجِدِ كَمَا يُوَطِّنُ الْبَعِيرُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

902. अब्दुल रहमान बिन शीब्ली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कौवे की तरह थोंग मारने, दरीन्दे की तरह बाजू बिछाने और ऊंट की तरह मस्जिद मैं अपने लिए कोई जगह मखसूस करने के लिए मना फ़रमाया | (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (862) و النسائی (2 / 214 ، 215 ح 1113) و الدارمی (1 / 303 ح 1329) * تميم بن محمود ضعفه الجمهور

٩٠٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَلِيُّ إِنِّي أُحِبُّ لَكَ مَا أُحِبُّ لِنَفْسِي وَأَكْرَهُ لَكَ مَا أَكْرَهُ لِنَفْسِي لَا تقع بَين السَّجْدَتَيْنِ» . رَوَاهُ ص:٢٨ التِّرْمِذِيّ

903. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “अली मैं जो अपने लीये पसंद करता हूँ वोही तुम्हारे लीये पसंद करता हूँ और जो अपने लीये नापसंद करता हूँ वही तुम्हारे लिए नापसंद करता हूँ, सजदो के दरम्यान सीरीन नीचे लगा कर, टांगे खड़ी करके और हाथ ज़मीन पर लगा कर न बैठना| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (282) [و ابن ماجه (894)] * الحارث الاعور ضعيف جدًا و للحديث شواهد ضعيفة

٩٠٤ - (صَحِيح) وَعَن طلق بن عَليّ الْحَنَفِيّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْظُرُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى صَلَاةِ عَبْدٍ لَا يُقِيمُ فِيهَا صُلْبَهُ بَيْنَ ركوعها وسجودها» . رَوَاهُ أَحْمد

904. तलक बिन अलीहंफी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया “ए अल्लाह! ﷻ उस

बंदे की नमाज़ की तरफ देखते भी नहीं जो दोराने नमाज़ रुकू और सुजूद मैं अपने कमर सीधी नहीं करता | (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (4 / 22 ح 16393) * السند منقطع و عکرمة بن عمار عنعن

٩٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يَقُولُ: مَنْ وَضَعَ جَبْهَتَهُ بِالْأَرْضِ فَلْيَضَعْ كَفَّيْهِ عَلَى الَّذِي وَضَعَ عَلَيْهِ جَبْهَتَهُ ثُمَّ إِذَا رَفَعَ فَلْيَرْفَعْهُمَا فَإِنَّ الْيَدَيْنِ تَسْجُدَانِ كَمَا يَسْجُدُ الْوَجْهُ. رَوَاهُ مَالك

905. नाफेअ रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे: जो सख्श अपनी पेशानी ज़मीन पर रखे तो वह अपने हाथ भी उसी जगह रखे जहाँ उस ने अपनी पेशानी रखी थी, फिर जब वह (पेशानी) उठाऐ तो दोनों हाथो को भी उठा ले, क्यूँकी हाथ भी सजदा करते हैं जीस तरह चेहरा सजदा करता है | (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (1 / 163 ح 390) و ابوداؤد (982) [و شطر الحدیث رواه ابوداؤد (892) مرفوعًا و سنده صحیح ، دون قوله :'' من وضع جبهة ،،، علیه جبهته'']

باب التَّشَهُّد • तशहहुद का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٩٠٦ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَعَدَ فِي التَّشَهُّدِ وَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رُكْبَتِهِ الْيُمْنَى وَعَقَدَ ثَلَاثًا وَخمسين وَأَشَارَ بالسبابة

906. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ तशहहुद के लिए बैठते तो आप अपना बांया हाथ अपने बाएँ घुटने पर और दाया हाथ अपने दांए घुटने पर रखते और त्रेपन्न की गिरह बना कर शहादत की उंगली से इशारा फरमाते | (मुस्लिम)

رواه مسلم (115 / 580)، (1310)

٩٠٧ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ: كَانَ إِذَا جَلَسَ فِي الصَّلَاةِ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَرَفَعَ أُصْبُعَهُ الْيُمْنَى الَّتِي تلِي الْإِبْهَام يَدْعُو بِهَا وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى رُكْبَتِهِ بَاسِطَهَا عَلَيْهَا. رَوَاهُ مُسلم

907. और एक रीवायत मैं है जब आप ﷺ नमाज़ मैं (तशहहूद के लिए) बैठते तो आप अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखते और दायें हाथ की शहादत की ऊँगली बुलंद करते और इसके साथ इशारा फरमाते जबकि

बाएँ हाथ को बाएँ रान पर खुला रखते | (मुस्लिम)

رواه مسلم (114 / 580)، (1309)

٩٠٨ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن الزبير قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَعَدَ يَدْعُو وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَيَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَأَشَارَ بِأُصْبُعِهِ ص:٢٨ السَّبَّابَةِ وَوَضَعَ إِبْهَامَهُ عَلَى أُصْبُعِهِ الْوُسْطَى ويلقم كَفه الْيُسْرَى ركبته. رَوَاهُ مُسلم

908. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ तशह्हूद के लीये बैठते तो अपना दायाँ हाथ अपनी दायें रान पर और बायाँ हाथ अपने बाएँ रान पर रखते और शहादत की ऊँगली से इशारा फरमाते, आप ﷺ अपने अंगूठा अपने दर्मियानी उंगली पर रखते और अपने बाएं हाथ से अपने घुटनो को लुकमे की तरह पकड़ लेते | (मुस्लिम)

رواه مسلم (112 / 579)، (1308)

٩٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْنَا السَّلَامُ عَلَى اللَّهِ قبل عباده السَّلَام على جِبْرِيل السَّلَام على مِيكَائِيل السَّلَام على فلَان وَفُلَان فَلَمَّا انْصَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ قَالَ: «لَا تَقُولُوا السَّلَامُ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّلَامُ فَإِذَا جَلَسَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَقُلِ التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ فَإِنَّهُ إِذَا قَالَ ذَلِكَ أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ثُمَّ لْيَتَخَيَّرْ مِنَ الدُّعَاءِ أَعْجَبَهُ إِلَيْهِ فيدعوه»

909. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, , जब हम नबी ﷺ के साथ नमाज पढ़ते तो हम कहते अल्लाह पर इस के बन्दों की तरफ से सलाम हो जीब्राइल और मीकाईल अलैहिस्सलाम पर सलाम हो, फलां पर सलाम हो, जब नबी ﷺ नमाज से फारिग़ हुए तो आप ने अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ करके फ़रमाया: “तुम ऐसे ना कहो: अल्लाह पर सलाम हो क्यूंकि अल्लाह तो खुद सलाम है, जब तुम में से कोई (तशह्हूद के लिए) नमाज़ मैंबैठे तो वह यूँ कहे: (التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ) “ (मेरी सारी) ज़बानी, बदनी, और माली इबादत सिर्फ अल्लाह के लीये खास है, ऐ नबी आप पर अल्लाह की रहमत, सलामती और बरकते हो और हम पर और अल्लाह के दूसरे नेक बन्दों पर भी सलामती हो, क्यूंकि जब वह ऐसे कहेगा तो यह दुआ जमीन और आसमान के हर नेक बंदे को पहुँच जाएगी, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबुदे बरहक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल हैं | “ फिर वह अपने पसंद की दुआ करे | (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6230) [و 6265 بلفظ : وهو بين ظهر انينا فلما قبض قلنا : السلام يعنى على النبى صلى الله عليه و آله وسلم] و مسلم (55 / 402)، (897)

٩١٠ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَبَّاس أَنَّهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ فَكَانَ يَقُولُ: «التَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» . ص:٢٨ رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَلَمْ أَجِدْ فِي الصَّحِيحَيْنِ وَلَا فِي الْجَمْعِ بَين الصَّحِيحَيْنِ: «سَلام عَلَيْك» و «سَلام عَلَيْنَا» بِغَيْرِ أَلْفٍ وَلَامٍ وَلَكِنْ رَوَاهُ صَاحِبُ الْجَامِعِ عَن التِّرْمِذِيّ

910. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमें तशहहुद (इस एहतेमाम के साथ) सिखाते थे जैसे हमें कुरान की कोई सूरत सिखाते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया करते थे : : « التَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ» “ (मेरी सारी) जुबानी, बदनी और माली इबादत अल्लाह के लिए खास है ए नबी! आप पर अल्लाह की रहमत सलामती और बरकतें हो और हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी सलामती हो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबुदे बरहक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है” और मैंने सहियेन और हुमैदी में अलीफ लाम के बगैर (السَّلَامُ عَلَيْكَ) और (السَّلَامُ عَلَيْنَا) नहीं पाया लेकिन साहिबे जामिया (इब्ने शिरीन) ने इमाम तिरमिजी से इसे रिवायत किया. | (सहीह,हसन,मुस्लिम)

رواه مسلم (60 / 403)، (902) و الترمذی (290 وقال : حسن صحیح غریب)

بَاب التَّشَهُّد • तशहहुद का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٩١١ - (صَحِيح) وَعَن وَائِلِ بْنِ حَجَرٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ثُمَّ جَلَسَ فَافْتَرَشَ رِجْلَهُ الْيُسْرَى وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُسْرَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُسْرَى وَحَدَّ مِرْفَقَهُ الْيُمْنَى عَلَى فَخِذِهِ الْيُمْنَى وَقَبَضَ ثِنْتَيْنِ وَحَلَّقَ حَلْقَةً ثُمَّ رَفَعَ أُصْبُعَهُ فَرَأَيْتُهُ يُحَرِّكُهَا يَدْعُو بهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

911. वाईल बिन हुजर रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं उन्होंने बयान किया: फिर रसूल ﷺ (तशहहुद के लिए) बैठें आप ने अपना बायां पाँव बिछाया, बायां हाथ अपने बायीं रान पर रखा, दाहिने कोहनी को दायें रान से उठा कर रखा, दो ऊँगली को बंद किया और दरमियान की उंगली और अंगूठे को मिलाकर हल्का बनाया, फिर अपनी शहादत की उंगली को उठाया, मैंने आप ﷺ को देखा की आप इस को हरकत देते और इस के साथ इशारा करते थे | (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (957) و الدارمی (1 / 314 ، 315 ح 1364) [و النسائی (3 / 37 ح 1269 و اللفظ نحوه) و ابن ماجه (867)] * و اعله بعض المعاصرين بعلة و الحديث صحيح ، لا شك فيه

٩١٢ - (حسن) وَعَن عبد الله بن الزبير قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُشِيرُ بِأُصْبُعِهِ إِذَا دَعَا وَلَا يُحَرِّكُهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ وَزَاد أَبُو دَاوُد وَلَا ص:٢٨ يُجَاوز بَصَره إِشَارَته

912. अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ दुआ करते तो अपनी उंगली से इशारा करते और आप इस को हरकत नहीं देते थे| इमाम अबू दावुद ने आगे नकल किया है आप ﷺ की नजर आप के इशारे से आगे ना जाती थी | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (989) و النسائی (3 / 37 ، 38 ح 1271) * محمد بن عجلان مدلس ولم اجد تصریح سماعه فی لفظ :’’ ولا یحرکها‘‘

٩١٣ - (حسن) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ يَدْعُو بِأُصْبُعَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحِّدْ أَحِّدْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِير

913. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी अपनी दोनों उंगलियों के साथ इशारा करता था तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया “एक के साथ एक के साथ”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (3557 وقال : حسن غریب) و النسائی (3 / 38 ح 1273) و البیهقی فی الدعوات الکبیر (2 / 36 ح 265) [و صححه الحاکم (1 / 536 و وافقه الذھبی] * محمد بن عجلان مدلس و عنعن

٩١٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَجْلِسَ الرَّجُلُ فِي الصَّلَاةِ وَهُوَ مُعْتَمِدٌ عَلَى يَدِهِ. رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: نَهَى أَنْ يَعْتَمِدَ الرَّجُلُ عَلَى يَدَيْهِ إِذا نَهَضَ فِي الصَّلَاة

914. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ मैं हाथो का सहारा लेकर बैठनेसे मना किया करते थे | अहमद अबु दावुद और इन्ही की एक रीवायत में है जब आदमी नमाज़ में खड़े हो तो उसे हाथो का सहारा लेकर खड़े होने से मना फ़रमाया | (सहीह,ज़ईफ़)

صحیح باللفظ الاول ، رواه احمد (2 / 147 ح 6347 و سنده صحیح وھو اللفظ الاول) و ابوداؤد (992) * قوله :’’ نھی ان یعتمد الرجل علی یدیه اذا نھض فی الصلوۃ ‘‘ رواه ابوداؤد و سند ضعیف ، لا یصح ، فیه محمد بن عبدالملک الغزال ، لم یذکروا سماعه من عبدالرزاق قبل اختلاطه فالسند ضعیف و عبدالرزاق مدلس و عنعن فی ھذا اللفظ

٩١٥ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ كَأَنَّهُ عَلَى الرَّضْفِ حَتَّى يَقُومَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

915. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ पहले दो रकात मैं इस तरह बैठते जेसे गरम पत्थरों पर बैठते हो हत्ता कि आप खड़े हो जाते | (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (366 وقال : حسن ، الا ان ابا عبید لم یسمع من ابیه) و ابوداؤد (995) و النسائی (2 / 243 ح 117) * السند منقطع



तशहहुद का बयान • بَاب التَّشَهُّد
तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٩١٦ - (ضَعِيف) عَن جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ من الْقُرْآن: «بِسم الله وَبِاللَّهِ التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ ص:٢٨ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ أَسْأَلُ اللَّهَ الْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

916. जाबीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, , रसूलुल्लाह ﷺ (इस एहतेमाम) हमें तशह्हूद सिखाया करते थे जैसे हमें कुरान की सूरत सिखाया करते थे, अल्लाह के नाम और अल्लाह की तौफीक के साथ, (मेरी सारी) ज़बानी, बदनी और माली इबादत सिर्फ अल्लाह के लीये खास है, ऐ नबी आप पर अल्लाह की रहमत, सलामती और बरकते हो और हम पर और अल्लाह के दूसरे नेक बन्दों पर भी सलामती हो, क्यूंकि जब वह ऐसे कहेगा तो यह दुआ जमीन और आसमान के हर नेक बंदे को पहुँच जाएगी, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मबुदे बरहक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल हैं, मैं अल्लाह से जन्नत तलब करता हूँ और आग (जहन्नम) से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه النسائی (2 / 243 ح 1176) * ابوزبیر مدلس ولم اجد تصریح سماعه

٩١٧ - (حسن) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ إِذَا جَلَسَ فِي الصَّلَاةِ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَأَشَارَ بِأُصْبُعِهِ وَأَتْبَعَهَا بَصَرَهُ ثُمَّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَهِيَ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنَ الْحَدِيدِ» . يَعْنِي السبابَة. رَوَاهُ أَحْمد

917. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि जब अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा (तशह्हूद के लीये) नमाज़ मैं बैठते तो वह अपने हाथ अपने घुटने पर रख लेते, ऊँगली से इशारा करते और अपनी नज़र इस (इशारे या उंगली) पर रखते, फिर उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, "यह शहादत की ऊँगली शैतान पर लोहे से भी ज़्यादा शख्त है | (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 119 ح 6000)

٩١٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ كَانَ يَقُولُ: مِنَ السُّنَّةِ إِخْفَاءُ التَّشَهُّدِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

918. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तशह्हूद आहिस्ता आवाज़ से पढ़ना मस्नुन है| अबू दावुद, तिर्मिज़ी ने कहा: यह हदीस हसन गरीब है| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (986) و الترمذی (291) * و للحدیث شواهد عند الحاکم (1 / 230) و غیره وهو بها صحیح

बَابُ الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وفضلها • नबी ﷺ पर दुरुद व सलाम भेजने और इसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٩١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ أَلَا أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً سَمِعْتُهَا مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ بَلَى فَأَهْدِهَا لِي فَقَالَ سَأَلْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ الصَّلَاةُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ فَإِنَّ اللَّهَ قَدْ عَلَّمَنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكُم قَالَ: «قُولُوا اللَّهُمَّ صل عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حُمَيْدٌ مجيد اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّك حميد مجيد» . إِلَّا أَنَّ مُسْلِمًا لَمْ يَذْكُرْ " عَلَى إِبْرَاهِيمَ فِي الْمَوْضِعَيْنِ

919. अब्दुल रहमान बिन अबी लैला बयान करते हैं, काब बिन उजरत मुझे मिले तो उन्होंने ने फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें एक हदिया पेश न करू जिसे मैंने नबी ﷺ से सुना था, मैंने कहा: क्यों नहीं ज़रूर पेश फरमाइए, उन्होंने ने फ़रमाया: हमने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त करते हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम आप के अहले बैत पर कैसे दुरुद भेजे, क्योंकि अल्लाह ने हमें यह तो सिखा दिया है के हम आप पर कैसे सलाम भेजे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यूँ कहो इलाही रहमत फरमा मुहम्मद पर और आले मुहम्मद पर जिस तरह तूने रहमत फरमाई इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बेशक तू तारीफ़ वाला और बुज़ुर्गी वाला है, अल्लाह बरकत फरमा मुहम्मद पर और आले मुहम्मद पर जिस तरह तूने बरकत फरमाई इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है”| बुखारी, मुस्लिम, अलबत्ता इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने दो जगहों पर ((अला इब्राहिम)) ज़िक्र नहीं किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (3370) و مسلم (66 / 406)، (908)

٩٢٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي حميد السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ نصلي عَلَيْك؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قُولُوا: اللَّهُمَّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حُمَيْدٌ مجيد "

920. अबू हुमैद साअदि बयान करते हैं, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल, हम आप पर कैसे दुरुद भेजे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कहो ऐ अल्लाह! मुहम्मद पर उनकी अज़वाज पर और उनकी औलाद पर रहमत फरमा जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर रहमत फरमाई, और मुहम्मद पर आप की अज़वाज और आप की औलाद पर बरकत फरमा जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर बरकत फरमाई, बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (6360) و مسلم (69 / 407)، (911)

٩٢١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عشرا» . رَوَاهُ مُسلم

921. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरुद भेजता है तो अल्लाह उस पर दस रहमते नाज़िल फरमाता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (70 / 408)، (912)

بَابُ الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وفضلها • नबी ﷺ पर दुरुद व सलाम भेजने और इसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٩٢٢ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

922. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पढ़ता है तो अल्लाह उस पर दस रहमते नाज़िल फरमाता है, उस के दस गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, और उस के दस दरजात बुलंद कर दिए जाते हैं| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (3 / 50 ح 1298) [و صححه ابن حبان (2390) و الحاکم (1 / 550) و وافقه الذھبی]

٩٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أَوْلَى النَّاسِ بِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

923. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझ पर सबसे ज़्यादा दुरुद भेजने वाला शख़्स रोज़ ए कियामत मेरे सबसे ज़्यादा करीब होगा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (484 وقال : حسن غريب) [و صححه ابن حبان (2389) و حسنه البغوی فی شرح السنة (3 / 196 ، 197 ح 686)] و للحديث شاھد* عبدالله بن کیسان : و ثقه البغوی و ابن حبان فھو حسن الحديث

٩٢٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِلَّهِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الْأَرْضِ يُبَلِّغُونِي مِنْ أُمَّتِي السَّلَامَ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ والدارمي

924. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ज़मीन पर चलते रहते है वह मेरी उम्मत की तरफ से मुझ पर सलाम पहुंचाते है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (3/ 43 ح 1283) و الدارمی (2 / 317 ح 2777) [و صححه ابن حبان (2392) و الحاكم (2 / 421) و وافقه الذهبی] * سفيان الثوری صرح بالسماع

٩٢٥ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ إِلَّا رَدَّ اللَّهُ عَلَيَّ رُوحِي حَتَّى أَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

925. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कोई शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो अल्लाह मेरी रूह मुझ पर लौटा देता है, हत्ता कि में उसके सलाम का जवाब देता हो| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2041) و البيهقی فی الدعوات الكبير (1 / 120 ح 158 ، و السنن : 5 / 245) * يزيد بن عبدالله بن قسيط ثبت سماعه من ابی هريرة عند البيهقی (1 / 122)

٩٢٦ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَجْعَلُوا ص:٢٩ بُيُوتَكُمْ قُبُورًا وَلَا تَجْعَلُوا قَبْرِي عِيدًا وَصَلُّوا عَلَيَّ فَإِنَّ صَلَاتكُمْ تبلغني حَيْثُ كُنْتُم» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

926. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अपने घरो को ना कब्रिस्तान बनाओ न मेरी कब्र को ईद (ज़ियारत गाह) बनाना और मुझ पर दुरुद भेजो, क्योंकि तुम जहाँ भी हो, तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (لم اجده فی الصغریٰ ولا فی الكبریٰ) [و ابوداؤد : 2042]

٩٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ وَرَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ أَنْ يُغْفَرَ لَهُ وَرَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ أَدْرَكَ عِنْدَهُ أَبَوَاهُ الْكبر أَو أَحدهمَا فَلم يدْخلَاهُ الْجنَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

927. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शख़्स की नाक खाक आलूद हो जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाए लेकिन वह मुझ पर दुरुद न पढ़े, इस शख़्स की नाक खाक आलूद हो जिसके पास रमज़ान आकर चला गया, लेकिन उसकी मगफिरत न हो सके और इस शख़्स की नाक भी खाक आलूद हो जिस की जिंदगी में उस के वालिदेन या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पहुँच जाए, लेकिन उन की खिदमत फिर भी इसे जन्नत में दाखिल न करो सके| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3545 وقال : حسن غريب) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 905) وله شواهد عند مسلم (2551)، (6510) و ابن حبان (الموارد : 2387 ، 2028) و ابن خزيمة (1888) و الحاكم (4 / 153) و غيرهم]

٩٢٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي طَلْحَة أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَ ذَاتَ يَوْمٍ وَالْبِشْرُ فِي وَجْهِهِ فَقَالَ: " إِنَّهُ جَاءَنِي جِبْرِيلُ فَقَالَ: إِنَّ رَبَّكَ يَقُولُ أَمَا يُرْضِيكَ يَا مُحَمَّدُ أَنْ لَا يُصَلِّيَ عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا وَلَا يُسَلِّمُ عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِكَ إِلَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ عَشْرًا؟ ". رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

928. अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ बड़े खुश तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप का रब फरमाता है, मुहम्मद ﷺ! क्या यह बात आप के लिए बाईस ख़ुशी नहीं? की जब आप की उम्मत में से कोई शख़्स एक मर्तबा आप पर दुरुद भेजे तो मैं उस पर दस रहमते भेजू और आप की उम्मत में से जो शख़्स एक मर्तबा आप पर सलाम भेजे तो मैं उस पर दस मर्तबा सलामती भेजू| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (3 / 50 ح 1296) و الدارمى (2 / 317 ح 2776) [و صححه ابن حبان (2391) و الحاكم (2 / 420) و وافقه الذهبى] * سليمان مولى الحسن : حسن الحديث و للحديث شواهد

٩٢٩ - (حسن) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُكْثِرُ الصَّلَاةَ عَلَيْكَ فَكَمْ أَجْعَلُ لَكَ مِنْ صَلَاتِي؟ فَقَالَ: «مَا شِئْتَ» قُلْتُ: الرُّبُعَ؟ قَالَ: «مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ» . قُلْتُ: النِّصْفَ؟ قَالَ: «مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ» قُلْتُ: فَالثُّلُثَيْنِ؟ قَالَ: «مَا شِئْتَ فَإِنْ زِدْتَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ» قُلْتُ: أَجْعَلُ لَكَ صَلَاتِي كُلَّهَا؟ قَالَ: «إِذا يكفى همك وَيكفر لَك ذَنْبك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

929. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ में आप पर बहोत ज़्यादा दुरुद भेजता हूँ, मैं अपने दुआ का कितना हिस्सा आप पर दुरुद व सलाम के लिए वक्फ़ कर दूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जितना तुम चाहो”, मैंने अर्ज़ किया: चोथाई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जितना तुम चाहो अगर तुम ज़्यादा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है”, मैंने अर्ज़ किया: आधा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जितना तुम चाहो अगर तुम ज़्यादा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है”, मैंने अर्ज़ किया: दो तिहाई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जितना तुम चाहो अगर ज़्यादा कर लो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है”, मैंने अर्ज़ किया: में अपने पूरी दुआ आप पर दुरुद व सलाम के लिए वक्फ़ कर देता हूँ आप ﷺ ने फ़रमाया: “फिर तो तुम्हारी सारी मुरादे पूरी हो जाएगी और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2457 وقال : حسن) * عبدالله بن محمد بن عقيل ضعيف و سفيان الثورى مدلس و عنعن

٩٣٠ - (صَحِيح) وَعَن فضَالة بن عُبَيْدٍ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَاعِدٌ إِذْ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلَّى فَقَالَ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَجِلْتَ أَيُّهَا الْمُصَلِّي إِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللَّهَ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ» . قَالَ: ثُمَّ صَلَّى رَجُلٌ آخَرُ بَعْدَ ذَلِكَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَصَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّهَا الْمُصَلِّي ادْعُ تُجَبْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ نَحوه

930. फ़ुज़ालह बिन उबैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ फरमा थे तो एक आदमी आया उस ने नमाज़ पढ़ी और दुआ की ऐ अल्लाह! मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा, रसूलुल्लाह ﷺ ने

फरमाया: “नमाज़ी शख़्स तुमने जल्द बाज़ी की, जब तुम नमाज़ पढ़ कर तशह्हुद के लिए बेठो तो अल्लाह की उसकी शान के लायक हम्द बयान करो, मुझ पर दुरुद भेजो फिर अल्लाह तआला से दुआ करो”, रावी बयान करते हैं, फिर उस के बाद एक और आदमी ने नमाज़ पढ़ी तो उस ने अल्लाह की हम्द बयान की नबी पर दुरुद भेजा तो नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “नमाज़ी शख़्स दुआ करो तुम्हारी दुआ कबूल होगी”| तिरमिज़ी, अबू दावुद और नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3476 وقال : حدیث حسن) و ابوداؤد (1481) و النسائی (3 / 44 ح 1285)

٩٣١ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ مَعَهُ فَلَمَّا جَلَسْتُ بَدَأْتُ بِالثَّنَاءِ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى ثُمَّ الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٢٩ ثُمَّ دَعَوْتُ لِنَفْسِي فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَلْ تعطه سل تعطه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

931. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नमाज़ पढ़ रहा था जबकि नबी ﷺ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और उमर रदियल्लाहु अन्हु के साथ तशरीफ़ फरमा थे जब में बैठा, तो मैंने सबसे पहले अल्लाह तआला की सना बयान की, फिर नबी ﷺ पर दुरुद भेजा फिर अपने लिए दुआ की तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: मांगो दीया जाएगा मांगो दीया जाएगा| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (593 وقال : حسن صحیح) * و للحدیث شواھد

बाबُ الصَّلَاةُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وفضلها • नबी ﷺ पर दुरुद व सलाम भेजने और इसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٩٣٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَكْتَالَ بِالْمِكْيَالِ الْأَوْفَى إِذَا صَلَّى عَلَيْنَا أَهْلَ الْبَيْتِ فَلْيَقُلْ اللَّهُمَّ صَلِّ على مُحَمَّد وَأَزْوَاجِهِ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حُمَيْدٌ مَجِيدٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

932. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को पसंद हो के इसे पूरा पूरा अज्र व सवाब दिया जाए तो फिर जब वह हम अहले बैत पर दुरुद पढ़े तो वह यूँ कहे, “ए अल्लाह! मुहम्मद नबी उम्मी पर, आप की अज़वाज ए मूतहरात मोमिनो की माओ पर, आप की औलाद और आप के अहले खाना पर रहमते नाज़िल फरमा, जैसी तूने आले इब्राहीम पर रहमते नाज़िल फरमाइए, बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (982) * حبان بن یسار ضعفه ابوحاتم و غیرہ و اختلط بآخرہ کما قال الصلت بن محمد و غیرہ و فی السند علة أخری عند العقیلی فی الضعفاء (1 / 318)

٩٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْبَخِيلُ الَّذِي ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَرَوَاهُ أَحْمَدُ عَنِ الْحُسَيْنِ ص:٢٩ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ

933. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के पास मेरा ज़िक्र किया जाए और वह मुझ पर दुरुद न भेजे तो वह बखील है” तिरमिज़ी, इमाम अहमद ने हुसैन बिन अली की सनद से रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3546 وقال : حسن غريب صحيح) و احمد (1 / 201 ح 1736) [و صححه ابن حبان (2388) و الحاکم (1 / 549) و وافقه الذهبی]

٩٣٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ عِنْدَ قَبْرِي سَمِعْتُهُ وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ نَائِيًا أُبْلِغْتُهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

934. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मेरी कब्र के पास मुझ पर दुरुद पढ़ता है तो में उसे खुद सुनता हूँ और जो शख़्स दूर से मुझ पर दुरुद भेजता है तो वह मुझे पहुंचा दिया जाता है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقی فی شعب الايمان (1583) فيه محمد بن مروان السدی کذاب وله طريق آخر ضعيف عند ابی الشيخ فی کتاب الثواب ، فيه عبد الرحمن بن احمد الاعرج : مجهول الحال و سليمان الاعمش مدلس و عنعن و فيه علة أخرى فالحديث ضعيف

٩٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: مَنْ صَلَّى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَمَلَائِكَتُهُ سَبْعِينَ صَلَاةً. رَوَاهُ أَحْمد

935. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जो शख़्स नबी ﷺ पर एक मर्तबा दुरुद भेजता है तो अल्लाह और उस के फ़रिश्ते उस पर सत्तर रहमते नाज़िल फरमाते हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 187 ح 6754) * عبدالله بن لهيعة مدلس و ضعيف لاختلاطه ولم يحدث به قبل اختلاطه

٩٣٦ - (ضَعِيف) وَعَن رويفع أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَنْ صَلَّى عَلَى مُحَمَّدٍ وَقَالَ: اللَّهُمَّ أَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِي ". رَوَاهُ أَحْمد

936. रवय्फी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने मुहम्मद ﷺ पर दुरुद भेजा और दुआ की ऐ अल्लाह! रोज़ ए कियामत उन्हें अपने पास मक़ाम ए महमूद अता फरमा, उस के लिए

मेरी शफाअत वाजिब हो गई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 108 ح 17116) * ابن لهيعة ضعيف لاختلاطه ، و وفاء الحضرمى لم يوثقه غير ابن حبان

٩٣٧ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ص:٢٩ وَسَلَّمَ حَتَّى دَخَلَ نَخْلًا فَسَجَدَ فَأَطَالَ السُّجُودَ حَتَّى خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ اللَّهُ تَعَالَى قَدْ تَوَفَّاهُ. قَالَ: فَجِئْتُ أَنْظُرُ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: «مَا لَكَ؟» فَذَكَرْتُ لَهُ ذَلِكَ. قَالَ: فَقَالَ: " إِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَام قَالَ لي: أَلا أُبَشِّرك أَن اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ لَكَ مَنْ صَلَّى عَلَيْكَ صَلَاةً صَلَّيْتُ عَلَيْهِ وَمَنْ سَلَّمَ عَلَيْكَ سلمت عَلَيْهِ ". رَوَاهُ أَحْمد

937. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए हत्ता कि खजूरो के बाग़ में तशरीफ़ ले गए, आप ने बहोत तवील सजदाह किया हत्ता कि मुझे अंदेशा हुआ की कहीं अल्लाह तआला ने आप की रूह कब्ज़ न कर ली हो, वह बयान करते हैं, मैं आप को देखने के लिए आया तो आप ﷺ ने अपना सर उठाया तो फ़रमाया: “आप को क्या हुआ ?” पस मैंने आप से वह खदशा बयान कर दिया, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल ने मुझे फ़रमाया क्या मैं आप को बशारत न दू के अल्लाह अज्ज़वजल आप से फरमाता है, जो शख़्स आप पर दुरुद भेजता है तो में उस पर रहमते नाज़िल करता हूँ और जो आप पर सलाम भेजता है तो में उस पर सलामती भेजता हूँ”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (1 / 191 ح 1662) * فى سماع عبدالواحد بن محمد بن عبد الرحمن بن عوف من جده نظر فالسند ضعيف للانقطاع

٩٣٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوفٌ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَصْعَدُ مِنْهُ شَيْءٌ حَتَّى تُصَلِّيَ عَلَى نبيك. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

938. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब तक तुम अपने नबी ﷺ पर दुरुद न भेजे तो तुम्हारी दुआ आसमान और ज़मीन के दरमियान मौकूफ रहती है, और उस में से कोई चीज़ भी ऊपर नहीं चढ़ती| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (486) * فيه ابو قرة الاسدى : مجهول

तशहहुद की दुआओं का बयान • بَاب الدُّعَاء فِي التَّشَهُّد

पहली फ़स्ल • الْفَصْل الأول

٩٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو فِي الصَّلَاةِ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ اللَّهُمَّ إِنِّي أعوذ بك من المأثم والمغرم» فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ مَا أكثر مَا تستعيذ من المغرم يَا رَسُول الله فَقَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا غَرِمَ حَدَّثَ فَكَذَبَ وَوَعَدَ فَأَخْلَفَ»

939. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ में यह दुआ किया करते थे: “अल्लाह मैं अज़ाब ए कब्र और मसीह दज्जाल के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं मौत व हयात के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं गुनाह और क़र्ज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ” किसी ने आप ﷺ से कहा: आप क़र्ज़ इसे इस क़दर क्यों पनाह तलब करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंकि जब आदमी मकरूज़ होता है तो वह बात करते हुए झूठ बोलता है, और जब वादा करता है तो खिलाफर्ज़ी करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (832) و مسلم (129 / 589)، (1328)

٩٤٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا فَرَغَ أَحَدُكُمْ مِنَ التَّشَهُّدِ الْآخِرِ فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ أَرْبَعٍ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ» . رَوَاهُ مُسلم

940. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई तशहहुद से फारिग़ हो तो वह चार चीजों अज़ाब ए जहन्नम, अज़ाब ए कब्र, मौत व हयात के फितने और मसीह दज्जाल के फितने से अल्लाह की पनाह तलब करे”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (130 / 588)، (1326)

٩٤١ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعَلِّمُهُمْ هَذَا الدُّعَاءَ كَمَا يُعَلِّمُهُمُ السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُولُ: «قُولُوا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

941. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ उन्हें यह दुआ इस एहतेमाम के साथ सिखाया करते थे, जैसे आप उन्हें कुरान की सूरत सिखाया करते थे, आप ﷺ फरमाते: “कहो ऐ अल्लाह! मैं अज़ाब ए जहन्नम, अज़ाब ए कब्र, मसीह दज्जाल के फितने और मौत व हयात के फितने से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (134 / 590)، (1333)

٩٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ص:٢٩ عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلَاتِي قَالَ: «قُلْ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عنْدك وارحمني إِنَّك أَنْت الغفور الرَّحِيم»

942. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे कोई दुआ सिखाईए, जो में अपने नमाज़ में क्या करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कहो ऐ अल्लाह! बेशक मैंने अपनी जान पर बहोत ज़ुल्म किया है, तेरे सिवा गुनाहों को कोई नहीं बख्श सकता, सो अपने जानिब से मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा बेशक, तू ही बख्शने वाला मेहरबान है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (834) و مسلم (48 / 2075)، (6869)

٩٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كُنْتُ أَرَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ حَتَّى أرى بَيَاض خَدّه. رَوَاهُ مُسلم

943. आमिर बिन साद रदियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैं रसूलुल्लाह ﷺ को दाएँ बाएँ सलाम फिराते हुए देखता था, हत्ता कि में आप के रुखसार की सफेदी भी देखता था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (119 / 582)، (1315)

٩٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى أَقْبَلَ علينا بِوَجْهِهِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

944. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ से फारिग़ होते तो आप अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ कर लेते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (845)

٩٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَنْصَرِفُ عَنْ يَمِينِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

945. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ सलाम फेरने के बाद अपने दाएँ तरफ से रुख बदलते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 708)، (1641)

٩٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَا يَجْعَلْ أَحَدُكُمْ لِلشَّيْطَانِ شَيْئًا مِنْ صَلَاتِهِ يَرَى أَنَّ حَقًّا عَلَيْهِ أَنْ لَا يَنْصَرِفَ إِلَّا عَنْ يَمِينِهِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَثِيرًا يَنْصَرِفُ عَن يسَاره

946. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: “तुम में से कोई शख़्स अपने नमाज़ से शैतान के लिए हिस्सा न बनाए, वह इस तरह के वह समझे के (सलाम फेरने के बाद) सिर्फ दाएँ तरफ ही से रुख बदलेगा, हालाँकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप अक्सर अपने बाएँ जानिब से फेरते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (852) و مسلم (59 / 707)، (1638)

٩٤٧ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا خَلْفَ سَوَّلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحْبَبْنَا أَنْ نَكُونَ عَنْ يَمِينِهِ يُقْبِلُ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ قَالَ: فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «رَبِّ ص:٢٩ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ أَو تجمع عِبَادك» . رَوَاهُ مُسلم

947. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ते, तो हम आप के दाएँ जानिब खड़ा होना पसंद करते थे (क्यूंकि) आप हमारी तरफ चेहरा मुबारक किया करते थे, निज़ फ़रमाया मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरे रब मुझे इस रोज़ जब तू अपने बंदो को उठाएगा अपने अज़ाब से बचाना”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 709)، (1642)

٩٤٨ - (صَحِيح) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ: إِنَّ النِّسَاءَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كُنَّ إِذَا سَلَّمْنَ مِنَ الْمَكْتُوبَةِ قُمْنَ وَثَبَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَنْ صَلَّى مِنَ الرِّجَالِ مَا شَاءَ اللَّهُ فَإِذَا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ الرِّجَالُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ فِي بَاب الضحك إِن شَاءَ الله تَعَالَى

948. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में जब औरतें फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फ़ेरती तो वह खड़ी हो कर फ़ौरन चली जाती जबकि रसूलुल्लाह ﷺ और आप के साथ नमाज़ पढ़ने वाले सहाबा जब तक अल्लाह चाहता बैठें रहते, पस जब रसूलुल्लाह ﷺ खड़े होते तो फिर सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन भी खड़े होते| # हम जाबिर बिन समुराह (र) से मरवी हदीस इंशाअल्लाह “ बाब अल दहक” में ज़िक्र करेंगे. (बुखारी)

رواه البخارى (866) 0 حديث جابر بن سمرة : ياتى (4747)

तशहहुद की दुआओं का बयान • بَاب الدُّعَاء فِي التَّشَهُّد

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٩٤٩ - (صَحِيح) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: أَخَذَ بِيَدِي رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «إِنِّي لَأُحِبُّكَ يَا مُعَاذُ» . فَقُلْتُ: وَأَنَا أُحِبُّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: " فَلَا تَدَعْ أَنْ تَقُولَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ: رَبِّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ إِلَّا أَنَّ أَبَا دَاوُدَ لَمْ يَذْكُرْ: قَالَ معَاذ وَأَنا أحبك

949. मुआज़ बिन जबल बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया: “मुआज़ में तुम से मुहब्बत करता हूँ” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं भी आप से मुहब्बत करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ना तर्क न करना, मेरे रब अपने ज़िक्र व शुक्र और अपने बेहतरीन खालिस इबादत करने पर मेरी मदद फरमा”| सहीह अहमद अबू दावुद, नसई, अलबत्ता अबू दावुद ने “ قال معاذ وانا احبک” के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं है. (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 244 ح 22471) و ابوداؤد (1522) و النسائى (3 / 53 ح 1304) [و صححه ابن خزيمة (751) و ابن حبان (2345) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 273) و وافقه الذهبى و صححه مرة آخرى (3 / 273 ، 274)]

٩٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُسَلِّمُ عَنْ يَمِينِهِ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ» حَتَّى يُرَى بَيَاضُ خَدِّهِ الْأَيْمَنِ وَعَنْ يَسَارِهِ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ» حَتَّى يُرَى بَيَاضُ خَدِّهِ الْأَيْسَرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ ص:٣٠ وَالنَّسَائِيّ وَالتِّرْمِذِيّ وَلَمْ يَذْكُرِ التِّرْمِذِيُّ حَتَّى يُرَى بَيَاضُ خَدِّهِ

950. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ (السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّه) कहते हुए दाएँ तरफ सलाम फिराते हत्ता कि आप के दाएँ रुखसार की सफेदी नज़र जाती और (السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّه) कहते हुए बाएँ तरफ सलाम फिराते हत्ता कि आप के बाएँ रुखसार की सफेदी नज़र जाती”| अबू दावुद, नसई, तिरमिज़ी, अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी ने ((حتیٰ یری بیاض خده)) का ज़िक्र नहीं किया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (996) و النسائى (3 / 63 ح 1323) و الترمذى (295 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه (914) و صححه ابن خزيمة (728) و ابن حبان (516)]

٩٥١ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ

951. इब्ने माजा ने अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (916)

٩٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ أَكْثَرُ انْصِرَافِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ صَلَاتِهِ إِلَى شِقِّهِ الْأَيْسَرِ إِلَى حُجْرَتِهِ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

952. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ज़्यादातर अपने नमाज़ से अपने बाएँ तरफ, अपने हुजरे की तरफ फेरा करते थे| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (3 / 211 تحت ح 702) بدون سند [و رواه احمد (1 / 459) و سنده حسن]

٩٥٣ - (صَحِيح) وَعَن عَطاءٍ الْخُرَاسَانِيِّ عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُصَلِّي الْإِمَامُ فِي الْمَوْضِعِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ حَتَّى يتَحَوَّل» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَقَالَ عَطاء الخرساني لم يدْرك الْمُغيرَة

953. अता खुरासानी रहिमहुल्लाह मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इमाम इस जगह जहाँ उस ने फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ी है, नफ्ल नमाज़ न पढ़े हत्ता कि जगह बदल ले”| अबू दावुद, और उन्होंने ने फ़रमाया: अता खुरासानी की मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात साबित नहीं| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (616) [و ابن ماجه (1428) و للحدیث شواھد ضعیفة] * السند مرسل ، عطاء الخراسانی لم یدرک المغیرة بن شعبة رضی اللہ عنه

٩٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَضَّهُمْ عَلَى الصَّلَاةِ وَنَهَاهُمْ أَنْ يَنْصَرِفُوا قَبْلَ انْصِرَافِهِ مِنَ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

954. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन्हें नमाज़ पर तरगीब दिलाई और आप ने उन्हें आप के (उन की तरफ फेरने से) पहले उठ कर जाने से मना फ़रमाया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (624) [و للحديث طريق آخر عند احمد (3 / 240 ح 13561)]

तशहहुद की दुआओं का बयान • بَاب الدُّعَاء فِي التَّشَهُّد

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٩٥٥ - (ضَعِيف) وَعَن شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي صَلَاتِهِ: " اللَّهُمَّ إِنِّي أَسأَلك الثَّبَات فِي الْأَمر والعزيمة عَلَى الرُّشْدِ وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَأَسْأَلُكَ قَلْبًا سَلِيمًا وَلِسَانًا صَادِقًا وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وروى أَحْمد نَحوه

955. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने नमाज़ में यह दुआ किया करते थे: “अल्लाह मैं दीन के मुआमले में साबित कदमी, रशद हिदायत पर अज़ीमत, तेरी नेअमत पर शुक्र और तेरी बेहतरीन और खालिस इबादत करने का तुझ से सवाल करता हूँ, मैं तुझ से क़ल्ब सलीम और ज़ुबान सादिक का सवाल करता हूँ, मैं इस खैर व भलाई का तुझ से सवाल करता हूँ जिसे तू जानता है, और हर इस शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, जिसे तू जानता है और उन गुनाहों से जिसे तू जानता है, तुझ से मगफिरत तलब करता हूँ”| नसई, इमाम अहमद ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه النسائی (3 / 54 ح 1305) و احمد (4 / 1213 ح 17243) و للحديث شواهد]

٩٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي صَلَاتِهِ بَعْدَ التَّشَهُّدِ: «أَحْسَنُ الْكَلَامِ كَلَامُ اللَّهِ وَأَحْسَنُ الْهَدْيِ هدي مُحَمَّد» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

956. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने नमाज़ में तशहहुद के बाद यह कहा करते थे: “बेहतरीन कलाम अल्लाह का कलाम है और सबसे बेहतरीन तरीका मुहम्मद ﷺ का तरीका है”| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (3 / 58 ح 1312)

٩٥٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُول الله صلى يُسَلِّمُ فِي الصَّلَاةِ تَسْلِيمَةً تِلْقَاءَ وَجْهِهِ ثُمَّ تميل إِلَى الشق الْأَيْمن شَيْئا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

957. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ में अपने चेहरे के सामने से एक सलाम फिराते, फिर थोड़ा अपने दाएँ जानिब झुक जाते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (296) * زهير بن محمد : يروی عنه اهل الشام مناكير ، و تابعه عبدالملک بن محمد الصنعانی عند ابن ماجه (919) وهو لين الحديث و للحديث شواهد ضعيفة

٩٥٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَمُرَةَ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَرُدَّ عَلَى الْإِمَامِ وَنَتَحَابَّ وَأَنْ يُسَلِّمَ بَعْضُنَا عَلَى

بَعْضٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

958. समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म दिया के हम इमाम के सलाम का जवाब दें, बाहम मुहब्बत करे और एक दूसरे को सलाम करे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1001) [و ابن ماجه : 921] * قتادة مدلس و عنعن

بَاب الذّكر بعد الصَّلَاة • नमाज़ के बाद ज़िक्र करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٩٥٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ أَعْرِفُ انْقِضَاءَ صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم بِالتَّكْبِيرِ

959. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ का पूरा होना (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर की आवाज़ से पहचानता था| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (842) و مسلم (120 / 583)، (1316)

٩٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَلَّمَ لَمْ يَقْعُدْ إِلَّا مِقْدَارَ مَا يَقُولُ: «اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجلَال وَالْإِكْرَام» . رَوَاهُ مُسلم

960. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ सलाम फेरने के बाद यह दुआ: “अल्लाह तू सलामती वाला है, तेरे ही तरफ से सलामती है, ए शान व इकराम वाले तू बड़ा ही बा बरकत है” पढ़ने तक किब्ला रुखबैठे रहते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (135 / 592)، (1335)

٩٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَوْبَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا انْصَرَفَ مِنْ صَلَاتِهِ اسْتَغْفَرَ ثَلَاثًا وَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجلَال وَالْإِكْرَام» . رَوَاهُ مُسلم

961. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ से फारिग़ होते तो आप ﷺ तीन मर्तबा “ اسْتَغْفَرَ اللَّهَ (अस्तगफिरुल्लाह)” कहते और फिर यह कलिमात पढ़ते “ अल्लाह तू सलामती वाला है और तेरे ही तरफ से सलामती है, ए शान व इकराम वाले तू बड़ा ही बा बरकत है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (135 / 591)، (1334)

٩٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يَقُولُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ص:٣٠ مَكْتُوبَةٍ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْك الْجد»

962. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह पढ़ा करते थे: “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत और इसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर कादिर है, अल्लाह जब तू अता करना चाहे, इसे कोई रोक नहीं सकता और जब तू रोक ले, इसे कोई अता नहीं कर सकता और दौलतमंद को (इस की) दौलत तेरे अज़ाब से नहीं बचा सकती”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (844) و مسلم (137 / 593)، (1338)

٩٦٣ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن الزبير قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَلَّمَ مِنْ صَلَاتِهِ يَقُولُ بِصَوْتِهِ الْأَعْلَى: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّه لَا إِلَه إِلَّا الله لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدّين وَلَو كره الْكَافِرُونَ» . رَوَاهُ مُسلم

963. अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ से सलाम फेरते तो बुलंद आवाज़ से यह दुआ पढ़ते: “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत और इसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कादिर है, गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से ही मुमकिन है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, हम सिर्फ इसी की इबादत करते हैं इसी के लिए नेअमत व फ़ज़ल और इसी के लिए बेहतरीन तारीफ़ है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, हम इसी के लिए इताअत को खालिस करते हैं ख्वाह काफ़िर इसे ना पसंद करे”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (139 / 594)، (1343) * قوله ‘‘ بصوته الاعلی ’’ ھکذا فی مصابیح السنة للبغوی (684) وھو وھم ، لم نجده فی صحیح مسلم و سنن ابی داود (1507) و سنن النسائی (3 / 70 ح 1341)

٩٦٤ - (صَحِيح) وَعَن سعد أَن كَانَ يُعَلِّمُ بَنِيهِ هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ وَيَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَتَعَوَّذُ بِهِنَّ دُبُرَ الصَّلَاةِ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَاب الْقَبْر» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

964. साअद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह अपने औलाद को यह कलिमात सिखाया करते थे, और वह कहते थे के रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के बाद उन के ज़रिए तअव्वुज़ पनाह हासिल किया करते थे: “अल्लाह मैं बुज़दिली और कंजूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ, और इस बात से भी तेरी पनाह चाहता हूँ कि मुझे नक्मी (यानी बुढ़ापे की) उमर की तरफ फेर दिया जाए और इसी तरह में दुनियावी फ़ितनो और अज़ाब ए कब्र से भी तेरी

पनाह चाहता हूँ"| (बुखारी)

رواه البخارى (2822)

٩٦٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: (إِنَّ فُقَرَاءَ الْمُهَاجِرِينَ أَتَوْا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: قَدْ ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالدَّرَجَاتِ الْعُلَى وَالنَّعِيمِ الْمُقِيمِ فَقَالَ وَمَا ذَاكَ قَالُوا يُصَلُّونَ كَمَا نُصَلِّي وَيَصُومُونَ كَمَا نَصُومُ وَيَتَصَدَّقُونَ وَلَا نَتَصَدَّقُ وَيُعْتِقُونَ وَلَا نُعْتِقُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفَلَا أُعَلِّمُكُمْ شَيْئًا تُدْرِكُونَ بِهِ مَنْ سَبَقَكُمْ وَتَسْبِقُونَ بِهِ مَنْ بَعْدَكُمْ وَلَا يَكُونُ أَحَدٌ أَفْضَلَ مِنْكُمْ إِلَّا مَنْ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُمْ» قَالُوا بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «تُسَبِّحُونَ وَتُكَبِّرُونَ وَتَحْمَدُونَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ مَرَّةً» . قَالَ أَبُو صَالِحٍ: فَرَجَعَ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِينَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا سَمِعَ إِخْوَانُنَا ص: ٣٠ أَهْلُ الْأَمْوَالِ بِمَا فَعَلْنَا فَفَعَلُوا مِثْلَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَلِك فضل الله يؤته من يَشَاء» . وَلَيْسَ قَوْلُ أَبِي صَالِحٍ إِلَى آخِرِهِ إِلَّا عِنْدَ مُسْلِمٍ وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: «تُسَبِّحُونَ فِي دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا وَتَحْمَدُونَ عَشْرًا وَتُكَبِّرُونَ عشرا» . بدل ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ

965. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि कुछ मुहाजिर फुकराअ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया, माल दार दाइमी नेअमतें और बुलंद दरजात पा गए आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो कैसे ?" उन्होंने अर्ज़ किया, जैसे हम नमाज़ पढ़ते है वैसे वह नमाज़ पढ़ते है, जैसे हम रोज़े रखते है वैसे वह रोज़े रखते है, लेकिन वह सदका करते हैं और हम सदका नहीं करते, वह गुलाम आज़ाद करते हैं हम गुलाम आज़ाद नहीं करते, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क्या मैं तुम्हें कोई ऐसी चीज़ न सिखाऊ जिसके ज़रिए तुम अपने से सबकत ले जाने वालो को पा लोगे और अपने बाद वालो से सबकत पा जाओगे और तुम से सिर्फ वही मालदार शख़्स बेहतर होगा, जो तुम्हारे जैसे अमल करेगा, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल, क्यों नहीं? ज़रूर बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम हर नमाज़ के बाद तेंतीस तेंतीस बार (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) (((اللّٰهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) और (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) पढ़ लिया करो", अबू स्वालेह बयान करते हैं, मुहाजिर फुकराअ दोबाराह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए और अर्ज़ किया, हमारे माल दार भाइयो को हमारे अमल का पता चल गया है और उन्होंने भी वही अमल शुरू कर दिया है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये अल्लाह का फ़ज़ल है, वह जिसे चाहता है अता करता है बुखारी, मुस्लिम, लेकिन अबू स्वालेह का कौल सिर्फ सहीह मुस्लिम में है सहीह बुखारी की रिवायत में है: "तुम हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दस मर्तबा (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) दस मर्तबा (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) और दस मर्तबा (((اللّٰهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) पढ़ा करो यह अल्फाज़: "तेतीस के मुतबादिल फरमाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (843) و مسلم (142 / 595)، (1347)

٩٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مُعَقِّبَاتٌ لَا يَخِيبُ قَائِلُهُنَّ أَوْ فَاعِلُهُنَّ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ مَكْتُوبَة: ثَلَاث وَثَلَاثُونَ تَسْبِيحَة ثَلَاث وَثَلَاثُونَ تَحْمِيدَةً وَأَرْبَعٌ وَثَلَاثُون تَكْبِيرَةً ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

966. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद

चंद कलिमात कहे जाते हैं, उनका कहने वाला नाकाम और नामुराद नहीं होगा, तेंतीस मर्तबा (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) तेंतीस मर्तबा (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) और चोंतिस मर्तबा (((اللَّهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) कहना :"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (144 / 596)، (1349)

٩٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ سَبَّحَ اللَّهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَحَمَدَ اللَّهَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَكَبَّرَ اللَّهَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ فَتِلْكَ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ وَقَالَ تَمَامَ الْمِائَةِ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ غُفِرَتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ ". رَوَاهُ مُسلم

967. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने हर नमाज़ के बाद तेंतीस मर्तबा (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) तेंतीस मर्तबा (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) और तेंतीस मर्तबा (((اللَّهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) कहा पस यह निन्यानवेहुए और: "अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत है, इसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर कादिर है, उसे सौ पूरा कर लिया तो उस के गुनाह ख्वाह समुन्दर की झाग के बराबर हो तो भी मुआफ़ कर दिए जाते हैं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (146 / 597)، (1352)

तशहहुद की दुआओं का बयान • بَاب الدُّعَاء فِي التَّشَهُّد

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٩٦٨ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَسْمَعُ؟ قَالَ: «جَوْفُ اللَّيْلِ الآخر ودبر الصَّلَوَات المكتوبات» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

968. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! कौन सी दुआ ज़्यादा कबूल होती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "आखरी आधी रात में और फ़र्ज़ नमाज़ो के बाद की गई दुआ"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3499 وقال : حسن) [و سیاتی (1231)] * عبد الرحمن بن سابط عن ابی امامة رضی الله عنه منقطع ، لم يسمع منه

٩٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَقْرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ. رَوَاهُ احْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

969. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद मुअव्वीज़ात (सुरह इखलास, अल फलक और अल नास) की तिलावत किया करू| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 155 ح 17553) و ابوداؤد (1523) و النسائی (3 / 68 ح 1337) و البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 81 ح 105) [و الترمذی (2903 و حسنه) و صححه ابن خزیمة (755) و ابن حبان (2347) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 253) و وافقه الذھبی]

٩٧٠ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ مِنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ وَلَأَنْ أَقْعُدَ مَعَ قَوْمٍ يَذْكُرُونَ اللَّهَ مِنْ صَلَاةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ تَغْرُبَ الشَّمْسُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أُعْتِقَ أَرْبَعَةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

970. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे नमाज़ ए फजर से तुलुअ ए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करने वाली जमाअत के साथ बेठना, औलाद ए इस्माइल अलैहिस्सलाम से ताल्लुक रखने वाले चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसंद है, जबकि मुझे नमाज़ ए असर से गुरूब ए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करने वाली जमाअत के साथ बेठना चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसंद है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3667) * قتادة مدلس و عنعن و للحدیث شواھد ضعیفة

٩٧١ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى الْفَجْرَ فِي جَمَاعَةٍ ثُمَّ قَعَدَ يَذْكُرُ اللَّهَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ كَانَتْ لَهُ كَأَجْرِ حَجَّةٍ وَعُمْرَةٍ» . قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَامَّةٍ تَامَّةٍ تَامَّةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

971. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नमाज़ ए फजर बा जमाअत अदा करता है, फिर इसी जगह बैठ कर तुलुअ ए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहता है, फिर दो रकते पढ़ता है तो उस के लिए मुकम्मल हज उमरा का सवाब है” आप ने यह तीन मर्तबा फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (586 وقال : حسن غریب) * ابو ظلال ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة

नमाज़ के बाद ज़िक्र करने का बयान • بَاب الذّكر بعد الصَّلَاة

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٩٧٢ - (ضَعِيف) عَنِ الْأَزْرَقِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ: صَلَّى بِنَا إِمَامٌ لَنَا يُكْنَى أَبَا رِمْثَةَ قَالَ صَلَّيْتُ هَذِهِ الصَّلَاةَ أَوْ مِثْلَ هَذِهِ الصَّلَاةِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ يَقُومَانِ فِي الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ عَنْ يَمِينِهِ وَكَانَ رَجُلٌ قَدْ شَهِدَ التَّكْبِيرَةَ ص:٣٠ الْأُولَى مِنَ الصَّلَاةِ فَصَلَّى نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ سَلَّمَ عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ يَسَارِهِ حَتَّى رَأَيْنَا بَيَاضَ خَدَّيْهِ ثُمَّ انْفَتَلَ كَانْفِتَالِ أَبِي رِمْثَةَ يَعْنِي نَفْسَهُ فَقَامَ الرَّجُلُ الَّذِي أَدْرَكَ مَعَهُ التَّكْبِيرَةَ الْأُولَى مِنَ الصَّلَاةِ يَشْفَعُ فَوَثَبَ إِلَيْهِ عُمَرُ فَأَخَذَ

بمنكبه فَهَزَّهُ ثُمَّ قَالَ اجْلِسْ فَإِنَّهُ لَمْ يُهْلِكْ أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ بَيْنَ صلواتهم فَصْلٌ. فَرَفَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَره فَقَالَ: «أَصَاب الله بك يَا ابْن الْخطاب» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

972. अज़रक बिन कैस रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमारे इमाम अबू रम्स ने हमें नमाज़ पढ़ाइ तो उन्होंने कहा, मैंने यह नमाज़ या उसकी मिस्ल नमाज़, रसूलुल्लाह ﷺ के साथ पढ़ी थी, उन्होंने कहा: अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु पहली सफ में आप ﷺ की दाएँ जानिब खड़े हुआ करते थे, एक आदमी जो तकबीर उला में आकर शामिल हुआ, नबी ﷺ ने नमाज़ पढ़ी, फिर अपने दाएँ बाएँ सलाम फेरा, हत्ता कि हमने आप के रुखसारो की सफेदी देखी, फिर आप ﷺ मेरे जैसे अबू रम्स यानी वह खुद मेरे, पस वह आदमी जो तकबीर उला में आप के साथ शरीक हुआ था वह खड़ा हुआ और फिर नमाज़ शुरू कर दी तो उमर रदियल्लाहु अन्हु जल्दी से खड़े हुए और इसे उस के कंधो से पकड़ कर खूब हिलाया, फिर फ़रमाया बैठ जाओ क्योंकि अहले किताब इसीलिए हलाक हुए थे, की उनकी फ़र्ज़ व नफ्ल नमाज़ो में कोई वक्फा नहीं होता था, पस नबी ﷺ ने अपने नज़र उठाई तो फ़रमाया: “इब्ने खत्ताब अल्लाह ने तेरी वजह से हक़ कायम कर दिया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1007) * وقال الذهبی فی تلخیص المستدرک (1 / 270) :'' المنهال (بن خلیفة) ضعفه ابن معین و اشعث (بن شعبة) لین و الحدیث منکر''

٩٧٣ - (صَحِيح) وَعَن زيد بن ثَابت قَالَ: أُمِرْنَا أَنْ نُسَبِّحَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَنَحْمَدَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَنُكَبِّرَ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ فَأُتِيَ رَجُلٌ فِي الْمَنَامِ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقِيلَ لَهُ أَمَرَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم أَن تسبحوا فِي دبر كُلِّ صَلَاةٍ كَذَا وَكَذَا قَالَ الْأَنْصَارِيُّ فِي مَنَامِهِ نَعَمْ قَالَ فَاجْعَلُوهَا خَمْسًا وَعِشْرِينَ خَمْسًا وَعِشْرِينَ وَاجْعَلُوا فِيهَا التَّهْلِيلَ فَلَمَّا أَصْبَحَ غَدَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فافعلوا» . رَوَاهُ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

973. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमें हुक्म दिया गया के हम हर नमाज़ के बाद तेंतीस दफा (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) तेंतीस दफा (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) और चोंतिस मर्तबा (((اللَّهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) कहे, अंसार के एक आदमी ने ख्वाब में किसी आदमी को देखा तो उस ने इस अंसारी आदमी इसे कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें हुक्म दिया है के तुम हर नमाज़ के बाद इस क़दर तस्बीह करो, अंसारी शख़्स ने अपने ख्वाब में कहा, वहां इस शख़्स ने कहा: इसे पच्चीस पच्चीस मर्तबा कर लो और उस में (لا اله الا الله) शामिल कर लो, जब सुबह हुई तो वह अंसारी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने आप को ख्वाब का वाकिए बयान किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ऐसे ही कर लिया करो”| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (5 / 184 ح 21936) و النسائی (3 / 76 ح 1351) و الدارمی (1 / 312 ح 1361)

٩٧٤ - (مَوْضُوع) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَعْوَاد الْمِنْبَرِ يَقُولُ: «مَنْ قَرَأَ آيَةَ الْكُرْسِيِّ فِي دبر كل صَلَاة لم يمنعهُ من دُخُولَ الْجَنَّةِ إِلَّا الْمَوْتُ وَمَنْ قَرَأَهَا حِينَ يَأْخُذُ مَضْجَعَهُ آمَنَهُ اللَّهُ عَلَى دَارِهِ وَدَارِ جَارِهِ وَأَهْلِ دُوَيْرَاتٍ حَوْلَهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان وَقَالَ إِسْنَاده ضَعِيف

974. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर की सीढ़ियों पर फरमाते हुए सुना:

“जो शख़्स हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ता है तो उस को द्खुले जन्नत से सिर्फ मौत रोके हुए हैं और जो शख़्स सोने के लिए अपने बिस्तर पर लेटते वक़्त इसे पढ़ता है तो अल्लाह उस के घर को, उस के पड़ोसी के घर और उस के आस पास के घरवालो को अमन अता कर देता है”| बयहकी की शौबुल ईमान और उन्होंने कहा: उसकी सनद जईफ है| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2395) * فيه نهشل بن سعيد : كذاب ، و فيه علل أخرى ولآية الكرسى حديث حسن عند النسائى فى الكبرىٰ (9928) و عمل اليوم و الليلة (100)

٩٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنْمٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «مَنْ قَالَ قَبْلَ أَنْ يَنْصَرِفَ وَيَثْنِيَ رِجْلَيْهِ مِنْ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ وَالصُّبْحِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ عَشْرَ مَرَّاتٍ كُتِبَ لَهُ بِكُلِّ وَاحِدَةٍ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَمُحِيَتْ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ وَرُفِعَ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ وَكَانَت حِرْزًا مِنْ كُلِّ مَكْرُوهٍ وَحِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيم وَلم يحل لذنب يُدْرِكَهُ إِلَّا الشِّرْكُ وَكَانَ مِنْ أَفْضَلِ النَّاسِ عَمَلًا إِلَّا رَجُلًا يَفْضُلُهُ يَقُولُ أَفْضَلَ مِمَّا قَالَ» . رَوَاهُ أَحْمد

975. अब्दुल रहमान बिन गन्मी नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स नमाज़ ए मग़रिब और नमाज़ ए फजर पढ़ने के बाद अपनी इसी जगह और इसी कैफियत तशहहुद मेंबैठे हुए यह दुआ: “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत और इसी के लिए हर किस्म की हम्द है और हर किस्म की खैर व भलाई इसी के हाथ में है, वही जिंदा करता है और मारता है और वही हर चीज़ पर कादिर है” दस मर्तबा पढ़ता है तो उस के हर मर्तबा पढ़ने पर उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती है, उस के दस गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, और उस के दस दरजात बुलंद कर दिए जाते हैं, और हर नागवार चीज़ से उस का बचाव हो जाता है, और मरदूद शैतान से उस का बचाव हो जाता है, शिर्क के अलावा कोई गुनाह इसे हलाक नहीं कर सकता और वह सबसे बेहतरीन अमल करने वाला होता है इल्ला यह कि कोई शख़्स उन से बेहतर कलाम से दुआ करे”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 227 ح 18153 ، و سنده حسن) و نظر الحديث الآتى

٩٧٦ - (ضَعِيف) وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ نَحْوَهُ عَنْ أَبِي ذَرٍّ إِلَى قَوْلِهِ: «إِلَّا الشِّرْكَ» وَلَمْ يَذْكُرْ: ص:٣٠ «صَلَاةَ الْمَغْرِبِ وَلَا بِيَدِهِ الْخَيْرُ» وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح غَرِيب

976. इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने ((الا الشرک)) तक अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से इसी तरह रिवायत किया है और उन्होंने नमाज़ ए मग़रिब और ((بِيَدِهِ الْخَيْر)) का ज़िक्र नहीं किया और उन्होंने कहा: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3474) * شهر بن حوشب حسن الحديث و ثقه الجمهور كما حققته فى تخريج النهاية فى الفتن و الملاحم (260)

٩٧٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْثًا قِبَلَ نَجْدٍ فَغَنِمُوا غَنَائِمَ كَثِيرَةً وَأَسْرَعُوا الرَّجْعَةَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَّا لَمْ يَخْرُجْ مَا رَأَيْنَا بَعْثًا أَسْرَعَ رَجْعَةً وَلَا أَفْضَلَ غَنِيمَةً مِنْ هَذَا الْبَعْثِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى قَوْمٍ أَفْضَلَ غَنِيمَةً وَأَفْضَلَ رَجْعَةً؟ قَوْمًا شَهِدُوا صَلَاةَ الصُّبْحِ ثمَّ جَلَسُوا يذكرُونَ الله حَتَّى طلعت عَلَيْهِم الشَّمْس أُولَئِكَ أسْرع رَجْعَة وَأَفْضَل غَنِيمَةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ هَذَا الْوَجْهِ وَحَمَّاد بن أبي حميد هُوَ الضَّعِيف فِي الحَدِيث

977. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने नज्द की तरफ एक लश्कर रवाना किया, उन्होंने बहोत सा माले गनीमत हासिल किया और बहोत जल्द मदीना वापस आ गए तो हम में से एक आदमी ने कहा, हम ने इस लश्कर से ज़्यादा माले गनीमत लेकर और इतनी जल्दी वापस आते हुए कोई लश्कर नहीं देखा, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें ज़्यादा माले गनीमत के साथ ज़्यादा जल्दी वापस आने वाले लश्कर के बारे में बताऊँ, वह ऐसे लोग है जो बा जमाअत फज्र पढ़ने के बाद बैठ कर तुलुअ ए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहते है, पस यह वह लोग है जो बेहतरीन माले गनीमत लेकर बहोत जल्द वापस आने वाले हैं"| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है, हम्माद बिन अबी हुमैद रावी हदीस के बारे में जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3561) [و للحديث شواهد ضعيفة]

بَابُ مَا لَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلَاةِ وَمَا يُبَاحُ مِنْهُ — नमाज़ के दौरान नाजाइज़ और मुबाह आमाल का बयान

الْفَصْلُ الأول — पहली फस्ल

٩٧٨ - (صَحِيح) عَن مُعَاوِيَة ابْن الْحَكَمِ قَالَ: بَيْنَا أَنَا أُصَلِّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ عَطَسَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقُلْتُ: يَرْحَمُكَ اللَّهُ. فَرَمَانِي الْقَوْمُ بِأَبْصَارِهِمْ. فقلت: وَا ثكل أُمِّيَاهُ مَا شَأْنُكُمْ تَنْظُرُونَ إِلَيَّ فَجَعَلُوا يَضْرِبُونَ بِأَيْدِيهِمْ عَلَى أَفْخَاذِهِمْ فَلَمَّا رَأَيْتُهُمْ يُصَمِّتُونَنِي لَكِنِّي سَكَتُّ فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبِأَبِي هُوَ وَأُمِّي مَا رَأَيْتُ مُعَلِّمًا قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ أَحْسَنَ تَعْلِيمًا مِنْهُ فَوَاللَّهِ مَا كَهَرَنِي وَلَا ضَرَبَنِي وَلَا شَتَمَنِي قَالَ: «إِنَّ هَذِهِ الصَّلَاةَ لَا يَصْلُحُ فِيهَا شَيْءٌ من كَلَام النَّاس إِنَّمَا هُوَ التَّسْبِيحُ وَالتَّكْبِيرُ وَقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ» أَوْ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قلت: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ وَقد جَاءَ اللَّهُ بِالْإِسْلَامِ وَإِنَّ مِنَّا رِجَالًا يَأْتُونَ الْكُهَّانَ. قَالَ: «فَلَا تَأْتِهِمْ» . قُلْتُ: وَمِنَّا رِجَالٌ يَتَطَيَّرُونَ. قَالَ: «ذَاكَ شَيْءٌ يَجِدُونَهُ فِي صُدُورِهِمْ فَلَا يَصُدَّنَّهُمْ» . قَالَ قُلْتُ وَمِنَّا رِجَالٌ يَخُطُّونَ. ص:٣١ قَالَ: «كَانَ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ يَخُطُّ فَمَنْ وَافَقَ خَطَّهُ فَذَاكَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ قَوْلُهُ: لَكِنِّي سَكَتُّ هَكَذَا وُجِدَتْ فِي صَحِيحِ مُسْلِمٍ وَكِتَابِ الْحُمَيْدِيِّ وَصُحِّحَ فِي «جَامِعِ الْأُصُولِ» بِلَفْظَةِ كَذَا فَوْقَ: لكني

978. मुआविया बिन हकम बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ रहा था के इस दौरान लोगों में से किसी आदमी ने छींक मार दी, तो मैंने दोरान नमाज़ कहा या अल्लाह तुम पर रहम करे, लोग मुझे आंखो के इशारे से रोकने लगे, मैंने कहा: मेरी माँ मुझे गम पाए, तुम्हें किया हुआ की तुम मुझे इस तरह देख रहे हो? उन्होंने अपने रानो पर अपने हाथ मारना शुरू कर दिए, चुनांचे जब मैंने उन्हें देखा के वह मुझे चुप करा रहे हैं तो मैं

ख़ामोश हो गया, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ पढ़ ली मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो मैंने आप जैसे बेहतरीन मुअल्लिम आप से पहले कोई देखा है के आप के बाद, अल्लाह की क़सम! आप ने ना मुझे डांटा न मारा और ना ही गाली दी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये जो नमाज़ है उस में लोगों का बाते करना दुरुस्त नहीं, यह तो सिर्फ तस्बीह व तकबीर और किराअत कुरान है, या उस से मीलते जुलते अल्फाज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाए, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं नया नया मुसलमान हुआ हूँ, अल्लाह ने हमें इस्लाम की दौलत से नवाज़ा है बेशक हम में कुछ ऐसे लोग है जो काहिनो के पास जाते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उन के पास न जाना”, मैंने अर्ज़ किया: हम में से कुछ लोग फाल लेते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये वह चीज़ है जो वह अपने सीनों में पाते है (इस की कोई दलील नहीं) पस यह चीज़ उन्हें रोकने न पाए”, मैंने अर्ज़ किया: हम में से कुछ लोग लकीरें खींचते है आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक नबी भी ख़त खिचां करते थे, पस जिस का ख़त उन के मुवाफिक होगा तो वह दुरुस्त है”| मुअल्लिफ फरमाते हैं के रावी का यह कहना: “لکنی سکت” मैंने जुमला सहीह मुस्लिम और किताब हुमैदी में इसी तरह देखा है और जामेअ अल अस्वल में उस के साथ कज़ा का लफ्ज़ तसहिह के तौर पर लाया गया है? (मुस्लिम)

رواہ مسلم (33 / 537)، (1199)

٩٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ فَيَرُدُّ عَلَيْنَا فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فِي الصَّلَاةِ فَتَرُدُّ عَلَيْنَا فَقَالَ: إِنَّ فِي الصَّلَاةِ لَشُغْلًا "

979. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम दौरान ए नमाज़ नबी ﷺ को सलाम किया करते थे और आप हमें जवाब दे दिया करते थे, पस जब हम नज्जाशी के पास से वापस आए तो हमने आप को सलाम अर्ज़ किया, लेकिन आप ने हमें जवाब दिया तो हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ हम आप को दौरान ए नमाज़ सलाम अर्ज़ किया, करते थे और आप हमें जवाब दिया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक नमाज़ एक तरह की मशगुलियत (लाताल्लुकी है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1199) و مسلم (34 / 538)، (1201)

٩٨٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ مُعَيْقِيبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الرَّجُلِ يُسَوِّي التُّرَابَ حَيْثُ يَسْجُدُ؟ قَالَ: «إِنْ كُنْتَ فَاعِلًا فَوَاحِدَةً»

980. मुअयकिब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से इस शख़्स के बारे में रिवायत करते हैं, जो सजदाह की जगह पर मिट्टी दुरुस्त करता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुमने ज़रूर ही करना है तो फिर एक मर्तबा कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1207) و مسلم (47 / 546)، (1219)

٩٨١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن الخصر فِي الصَّلَاة "

981. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दौरान ए नमाज़ पहलु पर हाथ रखने से मना फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1220) و مسلم (46 / 545)، (1218)

٩٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الِالْتِفَاتِ فِي الصَّلَاةِ فَقَالَ: «هُوَ اختلاس يختلسه الشَّيْطَان من صَلَاة العَبْد»

982. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नमाज़ में इधर उधर देखने के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो तो उचक लेना है, शैतान बंदे की नमाज़ से उचक लेता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (751) و مسلم (لم اجده)

٩٨٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ عَنْ رَفْعِهِمْ أَبْصَارَهُمْ عِنْدَ الدُّعَاءِ فِي الصَّلَاةِ إِلَى السَّمَاءِ أَوْ لَتُخْطَفَنَّ أَبْصَارهم» . رَوَاهُ مُسلم

983. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो को दौरान ए नमाज़ दुआ के वक़्त अपने आँखे आसमान की तरफ उठाने से बाज़ जाना चाहिए, या उनकी आँखे उचक ली जाएगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (118 / 429)، (967)

٩٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي قَتَادَة قَالَتْ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَؤُمُّ النَّاسَ وَأُمَامَةُ بِنْتُ أَبِي الْعَاصِ عَلَى عَاتِقِهِ فَإِذَا رَكَعَ وَضَعَهَا وَإِذَا رَفَعَ مِنَ السُّجُودِ أَعَادَهَا "

984. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को लोगों की इमामत कराते हुए देखा, जबकि आप की नवासी उमामा बिन्ते अबी अल आस आप के कंधे पर थी, जब आप रुकू करते तो उन्हें (कंधे से) उतार देते और जब सजदो से सर उठाते तो फिर उन्हें उठा लेते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (516) و مسلم (42 / 543)، (1213)

٩٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَكْظِمْ مَا اسْتَطَاعَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ» . رَوَاهُ مُسلم

985. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स को दौरान ए नमाज़ जिमाई आए तो जिस क़दर हो सके इसे रोके क्योंकि (मुंह खुला हो) तो शैतान दाखिल हो जाता है” इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 2996)، (7493)

٩٨٦ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ الْبُخَارِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: " إِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَكْظِمْ مَا اسْتَطَاعَ وَلَا يَقُلْ: هَا فَإِنَّمَا ذَلِكُمْ مِنَ الشَّيْطَان يضْحك مِنْهُ "

986. और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी सहीह बुखारी की रिवायत में है: “जब तुम में से किसी शख़्स को दौरान ए नमाज़ जिमाई आए तो जिस क़दर हो सके इसे रोके हा हा न करे यह तो महज़ शैतान की तरफ से है, वह उस पर हँसता है”| (बुखारी)

رواه البخارى (6226)

٩٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ الْجِنِّ تَفَلَّتَ الْبَارِحَةَ لِيَقْطَعَ عَلَيَّ صَلَاتِي فَأَمْكَنَنِي اللَّهُ مِنْهُ فَأَخَذْتُهُ فَأَرَدْتُ أَنْ أَرْبِطَهُ عَلَى سَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ حَتَّى تَنْظُرُوا إِلَيْهِ كُلُّكُمْ فَذَكَرْتُ دَعْوَةَ أَخِي سُلَيْمَانَ: (رَبِّ هَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي) ص:٣١»» فَرَدَدْتُهُ خَاسِئًا "

987. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गुज़िश्ता रात अचानक एक सरकश जिन्न आया ताकि मेरी नमाज़ ख़राब कर दे, लेकिन अल्लाह ने मुझे उस पर इख़्तियार अता फ़रमाया तो मैंने इसे मस्जिद के सुतून के साथ बांधने का इरादा किया हत्ता कि तुम सब इसे देख लेते, तो फिर मुझे मेरे भाई सुलेमान अलैहिस्सलाम की दुआ याद गई मेरे रब मुझे ऐसी बादशाहत अता फरमा जो मेरे बाद किसी और के लायक न हो, पस मैंने इसे ज़लील कर के भगा दिया “| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (461) و مسلم (39 / 541)، (1209)

٩٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «مَنْ نَابَهُ شَيْءٌ فِي صَلَاتِهِ فَلْيُسَبِّحْ فَإِنَّمَا التَّصْفِيقُ لِلنِّسَاءِ»»» وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «التَّسْبِيحُ لِلرِّجَالِ والتصفيق للنِّسَاء»

988. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को नमाज़ में कोई आरज़ी पेश जाए तो वह “ सुबहानल्लाह” कहे हाथ पर हाथ मारना तो औरतों के लिए है”| और एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुबहानल्लाह कहना मर्दों के लिए है जबकि हाथ पर हाथ मारना औरतों के लिए है|‘‘ (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (684) [الرواية الاولىٰ] 1203) [الرواية الثانية] و مسلم (102 / 421)، (949)

بَابُ مَا لَا يَجُوزُ مِنَ الْعَمَلِ فِي الصَّلَاةِ وَمَا يُبَاحُ مِنْهُ • नमाज़ के दौरान नाजाइज़ और मुबाह आमाल का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٩٨٩ - (حسن) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ قَبْلَ أَنْ نَأْتِيَ أَرْضَ الْحَبَشَةِ فَيَرُدُّ عَلَيْنَا فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ أَرْضِ الْحَبَشَةِ أَتَيْتُهُ فَوَجَدْتُهُ يُصَلِّي فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ حَتَّى إِذا قَضَى صَلَاتَهُ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ يُحْدِثُ مِنْ أَمْرِهِ مَا يَشَاءُ ن وَإِن مِمَّا أحدث أَن لَا تتكلموا فِي الصَّلَاة» . فَرد عَليّ السَّلَام

989. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हिजरत हबशा से पहले हम नबी ﷺ को हालत नमाज़ में सलाम किया करते थे, और आप हमें सलाम का जवाब दिया करते थे, जब हमसर ज़मीन हबशा से वापस मक्के आए तो मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप इस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे, मैंने आप को सलाम किया लेकिन आप ने मुझे सलाम का जवाब न दिया, हत्ता कि जब आप ﷺ नमाज़ मुकम्मल कर चुके तो फ़रमाया: “अल्लाह जिस तरह चाहता है अपना हुक्म ज़ाहिर करता है, और अब जो नया हुक्म आया है के यह है कि तुम नमाज़ में बात न करो”, फिर आप ने मुझे सलाम का जवाब दिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (924)

٩٩٠ - (حسن) وَقَالَ: «إِنَّمَا الصَّلَاةُ لِقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِ اللَّهِ فَإِذا كنت فِيهَا ليكن ذَلِك شَأْنك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

990. और फ़रमाया: “नमाज़ तो किराअत कुरान और अल्लाह के ज़िक्र के लिए है, पस जब तुम इस नमाज़ में हो तो तुम्हारे पेशे नज़र भी हमें कुछ होना चाहिए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (931) بغير هذا اللفظ ، و البيهقى (2 / 356) و اللفظ نحوه]

٩٩١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قُلْتُ لِبِلَالٍ: كَيْفَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرُدُّ عَلَيْهِم حِين حانوا يُسَلِّمُونَ عَلَيْهِ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ؟ قَالَ: كَانَ يُشِيرُ بِيَدِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ ص:٣١ وَفِي رِوَايَةِ النَّسَائِيِّ نَحوه وَعوض بِلَال صُهَيْب

991. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से पूछा जब सहाबा किराम नबी ﷺ को हालत नमाज़ में सलाम किया करते थे तो आप उन्हें कैसे जवाब दिया करते थे उन्होंने ने फ़रमाया: आप अपने हाथ से इरशाद किया करते थे| तिरमिज़ी, नसई की रिवायत मैं भी इसी तरह है और बिलाल की जगह सहियब का ज़िक्र किया | (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (368 وقال :’’ حسن صحيح ‘‘ و سنده حسن) و النسائى (3 / 5 ح 1188 عن صهيب وهو حديث صحيح) [و صححه ابن خزيمة (888) و ابن حبان (الاحسان : 2258) و الحاكم (3 / 12) و وافقه الذهبى]

٩٩٢ - (صَحِيح) وَعَن رِفَاعَة بن رَافع قَالَ: صليت خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَطَسْتُ فَقلت الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ مُبَارَكًا عَلَيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضَى فَلَمَّا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ انْصَرَفَ فَقَالَ: «مَنِ الْمُتَكَلِّمُ فِي الصَّلَاةِ؟» فَلَمْ يَتَكَلَّمْ أَحَدٌ ثُمَّ قَالَهَا الثَّانِيَةَ فَلَمْ يَتَكَلَّمْ أَحَدٌ ثُمَّ قَالَهَا الثَّالِثَةَ فَقَالَ رِفَاعَةُ: أَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدِ ابْتَدَرَهَا بِضْعَةٌ وَثَلَاثُونَ مَلَكًا أَيُّهُمْ يَصْعَدُ بِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

992. रफाअ बिन राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी तो मुझे छींक गई तो मैंने कहा: हर किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है, हम्द बहोत ज़्यादा खालिस और बा बरकत, जैसे हमारे रब को पसंद और महबूब है, चुनांचे जब रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ पढ़ कर हमारी तरफ रुख किया तो फ़रमाया: “नमाज़ में बोलने वाला कौन था ?” किसी ने जवाब न दिया, फिर आप ने दूसरी मर्तबा पूछा तो फिर किसी ने जवाब न दिया, फिर आप ने तीसरी मर्तबा पूछा तो रफाअ ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने बात की थी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तीस से कुछ ज़्यादा फ़रिश्ते सबकत ले जाने की कोशिश कर रहे थे की उनमें से कौन उन्हें ऊपर लेकर चढ़ता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (404 وقال : حدیث حسن) و ابوداؤد (773) و النسائی (2 / 145 ح 932)

٩٩٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «التَّثَاؤُبُ فِي الصَّلَاةِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَكْظِمْ مَا اسْتَطَاعَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَفِي أُخْرَى لَهُ وَلِابْنِ مَاجَهْ: «فَلْيَضَعْ يَدَهُ على فِيهِ»

993. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दौरान ए नमाज़ जिमाई आना शैतान की तरफ से है, पस जब तुम में से किसी को जिमाई आए तो वह मक्दोर भर इसे रोकने की कोशिश करे”, तिरमिज़ी और इसी की दूसरी रिवायत और इब्ने माजा में है: “वो अपने मुंह पर हाथ रख ले” (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (370 وقال : حسن صحیح ، 1746) و ابن ماجه (968) [و للحدیث شواھد عند البخاری (6223) وغیرہ]

٩٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا تَوَضَّأَ أَحَدُكُمْ فَأَحْسَنَ وُضُوءَهُ ثُمَّ خَرَجَ عَامِدًا إِلَى الْمَسْجِدِ فَلَا يُشَبِّكَنَّ بَيْنَ أَصَابِعِهِ فَإِنَّهُ فِي الصَّلَاة» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ والدارمي

994. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स अच्छी तरह वुज़ू कर के मस्जिद के क़सद से रवाना हो, तो वह रास्ते में अपने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ में दाखिल न करे क्योंकि वह हुक्मन नमाज़ ही में है”| (हसन)

حسن ، رواہ احمد (4 / 241 ح 18282) و ابوداؤد (562) و الترمذی (386 واعله) و النسائی (لم اجدہ) و الدارمی (1 / 326 ، 327 ح 1411) [و صححه ابن خزیمة (441) و ابن حبان (316) و للحدیث شواھد]

٩٩٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَزَالُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ مُقْبِلًا عَلَى الْعَبْدِ وَهُوَ فِي صَلَاتِهِ مَا لَمْ يَلْتَفِتْ فَإِذَا الْتَفَتَ انْصَرَفَ عَنْهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

995. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बंदा नमाज़ में होता है तो जब तक वह इधर उधर न देखे तो अल्लाह अज्ज़वजल उस पर अपने तवज्जो मरकुज़ रखता है, जब वह इधर उधर देखता है तो फिर वह उस से रुख मोड़ लेता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 172 ح 21845) و ابوداؤد (909) و النسائی (3 / 8 ح 1196) و الدارمی (1 / 331 ح 1430) [و صححه ابن خزیمة (481 ، 482) و الحاکم (1 / 236) و وافقه الذھبی]

٩٩٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا أَنَسُ اجْعَلْ بَصَرَكَ حَيْثُ تَسْجُدُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي سُنَنِهِ الْكَبِيرِ مِنْ طَرِيق الْحسن عَن أنس يرفعهُ

996. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अनस अपने सजदाह की जगह पर नज़र रखो”, बयहकी ने हसन अन अनस रदियल्लाहु अन्हु की सनद से अपने सुनन अल कुबरा में मरफुअ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه البیھقی فی السنن الکبریٰ (2 / 284) * فیه علیلة بن بدر : متروک ، و علل أخری ولکن النظر الی السجود صحیح ، فیه حدیث عمر رضی الله عنه فی الخلافیات باللفظ :’’ ثم غض بصره ‘‘ (انظر شرح الترمذی لابن سید الناس (2 / 217)

٩٩٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا بُنَيَّ إِيَّاكَ وَالِالْتِفَاتَ فِي الصَّلَاةِ فَإِنَّ الِالْتِفَاتَ فِي الصَّلَاةِ هَلَكَةٌ. فَإِنْ كَانَ لابد فَفِي التَّطَوُّعِ لَا فِي الْفَرِيضَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

997. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “बेटा नमाज़ में इधर उधर देखने से एहतियात करो क्योंकि नमाज़ में इधर उधर देखना बाईस ए हलाकत है, पस अगर ज़रूर ही देखना हो तो फिर नफ्ल में है लेकिन फ़र्ज़ में नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (589 وقال : حسن) * فیه علی بن زید بن جدعان وھو ضعیف و فیه علة أخری

٩٩٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَلْحَظُ فِي الصَّلَاةِ يَمِينًا وَشِمَالًا وَلَا يَلْوِي عُنُقَهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

998. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ दौरान ए नमाज़ गर्दन मोड़े बग़ैर दाएँ बाएँ देख लिया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (587 وقال : غریب) و النسائی (3 / 9 ح 1202) [و صححه ابن خزیمة (485 ، 871) و ابن حبان (الاحسان : 2285) و الحاکم (1 / 236 ، 237 ، 256) علی شرط البخاری و وافقه الذھبی]

٩٩٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَفَعَهُ قَالَ: ص:٣١ «الْعُطَاسُ وَالنُّعَاسُ وَالتَّثَاؤُبُ فِي الصَّلَاةِ وَالْحَيْضُ وَالْقَيْءُ وَالرُّعَافُ مِنَ الشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

999. अदि बिन साबित अपने बाप से और वह अपने दादा से मरफुअ रिवायत करते हैं, फ़रमाया: “दौरान ए नमाज़ छींके, ऊंघ, जिमाई, हैज़, कै का आना नैज़ नकसीर का फूटना शैतान की तरफ से है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2748 وقال : غریب) [و ابن ماجه (969) * ابو الیقظان عثمان بن عمیر : ضعیف

١٠٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ مُطَرِّفِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّخِّيرِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي وَلِجَوْفِهِ أَزِيزٌ كَأَزِيزِ الْمِرْجَلِ يَعْنِي: يَبْكِي»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي وَفِي صَدْرِهِ أَزِيزٌ كَأَزِيزِ الرَّحَا مِنَ الْبُكَاءِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَرَوَى النَّسَائِيُّ الرِّوَايَةَ الْأُولَى وَأَبُو دَاوُدَ الثَّانِيَة

1000. मतरफ बिन अब्दुल्लाह बिन शखियर अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप नमाज़ पढ़ रहे थे, तो रोने की वजह से आप के पेट से हंडिया के उबाले कि सी आवाज़ आ रही थी, एक दूसरी रिवायत में है मैंने नबी ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो रोने की वजह से आप के सीने में चुकी चलने कि सी आवाज़ आ रही थी| अहमद और इमाम नसई ने पहली रिवायत की और इमाम अबू दावुद ने दूसरी| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 25 ح 16421) و النسائی (3 / 13 ح 1215) و ابوداؤد (904) [و صححه النووی فی ریاض الصالحین (451) بتحقیقی]

١٠٠١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَلَا يَمْسَحِ الْحَصَى فَإِنَّ الرَّحْمَةَ تُوَاجِهُهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجه

1001. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई नमाज़ के लिए खड़ा हो तो वह कंकरियो को हाथ न लगाए क्योंकि इस वक़्त इसे रहमत सामने का होता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 150 ح 21656 ، 21658) و الترمذی (379 وقال : حسن) و ابوداؤد (945) و النسائی (3 / 6 ح 1192) و ابن ماجه (10271)

١٠٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ: رَأَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُلَامًا لَنَا يُقَالُ لَهُ: أَفْلَحُ إِذَا سَجَدَ نَفَخَ فَقَالَ: «يَا أَفْلَحُ تَرِّبْ وَجْهَكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1002. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने हमारे अफलह नामी गुलाम को देखा के जब

वह सजदाह करते तो फूंक मारता, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अफलह अपने चेहरे को मिट्टी लगने दो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (381 وقال : اسناده لیس بذالک و میمون ابو حمزة قد ضعفه بعض اهل العلم) * قلت : میمون الاعور توبع و ابوصالح مولی طلحة : حسن الحدیث ، صحح له و الحاکم (1 / 271) و الذهبی

١٠٠٣ - (مُنكر) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ ص:٣١ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الِاخْتِصَارُ فِي الصَّلَاةِ رَاحَةُ أَهْلِ النَّارِ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

1003. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दौरान ए नमाज़ कमर कोख पर हाथ रखना जहन्नुमियो का अंदाज़ राहत है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (3 / 248 ح 730) بدون سند* و اسنده ابن خزیمة (2 / 57 ح 909) و ابن حبان (الموارد : 480) و البیهقی (2 / 287 ، 288) من حدیث ابی ھریرة رضی اللہ عنه : و السند ضعیف ، ھشام بن حسان مدلس و لم اجد تصریح سماعه

١٠٠٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اقْتُلُوا الْأَسْوَدَيْنِ فِي الصَّلَاةِ الْحَيَّةَ وَالْعَقْرَبَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَلِلنَّسَائِيِّ مَعْنَاهُ

1004. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो सियाह चीजों सांप और बिच्छु को क़त्ल कर दो ख्वाह तुम नमाज़ में हो”, अहमद अबू दावुद तिरमिज़ी और नसई की रिवायत इसी मानी में है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (2 / 233 ح 7178) و ابوداؤد (921) و الترمذی (390 وقال : حسن صحیح) و النسائی (3 / 10 ح 1203 ، 1204) [و ابن ماجه (1245) و صححه ابن حبان (528) و ابن خزیمة (869) و الحاکم (1 / 256) و وافقه الذھبی]

١٠٠٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي تَطَوُّعًا وَالْبَابُ عَلَيْهِ مُغْلَقٌ فَجِئْتُ فَاسْتَفْتَحْتُ فَمَشَى فَفَتَحَ لِي ثُمَّ رَجَعَ إِلَى مُصَلَّاهُ وَذَكَرْتُ أَنَّ الْبَابَ كَانَ فِي الْقِبْلَةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وروى النَّسَائِيّ نَحوه

1005. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दरवाज़ा बंद कर के नफ्ल अदा कर रहे थे, मैं आइ तो मैंने दरवाज़ा खोलने की दरख्वास्त की आप चल कर आए और मेरे लिए दरवाज़ा खोल कर फिर अपने जाए नमाज़ पर वापस चले गए और आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने ज़िक्र किया के दरवाज़ा किब्ले की सिम्त था| अहमद अबू दावुद, तिरमिज़ी, और नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (6 / 31 ح 24528) و ابوداؤد (922) و الترمذی (601 وقال : حسن غریب) و النسائی (3 / 11 ح 1207) الزھری مدلس ولم اجد تصریح سماعه

١٠٠٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ طَلْقِ بْنِ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:٣١ «إِذَا فَسَا أَحَدُكُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلْيَنْصَرِفْ فَلْيَتَوَضَّأْ وَلْيُعِدِ الصَّلَاةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى التِّرْمِذِيّ مَعَ زِيَادَة ونقصان

1006. तलक बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी की दौरान ए नमाज़ हवा ख़ारिज हो जाए तो वह जा कर वुज़ू करे और आकर नमाज़ दोहराए”| अबू दावुद, तिरमिज़ी ने अल्फाज़ की कमी बेशी के साथ रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (205) و الترمذی (1166 ، 1164) [و صححه ابن حبان (203 ، 204 ، 1301]

١٠٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أحدث أدكم فِي صَلَاتِهِ فَلْيَأْخُذْ بِأَنْفِهِ ثُمَّ لِيَنْصَرِفْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1007. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स का दौरान ए नमाज़ वुज़ू टूट जाए तो वह अपने नाक पकड़ कर वहां से बाहर निकल जाए”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (1114) و ابن ماجه (1222) و صححه ابن خزیمة (1019) و ابن حبان (205 ، 206) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 184 ، 260) و وافقه الذهبی]

١٠٠٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أحدث أدكم وَقَدْ جَلَسَ فِي آخِرِ صَلَاتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ فَقَدْ جَازَتْ صَلَاتُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ إِسْنَادُهُ لَيْسَ بِالْقَوِيِّ وَقَدِ اضْطَرَبُوا فِي إِسْنَاده

1008. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स का वुज़ू टूट जाए, जबकि वह सलाम फेरने से पहले नमाज़ के आख़िर में बैठा हो तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस की इसनाद क़वी नहीं, उन्होंने यानी मुहद्दीसिन ने उसकी इसनाद को मज्तुरब करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الرترمذی (408) * عبد الرحمن بن زیاد الافریقی ضعیف

١٠٠٩ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ فَلَمَّا كَبَّرَ انْصَرَفَ وَأَوْمَأَ إِلَيْهِمْ أَنْ كَمَا كُنْتُمْ. ثُمَّ خَرَجَ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ جَاءَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ فَصَلَّى بِهِمْ. فَلَمَّا صَلَّى قَالَ: «إِنِّي كُنْتُ جُنُبًا فنسيت أَن أَغْتَسِل» . رَوَاهُ أَحْمد

1009. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए, चुनांचे आप ने जब (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कही तो फिर वापस चले गए और उन्हें इरशाद किया के वह इसी हालत में रहे, फिर आप गए ग़ुस्ल किया फिर तशरीफ़ लाए तो आप के सर से पानी के कतरे गिर रहे थे, आप ﷺ ने उन्हें नमाज़

पढ़ाई जब नमाज़ पढ़ चुके तो फ़रमाया: “मैं जुनुबी था और मैं ग़ुस्ल करना भूल गया था”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 448 ح 9785) [و ابن ماجه (1220) و للحديث شواهد]

١٠١٠ - (صَحِيح مُرْسل) وروى مَالك عَن عَطاء بن يسَار نَحوه مُرْسلا

1010. और इमाम मालिक ने अता बिन यस्सार से मुरसल रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه مالک (1 / 48 ح 108) [و الحديث السابق شاهد له]

١٠١١ - (حسن) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي الظُّهْرَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَآخذ قَبْضَة من الْحَصَى لتبرد فِي كفي ن أَضَعُهَا لِجَبْهَتِي أَسْجُدُ عَلَيْهَا لِشِدَّةِ الْحَرِّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وروى النَّسَائِيّ نَحوه

1011. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए ज़ुहर अदा कर रहा था, मैंने कंकरियो की मुठ्ठी भरी ताकि वह मेरी मुठ्ठी में ठंडी हो जाए, मैं गर्मी की शिद्दत की वजह से इन पर सजदाह किया करता था| अबू दावुद, और इमाम नसई ने भी इसी की मिस्ल रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (399) و النسائی (2 / 204 ح 1082) [و ابن حبان : 267]

١٠١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمِعْنَاهُ يَقُولُ: «أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ» ثُمَّ قَالَ: «أَلْعَنُكَ بِلَعْنَةِ اللَّهِ» ثَلَاثًا وَبَسَطَ يَدَهُ كَأَنَّهُ يَتَنَاوَلُ شَيْئًا فَلَمَّا فَرَغَ مِنَ الصَّلَاةِ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ سَمِعْنَاكَ تَقُولُ فِي الصَّلَاةِ شَيْئًا لَمْ نَسْمَعْكَ تَقُولُهُ قَبْلَ ذَلِكَ وَرَأَيْنَاكَ بَسَطْتَ يَدَكَ قَالَ: " إِنَّ عَدُوَّ اللَّهِ إِبْلِيسَ جَاءَ بِشِهَابٍ مِنْ نَارٍ لِيَجْعَلَهُ فِي وَجْهِي فَقُلْتُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. ثُمَّ قُلْتُ: أَلْعَنُكَ بِلَعْنَةِ اللَّهِ التَّامَّةِ فَلَمْ يَسْتَأْخِرْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ أَرَدْتُ أَخْذَهُ وَاللَّهِ لَوْلَا دَعْوَةُ أَخِينَا سُلَيْمَانَ لَأَصْبَحَ مُوثَقًا يَلْعَبُ بِهِ وِلْدَانُ أَهْلِ الْمَدِينَة. رَوَاهُ مُسلم

1012. अबू दरदा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमें नमाज़ पढ़ा रहे थे, तो हमने आप को तीन मर्तबा यह कहते हुए सुना: “मैं तुझ से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ” फिर फ़रमाया: “मैं तुझे अल्लाह की लानत के ज़रिए लानत भेजता हूँ” और आप ने अपना हाथ आगे बढ़ाया जैसे आप कोई चीज़ पकड़ रहे हो, पस जब आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल, हमने आप को नमाज़ में कुछ कहते हुए सुना जो हमने उस से पहले आप को कहते हुए नहीं सुना और हमने आप को हाथ बढ़ाते हुए भी देखा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह का दुश्मन इब्लीस आग का एक शअला लेकर आया, ताकि वह इसे मेरे चेहरे पर डाल दे तो मैंने तीन मर्तबा कहा में तुझ से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, फिर मैंने कहा: में अल्लाह की लानत कामिल(सर्वोत्तम) के ज़रिए तुझ पर लानत भेजता हूँ, लेकिन वह तीनो मर्तबा पीछे न हटा तो फिर मैंने इसे पकड़ने का इरादा किया, अल्लाह की क़सम! अगर हमारे भाई सुलेमान अलैहिस्सलाम की दुआ न होती तो वह सुबह के वक़्त यहाँ बंधा हुआ होता और अहले मदीना के बच्चे उस के साथ खेल रहे होते”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (40 / 542)، (1211)

١٠١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ مَرَّ عَلَى رَجُلٍ وَهُوَ يُصَلِّي فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَرَدَّ الرَّجُلُ كَلَامًا فَرَجَعَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ فَقَالَ لَهُ: إِذَا سُلِّمَ عَلَى أَحَدِكُمْ وَهُوَ يُصَلِّي فَلَا يَتَكَلَّمْ وَلْيُشِرْ بِيَدِهِ. رَوَاهُ مَالك

1013. नाफेअ बयान करते हैं, कि अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा एक आदमी के पास से गुज़रे जो नमाज़ पढ़ रहा था, उन्होंने इसे सलाम किया तो उस ने बोल कर जवाब दिया, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा उस के पास वापस आए और इसे बताया जब तुम में से किसी शख़्स को हालत नमाज़ में सलाम किया जाए तो वह बोल कर जवाब न दे बल्कि अपने हाथ से इरशाद कर दे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 168 ح 406)

بَاب السَّهْو • नमाज़ में भूल जाने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٠١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن أحدكُم إِذا قَامَ يُصَلِّي جَاءَهُ الشَّيْطَان فلبس عَلَيْهِ حَتَّى لايدري كَمْ صَلَّى؟ فَإِذَا وَجَدَ ذَلِكَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْجُدْ سجدين وَهُوَ جَالس»

1014. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ रहा होता है तो शैतान उस के पास आकर इसे मुगालते में मुब्तिला कर देता है, हत्ता कि वह नहीं जानता के उस ने कितनी नमाज़ पढ़ी है, जब तुम में से कोई ऐसी सूरत तद्दुद पाए तो वह बैठनेकी हालत ही में दो सजदे कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1232) و مسلم (82 / 389)، (1265)

١٠١٥ - (صَحِيح) وَعَن عَطاء بن يسَار وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاتِهِ فَلَمْ يَدْرِ كَمْ صَلَّى ثَلَاثًا أم أَرْبعا فليطرح الشَّك وليبن عَلَى مَا اسْتَيْقَنَ ثُمَّ يَسْجُدْ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ فَإِنْ كَانَ صَلَّى خَمْسًا شَفَعْنَ لَهُ صَلَاتَهُ وَإِنْ كَانَ صَلَّى إِتْمَامًا لِأَرْبَعٍ كَانَتَا تَرْغِيمًا لِلشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَرَوَاهُ مَالِكٌ عَنْ عَطَاءٍ مُرْسَلًا. وَفِي رِوَايَتِهِ: «شَفَعَهَا بِهَاتَيْنِ السَّجْدَتَيْنِ»

1015. अता इब्ने यस्सार अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को अपने नमाज़ के बारे में शक हो और इसे पता न चले के उस ने कितनी रकते पढ़ी है, तिन या चार तो वह शक दूर करे और यकीन पर बुनियाद रखे, फिर सलाम फेरने से पहले दो सजदे करे, अगर उस ने पांच रक्अत पढ़ ली है, तो यह दो सजदे उसकी नमाज़ को जुफ्त बना देंगे और अगर उस ने यह रक्अत चार मुकम्मल करने के लिए पढ़ी है तो फिर वह दो सजदे शैतान की ताजल्लिल के लिए होंगे”, मुस्लिम,

इमाम मालिक ने अता से मुरसल रिवायत किया है और उनकी रिवायत में है: “उस ने इन दो सजदो से उस को जुफ्त बना दिया”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (88 / 571)، (1272) و مالک (1 / 95 ح 210)

١٠١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الظُّهْرَ خَمْسًا فَقِيلَ لَهُ: أَزِيدَ فِي الصَّلَاةِ؟ فَقَالَ: «وَمَا ذَاكَ؟» قَالُوا: صَلَّيْتَ خَمْسًا. فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَمَا سَلَّمَ. وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَنْسَى كَمَا تَنْسَوْنَ فَإِذَا نَسِيتُ فَذَكِّرُونِي وَإِذَا شَكَّ أَحَدُكُمْ فِي صَلَاتِهِ فَلْيَتَحَرَّ الصَّوَابَ فَلْيُتِمَّ عَلَيْهِ ثُمَّ لِيُسَلِّمْ ثمَّ يسْجد سَجْدَتَيْنِ»

1016. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए ज़ुहर पांच रकते पढ़ाइ, आप से अर्ज़ किया गया, क्या नमाज़ में इज़ाफा कर दिया गया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो क्या” सहाबा ने अर्ज़ किया, आप ने पांच रकते पढ़ी हैं, तो आप ने सलाम फेरने के बाद दो सजदे किए और एक दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं भी तुम जैसे इंसान हूँ जैसे तुम भूल जाते हो वैसे ही में भूल जाता हूँ , पस जब कभी में भूल जाऊं तो मुझे याद करा दिया करो और जब तुम में से किसी को अपने नमाज़ में शक गुज़रे तो वह दुरुस्त बात तलाश करने की पूरी कोशिश करे और इस बुनियाद पर नमाज़ मुकम्मल करे फिर सलाम फेरे और फिर दो सजदे करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (401) و مسلم (89 / 572)، (1274)

١٠١٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن سِيرِين عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ص:٣٢ إِحْدَى صَلَاتَيِ الْعشي - قَالَ ابْن سِيرِين سَمَّاهَا أَبُو هُرَيْرَةَ وَلَكِنْ نَسِيتُ أَنَا قَالَ فَصَلَّى بِنَا رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ فَقَامَ إِلَى خَشَبَةٍ مَعْرُوضَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَاتَّكَأَ عَلَيْهَا كَأَنَّهُ غَضْبَانُ وَوَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى الْيُسْرَى وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ وَوَضَعَ خَدَّهُ الْأَيْمَنَ عَلَى ظَهْرِ كَفه الْيُسْرَى وَخرجت سرعَان مِنْ أَبْوَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالُوا قَصُرَتِ الصَّلَاةُ وَفِي الْقَوْمِ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فَهَابَاهُ أَنْ يُكَلِّمَاهُ وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ فِي يَدَيْهِ طُولٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ قَالَ يَا رَسُول الله أنسيت أم قصرت الصَّلَاة قَالَ: «لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ» فَقَالَ: «أَكَمَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ؟» فَقَالُوا: نَعَمْ. فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى مَا تَرَكَ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ فَرُبَّمَا سَأَلُوهُ ثُمَّ سَلَّمَ فَيَقُولُ نُبِّئْتُ أَنَّ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ ثمَّ سلم. وَلَفْظُهُ لِلْبُخَارِيِّ وَفِي أُخْرَى لَهُمَا: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَدَلَ «لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ» : «كُلُّ ذَلِكَ لَمْ يَكُنْ» فَقَالَ: قَدْ كَانَ بَعْضُ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

1017. इब्ने सिरिन रहिमहुल्लाह अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ ए ज़ुहर या असर की नमाज़ पढ़ाई, इब्ने सिरिन रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने उस का नाम भी बताया था, लेकिन में उसे भूल गया हूँ उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ ने हमें दो रकते पढ़ाइ फिर मस्जिद में रखी हुई लकड़ी के साथ टेक लगा कर खड़े हो गए, गोया आप गुस्से की हालत में थे, आप ने दायाँ हाथ बाएँ पर रखा उंगलियों में उंगलिया डाले और अपना दायाँ रुखसार बाएँ हथेली की पुश्त पर रख दिया और जल्द बाज़ लोग मस्जिद के दरवाज़ो से बाहर चले गए, जबकि सहाबा ने कहा: (क्या) नमाज़ कम कर दी गई है?

सहाबा किराम में अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे लेकिन वह भी आप से बात करने से घबराते थे, सहाबा में एक आदमी था जिसके हाथ लम्बे थे और इसे ज़ुल यदेंन कहा: जाता था उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप भूल गए है या नमाज़ कम कर दी गई है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "ना मैं भुला हूँ न नमाज़ कम की गई है", आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या ऐसे ही है जैसे ज़ुल यदेंन कह रहा है" सहाबा ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप आगे बढ़े और जो नमाज़ छोड़ी थी वह पढ़ाई, फिर सलाम फेरा, फिर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और अपने सजदो की तरह या इससे भी ज़्यादा लम्बा सजदाह किया, फिर सर उठाया और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा फिर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और अपने सजदो की मिस्ल या उन से ज़्यादा लम्बा सजदाह किया, फिर अपना सर उठाया और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा चुनांचे उन्होंने (تلامذہ) ने इब्ने सिरिन से पूछा फिर आप ने सलाम फेरा वह बयान करते हैं, मुझे बताया गया के इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: फिर आप ने सलाम फेरा| बुखारी, मुस्लिम और अल्फाज़ हदीस बुखारी के हैं सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की एक दूसरी रिवायत में है रसूलुल्लाह ﷺ ने ((لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) के बदले (کل ذالک لم یکن) कहा: "ये सब कुछ नहीं हुवा", तो उन्होंने ज़ुल यदेंन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उनमें यानी ना में भुला हूँ न नमाज़े कसर की गई है से कुछ तो हुआ है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6051) و مسلم (97 / 573)، (1288)

١٠١٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عبد الله بن بُحَيْنَة: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بِهِمُ الظُّهْرَ فَقَامَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ لَمْ يَجْلِسْ فَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ حَتَّى إِذَا قَضَى الصَّلَاةَ وَانْتَظَرَ النَّاسُ تَسْلِيمَهُ كَبَّرَ وَهُوَ جَالِسٌ فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ ثُمَّ سَلَّمَ

1018. अब्दुल्लाह बिन बुहैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन्हें नमाज़ ए ज़ुहर पढ़ाइ तो आप पहली दो रकते पढ़ कर खड़े हो गए और तशह्हुद नबैठे तो सहाबा भी आप के साथ ही खड़े हो गए, हत्ता कि जब आप ने नमाज़ पढ़ ली तो सहाबा ने सलाम फेरने का इंतज़ार किया, आप ﷺ ने सलाम फेरने से पहलेबैठे हुए दो सजदे किए और फिर सलाम फेरा| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1224) و مسلم (86 / 570)، (1270)

नमाज़ में भूल जाने का बयान • بَاب السَّهْو

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٠١٩ - (ضَعِيف) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بهم فَسَهَا فَسجدَ ص:٣٢ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ تَشَهَّدَ ثُمَّ سَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

1019. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है नबी ﷺ ने उन्हें नमाज़ पढ़ाइ तो आप भूल गए आप ﷺ ने दो सजदे किए, फिर तशह्हुद, पढ़ी फिर सलाम फेरा| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (395) [و ابوداؤد (1039) و صححه ابن خزيمة (1062) و ابن حبان (536) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 323) و وافقه الذهبی و اعل بعله غير قادحة]

١٠٢٠ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَامَ الْإِمَامُ فِي الرَّكْعَتَيْنِ فَإِنْ ذَكَرَ قَبْلَ أَنْ يَسْتَوِيَ قَائِما فليجلس وَإِنِ اسْتَوَى قَائِمًا فَلَا يَجْلِسْ وَلْيَسْجُدْ سَجْدَتَيِ السَّهْو» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

1020. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब इमाम दो रकते पढ़ कर तशह्हुद पढ़े बगैर खड़ा हो जाए अगर मुकम्मल तौर पर सीधा खड़ा होने से पहले इसे याद जाए तो वह बैठ जाए और अगर वह मुकम्मल तौर पर सीधा खड़ा हो जाए तो फिर नबैठे और सहव के दो सजदे कर ले”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد 1036) و ابن ماجه (1208) [و سنده ضعيف جدًا و للحديث شاهد حسن عند الطحاوی فی معانی الآثار (1 / 440) و سنده حسن]

नमाज़ में भूल जाने का बयान • بَاب السَّهْو

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٠٢١ - (صَحِيح) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الْعَصْرَ وَسَلَّمَ فِي ثَلَاثِ رَكَعَاتٍ ثُمَّ دَخَلَ مَنْزِلَهُ فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ الْخِرْبَاقُ وَكَانَ فِي يَدَيْهِ طُولٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَذَكَرَ لَهُ صَنِيعه فَخرج غَضْبَانَ يَجُرُّ رِدَاءَهُ حَتَّى انْتَهَى إِلَى النَّاسِ فَقَالَ: «أَصَدَقَ هَذَا؟» . قَالُوا: نَعَمْ. فَصَلَّى رَكْعَةً ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

1021. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए असर पढ़ाई और तीन रक्अतो के बाद सलाम फेर दिया, फिर आप अपने घर तशरीफ़ ले गए तो खिरबाक नामी शख्स, जिसके हाथ लम्बे थे आप के घर के रास्ते में खड़ा हो कर अर्ज़ करने लगा, अल्लाह के रसूल, फिर उस ने आप इसे तीन रक्अतो के बाद सलाम फेरा देने के मुतल्लिक ज़िक्र किया, तो आप ﷺ गुस्से की हालत में अपनी चादर घसीटते हुए बाहर तशरीफ़ लाए, हत्ता कि लोगों के पास आकर फ़रमाया: “क्या यह सहीह कह रहा है?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! चुनांचे आप ﷺ ने एक रक्अत और पढ़ी, फिर सलाम फेरा, फिर दो सजदे किए और फिर सलाम फेरा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (101 / 574)، (1293)

١٠٢٢ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «مَنْ صَلَّى صَلَاةً يَشُكُّ فِي النُّقْصَانِ فَلْيُصَلِّ حَتَّى يشك فِي الزِّيَادَة» . رَوَاهُ أَحْمد

1022. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स नमाज़ पढ़े और इसे नमाज़ में कमी का शक हो तो वह नमाज़ पढ़े, हत्ता कि इसे ज़्यादती का शक हो जाए"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 195 ح 1689) * فيه اسماعيل بن مسلم البصرى وهو ضعيف الحديث و للسهو طرق أخرى عن عبد الرحمن بن عوف عند ابن ماجه (1209) و احمد (1 / 190 ، 193) و غيرهما دون هذا اللفظ

بَاب سُجُود الْقُرْآن • सजदा ए तिलावत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٠٢٣ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَجَدَ النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم بِالنَّجْمِ وَسَجَدَ مَعَهُ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْجِنُّ وَالْإِنْسُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1023. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने सुरह नजम की तिलावत करते हुए सजदाह किया तो मुसलमानों, मुशरिकों और जिन्न व इन्स ने आप के साथ सजदाह किया| (बुखारी)

رواه البخارى (1071)

١٠٢٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَجَدْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي: (إِذا السَّمَاء انشقت)»» و (اقْرَأ باسم رَبك)»» رَوَاهُ مُسلم

1024. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने सुरह इन्शिकाक और सुरह अलक की तिलावत पर नबी ﷺ के साथ सजदाह किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (108 / 578)، (1301)

١٠٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ (السَّجْدَةَ)»» وَنَحْنُ عِنْدَهُ فَيَسْجُدُ وَنَسْجُدُ مَعَهُ فَنَزْدَحِمُ حَتَّى مَا يَجِدُ أَحَدُنَا لِجَبْهَتِهِ مَوْضِعًا يَسْجُدُ عَلَيْهِ

1025. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ आयत ए सजदाह तिलावत फरमाते जबकि हम आप की खिदमत में हाज़िर होते आप सजदाह फरमाते, तो हम भी आप के साथ सजदाह करते पस हम इकट्ठे हो जाते हत्ता कि हम में से किसी को सजदाह करने के लिए पेशानी रखने की जगह न मिलती| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1076) و مسلم (104 / 575)، (1296)

١٠٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (والنجم)»» فَلم يسْجد فِيهَا

1026. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुरह नजम सुनाई तो आप ने उस में सजदाह न किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1072) و مسلم (106 / 577)، (1298)

١٠٢٧ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: (سَجْدَةُ (ص)»» لَيْسَ مِنْ عَزَائِمِ السُّجُودِ وَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يسْجد فِيهَا

1027. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया सुरह स्वाद (ص) का सजदाह ताकीदी सजदो में से नहीं, लेकिन मैंने नबी ﷺ को उस में सजदाह करते हुए देखा है| (बुखारी)

رواه البخاری (1069)

١٠٢٨ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ مُجَاهِدٌ: قُلْتُ لِابْنِ عَبَّاسٍ: أَأَسْجُدُ فِي (ص)»» فَقَرَأَ: (وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسليمَان)»» حَتَّى أَتَى (فبهداهم اقتده)»» فَقَالَ: نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّنْ أَمر أَن يَقْتَدِي بهم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1028. और एक दूसरी रिवायत में है मुजाहिद रहिमहुल्लाह ने बयान किया, मैंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया क्या मैं सूरह स्वाद (ص) की तिलावत पर सजदाह करू? उन्होंने यह आयत तिलावत फरमाई: “और उनकी औलाद में से दावुद और सुलेमान अलैहिस्सलाम ،،،،، पस आप उनकी राह की इक्तेदा करे”, उन्होंने ने फ़रमाया: तुम्हारे नबी ﷺ भी उन्हीं में से हैं जिन्हें उनकी इक्तेदा करने का हुक्म दिया गया है| (बुखारी)

رواه البخاری (3421)

सजदा ए तिलावत का बयान • بَاب سُجُود الْقُرْآن

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٠٢٩ - (ضَعِيف) عَن عَمْرو بن الْعَاصِ قَالَ: أَقْرَأَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَمْسُ عَشْرَةَ سَجْدَةً فِي الْقُرْآنِ مِنْهَا ثَلَاثٌ فِي الْمُفَصَّلِ وَفِي سُورَةِ الْحَجِّ سَجْدَتَيْنِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1029. अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे कुरान के पन्द्रह सजदे पढ़ाए उनमें से तीन मुफ़स्सल सूरतो में है जबकि सुरह हज में दो सजदे हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1401) و ابن ماجه (1057) * حارث بن سعيد : مجهول الحال

١٠٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فُضِّلَتْ سُورَةُ الْحَجِّ بِأَنَّ فِيهَا سَجْدَتَيْنِ؟ قَالَ: نَعَمْ وَمَنْ لَمْ يَسْجُدْهُمَا فَلَا يَقْرَأْهُمَا ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ. وَفِي الْمَصَابِيحِ: «فَلَا يَقْرَأها» كَمَا فِي شرح السّنة

1030. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ सुरह हज को फ़ज़ीलत दी गई के उस में दो सजदे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ और जो शख़्स यह दो सजदे नहीं करता इसे इन दो आयतों की तिलावत नहीं करनी चाहिए"| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस की इसनाद क़वी नहीं और मसाबिह में है: "वो शख़्स इस सूरत की तिलावत न करे", जैसे के शरह सुन्ना में है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1402) و الترمذى (578) و البغوى فى شرح السنة (3 / 304 ح 765) 0 و فى نسختنا من المصابيح :'' فلا يقراهما ''* ابن لهيعة صرح بالسماع و حدث به قبل اختلاطه و مشرح بن هاعان حسن الحديث فالحديث قوى خلافًا لما ذهب اليه الامام الترمذى رحمه الله

١٠٣١ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَجَدَ فِي صَلَاةِ الظُّهْرِ ثُمَّ قَامَ فَرَكَعَ فَرَأَوْا أَنَّهُ قَرَأَ تَنْزِيلَ السَّجْدَةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1031. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने नमाज़ ए ज़ुहर में सजदाह किया, फिर खड़े हुए तो रुकू किया सहाबा किराम ने जान लिया के आप ﷺ ने सूरत-उल सज़दा तिलावत फरमाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (807) * قال سليمان التيمياحد رواية :'' لم اسمعه من ابى مجلز '' وهو سمعه من امية وهو مجهول و حديث مسلم ((452 / 156)، (1014) يغنى عنه

١٠٣٢ - (ضَعِيف) وَعنهُ: أنه كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ عَلَيْنَا الْقُرْآنَ فَإِذَا مَرَّ بِالسَّجْدَةِ كَبَّرَ وَسجد وسجدنا

مَعَه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1032. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमें कुरान सुनाया करते थे, पस जब आप आयत ए सजदाह पढ़ते तो तकबीर कह कर सजदाह करते और हम भी आप के साथ सजदाह करते| (हसन)

اسناده حسن ، رواه (1413) عبدالله العمرى حسن الحديث عن نافع ، ضعيف الحديث عن غيره

١٠٣٣ - (ضَعِيف) وَعَن ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ عَامَ الْفَتْحِ سَجْدَةً فَسَجَدَ النَّاسُ كُلُّهُمْ مِنْهُمُ الرَّاكِبُ وَالسَّاجِدُ عَلَى الْأَرْضِ حَتَّى إِنَّ الرَّاكِبَ لَيَسْجُدُ عَلَى يَده. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1033. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फतह मक्का के साल आयत ए सजदाह तिलावत फरमाई, तमाम लोगों ने सजदाह किया उनमें से बाज़ सवारी पर थे और उनमें से बाज़ ने ज़मीन पर सजदाह किया, हत्ता कि सवार अपने हाथ पर सजदाह कर रहे थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1411) [و صححه ابن خزيمة (556) و الحاكم (1 / 219) و وافقه الذهبى] * مصعب بن ثابت : ضعفه الجمهور

١٠٣٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَسْجُدْ فِي شَيْءٍ مِنَ الْمُفَصَّلِ مُنْذُ تَحَوَّلَ إِلَى الْمَدِينَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1034. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ जब से मदीना तशरीफ़ लाए, आप ﷺ ने मुफ़स्सल सूरतो में सजदाह नहीं फरमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1403) [و ابن خزيمة (560] * ابو قدامة حارثة بن عبيد : ضعيف ضعفه الجمهور من جهة حفظه و اخرج له مسلم متابعة (2667 ، 2838)

١٠٣٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي سُجُودِ الْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ: «سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

1035. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ रात के वक़्त सज़दा ए तिलावत में यह दुआ पढ़ा करते थे: “मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदाह किया जिस ने इसे पैदा फ़रमाया और अपने कुदरत व ताकत से कान और आँखे बनाइ”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (1414) و الترمذى (580) و النسائى (2 / 222 ح 1130) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (1 / 220) و وافقه الذهبى !] * سنده ضعيف من اجل الرجل الذى فى السند وهو مجهول وهو من المزيد فى متصل الاسانيد و لبعضه شاهد عند مسلم و الحديث صحيح فى السجود مطلقًا

١٠٣٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ رَأَيْتُنِي اللَّيْلَةَ وَأَنَا نَائِمٌ كَأَنِّي أُصَلِّي خَلْفَ شَجَرَةٍ فَسَجَدْتُ ص:٣٢ فَسَجَدَتِ الشَّجَرَةُ لِسُجُودِي فَسَمِعْتُهَا تَقُولُ: اللَّهُمَّ اكْتُبْ لِي بِهَا عِنْدَكَ أَجْرًا وَضَعْ عَنِّي بِهَا وِزْرًا وَاجْعَلْهَا لِي عِنْدَكَ ذُخْرًا وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَقَرَأَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَجْدَةً ثُمَّ سَجَدَ فَسَمِعْتُهُ وَهُوَ يَقُولُ مِثْلَ مَا أَخْبَرَهُ الرَّجُلُ عَنْ قَوْلِ الشَّجَرَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1036. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने रात ख्वाब में देखा की मैं एक दरख्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ, पस मैंने सजदाह किया तो दरख्त ने भी मेरे सजदाह करने की वजह से सजदाह किया, मैंने इसे यह पढ़ते हुए सुना, ऐ अल्लाह! मेरे लिए उस का सवाब अपने वहां लिख ले, उस के ज़रिए मेरे गुनाह मुआफ़ फरमा, इसे अपने वहां ज़खीरा बना और इसे मुझ से कबूल फरमा जैसी तूने अपने बंदे दावुद से कबूल फ़रमाया, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: नबी ﷺ ने यह आयत ए सजदाह तिलावत फरमाई आप ने सजदाह किया, मैंने आप को वही दुआ करते हुए सुना जो आदमी ने आप ﷺ को दरख्त के मुतल्लिक बताई थी| तिरमिज़ी, इब्ने माजा लेकिन उन्होंने "وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ" (और इसे मुझ से कबूल फरमा जैसी तूने अपने बंदे दावुद से कबूल फ़रमाया) के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (579) و ابن ماجه (1053) [و صححه ابن خزيمة (562) و ابن حبان (691) و الحاكم (1 / 219 ، 220) و وافقه الذهبی]

بَاب سُجُود الْقُرْآن • सजदा ए तिलावत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٠٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ (وَالنَّجْمِ)»» فَسَجَدَ فِيهَا وَسَجَدَ مَنْ كَانَ مَعَهُ غَيْرَ أَنَّ شَيْخًا مِنْ قُرَيْشٍ أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصًى أَوْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ وَقَالَ: يَكْفِينِي هَذَا. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدُ قُتِلَ كَافِرًا. وَزَادَ الْبُخَارِيُّ فِي رِوَايَةٍ: وَهُوَ أُمَيَّةُ بْنُ خلف

1037. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने सुरह नजम की तिलावत फरमाई आप ने और जो आप के साथ थे सब ने सजदाह किया, लेकिन एक बूढ़े कुरैश कंकरियो या मिट्टी की मुट्ठी भरी और इसे अपने पेशानी तक लाया और कहने लगा मेरे लिए पस यही काफी है, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस के बाद मैंने इसे देखा के वह हालते कुफ्र में मारा गया| बुखारी, मुस्लिम, इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने एक रिवायत में यह इज़ाफा नकल किया है के वह उमय्य बिन खल्फ था| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1070) و مسلم (105 / 576)، (1297)

١٠٣٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَجَدَ فِي (ص)»» وَقَالَ: سَجَدَهَا دَاوُدُ تَوْبَةً وَنَسْجُدُهَا شُكْرًا. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

1038. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने सुरह स्वाद (ص) की तिलावत पर सजदाह किया और फ़रमाया: “दाउद (अ) ने तौबा के लिए सजदाह किया, जबकि हम बतौर शुक्र सजदाह करते हैं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (2 / 159 ح 958) و اعل بما لا يقدح

نमाज़ के लिए मना वक्तो का बयान • بَاب أَوْقَات النَّهْي

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٠٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَحَرَّى أَحَدُكُمْ فَيُصَلِّيَ عِنْدَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَلَا عِنْدَ غُرُوبِهَا»»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِذَا طَلَعَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فدعوا الصَّلَاة حَتَّى تبرز. فَإِذا غَابَ حَاجِبُ الشَّمْسِ فَدَعُوا الصَّلَاةَ حَتَّى تَغِيبَ وَلَا تَحَيَّنُوا بِصَلَاتِكُمْ طُلُوعَ الشَّمْسِ وَلَا غُرُوبَهَا فَإِنَّهَا تطلع بَين قَرْنَي الشَّيْطَان»

1039. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स तुलुअ ए आफ़ताब और गुरूब ए आफ़ताब के वक़्त नमाज़ पढ़ने का क़सद न करे”, और एक रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब सूरज का किनारा ज़ाहिर हो जाए तो नमाज़ न पढ़ो, हत्ता कि वह मुकम्मल तौर पर ज़ाहिर हो जाए और जब सूरज का किनारा गुरूब हो जाए तो नमाज़ न पढ़ो, हत्ता कि वह मुकम्मल तौर पर गुरूब हो जाए और सूरज के तुलुअ व गुरूब के अवकात को अपने नमाज़ के लिए मुतय्यीन न करो क्योंकि वह शैतान के दो सींगो किनारो के दरमियान से तुलुअ होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (583 ، 3272) و مسلم (291 / 829)، (1926)

١٠٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: ثَلَاثُ سَاعَاتٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ينهانا أَن نصلي فِيهِنَّ أَو نَقْبُرَ فِيهِنَّ مَوْتَانَا: حِينَ تَطْلُعُ الشَّمْسُ بَازِغَةً حَتَّى تَرْتَفِعَ وَحِينَ يَقُومُ قَائِمُ الظَّهِيرَةِ حَتَّى تَمِيلَ الشَّمْسُ وَحِينَ تَضَيَّفُ الشَّمْسُ لِلْغُرُوبِ حَتَّى تغرب. رَوَاهُ مُسلم

1040. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तीन अवकात जब सूरज तुलुअ हो रहा हो हत्ता कि वह बुलंद हो जाए, दोपहर के वक़्त हत्ता कि वह ज़वाल की तरफ झुक जाए और जब वह गुरूब के लिए झुक जाए हत्ता कि वह मुकम्मल तौर पर गुरूब हो जाए, हमें नमाज़ पढ़ने और मर्दों को दफन करने से मना फ़रमाया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (293 / 831)، (1929)

١٠٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا صَلَاةَ بَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَرْتَفِعَ الشَّمْسُ وَلَا صَلَاةَ بَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى تَغِيبَ الشَّمْسُ»

1041. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ ए फजर के बाद सूरज के बुलंद होने तक और नमाज़ ए असर के बाद सूरज के गुरूब हो जाने तक कोई नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (586) و مسلم (288 / 827)، (1923)

١٠٤٢ - (صَحِيح) وَعَن عَمْرو بن عبسة قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ فَقَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ فَقُلْتُ: أَخْبِرْنِي عَنِ الصَّلَاةِ فَقَالَ: «صَلِّ صَلَاةَ الصُّبْحِ ثُمَّ أقصر عَن الصَّلَاة حَتَّى تَطْلُعُ الشَّمْسُ حَتَّى تَرْتَفِعَ فَإِنَّهَا تَطْلُعُ حِينَ تَطْلَعُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَانٍ وَحِينَئِذٍ يَسْجُدُ لَهَا الْكُفَّارُ ثُمَّ صَلِّ فَإِنَّ الصَّلَاةَ مَشْهُودَةٌ مَحْضُورَةٌ حَتَّى يَسْتَقِلَّ الظِّلُّ بِالرُّمْحِ ثُمَّ أَقْصِرْ عَنِ الصَّلَاةِ فَإِنَّ حِينَئِذٍ تُسْجَرُ جَهَنَّمُ فَإِذَا أَقْبَلَ الْفَيْءُ فَصَلِّ فَإِنَّ الصَّلَاةَ مَشْهُودَةٌ مَحْضُورَةٌ حَتَّى تُصَلِّيَ الْعَصْرَ ثُمَّ أَقْصِرْ عَنِ الصَّلَاةِ حَتَّى تَغْرُبَ الشَّمْسُ فَإِنَّهَا تَغْرُبُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَانٍ وَحِينَئِذٍ يسْجد لَهَا الْكفَّار» قَالَ فَقلت يَا نَبِيَّ اللَّهِ فَالْوُضُوءُ حَدِّثْنِي عَنْهُ قَالَ: «مَا مِنْكُم رجل يقرب وضوءه فيتمضمض ويستنشق فينتثر إِلَّا خَرَّتْ خَطَايَا وَجْهِهِ وَفِيهِ وَخَيَاشِيمِهِ ثُمَّ إِذَا غَسَلَ وَجْهَهُ كَمَا أَمَرَهُ اللَّهُ إِلَّا خَرَّتْ خَطَايَا وَجْهِهِ مِنْ أَطْرَافِ لِحْيَتِهِ مَعَ الْمَاءِ ثُمَّ يَغْسِلُ يَدَيْهِ إِلَى الْمِرْفَقَيْنِ إِلَّا خَرَّتْ خَطَايَا يَدَيْهِ مِنْ أَنَامِلِهِ مَعَ الْمَاءِ ثُمَّ يَمْسَحُ رَأْسَهُ إِلَّا خَرَّتْ خَطَايَا رَأْسِهِ مِنْ أَطْرَافِ شَعْرِهِ مَعَ الْمَاءِ ثُمَّ يَغْسِلُ قَدَمَيْهِ إِلَى الْكَعْبَيْنِ إِلَّا خَرَّتْ خَطَايَا رِجْلَيهِ مِنْ أَنَامِلِهِ مَعَ الْمَاءِ فَإِنْ هُوَ قَامَ فَصَلَّى فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَمَجَّدَهُ بِالَّذِي هُوَ لَهُ أَهْلٌ وَفَرَّغَ قَلْبَهُ لِلَّهِ إِلَّا انْصَرَفَ مِنْ خَطِيئَتِهِ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ» . رَوَاهُ مُسلم

1042. अमर बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो मैं भी मदीना आया और आप की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, आप मुझे नमाज़ के अवकात के मुतल्लिक बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नमाज़ ए फजर पढ़ो और फिर सूरज के अच्छी तरह तुलुअ होने तक कोई नमाज़ न पढ़ो, क्योंकि जब वह तुलुअ होता है तो वह शैतान के सर के दोनों किनारों के दरमियान से तुलुअ होता है, और इस वक़्त कुफ्फार इसे सजदाह करते हैं, फिर नफ्ल नमाज़ पढ़ो क्योंकि नमाज़ पढ़ते वक़्त फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, हत्ता कि नेज़े का साया उस के सर पर आजाए तो फिर नमाज़ न पढ़ो क्योंकि इस वक़्त जहन्नम भड़काई जाती है, पस जब साया ज़ाहिर होने लगे तो नमाज़ पढ़ो, क्योंकि नमाज़ के वक़्त फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, हत्ता कि तू नमाज़ ए असर पढ़ ले, फिर नमाज़ न पढ़ो हत्ता कि सूरज गुरूब हो जाए, क्योंकि वह शैतान के सर के दोनों किनारों के दरमियान गुरूब होता है और इस वक़्त कुफ्फार इसे सजदाह करते हैं”, रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! वुज़ू के मुतल्लिक मुझे बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स अपने वुज़ू का पानी करीब कर के कुल्ली करता है, नाक में पानी डालकर इसे झाड़ता है, तो उस के चेहरे उस के मुंह और उस के नाक के हान्स्वो से गुनाह झड़ जाते हैं, फिर जब अल्लाह के हुक्म के मुताबिक अपना चेहरा धोता है, तो फिर पानी के साथ ही उस के चेहरे और दाढ़ी के अतराफ़ से गुनाह झड़ जाते हैं, फिर कहोनियो तक हाथ धोता है तो फिर पानी के साथ उस के हाथ की उंगलियों के पोरों तक के गुनाह झड़ जाते हैं, फिर वह सर का मसाह करता है तो फिर पानी के साथ उस के बालो के अतराफ़ तक के गुनाह झड़ जाते हैं, फिर टखनो समेत पाँव धोता है तो फिर पानी के साथ पाँव की उंगलियों समेत तक के गुनाह झड़ जाते हैं, फिर अगर वह खड़ा हो कर नमाज़ पढ़ता है और

अल्लाह की हम्द व सना और उसकी शान बयान करता है जिस का वह अहल है और अपने दिल को खालिस अल्लाह की तरफ मुतवज्जे कर लेता है तो फिर वह नमाज़ के बाद इस रोज़ की तरह गुनाहों से पाक हो जाता है जिस रोज़ उसकी वालिदा ने इसे जन्म दिया था"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

رواه مسلم (294 / 832)، (1930)

١٠٤٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ كُرَيْبٍ: أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مخرمَة وَعبد الرَّحْمَن بن أَزْهَر رَضِي اللَّهُمَّ عَنْهُم وأرسلوه إِلَى عَائِشَةَ فَقَالُوا اقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلَامُ وَسَلْهَا عَن ص:٣٢ الرَّكْعَتَيْنِ بعدالعصرقال: فَدَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَبَلَّغْتُهَا مَا أَرْسَلُونِي فَقَالَتْ سَلْ أُمَّ سَلَمَةَ فَخَرَجْتُ إِلَيْهِمْ فَرَدُّونِي إِلَى أم سَلمَة فَقَالَت أم سَلمَة رَضِي اللَّهُمَّ عَنْهَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنْهُمَا ثُمَّ رَأَيْتُهُ يُصَلِّيهِمَا ثُمَّ دَخَلَ فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ الْجَارِيَةَ فَقُلْتُ: قُولِي لَهُ تَقُولُ أُمُّ سَلَمَةَ يَا رَسُولَ اللَّهِ سَمِعْتُكَ تَنْهَى عَنْ هَاتين وَأَرَاكَ تُصَلِّيهِمَا؟ قَالَ: «يَا ابْنَةَ أَبِي أُمَيَّةَ سَأَلْتِ عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ وَإِنَّهُ أَتَانِي نَاسٌ مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ فَشَغَلُونِي عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ بعد الظّهْر فهما هَاتَانِ»

1043. कुरैब से रिवायत है के इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु और अब्दुल रहमान बिन अज़हर रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास भेजा तो उन्होंने कहा: उन्हें सलाम अर्ज़ करना और फिर उन से असर के बाद दो रक्अतो के बारे में दरियाफ्त करना, रावी बयान करते हैं, मैं आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया और उन्होंने जो पैग़ाम दे कर मुझे भेजा था वह मैंने उन तक पहुंचा दिया तो उन्होंने ने फ़रमाया: उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त करो, पस मैं उन के पास वापस चला आया तो उन्होंने मुझे उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के पास भेज दिया तो उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: मैंने नबी ﷺ को इनसे मना फरमाते हुए सुना फिर मैंने आप को उन्हें पढ़ते हुए देखा फिर आप तशरीफ़ लाए तो मैंने लौंडी को आप के पास भेजा और कहा आप से अर्ज़ करना, उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा कहती है अल्लाह के रसूल! मैंने आप को इन दो रकतो से मना करते हुए सुना है, जबकि मैंने आप को उन्हें पढ़ते हुए देखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू उमय्य की बेटी तुमने असर के बाद दो रकते पढ़ने के मुतल्लिक पूछा है, वह ऐसे हुआ के अब्दुल कैस के कुछ लोग मेरे पास आए और उन्होंने ज़ुहर के बाद वाली दो रक्अतो से मुझे मशगुल रखा, पस यह वह दो रकते है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1233) و مسلم (297 / 834)، (1933)

बَاب أَوْقَات النَّهْي • नमाज़ के लिए मना वक्तो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٠٤٤ - (صَحِيح) عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ قَيْسِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: رَأَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا يُصَلِّي بَعْدَ صَلَاةِ الصُّبْحِ رَكْعَتَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاة الصُّبْحِ رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ»» فَقَالَ الرَّجُلُ: إِنِّي لَمْ أَكُنْ صَلَّيْتُ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا فَصَلَّيْتُهُمَا الْآنَ. فَسَكَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ نَحْوَهُ وَقَالَ: إِسْنَادُ هَذَا الْحَدِيثِ لَيْسَ بِمُتَّصِلٍ لِأَنَّ مُحَمَّدَ بن إِبْرَاهِيم يسمع لَمْ يَسْمَعْ مِنْ قَيْسِ بْنِ عَمْرٍو. وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَنُسَخِ الْمَصَابِيحِ عَنْ قَيْسِ بْنِ قهد نَحوه

1044. मुहम्मद बिन इब्राहीम रहिमहुल्लाह कैस बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: नबी ﷺ ने एक आदमी को नमाज़ ए फजर के बाद दो रकते पढ़ते हुए देखा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ ए फजर दो रक्अत है, दो रक्अत”, इस आदमी ने अर्ज़ किया, मैंने उन से पहले की दो रकते नहीं पढ़ी थी मैंने उन्हें अब पढ़ा है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ख़ामोश हो गए| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने भी इसी तरह रिवायत किया है और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस की सनद मुतस्सिल नहीं क्योंकि मुहम्मद बिन इब्राहीम ने कैस बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु से नहीं सुना| शरह सुन्ना और मसाबिह के बाज़ नुस्खों में कैस बिन कहद से इसी तरह मरवी है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1267) و الترمذی (422) و البغوی فی شرح السنة (3 / 334 تحت ح 781) * قیس بن عمرو وھو قیس بن قھد ، و السند مرسل وله شواھد عند ابن خزیمة (1116) و ابن حبان (624) و غیرھما وھو حدیث حسن ، انظر ’’ اعلام اھل العصر باحکام رکعتی الفجر ‘‘

١٠٤٥ - (صَحِيح) وَعَن جُبَير بن مطعم أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا بَنِي عَبْدَ مَنَافٍ لَا تَمْنَعُوا أَحَدًا طَاف بِهَذَا الْبَيْتِ وَصَلَّى آيَةً سَاعَةٍ شَاءَ مِنْ لَيْلٍ أَوْ نَهَارٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1045. जुबेर बिन मूतइम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बनू अब्द मनाफ़ दिन या रात के किसी भी वक़्त बैतुल्लाह का तवाफ़ करने और उस में नमाज़ पढ़ने से किसी को मना न करना”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (868 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1894) و النسائی (1 / 284 ح 586) [و ابن ماجه (1254) و صححه الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 448) و وافقه الذھبی]

١٠٤٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ الصَّلَاةِ نِصْف النَّهَارِ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ إِلَّا يَوْمَ الْجُمُعَةِ. رَوَاهُ الشَّافِعِي

1046. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने जुमा के सिवा दोपहर के वक़्त नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया हत्ता कि सूरज ढल जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الشافعی فی الام (1 / 197) و مسنده (ص 63 ح 269) * ابراهیم الاسلمی متروک متهم ، و اسحاق بن عبد الله بن ابی فروۃ مثله

١٠٤٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَرِهَ الصَّلَاة نصف النَّهَار حَتَّى نِصْفَ النَّهَارِ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ إِلَّا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَقَالَ: «إِنَّ جَهَنَّمَ تُسَجَّرُ إِلَّا يَوْمَ الْجُمُعَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ أَبُو الْخَلِيلِ لم يلق أَبَا قَتَادَة

1047. अबू खलील रहिमहुल्लाह अबू क़तादा से रिवायत करते हैं, नबी ﷺ जुमा के दिन के सिवा दोपहर के वक़्त नमाज़ पढ़ना ना पसंद फ़रमाया करते थे, हत्ता कि सूरज ढल जाता और फ़रमाया जुमा के दिन के सिवा जहन्नम को भड़काया जाता है, अबू दावुद और उन्होंने ने फ़रमाया: अबू खलील की अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात साबित नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1083) * ليث بن ابی سليم ضعيف مدلس و فيه علة أخرى

बَاب أَوْقَات النَّهْي • नमाज़ के लिए मना वक्तो का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٠٤٨ - (صَحِيح) عَن عبد الله الصنابحِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ وَمَعَهَا قَرْنُ الشَّيْطَانِ فَإِذَا ارْتَفَعَتْ فَارَقَهَا ثُمَّ إِذَا اسْتَوَتْ قَارَنَهَا فَإِذَا زَالَت فارقها فَإِذَا دَنَتْ لِلْغُرُوبِ قَارَنَهَا فَإِذَا غَرَبَتْ فَارَقَهَا» . وَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ ص:٣٣ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الصَّلَاةِ فِي تِلْكَ السَّاعَاتِ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأحمد وَالنَّسَائِيّ

1048. अब्दुल्लाह सनाबिह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक सूरज इस हाल में तुलुअ होता है के शैतान के सिंग उस के साथ होते हैं, पस जब वह बुलंद हो जाता है तो वह उस से अलग हो जाते हैं, फिर जब वह बराबर दोपहर पर हो जाता है तो वह उस से मिलते है, पस जब वह ढल जाता है तो वह फिर अलग हो जाते हैं और जब वह गुरूब के करीब होता है तो वह फिर उस के साथ मिलते है और जब गुरूब हो जाता है तो वह अलग हो जाते हैं”, और रसूलुल्लाह ﷺ ने उन अवकात में नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 219 ح 513) و احمد (4 / 348 ح 19273) و النسائی (1 / 275 ح 560)

١٠٤٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي بصرة الْغِفَارِيّ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمُخَمَّصِ صَلَاةَ الْعَصْرِ فَقَالَ: «إِنَّ هَذِهِ صَلَاةٌ عُرِضَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَضَيَّعُوهَا فَمَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَ لَهُ أَجْرُهُ مَرَّتَيْنِ وَلَا صَلَاةَ بَعْدَهَا حَتَّى يَطْلُعَ الشَّاهِدُ» . وَالشَّاهِد النَّجْم. رَوَاهُ مُسلم

1049. अबू बसर गफ्फारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मक़ाम मुखम्मस पर हमें नमाज़ ए असर पढ़ाइ तो फ़रमाया: “ये नमाज़ तुम से पहले लोगों पर पेश की गई तो उन्होंने इसे ज़ाए कर दिया, पस जो शख़्स उसकी हिफाज़त करेगा तो उसे उस का दस गुना अज़्र मिले और उस के बाद तुलुअ “ शाहिद” तक कोई नमाज़ नहीं” और “ शाहिद” से सितारे मुराद है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (292 / 830)، (1927)

١٠٥٠ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاوِيَة قَالَ: إِنَّكُمْ لَتُصَلُّونَ صَلَاةً لَقَدْ صَحِبْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا رَأَيْنَاهُ يُصَلِّيهِمَا وَلَقَدْ نَهَى عَنْهُمَا يَعْنِي الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1050. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: बेशक तुम असर के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ते हो, हालाँकि हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रहे हमने आप को उन्हें पढ़ते हुए नहीं देखा, आप ﷺ ने तो उन यानी असर के बाद दो रकतो से मना फ़रमाया था| (बुखारी)

رواه البخارى (587)

١٠٥١ - (ضَعِيف) وَعَن أبي ذَر قَالَ وَقَدْ صَعِدَ عَلَى دَرَجَةِ الْكَعْبَةِ: مَنْ عَرَفَنِي فَقَدْ عَرَفَنِي وَمَنْ لَمْ يَعْرِفْنِي فَأَنَا جُنْدُبٌ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا صَلَاةَ بَعْدَ الصُّبْحِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ وَلَا بَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى تَغْرُبَ الشَّمْسُ إِلَّا بِمَكَّةَ إِلَّا بِمَكَّةَ إِلَّا بِمَكَّةَ» . رَوَاهُ أَحْمد ورزين

1051. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने काबा कि सीढ़ि पर चढ़ कर फ़रमाया जो मुझे पहचानता है तो बस वह मुझे पहचानता है और जो मुझे नहीं पहचानता तो मैं जुन्दुब हो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना मक्का के सिवा तीन मर्तबा फ़रमाया नमाज़ ए फजर के बाद तुलुअ ए आफ़ताब तक और असर के बाद गुरूब ए आफ़ताब तक कोई नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (5 / 165 ح 21794) و رزین (لم اجده) * عبدلله بن المومل : ضعیف الحدیث و مجاهد عن ابی ذر : منقطع (انظر اطراف المسند (6 / 185)

बा जमात नमाज़ और इसकी फ़ज़ीलत का बयान • بَاب الْجَمَاعَة وفضلها

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٠٥٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاة الْفَذ بِسبع وَعشْرين دَرَجَة»

1052. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बा जमाअत नमाज़ अकेले शख़्स की नमाज़ से सत्ताईस दरजे ज़्यादा फ़ज़ीलत रखती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (645) و مسلم (249 / 650)، (1477)

١٠٥٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِحَطَبٍ فَيُحْطَبَ ثُمَّ آمُرَ بِالصَّلَاةِ فَيُؤَذَّنَ لَهَا ثُمَّ آمُرَ رَجُلًا فَيَؤُمَّ النَّاسَ ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى رِجَالٍ. وَفِي رِوَايَةٍ: لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ يَعْلَمُ أَحَدُهُمْ أَنَّهُ يَجِدُ عَرْقًا سَمِينًا أَوْ مِرْمَاتَيْنِ حَسَنَتَيْنِ لَشَهِدَ الْعِشَاءَ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَلمُسلم نَحوه

1053. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैंने इरादा कर लिया था के लकड़िया इकट्ठी करने का हुक्म दू, वह इकट्ठी हो जाए तो फिर मैं नमाज़ के मुतल्लिक हुक्म दू, उस के लिए आज़ान दिया जाए फिर मैं किसी आदमी को हुक्म दू के वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए, फिर मैं इन लोगों के पीछे जाऊ और एक रिवायत में है जो जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने नहीं आते तो मैं उन के घरो समेत उन्हें जला दू, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर उनमें से किसी को पता चल जाए के वह मस्जिद में गोश्त वाली हड्डी या दो बेहतरीन पाए पाएगा तो वह नमाज़ ए ईशा में ज़रूर हाज़िर हो”| बुखारी, मुस्लिम मैं भी इसी तरह रिवायत है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (644) و مسلم (251 / 651)، (1481)

١٠٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ أَعْمَى فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ لَيْسَ لِي قَائِدٌ يَقُودُنِي إِلَى الْمَسْجِدِ فَسَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُرَخِّصَ لَهُ فَيُصَلِّيَ فِي ص:٣٣ بَيْتِهِ فَرَخَّصَ لَهُ فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ فَقَالَ: «هَلْ تَسْمَعُ النِّدَاءَ بِالصَّلَاةِ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «فَأَجِبْ» . رَوَاهُ مُسلم

1054. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक नाबीना शख़्स नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे मस्जिद तक पहुँचाने के लिए मेरे पास कोई आदमी नहीं, इस शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख्वास्त की के आप इसे रुखसत इनायत फरमादे के वह घर में नमाज़ पढ़ लिया करे, आप

ﷺ ने इसे रुखसत इनायत फरमा दिया जब वह वापस मुड़ा तो आप ने इसे बुलाकर पूछा: “क्या तुम नमाज़ के लिए आज़ान सुनते हो?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर इसे कबूल करो मस्जिद में आओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (255 / 653)، (1486)

١٠٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّهُ أَذَّنَ بِالصَّلَاةِ فِي لَيْلَةٍ ذَاتِ بَرْدٍ وَرِيحٍ ثُمَّ قَالَ أَلَا صَلُّوا فِي الرِّحَالِ ثُمَّ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْمُرُ الْمُؤَذِّنَ إِذَا كَانَتْ لَيْلَةٌ ذَاتُ بَرْدٍ وَمَطَرٍ يَقُولُ: «أَلَا صَلُّوا فِي الرِّحَالِ»

1055. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने एक रात जब शर्दी थी और ठंडी हवा चल रही थी, आज़ान कही फिर फ़रमाया सुन लो! अपने घरो में नमाज़ पढ़ो, फिर फ़रमाया के रसूलुल्लाह ﷺ सर और बरसात वाली रात मुअज़्ज़िन को हुक्म फ़रमाया करते थे की वह कहे: “अपने घरो में नमाज़ पढ़ो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (632) و مسلم (22 / 697)، (1600)

١٠٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وُضِعَ عَشَاءُ أَحَدِكُمْ وَأُقِيمَتِ الصَّلَاة فابدؤوا بِالْعَشَاءِ وَلَا يَعْجَلْ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهُ» وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُوضَعُ لَهُ الطَّعَامُ وَتُقَامُ الصَّلَاةُ فَلَا يَأْتِيهَا حَتَّى يَفْرُغُ مِنْهُ وَإِنَّهُ لِيَسْمَعَ قِرَاءَةَ الْإِمَامِ

1056. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब शाम का खाना लगा दिया जाए और नमाज़ के लिए इकामत कही जाए तो पहले शाम का खाना खालो और कोई शख़्स जल्दी न करे, हत्ता कि उस से फारिग़ हो जाए”, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के लिए खाना लगा दिया जाता और नमाज़ खड़ी कर दी जाती तो आप उस से फारिग़ हो कर ही नमाज़ के लिए आया करते थे, हालाँकि वह इमाम की किराअत सुन रहे होते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (673) و مسلم (66 / 559)، (1244)

١٠٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «لَا صَلَاة بِحَضْرَة طَعَام وَلَا هُوَ يدافعه الأخبثان»

1057. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “खाने के (सामने) होते हुए नमाज़ होती है के इस वक़्त की जब दो खबीस चीज़े (बोल बराज़) इसे रोक रही हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (67 / 560)، (1246)

١٠٥٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَلَا صَلَاةَ إِلَّا الْمَكْتُوبَة» . رَوَاهُ مُسلم

1058. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब नमाज़ के लिए इकामत कही जाए तो फिर फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा कोई और नमाज़ नहीं होती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (63 / 710)، (1644)

١٠٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَة أحدكُم إِلَى الْمَسْجِد فَلَا يمْنَعهَا»

1059. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स की अहलिया मस्जिद जाने की इजाज़त तलब करे तो वह इसे मना न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5238) و مسلم (134 / 442)، (988)

١٠٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَتْ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا شَهِدَتْ إِحْدَاكُنَّ الْمَسْجِدَ فَلَا تمس طيبا» . رَوَاهُ مُسلم

1060. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया जैनब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें फ़रमाया: “जब तुम में से कोई मस्जिद में जाए तो वह खुशबू न लगाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (142 / 443)، (997)

١٠٦١ - وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ أَصَابَتْ بَخُورًا فَلَا تَشْهَدْ مَعَنَا الْعشَاء الْآخِرَة» . رَوَاهُ مُسلم

1061. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो औरत खुशबू लगाए (खुश्बू की धुनी ले) तो वह हमारे साथ नमाज़ ए ईशा पढ़ने के लिए न आए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (143 / 444)، (998)

बा जमात नमाज़ और इसकी फ़ज़ीलत का बयान • بَاب الْجَمَاعَة وفضلها

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٠٦٢ - (صَحِيحٌ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَمْنَعُوا نِسَاءَكُمُ الْمَسَاجِدَ وَبُيُوتُهُنَّ خَيْرٌ لَهُنَّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1062. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स को नमाज़ में कोई आरज़ी पेश जाए तो वह " सुबहानल्लाह" कहे हाथ पर हाथ मारना तो औरतों के लिए है"| और एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: "सुबहानल्लाह कहना मर्दों के लिए है जबकि हाथ पर हाथ मारना औरतों के लिए है|'' (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (567) [و صححہ ابن خزیمۃ (1684) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 209) و وافقہ الذھبی]

١٠٦٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الْمَرْأَةِ فِي بَيْتِهَا أَفْضَلُ مِنْ صَلَاتِهَا فِي حُجْرَتِهَا وَصَلَاتُهَا فِي مَخْدَعِهَا أَفْضَلُ مِنْ صَلَاتِهَا فِي بَيْتِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1063. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "औरत का अपने घर के अन्दर नमाज़ पढ़ना घर के सहन में नमाज़ पढ़ने से अफज़ल है, और उस का घर के अन्दर किसी कोठड़ी में नमाज़ पढ़ना उस के खुले मकान में नमाज़ पढ़ने से अफज़ल है"| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (570) [و صححہ ابن خزیمۃ (1688) و ابن حبان (329 ، 330) و الحاکم (1 / 209) و وافقہ الذھبی] * قتادۃ مدلس و عنعن ولاصل الحدیث شواھد کثیرۃ

١٠٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ حِبِّي أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تُقْبَلُ صَلَاةُ امْرَأَةٍ تَطَيَّبَتْ لِلْمَسْجِدِ حَتَّى تَغْتَسِلَ غُسْلَهَا مِنَ الْجَنَابَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وروى أَحْمد وَالنَّسَائِيّ نَحوه

1064. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अपने महबूब अबुल कासिम ﷺ को फरमाते हुए सुना: "इस औरत की नमाज़ कबूल नहीं होती, जो मस्जिद में आने के लिए खुशबू लगाए, हत्ता कि वह इस तरह खूब अच्छी तरह ग़ुस्ल करे जैसे ग़ुस्ल ए जनाबत किया जाता है"| अबू दावुद, अहमद और नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (4174) و احمد (2 / 246 ح 7350) و النسائی (8 / 153 ح 5130) [و ابن ماجہ (4002) و للحدیث شواھد عند البیھقی (3 / 133) و غیرہ]

١٠٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ عَيْنٍ زَانِيَةٌ وَإِنَّ الْمَرْأَةَ إِذَا اسْتَعْطَرَتْ فَمَرَّتْ بِالْمَجْلِسِ فَهِيَ كَذَا وَكَذَا» . يَعْنِي زَانِيَةً. ص:٣٣ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَلِأَبِي دَاوُد وَالنَّسَائِيّ نَحوه

1065. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी अजनबी को शहवत के साथ देखने वाली हर आँख ज़ानिया है, और बेशक औरत जब इत्र लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वह ऐसी वैसी यानी ज़ानिया है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद और नसई की रिवायत भी इसी तरह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2786 وقال : حدیث حسن صحیح) و ابوداؤد (4173) و النسائی (8 / 153 ح 5129)

١٠٦٦ - (حسن) وَعَنْ أَبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا الصُّبْحَ فَلَمَّا سَلَّمَ قَالَ: «أَشَاهِدٌ فُلَانٌ؟» قَالُوا: لَا. قَالَ: «أَشَاهِدٌ فُلَانٌ؟» قَالُوا: لَا. قَالَ: «إِنَّ هَاتَيْنِ الصَّلَاتَيْنِ أَثْقَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ وَلَو تعلمُونَ مَا فيهمَا لأتيتموهما وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الرُّكَبِ وَإِنَّ الصَّفَّ الْأَوَّلَ عَلَى مِثْلِ صَفِّ الْمَلَائِكَةِ وَلَوْ عَلِمْتُمْ مَا فضيلته لابتدرتموه وَإِن صَلَاة الرجل من الرَّجُلِ أَزْكَى مِنْ صَلَاتِهِ وَحْدَهُ وَصَلَاتَهُ مَعَ الرَّجُلَيْنِ أَزْكَى مِنْ صَلَاتِهِ مَعَ الرَّجُلِ وَمَا كَثُرَ فَهُوَ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1066. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ ए फजर पढ़ाई, जब सलाम फेरा तो फ़रमाया: “क्या फलां शख़्स मौजूद है?” सहाबा ने अर्ज़ किया, नहीं, फिर पूछा:: “क्या फलां शख़्स मौजूद है?” सहाबा ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये दोनों नमाज़े मुनाफिको पर बहोत भारी है, अगर तुम जान लो के उनमें कितना अज्र व सवाब है तो फिर ख्वाह तुम्हें घुटनों के बल आना पड़ता तुम ज़रूर आते और बेशक पहली सफ (अज़र व फ़ज़ीलत के लिहाज़ से) फरिश्तो की सफ की तरह है और अगर तुम्हें उसकी फ़ज़ीलत का इल्म हो जाए तो तुम उसकी तरफ ज़रूर सबकत करो बेशक आदमी का दूसरे आदमी के साथ नमाज़ पढ़ना उस के अकेले नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और उस का दो आदमियों के साथ नमाज़ पढ़ना उस के एक आदमी के साथ नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और जिस क़दर ज़्यादा हो तो वह अल्लाह को ज़्यादा महबूब है”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (554) و النسائی (2 / 104 ، 105 ح 844) [و ابن ماجه (790) و صححه ابن خزیمة (1477) و ابن حبان (429) و للحدیث شواهد وهوبها صحیح]

١٠٦٧ - (حسن) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ ثَلَاثَةٍ فِي قَرْيَةٍ وَلَا بَدْوٍ لَا تُقَامُ فِيهِمُ الصَّلَاةُ إِلَّا قَدِ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَعَلَيْكَ بِالْجَمَاعَةِ فَإِنَّمَا يَأْكُلُ الذِّئْبُ الْقَاصِيَةَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1067. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस बस्ती और जंगल में तीन आदमी हो और वहां बा जमाअत नमाज़ का इहतेमाम न हो तो फिर समझो इन पर शैतान ग़ालिब चूका है, तुम जमाअत के साथ लगे रहो भेड़िया अलग और दूर रहने वाली बकरी को खा जाता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (5 / 196 ح 22053) و ابوداؤد (547) و النسائی (2 / 106 ح 848) [و صححه ابن خزیمة (1486) و ابن حبان (425) و الحاکم (1 / 246) و وافقه الذهبی]

١٠٦٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من سمع الْمُنَادِي فَلَمْ يَمْنَعْهُ مِنِ اتِّبَاعِهِ عُذْرٌ» قَالُوا وَمَا الْعُذْرُ؟ قَالَ: «خَوْفٌ أَوْ مَرَضٌ لَمْ تُقْبَلْ مِنْهُ الصَّلَاةُ الَّتِي صَلَّى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارَقُطْنِيّ

1068. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स आज़ान सुन कर बिला उज़्र बा जमाअत नमाज़ पढ़ने न आए तो वह जो अकेले नमाज़ पढ़ता है के कबूल नहीं होती”, सहाबा ने अर्ज़ किया, उज़्र किया है आप ﷺ ने फ़रमाया: “खौफ या मर्ज़”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (551) و الدارقطنى (1 / 420 ، 421 ح 1542) * ابو جناب يحيى بن ابى حية الكلبى ضعيف مدلس و حديث ابن ماجه (793) يغنى عنه

١٠٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ وَوَجَدَ أَحَدُكُمُ الْخَلَاءَ فَلْيَبْدَأْ بِالْخَلَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَرَوَى مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ نَحوه

1069. अब्दुल्लाह बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब नमाज़ के लिए इकामत कही जाए और तुम में से कोई कजाए हाजत महसूस करे तो पहले वह कजाए हाजत से फारिग़ हो”, इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया है जबकि मालिक, अबू दावुद और नसई ने इसी की मिस्ल रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (142 وقال : حسن صحيح) و مالک (1 / 159 ح 379) و ابوداؤد (88) و النسائى (2 / 110 ، 111 ح 853) [و ابن ماجه (616) و صححه ابن خزيمة (932 ، 1652) و ابن حبان (الموارد : 194) و الحاکم (1 / 168) و وافقه الذهبى]

١٠٧٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثٌ لَا يَحِلُّ لِأَحَدٍ أَنْ يَفْعَلَهُنَّ: لَا يَؤُمَّنَّ رَجُلٌ قَوْمًا فَيَخُصَّ نَفْسَهُ بِالدُّعَاءِ دُونَهُمْ فَإِنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ خَانَهُمْ. وَلَا يَنْظُرْ فِي قَعْرِ بَيْتٍ قَبْلَ أَنْ يَسْتَأْذِنَ فَإِنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ خَانَهُمْ وَلَا يُصَلِّ وَهُوَ حَقِنٌ حَتَّى يَتَخَفَّفَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وللترمذي نَحوه

1070. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन काम ऐसे है जिन का करना किसी के लिए हलाल नहीं, कोई शख़्स जो मुक्तदियो को छोड़ कर सिर्फ अपने ज़ात के लिए दुआ करता हो, वह उनकी इमामत न कराए अगर वह ऐसे करेगा तो वह उन से खयानत करेगा, कोई शख़्स इजाज़त तलब करने से पहले किसी घर में न झांके अगर उस ने ऐसे किया तो उस ने उन से खयानत की और कोई शख़्स बोल बराज़ रोक कर नमाज़ न पढ़े, हत्ता कि वह इस से फारिग़ हो कर हल्का हो जाए”, अबू दावुद और तिरमिज़ी की रिवायत भी इसी तरह है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (90) و الترمذى (357 وقال : حسن) [وله شواهد]

١٠٧١ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُؤَخِّرُوا الصَّلَاةَ لِطَعَامٍ وَلَا لغيره» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

1071. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खाने और किसी और काम की खातिर नमाज़ को मोअख़्ख़र न करो”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (3 / 357 تحت ح 800) بغير هذا اللفظ [و ابوداؤد (3758 و اللفظ له] * محمد بن ميمون الزعفرانى ضعيف : ضعفه الجمهور

بَاب الْجَمَاعَة وفضلها • बा जमात नमाज़ और इसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٠٧٢ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنِ الصَّلَاةِ إِلَّا مُنَافِقٌ قَدْ عُلِمَ نِفَاقُهُ أَوْ مَرِيضٌ إِنْ كَانَ الْمَرِيضُ لَيَمْشِي بَيْنَ رَجُلَيْنِ حَتَّى يَأْتِيَ الصَّلَاةَ ص:٣٣ وَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَّمَنَا سُنَنَ الْهُدَى وَإِنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى الصَّلَاةُ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي يُؤَذَّنُ فِيهِ»» وَفِي رِوَايَة: " مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ غَدًا مُسْلِمًا فليحافظ على هَؤُلَاءِ الصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ حَيْثُ يُنَادَى بِهِنَّ فَإِنَّ اللَّهَ شرع لنبيكم صلى الله عَلَيْهِ وَسلم سُنَنَ الْهُدَى وَإِنَّهُنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى وَلَوْ أَنَّكُمْ صَلَّيْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ كَمَا يُصَلِّي هَذَا الْمُتَخَلِّفُ فِي بَيْتِهِ لَتَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ وَلَوْ تَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ لَضَلَلْتُمْ وَمَا مِنْ رَجُلٍ يَتَطَهَّرُ فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ ثُمَّ يَعْمِدُ إِلَى مَسْجِدٍ مِنْ هَذِهِ الْمَسَاجِدِ إِلَّا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوهَا حَسَنَةً وَرَفَعَهُ بِهَا دَرَجَةً ويحط عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً وَلَقَدْ رَأَيْتُنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنْهَا إِلَّا مُنَافِقٌ مَعْلُومُ النِّفَاقِ وَلَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ يُؤْتَى بِهِ يُهَادَى بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ حَتَّى يُقَام فِي الصَّفّ. رَوَاهُ مُسلم

1072. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम जानते थे की बा जमाअत नमाज़ से सिर्फ वही मुनाफ़िक़ शख़्स पीछे रहता था, जिस का मुनाफ़िक़ होना मालुम था, या फिर कोई मरीज़ रह जाता था, अगर मरीज़ दो आदमियों के सहारे चल सकता तो वह बा जमाअत नमाज़ के लिए हाज़िर होता और उन्होंने बताया की रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें हिदायत की राहें सिखाईए और जिस मस्जिद में आज़ान दी जाती हो उस में नमाज़ पढ़ना हिदायत की राहों मे से है, और एक रिवायत में है फ़रमाया, जिस शख़्स को पसंद हो के वह कल मुसलमान की हैसियत से अल्लाह से मुलाकात करे तो फिर इसे पांचो नमाज़ो की बा जमाअत पाबन्दी करनी चाहिए, बेशक अल्लाह ने तुम्हारे नबी के लिए हिदायत की राहें मुकर्रर फरमा दिया है और बेशक वह (पांचो नमाज़े) हिदायत की सुनन में से है अगर तुमने नमाज़ से पीछे रह जाने वाले इस शख़्स की तरह अपने घरो में नमाज़ पढ़ी तो तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ दोगे और अगर तुमने अपने नबी की सुन्नत छोड़ दी तो तुम गुमराह हो जाओगे और जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू कर के किसी मस्जिद का क़सद करता है तो अल्लाह उस के हर कदम उठाने पर उस के लिए एक नेकी लिख देता है, उस के ज़रिए एक दर्जा बुलंद फरमा देता है, और उसकी वजह से एक गुनाह मुआफ़ फरमा देता है, और हम जानते थे की नमाज़ से सिर्फ वही मुनाफ़िक़ शख़्स पीछे रहता था जिसके निफ़ाक़ के बारे में मालुम होता था, और ऐसे भी होता था के किसी आदमी को दो आदमियों के सहारे ला कर सफ में खड़ा कर दिया जाता था। (मुस्लिम)

رواه مسلم (257 ، 256 / 654)، (1487 و 1488)

١٠٧٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْلَا مَا فِي الْبُيُوتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالذُّرِّيَّةِ أَقَمْتُ صَلَاةَ الْعِشَاءِ وَأَمَرْتُ فِتْيَانِي يُحْرِقُونَ مَا فِي الْبُيُوتِ بِالنَّارِ» . رَوَاهُ أَحْمد

1073. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर घरो में औरतें और बच्चे न होते तो मैं नमाज़ ए ईशा कायम करने का हुक्म देता और अपने नौजवानों को हुक्म देता और वह घर में मौजूद नमाज़ से पीछे रह जाने वाले लोगों को आग से जला देते”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 367 ح 8782) * فیه ابو معشر : ضعیف ، ولاصل الحدیث شواھد کثیرۃ دون قوله :’’ ما فی البیوت ‘‘

١٠٧٤ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كُنْتُمْ فِي الْمَسْجِدِ فَنُودِيَ بِالصَّلَاةِ فَلَا يَخْرُجْ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُصَلِّيَ. رَوَاهُ أَحْمد

1074. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया: “जब तुम मस्जिद में हो और आज़ान हो जाए तो फिर तुम में से कोई शख़्स नमाज़ पढ़े बगैर वहां से बाहर न जाए”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (2 / 537 ح 10946) * المسعودی اختلط و شریک القاضی مدلس و عنعن

١٠٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ قَالَ: خَرَجَ رَجُلٌ مِنَ الْمَسْجِدِ بَعْدَمَا أُذِّنَ فِيهِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَمَّا هَذَا فَقَدَ عَصَى أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم. رَوَاهُ مُسلم

1075. अबू शअशाअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, एक आदमी आज़ान के बाद मस्जिद से बाहर निकल गया तो उसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: इस शख़्स ने अबुल कासिम ﷺ की नाफ़रमानी की| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (258 / 655)، (1489)

١٠٧٦ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:٣٣ «مَنْ أَدْرَكَهُ الْأَذَانُ فِي الْمَسْجِدِ ثُمَّ خَرَجَ لَمْ يَخْرُجْ لِحَاجَةٍ وَهُوَ لَا يُرِيدُ الرّجْعَة فَهُوَ مُنَافِق» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1076. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स आज़ान के वक़्त मस्जिद में मौजूद हो और फिर वह बिला ज़रूरत मस्जिद से निकल जाए और उस का वापस आने का भी कोई इरादा न हो तो ऐसा शख़्स मुनाफ़िक़ है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ ابن ماجہ (734) و سندہ ضعیف جدًا و لبعض الحدیث شواھد عند الطبرانی فی الاوسط (3854) و البیھقی (3 / 56) و غیرھما* فیه اسحاق بن ابی فروۃ متروک و عبد الجبار بن عمر ضعیف

١٠٧٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ سَمِعَ النِّدَاءَ فَلَمْ يُجِبْهُ فَلَا صَلَاةَ لَهُ إِلَّا مِنْ عُذْرٍ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

1077. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स आज़ान सुन कर बिला उज़्र मस्जिद में न आए तो उसकी मस्जिद के अलावा पढ़ी हुई नमाज़ दुरुस्त नहीं”| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارقطنی (1 / 420 ح 1542) [و ابوداؤد (551 و سنده ضعيف) و ابن ماجه (793) من طريقين]

١٠٧٨ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن أم مَكْتُوم قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْمَدِينَةَ كَثِيرَةُ الْهَوَامِّ وَالسِّبَاعِ وَأَنَا ضَرِيرُ الْبَصَرِ فَهَلْ تَجِدُ لِي مِنْ رُخْصَةٍ؟ قَالَ: «هَلْ تَسْمَعُ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَحَيَّهَلَا» . وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1078. अब्दुल्लाह बिन उम्म मक्तूम रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मदीना में बहोत ज़्यादा मुज़ी जानवर और दरिन्दे हैं, जबकि मैं एक नाबीना शख़्स हूँ क्या आप मेरे लिए कोई गुंजाईश पाते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम आओ नमाज़ की तरफ आओ कामयाबी की तरफ यानी आज़ान सुनते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया, “ पस फिर जल्दी आओ”, और आप ने रुखसत न दि| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (553) و النسائی (2 / 110 ح 852) [و صححه ابن خزيمة (1478) و الحاکم (1 / 247) و وافقه الذهبی] * سفيان الثوری عنعن و حديث مسلم (653)، (1486) يغنی عنه

١٠٧٩ - (صَحِيح) وَعَن أم الدَّرْدَاء قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ أَبُو الدَّرْدَاءِ وَهُوَ مُغْضَبٌ فَقُلْتُ: مَا أَغْضَبَكَ؟ قَالَ: وَاللَّهِ مَا أَعْرِفُ مِنْ أَمْرِ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا إِلَّا أَنَّهُمْ يُصَلُّونَ جَمِيعًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1079. उम्मे दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु गुस्से की हालत में मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैंने पूछा आप किसी वजह से गुस्से में है उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद ﷺ की उम्मत का एक ही काम बाकी रह गया है के वह बा जमाअत नमाज़ अदा करते हैं| (बुखारी)

رواه البخاری (650)

١٠٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ قَالَ: إِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقَدَ سُلَيْمَانَ بْنَ أَبِي حَثْمَةَ فِي صَلَاةِ الصُّبْحِ وَإِنَّ عُمَرَ غَدَا إِلَى السُّوقِ ص:٣٣ وَمَسْكَنُ سُلَيْمَانَ بَيْنَ الْمَسْجِدِ وَالسُّوقِ فَمَرَّ عَلَى الشِّفَاءِ أُمِّ سُلَيْمَانَ فَقَالَ لَهَا لَمْ أَرَ سُلَيْمَانَ فِي الصُّبْحِ فَقَالَتْ إِنَّهُ بَاتَ يُصَلِّي فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ فَقَالَ عُمَرُ لَأَنْ أَشْهَدَ صَلَاةَ الصُّبْحِ فِي الْجَمَاعَة أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَقُومَ لَيْلَةً. رَوَاهُ مَالك

1080. अबू बक्र बिन सुलेमान बिन अबू हशमत बयान करते हैं, कि उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने सुलेमान बिन अबू हशमत को नमाज़ ए फजर में न पाया और उमर रदियल्लाहु अन्हु बाज़ार तशरीफ़ ले गए,

सुलेमान का घर मस्जिद और बाज़ार के दरमियान वाकेअ था तो आप सलीम उन की वालिद सिफ्फाअ के पास से गुज़रे तो आप ने उन से पूछा मैंने नमाज़ ए फजर में सुलेमान नहीं देखा तो उन्होंने अर्ज़ किया, वह रातभर नमाज़ पढ़ता रहा और फिर इसे नींद गई, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर में नमाज़ ए फजर बा जमाअत अदा कर लो तो यह मुझे रातभर कयाम करने से ज़्यादा महबूब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالك (1 / 131 ح 292) * ابوبكر بن سليمان بن ابى حثمة لم يذكر من حدثه به

١٠٨١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اثْنَانِ فَمَا فَوْقهمَا جمَاعَة» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1081. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो और दो से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) एक जमाअत है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (972) * الربيع [وهو عليلة] بن بدر : متروك [و للحديث طرق ضعيفة]

١٠٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ بِلَالِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَمْنَعُوا النِّسَاءَ حُظُوظَهُنَّ مِنَ الْمَسَاجِدِ إِذَا اسْتَأْذَنَّكُمْ» . فَقَالَ بِلَالٌ: وَاللَّهِ لَنَمْنَعُهُنَّ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ: أَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتقول أَنْت لنمنعهن

1082. बिलाल बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब औरतें तुम से (मस्जिद जाने की) इजाज़त तलब करे तो तुम उन्हें मस्जिद के सवाब से महरूम न रखो (यह सुन कर) बिलाल रहिमहुल्लाह ने कहा: अल्लाह की क़सम! हम उन्हें ज़रूर रोकेंगे तो अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया में कहता हूँ रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया और तुम कहते हो हम उन्हें रोकेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (140 / 442)، (995)

١٠٨٣ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: فَأَقْبَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللَّهِ فَسَبَّهُ سَبًّا مَا سَمِعْتُ سَبَّهُ مِثْلَهُ قَطُّ وَقَالَ: أَخْبِرُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَقُولُ: وَاللَّهِ لنمنعهن. رَوَاهُ مُسلم

1083. सालिम रहिमहुल्लाह की अपने वालिद अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से मरवी एक रिवायत में है उन्होंने कहा: अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने बिलाल रहिमहुल्लाह की तरफ मुतवज्जे हो कर, इसे बहोत ज़्यादा बुरा-भला कहा इस तरह बुरा-भला कहते हुए मैंने उन्हें कभी नहीं सुना और उन्होंने ने फ़रमाया: में तुम है रसूलुल्लाह ﷺ के हवाले से बयान कर रहा हूँ जबकि तुम कहते हो के अल्लाह की क़सम! हम उन्हें ज़रूर रोकेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (135 / 442)، (989)

١٠٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَمْنَعَنَّ رَجُلٌ أَهْلَهُ أَنْ يَأْتُوا الْمَسَاجِدَ» . فَقَالَ ابْنٌ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: فَإِنَّا نَمْنَعُهُنَّ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَقُولُ هَذَا؟ قَالَ: فَمَا كَلَّمَهُ عَبْدُ اللَّهِ حَتَّى مَاتَ. رَوَاهُ أَحْمد

1084. मुजाहिद रहिमहुल्लाह अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कोई शख़्स अपने अहले खाना को मस्जिद जाने से न रोके”, (ये सुन कर) अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के एक बेटे ने कहा, हम उन्हें ज़रूर रोकेंगे, उस पर अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में तुम है रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस बयान करता हूँ और तुम यह कह रहे हो रावी बयान करते हैं, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने जिंदगी भर उस से कलाम नहीं किया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (2 / 36 ح 4933) * ابن ابی نجیح مدلس و عنعن

بَاب تَسْوِيَة الصَّفّ • सफें सीधी करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٠٨٥ - (صَحِيح) عَن النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَوِّي صُفُوفَنَا حَتَّى كَأَنَّمَا يُسَوِّي بِهَا الْقِدَاحَ حَتَّى رَأَى أَنَّا قَدْ عَقَلْنَا عَنْهُ ثُمَّ خَرَجَ يَوْمًا فَقَامَ حَتَّى كَادَ أَنْ يُكَبِّرَ فَرَأَى رَجُلًا بَادِيًا صَدْرُهُ مِنَ الصَّفِّ فَقَالَ: «عِبَادَ اللَّهِ لَتُسَوُّنَّ صُفُوفَكُمْ أَوْ لَيُخَالِفَنَّ اللَّهُ بَيْنَ وُجُوهِكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

1085. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारी सफों को ऐसा बराबर किया करते थे, गोया उन के साथ तिरो को बराबर करते हो, हत्ता कि आप ने समझ लिया के हम आप से सिख चुके हैं, फिर एक रोज़ आप तशरीफ़ लाए तो खड़े हो गए करीब था के आप तकबीर कहते के आप ने एक आदमी को देखा उस का सीना सफ से बाहर निकला हुआ है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के बन्दों सफे बराबर किया करो वरना अल्लाह तुम्हारे अन्दर इख्तिलाफ पैदा फरमादेगा”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (128 / 436)، (979)

١٠٨٦ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَأَقْبَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِوَجْهِهِ فَقَالَ: «أَقِيمُوا صُفُوفَكُمْ وَتَرَاصُّوا فَإِنِّي أَرَاكُمْ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِي» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِي الْمُتَّفَقِ عَلَيْهِ قَالَ: «أَتِمُّوا الصُّفُوف فَإِنِّي أَرَاكُم من وَرَاء ظَهْري»

1086. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नमाज़ के लिए इकामत कह दी गई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ करते हुए फ़रमाया: “सफे दुरुस्त रखो और बाहम मिल कर खड़े हुआ करो, क्योंकि मैं तुम्हें अपने पुश्त के पीछे से भी देखता हूँ”| बुखारी, सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है आप

ﷺ ने फ़रमाया: “सफे मुकम्मल करो क्योंकि मैं तुम्हें अपने पुश्त के पीछे से भी देखता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه البخارى (719) 0 اتموا الصفوف ، رواه مسلم (434 ، ترقيم دار السلام : 976) و اللفظ له و رواه البخارى (718) بالفظ :'' اقيموا الصفوف ''

١٠٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَوُّوا صُفُوفَكُمْ فَإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ من إِقَامَة الصَّلَاة» . إِلَّا أَنَّ عِنْدَ مُسْلِمٍ: «مِنْ تَمَامِ الصَّلَاةِ»

1087. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने सफे बराबर करो बेशक सफों का बराबर करना नमाज़ कायम करने से है”| बुखारी, मुस्लिम, अलबत्ता सहीह मुस्लिम में: “नमाज़ मुकम्मल करने से है” के अल्फाज़ है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (723) و مسلم (124 / 433)، (975)

١٠٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَمْسَحُ مَنَاكِبَنَا فِي الصَّلَاةِ وَيَقُولُ: «اسْتَوُوا وَلَا تَخْتَلِفُوا فَتَخْتَلِفَ قُلُوبُكُمْ ليليني مِنْكُم أولُوا الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ» . قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ: فَأَنْتُمُ الْيَوْمَ أَشَدُّ اخْتِلَافا. رَوَاهُ مُسلم

1088. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ में अपने हाथ हमारे कंधो पर रखते और फरमाते: “बराबर हो जाओ, इख्तिलाफ न करो वरना तुम्हार दिल मुख्तलिफ हो जाएँगे, और तुम में से साहबे अक्ल व दानिश हज़रात मेरे करीब खड़े हुआ करो फिर जो उन के करीब है फिर जो उन के करीब है”, और अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: और तुम आज सख्त इख्तिलाफ का शिकार हो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (122 / 432)، (972)

١٠٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِيَلِنِي مِنْكُمْ أُولُو الْأَحْلَامِ وَالنُّهَى ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ» ثَلَاثًا وَإِيَّاكُم وهيشات الْأَسْوَاق ". رَوَاهُ مُسلم

1089. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से साहबे अक्ल व दानिश हज़रात मेरे करीब खड़े हुआ करे फिर जो उन से करीब हो, आप ﷺ ने तीन मर्तबा ऐसे फ़रमाया और बाज़ारों के शोर (मसाइल) से बचो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (123 / 432)، (974)

١٠٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَصْحَابِهِ تَأَخُّرًا فَقَالَ لَهُمْ: «تَقَدَّمُوا

وَأْتَمُّوا بِي وَلْيَأْتَمَّ بِكُمْ مَنْ بَعْدَكُمْ لَا يَزَالُ قَوْمٌ يَتَأَخَّرُونَ حَتَّى يؤخرهم الله» . رَوَاهُ مُسلم

1090. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा का (पहली सफ से) पीछे हटा मुलाहेज़ा फ़रमाया: तो आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: "आगे बढ़ो मेरी इक्तेदा करो और तुम्हारे बाद वाले तुम्हारी इक्तेदा करे लोग पीछे हटते रहेंगे हत्ता कि अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में पीछे कर देगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (130 / 438)، (982)

١٠٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَآنَا حلقا فَقَالَ: «مَالِي أَرَاكُمْ عِزِينَ؟» ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا فَقَالَ: «أَلَا تَصُفُّونَ كَمَا تَصُفُّ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ رَبِّهَا؟» فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ تَصُفُّ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ رَبِّهَا؟ قَالَ: «يُتِمُّونَ الصُّفُوفَ الْأُولَى وَيَتَرَاصُّونَ فِي الصَّفّ» . رَوَاهُ مُسلم

1091. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आप ने हमें मुख्तलिफ हलको में देख कर फ़रमाया: "क्या वजह है की में तुम्हें मूतफर्क देख रहा हूँ ?" फिर आप ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: "तुम वैसे सफे क्यों नहीं बनाते जिस तरह फ़रिश्ते अपने रब के यहाँ सफे बनाते है?" हमने अर्ज़ किया: फ़रिश्ते अपने रब के यहाँ कैसे सफे बनाते है आप ﷺ ने फ़रमाया: "वो पहली सफे मुकम्मल करते हैं और सफ में बाहम मिल कर खड़े होते हैं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (119 / 430)، (968)

١٠٩٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ صُفُوفِ الرِّجَالِ أَوَّلُهَا وَشَرُّهَا آخِرُهَا وَخَيْرُ صُفُوفِ النِّسَاءِ آخِرُهَا وشرها أولهَا» . رَوَاهُ مُسلم

1092. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मर्दों की सफों में से पहली सफ बेहतरीन सफ है और उनकी आखिरी सफ कमतर है, जबकि औरतो की आखिरी सफ उनकी बेहतरीन सफ है और उनकी पहली सफ बदतर है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (132 / 440)، (985)

सफें सीधी करने का बयान — بَاب تَسْوِيَة الصَّفّ •

दूसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّانِي •

١٠٩٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُصُّوا صُفُوفَكُمْ وَقَارِبُوا بَيْنَهَا وَحَاذُوا بِالْأَعْنَاقِ فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لَأَرَى الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ مِنْ خَلَلِ ص:٣٤ الصَّفِّ كَأَنَّهَا الْحَذَفُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1093. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने सफों को खूब मिलाओ और उन्हें बाहम करीब बनाओ गर्दनो को बराबर व मुकाबिल रखो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं शैतान को देखता हूँ कि वह बकरी के बच्चे की तरह सफों के शगाफ़ में दाखिल हो जाता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواہ ابوداؤد (667) [و النسائی (2 / 92 ح 816) و صححه ابن خزیمة (1545) و ابن حبان (387 ، 391)]

١٠٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتِمُّوا الصَّفَّ الْمُقَدَّمَ ثُمَّ الَّذِي يَلِيهِ فَمَا كَانَ مِنْ نَقْصٍ فَلْيَكُنْ فِي الصَّفِّ الْمُؤخر» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1094. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगली सफ को पूरा करो फिर उस को जो उस के बाद है, पस जो कमी हो वह आखिरी सफ में होनी चाहिए”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (671) [و النسائی (2 / 93 ح 819) و صححه ابن خزیمة (1546) و ابن حبان (390)]

١٠٩٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى الَّذِينَ يَلُونَ الصُّفُوفَ الْأُولَى وَمَا مِنْ خُطْوَةٍ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ من خطْوَة يمشيها يصل العَبْد بهَا صفا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1095. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते उन लोगों पर रहमत नाज़िल फरमाते हैं जो पहली सफों को मिलाते है अल्लाह को वह कदम इन्तिहाई महबूब है जो सफ में मिलने के लिए उठाया जाता है”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (543) * شیخ من اھل الکوفة لم اعرفه و حدیث ابی داود (664) یغنی عنه

١٠٩٦ - (حَسَنٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى مَيَامِنِ الصُّفُوفِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1096. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह और उस के

फ़रिश्ते सफों की दाएँ जानिब वालो पर रहमत नाज़िल फरमाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (676) [و ابن ماجه (1005) و صححه ابن خزيمة (1550) و ابن حبان (393 ، 394) و الحاكم على شرط مسلم (1 / 214) و وافقه الذهبى] * سفيان الثورى مدلس و عنعن و حديث ابن خزيمة (بالفظ : ان الله و ملائكته يصلون على الصف الاول) سنده حسن وهو يغنى عنه

١٠٩٧ - (صَحِيح) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَوِّي صُفُوفَنَا إِذَا قُمْنَا إِلَى الصَّلَاةِ فَإِذَا اسْتَوَيْنَا كَبَّرَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1097. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम नमाज़ के लिए खड़े होते तो रसूलुल्लाह ﷺ हमारी सफे बराबर फरमाते जब हम बराबर हो जाते तो आप ﷺ (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (665) [و اصله متفق عليه ، رواه البخارى (717) و مسلم (436)، (978)]

١٠٩٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ عَنْ يَمِينِهِ: «اعْتَدِلُوا سَوُّوا صُفُوفَكُمْ» . وَعَنْ يَسَارِهِ: «اعْتَدِلُوا سَوُّوا صُفُوفَكُمْ» . رَوَاهُ ص:٣٤»» أَبُو دَاوُ

1098. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने दाएं जानिब फरमाते: “बराबर हो जाओ सफे दुरुस्त करो”, और अपने बाएं जानिब भी फरमाते: “बराबर हो जाओ सफे दुरुस्त करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (670) * مصعب بن ثابت ضعيف ، و محمد بن مسلم بن السائب : مجهول الحال لم يو ثقه غير ابن حبان

١٠٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خِيَارُكُمْ أَلْيَنُكُمْ مَنَاكِبَ فِي الصَّلَاة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1099. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ में कंधे नरम रखने वाला शख़्स तुम में सबसे बेहतर है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (672) [و صححه ابن خزيمة (1566) و ابن حبان (397)]



सफें सीधी करने का बयान • بَاب تَسْوِيَة الصَّفّ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١١٠٠ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «اسْتَوُوا اسْتَوُوا اسْتَوُوا فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لَأَرَاكُمْ من خَلْفي كَمَا أَرَاكُم من بَين يَدي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1100. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ फ़रमाया करते थे: “बराबर हो जाओ, बराबर हो जाओ, बराबर हो जाओ, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं अपने पुश्त से तुम्हें इसी तरह देखता हूं जैसे मैं तुम्हें अपने सामने देखता हूँ”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (667) بلفظ مختلف [و احمد (3 / 268) 286) و النسائی (2 / 91 ح 814)]

١١٠١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّون عَلَى الصَّفِّ الْأَوَّلِ» قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى الثَّانِي قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى الصَّفِّ الْأَوَّلِ» قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَى الثَّانِي قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى الصَّفِّ الْأَوَّلِ» قَالُوا يَا رَسُولَ الله وعَلى الثَّانِي؟ قَالَ: «وعَلى الثَّانِي» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَوُّوا صُفُوفَكُمْ وَحَاذُوا بَيْنَ مَنَاكِبِكُمْ وَلِينُوا فِي أَيْدِي إِخْوَانِكُمْ وَسُدُّوا الْخَلَلَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدْخُلُ بَيْنَكُمْ بِمَنْزِلَةِ الْحَذَفِ» يَعْنِي أَوْلَادَ الضَّأْنِ الصِّغَارِ. رَوَاهُ أَحْمد

1101. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते पहली सफ पर रहमते नाज़िल फरमाते हैं”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! दूसरी पर आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते पहली सफ पर रहमते नाज़िल फरमाते हैं”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! दूसरी पर आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते पहली सफ पर रहमते नाज़िल फरमाते हैं”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! दूसरी पर आप ﷺ ने फ़रमाया: “दूसरी पर”, और रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने सफे बराबर करो कंधे बराबर रखो अपने भाइयो के हाथो में नरम हो जाओ और शगाफ़ बंद करो, क्योंकि शैतान बकरी के बच्चे की तरह तुम्हारे दरमियानी शगाफ़ में दाखिल हो जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 262 ح 22618) * سنده ضعيف من اجل ضعف فرج بن فضالة

١١٠٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقِيمُوا الصُّفُوفَ وَحَاذُوا بَين المناكب وَسُدُّوا الْخَلَلَ وَلِينُوا بِأَيْدِي إِخْوَانِكُمْ وَلَا تَذَرُوا فرجات للشَّيْطَان وَمَنْ وَصَلَ صَفًّا وَصَلَهُ اللَّهُ وَمَنْ قَطَعَهُ قطعه الله» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ مِنْهُ قَوْلَهُ: «وَمَنْ وَصَلَ صَفًّا» . إِلَى آخِرِهِ

1102. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने सफे कायम करो, कंधे बराबर रखो, शगाफ़ बंद करो अपने भाइयो के हाथो के लिए नरम हो जाओ, शैतान के लिए शगाफ़ खाली जगह न छोड़ो और जो शख़्स सफ मिलाएगा, अल्लाह अपनी रहमत के साथ इसे मिलाएगा और जो इसे कतअ करेगा अल्लाह इसे अपनी (रहमत से) कतअ कर देगा”| अबू दावुद, और इमाम नसई रहिमहुल्लाह ने ((من وصل صفا)) से आख़िर तक उन से रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (666) و النسائی (2 / 93 ح 820) [و صححه ابن خزیمة (1549) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 213) و وافقه الذھبی]

١١٠٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَوَسَّطُوا الْإِمَامَ وَسُدُّوا الْخَلَلَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1103. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इमाम को बिच में जगह दो और शगाफ़ बंद करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (681) [و البیھقی (3 / 104)] * امة الواحد : مجھولة ، و ابنھا یحیی بن بشیر : مستور

١١٠٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ قَوْمٌ يَتَأَخَّرُونَ عَنِ الصَّفِّ الْأَوَّلِ حَتَّى يُؤَخِّرَهُمُ اللَّهُ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1104. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोग पहली सफ से पीछे हटते रहेंगे हत्ता कि अल्लाह उन्हें जहन्नुम में सबसे आखिरी तबके में डाल देगा”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابوداؤد (679) * عکرمة بن عمار : لم یصرح بالسماع من یحیی بن ابی کثیر و تکلم الجمھور فی روایته عنه

١١٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ وَابِصَةَ بْنِ مَعْبَدٍ قَالَ: رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا يُصَلِّي خَلْفَ الصَّفِّ وَحْدَهُ فَأَمَرَهُ أَنْ يُعِيدَ الصَّلَاةَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

1105. वाबिसत बिन मअबद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सफ के पीछे एक आदमी को अकेले नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आप ﷺ ने इसे नमाज़ लौटाने का हुक्म फ़रमाया| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 228 ح 18170) و الترمذی (230) و ابوداؤد (682) [و صححه ابن خزیمة (1569) و ابن حبان (401 ، 403)]

نَمाज़ में खड़े होने की जगह का बयान • بَاب الْموقف

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١١٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بِتُّ فِي بَيت خَالَتِي مَيْمُونَةَ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَأَخَذَ بِيَدِي مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِهِ فَعَدَلَنِي كَذَلِكَ مِنْ وَرَاءِ ظَهره إِلَى الشق الْأَيْمن

1106. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अपनी खाला मैमुना रदियल्लाहु अन्हा के घर रात बसर की रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे तो मैं भी उन के बाएँ जानिब खड़ा हो गया, तो आप ﷺ ने अपने पुश्त के पीछे से मुझे बाज़ू से पकड़ कर इसी तरह अपने पुश्त के पीछे से मुझे अपने दाएँ जानिब खड़ा कर लिया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (699) و مسلم (181 / 763)، (1788)

١١٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُصَلِّيَ فَجِئْتُ حَتَّى قُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَدَارَنِي حَتَّى أَقَامَنِي عَن يَمِينه ثُمَّ جَاءَ جَبَّارُ بْنُ صَخْرٍ فَقَامَ عَنْ يَسَارِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخَذَ بيدينا جَمِيعًا فدفعنا حَتَّى أَقَمْنَا خَلفه. رَوَاهُ مُسلم

1107. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं आया तो आप ﷺ के बाएँ तरफ खड़ा हो गया, आप ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे फेर कर अपने दाएँ जानिब खड़ा कर लिया, फिर जब्बार बिन सखर आए तो वह भी रसूलुल्लाह ﷺ की बाएँ जानिब खड़े हो गए, आप ﷺ ने हमें हमारे हाथो से पकड़ कर पीछे हटाया हत्ता कि आप ने हमें अपने पीछे खड़ा कर दिया| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (3010)، (7516)

١١٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: صَلَّيْتُ أَنَا وَيَتِيمٌ فِي بَيْتِنَا خَلْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأم سليم خلفنا. رَوَاهُ مُسلم

1108. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और एक यतीम ने हमारे घर में नबी ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ी और उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा उम्म अनस रदियल्लाहु अन्हु ने हमारे पीछे| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (لم اجدہ) * و رواہ البخاری (727 ، 380) و مسلم (266 / 658)، (1499) من طریق آخر مطولاً

١١٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بِهِ وَبِأُمِّهِ أَوْ خَالَتِهِ قَالَ: فَأَقَامَنِي عَنْ يَمِينِهِ وَأَقَامَ الْمَرْأَةَ خَلْفَنَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1109. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने मुझे और मेरी वालिदा या मेरी खाला को नमाज़ पढ़ाई, वह बयान करते हैं, आप ﷺ ने मुझे अपने दाएँ जानिब और औरत को अपने पीछे खड़ा किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (269 / 660)، (1502)

١١١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ رَاكِعٌ فَرَكَعَ قَبْلَ أَنْ يَصِلَ إِلَى الصَّفِّ ثُمَّ مَشَى إِلَى الصَّفِّ. فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «زَادَكَ اللَّهُ حِرْصًا وَلَا تعد» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1110. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह नबी ﷺ तक पहुंचे तो आप रुकू फरमा रहे थे, उन्होंने सफ तक पहुँचने से पहले ही रुकू कर लिया, फिर चल कर सफ तक पहुँच गए, नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया, यह तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तुम्हारी हरस में इज़ाफा फरमाए आइन्दा ऐसे न करना‘‘| (बुखारी)

رواه البخارى (783)

بَاب الْموقف • नमाज़ में खड़े होने की जगह का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١١١١ - (ضَعِيف) عَن سَمُرَة بن جُنْدُب قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذا كُنَّا ثَلَاثَةً أَنْ يَتَقَدَّمَنَا أَحَدُنَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1111. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया की जब हम तीन हो तो हम में से एक हमारी इमामत कराए| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (233 وقال : غريب) * اسماعيل بن مسلم ضعيف

١١١٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ: أَنَّهُ أَمَّ النَّاسَ بِالْمَدَائِنِ وَقَامَ عَلَى دُكَّانٍ يُصَلِّي وَالنَّاسُ أَسْفَلَ مِنْهُ فَتَقَدَّمَ حُذَيْفَةُ فَأَخَذَ عَلَى يَدَيْهِ فَاتَّبَعَهُ عَمَّارٌ حَتَّى أَنْزَلَهُ حُذَيْفَةُ فَلَمَّا فَرَغَ عَمَّارٌ مِنْ صَلَاتِهِ قَالَ لَهُ حُذَيْفَةُ: أَلَمْ تَسْمَعْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا أَمَّ الرَّجُلُ الْقَوْمَ فَلَا يَقُمْ فِي مَقَامٍ أَرْفَعَ مِنْ مَقَامِهِمْ أَوْ نَحْوَ ذَلِكَ؟» فَقَالَ عَمَّارٌ: لِذَلِكَ اتَّبَعْتُكَ حِينَ أَخَذْتَ عَلَى يَدي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1112. अम्मार रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने मदाइन में लोगों को इमामत कराइ तो वह चबूतरे पर खड़े हुए, जबकि लोग उन से नीचे खड़े थे, हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर उन्हें हाथो से पकड़ लिया तो अम्मार रदियल्लाहु अन्हु उन के पीछे पीछे चलते गए, हत्ता कि हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें नीचे उतार

दिया, जब अम्मार रदियल्लाहु अन्हु नमाज़ से फारिग़ हुए तो हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया, क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए नहीं सुना ?" जब आदमी लोगों की इमामत कराए तो वह उन से बुलंद जगह पर खड़ा न हो या आप ने इस तरह की बात फरमाई तो अम्मार रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: इसीलिए तो मैं आप के पकड़ने पर आप के पीछे चल दिया था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (598) * فيه رجل : مجهول ، و ابو خالد : مثله

١١١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ سُئِلَ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ الْمِنْبَرُ؟ فَقَالَ: هُوَ مِنْ أَثْلِ الْغَابَةِ عَمِلَهُ فُلَانٌ مَوْلَى فُلَانَةَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَامَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ عُمِلَ وَوُضِعَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَكَبَّرَ وَقَامَ النَّاسُ خَلْفَهُ فَقَرَأَ وَرَكَعَ وَرَكَعَ النَّاسُ خَلْفَهُ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرَى فَسَجَدَ عَلَى الْأَرْضِ ثُمَّ عَادَ إِلَى الْمِنْبَرِ ثُمَّ قَرَأَ ثُمَّ رَكَعَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ رَجَعَ الْقَهْقَرِي ص:٣٤ حَتَّى سجد بِالْأَرْضِ. هَذَا لفظ البُخَارِيّ وَفِي الْمُتَّفَق عَلَيْهِ نَحْوُهُ وَقَالَ فِي آخِرِهِ: فَلَمَّا فَرَغَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: «أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا صَنَعْتُ هَذَا لِتَأْتَمُّوا بِي وَلِتَعْلَمُوا صَلَاتِي»

1113. सहल बिन साद साअदि रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन से दरियाफ्त किया गया के मिम्बर किस चीज़ से बनाया गया था तो उन्होंने ने फ़रमाया: घाबा की लकड़ी का बना हुआ था और फलां औरत आइशा रदियल्लाहु अन्हु की आज़ाद करदा गुलाम ने इसे रसूलुल्लाह ﷺ के लिए बनाया था, जब इसे बना कर रख दिया गया तो, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस पर किबले रुख खड़े हो कर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और लोग आप के पीछे खड़े हो गए, आप ने किराअत की रुकू किया और लोगों ने भी आप के पीछे रुकू किया, फिर आप ने सर उठाया फिर उल्टे पाँव वापस आए और ज़मीन पर सजदाह किया, फिर मिम्बर पर तशरीफ़ लाए फिर किराअत की फिर रुकू किया फिर सर उठाया फिर उल्टे पाँव वापस आए, हत्ता कि ज़मीन पर सजदाह किया| यह सहीह बुखारी के अल्फाज़ हैं जबकि सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की रिवायत में भी इसी तरह है और इस रिवायत के आख़िर में है जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो लोगों की तरफ मुतवज्जे हो कर फ़रमाया: "लोगो! मैंने यह इसलिए किया है ताकि तुम मेरी इक्तेदा करो और तुम मेरी नमाज़ सिख लो"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (917) و مسلم (544)، (1216)

١١١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رِضَى اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حُجْرَتِهِ وَالنَّاسُ يَأْتَمُّونَ بِهِ مِنْ وَرَاءِ الْحُجْرَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1114. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हुजरे में नमाज़ पढ़ी जबकि लोग हुजरे के बाहर से आप की इक्तेदा कर रहे थे | (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (1126) [و البيهقى (3 / 110) و رواه البخارى (729) و مسلم (761)، (1783) به مطولاً]

नमाज़ में खड़े होने की जगह का बयान • بَاب الْموقف

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

١١١٥ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: أَلَا أُحَدِّثُكُمْ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَفَّ الرِّجَالَ وَصَفَّ خَلْفَهُمُ الْغِلْمَانَ ثُمَّ صَلَّى بِهِمْ فَذَكَرَ صَلَاتَهُ ثُمَّ قَالَ: «هَكَذَا صَلَاة» قَالَ عبد العلى: لَا أَحْسَبُهُ إِلَّا قَالَ: أُمَّتِي ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1115. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, क्या मैं तुम है रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ के मुतल्लिक बताऊँ? आप ने नमाज़ के लिए इकामत कही और मर्दों ने सफ बनाई और उन के पीछे बच्चो ने सफ बनाई, फिर आप ने उन्हें नमाज़ पढ़ाई और आप ﷺ की नमाज़ का तज़किरह करते हुए फ़रमाया इस तरह नमाज़ है, अब्दुल अअला ने कहा: मेरा ख्याल है के आप ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत की नमाज़ इस तरह है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (677) [و حسنه ابن الملقن فی تحفة المحتاج (548)]

١١١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ: بَيْنَا أَنَا فِي الْمَسْجِدِ فِي الصَّفِّ الْمُقَدَّمِ فَجَبَذَنِي رَجُلٌ مِنْ خَلْفِي جَبْذَةً فَنَحَّانِي وَقَامَ مَقَامِي فَوَاللَّهِ مَا عَقَلْتُ صَلَاتِي. فَلَمَّا انْصَرَفَ إِذَا هُوَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ فَقَالَ: يَا فَتَى لَا يَسُوءُكَ اللَّهُ إِنَّ هَذَا عُهِدَ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْنَا أَنْ نَلِيَهُ ثُمَّ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَقَالَ: هَلَكَ أَهْلُ الْعُقَدِ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: وَاللَّهِ مَا عَلَيْهِمْ آسَى وَلَكِنْ آسَى عَلَى مَنْ أَضَلُّوا. قُلْتُ يَا أَبَا يَعْقُوبَ مَا تَعْنِي بِأَهْلِ العقد؟ قَالَ: الْأُمَرَاء. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1116. कैस बिन उब्बाद बयान करते हैं, इसी असना में की मैं मस्जिद में पहली सफ मैं था के किसी आदमी ने मुझे ज़ोर से पीछे खिचां, वह मुझे वहां से हटा कर खुद वहां खड़ा हो गया अल्लाह की क़सम! मुझे अपने नमाज़ के बारे में कुछ याद न रहा, जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो वह उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु थे उन्होंने ने फ़रमाया: नोजवान अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ से दो चार न करे, बेशक यह नबी ﷺ की तरफ से हमारे लिए हुक्म है के हम इमाम के पास खड़े हो, फिर उन्होंने किबले रुख खड़े हो कर फ़रमाया: “अहल ए अकद” हलाक हो गए रब्बे काबा की क़सम मुझे इन पर कोई अफ़सोस नहीं, लेकिन मुझे अफ़सोस तो उन पर है जिन्होंने गुमराह किया मैंने कहा: अबू याकूब “ अहल ए अकद” से कौन मुराद है उन्होंने ने फ़रमाया: हुक्मरान| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (2 / 88 ح 809) [و صححه ابن خزيمة (1573) و ابن حبان (398) وله طريق آخر عند الحاكم (4 / 527) و صححه و وافقه الذهبی]

बَاب الْإِمَامَة • इमामत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١١١٧ - (صَحِيح) عَن أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَؤُمُّ الْقَوْمَ أَقْرَؤُهُمْ لِكِتَابِ اللَّهِ فَإِنْ كَانُوا فِي الْقِرَاءَةِ سَوَاءً فَأَعْلَمُهُمْ بِالسُّنَّةِ فَإِنْ كَانُوا فِي السُّنَّةِ سَوَاءً فَأَقْدَمُهُمْ هِجْرَةً فَإِنْ كَانُوا فِي الْهِجْرَةِ سَوَاءً فَأَقْدَمُهُمْ سِنًّا وَلَا يَؤُمَّنَّ الرَّجُلُ الرَّجُلَ فِي سُلْطَانِهِ وَلَا يَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ عَلَى تَكْرِمَتِهِ إِلَّا بِإِذْنِهِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: «وَلَا يَؤُمَّنَّ الرجل الرجل فِي أَهله»

1117. अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो की इमामत वह शख़्स कराए जो उनमें से किताबुल्लाह को ज़्यादा पढ़ने जानने समझने वाला हो, पस अगर वह किराअत में सब बराबर हो तो फिर उनमें से जो सुन्नत को ज़्यादा जानने वाला हो, अगर वह सुन्नत में बराबर हो तो फिर उनमें से जिस ने हिजरत पहले की हो और अगर वह हिजरत करने में बराबर हो तो फिर उनमें से जो उमर में बड़ा हो, और कोई शख़्स किसी की जगह (बिला इजाज़त) इमामत कराए न बिला इजाज़त उस के घर में उसकी इज्ज़त की जगह बेठे”, मुस्लिम, और मुस्लिम ही की रिवायत में है: “कोई आदमी किसी आदमी की उस के घर में इमामत न कराए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (290 / 673)، (1532)

١١١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَانُوا ثَلَاثَةً فليؤمهم أحدهم وأحقهم بِالْإِمَامِ أَقْرَؤُهُمْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ فِي بَابٍ بَعْدَ بَابِ «فَضْلِ الْأَذَانِ»

1118. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तीन लोग हो तो उनमें से एक उनकी इमामत कराए और उनमें से जो ज़्यादा कुरान पढ़ने वाला है के इमामत का ज़्यादा हक़दार है”| मुस्लिम, और मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस बाब फ़ज़ल अल आज़ान के बाद वाले बाब में बयान हो चुकी है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (289 / 672)، (1529) 0 حديث مالک بن الحويرث تقدم (683)

بَاب الْإِمَامَة • इमामत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١١١٩ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِيُؤَذِّنْ لَكُمْ خِيَارُكُمْ وليؤمكم قراؤكم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1119. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से बेहतर शख़्स आज़ान कहे और तुम में से बेहतर कारी तुम्हें नमाज़ पढ़ाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (590) * حسین بن عیسی الحنفی : ضعیف ، ضعفه الجمهور

١١٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي عَطِيَّةَ الْعُقَيْلِيِّ قَالَ: كَانَ مَالِكُ بن الْحُوَيْرِث يَأْتِينَا إِلَى مُصَلَّانَا يَتَحَدَّثُ فَحَضَرَتِ الصَّلَاةُ يَوْمًا قَالَ أَبُو عَطِيَّةَ: فَقُلْنَا لَهُ: تَقَدَّمَ فَصْلُهُ. قَالَ لَنَا قَدِّمُوا رَجُلًا مِنْكُمْ يُصَلِّي بِكُمْ وَسَأُحَدِّثُكُمْ لِمَ لَا أُصَلِّي بِكُمْ؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ زار قوما فَلَا يؤمهم وليؤمهم رجل مِنْهُم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ إِلَّا أَنَّهُ اقْتَصَرَ عَلَى لَفْظِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم

1120. अबू अतिय्या उकय्ली बयान करते हैं, मालिक बिन हुवैरिस रदियल्लाहु अन्हु हमारी नमाज़ की जगह पर हमारे पास तशरीफ़ लाया करते और बाते किया करते थे, एक रोज़ नमाज़ का वक़्त हो गया अबू अतिय्या ने कहा: हमने उन से दरख्वास्त की के वह आगे बढ़े और नमाज़ पढ़ाए उन्होंने हमें फ़रमाया अपने किसी आदमी को आगे करो वह तुम्हें नमाज़ पढ़ाएगा: “मैं अनकरीब तुम्हें बताऊंगा की मैं तुम्हें नमाज़ क्यों नहीं पढ़ाता, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स किसी कौम के पास जाए तो वह उनकी इमामत न कराए बल्कि उन्हीं में से कोई शख़्स उनकी इमामत कराए”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, अलबत्ता उन्होंने नबी ﷺ के अल्फाज़ तक इकट्ठा किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (596) و الترمذی (356 وقال : حسن صحیح) و النسائی (2 / 80 ح 788)

١١٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: اسْتَخْلَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ابْنَ أُمِّ مَكْتُومٍ يَؤُمُّ النَّاس وَهُوَ أعمى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1121. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इब्ने मक्तूम रदियल्लाहु अन्हु को खलीफा मुकर्रर फ़रमाया वह लोगों की इमामत कराते थे, हालाँकि वह नाबीना थे| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (595) [وله شواهد عند ابن حبان (370) وغيره]

١١٢٢ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَا تُجَاوِزُ صَلَاتُهُمْ آذَانَهُمْ: الْعَبْدُ الْآبِقُ حَتَّى يَرْجِعَ وَامْرَأَةٌ بَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَلَيْهَا سَاخِطٌ وَإِمَامُ قَوْمٍ وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1122. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोगों की नमाज़ उन के कानों से आगे नहीं जाती, मफरुर गुलाम हत्ता कि वह वापस जाए, वह औरत जो इस हाल में रात बसर करे के उस का खाविंद उस पर नाराज़ हो और लोगों का इमाम जबकि वह इसे ना पसंद करते हो”| तिरमिज़ी और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (360)

١١٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ صَلَاتُهُمْ: مَنْ تَقَدَّمَ قَوْمًا وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ وَرَجُلٌ أَتَى الصَّلَاةَ دِبَارًا وَالدِّبَارُ: أَنْ يَأْتِيَهَا بَعْدَ أَنْ تَفُوتَهُ وَرَجُلٌ اعْتَبَدَ مُحَرَّرَةً ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1123. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोगों की नमाज़ कबूल नहीं होती वह इमाम जिसे मुक्तदी ना पसंद करते हो, एक वह शख़्स जो नमाज़ का वक़्त गुज़र जाने के बाद नमाज़ पढ़ता है, और एक वह आदमी जो किसी आज़ाद शख़्स को गुलाम बना ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (593) و ابن ماجه (970) * عبد الرحمن بن زیاد الافریقی ضعیف (تقدم : 239) و عمران المعافری : ضعیف

١١٢٤ - (ضَعِيف) وَعَن سَلامَة بنت الْحر قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يَتَدَافَعَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ لَا يَجِدُونَ إِمَامًا يُصَلِّي بِهِمْ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1124. सुलामाह बिन्ते हुर्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत की एक निशानिया यह भी है के मस्जिद वाले नमाज़ पढ़ाने से जान छुड़ाएंगे वह नमाज़ पढ़ाने के लिए कोई इमाम नहीं पाएँगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (581) و ابن ماجه (982) * ام غراب و عقیلة لا یغرف یعرف حالهما

١١٢٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «الْجِهَادُ وَاجِبٌ عَلَيْكُمْ مَعَ كُلِّ أَمِيرٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ. وَالصَّلَاةُ وَاجِبَةٌ عَلَيْكُمْ خَلْفَ كُلِّ مُسْلِمٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ. وَالصَّلَاةُ وَاجِبَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ بَرًّا كَانَ أَوْ فَاجِرًا وَإِنْ عَمِلَ الْكَبَائِرَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1125. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर अमीर की साथ में जिहाद करना तुम पर फ़र्ज़ है, ख्वाह वह नेक हो या फ़ाजिर अगरचे वह कबिराह गुनाहों का मुर्तकिब हो और हर मुसलमान के पीछे नमाज़ पढ़ना तुम पर वाजिब है ख्वाँ वह नेक हो या फ़ाजिर अगरचे वह कबिराह गुनाहों का

मुर्तकिब हो और हर मुसलमान पर नमाज़ पढ़ना वाजिब है ख्वाँ वह नेक हो या फ़ाजिर अगरचे वह कबिराह गुनाहों का मुर्तकिब हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (594 ، 2533) * مكحول التابعى لم يدرک اباهريرة رضى الله عنه فالسند منقطع

بَاب مَا على الإمَام • इमामत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١١٢٦ - (صَحِيح) عَن عَمْرو بن سَلمَة قَالَ: كُنَّا بِمَاء ممر النَّاس وَكَانَ يَمُرُّ بِنَا الرُّكْبَانُ نَسْأَلُهُمْ مَا لِلنَّاسِ مَا لِلنَّاسِ؟ مَا هَذَا الرَّجُلُ فَيَقُولُونَ يَزْعُمُ أَنَّ الله أرْسلهُ أوحى إِلَيْهِ أَو أوحى الله كَذَا. فَكُنْتُ أَحْفَظُ ذَلِكَ الْكَلَامَ فَكَأَنَّمَا يُغْرَى فِي صَدْرِي وَكَانَتِ الْعَرَبُ تَلَوَّمُ بِإِسْلَامِهِمُ الْفَتْحَ فَيَقُولُونَ اتْرُكُوهُ وَقَوْمَهُ فَإِنَّهُ إِنْ ظَهَرَ عَلَيْهِمْ فَهُوَ نَبِيٌّ صَادِقٌ فَلَمَّا كَانَتْ وَقْعَةُ الْفَتْحِ بَادَرَ كُلُّ قَوْمٍ بِإِسْلَامِهِمْ وَبَدَرَ أَبِي قَوْمِي بِإِسْلَامِهِمْ فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ جِئْتُكُمْ وَاللَّهِ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ حَقًّا فَقَالَ: «صَلُّوا صَلَاةَ كَذَا فِي حِين كَذَا وصلوا صَلَاة كَذَا فِي حِينِ كَذَا فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ فليؤذن أحدكُم وليؤمكم أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا» فَنَظَرُوا فَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَكْثَرَ قُرْآنًا مِنِّي لَمَّا كُنْتُ أَتَلَقَّى مِنَ الرُّكْبَانِ فَقَدَّمُونِي بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَأَنَا ابْنُ سِتٍّ أَوْ سَبْعِ سِنِينَ وَكَانَتْ عَلَيَّ بُرْدَةٌ كُنْتُ إِذَا سَجَدْتُ تَقَلَّصَتْ عَنِّي فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الْحَيِّ ص:٣٥ أَلَا تُغَطُّونَ عَنَّا اسْتَ قَارِئِكُمْ فَاشْتَرَوْا فَقَطَعُوا لِي قَمِيصًا فَمَا فَرِحْتُ بِشَيْءٍ فَرَحِي بِذَلِكَ الْقَمِيص. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1126. अमर बिन सलमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक चश्मे पर रिहाइश पज़ीर थे जो लोगों के लिए आम गुज़र गाह था काफले हमारे पास से गुज़रते तो हम उन से पूछते रहते के अब लोगों का क्या हाल है और इस शख़्स की क्या कैफियत है? तो वह कहते इस शख़्स का ख्याल है के अल्लाह ने इसे रसूल बना कर भेजा है? उसकी तरफ यह यह वही की गई है में उन से यह बाते याद कर लेता गोया वह मेरा दिल में घर कर गई है और अरब इस्लाम कबूल करने के बारे में फतह मक्का के मुन्तज़र थे वह कहते थे इसे और उसकी कौम को इस के हाल पर छोड़ दो अगर वह इन पर ग़ालिब गया तो वह सच्चा नबी है, जब मक्का फतह हुआ तो हर कौम ने इस्लाम कबूल करने में जल्दी की और मेरे वालिद ने भी इस्लाम कबूल करने में अपने कौम से जल्दी की जब वह वापस पहुंचे तो उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मैं सच्चे नबी के पास से तुम्हारे पास आया हो उन्होंने ने फ़रमाया: “ये नमाज़ इस वक़्त पढो और यह नमाज़ इस वक़्त पढो तुम में से कोई एक शख़्स आज़ान कह दे और तुम में से ज़्यादा कुरान पढ़ने वाला तुम्हारी इमामत कराए”, उन्होंने जाइज़ा लिया तो मुझ से ज़्यादा कुरान जानने वाला कोई नहीं था क्योंकि मैं काफलो से सुन कर कुरान का इल्म हासिल कर चूका था उन्होंने मुझे अपना इमाम बना लिया में इस वक़्त छह या सात बरस का था मेरे ऊपर एक चादर ही थी जब में सजदाह करता तो वह सुकड़ जाती (और मेरा सतर खुल जाता यह देख कर) कबिले की एक औरत ने कहा: तुम अपने इमाम का सुरिन हम से क्यों नहीं छुपाते हो उन्होंने (कपड़ा) खरीदा और मेरे लिए कमीज़ बनाई, मैं जितना इस कमीज़ से खुश हुआ इतना किसी और चीज़ से खुश नहीं हुवा| (बुखारी)

رواه البخارى (4302)

١١٢٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ الْمُهَاجِرُونَ الْأَوَّلُونَ الْمَدِينَةَ كَانَ يَؤُمُّهُمْ سَالِمٌ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ وَفِيهِمْ عُمَرُ وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الْأَسد. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1127. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब अव्वल मुहाजरिन मदीना तशरीफ़ लाए तो अबू हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम सालिम उनकी इमामत कराया करते थे, जबकि उमर रदियल्लाहु अन्हु और अबू सलमा बिन अब्दुल असद रदियल्लाहु अन्हु उनमें मौजूद थे| (बुखारी)

رواه البخارى (692)

١١٢٨ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَا تُرْفَعُ لَهُم صلَاتهم فَوق رؤوسهم شِبْرًا: رَجُلٌ أَمَّ قَوْمًا وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ وَامْرَأَةٌ بَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَلَيْهَا سَاخِطٌ وَأَخَوَانِ مُتَصَارِمَانِ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1128. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोग हैं, जिन की नमाज़े उन के सर से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती, वह इमाम जिसके मुक्तदी उस से नाराज़ हो वह औरत जो इस हाल में रात बसर करे के उस का खाविंद उस से नाराज़ हो और बाहम कतअ ताल्लुक कर लेने वाले दो भाई”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (971) [و لبعض الحديث شاهد تقدم : 1122] * عبيدة بن الاسود مدلس و عنعن

इमाम की ज़िम्मेदारी का बयान • بَاب مَا على الإِمَام

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١١٢٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَا صَلَّيْتُ وَرَاءَ إِمَامٍ قَطُّ أَخَفَّ صَلَاةً وَلَا أَتَمَّ صَلَاةً مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِنْ كَانَ لَيَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ فَيُخَفِّفُ مَخَافَةَ أَنْ تُفْتَنَ أمه

1129. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ कि सी बहोत हल्की और बहोत कामिल(सर्वोत्तम) नमाज़ किसी इमाम के पीछे नहीं पढ़ी जब आप किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनते तो इस अंदेशे के पेशे नज़र के उसकी वालिद किसी आज़माइश से दो चार हो जाएगी नमाज़ हल्की कर दिया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (708) و مسلم (190 / 469)، (1054)

١١٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَأَدْخُلُ فِي الصَّلَاةِ وَأَنَا أُرِيدُ إِطَالَتَهَا فَأَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ فَأَتَجَوَّزُ فِي صَلَاتِي مِمَّا أَعْلَمُ مِنْ شِدَّةِ وجد أمه من بكائه» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1130. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं लम्बी नमाज़ पढ़ने के इरादे से नमाज़ शुरू करता हूँ, लेकिन फिर मैं बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूँ तो अपने नमाज़ में तखफिफ कर देता हूँ इसलिए की मैं जानता हूँ कि उस के रोने की वजह से उसकी वालिद ग़मगीन होती है”| (बुखारी)

رواه البخاری (707)

١١٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا صلى أحدكُم النَّاس فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ فِيهِمُ السَّقِيمَ وَالضَّعِيفَ وَالْكَبِيرَ. وَإِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ لِنَفْسِهِ فَلْيُطَوِّلْ مَا شَاءَ»

1131. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो वह तखफिफ करे, क्योंकि उनमें बीमार जईफ और बूढ़े होते हैं और जब तुम में से कोई शख़्स अकेला नमाज़ पढ़े तो फिर जिस क़दर चाहे लम्बी पढ़े”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (703) و مسلم (183 / 467)، (1046)

١١٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو مَسْعُودٍ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي لَأَتَأَخَّرُ عَنْ صَلَاةِ الْغَدَاةِ مِنْ أَجْلِ فُلَانٍ مِمَّا يُطِيلُ بِنَا فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَوْعِظَةٍ أَشَدَّ غَضَبًا مِنْهُ يَوْمَئِذٍ ثُمَّ قَالَ: " إِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِينَ فَأَيُّكُمْ مَا صَلَّى بِالنَّاسِ فَلْيَتَجَوَّزْ: فَإِنَّ فِيهِمُ الضَّعِيفَ وَالْكَبِيرِ وَذَا الْحَاجة "

1132. कैस बिन अबी हाज़िम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया की एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ﷺ अल्लाह की क़सम! मैं फलां शख़्स की वजह से नमाज़ ए फजर देर से पढ़ता हूँ, क्योंकि वह हमें बहोत लम्बी नमाज़ पढ़ाता है, चुनांचे मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को वाज़ नसीहत करते वक़्त इस दिन से ज़्यादा नाराज़ कभी नहीं देखा, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक तुम में कुछ नफरत दिलाने वाले भी है, पस तुम में से जो शख़्स लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो वह इख्तिसार से काम ले क्योंकि उनमें जईफ बूढ़े और हाजत मंद भी होते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (702) و مسلم (182 / 466)، (1044)

١١٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُصَلُّونَ لَكُمْ فَإِنْ أَصَابُوا فَلَكُمْ وَإِنْ أَخْطَئُوا فَلَكُمْ وَعَلَيْهِمْ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»»

1133. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो (इमाम) तुम्हें नमाज़ पढ़ाएंगे

चुनांचे अगर उन्होंने दुरुस्त पढ़ाइ तो तुम्हारे लिए अज़र है और अगर उन्होंने गलती की तो तुम्हारे लिए अज़र है और इन पर गुनाह है| (बुखारी)

رواه البخارى (694)

وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّانِي
यह बाब दूसरी फस्ल से खाली है

बَاب مَا على الإمَام • इमाम की ज़िम्मेदारी का बयान
الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١١٣٤ - (صَحِيح) عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ قَالَ: آخِرُ مَا عَهِدَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَمَمْتَ قَوْمًا فَأَخِفَّ بِهِمُ الصَّلَاةَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «أُمَّ قَوْمَكَ» . قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَجِدُ فِي نَفْسِي شَيْئًا. قَالَ: «ادْنُهْ» . فَأَجْلَسَنِي بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ وَضَعَ كَفَّهُ فِي صَدْرِي بَيْنَ ثَدْيَيَّ ثُمَّ قَالَ: «تَحَوَّلْ» . فَوَضَعَهَا فِي ظَهْرِي بَيْنَ كَتِفَيَّ ثُمَّ قَالَ: «أُمَّ قَوْمَكَ فَمَنْ أَمَّ قَوْمًا فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ فيهم الْكَبِير وَإِن فيهم الْمَرِيض وَإِن فيهم الضَّعِيف وَإِن فهيم ذاالحاجة فَإِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ وَحْدَهُ فَلْيُصَلِّ كَيْفَ شَاءَ»

1134. उस्मान बिन अबिल आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की मुझे आखिरी वसीयत यह थी: “जब तुम लोगों की इमामत करो तो उन्हें हलकी नमाज़ पढ़ाओ”, मुस्लिम, इन्ही से मरवी एक रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अपने कौम की इमामत कराओ”, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं अपने दिल में कुछ वसवसे पाता हूँ आप ﷺ ने फ़रमाया: “करीब हो जाओ”, आप ने मुझे अपने सामने बैठा लिया, फिर आप ने अपना हाथ मेरी छाती पर रख दिया, फिर फ़रमाया: “पहलु बदलो”, फिर आप ﷺ ने अपना हाथ मेरे कंधो के दरमियान मेरी पुश्त पर रखा, फिर फ़रमाया: “अपने कौम की इमामत कराओ जो शख़्स किसी कौम की इमामत कराए तो वह हलकी नमाज़ पढ़ाए, क्योंकि उनमें बूढ़े होते हैं, उनमें मरीज़ होते हैं, उनमें जईफ होते हैं और उनमें कोई हाजत मंद होते हैं जब तुम में से कोई अकेला नमाज़ पढ़े तो फिर जैसे चाहे पढ़े”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (187 / 468) و الرواية الثانية لمسلم (186 / 468)، (1051 و 1050)

١١٣٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُنَا بِالتَّخْفِيفِ وَيَؤُمُّنَا ب (الصافات)»» رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1135. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ हमें हलकी नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया करते थे जबकि आप सूरत अल सफ्फात से हमारी इमामत कराया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (2 / 95 ح 827) [و صححه ابن خزیمة (1606) و ابن حبان (الموارد : 470 ، ولاحسان : 1814)]

بَابُ مَا عَلَى الْمَأْمُومِ مِنَ الْمُتَابَعَةِ وَحُكْمِ الْمَسْبُوق • मुक्तदी के लिए इमाम की पैरवी और मस्बुक के हुक्म का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

١١٣٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي خَلْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» . لَمْ يَحْنِ أَحَدٌ مِنَّا ظَهْرَهُ حَتَّى يَضَعَ النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم جَبهته على الْأَرْض

1136. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ा करते थे, जब आप " समिअल्लाहू लीमन हमीदह" फरमाते, तो हम में से कोई शख़्स अपने कमर न झुकाता हत्ता कि नबी ﷺ अपने पेशानी ज़मीन पर रख देते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (811) و مسلم (197 / 474)، (1062)

١١٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي إِمَامُكُمْ فَلَا تَسْبِقُونِي بِالرُّكُوعِ وَلَا بِالسُّجُودِ وَلَا بِالْقِيَامِ وَلَا بِالِانْصِرَافِ: فَإِنِّي أَرَاكُمْ أَمَامِي وَمن خَلْفِي ". رَوَاهُ مُسلم

1137. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ पढ़ाई, जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो आप ﷺ ने अपना चेहरा मुबारक हमारी तरफ करते हुए फ़रमाया: "लोगो! मैं तुम्हारा इमाम हूँ तुम रुकू व सुजूद कयाम और नमाज़ से फारिग़ होने में मुझ से सबकत न किया करो क्योंकि मैं अपने आगे और पीछे से तुम्हें देखता हूँ"| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (112 / 426)، (961)

١١٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تُبَادِرُوا الْإِمَامَ إِذَا كَبَّرَ فكبروا وَإِذا قَالَ: وَلَا الضَّالّين. فَقُولُوا: آمِينَ وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا قَالَ: سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمد " إِلَّا أَنَّ الْبُخَارِيَّ لَمْ يَذْكُرْ: " وَإِذَا قَالَ: وَلَا الضَّالّين "

1138. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इमाम से सबकत न करो जब वह (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहे तो तुम (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहो जब वह (ولاالضالين) कहे तो तुम आमीन कहो जब रुकू करे तो रुकू करो जब “ समिअल्लाहू लीमन हमीदह” कहे तो तुम “ रब्बना लकल हम्द” कहो”, बुखारी, मुस्लिम, लेकिन इमाम बुखारी ने: “और जब (ولاالضالين) कहे”, का ज़िक्र नहीं किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (796 مختصرًا) و مسلم ((87 / 415)، (932)

١١٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكِبَ فَرَسًا فَصُرِعَ عَنْهُ فَجُحِشَ شِقُّهُ الْأَيْمَنُ فَصَلَّى صَلَاةً مِنَ الصَّلَوَاتِ وَهُوَ قَاعِدٌ فَصَلَّيْنَا وَرَاءَهُ قُعُودًا فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: «إِنَّمَا جُعِلَ الْإِمَامُ لِيُؤْتَمَّ بِهِ فَإِذَا صَلَّى قَائِمًا فصلوا قيَاما فَإِذا رَكَعَ فَارْكَعُوا وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا وَإِذَا قَالَ سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا رَبنَا وَلَك الْحَمد وَإِذا صلى قَائِما فصلوا قيَاما وَإِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا أَجْمَعُونَ»» قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: قَوْلُهُ: «إِذَا صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا» هُوَ فِي مَرَضِهِ الْقَدِيمِ ثُمَّ صَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا وَالنَّاسُ خَلْفَهُ قِيَامٌ لَمْ يَأْمُرْهُمْ بِالْقُعُودِ وَإِنَّمَا يُؤْخَذُ بِالْآخِرِ فَالْآخِرِ مِنْ فِعْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. هَذَا لَفْظُ الْبُخَارِيِّ. وَاتَّفَقَ مُسْلِمٌ إِلَى أَجْمَعُونَ. وَزَادَ فِي رِوَايَةٍ: «فَلَا تختلفوا عَلَيْهِ وَإِذا سجد فاسجدوا»

1139. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ घोड़े पर सवार हुए तो आप उस से गिर गए जिस से आप की दाएँ जानिब खराशे गई तो आप ﷺ ने कोई एक नमाज़ बैठ कर पढ़ाई तो हमने भी आप के पीछे बैठ कर नमाज़ पढ़ी, जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “इमाम इसीलिए बनाया जाता है के उसकी इक्तेदा की जाए, जब वह खड़े हो कर नमाज़ पढ़े तो तुम भी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो, जब रुकू करे तो तुम भी रुकू करो जब वह सर उठाए तो तुम भी सर उठाओ जब वह سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ (समिअल्लाहू लीमन हमीदह) कहे तो तुम ((रब्बना लकल हम्द)) कहो और जब वह बैठ कर नमाज़ पढ़े तो तुम सब बैठ कर नमाज़ पढ़ो”, हुमैदी रहिमहुल्लाह कहते हैं आप ﷺ का यह फरमान आप के मर्ज़ क़दीम के वक़्त का है, फिर उस के बाद नबी ﷺ ने बैठ कर नमाज़ पढ़ाइ तो सहाबा ने आप के पीछे खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी, आप ने उन्हें बैठनेका हुक्म नहीं फरमाया और नबी ﷺ का आखिरी फ़ैल बतौर हुज्जत लिया जाता है| यह सहीह बुखारी के अल्फाज़ हैं और इमाम मुस्लिम ने ((اجمعون)) तक इत्तेफाक किया है और एक रिवायत में इज़ाफा नकल किया है: “उस से इख्तिलाफ न करो और जब वह सजदाह करे तो तुम सजदाह करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (689) و مسلم (77 / 411)، (921) * الحميدى هذا هو عبدالله بن الزبير : شيخ البخارى و فى القول بنسخ هذا الحديث نظر لان الجمع ممكن

١١٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَ بِلَال يوذنه لصَلَاة فَقَال: «مُرُوا أَبَا بَكْرٍ أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ» فَصَلَّى أَبُو بَكْرٍ تِلْكَ الْأَيَّامَ ثُمَّ إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ خِفَّةً فَقَامَ يُهَادَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ وَرِجْلَاهُ يخطان فِي الْأَرْضِ حَتَّى دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمَّا سَمِعَ أَبُو بكر حسه ذهب أخر فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن لَا يتأَخَّر فجَاء حَتَّى يجلس عَن يسَار أبي بكر فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي قَائِمًا وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ يُصَلِّي قَاعِدًا يَقْتَدِي أَبُو بَكْرٍ بِصَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّاسُ مقتدون بِصَلَاة أبي بكر»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: يُسْمِعُ أَبُو بَكْرٍ النَّاسَ التَّكْبِير

1140. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए तो बिलाल रदियल्लाहु अन्हु आप को नमाज़ की इत्तिला करने आए आप ﷺ ने फ़रमाया: "अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म दो की वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए चुनांचे अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उन अय्याम में नमाज़ पढ़ाई, फिर नबी ﷺ ने कुछ अफाका महसूस किया तो आप को दो आदमियों के सहारे लाया गया इस हाल में आप के पाँव ज़मीन पर लग रहे थे, हत्ता कि आप मस्जिद में दाखिल हुए, जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने आप की आमद महसूस की तो वह पीछे हटने लगे, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें इरशाद फ़रमाया के पीछे न हटे, आप तशरीफ़ लाए और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की बाएँ जानिब बैठ गए, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु खड़े हो कर नमाज़ पढ़ा रहे थे जबकि रसूलुल्लाह ﷺ बैठ कर अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ की इक्तेदा कर रहे थे जबकि लोग अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की नमाज़ की इक्तेदा कर रहे थे| बुखारी, मुस्लिम, इन दोनों की एक रिवायत में है अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु लोगों को तकबीर सुनाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (687) و مسلم (90 / 418)، (936)

١١٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَا يَخْشَى الَّذِي يَرْفَعُ رَأْسَهُ قَبْلَ الْإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللَّهُ رَأْسَهُ رَأس حمَار»

1141. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स इमाम से पहले अपना सर उठा लेता है के इस बात से नहीं करता के अल्लाह कहे उस के सर को गधे का सर न बना दे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (691) و مسلم (114 / 427)، (963)

بَابُ مَا عَلَى الْمَأْمُومِ مِنَ الْمُتَابَعَةِ وَحُكْمِ الْمَسْبُوق • मुक्तदी के लिए इमाम की पैरवी और मस्बुक के हुक्म का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١١٤٢ - (صَحِيح) عَنْ عَلِيٍّ وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ الصَّلَاةَ وَالْإِمَامُ عَلَى حَالٍ فَلْيَصْنَعْ كَمَا يَصْنَعُ الْإِمَامُ» . رَوَاهُ ص:٣٥ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1142. अली रदियल्लाहु अन्हु और मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब

तुम में से कोई नमाज़ के लिए आए तो वह जिस हाल में इमाम को पाए तो वह भी इसी हालत में उन के साथ शामिल हो जाए"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (591) * الحجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و للحديث شواهد ضعيفة عند ابی داود (506) وغيره

١١٤٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا جِئْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ وَنَحْنُ سُجُودٌ فَاسْجُدُوا وَلَا تَعُدُّوهُ شَيْئًا وَمَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً فقد أدْرك الصَّلَاة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1143. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम नमाज़ के लिए आओ और हम सजदाह की हालत में हो तो तुम भी सजदाह करो और इसे कुछ भी शुमार न करो जिस ने एक रक्अत पा ली उस ने नमाज़ पा ली"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (893) * فيه يحيی بن ابی سليمان : ضعفه البخاری و الجمهور وله شاهد ضعيف فی السلسلة الصحيحة للبانی (1188)

١١٤٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ صَلَّى لِلَّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا فِي جَمَاعَةٍ يُدْرِكُ التَّكْبِيرَةَ الْأُولَى كُتِبَ لَهُ بَرَاءَتَانِ: بَرَاءَةٌ مِنَ النَّارِ وَبَرَاءَةٌ مِنَ النِّفَاق ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1144. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की खातिर चालीस रोज़ तकबीर औला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़ता है, उस के लिए दो चीजों जहन्नम और निफ़ाक़ से बराअत लिख दी जाती है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (241) * حبيب بن ابی ثابت مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند احمد (3 / 155) و بحشل الواسطی فی تاريخ واسط (ص 65 ، 66) و غيرهما

١١٤٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ وُضُوءَهُ ثُمَّ رَاحَ فَوَجَدَ النَّاسَ قَدْ صَلَّوْا أَعْطَاهُ اللَّهُ مِثْلَ أَجْرِ مَنْ ص:٣٦ صَلَّاهَا وَحَضَرَهَا لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ م أُجُورهم شَيْئا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1145. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू कर के नमाज़ के लिए जाए लेकिन वह लोगों को पाए के वह नमाज़ पढ़ चुके हो तो अल्लाह इसे बा जमाअत नमाज़ पढ़ने वालो की मिस्ल अज़र अता फरमा देता है और उस से उन के अज़र मैं भी कोई कमी वाकेअ नहीं होगी"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (564) و النسائی (2 / 111 ح 856) [و صححه الحاكم (1 / 208 ، 209) و وافقه الذهبی وله شاهد]

١١٤٦ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ وَقَدْ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَلَا رَجُلٌ يَتَصَدَّقُ عَلَى هَذَا فَيُصَلِّيَ مَعَهُ؟» فَقَامَ رَجُلٌ فيصلى مَعَه ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

1146. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी आया जबकि रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ चुके थे आप ने फ़रमाया: “क्या कोई शख़्स उस पर सदका करेगा के वह उस के साथ नमाज़ पढ़े”, एक आदमी खड़ा हुआ तो उस ने उस के साथ बाजमात नमाज़ पढ़ी| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (220 وقال : حديث حسن) و ابوداؤد (574) [و صححه ابن خزيمة (1632) و ابن حبان (436 ، 438) و الحاكم (1 / 209) و وافقه الذهبى] * هذا الحديث دليل صرح على مشروعية تعدد الجماعات فى المسجد برضا الامام و اهل المسجد ، و تويده ادلة أخرى و لم يثبت خلافه و الحمدلله

بَابُ مَا عَلَى الْمَأْمُومِ مِنَ الْمُتَابَعَةِ وَحُكْمِ الْمَسْبُوق — मुक्तदी के लिए इमाम की पैरवी और मस्बुक के हुक्म का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث — तीसरी फस्ल

١١٤٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عبيد الله بن عبد الله بن عتبَة قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَقُلْتُ أَلَا تُحَدِّثِينِي عَنْ مَرَضِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ بَلَى ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «أصلى النَّاس؟» قُلْنَا لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ وَهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ فَقَالَ: «ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ» قَالَتْ فَفَعَلْنَا فَاغْتَسَلَ فَذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ ص:٣٦ فَقَالَ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «أَصَلَّى النَّاسُ؟» قُلْنَا لَا هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ» قَالَتْ فَقَعَدَ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: «أَصَلَّى النَّاسُ؟» قُلْنَا لَا هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: «ضَعُوا لِي مَاءً فِي الْمِخْضَبِ» فَقَعَدَ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ ذَهَبَ لِيَنُوءَ فَأُغْمِيَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: «أَصَلَّى النَّاسُ» . قُلْنَا لَا هُمْ يَنْتَظِرُونَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَالنَّاسُ عُكُوفٌ فِي الْمَسْجِدِ يَنْتَظِرُونَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِصَلَاةِ الْعِشَاءِ الْآخِرَة. فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ بِأَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فَأَتَاهُ الرَّسُولُ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُكَ أَنْ تُصَلِّيَ بِالنَّاسِ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَكَانَ رَجُلًا رَقِيقًا يَا عُمَرُ صَلِّ بِالنَّاسِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ أَنْتَ أَحَقُّ بِذَلِكَ فَصَلَّى أَبُو بَكْرٍ تِلْكَ الْأَيَّامَ ثُمَّ إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وجد من نَفْسِهِ خِفَّةً وَخَرَجَ بَيْنَ رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا الْعَبَّاسُ لِصَلَاةِ الظُّهْرِ وَأَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ فَلَمَّا رَآهُ أَبُو بَكْرٍ ذَهَبَ لِيَتَأَخَّرَ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَنْ لَا يَتَأَخَّرَ قَالَ: «أَجْلِسَانِي إِلَى جَنْبِهِ» فَأَجْلَسَاهُ إِلَى جَنْبِ أَبِي بَكْرٍ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَاعد. قَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ: فَدَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْتُ لَهُ أَلَا أَعْرِضُ عَلَيْكَ مَا حَدَّثَتْنِي بِهِ عَائِشَةُ عَنْ مَرَضِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ هَاتِ فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَدِيثَهَا فَمَا أَنْكَرَ مِنْهُ شَيْئًا غَيْرَ أَنَّهُ قَالَ أَسَمَّتْ لَكَ الرَّجُلَ الَّذِي كَانَ مَعَ الْعَبَّاسِ قلت لَا قَالَ هُوَ عَلِيّ رَضِي الله عَنهُ

1147. अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं, मैं आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया और अर्ज़ किया, क्या आप रसूलुल्लाह ﷺ के मर्ज़ के मुतल्लिक मुझे कुछ बताएंगी, उन्होंने ने फ़रमाया: क्यों नहीं फ़रमाया जब नबी ﷺ बीमार हुए तो आप ने पूछा: “क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं?” हमने अर्ज़ किया: नहीं, अल्लाह के रसूल! जो तो आप का इंतज़ार कर रहे हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे टब में पानी डालो”, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हमने पानी डाल दिया तो आप ने ग़ुस्ल फ़रमाया, आप ने उठने का क़सद किया तो आप पर गशी तारी हो गई, फिर अफाका हुआ तो फ़रमाया: “क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं?” हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के

रसूल! नहीं, वह आप का इंतज़ार कर रहे हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे लिए टब में पानी डालो”, आप ने बैठ कर ग़ुस्ल फ़रमाया फिर उठने का क़सद किया तो आप पर गशी तारी हो गई फिर अफाका हुआ तो फ़रमाया: “क्या लोग नमाज़ पढ़ चुके हैं?“ हमने अर्ज़ किया: नहीं, अल्लाह के रसूल! और लोग मस्जिद में खड़े नमाज़ ए ईशा के लिए नबी ﷺ के मुन्तज़र थे, नबी ﷺ ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की तरफ पैग़ाम भेजा के वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए, कासिद उन के पास आया और उस ने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ आप को हुक्म फरमा रहे हैं की आप लोगों को नमाज़ पढ़ाए, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने जो के रकिके कल्ब थे, फ़रमाया उमर आप नमाज़ पढ़ाए तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया आप उस के ज़्यादा हक़दार है अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उन अय्याम में नमाज़ पढ़ाई, फिर नबी ﷺ ने अपने तबियत में बेहतरी महसूस की तो आप दो आदमियों उनमें से एक अब्बास रदियल्लाहु अन्हु थे के सहारे नमाज़ ए ज़ुहर के लिए तशरीफ़ लाए, जबकि अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ा रहे थे जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने आप को देखा तो वह पीछे हटने लगे, लेकिन नबी ﷺ ने उन्हें पीछे न हटने का इरशाद फ़रमाया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे उन के पहलु में बेठा दो”, उन्होंने आप को अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पहलु में बैठा दिया और नबी ﷺ ने बैठ कर नमाज़ अदा की, उबैदुल्लाह बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के पास गया, तो मैंने उन्हें कहा: क्या मैं तुम्हें वह हदीस बयान करू जो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह ﷺ के मर्ज़ के मुतल्लिक मुझे बयान की है, उन्होंने ने फ़रमाया: बयान करो मैंने इनसे मरवी हदीस उन्हें बयान की तो उन्होंने इस हदीस में से किसी चिज़ का इनकार न किया, अलबत्ता उन्होंने यह पूछा क्या उन्होंने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के साथ दूसरे आदमी के नाम के बारे में तुम्हें बताया था मैंने कहा: नहीं, उन्होंने ने फ़रमाया: वह अली रदियल्लाहु अन्हु थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (687) و مسلم (90 / 418)، (936)

١١٤٨ - (ضَعِيف) وَعَن أبي هُرَيْرَة أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: «مَنْ أَدْرَكَ الرَّكْعَةَ فَقَدْ أَدْرَكَ السَّجْدَةَ وَمَنْ فَاتَتْهُ قِرَاءَةُ أُمِّ الْقُرْآنِ فقد فَاتَهُ خير كثير» . رَوَاهُ مَالك

1148. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिस ने रुकू पा लिया तो उस ने रक्अत पा ली और जिसे सूरह फातिहा न मिली तो वह खैर कसीर से महरूम हो गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (1 / 11 ح 17) * السند منقطع لانه من البلاغات و لقوله :‘‘ و من فاتته ،،، خیر کثیر ‘‘ شواهد عند البخاری و مسلم و غیرهما فهو صحیح

١١٤٩ - (ضَعِيف) وَعنهُ قَالَ: الَّذِي يَرْفَعُ رَأْسَهُ وَيَخْفِضُهُ قَبْلَ الْإِمَامِ فَإِنَّمَا ناصيته بيد الشَّيْطَان ". رَوَاهُ مَالك

1149. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जो शख़्स इमाम से पहले सर उठा लेता है और उस से पहले झुका देता है तो उसकी पेशानी शैतान के हाथ में है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه مالک (1 / 92 ح 205) [و انظر مسند الحمیدی بتحقیقی (995)] * ملیح بن عبدالله السعودی مجهول الحال و ثقه ابن حبان وحده

بَابُ مَنْ صَلَّى صَلَاةً مَرَّتَيْنِ • दो मर्तबा नमाज़ पढ़ने वाले आदमी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١١٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ يُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَأْتِي قومه فيصَلي بهم

1150. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे फिर वह अपने कौम के पास जाते और उन्हें नमाज़ पढ़ाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (700) و مسلم (181 / 465)، (1043)

١١٥١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ مُعَاذٌ يُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِشَاءَ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى قَوْمِهِ فَيُصَلِّي بِهِمُ الْعِشَاءَ وَهِيَ لَهُ نَافِلَةٌ. أخرجه الشَّافِعِي فِي مُسْنده والطَّحَاوِي وَالدَّارَقُطْنِيّ وَالْبَيْهَقِيّ

1151. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुआज़ नबी ﷺ के साथ नमाज़ ए ईशा अदा करते फिर अपने कौम के पास जाते और उन्हें नमाज़ ए ईशा पढ़ाते और यह बाद वाली नमाज़ इन के लिए नफ्ल होती थी| (सहीह)

صحیح ، رواہ الدارقطنی (1 / 274) ح 1062 ، 1063) و البیھقی (3 / 86) و الشافعی فی مسندہ (ص 57 ح 237)

بَابُ مَنْ صَلَّى صَلَاةً مَرَّتَيْنِ • दो मर्तबा नमाज़ पढ़ने वाले आदमी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١١٥٢ - (صَحِيح) عَن يزِيد بن الْأسود قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَجَّتَهُ فَصَلَّيْتُ مَعَهُ صَلَاةَ الصُّبْحِ فِي مَسْجِدِ الْخَيْفِ فَلَمَّا قَضَى صَلَاتَهُ وَانْحَرَفَ فَإِذَا هُوَ بِرَجُلَيْنِ فِي آخِرِ الْقَوْمِ لَمْ يُصَلِّيَا مَعَهُ قَالَ: «عَلَيَّ بِهِمَا» فَجِيءَ بِهِمَا تُرْعَدُ فَرَائِصُهُمَا فَقَالَ: «مَا مَنَعَكُمَا أَنْ تُصَلِّيَا مَعَنَا؟» . فَقَالَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا كُنَّا قَدْ صَلَّيْنَا فِي رِحَالِنَا. قَالَ: «فَلَا تَفْعَلَا إِذَا صَلَّيْتُمَا فِي رِحَالِكُمَا ثُمَّ أَتَيْتُمَا مَسْجِدَ جَمَاعَةٍ ص:٣٦ فَصَلِّيَا مَعَهُمْ فَإِنَّهَا لَكُمَا نَافِلَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيُّ

1152. यज़ीद बिन असवद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ के साथ हज किया, मैंने नमाज़ ए फजर आप के साथ मस्जिद खैफ में अदा की जब आप नमाज़ पढ़ चुके और पीछे मुड़ा तो वहां आख़िर पर दो आदमी बैठे हुए थे, जिन्होंने आप के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें मेरे पास लाओ”, उन्हें लाया गया तो वह घबराहट से काँप रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम दोनों ने हमारे साथ नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी ?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम अपने घरो में नमाज़ पढ़ चुके थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसे न किया करो जब तुम अपने घरो में नमाज़ पढ़ चुको और फिर तुम्हें मस्जिद में जमाअत मिल जाए तो उन के साथ भी

नमाज़ पढ़ लिया करो क्योंकि वह तुम्हारे लिए नफ्ल होगी”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (219 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (575) و النسائی (2 / 112 ، 113 ح 859) [و صححه ابن خزیمة (1279) و ابن حبان (434 ، 435)]

بَابُ مَنْ صَلَّى صَلَاةً مَرَّتَيْنِ • दो मर्तबा नमाज़ पढ़ने वाले आदमी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١١٥٣ - (صَحِيح) وَعَن بسر بن محجن عَن أَبِيه أَنَّهُ كَانَ فِي مَجْلِسٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُذِّنَ بِالصَّلَاةِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى وَرَجَعَ وَمِحْجَنٌ فِي مَجْلِسِهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مَنَعَكَ أَنْ تُصَلِّيَ مَعَ النَّاسِ؟ أَلَسْتَ بِرَجُلٍ مُسْلِمٍ؟» فَقَالَ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَكِنِّي كُنْتُ قَدْ صَلَّيْتُ فِي أَهْلِي فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا جِئْتَ الْمَسْجِدَ وَكُنْتَ قَدْ صَلَّيْتَ فَأُقِيمَتِ الصَّلَاةُ فَصَلِّ مَعَ النَّاسِ وَإِنْ كُنْتَ قَدْ صَلَّيْتَ» . رَوَاهُ مَالك وَالنَّسَائِيّ

1153. बुसर बिन मिह्जन अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: के वह रसूलुल्लाह ﷺ के साथ किसी मजलिस में मौजूद थे, इतने में नमाज़ के लिए इकामत कही गई तो रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हुए और नमाज़ पढ़ कर वापस तशरीफ़ ले आए, जबकि मिह्जन अपने जगह पर ही थे रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे पूछा: “तुमने लोगों के साथ नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी? क्या तुम मुसलमान नहीं हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं? ज़रूर मुसलमान है लेकिन में अपने घर नमाज़ पढ़ चूका था इस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “जब तुम नमाज़ पढ़ने के बाद मस्जिद में आओ और नमाज़ हो रही हो तो तुम जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ो ख्वाह तुम नमाज़ पढ़ रही चुके हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (1 / 132 ح 294) و النسائی (2 / 112 ح 858) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 2398) و الحاکم (1 / 244)]

١١٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ أَسَدِ بْنِ خُزَيْمَةَ أَنَّهُ سَأَلَ أَبَا أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيَّ قَالَ: يُصَلِّي أَحَدُنَا فِي مَنْزِلِهِ الصَّلَاةَ ثُمَّ يَأْتِي الْمَسْجِدَ وَتُقَامُ الصَّلَاةُ فَأُصَلِّي مَعَهُمْ فَأَجِدُ فِي نَفْسِي شَيْئًا من ذَلِك فَقَالَ أَبُو أَيُّوبَ: سَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَذَلِكَ لَهُ سَهْمُ جَمْعٍ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد

1154. असद बिन खुजैमा के कबिले के एक शख़्स से रिवायत है के उन्होंने अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से मसअला दरियाफ्त किया हम में से कोई शख़्स अपने घर में नमाज़ पढ़ कर मस्जिद में आता है और नमाज़ हो रही हो तो क्या मैं उन के साथ नमाज़ पढ़ू? उस पर मेरा दिल मुतमईन नहीं होता, अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने इस बारे में दरियाफ्त किया था तो आप ﷺ ने फ़रमाया: उस के लिए जमाअत का सवाब है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (1 / 133 ح 297) و ابوداؤد (578) * رجل من اسد بن خزیمة : لم اعرفه

١١٥٥ - (صَحِيح) وَعَن يَزِيدَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: جِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ ص:٣٦ فَجَلَسْتُ وَلَمْ أَدْخُلْ مَعَهُمْ فِي الصَّلَاةِ فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم رَآنِي جَالِسا فَقَالَ: «ألم تسلم يَا زيد؟» قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ أَسْلَمْتُ. قَالَ: «وَمَا مَنَعَكَ أَنْ تَدْخُلَ مَعَ النَّاسِ فِي صَلَاتِهِمْ؟» قَالَ: إِنِّي كُنْتُ قَدْ صَلَّيْتُ فِي مَنْزِلِي أَحْسَبُ أَنْ قَدْ صَلَّيْتُمْ. فَقَالَ: «إِذَا جِئْتَ الصَّلَاةَ فَوَجَدْتَ النَّاسَ فَصَلِّ مَعَهُمْ وَإِنْ كُنْتَ قَدْ صَلَّيْتَ تَكُنْ لَكَ نَافِلَةً وَهَذِه مَكْتُوبَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1155. यज़ीद बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप नमाज़ पढ़ रहे हैं, बैठ गया और उन के साथ नमाज़ में शरीक न हुआ जब रसूलुल्लाह ﷺ फारिग़ हुए तो आप ने मुझेबैठे हुए देख कर फ़रमाया: “यज़ीद क्या तुम मुसलमान नहीं ?” मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं अल्लाह के रसूल! मैं तो मुसलमान हो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने जमाअत के साथ नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी ?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैं समझा आप नमाज़ पढ़ चुके होंगे लिहाज़ा मैंने घर में पढ़ ली थी, आप ﷺ ने फ़रमाया ﷺ: “जब तुम नमाज़ के लिए आओ और लोगों को पाओ तो फिर तुम उन के साथ नमाज़ पढ़ो और अगर तुम पढ़ चुके हो तो फिर वह तुम्हारे लिए नफ्ल होगी और यह फ़र्ज़”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (577) * نوح بن صعصعة : مجھول الحال ، لم يو ثقه غیر ابن حبان

١١٥٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَهُ فَقَالَ: إِنِّي أَصَلِّي فِي بَيْتِي ثُمَّ أُدْرِكُ الصَّلَاةَ فِي الْمَسْجِدِ مَعَ الْإِمَامِ أَفَأُصَلِّي مَعَهُ؟ قَالَ لَهُ: نَعَمْ قَالَ الرجل: أَيَّتهمَا أجعَل صَلَاتي؟ قَالَ عُمَرَ: وَذَلِكَ إِلَيْكَ؟ إِنَّمَا ذَلِكَ إِلَى اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ يَجْعَلُ أَيَّتَهُمَا شَاءَ. رَوَاهُ مَالِكٌ

1156. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के किसी आदमी ने उन से दरियाफ्त किया, उस ने कहा: में घर में नमाज़ पढ़ लु और फिर मस्जिद में बा जमाअत नमाज़ पा लु तो फिर क्या मैं जमाअत के साथ शरीक हो जाऊं, उन्होंने इसे बताया वहां इस आदमी ने कहा: में उनमें से किसी को अपने फ़र्ज़ नमाज़ करार दू, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: क्या तुझे उस का इख़्तियार है? उस का इख़्तियार तो अल्लाह अज्ज़वजल को हासिल है के वह उनमें से जिसे चाहे फ़र्ज़ बनाए| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالك (1 / 133 ح 295)

١١٥٧ - (حسن) وَعَنْ سُلَيْمَانَ مَوْلَى مَيْمُونَةَ قَالَ: أَتَيْنَا ابْنَ عُمَرَ عَلَى الْبَلَاطِ وَهُمْ يُصَلُّونَ. فَقُلْتُ: أَلَا تُصَلِّي مَعَهُمْ؟ فَقَالَ: قَدْ صَلَّيْتُ وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُول الله يَقُولُ: «لَا تُصَلُّوا صَلَاةً فِي يَوْمٍ مَرَّتَيْنِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1157. मय्मुना रदियल्लाहु अन्हा के आज़ाद करदा गुलाम सुलेमान बयान करते हैं, हम मक़ाम बिला पर इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आए तो वह लोग नमाज़ पढ़ रहे थे मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से पूछा

क्या आप उन के साथ नमाज़ नहीं पढ़ते उन्होंने ने फ़रमाया: में पढ़ चूका हूँ और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "एक नमाज़ को एक ही दिन में दो मर्तबा न पढ़ो"| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ احمد (2 / 19) و ابوداؤد (579) و النسائی (2 / 114 ح 861) [و صححه ابن خزيمة (1641) و ابن حبان (432)]

١١٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ يَقُولُ: مَنْ صَلَّى الْمَغْرِبَ أَوِ الصُّبْحَ ثُمَّ أَدْرَكَهُمَا مَعَ الْإِمَامِ فَلَا يَعُدْ لَهما. رَوَاهُ مَالك

1158. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे जो शख़्स नमाज़ ए मग़रिब, नमाज़ ए फजर पढ़ ले फिर वह उन्हें इमाम के साथ पा ले तो वह उन्हें दोबारा न पढ़े| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ مالک (1 / 133 ح 298)

بَاب السّنَن وفضائلها • सुन्नतैं और इसकी फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١١٥٩ - (صَحِيح) عَن أمِّ حَبِيبَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ صَلَّى فِي يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ: أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمغرب وَرَكْعَتَيْنِ بعد الْعشَاء وَرَكْعَتَيْنِ قبل صَلَاة الْفَجْرِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي لِلَّهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا غَيْرَ فَرِيضَةٍ إِلَّا بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي لاجنة أَوْ إِلَّا بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ»

1159. उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स दिन और रात में फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा बारह रकते पढ़ता है तो उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है, ज़ुहर से पहले चार और उस के बाद दो रकते, मग़रिब के बाद दो रकअत, ईशा के बाद दो और नमाज़ ए फजर से पहले दो रकते", तिरमिज़ी और मुस्लिम की रिवायत में है की उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो मुसलमान आदमी हर रोज़ फ़राइज़ के अलावा अल्लाह की रज़ा की खातिर बारह रकते नफ्ल अदा करता है तो अल्लाह उस के लिए जन्नत में एक घर बना देता है या उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

صحیح ، رواہ الترمذی (415 وقال : حسن صحیح) و مسلم (103 / 728)، (1696) * مؤمل بن اسماعیل : حسن الحدیث کما حققته فی جزء حاص و لم یثبت فیه الجرح المنسوب الی البخاری و الحمدللہ

١١٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ فِي بَيْتِهِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ فِي بَيْتِهِ قَالَ: وَحَدَّثَتْنِي حَفْصَةُ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ حِينَ يَطْلُعُ الْفَجْرُ "

1160. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जोहर से पहले दो रकाते पढ़ी और दो इस के बाद, मगरिब के बाद दो रकात आपके घर में पढ़ी और दो रकाते इशा के बाद आपके घर में पढ़ी और उन्होंने बयान किया की हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा (जो कि आपकी बहन थी) ने मुझे हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ फजर तुलुअ हो जाने पर हल्की सी दो रकाते पढ़ा करते थे | (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1180 ، 1181) و مسلم (104 / 729)، (1698)

١١٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُصَلِّي بَعْدَ الْجُمُعَةِ حَتَّى يَنْصَرِفَ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ فِي بَيته

1161. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ जुम्मा के बाद घर पे तशरीफ ले जाकर दो रकात पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (937) و مسلم (407 / 729)، (2039)

١١٦٢ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن شَقِيق قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ تَطَوُّعِهِ فَقَالَتْ: كَانَ يُصَلِّي فِي بَيْتِي قَبْلَ الظُّهْرِ أَرْبَعًا ثُمَّ يَخْرُجُ فَيُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ يَدْخُلُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ يُصَلِّي بِالنَّاسِ الْمَغْرِبَ ثُمَّ يَدْخُلُ فيصَلي رَكْعَتَيْنِ وَيُصلي بِالنَّاسِ الْعِشَاءَ وَيَدْخُلُ بَيْتِي فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ تِسْعَ رَكَعَاتٍ فِيهِنَّ الْوَتْرُ وَكَانَ يُصَلِّي لَيْلًا طَوِيلًا قَائِمًا وَلَيْلًا طَوِيلًا قَاعِدا وَكَانَ إِذَا قَرَأَ وَهُوَ قَائِمٌ رَكَعَ وَسَجَدَ وَهُوَ قَائِم وَإِذا قَرَأَ قَاعِدًا رَكَعَ وَسَجَدَ وَهُوَ قَاعِدٌ وَكَانَ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ: ثُمَّ يَخْرُجُ فَيُصَلِّي بِالنَّاسِ صَلَاة الْفجْر

1162. अब्दुल्ला बिन शकीक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की नफ्ल नमाज के मुताल्लीक आइशा रदियल्लाहु अन्हा से पूछा तो उन्होंने फरमाया, आप ﷺ जोहर से पहले चार रकाते मेरे घर में पढ़ते थे, फिर नमाजे मगरिब पढ़ाते, फिर घर तशरीफ़ ला कर दो रकाते पढ़ते, फिर नमाजे ईशा पढ़ाते और मेरे घर तशरीफ ला कर दो रकाते पढ़ते, आप वित्र समेत नौ रकाते नमाज़े तहज्जुद पढ़ा करते थे, आप रात देर तक खड़े होकर नमाज पढ़ते और देर तक बैठ कर नमाज पढ़ते, जब आप खड़े होकर को किरात करते तो रुकू और सुजूद भी खड़े होकर करते, जब आप बैठ कर किरात करते तो रुकू और सुजूद भी बैठ कर ही करते और जब फजर तुलुअ हो जाती तो आप ﷺ दो रकाते पढ़ते | मुस्लिम और इमाम अबू दावूद ने यह इजाफ़ा नकल किया है फिर आप ﷺ नमाज़े फ़ज़र पढ़ाने के लिए तसरीफ़ ले जाते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 730) و ابوداؤد (1251)، (1699)

١١٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ أَشَدَّ تَعَاهُدًا مِنْهُ على رَكْعَتي الْفجْر

1163. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं नबी ﷺ नवाफिल में से फजर की दो रकातों का बड़ा खयाल रखते थे| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1169) و مسلم (94 / 724)، (1686)

١١٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَكْعَتَا الْفَجْرِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا» . رَوَاهُ مُسلم

1164. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फजर की दो रकात है दुनिया और जो कुछ दुनिया में है उससे बेहतर है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (96 / 725)، (1688)

١١٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «صلوا قبل صَلَاة الْمغرب رَكْعَتَيْنِ صَلُّوا قَبْلَ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ رَكْعَتَيْنِ» . قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: «لِمَنْ شَاءَ» . كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سنة

1165. अब्दुल्ला बिन मगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया, नमाज़े मगरिब से पहले दो रकाते पढ़ो, नमाज़े मगरिब से पहले दो रकाते पढ़ो, तीसरी मर्तबा इस अंदेशे के पेशेनज़र की लोग इसे सुन्नत ना बना ले फ़रमाया जो कोई चाहे (पढ़े) | (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1183) و مسلم (304 / 838)، (1940)

١١٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مُصَلِّيًا بَعْدَ الْجُمُعَةِ فَلْيُصَلِّ أَرْبَعًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي أُخْرَى لَهُ قَالَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمُ الْجُمُعَةَ فَلْيُصَلِّ بَعْدَهَا أَرْبعا»

1166. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से जो शख़्स जुमा के बाद नमाज़ पढ़ना चाहे तो वह चार रक्अत पढ़े”, मुस्लिम और इन्ही की दूसरी रिवायत में है: “जब तुम में से कोई जुमा पढ़े तो वह उस के बाद चार रकते पढ़े| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 881)، (2038)

सुन्नतें और इसकी फ़ज़ीलत का बयान • بَاب السّنَن وفضائلها

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١١٦٧ - (صَحِيح) عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ حَافَظَ عَلَى أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَأَرْبَعٍ بَعْدَهَا حَرَّمَهُ اللَّهُ عَلَى النَّارِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجه

1167. उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना जो शख़्स जोहर से पहले चार रकाते पढ़े और उसके बाद चार रकात पढ़ने पर तसलसुल (निरंतरता) इख़्तियार करता है तो अल्लाह इसे जहन्नम पर हराम करार कर देता है| (सहीह,हसन)

صحیح ، رواہ احمد (6 / 326 ح 27308) و الترمذی (427 وقال : حسن غریب)و ابوداؤد (1269) و النسائی (3 / 265 ح 1815) و ابن ماجہ (1160)

١١٦٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَرْبَعٌ قَبْلَ الظُّهْرِ لَيْسَ فِيهِنَّ تَسْلِيمٌ تُفَتَّحُ لَهُنَّ أَبْوَابُ السَّمَاءِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1168. अब्बू अय्युब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया ज़ोहर से पहले चार रकातो के लिए जिन में सलाम न फेरा गया हो आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1270) و ابن ماجہ (1157) * عبیدۃ بن معتب : ضعیف کما قال ابوداؤد و غیرہ و للحدیث شواھد ضعیفۃ

١١٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ السَّائِبِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يُصَلِّي أَرْبَعًا بَعْدَ أَنْ تَزُولَ الشَّمْسُ قَبْلَ الظُّهْرِ وَقَالَ: «إِنَّهَا سَاعَةٌ تُفْتَحُ فِيهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ فَأُحِبُّ أَنْ يَصْعَدَ لِي فِيهَا عَمَلٌ صَالِحٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1169. अब्दुल्ला बिन साईब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलल्लाह ﷺ जवाल ए आफताब के बाद नमाजे जोहर से पहले चार रकाते पढ़ा करते थे और आप ﷺ ने फरमाया यह वह घड़ी है जब आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं लिहाज़ा में पसंद करता हूं कि इस वक्त मेरे कोई अमल सारे ऊपर जाए| (सहीह,हसन)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (478 وقال : حسن غریب) [و النسائی فی الکبریٰ : 331]

١١٧٠ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَحِمَ اللَّهُ امْرَءًا صَلَّى قَبْلَ الْعَصْرِ أَرْبَعًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ

1170. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया अल्लाह असर से पहले चार

रकात पढ़ने वाले शख़्स पर रहम फरमाए| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 117 ح 5980) و الترمذی (430 وقال : حسن غریب) [و ابوداؤد (1271) و صححه ابن خزيمة (1193) و ابن حبان (616)]

١١٧١ - (حَسَنٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي ص:٣٦ قَبْلَ الْعَصْرِ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ يَفْصِلُ بَيْنَهُنَّ بِالتَّسْلِيمِ عَلَى الْمَلَائِكَةِ الْمُقَرَّبِينَ وَمَنْ تَبِعَهُمْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُؤْمِنِينَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1171. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलल्लाह ﷺ ने सबसे पहले चार रकाते पढ़ा करते थे मुकर्रम फरिश्तों और इनकी इत्तेबा करने वाले मुसलमानों और मोमिनों पर सलाम भेज कर फर्क किया करते थे| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (429 وقال : حسن) [و ابن ماجه (1161)]

١١٧٢ - (حَسَنٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي قبل الْعَصْر رَكْعَتَيْنِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1172. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ असर से पहले दो रकते पढ़ा करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1272)

١١٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى بَعْدَ الْمَغْرِبِ سِتَّ رَكَعَاتٍ لَمْ يَتَكَلَّمْ فِيمَا بَيْنَهُنَّ بِسُوءٍ عُدِلْنَ لَهُ بِعِبَادَةِ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عمر بن أَبِي خَثْعَمٍ وَسَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ يَقُولُ: هُوَ مُنكر الحَدِيث وَضَعفه جدا

1173. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते थे रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मग़रिब के बाद छे रकते पढ़े और वह उन के दरमियान कोई बुरी बात न करे तो उस के लिए बारह साल की इबादत के बराबर सवाब लिख दिया जाता है”| तिरमिज़ी, उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है, हम इसे सिर्फ उमर बिन अबी खसअम से मरवी हदीस के हवाले से जानते हैं जबकि मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल इमाम बुखारी (रह) को फरमाते हुए सुना वह मुनकर हदीस है और उन्होंने इसे बहोत ज़्यादा जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه الترمذی (435) [و ابن ماجه (1167 ، 1374) و عمر بن ابی خثعم : منکر الحدیث]

١١٧٤ - (مَوْضُوع) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى بَعْدَ الْمَغْرِبِ عِشْرِينَ رَكْعَةً بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1174. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मग़रिब के बाद बीस रकते पढ़ता है तो अल्लाह उस के लिए जन्नत में घर बना देता है | (ज़ईफ़)

اسناده موضوع ، رواه الترمذی (435) معلقًا و اشار الی ضعفة[و ابن ماجه (1373) * فيه يعقوب بن الوليد : وكان من الكذابين الكبار

١١٧٥ - (ضَعِيف) وَعَنْهَا قَالَتْ: مَا صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِشَاءَ قَطُّ فَدَخَلَ عَلَيَّ إِلَّا صلى أَربع رَكْعَات أَو سِتّ رَكْعَات. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1175. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब भी ईशा पढ़ कर मेरे पास तशरीफ़ लाते तो आप चार या छे रक्अत नमाज़ नफ्ल अदा करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1303) * فيه مقاتل بن بشير : مجهول الحال و ثقه ابن حبان وحده

١١٧٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إدبار النُّجُوم الركعتان قبل الْفجْر وأدبار السُّجُود الركعتان بعد الْمغرب» . ص:٣٦ رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1176. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सितारों के डूबने के बाद से मुराद फज्र से पहले की दो रकते और सजदो के बाद से मग़रिब के बाद दो रकते है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3275 وقال : غريب) * فيه رشدين بن كريب : ضعيف

सुन्नतें और इसकी फ़ज़ीलत का बयान • بَاب السّنَن وفضائلها

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١١٧٧ - (ضَعِيف) عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: " أَرْبَعُ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ بَعْدَ الزَّوَالِ تُحْسَبُ بِمِثْلِهِنَّ فِي صَلَاةِ السَّحَرِ. وَمَا مِنْ شَيْءٍ إِلَّا وَهُوَ يُسَبِّحُ اللَّهَ تِلْكَ السَّاعَةَ ثُمَّ قَرَأَ: (يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لَهُ وهم داخرون)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

1177. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ज़वाल ए आफ़ताब के बाद ज़ुहर से पहले चार रक्अतो का सवाब नमाज़ ए तहज्जुद की चार रक्अतो के सवाब के बराबर है? इस वक़्त हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती हैं”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “उन के साए दाएँ से और बाएँ से लौटते रहते है अल्लाह के सामने झुकते और आजिज़ी का इज़हार करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3128 وقال : غريب لا نعرفه الا من حديث على بن عاصم) و البيهقى فى شعب الايمان (3073) * على بن عاصم و يحيى البكاء ضعيفان

١١٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ عِنْدِي قطّ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ قَالَتْ: وَالَّذِي ذَهَبَ بِهِ مَا تَركهمَا حَتَّى لَقِي الله

1178. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने असर के बाद दो रकते मेरे वहां कभी तर्क नहीं की बुखारी, मुस्लिम, और सहीह बुखारी की रिवायत में है उन्होंने ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप ﷺ को वफ़ात दी आप ने जिंदगी भर यह दो रकते नहीं छोड़ी|) | (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (591 ، 590) و مسلم (299 / 835)، (1935)

١١٧٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُخْتَارِ بْنِ فُلْفُلٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ التَّطَوُّعِ بَعْدَ الْعَصْرِ فَقَالَ: كَانَ عُمَرُ يَضْرِبُ الْأَيْدِيَ عَلَى صَلَاةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ وَكُنَّا نُصَلِّي عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ غُرُوبِ الشَّمْس قبل صَلَاةِ الْمَغْرِبِ فَقُلْتُ لَهُ: أَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيهِمَا؟ قَالَ: كَانَ يَرَانَا نُصَلِّيهِمَا فَلَمْ يَأْمُرْنَا وَلَمْ يَنْهَنَا. رَوَاهُ مُسلم

1179. मुख़्तार बिन फुल्फुली रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से नमाज़ ए असर के बाद नफ्ल नमाज़ पढ़ने के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: उमर रदियल्लाहु अन्हु नमाज़ ए असर के बाद नफ्ल नमाज़ पढ़ने पर हाथो पर मारा करते थे और हम रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में गुरूब ए आफ़ताब के बाद नमाज़ ए मग़रिब से पहले दो रकते पढ़ा करते थे, रावी कहते हैं मैंने उन से पूछा रसूलुल्लाह ﷺ उन्हें पढ़ा करते थे, आप ﷺ हमें उन्हें पढ़ते देखा करते थे, लेकिन आप ने हमें हुक्म फ़रमाया न मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (302 / 836)، (1938)

١١٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا بِالْمَدِينَةِ فَإِذَا أَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ لِصَلَاةِ الْمَغْرِبِ ابْتَدَرُوا السَّوَارِيَ فَرَكَعُوا رَكْعَتَيْنِ حَتَّى إِنَّ الرَّجُلَ الْغَرِيبَ لَيَدْخُلُ الْمَسْجِدَ فَيَحْسَبُ أَنَّ الصَّلَاةَ قَدْ صُلِّيَتْ مِنْ كَثْرَةِ مَنْ يُصَلِّيهمَا. رَوَاهُ مُسلم

1180. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम मदीना में थे जब मुअज़्ज़िन नमाज़ ए मग़रिब के लिए आज़ान कहता तो सहाबा सुतून की तरफ दौड़ते और दो रकते पढ़ते हत्ता कि कोई अजनबी शख़्स मस्जिद में आता तो वह उन रक्अतो को पढ़ने वालो की कसरत देख कर समझता के नमाज़ हो चुकी है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (303 / 837)، (1939)

١١٨١ - (صَحِيح) وَعَن مرْثَد بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَتَيْتُ عُقْبَةَ الْجُهَنِيَّ فَقُلْتُ: أَلَا أُعَجِّبُكَ مِنْ أَبِي تَمِيمٍ يَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ؟ فَقَالَ عُقْبَةُ: إِنَّا كُنَّا نَفْعَلُهُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قُلْتُ: فَمَا يَمْنَعُكَ الْآنَ؟ قَالَ: الشّغل. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1181. मर्सडी बिन अब्दुल्लाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं उक्बा जुह्नी रदियल्लाहु अन्हु के पास आया तो मैंने कहा: क्या बनू तमीम के मुतल्लिक में तुम्हें ताज्जुब अंगेज़ बात बताऊँ? के वह नमाज़ ए मग़रिब से पहले दो रकते पढ़ते है तो उक्बा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हम भी रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में इन पर अमल पैरा थे मैंने कहा: अब तुम्हें कौन सी चीज़ मानेअ है? उन्होंने ने फ़रमाया: मशगुलियत | (बुखारी)

رواه البخارى 1184)

١١٨٢ - (ضَعِيف) وَعَن كَعْب بن عجْرَة قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى مَسْجِدَ بَنِي عَبْدِ الْأَشْهَلِ فَصَلَّى فِيهِ الْمَغْرِبَ فَلَمَّا قَضَوْا صَلَاتَهُمْ رَآهُمْ يُسَبِّحُونَ بَعْدَهَا فَقَالَ: «هَذِهِ صَلَاةُ الْبُيُوتِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ وَالنَّسَائِيِّ قَامَ نَاسٌ يَتَنَفَّلُونَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بِهَذِهِ الصَّلَاة فِي الْبيُوت»

1182. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ बनू अब्दुलशम्स कबिले की मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो आप ने वहां नमाज़ ए मग़रिब अदा की, जब वह नमाज़ पढ़ चुके तो आप ﷺ ने उस के बाद उन्हें नवाफिल पढ़ते हुए देखा तो फ़रमाया: “ये घरो में पढ़ी जाने वाली नमाज़ है”| अबू दावुद, तिरमिज़ी और नसई की रिवायत में है लोग खड़े हो कर नफ्ल पढ़ने लगे, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम यह नमाज़ घरो में पढ़ा करो | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1300) و الترمذى (604 وقال : غريب) و النسائى (3 / 198 ، 199 ح 1601) [و ابن خزيمة : 1201] * اسحاق بن كعب بن عجرة : حسن الحديث على الراجح

١١٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُطِيلُ الْقِرَاءَةَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ حَتَّى يَتَفَرَّقَ أَهْلُ الْمَسْجِدِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1183. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मग़रिब के बाद दो रक्अतो में किराअत लम्बी किया करते थे हत्ता कि नमाज़ी चले जाते| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1301) * جعفر بن ابى المغيرة عن سعيد بن جبير : حسن له الترمذى

١١٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ مَكْحُولٍ يَبْلُغُ بِهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ صَلَّى بَعْدَ الْمَغْرِبِ قَبْلَ أَنْ يَتَكَلَّمَ رَكْعَتَيْنِ وَفِي رِوَايَةٍ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ رُفِعَتْ صَلَاتُهُ فِي عِلِّيِّينَ» . مُرْسلا

1184. मकहुल उसे रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मग़रिब के बाद कलाम करने से पहले दो रकते पढ़ता है”| और एक दूसरी रिवायत में है: “चार रकते पढ़ता है, तो उसकी नमाज़ अलिय्यीन में बुलंद की जाती है”| यह रिवायत मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) و انظر الترغيب و الترهيب للمنذرى (1 / 405) [و قيام الليل للمروزى ص 69] * السند منقطع

١١٨٥ - (ضَعِيف) وَعَن حُذَيْفَة نَحْوَهُ وَزَادَ فَكَانَ يَقُولُ: «عَجِّلُوا الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ فَإِنَّهُمَا تُرْفَعَانِ مَعَ الْمَكْتُوبَةِ» رَوَاهُمَا رَزِينٌ وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ الزِّيَادَةَ عَنْهُ نَحْوَهَا فِي شُعَبِ الْإِيمَان

1185. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से भी इसी तरह मरवी है, उन्होंने इज़ाफा नकल किया है आप ﷺ फ़रमाया करते थे: “मग़रिब के बाद दो रकते पढ़ने में जल्दी किया करो, क्योंकि वह फ़र्ज़ नमाज़ के साथ बुलंद की जाती है”, यह दोनों रिवायतों रजिन ने रिवायत की हैं, बयहकी ने हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी इज़ाफ़ी (ज़्यादा) अल्फाज़ शौबुल ईमान में इसी तरह रिवायत किए है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه رزين (لم اجده) و البيهقى فى شعب الايمان (3068) [و المروزى فى قيام الليل (ص 69) وقال : هذا حديث ليس بثابت] * زيد العمى : ضعيف و شيخ بقية : مجهول ، و طريق البيهقى فيه عبد الرحيم بن زيد العمى كذاب

١١٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ عَطَاءٍ قَالَ: إِنَّ نَافِعَ بْنَ جُبَيْرٍ أَرْسَلَهُ إِلَى السَّائِبِ يَسْأَلُهُ عَنْ شَيْءٍ رَآهُ مِنْهُ مُعَاوِيَةُ فِي الصَّلَاةِ فَقَالَ: نَعَمْ صَلَّيْتُ مَعَهُ الْجُمُعَةَ فِي الْمَقْصُورَةِ فَلَمَّا سَلَّمَ الْإِمَامُ قُمْتُ فِي مَقَامِي فَصَلَّيْتُ فَلَمَّا دَخَلَ أَرْسَلَ إِلَيَّ فَقَالَ: لَا تَعُدْ لِمَا فَعَلْتَ إِذَا صَلَّيْتَ الْجُمُعَةَ فَلَا تَصِلْهَا بِصَلَاةٍ حَتَّى تكلم أوتخرج فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَنَا بِذَلِكَ أَنْ لَا نُوصِلَ بِصَلَاةٍ حَتَّى نتكلم أَو نخرج. رَوَاهُ مُسلم

1186. अमर बिन अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, के नाफेअ बिन ज़ुबैर ने उन्हें साइब के पास भेजा ताकि वह उन से इस चीज़ के मुतल्लिक पूछे, जो मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने उन से दौरान ए नमाज़ देखी, साइब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हां, मैंने मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के साथ मक्सुरह हक्काम के लिए खास कमरे में नमाज़ ए जुमा अदा की, जब इमाम ने सलाम फेरा तो मैंने अपनी इसी जगह खड़े हो कर नमाज़ शुरू कर दी, जब वह अपने घर तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने मेरी तरफ पैग़ाम भेजते हुए फ़रमाया आइन्दा ऐसे न करना, तुमने ऐसे क्यों किया? जब तुम नमाज़ ए जुमा पढ़ लो तो फिर तुम कलाम कर लेने या वहां से चले जाने तक कोई नमाज़ न पढ़ो, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया था के हम फ़र्ज़ नमाज़ के साथ कोई नफ्ल न मिलाए हत्ता कि हम बात चित कर ले या वहां से कहीं और चले जाए | (मुस्लिम)

رواه مسلم (73 / 883)، (2042)

١١٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَطَاءٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا صَلَّى الْجُمُعَةَ بِمَكَّةَ تَقَدَّمَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ يَتَقَدَّمُ فَيُصَلِّي أَرْبَعًا وَإِذَا كَانَ بِالْمَدِينَةِ صَلَّى الْجُمُعَةَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى بَيْتِهِ ص:٣٧ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَلَمْ يُصَلِّ فِي الْمَسْجِدِ فَقِيلَ لَهُ. فَقَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَله)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ قَالَ: (رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ صَلَّى بَعْدَ الْجُمُعَةِ رَكْعَتَيْنِ ثمَّ صلى بعد ذَلِك أَرْبعا)

1187. अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा मक्का में नमाज़ ए जुमा अदा फरमाते, तो थोड़ा आगे बढ़कर दो रकते पढ़ते, फिर आगे बढ़कर चार रकते पढ़ते और जब मदीना में होते तो जुमा पढ़ कर अपने घर तशरीफ़ ले जाते और दो रकते पढ़ते और मस्जिद में न पढ़ते, जब उन से पूछा गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ऐसे ही किया करते थे| अबू दावुद, और तिरमिज़ी की एक रिवायत में है

उन्होंने बयान किया मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को देखा के उन्होंने जुमा के बाद दो रकते पढ़ाइ, फिर उस के बाद चार रकते पढ़ाइ | (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1130) و الترمذی (522 وقال : حسن صحيح) [و صححه ابن الملقن فی تحفة المحتاج (430)]

بَاب صَلَاة اللَّيْل • तहज्जुद की नमाज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١١٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِيمَا بَين أَن يفرغ من صَلَاة الْعشَاء إِلَى الْفَجْرِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً يُسَلِّمُ مِنْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ وَيُوتِرُ بِوَاحِدَةٍ فَيَسْجُدُ السَّجْدَةَ مِنْ ذَلِكَ قَدْرَ مَا يَقْرَأُ أَحَدُكُمْ خَمْسِينَ آيَةً قَبْلَ أَنْ يَرْفَعَ رَأْسَهُ فَإِذَا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُ مِنْ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَتَبَيَّنَ لَهُ الْفَجْرُ قَامَ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمَنِ حَتَّى يَأْتِيهِ الْمُؤَذّن للإقامة فَيخرج

1188. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ईशा से फारिग़ हो कर तुलुअ ए फज्र तक ग्यारह रकते पढ़ा करते थे, आप हर दो रक्अत के बाद सलाम फिराते थे और एक रक्अत वित्र पढ़ते थे, आप उस में इतना लम्बा सजदाह फरमाते के आप के सर उठाने से पहले कोई शख़्स पचास आयात की तिलावत कर लेता, जब मुअज़्ज़िन नमाज़ ए फजर की आज़ान से फारिग़ हो जाता और फज्र वाज़ेह हो जाती तो आप हलकी सी दो रकते पढ़ते और फिर दाएँ पहलु पर लेट जाते हत्ता कि मुअज़्ज़िन हाज़िर ए खिदमत हो कर इकामत के लिए दरख्वास्त करते तो आप ﷺ नमाज़ पढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले जाते| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (994) و مسلم (122 / 736)، (1718)

١١٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ فَإِنْ كُنْتُ مستيقظة حَدثنِي وَإِلَّا اضْطجع. رَوَاهُ مُسلم

1189. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ फजर की दो रकते पढ़ लेते तो अगर में बेदार होती तो आप मुझ से बात वगैरा कर लेते वरना लेट जाते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (123 / 743)، (1732) و البخاری (1161)

١١٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ اضْطَجَعَ عَلَى شقِّه الْأَيْمن "

1190. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ फजर की दो रकते पढ़ लेते तो आप अपने दाएँ

पहलु पर लेट जाते थे| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (626 ، 1160) [مسلم : 122 / 736، (1718)]

١١٩١ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً مِنْهَا الْوتر وركعتا الْفجْر. رَوَاهُ مُسلم

1191. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ रात को वित्र और फज्र की दो रक्अतो समेत तेरह रक्अत नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (128 / 738)، (1727) و البخارى (1140)

١١٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنْ صَلَاةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ ص:٣٧ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّيْلِ. فَقَالَت: سبع وتسع وَإِحْدَى عشر رَكْعَة سوى رَكْعَتي الْفجْر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1192. मसरुक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रसूलुल्लाह ﷺ की रात की नमाज़ के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: फजर की दो रक्अतो के अलावा सात, नौ और ग्यारह रक्अत थी | (बुखारी)

رواه البخارى (1139)

١١٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ لِيُصَلِّيَ افْتتح صلَاته بِرَكْعَتَيْنِ خفيفتين. رَوَاهُ مُسلم

1193. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ नमाज़ ए तहज्जुद के लिए रात को खड़े होते तो आप दो हल्की रक्अतो से अपने नमाज़ का इफ्तेताह किया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (197 / 767)، (1806)

١١٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا قَامَ أَحَدُكُمْ مِنَ اللَّيْلِ فَلْيَفْتَحِ الصَّلَاة بِرَكْعَتَيْنِ خفيفتين. رَوَاهُ مُسلم

1194. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई रात को कयाम करे तो दो हल्की रक्अतो से आगाज़ करे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (198 / 768)، (1807)

١١٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: بِتُّ عِنْدَ خَالَتِي مَيْمُونَةَ لَيْلَةً وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَهَا فَتَحَدَّثَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَ أَهْلِهِ سَاعَةً ثُمَّ رَقَدَ فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ أَوْ بَعْضُهُ قَعَدَ فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ فَقَرَأَ: (إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْل وَالنَّهَار لآيَات لأولي الْأَلْبَاب " حَتَّى خَتَمَ السُّورَةَ ثُمَّ قَامَ إِلَى الْقِرْبَةِ فَأَطْلَقَ شِنَاقَهَا ثُمَّ صَبَّ فِي الْجَفْنَةِ ثُمَّ تَوَضَّأَ وُضُوءًا حَسَنًا بَيْنَ الْوُضُوءَيْنِ لَمْ يُكْثِرْ وَقَدْ أَبْلَغَ فَقَامَ فَصَلَّى فَقُمْتُ وَتَوَضَّأْتُ فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَأَخَذَ بِأُذُنِي فَأَدَارَنِي عَنْ يَمِينِهِ فَتَتَامَّتْ صَلَاتُهُ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً ثُمَّ اضْطَجَعَ فَنَامَ حَتَّى نَفَخَ وَكَانَ إِذَا نَامَ نَفَخَ فَآذَنَهُ بِلَالٌ بِالصَّلَاةِ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ وَكَانَ فِي دُعَائِهِ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا وَفِي بَصَرِي نُورًا وَفِي سَمْعِي نُورًا وَعَنْ يَمِينِي نُورًا وَعَنْ يَسَارِي نُورًا وَفَوْقِي نُورًا ص:٣٧ وتحتي نورا وأمامي نورا وَخَلْفِي نُورًا وَاجْعَلْ لِي نُورًا» وَزَادَ بَعْضُهُمْ: «وَفِي لِسَانِي نُورًا» وَذُكِرَ: " وَعَصَبِي وَلَحْمِي وَدَمِي وَشَعَرِي وبشري)»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: «وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا وَأَعْظِمْ لِي نُورًا» وَفِي أُخْرَى لِمُسْلِمٍ: «اللَّهُمَّ أَعْطِنِي نورا»

1195. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने अपनी खाला मैमुना रदियल्लाहु अन्हा के यहाँ एक रात बसर की जबकि नबी ﷺ उन के वहां थे रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने अहले खाना के साथ कुछ देर बात चित की और फिर सो गए, जब आखिरी तिहाई रात या कुछ रात बाकी रह गई तो आप उठ कर बैठ गए और आसमान की तरफ नज़र उठाकर यह आयत तिलावत फरमाई: “बेशक ज़मीन व आसमान की तखलीक में और शब हो रोज़ के आने जाने में अक़ल मंदों के लिए निशानिया हैं”, हत्ता कि आप ने सूरत मुकम्मल फरमाई फिर आप मश्किज़े की तरफ गए फिर उस का मुंह खोल कर टब में पानी लिया और इफरात हो तफरित के बगैर खूब अच्छी तरह वुज़ू किया, फिर आप खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे, मैं भी खड़ा हुआ और वुज़ू कर के आप के बाएँ जानिब खड़ा हो गया, आप ने मुझे कान से पकड़ कर घुमा कर अपने दाएँ जानिब कर लिया आप ने तेरह रक्अत नमाज़ मुकम्मल की फिर आप लेट गए और सो गए हत्ता कि आप खराटे भरने लगे और जब आप सो जाते तो खराटे भरने फिर बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने आप ﷺ को नमाज़ की इत्तिला दिया, पस आप ने और वुज़ू न किया और आप यह दुआ किया करते थे: “अल्लाह मेरा दिल में मेरी आंखो में मेरे कानों में मेरे दाएँ मेरे बाएँ मेरे ऊपर मेरे नीचे मेरे आगे और मेरे पीछे और मेरे लिए नूर कर दे”, और उनमें से बाज़ ने यह इज़ाफा नकल किया है: “मेरी ज़ुबान में नूर कर दे”, और यह भी ज़िक्र किया है: “मेरे पुश्त, गोश्त, मेरा खून, मेरे बाल और मेरा बदन नुरानी बना दे”| और सहीहैन की रिवायत में है: “और मेरे नफ्स में नूर और बहोत ही नूर बख्श”, और एक दूसरी रिवायत में जो मुस्लिम में है: “अल्लाह तू मुझे नूर अता फरमा”,|”| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6316) و مسلم (181 / 763)، (1788 و 1797) [و الرواية الاولى 189 / 763] * الرواية الثانية عند مسلم (191 / 763)

١١٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ: أَنَّهُ رَقَدَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَيْقَظَ فَتَسَوَّكَ وَتَوَضَّأَ وَهُوَ يَقُول: (إِن فِي خلق السَّمَاوَات وَالْأَرْض. . .)»» حَتَّى خَتَمَ السُّورَةَ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ أَطَالَ فِيهِمَا الْقِيَامَ وَالرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ ثُمَّ انْصَرَفَ فَنَامَ حَتَّى نَفَخَ ثُمَّ فَعَلَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ سِتَّ رَكَعَاتٍ كُلُّ ذَلِكَ يَسْتَاكُ وَيَتَوَضَّأُ وَيَقْرَأُ هَؤُلَاءِ الْآيَاتِ ثُمَّ أَوْتَرَ بِثَلَاثٍ. رَوَاهُ مُسلم

1196. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के वह रसूलुल्लाह ﷺ के यहाँ सोए आप बेदार हुए मिस्वाक की और वुज़ू किया और आप ﷺ फरमा रहे थे: “बेशक आसमानों और ज़मीन की तखलीक में -،،،،،‘‘ आख़िर सूरत तक फिर आप खड़े हुए दो रकते पढ़ाइ उनमें कयाम और रुकू व सुजूद लम्बा किया फिर आप कर सो गए हत्ता कि आप खराटे भरने लगे फिर आप ने तीन मर्तबा ऐसे करते हुए छे रकते पढ़ाइ आप हर मर्तबा मिस्वाक

करते वुज़ू करते और उन आयात की तिलावत फरमाते थे फिर आप ﷺ ने तीन वित्र पढ़े| (मुस्लिम)

رواه مسلم (191 / 763)، (1799)

١١٩٧ - (صَحِيح) وَعَن زيد بن خَالِد الْجُهَنِيِّ أَنَّهُ قَالَ: لَأَرْمُقَنَّ صَلَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّيْلَةَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ طَوِيلَتَيْنِ طَوِيلَتَيْنِ طَوِيلَتَيْنِ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَهُمَا دُونَ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَهُمَا دُونَ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَهُمَا دُونَ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ وَهُمَا دُونَ اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا] ثُمَّ أَوْتَرَ فَذَلِكَ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» قَوْله: ثمَّ صلى رَكْعَتَيْنِ وهما دون اللَّتَيْنِ قَبْلَهُمَا أَرْبَعَ مَرَّاتٍ هَكَذَا فِي ص:٣٧ صَحِيحِ مُسْلِمٍ وأفراده من كتاب الْحميدِي وموطأ مَالك وَسنَن أبي دَاوُد وجامع الْأُصُول

1197. ज़ैद बिन खालिद जुहनी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: में आज रात रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ ए तहज्जुद मुलाहेज़ा करूँगा, आप ﷺ ने दो हलकी सी रकते पढ़ाइ फिर, दो रकते बहोत ही लम्बी पढ़ाइ, फिर दो रकते पढ़ाइ, जो पहली दो से कदरे मुख़्तसर थी, फिर दो रकते उन से कम लम्बी पढ़ाइ, फिर दो रकते उन से कम लम्बी पढ़ाइ, फिर आप ने वित्र पढ़ा, यह तेरह रकते हुई रवाह मुस्लिम, मालिक, अबू दावुद, इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु का यह कौल: "आप ने रकते पढ़ाइ और वह पहली दो से कदरे मुख़्तसर थी", चार मर्तबा ज़िक्र किया है और सहीह मुस्लिम में और अफराद मुस्लिम में किताब अल हुमैदी और मौत्ता मालिक, सुनन अबी दावुद और जामेअ अल अस्वल में इसी तरह मजकूर है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (195 / 765)، (1804) و مالک فی الموطا (1 / 122 ح 265) و ابوداؤد (1366) و ذکره ابن الاثیر فی جامع الاصول (7 / 52 ح 4192)

١١٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا بَدَّنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَثَقُلَ كَانَ أَكْثَرُ صَلَاتِهِ جَالِسًا

1198. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ उमर सैदा और बोझल हो गए तो आप ज़्यादातर बैठ कर नमाज़ पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1118) و مسلم (117 / 732)، (1711)

١١٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَقَدْ عَرَفْتُ النَّظَائِرَ الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرِنُ بَيْنَهُنَّ فَذَكَرَ عِشْرِينَ سُورَةً مِنْ أَوَّلِ الْمُفَصَّلِ عَلَى تَأْلِيفِ ابْنِ مَسْعُودٍ سُورَتَيْنِ فِي رَكْعَةٍ آخِرُهُنَّ (حم الدُّخان)»» و (عَم يتساءلون)

1199. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं इन एक जैसी सूरतो को जानता हूँ जिन्हें नबी ﷺ मिला कर पढ़ा करते थे उनमें से आखिरी दो सूरते حم الدُّخان (हामीम अल दुखान) और नबा (عم يتساءلون) (अम यतासलून) है| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (4996) و مسلم (275 / 822)، (1908)

تहज्जुद की नमाज़ का बयान • بَاب صَلَاة اللَّيْل

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٢٠٠ - (صَحِيح) عَنْ حُذَيْفَةَ: أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ وَكَانَ يَقُولُ: «الله أكبر» ثَلَاثًا «ذُو الْمَلَكُوتِ وَالْجَبَرُوتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ» ثُمَّ اسْتَفْتَحَ فَقَرَأَ الْبَقَرَةَ ثُمَّ رَكَعَ فَكَانَ رُكُوعُهُ نَحْوًا مِنْ قِيَامِهِ فَكَانَ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ: «سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ» ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فَكَانَ قِيَامُهُ نَحْوًا مِنْ رُكُوعِهِ يَقُولُ: «لِرَبِّيَ الْحَمْدُ» ثُمَّ سَجَدَ فَكَانَ سُجُودُهُ نَحْوًا مِنْ قِيَامِهِ فَكَانَ يَقُولُ فِي سُجُودِهِ: «سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى» ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ السُّجُودِ وَكَانَ يَقْعُدُ فِيمَا بَيْنَ السَّجْدَتَيْنِ نَحْوًا مِنْ سُجُودِهِ وَكَانَ يَقُولُ: «رَبِّ ص:٣٧ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي» فَصَلَّى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ قَرَأَ فِيهِنَّ (الْبَقَرَةَ وَآلَ عِمْرَانَ وَالنِّسَاءَ وَالْمَائِدَةَ أَوِ الْأَنْعَامَ)»» شَكَّ شُعْبَة)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1200. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को तहज्जुद पढ़ते हुए देखा आप ने तीन बार (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहा और फिर दुआ पढ़ी, फिर आप ने रुकू किया तो आप का रुकू कयाम की तरह तवील था, आप अपने रुकू में यह दुआ किया करते थे: “पाक है मेरा रब अज़मत वाला”, फिर आप ने रुकू से अपना सर उठाया तो आप का कयाम रुकू की तरह था आप वहां यह दुआ करते थे: “मेरे रब के लिए हर किस्म की हम्द है” फिर आप ने सजदाह किया आप के सुजूद भी आप के कयाम के बराबर थे, आप ﷺ अपने सुजूद में यह दुआ किया करते थे “ पाक है मेरा रब बहोत बुलंद”, फिर आप ने सुजूद से सर उठाया आप अपने सजदो के दरमियान अपने सुजूद के बराब दी बैठते थे और यह दुआ किया करते थे: “मेरे रब मुझे बख्श दे”, आप ﷺ ने चार रकते पढ़ाइ और आप ने उनमें सूरत अल बकरह, آلَ عِمْرَانَ (आले इमरान) النسا (अल निसा) المائد (अल माइदा) या الانعم (अल अनाम) तिलावत फरमाइ, शुअबा को المائد (अल माइदा) या الانعم (अल अनाम) में शक हुआ है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (874) [و ابن ماجه (897) و النسائی (2 / 199200 ح 1070)]

١٢٠١ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَامَ بِعَشْرِ آيَاتٍ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِينَ وَمَنْ قَامَ بِمِائَةِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِينَ وَمَنْ قَامَ بِأَلْفِ آيَةٍ كُتِبَ من المقنطرين» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1201. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दस आयात का इहतेमाम करता है वह गाफिलिन में नहीं रखा जाता जो सौ आयात (की तिलावत व हिफ्ज़ और अमल) का इहतेमाम करता है तो वह इताअत गुज़ारो में लिख दिया जाता है और जो शख़्स हज़ार आयात का इहतेमाम करता है तो वह दोहरा अज्र व सवाब पाने वालो में लिख दिया जाता है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1398) [و صححه ابن خزيمة (1144) و ابن حبان (662)]

١٢٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: كَانَ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّيْلِ يَرْفَعُ طَوْرًا وَيَخْفِضُ طَوْرًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1202. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ तहज्जुद में किराअत करते वक़्त कभी अपने आवाज़ बुलंद करते और कभी पस्त करते थे | (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1328) [و صححه ابن خزيمة (1159) و ابن حبان (657) و الحاكم (1 / 310) و وافقه الذهبى]

١٢٠٣ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَتْ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى قَدْرِ مَا يَسْمَعُهُ مَنْ فِي الْحُجْرَةِ وَهُوَ فِي الْبَيْتِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1203. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ इस क़दर बुलंद आवाज़ से किराअत करते थे की आप घर के अन्दर किराअत करते तो सहन में मौजूद शख़्स आप ﷺ की किराअत सुन सकता था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1327) [و الترمذى فى الشمائل : 321]

١٢٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ لَيْلَةً فَإِذَا هُوَ بِأَبِي بَكْرٍ يُصَلِّي يَخْفِضُ مِنْ صَوْتِهِ وَمَرَّ بِعُمَرَ وَهُوَ يُصَلِّي رَافِعًا صَوْتَهُ قَالَ: فَلَمَّا اجْتَمَعَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا أَبَا بَكْرٍ مَرَرْتُ بِكَ وَأَنْتَ تُصَلِّي تَخْفِضُ صَوْتَكَ» قَالَ: قَدْ أَسْمَعْتُ مَنْ نَاجَيْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَقَالَ لِعُمَرَ: «مَرَرْتُ بِكَ وَأَنْتَ تُصَلِّي رَافِعًا صَوْتَكَ» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُوقِظُ الْوَسْنَانَ وَأَطْرُدُ الشَّيْطَانَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا بَكْرٍ ارْفَعْ مِنْ صَوْتِكَ شَيْئًا» وَقَالَ لِعُمَرَ: ص:٣٧ «اخْفِضْ مِنْ صَوْتِكَ شَيْئًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وروى التِّرْمِذِيّ نَحوه

1204. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रात तशरीफ़ लाए तो देखा के अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु पस्त आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे तो वह बुलंद आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे रावी बयान करते हैं, जब वह दोनों नबी ﷺ के पास इकठ्ठे हुए तो आप ﷺ ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया " मैं तुम्हारे पास से गुज़रा और तुम आहिस्ता आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने जिस से सरगोशी की उस को सुना दिया (यानी अल्लाह पाक को) और आप ﷺ ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "मैं तुम्हारे पास से गुज़रा था और तुम बुलंद आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं सोए लोगों को जगा रहा था और शैतान को भगा रहा था नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अबू बक्र तुम अपने आवाज़ कुछ बुलंद करो और उमर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम अपने आवाज़ कुछ पस्त रखो"| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1329) و الترمذى (447 وقال : غريب) [و صححه ابن خزيمة (1161) و ابن حبان (656) و الحاكم (1 / 130) على شرط مسلم و وافقه الذهبى]

١٢٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَصْبَحَ بِآيَةٍ وَالْآيَةُ: (إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّك أَنْت الْعَزِيز الْحَكِيم)»» رَوَاهُ النَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1205. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक ही आयत तिलावत करते हुए सुबह कर दी, और वह आयत यह थी: “अगर तो उन्हें अज़ाब दे तो वह तेरे बंदे है और अगर तो उन्हें बख्श दे तो तो ग़ालिब हिकमत वाला है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (2 / 177 ح 1011) و ابن ماجه (1350) [و صححه الحاكم 1 / 241 و وافقه الذهبی]

١٢٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ رَكْعَتَيِ الْفَجْرِ فَلْيَضْطَجِعْ على يَمِينه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

1206. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई सुबह की दो रकते पढ़े तो वह अपने दाएँ पहलु पर लेट जाए| (सहीह,ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (420 وقال : حسن صحيح غريب) و ابوداؤد (1261) [و ابن خزيمة : 1120] * سليمان الاعمش مدلس و لم اجد تصريح سماعه و اخطا من صحيح هذا السند

بَاب صَلَاة اللَّيْل • तहज्जुद की नमाज़ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٢٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: أَيُّ الْعَمَلِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: الدَّائِمُ قُلْتُ: فَأَيُّ حِينَ كَانَ يَقُومُ مِنَ اللَّيْلِ؟ قَالَتْ: كَانَ يَقُومُ إِذا سمع الصَّارِخ

1207. मसरुक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया, रसूलुल्लाह ﷺ के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा अमल कौन सा था? उन्होंने ने फ़रमाया: जिस पर कायम हो, मैंने पूछा: आप ﷺ रात के किसी वक़्त तहज्जुद पढ़ा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: जब आप मुर्गे की आवाज़ सुनते तब आप ﷺ तहज्जुद पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1132) و مسلم (131 / 741)، (1730)

١٢٠٨ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: مَا كُنَّا نَشَاءُ أَنْ نَرَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي اللَّيْلِ مُصَلِّيًا إِلَّا رَأَيْنَاهُ وَلَا نَشَاءُ أَنْ نَرَاهُ نَائِما إِلَّا رَأَيْنَاهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1208. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम रसूलुल्लाह ﷺ को रात तहज्जुद पढ़ते हुए देखना चाहो तो तो हम आप को इस हालत में देख लेते थे और अगर हम आप को सोया हुआ देखना चाहो तो तो हम आप को सोया हुआ देख लेते थे| (हसन)

صحيح ، رواه النسائی (3 / 213 ، 214 ح 1628) [و البخاری : 1141 ، 1972 ، 1973]

١٢٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قُلْتُ وَأَنَا فِي سَفَرٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَاللَّهِ لَأَرْقُبَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلصَّلَاةِ حَتَّى أَرَى فِعْلَهُ فَلَمَّا صَلَّى صَلَاةَ الْعِشَاءِ وَهِيَ الْعَتَمَةُ اضْطَجَعَ هَوِيًّا مِنَ اللَّيْلِ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ فَنَظَرَ فِي الْأُفُقِ فَقَالَ: (رَبنَا مَا خلقت هَذَا بَاطِلا)»» حَتَّى بَلَغَ إِلَى (إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ)»» ثُمَّ أَهْوَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى فِرَاشِهِ فَاسْتَلَّ مِنْهُ سِوَاكًا ثُمَّ أَفْرَغَ فِي قَدَحٍ مِنْ إِدَاوَةٍ عِنْدَهُ مَاءً فَاسْتَنَّ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى حَتَّى قُلْتُ: قَدْ صَلَّى قَدْرَ مَا نَامَ ثُمَّ اضْطَجَعَ حَتَّى قُلْتُ قَدْ نَامَ قَدْرَ مَا صَلَّى ثُمَّ اسْتَيْقَظَ فَفَعَلَ كَمَا فَعَلَ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَقَالَ مِثْلَ مَا قَالَ فَفَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثُ مَرَّاتٍ قَبْلَ الْفَجْرِ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1209. हुमैद बिन अब्दुल रहमान बिन ऑफ बयान करते हैं, नबी ﷺ के किसी सहाबी ने बयान किया की मैं एक सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ था, इस दौरान मैंने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह ﷺ की नमाज़ देखने के लिए आप को गौर से देखता रहूँगा हत्ता कि में आप का फ़ैल देख सकू, जब आप ﷺ ने नमाज़ ए ईशा पढ़ ली तो आप रात देर तक सोए रहे, फिर बेदार हुए तो अफक पर नज़र डालकर यह आयत ए करीमा तिलावत फरमाई: “हमारे परवरदिगार तूने यह नाहक पैदा नहीं फरमाया”, हत्ता कि आप ﷺ यहाँ तक पहुंचे: “बेशक तू वादा खिलाफी नहीं करता”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने बिस्तर की तरफ हाथ बढ़ाया और वहां से मिस्वाक निकाली, फिर किसी बर्तन से प्याले में पानी डाला और मिस्वाक की फिर नमाज़ पढ़ी, हत्ता कि मैंने कहा: आप जितनी देर सोए थे इस क़दर नमाज़ पढ़ी, फिर आप लेट गए हत्ता कि मैंने दिल में कहा: आप ने जिस क़दर नमाज़ पढ़ी इसी क़दर सो गए, फिर आप बेदार हुए तो पहली मर्तबा की तरह अमल दोहराया और आप ने वही आयात तिलावत की, रसूलुल्लाह ﷺ ने फज्र से पहले तीन मर्तबा ऐसे किया | (हसन)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (3 / 213 ح 1627)

١٢١٠ - (صَحِيح) وَعَن يَعْلَى بْنِ مُمَلَّكٍ أَنَّهُ سَأَلَ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ص:٣٨ قِرَاءَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَاتِهِ؟ فَقَالَتْ: وَمَا لَكُمْ وَصَلَاتُهُ؟ كَانَ يُصَلِّي ثُمَّ يَنَامُ قَدْرَ مَا صَلَّى ثُمَّ يُصَلِّي قَدْرَ مَا نَامَ ثُمَّ يَنَامُ قَدْرَ مَا صَلَّى حَتَّى يُصْبِحَ ثُمَّ نَعَتَتْ قِرَاءَتَهُ فَإِذَا هِيَ تَنْعَتُ قِرَاءَةً مُفَسَّرَةً حَرْفًا حَرْفًا)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

1210. यअली बिन मुमल्लक से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ की ज़ौजा ए मोहतरमा उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से नबी ﷺ की किराअत और नमाज़ के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम उनकी नमाज़ के मुतल्लिक पूछ कर क्या करोगे? आप ﷺ नमाज़ पढ़ा करते थे फिर आप ने जितनी देर नमाज़ पढ़ी होती इतनी देर सो जाते थे, फिर जिस क़दर सोए इसी क़दर नमाज़ पढ़ते, फिर जितनी देर नमाज़ पढ़ी होती इसी

क़दर सो जाते थे, हत्ता कि सुबह हो जाती फिर, उन्होंने आप ﷺ की किराअत के मुतल्लिक बताया तो उन्होंने फ़रमाया के आप की किराअत का एक एक हरफ वाज़ेह होता था| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1466) و الترمذی (2932 وقال : حسن صحیح غریب) و النسائی (3 / 214 ح 1630)

بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ • तहज्जुद की नमाज़ के अज़कार का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

١٢١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَقَوْلُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَلَا إِلَهَ غَيْرك»

1211. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ तहज्जुद पढ़ते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर कहने के बाद यह दुआ पढ़ते, “ए अल्लाह! हर किस्म की हम्द तेरे ही लिए है, ज़मीन व आसमान और जो कुछ उनमें है उन्हे, तू ही कायम रखने वाला है, हर किस्म की तारीफ़ तेरे ही लिए है, ज़मीन व आसमान और जो कुछ उनमें है उस का तू ही नूर है, हर किस्म की तारीफ़ तेरे लिए है, ज़मीन व आसमान और जो कुछ इस में है उस का तू ही मालिक है, हर किस्म की तारीफ़ तेरे ही लिए है तू हक़ है, तेरा वादा हक़ है, तेरी मुलाकात हक़ है, तेरी बात हक़ है, जन्नत हक़ है, जहन्नम हक़ है, तमाम अंबिया अस) हक़ है, मुहम्मद ﷺ हक़ है और कियामत हक़ है, अल्लाह में तेरे सामने झुक गया तुझ पर ईमान लाया तुझ पर तवक्कुल किया, तेरी तरफ रुजू किया, मैंने तेरी ही तौफिक से झगड़ा किया, मैंने तुझे ही अपना हाकिम तसव्वुर किया अब तू मेरे अगले पिछले ज़ाहिर व पोशीदा, और जिन्हे तू मुझ से ज़्यादा जानता है के सारे गुनाह मुआफ़ फरमादे, तू ही तरक्की और गिरावट देने वाला है, सिर्फ तू ही माबूद है और तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1120) و مسلم (199 / 769)، (1808)

١٢١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ افْتَتَحَ صَلَاتَهُ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَإِسْرَافِيلَ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ اهْدِنِي لِمَا ص:٣٨ اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ» . رَوَاهُ مُسلم

1212. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ रात तहज्जुद के लिए खड़े होते तो आप अपने नमाज़ का इफ्तेताह इस दुआ से करते थे: “ए अल्लाह! जिब्राइल, मिकाइल और इस्राफील के रब ज़मीन व

आसमान को अदम से वुजूद में लाने वाले हाज़िर व गायब के जानने वाले तू ही अपने बंदो का इन उमूर में फैसला फरमाएगा, जिन में वह इख्तिलाफ करते हैं उन इख्तिलाफी उमूर में अपने तौफिक से तू ही मेरी रहनुमाई फरमा बेशक, तू ही जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ रहनुमाई फरमाता है”। (मुस्लिम)

رواه مسلم (200 / 770)، (1811)

١٢١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ تَعَارَّ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ثُمَّ قَالَ: رَبِّ اغْفِرْ لِي أَوْ قَالَ: ثمَّ دَعَا استيجيب لَهُ فَإِنْ تَوَضَّأَ وَصَلَّى قُبِلَتْ صَلَاتُهُ " رَوَاهُ البُخَارِيّ

1213. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रात को उठ कर यह दुआ पढ़े: “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत है और हर किस्म की हम्द इसी के लिए है और वह हर चीज़ पर कादिर है, अल्लाह पाक है, हम्द अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं अल्लाह बहोत बड़ा है, गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से मुमकिन है? फिर वह यह कहे मेरे रब मुझे बख्श दे.‘ या फ़रमाया: “फिर उस ने दुआ की तो उसकी दुआ कबूल की जाती है? अगर वह वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उसकी नमाज़ कबूल की जाती है”। (बुखारी)

رواه البخاری (1154)

بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ • तहज्जुद की नमाज़ के अज़कार का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٢١٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَيْقَظَ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: «لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِي وَأَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ اللَّهُمَّ زِدْنِي عِلْمًا وَلَا تُزِغْ قَلْبِي بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنِي وَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1214. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ रात को बेदार होते तो आप यह दुआ पढ़ते ((لا اله الا انت ،،،،، انک انت الوهاب)) “ तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं तू पाक है, अल्लाह अपने हम्द के साथ में अपने गुनाहों की तुझ से मगफिरत तलब करता हूँ और तेरी रहमत का तुझ से सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह! मेरे इल्म में इज़ाफा फरमा बेशक, तू ही अता फरमाने वाला है”। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5061) [و صححه ابن حبان (2359) و الحاکم 1 / 540) و وافقه الذھبی]

١٢١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَبِيتُ عَلَى ذِكْرٍ طَاهِرًا فَيَتَعَارَّ مِنَ اللَّيْل فَيسْأَل اللَّهُ خَيْرًا إِلَّا أَعْطَاهُ اللَّهُ إِيَّاهُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

1215. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो मुसलमान अल्लाह का ज़िक्र करते हुए बा वुज़ू सो जाए और फिर वह रात के किसी वक़्त बेदार हो कर अल्लाह से किसी खैर व भलाई का सवाल करे तो अल्लाह वही खैर इसे अता फरमा देता है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 241 ح 22443) و ابوداؤد (5042) [و ابن ماجه : 3881]

١٢١٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ شَرِيقٍ الْهَوْزَنِيِّ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَسَأَلْتُهَا: بِمَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْتَتِحُ إِذَا هَبَّ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَتْ: سَأَلْتَنِي عَنْ شَيْءٍ مَا سَأَلَنِي عَنْهُ أَحَدٌ قَبْلَكَ كَانَ إِذَا هَبَّ مِنَ اللَّيْلِ كَبَّرَ عَشْرًا وَحَمِدَ اللَّهَ عَشْرًا وَقَالَ: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَشْرًا» وَقَالَ: «سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ» عشرا واستغفر عشرا وَهَلل عَشْرًا ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ ضِيقِ الدُّنْيَا وَضِيقِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ» عَشْرًا ثمَّ يفْتَتح الصَّلَاة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1216. शरीक अल हवजनी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास हाज़िर हो कर उन से दरियाफ्त किया जब रसूलुल्लाह ﷺ रात को बेदार होते तो आप किसी ज़िक्र से आगाज़ फरमाते थे उन्होंने ने फ़रमाया: तुमने ऐसी चीज़ के बारे में मुझ से सवाल किया है जिसके मुतल्लिक तुम से पहले किसी ने मुझ से दरियाफ्त नहीं किया, जब आप रात को बेदार होते तो आप ﷺ दस मर्तबा اللَّهُ أَكْبَرُ ((اللَّهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) दस मर्तबा اَلْحَمْدُلِلهِ (الْحَمْدُ لِلَّهِ) अल्हम्दुलिल्लाह), दस मर्तबा سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ (सुबहानल्लाह बिहम्दिही), दस मर्तबा سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ (सुबहान अल मलिकुल कुद्दुस) दस मर्तबा " اسْتَغْفَرَ اللَّهَ (अस्तगफिरुल्लाह)" और दस मर्तबा 'لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (ला इलाहा इल्ला अल्लाह)" पढ़ते फिर दस मर्तबा दुआ फरमाते: "अल्लाह मैं दुनिया में रोज़ ए कियामत की सख्तियो और तकलीफों से तेरी पनाह चाहता हूँ" फिर आप नमाज़ ए तहज्जुद शुरू फरमाते | (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (5085) [وله شواهد]

بَابُ مَا يَقُولُ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ • तहज्जुद की नमाज़ के अज़कार का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٢١٧ - (صَحِيح) عَن أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ كَبَّرَ ثُمَّ يَقُولُ: «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ» ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا» ثُمَّ يَقُولُ: «أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ بَعْدَ قَوْلِهِ: «غَيْرُكَ» ثُمَّ يَقُولُ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ» ثَلَاثًا وَفِي آخر الحَدِيث: ثمَّ يقْرَأ

1217. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ के लिए उठते तो (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कह कर यह दुआ पढ़ते: "पाक है तो अल्लाह अपने हम्द के साथ बा बरकत है उम्म तेरा बुलंद है उन तेरी और तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं फिर आप ﷺ फरमाते: "अल्लाह बहोत ही बड़ा है" फिर फरमाते: "मैं अल्लाह समीअ हो अलीम की पनाह का तलबगार हो शैतान मरदूद से उस के वसवसे उस के कब्र और उस के जादू से"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई और अबू दावुद ने ((غيرک)) के बाद यह इज़ाफा नकल किया है के आप ﷺ तीन मर्तबा फरमाते لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ (ला इलाहा इल्ला अल्लाह) और हदीस के आख़िर में है फिर आप ﷺ किराअत करते. (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (242) و ابوداؤد (775) و النسائی (2 / 132 ح 900) [و صححه ابن خزیمة (467) و تقدم طرفه (816)]

١٢١٨ - (صَحِيح) وَعَن ربيعَة بن كَعْب الْأَسْلَمِيّ قَالَ: كُنْتُ أَبِيتُ عِنْدَ حُجْرَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ إِذَا قَامَ من اللَّيْل يَقُول: «سُبْحَانَ رب الْعَالمين» الْهَوِي ثُمَّ يَقُولُ: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» الْهَوِيِّ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَلِلتِّرْمِذِيِّ نَحْوُهُ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

1218. रबीअ बिन काब असलमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के हुजरे के करीब रात बसर किया करता था, जब आप रात तहज्जुद के लिए उठते तो मैं आप ﷺ को देर तक यह पढ़ते हुए सुनता." पाक है तमाम जहानों का रब", और: "पाक है अल्लाह अपने हम्द के साथ", नसई, तिरमिज़ी में भी इसी तरह है और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (3 / 209 ح 1619) و الترمذی (3416) [و اصله عند مسلم : 226 / 489]

بَابُ التَّحْرِيضِ عَلَى قِيَامِ اللَّيْلِ • रात के कयाम (तहज्जुद) पर रगबत दिलाने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

١٢١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: " يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلَى قَافِيَةِ رَأْسِ أَحَدِكُمْ إِذَا هُوَ نَامَ ثَلَاثَ عُقَدٍ يَضْرِبُ عَلَى كُلِّ عُقْدَةٍ: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيلٌ فَارْقُدْ. فَإِنِ اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللَّهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ فَإِنْ تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ فَإِنْ صَلَّى انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ فَأَصْبَحَ نَشِيطًا طيب النَّفس وَإِلَّا أصبح خَبِيث النَّفس كسلانا "

1219. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से कोई सो जाता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिर है लगा देता है, वह हर गिरह पर यह फुसुं फूंक देता है अभी तो बहोत रात है, सो जाओ अगर तो वह बेदार हो कर अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो एक गिरह खुल जाती है, फिर अगर वुज़ू

कर लेता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है और अगर नमाज़ भी पढ़ो ले तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और वह सुबह को हश्शाश बश्शाश होता है, जबकि बसूरत दीगर वह ग़मगी हो परेशान और सुस्ती का शिकार होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1142) و مسلم (207 / 776)، (1819)

١٢٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ فَقِيلَ لَهُ: لِمَ تَصْنَعُ هَذَا وَقَدْ غُفِرَ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ: «أَفَلَا أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا»

1220. मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ इस क़दर कयाम फरमाते के आप के पाँव सूज जाते आप से अर्ज़ किया गया, आप यह तवील कयाम क्यों करते हैं, जबकि आप की अगली पिछली सब लग्ज़िश मुआफ़ कर दी गई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनू”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (4836) و مسلم (79 / 2819)، (7124)

١٢٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: ذُكِرَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ فَقيل لَهُ مازال نَائِمًا حَتَّى أَصْبَحَ مَا قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ قَالَ: «ذَلِكَ رَجُلٌ بَالَ الشَّيْطَانُ فِي أُذُنِهِ» أَو قَالَ: «فِي أُذُنَيْهِ»

1221. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के पास एक आदमी का तज़किरह करते हुए बताया गया के वह शख़्स सुबह होने तक सोया रहता है और नमाज़ भी नहीं पढ़ता, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शैतान ऐसे आदमी के कान या फ़रमाया उस के कानों में पेशाब कर देता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1144) و مسلم (205 / 774)، (1817)

١٢٢٢ - (صَحِيح) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةً فَزِعًا يَقُولُ: «سُبْحَانَ اللَّهِ مَاذَا أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْخَزَائِنِ؟ وَمَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْفِتَنِ؟ مَنْ يُوقِظُ ص:٣٨ صَوَاحِبَ الْحُجُرَاتِ» يُرِيدُ أَزْوَاجَهُ «لِكَيْ يُصَلِّينَ؟ رُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٍ فِي الْآخِرَة» أخرجه البُخَارِيّ

1222. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ एक रात घबराए हुए बेदार हुए तो फ़रमाया: “सुबहानल्लाह आज रात किस कदर खज़ाने नाज़िल किए गए और किस कदर फितने अज़ाब नाज़िल किए गए उन हुजरे वालो को कौन जगाएगा ?” यानी आप ﷺ अपने अज़वाज ए मूतहरात के बारे में फरमा रहे थे: “ताकि वह नमाज़ ए तहज्जुद पढ़े कितने ही औरते है जो दुनिय में तो लिबास ज़ेबतीन (पहना हुआ) किए हुए हैं लेकिन वह आखिरत में हुर्रिया होगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (7069)

١٢٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرُ يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ؟ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ؟ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ؟ "»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: ثُمَّ يَبْسُطُ يَدَيْهِ وَيَقُولُ: «مَنْ يُقْرِضُ غَيْرَ عَدُومٍ وَلَا ظَلُومٍ؟ حَتَّى ينفجر الْفجْر»

1223. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर रात जब आखिरी तिहाई रात बाकी रह जाती है तो हमारा रब तबारक व तआला आसमानी दुनिया पर नुज़ूल फरमाता है और पूछता है कोई है जो मुझ से दुआ करे में उसकी दुआ कबूल करू कोई है जो मुझ से मांगे में उसे अता करू और कोई है जो मुझ से मगफिरत तलब करे तो में उसे बख्श दू”| और मुस्लिम की रिवायत में है: “फिर वह अपने दोनों हाथ फैला कर फरमाता है, कोई है जो अता करने वाले सखी और इंसाफ करने वाले को क़र्ज़ अता करे (यह सिलसिला जारी रहता है) हत्ता कि फज्र तुलुअ हो जाती है ‘‘ (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1145) و مسلم (168 / 758 ، (1772 و 1775) الرواية الثانية 172 ، 171 / 758)

١٢٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللَّهَ فِيهَا خَيْرًا مِنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاه وَذَلِكَ كل لَيْلَة» رَوَاهُ مُسلم

1224. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक रात में एक ऐसी घड़ी है के इस वक़्त कोई मुसलमान शख़्स दुनिया व आखिरत की जो भी चीज़ अल्लाह से मांगता है तो वह इसे वही चीज़ अता फरमा देता है और यह हर रात होता है”| (मुस्लिम)

: رواه مسلم (166 / 757)، (1770)

١٢٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحَبُّ الصَّلَاةِ إِلَى اللَّهِ صَلَاةُ دَاوُدَ وَأَحَبُّ الصِّيَامِ إِلَى اللَّهِ صِيَامُ دَاوُدَ كَانَ يَنَامُ نِصْفَ اللَّيْلِ وَيَقُومُ ثُلُثَهُ وَيَنَامُ سُدُسَهُ وَيَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمًا»

1225. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दाउद (अ) की नमाज़ और दाउद (अ) का रोज़ा अल्लाह को इन्तिहाई महबूब है, आप आधी रात सोते और तिहाई रात कयाम करते थे फिर रात का छठा हिस्सा सोते थे और एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ्तार करते यानी छोड़ते थे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1131) و مسلم (189 / 1159)، (2739)

١٢٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ تَعْنِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنَامُ أَوَّلَ اللَّيْلِ وَيُحْيِي آخِرَهُ ثُمَّ إِنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ إِلَى أَهْلِهِ قَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ يَنَامُ فَإِنْ كَانَ عِنْدَ النداء الأول جنبا وثب فَأَفَاضَ عَلَيْهِ الماس وَإِنْ لَمْ

يَكُنْ جُنُبًا تَوَضَّأَ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ صلى رَكْعَتَيْنِ "

1226. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ रात का इब्तिदाई हिस्सा सोते और आखिरी हिस्सा तहज्जुद पढ़ते हुए जागते थे फिर अगर आप ने ताल्लुक ए जन व शव कायम करना होता तो कायम करते फिर सो जाते अगर आप आज़ान अव्वल के वक़्त जुनुबी होते तो आप जल्दी से ग़ुस्ल फरमाते और अगर जुनुबी न होते तो नमाज़ के लिए वुज़ू करते फिर दो रकते पढ़ते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1146) و مسلم (129 / 739)، (1728)

بَابُ التَّحْرِيضِ عَلَى قِيَامِ اللَّيْلِ • रात के कयाम (तहज्जुद) पर रगबत दिलाने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٢٢٧ - (حسن بشواهده) عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ فَإِنَّهُ دَأْبُ الصَّالِحِينَ قَبْلَكُمْ وَهُوَ قُرْبَةٌ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ وَمَكْفَرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ وَمَنْهَاةٌ عَنِ الْإِثْمِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1227. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ा करो क्योंकि वह तुम से पहले स्वालेहीन की रवीश है, तुम्हारे रब का कुर्ब हासिल करने गुनाहों की मुआफी और गुनाहों से बाज़ रहने का ज़रिया है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3549 ب) [و صححه الحاكم على شرط البخارى (1 / 308) و وافقه الذهبى]

١٢٢٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ يَضْحَكُ اللَّهُ إِلَيْهِمْ الرَّجُلُ إِذَا قَامَ بِاللَّيْلِ يُصَلِّي وَالْقَوْمُ إِذَا صَفُّوا فِي الصَّلَاةِ وَالْقَوْمُ إِذَا صَفُّوا فِي قِتَالِ الْعَدُوِّ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

1228. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोगों पर अल्लाह खुश होता है, वह आदमी जो नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ता है, वह लोग जो नमाज़ के लिए सफ बंदी करते हैं और वह लोग जो दुश्मन के खिलाफ लड़ने के लिए सफ बंदी करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (4 / 42 ح 929) [و ابن ماجه : 200] * فيه مجالد بن سعيد وهو ضعيف

١٢٢٩ - (صَحِيح) وَعَن عَمْرو بن عبسة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الرَّبُّ مِنَ الْعَبْدِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ الْآخِرِ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُونَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللَّهَ فِي تِلْكَ السَّاعَةِ فَكُنْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

صَحِيحٌ ص:٣٨ غَرِيب إِسْنَادًا

1229. अमर बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रात के आखिरी हिस्से में रब तआला बंदे के इन्तिहाई करीब होता है, अगर तुम इस वक़्त अल्लाह को याद करने वालो में शामिल हो सको तो हो जाओ”, और इमाम तिरमिज़ी में ने फ़रमाया: यह हदीस सनद के लिहाज़ से हसन सहीह ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3549 ب) [و صححه الحاکم (1 / 163165) و اصله عند مسلم (832)، (1930)]

١٢٣٠ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَحِمَ اللَّهُ رَجُلًا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ فَصَلَّى وَأَيْقَظَ امْرَأَتَهُ فَصَلَّتْ فَإِنْ أَبَتْ نَضَحَ فِي وَجْهِهَا الْمَاءَ. رَحِمَ اللَّهُ امْرَأَةً قَامَتْ مِنَ اللَّيْلِ فَصَلَّتْ وَأَيْقَظَتْ زَوْجَهَا فَصَلَّى فَإِنْ أَبَى نَضَحَتْ فِي وَجْهِهِ الْمَاءَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1230. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस बंदे पर रहम फरमाए जो रात उठ कर तहज्जुद पढ़े, अपने अहलिया को जगाते और वह नमाज़ पढ़े लेकिन अगर वह इनकार करे तो उस के चेहरे पर पानी छिडके अल्लाह इस औरत पर रहम फरमाए जो रात को उठ कर तहज्जुद पढ़े अपने खाविंद को उठाए और वह नमाज़ पढ़े लेकिन अगर वह इनकार करे तो वह उस के चेहरे पर पानी के छींटे मारे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1308) و النسائی (3 / 205 ح 1611) [و صححه ابن خزیمة (1148) و ابن حبان (646) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 309) و وافقه الذھبی]

١٢٣١ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَسْمَعُ؟ قَالَ: «جَوْفُ اللَّيْلِ الآخر ودبر الصَّلَوَات المكتوبات» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1231. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! ﷺ कौन सी दुआ ज़्यादा कबूल होती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रात के आखिरी हिस्से में और फ़र्ज़ नमाज़ो के बाद की गई दुआ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3499 وقال : حسن) تقدم (968) فراجعه لعلته

١٢٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ غُرَفًا يُرَى ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا أَعَدَّهَا اللَّهُ لِمَنْ أَلَانَ الْكَلَامَ وَأَطْعَمَ الطَّعَامَ وَتَابَعَ الصِّيَامَ وَصَلَّى بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نيام» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

1232. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत में कुछ ऐसे कमरे है (जो इस क़दर शिफाक है के उनका ज़ाहिर उन के बातिन से और उनका बातिन उन के ज़ाहिर से नज़र

आता होगा अल्लाह ने उन्हें ऐसे लोगों के लिए तैयार किया है जो नरम गुफ्तगू करते हैं खाना खिलाते है कसरत से नफ्ल रोज़े रखते है और नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ते है जबकि लोग सो रहे होते हैं”, बयहकी की शौबुल ईमान | (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3829) [و احمد (5 / 343) و انظر الحديث الآتى : 1233] * عبد الرحمن بن اسحاق الكوفى ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة و انظر تخريج الحديث السابق (1232) فائدة : و روى الحاكم (1 / 321 ح 1200) من حديث عبدالله بن عمر رضى الله عنه مرفوعاً :'' ان فى الجنة غرفاً يرى ظاهرها من بباطنها و باطها من ظاهرها ،،، لمن اطاب الكلام و اطعم و بات قائمًا و الناس نيام '' و سنده حسن و صححه الحاكم على شرط مسلم و وافقه الذهبى

١٢٣٣ - (صَحِيح) وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ عَنْ عَلِيٍّ نَحْوَهُ وَفِي رِوَايَتِهِ: «لمن أطاب الْكَلَام»

1233. और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने अली रदियल्लाहु अन्हु से इसी तरह रिवायत किया है और उनकी रिवायत में है: “जिस ने अच्छी गुफ्तगू की”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1984 ، 2527 وقال : غريب) * عبد الرحمن بن اسحاق الكوفى ضعيف

بَابُ التَّحْرِيضِ عَلَى قِيَامِ اللَّيْلِ • रात के कयाम (तहज्जुद) पर रगबत दिलाने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٢٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ لَا تَكُنْ مِثْلَ فُلَانٍ كَانَ يَقُومُ مِنَ اللَّيْلِ فَتَرَكَ قيام اللَّيْل»

1234. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अब्दुल्लाह फलां शख़्स की तरह न हो जाना वह तहज्जुद पढ़ा करता था लेकिन अब उस ने तहज्जुद पढ़ना छोड़ दिया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1152) و مسلم (185 / 1159)، (2733)

١٢٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: " كَانَ لِدَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ مِنَ اللَّيْلِ سَاعَةٌ يُوقِظُ فِيهَا أَهْلَهُ يَقُولُ: يَا آلَ دَاوُدَ قُومُوا فَصَلُّوا فَإِنَّ هَذِهِ سَاعَةٌ يَسْتَجِيبُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ فِيهَا الدُّعَاءَ إِلَّا لِسَاحِرٍ أَوْ عشار ". رَوَاهُ أَحْمد

1235. उस्मान बिन अबिल आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “दाउद (अ) के लिए रात की एक घड़ी थी जिस में वह अपने अहले खाना को जगाते हुए फरमाते थे आले दावुद खड़े हो जाओ और नमाज़ पढ़ो, क्योंकि इस घड़ी में अल्लाह अज्ज़वजल जादूगर और महसूल वुसुल करने वाले की दुआ के सिवा हर दुआ कबूल फरमाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 22 ح 16390) * علی بن زید بن جدعان ضعیف و فیه علل أخری

١٢٣٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْمَفْرُوضَةِ صَلَاةٌ فِي جَوف اللَّيْل» . رَوَاهُ أَحْمد

1236. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “फ़र्ज़ नमाज़ के बाद रात के आखिरी हिस्से में पढ़ी गई नमाज़ सबसे बेहतर है”| (सहीह)

صحیح رواه احمد (2 / 342 ح 8488) [و رواه مسلم کما سیاتی : 2039، (2755)]

١٢٣٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رجل إِلَى النَّبِي صلى فَقَالَ: إِن فلَانا يُصَلِّي بِاللَّيْلِ فَإِذَا أَصْبَحَ سَرَقَ فَقَالَ: إِنَّهُ سَيَنْهَاهُ مَا تَقُولُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1237. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ क्या फलां शख़्स रात को तहज्जुद पढ़ता है और जब सुबह होती है चोरी करता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक वह अनकरीब तुम्हारी बताई हुई बात नमाज़ इसे रोक देगी”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (2 / 447) و البیهقی فی شعب الایمان (3261)

١٢٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذا أَيْقَظَ الرَّجُلُ أَهْلَهُ مِنَ اللَّيْلِ فَصَلَّيَا أَوْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ جَمِيعًا كُتِبَا فِي الذَّاكِرِينَ وَالذَّاكِرَاتِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1238. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी रात के वक़्त अपने अहलिया को जगाता है तो वह दोनों नमाज़ पढ़ते है या वह दोनों इकट्ठे दो रकते पढ़ते है तो वह दोनों ज़ाकरिन और ज़ाकिरात में लिख दिए जाते हैं”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1309) و ابن ماجه (1335) [و صححه ابن حبان (645) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 316) و وافقه الذهبی]
* سفیان و الاعمش مدلسان و عنعنا

١٢٣٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَشْرَافُ أُمَّتِيْ حَمَلَةُ الْقُرْآنِ وَأَصْحَابُ اللَّيْلِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

1239. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हामिलिन क़ुरान और तहज्जुद गुज़ार लोग मेरी उम्मत के शरफाअ है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2703) * فيه نهشل : كذاب و سعد بن سعيد الجرجانى : ضعيف و الضحاک لم يدرک ابن عباس

١٢٤٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ أَبَاهُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ كَانَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ مَا شَاءَ اللَّهُ حَتَّى إِذَا كَانَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ أَيْقَظَ أَهْلَهُ لِلصَّلَاةِ يَقُولُ لَهُمْ: الصَّلَاةُ ثُمَّ يَتْلُو هَذِهِ الْآيَةَ: (وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحن نرزقك وَالْعَاقبَة للتقوى)»» رَوَاهُ مَالك

1240. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन के वालिद उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु जिस क़दर अल्लाह चाहता नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ते रहते, हत्ता कि जब रात का आखिरी हिस्सा होता तो आप अपने अहले खाना को नमाज़ के लिए उठाते तो उन्हें कहते नमाज़ पढ़ो या नमाज़ का वक़्त हो गया है, फिर आप यह आयत तिलावत फरमाते: “अपने घरवालो को नमाज़ का हुक्म दें और उस पर कायम रहे, हम आप से रोज़ी के तालिब नहीं, बल्कि हम आप को रिज़्क़ देते हैं और अंजाम तो पर परहेज़गारो ही के लिए है”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 119 ح 258) و سنده صحيح

بَاب الْقَصْد فِي الْعَمَل • आमाल में मियाना रवी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٢٤١ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفْطِرُ مِنَ الشَّهْرِ حَتَّى يُظَنَّ أَنْ لَا يَصُومَ مِنْهُ وَيَصُومُ حَتَّى يُظَنَّ أَنْ لَا يُفْطِرَ مِنْهُ شَيْئًا وَكَانَ لَا تَشَاءُ أَنْ تَرَاهُ مِنَ اللَّيْلِ مُصَلِّيًا إِلَّا رَأَيْتَهُ وَلَا نَائِمًا إِلَّا رَأَيْتَهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1241. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी महीने इस क़दर इफ्तार करते के हम ख्याल करते के आप इस माह रोज़ा नहीं रखेंगे और कभी इस क़दर रोज़े रखते हत्ता कि हम ख्याल करते के आप इस माह बिलकुल इफ्तार ही नहीं करेंगे ऐसे ही अगर आप को नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ते हुए देखना चाहो तो आप को नमाज़ पढ़ते हुए देख सकते हो और अगर तुम आप को सोया हुआ देखना चाहो तो सोया हुआ देख सकते हो’’| (बुखारी)

رواه البخارى (1141)

١٢٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحَبُّ الْأَعْمَالِ إِلَى الله أدومها وَإِن قل»

1242. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह को वह अमल सबसे ज़्यादा महबूब है जिस पर कायम हो ख्वाह वह मुख़्तस रही हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (43) و مسلم (215 / 782)، (1827)

١٢٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُذُوا مِنَ الْأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يمل حَتَّى تملوا»

1243. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ऐसे आमाल किया करो जिन की तुम ताकत रखते हो क्योंकि अल्लाह नहीं उकताता लेकिन तुम उकता जाओगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1151) و مسلم (220 / 785)، (1833)

١٢٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لِيُصَلِّ أَحَدُكُمْ نَشَاطَهُ وَإِذَا فَتَرَ فَلْيَقْعُدْ)

1244. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई शख़्स इतनी मुद्दत ही नमाज़ पढ़े जो रगबत और ख़ुशी के साथ पढ़ी जाए और जब थकान मालुम हो तो छोड़ कर बैठ जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1150) و مسلم (219 / 784)، (1831)

١٢٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ يُصَلِّي فَلْيَرْقُدْ حَتَّى يَذْهَبَ عَنْهُ النَّوْمُ فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا صَلَّى وَهُوَ نَاعِسٌ لَا يدْرِي لَعَلَّه يسْتَغْفر فيسب نَفسه»

1245. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से किसी को नमाज़ पढ़ते हुए ऊंघ आए तो वह सो जाए यहाँ तक के नींद पूरी हो जाए, क्योंकि जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ते हुए ऊंघ रहा हो तो इसे पता नहीं होता के वह मगफिरत तलब कर रहा है या अपने लिए बद्दुआ कर रहा है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (212) و مسلم (222 / 786)، (1835)

١٢٤٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ وَلَنْ يُشَادَّ الدِّينَ أَحَدٌ إِلَّا غَلَبَهُ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا وَاسْتَعِينُوا ص:٣٩ بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنَ الدُّلْجَةِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1246. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक दीन आसान है, जो शख़्स दीन पर सख्ती करेगा तो वह उस पर ग़ालिब आ जाएगा तुम मियाने रिवाय (संयम) इख़्तियार करो करीब रहो और खुशखबरी कबूल करो निज़ दिन के पहले पहर उस के आखिरी पहर और रात के कुछ वक़्त की इबादत के ज़रिए मदद तलब करो| (बुखारी)

رواه البخارى (39)

١٢٤٧ - (صَحِيح) وَعَن عمر رَضِي الله ع نه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَقَرَأَهُ فِيمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ الظُّهْرِ كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْل» . رَوَاهُ مُسلم

1247. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रात को अपना वज़ीफ़ा या उस का कुछ हिस्सा न कर सके तो फिर अगर वह नमाज़ ए फजर और नमाज़ ए ज़ुहर के दरमियान वही वज़ीफ़ा कर ले तो उस के लिए इतना ही सवाब लिख दिया जाता है गोया उस ने इसे रात के वक़्त किया है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (142 / 747)، (1745)

١٢٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَائِمًا فَإِنْ لَمْ تَسْتَطِعْ فَقَاعِدًا فَإِنْ لَمْ تستطع فعلى جنب» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1248. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खड़े हो कर नमाज़ पढ़ो अगर इस्तिताअत न हो तो फिर बैठ कर और अगर उसकी भी इस्तिताअत न हो तो फिर पहलु के बल नमाज़ पढ़ो| (बुखारी)

رواه البخارى (1117)

١٢٤٩ - (صَحِيح) وَعَن عمرَان بن حُصَيْن: أَنَّهُ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَلَاةِ الرَّجُلِ قَاعِدًا. قَالَ: «إِنْ صَلَّى قَائِمًا فَهُوَ أَفْضَلُ وَمَنْ صَلَّى قَاعِدًا فَلَهُ نِصْفُ أَجْرِ الْقَائِمِ وَمَنْ صَلَّى نَائِمًا فَلَهُ نصف أجل الْقَاعِد» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1249. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले शख़्स के बारे में नबी ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर वह खड़ा हो कर नमाज़ पढ़ता तो वह बेहतर है और जो शख़्स बैठ कर नमाज़ पढ़े तो उस के लिए खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने वाले से आधी अज़र है और जो शख़्स लेट कर नमाज़ पढ़े तो उस के लिए बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले से आधी अज़र है| (बुखारी)

رواه البخارى (1116)

بَاب الْقَصْد فِي الْعَمَل • आमाल में मियाना रवी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٢٥٠ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ طَاهِرًا وَذَكَرَ اللَّهِ حَتَّى يُدْرِكَهُ النُّعَاسُ لَمْ يَتَقَلَّبْ سَاعَةً مِنَ اللَّيْلِ يَسْأَلُ اللَّهَ فِيهَا خَيْرًا مِنْ خَيْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ» . ذَكَرَهُ النَّوَوِيُّ فِي كِتَابِ الْأَذْكَارِ بِرِوَايَةِ ابْنِ السّني

1250. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स बा वुज़ू बिस्तर पर लपटे और अल्लाह का ज़िक्र करते हुए सो जाए तो फिर वह रात को जब भी करवट बदलते हुए अल्लाह से दुनिया व आखिरत की खैर तलब करे तो अल्लाह इसे वही अता फरमा देता है”| इमाम नववी रहिमहुल्लाह ने इब्ने सुन्नी की रिवायत से “ किताब अज़कार” में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، ذكره النووى فى الاذكار (ص 88) و رواه ابن السنى (719 ، ونسخه الشيخ سليم الهلالى : 721) [و الترمذى (3526 وقال : حسن غريب)] * رواية اسماعيل بن عياش عن الحجازيين ضعيفة و للحديث شواهد دون قوله :'' ذكر الله حتى يدركه النعاس ''

١٢٥١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَجِبَ رَبُّنَا مِنْ رَجُلَيْنِ رَجُلٌ ثَارَ عَنْ وِطَائِهِ وَلِحَافِهِ مِنْ بَيْنِ حِبِّهِ ص:٣٩ وَأَهْلِهِ إِلَى صَلَاتِهِ فَيَقُولُ اللَّهُ لِمَلَائِكَتِهِ: انْظُرُوا إِلَى عَبْدِي ثَارَ عَنْ فِرَاشِهِ وَوِطَائِهِ مِنْ بَيْنِ حِبِّهِ وَأَهْلِهِ إِلَى صَلَاتِهِ رَغْبَةً فِيمَا عِنْدِي وَشَفَقًا مِمَّا عِنْدِي وَرَجُلٌ غَزَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَانْهَزَمَ مَعَ أَصْحَابِهِ فَعَلِمَ مَا عَلَيْهِ فِي الِانْهِزَامِ وَمَا لَهُ فِي الرُّجُوعِ فَرَجَعَ حَتَّى هُرِيقَ دَمُهُ فَيَقُولُ اللَّهُ لِمَلَائِكَتِهِ: انْظُرُوا إِلَى عَبْدِي رَجَعَ رَغْبَةً فِيمَا عِنْدِي وَشَفَقًا مِمَّا عِنْدِي حَتَّى هُرِيقَ دَمُهُ ". رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

1251. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारा रब दो आदमियों पर खुश होता है, एक वह शख़्स जो अपने नरम व गरम बिस्तर और अपने चहितो और अहल व अयाल में से उठ कर नमाज़ पढ़ता है, अल्लाह फरिश्तो से फरमाता है, मेरे इस बंदे को देखो के वह मेरे वहां जो अज्र व सवाब है उसकी रगबत और मेरे अज़ाब के खौफ की वजह से अपने नरम व गरम बिस्तर और अपने चहितो और अहल व अयाल से अलग हो कर नमाज़ के लिए उठा है और एक वह आदमी जो अल्लाह की राह में जिहाद करता है तो वह अपने साथियो समेत मैदान जंग से पीछे हट जाता है, लेकिन फिर यह जान कर के पीछे हटने पर इसे क्या गुनाह मिलेगा और पेश कदमी में उसे कितना सवाब मिलेगा तो वह पलट कर आता है हत्ता कि इसे शहीद कर दिया जाता है तो अल्लाह फरिश्तो से फरमाता है, मेरे इस बंदे को देखो के वह मुझ से मिलने वाले अज्र व सवाब की रगबत और मेरे अज़ाब के खौफ की वजह से पलट कर आया हत्ता कि इसे शहीद कर दिया गया”| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (4 / 42 ، 43 ح 930) [و احمد (1 / 416 و صححه ابن حبان (الموارد : 643) و القسم الثانى منه فى سنن ابى داود (2536) و سنده حسن]

आमाल में मियाना रवी का बयान • بَاب الْقَصْد فِي الْعَمَل

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٢٥٢ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: حُدِّثْتُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «صَلَاةُ الرَّجُلِ قَاعِدًا نِصْفُ الصَّلَاةِ» قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَوَجَدْتُهُ يُصَلِّي جَالِسًا فَوَضَعْتُ يَدِي عَلَى رَأسه فَقَالَ: «مَالك يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو؟» قُلْتُ: حُدِّثْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَّكَ قُلْتَ: «صَلَاةُ الرَّجُلِ قَاعِدًا عَلَى نِصْفِ الصَّلَاةِ» وَأَنْتَ تُصَلِّي قَاعِدًا قَالَ: «أَجَلْ وَلَكِنِّي لَسْتُ كَأَحَدٍ مِنْكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

1252. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मुझे किसी ने बताया की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी का बैठ कर नमाज़ पढ़ना आधी नमाज़ की तरह है”, वह बयान करते हैं, मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप को बैठ कर नमाज़ पढ़ते हुए पाया तो मैंने अपना हाथ आप के सर पर रख दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्दुल्लाह बिन अम्र तुम्हें क्या हुआ ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताया गया के आप ﷺ ने फ़रमाया है “ आदमी का बैठ कर नमाज़ पढ़ना आधी नमाज़ की तरह है” जब के आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “ठीक है, लेकिन में तुम में से किसी की तरह नहीं हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (120 / 735)، (1715)

١٢٥٣ - (صَحِيح) وَعَن سَالم بن أبي الْجَعْد قَالَ: قَالَ رَجُلٌ مِنْ خُزَاعَةَ: لَيْتَنِي صَلَّيْتُ فَاسْتَرَحْتُ فَكَأَنَّهُمْ عَابُوا ذَلِكَ عَلَيْهِ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «أَقِمِ الصَّلَاةَ يَا بِلَالُ أَرِحْنَا بِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1253. सालिम बिन अबी जअद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, खुज़ाअत कबिले के एक आदमी ने कहा: काश में नमाज़ पढ़ कर राहत हासिल करता गोया उन्होंने (यानी हाज़िरिन मजलिस) ने उसकी इस बात को मायूब जाना (इस पर) उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बिलाल नमाज़ के लिए इकामत कहो और उस के ज़रिए हमें राहत पहुंचे आओ”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4985)



बَاب الْوتر • वित्र का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٢٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمُ الصُّبْحَ صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَة توتر لَهُ مَا قد صلى»

1254. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: रात की नमाज़ दो दो रक्अत है, जब तुम में से किसी को सुबह हो जाने का अंदेशा हो तो वह एक रक्अत पढ़ ले तो वह उसकी नमाज़ को वित्र टाक बना देगी"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (990) و مسلم (145 / 749)، (1748)

١٢٥٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوَتْرُ رَكْعَةٌ مِنْ آخر اللَّيْل» . رَوَاهُ مُسلم

1255. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वितर (की नमाज़) रात के आखिरी हिस्से की एक रक्अत है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (153 / 752)، (1757)

١٢٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً يُوتِرُ مِنْ ذَلِكَ بِخَمْسٍ لَا يَجْلِسُ فِي شَيْءٍ إِلَّا فِي آخرهَا "

1256. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तेरह रक्अत नमाज़ ए तहज्जुद पढ़ा करते थे उनमें से पांच वित्र पढ़ते और तशहहुद के लिए सिर्फ आखिरी रक्अत में बैठते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1140) و مسلم (123 / 737)، (1720)

١٢٥٧ - (صَحِيح) وَعَن سعد بن هِشَام قَالَ انْطَلَقْتُ إِلَى عَائِشَةَ فَقُلْتُ يَا أَمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَنْبِئِينِي عَنْ خُلُقِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: أَلَسْتَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟ قُلْتُ: بَلَى. قَالَتْ: فَإِنَّ خُلُقَ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ الْقُرْآنَ. قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَنْبِئِينِي عَنْ وَتْرِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: كُنَّا نُعِدُّ لَهُ سِوَاكَهُ وَطَهُورَهُ فَيَبْعَثُهُ اللَّهُ مَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَهُ مِنَ اللَّيْلِ فَيَتَسَوَّكُ وَيَتَوَضَّأُ وَيُصَلِّي تِسْعَ رَكَعَاتٍ لَا يَجْلِسُ فِيهَا إِلَّا فِي الثَّامِنَةِ فَيَذْكُرُ اللَّهَ وَيَحْمَدُهُ وَيَدْعُوهُ ثُمَّ يَنْهَضُ وَلَا يُسَلِّمُ ص:٣٩ فَيُصَلِّي التَّاسِعَةَ ثُمَّ يَقْعُدُ فَيَذْكُرُ اللَّهَ وَيَحْمَدُهُ وَيَدْعُوهُ ثُمَّ يُسَلِّمُ تَسْلِيمًا يُسْمِعُنَا ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ بَعْدَمَا يُسَلِّمُ وَهُوَ قَاعد فَتلك إِحْدَى عشرَة رَكْعَة يابني فَلَمَّا أَسَنَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخَذَ اللَّحْم أَوْتَرَ بِسَبْعٍ وَصَنَعَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ

مِثْلَ صَنِيعِهِ فِي الْأُولَى فَتِلْكَ تِسْعٌ يَا بُنَيَّ وَكَانَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى صَلَاةً أَحَبَّ أَنْ يُدَاوِمَ عَلَيْهَا وَكَانَ إِذَا غَلَبَهُ نَوْمٌ أَوْ وَجَعٌ عَنْ قِيَامِ اللَّيْلِ صَلَّى مِنَ النَّهَارِ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً وَلَا أَعْلَمُ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ الْقُرْآنَ كُلَّهُ فِي لَيْلَةٍ وَلَا صَلَّى لَيْلَةً إِلَى الصُّبْحِ وَلَا صَامَ شهرا كَامِلا غير رَمَضَان. رَوَاهُ مُسلم

1257. सईद बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया तो मैंने अर्ज़ किया: उम्मुल मुअमिनिन रसूलुल्लाह ﷺ के अख़लाक़ के मुतल्लिक मुझे बताइए उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम कुरान नहीं पढ़ते मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं ज़रूर पढ़ता हूँ उन्होंने ने फ़रमाया: नबी ﷺ का अख़लाक़ कुरा रही था मैंने अर्ज़ किया: उम्मुल मुअमिनिन रसूलुल्लाह ﷺ के वित्र के मुतल्लिक मुझे बताइए, उन्होंने ने फ़रमाया: हम आप ﷺ के लिए आप की मिस्वाक और वुज़ू के पानी का इंतेज़ाम करते, फिर जब अल्लाह चाहता तो आप को रात के वक़्त जगा देता, आप मिस्वाक करते और वुज़ू करते और नौ रकते पढ़ते और आप सिर्फ आठवी रक्अत में (तशह्हुद) बैठते थे, आप ﷺ अल्लाह का ज़िक्र करते उसकी हम्द बयान करते और उस से दुआ करते, फिर आप सलाम फेरे बगैर खड़े हो जाते और नववी रक्अत पढ़ते फिर बैठ जाते, अल्लाह का ज़िक्र करते, उसकी हम्द बयान करते और उस से दुआ करते, फिर सलाम फेरते तो हमें सुनाते, फिर सलाम फेरने के बाद बैठ कर दो रकते पढ़ते, बेटा यह ग्यारह रकते हुई, जब आप ﷺ बूढ़े हो गए और जिस्म भारी हो गया तो आप ने सात रकते वित्र पढ़ी और दो रकते वैसे ही बैठ कर पढ़ी जैसे (बूढ़े होने से) पहले पढ़ते थे, पस बेटा यह नौ हो गई और जब नबी ﷺ नमाज़ पढ़ते तो उस पर कायम इख़्तियार करना आप को बहोत पसंद था और जब कभी नींद के गलबे या किसी तकलीफ की वजह से नमाज़ ए तहज्जुद न पढ़ते, तो फिर आप दिन के वक़्त बारह रकते पढ़ते थे और मैं नहीं जानती के नबी ﷺ ने एक रात में पूरा कुरान पढ़ा हो, या आप ने पूरी रात तहज्जुद पढ़ी हो या आप ﷺ ने रमज़ान के अलावा पूरा महीने रोज़े रखे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (139 / 746)، (1739)

١٢٥٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اجْعَلُوا آخِرَ صَلَاتِكُمْ بِاللَّيْلِ وترا» . رَوَاهُ مُسلم

1258. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वितर को अपने आखिरी नमाज़ बनाओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (151 / 751)، (1755)

١٢٥٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بَادِرُوا الصُّبْح بالوتر» . وَرَاه مُسلم

1259. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुबह हो जाने से पहले वित्र पढ़ने में जल्दी करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 / 750)، (1753)

١٢٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَافَ أَنْ لَا يَقُومَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوتِرْ أَوَّلَهُ وَمَنْ طَمِعَ أَنْ يَقُومَ آخِرَهُ فَلْيُوتِرْ آخِرَ اللَّيْلِ فَإِنَّ صَلَاةَ آخِرِ اللَّيْلِ مَشْهُودَةٌ وَذَلِكَ أَفْضَلُ» . رَوَاهُ مُسلم

1260. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को अंदेशा हो के वह रात के आखिरी हिस्से में नहीं उठ सकेगा तो वह रात के अव्वल हिस्से में वित्र पढ़ ले और जिसे रात के आखिरी हिस्से में जागने की उम्मीद हो तो वह रात के आखिरी हिस्से में वित्र पढ़े, क्योंकि रात के आखिरी हिस्से में पढ़ी जाने वाली नमाज़ के वक़्त फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और यह अफ़ज़ल है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (162 / 755)، (1766)

١٢٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مِنْ كُلِّ اللَّيْلِ أَوْتَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَوَّلِ اللَّيْلِ وَأَوْسَطِهِ وَآخِرِهِ وَانْتَهَى وَتْرُهُ إِلَى السَّحَرِ

1261. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रात के तमाम अवकात में वित्र पढ़ी है, रात के अव्वल हिस्से में, उस के बिच में, उस के आखिरी हिस्से में और आखिरी दौर में आप की नमाज़ वितर, सहरी (आखरी शब) के वक़्त होती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (996) و مسلم (136 / 745)، (1736)

١٢٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيلِي بِثَلَاثٍ: صِيَامِ ثَلَاثَةِ أَيَّام من كل شهر وركعتي الضُّحَى وَأَن أوتر قبل أَن أَنَام

1262. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे खलील ﷺ ने मुझे तीन कामो का हुक्म फ़रमाया: हर माह तीन दिन के रोज़े रखने, चाश्त की दो रकते पढ़ने और सोने से पहले वित्र पढ़ने का हुक्म फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1981) و مسلم (85 / 721)، (1672)

वित्र का बयान • بَاب الْوتر

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

١٢٦٣ - (صَحِيح) عَن غُضَيْف بن الْحَارِث قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَرَأَيْتِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَغْتَسِلُ مِنَ الْجَنَابَةِ فِي أَوَّلِ اللَّيْلِ أَمْ فِي آخِرِهِ؟ قَالَتْ: رُبَّمَا اغْتَسَلَ فِي أَوَّلِ اللَّيْلِ وَرُبَّمَا اغْتَسَلَ فِي آخِرِهِ قُلْتُ: اللَّهُ أَكْبَرُ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي

جَعَلَ فِي الْأَمْرِ سَعَةً قُلْتُ: كَانَ يُوتِرُ أَوَّلَ اللَّيْلِ أَمْ فِي آخِرِهِ؟ قَالَتْ: رُبَّمَا أَوْتَرَ فِي أَوَّلِ اللَّيْلِ وَرُبَّمَا أَوْتَرَ فِي آخِرِهِ قُلْتُ: اللَّهُ أَكْبَرُ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الْأَمْرِ سَعَةً قُلْتُ: كَانَ يَجْهَرُ بِالْقِرَاءَةِ أَمْ يَخْفُتُ؟ قَالَتْ: رُبَّمَا جَهَرَ بِهِ وَرُبَّمَا خَفَتَ قُلْتُ: اللَّهُ أَكْبَرُ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ فِي الْأَمْرِ سَعَةً. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ الْفَصْلَ الْأَخِيرَ

1263. गुजैफ़ बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया, मुझे बताइए, रसूलुल्लाह ﷺ गुस्ल ए जनाबत रात के अव्वल हिस्से में करते थे या रात के आखिरी हिस्से? में उन्होंने ने फ़रमाया: कभी रात के पहले हिस्से में गुस्ल किया और कभी रात के पिछले हिस्से में, मैंने कहा: अल्लाहु अकबर, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने दीन में वुसअत रखी, मैंने पूछा आप ﷺ रात के अव्वल हिस्से में वित्र पढ़ा करते थे या रात के आखिरी हिस्से में उन्होंने ने फ़रमाया: आप ने कभी रात के अव्वल हिस्से में वित्र पढ़ी और कभी रात के आखिरी हिस्से, मैं मैंने कहा: अल्लाहु अकबर, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने दीन में वुसअत रखी, मैंने पूछा आप ﷺ नमाज़ ए तहज्जुद में बुलंद आवाज़ से किराअत करते थे या पस्त आवाज़ से उन्होंने फ़रमाया कभी बुलंद आवाज़ से और कभी पस्त आवाज़ से, मैंने कहा: अल्लाहु अकबर, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने दीन में वुसअत रखी"| अबू दावुद, और इब्ने माजा ने आखिरी बात रिवायत की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (226) و ابن ماجه (1354) [و النسائی (1 / 125 ، 126 ح 223 ، 224 و ، 1 / 199 ح 405]

١٢٦٤ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن أبي قيس قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: بِكَمْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوتِرُ؟ قَالَتْ: كَانَ يُوتِرُ بِأَرْبَعٍ وَثَلَاثٍ وَسِتٍّ وَثَلَاثٍ وَثَمَانٍ وَثَلَاثٍ وَعَشْرٍ وَثَلَاثٍ وَلَمْ يَكُنْ يُوتِرُ بِأَنْقَصَ مِنْ سَبْعٍ وَلَا بِأَكْثَرَ مِنْ ثَلَاث عشرَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1264. अब्दुल्लाह बिन अबी कैस रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया रसूलुल्लाह ﷺ कितनी रकते वित्र पढ़ा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: चार और तीन (सात), छे और तीन (नौ), आठ और तीन (ग्यारह) और दस और तीन (तेरह) रक्अत वित्र पढ़ा करते थे आप सात से कम और तेरह से ज़्यादा रकते नहीं पढ़ा करते थे| (सहीह)

سنده صحیح ، رواه ابوداؤد (1362) [و صححه ابن الملقن فی تحفة المحتاج : 445]

١٢٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوَتْرُ حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوتِرَ بِخَمْسٍ فَلْيَفْعَلْ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوتِرَ بِثَلَاثٍ فَلْيَفْعَلْ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُوتِرَ بِوَاحِدَةٍ فَلْيَفْعَلْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1265. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वितर हर मुसलमान पर वाजिब है, जिसे पसंद हो के वह पांच वित्र पढ़े तो वह पांच पढ़े, जो तीन पढ़ना पसंद करे तो वह तीन पढ़े और जिसे एक वित्र पढ़ना पसंद हो तो वह एक पढ़े"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1422) و النسائی (3 / 238 ، 239 ح 1711 ، 1714) و ابن ماجه (1190) [و صححه الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 302) و وافقه الذهبی]

١٢٦٦ - (حسن) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ وَتْرٌ يُحِبُّ الْوَتْرَ فَأَوْتِرُوا يَا أَهْلَ الْقُرْآنِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

1266. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह वित्र (अपनी ज़ात व सिफात में यक्ता) है, वह वित्र को पसंद फरमाता है, पस हामिलिन कुरान वित्र पढ़ा करो”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذى (453 وقال : حسن) و ابوداؤد (1416) و النسائى (3 / 228 ح 1676) [و ابن ماجه : 1169] * ابو اسحاق السبيعى مدلس و عنعن

١٢٦٧ - (ضَعِيف) وَعَن خَارِجَة بن حذافة قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: " إِنَّ اللَّهَ أَمَدَّكُمْ بِصَلَاةٍ هِيَ خَيْرٌ لَكُمْ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ: الْوَتْرُ جَعَلَهُ اللَّهُ لَكُمْ فِيمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى أَنْ يَطْلُعَ الْفَجْرُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

1267. ख़ारिजा बिन हुज़ाफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ने तुम्हें एक मज़ीद नमाज़ दी है और वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊटों से बेहतर है और वह नमाज़ वित्र है जिसे अल्लाह ने नमाज़ ए ईशा और तुलुअ ए फज्र के बिच में पढ़ना मुकर्रर किया है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (452 وقال : غريب) و ابوداؤد (1418) [و ابن ماجه : 1168] * عبدالله بن راشد الزوفى لا يعرف سماعه من عبدالله بن ابى مرة الزوفى فالسند منقطع و قال ابن حبان : اسناده منقطع و متن باطل(كتاب الثقات 5 / 45) و حديث احمد (6 / 7) :’’ ان الله زادكم صلوة هى الوتر فصلوها بين العشاء و الى صلوة الفجر‘‘ سنده صحيح وهو يغنى عنه

١٢٦٨ - (حسن) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ نَامَ عَنْ وَتْرِهِ فَلْيُصَلِّ إِذَا أَصْبَحَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ مُرْسلا

1268. ज़ैद बिन असलम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वित्र पढ़ना भूल जाए तो वह सुबह होने के बाद वित्र पढ़े”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (466) * السند مرسل و للحديث شواهد (انظر ح 1279)

١٢٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: سَأَلْنَا عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا بِأَيِّ شَيْءٍ كَانَ يُوتِرُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: كَانَ يَقْرَأُ فِي الْأُولَى بِ (سَبِّحِ اسْم رَبك الْأَعْلَى)»» وَفِي الثَّانِيَةِ بِ (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ)»» وَفِى الثَّالِثَةِ بِ (قُلْ هُوَ اللَّهُ أحد)»» والمعوذتين وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

1269. अब्दुल अज़ीज़ बिन जुरैज़ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त

किया, रसूलुल्लाह ﷺ वित्र में कौन सी सूरते पढ़ा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: आप पहली रक्अत में अल अअला दूसरी में अल काफिरून और तीसरी में अल इखलास और मुअव्वीज़तेन पढ़ा करते थे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (463 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (1424) [و ابن ماجه : 1173] * خصيف ضعيف ضعفه الجمهور و للحديث شواهد دون قوله :'' و المعوذتين ''۔

١٢٧٠ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى

1270. इमाम नसई रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को अब्दुल रहमान बिन अब्ज़ा से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (3 / 244 ح 1732)

١٢٧١ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ألأحمد عَن أبي بن كَعْب

1271. इमाम अहमद रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (5 / 123 ح 21460)

١٢٧٢ - (صَحِيح) والدارمي عَن ابْن عَبَّاس وَلم يذكرُوا والمعوذتين

1272. इमाम दारमी ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु और अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने " मुअव्वीज़तेन" का ज़िक्र नहीं किया| (सहीह)

صحيح ، رواه الدارمى (1 / 372 ح 1594) [و ابن ماجه (1172) و الترمذى (462) و النسائى (3 / 236 ح 1703 ، 1704)]

١٢٧٣ - (صَحِيح) وَعَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَلِمَاتٍ أَقُولُهُنَّ فِي قُنُوتِ الْوَتْرِ: «اللَّهُمَّ اهدني فِيمَن هديت وَعَافِنِي فِيمَن عافيت وتولني فِيمَن توليت وَبَارك لي فِيمَا أَعْطَيْت وقني شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْك أنه لَا يذل من واليت تَبَارَكت رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1273. हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे कुछ कलिमात सिखाए जिन को में कुनुते वित्र में पढ़ता हूँ, " अल्लाह मुझे हिदायत दे कर उन लोगों के ज़ुमरे में शामिल फरमा जिन्हे, तूने हिदायत से नवाज़ा और मुझे भी (उन लोगों में आफियत अता फरमा जिन को तूने आफियत अता की जिन लोगों को तूने अपना दोस्त बनाया है जिन में मुझे भी शामिल कर के अपना दोस्त बना ले जो कुछ तूने मुझे अता फ़रमाया है

उस में मेरे लिए बरकत डाल दे जिस शरकातो ने फैसला फ़रमाया है उस से मुझे बचा ले बेशक, तू ही हमारा फैसला सादिर फरमाता है तेरे खिलाफ फैसला सादिर नहीं किया जा सकता और जिसका तू वाली व सरपरस्त बना वह कभी रुसवा नहीं हो सकता हमारे रब तू बड़ा ही बरकत वाला और बुलंद व बाला है"| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (464 وقال : حسن) و ابوداؤد (1425) و النسائی (3 / 248 ح 1746) و ابن ماجہ (1178) و الدارمی (1 / 373 ، 374 ح 1601) [و صححہ ابن خزیمہ : 1095 ، 1096]

١٢٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَلَّمَ فِي الْوتر قَالَ: «سُبْحَانَكَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَزَادَ: ثَلَاث مَرَّات يُطِيل فِي آخِرهنَّ

1274. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ वित्र पढ़ कर सलाम फेरते तो आप ﷺ फरमाते ((سُبْحَانَكَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ) " पाक है बादशाह निहायत पाक"| अबू दावुद, नसई, और उन्होंने यह इज़ाफा किया है तीन मर्तबा लम्बी आवाज़ से फरमाते| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (1430) و النسائی (3 / 235 ح 1700)

١٢٧٥ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِلنَّسَائِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ يَقُولُ إِذَا سَلَّمَ: «سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ» ثَلَاثًا وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ بالثالثة

1275. और अब्दुल रहमान बिन अब्ज़ा अन अबी की सनद से नसई की रिवायत में है जब आप ﷺ सलाम फेरते तो तीन मर्तबा ((سُبْحَانَكَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ) फरमाते और तीसरी मर्तबा अपने आवाज़ बुलंद फरमाते | (सहीह)

صحیح ، رواہ النسائی (3 / 245 ح 1735)

١٢٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ فِي آخِرِ ص:٣٩ وِتْرِهِ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ من سخطك وبمعافاتك من عُقُوبَتك وَأَعُوذ بك مِنْكَ لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1276. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ वित्र के आख़िर पर यह दुआ किया करते थे: "अल्लाह मैं तेरी रज़ा के ज़रिए तेरी नाराज़ी से तेरे दरगुज़र के ज़रिए तेरी सज़ा से पनाह चाहता हूँ, मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ, जैसी तूने अपने ज़ात की सना फरमाई है जैसे में कोशिश के बावजूद तेरी सना बयान नहीं कर सकता"| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (1427) و الترمذی (3566 وقال : حسن غریب) و النسائی (3 / 248 ، 249 ح 1748) و ابن ماجہ (1179)



वित्र का बयान — بَاب الْوتر

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

١٢٧٧ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قِيلَ لَهُ: هَلْ لَكَ فِي أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ مُعَاوِيَة فَإِنَّهُ مَا أَوْتَرَ إِلَّا بِوَاحِدَةٍ؟ قَالَ: أَصَابَ إِنَّهُ فَقِيهٌ»» وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: أَوْتَرَ مُعَاوِيَةُ بَعْدَ الْعِشَاءِ بِرَكْعَةٍ وَعِنْدَهُ مَوْلًى لِابْنِ عَبَّاسٍ فَأَتَى ابْنَ عَبَّاسٍ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: دَعْهُ فَإِنَّهُ قَدْ صَحِبَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1277. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से पूछा गया क्या अमीर अल मोमिनीन मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के बारे में आप के पास कोई जवाब या फ़तवा है? के वह सिर्फ एक वित्र पढ़ते हैं उन्होंने ने फ़रमाया: वह दुरुस्त है क्योंकि वह एक फ़की शख़्स है और एक दूसरी रिवायत में है इब्ने मुलयका रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: मुआविया ने नमाज़ ए ईशा के बाद एक रक्अत वित्र पढ़ी और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के आज़ाद करदा गुलाम आप के पास थे उन्होंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के पास आकर उन्हें बताया तो उन्होंने ने फ़रमाया: उन्हें छोड़ दो क्योंकि उन्हें नबी ﷺ की सोहबत इख़्तियार करने का सोभाग्य (सम्मान) हासिल है?| (बुखारी)

رواه البخارى (3765)

١٢٧٨ - (ضَعِيف) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْوَتْرُ حَقٌّ فَمَنْ لَمْ يُوتِرْ فَلَيْسَ مِنَّا الْوَتْرُ حَقٌّ فَمَنْ لَمْ يُوتِرْ فَلَيْسَ مِنَّا الْوَتْرُ حَقٌّ فَمَنْ لَمْ يُوتِرْ فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1278. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “वितर हक़ वाजिब है? जो शख़्स वित्र न पढ़े वह हम में से नहीं? वित्र हक़ है, पस जो शख़्स वित्र न पढ़े वह हम में से नहीं? वित्र हक़ है जिस जो शख़्स वित्र न पढ़े वह हम में से नहीं ?”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1419) * فيه ابو المنيب عبيدالله بن عبدالله العتكى : حسن الحديث فى غير ما انكر عليه ، و هذا الحديث مما انكر عليه

١٢٧٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من نَام عَن الْوِتْرِ أَوْ نَسِيَهُ فَلْيُصَلِّ إِذَا ذَكَرَ أَوْ إِذَا اسْتَيْقَظَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ»» أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1279. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नींद या भूल की वजह से वित्र न पढ़े तो जब इसे याद आए या जब वह बेदार हो तो वित्र पढ़ ले”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (465) و ابوداؤد (1431) و ابن ماجه (1188) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (1 / 302) و وافقه الذهبى و للحديث طرق]

١٢٨٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ مَالِكٍ بَلَغَهُ أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ ابْنَ عُمَرَ عَنِ الْوِتْرِ: أَوَاجِبٌ ص:٤٠ هُوَ؟ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: قَدْ أَوْتَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَوْتَرَ الْمُسْلِمُونَ. فَجَعَلَ الرَّجُلُ يُرَدِّدُ عَلَيْهِ وَعَبْدُ اللَّهِ يَقُولُ: أَوْتَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَوْتَرَ الْمُسْلِمُونَ. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

1280. मालिक रहिमहुल्लाह को रिवायत पहुंची के किसी शख़्स ने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से वित्र के बारे में दरियाफ्त किया क्या यह वाजिब है, तो अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने वित्र पढ़े और मुसलमानों ने भी वित्र पढ़े वह आदमी बार बार मुझ से पूछता रहा और अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु हमें जवाब देते रहे रसूलुल्लाह ﷺ ने वित्र पढ़े और मुसलमानों ने भी वित्र पढ़े | (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه مالك (1 / 124 ح 270) [و للاثر شواهد عند احمد (2 / 29 ، 58) وغيره] * السند منقطع لانه من البلاغات ، و روى احمد (3 / 29 ح 4834) بسند صحيح عن مسلم بن مخراق القرى قال قال رجل لابن عمرؓاريت الوتر اسنة هو ؟ قال : ما سنة ؟ اوتر رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم و اوتر المسلمون ، قال لا اسنة هو ؟ قال معه تعقل ؟ اوتر رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم و اوتر المسلمون ، (و سند صحيح)

١٢٨١ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوتِرُ بِثَلَاثٍ يَقْرَأُ فِيهِنَّ بِتِسْعِ سُوَرٍ مِنَ الْمُفَصَّلِ يَقْرَأُ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ بِثَلَاثِ سُوَرٍ آخِرُهُنَّ: (قل هوا لله أحد)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1281. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तीन वित्र पढ़ा करते थे और उनमें हर रक्अत में तीन सूरतो के हिसाब से मुफ़स्सल सूरतो में से नौ सूरते पढ़ा करते थे और सबसे आख़िर पर सुरह इखलास पढ़ा करते थे | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (460) * فيه الحارث الاعور وهو ضعيف جدًا

١٢٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: كُنْتُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ بِمَكَّةَ وَالسَّمَاءُ مُغَيِّمَةٌ فَخَشِيَ الصُّبْحَ فَأَوْتَرَ بِوَاحِدَةٍ ثُمَّ انْكَشَفَ فَرَأَى أَنَّ عَلَيْهِ لَيْلًا فَشَفَعَ بِوَاحِدَةٍ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ فَلَمَّا خَشِيَ الصُّبْح أوتر بِوَاحِدَة. رَوَاهُ مَالك

1282. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के साथ मक्का मैं था आसमान अबरा आलूद था उन्होंने सुबह के अंदेशे के पेशे नज़र एक रक्अत वित्र पढ़ा फिर जब मौसम साफ़ हो गया तो उन्होंने देखा के अभी तो रात बाकी है, तो उन्होंने एक रक्अत पढ़ कर नमाज़ को जुफ्त बना लिया फिर उन्होंने दो रकते तहज्जुद पढ़ी फिर जब सुबह होने का अंदेशा हुआ तो उन्होंने एक रक्अत वित्र पढ़ा | (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالك (1 / 125 ح 272)

١٢٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّي جَالِسًا فَيَقْرَأُ وَهُوَ جَالِسٌ فَإِذَا بَقِيَ مِنْ قِرَاءَتِهِ قَدْرُ مَا يَكُونُ ثَلَاثِينَ أَوْ أَرْبَعِينَ آيَةً قَامَ وَقَرَأَ وَهُوَ قَائِمٌ ثُمَّ رَكَعَ ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ يَفْعَلُ فِي الرَّكْعَةِ الثَّانِيَةِ مِثْلَ ذَلِكَ. رَوَاهُ مُسلم

1283. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ बैठ कर नमाज़ पढ़ते हुए किराअत करते थे फिर जब तीस या चालीस आयात के बराबर तिलावत बाकी रह जाती तो आप खड़े हो जाते और खड़े हो कर किराअत करते फिर रुकू करते फिर सजदाह् करते और फिर दूसरी रक्अत मैं भी इसी तरह करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (112 / 731)، (1705)

١٢٨٤ - (صَحِيحٍ) وَعَنْ أُمُّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَانَ يُصَلِّي بَعْدَ الْوِتْرِ رَكْعَتَيْنِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ ابْنُ مَاجَه: خفيفتين وَهُوَ جَالس

1284. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ वित्र के बाद दो रकते पढ़ा करते थे| तिरमिज़ी, और इब्ने माजा ने यह इज़ाफा नकल किया है आप ﷺ बैठ कर ही दो खफिफ रकते पढ़ा करते थे | (सहीह्)

صحيح ، رواه الترمذی (471) و ابن ماجه (1195)

١٢٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوتِرُ بِوَاحِدَةٍ ثُمَّ يَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ يَقْرَأُ فِيهِمَا وَهُوَ جَالِسٌ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَرَكَعَ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1285. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ एक वित्र पढ़ा करते थे फिर आप बैठ कर दो रकते पढ़ते और जब आप रुकू करना चाहते तो फिर खड़े हो कर रुकू करते थे | (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (1196) [و مسلم : 126 / 738، (1724)]

١٢٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَوْبَانَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ هَذَا السَّهَرَ جُهْدٌ وَثِقَلٌ فَإِذَا أَوْتَرَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ فَإِنْ قَامَ مِنَ اللَّيْلِ وَإِلَّا كَانَتَا لَهُ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

1286. सौबान रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये बेदारी एक मुश्किल और गिराह काम है, जब तुम में से कोई शख़्स वित्र पढ़ ले तो वह दो रक्अत अदा करे अगर वह रात के वक़्त बेदार हो जाए तो फिर वह नमाज़ ए तहज्जुद पढ़े वरना वह दो रकते उस के लिए काफी होगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (1 / 374 ح 1602) [و صححه ابن خزيمة (1106) و ابن حبان (الموارد : 683)] * قوله :’’ السهر ‘‘ و عند ابن خزيمة و ابن حبان و غيرهما :’’ السفر ‘‘ فالحديث يتعلق بالسهر و الله اعلم

١٢٨٧ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّيهِمَا بَعْدَ الْوِتْرِ وَهُوَ جَالس يقْرَأ فيهمَا (إِذا زلزلت)»» و (قل يَا أَيهَا الْكَافِرُونَ)»» رَوَاهُ أَحْمد

1287. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ यह दो रकते वितरो के बाद बैठ कर अदा करते थे और आप उनमें सूरत अल ज़ुलज़ला और सूरत अल काफिरून पढ़ा करते थे | (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 260 ح 22601)

بَاب الْقُنُوت • कुनूत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٢٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَدْعُوَ عَلَى أَحَدٍ أَوْ يَدْعُوَ لِأَحَدٍ قَنَتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ فَرُبَّمَا قَالَ إِذَا قَالَ: " سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ: اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيد بن الْوَلِيد وَسَلَمَة ابْن هِشَام وَعَيَّاش بن رَبِيعَةَ اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ وَاجْعَلْهَا سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ " يَجْهَرُ بِذَلِكَ وَكَانَ يَقُولُ فِي بَعْضِ صَلَاتِهِ: " اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلَانًا وَفُلَانًا لِأَحْيَاءٍ مِنَ الْعَرَبِ حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ: (لَيْسَ لَك من الْأَمر شَيْء)»» الْآيَة)

1288. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब दोरान नमाज़ किसी के लिए बद्दुआ या किसी के लिए दुआ का इरादा फरमाते, तो आप रुकू के बाद दुआ करते बसा-अवक़ात जब आप ((समिअल्लाहू लीमन हमीदह रब्बना लकल हम्द)) फरमाते तो फिर यूँ दुआ फरमाते: “अल्लाह वलीद बिन वलीद सलमा बिन हिश्शाम और अय्याश बिन अबी रबिआ रदियल्लाहु अन्हु को कुफ्फार की क़ैद से) रिहाई अता फरमा ऐ अल्लाह! कबिले मुज़िर की सख्त गिरफ्त फरमा इन पर युसूफ अलैहिस्सलाम के दौर जैसे कहत मुसल्लत फरमा”, आप बुलंद आवाज़ से यह दुआ किया करते थे और आप ﷺ बाज़ नमाज़ो में ऐसे भी कहा करते थे: “अल्लाह अरब के फलां फलां कबिले पर लानत फरमा”, हत्ता कि अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमा दिया: “आप को इस मुआमले में कोई इख़्तियार हासिल नहीं ?”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (4590) و مسلم (294 / 675)، (1540)

١٢٨٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَاصِم الْأَحول قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ الْقُنُوتِ فِي الصَّلَاةِ كَانَ قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: قَبْلَهُ إِنَّمَا قَنَتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدُ الرُّكُوعِ شَهْرًا إِنَّهُ كَانَ بَعَثَ أُنَاسًا يُقَالُ لَهُمْ الْقُرَّاءُ سَبْعُونَ رَجُلًا فَأُصِيبُوا فَقَنَتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدُ الرُّكُوعِ شَهْرًا يَدْعُو عَلَيْهِمْ

1289. आसिम अहवल रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से नमाज़ में कुनुत के मुतल्लिक दरियाफ्त किया के वह रुकू से पहले थी या उस के बाद उन्होंने ने फ़रमाया: रुकू से पहले था

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्ज़ नमाज़ में रुकू के बाद सिर्फ एक माह कुनुत किया वह इसलिए के आप ﷺ ने सत्तर सहाबा किराम को जो के कुर्रा के नाम से मशहूर थे भेजा तो उन्हें शहीद कर दिया गया रसूलुल्लाह ﷺ ने रुकू के बाद एक माह तक कुनुत किया और उन के कातिलो के लिए बद्दुआ करते रहे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1002) و مسلم (301 / 677)، (1549)

بَاب الْقُنُوت • कुनूत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٢٩٠ - (حسن) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَنَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَهْرًا مُتَتَابِعًا فِي الظّهْر وَالْعصر وَالْمغْرب وَالْعشَاء وَصَلَاة الصُّبْح إِذا قَالَ: «سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ» مِنَ الرَّكْعَةِ الْآخِرَة يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مَنْ بَنِي سُلَيْمٍ: عَلَى رِعْلٍ وَذَكْوَانَ وَعُصَيَّةَ وَيُؤَمِّنُ مَنْ خَلْفَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1290. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए ज़ुहर असर मग़रिब ईशा और फज्र की आखिरी रक्अत में रुकू के बाद एक माह तक मुसलसल दुआएं कुनुत फरमाई आप ﷺ बनू सलीम रीअल ज़क्वान और उसय्यत क़बीलो के लिए बद्दुआ करते थे और जो आप के पीछे होते थे वह आमीन कहते थे| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1443) [و صححه ابن خزیمة (618) و الحاکم علی شرط البخاری (1 / 225) و وافقه الذھبی]* و للحدیث شواھد عند الدارقطنی (2 / 37 ، 1671) و غیره

١٢٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَنَتَ شَهْرًا ثُمَّ تَرَكَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1291. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक माह तक दुआएं कुनुत फरमाई फिर इसे तर्क कर दिया | (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (1445) و النسائی (2 / 204 ح 1080) [و مسلم : 300 / 677، (1548) مختصرًا]

١٢٩٢ - (صَحِيح) وَعَن أبي مَالك الْأَشْجَعِيّ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي: يَا أَبَتِ إِنَّكَ قَدْ صليت خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بكر وَعمر وَعُثْمَان وَعلي هَهُنَا بِالْكُوفَةِ نَحْوًا مِنْ خَمْسِ سِنِينَ أَكَانُوا يَقْنُتُونَ؟ قَالَ: أَيْ بُنَيَّ مُحْدَثٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْن مَاجَه

1292. अबू मालिक अश्जईय्य रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अपने वालिद से कहा: अब्बा जान आप ने रसूलुल्लाह ﷺ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के पीछे मदीना

में और तकरीबन पांच साल यहाँ कुफा में अली रदियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़े पढ़ी है क्या यह कुनुत किया करते थे उन्होंने ने फ़रमाया: बेटा यह मुसलसल करते रहना बिदअत है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (402 وقال : حسن صحيح) و النسائی (2 / 204 ح 1081) و ابن ماجه (1241) [و صححه ابن حبان : 511]

بَاب الْقُنُوت • कुनूत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٢٩٣ - (ضَعِيف) عَن الْحسن: أَن عمر بن الْخطاب جَمَعَ النَّاسَ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ فَكَانَ يُصَلِّي بِهِمْ عِشْرِينَ لَيْلَةً وَلَا يَقْنُتُ بِهِمْ إِلَّا فِي النِّصْفِ الْبَاقِي فَإِذَا كَانَتِ الْعَشْرُ الْأَوَاخِرُ تَخَلَّفَ فَصَلَّى فِي بَيْتِهِ فَكَانُوا يَقُولُونَ: أبق أبي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1293. हसन बसरी से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने लोगों को उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु की इमामत पर इकट्ठा किया वह उन्हें बीस रात नमाज़ पढ़ाया करते थे वह सिर्फ आधी बाकी में कुनुत करते थे और जब आखिरी दस दिन होते तो वह मस्जिद में न आते बल्कि घर में नमाज़ पढ़ते तो नमाज़ी कहते उबई रदियल्लाहु अन्हु भाग गए | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1429) * قال العينى :’’ ان فيه انقطاعاً فان الحسن لم يدرک عمر بن الخطاب ‘‘ (شرح سنن ابی داؤد 5 / 343 ح 1399)-

١٢٩٤ - (صَحِيح) وَسُئِلَ أَن بْنُ مَالِكٍ عَنِ الْقُنُوتِ. فَقَالَ: قَنَتَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدُ الرُّكُوعِ وَفِي رِوَايَةٍ: قَبْلَ الرُّكُوعِ وَبَعْدَهُ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

1294. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से कुनुत के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने रुकू के बाद कुनुत किया और एक रिवायत में है रुकू से पहले भी और बाद भी | (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (1183) بلفظ مختلف [و اصله عند البخاری (1001) و مسلم (677)، (1546)]

माहे रमज़ान के कयाम का बयान • بَاب قيام شهر رَمَضَان

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٢٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اتَّخَذَ حُجْرَةً فِي الْمَسْجِدِ مِنْ حَصِيرٍ فَصَلَّى فِيهَا لَيَالِيَ حَتَّى اجْتَمَعَ عَلَيْهِ نَاسٌ ثُمَّ فَقَدُوا صَوْتَهُ لَيْلَةً وَظَنُّوا أَنَّهُ قَدْ نَامَ فَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَتَنَحْنَحُ لِيَخْرُجَ إِلَيْهِمْ. فَقَالَ: مَا زَالَ بِكُمُ الَّذِي رَأَيْتُ مِنْ صَنِيعِكُمْ حَتَّى خَشِيتُ أَنْ يُكْتَبَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ كُتِبَ عَلَيْكُمْ مَا قُمْتُمْ بِهِ. فَصَلُّوا أَيُّهَا النَّاسُ فِي بُيُوتِكُمْ فَإِنَّ أَفْضَلَ صَلَاةِ الْمَرْءِ فِي بَيته إِلَّا الصَّلَاة الْمَكْتُوبَة)

1295. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने मस्जिद में चटाई का एक हुजरे बना लिया और आप ने चंद राते उस में नमाज़ पढ़ी हत्ता कि लोग ज़्यादा तादाद में जमा हो गए फिर एक रात उन्होंने आप की आवाज़ महसूस की और उन्होंने गुमान किया के आप सो चुके हैं कुछ लोग खांसने लगे ताकि आप बाहर तशरीफ़ ले आए आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो कुछ तुम करते रहे मैंने इसे देखा यहाँ तक के मुझे अंदेशा हुआ की इसे तुम पर फ़र्ज़ न कर दिया जाए और अगर तुम पर फ़र्ज़ कर दी जाती तो तुम उस का इह्तेमाम न कर सकते लोगो! अपने घरो में नमाज़ पढ़ो क्योंकि फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा आदमी का घर नमाज़ पढ़ना अफज़ल है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (731) ومسلم (213 / 781)، (1825)

١٢٩٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: (كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْغَبُ فِي قِيَامِ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَأْمُرَهُمْ فِيهِ بِعَزِيمَةٍ فَيَقُولُ: «مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. فَتُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ والمر عَلَى ذَلِكَ ثُمَّ كَانَ الْأَمْرُ عَلَى ذَلِكَ فِي خِلَافَةِ أَبِي بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عمر على ذَلِك» . رَوَاهُ مُسلم

1296. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ कोई कतइ हुक्म दिए बगैर कयाम रमज़ान की तरगीब दिया करते थे आप ﷺ फरमाते थे: “जो शख़्स ईमान और सवाब की नियत से रमज़ान का कयाम करे तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई तो मुआमला इसी तरह था फिर अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और उमर रदियल्लाहु अन्हु की खिलाफत के शुरू में मुआमला इसी तरह था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (174 / 759)، (1780)

١٢٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَضَى أَحَدُكُمُ الصَّلَاةَ فِي مَسْجده فليجعل لبيته نَصِيبا من صلَاته فَإِنَّ اللَّهَ جَاعِلٌ فِي بَيْتِهِ مِنْ صِلَاتِهِ خيرا» . رَوَاهُ مُسلم

1297. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई मस्जिद में नमाज़ अदा करे तो वह उस का कुछ हिस्सा नफ्ल वगैरा अपने घर मैं भी अदा करे क्योंकि अल्लाह उसकी नमाज़ की वजह से उस के घर में खैर व बरकत फरमाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (210 / 778)، (1822)

بَاب قيام شهر رَمَضَان • माहे रमज़ान के कयाम का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٢٩٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: صُمْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَمَضَانَ فَلَمْ يَقُمْ بِنَا شَيْئًا مِنَ الشَّهْرِ حَتَّى بَقِيَ سَبْعٌ فَقَامَ بِنَا حَتَّى ذَهَبَ ثُلُثُ اللَّيْلِ فَلَمَّا كَانَتِ السَّادِسَةُ لَمْ يَقُمْ بِنَا فَلَمَّا كَانَتِ الْخَامِسَةُ قَامَ بِنَا حَتَّى ذهب شطر اللَّيْل فَقلت: يارسول الله لَو نفلتنا قيام هَذِه اللَّيْلَة. قَالَ فَقَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا صَلَّى مَعَ الْإِمَامِ حَتَّى يَنْصَرِف حسب لَهُ قيام اللَّيْلَة» . قَالَ: فَلَمَّا كَانَت الرَّابِعَة لم يقم فَلَمَّا كَانَتِ الثَّالِثَةُ جَمَعَ أَهْلَهُ وَنِسَاءَهُ وَالنَّاسَ فَقَامَ بِنَا حَتَّى خَشِينَا أَنْ يَفُوتَنَا الْفَلَاحُ. قَالَ قُلْتُ: وَمَا الْفَلَاحُ؟ قَالَ: السَّحُورُ. ثُمَّ لَمْ يَقُمْ بِنَا بَقِيَّةَ الشَّهْرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ نَحْوَهُ إِلَّا أَنَّ التِّرْمِذِيَّ لَمْ يَذْكُرْ: ثُمَّ لَمْ يَقُمْ بِنَا بَقِيَّةَ الشَّهْرِ

1298. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रोज़े रखे आप ने इस माह में हमें रात में नमाज़ न पढ़ाई हत्ता कि सात दिन बाकी रह गए तो आप ने हमें तरावीह पढ़ाई हत्ता कि तिहाई रात बीत गई जब छथी रात हुई तो आप ने हमें नमाज़ न पढ़ाई जब पाँचवीं रात हुई तो आप ने हमें नामज़ पढ़ाई हत्ता कि आधी रात बीत गई मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! काश के आप इस रात के कयाम को पढ़ा देते आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी इमाम के साथ नमाज़ पढ़ता है हत्ता कि वह फारिग़ होता है तो उस के लिए पूरी रात का सवाब लिख दिया जाता है” जब चोथी रात आई तो आप ने हमें नमाज़ न पढ़ाई हत्ता कि तिहाई रात बाकी रह गई जब तीसरी रात आए तो आप ने अपने अहल व अयाल और लोगों को इकट्ठा किया और हमें नमाज़ पढ़ाई (और इतना लम्बा कयाम फ़रमाया हत्ता कि हमें अपने सहरी फौत हो जाने का अंदेशा हवा रावी कहते हैं मैंने कहा: “फलाह इसे क्या मुराद है? फ़रमाया सहरी फिर आप ﷺ ने महीने के बाकी अय्याम में हमें तरावीह न पढ़ाई अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, और इब्ने माजा ने भी इसी तरह रिवायत किया अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी ने “ आप ने महीने के बाकी अय्याम में हमें तरावीह नहीं पढ़ाई ” का ज़िक्र नहीं किया | (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1375) و الترمذی (806 وقال : حسن صحيح) و النسائی (3 / 83 ، 84 ح 1365) و ابن ماجه (1327) [و صححه ابن خزيمة (2206) و ابن حبان (919)]

١٢٩٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: فَقَدْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةً فَإِذَا هُوَ بِالْبَقِيعِ فَقَالَ " أَكُنْتِ تَخَافِينَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْكِ وَرَسُولُهُ؟ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنَّكَ أَتَيْتَ بَعْضَ نِسَائِكَ فَقَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَنْزِلُ لَيْلَةَ

النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَيَغْفِرُ لِأَكْثَرَ مِنْ عَدَدِ شَعْرِ غَنَمِ كَلْبٍ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَزَادَ رَزِينٌ: «مِمَّنِ اسْتَحَقَّ النَّارَ» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: سَمِعْتُ مُحَمَّدًا يَعْنِي البُخَارِيّ يضعف هَذَا الحَدِيث

1299. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने एक रात रसूलुल्लाह ﷺ को बिस्तर पर न पाया आप अचानक बकी कब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हें अंदेशा था के अल्लाह और उस के रसूल तुम पर ज़ुल्म करेंगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैंने समझा आप अपने किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के पास तशरीफ़ ले गए है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला बिच के शाबान की रात आसमानी दुनिया पर नाज़िल होता है और वह इस रात कल्ब कबिले की बकरियों के बालो से भी ज़्यादा लोगों की मगफिरत फरमा देता है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और रजिन ने यह इज़ाफा नकल किया है: “अल्लाह ऐसे लोगों की मगफिरत फरमाता है जो जहन्नम के मुस्तहक थे”, और इमाम तिरमिज़ी (रह) ने फ़रमाया: मैंने मुहम्मद यानी इमाम बुखारी (रह) को इस हदीस को जईफ करार देते हुए सुना. (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (739 و اعله) و ابن ماجه (1389) و رزین (لم اجده) * حجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و للحديث شواهد ضعيفة

١٣٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَلَاةُ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ أَفْضَلُ مِنْ صَلَاتِهِ فِي مَسْجِدِي هَذَا إِلَّا الْمَكْتُوبَةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1300. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा आदमी का अपने घर में नमाज़ पढ़ना मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से अफज़ल है” (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه ابوداؤد (1044) و الترمذی (450 وقال : حسن) [و البخاری (731) و مسلم (781)، (1825)]

माहे रमज़ान के कयाम का बयान • بَاب قيام شهر رَمَضَان

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

١٣٠١ - (صَحِيح) عَن عبد الرَّحْمَن بن عبد الْقَارِي قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ لَيْلَةً فِي رَمَضَان إِلَى الْمَسْجِدِ فَإِذَا النَّاسُ أَوْزَاعٌ مُتَفَرِّقُونَ يُصَلِّي الرَّجُلُ لِنَفْسِهِ وَيُصَلِّي الرَّجُلُ فَيُصَلِّي بِصَلَاتِهِ الرَّهْطُ فَقَالَ عمر: إِنِّي أرى لَوْ جَمَعْتُ هَؤُلَاءِ عَلَى قَارِئٍ وَاحِدٍ لَكَانَ أَمْثَلَ ثُمَّ عَزَمَ فَجَمَعَهُمْ عَلَى أُبَيِّ بْنِ كَعْب ثُمَّ خَرَجْتُ مَعَهُ لَيْلَةً أُخْرَى وَالنَّاسُ يُصَلُّونَ بِصَلَاة قارئهم. قَالَ عمر رَضِي الله عَنهُ: نعم الْبِدْعَةُ هَذِهِ وَالَّتِي تَنَامُونَ عَنْهَا أَفْضَلُ مِنَ الَّتِي تَقُومُونَ. يُرِيدُ آخِرَ اللَّيْلِ وَكَانَ النَّاسُ يقومُونَ أَوله. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1301. अब्दुल रहमान बिन अब्दुलकारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक रात उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के साथ मस्जिद (नबवी) में गया तो वहां लोग मूतफर्क तौर पर एक एक दो दो और कहीं चंद लोगों की जमाअत की सूरत में नमाज़ पढ़ रहे थे, यह सूरत देख कर उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर में

उन्हें एक इमाम की इक्तेदा पर इकट्ठा कर दूँ तो वह बेहतर होगा, फिर उन्होंने पुख्ता अज़म किया और उन्हें उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु की इक्तेदा पर जमा कर दिया, रावी बयान करते हैं, मैं किसी और रात फिर उन के साथ आया तो लोग अपने कारी की इमामत में नमाज़ पढ़ रहे थे (यह देख कर) उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: यह नई बात (बाजमाअत नमाज़) बहोत अच्छी है और वह नमाज़ जिस से तुम सो जाते हो वह इस नमाज़ के पढ़ने से अफज़ल है, रावी कहता है उस से उमर रदियल्लाहु अन्हु की मुराद रात का आखिरी हिस्सा है, जबकि लोग अव्वल रात में नमाज़ पढ़ते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (2010)

١٣٠٢ - (صَحِيح) وَعَن السَّائِب بن يزِيد قَالَ: أَمَرَ عُمَرُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ وَتَمِيمًا الدَّارِيَّ أَنْ يَقُومَا لِلنَّاسِ فِي رَمَضَانَ بِإِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً فَكَانَ الْقَارِئُ يَقْرَأُ بِالْمِئِينَ حَتَّى كُنَّا نَعْتَمِدُ عَلَى الْعَصَا مِنْ طُولِ الْقِيَامِ فَمَا كُنَّا نَنْصَرِفُ إِلَّا فِي ص:٤٠ فُرُوعِ الْفَجْرِ. رَوَاهُ مَالك

1302. साइब बिन यज़ीद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु और तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया के वह लोगों को रमज़ान में ग्यारह रक्अत पढ़ी, कारी एक रकअत में दो सौ आयत तिलावत करता था, हत्ता कि हम लम्बी कयाम की वजह से लाठियों का सहारा लिया करते थे, और हम तुलुअ ए फज्र से थोड़ा पहले फारिग़ होते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 115 ح 249) [و من طریقه النسائی فی الکبریٰ (3 / 113 ح 4687)]

١٣٠٣ - (صَحِيح) وَعَن الْأَعْرَج قَالَ: مَا أَدْرَكْنَا النَّاسَ إِلَّا وَهُمْ يَلْعَنُونَ الْكَفَرَةَ فِي رَمَضَانَ قَالَ: وَكَانَ الْقَارِئُ يَقْرَأُ سُورَةَ الْبَقَرَةِ فِي ثَمَانِ رَكَعَاتٍ وَإِذَا قَامَ بِهَا فِي ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً رَأَى النَّاسُ أَنه قد خفف. رَوَاهُ مَالك

1303. अअरज रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमने रमज़ान में हर शख़्स को काफिरों पर लानत करते हुए पाया, और कारी आठ रक्अतो में सुरह बकरह पढ़ते थे और जब इसे बारह रक्अतो में पढ़ते तो फिर लोग इसे तखफिफ समझते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (1 / 115 ح 251) دون قوله :'' مخافة فوت السجود''

١٣٠٤ - وَعَن عبد الله بن أبي بكر قَالَ: سَمِعت أبي يَقُولُ: كُنَّا نَنْصَرِفُ فِي رَمَضَانَ مِنَ الْقِيَامِ فَنَسْتَعْجِلُ الْخَدَمَ بِالطَّعَامِ مَخَافَةَ فَوْتِ السَّحُورِ. وَفِي أُخْرَى مَخَافَةَ الْفجْر. رَوَاهُ مَالك

1304. अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र बयान करते हैं, मैंने उबई रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना, हम रमज़ान में कयाम से इस वक़्त फारिग़ हुआ करते थे की हम सहरी के फौत हो जाने और फज्र के तुलुअ हो जाने

के खौफ के पेशे नज़र खादिमो को खाने के मुतल्लिक जल्दी करने का हुक्म देते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 116 ح 252) باختلاف يسير

١٣٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «هَل تدرين مَا هَذِه اللَّيْل؟» يَعْنِي لَيْلَةَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ قَالَتْ: مَا فِيهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: «فِيهَا أَنْ يُكْتَبَ كلُّ مَوْلُودٍ مِنْ بَنِي آدَمَ فِي هَذِهِ السَّنَةِ وَفِيهَا أَنْ يُكْتَبَ كُلُّ هَالِكٍ مِنْ بَنِي آدَمَ فِي هَذِهِ السَّنَةِ وَفِيهَا تُرْفَعُ أَعْمَالُهُمْ وَفِيهَا تَنْزِلُ أَرْزَاقُهُمْ» . ص:٤٠ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا مِنْ أَحَدٍ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا بِرَحْمَةِ اللَّهِ تَعَالَى؟ فَقَالَ: «مَا مِنْ أحد يدْخل الْجنَّة إِلَّا برحمة الله تَعَالَى» . ثَلَاثًا. قُلْتُ: وَلَا أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى هَامَتِهِ فَقَالَ: «وَلَا أَنَا إِلَّا أَنْ يَتَغَمَّدَنِيَ اللَّهُ بِرَحْمَتِهِ» . يَقُولُهَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

1305. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “आप जानती है की बिच के शाबान की रात क्या वाकेअ होता है” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस में क्या वाकेअ होता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस साल पैदा होने वाले और इस साल फौत होने वाले हर शख़्स का नाम इस रात लिख दिया जाता है, इसी रात उन के आमाल ऊपर चढ़ते है और इसी रात उनका रिज़्क़ नाज़िल किया जाता है”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह की रहमत के बगैर कोई भी शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा? आप ﷺ ने तीन बार फ़रमाया: “अल्लाह की रहमत के बगैर कोई भी शख़्स जन्नत में नहीं जाएगा”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप भी नहीं? आप ﷺ ने अपने सर पर हाथ रख कर फ़रमाया: “मैं भी नहीं? जब तक अल्लाह अपने तरफ से मुझे ढांप ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (لم اجده فى المطبوع منه) * و رواه البيهقى فى شعب الايمان (3835) من طريق العلاء بن الحارث عن عائشة به وهو منقطع و رواه البيهقى فى فضائل الاوقات (ص : 126 ، 128 ح 26) نحوه مطولاً و فيه النظر بن کثير العبدى وهو ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة و اخرج النسائى (4 / 201 ح 2359) بسند حسن :'' وهو شهر ترفع فيه الاعمال الى رب العالمين '' يعنى شعبان

١٣٠٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيَطَّلِعُ فِي لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَيَغْفِرُ لِجَمِيعِ خَلْقِهِ إِلَّا لِمُشْرِكٍ أَوْ مُشَاحِنٍ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1306. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला बिच के शाबान की रात अपने बंदो पर खुसूसी तौर पर मुतवज्जे होता है और वह मुशरिक या दुश्मनी रखने वाले के सिवा अपने तमाम मखलूक को बख्श देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1390) * الضحاک بن اعين : مجهول و کزا الزبير بن مسلم و عبد الرحمن بن عرزب مجهولان و ابن لهيعة و الوليد بن مسلم مدلسان و عنعنا فالسند مظلم

١٣٠٧ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ وَفِي رِوَايَته: «إِلَّا اثْنَيْنِ مُشَاحِن وَقَاتل نفس»

1307. इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है उनकी रिवायत में है ،” दो, दुश्मनी रखने वाले और खुद कशी करने वाले के सिवा सब को बख्श देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 176 ح 6642) * ابن لهيعة ضعيف بعد اختلاطه

١٣٠٨ - (مَوْضُوع) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَتْ لَيْلَةُ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَقُومُوا لَيْلَهَا وَصُومُوا يَوْمَهَا ص:٤١ فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَنْزِلُ فِيهَا لِغُرُوبِ الشَّمْسِ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَيَقُولُ: أَلَا مِنْ مُسْتَغْفِرٍ فَأَغْفِرَ لَهُ؟ أَلَا مُسْتَرْزِقٌ فَأَرْزُقَهُ؟ أَلَا مُبْتَلًى فَأُعَافِيَهُ؟ أَلَا كَذَا أَلَا كَذَا حَتَّى يطلع الْفجْر ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1308. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बिच की शाबान की रात हो तो तुम इस रात कयाम करो और इस दिन का रोज़ा रखो, क्योंकि इस रात आफ़ताब के गुरूब होते ही अल्लाह तआला आसमानी दुनिया पर नुज़ूल फरमा कर पूछता है: “सुन लो, कोई मगफिरत का तलबगार है ताकि में उसे बख्श दू, सुन लो, कोई रिज़्क़ का तालिब है ताकि में उसे रिज़्क़ अता फरमाउ, सुन लो, कोई आफियत चाहता है ताकि में उसे आफियत अता फरमाउ, सुन लो, इन इन चीजों का कोई तालिब है? यह सिलसिला तुलुअ ए फज्र तक जारी रहता है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه ابن ماجه (1388) * فيه ابوبكر بن عبدالله بن محمد بن ابى سبرة ، كان يضع الحديث ، قاله احمد و غيره

चाश्त की नमाज़ का बयान • بَاب صَلَاة الضُّحَى

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٣٠٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أم هَانِئ قَالَتْ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ بَيْتَهَا يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ فَاغْتَسَلَ وَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ فَلَمْ أَرَ صَلَاةً قَطُّ أَخَفَّ مِنْهَا غَيْرَ أَنَّهُ يُتِمُّ الرُّكُوعَ وَالسُّجُود. وَقَالَتْ فِي رِوَايَة أُخْرَى: وَذَلِكَ ضحى

1309. उम्म हानी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, कि नबी ﷺ फतह मक्का के रोज़ उन के घर तशरीफ़ लाए तो आप ने ग़ुस्ल किया और आठ रकते पढ़ी, मैंने उस से हल्की नमाज़ कभी नहीं देखि, अलबत्ता आप ﷺ रुकू व सुजूद मुकम्मल फरमाते थे, और उन्होंने एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया और वह नमाज़ चाश्त थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (357) و مسلم (71 / 336)، (765)

١٣١٠ - (صَحِيح) وَعَن معَاذَة قَالَتْ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: كَمْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي صَلَاةَ الضُّحَى؟ قَالَتْ:

أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ وَيَزِيدُ مَا شَاءَ اللَّهُ. رَوَاهُ مُسلم

1310. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया रसूलुल्लाह ﷺ चाश्त की कितनी रकते पढ़ा करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: चार रकते और जिस क़दर अल्लाह चाहता पढ़ा देते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 719)، (1663)

١٣١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُصْبِحُ عَلَى كُلِّ سُلَامَى مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ فَكُلُّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَيُجْزِئُ مِنْ ذَلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا من الضُّحَى» . رَوَاهُ مُسلم

1311. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से हर एक पर उस के तमाम जोड़ो का सदका करना ज़रूरी है, हर किस्म की तस्बीह ((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह) कहना सदका है, हर किस्म की हम्द सदका है, हर मर्तबा لا اله الا الله कहना सदका है, नेकी का हुक्म करना सदका है, बुराई से रोकना सदका है और जो शख़्स चाश्त की दो रकते पढ़ लेता है तो वह उस के लिए काफी हो जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

رواه مسلم (84 / 720)، (1671)

١٣١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ أَنَّهُ رَأَى قَوْمًا يُصَلُّونَ مِنَ الضُّحَى فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمُوا أَنَّ الصَّلَاةَ فِي غَيْرِ هَذِهِ السَّاعَةِ أَفْضَلُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «صَلَاةُ الْأَوَّابِينَ حِينَ تَرْمَضُ الْفِصَالُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1312. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने कुछ लोगों को नमाज़ चाश्त पढ़ते हुए देखा तो उन्होंने ने फ़रमाया: उन्हें इल्म है के इस वक़्त के अलावा नमाज़ चाश्त पढ़ना अफज़ल है, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नमाज़ अव्वाबिन का वक़्त वह है जब ऊंट के बच्चे के पाँव (शिद्दत हरारत से रेत गरम हो जाने की वजह से) गर्मी महसूस करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (143 / 748)، (1746)

चाश्त की नमाज़ का बयान • بَاب صَلَاة الضُّحَى

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٣١٣ - (صَحِيح) وَعَن أَبِي الدَّرْدَاءِ وَأَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَنِ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ: يَا ابْن آدم اركع لي أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ مِنْ أَوَّلِ النَّهَارِ: أَكْفِكَ آخِرَهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1313. अबू दरदा और अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह तबारक व तआला से रिवायत किया के इस ने फ़रमाया: इब्ने आदम! दिन के अव्वल वक़्त मेरे लिए चार रकते पढ़े तो में तुझे दिन के आखिरी वक़्त तक काफी हो जाऊँगा| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (475 وقال : غريب) وله شواهد

١٣١٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ عَنْ نُعَيْمِ بْنِ همار الْغَطَفَانِي وَأحمد عَنْهُم

1314. इमाम तिरमिज़ी ने इसे रिवायत किया है जबकि इमाम अबू दावुद और इमाम दारमी ने नुअयम बिन हम्माज़ गत्फानी से रिवायत किया है, और इमाम अहमद ने उन तीनो (सहाबा किराम) से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (1289) و الدارمی (1 / 338 ح 1459) و احمد (5 / 286) [و صححه ابن حبان (634)]

١٣١٥ - (صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «فِي الْإِنْسَانِ ثَلَاثُمِائَةٍ وَسِتُّونَ مَفْصِلًا فَعَلَيْهِ أَنْ يَتَصَدَّقَ عَنْ كُلِّ مَفْصِلٍ مِنْهُ بِصَدَقَةٍ» قَالُوا: وَمَنْ يُطِيقُ ذَلِكَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ؟ قَالَ: «النُّخَاعَةُ فِي الْمَسْجِدِ تَدْفِنُهَا وَالشَّيْءُ تُنَحِّيهِ عَنِ الطَّرِيقِ فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فَرَكْعَتَا الضُّحَى تُجْزِئُكَ» . رَوَاهُ ص:٤١ أَبُو دَاوُدَ

1315. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “इंसान में तीनसो साठ जोड़ है और हर जोड़ के बदले सदका करना उस पर लाज़िम है”| सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! इतनी ताकत कौन रखता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मस्जिद से बलगम को साफ़ कर देना रास्ता से किसी तकलीफ को दूर कर देना सदका, पस अगर तो न पाए तो चाश्त की दो रकते तेरे लिए काफी है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5242) [و صححه ابن خزيمة (1226) و ابن حبان (633 ، 811)]

١٣١٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى الضُّحَى ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً بَنَى اللَّهُ لَهُ

قَصْرًا مَنْ ذَهَبٍ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ هَذَا الْوَجْهِ

1316. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स चाश्त की बारह रकते पढ़ता है तो अल्लाह उस के लिए जन्नत में सोने का एक महल तैयार कर देता है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और हम इसे सिर्फ इसी तरीक से जानते हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (473) و ابن ماجه (1380) * موسى بن فلان بن انس : مجهول الحال و الحديث ضعفه الحافظ ابن حجر فی التلخيص الحبير (2 / 20 ح 536) وله شواهد ضعيفة

١٣١٧ - (ضَعِيف) وَعَن معَاذ بن أنس الْجُهَنِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَعَدَ فِي مُصَلَّاهُ حِينَ يَنْصَرِفُ مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ حَتَّى يُسَبِّحَ رَكْعَتَيِ الضُّحَى لَا يَقُولُ إِلَّا خَيْرًا غُفِرَ لَهُ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1317. मुआज़ बिन अनस जुह्नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नमाज़ ए फजर पढ़ने के बाद चाश्त की दो रकते पढ़ता है और वह इस दौरान खैर के सिवा कोई बात नहीं करता तो उस के गुनाह ख्वाह समुन्दर की झाग के भी बराबर हो तब भी वह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1287) * زبان بن فائد : ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة

بَاب صَلَاة الضُّحَى • चाश्त की नमाज़ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٣١٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَافَظَ عَلَى شُفْعَةِ الضُّحَى غُفِرَتْ لَهُ ذنُوبه وَإِن كَانَت مثلا زَبَدِ الْبَحْرِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1318. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स चाश्त की दो रक्अतो की पाबन्दी करता है तो उस के गुनाह ख्वाह समुन्दर की झाग के बराबर हो तब भी वह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 499 ح 10485) و الترمذی (476 وقال : لا نعرفه الا من حديث نهاس بن قهم) و ابن ماجه (1382) * النهاس بن قهم : ضعيف

١٣١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا كَانَتْ تُصَلِّي الضُّحَى ثَمَانِي رَكَعَاتٍ ثُمَّ تَقُولُ: «لَوْ نُشِرَ لِي أَبَوَايَ مَا تركتهَا» . رَوَاهُ مَالك

1319. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के वह चाश्त की आठ रकते पढ़ा करती थी फिर वह फरमाती हैं अगर मेरे वालिदेन भी जिंदा कर दिए जाए तो मैं उन की खातिर इस नमाज़ चाश्त को तर्क नहीं करुँगी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالك (1 / 153 ح 358) * اشار على بن الحسين بن الجنيد بان زيد بن اسلم لم يسمع من عائشة (انظر المراسيل لابن ابى حاتم ص (64)

١٣٢٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي ص:٤١ الضُّحَى حَتَّى نَقُولَ: لَا يَدَعُهَا وَيَدَعُهَا حَتَّى نَقُولَ: لَا يُصليهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1320. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ चाश्त पढ़ा करते थे, हत्ता कि हम कहते अब आप इसे नहीं छोड़ेंगे और कभी इसे छोड़ देते तो हम कहते अब आप इसे नहीं पढ़ेंगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (477 وقال : حسن غريب) * فيه عطية العوفى ضعيف مدلس

١٣٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ مُوَرِّقٍ الْعِجْلِيِّ قَالَ: قُلْتُ لِابْنِ عُمَرَ: تُصَلِّي الضُّحَى؟ قَالَ: لَا. قُلْتُ: فَعُمَرُ؟ قَالَ: لَا. قُلْتُ: فَأَبُو بَكْرٍ؟ قَالَ: لَا. قُلْتُ: فَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: لَا إخَاله. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1321. मुवर्रिक अजलीय रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया आप नमाज़ चाश्त पढ़ते है? उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, मैंने पूछा उमर रदियल्लाहु अन्हु पढ़ते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, मैंने पूछा अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु पढ़ते थे उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, मैंने पूछा नबी ﷺ पढ़ते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: मेरा ख्याल है नहीं पढ़ते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (1175)

بَاب التَّطَوُّع • नफ्ल नमाज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٣٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِبِلَالٍ عِنْدَ صَلَاةِ الْفَجْرِ: «يَا بِلَالُ حَدِّثْنِي بِأَرْجَى عمل عملته فِي الْإِسْلَام فَإِنِّي سَمِعت دق نعليك بَين يَدي الْجَنَّةِ» . قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلًا أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لم أتطهر طهُورا مِنْ سَاعَةٍ مِنْ لَيْلٍ وَلَا نَهَارٍ إِلَّا صَلَّيْتُ بِذَلِكَ الطُّهُورِ مَا كُتِبَ لِي أَنْ أُصَلِّيَ

1322. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए फजर के वक़्त बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “बिलाल मुझे इस अमल के बारे में बताओ जो तुमने हालत इस्लाम में किया तो और जिस पर

तुम्हें सवाब की बहोत ज़्यादा उम्मीद हो, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे तेरे जूतो की आवाज़ सुनी है"| उन्होंने अर्ज़ किया, मुझे अपने जिस अमल पर सवाब की बहोत ज़्यादा उम्मीद है वह यह है कि मैं रात या दिन में जिस वक़्त भी वुज़ू करता हूँ तो मैं इस वुज़ू के बाद जिस क़दर मुकद्दर हो नफ्ल नमाज़ पढ़ता हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1149) و مسلم (108 / 2458)، (6324)

١٣٢٣ - (صَحِيحٌ) عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُنَا الِاسْتِخَارَةَ فِي الْأُمُورِ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُولُ: " إِذَا هَمَّ أَحَدُكُمْ بِالْأَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيضَةِ ثُمَّ لْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّك تَقْدِرُ وَلَا أقدر وَتعلم وَلَا أعلم وَأَنت علام الغيوب اللَّهُمَّ إِنَّ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أوقال فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي ص:٤١ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ ". قَالَ: «ويسمي حَاجته» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1323. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मुआमलात के बारे में हमें इस इह्तेमाम के साथ इस्तिखारा सिखाते थे, जिस तरह आप हमें कुरान की सूरत सिखाते थे, आप ﷺ फरमाते: "जब तुम में से कोई किसी काम का इरादा करे तो वह फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा दो रकते नमाज़ पढ़े, फिर यह दुआ पढ़े, "ए अल्लाह! बेशक में इस काम में तुझ से तेरे इल्म की मदद से खैर मांगता हूँ, और इस के हुसूल के लिए तुझ से तेरी कुदरत के ज़रिए कुदरत मांगता हूँ, और मैं तुझ से तेरा फ़ज़ल अज़ीम मांगता हूँ, बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है, और मैं किसी चीज़ पर कादिर नहीं, तू जानता है जबकि में कुछ भी नहीं जानता और तो तमाम पोशीदा चीजों का जानने वाला है, अल्लाह अगर तू जानता है के यह काम मेरे लिए मेरे दीन मेरी जिंदगी और मेरे अंजाम कार या फ़रमाया: "मेरी दुनिया और मेरी आखिरत के लिए बेहतर है तो इसे मेरे लिए मुकद्दर कर आसान कर और फिर उस में मेरे लिए बरकत पैदा फरमा और अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे लिए मेरे दीन मेरी जिंदगी और मेरे अंजाम कार या फ़रमाया: "मेरी दुनिया और मेरी आखिरत के लिहाज़ से बुरा है तो इसे मुझ से और मुझे उस से फेरा दे और मेरे लिए खैर व भलाई मुकद्दर फरमा, वह जहाँ कहीं भी हो फिर मुझे उस के साथ राज़ी कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "और वह अपने हाजत का नाम ले| (बुखारी)

رواه البخاری (1162)

بَاب التَّطَوُّع • नफ्ल नमाज़ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٣٢٤ - (حَسَنٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرٍ وَصَدَقَ أَبُو بَكْرٍ. قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَا مِنْ رَجُلٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا ثُمَّ يَقُومُ فَيَتَطَهَّرُ ثُمَّ يُصَلِّي ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللَّهَ إِلَّا غَفَرَ الله لَهُ ثمَّ قَرَأَ هَذِه الاية: (وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذكرُوا الله فاستغفروا لذنوبهم)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّ ابْنَ مَاجَه لم يذكر الْآيَة

1324. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे हदीस बयान की और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने सच फ़रमाया उन्होंने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब कोई शख़्स किसी गुनाह का इर्तिकाब करता है, फिर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ कर अल्लाह से मगफिरत तलब करता है तो अल्लाह इसे मुआफ़ कर देता है”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई (والذين اذا فعلوا ،،،، فاستغفروا لذنوبهمبهم) “ और वह लोग जब कोई बुरा काम कर गुज़रते है या अपने जान पर ज़ुल्म कर बैठते है तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर उस से अपने गुनाहों की मगफिरत तलब करते हैं”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा अलबत्ता इब्ने माजा ने आयत ज़िक्र नहीं की| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3006 وقال : حسن و 406) و ابن ماجه (1395) [و ابوداؤد (1521) و صححه ابن حبان (2454)]

١٣٢٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ صَلَّى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1325. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ को कोई हम मसअले दरपेश होता तो आप ﷺ फ़ौरन नफ्ल नमाज़ का इहतेमाम फरमाते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1319) * محمد بن عبدالله الدولی : مجهول الحال و لحدیثه شاهد ضعیف

١٣٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: أَصْبَحَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَعَا بِلَالًا فَقَالَ: «بِمَ سَبَقْتَنِي إِلَى الْجَنَّةِ مَا دَخَلْتُ الْجَنَّةَ قَطُّ إِلَّا سَمِعْتُ خَشْخَشَتَكَ أَمَامِي» . قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَذَّنْتُ قَطُّ إِلَّا صَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ وَمَا أَصَابَنِي حَدَثٌ قَطُّ إِلَّا تَوَضَّأْتُ عِنْدَهُ وَرَأَيْتُ أَنَّ لِلَّهِ عَلَيَّ رَكْعَتَيْنِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:٤١ «بِهِمَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1326. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने सुबह के वक़्त बिलाल रदियल्लाहु अन्हु से पूछा: “किसी अमल की वजह तुम मुझ से पहले जन्नत में चले गए, मैं जब भी जन्नत में गया तो मैंने तुम्हारे जूतो की आवाज़ अपने आगे सुनी”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं जब भी आज़ान कहता हो तो दो रकते पढ़ता हूँ और जब मेरा वुज़ू टूट जाता है, तो में फ़ौरन वुज़ू करता हूँ और मैं समझता हूँ कि अल्लाह का शुक्र

अदा करने के लिए दो रकते पढ़ना मुझ पर लाज़िम है, लिहाज़ा में दो रकते पढ़ता हु, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इन्ही दो की वजह से (तुम इस मक़ाम को पहुंचे हो)”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3689 وقال : حسن صحیح غریب) [و صححه ابن خزیمة (1209) و ابن حبان (الاحسان : 7044 ، 7045) و الحاکم (1 / 313) و وافقه الذهبی]

١٣٢٧ - (مَوْضُوع) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ إِلَى اللَّهِ أَوْ إِلَى أحد من بني آدم فَلْيَتَوَضَّأْ فليحسن الْوُضُوءَ ثُمَّ لِيُصَلِّ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ لْيُثْنِ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى وَلْيُصَلِّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ لْيَقُلْ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ لَا تَدَعْ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًى إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

1327. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को अल्लाह से कोई हाजत व ज़रूरत हो या किसी इंसान से कोई काम हो तो वह अच्छी तरह वुज़ू कर के दो रकते पढ़े, फिर अल्लाह तआला की सना बयान करे और नबी ﷺ पर स्वलवात पढ़े, फिर यूँ दुआ करे: “अल्लाह हलिम करीम के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, अर्श ए अज़ीम का रब पाक है, हर किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है, मैं तुझ से उन आमल व असबाब की दरख्वास्त करता हूँ जो तेरी रहमत और तेरी मगफिरत को वाजिब व मुअक्कद कर दे में हर नेकी को गनीमत जानने और हर गुनाह से बचने की तुझ से दरख्वास्त करता हूँ, सबसे ज़्यादा रहम फरमाने वाले मेरे तमाम गुनाह मुआफ़ फरमादे, मेरे तमाम गम दूर कर दे और हर ज़रूरत जो तेरी रज़ा का बाईस बने इसे पूरा फरमादे”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه الترمذی (479) و ابن ماجه (1384) * فائد : منکر الحدیث ، قاله البخاری ، یعنی لا تحل الروایة عنه

بَاب صَلَاة التَّسْبِيح • नमाज़ की तस्बीह का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٣٢٨ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لِلْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: " يَا عَبَّاسُ يَا عَمَّاهُ أَلَا أُعْطِيكَ؟ أَلَا أَمْنَحُكَ؟ أَلا أحبوك؟ أَلَا أَفْعَلُ بِكَ عَشْرَ خِصَالٍ إِذَا أَنْتَ فَعَلْتَ ذَلِكَ غَفَرَ اللَّهُ لَكَ ذَنْبَكَ أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ قَدِيمَهُ وَحَدِيثَهُ خَطَأَهُ وَعَمْدَهُ صَغِيرَهُ وَكَبِيرَهُ سِرَّهُ وَعَلَانِيَتَهُ: أَنْ تُصَلِّيَ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ تَقْرَأُ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَسُورَةً. فَإِذَا فَرَغْتَ مِنَ الْقِرَاءَةِ فِي أَوَّلِ رَكْعَةٍ وَأَنْتَ قَائِمٌ قُلْتَ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ خَمْسَ عَشْرَةَ مَرَّةً ثُمَّ تَرْكَعُ فَتَقُولُهَا وَأَنْتَ رَاكِعٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَأْسَكَ مِنَ الرُّكُوعِ فَتَقُولُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَهْوِي سَاجِدًا فَتَقُولُهَا وَأَنْتَ سَاجِدٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَأْسَكَ مِنَ السُّجُودِ فَتَقُولُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَسْجُدُ فَتَقُولُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَأْسَكَ فَتَقُولُهَا عَشْرًا فَذَلِكَ خَمْسٌ وَسَبْعُونَ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ تَفْعَلُ ذَلِكَ فِي أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ إِنِ اسْتَطَعْتَ أَن تصليها فِي كل يَوْم فافْعَلْ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِي كُلِّ جُمُعَةٍ مَرَّةً فَإِنْ لَمْ

تَفْعَلْ فَفِي كُلِّ شَهْرٍ مَرَّةً فَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ ص:٤١ فَفِي كُلِّ سَنَةٍ مَرَّةً فَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِي عُمْرِكَ مَرَّةً ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

1328. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “ए चचा जान अब्बास क्या मैं आप को कुछ अता न करू? क्या मैं आप को कुछ इनायत न करू? क्या मैं आप को कोई खबर न दू? क्या मैं आप को दस खसलते अता न करू? की जब आप इन पर अमल करे तो अल्लाह आप के अगले पिछले कदीम व जदीद सहवन किए गए या जान बुझकर छोटे बड़े पोशीदा और ज़ाहिर तमाम गुनाह मुआफ़ फरमादे, वह यह कि आप चार रक्अत नमाज़ पढ़े, हर रक्अत में सुरह फातिहा और कोई दूसरी सूरत पढ़े, जब आप पहली रक्अत में किराअत से फारिग़ हो जाए और अभी कयाम में हो तो आप पन्द्रह मर्तबा “ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ” पढ़े फिर आप रुकू करे और रुकू में यही तस्बीह दस मर्तबा पढ़े, फिर रुकू से सर उठाए और दस मर्तबा यही कलिमात पढ़े, फिर सजदाह करे और सजदाह में दस मर्तबा यही कलिमात पढ़े, फिर सजदे से सर उठाए और दस मर्तबा यही कलिमात पढ़े, फिर सजदाह करे और दस मर्तबा यही कलिमात पढ़े और फिर सजदे से सर उठाए और दस मर्तबा यही कलिमात पढ़े इस तरह हर रक्अत में पचत्तर मर्तबा कलिमात होंगे, आप यह अमल चार रक्अतो में दोहराए अगर आप हर रोज़ इसे पढ़ सको तो पढ़े, अगर ऐसे न हो सके तो फिर हर जुमा (यानी हफ्ते में एक बार) पढ़े, अगर ऐसे न कर सके तो फिर साल में एक मर्तबा पढ़े अगर ऐसे भी न कर सके तो फिर अपने जिंदगी में एक बार ही पढ़ो लें”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1297) و ابن ماجه (1387) و البيهقى فى الدعوات الكبير (2 / 159 ح 393)

١٣٢٩ - (ضَعِيف) وروى التِّرْمِذِيّ عَن أبي رَافع نَحوه

1329. इमाम तिरमिज़ी ने अबी राफीअ से इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (482 وقال : غريب) [سنده ضعيف و للحديث شواهد منها الحديث السابق : 1328]

١٣٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عمله صلَاته فَإِن صلحت فقد أَفْلح وأنجح وَإِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ فَإِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِيضَتِهِ شَيْءٌ قَالَ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: نظرُوا هَلْ لِعَبْدِي مِنْ تَطَوُّعٍ؟ فَيُكَمَّلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِيضَةِ ثُمَّ يَكُونُ سَائِرُ عَمَلِهِ عَلَى ذَلِكَ ". وَفِي رِوَايَةٍ: «ثُمَّ الزَّكَاةُ مِثْلَ ذَلِك ثمَّ تُؤْخَذ الْأَعْمَال حسب ذَلِك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1330. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बन्दे से रोज़ ए कियामत उस के आमाल में से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा, अगर वह सहीह व दुरुस्त हुई तो वह फलाह व निजात पा गया और अगर वह सहीह व दुरुस्त न हुई तो फिर वह नाकाम व नामुराद होगा, अगर उस के फ़राइज़ में कोई कमी हुई तो रब तबारक व तआला फरमाएगा देखो क्या मेरे बंदे के कुछ नवाफिल है तो इस तरह फ़राइज़ की कमी को उन नफ्ल से पूरा कर दिया जाएगा फिर बाकी आमाल का हिसाब इसी तरह

होगा", और एक दूसरी रिवायत में है: "फिर ज़कात का हिसाब भी इसी तरह होगा और फिर बाकी आमाल का हिसाब भी इसी (मजकूर मिसाल की) तरह होगा"| (हसन)

حسن و اللفظ مرکب ، رواہ ابوداؤد (864) و سندہ ضعیف وھو بغیر ھذا اللفظ ، 866 و سندہ صحیح و ھی الروایۃ الثانیۃ عند صاحب المشکوۃ) [و رواہ ابن ماجہ (1425 و سندہ ضعیف) و صححہ الحاکم (1 / 262) و وافقہ الذھبی]

١٣٣١ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن رجل

1331. इमाम अहमद ने (नबी ﷺ के असहाब में से किसी एक से) रिवायत किया है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ احمد (5 / 72 ح 20968 ، 5 / 377 ح 23590 ، 4 / 65 ح 16731 ، 4 / 103 ح 17073) [و الحاکم (1 / 263)]

١٣٣٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَذِنَ اللَّهُ لِعَبْدٍ فِي شَيْءٍ أَفْضَلَ مِنَ الرَّكْعَتَيْنِ يُصَلِّيهِمَا وَإِنَّ الْبِرَّ لَيُذَرُّ عَلَى رَأْسِ الْعَبْدِ مَا دَامَ فِي صَلَاتِهِ وَمَا تَقَرَّبَ الْعِبَادُ إِلَى اللَّهِ بِمِثْلِ مَا خَرَجَ مِنْهُ» يَعْنِي الْقُرْآنَ. رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

1332. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बंदा जब दो रकते पढ़ता है तो अल्लाह इस तरफ खुसूसी तवज्जो फरमाता है और जब तक बंदा नमाज़ पढ़ता रहता है तो नेकी (रहमत) इस बंदे के सर पर साया करती रहती है और बंदा अल्लाह के कलाम यानी कुरान के ज़रिए जिस क़दर अल्लाह का कुर्ब हासिल कर सकता है वैसा किसी और चीज़ के ज़रिए हासिल नहीं कर सकता"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (5 / 268 ح 22662) و الترمذی (2911 وقال : غریب) * لیث بن ابی سلیم ضعیف

सफ़र में नमाज़ का बयान • بَاب صَلَاة السّفر

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٣٣٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الظُّهْرَ بِالْمَدِينَةِ أَرْبَعًا وَصَلَّى الْعَصْر بِذِي الحليفة رَكْعَتَيْنِ

1333. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीना में ज़ुहर चार रक्अत पूरी नमाज़ अदा की और ज़ुल हलिफा में असर दो रक्अत कसर नमाज़ अदा की| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1089) و مسلم (10 / 690)، (1581)

١٣٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ الْخُزَاعِيِّ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ أَكْثَرُ مَا كُنَّا قَطُّ وآمنه بمنا رَكْعَتَيْنِ

1334. हारिस बिन वहब खुजाई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें मीना में दो रकते पढ़ाइ हालाँकि उस से पहले हम कभी न तो इतनी कसीर तादाद में थे और न कभी इस क़दर पुर अमन थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1083) و مسلم (20 / 696)، (1598)

١٣٣٥ - (صَحِيح) وَعَن يعلى بن أُميَّة قَالَ: قلت لعمر بن الْخطاب: إِنَّمَا قَالَ اللَّهُ تَعَالَى (أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا)»» فَقَدْ أَمِنَ النَّاسُ. قَالَ عُمَرُ: عَجِبْتُ مِمَّا عَجِبْتَ مِنْهُ فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ: «صَدَقَةٌ تَصَدَّقَ اللَّهُ بِهَا عَلَيْكُمْ فَاقْبَلُوا صدقته» رَوَاهُ مُسلم

1335. यअली बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से कहा: अल्लाह तआला ने तो फ़रमाया: “(انتقصروا ،،،، الذين كفروا)” अगर तुम्हें अंदेशा हो के काफ़िर तुम्हें किसी मुसीबत में डाल देंगे तो तुम नमाज़ में कुछ कमी कर लो, अब तो लोग पुर अमन है (किसी किस्म का कोई अंदेशा नहीं), उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जैसे आप को ताज्जुब हुआ है वैसे मुझे भी ताज्जुब हुआ था, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया था तो आप ﷺ ने फ़रमाया था: “एक किस्म का सदका है जो अल्लाह ने तुम पर किया है, तुम उसकी तरफ से सदका कबूल करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (4 / 686)، (1573)

١٣٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ من الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ فَكَانَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ حَتَّى رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ قِيلَ لَهُ: أَقَمْتُمْ بِمَكَّة شَيْئا قَالَ: «أَقَمْنَا بهَا عشرا»

1336. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए तो आप हमारे मदीना वापस पहुँचने तक दो दो रकते नमाज़े कसर पढ़ाते रहे, उन से पूछा गया के तुमने मक्का में कुछ कयाम भी किया था उन्होंने ने फ़रमाया: हमने वहां दस रोज़ कयाम किया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1081) و مسلم (15 / 693)، (1586)

١٣٣٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَافَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَفَرًا فَأَقَامَ تِسْعَةَ عَشَرَ ص:٤٢ يَوْمًا يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَنَحْنُ نُصَلِّي فِيمَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَكَّةَ تِسْعَةَ عَشَرَ رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ فَإِذَا أَقَمْنَا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِك صلينَا أَرْبعا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1337. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने एक सफ़र किया फतह मक्का का सफ़र आप ﷺ ने उन्नीस दिन कयाम किया और आप दो दो रकते पढ़ाते रहे, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: हम मदीना और मक्का के दरमियानी फासले पर उन्नीस दिन तक दो दो रकते पढ़ते है, जब हम उस से ज़्यादा कयाम करते हैं, तो हम चार रकते पूरी नमाज़ पढ़ते है| (बुखारी)

رواه البخاری (1080)

١٣٣٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ قَالَ: صَحِبْتُ ابْنَ عُمَرَ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ فَصَلَّى لَنَا الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ جَاءَ رَحْلَهُ وَجَلَسَ فَرَأَى نَاسًا قِيَامًا فَقَالَ: مَا يَصْنَعُ هَؤُلَاءِ؟ قُلْتُ: يُسَبِّحُونَ. قَالَ: لَوْ كُنْتُ مُسَبِّحًا أَتْمَمْتُ صَلَاتِي. صَحِبْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ لَا يَزِيدُ فِي السَّفَرِ عَلَى رَكْعَتَيْنِ وَأَبَا بكر وَعمر وَعُثْمَان كَذَلِك

1338. हफ्स बिन आसिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं तरीक ए मक्का में इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के साथ था आप रदियल्लाहु अन्हु ने हमें ज़ुहर की दो रक्अत पढ़ाई, फिर अपने कयाम गाह में आकर बैठ गए, आप ने कुछ लोगों को कयाम करते (नमाज़ पढ़ते) हुए देखा तो फ़रमाया यह लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा: नफ्ल पढ़ रहे हैं उन्होंने ने फ़रमाया: अगर मैंने नफ्ल पढ़ने होते तो मैं अपने नमाज़ पूरी पढ़ता, मैं रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के साथ रहा हूँ वह सफ़र में दो रक्अतो से ज़्यादा नहीं पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1101 ، 1102) و مسلم (8 / 689)، (1579)

١٣٣٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَجْمَعُ بَين الظُّهْرِ وَالْعَصْر إِذا كَانَ عَلَى ظَهْرِ سَيْرٍ وَيجمع بَين الْمغرب وَالْعشَاء. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1339. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र करते तो ज़ुहर व असर को और मगरिब व ईशा को मिला कर पढ़ते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (1107)

١٣٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي فِي السَّفَرِ عَلَى رَاحِلَتِهِ حَيْثُ تَوَجَّهَتْ بِهِ يُومِئُ إِيمَاءً صَلَاةَ اللَّيْلِ إِلَّا الْفَرَائِضَ وَيُوتِرُ على رَاحِلَته

1340. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दौरान ए सफ़र अपने सवारी पर जिस तरफ वह रुख करती नमाज़ पढ़ा करते थे, और आप रुकू व सुजूद के लिए सर का इरशाद फरमाते थे, आप फ़राइज़ के अलावा नमाज़ ए तहज्जुद और नमाज़ वित्र अपने सवारी पर अदा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1000) و مسلم (38 ، 37 / 700)، (1616 و 1617)

بَاب صَلَاة السّفر • सफ़र में नमाज़ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٣٤١- (ضَعِيفٌ)وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ ذَلِكَ قَدْ فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَصَرَ الصَّلَاةَ وَأَتَمَّ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

1341. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दौरान ए सफ़र हर तरह की नमाज़ पढ़ी आप ने कसर भी पढ़ी और पूरी भी| (सहीह)

صحيح ، رواه البغوی فی شرح السنة (4 / 166 ح 1023) [و الدارقطنی (2 / 189 ح 2274 وقال :'' طلحة ضعیف '') و البیھقی (3 / 142)]
* طلحة بن عمرو متروک و للحدیث شواھد صحیحة عند النسائی (3 / 122 ح 1457) و الدارقطنی (2 / 189 ح 2275) و من ضعف الحدیث فلا حجة عندہ ، قلت : شعید بن محمد بن ثواب ثقه روی عنه جماعة و وثقه ابن حبان و الدارقطنی و لم یضعفه احد

١٣٤٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَشَهِدْتُ مَعَهُ الْفَتْحَ فَأَقَامَ بِمَكَّةَ ثَمَانِيَ عَشْرَةَ لَيْلَةً لَا يُصَلِّي إِلَّا رَكْعَتَيْنِ يَقُولُ: «يَا أَهْلَ الْبَلَدِ صَلُّوا أَرْبَعًا فَإِنَّا سَفْرٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1342. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं गज़वात में नबी ﷺ के साथ शरीक रहा, और फतह मक्का के मौके पर भी में आप के साथ मौजूद था, आप ने मक्का में अठारह रोज़ कयाम फ़रमाया, आप दो रकते पढ़ कर फरमाते: "अहले मक्का तुम चार रकते पढ़ो क्योंकि हम तो मुसाफ़िर है"| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1229) * علی بن زید بن جدعان ضعیف ولاصل الحدیث شواھد کثیرة

١٣٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظُّهْرَ فِي السَّفَرِ رَكْعَتَيْنِ وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ فَصَلَّيْتُ مَعَهُ فِي الْحَضَرِ الظُّهْرَ أَرْبَعًا وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ وَصَلَّيْتُ مَعَهُ فِي السَّفَرِ الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ وَلَمْ يُصَلِّ بَعْدَهَا شَيْئًا وَالْمَغْرِبُ فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ سَوَاءٌ ثَلَاثُ رَكَعَاتٍ وَلَا يَنْقُصُ فِي حَضَرٍ وَلَا سَفَرٍ وَهِيَ وِتْرُ النَّهَارِ وَبَعْدَهَا رَكْعَتَيْنِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1343. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने दौरान ए सफ़र नबी ﷺ के साथ ज़ुहर दो रक्अत पढ़ी और उस के बाद दो रकते पढ़ी एक दूसरी रिवायत में है मैंने सफ़र व हज़र में नबी ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी है, मैंने हज़र में आप के साथ ज़ुहर चार रकते पढ़ी और उस के बाद दो रकते पढ़ी और मैंने दौरान ए सफ़र आप के साथ ज़ुहर दो रक्अत पढ़ी और दो रकते उस के बाद पढ़ी और असर दो रक्अत पढ़ी और उस के बाद कुछ न पढ़ा जबकि मग़रिब सफ़र व हज़र दोनों हालातो में तीन रक्अत पढ़ी, सफ़र हो या हज़र उनमें कमी नहीं की जाती और यह दिन के वित्र है और उस के बाद दो रकते पढ़ी| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (552 وقال : حسن) * محمد بن عبد الرحمن بن ابی لیلی ضعیف ضعفه الجمھور

١٣٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ: إِذَا زَاغَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَحِلَ جَمَعَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ وَإِنِ ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَزِيغَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الظُّهْرَ حَتَّى يَنْزِلَ لِلْعَصْرِ وَفِي الْمَغْرِبِ مِثْلَ ذَلِكَ إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ أَنْ يَرْتَحِلَ جَمَعَ بَيْنَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ وَإِنِ ارْتَحَلَ قَبْلَ أَنْ تَغِيبَ الشَّمْسُ أَخَّرَ الْمَغْرِبَ حَتَّى يَنْزِلَ لِلْعِشَاءِ ثُمَّ يَجْمَعُ بَيْنَهُمَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1344. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ गज़वा ए तबुक (के सफ़र) में जब आप के कुच करने से पहले सूरज ढल जाता तो आप ज़ुहर व असर को जमा कर लेते और अगर सूरज ढलने से पहले कुच करते तो ज़ुहर को मोअख़्ख़र करते हत्ता कि असर के लिए पड़ाव डालते, इसी तरह मग़रिब में करते की जब कुच करने से पहले सूरज गुरूब हो जाता तो आप मग़रिब और ईशा इकट्ठी पढ़ लेते और अगर गुरूब ए आफ़ताब से पहले कुच कर लेते तो आप ﷺ मग़रिब को मोअख़्ख़र फरमाते हत्ता कि नमाज़ ए ईशा के लिए पड़ाव डालते फिर उन्हें जमा फरमा लेते| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1220) و الترمذی (553 وقال : حسن غريب تفرد به قتيبة) * قتيبة ثقة حافظ ولا يضر تفرده

١٣٤٥ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَافَرَ وَأَرَادَ أَنْ يَتَطَوَّعَ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ بِنَاقَتِهِ فَكَبَّرَ ثُمَّ صَلَّى حَيْثُ وَجهه ركابه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1345. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ दौरान ए सफ़र नफ्ल पढ़ने का इरादा फरमाते, तो आप अपने सवारी पर किबले रुख हो कर तकबीर कह कर नमाज़ पढ़ते और सवारी जिस रुख चाहती चलती जाती| (सहीह)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1225)

١٣٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَاجَةٍ فَجِئْتُ وَهُوَ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ نَحْوَ الْمَشْرِقِ وَيَجْعَلُ السُّجُودَ أَخفض من الرُّكُوع. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1346. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने किसी काम के लिए मुझे भेजा जब में आया तो आप अपने सवारी पर मशरिक की सिम्त नमाज़ पढ़ रहे थे और आप रुकू की निस्बत सुजूद के लिए ज़्यादा झुक कर इरशाद करते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (1227) [و البيهقی (2 / 5) و مسلم (540)]



सफ़र में नमाज़ का बयान • بَاب صَلَاة السّفر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٣٤٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بمنى رَكْعَتَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ بَعْدَهُ وَعُمَرُ بَعْدَ أَبِي بَكْرٍ وَعُثْمَانُ صَدَرًا مِنْ خِلَافَتِهِ ثُمَّ إِنَّ عُثْمَانَ صَلَّى بَعْدُ أَرْبَعًا فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا صَلَّى مَعَ الْإِمَامِ صَلَّى أَرْبَعًا وَإِذَا صلاهَا وَحده صلى رَكْعَتَيْنِ

1347. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मीना में दो रकते यानी नमाज़े कसर पढ़ी, आप ﷺ के बाद अबू बक्र (र), अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के बाद उमर रदियल्लाहु अन्हु और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने अपने खिलाफत के इब्तिदाई सालों में दो रकात ही पढ़ी, फिर उस के बाद उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने चार रकते पढ़ी, जब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा इमाम के साथ नमाज़ पढ़ते तो आप चार रकते मुकम्मल नमाज़ पढ़ते और जब अकेले पढ़ते तो फिर दो रकते पढ़ते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1082) و مسلم (16 / 694)، (1590)

١٣٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: فُرِضَتِ الصَّلَاةُ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ هَاجَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَفُرِضَتْ أَرْبَعًا وَتُرِكَتْ صَلَاةُ السَّفَرِ عَلَى الْفَرِيضَةِ الْأُولَى. قَالَ الزُّهْرِيُّ: قُلْتُ لِعُرْوَةَ: مَا بَال عَائِشَة تتمّ؟ قَالَ: تأولت كَمَا تَأَول عُثْمَان

1348. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, शुरू में नमाज़ दो रकते फ़र्ज़ की गई थी, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने हिजरत की तो दो से चार रकते फ़र्ज़ कर दी गई और नमाज़ ए सफ़र को पहली हालत ए फर्ज़ियत पर बरक़रार रखा गया, ज़ुहरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने उरवा से कहा: आइशा रदियल्लाहु अन्हा को क्या हुआ की वह पूरी पढ़ती है? उन्होंने बताया की उन्होंने भी उस्मान रदियल्लाहु अन्हु की तरह तावील की है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (350) و مسلم (1 / 685)، (1570)

١٣٤٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: فَرَضَ اللَّهُ الصَّلَاةَ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْحَضَرِ أَرْبَعًا وَفِي السَّفَرِ رَكْعَتَيْنِ وَفِي الْخَوْف رَكْعَة. رَوَاهُ مُسلم

1349. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अल्लाह ने तुम्हारे नबी ﷺ की ज़ुबान पर हज़र में चार रकते, सफ़र में दो रकते और हालत खौफ में एक रक्अत फ़र्ज़ की| (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 687)، (1576)

١٣٥٠ - (ضَعِيف جدا) وَعَن ابْن عَبَّاس وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَا: سَنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ السَّفَرِ رَكْعَتَيْنِ وَهُمَا تَمَامٌ غَيْرُ قَصْرٍ وَالْوِتْرُ فِي السَّفَرِ سنة. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1350. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए सफ़र दो रक्अत मशरुअ फरमाई और वह दो रक्अत (सवाब के लिहाज़ से) पूरी है कम नहीं, बाकी दौरान ए सफ़र वित्र पढ़ना सुन्नत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (1194) * فيه جابر الجعفى وهو ضعيف جدًا

١٣٥١ - (ضَعِيف) وَعَن مَالك بَلَغَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ كَانَ يَقْصُرُ فِي الصَّلَاة فِي مثل ص:٤٢ مَا يكون بَين مَكَّة والطائف وَفِي مثل مَا يكون بَيْنَ مَكَّةَ وَعُسْفَانَ وَفِى مِثْلِ مَا بَيْنَ مَكَّةَ وَجُدَّةَ قَالَ مَالِكٌ: وَذَلِكَ أَرْبَعَةُ بُرُدٍ. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

1351. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुझे यह हदीस पहुंची है के इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा मक्का और ताईफ, मक्का और उस्फान और मक्का और जदह के दरमियान मुसाफ़त जितने फासले पर कसर पढ़ा करते थे और इमाम मालिक ने फ़रमाया: और यह चार बुरुद मुसाफ़त है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 148 ح 341) * السند منقطع وله شواهد عند ابن ابی شيبة (2 / 443 ، 446 ح 8119 ، 8133 ، 8135 ، 8128 ، 8140 ، 8142 ، 8147) و عبدالرزاق (4296) و غيرهما

١٣٥٢ - (ضَعِيف) وَعَن الْبَراء قَالَ: صَحِبْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ سَفَرًا فَمَا رَأَيْتُهُ تَرَكَ رَكْعَتَيْنِ إِذَا زَاغَتِ الشَّمْسُ قَبْلَ الظُّهْرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1352. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ अठारह मर्तबा शरीक ए सफ़र रहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सूरज ढलने के बाद नमाज़ ए ज़ुहर से पहले दो रकते छोड़ते हुए कभी नहीं देखा| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1222) و الترمذى (550) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (1 / 315) و وافقه الذهبى]

١٣٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ كَانَ يَرَى ابْنَهُ عُبَيْدَ اللَّهِ يَتَنَفَّلُ فِي السَّفَرِ فَلَا يُنْكِرُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ مَالِكٌ

1353. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा अपने बेटे उबैदुल्लाह को दौरान ए सफ़र नफ्ल पढ़ते हुए देखते तो आप उस पर रोक टोक नहीं करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (/ 150 ح 351) * هزا منقطع ، من البلاغات

जुमा का बयान • بَاب الْجُمُعَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٣٥٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَحْنُ الْآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَيْدَ أَنَّهُمْ أُوتُوا الْكِتَّابَ مِنْ قَبْلِنَا وَأُوتِينَاهُ من بعدهمْ ثمَّ هَذَا يومهم الَّذِي فرض عَلَيْهِم يَعْنِي يَوْم الْجُمُعَةَ فَاخْتَلَفُوا فِيهِ فَهَدَانَا اللَّهُ لَهُ وَالنَّاسُ لَنَا فِيهِ تَبَعٌ الْيَهُودُ غَدًا وَالنَّصَارَى بَعْدَ غَد»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «نَحْنُ الْآخِرُونَ الْأَوَّلُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَنَحْنُ أَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بيد أَنهم» . وَذكر نَحوه إِلَى آخِره

1354. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हम दुनिया में सबसे आख़िर पर आए है, लेकिन कियामत के रोज़ सबसे आगे होंगे ताहम उन्हें हम से पहले किताब दी गई और हमें उन के बाद दी गई, फिर यही यानी जुमा का दिन इन पर फ़र्ज़ किया गया था मगर उन्होंने उस में इख्तिलाफ किया और अल्लाह ने हमें उसकी रहनुमाई फरमा दी, इसीलिए बाकी लोग हम से पीछे हो गए, यहूद कल (हफ्ते के रोज़) और इसाई उस से अगले रोज़ इतवार के रोज़ इबादत करते हैं", और मुस्लिम की एक रिवायत में है फ़रमाया (हम दुनिया में) सबसे आख़िर पर है लेकिन रोज़ ए कियामत सबसे पहले होंगे और सबसे पहले हम जन्नत में जाएँगे", बाकी रिवायत उन्होंने आख़िर तक हदीस पिछले की तरह बयान की| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (876) و مسلم (19 / 855)، (1978 و 1979) [و 20 / 855 ، الرواية الثانية]

١٣٥٥ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَة لمُسلم عَن أبي هُرَيْرَة وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ الْحَدِيثِ: «نَحْنُ الْآخِرُونَ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا وَالْأَوَّلُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْمقْضِي لَهُم قبل الْخَلَائق»

1355. सहीह मुस्लिम ही की अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस में है उन्होंने बयान क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने हदीस के आख़िर पर फ़रमाया: "हम दुनिया वालो में सबसे आख़िर पर आए लेकिन रोज़ ए कियामत मुकद्दम होंगे और सारी मखलूक से पहले हमारे मुतल्लिक फैसला किया जाएगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 856)، (1982)

١٣٥٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ يَوْمٍ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ فِيهِ خُلِقَ آدَمُ وَفِيهِ أُدْخِلَ الْجَنَّةَ وَفِيه أخرج مِنْهَا وَلَا تقوم السَّاعَة لَا فِي يَوْم الْجُمُعَة» رَوَاهُ مُسلم .

1356. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम अय्याम से बेहतरीन

दिन जुमा का दिन है, इसी दिन आदम अलैहिस्सलाम पैदा किए गए इसी रोज़ जन्नत में दाखिल किए गए इसी रोज़ उस से निकाले गए और कियामत भी जुमा ही के रोज़ कायम होगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 854)، (1976)

١٣٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ فِي الْجُمُعَةِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللَّهَ فِيهَا خَيْرًا إِلَّا أعطَاهُ إِيَّاه. وَزَاد مُسلم: ص:٤٢ «وَهِيَ سَاعَةٌ خَفِيفَةٌ» . وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا قَالَ: «إِنَّ فِي الْجُمُعَةِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا مُسْلِمٌ قَائِم يُصَلِّي يسْأَل لاله يخرا إِلَّا أعطَاهُ إِيَّاه»

1357. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी है की जब कोई मुसलमान बंदा इस घड़ी में अल्लाह से कोई खैर तलब करता है तो अल्लाह इसे वही चीज़ अता फरमा देता है"| इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने इज़ाफा नकल किया है, फ़रमाया: "वो मुख़्तसर घड़ी है" सहीहैन की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: "जुमा में एक ऐसी घड़ी है की जब मुसलमान ठीक इस घड़ी में नमाज़ के दौरान या नमाज़ की जगह नमाज़ के इंतज़ार में बैठ कर अल्लाह से कोई खैर तलब करता है तो अल्लाह इसे वही चीज़ अता कर देता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (925) و مسلم (15 / 852)، (1973)

١٣٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي شَأْنِ سَاعَةِ الْجُمُعَةِ: «هِيَ مَا بَيْنَ أَنْ يَجْلِسَ الْإِمَامُ إِلَى أَن تقضى الصَّلَاة» . رَوَاهُ مُسلم

1358. अबू बुरदह बिन अबू मूसा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अपने वालिद को बयान करते हुए सुना, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को: "जुमा की इस घड़ी का वक़्त बयान करते सुना के वह इमाम के खुत्बा के लिए बैठनेसे लेकर नमाज़ से फारिग़ होने तक है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 853)، (1975)

بَاب الْجُمُعَة • जुमा का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٣٥٩ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: خَرَجْتُ إِلَى الطُّورِ فَلَقِيتُ كَعْبَ الْأَحْبَارِ فَجَلَسْتُ مَعَهُ فَحَدَّثَنِي عَنِ التَّوْرَاةِ وَحَدَّثْتُهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ فِيمَا حَدَّثْتُهُ أَنْ قُلْتُ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خَيْرُ يَوْمٍ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ فِيهِ خُلِقَ آدَمُ وَفِيهِ أُهْبِطَ وَفَيْهِ تِيبَ عَلَيْهِ وَفِيهِ مَاتَ وَفِيهِ تَقُومُ السَّاعَةُ وَمَا من دَابَّة إِلَّا وَهِي

مسيخة يَوْمَ الْجُمُعَةِ مِنْ حِينِ تُصْبِحُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ شَفَقًا مِنَ السَّاعَةِ إِلَّا الْجِنَّ وَالْإِنْسَ وفيهَا سَاعَةٌ لَا يُصَادِفُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ يُصَلِّي يسْأَل الله شَيْئا إِلَّا أعطَاهُ إِيَّاهَا. قَالَ كَعْبٌ: ذَلِكَ فِي كُلِّ سَنَةٍ يَوْمٌ. فَقلت: بل فِي كل جُمُعَة قَالَ فَقَرَأَ كَعْبٌ التَّوْرَاةَ. فَقَالَ: صَدَقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى ص:٤٢ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: لَقِيتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ سَلَامٍ فَحَدَّثْتُهُ بِمَجْلِسِي مَعَ كَعْب وَمَا حَدَّثْتُهُ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَقُلْتُ لَهُ: قَالَ كَعْب: ذَلِك كُلِّ سَنَةٍ يَوْمٌ؟ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: كَذَبَ كَعْبٌ. فَقُلْتُ لَهُ ثُمَّ قَرَأَ كَعْبٌ التَّوْرَاةَ. فَقَالَ: بَلْ هِيَ فِي كُلِّ جُمُعَةٍ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: صَدَقَ كَعْبٌ ثُمَّ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: قَدْ عَلِمْتُ أَيَّةَ سَاعَةٍ هِيَ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَة فَقلت لَهُ: فَأَخْبرنِي بهَا. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: هِيَ آخِرُ سَاعَةٍ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقُلْتُ: وَكَيْفَ تَكُونُ آخِرَ سَاعَةٍ فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُصَادِفُهَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ وَهُوَ يُصَلِّي وَتلك السَّاعَة لَا يُصَلِّي فِيهَا؟» فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: أَلَمْ يَقُلْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ جَلَسَ مَجْلِسًا يَنْتَظِرُ الصَّلَاةَ فَهُوَ فِي صَلَاةٍ حَتَّى يُصَلِّيَ؟» قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقلت: بلَى. قَالَ: فَهُوَ ذَاك. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى أَحْمد إِلَى قَوْله: صدق كَعْب

1359. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं तुर की तरफ गया तो मैं काब अह्बार से मिला में उस के साथ बैठ गया उस ने मुझे तौरात के बारे में बताया और मैंने इसे रसूलुल्लाह ﷺ की अहादीस सुनाइए मैंने इसे जो कुछ बताया वह वही कुछ था जो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तमाम अय्याम से बेहतर दिन जुमा का दिन है, उस में आदम अलैहिस्सलाम की तखलीक हुई इसी रोज़ ज़मीन पर उतारे गए, इसी रोज़ उनकी तौबा कबूल की गई इसी रोज़ फौत हुए, इसी रोज़ ए कियामत कायम होगी, जिन्न व इन्स के सिवा तमाम जानवर जुमा के दिन तुलुअ ए फज्र से तुलुअ ए आफ़ताब तक कियामत कायम होने के खौफ से चींखते रहते है, उस में एक घड़ी है की जब मुसलमान बंदा ऐन इस घड़ी में दौरान ए नमाज़ अल्लाह से जो मांगता है तो अल्लाह इसे वही चीज़ अता कर देता है”| काब ने कहा: पुरे साल में एक दिन ऐसा होता है, मैंने कहा: नहीं बल्कि हर जुमा के रोज़ होता है, काब ने तौरात पढ़ी तो उस ने कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने सच फ़रमाया, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु से मिला तो मैंने काब अह्बार के साथ अपने मजलिस के बारे में और मैंने जुमा के मुतल्लिक जो इसे बताया था उस के मुतल्लिक उन्हें बताया के काब ने कहा: वह पुरे साल में एक दिन होता है, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया काब ने झूठ बोला, मैंने उन्हें बताया की काब ने फिर तौरात पढ़ी तो उस ने कहा: बल्कि वह हर जुमा के रोज़ होता है, फिर अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: काब ने सच कहा, फिर अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे मालुम है के वह कौन सी घड़ी है, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैंने कहा: मुझे उस के मुतल्लिक खबर देने में बुखल न करे, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वह जुमा के दिन की आखिरी घड़ी है, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैंने कहा: वह जुमा के दिन की आखिरी घड़ी कैसे हो सकती है? जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है “ कोई मुसलमान बंदा नमाज़ में उसे पाता है, तो अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने यह नहीं फरमाया: “जो शख़्स किसी जगह बैठ कर नमाज़ का इंतज़ार करता है तो वह नमाज़ पढ़ने तक हुक्मन नमाज़ ही में होता है”, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने कहा: क्यों नहीं, उन्होंने फ़रमाया पस यह वही है| मालिक, अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, और इमाम अहमद ने “ काब ने सच कहा” तक रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالك (1 / 108 ، 110 ح 239) و ابوداؤد (1046) و الترمذى (491 وقال : صحيح) و النسائى (3 / 114 ، 115 ح 1431) و احمد (2 / 486 ح 10308) * و صححه ابن خزيمة (1738) و ابن حبان (1024) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 278 ، 279) و وافقه الذهبى

١٣٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْتَمِسُوا السَّاعَةَ الَّتِي تُرْجَى فِي وَيَوْم الْجُمُعَةِ بَعْدَ الْعَصْرِ إِلَى غَيْبُوبَةِ الشَّمْسِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1360. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस घड़ी को तलाश करे जिसके बारे में उम्मीद की जाती है के वह जुमा के रोज़ बाद नमाज़ ए असर से गुरूब ए आफ़ताब तक होती है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (489 وقال : غریب و محمد بن ابی حمید یضعف من قبل حفظه) * محمد بن ابی حمید لم ینفرد به و للحدیث شواھد عند الترمذی (490) و ابی داود (1048) و غیرھما

١٣٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَوْسِ بْنِ أَوْسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ أَفْضَلِ أَيَّامِكُمْ يَوْمُ الْجُمُعَةِ فِيهِ خُلِقَ آدَمُ وَفِيهِ قُبِضَ وَفِيهِ النَّفْخَةُ فأكثرا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيهِ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ مَعْرُوضَةٌ عَلَيّ» فَقَالُوا: ص:٤٣ يَا رَسُول الله وَكَيف تعرض صَلَاتنَا عَلَيْك وَقَدْ أَرَمْتَ؟ قَالَ: يَقُولُونَ: بَلِيتَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

1361. औस बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक जुमा का दिन तुम्हारे अय्याम में से अफज़ल दिन है, इस रोज़ आदम अलैहिस्सलाम की तखलीक हुई, इसी मैं इन की रूह कब्ज़ की गई, पहली बार सुर फूंका जाना, दूसरी बार सुर फूंका जाना होगा, इस रोज़ मुझ पर कसरत से दुरुद पढ़ो, क्योंकि तुम्हारा दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारा दुरुद आप पर कैसे पेश किया जाता है, जबकि आप तो (मिट्टी में) पोशीदा हो चुके होंगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ने अंबिया अलैहिस्सलाम के अज्साद को ज़मीन यानी मिट्टी पर हराम कर दिया है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1047) و النسائی (3 / 91 ، 92 ح 1375 ، و السنن الکبریٰ 3 / 248 ، 249) و ابن ماجه (1636) و الدارمی (1 / 369 ح 158) و البیھقی فی الدعوات الکبیر (لم اجده فی المطبوع) * صححه جماعة و فیه علة قادحة ، عبد الرحمن بن یزید ھو ابن تمیم کما حققه البخاری و ابوداؤد و غیرھما وھو ضعیف جدًا و اخطا من قال انه ابن جابر : الثقة ، راجع نیل المقصود (1 / 320) و لبعضه شاھد یاتی (1366)

١٣٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْيَوْمُ الْمَوْعُودُ يَوْمُ الْقِيَامَةِ وَالْيَوْمُ الْمَشْهُودُ يَوْمُ عَرَفَةَ وَالشَّاهِدُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَمَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَلَا غَرَبَتْ عَلَى يَوْمٍ أَفْضَلَ مِنْهُ فِيهِ سَاعَةٌ لَا يُوَافِقُهَا عَبْدٌ مُؤْمِنٌ يَدْعُو اللَّهَ بِخَيْرٍ إِلَّا اسْتَجَابَ اللَّهُ لَهُ وَلَا يَسْتَعِيذُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا أَعَاذَهُ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا يُعْرَفُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ وَهُوَ يضعف

1362. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “यौम ए मवउद से यौम ए कियामत, यौम ए मशहूद से यौम ए अरफा और शाहिद से जुमा का दिन मुराद है, वह तमाम अय्याम से अफज़ल है, उस में अल्लाह से कोई खैर तलब करता है तो अल्लाह उसकी दुआ को कबूल फरमाता है, और वह बंदा मुअमिन जिस चीज़ से पनाह तलब करता है तो वह इसे उस से पनाह दे देता है”| अहमद तिरमिज़ी और इमाम

तिरमिज़ी ने कहा: यह हदीस ग़रीब है और यह सिर्फ मूसा बिन उबैदाह के वास्ते से मारुफ़ है, जबकि वह जईफ है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (2 / 298، 299 ح 7959 ، 7960) و الترمذی (2 / 519) * فیہ موسی بن عبیدۃ ضعیف و للحدیث شواھد منھا الشاھد الموقوف عند الحاکم (2 / 519) و صححہ علی شرط الشیخین و وافقہ الذھبی و سندہ ضعیف ، فیہ یونس بن عبید مدلس و عنعن]



बَاب الْجُمُعَة • जुमा का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٣٦٣ - (حسن) عَنْ أَبِي لُبَابَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُنْذِرِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ سَيِّدُ الْأَيَّامِ وَأَعْظَمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَهُوَ أَعْظَمُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ يَوْمِ الْأَضْحَى وَيَوْمِ الْفِطْرِ فِيهِ خَمْسُ خِلَالٍ: خَلَقَ اللَّهُ فِيهِ آدَمَ وَأَهْبَطَ اللَّهُ فِيهِ آدَمُ إِلَى الْأَرْضِ وَفِيهِ تَوَفَّى اللَّهُ آدَمَ وَفِيهِ سَاعَةٌ لَا يَسْأَلُ الْعَبْدُ فِيهَا شَيْئًا إِلَّا أَعْطَاهُ مَا لَمْ يَسْأَلْ حَرَامًا وَفِيهِ تَقُومُ السَّاعَةُ مَا مِنْ مَلَكٍ مُقَرَّبٍ وَلَا سَمَاءٍ وَلَا أَرْضٍ وَلَا رِيَاحٍ وَلَا جِبَالٍ وَلَا بَحْرٍ إِلَّا هُوَ مُشْفِقٌ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1363. अबू लुबाब बिन अब्दुल मिन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक जुमा के दिन अल्लाह के यहाँ सय्यदुल अय्याम और बाकी अय्याम से अज़ीम तर है, वह अल्लाह के यहाँ यौम ए अदहा और यौम ए अल फ़ित्र से भी अज़ीम तर है, उस को पांच खुसुसियात हासिल है, अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को इसी रोज़ तखलीक फ़रमाया, अल्लाह ने इसी रोज़ आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा, अल्लाह ने इसी रोज़ आदम अलैहिस्सलाम को वफ़ात दी, उस में एक ऐसी घड़ी है के उस में बंदा जो भी हलाल चीज़ तलब करता है, वह इसे मिल जाती है और इसी रोज़ ए कियामत कायम होगी, मुकर्रब फ़रिश्ते आसमान व ज़मीन हवा पहाड़ और समुन्दर जुमा के दिन से ख़ाइफ़ रहते है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابن ماجہ (1084) * فیہ عبداللہ بن محمد بن عقیل : ضعیف

١٣٦٤ - (حسن) وَرَوَى أَحْمَدُ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ: أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخْبِرْنَا عَنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ مَاذَا فِيهِ مِنَ الْخَيْرِ؟ قَالَ: «فِيهِ خَمْسُ خلال» وسَاق الحَدِيث

1364. इमाम अहमद ने सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है की एक अंसारी शख़्स नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, हमें जुमा के दिन के मुतल्लिक बताइए के उस में क्या खैर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस में पांच खुसुसियात हैं -‹‹‹‹‹‘‘ और बाकी हदीस आख़िर तक इसी तरह बयान की| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (5 / 284 ح 22824) [و عبد بن حمید (309)] * ابن عقیل : ضعیف

١٣٦٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قِيلَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: لِأَيِّ شَيْءٍ سُمِّيَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ؟ قَالَ: «لِأَنَّ فِيهَا طُبِعَتْ طِينَةُ أَبِيكَ آدَمَ وَفِيهَا الصَّعْقَةُ وَالْبَعْثَةُ وَفِيهَا الْبَطْشَةُ وَفِي آخِرِ ثَلَاثِ سَاعَاتٍ مِنْهَا سَاعَةٌ مَنْ دَعَا الله فِيهَا اسْتُجِيبَ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

1365. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ से अर्ज़ किया गया, जुमा के दिन के नाम की वजह से तस्मिया किया है आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंकि इस रोज़ आप के बाप आदम के खमीर को तैयार किया गया, इसी में नुफ्खा उला पहली बार सुर फूंका जाना और नुफ्खा दूसरा है, इसी में हशर का मैदान सजेगा और उसकी आखिरी तीन घड़ियों में एक ऐसी घड़ी है के जो शख़्स उस में दुआ करता है तो उसकी दुआ कबूल की जाती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 311 ح 8088) * فيه فرج بن فضالة ضعيف و على بن ابى طلحة : لم يسمع من ابى هريرة

١٣٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَكْثِرُوا الصَّلَاةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَإِنَّهُ مَشْهُودٌ تَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ وَإِنَّ أحدا لن يُصَلِّي عَلَيَّ إِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهُ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهَا» قَالَ: قُلْتُ: وَبَعْدَ الْمَوْتِ؟ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللَّهِ حَيٌّ يُرْزَقُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

1366. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जुमा के रोज़ मुझ पर कसरत से दुरुद भेजा करो, क्योंकि वह मशहूद है, उस पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, जब तुम में से कोई शख़्स मुझ पर दुरुद पढ़ता है तो उस का दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है, हत्ता कि वह उस से फारिग़ हो जाए”, रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: और वफात के बाद आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने अंबिया अलैहिस्सलाम के अज्साद को खाना, ज़मीन (मिट्टी) पर हराम कर दिया है, अल्लाह के नबी ﷺ जिंदा होते हैं और उन्हें रिज़क़ दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1637) * السند منقطع ، زيد بن ايمن عن عبادة بن نسى : مرسل

١٣٦٧ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ ص:٤٣ مُسْلِمٍ يَمُوتُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوْ لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ إِلَّا وَقَاهُ اللَّهُ فِتْنَةَ الْقَبْرِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ إِسْنَاده بِمُتَّصِل

1367. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मुसलमान जुमा के दिन या जुमा की रात फौत हो जाता है तो अल्लाह इसे फितने कब्र से बचा लेता है”| अहमद तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और उसकी सनद मुतस्सिल नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 169 ح 5682) و الترمذى (1074) ربيعة بن سيف لم يسمع من عبدالله بن عمرو رضى الله عنه فالسند منقطع و للحديث شواهد ضعيفة عند البيهقى (اثبات عذاب القبر بتحقيقى : 152153) وغيره

١٣٦٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ قَرَأَ: (الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لكم دينكُمْ)»» الْآيَةَ وَعِنْدَهُ يَهُودِيٌّ فَقَالَ: لَوْ نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ عَلَيْنَا لَاتَّخَذْنَاهَا عِيدًا فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَإِنَّهَا نزلت فِي يَوْم عيدين فِي وَيَوْم جُمُعَةٍ وَيَوْمِ عَرَفَةَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

1368. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने यह आयत तिलावत की: “आज के दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है”| तो इस वक़्त उन के पास एक यहूदी था उस ने कहा: अगर यह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम इस यौम ए नुज़ूल को ईद बना लेते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: यह तो इदैन के रोज़ नाज़िल हुई है, जुमा के दिन और अरफा के दिन| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3044)

١٣٦٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ رَجَبٌ قَالَ: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي رَجَبٍ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ» قَالَ: وَكَانَ يَقُولُ: «لَيْلَةُ الْجُمُعَةِ لَيْلَةٌ أَغَرُّ وَيَوْمُ الْجُمُعَةِ يَوْمٌ أَزْهَرُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

1369. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब माह रजब शुरू होता तो रसूलुल्लाह ﷺ दुआ फरमाते: “अल्लाह हमारे लिए रजब व शाबान में बरकत फरमा और हमें रमज़ान तक पहुंचा”, और आप ﷺ फ़रमाया करते थे: “जुमा की रात चमक दार रात है और जुमा का दिन व ताज़ा दिन है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (لم اجده] و شعب الايمان [3815] و فضائل الاوقات [14] كلاهما له) [و عبدالله بن احمد (1 / 259 ح 2346] * رواه زائدة بن ابى الرقاد عن زياد النميرى : الاول منكر الحديث و الثانى ضعيف

जुमे के वाजिब होने का बयान • بَاب وُجُوبهَا

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٣٧٠ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُمَا قَالَا: سَمِعْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ عَلَى أَعْوَادِ مِنْبَرِهِ: «لِيَنْتَهِيَنَّ أَقْوَامٌ عَنْ وَدْعِهِمُ الْجُمُعَاتِ أَوْ لَيَخْتِمَنَّ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ ثُمَّ لَيَكُونُنَّ مِنَ الْغَافِلِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

1370. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर की सीढ़ियों पर फरमाते हुए सुना: “लोग जुमे छोड़ने से बाज़ आजाए वरना अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा और फिर वह गाफिलिन में से हो जाएँगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (40 / 865)، (2002)

جुमे के वाजिब होने का बयान • بَاب وُجُوبهَا

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٣٧١ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي الْجَعْدِ الضُّمَيْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَرَكَ ثَلَاثَ جُمَعٍ تَهَاوُنًا بِهَا طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قَلْبِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1371. अबू जअद ज़ूमरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अदम ए तवज्जो की बिना पर तीन जुमे छोड़े तो अल्लाह तआला उस का दिल पर मुहर लगा देता है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1052) و الترمذی (500 وقال : حسن) و النسائی (3 / 88 ح 11370) و ابن ماجه (1125) و الدارمی (1 / 379 ح 1579) [و صححه ابن خزيمة (1857) و ابن حبان (65 ، 553 ، 554) و الحاكم على شرط مسلم (1 / 280) و وافقه الذهبى وهو حديث صحيح]

١٣٧٢ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ مَالك عَن صَفْوَان بن سليم

1372. इमाम मालिक ने इसे सफवान बिन सलीम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (1 / 111 ح 244) * السند مرسل و الحديث السابق (1371) شاهد له

١٣٧٣ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن أبي قَتَادَة

1373. इमाम अहमद ने अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (/ 300 ح 22925) [و انظر الحديثين السابقين : 1371 ، 1372]

١٣٧٤ - (ضَعِيف) وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَرَكَ الْجُمُعَةَ مِنْ غَيْرِ عُذْرٍ فَلْيَتَصَدَّقْ بِدِينَارٍ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَبِنِصْفِ دِينَارٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1374. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स बिला उज़्र जुमा छोड़ दे तो वह एक दीनार सदका करे अगर वह न पाए तो आधा दीनार"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 14 ح 2042) و ابوداؤد (1053) و ابن ماجه (1128) * قدامة : لم يصح سماعه من سمرة ، قاله البخارى و قتادة مدلس و عنعن

١٣٧٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «الْجُمُعَةُ عَلَى مَنْ سَمِعَ النِّدَاءَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1375. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से बयान करते हैं, आप ने फ़रमाया: “जो शख़्स आज़ान सुने उस पर जुमा फ़र्ज़ है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (1056) * ابو سلمة بن تبيه و عبدالله بن هارون : مجهولان

١٣٧٦-(ضَعِيف جدا)وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْجُمُعَةُ عَلَى مَنْ آوَاهُ اللَّيْلُ إِلَى أَهْلِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث إِسْنَاده ضَعِيف

1376. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स रात अपने अहल व अयाल के पास वापस जा सकता हो उस पर जुमा फ़र्ज़ है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: इस हदीस की इसनाद जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (502) * حجاج بن نصير و شيخه : ضعيفان ، و عبدالله بن سعيد : متروک

١٣٧٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْجُمُعَةُ حَقٌّ وَاجِبٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فِي جَمَاعَةٍ إِلَّا عَلَى أَرْبَعَةٍ: عَبْدٍ مَمْلُوكٍ أَوِ امْرَأَةٍ أَوْ صَبِيٍّ أَوْ مَرِيضٍ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ بِلَفْظِ الْمَصَابِيحِ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بني وَائِل

1377. तारिक बिन शिहाब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर मुसलमान पर बा जमाअत जुमा अदा करना फ़र्ज़ है, सिवाय चार के, अब्दी ममलुक, औरत, बच्चे या मरीज़ के”, अबू दावुद और शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ से बनू वाइल के एक शख़्स की सनद से मरवी है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1067) و البغوی فی شرح السنة (4 / 225 ح 1056) [و رواه الحاكم (1 / 288) عن طارق بن شهاب عن ابی موسى الاشعری به] * طارق بن شهاب : صحابی رضی الله عنه و روايته من باب مراسيل الصحابة و مراسيل الصحابة مقبولة على الراجح



जुमे के वाजिब होने का बयान • بَاب وُجُوبهَا

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٣٧٨ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِقَوْمٍ يَتَخَلَّفُونَ عَنِ الْجُمُعَةِ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ رَجُلًا يُصَلِّي بِالنَّاسِ ثُمَّ أُحْرِقَ عَلَى رِجَالٍ يَتَخَلَّفُونَ عَنِ الْجُمُعَةِ بُيُوتهم» . رَوَاهُ مُسلم

1378. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने जुमा से पीछे रह जाने वाले लोगों के बारे में फ़रमाया: “मैंने इरादा किया की मैं किसी आदमी को हुक्म दू, वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए फिर मैं जुमा से पीछे रह जाने वाले लोगों को घरो समेत आग लगा दू”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (254 / 652)، (1485)

١٣٧٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ تَرَكَ الْجُمُعَةُ مِنْ غَيْرِ ضَرُورَةٍ كُتِبَ مُنَافِقًا فِي كِتَابٍ لَا يُمْحَى وَلَا يُبَدَّلُ» . وَفِي بَعْضِ الرِّوَايَاتِ ثَلَاثًا. رَوَاهُ الشَّافِعِي

1379. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स बिला उज़्र जुमा छोड़ दे तो उसे ऐसी किताब में मुनाफ़िक़ लिख दिया जाता है, जो ना मिटाई जा सकती है न के तब्दील की जा सकती है”| और बाज़ रिवायत में तीन जुमो का ज़िक्र है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه الشافعی فی الام (1 / 208) و المسند (ص 70 ح 303) * فیه ابراھیم بن محمد الاسلمی متروک

١٣٨٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَعَلَيْهِ الْجُمُعَةُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَّا مَرِيض أَو مُسَافر أَوْ صَبِيٌّ أَوْ مَمْلُوكٌ فَمَنِ اسْتَغْنَى بِلَهْوٍ أَوْ تِجَارَةٍ اسْتَغْنَى اللَّهُ عَنْهُ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حميد» . رَوَاهُ الدراقطني

1380. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो जबकि मरीज़ या मुसाफिर या औरत या बच्चे या ममलुक न हो, उस पर जुमा के रोज़ जुमा पढ़ना फ़र्ज़ है, और जो शख़्स खेल या तिजारत की वजह से बे एअतनाई बरते तो अल्लाह उस से बेनियाज़ हो जाता है, जबकि अल्लाह तआला बेनियाज़ काबिल तारीफ़ है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الدارقطنی (2 / 3 ح 1560) * ابن لھیعة ضعیف بعد اختلاطه و معاذ بن محمد الانصاری : مجھول الحال ، و ابو الزبیر مدلس و عنعن



जुमा के दिन पाकी सफाई और मस्जिद जाने का बयान

بَاب التَّنْظِيف و التبكير

पहली फस्ल

الْفَصْل الأول

١٣٨١ - (صَحِيح) عَنْ سَلْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَغْتَسِلُ رَجُلٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَتَطَهَّرُ مَا اسْتَطَاعَ مِنْ طُهْرٍ وَيَدَّهِنُ مِنْ دُهْنِهِ أَوْ يَمَسُّ مِنْ طِيبِ بَيْتِهِ ثُمَّ يَخْرُجُ فَلَا يُفَرِّقُ بَيْنَ اثْنَيْنِ ثُمَّ يُصَلِّي مَا كُتِبَ لَهُ ثُمَّ يُنْصِتُ إِذَا تَكَلَّمَ الْإِمَامُ إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبين الْجُمُعَة الْأُخْرَى» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1381. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल करे और खूब अच्छी तरह मक्दोर भर सफाई करे और तेल लगाए और अपने घर में मौजूद खुशबू लगाए, फिर अपने घर से जुमा के लिए रवाना हो और मस्जिद में आकर दोबैठे हुए आदमियों को (उन की जगह से) न हटाए, फिर जिस क़दर मुकद्दर हो नमाज़ पढ़े और जब इमाम खुत्बा शुरू कर दे, तो फिर ख़ामोश हो जाए, तो उस के इस हाज़िर और दूसरे जुमा के दरमियान वाले गुनाह बख्श दिए जाते हैं| (बुखारी)

رواه البخارى (883)

١٣٨٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ. عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ اغْتَسَلَ ثُمَّ أَتَى الْجُمُعَةَ فَصَلَّى مَا قُدِّرَ لَهُ ثُمَّ أَنْصَتَ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْ خُطْبَتِهِ ثُمَّ يُصَلِّيَ مَعَهُ غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ الْأُخْرَى وَفَضْلُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ» . رَوَاهُ مُسلم

1382. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ग़ुस्ल कर के जुमा के लिए आए और जितनी मुकद्दर में हो नमाज़ पढ़े, फिर खुत्बा मुकम्मल होने तक ख़ामोश रहे और फिर इमाम के साथ नमाज़ पढ़े तो उस के इस और दूसरे जुमा के दरमियान वाले और मज़ीद तीन दिन के गुनाह बख्श दिए जाते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 857)، (1987)

١٣٨٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ أَتَى الْجُمُعَةَ فَاسْتَمَعَ وَأَنْصَتَ غُفِرَ لَهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجُمُعَةِ وَزِيَادَةُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ وَمَنْ مَسَّ الْحَصَى فقد لَغَا» . رَوَاهُ مُسلم

1383. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छी तरह वुज़ू कर के जुमा के लिए आए और ख़ामोशी से गौर के साथ खुत्बा सुने तो उस के इस और दूसरे जुमा के दरमियान वाले और मज़ीद तीन दिन के गुनाह बख्श दिए जाते हैं और जो कंकरियो से खेलता रहे तो उस ने लग्व काम किया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (27 / 857)، (1988)

١٣٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ وَقَفَتِ الْمَلَائِكَةُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ يَكْتُبُونَ الْأَوَّلَ فَالْأَوَّلَ وَمَثَلُ الْمُهَجِّرِ كَمَثَلِ الَّذِي ص:٤٣ يُهْدِي بَدَنَةً ثُمَّ كَالَّذِي يُهْدِي بَقَرَةً ثُمَّ كَبْشًا ثُمَّ دَجَاجَةً ثُمَّ بَيْضَةً فَإِذَا خَرَجَ الْإِمَامُ طَوَوْا صُحُفَهُمْ ويستمعون الذّكر»

1384. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब जुमा का दिन होता है तो फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और आने वालो को तरतीब वार लिखते जाते हैं और सबसे पहले आने वाला इस शख़्स की तरह अज़र व सवाब पाता है, जो ऊंट की कुर्बानी करता है, फिर उस के बाद वाला इस शख़्स की तरह है जो गाय की कुर्बानी करता है, फिर उस के बाद वाला भेड़ की कुर्बानी करने वाले की तरह, फिर मुर्गी और फिर उस के बाद आने वाला ऐसे जैसे कोई अंडा सदका करे, जब इमाम मिम्बर पर जाता है तो वह अपने रजिस्टर बंद कर देते हैं और गौर से खुत्बा सुनते है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (929) و مسلم (24 / 850)، (1984)

١٣٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أنصت وَالْإِمَام يخْطب فقد لغوت)

1385. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम ने दौराने खुत्बा किसी साथ वाले शख़्स से (बस इतना) कह दिया के ख़ामोश हो जाओ तो तुमने लग्व काम किया”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (934) و مسلم (11 / 851)، (1965)

١٣٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يُقِيمَنَّ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ ثُمَّ يُخَالِفُ إِلَى مَقْعَدِهِ فَيَقْعُدَ فِيهِ وَلَكِن يَقُول: افسحوا ". رَوَاهُ مُسلم

1386. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स जुमा के रोज़ अपने किसी भाई को उसकी जगह से इस मकसद से न उठाए के खुद उसकी जगह पर बैठ जाए बल्कि वह यूँ कहे वुसअत पैदा करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (30 / 2178)، (5688)



जुमा के दिन पाकी सफाई और मस्जिद जाने का बयान

بَاب التَّنْظِيف و التبكير

दूसरी फस्ल

الْفَصْل الثَّانِي

١٣٨٧ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من اغْتَسَلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَلَبِسَ مِنْ أَحْسَنِ ثِيَابِهِ وَمَسَّ مِنْ طِيبٍ إِنْ كَانَ عِنْدَهُ ثُمَّ أَتَى الْجُمُعَةَ فَلَمْ يَتَخَطَّ أَعْنَاقَ النَّاسِ ثُمَّ صَلَّى مَا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ ثُمَّ أَنْصَتَ إِذا خرج إِمَام حَتَّى يَفْرُغَ مِنْ صَلَاتِهِ كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ جُمُعَتِهِ الَّتِي قَبْلَهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1387. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जुमा के दिन ग़ुस्ल कर के अच्छा लिबास पहन कर और अगर खुशबू हो तो इसे लगा कर जुमा के लिए आए और लोगों की गरदने न फलांगे फिर जिस क़दर अल्लाह ने उस के मुकद्दर में किया है नमाज़ पढ़े और फिर जब इमाम मिम्बर पर आजाए तो नमाज़ मुकम्मल हो जाने तक ख़ामोशी इख़्तियार करे तो यह सारा इहतिमाम उस के इस और पिछले जुमा के बिच में होने वाले गुनाहों का कफ्फारा होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (343) [و احمد (3 / 81) و صححه ابن خزيمة (1762) و ابن حبان (562) و الحاكم (1 / 283) و وافقه الذهبى]

١٣٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَوْسِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ غَسَّلَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَاغْتَسَلَ وَبَكَّرَ وَابْتَكَرَ وَمَشَى وَلَمْ يَرْكَبْ ص:٤٣ وَدَنَا مِنَ الْإِمَامِ وَاسْتَمَعَ وَلَمْ يَلْغُ كَانَ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ عَمَلُ سَنَةٍ: أَجْرُ صِيَامِهَا وَقِيَامِهَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1388. औस बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जुमा के रोज़ खूब अच्छी तरह ग़ुस्ल करे पैदल चल कर अव्वल वक़्त मस्जिद में जा कर इमाम के करीब बैठ कर खूब गौर से खुत्बा सुने और इस दौरान कोई लग्व काम न करे तो उसे हर कदम के बदले एक साल के रोज़े और एक साल के कयाम का सवाब मिलता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (496 وقال : حسن) و ابوداؤد (345) و النسائى (3 / 97 ح 1385) و ابن ماجه (1087) [و صححه ابن خزيمة (1767) و ابن حبان (559) و الحاكم على شرط الشيخين (2 / 381 382) و وافقه الذهبى]

١٣٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «مَا عَلَى أَحَدِكُمْ إِنْ وَجَدَ أَنْ يَتَّخِذَ ثَوْبَيْنِ لِيَوْمِ الْجُمُعَةِ سِوَى ثَوْبَيْ مَهْنَتِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

1389. अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम में से कोई शख़्स दौराने काम पहनने वाले कपड़ो के अलावा जुमा के दिन के लिए एक अलग जोड़ा बना सकता हो तो वह बना ले उस पर कोई हरज नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (1095) [و ابوداؤد : 1078]

١٣٩٠ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ مَالك عَن يحيى بن سعيد

1390. इमाम मालिक ने इसे याह्या बिन सईद से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، مالک (1 / 110 ح 240) [هذا مرسل و الحديث السابق شاهد له]

١٣٩١ - (صَحِيح) وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «احْضُرُوا الذِّكْرَ وَادْنُوا مِنَ الْإِمَامِ فَإِنَّ الرَّجُلَ لَا يَزَالُ يَتَبَاعَدُ حَتَّى يُؤَخَّرَ فِي الْجنَّة وَإِن دَخلهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1391. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़िक्र जुमे के लिए आओ, इमाम के करीब हो कर बेठो, क्योंकि आदमी दूर होता चला जाता है हत्ता कि उस का जन्नत में दाखिला मोअख़्ख़र कर दिया जाता है अगरचे के जन्नत में चला जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1108) * قتادة مدلس ولم اجد تصريح سماعه

١٣٩٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الْجُهَنِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَخَطَّى رِقَابَ النَّاسِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ اتَّخَذَ جِسْرًا إِلَى جَهَنَّمَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1392. सहल बिन मुआज़ बिन अनस जुहनी रहिमहुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जुमा के रोज़ लोगों की गरदने फलांगता है तो वह जहन्नम की तरफ पुल बनाता है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (513) * رشدين بن سعد و زبان بن فائد : ضعفان

١٣٩٣ - (حسن) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْحُبْوَةِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

1393. मुआज़ बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जुमा के रोज़ दौराने खुत्बा गोठ मार कर बैठने से मना फ़रमाया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (514 وقال : حسن) و ابوداؤد (1110)

١٣٩٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا نَعَسَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَلْيَتَحَوَّلْ مِنْ مَجْلِسِهِ ذَلِكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1394. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स को जुमा के रोज़ दोरान खुतबे ऊंघ आए तो वह अपने जगह बदल ले”| (हसन)

سنده حسن ، رواه الترمذی (526 وقال : حسن صحیح) [و ابوداؤد (1119) و صححه ابن خزیمة (1819) و ابن حبان (571) و الحاکم علی شرط مسلم (1 / 291) و وافقه الذهبی]

بَاب التَّنْظِيف و التبكير • जुमा के दिन पाकी सफाई और मस्जिद जाने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٣٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ نَافِعٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُقِيمَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَقْعَدِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ. قِيلَ لِنَافِعٍ: فِي الْجُمُعَةِ قَالَ: فِي الْجُمُعَةِ وَغَيرهَا

1395. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को बयान करते हुए सुना के रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बात से मना फ़रमाया है के कोई शख़्स किसी शख़्स को उसकी जगह से उठाकर खुद वहां बैठ जाए, नाफेअ से पूछा गया दौराने जुमा उन्होंने ने फ़रमाया: जुमा में और जुमा के अलावा भी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (627) و مسلم (28 / 2177)، (5684)

١٣٩٦ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَحْضُرُ الْجُمُعَةَ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ: فَرَجُلٌ حَضَرَهَا بِلَغْوٍ فَذَلِكَ حَظُّهُ مِنْهَا. وَرَجُلٌ حَضَرَهَا بِدُعَاءٍ فَهُوَ رَجُلٌ دَعَا اللَّهَ إِنْ شَاءَ أَعْطَاهُ وَإِنْ شَاءَ مَنعه. ورجل حَضَره بِإِنْصَاتٍ وَسُكُوتٍ وَلَمْ يَتَخَطَّ رَقَبَةَ مُسْلِمٍ وَلَمْ يُؤْذِ أَحَدًا فَهِيَ كَفَّارَةٌ إِلَى الْجُمُعَةِ الَّتِي تَلِيهَا وَزِيَادَةِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ وَذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يَقُولُ: (مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ ص:٤٤ أَمْثَالِهَا. .)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1396. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोग जुमा के लिए आते है, एक तो वह जिस ने वहां पहुँच कर लग्व हरकत की, तो इसे उस से पस यही कुछ मिलता है, दूसरा शख़्स दुआ करने के लिए हाज़िर होता है, वह अल्लाह से दुआ करता है अगर वह चाहे तो इसे अता करे और अगर चाहे तो मना फरमादे, जबकि तीसरा शख़्स गौर से खुत्बा सुनता है और लग्व हरकात से बचता है ना किसी मुसलमान की गर्दन फलांगता है न किसी को तकलीफ पहुंचाता है, तो वह उस के लिए पिछले जुमा और मज़ीद तीन दिन (कुल दस दिन) के लिए कफ्फारा बन जाता है, और यह इसलिए के अल्लाह तआला फरमाता है “ जो शख़्स एक नेकी करता है तो उसे उस का दस गुना अज़र मिलता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1113) [و صححه ابن خزیمة (1813)]

١٣٩٧ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَكَلَّمَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فَهُوَ كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا وَالَّذِي يَقُولُ لَهُ أَنْصِتْ لَيْسَ لَهُ جُمُعَة» . رَوَاهُ أَحْمد

1397. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दौराने खुत्बा बात करता है तो वह किताबे उठाए हुए गधे की तरह है और जो शख़्स इसे कहता है खामोश हो जाओ तो उस का जुमा नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 230 ح 2033) * فيه مجالد بن سعيد : ضعيف

١٣٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَيْدِ بْنِ السَّبَّاقِ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فِي جُمُعَةٍ مِنَ الْجُمَعِ: «يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ إِنَّ هَذَا يَوْمٌ جَعَلَهُ اللَّهُ عِيدًا فَاغْتَسِلُوا وَمَنْ كَانَ عِنْدَهُ طِيبٌ فَلَا يَضُرُّهُ أَنْ يَمَسَّ مِنْهُ وَعَلَيْكُمْ بِالسِّوَاكِ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَه عَنهُ

1398. उबैद बिन सब्बाक रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी जुमा में फ़रमाया: “मुसलमानों अल्लाह ने इस दिन को ईद करार दिया, पस तुम अच्छी तरह ग़ुस्ल करो और जिस शख़्स के पास खुशबू हो तो वह इसे लगा ले उस के लिए कोई बुराई नहीं और मिस्वाक करो| (हसन)

حسن ، رواه مالک (1 / 65 ح 141) [و ابن ماجه (1098) انظر الحديث الآتى] * رواه عبيد بن السباق عن ابن عباس رضى الله عنه به ، انظر الحديث الآتى (1399)

١٣٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَهُوَ عَن ابْن عَبَّاس مُتَّصِلا

1399. और यही हदीस इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मुतस्सिल मरवी है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (1098)

١٤٠٠ - (حَسَنٌ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حَقًّا عَلَى الْمُسْلِمِينَ أَنْ يَغْتَسِلُوا يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَلْيَمَسَّ أَحَدُهُمْ مِنْ طِيبِ أَهْلِهِ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَالْمَاءُ لَهُ طِيبٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

1400. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमानों पर हक़ है के वह जुमा के रोज़ ग़ुस्ल करे और उनमें से हर कोई अपने अहले खाना की खुशबू इस्तेमाल करे और अगर वह खुशबू न पाए तो फिर उस के लिए पानी ही खुशबू है”| अहमद तिरमिज़ी और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 282 ح 18680) و الترمذى (528) * فيه يزيد بن ابى زياد ضعيف مدلس

بَاب الْخطْبَة وَالصَّلَاة • जुमा के दिन खुतबे और नमाज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٤٠١ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم كَانَ يُصَلِّي الْجُمُعَةَ حِينَ تَمِيلُ الشَّمْسُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1401. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ज़वाल ए आफ़ताब के वक़्त जुमा पढ़ा करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (904)

١٤٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: مَا كُنَّا نُقِيلُ وَلَا نَتَغَدَّى إِلَّا بَعْدَ الْجُمُعَة

1402. सहल बिन साद बयान करते हैं, हम जुमा से पहले ना दोपहर का सोना करते थे न खाना खाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (939) و مسلم (30 / 859)، (1991)

١٤٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم إِذَا اشْتَدَّ الْبَرْدُ بَكَّرَ بِالصَّلَاةِ وَإِذَا اشْتَدَّ الْحَرُّ أَبْرَدَ بِالصَّلَاةِ. يَعْنِي الْجُمُعَةَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1403. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब शर्दी ज़्यादा होती तो नबी ﷺ नमाज़ ए जुमआ जल्दी पढ़ लेते और जब गर्मी ज़्यादा होती तो आप नमाज़ ए जुमआ ठंडे वक़्त में पढ़ते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (906)

١٤٠٤ - (صَحِيح) وَعَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: كَانَ النِّدَاءُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوَّلُهُ إِذَا جَلَسَ الْإِمَامُ عَلَى الْمِنْبَرِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ فَلَمَّا كَانَ عُثْمَانُ وَكَثُرَ النَّاسُ زَادَ النِّدَاءَ الثَّالِثَ عَلَى الزَّوْرَاء. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1404. साइब बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु के दौर में जुमा के रोज़ जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता तब पहली आज़ान कही जाती थी, पस जब उस्मान रदियल्लाहु अन्हु का दौर आया और लोग ज़्यादा हो गए तो उन्होंने मक़ाम ए जवरा पर तीसरी आज़ान का इज़ाफा फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخارى (912)

١٤٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُطْبَتَانِ يَجْلِسُ بَيْنَهُمَا يَقْرَأُ الْقُرْآن وَيذكر النَّاس فَكَانَت صلَاته قصدا وخطبته قصدا. رَوَاهُ مُسلم

1405. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जुमा के दो खुत्बे दिया करते थे, आप ﷺ उन के दरमियान बैठते थे, आप कुरान पढ़ते और लोगों को वाज़ व नसीहत फरमाते थे, आप का खुत्बा और नमाज़ दरमियानी होती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 866)، (2003)

١٤٠٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمَّارٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ طُولَ صَلَاةِ الرَّجُلِ وَقِصَرَ خُطْبَتِهِ مَئِنَّةٌ مِنْ فِقْهِهِ فَأَطِيلُوا الصَّلَاة واقصروا الْخطْبَة وَإِن من الْبَيَان سحرًا» . رَوَاهُ مُسلم

1406. अम्मार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक आदमी की नमाज़ का लम्बा होना और उस के खुत्बे का मुख़्तसर होना उस के फ़की होने की अलामत है, तुम नमाज़ लम्बी करो और खुत्बा मुख़्तसर करो और बेशक बाज़ बयान सहर अंगेज़ होते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (47 / 869)، (2009)

١٤٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَطَبَ احْمَرَّتْ عَيْنَاهُ وَعَلَا صَوْتُهُ وَاشْتَدَّ غَضَبُهُ حَتَّى كَأَنَّهُ مُنْذِرُ جَيش يقولك: «صَبَّحَكُمْ وَمَسَّاكُمْ» وَيَقُولُ: «بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ» . وَيَقْرُنُ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ السَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1407. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ खुत्बा इरशाद फरमाते, तो आप की आँखे सुर्ख हो जाती आवाज़ बुलंद हो जाती और गुस्से शदीद हो जाता, हत्ता कि यह कैफियत हो जाती गोया आप किसी हमलावर लश्कर से आगाह करते हुए फरमा रहे हो: “वो सुबह या शाम तुम पर हमलावर होने वाला है” और आप ﷺ फरमाते: “मुझे ऐसे वक़्त में मबउस किया गया है की मैं और कियामत इस तरह है”, आप दरमियानी ऊँगली और अन्गुंश्ते शहादत को बाहम मिलाते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (43 / 867)، (2005)

١٤٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ عَلَى الْمِنْبَرِ: (وَنَادَوْا يَا مَالك ليَقْضِ علينا رَبك)

1408. यअला बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर पर यह आयत पढ़ते

हुए सुना: “वो झहन्नमी कहेंगे ए मालिक, दरबाने दोज़ख तेरा रब हमें मौत ही देदे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (4819) و مسلم (49 / 871)، (2011)

١٤٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ هِشَامٍ بِنْتِ حَارِثَةَ بْنِ النُّعْمَانِ قَالَتْ: مَا أَخَذْتُ (ق. وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ)»» إِلَّا عَنْ لِسَانِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَؤُهَا كُلَّ جُمُعَةٍ عَلَى الْمِنْبَرِ إِذَا خطب النَّاس. رَوَاهُ مُسلم

1409. उम्म शाम बिन हारिस बिन नुअमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने सुरह क़ाफ़ रसूलुल्लाह ﷺ से सुन सुन कर याद की आप हर जुमा जब मिम्बर पर लोगों से ख़िताब फरमाते तो उसे पढ़ा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (52 / 873)، (2015)

١٤١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ وَعَلَيْهِ عِمَامَةٌ سَوْدَاءُ قَدْ أَرْخَى طَرَفَيْهَا بَيْنَ كَتِفَيْهِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ. رَوَاهُ مُسلم

1410. अमर बिन हुरैस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने जुमा के दिन ख़िताब फ़रमाया तो आप के सर पर सियाह इमामा था जबकि आप ने उस के दोनों किनारे पल्लू अपने कंधो के दरमियान लटकाए हुए थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (452 / 1359)، (3311)

١٤١١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم وَهُوَ يخْطب: ص:٤٤ «إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فليركع رَكْعَتَيْنِ وليتجوز فيهمَا» . رَوَاهُ مُسلم

1411. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खुत्बा के दौरान फ़रमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स जुमा के दिन दौराने खुत्बा में मस्जिद में आए तो वह दो मुख़्तसर रकते पढ़े”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 875)، (2024)

١٤١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ أَدْرَكَ رَكْعَةً مِنَ الصَّلَاةِ مَعَ الْإِمَام فقد أدْرك الصَّلَاة كلهَا "

1412. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नमाज़ ए जुमआ की एक रक्अत पा ले तो उस ने नमाज़ पा ली”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (580) و مسلم (162 / 607)، (1372)

बَاب الْخطْبَة وَالصَّلَاة • जुमा के दिन खुतबे और नमाज़ का बयान
الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٤١٣ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ خُطْبَتَيْنِ كَانَ يَجْلِسُ إِذَا صَعِدَ الْمِنْبَرَ حَتَّى يَفْرُغَ أُرَاهُ الْمُؤَذِّنَ ثُمَّ يَقُومُ فَيَخْطُبُ ثُمَّ يَجْلِسُ وَلَا يَتَكَلَّمُ ثمَّ يقوم فيخطب. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1413. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ दो खुत्बे दिया करते थे, जब आप मिम्बर पर चढ़ते तो मुअज़्ज़िन के फारिग़ होने तक मिम्बर पर बैठते थे, फिर खड़े हो कर खुत्बा इरशाद फरमाते, फिर बैठ जाते इस दौरान आप कोई बात न करते, फिर खड़े हो कर खुत्बा इरशाद फरमाते जईफ| (बुखारी)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1092) [و البيهقى (3 / 205)] * عبدالوهاب بن عطا مدلس و عنعن و حديث البخارى (928) يغنى عنه

١٤١٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَوَى عَلَى الْمِنْبَرِ اسْتَقْبَلْنَاهُ بِوُجُوهِنَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ مُحَمَّدِ بْنِ الْفَضْلِ وَهُوَ ضَعِيفٌ ذَاهِبُ الْحَدِيثِ

1414. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ मिम्बर पर चढ़ते तो हम आप की तरफ मुतवज्जे हो जाते थे| तिरमिज़ी और उन्होंने ने फ़रमाया: हम सिर्फ मुहम्मद बिन फ़ज़ल की सनद से इस हदीस को जानते हैं जबकि वह हदीस में जईफ| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذى (509) * محمد بن الفضل بن عطية متروک مجروح کذبوه و لبعض الحديث شواهد عند و ابن ماجه (1136 ، و سنده ضعيف) و البخارى (921 موقوف) و غيرهما و موقوف البخارى يغنى عنه

بَاب الْخطْبَة وَالصَّلَاة • जुमा के दिन खुतबे और नमाज़ का बयान
الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٤١٥ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ قَائِمًا ثُمَّ يَجْلِسُ ثُمَّ يَقُومُ فَيَخْطُبُ قَائِمًا فَمَنْ نَبَّأَكَ أَنَّهُ كَانَ يَخْطُبُ جَالِسًا فَقَدْ كَذَبَ فَقَدْ وَالله صليت مَعَه أكثر من ألفي صَلَاة. رَوَاهُ مُسلم

1415. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ खड़े हो कर खुत्बा इरशाद फ़रमाया करते थे फिर आप बैठते फिर खड़े हो कर खुत्बा इरशाद फरमाते, अगर कोई शख़्स तुम्हें यह बताए के आप बैठ कर

खुत्बा इरशाद फ़रमाया करते थे, तो उस ने झूठ बयानी की, अल्लाह की क़सम, मैं आप ﷺ के साथ दो हज़ार से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नमाज़े पढ़ चूका हूँ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (35 / 862)، (1996)

١٤١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ: أَنَّهُ دَخَلَ الْمَسْجِدَ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أُمِّ الْحَكَمِ يَخْطُبُ قَاعِدًا فَقَالَ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الْخَبِيثِ يَخْطُبُ قَاعِدًا وقد قَالَ الله تَعَالَى: (وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوك قَائِما)»» رَوَاهُ مُسلم

1416. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह मस्जिद में दाखिल हुए तो अब्दुल रहमान बिन उम्म अल हकम बैठ कर खुत्बा दे रहे थे, उन्होंने इसे बैठा हुआ देख कर कहा, इस खबीस शख़्स को देखो के वह बैठ कर खुत्बा दे रहा है, जबकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, “ जब उन्होंने तिजारत और खेल देखा तो वह इस तरफ भाग गए और आप (ﷺ को खड़े हुए छोड़ गए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (39 / 864)، (2001)

١٤١٧ - (صَحِيح) وَعَن عمَارَة بن رويبة: أَنَّهُ رَأَى بِشْرَ بْنَ مَرْوَانَ عَلَى الْمِنْبَرِ رَافِعًا يَدَيْهِ فَقَالَ: قَبَّحَ اللَّهُ هَاتَيْنِ الْيَدَيْنِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَزِيدُ عَلَى أَنْ يَقُولَ بِيَدِهِ هَكَذَا وَأَشَارَ بِأُصْبُعِهِ المسبحة. رَوَاهُ مُسلم

1417. उमारह बिन रुवय्बा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने बशीर बिन मरवान को मिम्बर पर अपने दोनों हाथ उठाए हुए देखा, तो उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह इन दोनों हाथो को तबाह करे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप सिर्फ अपने हाथ से इस तरह इरशाद किया करते थे और उन्होंने अपने अन्गुंश्ते शहादत से इरशाद किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (53 / 874)، (2016)

١٤١٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: لَمَّا اسْتَوَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ عَلَى الْمِنْبَرِ قَالَ: «اجْلِسُوا» فَسَمِعَ ذَلِكَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَجَلَسَ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ فَرَآهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «تَعَالَ يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مَسْعُودٍ» ص:٤٤ رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1418. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ जुमा के रोज़ मिम्बर पर चढ़े तो फ़रमाया: “बैठ जाओ”, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने यह बात सुनी तो बाब ए मस्जिद पर ही बैठ गए, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें देखा तो फ़रमाया: “अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु आगे आजाओ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1091) [و صححه ابن خزيمة (1780) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 283 ، 284) و وافقه الذهبى ، و حديث ابن جريج عن عطاء قوى]

١٤١٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من أدْرك من الْجُمُعَة رَكْعَة فَليصل إِلَيْهَا أُخْرَى وَمَنْ فَاتَتْهُ الرَّكْعَتَانِ فَلْيُصَلِّ أَرْبَعًا» أَو قَالَ: «الظّهْر» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

1419. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जुमा की एक रकअत पा ले तो वह उस के साथ एक और रकात मिला ले और जिस की दोनों रकते फौत हो जाए तो वह चार रकते पढ़े या फ़रमाया: “ज़ुहर पढ़े”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الدارقطنی (2 / 11 ح 1585) * یاسین بن معاذ ضعیف ، و رواہ اسامۃ بن زید عن الزھری عن ابی سلمۃ عن ابی ھریرۃ بہ (الدارقطنی و الھاکم 1 / 291) و للحدیث طریق حسن لذاتہ عند الدارقطنی (2 / 12 ح 1592) بلفظ :’’ من ادرک رکعۃ من یوم الجمعۃ فقد ادرکھا و لیضف الیھا أخری ‘‘ وھو یغنی عنہ

بَاب صَلَاة الْخَوْف • नमाज़ ए खौफ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٤٢٠ - (صَحِيح) عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِبَلَ نَجْدٍ فَوَازَيْنَا الْعَدُوَّ فَصَافَفْنَا لَهُمْ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي لَنَا فَقَامَتْ طَائِفَةٌ مَعَهُ وَأَقْبَلَتْ طَائِفَةٌ عَلَى الْعَدُوِّ وَرَكَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْ مَعَهُ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ انْصَرَفُوا مَكَانَ الطَّائِفَةِ الَّتِي لم تصل فجاؤوا فَرَكَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بهم رَكْعَةً وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ وَرَوَى نَافِعٌ نَحْوَهُ وَزَادَ: فَإِن كَانَ خوف هُوَ أَشَدُّ مِنْ ذَلِكَ صَلَّوْا رِجَالًا قِيَامًا عَلَى أَقْدَامِهِمْ أَوْ رُكْبَانًا مُسْتَقْبِلِي الْقِبْلَةِ أَوْ غَيْرَ مُسْتَقْبِلِيهَا قَالَ نَافِعٌ: لَا أُرَى ابْنَ عُمَرَ ذَكَرَ ذَلِكَ إِلَّا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1420. सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: में नज्द की तरफ रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक गज़वा में शरीक था, हम दुश्मन के मुकाबिल सफ आराअ हुए, तो रसूलुल्लाह ﷺ हमें नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए, तो एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो गई और एक जमाअत दुश्मन के सामने रही, रसूलुल्लाह ﷺ और आप के साथ शरीक लोगों ने एक रुकू किया और दो सजदे किए, फिर वह लोग उन लोगों की जगह चले गए जिन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी थी, वह आए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के साथ भी एक रुकू और दो सजदे किए, फिर आप ﷺ ने सलाम फेर दिया, उनमें से हर एक खड़ा हुआ तो उन्होंने अपने तौर पर एक एक रुकू किया और दो दो सजदे किए और नाफेअ रहिमहुल्लाह ने भी इसी तरह रिवायत किया है, और उन्होंने इज़ाफा नकल किया है जब खौफ उस से ज़्यादा हो तो फिर प्यादा या सवार किबले रुख हो या किबले रुख न हो जिस तरह मुमकिन होता नमाज़ पढ़ते, नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मेरा ख्याल है के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने इसे रसूलुल्लाह ﷺ ही से रिवायत किया है| (बुखारी)

رواہ البخاری (942) [و مسلم : 839، (1942)]

١٤٢١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ رُومَانَ عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَّاتٍ عَمَّنْ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ ذَاتِ الرِّقَاعِ صَلَاةَ الْخَوْفِ: أَنَّ طَائِفَةً صَفَّتْ مَعَهُ وَطَائِفَةً وِجَاهَ الْعَدُوِّ فَصَلَّى بِالَّتِي مَعَهُ رَكْعَةً ثُمَّ ثَبَتَ قَائِمًا وَأَتَمُّوا ص:٤٤ لِأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ انْصَرَفُوا فَصَفُّوا وِجَاهَ الْعَدُوِّ وَجَاءَتِ الطَّائِفَةُ الْأُخْرَى فَصَلَّى بِهِمُ الرَّكْعَةَ الَّتِي بَقِيَتْ مِنْ صَلَاتِهِ ثُمَّ ثَبَتَ جَالِسًا وَأَتَمُّوا لأَنْفُسِهِمْ ثمَّ سلم بهم»» وَأَخْرَجَ الْبُخَارِيُّ بِطَرِيقٍ آخَرَ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَّاتٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

1421. यज़ीद बिन रुमान रहिमहुल्लाह स्वालेह बिन खव्वात रहिमहुल्लाह से और वह इस शख़्स से रिवायत करते हैं, जिस ने गज़वा ए ज़ात अरकाअ मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए खौफ अदा की, एक जमाअत ने आप ﷺ के साथ सफ बनाई, जबकि दूसरी जमाअत दुश्मन के सामने थी, जो जमाअत आप के साथ थी इनको एक रक्अत पढ़ाई, फिर आप खड़े रहे और इस जमाअत ने अपने तौर पर नमाज़ पूरी की और जा कर दुश्मन के सामने सफ बना ली, फिर दूसरी जमाअत आइ तो आप ﷺ ने अपने नमाज़ की बाकी रक्अत उन्हें पढ़ाई, फिर आपबैठे रहे और उन्होंने अपने तौर पर नमाज़ मुकम्मल की, फिर आप ने उन के साथ सलाम फेरा| बुखारी, मुस्लिम, इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने एक दूसरी सनद से कासिम अन स्वालेह बिन खव्वात अन सहल बिन अबी हशमत के वास्ते से नबी ﷺ से रिवायत किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (4129 و 4131) و مسلم (310 / 842)، (1948)

١٤٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَقْبَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِذْ كُنَّا بِذَاتِ الرِّقَاعِ قَالَ: كُنَّا إِذَا أَتَيْنَا عَلَى شَجَرَةٍ ظَلِيلَةٍ تَرَكْنَاهَا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ المشكرين وَسَيْفُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُعَلَّقٌ بِشَجَرَةٍ فَأَخَذَ سَيْفَ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاخْتَرَطَهُ فَقَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَتَخَافُنِي؟ قَالَ: «لَا» . قَالَ: فَمَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قَالَ: «اللَّهُ يَمْنَعُنِي مِنْك» . قَالَ: فَتَهَدَّدَهُ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَغَمَدَ السَّيْفَ وَعَلَّقَهُ قَالَ: فَنُودِيَ بِالصَّلَاةِ فَصَلَّى بِطَائِفَةٍ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ تَأَخَّرُوا وَصَلَّى بِالطَّائِفَةِ الْأُخْرَى رَكْعَتَيْنِ قَالَ: فَكَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعُ رَكَعَاتٍ وَلِلْقَوْمِ رَكْعَتَانِ

1422. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में रवाना हुए हत्ता कि हम ज़ात अरकाअ पहुंचे जाबिर रदियल्लाहु अन्हु का बयान है, जब हम कोई साया दार दरख्त पाते तो उसे रसूलुल्लाह ﷺ के लिए छोड़ दिया करते थे, वह बयान करते हैं, एक मुशरिक आदमी आया, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ की तलवार दरख्त के साथ लटक रही थी, उस ने नबी ﷺ की तलवार पकड़ कर मियान से निकाली और रसूलुल्लाह ﷺ से कहने लगा, क्या आप मुझ से डरते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं” उस ने कहा: आप को मुझ से कौन बचाएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह, मुझे तुम से बचाएगा”, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने इसे डराया धमकाया तो उस ने तलवार मियान में डाल दी और इसे (दरख्त के साथ ही) लटका दी रावी बयान करते हैं, नमाज़ के लिए आज़ान दी गई तो आप ﷺ ने एक जमाअत को दो रकते पढ़ाइ, फिर वह जमाअत पीछे हट गई और आप ने दूसरी जमाअत को दो रकते पढ़ाइ, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की चार रकते हो गई और जिन्होंने आप ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी थी उनकी दो दो रकते हुई| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (4136) و مسلم (311 / 843)، (1949)

١٤٢٣ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الْخَوْفِ فَصَفَفْنَا خَلْفَهُ صَفَّيْنِ وَالْعَدُوُّ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ فَكَبَّرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَبَّرْنَا جَمِيعًا ثُمَّ رَكَعَ وَرَكَعْنَا جَمِيعًا ثمَّ رفع رَأسه من الرُّكُوع ورفعنا جَمِيعًا ثُمَّ انْحَدَرَ بِالسُّجُودِ وَالصَّفُّ الَّذِي يَلِيهِ وَقَامَ الصَّفُّ الْمُؤَخَّرُ فِي نَحْرِ الْعَدُوِّ فَلَمَّا قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السُّجُودَ وَقَامَ الصَّفُّ الَّذِي يَلِيهِ انْحَدَرَ الصَّفُّ الْمُؤَخَّرُ بِالسُّجُودِ ثُمَّ قَامُوا ثُمَّ تَقَدَّمَ الصَّفُّ الْمُؤَخَّرُ وَتَأَخَّرَ الْمُقَدَّمُ ثُمَّ رَكَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَكَعْنَا جَمِيعًا ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ من الرُّكُوع ورفعنا جَمِيعًا ثمَّ انحدر بِالسُّجُود وَالصَّفُّ الَّذِي يَلِيهِ الَّذِي كَانَ مُؤَخَّرًا فِي الرَّكْعَةِ الْأُولَى وَقَامَ الصَّفُّ الْمُؤَخَّرُ فِي نَحْرِ الْعَدو فَلَمَّا قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السُّجُودَ وَالصَّفُّ الَّذِي يَلِيهِ انْحَدَرَ الصَّفُّ الْمُؤَخَّرُ بِالسُّجُودِ فَسَجَدُوا ثُمَّ سَلَّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَلَّمْنَا جَمِيعًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1423. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ ए खौफ पढ़ाई, हमने आप के पीछे दो सफे बनाइए जबकि दुश्मन हमारे और किबले के दरमियान था, नबी ﷺ ने तकबीर कहे तो हम सब ने भी तकबीर कही, फिर आप ने रुकू किया, तो हम सब ने रुकू किया, फिर आप ने रुकू से सर उठाया तो हम सब ने भी रुकू से सर उठाया, फिर आप और आप के साथ वाली सफ सजदाह में चली गई और दूसरी सफ दुश्मन के सामने सीना सुपुर्द रही, जब नबी ﷺ सजदे कर चुके तो आप के साथ वाली सफ खड़ी हो गइ, तो पिछली सफ सजदाह के लिए झुकी फिर वह सजदाह कर के खड़े हो गइ, तो पिछली सफ आगे बढ़ी और अगली सफ पीछे गई, फिर नबी ﷺ ने रुकू किया और हम सब ने भी रुकू किया फिर आप ने रुकू से सर उठाया, तो हम सब ने भी रुकू से सर उठाया, फिर आप के साथ वाली सफ जो के पहली रक्अत में पीछे थी, सजदे में चले गए और पिछली सफ दुश्मन के सामने सीना सुपुर्द रही, जब नबी ﷺ और आप के साथ वाली सफ सजदे कर चुके तो पिछली सफ सजदे में चली गई, फिर नबी ﷺ ने सलाम फेरा और हम सब ने भी सलाम फेरा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (307 / 840)، (1945)

बَاب صَلَاة الْخَوْف • नमाज़ ए खौफ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٤٢٤ - (ضَعِيف) عَنْ جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّي بِالنَّاسِ صَلَاةَ الظُّهْرِ فِي الْخَوْف بِبَطن نخل فَصَلَّى بِطَائِفَةٍ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ جَاءَ طَائِفَةٌ أُخْرَى فَصَلَّى بِهِمْ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ. رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

1424. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत के नबी ﷺ ने मक़ाम बत्नी नखल में लोगों को हालत खौफ में नमाज़ ए ज़ुहर पढ़ी, तो आप ﷺ ने एक जमाअत को दो रकते पढ़ाइ फिर सलाम फेर दिया, फिर दूसरी जमाअत आए तो आप ﷺ ने उन्हें भी दो रकते पढ़ाइ और फिर सलाम फेर दिया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فی شرح السنة (4 / 284 تحت ح 1094 بدون سند) [و النسائی (3 / 178 ح 1553) و ابن خزيمة (1353)] * الحسن البصری مدلس ولم اجد تصريح سماعه لاصل الهديث شواهد كثيرة جدًا

نमाज़ ए खौफ का बयान • بَاب صَلَاة الْخَوْف

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٤٢٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ بَيْنَ ضَجْنَانَ وَعُسْفَانَ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: لِهَؤُلَاءِ صَلَاةٌ هِيَ أَحَبُّ إِلَيْهِمْ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَبْنَائِهِمْ وَهِيَ الْعَصْرُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ فَتَمِيلُوا عَلَيْهِمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً وَإِنَّ جِبْرِيلَ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَهُ أَنْ يَقْسِمَ أَصْحَابَهُ شَطْرَيْنِ فَيُصَلِّيَ بِهِمْ وَتَقُومَ طَائِفَةٌ أُخْرَى وَرَاءَهُمْ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ فَتَكُونَ لَهُمْ رَكْعَةٌ وَلِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَكْعَتَانِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

1425. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़वजनान और उस्फान के दरमियान पड़ाव डाला तो मुशरिकीन ने कहा: नमाज़ ए असर उन्हें अपने वालिदेन और अपने औलाद से भी ज़्यादा महबूब है, पस तुम पुख्ता अज़म कर के एक ही बार इन पर हमला कर दो, इसी असना में जिब्राइल अलैहिस्सलाम नबी ﷺ के पास आए तो उन्होंने आप को हुक्म दिया के आप अपने सहाबा को दो हिस्सों में तकसीम कर दे, आप उन्हें इस तरह नमाज़ पढ़ाएंगे के एक जमाअत उन के पीछे खड़ी हो और वह उनका बचाव करे और उन के अस्लिहा का ख्याल रखे, पस उनकी तो एक रक्अत होगी और रसूलुल्लाह ﷺ की दो रकते होगी| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3035 وقال : حسن صحيح غريب) و النسائى (3 / 174 ح 1545) [و صححه ابن حبان : 584]

नमाज़ ए ईदैन का बयान • بَاب صَلَاة الْعِيدَيْن

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٤٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يخرج يَوْم الْفطر وَالْأَضْحَى إِلَى الْمُصَلَّى فَأَوَّلُ شَيْءٍ يَبْدَأُ بِهِ الصَّلَاةُ ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَيَقُومُ مُقَابِلَ النَّاسِ وَالنَّاسُ جُلُوسٌ عَلَى صُفُوفِهِمْ فَيَعِظُهُمْ وَيُوصِيهِمْ وَيَأْمُرُهُمْ وَإِنْ كَانَ يُرِيدُ أَنْ يَقْطَعَ بَعْثًا قَطَعَهُ أَوْ يَأْمر بِشَيْء أمر بِهِ ثمَّ ينْصَرف

1426. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ईद उल फ़ित्र और ईद उल अदहा के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले जाते तो आप सबसे पहले नमाज़ पढ़ते, फिर नमाज़ से फारिग़ हो क, र लोगों के सामने खड़े हो कर वाज़ व नसीहत फरमाते, लोग अपने सफों मेंबैठे रहते, आप ﷺ अहकाम जारी करते अगर कोई लश्कर रवाना करना होता तो उसे रवाना फरमाते, या किसी चीज़ के बारे में हुक्म फरमाना होता तो आप उस के मुतल्लिक हुक्म फरमाते फिर आप घर तशरीफ़ ले जाते| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (956) و مسلم (9 / 889)، (2053)

١٤٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِيدَيْنِ غَيْرَ مَرَّةٍ وَلَا مَرَّتَيْنِ بِغَيْرِ أَذَانٍ وَلَا إِقَامَة. رَوَاهُ مُسلم

1427. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इदैन की नमाज़ कई मर्तबा पढ़ी, जिन में आज़ान और इकामत नहीं थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 887)، (2051)

١٤٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ يُصَلُّونَ الْعِيدَيْنِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ

1428. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु इदैन की नमाज़ खुत्बा से पहले पढ़ा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (963) و مسلم (8 / 888)،(2052)

١٤٢٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَسُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَشَهِدْتَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِيدَ؟ قَالَ: نَعَمْ خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ وَلَمْ يَذْكُرْ أَذَانًا وَلَا إِقَامَةً ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَرَأَيْتُهُنَّ يُهْوِينَ إِلَى آذَانِهِنَّ وَحُلُوقِهِنَّ يَدْفَعْنَ إِلَى بِلَالٍ ثُمَّ ارْتَفَعَ هُوَ وَبِلَالٌ إِلَى بَيته

1429. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया गया, क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए ईद पढ़ी है? उन्होंने ने फ़रमाया: हां, रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ ए ईद के लिए तशरीफ़ लाए तो आप ने नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा इरशाद फ़रमाया और उन्होंने आज़ान व इकामत का ज़िक्र नहीं किया फिर आप औरतों के पास तशरीफ़ ले गए तो उन्हें वाज़ व नसीहत की और उन्हें सदका के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया मैंने उन्हें देखा के वह अपने कानों और अपने गर्दनो से ज़ेवर उतार कर बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के हवाले कर रही हैं फिर नबी ﷺ और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु आप ﷺ के घर की तरफ चले गए| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (5249) و مسلم (1 / 884)، (2044)

١٤٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى يَوْمَ الْفِطْرِ ص:٤٥ رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلَهُمَا وَلَا بَعْدَهُمَا

1430. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने ईद उल फ़ित्र की नमाज़ दो रकते पढ़ी आप ने इन दो रक्अतो से पहले कोई नमाज़ पढ़ी न उस के बाद| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (964) و مسلم (13 / 884)، (2057)

١٤٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أُمِرْنَا أَنْ نُخْرِجَ الْحُيَّضَ يَوْمَ الْعِيدَيْنِ وَذَوَاتَ الْخُدُورِ فَيَشْهَدْنَ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَدَعْوَتَهُمْ وَتَعْتَزِلُ الْحُيَّضُ عَنْ مُصَلَّاهُنَّ قَالَتِ امْرَأَةٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِحْدَانَا لَيْسَ لَهَا جِلْبَابٌ؟ قَالَ: «لِتُلْبِسْهَا صَاحِبَتُهَا مِنْ جِلْبَابِهَا»

1431. उम्म अतिया रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, हमें हुक्म दिया गया के हम इदैन के रोज़ हाइज़ा और परदा नशीं औरतो को घर से निकाले ताकि वह मुसलमानों की जमाअत नमाज़ और दुआ में शरीक हो, लेकिन हाइज़ा औरते जाए नमाज़ से दूर रहे, किसी खातून ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर हम में से किसी के पास चादर न हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के साथ वाली इसे अपनी चादर में शरीक कार बना ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (351) و مسلم 12 / 890)، (2056)

١٤٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا جَارِيَتَانِ فِي أَيَّامِ مِنًى تُدَفِّفَانِ وَتَضْرِبَانِ وَفِي رِوَايَةٍ: تُغَنِّيَانِ بِمَا تَقَاوَلَتِ الْأَنْصَارُ يَوْمَ بُعَاثَ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَغَشٍّ بِثَوْبِهِ فَانْتَهَرَهُمَا أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ: " دَعْهُمَا يَا أَبَا بَكْرٍ فَإِنَّهَا أَيَّامُ عِيدٍ وَفِي رِوَايَةٍ: يَا أَبَا بَكْرٍ إن لكل قوم عيدا وَهَذَا عيدنا "

1432. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु अय्याम तशरिक में उन के पास आया तो उन के वहां दो बच्चिया दफ बजा रही थी, और एक दूसरी रिवायत में है वह जंग बआस में अंसार के कारनामों के बारे में गीत गा रही थी, जबकि नबी ﷺ ने अपने ऊपर एक कपड़ा लपेट रखा था, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उन बच्चियों को डांटा तो, नबी ﷺ ने अपने चेहरे से कपड़ा उठाकर फ़रमाया: “अबू बक्र उन्हें छोड़ दो यह तो अय्याम ए ईद है”, और एक दूसरी रिवायत में है: “अबू बक्र हर कौम की ईद होती है और यह हमारी ईद है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (952) و مسلم (16 ، 17 / 892)، (2063)

١٤٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَغْدُو يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَأْكُلَ تَمَرَاتٍ وَيَأْكُلُهُنَّ وِتْرًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1433. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ईद उल फ़ित्र के रोज़ ताक अदद में खजूरे तनावुल फरमा कर ईदगाह जाया करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (953)

١٤٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ يَوْمُ عِيدٍ خَالَفَ الطَّرِيق. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1434. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब ईद का दिन होता तो नबी ﷺ ईदगाह आते जाते रास्ता तब्दील किया करते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (986)

١٤٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ: «إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ فَنَنْحَرَ فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ نُصَلِّيَ فَإِنَّمَا هُوَ شَاةُ لَحْمٍ عَجَّلَهُ لِأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ»

1435. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कुर्बानी के दिन नबी ﷺ ने हमें ख़िताब किया तो फ़रमाया: “आज के दिन हम पहले नमाज़ पढेंगे, फिर वापस जा कर कुर्बानी करेंगे, जिस ने ऐसे किया तो उस ने सुन्नत के मुताबिक किया, और जिस ने हमारे नमाज़ पढ़ने से पहले कुर्बानी कर ली, तो वह गोश्त की बकरी है महज़ गोश्त खाने के लिए जिबह की गई है, उस ने अपने अहल व अयाल के लिए जल्दी जिबह कर ली, उस में कुर्बानी का कोई सवाब नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (968) و مسلم (7 / 1961)، (5073)

١٤٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَجَلِيُّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَلْيَذْبَحْ مَكَانَهَا أُخْرَى وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ حَتَّى صَلَّيْنَا فَلْيَذْبَحْ على ص:٤٥ اسْم الله»

1436. जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह अल बजली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नमाज़ ए ईद से पहले कुर्बानी कर ले तो वह उसकी जगह दूसरी कुर्बानी करे और जो शख़्स नमाज़ ए ईद के बाद जिबह करे तो उसे अल्लाह के नाम पर जिबह करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5500) و مسلم (1 / 1960)، (5064)

١٤٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلَاةِ فَإِنَّمَا يَذْبَحُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ ذَبَحَ بَعْدَ الصَّلَاةِ فَقَدْ تَمَّ نُسُكُهُ وَأَصَابَ سُنَّةَ الْمُسلمين»

1437. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने नमाज़ ए ईद से पहले जिबह कर लिया तो उस ने महज़ अपने ज़ात की खातिर जिबह किया और जिस ने नमाज़ ए ईद के बाद जिबह किया तो उसकी कुर्बानी मुकम्मल हुई और उस ने मुसलमानों के तरीके के मुताबिक की”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5546) و مسلم (4 / 1961)، (5069)

١٤٣٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْبَحُ وَيَنْحَرُ بِالْمُصَلَّى. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1438. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ गाय और ऊंट ईदगाह में जिबह किया करते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (982)

باب صَلَاة الْعِيدَيْنِ • नमाज़ ए ईदैन का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٤٣٩ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ وَلَهُمْ يَوْمَانِ يَلْعَبُونَ فِيهِمَا فَقَالَ: «مَا هَذَانِ الْيَوْمَانِ؟» قَالُوا: كُنَّا نَلْعَبُ فِيهِمَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَدْ أَبْدَلَكُمُ اللَّهُ بِهِمَا خَيْرًا مِنْهُمَا: يَوْمَ الْأَضْحَى وَيَوْمَ الْفِطْرِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1439. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो उन अहले मदीना के दो दिन थे जिन में वह खेल कूद किया करते थे, आप ने दरियाफ्त फ़रमाया: “ये दो दिन क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम दौरे जाहिलियत मैं इन दो दिनों में खेल कूद किया करते थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने उन के बदले में तुम्हें दो बेहतरीन दिन ईद उल अदहा और ईद उल फ़ित्र के अता फरमा दिए है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1134) [و النسائی (3 / 179180 ح 1557) و صححه الحاکم علی شرط مسلم (1 / 294) و وافقه الذهبی]

١٤٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَخْرُجُ يَوْمَ الْفِطْرِ حَتَّى يَطْعَمَ وَلَا يَطْعَمُ يَوْمَ الْأَضْحَى حَتَّى يُصَلِّيَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه والدارمي

1440. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ईद उल फ़ित्र के रोज़ कुछ खा कर ईदगाह जाया करते थे और ईद उल अदहा के रोज़ नमाज़ ए ईद पढ़ने के बाद कुछ खाया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (542 وقال : غریب) و ابن ماجه (1756) و الدارمی (1 / 375 ح 1608) [و صححه ابن حبان (593) و ابن خزیمة (1426) و الحاکم (1 / 294) و وافقه الذهبی]

١٤٤١ - (حسن) وَعَنْ كَثِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٤٥ كَبَّرَ فِي الْعِيدَيْنِ فِي الْأُولَى سَبْعًا قَبْلَ الْقِرَاءَةِ وَفِي الْآخِرَةِ خَمْسًا قَبْلَ الْقِرَاءَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

1441. कसीर बिन अब्दुल्लाह अपने बाप से और वह कसीर के दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने नमाज़ ए इदैन में पहली रक्अत में किराअत से पहले सात और दूसरी रक्अत में किराअत से पहले पांच तकबीर कही| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (536 وقال : حسن) و ابن ماجه (1279) و الدارمی (لم اجده) [و رواه الدارمی (1 / 376 ح 1614 من حديث عمار بن سعد المؤذن به و سنده ضعيف] * السند ضعيف جدًا ، کثير بن عبدالله : متروک متهم و للحديث شواهد کثيرة عند ابی داود (1151) و غيره وهوبها حسن

١٤٤٢ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ مُرْسَلًا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ كَبَّرُوا فِي الْعِيدَيْنِ وَالِاسْتِسْقَاءِ سَبْعًا وَخَمْسًا وَصَلَّوْا قبل الْخطْبَة وجهروا بِالْقِرَاءَةِ. رَوَاهُ الشَّافِعِي

1442. जाफर बिन मुहम्मद रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत करते हैं की नबी ﷺ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ ए इदैन और नमाज़ इस्तिसका में सात और दूसरी रक्अत में पांच तकबीर कही, उन्होंने खुत्बा से पहले नमाज़ पढ़ी और बुलंद आवाज़ से किराअत की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الشافعی مسنده (ص 76 ح 336) والام (1 / 236) * فيه ابراهيم بن محمد الاسلمی : متروک (تقدم : 529)

١٤٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا مُوسَى وَحُذَيْفَةَ: كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَبِّرُ فِي الْأَضْحَى وَالْفِطْرِ؟ فَقَالَ أَبُو مُوسَى: كَانَ يُكَبِّرُ أَرْبَعًا تَكْبِيرَهُ على الجنازه. فَقَالَ حُذَيْفَة: صدق. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1443. सईद बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु और हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु दरियाफ्त किया के रसूलुल्लाह ﷺ ईद उल अदहा और ईद उल फ़ित्र की नमाज़ो में कैसे तकबीर कहा करते थे? तो अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: आप नमाज़ ए जनाज़ा की तक्बिरो की तरह चार तकबीर कहा करते थे हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उन्होंने सच फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1153) * ابو اعائشة مجهول ، لم اجد من وثقه

١٤٤٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْبَرَاءِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُووِلَ يَوْمَ الْعِيدِ قَوْسًا فَخَطَبَ عَلَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1444. बराअ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के ईद के रोज़ नबी ﷺ को एक कमान पेश की गई, तो आप ने उस पर टेक लगा कर खुत्बा इरशाद फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1145) * ابو جناب ضعيف و حديث ابی داود (1096) يغنی عنه

١٤٤٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَطَاءٍ مُرْسَلًا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا خَطَبَ يَعْتَمِدُ عَلَى عنزته اعْتِمَادًا. رَوَاهُ الشَّافِعِي

1445. अता रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत बयान करते हैं, कि नबी ﷺ जब खुत्बा इरशाद फरमाते, तो आप अपने छोटे नेज़े पर टेक लगाते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الشافعی فی مسنده (ص 77 ح 341) و الام (1 / 238) * فيه ابراهيم الاسلمی متروک متهم و ليث بن ابی سليم ضعيف مدلس مختلط

١٤٤٦ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: شَهِدْتُ الصَّلَاةِ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي يَوْمِ عِيدٍ فَبَدَأَ بِالصَّلَاةِ قَبْلَ الْخُطْبَةِ بِغَيْرِ أَذَانٍ وَلَا إِقَامَةٍ فَلَمَّا قَضَى الصَّلَاةَ قَامَ مُتَّكِئًا عَلَى بِلَالٍ فَحَمَدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَوَعَظَ النَّاسَ وَذَكَّرَهُمْ وَحَثَّهُمْ على طَاعَته ثمَّ قَالَ: وَمَضَى إِلَى النِّسَاءِ وَمَعَهُ بِلَالٌ فَأَمَرَهُنَّ بِتَقْوَى الله ووعظهن وذكرهن. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1446. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने ईद के रोज़ नबी ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप ने ख़ुत्बे से पहले आज़ान व इकामत के बगैर नमाज़ पढ़ी, जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो आप ﷺ बिलाल रदियल्लाहु अन्हु पर टेक लगा कर खड़े हुए, अल्लाह की हम्द व सना बयान की, लोगों को वाज़ व नसीहत की, उन्हें याद दिहाई कराइ और अपने इताअत की तरगीब दी, फिर आप ﷺ बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के साथ औरतों की तरफ गए तो उन्हें अल्लाह का तकवा इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाया और वाज़ व नसीहत की और याद दिहाई कराइ| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (3 / 186 ، 187 ح 1576) [و مسلم (4 / 885)، (2048) و البخاری (978)]

١٤٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَرَجَ يَوْمَ الْعِيدِ فِي طَرِيقٍ رَجَعَ فِي غَيْرِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ والدارمي

1447. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ नमाज़ ए ईद के लिए तशरीफ़ ले जाते तो आप एक रास्ते से जाते और दूसरे रास्ते से वापस आते| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (541 وقال : حسن غريب) و الدارمی (1 / 378 ح 1621) [و ابن ماجه (1301) و علقه البخاری (986) و صححه ابن حبان (الاحسان : 2804) و ابن خزيمة (1468) و الحاکم علی شرط الشيخين (1 / 296) و وافقه الذهبی و للحديث شواهد کثيرة]

١٤٤٨ - (ضَعِيف) وَعَن أبي هُرَيْرَة أَنَّهُ أَصَابَهُمْ مَطَرٌ فِي يَوْمِ عِيدٍ فَصَلَّى بِهِمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الْعِيدِ فِي الْمَسْجِدِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه

1448. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के ईद के रोज़ बारिश हो गई तो नबी ﷺ ने उन्हें नमाज़ ए ईद मस्जिद में पढ़ाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1160) و ابن ماجه (1313) * عيسى بن عبد الاعلى : مجهول و عبيدالله بن عبدالله بن موهب : مستور (ای مجهول الحال)

١٤٤٩ - (ضَعِيف) وَعَن أبي الْحُوَيْرِث أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَى عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ وَهُوَ بِنَجْرَانَ عَجِّلِ الْأَضْحَى وَأَخِّرِ الْفِطْرَ وَذَكِّرِ النَّاسَ. ص:٤٥ رَوَاهُ الشَّافِعِي

1449. अबू अल हुवैस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अम्र बिन हज़्म रदियल्लाहु अन्हु के नाम नजरान ख़त लिखा के ईद उल अदहा की नमाज़ जल्दी पढ़ो, और ईद उल फ़ित्र की नमाज़ देर से पढ़ो और लोगों को वाज़ व नसीहत करो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الشافعی (فی مسنده ص 74 ح 322 و الام 1 / 232 و مختصر المزنی ص 361) * فيه ابراهيم الاسلمی متروک متهم

١٤٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي عُمَيْرِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ عُمُومَةٍ لَهُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ رَكْبًا جَاءُوا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْهَدُونَ أَنَّهُمْ رَأَوُا الْهِلَالَ بِالْأَمْس ن فَأَمرهمْ أَن يفطروا وَإِذا أَصْبحُوا أَن يَغْدُو إِلَى مصلاهم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1450. अबू उमैर बिन अनस अपने चचा से रिवायत करते हैं, जिन्हें नबी ﷺ का सहाबी होने का खुश किस्मती हासिल है, के कुछ सवार नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं की हमने कल चाँद देखा था तो नबी ﷺ ने उन्हें रोज़ा इफ्तार करने का हुक्म फ़रमाया और उन्हें फ़रमाया के कल ईदगाह पहुंचे| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1157) و النسائی (3 / 180 ح 1558) [و ابن ماجه : 1653]



بَاب صَلَاة الْعِيدَيْنِ • नमाज़ ए ईदैन का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٤٥١ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ عَنِ ابْن عَبَّاس وَجَابِر ابْن عَبْدِ اللَّهِ قَالَا: لَمْ يَكُنْ يُؤَذَّنُ يَوْمَ الْفِطْرِ وَلَا يَوْمَ الْأَضْحَى ثُمَّ سَأَلْتُهُ يَعْنِي عَطَاءً بَعْدَ حِينٍ عَنْ ذَلِكَ فَأَخْبَرَنِي قَالَ: أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنْ لَا أَذَانَ لِلصَّلَاةِ يَوْمَ الْفِطْرِ حِينَ يَخْرُجُ الْإِمَامُ وَلَا بعد مَا يَخْرُجُ وَلَا إِقَامَةَ وَلَا نِدَاءَ وَلَا شَيْءَ لَا نِدَاءَ يَوْمَئِذٍ وَلَا إِقَامَةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1451. इब्ने जुरैज़ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अता रहिमहुल्लाह ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु के वास्ते से मुझे बताया उन्होंने ने फ़रमाया: ईद उल फ़ित्र और ईद उल अदहा के लिए आज़ान नहीं कही जाती थी, फिर मैंने कुछ मुद्दत बाद अता से इस बारे में दरियाफ्त किया, तो उन्होंने मुझे बताते हुए कहा जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया की नमाज़ ए ईद उल फ़ित्र के लिए इमाम के आने से पहले या उस के आने के बाद कोई आज़ान नहीं होती थी, आज़ान व इकामत वाली कोई चीज़ ही नहीं थी, इस रोज़ आज़ान थी न इकामत| (मुस्लिम)

رواه مسلم (5 / 886)، (2049)

١٤٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَخْرُجُ يَوْمَ الْأَضْحَى ويم الْفِطْرِ فَيَبْدَأُ بِالصَّلَاةِ فَإِذَا صَلَّى صَلَاتَهُ قَامَ فَأقبل عل النَّاسِ وَهُمْ جُلُوسٌ فِي مُصَلَّاهُمْ فَإِنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَة ببعث ذِكْرَهُ لِلنَّاسِ أَوْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ بِغَيْرِ ذَلِكَ أَمَرَهُمْ بِهَا وَكَانَ يَقُولُ: «تَصَدَّقُوا تَصَدَّقُوا تَصَدَّقُوا» . وَكَانَ أَكْثَرَ مَنْ يَتَصَدَّقُ النِّسَاءُ ثُمَّ يَنْصَرِف فَلم يزل كَذَلِك حَتَّى كَانَ مَرْوَان ابْن ص:٤٥ الْحَكَمِ فَخَرَجْتُ مُخَاصِرًا مَرْوَانَ حَتَّى أَتَيْنَا الْمُصَلَّى فَإِذَا كَثِيرُ بْنُ الصَّلْتِ قَدْ بَنَى مِنْبَرًا مِنْ طِينٍ وَلَبِنٍ فَإِذَا مَرْوَانُ يُنَازِعُنِي يَدَهُ كَأَنَّهُ يَجُرُّنِي نَحْوَ الْمِنْبَرِ وَأَنَا أَجُرُّهُ نَحْوَ الصَّلَاة فَلَمَّا رَأَيْت ذَلِكَ مِنْهُ قُلْتُ: أَيْنَ الِابْتِدَاءُ بِالصَّلَاةِ؟ فَقَالَ: لَا يَا أَبَا سَعِيدٍ قَدْ تُرِكَ مَا تَعْلَمُ قُلْتُ: كَلَّا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تأتون بِخَير مِمَّا أعلم ثَلَاث مَرَّات ثمَّ انْصَرف. رَوَاهُ مُسلم

1452. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ईद उल अदहा और ईद उल फ़ित्र के लिए तशरीफ़ लाते, तो आप सबसे पहले नमाज़ पढ़ते, जब आप नमाज़ पढ़ लेते तो आप खड़े हो कर लोगों की तरफ मुतवज्जे होते, जबकि लोग अपने अपनी जगह पर बैठें होते थे, अगर आप ﷺ ने कोई लश्कर भेजना होता तो लोगों से उस का तज़किरह फरमाते, या उस के अलावा कोई और ज़रूरत होती तो आप उस के मुतल्लिक उन्हें हुक्म फरमाते, आप ﷺ फरमाते: “सदका करो, सदका करो, सदका करो”, और औरतें सबसे ज़्यादा सदका किया करती थी, फिर आप ﷺ घर तशरीफ़ ले जाते, यह मामूल ऐसे ही रहा हत्ता कि मरवान बिन हुक्म का दौर ए हुकूमत आया, तो मैं मरवान की कमर पर हाथ रख कर नमाज़ ए ईद के लिए रवाना हुआ, हत्ता कि हम ईदगाह पहुँच गए, वहां देखा के कसीर बिन स्वलय्त रहिमहुल्लाह ने गारे और ईटों से एक मिम्बर तैयार कर रखा था, मरवान मुझ से अपना हाथ खींच रहा था, गोया वह मुझे मिम्बर की तरफ ले जाना चाहता था, जबकि मैं उसे नमाज़ की तरफ लाना चाहता था, जब मैंने उस का यह अज़्म देखा तो मैंने कहा: नमाज़ से इब्तिदा करना कहाँ चला गया? उस ने कहा नहीं, अबू सईद जैसे के आप जानते हैं वह तरीका मतरुक हो चूका, मैंने कहा: हरगिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मेरे इल्म के मुताबिक तुम खैर व भलाई पर नहीं हो, उन्होंने तीन मर्तबा ऐसे ही फ़रमाया फिर वह मिम्बर से दूर चले गए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 889)، (2053)

بَاب فِي الْأُضْحِية • कुर्बानी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٤٥٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنس قَالَ: ضَحَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِكَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ أَقْرَنَيْنِ ذَبَحَهُمَا بِيَدِهِ وَسَمَّى وَكبر قَالَ: رَأَيْته وضاعا قَدَمَهُ عَلَى صِفَاحِهِمَا وَيَقُولُ: «بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أكبر»

1453. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ((بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أكبر) “अल्लाह के नाम से अल्लाह बहोत बड़ा है”) पढ़ कर अपने दस्ते मुबारक से चितकबरे सींगो वाले दो मेंढे जिबह किए, रावी बयान

करते हैं, मैंने आप ﷺ को देखा के आप ने उन के पहलु पर अपना कदम रखा और आप ﷺ पढ़ रहे थे : (بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكبر) “अल्लाह के नाम से अल्लाह बहोत बड़ा है” | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (5564) و مسلم (18 / 1966)، (5088)

١٤٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِكَبْشٍ أَقْرَنَ يَطَأُ فِي سَوَادٍ وَيَبْرُكُ فِي سَوَادٍ وَيَنْظُرُ فِي سَوَادٍ فَأُتِيَ بِهِ لِيُضَحِّيَ بِهِ قَالَ: «يَا عَائِشَةُ هَلُمِّي الْمُدْيَةَ» ثُمَّ قَالَ: «اشْحَذِيهَا بِحَجَرٍ» فَفَعَلَتْ ثُمَّ أَخَذَهَا وَأَخَذَ الْكَبْشَ فَأَضْجَعَهُ ثُمَّ ذَبَحَهُ ثُمَّ قَالَ: «بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنْ مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ وَمِنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ» . ثُمَّ ضحى بِهِ. رَوَاهُ مُسلم

1454. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने सींगो वाला मेंढा लाने का हुक्म फ़रमाया, जिस की टांगे, पट और आँखे सियाह थी, इसे आप की खिदमत में पेश किया गया ताकि आप इसे कुरबान करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा छुरी लाओ”, फिर फ़रमाया: “इसे पत्थर पर तेज़ करो”, मैंने ऐसे ही किया, तो आप ﷺ ने छुरी पकड़ कर मेंढे को लिटाया और जिबह करने का इरादा फ़रमाया तो यूँ दुआ की: “अल्लाह के नाम पर ऐ अल्लाह! इसे मुहम्मद ﷺ , आले मुहम्मद और उम्मत ए मुहम्मद की तरफ से कबूल फरमा”, फिर आप ﷺ ने इसे जिबह किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 1967)، (5091)

١٤٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَذْبَحُوا إِلَّا مُسِنَّةً إِلَّا أَنْ يَعْسُرَ عَلَيْكُمْ فَتَذْبَحُوا جَذَعَةً مِنَ الضَّأْنِ» . رَوَاهُ مُسلم

1455. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सिर्फ दो दांत वाला जानवर जिबह करो अगर तुम्हें इस का मिलना मुश्किल हो तो फिर एक साल का मेंढा जिबह करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 1963)، (5082)

١٤٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَاهُ غَنَمًا يقسمها على صحابته ضحايا فَبَقِيَ عتود فَذكره لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «ضَحِّ بِهِ أَنْتَ» وَفِي رِوَايَةٍ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أصابني جذع قَالَ: «ضح بِهِ»

1456. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन्हें कुछ बकरिया दीं ताकि वह कुर्बानी के लिए आप के सहाबा रदियल्लाहु अन्हु में तकसीम कर दी जाए, (तकसीम के बाद) बकरी का एक साल का बच्चा बाकी रह गया तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से उस का तज़किरह किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उसे जिबह कर लो”, और एक दूसरी रिवायत में मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरे हिस्से में जुज़ एक साल से इज़ाफ़ी

(ज़्यादा) उमर का जानवर आया है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उसे जिबह कर लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5555) و مسلم (15 / 1965)، (5084)

١٤٥٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْبَحُ وَيَنْحَرُ بِالْمُصَلَّى. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1457. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ गाय और ऊंट ईदगाह में जिबह किया करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (982)

١٤٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَقَرَةُ عَنْ سَبْعَةٍ وَالْجَزُورُ عَنْ سَبْعَةٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَاللَّفْظُ لَهُ

1458. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया गाय और ऊंट सात सात आदमियों की तरफ से क़ुरबानी के लिए काफी है| मुस्लिम, अबू दावुद और हदीस के अल्फाज़ अबू दावुद के हैं | (मुस्लिम)

رواه مسلم (352 / 1318)، (3187) و ابوداؤد (2808)

١٤٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ وَأَرَادَ بَعْضُكُمْ أَنْ يُضَحِّيَ فَلَا يَمَسَّ مِنْ شَعْرِهِ وَبَشَرِهِ شَيْئًا» وَفِي رِوَايَةٍ «فَلَا يَأْخُذَنَّ شَعْرًا وَلَا يَقْلِمَنَّ ظُفْرًا» وَفِي رِوَايَةٍ «مَنْ رَأَى هِلَالَ ذِي الْحِجَّةِ وَأَرَادَ أَنْ يُضَحِّيَ فَلَا يَأْخُذْ مِنْ شَعْرِهِ وَلَا مِنْ أَظْفَارِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

1459. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब ज़ुलहिज्जा का अशरा शुरू हो जाए और तुम में से कोई कुर्बानी करने का इरादा रखता हो तो वह अपने बालो और जील्द से कोई चीज़ न उतारे”, और एक दूसरी रिवायत में है: “ना वह अपने बाल कटवाए न नाख़ून”, और एक रिवायत में है: “जो शख़्स ज़ुलहिज्जा का चाँद देख ले और वह कुर्बानी करने का इरादा रखता हो तो ना वह अपने बाल कटवाए न नाख़ून”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 ، 39 / 1977)، (5117 و 5121)

١٤٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَيَّامٍ الْعَمَلُ الصَّالِحُ فِيهِنَّ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنْ هَذِهِ الْأَيَّامِ الْعَشَرَةِ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِلَّا رَجُلٌ خَرَجَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فَلَمْ يَرْجِعْ مِنْ ذَلِكَ بِشَيْءٍ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1460. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बाकी दिनों में किए गए अमल की निस्बत उन दस अय्याम में किया गया अमल अल्लाह को इन्तिहाई पसंदीदा है”| सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल, अल्लाह की राह में जिहाद करना भी इतना पसंदीदा नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिहाद भी नहीं? इल्ला यह कि कोई शख़्स अपने माल व जान के साथ जिहाद के लिए जाए और उसकी कोई चीज़ वापस न आए| (बुखारी)

رواه البخاری (969)

بَاب فِي الْأُضْحِية • कुर्बानी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٤٦١ - (ضَعِيف) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: ذَبَحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الذَّبْحِ كَبْشَيْنِ أَقْرَنَيْنِ أَمْلَحَيْنِ موجئين فَلَمَّا وجههما قَالَ: «إِنِّي وجهت وَجْهي لِلَّذي فطر السَّمَوَات وَالْأَرْضَ عَلَى مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أَمَرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ عَنْ مُحَمَّدٍ وَأُمَّتِهِ بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ثُمَّ ذَبَحَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَحْمَدَ وَأَبِي دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيِّ: ذَبَحَ بِيَدِهِ وَقَالَ: «بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُمَّ هَذَا عَنِّي وَعَمَّنْ لَمْ يُضَحِّ من أمتِي»

1461. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने ईद उल अदहा के रोज़ सींगो वाले चित्कबरे दो खस्सी मेंढे जिबह किए, जब आप ﷺ ने उन्हें किबले रुख किया तो यह दुआ पढ़ी: “बेशक मैंने इब्राहीम जो के यक्सू थे के दीन पर होते हुए अपने चेहरे को उस ज़ात की तरफ मुतवज्जे किया जिस ने ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया और मैं मुशरिको में से नहीं हूँ, बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है, जो के तमाम जहानों का परवरदिगार है, उस का कोई शरीक नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं मुसलमानों इताअत गुज़ार में से हूँ, ऐ अल्लाह! (यह कुर्बानी का जानवर) तेरी अता है और तेरे ही लिए है, इसे मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत की तरफ से कबूल फरमा, अल्लाह के नाम से और अल्लाह बहोत बड़ा है”, फिर आप ﷺ ने जिबह फ़रमाया| अहमद अबू दावुद, इब्ने माजा दारमी और अहमद अबू दावुद और तिरमिज़ी की रिवायत में है आप ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से जिबह किया और यह दुआ पढ़ी: “अल्लाह के नाम से और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह यह मेरी और मेरी उम्मत के इस शख़्स की तरफ से है जिस ने कुर्बानी नहीं की”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (3 / 375 ح 15086 مختصرًا) و ابوداؤد (2795) و ابن ماجه (3121 وھو حدیث حسن) و الدارمی (2 / 7576 ح 1952) و للحدیث شواھد] * ابن اسحاق عنعن فی ھذا اللفظ و الروایة الثانیة لاحمد (3 / 362) و ابی داود (2810) و الترمذی (1521 وقال : غریب) و الحدیث صحیح بدون قوله :'' موجئین '' انظر صحیح ابن خزیمه (2899) و سنده حسن)

١٤٦٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ حَنَشٍ قَالَ: رَأَيْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُضَحِّي بِكَبْشَيْنِ فَقُلْتُ لَهُ: مَا هَذَا؟ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْصَانِي أَنْ أُضَحِّيَ عَنْهُ فَأَنَا أُضَحِّي ص:٤٦ عَنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ نَحْوَهُ

1462. हंशी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अली रदियल्लाहु अन्हु को दो मेंढे जिबह करते हुए देखा तो मैंने उन से दरियाफ्त किया, यह क्या है? उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया था की मैं उनकी तरफ से कुर्बानी करू सो मैं इन की तरफ से कुर्बानी करताहूँ| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2790) و الترمذى (1495 وقال : غريب) * شريک القاضى و الحکم بن عتيبة مدلسان و عنعنا و ابو الحسناء مجهول وهو غير الذى ذکره الحاکم فى المستدرک (4 / 229 ، 230) و وافقه الذهبى (!)

١٤٦٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَسْتَشْرِفَ الْعَيْنَ وَالْأُذُنَ وَأَلَّا نُضَحِّيَ بِمُقَابَلَةٍ وَلَا مُدَابَرَةٍ وَلَا شَرْقَاءَ وَلَا خَرْقَاءَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ والدارمي وانتهت رِوَايَته إِلَى قَوْله: وَالْأُذن

1463. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया के हम (क़ुरबानी के जानवर की) आँख और कान गौर से देख लिया करे और हम ऐसा जानवर जिबह न करे जिस का कान सामने से कटा हो या पीछे से कटा हो और उस में कोई सुराख़ तक न हो| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, दारमी इब्ने माजा और इब्ने माजा की रिवायत (((الاذن)) तक ख़त्म हो जाती है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1498 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2804) و النسائى (7 / 216 ح 4377) و الدارمى (2 / 77 ح 1958) [و ابن ماجه (3143) و صححه الحاکم (4 / 224) و وافقه الذهبى] * ابو اسحاق مدلس و عنعن

١٤٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن نضحي بأعضب الْقرن وَالْأُذن. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1464. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें ऐसे जानवर की कुर्बानी करने से मना फ़रमाया जिस का सिंग टुटा हुआ हो या उस का कान कटा हुआ हो| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (3145) [و ابوداؤد (2805) و الترمذى (1504) و النسائى (7 / 217 ، 218 ح 4382)]

١٤٦٥ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ: مَاذَا يُتَّقَى مِنَ الضَّحَايَا؟ فَأَشَارَ بِيَدِهِ فَقَالَ: «أَرْبَعًا الْعَرْجَاءُ والبين ظلعها والعرواء الْبَيِّنُ عَوَرُهَا وَالْمَرِيضَةُ الْبَيِّنُ مَرَضُهَا وَالْعَجْفَاءُ الَّتِي لَا تَنْقَى» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

1465. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया के किन जानवरों की कुर्बानी में एहतियात करनी चाहिए आप ﷺ ने अपने हाथ के इशारे से चार का ज़िक्र फ़रमाया:

“ऐसा लंगड़ा, जिस का लंगड़ा पन ज़ाहिर हो, ऐसा काना, जिस का काना पन ज़ाहिर हो, मरीज़, जिस का मरीज़ होना ज़ाहिर हो और लागीर, जिस की हड्डियों में गुदा न हो”| (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (2 / 482 ح 1060) و احمد (4 / 289) و الترمذی (1497 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2802) و النسائی (7 / 215 ح 4376) و ابن ماجہ (3144) و الدارمی (2 / 76 ح 1955) [و صححہ ابن خزیمۃ (2912) و ابن حبان (1046) و ابن الجارود (481 ، 907) و الحاکم (1 / 467 ، 468) و وافقہ الذھبی]

١٤٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُضَحِّي بِكَبْشٍ أَقْرَنَ فَحِيلٍ يَنْظُرُ فِي سَوَادٍ وَيَأْكُلُ فِي سَوَادٍ وَيَمْشِي فِي سَوَادٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1466. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ सींगो वाला मोटा ताज़ा सेहत मंद और काली आंखो वाला सियाह मुंह वाला और काली टांगो वाला मेंढा कुर्बानी किया करते थे| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1496 وقال : حسن صحیح غریب) و ابوداؤد (2796) و النسائی (7 / 221 ح 4395) و ابن ماجہ (3128) [و النسائی (7 / 221 ح 4395] و للحدیث شاھد عند مسلم (1967)، (5091)

١٤٦٧ - (صَحِيح) وَعَن مجاشع مِنْ بَنَى سُلَيْمٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «إِنَّ الْجَذَعَ يُوفِي مِمَّا يُوفِي مِنْهُ الثَّنِيُّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1467. बनू सलीम कबिले से ताल्लुक रखने वाले मुजाशीअ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “जहाँ दो दांत वाले बकरे की कुर्बानी किफ़ायत करती है वहां एक साल के मेंढे की कुर्बानी भी किफ़ायत करती है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (2799) و النسائی (لم اجدہ) و رواہ النسائی (7 / 219 ح 4388 عن رجل من مزینۃ رضی اللہ عنہ بہ) و ابن ماجہ (3140) و صححہ الحاکم 4 / 226]

١٤٦٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «نِعْمَتِ ص:٤٦ الْأُضْحِيَّةُ الْجذع من الضَّأْن» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1468. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “एक साल के मेंढे की कुर्बानी अच्छी कुर्बानी है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1499 وقال : غریب) * کدام و ابو کباش : مجھولان لا یعرف حالھا

١٤٦٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَحَضَرَ الْأَضْحَى فَاشْتَرَكْنَا فِي

الْبَقَرَةِ سَبْعَةٌ وَفِي الْبَعِيرِ عَشَرَةٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غريبٌ

1469. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र कर रहे थे की ईद उल अदहा आगई तो हम गाय में सात लोग शरीक हुए और ऊंट में दस| तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1501) و النسائی (7 / 222 ح 4397) و ابن ماجه (3131) [و صححه ابن خزیمة (2908) و ابن حبان (الاحسان : 3996]

١٤٧٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا عَمِلَ ابْنُ آدَمَ مِنْ عَمَلٍ يَوْمَ النَّحْرِ أَحَبَّ إِلَى اللَّهِ مِنْ إِهْرَاقِ الدَّمِ وَإِنَّهُ لَيُؤْتَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقُرُونِهَا وَأَشْعَارِهَا وَأَظْلَافِهَا وَإِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ مِنَ الله بمَكَان قبل أَن يَقع بِالْأَرْضِ فيطيبوا بهَا نفسا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

1470. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुर्बानी के दिन इब्ने आदम का कुर्बानी करना अल्लाह को इन्तिहाई महबूब है, बेशक वह जानवर रोज़ ए कियामत अपने सींगो, बालो और खुड़ो समेत आएगा बेशक कुर्बानी के जानवर का खून ज़मीन पर गिरने से पहले ही अल्लाह के यहाँ कबूल हो जाता है, पस तुम खुशदिली से कुर्बानी किया करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1493 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (3126) * ابو المثنی : ضعیف ضعفه الجمهور

١٤٧١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَيَّامٍ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ أَنْ يُتَعَبَّدَ لَهُ فِيهَا مِنْ عَشْرِ ذِي الْحِجَّةِ يَعْدِلُ صِيَامُ كُلِّ يَوْمٍ مِنْهَا بِصِيَامِ سَنَةٍ وَقِيَامُ كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْهَا بِقِيَامِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ إِسْنَادُهُ ضَعِيف

1471. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़ुलहिज्जा के दस दिनों की इबादत अल्लाह को इन्तिहाई महबूब है, इस अशरा के हर दिन के रोज़े का सवाब साल फिर के रोज़ो और उसकी हर रात का कयाम शबे कद्र के कयाम के बराबर है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: उसकी सनद जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (758) و ابن ماجه (1728) * نهاس : ضعیف



कुर्बानी का बयान • بَاب فِي الْأُضْحِية

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٤٧٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جُنْدُب بن عبد الله قَالَ: شَهِدْتُ الْأَضْحَى يَوْمَ النَّحْرِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَعْدُ أَن صلى وَفرغ من صلَاته وَسلم فَإِذا هُوَ يرى لَحْمَ أَضَاحِيٍّ قَدْ ذُبِحَتْ قَبْلَ أَنْ يَفْرَغَ مِنْ صَلَاتِهِ فَقَالَ: «مَنْ كَانَ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ أَوْ نُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ مَكَانَهَا أُخْرَى» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ صَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ النَّحْرِ ثُمَّ خَطَبَ ثُمَّ ذَبَحَ وَقَالَ: «مَنْ كَانَ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ أُخْرَى مَكَانَهَا وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فليذبح باسم الله»

1472. जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ ए ईद उल अदहा अदा की आप ने सिर्फ नमाज़ पढ़ कर सलाम ही फेरा था, अभी खुत्बा इरशाद नहीं फरमाया था के आप ने कुर्बानी का गोश्त देखा जिसे आप के नमाज़ पढ़ने से पहल दी जिबह कर दिया गया था, आप ﷺ ने (यह देख कर) फ़रमाया: “जिस शख़्स ने हमारे नमाज़ पढ़ने से पहले जानवर जिबह किया है, वह उसकी जगह दूसरा जानवर जिबह करे”, और एक दूसरी रिवायत में है नबी ﷺ ने कुर्बानी के दिन नमाज़ पढ़ाई, फिर खुत्बा इरशाद फ़रमाया, फिर जानवर जिबह किया और फ़रमाया: “जिस शख़्स ने हमारे नमाज़ पढ़ने से पहले कुर्बानी की है, वह उसकी जगह एक और जानवर जिबह करे और जिस ने जानवर जिबह नहीं किया वह अल्लाह के नाम पर जानवर जिबह करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (985) و مسلم (1 / 1960)، (5064)

١٤٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ: الْأَضْحَى يَوْمَانِ بعد يَوْم الْأَضْحَى. رَوَاهُ مَالك

1473. नाफेअ उसे रिवायत है के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: कुर्बानी के दिन के दो दिन बाद तक कुर्बानी करना जाईज़ है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ مالک (2 / 487 ح 1071)

١٤٧٤ - (ضَعِيف) وَقَالَ: وَبَلَغَنِي عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ مثله

1474. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैं अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से भी इसी तरह की रिवायत मुझे पहुँचती है| (हसन)

حسن ، رواہ مالک (2 / 487 ح 1072) * ھذا منقطع : من البلاغات و للحدیث شاھد حسن عند الطحاوی فی احکام القرآن (2 / 205 ح 569)

١٤٧٥ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: أَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ يُضحي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1475. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीना में दस साल कयाम फ़रमाया और आप ﷺ कुर्बानी करते रहे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1507 وقال : حسن) * حجاج بن ارطاة : ضعيف مدلس

١٤٧٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: قَالَ أَصْحَابُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ص:٤٦ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذِهِ الْأَضَاحِيُّ؟ قَالَ: «سُنَّةُ أبيكم إِبْرَاهِيم عَلَيْهِ السَّلَام» قَالُوا: فَمَا لَنَا فِيهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «بِكُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةٌ» . قَالُوا: فَالصُّوفُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «بِكُلِّ شَعْرَةٍ مِنَ الصُّوفِ حَسَنَة» رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

1476. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह कुर्बानी क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे लिए उस में क्या सवाब है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर बाल के बदले एक नेकी”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ऊन के बारे में आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऊन के हर रेशे पर एक नेकी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه احمد (4 / 368 ح 19498) و ابن ماجه (3127) * ابوداود نفيع الاعمى كذاب و عائذ الله المجاشعى : ضعيف

अतीरह का बयान • بَاب فِي العتيرة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٤٧٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا فَرَعَ وَلَا عَتِيرَةَ» . قَالَ: وَالْفرع: أول نتاج كَانَ يُنْتج لَهُمْ كَانُوا يَذْبَحُونَهُ لِطَوَاغِيتِهِمْ. وَالْعَتِيرَةُ: فِي رَجَبٍ

1477. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “फरअ कोई चीज़ है न अतीरह”, “फरअ” ऊंट के पहले बच्चे को कहते हैं जिसे मुशरिकीन अपने बुतों के नाम पर जिबह किया करते थे, जबकि “अतीरह” इस बकरी को कहते हैं जिस की रजब के महीने में कुर्बानी की जाती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5473) و مسلم (38 / 1976)، (5116)

بَاب فِي العتيرة • अतीरह का बयान
الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٤٧٨ - (ضَعِيف) عَن مخنف بن سليم قَالَ: كُنَّا وُقُوفًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَفَةَ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ عَلَى كُلِّ أَهْلِ بَيْتٍ فِي كُلِّ عَامٍ أُضْحِيَّةً وَعَتِيرَةً هَلْ تَدْرُونَ مَا الْعَتِيرَةُ؟ هِيَ الَّتِي تُسَمُّونَهَا الرَّجَبِيَّةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ ضَعِيفُ الْإِسْنَادِ وَقَالَ أَبُو دَاوُد: وَالْعَتِيرَة مَنْسُوخَة

1478. मिखनफ़ बिन सलीम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ अरफात में वुकुफ़ किए हुए थे मैंने वहां रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोगो! हर अहले खाना पर हर साल एक कुर्बानी करना और एक अतीरह वाजिब है, क्या तुम जानते हो अतीरह क्या है वही जिसे तुम राजबिय्य कहते हो”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब जईफ अल असनाद है, इमाम अबू दावुद रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: अतीरह मंसूख हो चूका है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (1518) و ابوداؤد (2788) و النسائی (7 / 167 ، 168 ح 4229) و ابن ماجه (3125) * فيه ابورملة مجهول الحال و حديث ابی داود (2830) يغنی عنه

بَاب فِي العتيرة • अतीरह का बयान
الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٤٧٩ - (ضَعِيف) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُمِرْتُ بِيَوْمِ الْأَضْحَى عِيدًا جَعَلَهُ اللَّهُ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ» . قَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْت إِنْ لَمْ أَجِدْ إِلَّا مَنِيحَةً أُنْثَى أَفَأُضَحِّي بِهَا؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنْ خُذْ مِنْ شَعْرِكَ وَأَظْفَارِكَ وَتَقُصُّ مِنْ شَارِبِكَ وَتَحْلِقُ عَانَتَكَ فَذَلِكَ تَمَامُ أُضْحِيَّتِكَ عِنْدَ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

1479. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे हुक्म दिया गया है की मैं इस उम्मत के लिए अदहा के दिन को ईद करार दू”, किसी आदमी ने आप ﷺ ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर में दूध देने वाली बकरी जो के मुझे किसी ने अतिय्या की है के सिवा कोई जानवर न पाऊ तो क्या मैं उसे जिबह कर दूँ, फ़रमाया: “नहीं? लेकिन तुम ईद के रोज़ अपने बाल और नाख़ून कटाओ, मूंछे कतराओ और ज़ेरे नाफ़ बाल मुंडा लो, अल्लाह के यहाँ यह तुम्हारी मुकम्मल कुर्बानी है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2789 ، 1399) و النسائی (7 / 212 ، 213 ح 4370) [و صححه ابن حبان (1043) و الحاکم (4 / 223) و وافقه الذهبی] * عيسی بن هلال : صدوق ، وثقه ابن حبان و الحاکم و غيرهما و حديثه حسن

नमाज़ ए खुसूफ का बयान • بَاب صَلَاة الخسوف

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٤٨٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ الشَّمْسَ خَسَفَتْ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَعَثَ مُنَادِيًا: الصَّلَاةُ جَامِعَةٌ فَتقدم فصلى أَربع رَكْعَات وَفِي رَكْعَتَيْنِ وَأَرْبع سَجدَات. قَالَت عَائِشَة: مَا رَكَعْتُ رُكُوعًا قَطُّ وَلَا سَجَدْتُ سُجُودًا قطّ كَانَ أطول مِنْهُ

1480. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में सूरज ग्रहन हुआ तो आप ने मुनादी (एलान) करने वाले को भेजा के वह यूँ एलान करे नमाज़ के लिए जमा हो जाओ (जब लोग जमा हो गए) आप आगे बढ़े और दो रक्अतो में चार रुकू और चार सजदे किए, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने उस से लम्बा रुकू व सुजूद कभी नहीं देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1066 ، 1051) و مسلم (4 / 901 ، 20 / 910)، (2092 و 2113)

١٤٨١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَهَرَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي صَلَاةِ الخسوف بقرَاءَته

1481. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने नमाज़ खुसुफ़ में बुलंद आवाज़ से किराअत फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1065) و مسلم (5 / 901)، (2093)

١٤٨٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عَبدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: انْخَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا نَحْوًا مِنْ قِرَاءَةِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ ص:٤٦ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ سَجَدَ ثُمَّ قَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلًا وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الْأَوَّلِ ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ سَجَدَ ثمَّ انْصَرف وَقد تجلت الشَّمْس فَقَالَ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ الله رَأَيْنَاك تناولت شَيْئا فِي مقامك ثمَّ رَأَيْنَاك تكعكعت؟ قَالَ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «إِنِّي أريت الْجنَّة فتناولت عُنْقُودًا وَلَوْ أَخَذْتُهُ لَأَكَلْتُمْ مِنْهُ مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا وأريت النَّار فلم أر منظرًا كَالْيَوْمِ قَطُّ أَفْظَعَ وَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ» . قَالُوا: بِمَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «بِكُفْرِهِنَّ» . قِيلَ: يَكْفُرْنَ بِاللَّهِ؟ . قَالَ: " يَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ وَيَكْفُرْنَ الْإِحْسَانَ لَو أَحْسَنت إِلَى أحداهن الدَّهْر كُله ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ مِنْك خيرا قطّ "

1482. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में सूरज ग्रहन हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सहाबा किराम के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप ने तकरीबन सूरत बकरा की किराअत के बराबर

तवील कयाम फ़रमाया, फिर तवील रुकू फ़रमाया, फिर खड़े हुए तो आप ने तवील कयाम फ़रमाया, लेकिन वह पहले कयाम से कम था फिर आप ने तवील रुकू फ़रमाया, लेकिन यह पहले रुकू से कम था, फिर खड़े हुए फिर सजदाह किया, फिर खड़े हुए तो आप ने तवील कयाम फ़रमाया, जबकि वह पहले कयाम से कम था, फिर तवील रुकू फ़रमाया लेकिन वह पहले रुकू से कम था, फिर खड़े हुए तो तवील कयाम फ़रमाया, लेकिन वह पहले कयाम से कम था, फिर तवील रुकू फ़रमाया लेकिन वह पहले रुकू से कम था, फिर सजदाह किया, फिर जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो सूरज ग्रहन ख़त्म हो चूका था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक आफ़ताब महताब अल्लाह की निशानियो में से दो निशानिया हैं, यह किसी की मौत व हयात की वजह से नहीं गहनाते, जब तुम देखो तो अल्लाह का ज़िक्र करो”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमने आप को देखा के जैसे आप अपनी इसी जगह से कोई चीज़ पकड़ना चाहते है, फिर हमने आप को उल्टे पाँव वापस आते हुए देखा, आप ने फ़रमाया: “मैंने जन्नत देखी मैंने उस से अंगूरों का गुच्छा लेना चाहा, अगर में उसे ले लेते तो तुम रहती दुनिया तक इसे खाते रहते और मैंने जहन्नम देखी मैंने आज के दिन की तरह का खौफनाक मंजर कभी नहीं देखा और मैंने वहां अक्सरियत औरतो की देखी”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह क्यों? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उनकी नाशुक्री की वजह से”, अर्ज़ किया गया, क्या यह अल्लाह की नाशुक्री करती है, फ़रमाया: “शोहर की नाशुक्री करती हैं वह (खाविंद के) इहसान की नाशुक्री करती है, अगर तुमने उनमें से किसी से जिंदगी भर हुस्ने सुलूक किया तो फिर अगर वह तुम्हारी तरफ से कोई नागवार चीज़ देख ले तो वह कहेगी मैंने तो तुम्हारी तरफ से कभी कोई खैर देख रही नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1052) و مسلم (17 / 907)، (2109)

١٤٨٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ نَحْوُ حَدِيثِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَقَالَتْ: ثُمَّ سَجَدَ فَأَطَالَ السُّجُودَ ثُمَّ انْصَرَفَ وَقَدِ انْجَلَتِ الشَّمْسُ فَخَطَبَ النَّاسَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَادْعُوا اللَّهَ وَكَبِّرُوا وَصَلُّوا وَتَصَدَّقُوا» ثُمَّ قَالَ: «يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ وَاللَّهِ مَا مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ مِنَ اللَّهِ أَنْ يَزْنِيَ عَبْدُهُ أَوْ تَزْنِيَ أَمَتُهُ يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ وَاللَّهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا»

1483. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की मिस्ल हदीस मरवी है, उन्होंने ने फ़रमाया: फिर आप ﷺ ने सजदाह किया तो सजदो को लम्बा किया फिर आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो सूरज ग्रहन ख़त्म हो चूका था आप ﷺ ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया अल्लाह की हम्द व सना बयान की फ़रमाया: “आफ़ताब महताब अल्लाह की निशानियो में से दो निशानिया हैं”, यह किसी की मौत व हयात से नहीं गहनाई है पस जब तुम यह देखो तो अल्लाह से दुआए करो उसकी किब्रियाई बयान करो नमाज़ पढ़ो और सदका करो”, फिर फ़रमाया: “उम्मत ए मुहम्मद ﷺ! अल्लाह की क़सम! अल्लाह से बढ़कर कोई गैरत मंद नहीं है की उस का बंदा या उसकी लौंडी ज़िना करे उम्मत ए मुहम्मद अल्लाह की क़सम! अगर तुम इस बात को जान लो जो में जानता हूँ तो तुम बहोत ही कम हंसो और बहोत ज़्यादा रोओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1044) و مسلم (1 / 901)، (2089)

١٤٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَزِعًا يَخْشَى أَنْ تَكُونَ السَّاعَةَ فَأَتَى الْمَسْجِدَ فَصَلَّى بِأَطْوَلِ قِيَامٍ وَرُكُوعٍ وَسُجُودٍ مَا رَأَيْتُهُ قَطُّ يَفْعَلُهُ وَقَالَ: «هَذِهِ الْآيَاتُ الَّتِي يُرْسِلُ اللَّهُ لَا تَكُونُ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ وَلَكِنْ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهَا عِبَادَهُ فَإِذَا رَأَيْتُمْ شَيْئًا مِنْ ذَلِكَ فَافْزَعُوا ص:٤٦ إِلَى ذِكْرِهِ وَدُعَائِهِ واستغفاره»

1484. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सूरज ग्रहन हुआ तो नबी ﷺ घबराहट के आलम में खड़े हुए जैसे कियामत गई हो, आप ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और इस क़दर कयाम व रुकू और सजदो को तवील कर के नमाज़ पढ़ी के मैंने आप को ऐसे करते हुए कभी नहीं देखा और आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये निशानिया जो अल्लाह भेजता है के किसी की मौत व हयात की वजह से नहीं होती, लेकिन उन के ज़रिए अल्लाह अपने बंदो को डराता है, जब तुम इस तरह की कोई चीज़ देखो तो तुम उस के ज़िक्र उस से दुआ करने और उस से मगफिरत तलब करने की तरफ तवज्जो करो और उसकी पनाह हासिल करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1059) و مسلم (24 / 912)، (2117)

١٤٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ ابْنُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى بِالنَّاسِ سِتَّ رَكَعَاتٍ بِأَرْبَعِ سَجَدَاتٍ. رَوَاهُ مُسلم

1485. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर मैं रसूलुल्लाह ﷺ के बेटे इब्राहीम की वफात के रोज़ सूरज ग्रहन हुआ तो आप ﷺ ने सहाबा को छे रुकू और चार सजदो के साथ (दो रकअत नमाज़ पढ़ाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 904)، (2102) * وھی روایة صحیحة ، غیر شاذة ، و اخطا من ضعفها ، و صلوات الکسوف لها انواع

١٤٨٦ - (ضَعِيف) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: صلى الله عَلَيْهِ وَسلم حِين كسفت الشَّمْس ثَمَان رَكْعَات فِي أَربع سَجدَات

1486. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब सूरज ग्रहन हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने आठ रुकू और चार सजदो के साथ नमाज़ पढ़ाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 908)، (2111)

١٤٨٧ - (صَحِيح) وَعَن عَليّ مثل ذَلِك. رَوَاهُ مُسلم

1487. अली रदियल्लाहु अन्हु से भी इसी तरह मरवी है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 908)، (2111)

١٤٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كُنْتُ أرتمي بأسهم لي بالمدين فِي حَيَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ كُسِفَتِ الشَّمْسُ فَنَبَذْتُهَا. فَقُلْتُ: وَاللَّهِ لَأَنْظُرَنَّ إِلَى مَا حَدَثَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ. قَالَ: فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ قَائِمٌ فِي الصَّلَاةِ رَافِعٌ يَدَيْهِ فَجعل يسبح ويهلل وَيكبر ويحمد وَيَدْعُو حَتَّى حَسَرَ عَنْهَا فَلَمَّا حَسَرَ عَنْهَا قَرَأَ سُورَتَيْنِ وَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ فِي صَحِيحِهِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ وَكَذَا فِي شَرْحِ السُّنَّةِ عَنْهُ وَفِي نُسَخِ الْمَصَابِيحِ عَنْ جَابِرِ بن سَمُرَة

1488. अब्दुल रहमान बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की जिंदगी में मदीना में तीर अन्दाज़ी कर रहा था के अचानक सूरज ग्रहन हुआ मैंने वह तीर उधर ही) फेंके और कहा: अल्लाह की क़सम! मैं देखूंगा के सूरज ग्रहन के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ क्या नई तालीम इरशाद फरमाते हैं, वह बयान करते हैं, मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो देखा के आप हाथ उठाए खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं, आप तस्बीह, तहलील, तकबीर, तहमिद और दुआ करने लगे हत्ता कि सूरज ग्रहन ख़त्म हो गया तो आप ने दो सूरते पढ़ाइ और दो रकते अदा फरमाइ| सहीह मुस्लिम और शरह सुन्ना में अब्दुल रहमान बिन समुरह (र) से मरवी है जबकि मसाबिह के नुस्खों में जाबिर बिन समुराह (र) से मरवी है, रवाह मुस्लिम वल बगवी की शरह सुन्ना. (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 913)، (2119) و البغوی فی شرح السنة (4 / 379380 ح تحت ح 1144)

١٤٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: لَقَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْعَتَاقَةِ فِي كُسُوفِ الشَّمْسِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1489. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, नबी ﷺ ने सूरज ग्रहन के मौके पर गुलाम आज़ाद करने का हुक्म फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخاری (1054)

नमाज़ ए खुसूफ का बयान • بَاب صَلَاة الخسوف

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٤٩٠ - (ضَعِيف) عَن سَمُرَة بن جُنْدُب قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي كُسُوفٍ لَا نَسْمَعُ لَهُ صَوْتًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1490. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सूरज ग्रहन के मौके पर हमें नमाज़ पढ़ाइ तो हमें आप की आवाज़ सुनाई नहीं देती थी| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (562 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1184) و النسائی (3 / 140 ح 1485 مطولاً) و ابن ماجه (1264) * و صححه ابن خزیمة (1297) و ابن حبان (597 ، 598) و الحاکم (1 / 329 ، 331) و وافقه الذهبی

١٤٩١ - (حسن) وَعَن عِكْرِمَة قَالَ: قِيلَ لِابْنِ عَبَّاسٍ: مَاتَتْ فُلَانَةُ بَعْضُ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَخَرَّ سَاجِدًا فَقِيلَ لَهُ تَسْجُدُ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ؟ فَقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَأَيْتُمْ آيَةً فَاسْجُدُوا» وَأَيُّ آيَةٍ أَعْظَمُ مِنْ ذَهَابِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيّ

1491. इकरिमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा को बताया गया के नबी ﷺ की फलां ज़ौजा ए मोहतरमा वफात पा गई है तो वह (यह सुन कर) फ़ौरन सजदाह रेज़ हो गए उन से अर्ज़ किया गया, आप इस वक़्त सजदाह करते हैं उन्होंने बयान किया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम कोई निशानिया देखो तो सजदाह करो”, और नबी ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात के फौत हो जाने से बड़ी निशानिया कौन सी हो सकती है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1197) و الترمذی (3891 وقال : حسن غریب)



باب صلاة الخسوف • नमाज़ ए खुसूफ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٤٩٢ - (ضَعِيف) عَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فصلى بهم فَقَرَأَ بِسُورَة م الطُّوَلِ وَرَكَعَ خَمْسَ رَكَعَاتٍ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ قَامَ الثَّانِيَةَ فَقَرَأَ بِسُورَةٍ مِنَ الطُّوَلِ ثُمَّ رَكَعَ خَمْسَ رَكَعَاتٍ وَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ جَلَسَ كَمَا هُوَ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ يَدْعُو حَتَّى انْجَلَى كسوفها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1492. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में सूरज ग्रहन हुआ तो आप ने सहाबा को नमाज़ पढ़ाई, पस आप ने पहली रक्अत में लम्बी सूरत तिलावत फरमाई, पांच रुकू और दो सजदे किए फिर दूसरी रक्अत के लिए खड़े हुए तो उस में भी लम्बी सूरत तिलावत फरमाई, पांच रुकू और दो सजदे किए, फिर आप ﷺ किबले रुख बैठ कर दुआ करते रहे, हत्ता कि सूरज ग्रहन ख़त्म हो गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1182) * ابو جعفر الرازی : حسن الحدیث فی غیر ما انکر علیه کما تقدم (220) وھو ضعیف فیما یروی عن الربیع بن انس فالسند معلول

١٤٩٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: كَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَجَعَلَ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ رَكْعَتَيْنِ وَيَسْأَلُ عَنْهَا حَتَّى انْجَلَتِ الشَّمْسُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ. وَفِي رِوَايَةِ النَّسَائِيِّ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى حِينَ انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ مِثْلَ صَلَاتِنَا يَرْكَعُ وَيَسْجُدُ»» وَلَهُ فِي أُخْرَى: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمًا مُسْتَعْجِلًا إِلَى الْمَسْجِدِ وَقَدِ انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ فَصَلَّى حَتَّى انْجَلَتْ ثُمَّ قَالَ: " إِنَّ أَهْلَ الْجَاهِلِيَّةِ كَانُوا يَقُولُونَ: إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَنْخَسِفَانِ إِلَّا لِمَوْتِ عَظِيمٍ مِنْ عُظَمَاءِ أَهْلِ الْأَرْضِ وَإِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَا يَنْخَسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ وَلَكِنَّهُمَا خَلِيقَتَانِ مِنْ خَلْقِهِ يُحْدِثُ اللَّهُ فِي خَلْقِهِ مَا شَاءَ فَأَيُّهُمَا انْخَسَفَ فَصَلُّوا حَتَّى ينجلي أَو يحدث الله أمرا "

1493. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में सूरज ग्रहन हुआ तो आप ﷺ दो दो रकते पढ़ते और (दो रक्अत नमाज़ पढ़ने के बाद) सूरज ग्रहन के मुतल्लिक पूछते हत्ता कि सूरज ग्रहन ख़त्म हो गया| अबू दावुद और नसई की रिवायत में है की जब सूरज ग्रहन हुआ तो नबी ﷺ ने हमारी नमाज़ की तरह हमें नमाज़ पढ़ाई, आप रुकू व सुजूद फरमाते थे और नसई की दूसरी रिवायत में है सूरज ग्रहन लग चुका तो नबी ﷺ जल्दी के साथ मस्जिद में तशरीफ़ लाए नमाज़ पढ़ाई हत्ता कि सूरज ग्रहन ख़त्म हो गया, फिर फ़रमाया: "अहल ए जाहिलियत कहा: करते थे, सूरज और चाँद अहल ज़मीन की किसी अज़ीम शख्शियत की वफात पर ही गहनाते है, जबकि सूरज और चाँद किसी की मौत व हयात की वजह से नहीं गहनाते, बल्कि वह तो अल्लाह की मखलूक है अल्लाह अपने मखलूक में जो चाहे सो करता है इन दोनों में से जो भी गहना जाए तो नमाज़ पढ़ो हत्ता कि वह ग्रहन ख़त्म हो जाए, या अल्लाह कोई नया मुआमला ज़ाहिर फरमादे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1193) و النسائی (3 / 145 ح 1490 و 3 / 141 ح 1486) * هذا مرسل ، ابوقلابة : لم یسمع من النعمان بن بشیر رضی الله عنه

सज्द ए शुक्र का बयान • بَابٌ فِي سُجُودِ الشُّكْرِ

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ: الْفَصْلِ الْأَوَّلِ وَالثَّالِثِ

यह बाब पहली और तीसरी फस्ल से खाली हैं

١٤٩٤ - (حسن) عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا جَاءَهُ أَمْرٌ سُرُورًا أَوْ يُسَرُّ بِهِ خَرَّ سَاجِدًا شَاكِرًا لِلَّهِ تَعَالَى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حسن غَرِيب

1494. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ को कोई खुश्कुन मुआमला दरपेश होता तो आप ﷺ अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए सजदाह रेज़ हो जाया करते थे| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2774) و الترمذی (1578) [و ابن ماجه : 1394]

١٤٩٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي جَعْفَرٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَجُلًا مِنَ النُّغَاشِينَ فَخَرَّ ساجا. رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ مُرْسَلًا وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ لَفْظُ المصابيح

1495. अबू जाफर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने किसी छोटे से कद वाले बोने शख़्स को देखा तो

आप सजदाह रेज़ हो गए| दार कुतनी ने इसे मुरसल रिवायत किया है और शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फ़ाज़ हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الدارقطنى (1 / 410) * جابر الجعفى ضعيف جدًا مدلس و هيشم مدلس و عنعن و السند مرسل

١٤٩٦ - (ضَعِيف) وَعَن سعد بن أبي وَقاص قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نم مَكَّةَ نُرِيدُ الْمَدِينَةَ فَلَمَّا كُنَّا قَرِيبًا مِنْ عَزْوَزَاءَ نَزَلَ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ فَدَعَا اللَّهَ سَاعَةً ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا فَمَكَثَ طَوِيلًا ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ سَاعَةً ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا فَمَكَثَ طَوِيلًا ثُمَّ قَامَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ سَاعَةً ثُمَّ خَرَّ سَاجِدًا قَالَ: «إِنِّي سَأَلْتُ رَبِّي وَشَفَعْتُ لِأُمَّتِي فَأَعْطَانِي ثُلُثَ أُمَّتِي فَخَرَرْتُ سَاجِدًا لِرَبِّي شُكْرًا ثُمَّ رَفَعْتُ رَأْسِي فَسَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي فَأَعْطَانِي ثُلُثَ أُمَّتِي فَخَرَرْتُ سَاجِدًا لِرَبِّي شُكْرًا ثُمَّ رَفَعْتُ رَأْسِي فَسَأَلْتُ رَبِّي لِأُمَّتِي فَأَعْطَانِي الثُّلُثَ الْآخِرَ فَخَرَرْتُ سَاجِدًا لِرَبِّي شُكْرًا» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

1496. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम मदीना जाने के लिए रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मक्का से रवाना हुए जब हम अज़्वाझा के करीब पहुंचे तो आप ﷺ सवारी से नीचे उतरे, कुछ देर तक हाथ उठाकर खड़े दुआ करते रहे, फिर सजदाह रेज़ हो गए, फिर काफी देर बाद आप खड़े हुए और कुछ देर तक हाथ उठाए और फिर सजदाह रेज़ हो गए, फिर काफी देर बाद खड़े हुए और कुछ देर तक हाथ उठाए और फिर सजदाह रेज़ हो गए, आप ने फ़रमाया: "मैंने अपने रब से दरख्वास्त की और अपनी उम्मत के लिए शफाअत की तो उस ने मुझे मेरी उम्मत के बारे में एक तिहाई शफाअत की इजाज़त दी तो मैं अपने रब का शुक्र अदा करने के लिए अपने रब के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो गया, फिर मैंने सर उठाया तो अपनी उम्मत के लिए अपने रब से सवाल किया तो उस ने मज़ीद मेरी एक तिहाई उम्मत की शफाअत की मुझे इजाज़त अता फरमाई, तो मैं शुक्र के तौर पर अपने रब के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो गया, फिर मैंने सर उठाया तो मैंने अपनी उम्मत के लिए अपने रब से दरख्वास्त की तो उस ने आखिरी तिहाई की शफाअत की मुझे इजाज़त अता फरमाई, तो मैं अपने रब का शुक्र अदा करने के लिए उस के हुज़ूर सजदाह रेज़ हो गया"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (لم اجده) و ابوداؤد (2775) * يحيى بن الحسن : مجهول الحال و اشعث بن اسحاق مثله : مستور

• بَاب الاسْتِسْقَاء — नमाज़ ए इसतिसका का बयान

• الْفَصْل الأول — पहली फस्ल

١٤٩٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّاسِ إِلَى الْمُصَلَّى يَسْتَسْقِي فَصَلَّى بِهِمْ رَكْعَتَيْنِ جَهَرَ فِيهِمَا بِالْقِرَاءَةِ وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ يَدْعُو وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَحَوَّلَ رِدَاءَهُ حِينَ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ

1497. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बारिश तलब करने के लिए लोगों के साथ ईदगाह की तरफ तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई, जिस में बुलंद आवाज़ से किराअत की आप किबले रुख हो कर हाथ उठाकर दुआ करते रहे, जब आप ﷺ किबले रुख हुए तो अपनी चादर को पलट लिया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1028) و مسلم (2 / 894)، (2071)

١٤٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ دُعَائِهِ إِلَّا فِي الِاسْتِسْقَاءِ فَإِنَّهُ يَرْفَعُ حَتَّى یری بَيَاض إبطَيْهِ

1498. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ सिर्फ बारिश तलब करने के मौके पर हाथ उठाकर दुआ किया करते थे आप उन्हें इस क़दर उठाते के आप की बगलों की सफेदी नज़र आने लगती| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1031) و مسلم (5 / 895)، (2074)

١٤٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَسْقَى فَأَشَارَ بِظَهْرِ كَفَّيْهِ إِلَى السَّمَاءِ. رَوَاهُ مُسلم

1499. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने बारिश तलब की तो आप ने हाथो की पुश्त को आसमान की तरफ कर के हालात की तबदीली का इरशाद किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 896)، (2075)

١٥٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا رَأَى الْمَطَرَ قَالَ: «اللَّهُمَّ صيبا نَافِعًا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1500. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब बारिश देखते तो फरमाते: “अल्लाह नफ़ामंद बारिश बरसा| (बुखारी)

رواه البخاری (1032)

١٥٠١ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: أَصَابَنَا وَنَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَطَرٌ قَالَ: ص:٤٧ فَحَسَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَوْبَهُ حَتَّى أَصَابَهُ مِنَ الْمَطَرِ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ صَنَعْتَ هَذَا؟ قَالَ: «لِأَنَّهُ حَدِيثُ عَهْدٍ بربه» . رَوَاهُ مُسلم

1501. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे के बारिश होने लगी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने जिस्म से कुछ कपड़ा उठाया, हत्ता कि कुछ कतरे वहां गिरे तो हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप ने ऐसे क्यों किया आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्योंकि यह अभी नई नई अपने रब से आई है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 898)، (2083)

नमाज़ ए इसतिसका का बयान • بَاب الاسْتِسْقَاء

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٥٠٢ - (ضَعِيف) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْمُصَلَّى فَاسْتَسْقَى وَحَوَّلَ رِدَاءَهُ حِينَ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَجَعَلَ عِطَافَهُ الْأَيْمَنَ عَلَى عَاتِقِهِ الْأَيْسَرِ وَجَعَلَ عِطَافَهُ الْأَيْسَرَ عَلَى عَاتِقِهِ الْأَيْمَنِ ثُمَّ دَعَا الله. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1502. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ईदगाह तशरीफ़ लाए तो आप ने बारिश तलब की और जिस वक़्त किबले रुख हुए तो अपनी चादर पलटी, आप ने उस के दाएँ किनारे को अपने बाएँ कंधे पर और बाएँ किनारे को अपने दाएँ कंधे पर कर लिया, फिर अल्लाह से दुआ की| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (1163) [و الترمذی (556) و ابن ماجه (1267) و النسائی (3 / 155 ح 1506)] * وله شواهد ، و انظر صحيح بخاری (1024) و مسلم (894)، (2070) قلت : و عمرو بن الهارث الحمصی وثقه ابن خزيمة (571) و ابن حبان (482) و الحاکم 1 / 223) و الذهبی و الدارقطنی (1 / 335) وغيرهم

١٥٠٣ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن زيد أَنَّهُ قَالَ: اسْتَسْقَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ خَمِيصَةٌ لَهُ سَوْدَاءُ فَأَرَادَ أَنْ يَأْخُذَ أَسْفَلَهَا فَيَجْعَلَهُ أَعْلَاهَا فَلَمَّا ثَقُلَتْ قَلَبَهَا عَلَى عَاتِقَيْهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

1503. अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने बयान किया रसूलुल्लाह ﷺ ने बारिश के लिए दुआ की तो आप पर काली चादर थी आप ने उस के निचले हिस्से को ऊपर करना चाहा लेकिन गिराह होने पर आप ﷺ ने इसे अपने कंधो पर ही बदल लिया| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 42 ح 16587) و ابوداؤد (1164) [و صححه الحاکم علی شرط مسلم (1 / 327) و وافقه الذهبی و صححه ابن الملقن فی تحفة المحتاج (734)

١٥٠٤ - (صَحِيح) وَعَن عُمَيْر مولى آبي اللَّحْم أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَسْقِي عِنْدَ أَحْجَارِ الزَّيْتِ قَرِيبًا مِنَ الزَّوْرَاءِ قَائِمًا يَدْعُو يَسْتَسْقِي رَافِعًا يَدَيْهِ قِبَلَ وَجْهِهِ لَا يُجَاوِزُ بِهِمَا رَأْسَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وروى التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ نَحوه

1504. उमैर मौला अबी अल लहम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को जवरा के करीब, मक़ाम ए अह्जारजियत के पास खड़े हो कर बारिश तलब करते हुए देखा, आप अपने चेहरे के सामने हाथ बुलंद किए हुए बारिश के लिए दुआ कर रहे थे और वह हाथ आप के सर से बुलंद नहीं थे| अबू दावुद, इमाम तिरमिज़ी और इमाम नसई ने भी इसी तरह रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (1168) و الترمذی (557) و النسائی (3 / 159 ح 1515)

١٥٠٥ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي فِي الِاسْتِسْقَاءِ مُتَبَذِّلًا مُتَوَاضِعًا مُتَخَشِّعًا مُتَضَرِّعًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1505. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पुराने कपड़े पहन कर आजिज़ी इख़्तियार कर के खुशु व खुजू और तजरीअ करते हुए बारिश तलब करने के लिए निकले| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (559 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (165) و النسائی (3 / 16 ، 157 ح 1509) و ابن ماجہ (1266) [و صححہ ابن خزیمۃ (1405) و ابن حبان (603)]

١٥٠٦ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَسْقَى قَالَ: «اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهِيمَتَكَ وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَأَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ» . رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد

1506. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, जब नबी ﷺ बारिश तलब करते तो यह दुआ पढ़ा करते थे: “अल्लाह अपने बंदो और जानवरों को सेराब फरमा अपने रहमत को आम कर दे और अपने मुर्दा शहरो को जिंदगी अता फरमा”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ مالک (1 / 190 ، 191 ح 450) عن یحیی بن سعید الانصاری عن عمرو بن شعیب عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم الخ فھو مرسل) و ابوداؤد (1176 و سندہ ضعیف ، سفیان الثوری مدلس و عنعن و تابعہ حفص بن غیاث وھو مدلس و عنعن)

١٥٠٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوَاكِئُ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيثًا مَرِيئًا مُرِيعًا نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ عَاجِلًا غَيْرَ آجِلٍ» . قَالَ: فَأَطْبَقَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1507. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हाथ ऊपर उठाकर यह दुआ करते हुए देखा: “अल्लाह हमें पानी पिला, हम पर ऐसी बारिश नाज़िल फरमा जो हमारी प्यास बुझा दे, हल्कि फुवारी बनकर गल्ला उगाने वाली, नफा देने वाली, नुकसान पहुँचाने वाली न हो, जल्द आने वाली हो देर लगाने वाली न हो”, रावी बयान करते हैं, फ़ौरन ही आसमान पर बादल छा गए| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (1169) [و صححہ ابن خزیمۃ (1416) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 327) و وافقہ الذھبی]

नमाज़ ए इसतिसका का बयान • بَاب الاسْتِسْقَاء

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٥٠٨ - (حسن) عَن عَائِشَة قَالَتْ: شَكَا النَّاسُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُحُوطَ الْمَطَرِ فَأَمَرَ بِمِنْبَرٍ فَوُضِعَ لَهُ فِي الْمُصَلَّى وَوَعَدَ النَّاسَ يَوْمًا يَخْرُجُونَ فِيهِ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَخَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ بَدَا حَاجِبُ الشَّمْسِ فَقَعَدَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَكَبَّرَ وَحَمِدَ اللَّهَ عزوجل ثُمَّ قَالَ: «إِنَّكُمْ شَكَوْتُمْ جَدْبَ دِيَارِكُمْ وَاسْتِئْخَارَ الْمَطَرِ عَنْ إِبَّانِ زَمَانِهِ عَنْكُمْ وَقَدْ أَمَرَكُمُ الله عزوجل أَنْ تَدْعُوهُ وَوَعَدَكُمْ أَنْ يَسْتَجِيبَ لَكُمْ» . ثُمَّ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ملك يَوْمِ الدِّين لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ اللَّهُمَّ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْغَنِيُّ وَنَحْنُ الْفُقَرَاءُ. أَنْزِلْ عَلَيْنَا الْغَيْثَ وَاجْعَلْ مَا أَنْزَلْتَ لَنَا قُوَّةً وَبَلَاغًا إِلَى حِينٍ» ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ فَلَمْ يَتْرُكِ الرَّفْعَ حَتَّى بَدَا بَيَاضُ إِبِطَيْهِ ثُمَّ حَوَّلَ إِلَى النَّاسِ ظَهْرَهُ وَقَلَبَ أَوْ حَوَّلَ رِدَاءَهُ وَهُوَ رَافِعُ يَدَيْهِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ وَنَزَلَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَأَنْشَأَ اللَّهُ سَحَابَةً فَرَعَدَتْ وَبَرَقَتْ ثُمَّ أَمْطَرَتْ بِإِذْنِ اللَّهِ فَلَمْ يَأْتِ مَسْجِدَهُ حَتَّى سَالَتِ السُّيُولُ فَلَمَّا رَأَى سُرْعَتَهُمْ إِلَى الْكن ضحك صلى الله عَلَيْهِ وَسلم حَتَّى بَدَت نَوَاجِذه فَقَالَ: «أَشْهَدُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنِّي عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1508. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, सहाबा ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहत साली की शिकायत की, तो आप ﷺ ने मिम्बर का हुक्म फ़रमाया, तो उसे आप के लिए ईदगाह में रख दिया गया, आप ﷺ ने सहाबा से एक मुईन दिन का वादा फ़रमाया, वह इस रोज़ बाहर निकले, आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब सूरज का किनारा ज़ाहिर हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ भी तशरीफ़ ले गए, आप मिम्बर पर बैठ गए अल्लाह की किब्रियाई और हम्द बयान की, फिर फ़रमाया: "तुमने अपने इलाको की कहत साली और बरोकत बारिशो के न होने की शिकायत की है, अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है के तुम उस से दुआ करो और उस ने दुआ की क़बूलियत का तुम से वादा कर रखा है", फिर आप ﷺ ने यूँ दुआ की: "हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है, जो बहोत मेहरबान निहायत रहम वाला रोज़े जज़ा का मालिक है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वह जो चाहता है कर गुज़रता है, अल्लाह तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, तू गनी है और हम फुकराअ हम पर बारिश बरसा और जब तू बारिश नाज़िल फरमाए, इसे हमारे लिए एक मुद्दत तक कुव्वत और मकासिद तक पहुँचने का ज़रिया बना", फिर आप ने हाथ बुलंद किए और उन्हें बुलंद करते रहे, हत्ता कि आप के बगलों की सफेदी नज़र आने लगी, फिर आप ने लोगों की तरफ अपनी पीठ कर दी और अपनी चादर पलटी और आप ने अभी तक हाथ उठाए रखे, फिर लोगों की तरफ मुतवज्जे हुए और नीचे उतर कर दो रकते पढ़ाइ, पस अल्लाह ने बादल की एक टुकड़ी भेजी, गरज चमक पैदा हुई तो फिर अल्लाह के हुक्म से बारिश होने लगी, आप अभी अपने मस्जिद तक तशरीफ़ नहीं लाए थे की नाले बहने लगे, जब आप ﷺ ने उन्हें अपने झुपड़ीयों की तरफ दौड़ते हुए देखा तो आप हंसने लगे, हत्ता कि आप की दाढ़े नज़र आने लगी आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है और बेशक में अल्लाह का बंदा और उस का रसूल हूँ। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1173) وقال : هذا حديث غريب اسناده جيد) [و صححه ابن حبان (604) و الحاكم (1 / 328) و وافقه الذهبی]

١٥٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ كَانَ إِذْ قحطوا استسقى بالعباس بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا فَتَسْقِينَا وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا. قَالَ: فَيُسْقَوْنَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1509. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु कहत साली का शिकार होती तो अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के ज़रिए बारिश तलब करते थे और यूँ अर्ज़ करते ऐ अल्लाह, हम तेरे नबी ﷺ की दुआ के ज़रिए बारिश तलब करते थे तो हम पर बारिश बरसाता था और अब हम तेरे नबी ﷺ के चचा की दुआ के वसिले से बारिश तलब करते हैं तो हम पर बारिश नाज़िल फरमा चुनांचे बारिश होने लगती| (बुखारी)

رواه البخارى (1010)

١٥١٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " خَرَجَ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ بِالنَّاسِ يَسْتَسْقِي فَإِذا هُوَ بنملة رَافِعَة بعض قوائمها إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: ارْجِعُوا فَقَدِ اسْتُجِيبَ لَكُمْ من أجل هَذِه النملة ". رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

1510. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अंबिया अलैहिस्सलाम में से एक नबी लोगों के साथ बारिश तलब करने के लिए रवाना हुए, उन्होंने अचानक देखा के एक चींटी अपने नह्फ़ सी टांगे आसमान की तरफ ऊपर उठाए हुए दुआ कर रही है, पस इस नबी ﷺ ने फ़रमाया: वापस पलट जाओ इस चींटी की वजह से तुम्हारी दुआ कबूल हो गई है”| (हसन)

حسن ، رواه الدارقطنى (2 / 66 ح 1779) [و صححه الحاكم (1 / 325326) و وافقه الذهبى] * محمد بن عون و ابوه ، حديثهما حسن

بَاب فِي الرِّيَاح • आंधियों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٥١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نُصِرْتُ بِالصَّبَا وَأَهْلِكَتْ عَاد بالدبور»

1511. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बादिस्बा के ज़रिए मेरी नुसरत की गई जबकि कौम ए आद बादीद्बोर मगरीबी हवा के ज़रिए हलाक कर दी गई”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1035) و مسلم (17 / 900)، (2087)

١٥١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ إِنَّمَا كَانَ

يتبسم فَكَانَ إِذَا رَأَى غَيْمًا أَوْ رِيحًا عُرِفَ فِي وَجهه

1512. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को कभी इस तरह हँसते हुए नहीं देखा के आप के गले का कव्वा नज़र आ जाए, आप तो बस तबस्सुम फ़रमाया करते थे, जब आप बाप या आंधी देखते तो (उस के खौफ के) असरात आप ﷺ के चेहरे पर नुमाया हो जाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4828 ، 4829) و مسلم (16 / 899)، (2086)

١٥١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَصَفَتِ الرِّيحُ قَالَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ» وَإِذَا تَخَيَّلَتِ السَّمَاءُ تَغَيَّرَ لَونه وحرج وَدَخَلَ وَأَقْبَلَ وَأَدْبَرَ فَإِذَا مَطَرَتْ سُرِّيَ عَنْهُ فَعَرَفَتْ ذَلِكَ عَائِشَةُ فَسَأَلَتْهُ فَقَالَ: " لَعَلَّهُ يَا عَائِشَةُ كَمَا قَالَ قَوْمُ عَادٍ: (فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا: هَذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا)»» وَفِي رِوَايَةٍ: وَيَقُولُ إِذَا رَأَى الْمَطَرَ «رَحْمَةً» ص:٤٨

1513. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब तेज़ आंधी चलती तो नबी ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थे: “अल्लाह मैं उसकी खैर का उस में जो खैर है उस का और उस के साथ जो भेजा गया है उसकी खैर का तुझ से सवाल करता हूँ, और मैं उस के शर से उस में जो शर है उस का और जो उस के साथ भेजा गया है उस के शर की तुझ से पनाह चाहता हूँ”, और जब आसमान पर बारिश के आसार ज़ाहिर होती तो आप ﷺ का रंग तब्दील हो जाता आप कभी घर से बाहर आते और कभी अन्दर जाते कभी आगे आते और कभी पीछे हटते और जब बारिश हो जाती तो फिर आप ﷺ से खौफ ज़ाइल होता, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने उनकी यह कैफियत पहचान कर आप से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा शायद के यह ऐसे न हो जैसे कौम ए आद ने कहा था, जब उन्होंने अज़ाब को अबरा की सूरत में अपने मैदानों के सामने आते देखा तो कहने लगे यह बादल है जो हम पर बरसेगा”, और एक रिवायत में है जब आप बादल देखते तो फरमाते: “इसे रहमत बना दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3206) و مسلم (15 / 899)، (2085)

١٥١٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ " مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ ثُمَّ قَرَأَ: (إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ)»» الْآيَة. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1514. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गैब की कुंजियां पांच है”, फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई: “बेशक कियामत का इल्म इसी के पास है और वही बारिश बरसाता है -،،،،‘‘| (बुखारी)

رواه البخاری (4778)

١٥١٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَتِ السَّنَةُ بِأَنْ لَا تُمْطَرُوا

وَلَكِنِ السَّنَةُ أَنْ تُمْطَرُوا وَتُمْطَرُوا وَلَا تُنْبِتُ الْأَرْضُ شَيْئًا» . رَوَاهُ مُسلم

1515. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कहत साली यह नहीं है की बारिश न हो बल्कि कहत साली यह है कि तुम पर बार बार बहोत ज़्यादा बारिश तो हो लेकिन ज़मीन कोई चीज़ न उगाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (44 / 2904)، (7291)

आंधियों का बयान • بَاب فِي الرِّيَاح

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٥١٦ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الرِّيحُ مِنْ روح الله تَأْتِي بِالرَّحْمَةِ وَبِالْعَذَابِ فَلَا تَسُبُّوهَا وَسَلُوا اللَّهَ مِنْ خَيْرِهَا وَعُوذُوا بِهِ مِنْ شَرِّهَا» . رَوَاهُ الشَّافِعِي وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

1516. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हवा अल्लाह की रहमत है कभी यह रहमत के साथ आती है और कभी यह अज़ाब के साथ है, पस इसे बुरा-भला न कहो और उसकी खैर के मुतल्लिक दरख्वास्त करो और उस के शर से (अल्लाह तआला की) पनाह तलब करो| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواہ الشافعی فی الام (1 / 253) و ابوداؤد (5097) و ابن ماجه (3727) و البیھقی فی الدعوات الکبیر (2 / 78 ح 316) و السنن الکبری (3 / 361) [و صححه ابن حبان (1989) و الحاکم (4 / 285)و وافقه الذھبی]

١٥١٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَجُلًا لَعَنَ الرِّيحَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَا تَلْعَنُوا الرِّيحَ فَإِنَّهَا مَأْمُورَةٌ وَأَنَّهُ مَنْ لَعَنَ شَيْئًا لَيْسَ لَهُ بِأَهْلٍ رَجَعَتِ اللَّعْنَةُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1517. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के किसी आदमी ने नबी ﷺ के पास हवा को मलउन कहा तो आप ने फ़रमाया: “हवा को लान-तान न करो क्योंकि वह तो हुक्म की पाबंद है, जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ पर लानत भेजता है जो उसकी अहल नहीं हो फिर लानत इस शख़्स पर लौट आती है| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1978) [و ابوداؤد (4908) و صححه ابن حبان (1988)] * قتادة عنعن

١٥١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:٤٨ " لَا تَسُبُّوا الرِّيحَ فَإِذَا رَأَيْتُمْ مَا

تَكْرَهُونَ فَقُولُوا: اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هَذِهِ الرِّيحِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَخَيْرِ مَا أُمِرَتْ بِهِ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ الرِّيحِ وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُمِرَتْ بِهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

1518. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हवा को बुरा-भला न कहो, पस जब तुम नागवार चीज़ देखो तो यूँ कहो ऐ अल्लाह! बेशक हम इस हवा की खैर उस में मौजूद खैर इस चीज़ की खैर का तुझ से सवाल करते हैं जिस का इसे हुक्म दिया गया है हम उस के शर उस में मौजूद शर और जिस चिज़ का इसे हुक्म दिया गया उस के शर से तेरी पनाह चाहते है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (2252 وقال : حسن صحیح) [و النسائی فی عمل الیوم و اللیلۃ (934 ، 938939) و صححه الحاکم (2 / 272) و وافقه الذھبی] * سلیمان الاعمش و حبیب بن ابی ثابت مدلسان و عنعنا و انظر انوار الصحیفة (ص 218)

١٥١٩ - (ضَعِيف جدا) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَا هَبَّتْ رِيحٌ قَطُّ إِلَّا جَثَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم على رُكْبَتَيْهِ وَقَالَ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا رَحْمَةً وَلَا تَجْعَلْهَا عَذَابًا اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا رِيَاحًا وَلَا تَجْعَلْهَا رِيحًا» . قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ تَعَالَى: (إِنَّا أرسلنَا عَلَيْهِم رِيحًا صَرْصَرًا)»» و (أرسلنَا عَلَيْهِم الرّيح الْعَقِيم)»» (وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاح لَوَاقِح)»» و (أَن يُرْسل الرِّيَاح مُبَشِّرَات)»» رَوَاهُ الشَّافِعِي وَالْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

1519. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब कभी भी हवा चलती तो नबी ﷺ अपने घुटनों के बल बैठ कर यूँ दुआ करते: “अल्लाह इसे रहमत बना इसे अज़ाब न बना ऐ अल्लाह! इसे बादे रहमत बना और इसे बाईसे अज़ाब हवा न बना”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की किताब में है: “हमने इन पर एक सख्त आंधी भेजी”, और: “हमने इन पर एक सख्त आंधी भेजी”, “ हमने अबरा उठाने वाली हवाए भेजे”, और: “वो तुम्हें खुशखबरी सुनाने के लिए हवाए भेजता है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الشافعی فی الام (1 / 253) و من طریقه البیھقی فی الدعوات الکبیر (2 / 80 ح 318) * فیه رجل قال فیه الشافعی :’’ من لا انھم ‘‘ وھو مجھول

١٥٢٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَبْصَرْنَا شَيْئًا مِنَ السَّمَاءِ تَعْنِي السَّحَابَ تَرَكَ عَمَلَهُ وَاسْتَقْبَلَهُ وَقَالَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيهِ» فَإِنْ كَشَفَهُ حَمِدَ الله وَإِن مطرَت قَالَ: «اللَّهُمَّ سَقْيًا نَافِعًا» . ص:٤٨ رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وَالشَّافِعِيّ وَاللَّفْظ لَهُ

1520. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ आसमान पर बादल देखते तो आप अपना काम काज छोड़ कर उसकी तरफ मुतवज्जे हो जाते और दुआ फरमाते: “अल्लाह मैं उस में मौजूद शर में तेरी पनाह चाहता हूँ” अगर वह इसे दूर कर देते तो आप अल्लाह की हम्द व सना बयान करते और अगर बारिश हो तो आप ﷺ दुआ फरमाते: “अल्लाह हमें नफ़ामंद सेराबी अता फरमा”| अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा और शाफ़ई अल्फाज़ इमाम शाफ़ई रहिमहुल्लाह के है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (5099) و النسائی (3 / 164 ح 1524) و ابن ماجه (3889) و الشافعی فی الام (1 / 253 و عندہ ابراھیم بن ابی یحیی الاسلمی : متروک متھم لکنه لم ینفرد به)

١٥٢١ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ إِذَا سَمِعَ صَوْتَ الرَّعْدِ وَالصَّوَاعِقِ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَلِكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1521. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जब नबी ﷺ गरज और कड़क की आवाज़ सुनते तो दुआ फरमाते थे: “अल्लाह हमें अपने गज़ब से ना क़त्ल करना नाअपने अज़ाब से हलाक करना और हमें उस से पहले ही आफियत अता फरमाना”, अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब ह| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 100101 ح 5763) و الترمذی (3450) * فیه ابو مطر : مجھول و حجاج بن ارطاة ضعیف مدلس و سقط ذکره من عمل الیوم و اللیلة النسائی (927)

بَاب فِي الرِّيَاح • आंधियों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٥٢٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ كَانَ إِذَا سَمِعَ الرَّعْدَ تَرَكَ الْحَدِيثَ وَقَالَ: سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ من خيفته. رَوَاهُ مَالك

1522. आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर से रिवायत है के जब वह गरज की आवाज़ सुनते तो बात चित तर्क कर देते और फरमाते रअद गरज और फ़रिश्ते उस के खौफ से उसकी हम्द बयान करते हैं| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (2 / 992 ح 1934) و صححه ابن الملقن فی تحفة المحتاج (737)

بَابُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَثَوَابِ الْمَرَضِ • मरीज़ की इयादत और मर्ज़ के सवाब का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

١٥٢٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَطْعِمُوا الْجَائِعَ وَعُودُوا الْمَرِيض وفكوا العاني» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1523. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : भूखे को खाना खिलाओ, मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करो, और कैदी कि रिहाई करवाओ| (बुखारी .)

رواه البخارى (5649)

١٥٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ: رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ وَإِجَابَةُ الدعْوَة وتشميت الْعَاطِس "

1524. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक है, सलाम का जवाब देना, मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करना, जनाज़े के साथ जाना, दावत कुबूल करना और छींकने वाले का जवाब देना| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1240) و مسلم (4 / 2162)، (5650)

١٥٢٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ سِتٌّ» . قِيلَ: مَا هُنَّ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «إِذَا لَقِيتَهُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَإِذَا دَعَاكَ فَأَجِبْهُ وَإِذَا اسْتَنْصَحَكَ فَانْصَحْ لَهُ وَإِذَا عَطَسَ فَحَمِدَ اللَّهَ فَشَمِّتْهُ وَإِذَا مَرِضَ فَعُدْهُ وَإِذَا مَاتَ فَاتَّبِعْهُ» . رَوَاهُ مُسلم

1525. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमान के मुसलमान पर छै हक है, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! वह क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया : जब तू इस से मुलाक़ात करे तो इसे सलाम कर, जब तुम्हें दावत दे तो इसे कुबूल कर, जब वह तुम से नसीहत चाहे तो इसे नसीहत कर, जब वह छिक मार कर (اَلْحَمْدُلِلّٰهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो इसे (يرحموك لله)(यरहमुकल्लाह) कह कर जवाब दे, जब बीमार हो जाए तो इस की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) कर और वह फौत हो जाए तो इस के जनाज़े के साथ शरीक हो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (5 / 2162)، (5651)

١٥٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ أَمَرَنَا: بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ وَرَدِّ ص:٤٨ السَّلَامِ وَإِجَابَةِ الدَّاعِي وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ وَنَهَانَا عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ وَعَنِ الْحَرِيرِ والْإِسْتَبْرَقِ وَالدِّيبَاجِ وَالْمِيثَرَةِ الْحَمْرَاءِ وَالْقَسِّيِّ وَآنِيَةِ الْفِضَّةِ وَفِي رِوَايَةٍ وَعَنِ الشُّرْبِ فِي الْفِضَّةِ فَإِنَّهُ مَنْ شَرِبَ فِيهَا فِي الدُّنْيَا لم يشرب فِيهَا فِي الْآخِرَة

1526. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने हमें सात चीजों का हुक्म फ़रमाया और सात चीजों से हमें मना फ़रमाया: आप ﷺ ने मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करने, जनाजों के साथ शरीक होने, छींक मारने वाले का जवाब देने, सलाम का जवाब देने, दावत कुबूल करने, क़सम उठाने वाली की क़सम पूरी करने और मज़लूम की मदद करने का हमें हुक्म फ़रमाया और आप ﷺ ने सोने की अंगूठी, रेशम, मोटे रेशम, बारीक़ रेशम, सुर्ख जेन पोश किस्म कपड़े से और चांदी के बर्तन से हमें मना फ़रमाया और एक रिवायत में है चांदी के बर्तन में पीने से (मना फ़रमाया) क्यूंकि जिस ने इस दुनिया में पिया वह आखिरत में नहीं पिएगा| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1239) و مسلم (3 / 2066)، (5388)

١٥٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا عَادَ أَخَاهُ الْمُسلم لم يزل فِي خُرْفَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَرْجِعَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1527. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मुसलमान अपने मुसलमान भाई की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो वह वापीस आने तक जन्नत के मेवे खाने में मसरूफ रहता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 2568)، (6553)

١٥٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِن الله عز وَجل يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: يَا ابْنَ آدَمَ مَرِضْتُ فَلَمْ تَعُدْنِي قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أَعُودُكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ؟ قَالَ: أَمَّا عَلِمْتَ أَنَّ عَبْدِي فُلَانًا مَرِضَ فَلَمْ تَعُدْهُ؟ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّكَ لَوْ عُدْتَهُ لَوَجَدْتَنِي عِنْدَهُ؟ يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَطْعَمْتُكَ فَلَمْ تُطْعِمْنِي قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أُطْعِمُكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ؟ قَالَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّهُ اسْتَطْعَمَكَ عَبْدِي فُلَانٌ فَلَمْ تُطْعِمْهُ؟ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّكَ لَوْ أَطْعَمْتَهُ لَوَجَدْتَ ذَلِكَ عِنْدِي؟ يَا ابْنَ آدَمَ اسْتَسْقَيْتُكَ فَلَمْ تَسْقِنِي قَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ أَسْقِيكَ وَأَنْتَ رَبُّ الْعَالَمِينَ؟ قَالَ: اسْتَسْقَاكَ عَبْدِي فُلَانٌ فَلَمْ تَسْقِهِ أما إِنَّك لَو سقيته لوجدت ذَلِك عِنْدِي ". رَوَاهُ مُسلم

1528. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला रोज़े कियामत फरमाएगा इब्ने आदम मैं बीमार था और तुम ने मेरी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) नहीं की, वह अर्ज़ करेगा रब जी! मैं आपकी कैसे इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता जबकि आप तो रब्बउल आलमीन है, अल्लाह फरमाएगा क्या तुझे इल्म नहीं की मेरा फलां बंदा बीमार था और तूने उसकी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) न की अगर तू उसकी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता तो

मुझे उस के पास पाता, इब्ने आदम मैं ने तुम से खाना तलब किया लेकिन तू ने मुझे खाना न दिया, वह अर्ज़ करेगा रब जी! मैं तुम्हें कैसे देता जबकि तू तो रब है, अल्लाह फरमाएगा तुझे इल्म नहीं मेरे फलां बंदे ने तुझसे खाना तलब किया था तूने उसे खाना नहीं खिलाया, क्या तुझे इल्म नहीं कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो उस को मेरे पास पाता, इब्ने आदम मैंने तुझ से पानी तलब किया था लेकिन तूने मुझे पानी नहीं पिलाया, तो वह अर्ज़ करेगा रब जी! तुझे कैसे पानी पिलाता जबकि तू तमाम जहानों का रब है, अल्लाह फरमाएगा मेरे फलां बंदे ने तुझसे पानी तलब किया था, लेकिन तूने उसे पानी न पिलाया अगर तू उसे पानी पिलाता तो उस को मेरे पास पाता| (मुस्लिम)

رواه مسلم (43 / 2569)، (6556)

١٥٢٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَى أَعْرَابِيٍّ يَعُودُهُ وَكَانَ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ: «لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ» فَقَالَ لَهُ: «لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ» . قَالَ: كَلَّا بَلْ حُمَّى تَفُورُ عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ تزيره الْقُبُور. فَقَالَ: «فَنعم إِذن» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1529. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ एक आराबी की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ ले गए, जब आप किसी मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ ले जाते तो यूँ फरमाते: कोई बात नहीं अगर अल्लाह ने चाहा तो (यह बीमारी गुनाहों से) पाकीजगी का सबब होगी| आप ﷺ ने इसे भी यही फ़रमाया: कोई बात नहीं अगर अल्लाह ने चाहा तो (यह बीमारी गुनाहों से) पाकीजगी का सबब होगी| इस आराबी ने कहा हरगिज़ नहीं बलकि बुखार एक बूढ़े शख़्स पर जोश मार रहा है यह तो क़ब्र तक पहुंचा कर रहेगा| नबी ﷺ ने (इस की यह बात सुन कर) फ़रमाया : हाँ यह ऐसे ही है| (बुखारी .)

رواه البخاری (5662)

١٥٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اشْتَكَى مِنَّا إِنْسَانٌ مَسَحَهُ بِيَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ: «أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا»

1530. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब हम में से कोई बीमार हो जाता तो रसूलुल्लाह ﷺ उस पर अपना दाया हाथ फेरते, फिर यह दुआ पढ़ते “लोगो के परवरदिगार बीमारी दूर करदे, शिफा अता फरमा तेरे सिवा कोई शिफा वाला नहीं, तू शिफा देने वाला है और एसी शिफा अता फरमा जो किसी बीमारी को बाकि न छोड़े| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5675) و مسلم (46 / 2191)، (5707)

١٥٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ إِذَا اشْتَكَى الْإِنْسَانُ الشَّيْءَ مِنْهُ أَوْ كَانَتْ بِهِ قَرْحَةٌ أَوْ جُرْحٌ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأُصْبُعِهِ: «بِسْمِ اللَّهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذن رَبنَا»

1531. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब इंसान के किसी अज़ा को कोई तकलीफ होती या इसे कोई फोड़ा होता या कोई ज़ख़्म होता तो नबी ﷺ अपनी ऊँगली से इशारा करते हुए फरमाते : अल्लाह के नाम (की बरकत) से हमारी ज़मीन की मिटटी, हमारे बाग की थूक के साथ अल्लाह के हुक्म से हमारे बीमार को शिफा बख्श जाए| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (57455746) و مسلم (54 / 2194)، (5719)

١٥٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اشْتَكَى نَفَثَ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ عَنْهُ بِيَدِهِ فَلَمَّا اشْتَكَى وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ كُنْتُ أَنْفِثُ عَلَيْهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ الَّتِي كَانَ يَنْفِثُ وَأَمْسَحُ بِيَدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَتْ: كَانَ إِذَا مَرِضَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ نَفَثَ عَلَيْهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ

1532. आइशा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, , जब नबी ﷺ बीमार होते तो आप मुअव्विजात पढ़ कर अपने आप पर दम करते और सारे जिस्म पर अपना हाथ फेरते, जब आप मर्ज़उल मौत में मुब्तिला हुए तो मैं आप को मुअव्विजात पढ़ कर दम किया करती थी, जो की आप अपने आप को दम किया करते थे, लेकिन मैं नबी ﷺ का हाथ आप के जिस्म पर फेरती थी | और मुस्लिम की रिवायत में फरमाती हैं, जब आप के अह्लेखाने में से कोई शख़्स मरीज़ होता तो मुअव्वीज़ात पढ़ कर इस पर दम करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (4439) و مسلم (51 / 2192)، (5715)

١٥٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ أَنَّهُ شَكَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعًا يَجِدُهُ فِي جَسَدِهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ضَعْ يَدَكَ عَلَى الَّذِي يَأْلَمُ مِنْ جَسَدِكَ وَقُلْ: بِسْمِ اللَّهِ ثَلَاثًا وَقُلْ سَبْعَ مَرَّاتٍ: أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ ". قَالَ: فَفَعَلْتُ فَأَذْهَبَ اللَّهُ مَا كَانَ بِي. رَوَاهُ مُسلم

1533. उस्मान बिन अबिल आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अपने जिस्म की तकलीफ के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से शिकायत की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अपने जिस्म के तकलीफ वाले हिस्से पर अपना हाथ रखो और तीन मर्तबा बिस्मिल्लाह (بِسْمِ اللَّهِ) पढ़ कर सात मर्तबा यह दुआ पढ़ो : (أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ) में हर इस शर से जो में पाता हूँ और जिस से में ग़मज़दा हो अल्लाह के गलबे और उसकी क़ुदरत की पनाह चाहता हूँ” रावी बयान करते हैं, मैंने ऐसे किया तो अल्लाह ने मेरी वह तकलीफ दूर कर दी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (67 / 2202)، (5737)

١٥٣٤ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ أَن جِبْرِيلَ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَشْتَكَيْتَ؟ فَقَالَ: «نَعَمْ» . قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ مِنْ شرك كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ اللَّهُ يَشْفِيكَ بِسم الله أرقيك. رَوَاهُ مُسلم

1534. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने फ़रमाया: मुहम्मद! आप बीमार हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया : हा! तो उन्होंने यूँ दम किया: मैं आप को तकलीफ देने वाली हर चीज़ से हर नफ्स के शर से या हसद करने वाले की नज़र से अल्लाह के नाम के साथ आप को दम करता हूँ अल्लाह आप को शिफा अता फरमाए मैं अल्लाह के नाम के साथ आप को दम करता हूँ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (40 / 2186)، (5700)

١٥٣٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يعوذ الْحسن وَالْحسن: «أَعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ» وَيَقُولُ: «إِنَّ أَبَاكُمَا كَانَ يعوذ بهما إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَفِي أَكْثَرِ نُسَخِ المصابيح: «بهما» على لفظ التَّثْنِيَة

1535. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हसन और हुसैन अलैहिस्सलाम को इन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में देते थे, ”मै अल्लाह के मुकम्मल कलीमात के ज़रिए हर शैतान, ज़हरीले जानवर और हर ज़र्रिसल नज़र के शर से तुम्हे बचाता हूँ| और आप फ़रमाया करते थे: तुम्हारे बाप (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) इन कलिमात के ज़रिए इस्माइल और इसहाक अलैहिस्सलाम के लिए पनाह तलब किया करते थे| बुखारी मसाबिह के हर नुस्खे में تشنیي (तस्निया'- दो) के सीगे के साथ है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (3371)، (5700)

١٥٣٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُصِبْ مِنْهُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1536. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा करता है तो उसे किसी मुसीबत में मुब्तिलाह कर देता है | (बुखारी .)

رواه البخارى (6545)

١٥٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة وَأبي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا يُصِيبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلَا وَصَبٍ وَلَا هَمٍّ وَلَا حُزْنٍ وَلَا أَذًى وَلَا غَمٍّ حَتَّى الشَّوْكَةُ يُشَاكُهَا إِلَّا كَفَّرَ اللَّهُ بهَا من خطاياه»

1537. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, आप ﷺ ने फ़रमाया: मुसलमान को जो परेशानी गम, रंज, तकलीफ और दुख पहुँचता है हत्ता कि अगर इसे कोई काँटा भी चुभता है तो अल्लाह इस (तकलीफ) की वजह से इस के गुनाह माफ़ फरमा देते हैं | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (56415642) و مسلم (52 / 2573)، (6568)

١٥٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُوعَكُ فَمَسِسْتُهُ بِيَدِي فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَجَلْ إِنِّي أُوعَكُ كَمَا يُوعَكُ رَجُلَانِ مِنْكُمْ» . قَالَ: فَقُلْتُ: ذَلِكَ لِأَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ؟ فَقَالَ: «أَجَلْ» . ثُمَّ قَالَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ ص:٤٨ أَذًى مِنْ مَرَضٍ فَمَا سِوَاهُ إِلَّا حَطَّ اللَّهُ تَعَالَى بِهِ سَيِّئَاتِهِ كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا»

1538. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप बीमारी में मुब्तिलाह थे, मैंने आप को अपना हाथ लगाया तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ﷺ आप तो बहुत सख्त बीमारी में मुब्तिला है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: हाँ मुझे तुम्हारे दो आदमियों जैसा बुखार होता है| रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: क्या इसलिए की आप के लिए दोगुना अज़र है? आप ﷺ ने फ़रमाया हाँ| फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: जब मुसलमान को किसी मर्ज़ या किसी और वजह से कोई तकलीफ पहुँचती है तो अल्लाह इस वजह से इस के गुनाह इस तरह गिरा देता है जिस तरह (मौसम खिजा में) दरख़्त अपने पत्ते गिरा देता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5648) و مسلم (45 / 2571)، (6559)

١٥٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا الْوَجَعُ عَلَيْهِ أَشَدُّ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

1539. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से ज्यादा किसी को तकलीफ में मुब्तिला नहीं देखा | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5646) و مسلم (44 / 2570)، (6557)

١٥٤٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَاتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ حَاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي فَلَا أَكْرَهُ شِدَّةَ الْمَوْتِ لِأَحَدٍ أَبَدًا بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1540. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने वफात पाई तो आप का सर मुबारक मेरे थोड़ी और

मेरे सिने के दरमियान था और नबी ﷺ (की मौत की सख्ती) के बाद में किसी पर मौत की सख्ती को कुछ बुरा नहीं समझती| (बुखारी .)

رواه البخارى (4446)

١٥٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ تُفَيِّئُهَا الرِّيَاح تصرعها مرّة وتعدلها أُخْرَى حَتَّى يَأْتِيهِ أَجَلُهُ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ كَمَثَلِ الْأَرْزَةِ الْمُجْذِيَةِ الَّتِي لَا يُصِيبُهَا شَيْءٌ حَتَّى يَكُونَ انْجِعَافُهَا مَرَّةً وَاحِدَة»

1541. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मोमिन की मिसाल खेती की नरम और नाज़ुक शाख की तरह है जैसे हवाएं झुकाती है, कभी इसे नीचे गिराती है और कभी सीधा कर देती है, हत्ता कि अजल (मौत) आजाती है, जबकि मुनाफ़िक़ की मिसाल सुन्बर के दरख़्त की तरह है जिस पर कोई चीज़ असर अंदाज़ नहीं होती हत्ता कि वह एक ही मर्तबा टूट जाता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5643) و مسلم (59 / 2810)، (7094)

١٥٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الزَّرْعِ لَا تزَال لاريح تميله وَلَا يزَال الْمُؤمن يصبيه الْبَلَاءُ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ كَمَثَلِ شَجَرَةِ الْأَرْزَةِ لَا تهتز حَتَّى تستحصد»

1542. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मोमिन की मिसाल खेती कि सी है जिसे हुआ झुका देती है और मोमिन को मसाहिब आते रहते है जबकि मुनाफ़िक़ की मिसाल सुन्बर के दरख़्त की तरह है वह हरकत नहीं करता हत्ता कि इसे काट दिया जाता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5644) و مسلم (58 / 2809)، (7092)

١٥٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: دَخَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أُمِّ السَّائِبِ فَقَالَ: «مَالك تُزَفْزِفِينَ؟» . قَالَتِ: الْحُمَّى لَا بَارَكَ اللَّهُ فِيهَا فَقَالَ: «لَا تَسُبِّي الْحُمَّى فَإِنَّهَا تُذْهِبُ خَطَايَا بَنِي آدَمَ كَمَا يُذْهِبُ الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيدِ» . رَوَاهُ مُسلم

1543. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ उम्मे साइब रदियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया: आप क्यूँ कांप रही है? उन्होंने बताया: बुखार है अल्लाह इसे बरक़त न दे| आप ﷺ ने फ़रमाया : बुखार को बुरा भला न कहो क्यूंकि वह बनी आदम के गुनाहों को इस तरह ख़त्म कर देता है जिस तरह भट्टी लोहे की मैल कुचैल दूर कर देती है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (53 / 2575)، (6570)

١٥٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ ص:٤٨ أَوْ سَافَرَ كُتِبَ لَهُ بِمِثْلِ مَا كَانَ يعْمل مُقيما صَحِيحا» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1544. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब बंदा बीमार हो जाता है या वह सफ़र पर हो तो इस के लिए इतना ही अमल (सवाब) लिख दिया जाता है जितना वह हालते कयाम और हालत ए सेहत में किया करता था| (बुखारी .)

رواه البخارى (2996)

١٥٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لكل مُسلم»

1545. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ताऊँन मुसलमान की शहादत है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5732) و مسلم (166 / 1916)، (4944)

١٥٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشُّهَدَاءُ خَمْسَةٌ الْمَطْعُونُ وَالْمَبْطُونُ وَالْغَرِيقُ وَصَاحب الْهدم والشهيد فِي سَبِيل الله»

1546. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: शहीद पांच किसम के है, ताउन के मर्ज़ से, पेट के मर्ज़ से, डूब जाने से फौत होने वाला, किसी दिवार गिरने से नीचे दब के मर जाने वाला और अल्लाह की राह में शहीद हो जाने वाला | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (2829) و مسلم (164 / 1914)، (4940)

١٥٤٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الطَّاعُونِ فَأَخْبَرَنِي: «أَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَأَنَّ اللَّهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا يُصِيبُهُ إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ إِلَّا كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيدٍ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1547. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से ताउन के बारे में दरयाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो तो एक तरह का अजाब है अल्लाह जिस पर चाहता है इसे मुसल्लत कर देता है और अल्लाह ने इसे मोमिन के लिए रहमत बनाया है जो शख़्स ताउन की वबा आजाने पर सब्र और सवाब की उम्मीद करते हैं और यह जानते हुए की अल्लाह ने जो इस के मुत्तालिक लिख दिया है वह इसे पहुँच कर रहेगा अपने शहर में ठहर जाता है तो वह इस के लिए शहीद की मिस्ल अज्र व सवाब है| (बुखारी .)

رواه البخارى (5734)

١٥٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الطَّاعُونُ رِجْزٌ أُرْسِلَ عَلَى طَائِفَةٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَوْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَإِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلَا تَقْدَمُوا عَلَيْهِ وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلَا تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ»

1548. अस्मा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ताउन एक तरह का अज़ाब है जो बनी इसराइल की एक गिरोह पर या तुम से पहले लोगों पर भेजा गया था, जब तुम किसी मुल्क में इस के फैल जाने के मुत्तालिक सुनो तो तुम इस मुल्क की तरफ पेशकदमी न करो और जब किसी सरज़मीन पर फैल जाए और तुम वहां मौजूद हो तो फिर वहां से राहे फरार इख़्तियार न करो| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6974) و مسلم (92 / 2218)، (5772)

١٥٤٩ - (صَحِيح) وَعَن أَنَسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " قَالَ اللَّهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى: إِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدِي بِحَبِيبَتَيْهِ ثُمَّ صَبَرَ عَوَّضْتُهُ مِنْهُمَا الْجنَّة " يُرِيد عَيْنَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1549. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: अल्लाह सुब्हान व त-आला ने फ़रमाया: जब मैं अपने बड़े को इस की दो महबूब चीजों यानी दोंनो आँखों से महरूम कर के आजमाता हूँ और वह इस पर सब्र करता है तो मैं इन के अवज़ इसे जन्नत अता करता हूँ| (बुखारी .)

رواه البخاری (5653)

بَابُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَثَوَابِ الْمَرَضِ • मरीज़ की इयादत और मर्ज़ के सवाब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٥٥٠ - (ضَعِيف) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَعُودُ مُسْلِمًا غُدْوَةً إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُصْبِحَ وَكَانَ لَهُ خَرِيفٌ فِي الْجَنَّةِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

1550. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह के वक़्त इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो शाम होने तक सत्तर हजार फ़रिश्ते इस पर रहमत भेजते रहते है, और अगर वह शाम के वक़्त इस की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो सुबह होने तक सत्तर हजार फ़रिश्ते इस के लिए दुआ करते रहते है और इस के लिए जन्नत में एक बाग़ तैयार कर दिया जाता है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (969 وقال : غریب حسن) و ابوداؤد (3098) * الحکم بن عتیبة مدلس و عنعن

١٥٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ: عَادَنِي النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم من وجع كَانَ يُصِيبنِي. رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

1551. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी आँखों में तकलीफ थी तो नबी ﷺ ने मेरी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) फरमाई| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 375 ح 19563) و ابوداؤد (3102) [و صححه الحاكم على شرط الشيخين (1 / 342) و وافقه الذهبى]

١٥٥٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ وَعَادَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ مُحْتَسِبًا بُوعِدَ مِنْ جَهَنَّمَ مسيرَة سِتِّينَ خَرِيفًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1552. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करके सवाब की नियत से अपने मुसलमान भाई की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो इसे सांठ साल के सफ़र के बराबर जहन्नम से दूर कर दिया जाता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3097) * الفضل بن دلهم : ضعفه الجمهور

١٥٥٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَعُودُ مُسْلِمًا فَيَقُولُ سَبْعَ مَرَّاتٍ: أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ ص:٤٩ يَشْفِيَكَ إِلَّا شُفِيَ إِلَّا أَنْ يَكُونَ قَدْ حَضَرَ أَجَلُهُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1553. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो मुसलमान किसी मुसलमान की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के वक़्त सात मरतबा यह दुआ पढ़े मैं अल्लाह अज़ीम रब अर्शे अज़ीम से दरख्वास्त करता हूँ की वह तुम्हें शिफा अता फरमाए तो अल्लाह तआला इसे शिफा अता फरमा देता है बशर्ते की इस की मौत का वक़्त न आचुका हो| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3106) و الترمذى (3083 وقال : حسن غريب) [و صححه ابن حبان (714) و الحاكم (1 / 342 ، 343 ، 4 / 213) و وافقه الذهبى]

١٥٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يعلمهُمْ من الْحمى وم الأوجاع كلهَا أَن يَقُولُوا: «بِسم الله الْكَبِير أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عرق نعار وَمن شَرّ حر النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا يُعْرَفُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ إِسْمَاعِيلَ وَهُوَ يضعف فِي الحَدِيث

1554. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ बुखार और हर किस्म की तकलीफ के मुतल्लिक उन्हें यह दुआ सिखाया करते थे: अल्लाह कबीर के नाम के साथ मैं हर जोश मारने वाली रग के सहर

और आग की हरारत के शर से अल्लाह अज़ीम की पनाह चाहता हूँ| तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है यह सिर्फ इब्राहीम बिन इस्माइल की सनद से मारुफ़ है, जबकि इस हदिस में जईफ करार दिया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3075) * داود بن حصین عن عکرمة : منکر ، و ابراھیم بن اسماعیل بن ابی حبیبة : ضعیف

١٥٥٥ - (مُنكر) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنِ اشْتَكَى مِنْكُمْ شَيْئًا أَوِ اشْتَكَاهُ أَخٌ لَهُ فَلْيَقُلْ: رَبُّنَا اللَّهُ الَّذِي فِي السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ أَمرك فِي السَّمَاء وَالْأَرْض كَمَا أَن رَحْمَتُكَ فِي السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِي الْأَرْضِ اغْفِرْ لَنَا حُوبَنَا وَخَطَايَانَا أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِينَ أَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَحْمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَائِكَ عَلَى هَذَا الْوَجَعِ. فَيَبْرَأُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1555. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैनें रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: तुम में से किसी शख़्स को कोई तकलीफ पहुंचे या इससे किसी भाई को कोई तकलीफ पहुंचे तो वह यह दुआ करे तो वह ठीक हो जाएगा: हमारा रब अल्लाह है जो की आसमानों में है तेरा नाम पाक है ज़मीन व आसमान पर तेरा आमिर एसा ही है जैसी तेरी रहमत आसमान में है पस ज़मीन पर भी अपनी रहमत फरमा हमारे कबीरा गुनाह और खताएं माफ़ फरमा तू (गुनाहों से) पाक लोगों का रब है अपनी रहमत से रहमत नाजिल फरमा और इस तकलीफ पर अपनी शिफा से शिफा नाजिल फरमा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3892) * زیاد بن محمد : منکر الحدیث و اخطا الحاکم فذکره فی المستدرک (1 / 344 ، 4 / 218 ، 219) و رد علیه الذھبی

١٥٥٦ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا جَاءَ الرجل يعود مَرِيضا فَلْيقل اللَّهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ يَنْكَأُ لَكَ عَدُوًّا أَوْ يَمْشِي لَكَ إِلَى جِنَازَةٍ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1556. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब आदमी किसी मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए आए तो यूँ दुआ करे: ” ऐ अल्लाह अपने बंदे को शिफा अता फरमा, वह तेरी रिज़ा की खातिर दुश्मन से जिहाद करेगा या तेरी रिज़ा की खातिर जनाज़े के लिए जाएगा| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3107) [و صححه ابن حبان (715) و الحاکم (1 / 344 ، 549) و وافقه الذھبی]

١٥٥٧ - (ضَعِيف) عَن عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أُمَيَّةَ أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَة عَن قَول الله تبَارك وَتَعَالَى: (إِن تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ الله)»» وَعَنْ قَوْلِهِ: (مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ)»» فَقَالَتْ: مَا سَأَلَنِي عَنْهَا أَحَدٌ مُنْذُ سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «هَذِه معاتبة الله العَبْد فِيمَا يُصِيبُهُ مِنَ الْحُمَّى وَالنَّكْبَةِ حَتَّى الْبِضَاعَةِ يَضَعُهَا فِي يَدِ قَمِيصِهِ فَيَفْقِدُهَا فَيَفْزَعُ لَهَا حَتَّى إِنَّ الْعَبْدَ لَيَخْرُجُ مِنْ ذُنُوبِهِ كَمَا يَخْرُجُ التبر الْأَحْمَر من الْكِير» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1557. अली बिन ज़ैद रहिमहुल्लाह उम्म्या से रिवायत करते हैं की उन्होंने अल्लाह (अज) के इस फरमान: “ख्वाह तुम दिल की बातो को ज़ाहिर करो या पोशीदा रखो, अल्लाह तुम से ज़रूर इस का मुहासबा करेगा| निज और जो कोई बुरा काम करेगा तो इस का इसे बदला दिया जाएगा, ” के मुत्ताल्लिक आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरयाफ्त किया तो उन्होंने फ़रमाया जब से मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से से दरयाफ्त किया, इस के मुत्ताल्लिक मुझ से किसी ने दरयाफ्त नहीं किया, आप ﷺ ने फ़रमाया बंदे को बुखार आता है तो यह अल्लाह की तरफ से मुवाखिज़ा है हत्ता कि अगर वह अपनी कमीज़ के जैब से कुछ रक़म रख कर इसे गुम कर बैठता है और इस पर वह परेशान होता है (तो यह भी इस के गुनाहों का कफ्फारा बन जाता है) हत्ता कि बंदा अपने गुनाहों से इस तरह साफ हो जाता है जिस तरह सुर्ख सोना भट्टी से साफ़ हो कर निकलता है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2991 وقال : حسن غريب) * على بن زيد ضعيف و امية : مجهولة

١٥٥٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا يُصِيبُ عَبْدًا نَكْبَةٌ فَمَا فَوْقَهَا أَوْ دُونَهَا إِلَّا بِذَنْبٍ وَمَا يَعْفُو اللَّهُ عَنْهُ أَكْثَرُ وَقَرَأَ: (وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كثير)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1558. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: बंदे को छोटी बड़ी मुसीबत पहुंचे तो वह इस के गुनाहों की वजह से पहुँचती और जिन से अल्लाहतआला फर्गुज़र फरमाता है वह तुम्हारे अपने ही आमाल का नतीजा है वह तो कही ज़्यादा हैं| और आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: और तुम्हें जो मुसीबत पहुचती है वह तुम्हारे अपने ही आमलो का नतीजा होती है और वह अक्सर बरैया माफ़ कर देता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3252 وقال : غريب) * عبيدالله بن الوازع و شيخه : مجهولان

١٥٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " إِن الْعَبْدَ إِذَا كَانَ عَلَى طَرِيقَةٍ حَسَنَةٍ مِنَ الْعِبَادَةِ ثُمَّ مَرِضَ قِيلَ لِلْمَلَكِ الْمُوَكَّلِ بِهِ: اكْتُبْ لَهُ مِثْلَ عَمَلِهِ إِذَا كَانَ طَلِيقًا حَتَّى أطلقهُ أَو أكفته إِلَيّ "

1559. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब बंदा अच्छे अंदाज़ मैं इबादत करता है और फिर वह बीमार हो जाता है तो इस पर मुक़र्रर कीये हुए फरिश्तो से कहा जाता है इस के अमाल वैसे ही लिखते जाओ जैसे यह हालत ए सेहत में अमल किया करता था, हत्ता कि में इसे सेहतयाब कर दूँ या इस अपने पास बुला लूँ | (सहीह,हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 240241 ح 1429) [و احمد (2 / 203 ح 6895) و سنده حسن و له طريق آخر عنده (2 / 194 ، 198) و صححه الحاكم (1 / 348) و وافقه الذهبى (!) و للحديث شواهد عند البخارى (2996) وغيره]

١٥٦٠ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا ابْتُلِيَ ص:٤٩ الْمُسْلِمُ بِبَلَاءٍ فِي جَسَدِهِ

قِيلَ لِلْمَلَكِ: اكْتُبْ لَهُ صَالِحَ عَمَلِهِ الَّذِي كَانَ يَعْمَلُ فَإِنْ شَفَاهُ غَسَّلَهُ وَطَهَّرَهُ وَإِنْ قَبَضَهُ غَفَرَ لَهُ وَرَحِمَهُ ". رَوَاهُمَا فِي شرح السّنة

1560. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मुसलमान किसी जिस्मानी आज़माइश से दो चार हो जाता है तो फ़रिश्तो से कह दिया जाता इस के वह सारे अमल लिखते चले जाओ जो वह पहले सेहत में किया करता था, अगर वह इसे शिफा बख्श दे तो वह इसे गुनाहों से पाक कर देता है और अगर इस की रूह कब्ज़ करली तो वह इसे मुआफ फरमा देता है और इस पर रहमत फरमाता है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (5 / 241 ح 1430) [و احمد (3 / 148)]

١٥٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَتِيكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الشَّهَادَةُ سَبْعٌ سِوَى الْقَتْلِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ: الْمَطْعُونُ شَهِيدٌ وَالْغَرِيقُ شَهِيدٌ وَصَاحِبُ ذَاتِ الْجَنْبِ شَهِيدٌ وَالْمَبْطُونُ شَهِيدٌ وَصَاحِبُ الْحَرِيقِ شَهِيدٌ وَالَّذِي يَمُوتُ تَحْتَ الْهَدْمِ شَهِيدٌ وَالْمَرْأَةُ تَمُوتُ بِجُمْعٍ شَهِيدٌ ". رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1561. जाबिर बिन अतीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह की राह में शहीद होने के अलावा शहादत की सात किसमे है, ताउन के मर्ज़ से, डूब जाने से, निमोनिया के मर्ज़ से, पेट के मर्ज़ से, जल कर वफात पाने वाले और किसी बोजे तले दब कर मरने वाले शहीद है और बच्चे की पैदाइश पर फौत हो जाने वाली औरत भी शहीद है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (1 / 233234 ح 555) و ابوداؤد (3111) و النسائی (4 / 13 ، 14 ح 1847) [و ابن ماجه : 2803] * و صححه ابن حبان (1616) و الحاکم (1 / 352353) و وافقه الذهبی

١٥٦٢ - (حسن) وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ النَّاسِ أَشَدُّ بَلَاءً؟ قَالَ: «الْأَنْبِيَاء ثمَّ الْمثل فَالْأَمْثَلُ يُبْتَلَى الرَّجُلُ عَلَى حَسَبِ دِينِهِ فَإِنْ كَانَ صلبا فِي دينه اشْتَدَّ بَلَاؤُهُ وَإِنْ كَانَ فِي دِينِهِ رِقَّةٌ هُوِّنَ عَلَيْهِ فَمَا زَالَ كَذَلِكَ حَتَّى يَمْشِيَ على الأَرْض مَال ذَنْبٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حسن صَحِيح

1562. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ से दरयाफ्त किया गया किन लोगों पर सबसे ज्यादा मसाहिब आता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: अंबिया (अ स) फिर जो उन के बाद अफजल है, फिर जो उन के बाद अफज़ल है, आदमी को इस के दीन के हिसाब ही से आजमाया जाता है, अगर तो वह अपने दीन में पुख्ता हो तो इस की आज़माइश भी शख्त होती है, और अगर वह दीन में नरम और कमज़ोर हो तो इस की आज़माइश भी सहल होती है, यह मुआमला इस तरह चलता रहता है हत्ता कि वह ज़मीन पर चलता है, की इस की जिम्मे कोई गुनाह नहीं होता| तिरमिज़ी, इब्ने माज़ा, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है | (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2398) و ابن ماجه (4023) و الدارمی (2 / 320 ح 2786) [و صححه ابن حبان : 700]

١٥٦٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا أَغْبِطُ أَحَدًا بِهَوْنِ مَوْتٍ بَعْدَ الَّذِي رَأَيْتُ مِنْ شِدَّةِ مَوْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

1563. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की मौत की सख्ती देखने के बाद किसी के आसान मरने पर में रश्क नहीं किया करती | (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (979) و النسائی (4 / 6 ، 7 ح 1831) [و للحدیث شواھد]

١٥٦٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِالْمَوْتِ وَعِنْدَهُ قَدَحٌ ص:٤٩ فِيهِ مَاءٌ وَهُوَ يُدْخِلُ يَدَهُ فِي الْقَدَحِ ثُمَّ يَمْسَحُ وَجْهَهُ ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى مُنْكَرَاتِ الْمَوْتِ أَوْ سَكَرَاتِ الْمَوْتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1564. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ को निज़ा के आलम में देखा आप के पास पानी का एक प्याला था, आप ﷺ अपना हाथ प्याले में डालते, फिर अपने चेहरे पर हाथ फेरते और फरमाते : ऐ अल्लाह मौत की नागुवारियों और मौत की बेहोशियों पर मेरी मदद फरमा | (सहीह,हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (978 وقال : حسن غریب) و ابن ماجہ (1623) [و صححہ الحاکم (2 / 465 ، 3 / 5657) و وافقہ الذھبی]

١٥٦٥ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَرَادَ اللَّهُ تَعَالَى بِعَبْدِهِ الْخَيْرَ عَجَّلَ لَهُ الْعُقُوبَةَ فِي الدُّنْيَا وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِعَبْدِهِ الشَّرَّ أَمْسَكَ عَنْهُ بِذَنْبِهِ حَتَّى يُوَافِيَهُ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1565. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब अल्लाह तआला अपने बन्दों से खैर व भलाई का इरादा फरमाता है तो उसे इस के गुनाहों की सजा दुनिया ही में दे देता है और जब अपने बंदे से शर का इरादा फरमाता है तो इस के गुन्हो के मुआमले को मोअख़्ख़र फरमा देता है हत्ता कि वह इस के बदले में रोज़े कियामत उसे पूरा पूरा बदला देगा | (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2396 وقال : حسن غریب) [و انظر الحدیث الآتی : 1566]

١٥٦٦ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ عِظَمَ الْجَزَاءِ مَعَ عِظَمِ الْبَلَاءِ وَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ إِذَا أَحَبَّ قَوْمًا ابْتَلَاهُمْ فَمَنْ رَضِيَ فَلَهُ الرِّضَا وَمَنْ سَخِطَ فَلَهُ السَّخَطُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

1566. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : बेशक बड़ी जज़ा बड़ी आजमाईश के साथ है, क्यूंकि अल्लाह अज्जवजल जब किसी कौम से मुहब्बत करता है तो वह इन्हें आज़माता है जो शख़्स इस पर राज़ी हो तो इस रजामंदी हासिल हो जाती है और जो शख़्स नाराजी का इज़हार करे तो वह इस की

नाराजी का मुस्तहिक ठहर जाता है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2396 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4031)

١٥٦٧ - (حَسَنٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ الْبَلَاءُ بِالْمُؤْمِنِ أَوِ الْمُؤْمِنَةِ فِي نَفْسِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ حَتَّى يَلْقَى اللَّهَ تَعَالَى وَمَا عَلَيْهِ مِنْ خَطِيئَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَرَوَى مَالِكٌ نَحْوَهُ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

1567. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मोमिन पर इस की जान और माल और इस की औलाद के बारे में आज़माइश आती रहती है हत्ता कि वह अल्लाह तआला से मुलाक़ात करता है तो इस के जिम्मे कोई गलती नहीं होती| तिरमिज़ी इमाम मालिक ने भी इसी तरह रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2399) و مالک (1 / 236 ح 559) [و صححه ابن حبان (697) و الحاكم على شرط مسلم (4 / 314315 ، 1 / 346) و وافقه الذهبی

١٥٦٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ خَالِدٍ السُّلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا سَبَقَتْ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَنْزِلَةٌ لَمْ يَبْلُغْهَا بِعَمَلِهِ ابتلاه الله فِي جسده أَفِي مَالِهِ أَوْ فِي وَلَدِهِ ثُمَّ صَبَّرَهُ عَلَى ذَلِكَ يُبَلِّغُهُ الْمَنْزِلَةَ الَّتِي سَبَقَتْ لَهُ مِنَ الله» . رَوَاهُ ص:٤٩ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

1568. मुहम्मद खालिद सलमी अपने वालिद से और वह इस के दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : बेशक बंदे के लिए अल्लाह के यहाँ कोई मुकाम व मरतबा मुक़र्रर होता है जहाँ वह अपने अमल के ज़रिए नहीं पहुँच सकता तो अल्लाह इस के जिस्म या इस के माल या इस की औलाद के बारे में आजमाता है, फिर इस को इस पर सब्र करने की तौफिक अता फरमाता है हत्ता कि वह इसे इस मकाम व मरतबा तक पहुंचा देता है जो अल्लाह की तरफ से इस के लिए मुक़र्रर होता है | (ज़ईफ़,हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 272 ح 22694) و ابوداؤد (3090) [سنده ضعيف و للحديث شواهد عند ابن حبان (الموارد : 2908) وغيره]

١٥٦٩ - (حسن) وَعَن عبد الله بن شخير قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مُثِّلَ ابْنُ آدَمَ وَإِلَى جَنْبِهِ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ مَنِيَّةً إِنْ أَخْطَأَتْهُ الْمَنَايَا وَقَعَ فِي الْهَرَمِ حَتَّى يَمُوتَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1569. अब्दुल्लाह बिन शिख्खिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : इब्ने आदम को इस के हाल में तखलीक किया जाता है की इस के पहलु में निन्यानवे महलक बलाएँ होती है अगर वह इन से बच

भी जाता है तो वह बुढ़ापे में मुब्तिला हो जाता है हत्ता कि वह फौत हो जाता है | तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2150) * قتادة مدلس و عنعن

١٥٧٠ - (حسن) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَوَدُّ أَهْلُ الْعَافِيَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِينَ يُعْطَى أَهْلُ الْبَلَاءِ الثَّوَابَ لَوْ أَنَّ جُلُودَهُمْ كَانَتْ قُرِضَتْ فِي الدُّنْيَا بِالْمَقَارِيضِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1570. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब आज़माइश से दो चार लोगों को रोज़े कियामत सज़ा दी जाएगी तो अहले आफत ख्वाइश करेंगे की काश दुनिया में इन की जिल्दो को केंचियों से काट दिया जाता | तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2402) * سليمان الاعمش و ابو الزبير عنعنا و للحديث شواهد ضعيفة عند الطبرانى (الكبير 12 / 182 ح 12729) و غيره

١٥٧١ - (ضَعِيف) وَعَن عَامر الرام قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْأَسْقَامَ فَقَالَ: «إِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا أَصَابَهُ السقم ثمَّ أَعْفَاهُ الله مِنْهُ كَانَ كَفَّارَةً لِمَا مَضَى مِنْ ذُنُوبِهِ وَمَوْعِظَةً لَهُ فِيمَا يَسْتَقْبِلُ. وَإِنَّ الْمُنَافِقَ إِذَا مرض ثمَّ أعفي كَانَ كالبعير عَقَلَهُ أَهْلُهُ ثُمَّ أَرْسَلُوهُ فَلَمْ يَدْرِ لِمَ عقلوه وَلم يدر لم أَرْسَلُوهُ» . فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الْأَسْقَامُ؟ وَاللَّهِ مَا مَرِضْتُ قَطُّ فَقَالَ: «قُمْ عَنَّا فلست منا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1571. आमिर अर-राम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अमराज़ और इन के सवाब का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: जब मोमिन को कोई बीमारी लाहक़ होती है और फिर अल्लाह अज्ज़वजल इस से आफियत व सेहत अता फरमा देता है तो वह (मर्ज़) इस के सभी गुनाहों का कफ्फारा और मुस्तकबिल के बारे में वाज़ व नसीहत बन जाती है और जब मुनाफ़िक़ बीमार होता है, फिर इसे आफियत अता कर दी जाती है तो वह उस ऊंट की तरह होता है जिसे इस के गर्वालो ने बांध रखा हो, फिर इन्होंने इसे छोड़ दिया हो इसे पता नहीं होता के इन्होंने इसे क्यूँ बाँधा था और क्यूँ छोड़ दिया| किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बीमारियां क्या होती है? अल्लाह की क़सम! मैं तो कभी बीमार नहीं हुआ, आप ﷺ ने फ़रमाया हमारे पास से चले जाओ तुम हम में से नहीं हो | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3089) * ابو منظور : مجهول و عمه : لم اعرفه

١٥٧٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَخَلْتُمْ عَلَى الْمَرِيضِ فَنَفِّسُوا لَهُ فِي أَجَلِهِ فَإِنَّ ذَلِكَ لَا يَرُدُّ شَيْئًا وَيُطَيِّبُ بِنَفْسِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1572. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम मरीज़ के पास जाओ

तो इस के दराज़ी ए उम्र की बात करो, बिलाशुबा यह तकदीर पर तो नहीं बदल सकता लेकिन इस का दिल खुश हो जाएगा| तिरमिज़ी इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह हदीस गरीब है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2087) و ابن ماجه (1438) * موسی بن محمد: منکر الحدیث

١٥٧٣ - (حسن) وَعَن سُلَيْمَان بن صرد قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَنْ قَتَلَهُ بَطْنُهُ لَمْ يُعَذَّبْ فِي قَبْرِهِ» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1573. सुलैमान बिन सर्द रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जिस शख़्स को इस का पेट (पेट की कोई बीमारी) हलाक कर दे उसे कब्र में अज़ाब नहीं दिया जाएगा| अहमद तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (4 / 262 ح 18501) و الترمذی (1064) [و النسائی (4 / 198 ح 2054) و للحدیث شواهد]

بَابُ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَثَوَابِ الْمَرَضِ • मरीज़ की इयादत और मर्ज़ के सवाब का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٥٧٤ - (صَحِيح) عَن أنس قَالَ: كَانَ غُلَامٌ يَهُودِيٌّ يَخْدُمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ فَقَعَدَ عِنْدَ رَأْسِهِ فَقَالَ لَهُ: «أَسْلِمْ» . فَنَظَرَ إِلَى أَبِيهِ وَهُوَ عِنْدَهُ فَقَالَ: أَطِعْ أَبَا الْقَاسِمِ. فَأَسْلَمَ. فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقُولُ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْقَذَهُ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1574. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक यहूदी लड़का नबी ﷺ की खिदमत किया करता था, वह बीमार हुआ तो नबी ﷺ इस की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ लाए, आप ﷺ ने इस के सिरहाने बैठ कर इसे फ़रमाया: मुसलमान हो जा| इस ने अपने बैठें हुए अपने वालिद की तरफ देखा तो उस ने कहा अबुल कासिम ﷺ की बात मान ले पस वह मुसलमान हो गया तो नबी ﷺ ने यह फरमाते हुए वहाँ से तशरीफ़ लाए : हर किस्म की हम्द व तारीफ और शुक्र अल्लाह के लिए है जिस ने इस को जहन्नम से बचा लिया| (बुखारी .)

رواه البخاری (1356)

١٥٧٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ عَادَ مَرِيضًا نَادَى مُنَادٍ

فِي السَّمَاءِ: طِبْتَ وَطَابَ مَمْشَاكَ وَتَبَوَّأْتَ مِنَ الْجَنَّةِ مَنْزِلًا ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1575. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो आसमान से आवाज़ देने वाला एलान करता है, आप अच्छे रहे और आप का चलना भी अच्छा रहा और आप ने जन्नत में एक घर बना लिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1443) * فيه ابو سنان عيسى بن سنان : ضعيف و للحافظ ابن حبان (الاحسان : 296) وهم عجيب

١٥٧٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ عَلِيًّا خَرَجَ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَقَالَ النَّاسُ: يَا أَبَا الْحَسَنِ كَيْفَ أَصْبَحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَصْبَحَ بِحَمْدِ الله بارئا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1576. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के मर्ज़-उल-मौत में आप के पास से बहार तशरीफ़ लाए तो सहाबा ने पूछा: अबुल हसन रसूलुल्लाह ﷺ अब कैसे है? उन्होंने कहा: (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह बेहतर है | (बुखारी .)

رواه البخارى (6266)

١٥٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ قَالَ: قَالَ لي ابْن عَبَّاس رَضِي الله عَنهُ: أَلا أريك امْرَأَة من أهل الْجنَّة؟ فَقلت: بَلَى. قَالَ: هَذِهِ الْمَرْأَةُ السَّوْدَاءُ أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: إِنِّي أصرع وَإِنِّي أتكشف فَادع الله تَعَالَى لي. قَالَ: «إِنْ شِئْتِ صَبَرْتِ وَلَكِ الْجَنَّةُ وَإِنْ شِئْتِ دَعَوْت الله تَعَالَى أَنْ يُعَافِيَكِ» فَقَالَتْ: أَصْبِرُ فَقَالَتْ: إِنِّي أَتَكَشَّفُ فَادْعُ اللَّهَ أَنْ لَا أَتَكَشَّفَ فَدَعَا لَهَا

1577. अता बिन अबी रबाह बयान करते हैं, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे फ़रमाया क्या मैं तुम्हें खातून ए जन्नत न दिखाऊ? मैंने कहा क्यों नहीं! ज़रूर दिखाइए उन्होंने फ़रमाया : यह सिया फाम खातून नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो इस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल, मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है तो मेरा सतर खुल जाता है| आप ﷺ ने फ़रमाया अगर तू चाहे तो सब्र कर और तेरे लिए जन्नत है और अगर तू जाहे तो में अल्लाह से दुआ करता हूँ की वह तुम्हें सेहत अता फरमाए | इस खातून ने अर्ज़ किया, मैं सब्र करुँगी फिर उस ने अर्ज़ किया, क्यूंकि मेरा सतर खुल जाता है लिहाज़ा आप अल्लाह से दुआ फरमाए की मेरा सतर न खुला करे, आप ﷺ ने उस के लिए दुआ फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5652) و مسلم (54 / 2576)، (6571)

١٥٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا جَاءَهُ الْمَوْتُ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رجل: هيئا لَهُ مَاتَ وَلَمْ يُبْتَلَ بِمَرَضٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْحَكَ وَمَا يُدْرِيكَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ ابْتَلَاهُ بِمَرَضٍ فَكَفَّرَ عَنهُ من سيئاته» . رَوَاهُ مَالك مُرْسلا

1578. याह्या बिन सईद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, किसी आदमी को रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में मौत आई तो किसी आदमी ने कहा, इस की खुश नसीबी है की वह किसी मर्ज़ में मुब्तिलाह हुए बगैर फौत हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: तुझ पर अफ़सोस है तुम्हें क्या मालुम? कि अगर अल्लाह इसे किसी मर्ज़ में मुब्तिलाह करता तो वह इस के गुनाह मिटा देता| इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने इसे मुरसल रिवायत कहा है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (2 / 942 ح 1817) * السند مرسل

١٥٧٩ - (حسن) وَعَن شَدَّاد بن أَوْس والصنابحي أَنَّهُمَا دَخَلَا عَلَى رَجُلٍ مَرِيضٍ يَعُودَانِهِ فَقَالَا لَهُ: كَيفَ أَصبَحت قَالَ أَصبَحت بِنِعْمَة. فَقَالَ لَهُ شَدَّادٌ: أَبْشِرْ بِكَفَّارَاتِ السَّيِّئَاتِ وَحَطِّ الْخَطَايَا فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ إِذَا أَنَا ابْتَلَيْتُ عَبْدًا مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنًا فَحَمِدَنِي عَلَى مَا ابْتَلَيْتُهُ ص:٤٩ فَإِنَّهُ يَقُومُ مِنْ مَضْجَعِهِ ذَلِكَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ مِنَ الْخَطَايَا. وَيَقُولُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: أَنَا قَيَّدْتُ عَبْدِي وَابْتَلَيْتُهُ فَأَجْرُوا لَهُ مَا كُنْتُمْ تُجْرُونَ لَهُ وَهُوَ صَحِيح ". رَوَاهُ احْمَد

1579. शद्दाद बिन औस रदियल्लाहु अन्हु और सनाबिः रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि वह किसी मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए गए तो इन्होंने इस से कहा तुम्हारा क्या हाल है? उस ने कहा मुझ पर नेअमत और फज़ल है, इस पर शद्दाद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : गुनाहो और खताओ के माफ़ हो जाने पर खुश हो जाओ क्यूंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना : बेशक अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है, जब मैं अपने किसी मोमिन बंदे को आजमाता हूँ, तो वह मेरी इस आजमाने पर मेरी हम्द और शुक्र बजा लाता है, तो वह अपने इस बिस्तर से उस रोज़ की तरह गुनाहों से पाक साफ उठता है जिस रोज़ इस की वालिदा ने इसे जन्म दिया था, और रब तबारक व त आला फरमाता है मैंने अपने बंदे को रोके रखा और इसे आज़माईश में डाला, तुम इसे वैसे ही अजर अता करदो जिस तरह तुम इस की सेहत मंद होने की सूरत में अजर दिया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 123 ح 17248) [و ابن عساکر (28 / 121122) * و لبعض الحديث شواهد معنوية عند الحاکم (4 / 313) وغيره ، و انظر المسند الجامع (7 / 346 بتحقيقى) و الحمدلله

١٥٨٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَثُرَتْ ذُنُوبُ الْعَبْدِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ مَا يُكَفِّرُهَا مِنَ الْعَمَلِ ابْتَلَاهُ اللَّهُ بِالْحَزَنِ لِيُكَفِّرَهَا عَنهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

1580. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब बंदे के गुनाह बहुत ज़्यादा हो जाते हैं और इस का ऐसा कोई अमल नहीं होता, जो इन गुनाहों का कफ्फारा बन जाए तो अल्लाह इसे हुज्न व ग़म में मुब्तिलाह कर देता है, ताकी वह इस के गुनाहों का कफ्फारह बन जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 157 ح 25750) * ليث بن ابی سليم : ضعيف

١٥٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ عَادَ مَرِيضًا لَمْ يَزَلْ يَخُوضُ الرَّحْمَةَ حَتَّى يَجْلِسَ فَإِذَا جَلَسَ اغتمس فِيهَا» . رَوَاهُ مَالك وَأحمد

1581. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शक्स किसी मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करता है तो वह रहमत में दाखिल होता चला जाता है, हत्ता कि वह (इस के पास) बैठ जाता है पस जब वह बैठ जाता है तो वह इस (रहमत) में गोतज़न हो जाता है | (ज़ईफ़,मुस्लिम)

سنده ضعيف ، رواه مالک (2 / 946 ح 1826 بدون سند) و احمد (3 / 304) * هشيم مدلس و عنعن و لبعض الحديث شواهد عند مسلم 2568)، (6551) و البخاری فی الادب المفرد (522) و غيرهما و حديث مسلم يغنی عنه

١٥٨٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ ثَوْبَانَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا أَصَابَ أَحَدَكُمُ الْحُمَّى فَإِنَّ الْحمى قِطْعَة من النَّار فليطفها عَنْهُ بِالْمَاءِ فَلْيَسْتَنْقِعْ فِي نَهْرٍ جَارٍ وَلْيَسْتَقْبِلْ جِرْيَتَهُ فَيَقُولُ: بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ وَصدق رَسُولك بعد صَلَاة الصُّبْح وَقبل طُلُوعِ الشَّمْسِ وَلْيَنْغَمِسْ فِيهِ ثَلَاثَ غَمْسَاتٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي ثَلَاثٍ فَخَمْسٍ فَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي خَمْسٍ فَسَبْعٍ فَإِنْ لَمْ يَبْرَأْ فِي سَبْعٍ فَتِسْعٍ فَإِنَّهَا لَا تَكَادُ تُجَاوِزُ تِسْعًا بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: ص:٤٩ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1582. सौबान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम में से किसी को बुखार हो जाए क्यूंकि बुखार आग का एक टुकड़ा है तो इसे पानी के ज़रिए ठंडा करो, वह किसी नहरवान में दाखिल हो जाए और जिधर से पानी आरहा है, उस तरफ मूँ करे और यह दुआ पढ़े अल्लाह के नाम के साथ ऐ अल्लाह अपने बंदे को शिफा अता फरमा और अपने रसूल ﷺ की तस्दीक फरमा और यह अमल तुलुए सुबह के बाद से तुलु ए आफ़ताब से पहले पहले करे और तीन दीन इस में तीन गोते लगाए अगर तीन दीन में ठीक न होतो पांच दीन अगर पाच दीन में ठीक न होतो फिर सात दीन और अगर सात दीन में ठीक न हो तो फिर नौ दीन और अल्लाह अज्ज़वजल के हुक्म से नौ दीन से ज्यादह नहीं होगा |तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2084) * سعيد بن زرعة الحمصی الشامی : مستور

١٥٨٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَتِ الْحُمَّى عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَبَّهَا رَجُلٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسُبَّهَا فَإِنَّهَا تَنْفِي الذُّنُوبَ كَمَا تَنْفِي النَّارُ خَبَثَ الْحَدِيدِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1583. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास बुखार का ज़िक्र किया गया तो, किसी आदमी ने इसे बुरा भला कहा तो नबी ﷺ ने फ़रमाया : इसे बुरा भला ना कहो, क्यूंकि वह गुनाहों को ऐसे साफ कर देता है, जैसे आग लोहे के मैल कुचैल दूर कर देती है | (सहीह,ज़ईफ़,मुस्लिम)

صحيح ، رواه ابن ماجه (3469) * ابو الزبير عنعن فالسند ضعيف وله شواهد عند مسلم (2575) و غيره و انظر تنقيح الرواة (1 / 304)

١٥٨٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَادَ مَرِيضًا فَقَالَ: " أَبْشِرْ فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: هِيَ نَارِي أُسَلِّطُهَا عَلَى عَبْدِي الْمُؤْمِنِ فِي الدُّنْيَا لِتَكُوْنَ حَظَّهُ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ والْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

1584. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) की तो फ़रमाया : खुश हो जाओ, क्यूंकि अल्लाह तआला फरमाता है, वह (बुखार) मेरी आग है, मैं इसे दुनिया में अपने मोमिन बंदे पर मुसल्लत करता हूँ, ताकी वह इस के लिए रोज़े कियामत की आग के हिस्से का (बदला) हो जाए | (सहीह,ज़ईफ़,हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 440 ح 9674) و ابن ماجه (3470) و البیھقی فی شعب الایمان (9844) [و صححه الحاکم (1 / 345) و وافقه الذھبی]
* السند ضعیف شواھد

١٥٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ الرَّبَّ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى يَقُولُ: وَعِزَّتِي وَجَلَالِي لَا أُخْرِجُ أَحَدًا مِنَ الدُّنْيَا أُرِيد أَغْفِرَ لَهُ حَتَّى أَسْتَوْفِيَ كُلَّ خَطِيئَةٍ فِي عُنُقِهِ بِسَقَمٍ فِي بَدَنِهِ وَإِقْتَارٍ فِي رِزْقِهِ ". رَوَاهُ رزين

1585. अनस रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते है की रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : ”रब सुब्हान व तआला फरमाते है मुझे मेरे गलबे व जलाल की क़सम मैं जिसे बख्शने का इरादा कर लु तो मैं इसे दुनिया से नहीं उठाता, हत्ता कि मैं इसे बीमार कर के या इस के रिज्क में तंगी करके इस के जिम्मे तमाम खताओं का पूरा पूरा हिसाब न करलू | ((इस की कोई असल नहीं, रवाह रजिन मुझे नहीं मीली))

لا اصل له ، رواه رزین (لم اجده)

١٥٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن شَقِيق قَالَ: مرض عبد الله بن مَسْعُود فَعُدْنَاهُ فَجَعَلَ يَبْكِي فَعُوتِبَ فَقَالَ: إِنِّي لَا أَبْكِي لِأَجْلِ الْمَرَضِ لِأَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْمَرَضُ كَفَّارَةٌ» وَإِنَّمَا أَبْكِي أَنه أَصَابَنِي عَلَى حَالِ فَتْرَةٍ وَلَمْ يُصِبْنِي فِي حَال اجْتِهَاد لِأَنَّهُ يكْتب للْعَبد من الْجَرّ إِذَا مَرِضَ مَا كَانَ يُكْتَبُ لَهُ قَبْلَ أَنْ يَمْرَضَ فَمَنَعَهُ مِنْهُ الْمَرَضُ. رَوَاهُ رَزِينٌ

1586. शकिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बीमार हो गए, तो हम इन की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए गए तो वह रोने लगे पस इस पर इन को मलामत किया गया तो उन्होंने फारमाया मैं मर्ज् की वजह से नहीं रोता, क्यूंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना : मर्ज़ (गुनाहों का) कफ्फारा होता है, मैं तो इसलिए रोता हूँ कि यह (मर्ज़) मुझे बुढ़ापे की उमर मे लाहक़ हुआ है और मख्त और मशक्क़त करने के दौर में लाहक़ नहीं हुआ, क्यूंकि जब आदमी बीमार हो जाता है तो इस के लिए वही अज्र लिखा जाता है जो इस के बीमार होने से पहले लिखा जाता था और अब सिर्फ मर्ज़ ने इसे (वह आमाल

बजा लेने से) रोक रखा है | ((इस की कोई असल नहीं, रवाह रजिन मुझे नहीं मीली))

لا اصل له ، رواه رزين (لم اجده)

١٥٨٧ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَعُودُ مَرِيضًا إِلَّا بَعْدَ ص:٤٩ ثَلَاثٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1587. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तीन दिन के बाद इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए जाया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (1437) و البيهقى فى شعب الايمان (9216)

١٥٨٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ ك قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَخَلْتَ عَلَى مَرِيضٍ فَمُرْهُ يَدْعُو لَكَ فَإِنَّ دُعَاءَهُ كَدُعَاءِ الْمَلَائِكَةِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

1588. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम मरीज़ के पास जाओ तो इससे कहो की वह तुम्हारे हक में दुआ करे, क्यूंकि इस की दुआ फरिश्तो जैसी है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1441) * ميمون بن مهران : لم يسمع من عمر ، قاله المنذرى

١٥٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مِنَ السُّنَّةِ تَخْفِيفُ الْجُلُوسِ وَقِلَّةُ الصَّخَبِ فِي الْعِيَادَةِ عِنْدَ الْمَرِيضِ قَالَ: وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا كَثُرَ لَغَطُهُمْ وَاخْتِلَافُهُمْ: «قُومُوا عَنِّي» رَوَاهُ رزين

1589. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) करते वक़्त इस के पास मुख्तसर वक़्त के लिए बैठना और शोर कम करना सुन्नत है | (ज़ईफ़)

لا اصل له ، رواه رزين (لم اجده) * و فى الباب حديث منقطع عن على رضى الله عنه ، البزار (كشف الاستار :777) و سنده ضعيف

١٥٩٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: «العيادة فوَاق نَاقَة»

1590. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) (इतने वक़्त के लिए करनी चाहिए) जितना वक़्त दूध की धार निकालने के दरमियान होता है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9222) * سنده :’’ ايوب بن الوليد الضرير : ثنا شعيب بن حرب : نا ابو عبدالله (العرنى) : نا اسماعيل بن القاسم عن انس بن مالک ‘‘ و فيه جماعة لم اعرفهم

١٥٩١ - (ضَعِيف) وَفِي رِوَايَةِ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ مُرْسَلًا: «أَفْضَلُ الْعِيَادَةِ سُرْعَةُ الْقِيَامِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

1591. और सईद बिन मुसय्यब रहिमहुल्लाह की मुरसल रिवायत में है बेहतरीन इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) वह जिस में (इयादत करके) जल्दी उठ जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9221) * فيه شيخ من البصريين : مجهول

١٥٩٢ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَادَ رَجُلًا فَقَالَ لَهُ: «مَا تستهي؟» قَالَ: أشتهي خبز بر. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ عِنْدَهُ خُبْزُ بُرٍّ فَلْيَبْعَثْ إِلَى أَخِيهِ» . ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اشْتَهَى مَرِيضُ أحدكُم ص: ٥٠ شَيْئا فليطعمه» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1592. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने किसी आदमी की इयादत की तो फ़रमाया: किस चीज़ का दिल चाहता है? उस ने अर्ज़ किया, गंदुम की रोटी, नबी ﷺ ने फ़रमाया : जिस शख़्स के पास गंदुम की रोटी हो तो वह इसे अपने भाई के पास दे, फिर नबी ﷺ ने फारमाया : जब तुम्हारे किसी मरीज़ का किसी चीज़ को दिल चाहे तो वह खिला दिया करो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1439) * صفوان بن هبيرة : لين الحديث

١٥٩٣ - (حسن) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ ك تُوُفِّيَ رَجُلٌ بِالْمَدِينَةِ مِمَّنْ وُلِدَ بِهَا فَصَلَّى عَلَيْهِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا لَيْتَهُ مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ» . قَالُوا وَلِمَ ذَاكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا مَاتَ بِغَيْرِ مَوْلِدِهِ قِيسَ لَهُ مِنْ مَوْلِدِهِ إِلَى مُنْقَطَعِ أَثَرِهِ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1593. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मदीने में पैदा होने वाला एक शख़्स फौत हो गया तो नबी ﷺ ने इसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ कर फ़रमाया: काश की यह अपनी पैदाइश की जगह के अलावा किसी और जगह फौत होता, सहाबी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्यूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया : बेशक जब कोई आदमीं अपनी पैदाइश की जगह के अलावा किसी जगह फौत होता है तो इस की पैदाइश की जगह से वफात की जगह तक के फासले की बराबर से जन्नत अता कर दी जाती है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (4 / 78 ح 1833) و ابن ماجه (1614) [و صححه ابن حبان (729)]

١٥٩٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَوْتُ غُرْبَةٍ شَهَادَةٌ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1594. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया परदेस की मौत शहादत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1613) * فيه الهذيل بن الحكيم : لين الحديث و للحديث شواهد ضعيفة

١٥٩٥ - (مَوْضُوع) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَة رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ مَرِيضًا مَاتَ شَهِيدًا أَوْ وُقِيَ فِتْنَةَ الْقَبْرِ وَغُدِيَ وَرِيحَ عَلَيْهِ بِرِزْقِهِ مِنَ الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1595. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स बीमारी की हालत में फौत होता है तो वह शहादत की मौत मरता है उसे कब्र के फितने से बचा लिया जाता है, सुबह व शाम उसे जन्नत से रिज्क पहुंचा दिया जाता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (1615) و البيهقى فى شعب الايمان (9897) * فيه ابراهيم بن محمد الاسلمى متروک متهم

١٥٩٦ - (صَحِيح) عَن الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَخْتَصِمُ الشُّهَدَاءُ وَالْمُتَوَفَّوْنَ على فرشهم إِلَى رَبنَا فِي الَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنَ الطَّاعُونِ فَيَقُولُ الشُّهَدَاءُ: إِخْوَانَنَا قتلوا قتلنَا وَيَقُول: المتوفون على فرشهم إِخْوَانُنَا مَاتُوا عَلَى فُرُشِهِمْ كَمَا مِتْنَا فَيَقُولُ رَبنَا: انْظُرُوا إِلَى جراحهم فَإِن أشبهت جراحهم ص:٥٠ جِرَاحَ الْمَقْتُولِينَ فَإِنَّهُمْ مِنْهُمْ وَمَعَهُمْ فَإِذَا جِرَاحُهُمْ قد أشبهت جراحهم ". رَوَاهُ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ

1596. अरबाज़ बिन सारीय रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: शुहदा और अपने बिस्तरों पर वफात पाने वाले, ताउन की वजह से फौत होने वालो के बारे में हमारे रब अज्ज़वजल के सामने मुकदमा पेश करेंगे, तो शुहदा अर्ज़ करेगा हमारे भाई हैं वह वैसे ही शहीद किए गए जैसे हम शहीद किये गए, जबकि फौत होने वाले कहेंगे यह हमारे भाई हैं यह भी अपने बिस्तरों पर फौत हुए, जीस तरह हम फौत हुए हमारा रब फरमाएगा, इन के ज़ख़्म देखो अगर तो इन के ज़ख़्म मक्तुलिन (शुहदा) के ज़ख्मो की तरह है तो फिर यह इन में से है और इन के साथ है पास इन के ज़ख्म इन्ही के ज़ख्मो से मुशाबे थे| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 128129 ح 17291) و النسائى (6 / 3738 ح 3166)

١٥٩٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْفَارُّ مِنَ الطَّاعُونِ كَالْفَارِّ مِنَ الزَّحْفِ وَالصَّابِرُ فِيهِ لَهُ أَجْرُ شَهِيدٍ» . رَوَاهُ أَحْمد

1597. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ताउन से फरार होने वाला, मैदान ए जिहाद से फरार होने वाले की तरह है और वहां सब्र करने (रुक जाने) वाले के लिए शहीद का सवाब है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف جدا ، رواه احمد (3 / 353 ح 14853) * فيه عمرو بن جابر : ضعيف متهم ، و روى احمد (6 / 145 ، 255) بسند حسن عن عائشة رضى الله عنها عن رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم قال :’’ الفار من الطاعون کالفار من الزحف‘‘

بَاب تمني الْمَوْت وَذكره • मौत की तमन्ना करने और उसे याद रखने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٥٩٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَمَنَّى أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزْدَادَ خَيْرًا وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يستعتب» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1598. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे अगर तो वह नेकोकार है तो शायद नेकी में इजाफा कर ले और अगर वह खताकार है तो शायद वह तौबा कर ले | (बुखारी)

رواه البخارى (5673)

١٥٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَمَنَّى أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ وَلَا يَدْعُ بِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُ إِنَّهُ إِذَا مَاتَ انْقَطَعَ أَمَلُهُ وَإِنَّهُ لَا يَزِيدُ الْمُؤْمِنَ عُمْرُهُ إِلَّا خيرا» . رَوَاهُ مُسلم

1599. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : तुम में से कोई न मौत की तमन्ना करे न इस के आने से पहले इस के लिए दुआ करे, क्यूंकि जब वह फौत हो जाता है तो इस की उम्मीद मुन्कता हो जाती है और मोमिन की उमर तो उस के लिए ख़ैर व भलाई के इजाफे के बाईस है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 2682)، (6819)

١٦٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ مِنْ ضُرٍّ أَصَابَهُ فَإِنْ كَانَ لابد فَاعِلًا فَلْيَقُلِ: اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي "

1600. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : ”तुम में से कोई शख़्स किसी तकलीफ पहुँचने पर मौत की तमन्ना न करे, अगर इस को ज़रूर कहना है तो वह यूँ कहे, “ ऐ अल्लाह! जब तक मेरा जिंदा रहना मेरे लिए बेहतर है तब तक मुझे जिंदा रखना और जब वफात मेरे लिए बेहतर हो तो मुझे (दुनिया से) उठा लेना | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5671) و مسلم (10 / 2680)، (6814)

١٦٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ أَحَبَّ اللَّهُ

لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ كَرِهَ اللَّهُ لِقَاءَهُ» فَقَالَتْ عَائِشَةُ أَوْ بَعْضُ أَزْوَاجِهِ: إِنَّا لَنَكْرَهُ الْمَوْتَ قَالَ: «لَيْسَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا حَضَرَهُ الْمَوْتُ بُشِّرَ بِرِضْوَانِ اللَّهِ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ ص:٥٠ فَأَحَبَّ لِقَاءَ اللَّهِ وَأَحَبَّ اللَّهُ لِقَاءَهُ وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا حضر بشر بِعَذَاب الله وعقوبته فَلَيْسَ شَيْء أكره إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ فَكَرِهَ لِقَاءَ اللَّهِ وَكَرِهَ الله لقاءه»

1601. उबदाह बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह से मुलाकात करना पसंद करता है आइशा रदियल्लाहु अन्हा या आप की किसी और जौजा ए मुहतरम ने फ़रमाया बेशक हम तो मौत को नापसंद करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया : यह बात नहीं है बल्कि मोमिन को मौत आती है तो इसे अल्लाह की रजामंदी और इस की इज्ज़त अफ्जाई की बशारत दी जाती है, तो फिर जो इस के आगे होने वाला होता है, वह इस सब से ज़्यादा मेहबूब होता है, लिहाज़ा वह अल्लाह से मुलाक़ात करना पसंद करता है और अल्लाह इस से मुलाकात करना पसंद करता है, और जब काफ़िर को मौत आती है तो इसे अल्लाह अजाब और इस की सज़ा की बशारत दी जाती है, तो फिर इस को मुस्तकबिल से ज्यादह नागवार चीज़े नज़र नहीं आती, तो वह अल्लाह से मुलाक़ात करना नापसंद करता है और अल्लाह इस से मिलना नापसंद करता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6507) و مسلم (14 / 2683)، (6820)

١٦٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةِ عَائِشَةَ: «وَالْمَوْتَ قَبْلَ لِقَاء الله»

1602. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी रिवायत में है : अल्लाह की मुलाक़ात से पहले मौत है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 2684)، (6822)

١٦٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُرَّ عَلَيْهِ بِجِنَازَةٍ فَقَالَ: «مُسْتَرِيحٌ أَوْ مُسْتَرَاحٌ مِنْهُ» فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا المستريح والمستراح مِنْهُ؟ فَقَالَ: «الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ يَسْتَرِيحُ مِنْ نَصَبِ الدُّنْيَا وَأَذَاهَا إِلَى رَحْمَةِ اللَّهِ وَالْعَبْدُ الْفَاجِرُ يستريح مِنْهُ الْعباد والبلاد وَالشَّجر وَالدَّوَاب»

1603. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु हदीस बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास से एक जनाज़ा गुजरा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यह राहत पा गया दूसरे इस से राहत पा गए, सहाबी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह राहत पा गया दूसरे इस से राहत पा गए इससे क्या मुराद है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया : बंदा मोमिन दुनिया की मुश्किलात और तकलीफों से राहत पा कर अल्लाह की रहमत की तरफ जाता है जबकि फाजिर शख़्स से इबादी व बिलादी और दरख़्त और हैवानात राहत पा जाते हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6512) و مسلم (61 / 950)، (2202)

١٦٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: «كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ

غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ» . وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ: إِذَا أَمْسَيْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ الصَّبَاحَ وَإِذَا أَصْبَحْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ الْمَسَاءَ وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ وَمِنْ حياتك لموتك. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1604. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे कंधे से पकड़ कर फ़रमाया: "दुनिया में किसी अजनबी शख़्स या किसी राह गुज़र की तरह रहो", और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे जब शाम हो जाए तो सुबह का इंतज़ार न करो और जब सुबह हो जाए तो फिर शाम का इंतज़ार न करो और सेहत में अपने बीमारी के लिए और अपने हयात से अपने मौत के लिए तोशा हासिल करो| (बुखारी)

رواه البخارى (6416)

١٦٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ مَوْتِهِ بِثَلَاثَةِ أَيَّامٍ يَقُولُ: «لَا يَمُوتَنَّ أَحَدُكُمْ إِلَّا وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِاللَّه» . رَوَاهُ مُسلم

1605. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को आप की वफात से तीन रोज़ कब्ल फरमाते हुए सुना। तुम्हें अल्लाह से हुस्नेज़न की सूरत में मौत आनी चाहिए | (मुस्लिम)

رواه مسلم (81 / 2877)، (7229)

بَاب تمني الْمَوْت وَذكره • मौत की तमन्ना करने और उसे याद रखने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٦٠٦ - (ضَعِيف) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن شِئْتُم أنبأتكم مَا أَوَّلُ مَا يَقُولُ اللَّهُ لِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ وَمَا أَوَّلُ مَا يَقُولُونَ لَهُ؟» قُلْنَا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ يَقُول لِلْمُؤْمِنين هَل أَحْبَبْتُم لقائي؟ فَيَقُولُونَ نَعَمْ يَا رَبَّنَا فَيَقُولُ: لِمَ؟ فَيَقُولُونَ: رَجَوْنَا عَفْوَكَ وَمَغْفِرَتَكَ. فَيَقُولُ: قَدْ وَجَبَتْ لَكُمْ مَغْفِرَتِي ". رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَأَبُو نُعَيْمٍ فِي الْحِلْية

1606. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बता देता हूँ की रोज़ ए कियामत सब से पहले अल्लाह मोमिनो से क्या फरमाएगा और वह सब से पहले इस से क्या अर्ज़ करेगा? हम ने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमाया : अल्लाह मोमिनो से फरमायेगा क्या तुम मुझे मिलना पसंद करते थे? वह अर्ज़ करेगा, जी हाँ! हमारे परवरदिगार! वह पूछेगा किस लिए? वह अर्ज़ करेंगे हमें आप की दरगुज़र और मगफिरत की उम्मीद थी, वह फरमाएगा पस मेरी मगफिरत

तुम्हारे लिए वाजिब हो गई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 268269 ح 1452) و ابونعيم فى حلية الاولياء (8 / 179) [و احمد (5 / 238] * فيه عبيد الله بن زخر ضعيف الجمهور

١٦٠٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَكْثِرُوا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1607. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : लज्ज़तो को काट देने वाली मौत को कसरत से याद किया करो | (सहीह,हसन,मुस्लिम)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2307 وقال : حسن غريب) و النسائى (4 / 4 ح 1825) و ابن ماجه (4258) [و صححه ابن حبان (25592562) و الحاكم على شرط مسلم (4 / 321) و وافقه الذهبى]

١٦٠٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَاتَ يَوْمٍ لِأَصْحَابِهِ: «اسْتَحْيُوا مِنَ اللَّهِ حَقَّ الْحَيَاءِ» قَالُوا: إِنَّا نَسْتَحْيِي مِنَ اللَّهِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ قَالَ: «لَيْسَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ مَنِ اسْتَحْيَى مِنَ اللَّهِ حَقَّ الْحَيَاءِ فَلْيَحْفَظِ الرَّأْسَ وَمَا وَعَى وَلْيَحْفَظِ الْبَطْنَ وَمَا حَوَى وَلْيَذْكُرِ الْمَوْتُ وَالْبِلَى وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ تَرَكَ زِينَةَ الدُّنْيَا فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَقَدِ اسْتَحْيَى مِنَ اللَّهِ حَقَّ الْحَيَاءِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ ص:٥٠ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1608. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने एक रोज़ अपने सहाबी से फ़रमाया: अल्लाह से हया करो जिस तरह इस से हया करने का हक है| उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह हम अल्लाह से हया करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया यह बात नहीं है बल्कि जो शख़्स अल्लाह से ऐसी हया करता है जैसा हया करने का हक है, तो वह सर और वह चीजों की जो सर में है (आँख, कान, ज़बान) की हिफाज़त करे और वह पेट और इस के मुत्तल्लिकात (शर्मगाह, हाथ, पांव और दिल वगैरा) की हिफाज़त करे वह मौत और बोसीदा होने को याद रखे, और जो आखिरत चाहता है वह दुनिया तर्क कर दे, जो शख़्स इस तरह करे तो इस ने अल्लाह से ऐसी हया किया जैसे इस से हया करने का हक है| (सहीह,ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (1 / 387 ح 3671) و الترمذى (2458) [و صححه الحاكم (4 / 323) و وافقه الذهبى و للحديث شواهد] * صباح بن محمد ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

١٦٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ ك قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تُحْفَةُ الْمُؤْمِنِ الْمَوْتُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

1609. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मौत मोमिन के लिए तोहफा है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9884) * فيه عبد الرحمن الافريقى ضعيف ولم اقف على سند الطبرانى فى الكبير وقول بعض

العلماء ’’ اسناده جيد ‘‘ و ’’ رجاله ثقات ‘‘ لا يفيد حتى نقف على سند الطبرانى لان يساهل هولاء الناقلين مشهور

١٦١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُ يَمُوتُ بِعَرَقِ الْجَبِينِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1610. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मोमिन मरता है तो इस की पेशानी पर पसीना आ जाता| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (982 وقال : حسن) و النسائى (4 / 56 ح 18291830) و ابن ماجه (1452) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 3000) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 361) و وافقه الذهبى]

١٦١١ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَوْتُ الْفُجَاءَة أَخْذَةُ الْأَسَفِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَزَادَ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَرَزِينٌ فِي كِتَابِهِ: «أَخْذَةُ الأسف للْكَافِرِ وَرَحْمَة لِلْمُؤمنِ»

1611. अब्दुल्लाह बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अचानक मौत गज़ब की गिरफ्त है| अबू दावुद, इमाम बयहकी रहिमहुल्लाह ने शौबुल इमान में और रजिन ने अपनी किताब में यह इजाफा नक़ल किया है: गज़ब की पकड़ काफ़िर के लिए जबकि मोमिन के लिए रहमत है | (सहीह,ज़ईफ़,मुस्लिम)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3110 و اسناده صحيح) و البيهقى فى شعب الايمان (10218 ، و السنن الكبرىٰ 3 / 379 و سند ہ ضعيف ، فيه عبيدالله بن الوليد الوصا فى ضعيف) و رزين (لم اجده) * و للحديث طريق موقوف عند البيهقى فى سننه (3 / 379) و سنده ضعيف ، الاعمش مدلس و عنعن و حديث البخارى (6512) و مسلم (950) يغنى عنه ، و للحديث شاهد ضعيف) قلت : لفظه ’’ اخذة الاسف للكافر و رحمة للمومن ‘‘ ضعيف لم يصح

١٦١٢ - (حسن) وَعَن أنس قَالَ: دخل النَّبِي عَلَى شَابٍّ وَهُوَ فِي الْمَوْتِ فَقَالَ: «كَيْفَ تجدك؟» قَالَ: أرجوالله يَا رَسُولَ اللَّهِ وَإِنِّي أَخَافُ ذُنُوبِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَجْتَمِعَانِ فِي قَلْبِ عَبْدٍ فِي مِثْلِ هَذَا الْمَوْطِنِ إِلَّا أَعْطَاهُ اللَّهُ مَا يَرْجُو وَآمَنَهُ مِمَّا يَخَافُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

1612. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ एक नौजवान शख़्स के पास गए जबकि वह नजा की हालत में था, आप ने फ़रमाया: तुम कैसा महसूस करते हो? उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं अल्लाह से उम्मीद रखता हूँ और अपने गुनाहों से डरता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया इस मौके पर किसी बंदे के दील में वह चीज़े (उम्मीद और खौफ) इकट्ठी हो जाए, तो अल्लाह इसे वह चीज़ अता फरमा देता है जिस की वह उम्मीद करता है और जिस चीज़ से वह डरता रहा होता है इस से इसे बे खौफ कर देता है| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذى (983) و ابن ماجه (4261) [و صححه ابن الملقن فى تحفة المحتاج (763)]

मौत की तमन्ना करने और उसे याद रखने का बयान • بَاب تمني الْمَوْت وَذكره

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٦١٣ - (ضَعِيف) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَمَنَّوُا الْمَوْتَ فَإِنَّ هَوْلَ الْمُطَّلَعِ شَدِيدٌ وَإِنَّ مِنَ السَّعَادَةِ أَنْ يَطُولَ عُمْرُ الْعَبْدِ وَيَرْزُقَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ الْإِنَابَةَ» . رَوَاهُ أَحْمد

1613. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मौत की तमन्ना न करो, क्यूंकि मरने के बाद के समा की होलनाकी बहुत सख्त है और यह सआदत की बात है बंदे की उमर दराज़ हो जाए और अल्लाह अज्ज़वजल इसे अपनी तरफ रुजू करने की तौफीक अता फरमाए | (हसन)

سنده حسن ، رواه احمد (3 / 332 ح 146180) * و حسنه الهيشمى فى مجمع الزوائد (10 / 203) و المنذرى فى الترغيب و الترهيب و للحديث شواهد معنوية

١٦١٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: جَلَسْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَّرَنَا وَرَقَّقَنَا فَبَكَى سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ فَأَكْثَرَ الْبُكَاءَ فَقَالَ: يَا لَيْتَنِي مِتُّ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا سَعْدُ أَعِنْدِي تَتَمَنَّى الْمَوْتَ؟» فَرَدَّدَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَالَ: «يَا سَعْدُ إِنْ كُنْتَ خُلِقْتَ لِلْجَنَّةِ فَمَا طَالَ عُمْرُكَ وَحَسُنَ مِنْ عَمَلِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَك» . رَوَاهُ أَحْمد

1614. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसुल्लुल्लाह ﷺ की ताराग तवज्जो करके बैठें हुए थे, आप ने हमें वाज और नसीहत की और हमारे दिलों को नरम किया तो सईद बिन अबी व़क्क़ास रदियल्लाहु अन्हु रोने लगे उन्होंने बहुत ज़्यादा रोते हुए कह दिया काश के मैं मर जाता यह सुन कर नबी ﷺ ने फ़रमाया : सईद अगर तुम्हें जन्नत के लिए पैदा किया गया है तो फिर तुम्हारी उमर जितनी दराज़ होगी और तुम्हारे जितने अमल अच्छे होंगे वह तुम्हारे लिए बेहतर है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه احمد (5 / 267 ح 22649) * فيه معان بن رفاعة : ضعيف ، و على بن يزيد الالهانى : متروک

١٦١٥ - (صَحِيح) عَن حَارِثَةَ بْنِ مُضَرِّبٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى خَبَّابٍ وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعًا فَقَالَ: لَوْلَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «لَا يَتَمَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ» ص:٥٠ لَتَمَنَّيْتُهُ. وَلَقَدْ رَأَيْتُنِي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا أَمْلِكُ دِرْهَمًا وَإِنَّ فِي جَانِبِ بَيْتِيَ الْآنَ لَأَرْبَعِينَ أَلْفَ دِرْهَمٍ قَالَ ثُمَّ أُتِيَ بِكَفَنِهِ فَلَمَّا رَآهُ بَكَى وَقَالَ لَكِنَّ حَمْزَةَ لَمْ يُوجَدْ لَهُ كَفَنٌ إِلَّا بُرْدَةٌ مَلْحَاءُ إِذَا جُعِلَتْ عَلَى رَأْسِهِ قَلَصَتْ عَنْ قَدَمَيْهِ وَإِذَا جُعِلَتْ عَلَى قَدَمَيْهِ قَلَصَتْ عَنْ رَأْسِهِ حَتَّى مُدَّتْ عَلَى رَأْسِهِ وَجُعِلَ عَلَى قَدَمَيْهِ الْإِذْخِرُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يذكر: ثمَّ أُتِي بكفنه إِلَى آخِره

1615. हारिस बिन मुदर्ब रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं खबाब रदियल्लाहु अन्हु के पास गया तो उन्होंने जिस्म को सात जगहों पर दागा हुआ था, उन्होंने कहा: मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते हुए न सुना होता :

तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे, तो मैं ज़रूर इस की तमन्ना करता, मैंने अपने आप को रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इस तरह भी देखा है के मेरे पास एक दिरहम भी नहीं था. जबकि अब मेरे घर के एक कोने में चालीस हज़ार दिरहम है | हारिस बयान करते फिर इन का कफ़न लाया गया, जब इन्होंने इसे देखा तो रोने लगे और फ़रमाया : लेकिन हमजा को कफ़न के लिए एक छोटी सी धारी दार चादर नसीब हुई, जब इसे इन के सर पर किया जाता तो पावं से इकट्ठी हो जाती और जब पावं पर की जाती तो सर की तरफ से इकट्ठी हो जाती, हत्ता के इसे इन के सर पर फेला दिया गया और इन के पावं पर घास डाल दी गई | अहमद तिरमिज़ी, अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने यह ज़िक्र नहीं किया के फिर इन के लिए कफ़न लाया गया आखिरी हदीस तक | (सहीह,हसन)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 111 ح 2138) و الترمذی (970 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه : 4163)]

بَاب مَا يُقَال عِنْد من حَضَره الْمَوْت • निज़ा के आलम में मुब्तिला शख्स के पास क्या कहना चाहिए

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٦١٦ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقِّنُوا مَوْتَاكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1616. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने करीब अल मौत लोगों को (لَا إِلَهَ إِلَّا الله) की तलकीन करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1 / 916)، (2123)

١٦١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا حَضَرْتُمُ الْمَرِيضَ أَو الْمَيِّت فَقولُوا خيرا فَإِن الْمَلَائِكَةَ يُؤَمِّنُونَ عَلَى مَا تَقُولُونَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1617. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम किसी मरीज़ या मय्यत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो, क्यूंकि तुम जो बात करते हो तो फ़रिश्ते आमीन कहते हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 919)، (2129)

١٦١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ مُسْلِمٍ تُصِيبُهُ مُصِيبَةٌ فَيَقُولُ مَا أَمَرَهُ اللَّهُ بِهِ: (إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ)»» اللَّهُمَّ أْجِرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَاخْلُفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا أَخْلَفَ اللَّهُ لَهُ خَيْرًا مِنْهَا ".

فَلَمَّا مَاتَ أَبُو سَلمَة قَالَت: أَيُّ الْمُسْلِمِينَ خَيْرٌ مِنْ أَبِي سَلَمَةَ؟ أَوَّلُ بَيْتٍ هَاجَرَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ إِنِّي قُلْتُهَا فَأَخْلَفَ اللَّهُ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

1618. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो मुसलमान किसी मुसीबत के आने पर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक यह दुआ पढ़ता है: “बेशक हम अल्लाह के मिलकियत है और हम इसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं, अल्लाह मेरी इस मुसीबत पर मुझे अज्र व सवाब अता फरमा और मुझे इससे बेहतर बदला अता फरमा”, तो अल्लाह उसे इस से बेहतर बदला अता फरमा देता है| पस जब अबू सलमा रदियल्लाहु अन्हु फौत हुए तो मैंने कहा : अबू सलमा से बेहतर कौन मुसलमान शख़्स होगा यह वह पहला घराना है जिस ने रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ हिजरत की थी फिर मैं वह दुआ पढ़ती रही तो अल्लाह ने मुझे बदले में रसूलुल्लाह ﷺ अता फरमा दिए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 918)، (2126)

١٦١٩ - (صَحِيح) وَعَن أمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أبي سَلمَة قد شَقَّ بَصَرَهُ فَأَغْمَضَهُ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ الرُّوحَ إِذَا قُبِضَ تَبِعَهُ الْبَصَرُ» فَضَجَّ نَاسٌ مِنْ أَهْلِهِ فَقَالَ: «لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِلَّا بِخَير فَإِن الْمَلَائِكَة يُؤمنُونَ على ماتقولون» ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَبِي سَلَمَةَ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ وَاخْلُفْهُ فِي عَقِبِهِ فِي الْغَابِرِينَ وَاغْفِرْ لَنَا ص: ٥٠ وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ وَأَفْسِحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ» . رَوَاهُ مُسلم

1619. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अबू सलमा रदियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ लाए तो इन की नज़र फेट चुकी थी आप ने इन की आँखे बंद की, फिर फ़रमाया: जब रूह कब्ज़ की जाती है तो नज़र इस के पीछे चली जाती है, (ये सुन कर) इन के अहल खान रोने लगे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: अपने लिए दुआ ए खैर करो क्यूंकि तुम जो कहते हो फ़रिश्ते इस पर आमीन कहते हैं, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! अबू सलमा की मगफिरत फरमा, हिदायत याफ्ता लोगों में इस का दर्जा बुलंद फरमा, इस के पीछे बाकी रह जाने वालो में तू इस का खलीफा बन जा, तमाम जहानों के परवरदिगार! हमें और इसे बख्श दे इस की कब्र को कुशादा फरमा और इसे मुनव्वर फरमा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 920)، (2130)

١٦٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ تُوُفِّيَ سجي بِبرد حبرَة

1620. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई तो आप को धारीदार सूती चादर से धांप दिया गया | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5814) و رواه مطولا 12411242 بغير هزا اللفظ) و مسلم (48 / 942)، (2183)



بَاب مَا يُقَال عِنْد من حَضَره الْمَوْت • निज़ा के आलम में मुब्तिला शख्स के पास क्या कहना चाहिए

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٦٢١ - (صَحِيح) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ آخِرُ كَلَامِهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1621. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस शख़्स का आखिरी कलाम “ (لَا إِلَهَ إِلَّا الله)| होगा वह जन्नत में दाखिल होगा| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3116) [و صححه الحاكم (1 / 351 ، 500) و وافقه الذهبى]

١٦٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «اقرؤوا سُورَةَ (يس)»» عَلَى مَوْتَاكُمْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1622. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अपने मौत के करीब लोगों पर सुरह यासीन की तिलावत करो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 27 ح 20580) و ابوداؤد (3121) و ابن ماجه (1448) * فيه ابو عثمان و ابوه : مجهولان ، وله شاهد ضعيف موقوف

١٦٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَ عُثْمَانَ بْنَ مَظْعُونٍ وَهُوَ مَيِّتٌ وَهُوَ يَبْكِي حَتَّى سَالَ دُمُوعُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى وَجْهِ عُثْمَانَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

1623. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि उस्मान बिन मजऊँन रदियल्लाहु अन्हु वफात पा गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने रोते हुए इन का बोसा लिया, हत्ता कि नबी ﷺ के आंसू उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के चेहरे पर गिर पड़े| (ज़ईफ़,हसन)

ضعيف ، رواه الترمذى (989 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (3163) و ابن ماجه (1456) * عاصم بن عبيد الله ضعيف

١٦٢٤ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ أَبَا بَكْرٍ قَبَّلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مَيِّتٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

1624. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि नबी ﷺ वफात पा गए तो अबु बक्र ने इन का बोसा लिया| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (لم اجده مسنداً بل ذكره : 989 معلقاً و رواه فى شمائل : 391 و سنده صحيح) و ابن ماجه (1456) [و البخارى فى صححه : 57095711]

١٦٢٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ حُصَيْنِ بْنِ وَحْوَحٍ أَنَّ طَلْحَةَ بْنَ الْبَرَاءِ مَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ فَقَالَ: «إِنِّي لَا أَرَى طَلْحَةَ إِلَّا قَدْ حَدَثَ بِهِ الْمَوْتُ فَآذِنُونِي بِهِ وَعَجِّلُوا فَإِنَّهُ لَا يَنْبَغِي لِجِيفَةِ مُسْلِمٍ أَنْ تُحْبَسَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْ أَهْلِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1625. हुसैन बिन वह्वही रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि तल्हा बिन बराअ रदियल्लाहु अन्हु बीमार हो गए, नबी ﷺ उन की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: मेरे खयाल है की तल्हा फौत होने वाला है, पस इस की मुझे इतिल्ला करना और (दफन करने में) जल्दी करना, क्यूंकि मुसलमान को इस के अहल खाने के पास रोके रखना मुनासिब नहीं | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3159) * ابن سعيد الانصارى و ابوه : لم اجد من وثقهما و سعيد بن عثمان : و ثقه ابن حبان وحده من أئمة الرجال

بَاب مَا يُقَال عِنْد من حَضَرَه الْمَوْت • निज़ा के आलम में मुब्तिला शख्स के पास क्या कहना चाहिए

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٦٢٦ - (ضَعِيف) وَعَن عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقِّنُوا مَوْتَاكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ لِلْأَحْيَاءِ؟ قَالَ: «أَجود وأجود» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1626. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अपने मौत के करीब लोगों को इन कलिमात की तलकीन करो: “ए अल्लाह! हलिम व करीम के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, अल्लाह अर्श ए अज़ीम का रब है, हर किस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है” | सहाबी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! (ये कालीमात) जिन्दो के मुतल्लिक कैसे है? आप ने फ़रमाया बहुत खूब! बहुत खूब | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1446) * اسحاق بن عبدالله بن جعفر : مستور ، لم اجد من و ثقه

١٦٢٧ - (حَسَنٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: الْمَيِّتُ تَحْضُرُهُ الْمَلَائِكَةُ فَإِذَا كَانَ الرَّجُلُ صَالِحًا قَالُوا: اخْرُجِي أَيَّتُهَا النَّفْسُ الطَّيِّبَةُ كَانَتْ فِي الْجَسَدِ الطَّيِّبِ اخْرُجِي حَمِيدَةً وَأَبْشِرِي بِرَوْحٍ وَرَيْحَانٍ وَرَبٍّ غَيْرِ غَضْبَانَ فَلَا تَزَالُ يُقَالُ لَهَا ذَلِكَ حَتَّى تَخْرُجَ ثُمَّ يُعْرَجُ بِهَا إِلَى السَّمَاءِ فَيُفْتَحَ لَهَا فَيُقَالُ: مَنْ هَذَا؟ فَيَقُولُونَ: فُلَانٌ فَيُقَالُ: مَرْحَبًا بِالنَّفس الطّيبَة كَانَت فِي الْجَسَدِ الطَّيِّبِ ادْخُلِي حَمِيدَةً وَأَبْشِرِي ص:٥١ بِرَوْحٍ وَرَيْحَانٍ وَرَبٍّ غَيْرِ غَضْبَانَ فَلَا تَزَالُ يُقَالُ لَهَا ذَلِكَ حَتَّى تَنْتَهِيَ إِلَى السَّمَاءِ الَّتِي فِيهَا اللَّهُ فَإِذَا كَانَ الرَّجُلُ السُّوءُ قَالَ: اخْرُجِي أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْخَبِيثَةُ كَانَتْ فِي الْجَسَدِ الْخَبِيثِ اخْرُجِي ذَمِيمَةً وَأَبْشِرِي بِحَمِيمٍ وَغَسَّاقٍ وَآخَرَ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ فَمَا تَزَالُ يُقَالُ لَهَا ذَلِكَ حَتَّى تَخْرُجَ ثُمَّ يُعْرَجُ بِهَا إِلَى السَّمَاءِ فَيُفْتَحُ لَهَا فَيُقَالُ: مَنْ هَذَا؟ فَيُقَالُ: فُلَانٌ فَيُقَالُ: لَا مَرْحَبًا بِالنَّفْسِ الْخَبِيثَةِ كَانَتْ فِي الْجَسَدِ الْخَبِيثِ ارْجِعِي ذَمِيمَةً فَإِنَّهَا لَا تفتح لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ فَتُرْسَلُ مِنَ السَّمَاءِ ثُمَّ تَصِيرُ إِلَى الْقَبْرِ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1627. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मौत के करीब शख़्स के पास फ़रिश्ते आते है, अगर तो वह स्वालेह शख़्स हो तो वह कहते हैं पकिजाह जिस्म में से पकिजाह रूह निकल, निकले तो काबिल ए तारीफ है राहत और रिज्क के साथ खुश हो जा, रब तुझ पर नाराज़ नहीं इसे इसी तरह मुसलसल कहा जाता है हत्ता कि वह निकल आती है, फिर इसे आसमानों की तरफ ले जाया जाता है तो इस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, फिर यह पूछा जाता है यह कौन है, वह जवाब देते हैं फलां है तो इसे कहा जाता है पकिजाह जीस्म में पाकिजाह जान खुशामदीद, काबिले तारीफ (रूह) दाखिल हो जा, राहत व रिज्क के साथ खुश होजा, तेरा रब तुझ पर नाराज़ नहीं इसे मुसलसल ऐसे कहा जाता है हत्ता कि वह इसे आसमान तक पहुँच जाता है, जहा अल्लाह है, लेकिन अगर बुरा शख़्स हो तो वह (मलिकुल मौत) कहता है, जसद खबीस में बसने वाली खबीस रूह निकल, मज्मुम सूरत में निकल, खोलते पानी और पिप के साथ खुश हो जा, और इसी तरह के मिलते जलते दूसरे अज़ाब भी इसे ऐसे ही कहा जाता है, हत्ता कि वह निकल आती है, फिर इसे आसमान की तरफ ले जाया जाता है तो इस के लिए दरवाज़े खोलने का मुतालिबा होता है और पूछा जाता है यह कौन है? तो बताया जाता है फलां है इसे कहा जाता है जसद खबीस में बसने वाली रूह के लिए कोई खुश आमदीद नहीं, मज्मुम सूरत में वापस चली जा तेरे लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएगें, इसे आसमान से छोड़ दिया जाता है फिर वह कब्र की तरफलौट आती है | (सहीह)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (4262) [و احمد (2 / 344335) و النسائی فی الکبریٰ (6 / 44344 ح 11442) و صححه البوصیری]

١٦٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا خَرَجَتْ رُوحُ الْمُؤْمِنِ تَلَقَّاهَا مَلَكَانِ يُصْعِدَانِهَا» . قَالَ حَمَّادٌ: فَذَكَرَ مِنْ طِيبِ رِيحِهَا وَذَكَرَ الْمِسْكَ قَالَ: " وَيَقُولُ أَهْلُ السَّمَاءِ: رُوحٌ طَيِّبَةٌ جَاءَتْ مِنْ قِبَلِ الْأَرْضِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكِ وَعَلَى جَسَدٍ كُنْتِ تُعَمِّرِينَهُ فَيُنْطَلَقُ بِهِ إِلَى رَبِّهِ ثُمَّ يَقُولُ: انْطَلِقُوا بِهِ إِلَى آخِرِ الْأَجَلِ ". قَالَ: «وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا خَرَجَتْ رُوحُهُ» قَالَ حَمَّادٌ: وَذَكَرَ من نتنها وَذكر لعنها. " وَيَقُولُ أَهْلُ السَّمَاءِ: رُوحٌ خَبِيثَةٌ جَاءَتْ مِنْ قِبَلِ الْأَرْضِ فَيُقَالُ: انْطَلِقُوا بِهِ إِلَى آخِرِ الْأَجَل " قَالَ أَبُو هُرَيْرَة: فَرد رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم ريطة كَانَت عَلَيْهِ على أَنفه هَكَذَا. رَوَاهُ مُسلم

1628. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मोमिन की रूह निकलती है तो दो फ़रिश्ते ऊपर चढ़ते है, हम्माद ने बयान किया है आप ने इस की अच्छी खुशबू का ज़िक्र किया और कस्तूरी का ज़िक्र किया फ़रमाया: आसमान कहते हैं ज़मीन की तरफ से एक पाकीज़ा रूह आई है, अल्लाह तुझ पर और

उस जसद पर रहमत नाजिल फरमाए, जिस में तू आबाद थी, के रब की तरफ ले जाया जाता है, फिर वह फरमाता है इसे आखिरी अजल (मौत) (कियामत) तक (इस के मकाम पर) ले चलो, आप ने फ़रमाया: जब काफ़िर शख़्स की रूह निकलती है, हम्माद बयान करते हैं, आप ने इस की बदबू और लानत का ज़िक्र किया, "आसमान कहता है ज़मीन की तरफ से एक खबीस रूह आई है तो इस के मुत्तलिक भी कहा जाता है के इसे इसकी आखिरी अजल (मौत) ले चलो ", अबू हुरैरा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने जिसमे वाले कपड़ो की इस तरह अपनी नाक पर रख लिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (75 / 2872)، (7221)

١٦٢٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا حُضِرَ الْمُؤْمِنُ أَتَتْ ص:٥١ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ بِحَرِيرَةٍ بَيْضَاءَ فَيَقُولُونَ: اخْرُجِي رَاضِيَةً مَرْضِيًّا عَنْكِ إِلَى رَوْحِ اللَّهِ وَرَيْحَانٍ وَرَبٍّ غَيْرِ غَضْبَانَ فَتَخْرُجُ كَأَطْيَبِ رِيحِ الْمِسْكِ حَتَّى إِنَّهُ لَيُنَاوِلُهُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا حَتَّى يَأْتُوا بِهِ أَبْوَابَ السَّمَاءِ فَيَقُولُونَ: مَا أَطْيَبَ هَذِهِ الرِّيحَ الَّتِي جَاءَتْكُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَيَأْتُونَ بِهِ أَرْوَاحَ الْمُؤْمِنِينَ فَلَهُمْ أَشَدُّ فَرَحًا بِهِ مِنْ أَحَدِكُمْ بِغَائِبِهِ يَقْدُمُ عَلَيْهِ فَيَسْأَلُونَهُ: مَاذَا فَعَلَ فُلَانٌ مَاذَا فَعَلَ فُلَانٌ؟ فَيَقُولُونَ: دَعُوهُ فَإِنَّهُ كَانَ فِي غَمِّ الدُّنْيَا. فَيَقُولُ: قَدْ مَاتَ أَمَا أَتَاكُمْ؟ فَيَقُولُونَ: قَدْ ذُهِبَ بِهِ إِلَى أُمِّهِ الْهَاوِيَةِ. وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا احْتُضِرَ أَتَتْهُ مَلَائِكَةُ الْعَذَابِ بِمِسْحٍ فَيَقُولُونَ: أَخْرِجِي ساخطة مسخوطا عَلَيْكِ إِلَى عَذَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ. فَتَخْرُجُ كأنتن ريح جيفة حَتَّى يأْتونَ بِهِ بَابِ الْأَرْضِ فَيَقُولُونَ: مَا أَنْتَنَ هَذِهِ الرِّيحَ حَتَّى يَأْتُونَ بِهِ أَرْوَاحَ الْكُفَّارِ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيّ

1629. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब मोमिन शख़्स की मौत का वक़्त आता है तो रहमत के फ़रिश्ते रेशम लेकर आते है तो वह कहते हैं: राज़ी होने वाली पसंदीदा रूह निकल, अल्लाह की राहत व रिज्क की तरफ चल, रब तुझ पर नाराज़ नहीं, बेहतरीन कस्तूरी की खुशबू की तरह निकलती है हत्ता कि वह एक दूसरे से इसे लेते है, और इसी तरह करते हुए वह इसे आसमान के दरवाजों की पास ले आते है, तो वह कहते हैं, ज़मीन से यह कैसी पकिजाह खुशबू तुम्हारे पास आई है वह इसे मोमिनो की रूहों के पास ले आते है, तो उन्हें इस के आने पर इस से भी ज़्यादा ख़ुशी आती है, जैसे तुम में से किसी को अपने बिछ्ड़ जाने वाले के मिलने पर ख़ुशी होती है, वह इस से पूछते है फलां का क्या हाल है? फलां का क्या हाल है? फिर वह कहते हैं : इसे छोड़ दो, क्यूंकि वह दुनिया के गम में मुब्तिला था, तो वह (मरने वाला) कहता है: वह तो (जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो) फौत हो चूका, क्या तुम्हारे पास नहीं आया? वह कहते हैं इसे तो इस के ठिकाने हावी (जहन्नम का नाम) में पहुंचा दिया गया, और जब काफ़िर शख़्स की मौत का वक़्त आता है तो अजाब के फ़रिश्ते बालो का लिबास लेकर इस के पास आते है, और इसे कहते हैं नाराज़ होने वाली नापसंदीदा रूह निकल और अल्लाह अज्ज़वजल के अज़ाब की तरफ चल, वह मुर्दार की इन्तिहाई बदबू की सूरत में निकलती है, हत्ता कि वह इसे ज़मीन के दरवाज़े के पास लेकर आते है तो वह कहते ही यह कितनी बदबूदार है हत्ता कि वह इसे काफिरों की रूहो के पास ले आते है"| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (لم اجده) و النسائى (4 / 8 ح 1834)

١٦٣٠ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَبْرِ وَلَمَّا يُلْحَدْ فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَلَسْنَا حوله كَأَن على رؤوسنا الطَّيْرَ وَفِي يَدِهِ عُودٌ يَنْكُتُ بِهِ فِي الْأَرْضِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: «اسْتَعِيذُوا بِاللَّهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ» مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: " إِنَّ الْعَبْدَ الْمُؤْمِنَ إِذَا كَانَ فِي انْقِطَاعٍ مِنَ الدُّنْيَا وَإِقْبَالٍ مِنَ الْآخِرَةِ نَزَلَ إِلَيْهِ من السَّمَاء مَلَائِكَة بِيضُ الْوُجُوهِ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الشَّمْسُ مَعَهُمْ كَفَنٌ مِنْ أَكْفَانِ الْجَنَّةِ وَحَنُوطٌ مِنْ حَنُوطِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَجْلِسُوا مِنْهُ مَدَّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَجِيءُ مَلَكُ الْمَوْتِ حَتَّى يَجْلِسَ عِنْدَ رَأْسِهِ فَيَقُولُ: أَيَّتُهَا النَّفْسُ الطَّيِّبَةُ اخْرُجِي إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنَ الله ورضوان " قَالَ: «فَتَخْرُجُ تَسِيلُ كَمَا تَسِيلُ الْقَطْرَةُ مِنَ فِي السِّقَاءِ فَيَأْخُذُهَا ص:٥١ فَإِذَا أَخَذَهَا لَمْ يَدَعُوهَا فِي يَدِهِ طَرْفَةَ عَيْنٍ حَتَّى يَأْخُذُوهَا فَيَجْعَلُوهَا فِي ذَلِكَ الْكَفَنِ وَفِي ذَلِكَ الْحَنُوطِ وَيَخْرُجُ مِنْهَا كَأَطْيَبِ نَفْحَةِ مِسْكٍ وُجِدَتْ عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ» قَالَ: " فَيَصْعَدُونَ بِهَا فَلَا يَمُرُّونَ - يَعْنِي بِهَا - عَلَى مَلَأٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِلَّا قَالُوا: مَا هَذِه الرّوح الطّيب فَيَقُولُونَ: فلَان بن فُلَانٍ بِأَحْسَنِ أَسْمَائِهِ الَّتِي كَانُوا يُسَمُّونَهُ بِهَا فِي الدُّنْيَا حَتَّى ينْتَهوا بهَا إِلَى سَمَاء الدُّنْيَا فيستفتحون لَهُ فَيفتح لَهُ فَيُشَيِّعُهُ مِنْ كُلِّ سَمَاءٍ مُقَرَّبُوهَا إِلَى السَّمَاءِ الَّتِي تَلِيهَا حَتَّى ينتهى بهَا إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ - فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: اكْتُبُوا كِتَابَ عَبْدِي فِي عِلِّيِّينَ وَأَعِيدُوهُ إِلَى الْأَرْضِ فَإِنِّي مِنْهَا خَلَقْتُهُمْ وَفِيهَا أُعِيدُهُمْ وَمِنْهَا أخرجهم تَارَة أُخْرَى قَالَ: " فتعاد روحه فيأتيه ملكان فَيُجْلِسَانِهِ فَيَقُولَانِ لَهُ: مَنْ رَبُّكَ؟ فَيَقُولُ: رَبِّيَ الله فَيَقُولُونَ لَهُ: مَا دِينُكَ؟ فَيَقُولُ: دِينِيَ الْإِسْلَامُ فَيَقُولَانِ لَهُ: مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ؟ فَيَقُول: هُوَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُولَانِ لَهُ: وَمَا عِلْمُكَ؟ فَيَقُولُ: قَرَأْتُ كِتَابَ اللَّهِ فَآمَنْتُ بِهِ وَصَدَّقْتُ فَيُنَادِي مُنَادٍ مِنَ السَّمَاء أَن قد صدق فَأَفْرِشُوهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَأَلْبِسُوهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَافْتَحُوا لَهُ بَابًا إِلَى الْجَنَّةِ " قَالَ: «فَيَأْتِيهِ مِنْ رَوْحِهَا وَطِيبِهَا وَيُفْسَحُ لَهُ فِي قَبْرِهِ مَدَّ بَصَرِهِ» قَالَ: " وَيَأْتِيهِ رجل حسن الْوَجْه حسن الثِّيَاب طيب الرّيح فَيَقُولُ: أَبْشِرْ بِالَّذِي يَسُرُّكَ هَذَا يَوْمُكَ الَّذِي كُنْتَ تُوعَدُ فَيَقُولُ لَهُ: مَنْ أَنْتَ؟ فَوَجْهُكَ الْوَجْه يَجِيء بِالْخَيْرِ فَيَقُولُ: أَنَا عَمَلُكَ الصَّالِحُ فَيَقُولُ: رَبِّ أَقِمِ السَّاعَةَ رَبِّ أَقِمِ السَّاعَةَ حَتَّى أَرْجِعَ إِلَى أَهْلِي وَمَالِي ". قَالَ: " وَإِنَّ الْعَبْدَ الْكَافِرَ إِذَا كَانَ فِي انْقِطَاعٍ مِنَ الدُّنْيَا وَإِقْبَالٍ مِنَ الْآخِرَةِ نَزَلَ إِلَيْهِ مِنَ السَّمَاءِ مَلَائِكَةٌ سُودُ الْوُجُوهِ مَعَهُمُ الْمُسُوحُ ص:٥١ فَيَجْلِسُونَ مِنْهُ مَدَّ الْبَصَرِ ثُمَّ يَجِيءُ مَلَكُ الْمَوْتِ حَتَّى يَجْلِسَ عِنْدَ رَأْسِهِ فَيَقُولُ: أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْخَبِيثَةُ اخْرُجِي إِلَى سَخَطٍ مِنَ اللَّهِ " قَالَ: " فَتُفَرَّقُ فِي جسده فينتزعها كَمَا ينتزع السفود من الصُّوف المبلول فَيَأْخُذُهَا فَإِذَا أَخَذَهَا لَمْ يَدَعُوهَا فِي يَدِهِ طَرْفَةَ عَيْنٍ حَتَّى يَجْعَلُوهَا فِي تِلْكَ الْمُسُوحِ ويخرج مِنْهَا كَأَنْتَنِ رِيحِ جِيفَةٍ وُجِدَتْ عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ فَيَصْعَدُونَ بِهَا فَلَا يَمُرُّونَ بِهَا عَلَى مَلَأٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِلَّا قَالُوا: مَا هَذَا الرّوح الْخَبيث؟ فَيَقُولُونَ: فلَان بن فُلَانٍ - بِأَقْبَحِ أَسْمَائِهِ الَّتِي كَانَ يُسَمَّى بِهَا فِي الدُّنْيَا - حَتَّى يَنْتَهِي بِهَا إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَيُسْتَفْتَحُ لَهُ فَلَا يُفْتَحُ لَهُ " ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سم الْخياط)»» فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: اكْتُبُوا كِتَابَهُ فِي سِجِّين فِي الْأَرْض السُّفْلى فتطرح روحه طرحا»» ثُمَّ قَرَأَ: (وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرّيح فِي مَكَان سحيق)»» فَتُعَادُ رُوحُهُ فِي جَسَدِهِ وَيَأْتِيهِ مَلَكَانِ فَيُجْلِسَانِهِ فَيَقُولَانِ لَهُ: مَنْ رَبُّكَ: فَيَقُولُ: هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي فَيَقُولَانِ لَهُ: مَا دِينُكَ؟ فَيَقُولُ: هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي فَيَقُولَانِ لَهُ: مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ؟ فَيَقُولُ: هَاهْ هَاهْ لَا أَدْرِي فَيُنَادِي مُنَادٍ مِنَ السَّمَاءِ أَن كذب عَبدِي فأفرشوا لَهُ مِنَ النَّارِ وَافْتَحُوا لَهُ بَابًا إِلَى النَّارِ فَيَأْتِيهِ حَرُّهَا وَسَمُومُهَا وَيُضَيَّقُ عَلَيْهِ قَبْرُهُ حَتَّى تَخْتَلِفَ فِيهِ أَضْلَاعُهُ ص:٥١ وَيَأْتِيهِ رَجُلٌ قَبِيحُ الْوَجْهِ قَبِيحُ الثِّيَابِ مُنْتِنُ الرِّيحِ فَيَقُولُ أَبْشِرْ بِالَّذِي يسوؤك هَذَا يَوْمُكَ الَّذِي كُنْتَ تُوعَدُ فَيَقُولُ: مَنْ أَنْتَ؟ فَوَجْهُكَ الْوَجْهُ يَجِيءُ بِالشَّرِّ فَيَقُولُ: أَنَا عَمَلُكَ الْخَبِيثُ فَيَقُولُ: رَبِّ لَا تُقِمِ السَّاعَةَ»» وَفِي رِوَايَة نَحوه وَزَاد فِيهِ:»» إِذَا خَرَجَ رُوحُهُ صَلَّى عَلَيْهِ كُلُّ مَلَكٍ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَكُلُّ مَلَكٍ فِي السَّمَاءِ وَفُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ لَيْسَ مِنْ أَهْلِ بَابٍ إِلَّا وَهُمْ يَدْعُونَ اللَّهَ أَنْ يُعْرَجَ بِرُوحِهِ مِنْ قِبَلِهِمْ. وَتُنْزَعُ نَفْسُهُ يَعْنِي الْكَافِرَ مَعَ الْعُرُوقِ فَيَلْعَنُهُ كُلُّ مَلَكٍ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَكُلُّ مَلَكٍ فِي السَّمَاءِ وَتُغْلَقُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ لَيْسَ مِنْ أَهْلِ بَابٍ إِلَّا وَهُمْ يَدْعُونَ اللَّهَ أَنْ لَا يُعْرِجَ رُوحَهُ مِنْ قبلهم ". رَوَاهُ أَحْمد

1630. बराअ बिन अजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलल्लाह ﷺ के साथ एक अंसारी शख़्स की जनाजे में शरीक हुए, हम कब्र तक पहुंच गए, अभी इसकी लहद तैयार नहीं हुई थी, रसूलल्लाह ﷺ बैठ गए, तो हम भी आप के पास बैठ गए, गोया हमारे सर पर परिंदे हो, आपके हाथ में एक लकड़ी थी, जिससे आप जमीन कुरेद रहे थे, आप ﷺ ने सिर ऊपर उठाया तो फरमाया, अजाबे कब्र से अल्लाह की पनाह तलब करो, आपने दो

या तीन बार ऐसा फरमाया, फिर फरमाया मोमिन बंदा जब दुनिया से राब्ता तोड़कर आखिरत की तरफ मुतवज्जे होता है तो सूरज की तरह चमकते दमकते सफेद चेहरे वाले फरिश्ते जन्नत की खुशबू और जन्नती कफन लेकर इसके पास आते हैं, हत्ता वह हद्दे नजर तक इसके पास से बैठ जातेहैं फिर मलिकुल मौत अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाते हैं हत्ता कि वह इसके सिर के पास बैठकर कहते हैं पकिजा रूह अल्लाह की मगफिरत और इसकी रजामंदी की तरफ चल, फरमाया: वह ऐसे निकलती है जैसे पानी का कतरा निकलता है, वह इसको अखज कर लेता है, जब वह इसे अखज कर लेता है तो वह (फरिश्ते) इसे आंख झपकाने के बराबर भी इसके पास नहीं छोड़ते हत्ता कि वह इसे लेकर इस कफन और इस खुशबू में लपेट लेते हैं और फिर इस में से जमीन पर पाए जाने वाली बेहतरीन कस्तूरी की खुशबू निकलती है, फरमाया: वह फरिश्ते इसे लेकर ऊपर की तरफ बुलंद होते हैं यह दीगर फरिश्तों की जमात के पास से गुजरते हैं तो वह पूछते हैं यह खुशबू कैसी है? तो वह इसकी दुनिया के नामों में से बेहतरीन नाम लेकर बताते हैं कि यह फलां बिन फलां की रूह है हत्ता कि वह इसे लेकर आसमानी दुनिया तक पहुंचते हैं, और इसके लिए दरवाजे खोलने की इजाज़त तलब करते हैं तो वह इनके लिए खोल दिया जाता है, फिर हर आसमान के मुकर्रम फरिश्ते अगले आसमान तक इसके साथ जातेहैं, ताकि इसे सातों आसमान तक पहुंचा दिया जाता है, तो अल्लाह अज्ज़वजल फरमातेहैं मेरे बंदे का नामा ए आमाल इल्लिय्यीन में लिख दो और इसे वापस दुनिया की तरफ ले जाओ, क्योंकि मैंने इन्हें इसी से पैदा किया है इसी में इन्हें लौटाउंगा और दोबारा फिर इसी से इन्हें निकालूंगा, फरमाया: इसकी रूह इसके जिस्म में लौटा दी जाती है, तो दो फरिश्ते इसके पास आते हैं और इसे बैठा कर पूछते हैं, तेरा रब कौन है? तो वह कहता है मेरा रब्ब अल्लाह है, फिर वह इस से पूछते हैं तेरा दीन क्या है? वह कहता है मेरा दीन इस्लाम है, फिर वह पूछते हैं यह आदमी जो तुम्हें मबउस किया गया कौन है? तो वह कहता है वह अल्लाह के रसूल! ﷺ है वह पूछते हैं तुम्हें कैसे पता चला, वह कहता है मैंने अल्लाह की किताब पड़ी तो मैं इस पर ईमान लाया और इसकी तस्दीक की, फिर आसमान से आवाज आती है मेरे बंदे ने सच कहा इसके लिए जन्नत बिछौना बिछा दो, इसे जन्नती लिबास पहना दो, इसके लिए जन्नत की तरफ एक दरवाजा खोलो, फरमाया: वहां से हवा के झोंके और खुशबू इसके पास आती है, और हद्दे नजर उसके कबर को कुशादा कर दिया जाता है, फरमाया: खूबसूरत चेहरे, खूबसूरत लिबास और बेहतरीन खुशबू वाला एक शख़्स इसके पास आता है, तो वह कहता है इस चीज से खुश होजा जो चीजें तुझे खुश कर दे, यह वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया जाता था, तो वह इस से पूछता है तू कौन है, तेरा चेहरा भलाई लाने वाला चेहरा है, वह जवाब देता है मैं तेरा अमल सालेह हूं, वह कहता है मेरे रब कयामत कायम फर्मा, मेरे रब कयामत कायम फर्मा, ताकि मैं अपने वालों की तरफ चला जाऊं, फरमाया: जब काफीर दुनिया से राब्ता मुन्कता करके आखिरत की तरफ तवज्जो करता है, तो सिया चेहरे वाले फरिश्ते बालों से बना हुआ एक कंबल लेकर आसमान से नाज़िल होते हैं, वह इससे हुदूदे नजर के फासले तक बैठ जाते हैं, फिर मलीकुल मौत तशरीफ़ लाते है हत्ता कि इसके सर के पास बैठ जाते हैं, तो कहते हैं खबीस रूह, अल्लाह के नाराजगी की तरफ चल, फरमाया: वह (रूह) इस के जसद में फैल जाती है, तो वह इसे ऐसे खींचता है जैसे लोहे की सलाख को गिले भट्टी से खिंचा जाता है, वह (मलिकुल मौत) इसे अखज कर लेता है, जब वह इसे अखज करता है, तो वह फरिश्ते पलक झपकने के बराबर भी इसे इसके हाथ में नहीं रहने देते, हत्ता कि वह इसे इस बालों से बने हुए कंबल में लपेट लेते है, और इससे जमीन के मुर्दार से निकलने वाली इंतिहाई बुरी बदबू निकलती है, वह इस से लेकर ऊपर चढ़ते हैं तो वह फरिश्ते की जिस जमात के पास से गुजरते हैं, तो वह पूछते हैं कैसी खबीसरूह है? वह कहते हैं फलां बिन फलां की और वह इसका दुनिया का इन्तिहाई कबिह नाम लेकर बताते है, हत्ता कि इसे आसमानी दुनिया तक ले जाया जाता

है, इसके बाद इसके लिए दरवाजे खोलने के लिए दरख्वास्त की जाती है, तो इसके लिए दरवाजा नहीं खोला जाता, फिर रसूलल्लाह ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: ” इनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाएंगे और वह जन्नत में भी दाखिल नहीं होंगे हत्ता कि ऊंट सुई के सुराख में से गुजर जाए” अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है, इसकी किताब को सबसे निचले जमीन में सिज्जिन में लिख दो, फिर इसकी रूह को शिद्दत के साथ फेंक दिया जाता है, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा, तो अब परिंदे इसे उचक लिए या हुए किसी दूर जगह पर फेंक दें” इसकी रूह इसके जिस्म में लौटा दी जाती है, और दो फरिश्ते इसके पास आते हैं और इस से पूछते हैं तेरा रब कौन है? वह हैरतज़दा हो कर कहता है, हाय हाय मैं नहीं जानता, फिर वह से पूछते हैं तेरा दीन क्या है? तो वह हैरतज़दा हो कर कहता है हाय हाय अफसोस मैं नहीं जानता, फिर वह पूछते हैं यह शख़्स जो तुम में माबुस किया गया कौन है? तो वह कहते हैं हाय अफसोस मैं नहीं जानता, आसमान से आवाज आती है इसने झूठ बोला इसके लिए जहन्नम से बिछौना बिछा दो और इसके लिए जहन्नम की तरफ एक दरवाजा खोल दो, वहां से गर्मी और गर्म हवा आती रहेगी, और इसकी कब्र को इस कदर तंग कर दिया जाएगा के इसकी पसलीए एक दूसरे के अंदर दाखिल हो जाएगी, और एक क़बिह चेहरे वाला शख़्स क़बिह लिबास और इंतिहाई बदबूदार हालत में इसके पास आएगा और इससे कहेगा तुम्हें ऐसी चीजों की खुशखबरी हो जो तुझे गमजदा करें वैसे यह तेरा वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया जाता था, वह पूछेगा तू कौन है? तेरे चेहरे से किसी खैरियत की तवक़्क़ो नहीं, वह जवाब देगा: मैं तेरा खबीस अमल हूं, तो वह कहेगा मेरे रब कयामत काईम न करना| # एक दूसरी रिवायत में भी इसी तरह है लेकिन इस में यह इजाफा है: जब इस (मोमिन) की रूह निकलती है तो ज़मीन व आसमान के माबिन और आसमान के तमाम फ़रिश्ते इस के लिए रहमत की दुआ तलब करते हैं, इस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ करते हैं की इस की रूह इन की तरफ से बुलंद कि जाए और इस यानि काफ़िर की रूह रगों समेत खीच ली जाती है और ज़मीन व आसमान के मबिन वाले तमाम फ़रिश्ते और आसमान वाले तमाम फ़रिश्ते इस पर लानत करते हैं, आसमान के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और तमाम दरबान फ़रिश्ते अल्लाह से दुआ करते हैं की इस की रूह को हमारी तरफ से बुलंद न किया जाए| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 287288 ح 18733) و ابوداؤد (4753) [و صححه البيهقى فى شعب الايمان (395) و اثبات عذاب القبر)]

١٦٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لَمَّا حَضَرَتْ كَعْبًا الْوَفَاةُ أَتَتْهُ أَمُّ بِشْرٍ بِنْتُ الْبَرَاءِ بْنِ مَعْرُورٍ فَقَالَتْ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنْ لَقِيتَ فُلَانًا فَاقْرَأْ عَلَيْهِ مِنِّي السَّلَامَ. فَقَالَ: غَفَرَ اللَّهُ لَكِ يَا أُمَّ بِشْرٍ نَحْنُ أَشْغَلُ مِنْ ذَلِكَ فَقَالَتْ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَمَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «إِنَّ أَرْوَاحَ الْمُؤْمِنِينَ فِي طَيْرٍ خُضْرٍ تَعْلُقُ بِشَجَرِ الْجَنَّةِ؟» قَالَ: بَلَى. قَالَتْ: فَهُوَ ذَاكَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي كِتَابِ الْبَعْثِ والنشور

1631. अब्दुल रहमान बिन काब अपने वालिद से रिवायत करते हैं की जब काब रदियल्लाहु अन्हु की वफात का वक़्त हुआ तो उम्मे बशर बिन्ते बराअ बिन मअरुर रदियल्लाहु अन्हा इन के पास आई तो उन्होंने कहा: अबू अब्दुल रहमान अगर तुम फलां (इन के बाप बराअ की रूह) से मुलाक़ात करो तो इसे मेरा सलाम कहना, इन्होंने कहा उम्मे बशर अल्लाह आप को माफ़ फरमाए, हमें इस की फुर्सत कहाँ मिलेगी, उम्मे बशर ने फ़रमाया: अबू अब्दुल रहमान क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए नहीं सुना: मोमिन की रूहें शब्ज परिंदों (के जिस्म

में) जन्नत की दरख्तों से खाती होगी, उन्होंने कहा, हाँ सुना है, तो उम्मे बशर ने फ़रमाया: पस यही वह है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابن ماجہ (1449) و البیھقی فی کتاب البعث و النشور (223226) * محمد بن اسحاق مدلس و لم اجد یصریح سماعہ فالسند ضعیف ولاصل الحدیث شواھد عند احمد 6 / 424425 و 3 / 455) و غیرہ

١٦٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّا نسمَة الْمُؤمن طير طَيْرٌ تَعْلُقُ فِي شَجَرِ الْجَنَّةِ حَتَّى يُرْجِعَهُ اللَّهُ فِي جَسَدِهِ يَوْمَ يَبْعَثُهُ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالنَّسَائِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي كتاب الْبَعْث والنشور

1632. अब्दुल रहमान बिन काब अपने वलीद से रिवायत करते हैं, वह बयान किया करते थे की रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मोमिन की रूह परिंदे की शकल में जन्नत की दरख्त से खाती है हत्ता कि अल्लाह जिस रोज़ इसे उठाएगा तो इस के जिस्म में लौटा देगा | (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (1 / 240 ح 569 وھو حدیث صحیح) و النسائی (4 / 108 ح 2075) و البیھقی فی البعث و النشور (224)

١٦٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَهُوَ يَمُوتُ فَقُلْتُ: اقْرَأْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السَّلَام. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1633. मुहम्मद बिन मुन्कदिर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जब जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु पर निज़ा का आलम तारी था तो मैं इन के पास गया तो मैंने इन्हें कहा: रसूलुल्लाह ﷺ को सलाम कहना | (सहीह)

صحیح : رواہ ابن ماجہ (1450) [و احمد (3 / 69 ح 11682 ، 4 / 391 ح 19711) و صححہ البوصیری]

بَاب غسل الْمَيِّت وتكفينه • मय्यत को गुस्ल और कफ़न देने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٦٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نُغَسِّلُ ابْنَتَهُ فَقَالَ: اغْسِلْنَهَا ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكِ إِنْ رَأَيْتُنَّ ذَلِكَ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ وَاجْعَلْنَ فِي الْآخِرَةِ كَافُورًا أَوْ شَيْئًا مِنْ كَافُورٍ فَإِذَا فَرَغْتُنَّ فَآذِنَّنِي فَلَمَّا فَرَغْنَا آذناه فَأَلْقى إِلَيْنَا حقوه وَقَالَ: «أَشْعِرْنَهَا إِيَّاهُ» وَفِي رِوَايَةٍ: " اغْسِلْنَهَا وِتْرًا: ثَلَاثًا أَوْ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا وَابْدَأْنَ بِمَيَامِنِهَا وَمَوَاضِعِ الْوُضُوءِ مِنْهَا ". وَقَالَتْ فَضَفَّرْنَا شَعَرَهَا ثَلَاثَةَ قُرُونٍ فألقيناها خلفهَا

1634. उम्मे अतिय्या रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमरे पास तशरीफ़ लाए जबकि हम आप की बेटी ग़ुस्ल दे रहे थे, आप ने फ़रमाया: इसे तिन या पांच मरतबा या अगर इस से ज्यादह मरतबा तुम महसूस करो तो पानी और बेरी के पत्तो से ग़ुस्ल दो और आखिरी मरतबा काफ़ूर या काफ़ूर जैसी चीज़ इस में मिला लो, जब तुम फारिग़ हो जाओ तो मुझे इत्तेला करना, जब हम फारिग़ हो गए तो हम ने आप को इत्तेला कर दिया, आप ﷺ ने अपनी चादर हमरी तरफ फेंक कर फ़रमाया इसे इसके जिस्म पर डाल दो, , (फिर इस चादर के ऊपर कफ़न पहनाओ) और एक रिवायत में है: इसे ताक अदद तिन या पांच या सात मरतबा ग़ुस्ल दो, दाहने तरफ वुज़ू की जगह से शुरू करो और इन्होंने (यानि उम्मे अतिय्या रदियल्लाहु अन्हा) ने फ़रमाया: हम ने इस के बालो के तिन चुटिया गुन्धी और इन्हें इस के पीछे डाल दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1263) و مسلم (37 / 939)، (2168 و 2169)

١٦٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُفِّنَ فِي ثَلَاثَةِ أَثْوَابٍ يَمَانِيَّةٍ بِيضٍ سَحُولِيَّةٍ مِنْ كُرْسُفٍ لَيْسَ فِيهَا قَمِيصٌ وَلَا عِمَامَة

1635. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को यमन के तिन सफ़ेद सूती कपड़ो में कफ़न दिया गया, जिन में न कमीज़ थीं न इमामा | (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1264) و مسلم (45 / 941)، (2179)

١٦٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَفَّنَ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ فليحسن كَفنه» . رَوَاهُ مُسلم

1636. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई अपने भाई को कफ़न दे तो इसे बेहतर तरीके से कफन दे | (मुस्लिम)

رواه مسلم (49 / 943)، (2185)

١٦٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا كَانَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَصَتْهُ نَاقَتُهُ وَهُوَ مُحْرِمٌ فَمَاتَ ن فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اغْسِلُوهُ بِمَاءٍ وَسِدْرٍ وَكَفِّنُوهُ فِي ثَوْبَيْهِ وَلَا تَمَسُّوهُ بِطِيبٍ وَلَا تُخَمِّرُوا رَأْسَهُ فَإِنَّهُ يُبْعَثُ يَوْم الْقِيَامَة ملبيا»»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ خَبَّابٍ: قَتْلُ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ فِي بَابِ جَامِعِ الْمَنَاقِبِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

1637. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि एक आदमी हालत ए इहराम में नबी ﷺ के साथ था तो इस की ऊंटनि ने इसे नीचे गिरा कर इस की गरदन तोड़ दी, तो, रसूलुल्लाह ने फ़रमाया इसे पानी और बेरी के पत्तो से ग़ुस्ल दो, इसे इस के इन्ही (इहराम) के दो कपड़ो में कफ़न दो और इसे न ख़ुशबू लगाओ और न इस के सर को ढांपना, क्यूंकि वह कियामत के रोज़ तल्बि: पुकारता हुआ उठेगा| बुखारी मुस्लिम और हम हम मुसाब बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु की शहादत के मुताल्लिक़ खब्ब रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस जामे अल मुनाक़ब के बाब में इंशा अल्लाह बयान करेंगे| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1267) و مسلم (93 / 1306)، (2891) 0 حديث حباب رضى الله عنه ياتى (1160)

بَاب غسل الْمَيِّت وتكفينه • मय्यत को गुस्ल और कफ़न देने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٦٣٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْبَسُوا مِنْ ثِيَابِكُمُ الْبَيَاضَ فَإِنَّهَا مَنْ خَيْرِ ثِيَابِكُمْ وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَاكُمْ وَمِنْ خَيْرِ أَكْحَالِكُمُ الْإِثْمِدُ فَإِنَّهُ يُنْبِتُ الشّعْر ويجلوا الْبَصَر» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1638. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सफेद कपड़े पहना करो, क्यूंकि वह तुम्हारा बेहतर लिबास है, अपने मुर्दों को भी इन्ही में कफ़न दो, अस्मद तुम्हारा बेहतर सुरमा है क्यूंकि वह पलके दराज़ करता है और नज़र को तेज़ करता है| अबू दावुद और तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने "अपने मुर्दों को" तक रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4061) و الترمذى (994 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3566)

١٦٣٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَغَالَوْا فِي الْكَفَنِ فَإِنَّهُ يُسْلَبُ سَلْبًا سَرِيعًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1639. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : महंगा कफ़न न दिया करो क्यूंकि वह तो जल्द ही पोशीदा हो जाता है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3154) * عمرو بن هاشم : لين الحديث ، و اسماعيل بن ابى خالد مدلس و عنعن و فى السند انقطاع بين عامر الشعبى و على رضى الله عنه

١٦٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُ لَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ. دَعَا بِثِيَابٍ جُدُدٍ فَلَبِسَهَا ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُولُ: «الْمَيِّتُ يُبْعَثُ فِي ثِيَابِهِ الَّتِي يَمُوتُ فِيهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1640. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब वह मौत के करीब हुए तो इन्होंने नया लिबास मंगवा कर पहना, फिर फ़रमाया : कि मैंने रासुलुल्ल्हा ﷺ को फरमाते हुए सुना : मय्यत को इस के इन्ही कपड़ो में उठाया जाएगा जिन में इसे मौत आई है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3114)

١٦٤١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خَيْرُ الْكَفَنِ الْحُلَّةُ وَخَيْرُ الْأُضْحِيَةِ الْكَبْشُ الْأَقْرَنُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1641. उबदा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया : जोड़ा (आजार और चादर) बेहतरीन कफ़न है जबकि सींगो वाला मेंढा बेहतरीन क़ुरबानी है| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3156) [و ابن ماجه (1473) و صححه الحاکم (4 / 228) و وافقه الذهبی] * حاتم بن ابی نصر : حسن الحدیث و ثقه ابن حبان و الحاکم و غیرهما

١٦٤٢ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ

1642. इमाम तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने इसे अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1517 وقال : غریب) و ابن ماجه (3130) [و سندہ ضعیف و الحدیث السابق (1641) یغنی عنه] * عفیر بن معدان ضعیف

١٦٤٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَتْلَى أُحُدٍ أَنْ يِنْزِع عَنْهُم الْحَدِيدُ وَالْجُلُودُ وَأَنْ يُدْفَنُوا بِدِمَائِهِمْ وَثِيَابِهِمْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

1643. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने शुहदा ए अहद के बारे में फरमाए : इन के चमड़े की पोस्तीने (ऊनि चादरे वगैरा) और हथियार उतार लो और इन के खून समेत इन के कपड़ो में दफ़न कर दो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3134) و ابن ماجه (1515) * عطاء بن السائب : اختلط و علی بن عاصم ضعیف

بَاب غسل الْمَيِّت وتكفينه • मय्यत को गुस्ल और कफ़न देने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٦٤٤ - (صَحِيح) عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ أُتِيَ بِطَعَامٍ وَكَانَ صَائِمًا فَقَالَ: قُتِلَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي كُفِّنَ فِي بُرْدَةٍ إِنْ غُطِّيَ رَأْسُهُ بَدَتْ رِجْلَاهُ وَإِنْ غُطِّيَ رِجْلَاهُ بَدَا رَأْسُهُ وَأُرَاهُ قَالَ: وَقُتِلَ حَمْزَةُ وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي ثُمَّ بُسِطَ لَنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا بُسِطَ أَوْ قَالَ: أُعْطِينَا مِنَ الدُّنْيَا مَا أُعْطِينَا وَلَقَدْ خَشِينَا أَنْ تَكُونَ حَسَنَاتُنَا عُجِّلَتْ لَنَا ثُمَّ جَعَلَ يَبْكِي حَتَّى تَرَكَ الطَّعَامَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1644. सईद बिन इब्राहीम रहिमहुल्लाह अपने वालिद से तिवायत करते हैं की अब्दुलरहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु रोज़े से थे की (इफ्तार के लिए) इन के पास खाना लाया गया तो इन्होंने फ़रमाया : मुसअब बिन उमर रदियल्लाहु अन्हु शहीद कर दिए गए, जबकि वह मुझ से बेहतर थे इन्हें एक चादर में कफ़न दिया गया अगर इन का सर ढांपा जाता तो इन के पैर नंगे हो जाते और अगर इन के पैर ढांपे जाते तो इन का सर नंगा हो जाता, रावी कहते मेरे ख्याल है की इन्होंने फ़रमाया हमजा रदियल्लाहु अन्हु शहीद कर दिए गए जबकि वह मुझ से बेहतर थे फिर हम पर दुनिया की नेमत वाफिर कर दी गई, या फ़रमाया : हमें बहुत ज़्यादा दुनिया का माल व मता अता कर दिया गया के हमें अंदेशा हुआ के हमारी नेकियो का बदला हमें दुनिया ही में दे दिया गया है, फिर इन्होंने रोना शुरू कर दिया हत्ता के खाना भी तर्क कर दिया| (बुखारी)

رواه البخاری (4045)

١٦٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ أُبَيٍّ بَعْدَمَا أُدْخِلَ حُفْرَتَهُ فَأَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ فَوَضعه على رُكْبَتَيْهِ ن فَنَفَثَ فِيهِ مِنْ رِيقِهِ وَأَلْبَسَهُ قَمِيصَهُ قَالَ: وَكَانَ كسا عباسا قَمِيصًا ص:٥٢»»« الْمَشْي بالجنازة وَالصَّلَاة عَلَيْهَا

1645. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अब्दुल्लाह बिन उबई के पास आए जबकि इसे कबर में उतार दिया गया था, आप के हुक्म पर इसे बहार निकाला गया, आप ने इसे अपने घुटनों पर रखा और इस के जिस्म पर अपना लब मुबारक था और इसे अपनी कमीज़ पहनाई रावी बयान करते हैं, और इसे (अब्दुल्लाह बिन उबई) ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु को कमीज़ पहनाई थी| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (5795) و مسلم (2773)، (7025)

الْمَشْي بالجنازة وَالصَّلَاة عَلَيْهَا • जनाज़े के साथ जाने और जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٦٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَسْرِعُوا بِالْجَنَازَةِ فَإِنْ تَكُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُونَهَا إِلَيْهِ وَإِنْ تَكُ سِوَى ذَلِكَ فشر تضعونه عَن رقابك»

1646. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जनाज़ा जल्दी ले जाया करो अगर तो वह स्वालेह है तो फिर तुम इसे भलाई की तरफ ले जा रहे हो और अगर वह इस के अलावा है तो फिर वह एक शर है जिसे तुम अपनी गर्दनो से उतार रहे हो| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1315) و مسلم (50 / 944)، (2186)

١٦٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا وُضِعَتِ الْجَنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُونِي وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَت لأَهْلهَا: يَا وَيْلَهَا أَين يذهبون بِهَا؟ يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الْإِنْسَانَ وَلَو سمع الْإِنْسَان لصعق ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

1647. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब जनाज़े को रखा जाता है और लोग इसे कंधो पर उठा लेते है तो अगर वह नेक हो तो कहता है मुझे आगे पहुँचाओ और अगर वह स्वालेह न हो तो अपने घर वालो से कहता है तबाही हो तुम मुझे कहा ले जा रहे हो, इंसान के अलावा हर चीज़े इस की आवाज़ सुनते है और अगर इंसान सुन ले तो वह बेहोश हो जाए | (बुखारी)

رواه البخارى (1316)

١٦٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَأَيْتُمُ الْجَنَازَةَ فَقُومُوا فَمَنْ تَبِعَهَا فَلَا يَقْعُدْ حَتَّى تُوضَعَ»

1648. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाओ और जो शख़्स इस के साथ जाए तो वह इस वक़्त तक न बैठें हत्ता कि इसे रख दिया जाए | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1310) و مسلم (77 / 959)، (2221)

١٦٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: مَرَّتْ جَنَازَةٌ فَقَامَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقُمْنَا مَعَهُ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهَا يَهُودِيَّةٌ فَقَالَ: «إِنَّ الْمَوْتَ فَزَعٌ فَإِذَا رَأَيْتُمُ الْجِنَازَة فقوموا»

1649. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक जनाज़ा गुज़रा तो रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हो गए और हम भी आप के साथ खड़े हो गए फिर हम ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह तो एक यहूदी औरत का जनाज़ा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: मौत घबराहट वाली चीज़ है. जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाओ | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1311) و مسلم (78 / 960)، (2222)

١٦٥٠ - (صَحِيح) وَعَن عَليّ رَضِي الله عَنهُ قَالَ: رَأَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ ص:٥٢ فَقُمْنَا وَقَعَدَ فَقَعَدْنَا يَعْنِي فِي الْجَنَازَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي رِوَايَةِ مَالِكٍ وَأَبِي دَاوُدَ: قَامَ فِي الْجَنَازَةِ ثُمَّ قَعَدَ بَعْدُ

1650. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम ने रसूलुल्लाह ﷺ को जनाज़ा देख कर खड़े होते देखा तो हम भी खड़े हो गए और हम ने आप को बैठते देखा तो हम भी बैठ गए, और इमाम मालिक और अबू दावुद की रिवायत में है आप जनाज़ा देख कर खड़े हो गए फिर इस के बाद आप बैठ गए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (84 / 962)، (2230) و مالک (1 / 232 ح 552) و ابوداؤد (3175)

١٦٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اتَّبَعَ جَنَازَةَ مُسْلِمٍ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا وَكَانَ مَعَهُ حَتَّى يُصَلَّى عَلَيْهَا وَيُفْرَغَ مِنْ دَفْنِهَا فَإِنَّهُ يَرْجِعُ مِنَ الْأَجْرِ بِقِيرَاطَيْنِ كُلُّ قِيرَاطٍ مِثْلُ أُحُدٍ وَمَنْ صَلَّى عَلَيْهَا ثُمَّ رَجَعَ قَبْلَ أَنْ تُدْفَنَ فَإِنَّهُ يَرْجِعُ بقيراط»

1651. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स इमान और सवाब की नियत से किसी मुसलमान के जनाज़े में शरीक होता है उस के साथ रहता है हत्ता कि उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी जाती है और उस के दफना ने से फारिग़ हो जाता है तो वह दो किरात अजर के साथ वापस आता है हर किरात अहोद पहाड़ के मिसल है और जो शख़्स जनाज़ा पढ़ता है और इस के दफ़न होने से पहले वापस जाता है तो वह एक किरात अजर के साथ वापस आता है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1325) و مسلم (52 / 945)، (2189)

١٦٥٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَعَى لِلنَّاسِ النَّجَاشِيَّ الْيَوْمَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَخرج بِهِمْ إِلَى الْمُصَلَّى فَصَفَّ بِهِمْ وَكَبَّرَ أَرْبَعَ تَكْبِيرَات

1652. अबू हुरैरा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने नज्जाशी के फौत होने की, जिस रोज़ वह फौत हुए खबर सुनाई और आप सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हा को लेकर ईदगाह तशरीफ़ ले गए आप ने इन की सफे बनी और

चार तक्बिरे कही| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (1318) و مسلم (62 / 951)، (2204)

١٦٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ يُكَبِّرُ عَلَى جَنَائِزِنَا أَرْبَعًا وَأَنَّهُ كَبَّرَ عَلَى جَنَازَةٍ خَمْسًا فَسَأَلْنَاهُ فَقَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يكبرها. رَوَاهُ مُسلم

1653. अब्दुल रेहमान बिन अबी लैला बयान करते हैं, ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु नमाज़ ए जनाज़ा में चार तक्बिरे कहा करते थे, जबकि एक जनाज़े पर उन्होंने पांच तक्बिरे कही तो हम ने इन से सवाल किया, उन्होंने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ ऐसे भी कहा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (72 / 957)، (2216)

١٦٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: صَلَّيْتُ خَلْفَ ابْنِ عَبَّاسٍ عَلَى جَنَازَةٍ فَقَرَأَ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ فَقَالَ: لِتَعْلَمُوا أَنَّهَا سُنَّةٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1654. तल्हा बिन अब्दुल्लाह बिन ऑफ बयान करते हैं, मैंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के पीछे नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी तो उन्होंने (बुलंद आवाज़ से) सूरत उल फातिहा पढ़ी. और बाद में फ़रमाया : ताकि तुम जान लो की यह सुन्नत है | (बुखारी)

رواه البخارى (1335)

١٦٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى جَنَازَةٍ فَحَفِظْتُ مِنْ دُعَائِهِ وَهُوَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدنس وأبدله دَارا خيرا من دَاره وَأهلا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ وَأَدْخلهُ الْجنَّة وأعذه من عَذَاب الْقَبْر وَمن عَذَاب ص:٥٢ النَّار» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَقِهِ فِتْنَةَ الْقَبْرِ وَعَذَابَ النَّارِ» قَالَ حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنْ أَكُونَ أَنَا ذَلِكَ الْمَيِّت. رَوَاهُ مُسلم

1655. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बायान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी तो मैंने आप की दुआ याद कर ली, आप कह रहे थे: “ऐ अल्लाह! इसे माफ़ फरमा इस की बेहतरीन मेहमान नवाजी फरमा, इस की कब्र फराख फरमा, इस के गुनाह पानी, औलो और बरफ से धो डाल, इसे गुनाहों से इस तरह साफ कर दे जैसे तूने सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ किया है, इस के (दुनियावाले) घर से बेहतर घर, (दुनिया के) अहल से बेहतर अहल (खादिम वगैरह) और (दुनिया की) जौजा से बेहतर जौजा अता फरमा इसे जन्नत में दाखिल फरमा और अजाब ए कब्र निज़ अज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ रख, और एक रिवायत में है: “इसे फितन ए कबर और अजाब ए जहन्नम से महफ़ूज़ फरमा| रावी बयान करते हैं, : (आप ने इस क़दर दुआए की) के मैंने

तमन्ना की काश यह मौत मेरी होती | (मुस्लिम)

رواه مسلم (85 / 963)، (2232)

١٦٥٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَة لما توفّي سعد بن أبي وَقاص قَالَت: ادخُلُوا بِهِ الْمَسْجِد حَتَّى أُصَلِّي عَلَيْهِ فَأُنْكِرَ ذَلِكَ عَلَيْهَا فَقَالَتْ: وَاللَّهِ لَقَدْ صَلَّى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ابْنَيْ بَيْضَاءَ فِي الْمَسْجِدِ: سُهَيْلٍ وَأَخِيهِ. رَوَاهُ مُسلم

1656. अबू सलमा बिन अब्दुल रहमान से रिवायत है के जब सईद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु ने वफात पाई तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया इन्हें मस्जिद में ले आओ ताकी में भी जनाज़ा पढ़ सकू, लेकिन इन की यह बात कबूल न की गई तो इन्होंने फ़रमाया : अल्लाह की कसम रसूलुल्लाह ﷺ ने बयदा की दो बेटो सहल और इस के भाई की नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ी थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (101 / 973)، (2254)

١٦٥٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ مَاتَتْ فِي نِفَاسِهَا فَقَامَ وَسَطَهَا

1657. समुरा बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे हालत ए निफ़ास में फौत हो जाने वाली औरत की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी तो आप इस के बिच में खड़े हुए | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1332) و مسلم (87 / 964)، (2235)

١٦٥٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِقَبْرٍ دُفِنَ لَيْلًا فَقَالَ: «مَتَى دُفِنَ هَذَا؟» قَالُوا: الْبَارِحَةَ. قَالَ: «أَفَلَا آذَنْتُمُونِي؟» قَالُوا: دَفَنَّاهُ فِي ظُلْمَةِ اللَّيْلِ فَكَرِهْنَا أَنْ نُوقِظَكَ فَقَامَ فَصَفَفْنَا خَلفه فصلى عَلَيْهِ

1658. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक कब्र के पास से गुज़रे जहा गुज़िश्ता रात किसी को दफ़न किया गया था| आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे कब दफ़न किया गया? सहाबी ने अर्ज़ किया, गुज़िश्ता रात| आप ﷺ ने फ़रमाया : तुम ने मुझे क्यूँ न बताया? उन्होंने अर्ज़ किया, हम ने रात की तारीकी में इसे दफ़न किया था, इसलिए हम ने आप को बेदार करना मुनासिब न समझा, पस आप खड़े हुए तो हम ने आप के पीछे सफे बाँधी फिर आप ने इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1247) و مسلم (69 / 954)، (2213)

١٦٥٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ امْرَأَةً سَوْدَاءَ كَانَتْ تَقُمُّ الْمَسْجِدَ أَوْ شَابٌّ فَفَقَدَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَ عَنْهَا أَوْ عَنْهُ فَقَالُوا: مَاتَ. قَالَ: «أَفَلَا كُنْتُمْ آذَنْتُمُونِي؟» قَالَ: فَكَأَنَّهُمْ صَغَّرُوا أَمْرَهَا أَوْ أَمْرَهُ. فَقَالَ: «دلوني على قَبره» فدلوه فصلى عَلَيْهَا. قَالَ: «إِنَّ هَذِهِ الْقُبُورَ مَمْلُوءَةٌ ظُلْمَةً عَلَى أَهْلِهَا وَإِنَّ اللَّهَ يُنَوِّرُهَا لَهُمْ بِصَلَاتِي عَلَيْهِمْ» . وَلَفظه لمُسلم

1659. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक सियाह फाम खातून जो की मस्जिद की सफाई किया करती या कोई नोजवान था, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे न देखा तो आप ने इस के बारे में सवाल किया, सहाबी ने अर्ज़ किया, वह तो वफात पा चूका, आप ﷺ ने फ़रमाया तुम ने मुझे क्यूँ न बताया? रावी बयान करते हैं, गोया इन्होंने इस के मुआमले को कमतर समझा | आप ﷺ ने फ़रमाया मुझे इस की कब्र बताओ उन्होंने बता दिया तो आप ने वह नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया यह क़ब्रे अपने असहाब पर अंधेरो से भरी पड़ी है और बेशक अल्लाह मेरे नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ने की ज़रिए इन्हें मुन्नवर फरमा देता है | बुखारी, मुस्लिम और अल्फाज़ सहीह मुस्लिम के है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1337) و مسلم (71 / 956)، (2215) و اللفظ له

١٦٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ مَاتَ لَهُ ابْنٌ بِقُدَيْدٍ أَوْ بِعُسْفَانَ فَقَالَ: يَا كُرَيْبُ انْظُرْ مَا اجْتَمَعَ لَهُ مِنَ النَّاسِ. ص:٥٢ قَالَ: فَخَرَجْتُ فَإِذَا نَاسٌ قَدِ اجْتَمَعُوا لَهُ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: تَقُولُ: هُمْ أَرْبَعُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: أَخْرِجُوهُ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ رَجُلٍ مُسْلِمٍ يَمُوتُ فَيَقُومُ عَلَى جَنَازَتِهِ أَرْبَعُونَ رَجُلًا لَا يُشْرِكُونَ بِاللَّهِ شَيْئًا إِلَّا شَفَّعَهُمُ اللَّهُ فِيهِ» . رَوَاهُ مُسلم

1660. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के आज़ाद करदा गुलाम कुरय्ब इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की कुदय्द या उस्फान के मुकाम पर इन का बेटा फौत हो गया| उन्होंने फ़रमाया कुरय्ब देखो इस के (जनाज़े) के लिए कितने लोग जमा हो चुके हैं? रावी बयान करते हैं, मैं बाहर आया तो देखा के लोग जमा हो चुके थे मैंने आप को बताया तो उन्होंने पूछा वह चालीस है? उन्होंने कहा: जी हा, फिर इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: इसे ले चलो, क्यूंकि मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना : जो मुसलमान फौत हो जाए और फिर चालीस मुवाहिद (जो अल्लाह का शरीक नहीं ठहराते) इस कि नमाज़े जनाज़ा पढ़ ले तो अल्लाह इस शख़्स के बारे में इन की शफाअत कुबूल फरमाता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 948)، (2199)

١٦٦١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَا مِنْ مَيِّتٍ تُصَلِّي عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ يَبْلُغُونَ مِائَةً كُلُّهُمْ يَشْفَعُونَ لَهُ: إِلَّا شفعوا فِيهِ ". رَوَاهُ مُسلم

1661. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: जिस मय्यत पर सौ

मुसलमान जनाज़ा पढ़े और वह तमाम इस के हक़ में सिफारिश करे तो इस के हक़ में इन की सिफारिश कुबूल की जाती है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 947)، (2198)

١٦٦٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَرُّوا بِجَنَازَةٍ فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا خَيْرًا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَجَبَتْ» ثُمَّ مَرُّوا بِأُخْرَى فَأَثْنَوْا عَلَيْهَا شَرًّا. فَقَالَ: «وَجَبَتْ» فَقَالَ عُمَرُ: مَا وَجَبَتْ؟ فَقَالَ: «هَذَا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ خَيْرًا فَوَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَهَذَا أَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِ شَرًّا فَوَجَبَتْ لَهُ النَّارُ أَنْتُم شُهَدَاء الله فِي الأَرْض» . وَفِي رِوَايَةٍ: «الْمُؤْمِنُونَ شُهَدَاءُ اللَّهِ فِي الْأَرْضِ»

1662. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, वह एक जनाज़े के पास से गुज़रे तो उन्होंने इस की अच्छाई बयान की, जिस पर नबी ﷺ ने फ़रमाया: वाजिब हो गई| फिर वह दूसरे जनाज़े के पास से गुज़रे तो उन्होंने इस की बुराई की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: वाजिब हो गई”, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: क्या वाजिब हो गई? आप ﷺ ने फ़रमाया तुम ने इस की अच्छाई बयान की तो इस के लिए जन्नत वाजिब हो गई और जिस की तुम ने बुराई बयान की तो इस के लिए जहन्नम वाजिब हो गई, तुम ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हो | बुखारी मुस्लिम और एक रिवायत में है मोमिन पर अल्लाह के गवाह हो | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1367) و مسلم (60 / 949)، (2200)

١٦٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا مُسْلِمٍ شَهِدَ لَهُ أَرْبَعَةٌ بِخَيْرٍ أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ» قُلْنَا: وَثَلَاثَةٌ؟ قَالَ: «وَثَلَاثَةٌ» . قُلْنَا وَاثْنَانِ؟ قَالَ: «وَاثْنَانِ» ثُمَّ لم نَسْأَلهُ عَن الْوَاحِد. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1663. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस मुसलमान के बारे में चार आदमीं गवाही दे की वह अच्छा है तो अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा, “हम ने अर्ज़ किया, और तिन आदमी? आप ﷺ ने फ़रमाया तिन आदमी भी, हम ने अर्ज़ किया, दो आदमी? आप ﷺ ने फ़रमाया दो आदमीं भी, फिर हम ने एक के बारे में आप से नहीं पूछा| (बुखारी)

رواه البخاری (1368)

١٦٦٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسُبُّوا الْأَمْوَاتَ فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى مَا قدمُوا» رَوَاهُ البُخَارِيّ

1664. आइशा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया फौत शुदा को बुरा भला मत कहो क्यूंकि वह तो अपनी सज़ा पा चुके| (बुखारी)

رواه البخاری (1393)

١٦٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يجمع بَين الرجلَيْن فِي قَتْلَى أُحُدٍ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ ثُمَّ يَقُولُ: «أَيُّهُمْ أَكْثَرُ أَخْذًا لِلْقُرْآنِ؟» فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدِهِمَا قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ وَقَالَ: «أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . وَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ بِدِمَائِهِمْ وَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يُغَسَّلُوا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1665. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ शुहदा ए उहद के दो दो आदमी को एक एक कपड़े में इकठ्ठा करते और फरमाते इन में से कुरान का इल्म किस को ज़्यादा था? जब इन में से किसी एक की तरफ इशारा कर दिया जाता तो आप ﷺ इसे पहले लहद में उतारते और फरमाते रोज़े कियामत इन लोगों की गवाही दूंगा| आप ने इन्हें इसी खून आलूद हालत में दफ़न करने का हुक्म फ़रमाया, आप ने इन की न नमाज़े जनाजा पढ़ी न इन्हें ग़ुस्ल दिया गया | (बुखारी)

رواه البخاری (1347)

١٦٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِفَرَسٍ مَعْرُورٍ فَرَكِبَهُ حِينَ انْصَرَفَ مِنْ جَنَازَةِ ابْنِ الدَّحْدَاحِ وَنَحْنُ نمشي حوله. رَوَاهُ مُسلم

1666. जाबिर बिन समुरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ इब्ने दह्दाह की नमाज़े जनाज़ा से फारिग़ हुए तो काठी के बगैर एक घोडा आप की खिदमत में पेश किया गया जिस पर आप सवार हो गए जबकि हम आप के इर्द गिर्द पैदल चलते रहे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (89 / 965)، (2238)

الْمَشْي بالجنازة وَالصَّلَاة عَلَيْهَا • जनाज़े के साथ जाने और जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٦٦٧ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الرَّاكِبُ يَسِيرُ خَلْفَ الْجَنَازَةِ والماشي يمشي خلفهَا وأمامها وَعَن يَمِينهَا وَعَن يسارها قَرِيبا مِنْهَا وَالسَّقْطُ يُصَلَّى عَلَيْهِ وَيُدْعَى لِوَالِدَيْهِ بِالْمَغْفِرَةِ وَالرَّحْمَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَفِي رِوَايَةِ أَحْمَدَ وَالتِّرْمِذِيِّ وَالنَّسَائِيِّ وَابْن مَاجَه قَالَ: «الرَّاكِب خلف الْجنَازَة وَالْمَاشِي حَيْثُ شَاءَ مِنْهَا وَالطِّفْلُ يُصَلَّى عَلَيْهِ» وَفِي المصابيح عَن الْمُغيرَة بن زِيَاد

1667. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : सवार शख़्स जनाज़े के पीछे जबकि पेदल चलने वाला इस के पीछे, इस के आगे, इस के दाएँ और इस के बाएँ इस के करीब करीब चलेगा और नामुकम्मल पैदा होने वाले बच्चे की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी जाएगी और इस के वालिदेन के लिए मगफिरत व रहमत की दुआ की जाएगी | अहमद, तिरमिजी और इब्ने माजा की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया सवार

जनाज़े के पीछे जबकि पैदल चलने वाला जैसा चाहे चल सकता है, और बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी , मसाबिह में मुगिरा बिन ज़ियाद से मरवी है| (सहीह,हसन)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (3180) و احمد (4 / 247) و الترمذی (1031 وقال : حسن صحیح) و النسائی (4 / 58 ح 1950) و ابن ماجه (1481)

١٦٦٨ - (صَحِيح) وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ يَمْشُونَ أَمَامَ الْجَنَازَةِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ وَأَهْلُ الْحَدِيثِ كَأَنَّهُمْ يَرَوْنَهُ مُرْسَلًا

1668. जोहरी सलीम से और वह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ अबु बक्र और उस्मान रदियल्लाहु अन्हुमा को जनाज़े के आगे चलते हुए देखा | अहमद, अबू दावुद, तिरमिजी, नसई, इब्ने माजा में है और इमाम तिरमिजी ने फ़रमाया : और मुहद्दिसन इसे मुरसल समझते है | (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (2 / 8 ح 4539) و ابوداؤد (3179) و الترمذی (1007 و اعله) و النسائی (4 / 56 ح 1946) و ابن ماجه (1482) * الراجح انه حدیث صحیح و اعل بما لا یقدح

١٦٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْجَنَازَةُ مَتْبُوعَةٌ وَلَا تَتْبَعُ لَيْسَ مَعَهَا مَنْ تَقَدَّمَهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو ماجد الرَّاوِي رجل مَجْهُول

1669. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जनाज़े के पीछे चलना चाहिए इस के आगे नहीं चलना चाहिए और जो शख़्स इस के आगे चलता है तो वह (शरइ लिहाज से) इस के साथ नहीं, तिरमिजी, अबुदावुद, इब्ने माजा तिरमिजी ने फ़रमाया अबू माजिद रावी मजहूल है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1011) و ابوداؤد (3184) و ابن ماجه (1484)

١٦٧٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " من تبع جَنَازَة وحلمها ثَلَاثَ مَرَّاتٍ: فَقَدْ قَضَى مَا عَلَيْهِ مِنْ حَقِّهَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1670. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स जनाज़े के साथ चले और तीन मरतबा इसे उठाए इस ने अपने जिम्मे उस का हक अदा कर दिया | तिरमिजी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه الترمذی (1041) * فیه ابو المهزم : متروک

١٦٧١ - (ضَعِيف) وَقَدْ رَوَى فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» : أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَمَلَ جَنَازَةَ سَعْدِ ابْن معَاذ بَين العمودين

1671. शरह सुनन में मरवी है की नबी ﷺ ने सअद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु के जनाज़े को दो पायो के दरमियान से उठाया | (इस की कोई असल नहीं)

لا اصل له ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 337 بعد ح 1488 بدون [و ابن سعد فى الطبقات الكبرىٰ (3 / 431) عن محمد بن عمر الواقدى عن ابراهيم بن اسماعيل بن ابى حبيبة عن شيوخ من بنى عبد الاشهل به الخ والواقدى كذاب]

١٦٧٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةٍ فَرَأَى نَاسًا رُكْبَانًا فَقَالَ: «أَلَا تَسْتَحْيُونَ؟ إِنَّ مَلَائِكَةَ اللَّهِ عَلَى أَقْدَامِهِمْ وَأَنْتُمْ عَلَى ظُهُورِ الدَّوَابِّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ نَحْوَهُ وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: ص:٥٢ وَقد روى عَن ثَوْبَان مَوْقُوفا

1672. सोबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के साथ एक जनाज़े में शरीक हुए, आप ﷺ ने कुछ लोगों को सवारीयों पर देखा तो फ़रमाया : क्या तुम्हें हया नहीं आती के फ़रिश्ते तो पैदल चल रहे हैं और तुम सवारियों पर हो | तिरमिजी, इब्ने मजन और अबू दावुद ने भी इसी तरह रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया यह सोबन रदियल्लाहु अन्हु से मौकूफ रिवायत की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (1012) و ابن ماجه (1480) و سندہما ضعيف ، فيه ابوبكر بن ابى مريم ضعيف مختلط ، و رواه ابوداؤد (3177) من طريق آخر عن ثوبان بى و ليس عنده :'' الاتستحيون '' الخ و فى سنده يحيى بن ابى كثير وهو مدلس و عنعن

١٦٧٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَرَأَ عَلَى الْجَنَازَةِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1673. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने नमाज़े जनाज़ा में सुरह फातिहा पढ़ी| (सहीह,ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (1026 وقال : ليس اسناده بذالک القوى ، ابراهيم بن عثمان هو ابو شيبة) الواسطى : منكر الحديث) و ابوداؤد (لم اجده ، و رواه : 3198 موقوفًا و سنده صحيح) و ابن ماجه (1495) * ابو شيبة هذا متهم و حديث البخارى (1335) و ابى داود يغنى عنه ، انظر الحديث السابق (1654)

١٦٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَى الْمَيِّتِ فَأَخْلِصُوا لَهُ الدُّعَاءَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1674. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम जनाज़ा पढ़ो तो मय्यत के लिए खुलूस के साथ दुआ करो | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3199) و ابن ماجه (1497) [و ابن حبان (الموارد : 754755)

١٦٧٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى عَلَى الْجَنَازَةِ قَالَ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا. اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ. اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ ص:٥٢ وَابْنُ مَاجَهْ

1675. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़े जनाज़ा पढ़ते तो यह दुआ फरमाते: “ऐ अल्लाह हमारे जिन्दो, हमारे मुर्दों, हमारे मौजूद, हमारे गैर मौजूद हमारे छोटो और हमारे बड़ो और हमारे मर्दों और हमारी औरतो की मगफिरत फरमा, ऐ अल्लाह! तू हम में से जिसे जिंदा रखे तो इसे इस्लाम पर जिंदा रख और तू हम से जिसे फौत करे तो इसे इमान पर फौत करना, ऐ अल्लाह! हमें इस के अजर से महरूम न करना और न इस के बाद हमें फितने का शिकार करना | (सहीह,हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 368 ح 8795) و ابوداؤد (3201) و الترمذی (1024 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (1498)

١٦٧٦ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الْأَشْهَلِيِّ عَنْ أَبِيهِ وانتهت رِوَايَته عِنْد قَوْله: و «أنثانا» . وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: «فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِيمَانِ وَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِسْلَامِ» . وَفِي آخِرِهِ: «وَلَا تُضِلَّنَا بعده»

1676. और इमाम नसई ने इब्राहीम अश्हली अन अबी की सनद से रिवायत किया है और इन की रिवायत “ हमारी औरतो को माफ़ फरमा तक “ ख़त्म हो जाती है और अबू दावुद की रिवायत में है: “इस इमान पर ज़िन्दा रख और इस्लाम पर फौत कर, और इस के आखिरी में है : इस के बाद हमें गुमराह न करना| (हसन)

حسن ، رواه النسائی (4 / 74 ح 1988) و ابوداؤد (3201)

١٦٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِي ذِمَّتِكَ وَحَبْلِ جِوَارِكَ فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَأَنْتَ أَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

1677. वासिलाह बिन अल-असका रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी मुसलमान शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो मैंने आप को यह दुआ करते हुए सुना: “ऐ अल्लाह फलां बिन फलां तेरी जिम्मे और तेरी रहमत के साए में है इसे फितने कब्र और अजाब ए जहन्नम से बचा तू अहले वफा और अहले हक है, ऐ अल्लाह इस की मगफिरत फरमा इस पर रहम फरमा. बेशक तू बख्शने वाला रहम करने वाला है| (सहीह,मुस्लिम)

صحیح ، رواه ابوداؤد (3202) و ابن ماجه (1499) * الولید بن مسلم صرح بالسماع المسلسل عند ابن منذر فی الاوسط (5 / 441)

١٦٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اذْكُرُوا مَحَاسِنَ مَوْتَاكُمْ وَكُفُّوا عَنْ مُسَاوِيهِمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

1678. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अपने फौत शुदा कि अच्छाई बयान किया करो और इनकी बुरे बयान करने से परहेज़ करो | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4900) و الترمذی (1019 وقال : حديث غريب ، سمعت محمدًا [البخاری] يقول : عمران بن انس المکی منکر الحديث)

١٦٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ أَبِي غَالِبٍ قَالَ: صَلَّيْتُ مَعَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَلَى جَنَازَةِ رَجُلٍ فَقَامَ حِيَالَ رَأسه ثمَّ جاؤوا بِجَنَازَةِ امْرَأَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ فَقَالُوا: يَا أَبَا حَمْزَةَ صَلِّ عَلَيْهَا فَقَامَ حِيَالَ وَسَطِ السَّرِيرِ فَقَالَ لَهُ الْعَلَاءُ بْنُ زِيَادٍ: هَكَذَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ على الْجِنَازَة مَقَامَكَ مِنْهَا؟ وَمِنَ الرَّجُلِ مَقَامَكَ مِنْهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ نَحْوُهُ مَعَ زِيَادَةٍ وَفِيهِ: فَقَامَ عِنْد عجيزة الْمَرْأَة

1679. नाफेअ अबू ग़ालिब रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के साथ एक आदमी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो वह इस के सर के मुकाबिल खड़े हुए, अलाअ बिन ज़ियाद ने इन से पूछा: क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह देखा है की आप औरत का जनाज़ा पढ़ाते वक़्त इस जगह (चार पाई के वुसत में) खड़े हुए थे और एक आदमी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते वक़्त इस जगह खड़े हुए थे जहाँ आप खड़े हुए हैं? उन्होंने फ़रमाया हाँ | तिरमिजी, इब्ने माजा अबू दावुद की एक रिवायत में इसी तरह है इस में कुछ इजाफा है की आप (औरत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते वक़्त) औरत के सिरिन के पास खड़े हुए | (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1034 وقال : حديث حسن) و ابن ماجه (1494) و ابوداؤد (3194)

الْمَشْي بالجنازة وَالصَّلَاة عَلَيْهَا — जनाज़े के साथ जाने और जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के तरीके का बयान

الْفَصْل الثَّالِث — तीसरी फस्ल

١٦٨٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ ابْن حنيف وَقيس ابْن سَعْدٍ قَاعِدَيْنِ بِالْقَادِسِيَّةِ فَمُرَّ عَلَيْهِمَا بِجَنَازَةٍ فَقَامَا فَقيل لَهما: إِنَّهَا مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ أَيْ مِنْ أَهْلِ الذِّمَّةِ فَقَالَا: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّتْ بِهِ جَنَازَةٌ فَقَامَ فَقِيلَ لَهُ: إِنَّهَا جَنَازَةُ يَهُودِيٍّ. فَقَالَ: «أليست نفسا؟»

1680. अब्दुल रहमान बिन अबी लैला बयान करते हैं, सहल बिन हुनैफ़ और कैस बिन सईद रदियल्लाहु अन्हुमा कादसिया में तशरीफ़ फरमा थे की इन के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो वह दोनों खड़े हो गए उन्हें बताया गया कि यह जिम्मी (काफ़िर) शख़्स का जनाज़ा है उन दोनों ने फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप खड़े हो गए आप को बताया गया कि यह एक यहूदी का जनाज़ा है तो आप ﷺ ने फ़रमाया : क्या वह जान नहीं ? (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1312) و مسلم (81 / 961)، (2225)

١٦٨١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا تَبِعَ جَنَازَةً لَمْ يَقْعُدْ حَتَّى تُوضَعَ فِي اللَّحْدِ فَعَرَضَ لَهُ حَبْرٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ لَهُ: إِنَّا هَكَذَا نضع يَا مُحَمَّدُ قَالَ: فَجَلَسَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «خَالِفُوهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَبِشْرُ بْنُ رَافِعٍ الرَّاوِي لَيْسَ بِالْقَوِيّ

1681. उबदा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी जनाज़े में शरीक होते तो आप मय्यत को लहद में उतारने तक नहीं बैठते थे, एक यहूदी आलिम आप के पास आया तो इस ने आप से कहा, मुहम्मद ﷺ बे शक हम भी ऐसे ही करते हैं, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बैठ गए और फ़रमाया : इन की मुखालिफत करो तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा| इमाम तिरमिजी ने फ़रमाया यह हदीस गरीब है बशीर बिन राफीअ रावी क़वी नहीं| (सहीह,ज़ईफ़,मुस्लिम)

ضعیف ، رواہ الترمذی (1020) و ابوداؤد (3176) و ابن ماجہ (1545) [و حدیث مسلم (962)، (2227) یغنی عنہ] * ابو الاسباط بشر بن رافع الحارثی و عبداللہ بن سلیمان بن جنادۃ منکر الحدیث

١٦٨٢ - (حسن) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَنَا بِالْقِيَامِ فِي الْجَنَازَةِ ثُمَّ جَلَسَ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَمَرَنَا بِالْجُلُوسِ. رَوَاهُ أَحْمد

1682. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जनाज़ा देख कर हमें खड़े होने का हुक्म फ़रमाया, इस के बाद फिर आप बैठ गए तो आप ने हमें बैठ जाने का हुक्म फ़रमाया | (हसन)

حسن ، رواہ احمد (1 / 82 ح 623 و سندہ حسن)

١٦٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ: إِنَّ جَنَازَةً مَرَّتْ بِالْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ وَابْنِ عَبَّاسٍ فَقَامَ الْحَسَنُ وَلَمْ يَقُمِ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ الْحَسَنُ: أَلَيْسَ قَدْ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِجَنَازَةِ يَهُودِيٍّ؟ قَالَ: نَعَمْ ثُمَّ جلس. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1683. मुहम्मद बिन सिरिन बयान करते हैं, हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो हसन रदियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए लेकिन इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा खड़े न हुए तो हसन रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: क्या रसूलुल्लाह ﷺ यहूदी के जनाज़े के लिए खड़े नहीं हुए थे? उन्होंने फ़रमाया : हा (लेकिन) फिर आप बैठें रहते थे | (सहीह)

صحیح ، رواہ النسائی (4 / 46 ح 1925)

١٦٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ كَانَ جَالِسًا فَمُرَّ عَلَيْهِ بِجَنَازَةٍ فَقَامَ النَّاسُ حَتَّى جَاوَزَتِ الْجَنَازَةُ فَقَالَ الْحَسَنُ: إِنَّمَا مُرَّ بِجَنَازَةِ يَهُودِيٍّ وَكَانَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى طَرِيقِهَا جَالِسا وَكره أَن تعلوا رَأسه

جَنَازَة يَهُودِيّ فَقَامَ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1684. ज़ाफ़र बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं की हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा बैठें हुए थे की इन के पास से जनाज़ा गुज़रा तो लोग खड़े हो गए हत्ता कि जनाज़ा गुज़र गया तो हसन रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : एक यहूदी का जनाज़ा गुज़रा जबकि रसूलुल्लाह ﷺ इस के रास्ते पर बैठें हुए थे आप ने इस बात को नापसंद फ़रमाया किसी यहूदी शख़्स का जनाज़ा आप के सर मुबारक से बुलंद हो जाए लिहाज़ा खड़े हो गए | (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (4 / 47 ح 1928)

١٦٨٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا مَرَّتْ بِكَ جَنَازَةُ يَهُودِيٍّ أَوْ نَصْرَانِيٍّ أَوْ مُسْلِمٍ فَقُومُوا لَهَا فَلَسْتُمْ لَهَا تَقُومُونَ إِنَّمَا تَقُومُونَ لِمَنْ مَعهَا من الْمَلَائِكَة» . رَوَاهُ أَحْمد

1685. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब हमारे पास से यहूदी या किसी नसरानी या किसी मुसलमान का जनाज़ा गुज़रे तो तुम इस के लिए खड़े हो जाओ, तुम इस के लिए नहीं खड़े हो रहे बल्कि तुम उन फरिश्तो के लिए खड़े हुए हो जो इस (जनाज़े) के साथ हैं | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 391 ح 19720) * فيه ليث (بن ابی سليم) ضعيف

١٦٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ جَنَازَةً مَرَّتْ بِرَسُولِ اللَّهِ فَقَامَ فَقِيلَ: إِنَّهَا جَنَازَةُ يَهُودِيٍّ فَقَالَ: «إِنَّمَا قُمْت للْمَلَائكَة» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1686. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप खड़े हो गए आप को बताया गया कि यह किसी यहूदी का जनाज़ा है, आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं तो सिर्फ फरिश्तो की खातिर खड़ा हुआ हूँ| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه النسائی (4 / 48 ح 1931) * قتادة عنعن و للحديث شاهد ضعيف عند احمد (4 / 413)

١٦٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَالِكِ بْنِ هُبَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوتُ فَيُصَلِّي عَلَيْهِ ثَلَاثَةُ صُفُوفٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا أَوْجَبَ» . فَكَانَ مَالِكٌ إِذَا اسْتَقَلَّ أَهْلَ الْجَنَازَةِ جَزَّأَهُمْ ثَلَاثَةَ صُفُوفٍ لِهَذَا الْحَدِيثِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ: قَالَ كَانَ مَالِكُ بْنُ هُبَيْرَةَ إِذَا صَلَّى الْجِنَازَة فَتَقَالَّ النَّاسَ عَلَيْهَا جَزَّأَهُمْ ثَلَاثَةَ أَجْزَاءٍ ثُمَّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيْهِ ثَلَاثَةُ صُفُوفٍ أَوْجَبَ» . وروى ابْن مَاجَه نَحوه

1687. मालिक बिन हुबैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना : कोई मुसलमान फौत हो जाए और मुसलमानों के तिन सफे इस की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़े तो इस के लिए (जन्नत)

वाजिब हो जाती है, जब मालिक रदियल्लाहु अन्हु देखते की जनाज़ा पढ़ने वाले काम है तो आप इस हदीस की बुनियाद पर इन्हें तिन सफों में तकसीम फरमा देते थे | अबू दावुद तिरमिजी की रिवायत में है की जब मालिक बिन हुबेर रदियल्लाहु अन्हु कोई नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ते और जनाज़ा पढ़ने वाले काम होते तो वह इन्हें तिन हिस्सों में तकसीम फरमा देते फिर बयान करते रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस शख़्स पर तिन सफे नमाज़े जनाज़ा पढ़ती है तो इस पर (जन्नत) वाजिब हो गई| और इब्ने माजा ने भी इसी तरह की रिवायत की है| (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3166) و الترمذی (1028 وقال : حسن) و ابن ماجه (1490) * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و للحديث علة أخرى قادحة

١٦٨٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الصَّلَاةِ عَلَى الْجَنَازَةِ: " اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبُّهَا وَأَنْتَ خَلَقْتَهَا وَأَنْتَ هَدَيْتَهَا إِلَى الْإِسْلَامِ وَأَنْتَ قَبَضْتَ رُوحَهَا ص:٥٣ وَأَنْتَ أَعْلَمُ بِسِرِّهَا وَعَلَانِيَتِهَا جِئْنَا شُفَعَاءَ فَاغْفِرْ لَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1688. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नमाज़े जनाज़ा के बारे में नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थे: “ऐ अल्लाह तू इस का रब है, तूने इसे पैदा फ़रमाया, तूने इसे इस्लाम की राह दिखाई, तूने इस की रूह कब्ज़ करली और तू इस के ज़ाहिर और बातिन से वाकिफ है, हम सिफारिश बन के आए है, इस की मगफिरत फरमा | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3200)

١٦٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ أَبِي هُرَيْرَةَ عَلَى صَبِيٍّ لَمْ يَعْمَلْ خَطِيئَةً قَطُّ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: اللَّهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. رَوَاهُ مَالك

1689. सईद बिन मुसय्यब रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु के पीछे एक ऐसे बच्चे की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी जिस ने कभी कोई गुनाह किया ही नहीं वह दुआ कर रहे थे: “ऐ अल्लाह इसे अज़ाबे कब्र से बचा ले| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 228 ح 537)

١٦٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبُخَارِيِّ تَعْلِيقًا قَالَ: يَقْرَأُ الْحَسَنُ عَلَى الطِّفْلِ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَيَقُولُ: اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سلفا وفرطا وذخرا وَأَجرا

1690. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने मुअल्लक रिवायत बयान करते हुए फ़रमाया : हसन बसरी रहिमहुल्लाह

बच्चे की नमाज़े जनाज़ा में सूरत उल फातिहा पढ़ते और यह दुआ करते : ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए अमीरे सामान' और आगेचलने वाला, ज़खीरा और सवाब बना | (सहीह,ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البخارى فى صحيحه (كتاب الجنائز باب 65 قبل ح 1335) و الحافظ ابن حجر فى تغليق التعليق (2 / 484) * فيه سعيد بن ابى عروبة مدلس و عنعن

١٦٩١ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الطِّفْلُ لَا يُصَلَّى عَلَيْهِ وَلَا يَرِثُ وَلَا يُوَرَّثُ حَتَّى يَسْتَهِلَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يَذْكُرْ: «وَلَا يُورث»

1691. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : जब तक पैदा होने वाला बच्चा चीखे नहीं तब तक इस की न जनाज़े कि नमाज़ पढ़ी जाएगी न वह वारिस बनेगा और नहीं इस की मीरास तकसीम होगी | तिरमिजी, इब्ने माजा, लेकिन इन्होंने यह ज़िक्र नहीं किया के इस की मीरास तकसीम नहीं होगी | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1032) و ابن ماجه (1508) * ابو الزبير مدلس و عنعن و للحديث طرق ضعيفة عند ابن حبان (الموارد : 1223) و الحاكم (4 / 348349) و غيرهما

١٦٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَقُومَ الْإِمَامُ فَوْقَ شَيْءٍ وَالنَّاسُ خَلْفَهُ يَعْنِي أَسْفَلَ مِنْهُ. رَوَاهُ الدراقطني وَأَبُو دَاوُد

1692. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इमाम को किसी बुलंद जगह पर खड़े होने से मना फ़रमाया, जबकि मुक्तदी इस से नीचे हो | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (2 / 88) [و ابوداؤد : 597] * الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شاهد ضعيف عند ابى داود (598)

بَاب دفن الْمَيِّت • मय्यत को दफ़न करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٦٩٣ - (صَحِيح) عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَن سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي هَلَكَ فِيهِ: أَلْحِدُوا لِي لَحْدًا وَانْصِبُوا عَلَى اللَّبِنِ نَصْبًا كَمَا صُنِعَ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1693. आमिर बिन सईद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सईद बिन अबी वकास

रदियल्लाहु अन्हु ने अपने मर्जे वफात में फ़रमाया: मेरे लिए लहद तैयार करना और इस पर ईंटे खड़ी करना जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ (की कब्र) के साथ किया गया | (मुस्लिम)

رواه مسلم (90 / 966)، (2040)

١٦٩٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: جُعِلَ فِي قَبْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَطِيفَةٌ حَمْرَاء. رَوَاهُ مُسلم

1694. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, , रसूलुल्लाह ﷺ की कब्र में एक सुर्ख चादर बिछाई गई थी | (मुस्लिम)

رواه مسلم (91 / 967)، (2241)

١٦٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ سُفْيَانَ التَّمَّارِ: أَنَّهُ رَأَى قَبْرَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسَنَّمًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

1695. सुफियान अल्तम्मार रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि इन्होंने नबी ﷺ की कब्र को कोहान की तरह देखा | (बुखारी)

رواه البخارى (1390)

١٦٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الْهَيَّاجِ الْأَسَدِيِّ قَالَ: قَالَ لِي عَلِيٌّ: أَلَا أَبْعَثُكَ عَلَى مَا بَعَثَنِي عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِن لَا تَدَعَ تِمْثَالًا إِلَّا طَمَسْتَهُ وَلَا قَبْرًا مشرفا إِلَّا سويته. رَوَاهُ مُسلم

1696. अबू अलहय्यान असदी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसे काम पर मामूर न करु जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे मामूर व मबउस फ़रमाया था, की तुम हर मूर्ति को मिटा दो और हर ऊँची कब्र को बराबर कर दो | (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 969)، (2243)

١٦٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1697. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कब्र को पुख्त बनाने, इस पर इमारत बनाने और इस पर (मुजावर) बन कर बैठनेसे मना फ़रमाया है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (94 / 970)، (2245)

١٦٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَرْثَدٍ الْغَنَوِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَجْلِسُوا عَلَى الْقُبُورِ وَلَا تُصَلُّوا إِلَيْهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1698. अबू मर्सद गनवीय्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क़ब्रो पर (मुजावर बन कर) मत बेठो न इन की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ो| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (97 / 972)، (2250)

١٦٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ يَجْلِسَ أَحَدُكُمْ عَلَى جَمْرَةٍ فَتُحْرِقَ ثِيَابَهُ فَتَخْلُصَ إِلَى جِلْدِهِ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يجلس على قبر» . رَوَاهُ مُسلم

1699. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : अगर तुम में से कोई शख़्स आग के अंगारे पर बैठ जाए वह इस के कपड़े जला कर इस की जिल्द तक पहुँच जाए तो यह इस के लिए कब्र पर बैठनेसे बेहतर है | (मुस्लिम)

رواہ مسلم (96 / 971)، (2248)

بَاب دفن الْمَيِّت • मय्यत को दफ़न करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٧٠٠ - (ضَعِيف) عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ رَجُلَانِ أَحَدُهُمَا يَلْحَدُ وَالْآخَرُ لَا يَلْحَدُ. فَقَالُوا: أَيُّهُمَا جَاءَ أَوَّلًا عَمِلَ عَمَلَهُ. فَجَاءَ الَّذِي يَلْحَدُ فَلَحَدَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

1700. उर्वा बिन जुबैर बयान करते हैं, मदीना में दो आदमी थे उस में से एक लहद बनता था, जबकि दूसरा लहद तैयार नहीं करता था, सहाबी ने फ़रमाया इन दोनों में से जो पहले आयेगा वह अपना काम करेगा, पस लहद बनाने वाला शख़्स पहले आया तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ के लिए लहद तैयार की गई | (हसन)

حسن ، رواہ البغوی فی شرح السنة (5 / 388 ح 1510) [و مالک فی الموطا (1 / 231 ح 547] * السند مرسل وله شاھد عند ابن ماجه (1557) ، وھو حسن

١٧٠١ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّحْدُ لَنَا وَالشَّقُّ لغيرنا» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1701. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : हमारे (मुसलमानों के) लिए लहद ही और शक़्क़ (दहाने की शक्ल वाली कब्र) हमारे अलावा दूसरे के लिए है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1045 وقال : غريب) و ابوداؤد (3208) و النسائی (4 / 80 ح 2011) و ابن ماجه (1554) * فيه عبدالاعلی الثعلبی : ضعيف ، قال الهيشمی :'' والاكثر على تضعيفه '' (مجمع الزوائد (1 / 147) وللحديث شواهد ضعيفة

١٧٠٢ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

1702. और इमाम अहमद ने जरीर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत किया है | (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (4 / 357 ح 19371 فيه الحجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و 4 / 359 ح 19390 فيه ابو جناب : ضعيف مدلس) * وله طريق آخر عند ابن ماجه (1555) و سنده ضعيف

١٧٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ أُحُدٍ: «احْفُرُوا وَأَوْسِعُوا وَأَعْمِقُوا وَأَحْسِنُوا وَادْفِنُوا الِاثْنَيْنِ وَالثَّلَاثَةَ فِي قبر وَاحِد وَقدمُوا أَكْثَرهم قُرْآنًا» . رَوَاهُ أمد وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ إِلَى قَوْله وأحسنوا

1703. हिश्शाम बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी ﷺ ने गजवा ए ओहद के रोज़ फ़रमाया : वसी और गहरी क़बरे तैयार करो और अच्छी तरह दफन करो और एक कब्र में दो दो तिन तिन को दफन करो और इन में से ज़्यादा कुरान जानने वाले को पहले दफन करो | अहमद, तिरमिजी, अबू दावुद, नसई और इब्ने माजा ने और अच्छी तरह दफन करो तक रिवायत किया है | (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه احمد (4 / 19 ح 16359) و الترمذی (1713 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (3215) و النسائی (4 / 81 ح 2013) و ابن ماجه (1560)

١٧٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ جَاءَتْ عَمَّتِي بِأَبِي لِتَدْفِنَهُ فِي مَقَابِرِنَا فَنَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُدُّوا الْقَتْلَى إِلَى مَضَاجِعِهِمْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَلَفظه لِلتِّرْمِذِي

1704. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गजवा ए उहद के रोज़ मेरी फूफी मेरे शहीद वालिद को ले आई ताकी वह इन्हें हमारे कब्रस्तान में दफ़न करे, पस रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से एलान करने वाले ने एलान किया शुहदा को इन की सहादत गाह की तरफ वापस ले आओ | अहमद, तिरमिजी, अबू दावुद, नसई, दारमी | हदीस के अल्फाज़ तिरमिजी के है| (सहीह,हसन)

صحيح ، رواه احمد (3 / 297 ح 14216) و الترمذی (1717 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (3165) و النسائی (4 / 79 ح 2006) و الدارمی (1 / 23 ح 46)

١٧٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سُلَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ. رَوَاهُ الشَّافِعِي

1705. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को सर की जानिब से कब्र में उतारा गया | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الشافعی فی الام (1 / 273) * فیه الثقة : لم اعرفه ، و عمر بن عطاء (بن وراز) : ضعیف

١٧٠٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ قَبْرًا لَيْلًا فَأَسْرِجَ لَهُ بسراج فَأخذ مِنْ قِبَلِ الْقِبْلَةِ وَقَالَ: «رَحِمَكَ اللَّهُ إِنْ كُنْتَ لَأَوَّاهًا تَلَّاءً لِلْقُرْآنِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ فِي شرح السّنة: إِسْنَاده ضَعِيف

1706. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ रात के वक़्त एक कब्र में दाखिल हुए तो आप के लिए चिराग रोशन किया गया, आपने (मय्यत को) क़िबला की तरफ से लिया और फ़रमाया : अल्लाह तुम पर रहम फरमाए तू बहुत ज़्यादा तजरीअ (बहुत रोने वाला) और बहुत ज़्यादा कुरान की तिलावत करने वाला था | तिरमिजी और इन्होंने (इमाम बगवी) ने शरह सुनन में फ़रमाया सनद जईफ है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1057 وقال : حسن) و البغوی فی شرح السنة (5 /398 بعد ح 1514) * فیه حجاج بن ارطاة ضعیف مدلس و رواه ابن ماجه (1520) مختصرًا و سنده ضعیف

١٧٠٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَدْخَلَ الْمَيِّتَ الْقَبْرَ قَالَ: «بِسم الله وَبِاللَّهِ وعَلى ملكة رَسُولِ اللَّهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: " وَعَلَى سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى أَبُو دَاوُد الثَّانِيَة

1707. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जब मय्यत को कब्र में दाखिल किया जाता तो नबी ﷺ यूँ फरमाते : अल्लाह के नाम के साथ अल्लाह की तौफीक के साथ और अल्लाह के रसूल! ﷺ की मिल्लत व दीन पर और एक रिवायत है : और रसूलुल्लाह ﷺ के तरीके पर | अहमद, तिरमिजी, इब्ने माजा, और अबू दावुद ने दूसरी रिवायत बयान की है | (सहीह,हसन)

صحیح ، رواه احمد (2 / 59 ح 2533) و الترمذی (1046 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (1550) و ابوداؤد (3213)

١٧٠٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ مُرْسَلًا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حثا عَلَى الْمَيِّتِ ثَلَاثَ حَثَيَاتٍ بِيَدَيْهِ جَمِيعًا وَأَنَّهُ رَشَّ عَلَى قَبْرِ ابْنِهِ إِبْرَاهِيمَ وَوَضَعَ عَلَيْهِ حَصْبَاءَ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَرَوَى الشَّافِعِيُّ من قَوْله: «رش»

1708. जाफर बिन मुहम्मद रहिमहुल्लाह ने अपने वालिद से मुरसल रिवायत बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने दोनों हाथ मिलाकर मय्यत (यानि कब्र) पर तीन मुट्ठी मिट्टी डाली और आप ﷺ ने अपने बेटे इब्राहीम की कब्र

पर पानी छिड़का और इस पर कंकरिया रखी | शरह अल सुनन और इमाम शाफई ने पानी छिडकने के अल्फाज़ रिवायत किये | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 401 ح 1515) و الشافعى فى الام (1 / 276277) * فيه ابراهيم بن محمد الاسلمى : متروک متهم و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن ماجه (1565) و غيره

١٧٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن تجصص الْقُبُور وَأَن يكْتب لعيها وَأَن تُوطأ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1709. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने क़ब्रो को पुख्ता करने, इन पर लिखने (क़ुतुब लगाने) और इन्हें रोंदने से मना फ़रमाया | (सहीह,हसन,मुस्लिम)

صحيح ، رواه الترمذى (1052 وقال : حسن صحيح) [و اصله فى صحيح مسلم (94 / 970)، (2245) بدون هذا اللفظ]

١٧١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جَابر قَالَ: رُشَّ قَبْرُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ الَّذِي رَشَّ الْمَاءَ عَلَى قَبْرِهِ بِلَالُ بْنُ رَبَاحٍ بِقِرْبَةٍ بَدَأَ مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ حَتَّى انْتَهَى إِلَى رِجْلَيْهِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ. فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

1710. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, , रसूलुल्लाह ﷺ की कब्र पर पानी छिड़का गया, बिलाल बिन रबाह रदियल्लाहु अन्हु ने एक मश्किज़े की ज़रिए आप की कब्र पर पानी छिड़का, उन्होंने आप के सर मुबारक की तरफ से छिडकना शुरू किया और आप के पैर तक छिडकते गए | (मौजु)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى دلائل النبوة (7 / 264) * فيه الواقدى : كذاب متروک

١٧١١ - (حسن) وَعَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ أَبِي وَدَاعَةَ قَالَ: لَمَّا مَاتَ عُثْمَان ابْن مَظْعُونٍ أُخْرِجَ بِجَنَازَتِهِ فَدُفِنَ أَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا أَنْ يَأْتِيَهُ بِحَجَرٍ فلم يسْتَطع حملهَا فَقَامَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَحَسَرَ عَنْ ذِرَاعَيْهِ. قَالَ الْمُطَّلِبُ: قَالَ الَّذِي يُخْبِرُنِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِ ذِرَاعَيْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ حَسَرَ عَنْهُمَا ثُمَّ حَمَلَهَا فَوَضَعَهَا عِنْدَ رَأْسِهِ وَقَالَ: «أُعَلِّمُ بِهَا قَبْرَ أَخِي وَأَدْفِنُ إِلَيْهِ مَنْ مَاتَ من أَهلِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1711. मुत्तलिब बिन अबी वदाअत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब उस्मान बिन मज़उन रदियल्लाहु अन्हु ने वफात पाई, इन का जनाज़ा लाया गया, जब इन्हें दफ़न कर दिया गया तो नबी ﷺ ने एक आदमी को हुक्म फ़रमाया के वह एक पत्थर आप के पास लाए, वह आदमीं इसे न उठा सका, तो रसूलुल्लाह ﷺ खुद उठ कर इस तरफ गए आप ने आस्तीने ऊपर चढ़ाई, मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जिस शख़्स ने मुझे वाकिया बयान किया इस ने कहा गोया में रसूलुल्लाह के बाज़ुओ की सफेदी देख रहा हूँ जब आप ने आस्तीने उठाई थी, फिर आप ने इस पत्थर को उठाया और इसे इन (उस्मान बिन मज़उन रदियल्लाहु अन्हु) के सर के पास रख कर

फ़रमाया : में इस के ज़रिए अपने भाई की कब्र के बारे बताऊंगा और अपने खानदान में से फौत होने वाले शख़्स को इस के करीब दफन करूँगा | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3206)

١٧١٢ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَائِشَةَ فَقُلْتُ: يَا أُمَّاهُ اكْشِفِي لِي عَنْ قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَاحِبَيْهِ فَكَشَفَتْ لِي عَنْ ثَلَاثَةِ قُبُورٍ لَا مُشْرِفَةٍ وَلَا لَا طئة مَبْطُوحَةٍ بِبَطْحَاءِ الْعَرْصَةِ الْحَمْرَاءِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1712. कासिम बिन मुहम्मद बयान करते हैं, मैं आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया तो मैंने कहा मा जी मुझे नबी ﷺ और आप के दोनों साथियों की क़ब्रे तो दिखा दें, इन्होंने मुझे तीनों क़ब्रे दिखा दी वह न तो बुलंद थी न ज़मीन के बराबर थी और इन पर मकाम ए अरसत के सुर्ख संग्रिज़े बिछाए हुए थे | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3220)

١٧١٣ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ص:٥٣ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَة رجل من الْأَنْصَار فَانْتَهَيْنَا إِلَى الْقَبْر وَلما يُلْحَدْ بَعْدُ فَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ وَجَلَسْنَا مَعَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَزَادَ فِي آخِرِهِ: كن على رؤوسنا الطير

1713. बारअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ में एक अंसारी शख़्स के जनाज़े में शरीक हुए, हम कब्र पर पहुँच गए लेकिन अभी लहद तैयार नहीं हुई थी, नबी ﷺ किबला रुख हो कर बैठ गए और हम भी आप के साथ बैठ गए | अबू दावुद व नसई, इब्ने माजा और इन्होंने हदीस के आख़िर में यह इजाफा नक़ल किया है गोया हमारे सरो पर परिंदे हो | (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3212) و النسائی (4 / 78 ح 2003) و ابن ماجه (1549)

١٧١٤ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَسْرُ عَظْمِ الْمَيِّتِ كَكَسْرِهِ حَيًّا» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

1714. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत अहि की रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मैय्यत की हड्डी का टूटना जिंदा की हड्डी के टूटने के जैसा है | (सहीह)

صحیح ، رواه مالک (1 / 238 ح 564 بلاغا) و ابوداؤد (3207) و ابن ماجه (1616)

मय्यत को दफ़न करने का बयान • بَاب دفن الْمَيِّت
तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٧١٥ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: شَهِدْنَا بِنْتَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُدْفَنُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسٌ عَلَى الْقَبْرِ فَرَأَيْتُ عَيْنَيْهِ تَدْمَعَانِ فَقَالَ: " هَلْ فِيكُمْ مَنْ أَحَدٍ لَمْ يُقَارِفِ اللَّيْلَةَ؟ . فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَنَا. قَالَ: فَانْزِلْ فِي قَبْرِهَا فَنَزَلَ فِي قبرها ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1715. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के साहबज़ादी की तद्फिन के वक़्त हम मौजूद थे, रसूलुल्लाह ﷺ कब्र के पास तशरीफ़ फरमा थे मैंने आप की आँखों को अश्कबार देखा, आप ﷺ ने फ़रमाया: क्या तुम में कोई ऐसा शख़्स है जिस ने आज रात अपनी अहलिया से सुहबत न की हो? अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैं! आप ﷺ ने फरमाया कि आप इस की कब्र में उतरो और वह इन की कब्र में उतरे | (बुखारी)

رواه البخارى (1285)

١٧١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ لِابْنِهِ وَهُوَ فِي سِيَاقِ الْمَوْتِ: إِذَا أَنَا ص:٥٣ مُتُّ فَلَا تَصْحَبْنِي نَائِحَةٌ وَلَا نَارٌ فَإِذَا دَفَنْتُمُونِي فَشُنُّوا عَلَيَّ التُّرَابَ شَنًّا ثُمَّ أَقِيمُوا حَوْلَ قَبْرِي قَدْرَ مَا يُنْحَرُ جَزُورٌ وَيُقَسَّمُ لَحْمُهَا حَتَّى أَسْتَأْنِسَ بِكُمْ وَأَعْلَمَ مَاذَا أُرَاجِعُ بِهِ رُسُلَ رَبِّي. رَوَاهُ مُسلم

1716. अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु ने जब वह निज़ा के आलम में थे अपने बेटे से कहा: जब में फौत हो जाऊं तो मेरे साथ न कोई नोहा करने वाली जाए न आग, जब तुम मुझे दफ़न कर चुको और मुझ पर मिटटी डाल लो तो फिर इतनी देर तक मेरी कब्र के गिर्द खड़े रहना जितनी देर में ऊंट जिबह कर के इस का गोश्त तकसीम किया जाता है, हत्ता कि मैं तुम्हारी वजह से खुश और परसुकून हो जाऊ और मैं जान लू के मैं अपने रब के भेजे हुए कासीदो (फरिश्तो) को क्या जवाब देता हूँ | (मुस्लिम)

رواه مسلم (192 / 121)، (321)

١٧١٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمْ فَلَا تَحْبِسُوهُ وَأَسْرِعُوا بِهِ إِلَى قَبْرِهِ وَلْيُقْرَأْ عِنْدَ رَأْسِهِ فَاتِحَةُ الْبَقَرَةِ وَعِنْدَ رِجْلَيْهِ بِخَاتِمَةِ الْبَقَرَةِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان. وَقَالَ: وَالصَّحِيح أَنه مَوْقُوف عَلَيْهِ

1717. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना : जब तुम में से कोई फौत हो जाए तो इसे (दफ़न करने से) न रोके रखो, बलके इसे जल्दी दफन करो और (दफ़न करने के बाद) सिरहाने सूरतुल बकरा का इब्तिदाई हिस्सा और इस के पैर के पास सूरतुल बकरा का आखिरी हिस्सा पढ़ा

जाए | बयहकी की शौबुल इमान और इन्होंने फ़रमाया दुरुस्त यह है कि यह मौक़ूफ है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9294) * عبد الرحمن بن العلاء و ثقه ابن حبان وحده كما فى تحقيقى لسنن الترمذى (979) و قبل : احتج ابن معين بحديثه (!)

١٧١٨ - (الصَّحِيح) وَعَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ عبد الرَّحْمَن بن أبي بكر بالحبشي (مَوضِع قريب من مَكَّة)»» وَهُوَ مَوْضِعٌ فَحُمِلَ إِلَى مَكَّةَ فَدُفِنَ بِهَا فَلَمَّا قَدِمَتْ عَائِشَةُ أَتَتْ قَبْرَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَتْ:»» وَكُنَّا كَنَدْمَانَيْ جَذِيمَةَ حِقْبَةً مِنَ الدَّهْرِ حَتَّى قِيلَ لَنْ يَتَصَدَّعَا»» فَلَمَّا تَفَرَّقْنَا كَأَنِّي وَمَالِكًا لِطُولِ اجْتِمَاعٍ لَمْ نَبِتْ لَيْلَةً مَعًا»» ثُمَّ قَالَتْ: وَاللَّهِ لَوْ حَضَرْتُكَ مَا دُفِنْتَ إِلَّا حَيْثُ مُتَّ وَلَوْ شهدتك مَا زرتك رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1718. इब्ने अबी मुलायका बयान करते हैं, जब अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हा ने मवज़िअ हुब्शा में वफात पाई तो उन्हें मक्का लाकर दफ़न किया गया, जब आइशा रदियल्लाहु अन्हा वहाँ तशरीफ़ लाइ तो वह अब्दुल रहमान बिन अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हा के कब्र पर आई और यह अशआर कहे : हम जजिम के दोनों मसाहिबो की तरह एक मुद्दत तक मिले जुले रहे, हत्ता के यह कहा जाने लगा की यह दोनों कभी जुदा नहीं होंगे, जब हम जुदा हुए तो गोया में और मालिक तवील मुद्दत तक इकठ्ठा रहने के बाद भी ऐसे थे जैसे हम एक रात भी इकट्ठा न रहे थे, फिर उन्होंने फ़रमाया अल्लाह की कसम अगर मैं मौजूद होती तो तुम्हें जाए वफात पर ही दफ़न किया जाता और अगर में तुम्हारी वफात के वक़्त मौजूद होती तो में तुम्हारी ज़ियारत करने न आती | (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1055) * ابن جريج مدلس و عنعن فى هذا اللفظ وله لون آخر عند عبدالرزاق 6535) و ابن ابى شيبة (3 / 343344 ح 11810) وله شاهد فى تاريخ دمشق لابن عساكر (35 / 31) و سنده صحيح و به صح الحديث

١٧١٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي رَافِعٍ قَالَ: سَلَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَعْدًا وَرَشَّ عَلَى قَبره مَاء. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1719. अबू राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सअद को सर की तरफ से कब्र में उतारा और इन की कब्र पर पानी छिड़का | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1551) * مندل و محمد بن عبيدالله بن ابى رافع ضعيفان

١٧٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى عَلَى جَنَازَةٍ ثُمَّ أَتَى الْقَبْر فَحَثَا عَلَيْهِ مِنْ قِبَلِ رَأْسِهِ ثَلَاثًا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

1720. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर कब्र पर तशरीफ़ लाए और इस के सर की जानिब से इस पर तीन मुट्ठी मिट्टी डाली | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1565) * يحيى بن ابى كثير مدلس و جاء تصريح سماعه فى رواية موضوعة و للحديث شواهد ضعيفة

١٧٢١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ قَالَ: رَآنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُتَّكِئًا عَلَى قَبْرٍ فَقَالَ: لَا تؤذ صَاحب هَذَا الْقَبْر أَولا تؤذه. رَوَاهُ أَحْمد

1721. अमर बिन हज़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझे एक क़ब्र पर टेक लगाए हुए देखा तो फ़रमाया : इस कब्र वाले को या इस को तकलीफ न पहुँचाओ | (सहीह,हसन)

حسن ، رواه احمد (اطراف المسند : 5 / 131 ، جامع المسانيد و السنن لابن كثير : 9 / 558559 ، اتحاف المهرة لابن حجر 12 / 465 ح 15934 ، مسند احمد طبع عالم الكتب 7 / 869870 ح 24256 و سنده حسن) * و رواه ابونعيم فی معرفة الصحابة (4 / 1981) قلت : ابن لهيعة تابعه عمرو بن الحارث

الْبكاء على الْمَيِّت • मय्यत पे रोने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٧٢٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: دَخَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَبِي سَيْفٍ الْقَيْنِ وَكَانَ ظِئْرًا لِإِبْرَاهِيمَ فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِبْرَاهِيمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ ثُمَّ دَخَلْنَا عَلَيْهِ بَعْدَ ذَلِكَ وَإِبْرَاهِيمُ يَجُودُ بِنَفْسِهِ فَجَعَلَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَذْرِفَانِ. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: وَأَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ: " يَا ابْنَ عَوْفٍ إِنَّهَا رَحْمَةٌ ثُمَّ أَتْبَعَهَا بِأُخْرَى فَقَالَ: إِنَّ الْعَيْنَ تَدْمَعُ وَالْقَلْبَ يَحْزَنُ وَلَا نَقُولُ إِلَّا مَا يُرْضِي رَبَّنَا وَإِنَّا بِفِرَاقِكَ يَا إِبْرَاهِيم لَمَحْزُونُونَ "

1722. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ में अबू सैफ हदाद जो की (नबी ﷺ के बेटे) इब्राहीम के रिजाई बाप थे, इन के पास गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इब्राहीम को ले लिया, इसे चूमा और सुंघा, हम इस के बाद फिर इन के पास गए तो इब्राहीम आखिरी सांसो पर थे, रसूलुल्लाह ﷺ की आँखे अश्कबार हो गई तो अब्दुल रहमान बिन औफ़ रदियल्लाहु अन्हु ने आप से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप (भी रोते है) , आप ने फ़रमाया: इब्ने ऑफ! यह तो रहमत है | और फिर आप दोबारह रोए और फ़रमाया बेशक आँखे अस्क बार और दील गमगीन है लेकिन हम सिर्फ वही बात करेंगे जिस से हमारा परवरदीगार राज़ी हो ए इब्राहीम हम तेरी जुदाई पर यकीनन गमगीन है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1303) و مسلم (62 / 2315)، (6025)

١٧٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: أَرْسَلَتِ ابْنَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِ: إِنَّ ابْنًا لِي قُبِضَ فَأْتِنَا. فَأَرْسَلَ يُقْرِئُ السَّلَامَ وَيَقُولُ: «إِنَّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلٌّ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ» . فَأَرْسَلَتْ إِلَيْهِ تُقْسِمُ عَلَيْهِ لَيَأْتِيَنَّهَا فَقَامَ وَمَعَهُ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمُعَاذُ بْنُ جبل وَأبي بن كَعْب وَزيد ابْن ص:٥٤ ثَابِتٍ وَرِجَالٌ فَرُفِعَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّبِيُّ وَنَفْسُهُ تَتَقَعْقَعُ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ. فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ فَقَالَ: «هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللَّهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ. فَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللَّهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاء»

1723. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की लख्ते जिगर ने आप की तरफ पैगाम भेजा के मेरा बेटा मौत के करीब है आप तशरीफ़ लाए, आप ﷺ ने सलाम भेजा और यह पैगाम दिया: यक़ीनन अल्लाह का है जो इस ने ले लिया और जो इस ने दे रखा है इस के यहाँ हर चीज़ का वक़्त मुक़र्रर है, पस सब्र करें और सवाब पे इन्होंने दोबाराह पैगाम भेजा और कसम दे कर अर्ज़ किया, के आप ज़रूर तशरीफ़ लाए, आप खड़े हुए और सअद बिन उबादा, मुआज़ बिन जबल, उबई बिन काब, ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हुम और कुछ और लोग आप के साथ तशरीफ़ लाए, बच्चे को रसूलुल्लाह ﷺ की गोद में दे दिया गया, जब के इस के साँसो का राबता टूट रहा था, आप की आँखे अश्कबार हो गई तो सअद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह क्या हुआ? आप ﷺ ने फरमाया : यह (आंसू) तो अल्लाह की रहमत है जो अल्लाह ने अपने बन्दों के दिलों में पैदा फरमाई, अल्लाह भी अपने रहम करने वाले बन्दों पर ही रहम फरमाता है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1284) و مسلم (11 / 923)، (2135)

١٧٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: اشْتَكَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ شَكْوًى لَهُ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُهُ مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَسَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ وَجَدَهُ فِي غَاشِيَةٍ فَقَالَ: (قَدْ قَضَى؟ قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَبَكَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَأَى الْقَوْمُ بُكَاءَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكَوْا فَقَالَ: أَلَا تَسْمَعُونَ؟ أَنَّ اللَّهَ لَا يُعَذِّبُ بِدَمْعِ الْعَيْنِ وَلَا بِحُزْنِ الْقَلْبِ وَلَكِنْ يُعَذِّبُ بِهَذَا وَأَشَارَ إِلَى لِسَانِهِ أَوْ يَرْحَمُ وَإِن الْمَيِّت لعيذب ببكاء أهله

1724. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, सअद बिन उबादा रदियल्लाहु अन्हु किसी बीमारी में मुब्तिला हुए तो नबी ﷺ इन की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ लाए जबकि अब्दुल रहमान बिन ऑफ, साद बिन अबी वकास और अब्दुल्लाह बिन मसउद भी आप के साथ थे जब आप इन के पास पहुंचे तो आप ने इन्हें बेहोशी के आलम में पाया तो फ़रमाया: क्या यह फौत हो चुके? सहाबी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! नहीं, पस नबी ﷺ रोने लगे जब लोगों ने आप को रोते हुए देखा तो वह भी रो दिए, आप ﷺ ने फ़रमाया : क्या तुम सुनते नहीं के अल्लाह आँखों के रोने और दिल के गमगीन होने पर अजाब नहीं देता लेकिन वह तो इस जबान की वजह से अजाब देता है, या रहम करता है और बेशक मैय्यत को इस के अहल खान के इस पर रोने की वजह से अजाब दिया जाता है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1304) و مسلم (12 / 924)، (2137)

١٧٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُودَ وَشَقَّ الْجُيُوبَ وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ»

1725. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स रुखसार पिटे, गरीबान चाक करे और जहालत की सी बाते करे तो वह हम में से नहीं | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1294) و مسلم (165 / 103)، (285)

١٧٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي بردة قَالَ: أغمي على أبي مُوسَى فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ أُمُّ عَبْدِ اللَّهِ تَصِيحُ بِرَنَّةٍ ثُمَّ أَفَاقَ فَقَالَ: أَلَمْ تَعْلَمِي؟ وَكَانَ يُحَدِّثُهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَنَا بَرِيءٌ مِمَّنْ حَلَقَ وَصَلَقَ وَخَرَقَ» . وَلَفظه لمُسلم

1726. अबू बुरैदा बयान करते हैं, अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु पर बेहोशी तारी हो गई तो इन के अहलिया उम्मे अब्दुल्लाह ने जोर से रोना शुरू कर दिया, फिर इन्हें अफाका हो गया तो फ़रमाया : क्या तुम्हें मालूम नहीं? के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मैं ऐसे शख़्स से बरी हूँ जो मुसीबत के वक़्त सर मुंडे और ऊँची आवाज़ से रोए और कपड़े चाक करे, बुखारी मुस्लिम और हदीस के अल्फाज़ सहीह मुस्लिम के है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1296) و مسلم (167 / 104)، (287)

١٧٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَرْبَعٌ فِي ص:٥٤ أُمَّتِي مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ لَا يَتْرُكُونَهُنَّ: الْفَخْرُ فِي الْأَحْسَابِ وَالطَّعْنُ فِي الْأَنْسَابِ وَالِاسْتِسْقَاءُ بِالنُّجُومِ وَالنِّيَاحَةُ ". وَقَالَ: «النَّائِحَةُ إِذَا لَمْ تَتُبْ قَبْلَ مَوْتِهَا تُقَامُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَيْهَا سِرْبَالٌ مِنْ قطران وَدرع من جرب» . رَوَاهُ مُسلم

1727. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया मेरी उम्मत में जाहिलियत की चार खस्लते ऐसी है जिन्हें वह नहीं छोड़ेंगे, हस्ब पर फखर करना, नसब पर तान करना, सितारो के ज़रिए बारिश तलब करना और नोहा करना और फ़रमाया : जो नोहा करने वाली मौत से पहले तोबा न करे तो कियामत के रोज़ इस पर गंधक की कमीज़ होगी और खारिश का कुरता होगा | (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 934)، (2160)

١٧٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِامْرَأَةٍ تَبْكِي عِنْدَ قَبْرٍ فَقَالَ: «اتَّقِي اللَّهَ وَاصْبِرِي» قَالَتْ: إِلَيْكَ عَنِّي فَإِنَّكَ لَمْ تُصَبْ بِمُصِيبَتِي وَلَمْ تَعْرِفْهُ فَقِيلَ لَهَا: إِنَّهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَأَتَتْ بَابَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ تَجِدْ عِنْدَهُ بَوَّابِينَ فَقَالَتْ: لَمْ أَعْرِفْكَ. فَقَالَ: «إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْأُولَى»

1728. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ का एक औरत के पास से गुज़र हुआ जो एक कब्र के पास रो रही थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह से डरो और सब्र करो, इस ने कहा मुझ से दूर रहो, क्यूंकि तुम मेरी मुसीबत से दो चार नहीं हुए, इस ने आप को देख कर न पहचाना तो इसे बताया गया कि वह नबी ﷺ है, पस वह नबी ﷺ के दरवाज़े पर हाज़िर हुई तो इस ने देखा के वह कोई दरबान नहीं था, इस ने अर्ज़ किया, मैं आप को पहचान नहीं सकी, आप ﷺ ने फ़रमाया : सब्र तो इब्तिदाई सदमे के वक़्त है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (1283) و مسلم (15 / 926)، (2140)

١٧٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا يَمُوت لمُسلم ثَلَاث مِنَ الْوَلَدِ فَيَلِجُ النَّارَ إِلَّا تَحِلَّةَ الْقَسَمِ»

1729. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया : जिस मुसलमान के तीन बच्चे फौत हो जाए तो वह सिर्फ कसम पूरी करने के खातिर ही जहन्नम में जाएगा (वो भी पुल सीरत से गुज़रते वक़्त) ”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (6656) و مسلم (2632)، (6696)

١٧٣٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِنِسْوَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ: " لَا يَمُوتُ لِإِحْدَاكُنَّ ثَلَاثَةٌ من الْوَلَد فتحتسبه إِلَّا دخلت الْجنَّة. فَقَالَ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ: أَوِ اثْنَانِ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: أَوْ اثْنَانِ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي رِوَايَةٍ لَهما: «ثَلَاثَة لم يبلغُوا الْحِنْث»

1730. अबू हुरैरा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अंसार की औरतों से फ़रमाया: तुम में से किसी के तीन बच्चे फौत हो जाए और वह इस से सवाब तलब करे तो वह जन्नत में दाखिल होंगे, इन में से किसी औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या दो पर भी? आप ﷺ ने फ़रमाया दो पर भी, मुस्लिम और सहीहैन की रिवायत में है तीन नाबालिग बच्चे | (मुस्लिम)

رواه مسلم (151 / 2632) و البخارى (102 ، 1250) و مسلم (153 / 2634)، (6698 و 6700)

١٧٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ اللَّهُ: مَا لِعَبْدِي الْمُؤْمِنِ عِنْدِي جَزَاءٌ إِذَا قَبَضْتُ صَفِيَّهُ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا ثُمَّ احتسبه إِلَّا الْجنَّة ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

1731. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला फरमाते हैं : जब मैं अपने मोमिन बंदे की अहल दुनिया से किसी महबूब चीज़ उठाता हूँ और वह इस पर सब्र करता है तो इस के मेरे यहाँ जज़ा जन्नत के सिवा और कुछ नहीं | (बुखारी)

رواه البخارى (6420)

मय्यत पे रोने का बयान • الْبكاء على الْمَيِّت

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٧٣٢ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّائِحَةَ وَالْمُسْتَمِعَةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1732. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बाया करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नोहा करने वाली और कसीदा इसे

सुनने वाली पर लानत फ़रमाई | (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3128) * محمد بن الحسن بن عطية العوفى و ابوه ضعيفان و جده ضعيف مدلس و للحديث شواهد ضعيفة عند البيهقى (4 / 63) و غيره

١٧٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَجَبٌ لِلْمُؤْمِنِ: إِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ حمد الله وَشَكَرَ وَإِنْ أَصَابَتْهُ مُصِيبَةٌ حَمِدَ اللَّهَ وَصَبَرَ فالمؤمن يُؤْجَرُ فِي كُلِّ أَمْرِهِ حَتَّى فِي اللُّقْمَةِ يَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِهِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

1733. सअद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मोमिन की अजीब शान है, अगर इसे कोई खैर व भलाई नसीब होती है तो अल्लाह की हम्द बयान करता और शुक्र करता है, और अगर इसे कोई मुसिबत पहुँचती है तो भी अल्लाह की हम्द बयान करता है और सब्र करता है, पस मोमिन अपने (शुक्र व सब्र के) हर मुआमले में अज्र पाता है, हत्ता कि इस लुकमे पर भी जो वह अपने अहलिया के मुह में डालता है| (सहीह,मुस्लिम)

اسناده صحيح ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4485) [و احمد (1 / 173 ، [177 ح 1531 ، وسنده صحيح] 172)] * وله شاهد فى صحيح مسلم (2999)، (7500)

١٧٣٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ مُؤْمِنٍ إِلَّا وَله بَابَانِ: بَاب يصعد مِنْهُ علمه وَبَابٌ يَنْزِلُ مِنْهُ رِزْقُهُ. فَإِذَا مَاتَ بَكَيَا عَلَيْهِ فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: (فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاء وَالْأَرْض)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1734. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : हर मोमिन के लिए दो दरवाज़े है, एक दरवाज़े से इस के आमाल ऊपर चढ़ते है और एक दरवाज़े से इस का रिज्क नाजिल होता हो, जब वह फौत हो जाता है तो वह दोनों इस पर रोते है पस यह अल्लाह तआला का फरमान है: इन पर न आसमान रोया न ज़मीन| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3255 وقال : غريب) * موسى بن عبيدة و يزيد بن ابان : ضعيفان

١٧٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» مَنْ كَانَ لَهُ فرطان من متي أَدْخَلَهُ اللَّهُ بِهِمَا الْجَنَّةَ ". فَقَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَنْ كَانَ لَهُ فَرَطٌ مَنْ أُمَّتِكَ؟ قَالَ: «وَمَنْ كَانَ لَهُ فَرَطٌ يَا مُوَفَّقَةُ» . فَقَالَتْ: فَمَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ فَرَطٌ مِنْ أُمَّتِكَ؟ قَالَ: «فَأَنَا فَرَطُ أُمَّتِي لَنْ يُصَابُوا بِمِثْلِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1735. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मेरी उम्मत में से जिस शख़्स के दो बच्चे पशिरो हुए (यानि फौत हो जाए) तो अल्लाह इन की वजह से इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, आप की उम्मत में जीस का एक पशिरो हो? आप ने फ़रमाया : मुवफ्फक (जिस

को तौफ़ीक़ दी गई हो) जिस का एक पशिरो हो (वो भी जन्नती है) , उन्होंने अर्ज़ किया, आप की उम्मत में से जिस का एक भी पशिरो न हो? आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं अपनी उम्मत का पशिरो होंगा, उन्हें मेरी मिसाल कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी | तिरमिजी और इन्होंने कहा यह हदीस गरीब है | (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1062)

١٧٣٦ - (ضَعِيف) وَعَن أبي مُوسَى اشعري قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا مَاتَ وَلَدُ الْعَبْدِ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى لِمَلَائِكَتِهِ: قَبَضْتُمْ وَلَدَ عَبْدِي؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيَقُولُ: قَبَضْتُمْ ثَمَرَةَ فُؤَادِهِ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ. فَيَقُولُ: مَاذَا قَالَ عَبْدِي؟ فَيَقُولُونَ: حَمِدَكَ وَاسْتَرْجَعَ. فَيَقُولُ اللَّهُ: ابْنُوا لِعَبْدِي بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَسَمُّوهُ بَيت الْحَمد ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

1736. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब बंदे का बच्चा फौत हो जाता है तो अल्लाह तआला फरिश्तो से फरमाता है, क्या तुम ने मेरे बंदे के बच्चे (की रूह) को कब्ज़ कर लिया? वह अर्ज़ करते हैं, जी हाँ! फिर वह पूछता है क्या तूम ने इस के समर कल्ब (जिगर गोश्त की रूह) को कब्ज़ कर लिया? वह अर्ज़ करते हैं, जी हाँ! अल्लाह फरमाता है कि मेरे बंदे के लिए जन्नत में एक घर बना दो और इस का नाम बैतूल हम्द रखो | (ज़ईफ़,हसन)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 415 ح 19963) و الترمذی (1021 وقال : حسن غریب) * وقال البیھقی فی السنن الکبریٰ :’’ الضحاک بن عبد الرحمن : لم یثبت سماعه من ابی موسی و عیسی بن سنان : ضعیف ‘‘ (1 / 284285)

١٧٣٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من عَزَّى مُصَابًا فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ مَرْفُوعًا إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عَلِيِّ بْنِ عَاصِمٍ الرَّاوِي وَقَالَ: وَرَوَاهُ بَعْضُهُمْ عَنْ مُحَمَّد بن سوقة بِهَذَا الْإِسْنَاد مَوْقُوفا

1737. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसिबत जदाह शख़्स को तसल्ली देता है तो इसे भी इसके मिसल अजर मिलता है| तिरमिजी इब्ने माजा और इमाम तिरमिजी ने फ़रमाया यह हदीस गरीब है और हम अली बिन आसिम से मरवी हदीस से इसे मरफु जानते हैं और इन्होंने (इमाम तिरमिजी) ने फ़रमाया ; इन में से बाज़ ने इसे मुहम्मद बिन सोक से इसी सनद के साथ मौकूफ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1073) و ابن ماجه (1602) * قال البیھقی :’’ تفرد به علی بن عاصم وھو احد ما انکر علیه ‘‘ (4 / 59) وھو ضعیف (تقدم : 1177) وله متابعات ضعیفة

١٧٣٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي بَرْزَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ عَزَّى ثَكْلَى كسي بردا فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

1738. अबू बरजा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी औरत को जिस का बच्चा गुम हो जाए तसल्ली देता है, तो इसे जन्नत में एक कीमती लिबास पहनाया जाएगा| तिरमिजी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस गरीब है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1076) * منية بنت عبيد : لا يعرف حالها

١٧٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: لَمَّا جَاءَ نَعْيُ جَعْفَرٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: صانعوا لِآلِ جَعْفَرٍ طَعَامًا فَقَدْ أَتَاهُمْ مَا يَشْغَلُهُمْ)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

1739. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं, जाफर की सहादत की खबर आई तो नबी ﷺ ने फ़रमाया : आले जाफर के लिए खाना तैयार करो इन के पास ऐसी चीज़े (यानि खबर) आई है जो इन्हें मशगुल रखेगी | (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (998 وقال : حسن) و ابوداؤد (3122) و ابن ماجه (1610) [و صححه الحاكم (1 / 372) و وافقه الذهبی]

الْبكاء على الْمَيِّت • मय्यत पे रोने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٧٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «من نِيحَ عَلَيْهِ فَإِنَّهُ يُعَذَّبُ بِمَا نِيحَ عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَة»

1740. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना : जिस शख़्स पर नोहा किया जाए तो इस पर नोहा किए जाने के बाईस रोज़े कियामत इसे अज़ाब दिया जाए | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1291) و مسلم (28 / 933)، (2157)

١٧٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ وَذُكِرَ لَهَا أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: إِنَّ الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِبُكَاءِ الْحَيِّ عَلَيْهِ تَقُولُ: يَغْفِرُ اللَّهُ لِأَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَمَا إِنَّهُ لَمْ يَكْذِبْ وَلَكِنَّهُ نَسِيَ أَوْ أَخْطَأَ إِنَّمَا مَرَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى يَهُودِيَّةٍ يُبْكَى عَلَيْهَا فَقَالَ: «إِنَّهُمْ لَيَبْكُونَ عَلَيْهَا وَإِنَّهَا لتعذب فِي قبرها»

1741. अमरह बिन्ते अब्दुल रहमान रहिमहुल्लाह से रिवायत है के इन्होंने कहा, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से सुना और उन्हें बताया गया के अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, के मैय्यत को इस के

कबिले के इस पर रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है, उन्होंने फ़रमाया : अल्लाह अबू अब्दुल रहमान को माफ़ फरमाए इन्हों ने झूठ नहीं बोला, बल्कि वह भूल गई या गलती कर गए बात सिर्फ इतनी है के रसूलुल्लाह ﷺ एक यहूदी औरत के पास से गुज़रे जिस पर इस के घर वाले रो रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया : बेशक यह तो इस पर रो रहे जबकि इसे अपनी कब्र में अज़ाब हो रहा है | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1289) و مسلم (27 / 932)، (2156)

١٧٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: تُوُفِّيَتْ بِنْتٌ لِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ بِمَكَّةَ فَجِئْنَا لِنَشْهَدَهَا وَحَضَرَهَا ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ عَبَّاسٍ فَإِنِّي لَجَالِسٌ بَيْنَهُمَا فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بن عمر لعَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ وَهُوَ مُوَاجِهُهُ: أَلَا تَنْهَى عَنِ الْبُكَاءِ؟ فَإِنَّ ص:٥٤ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ» . فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَدْ كَانَ عُمَرُ يَقُولُ بَعْضَ ذَلِكَ. ثُمَّ حَدَّثَ فَقَالَ: صَدَرْتُ مَعَ عُمَرَ مِنْ مَكَّةَ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ فَإِذَا هُوَ بِرَكْبٍ تَحْتَ ظِلِّ سَمُرَةٍ فَقَالَ: اذْهَبْ فَانْظُرْ مَنْ هَؤُلَاءِ الرَّكْبُ؟ فَنَظَرْتُ فَإِذَا هُوَ صُهَيْبٌ. قَالَ: فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ادْعُهُ فَرَجَعْتُ إِلَى صُهَيْبٍ فَقُلْتُ: ارْتَحِلْ فَالْحَقْ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ فَلَمَّا أَنْ أُصِيبَ عُمَرُ دَخَلَ صُهَيْبٌ يبكي يَقُول: وَا أَخَاهُ واصاحباه. فَقَالَ عُمَرُ: يَا صُهَيْبُ أَتَبْكِي عَلَيَّ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِبَعْضِ بُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ؟» فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَلَمَّا مَاتَ عُمَرُ ذَكَرْتُ ذَلِك لعَائِشَة فَقَالَت: يَرْحَمُ اللَّهُ عُمَرَ لَا وَاللَّهِ مَا حَدَّثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن الْمَيِّتَ لَيُعَذَّبُ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ وَلَكِنْ: إِنَّ اللَّهَ يَزِيدُ الْكَافِرَ عَذَابًا بِبُكَاءِ أَهْلِهِ عَلَيْهِ. وَقَالَتْ عَائِشَةُ: حَسْبُكُمُ الْقُرْآنُ: (وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وزر أُخْرَى)»» قَالَ ابْن عَبَّاس عِنْد ذَلِك: وَالله أضْحك وأبكي. قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: فَمَا قَالَ ابْنُ عمر شَيْئا

1742. अब्दुल्लाह बिन अबी मुलायका रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु की बेटी मक्के वफात पा गई, तो हम इस के जनाज़े में शरीक होने के लिए आए, जबकि इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा भी तशरीफ़ लाए थे, मैं इन दोनों के दरम्यान बेठा हुआ था, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने अम्र बिन उस्मान से फ़रमाया: जबकि वह इस के मुकाबले थे, किया तुम रोने से मना नहीं करते? क्यूंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “मैय्यत को इस के घर वालो के इस पर रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : उमर रदियल्लाहु अन्हु इस का बाज़ हिस्सा बयान किया करते थे, फिर उन्होंने (इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा) ने हदीस बयान की तो फ़रमाया : मैं उमर रदियल्लाहु अन्हु के साथ मक्के से वापस आया, हत्ता कि जब हम अल बयदा के करीब पहुंचे तो इन्होंने घने साए तक एक काफिला देखा तो फ़रमाया : जाओ देखो के यह कोन लोग है? मैंने देखा तो वह सुहैब रदियल्लाहु अन्हु थे, चुनांचे हम ने इन को बताया, तो इन्होंने फ़रमाया : इस (सुहैब रदियल्लाहु अन्हु) को बुलाओ में सहिब रदियल्लाहु अन्हु के पास गया तो मैंने कहा : यहाँ से कुच करो और अमीरुल मोमिनीन के पास चलो, फिर जब उमर रदियल्लाहु अन्हु को जख्मी कर दिया गया, तो सुहैब रदियल्लाहु अन्हु रोते हुए आए और कहने लगे : आह भाई पर कितना अफ़सोस है! आह भाई पर कितना अफ़सोस है! तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया सुहैब! क्या तुम मुझे पर रोते हो? जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है: मय्यत को इस के घर वालो की तरफ से इस पर रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : जब उमर रदियल्लाहु अन्हु फौत हुए तो मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से यह ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया : अल्लाह उमर रदियल्लाहु अन्हु पर रहम फरमाए. नहीं अल्लाह की कसम! रसूलुल्लाह ﷺ ने यह हदीस बयान

नहीं की के “ मैयत को इस के घर वालो की तरफ से इस पर रोने की वजह से अज़ाब दिया जाता है, बलके अल्लाह काफ़िर शख़्स पर इस के घर वालो के रोने की वजह से अज़ाब बढ़ा देता है, और आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया : अल्लाह ही हंसाता है और रुलाता है, इब्ने अबी मुलायका ने फ़रमाया : इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने कोई बात न की | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (12861288) و مسلم (23 / 927929)، (2150)

١٧٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا جَاءَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَتْلُ ابْنِ حَارِثَةَ وَجَعْفَرٍ وَابْنِ رَوَاحَةَ جَلَسَ يُعْرَفُ فِيهِ الْحُزْنُ وَأَنَا أَنْظُرُ مِنْ صَائِرِ الْبَابِ تَعْنِي شَقَّ الْبَابِ فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ نِسَاءَ جَعْفَرٍ وَذَكَرَ بُكَاءَهُنَّ فَأَمَرَهُ أَنْ يَنْهَاهُنَّ فَذَهَبَ ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ لَمْ يُطِعْنَهُ فَقَالَ: انْهَهُنَّ فَأَتَاهُ الثَّالِثَةَ قَالَ: وَاللَّهِ غَلَبْنَنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَزَعَمْتُ أَنَّهُ قَالَ: «فَاحْثُ فِي أَفْوَاهِهِنَّ التُّرَابَ» . ص:٥٤ فَقُلْتُ: أَرْغَمَ اللَّهُ أَنْفَكَ لَمْ تَفْعَلْ مَا أَمَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ تَتْرُكْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ العناء

1743. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ के पास इब्ने हरिस, जाफर और इब्ने रवाही (रअह) की खबर ए शहादत पहुंचे तो आप (मस्जिद में) बैठ गए और आप के चहरे पर गम के आसार वाजे थी, और मैं दरवाज़े की झिरी से देख रही थी, इतने में एक आदमी आप के पास आया तो इस ने अर्ज़ किया, जाफर रदियल्लाहु अन्हु की औरतें रो रही है, आप ﷺ ने ऐसे फ़रमाया के उन्हें मना करो, वह चला गया (और इन्हें मना किया लेकिन वह बाज़ न आइ) फिर वह दूसरी मरतबा आप के पास आया और अर्ज़ किया, के वह इस की बात नहीं मानते, आप ﷺ ने फ़रमाया : इन्हें मना करो, लेकिन वह तीसरी मरतबा फिर आया और अर्ज़ किया, : अल्लाह की कसम! अल्लाह के रसूल!! वह हम पर ग़ालिब आगई है, (आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने गुमान किया के आप ﷺ ने फ़रमाया : इन को मुं में मिटटी दालो, मैंने कहा : अल्लाह तेरी नाक खाक आलूद करे, रसूलुल्लाह ﷺ ने जो हुक्म दिया तो इसे बजा लाया न रसूलुल्लाह ﷺ को तकलीफ पहुँचाना तर्क किया | (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (1299) و مسلم (30 / 935)، (2161)

١٧٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: لَمَّا مَاتَ أَبُو سَلَمَةَ قُلْتُ غَرِيبٌ وَفِي أَرْضِ غُرْبَةٍ لَأَبْكِيَنَّهُ بُكَاءً يُتَحَدَّثُ عَنْهُ فَكُنْتُ قَدْ تَهَيَّأْتُ لِلْبُكَاءِ عَلَيْهِ إِذْ أَقْبَلَتِ امْرَأَةٌ تُرِيدُ أَنْ تُسْعِدَنِي فَاسْتَقْبَلَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَتُرِيدِينَ أَنْ تُدْخِلِي الشَّيْطَانَ بَيْتًا أَخْرَجَهُ اللَّهُ مِنْهُ؟» مَرَّتَيْنِ وَكَفَفْتُ عَنِ الْبُكَاءِ فَلَمْ أبك. رَوَاهُ مُسلم

1744. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब अबू सलमा रदियल्लाहु अन्हु फौत हुए तो मैंने कहा : परदेसी शख़्स परदेस में फौत हो गया, मैं इस मरतबा इस क़दर रोउंगी कि एक दास्ताँ बन जाएगी, मैं इस पर रोने की पूरी तैय्यारी कर चुकी कि एक औरत आई वह रोने में मेरा साथ देना चाहती थी, रसूलुल्लाह ﷺ इस की तरफ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : क्या तुम ऐसे घर में शैतान दाखिल करना चाहती हो जहाँ से अल्लाह ने इसे निकाल बाहर किया है, आप ने दो मरतबा ऐसे फ़रमाया, पस मैं रोने से रुक गई और मैं न रोई | (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 922)، (2134)

١٧٤٥ - (صَحِيح) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: أُغْمِيَ عَلَى عَبْدِ اللَّهِ بْنِ رَوَاحَةَ فَجَعَلَتْ أُخْتُهُ عَمْرَةُ تبْكِي: واجبلاه واكذا واكذا تُعَدِّدُ عَلَيْهِ فَقَالَ حِينَ أَفَاقَ: مَا قُلْتِ شَيْئًا إِلَّا قِيلَ لِي: أَنْتَ كَذَلِكَ؟ زَادَ فِي رِوَايَةٍ فَلَمَّا مَاتَ لَمْ تَبْكِ عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1745. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन रवाह रदियल्लाहु अन्हु पर बेहोशी तारी हुई तो इन के बहन उमरा रोने लगी और कहने लगी, आह पहाड़ पर कितना अफ़सोस, आह, इस तरह और इस तरह वह इन के मुहासन बयान करने लगी, जब उन्हें होश आया तो इन्होंने फ़रमाया: आप ने जो कुछ भी कहा, वह मुझ से पूछा गया कि क्या तुम इसी तरह हो? और एक रिवायत में यह नक़ल किया है : जब वह (अब्दुल्लाह बिन रवाह रदियल्लाहु अन्हु) शहीद हुए तो फिर वह इन पर न रोए | (बुखारी)

رواه البخارى (4267)

١٧٤٦ - (حَسَنٌ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَا من ميت يَمُوت فَيقوم باكيهم فيقولك: واجبلاه واسيداه وَنَحْوَ ذَلِكَ إِلَّا وَكَّلَ اللَّهُ بِهِ مَلَكَيْنِ يَلْهَزَانِهِ وَيَقُولَانِ: أَهَكَذَا كُنْتَ؟ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ حَسَنٌ

1746. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: जब कोई शख़्स फौत हो जाता है और इसे रोने वाले खड़े हो कर कहते हैं: आह पहाड़, आह सरदार और इस तरह की कोई बात की तो अल्लाह इस (मैय्यत) पर दो फ़रिश्ते मुकरर फरमा देता है, जो इसे मरते हुए धक्के दे कर कहते हैं: क्या तू ऐसे ही था? तिरमिज़ी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस हसन गरीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1003)

١٧٤٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: مَاتَ مَيِّتٌ مِنْ آلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاجْتَمَعَ النِّسَاءُ يَبْكِينَ عَلَيْهِ فَقَامَ عُمَرُ يَنْهَاهُنَّ وَيَطْرُدُهُنَّ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعْهُنَّ فَإِنَّ الْعَيْنَ دَامِعَةٌ وَالْقَلْبَ مُصَابٌ وَالْعَهْدَ قَرِيبٌ» . رَوَاهُ ص:٥٤ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ

1747. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की आल में से कोई शख़्स फौत हो गया, तो औरतें जमा हो कर इस पर रोने लगी, जबकि उमर रदियल्लाहु अन्हु इन्हें रोकने और दूर हटाने के लिए खड़े हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : उमर इन्हें छोड़ दो क्यूंकि आंखे अश्कबार है और दिल गमनाक है और अभी सदमा ताज़ा है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 444) و النسائی (4 / 19 ح 1860) * سلمة بن الارزق : مستور ، لم اجد من و ثقه غير ابن حبان

١٧٤٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَاتَتْ زَيْنَبُ بِنْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَكَتِ النِّسَاء فَجعل عُمَرُ يَضْرِبُهُنَّ بِسَوْطِهِ فَأَخَّرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ وَقَالَ: «مهلا يَا عمر» ثُمَّ قَالَ: «إِيَّاكُنَّ وَنَعِيقَ الشَّيْطَانِ» ثُمَّ

قَالَ: «إِنَّهُ مَهْمَا كَانَ مِنَ الْعَيْنِ وَمِنَ الْقَلْبِ فَمِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَمِنَ الرَّحْمَةِ وَمَا كَانَ مِنَ الْيَدِ وَمِنَ اللِّسَانِ فَمِنَ الشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ أَحْمد

1748. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की साहब जादी जैनब रदियल्लाहु अन्हा वफात पा गई तो औरतें रोने लगी, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु कोड़े के साथ इन्हें मारने लगे, जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक के साथ इन्हें पीछे कर दिया और फ़रमाया : उमर कुछ मुहलत दो फिर फ़रमाया (औरतों की जमात) शैतानी आवाज़ से बचो, फिर फ़रमाया जहाँ तक आंख (के अश्क बार होने) और दिल (के गमगीन होने) का ताल्लुक है तो वह अल्लाह अज्ज़वजल की तरफ से है और रहमत है और जो हाथ और ज़बान से कोई हरकत हो तो वह शैतान की तरफ से है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (1 / 335 ح 3103 ، 237238 ح 2127) * فیه علی بن زید بن جدعان ضعیف

١٧٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبُخَارِيِّ تَعْلِيقًا قَالَ: لَمَّا مَاتَ الْحَسَنُ بن الْحسن بن عَلِيّ ضَرَبَتِ امْرَأَتُهُ الْقُبَّةَ عَلَى قَبْرِهِ سَنَةً ثُمَّ رَفَعَتْ فَسَمِعَتْ صَائِحًا يَقُولُ: أَلَا هَلْ وَجَدُوا مَا فَقَدُوا؟ فَأَجَابَهُ آخَرُ: بَلْ يَئِسُوا فَانْقَلَبُوا

1749. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने मुआल्क रिवायत बयान की है कि जब हसन बिन हसन बिन अली रहिमहुल्लाह फौत हुए, तो इन की अहलिया ने साल भर के लिए इन की कब्र पर खैमा लगा लिया, फिर इन्होंने उठा लिया तो इन्होंने किसी पुकारने वाले को सुना, क्या इन्होंने अपनि मफ्कुद चीज़ को पा लिया? दूसरे ने जवाब दिया नहीं बल्कि मायूस हो गई तो वापस चली गई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البخاری تعلیقاً (الجنائز باب 61 قبل ح 1330) [و انظر تغلیق التعلیق (2 / 482] * محمد بن حمید : ضعیف و مغیرة بن مقسم مدلس ولم اجد تصریح سماعه

١٧٥٠ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ وَأَبِي بَرْزَةَ قَالَا: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنَازَةٍ فَرَأَى قَوْمًا قَدْ طَرَحُوا أَرْدَيْتَهُمْ يَمْشُونَ فِي قُمُصٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبِفِعْلِ الْجَاهِلِيَّةِ تَأْخُذُونَ؟ أَوْ بِصَنِيعِ الْجَاهِلِيَّةِ تَشَبَّهُونَ؟ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَدْعُوَ عَلَيْكُمْ دَعْوَةً تَرْجِعُونَ فِي غَيْرِ صُوَرِكُمْ» قَالَ: فَأَخذُوا أرديتهم وَلم يعودوا لذَلِك. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1750. इमरान बिन हुसैन और अबू यज़ीद रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक जनाज़े में शरीक हुए तो आप ने कुछ लोगों को देखा के इन्होंने अपनी ऊपर वाली चादरे उतार फेंकी है, और सिर्फ कमिस पहन कर चल रहे हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने (ये मंज़र देख कर) फ़रमाया: क्या तुम जाहिलियत का सा काम कर रहे हो या जाहिलियत के काम से मुशाबिहत इख़्तियार कर रहे हो? मैंने इरादा किया कि तुम्हारे लिए बद्दुआ करू की तुम्हारी सूरते मस्ख हो जाए, रावी बयान करते हैं, उन्होंने अपनी चादरे ले ली और फिर दोबारा ऐसा नहीं किया | (मौज़ु)

اسناده موضوع ، رواه ابن ماجه (1485) * نفیع بن الحارث ابوداؤد الاعمی کذاب و علی بن الحزور : متروک

١٧٥١ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُتْبَعَ ص:٥٤ جَنَازَةٌ مَعهَا رانة. رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

1751. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसे जनाज़े में शरीक होने से मना फ़रमाया जिसके साथ कोई नोहा करने वाली हो| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 92 ح 5668) و ابن ماجه (1583) * ابو يحيى القتات روى عنه اسرائيل احاديث كثيرة مناكير جدًا

١٧٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لَهُ: مَاتَ ابْنٌ لِي فَوَجَدْتُ عَلَيْهِ هَلْ سَمِعْتَ مِنْ خَلِيلِكَ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ شَيْئًا يَطَيِّبُ بِأَنْفُسِنَا عَنْ مَوْتَانَا؟ قَالَ: نَعَمْ سَمِعْتُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «صِغَارُهُمْ دَعَامِيصُ الْجَنَّةِ يلقى أحدهم أَبَاهُ فَيَأْخُذ بِنَاحِيَةِ ثَوْبِهِ فَلَا يُفَارِقُهُ حَتَّى يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ مُسلم وَأحمد وَاللَّفْظ لَهُ

1752. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी ने इन से कहा की मेरा बेटा फौत हो गया तो मैंने इस पर बहुत गम किया है, क्या आप ने अपने खलील ﷺ से एसी चीज़ सुनी है जिस से हम अपने फौत शुद्गन के बारे में अपने दीलो को खुश कर ले, उन्होंने फ़रमाया, हाँ, मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना, आप ने फ़रमाया इन के छोटे बच्चे जन्नत के कतरे होंगे, इन में से एक अपने वालिद से मुलाक़ात करेगा तो वह इसे कपड़े के किनारे से पकड़ लेगा, फिर वह इस से अलग नहीं होगा हत्ता के वह इसे जन्नत में ले जाएगा | मुस्लिम अहमद और अल्फाज़ मुसनद अहमद के हैं | (मुस्लिम)

رواه مسلم (154 / 2635)، (6701) و احمد (2 / 488 ح 10330)

١٧٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ تُعَلِّمُنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللَّهُ. فَقَالَ: «اجْتَمِعْنَ فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا فِي مَكَانِ كَذَا وَكَذَا» فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللَّهُ ثُمَّ قَالَ: «مَا مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُقَدِّمَ بَيْنَ يَدَيْهَا من وَلَدهَا ثَلَاثَة إِلَّا كَانَ لَهَا حِجَابا ن النَّارِ» فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَوِ اثْنَيْنِ؟ فَأَعَادَتْهَا مَرَّتَيْنِ. ثُمَّ قَالَ: «وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1753. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक औरत रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो इस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप की हदीस के मुआमले में मर्द हज़रात सबकत ले गए, आप हमारे लिए भी एक दीन मुक़र्रर फरमा दें जीस रोज़ हम आप की खिदमत में हाज़िर हो आप हमें वह तालीम दे, जो अल्लाह ने आप ﷺ को दी हैं आप ने फ़रमाया : आप फलां फलां दीन फलां फलां जगह जमा हो जाया करे, पस वह इकट्ठी हो गई तो रसूलुल्लाह ﷺ इन के पास तशरीफ़ लाए, तो आप ने अल्लाह की तालीमात में से इन्हें कुछ तालीमात दी, फिर फ़रमाया, तुम में से जिसके तिन बच्चे फौत हो जाए तो वह इस के लिए जहन्नम से हिजाब बन जाएगे,

इन में से किसी औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर दो हो? इस ने दो मर्तबा यह बात कही, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया अगर दो हो, अगर दो हो, अगर दो हो | (बुखारी)

رواه البخاری (101)

١٧٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يُتَوَفَّى لَهُمَا ثَلَاثَةٌ إِلَّا أَدْخَلَهُمَا اللَّهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ إِيَّاهُمَا» . فَقَالُوا: يَا رَسُولَ الله أَو اثْنَان؟ قَالَ: «أواثنان» . قَالُوا: أَوْ وَاحِدٌ؟ قَالَ: «أَوْ وَاحِدٌ» . ثُمَّ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ السِّقْطَ لَيَجُرُّ أُمَّهُ بِسَرَرِهِ إِلَى الْجَنَّةِ إِذَا احْتَسَبَتْهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ مِنْ قَوْلِهِ: «وَالَّذِي نَفسِي بِيَدِهِ»

1754. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस मुसलमान वालिदेन के तीन बच्चे फौत हो जाए तो अल्लाह इन पर अपना फज़ल व करम करते हुए इन्हें जन्नत में दाखिल फरमाएगा, सहाबी ने अर्ज़ किया, अगर दो हो? आप ﷺ ने फ़रमाया अगर दो हो, इन्होंने फिर अर्ज़ किया, अगर एक हो? आप ﷺ ने फ़रमाया अगर एक हो तब भी, फिर फ़रमाया इस जात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, नामुकम्मल बच्चा अपनी माँ को अपनी आनुल (नाभ) से खिंच कर जन्नत में ले जाएगा बशर्ते वह इस (की वफात पर सब्र करे, अहमद इब्ने माजा ने से (وَالَّذِي نَفسِي بِيَدِهِ) आख़िर तक हदीस रिवायत की है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 241 ح 22441) و ابن ماجه (1609) * يحيى بن عبيدالله التيمى ضعيف

١٧٥٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " من قَدَّمَ ثَلَاثَةً مِنَ الْوَلَدِ لَمْ يَبْلُغُوا الْحِنْثَ: كَانُوا لَهُ حِصْنًا حَصِينًا مِنَ النَّارِ " فَقَالَ أَبُو ذَرٍّ: قَدَّمْتُ اثْنَيْنِ. قَالَ: «وَاثْنَيْنِ» . قَالَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ أَبُو الْمُنْذِرِ سَيِّدُ الْقُرَّاءِ: قدمت وَاحِد. قَالَ: «وَوَاحِد» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

1755. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस शख़्स के तीन नाबालिग बच्चे फौत हो जाए तो वह इस के लिए जहन्नम से मजबूत हिसार (किला) बन जाएँगे, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मेरे दो बच्चे फौत हुए है, आप ﷺ ने फ़रमाया : दो भी, सय्यद अल्कुरा अबू मुन्ज़र उबय्य बिन काब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मेरा एक बच्चा फौत हुआ है, आप ﷺ ने फ़रमाया : एक भी | तिरमिजी इब्ने माजा और इमाम तिरमिजी ने फ़रमाया यह हदीस गरीब है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1061) و ابن ماجه (1606) * ابو عبيدة لم يسمع من ابيه و ابو محمد مولی عمر : مجهول

١٧٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ قُرَّةَ الْمُزَنِيِّ: أَنَّ رَجُلًا كَانَ يَأْتِي النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ ابْنٌ لَهُ. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتُحِبُّهُ؟» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبَّكَ اللَّهُ كَمَا أُحِبُّهُ. فَفَقَدَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَا فَعَلَ ابْنُ فُلَانٍ؟» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَاتَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَّا تحب أَلا تَأْتِيَ بَابًا مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ إِلَّا وَجَدْتَهُ يَنْتَظِرُكَ؟» فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَهُ خَاصَّةً أَمْ لِكُلِّنَا؟ قَالَ: «بَلْ لِكُلِّكُمْ» . رَوَاهُ أَحْمد

1756. कुर्रतुल मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी अपने बेटे के साथ नबी ﷺ की खिदमत में आया करता था, नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: क्या तुम इसे मुहब्बत करते हो? इस ने अर्ज़ किया, : अल्लाह के रसूल!! मैं जैसे इस से मोहब्बत करता हूँ वैसे अल्लाह आप से मोहब्बत करे, नबी ﷺ ने इसे ना पाया तो पूछा: इब्ने फलां को क्या हुआ? उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल!! वह फौत हो गया, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क्या तुम पसंद नहीं करते की तुम जन्नत की जीस दरवाज़े पर जाओ तो तुम इसे वहां अपने मुन्तजिर पाओ? किसी आदमी ने कहा, अल्लाह के रसूल!! क्या यह इस शख़्स के लिए खास है या हम सब के लिए है, आप ﷺ ने फ़रमाया : बलके तुम सब के लिए है | (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (5 / 25 ، 3435 ، 3 / 436) [و النسائی (4 / 23 ح 1871) و صححه ابن حبان (الموارد : 725) و الحاکم (1 / 384) و وافقه الذهبی]

١٧٥٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِن السِّقْطَ لَيُرَاغِمُ رَبَّهُ إِذَا أَدْخَلَ أَبَوَيْهِ النَّارَ فَيُقَالُ: أَيُّهَا السِّقْطُ الْمُرَاغِمُ رَبَّهُ أَدْخِلْ أَبَوَيْكَ الْجَنَّةَ فَيَجُرُّهُمَا بِسَرَرِهِ حَتَّى يُدْخِلَهُمَا الْجَنَّةَ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1757. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब नामुकम्मल पैदा होने वाले बच्चे के वालिदेन को जहन्नम में दाखिल किये जाने का इरादा किया जाएगा तो वह अपने रब से झगड़ा करेगा तो इसे कहा जाएगा अपने रब से झगड़ा करने वाले नामुकम्मल बच्चे अपने वालिदेन को जन्नत में ले जा, वह अपने आनुल से उन्हें खिचेगा हत्ता के इन्हें जन्नत में ले जाएगा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (1608) * مندل ضعیف و اسماء بنت عابس : لا یعرف حالها

١٧٥٨ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: ابْنَ آدَمَ إِنْ صَبَرْتَ وَاحْتَسَبْتَ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْأُولَى لَمْ أَرْضَ لَكَ ثَوَابًا دُونَ ص:٥٥ الْجَنَّةِ ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1758. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया : अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है, इब्ने आदम अगर तूने सदमे की इब्तिदा पर ही सब्र किया और सवाब की उम्मीद की तो मैं तेरे लिए जन्नत से कमतर सवाब पर राज़ी नहीं होऊंगा | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (1597) [و صححه البوصیری]

١٧٥٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ وَلَا مُسْلِمَةٍ يُصَابُ بِمُصِيبَةٍ فَيَذْكُرُهَا وَإِنْ طَالَ عَهْدُهَا فَيُحْدِثُ لِذَلِكَ اسْتِرْجَاعًا إِلَّا جَدَّدَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى لَهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَأَعْطَاهُ مِثْلَ أَجْرِهَا يَوْمَ أُصِيبَ بِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

1759. हुसैन बिन अली रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: जब कोई मुसलमान

मर्द या मुसलमान औरत किसी मुसीबत में मुबतिला हो जाए और फिर इस (मुसीबत के वाकिया होने) के तवील मुद्दत के बाद इसे नए सिरे से याद आजाए और वह (إن لله وإنا إلي هي راجعون) पढ़ ले तो अल्लाह तबारक व तआला इस नए सिरे से इतनाही सवाब अता फरमा देता है जितना इसने मुसीबत के वाकिये के रोज़ सवाब अता किया था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (1 / 201 ح 1734) و البيهقى فى شعب الايمان (9695) * هشام بن زياد ابو المقدام متروک و امه ’’ لا تعرف ‘‘ كما فى آخر التقريب (ص 480)

١٧٦٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا انْقَطَعَ شِسْعُ أَحَدِكُمْ فَلْيَسْتَرْجِعْ فَإِنَّهُ مِنَ المصائب» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

1760. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम में से किसी के जूते की तस्मी टूट जाए तो वह (إن لله وإنا إلي هي راجعون) पढ़े क्यूंकि यह भी मुसीबतों में से है | (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9693) * فيه يحيى بن عبيد الله : ضعيف متروک و ابوه مجهول و للحديث شواهد ضعيفة

١٧٦١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَمِّ الدَّرْدَاءِ قَالَتْ: سَمِعْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ: يَا عِيسَى إِنِّي بَاعِثٌ مِنْ بَعْدِكَ أُمَّةً إِذَا أَصَابَهُمْ مَا يُحِبُّونَ حَمِدُوا اللَّهَ وَإِنْ أَصَابَهُمْ مَا يَكْرَهُونَ احْتَسَبُوا وَصَبَرُوا وَلَا حِلْمَ وَلَا عَقْلَ. فَقَالَ: يَا رَبِّ كَيْفَ يَكُونُ هَذَا لَهُمْ وَلَا حِلْمَ وَلَا عَقْلَ؟ قَالَ: أُعْطِيهِمْ مِنْ حِلْمِي وَعِلْمِي ". رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

1761. उम्मे दरदा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अबू दरदा को बयान करते हुए सुना. उन्होंने कहा: मैंने अबुलकासिम ﷺ को फरमाते हुए सुना : अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमाया : इसा मैं तेरे बाद एक उम्मर भेजने वाला हूँ जब उन्हें कोई पसंदीदा चीज़ मिलेगी तो वह अल्लाह की हम्द बयान करेगी और अगर किसी नागवार चीज़ से वास्ता पड़ेगा तो वह सवाब की उम्मीद के साथ सब्र करेगी, हालाँकि कोई हिल्म व अक़्ल नहीं होगी इन्होंने अर्ज़ किया, मेरे परवरदिगार यह कैसे हो सकता है जबकि हिल्म व अक्ल न हो? फ़रमाया : मैं इन्हें अपने हिलम व इल्म से अता करूंगा | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9953) * عبدالله بن صالح كاتب الليث بن سعد : لم يرو عنه الحذاق هذا الحديث ، و يزيد بن ميسرة ابو حلبس : و ثقه ابن حبان وحده

क़ब्रो की ज़ियारत का बयान • بَاب زِيَارَة الْقُبُور

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٧٦٢ - (صَحِيح) عَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ فَزُورُوهَا وَنَهَيْتُكُمْ عَنْ لُحُومِ الْأَضَاحِي فَوْقَ ثَلَاثٍ فَأَمْسِكُوا مَا بَدَا لَكُمْ وَنَهَيْتُكُمْ عَنِ النَّبِيذِ إِلَّا فِي سِقَاءٍ فَاشْرَبُوا فِي الْأَسْقِيَةِ كُلِّهَا وَلَا تشْربُوا مُسكرا» . رَوَاهُ مُسلم

1762. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मैंने तुम्हें क़ब्रो की ज़ियारत से मना किया था, (अब) इन की ज़ियारत किया करो, मैंने तुम्हें तिन दीन से ज़्यादा कुरबानी का गोश्त रखने से मना किया था, अब जिस कदर ज़रूरत महसूस करो इसे रखो, मैंने मश्किज़े के अलावा नाबिज़ बनाने से तुम्हें मना किया था, तुम तमाम बरतनों में नबिज़ बना सकते हो, लेकिन नशा और मशरुब इस्तेमाल न करो | (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 977)، (2260)

١٧٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: زَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْرَ أُمِّهِ فَبَكَى وَأَبْكَى مَنْ حَوْلَهُ فَقَالَ: «اسْتَأْذَنْتُ رَبِّي فِي أَن أَسْتَغْفِر لَهَا فَلم يُؤذن لي ن وَاسْتَأْذَنْتُهُ فِي أَنْ أَزُورَ قَبْرَهَا فَأُذِنَ لِي فَزُورُوا الْقُبُورَ فَإِنَّهَا تُذَكِّرُ الْمَوْتَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1763. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने अपनी वालिदाह की कब्र की ज़ियारत की तो आप खुद भी रोए और अपने आस पास वालो को भी रुलाया, फिर फ़रमाया : मैंने इन की मगफिरत तलब करने के मुतल्लिक अपने रब से इजाज़त तलब की तो मुझे इस की इजाज़त न मीली, फिर मैंने इन की कब्र की ज़ियारत के मुत्ताल्लिक उस से इजाज़त तलब की तो मुझे मिल गई, पस तुम क़ब्रो की ज़ियारत किया करो, क्यूंकि वह मौत को याद दिलाती है | (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 976)، (2259)

١٧٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُهُمْ إِذَا خَرَجُوا إِلَى الْمَقَابِرِ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَلَاحِقُونَ نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1764. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब वह कब्रिस्तान जाने का इरादा करते तो रसूलुल्लाह ﷺ उन्हें यह दुआ सिखाया करते थे: मोमिन और मुसलमान घरवालो पर सलामती हो अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं तुम्हारे साथ मिलने वाला हूँ, हम अपने और तुम्हारे लिए अल्लाह से आफियत तलब करते हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (104 / 975)، (2257)

بَاب زِيَارَة الْقُبُور • क़ब्रो की ज़ियारत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٧٦٥ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقُبُورٍ بِالْمَدِينَةِ فَأَقْبَلَ عَلَيْهِمْ بِوَجْهِهِ فَقَالَ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْأَثَرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

1765. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ का मदीने की क़ब्रो के पास गुज़र हुआ, तो आप ﷺ ने इन की तरफ चेहरा मुबारक करते हुए फ़रमाया: अहले कब्र! तुम पर सलामती हो, अल्लाह हमें और तुम्हें माफ़ फरमाए, तुम हमारे असलाफ़ हो और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं| तिरमिजी और इन्होंने फ़रमाया यह हदीस हसन गरीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1053) * قابوس فيه لين كما فی تقريب التهذيب (5445) و ضعفه الجمهور

بَاب زِيَارَة الْقُبُور • क़ब्रो की ज़ियारत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٧٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلَّمَا كَانَ لَيْلَتُهَا مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْرُجُ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ إِلَى الْبَقِيعِ فَيَقُولُ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ وَأَتَاكُمْ مَا تُوعِدُونَ غَدًا مُؤَجَّلُونَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لأهل بَقِيعِ الْغَرْقَد» . رَوَاهُ مُسلم

1766. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ का रात कयाम मेरे पास होता तो आप रात के आखिरी हिस्से में बकी (कब्रस्तान) की तरफ तशरीफ़ ले जाते और फरमाते : मोमिन कौम के घरो तुम पर सलामती हो और जीस कल के लिए तुम से वादा किया गया था और तुम्हें इस के लिए मुहलत दी गई थी वह तुम तक पहुँच चूका और बेशक हम तुम से मिलने वाले हैं, ऐ अल्लाह बकी ए गरकद वालो की मगफिरत फरमा | (मुस्लिम)

رواه مسلم (102 / 974)، (2255)

١٧٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَيْفَ أَقُولُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ تَعْنِي فِي زِيَارَةِ الْقُبُورِ قَالَ: " قُولِي: السَّلَامُ عَلَى أَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَيَرْحَمُ اللَّهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ للاحقون ". رَوَاهُ مُسلم

1767. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! ज़ियारते कब्र के मौके पर में कैसे दुआ करू? आप ﷺ ने फ़रमाया : यह दुआ किया करो: मोमिन और मुसलमान घरवालो पर सलामती हो, अल्लाह हम से आगे जाने वालो और हम से पीछे रह जाने वालो पर रहम फरमाए, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम भी तुमसे मिलने वाले हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (103 / 974)، (2256)

١٧٦٨ - (مَوْضُوع) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ النُّعْمَانِ يُرْفَعُ الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ زَارَ قَبْرَ أَبَوَيْهِ أَوْ أَحَدِهِمَا فِي كُلِّ جُمُعَةٍ غُفِرَ لَهُ وَكُتِبَ بَرًّا» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي ص:٥٥ شعب الْإِيمَان مُرْسلا

1768. मुहम्मद बिन नोमान, नबी ﷺ से मरफुअ रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया : जो शख़्स हर जुमे अपने वालिदेन या इन में से एक की कब्र की ज़ियारत करता है तो इसे बख्श दिया जाता है और इसे (वालिदेन का) इताअत गुज़ार लिखा जाता है| बयहकी ने शौबुल इमान में मुरसल रिवायत किया है | (ज़ईफ़)

موضوع ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7901 / 1) * محمد بن النعمان ابو الیمان : مجھول (الجرح و التعدیل 8 / 108) ھو رواہ عن یحیی بن العلاء)متروک متھم) عب عبد الکریم ابی امیة : ضعیف عن مجاھد عن ابی ھریرة به مرفوعًا ، رواہ الطبرانی فی الصغیر (2 / 69 ح 969) و الاوسط (6110) فھو موضوع

١٧٦٩ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ فَزُورُوهَا فَإِنَّهَا تُزَهِّدُ فِي الدُّنْيَا وتذكر الْآخِرَة» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1769. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मैं तुम्हें क़ब्रो की ज़ियारत से मना किया करता था, अब इन की ज़ियारत किया करो, क्युंकी वह दुनिया से बे रगबत करती हैं और आखिरत की याद दिलाती हैं| (ज़ईफ़,मुस्लिम)

سندہ ضعیف ، رواہ ابن ماجه (1571) * ابن جریج عنعن و للحدیث شواھد عند مسلم (977)، (2260) و غیرہ دون قوله :’’ فانھا تزھد فی الدنیا‘‘

١٧٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم لعن زوارات الْقُبُورِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح»» وَقَالَ: قَدْ رَأَى بَعْضُ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّ هَذَا كَانَ قبل أَن يرخص النَّبِي فِي زِيَارَةِ الْقُبُورِ فَلَمَّا رَخَّصَ دَخَلَ فِي رُخْصَتِهِ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّمَا كَرِهَ زِيَارَةَ الْقُبُورِ لِلنِّسَاءِ لِقِلَّةِ صَبْرِهِنَّ وَكَثْرَةِ جَزَعِهِنَّ. تمّ كَلَامه

1770. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कसरत के साथ क़ब्रो की ज़ियारत करने वाली औरतो पर लानत फरमाई है| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिजी ने फ़रमाया यह हदीस

हसन सहीह है| मजिद फ़रमाया बाज़ अहले इल्म का खयाल है की यह ज़ियारत करो के मुत्ताल्लिक नबी ﷺ की रुखसत के पेहले था, जब आप ने इजाज़त दे दी तो आप की इजाज़त में मर्दों और औरते सब दाखिल है और इन में से बाज़ ने कहा आप ने औरतो के कब्रस्तान जाने को इसलिए नापसंद फ़रमाया की वह सब्र कम करती हैं जबकि वह शोक ज़्यादा करती है| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह का कलम मुकम्मल हुआ | (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 442443 ح 15742) و الترمذی (1056) و ابن ماجه (1576) * و للحديث شواهد

١٧٧١ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: كُنْتُ أَدْخُلُ بَيْتِيَ الَّذِي فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِنِّي وَاضِعٌ ثَوْبِي وَأَقُولُ: إِنَّمَا هُوَ زَوْجِي وَأَبِي فَلَمَّا دُفِنَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مَعَهُمْ فَوَاللَّهِ مَا دَخَلْتُهُ إِلَّا وَأَنَا مَشْدُودَةٌ عَلَيَّ ثِيَابِي حَيَاء من عمر. رَوَاهُ أَحْمد

1771. आइशा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैं अपने इस हुजरे में जिस में रसूलुल्लाह ﷺ (दफन है) चली जाया करती थी, और यही अपनी चादर उतार दिया करती थी और मैं (दिल में) कहती थी वह तो मेरे शौहर है, और दूसरे मेरे वालिद है, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु को इन के साथ दफन कर दिया गया तो अल्लाह की कसम मैं उमर रदियल्लाहु अन्हु से हया की वजह से अपने ऊपर अच्छी तरह चादर लेकर वहां दाखिल होती हूँ | (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (6 / 202 ح 26179)

كتاب الزَّكَاة • ज़कात का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٧٧٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: «إِنَّك تَأْتي قوما من أهل الْكتاب. فَادْعُهُمْ إِلَى شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ. فَإِنْ هُمْ أطاعوا لذَلِك. فَأَعْلِمْهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ. فَإِنْ هم أطاعوا لذَلِك فأعلمهم أَن الله قد فرض عَلَيْهِم صَدَقَة تُؤْخَذ من أغنيائهم فَترد فِي فُقَرَائِهِمْ. فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذَلِكَ. فَإِيَّاكَ وَكَرَائِمَ أَمْوَالِهِمْ وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَين الله حجاب»

1772. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा तो फ़रमाया: “तुम अहले किताब के पास जा रहे हो उन्हें इस गवाही देना कि तरफ दावत देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और बेशक मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! हैं, अगर वह उस में तुम्हारी इताअत कर ली तो उन्हें बताओ के अल्लाह ने दिन-रात में इन पर पांच नमाज़े फ़र्ज़ की है अगर वह उस में भी तुम्हारी इताअत करे तो उन्हें बताना के अल्लाह ने इन पर सदका फ़र्ज़ किया है जो उन के माल दारो से लेकर उन के नादारो को दीया जाएगा अगर वह तुम्हारी यह बात भी मान लें तो फिर उन के अच्छे अच्छे माल लेने से बचा करना और मज़लूम की बद्दुआ से बचना क्योंकि उस के और अल्लाह के दरमियान कोई हिजाब नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1496) و مسلم (29 / 19)، (121)

١٧٧٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ صَاحِبِ ذَهَبٍ وَلَا فِضَّةٍ لَا يُؤَدِّي مِنْهَا حَقَّهَا إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ صُفِّحَتْ لَهُ صَفَائِحُ مِنْ نَارٍ فَأُحْمِيَ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَيُكْوَى بِهَا جَنْبُهُ وجبينه وظهره كلما بردت أُعِيدَتْ لَهُ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ الْعِبَادِ فَيُرَى سَبِيلُهُ إِمَّا إِلَى الْجَنَّةِ وَإِمَّا إِلَى النَّارِ» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَالْإِبِلُ؟ قَالَ: «وَلَا ص:٥٥ صَاحِبُ إِبِلٍ لَا يُؤَدِّي مِنْهَا حَقَّهَا وَمِنْ حَقِّهَا حَلْبُهَا يَوْمَ وِرْدِهَا إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ بُطِحَ لَهَا بِقَاعٍ قَرْقَرٍ أَوْفَرَ مَا كَانَت لَا يفقد مِنْهَا فصيلا وَاحِدًا تَطَؤُهُ بِأَخْفَافِهَا وَتَعَضُّهُ بِأَفْوَاهِهَا كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ أولاها رد عَلَيْهِ أخراها فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ الْعِبَادِ فَيُرَى سَبِيلُهُ إِمَّا إِلَى الْجَنَّةِ وَإِمَّا إِلَى النَّار» قيل: يَا رَسُول الله فَالْبَقَرُ وَالْغَنَمُ؟ قَالَ: «وَلَا صَاحِبُ بَقَرٍ وَلَا غَنَمٍ لَا يُؤَدِّي مِنْهَا حَقَّهَا إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ بُطِحَ لَهَا بِقَاعٍ قَرْقَرٍ لَا يَفْقِدُ مِنْهَا شَيْئًا لَيْسَ فِيهَا عَقْصَاءُ وَلَا جَلْحَاءُ وَلَا عَضْبَاءُ تَنْطِحُهُ بِقُرُونِهَا وَتَطَؤُهُ بِأَظْلَافِهَا كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ أُولَاهَا رُدَّ عَلَيْهِ أُخْرَاهَا فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ الْعِبَادِ فَيُرَى سَبِيلُهُ إِمَّا إِلَى الْجَنَّةِ وَإِمَّا إِلَى النَّارِ» . قِيلَ: يَا رَسُول الله فالخيل؟ قَالَ: " الْخَيل ثَلَاثَةٌ: هِيَ لِرَجُلٍ وِزْرٌ وَهِيَ لِرَجُلٍ سِتْرٌ وَهِيَ لِرَجُلٍ أَجْرٌ. فَأَمَّا الَّتِي هِيَ لَهُ وِزْرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا رِيَاءً وَفَخْرًا وَنِوَاءً عَلَى أَهْلِ الْإِسْلَامِ فَهِيَ لَهُ وِزْرٌ. وَأَمَّا الَّتِي لَهُ سِتْرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَمْ يَنْسَ حَقَّ اللَّهِ فِي ظُهُورِهَا وَلَا رِقَابِهَا فَهِيَ لَهُ سِتْرٌ. وَأَمَّا الَّتِي هِيَ لَهُ أَجْرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ الله لأهل الْإِسْلَام فِي مرج أَو رَوْضَة فَمَا أَكَلَتْ مِنْ ذَلِكَ الْمَرْجِ أَوِ الرَّوْضَةِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا كُتِبَ لَهُ عَدَدَ مَا أَكَلَتْ حَسَنَاتٌ وَكُتِبَ لَهُ عَدَدَ

أَرْوَاثِهَا وَأَبْوَالِهَا حَسَنَاتٌ وَلَا تَقْطَعُ طِوَلَهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ إِلَّا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ عَدَدَ آثَارِهَا وأوراثها حَسَنَاتٍ وَلَا مَرَّ بِهَا صَاحِبُهَا عَلَى نَهْرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَا يُرِيدُ أَنْ يَسْقِيَهَا إِلَّا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ عَدَدَ مَا شَرِبَتْ حَسَنَاتٍ " قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ص:٥٥ فَالْحُمُرُ؟ قَالَ: " مَا أُنْزِلَ عَلَيَّ فِي الْحُمُرِ شَيْءٌ إِلَّا هَذِهِ الْآيَةُ الْفَاذَّةُ الْجَامِعَةُ (فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ)»» الزلزلة. رَوَاهُ مُسلم

1773. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो सोने चाँदी का मालिक उस का हक़ अदा नहीं करता, तो जब कियामत का दिन होगा तो उस के लिए आग की तख्तिया बनाई जाएगी और उन्हें जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, और फिर उन के साथ उस के पहलु उसकी पेशानी और उसकी पुश्त को दागा जाएगा जब वह तख्तिया ठंडी हो जाएगी तो उन्हें गरम करने के लिए दोबारा जहन्नम में लौटाया जाएगा, और यह अमल इस रोज़ मुसलसल जारी रहेगा जिस की मिकदार पचास हज़ार साल होगी, हत्ता कि बंदो के दरमियान फैसला कर दिया जाएगा पस वह अपना रास्ता जन्नत या जहन्नम की तरफ देख लेगा", अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! तो ऊंट, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऊटों का जो मालिक उनकी ज़कात अदा नहीं करता और उनका एक हक़ यह भी है के पानी पिलाने की बारी वाले दिन उनका दूध पानी के घाट पर मौजूद ज़रूरत मंदों के लिए दोहा जाए (और वह यह भी न करे) तो जब कियामत का दिन होगा तो इस शख़्स को एक चटील मैदान मैं इन ऊटों के सामने चेहरे या पुश्त के बल गिरा दीया जाएगा, और यह ऊंट पहले से ज़्यादा मोटे ताज़े होंगे वह उनमें से एक बच्चे को भी गुम नहीं पाएगा, वह अपने खुड़ो से इसे रोंदेगे और अपने मुहों से इसे काटेंगे, जब उनका पहला ऊंट गुज़र जाएगा तो उस पर उनका आखिरी ऊंट फिर लौटा दीया जाएगा और यह सिलसिला इस दिन जिस की मिकदार पचास हज़ार साल होगी जारी रहेगा हत्ता कि बंदो के दरमियान फैसला कर दिया जाएगा, पस वह अपने राह देख लेगा जन्नत की तरफ या जहन्नम की तरफ", अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! तो गाय और बकरी आप ﷺ ने फ़रमाया: "गाय और बकरियों का जो मालिक उनका हक़ यानी ज़कात अदा नहीं करता, तो जब कियामत का दिन होगा तो इसे एक चटील मैदान में चेहरे के बल गिरा दीया जाएगा, वह उनमें से किसी एक को भी गुम नहीं पाएगा और उनमें से कोई मरी हुई सींगो वाली होगी न सींगो के बगैर और ना ही किसी के सिंग टूटे हुए होंगे यह अपने सींगो से इसे मारेंगी और अपने खुड़ो से इसे रोंदेगी जब उनमें से पहली उस पर गुज़र जाएगा तो उनकी आखिरी फिर उस पर लौटा दि जाएगी और यह सिलसिला इस दिन जिस की मिकदार पचास हज़ार साल होगी चलता रहेगा हत्ता कि बंदो के दरमियान फैसला कर दिया जाएगा वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ या जहन्नम की तरफ देख लेगा", आप से अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! तो घोड़े, आप ﷺ ने फ़रमाया: "घोड़े तीन किस्म के है, एक वह जो आदमी के लिए बोझ है, एक वह जो आदमी के लिए परदा है, और एक वह जो आदमी के लिए बाईस ए अज़र है, रहा वह जो उस के लिए गुनाह है, वह आदमी जिस ने रिया फख्र और अहले इस्लाम की दुश्मनी की खातिर इसे बांधा तो इस किस्म का घोड़ा इस शख़्स के लिए गुनाह है, रहा वह जो उस के लिए परदा है, यह वह जिसे कोई आदमी अल्लाह की राह में नेक नियति के साथ बांधे फिर वह उनकी पुश्तो और उनकी गर्दनो के बारे में अल्लाह का हक़ न भूले तो यह उस के लिए परदा (सफ़ेद पोशी का बाईस) है, और रहा वह घोड़ा जो इस शख़्स के लिए बाईस ए अज़र है, तो यह वह है जिसे आदमी ने अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए अहले इस्लाम की खातिर किसी चराह गाह या किसी बाग़ में बांधा यह घोड़ा इस चराह गाह या इस बाग़ से जो कुछ खाएगा तो उसकी खाई गई चीज़ की मिकदार के बराबर उस के लिए नेकियाँ लिखी जाएगी, और अगर वह रस्सी तुड़ा कर एक या दो टीलो पर चढ़ता और कूदता है और वह इस दौरान जितने कदम चलता है और जिस क़दर लेंडी करता है तो उनकी तादाद के मुताबिक इस शख़्स के लिए

नेकियाँ लिखी जाती है, और अगर उस का मालिक इसे किसी नहर से लेकर गुज़रे और वह उस से पानी पि ले हालाँकि वह इसे पानी पिलाना नहीं चाहता था तो वह जिस क़दर पानी पिएंगे तो अल्लाह इसी क़दर उस के लिए नेकियाँ लिख लेगा,'' अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! तो गधे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "गधो के बारे में इस इस एक और जामेअ आयत के अलावा मुझ पर और कुछ नाज़िल नहीं किया गया: "जो कोई ज़र्रा बराबर नेकी करेगा तो वह इसे देख लेगा और जो कोई ज़र्रा बराबर बुराई करेगा तो वह इसे देख लेगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (24 / 987)، (2290)

١٧٧٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ آتَاهُ اللَّهُ مَالًا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ مُثِّلَ لَهُ مَالُهُ شُجَاعًا أَقْرَعَ لَهُ زَبِيبَتَانِ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَأْخُذ بِلِهْزِمَتَيْهِ - يَعْنِي بشدقيه - يَقُولُ: أَنَا مَالُكَ أَنَا كَنْزُكَ ". ثُمَّ تَلَا هَذِه الْآيَة: (وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ من فَضله)»» إِلَى آخر الْآيَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

1774. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह जिस शख़्स को माल अता फरमाए और फिर वह शख़्स उसकी ज़कात अदा न करे, तो रोज़ ए कियामत उस के माल को गंजे अज़दहा की सूरत में बना दीया जाएगा, उसकी आंखो पर दो नुक्ते होंगे, उस को उस के गले का हार बना दीया जाएगा, फिर वह इसे जबड़ो से पकड़ कर कहेगा में तेरा माल हूँ, मैं तेरा खज़ाना हूँ, फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई: "जो लोग बुखल करते हैं वह यह ख़याल न करे ،،،،،''| (बुखारी)

رواه البخاری (1403)

١٧٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ رَجُلٍ يَكُونُ لَهُ إِبِلٌ أَوْ بَقَرٌ أَوْ غَنَمٌ لَا يُؤَدِّي حَقَّهَا إِلَّا أَتَى بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ أعظم مَا يكون وَأَسْمَنَهُ تَطَؤُهُ بِأَخْفَافِهَا وَتَنْطِحُهُ بِقُرُونِهَا كُلَّمَا جَازَتْ أُخْرَاهَا رُدَّتْ عَلَيْهِ أُولَاهَا حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ النَّاس»

1775. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स के पास ऊंट या गाय या बकरिया हो और वह उनकी ज़कात अदा न करता हो तो उन्हें रोज़ ए कियामत लाया जाएगा तो वह जिस क़दर दुनिया में थी, उस से कहीं बड़ी और ज़्यादा मोटी होगी वह अपने खुड़ो से इसे रोंदेगी और अपने सींगो के साथ इसे मारेंगी जब उनमें से आखिरी गुज़र जाएगी, तो फिर पहली को दोबारा लाया जाएगा और यह सिलसिला जारी रहेगा हत्ता कि लोगों के दरमियान फैसला कर दिया जाएगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1460) و مسلم (30 / 990)، (2300)

١٧٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا أَتَاكُمُ الْمُصَدِّقُ فَلْيَصْدُرْ عَنْكُمْ وَهُوَ عَنْكُمْ رَاضٍ» . رَوَاهُ مُسلم

1776. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कोई सदका वुसुल करने वाला तुम्हारे पास आए तो जब वह तुम से वापस जाए तो उसे तुम से राज़ी होना चाहिए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 989)، (2298)

١٧٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتَاهُ قَوْمٌ بِصَدَقَتِهِمْ قَالَ: «اللَّهُمَّ صلى على آل فلَان» . فَأَتَاهُ ص:٥٥ أبي بِصَدَقَتِهِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ صلى الله على آل أبي أوفى»»» وَفِي رِوَايَة: " إِذا أَتَى الرجل النَّبِي بِصَدقَتِهِ قَالَ: «اللَّهُمَّ صلي عَلَيْهِ»

1777. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब कोई कौम नबी ﷺ के पास सदका लेकर आते तो आप दुआ फरमाते: “अल्लाह फलां की आल पर रहमत फरमा”, जब मेरे वालिद सदका लेकर आप की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह अबू अव्फा की आल पर रहमत फरमा”, बुखारी, मुस्लिम, एक रिवायत में है जब कोई आदमी अपना सदका लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होता तो आप ﷺ फरमाते: “अल्लाह उस पर रहमत फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1497) و مسلم (176 / 1078)، (2492)

١٧٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أَبِي هُرَيْرَةَ. قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُمَرَ عَلَى الصَّدَقَةِ. فَقِيلَ: مَنَعَ ابْنُ جَمِيلٍ وَخَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ وَالْعَبَّاسُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا يَنْقِمُ ابْنُ جَمِيلٍ إِلَّا أَنَّهُ كَانَ فَقِيرًا فَأَغْنَاهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ. وَأَمَّا خَالِدٌ فَإِنَّكُمْ تَظْلِمُونَ خَالِدًا. قَدِ احْتَبَسَ أَدْرَاعَهُ وَأَعْتُدَهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. وَأَمَّا الْعَبَّاسُ فَهِيَ عَلَيَّ. وَمِثْلُهَا مَعَهَا» . ثُمَّ قَالَ: «يَا عُمَرُ أَمَا شَعَرْتَ أَن عَم الرجل صنوا أَبِيه؟»

1778. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उमर को सदका वुसुल करने के लिए भेजा तो आप को बताया गया के इब्ने जमील रदियल्लाहु अन्हु खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु और अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने ज़कात रोक ली है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इब्ने जमील तो इस वजह से इनकार करता है के वह तंग दस्त था और अल्लाह और उस के रसूल ने इसे माल दार कर दिया है, रहा खालिद, तो तुम खालिद पर ज़ुल्म करते हो इस ने तो अपने ज़िराहे और अलात जंग अल्लाह की राह में वक्फ़ कर रखे है और रहे अब्बास तो उनकी ज़कात और उस के बराबर वह मेरे ज़िम्मा है” फिर फ़रमाया: “उमर क्या आप को मालुम नहीं है आदमी का चचा उस के बाप की तरह होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1468) و مسلم (11 / 983)، (2277)

١٧٧٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي حميد السَّاعِدِيّ: اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا مِنَ الأزد يُقَال لَهُ ابْن اللتبية الأتبية عَلَى الصَّدَقَةِ فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: هَذَا لَكُمْ وَهَذَا أُهْدِيَ لِي فَخَطَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنى عَلَيْهِ وَقَالَ: " أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَسْتَعْمِلُ رِجَالًا مِنْكُمْ عَلَى أُمُور مِمَّا ولاني الله فَيَأْتِي أحدكُم فَيَقُول: هَذَا لكم وَهَذَا هَدِيَّةٌ أُهْدِيَتْ لِي

فَهَلَّا جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ أَوْ بَيْتِ أَمِّهِ فَيَنْظُرُ أَيُهْدَى لَهُ أَمْ لَا؟ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَأْخُذُ أَحَدٌ مِنْهُ شَيْئًا إِلَّا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ إِنْ كَانَ بَعِيرًا لَهُ رُغَاءٌ أَوْ بَقْرًا لَهُ خُوَارٌ أَوْ شَاة تَيْعر " ثمَّ رفع يَدَيْهِ حَتَّى رَأينَا عفرتي إِبِطَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ اللَّهُمَّ هَل بلغت» . . قَالَ الْخَطَّابِيُّ: وَفِي قَوْلِهِ: «هَلَّا جَلَسَ فِي بَيْتِ أُمِّهِ أَوْ أَبِيهِ فَيَنْظُرُ أَيُهْدَى إِلَيْهِ أَمْ لَا؟» دَلِيلٌ عَلَى أَنَّ كُلَّ أَمْرٍ ص:٥٥ يُتَذَرَّعُ بِهِ إِلَى مَحْظُورٍ فَهُوَ مَحْظُورٌ وَكُلُّ دخل فِي الْعُقُودِ يُنْظَرُ هَلْ يَكُونُ حُكْمُهُ عِنْدَ الِانْفِرَادِ كَحُكْمِهِ عِنْدَ الِاقْتِرَانِ أَمْ لَا؟ هَكَذَا فِي شرح السّنة

1779. अबू हुमैद साअदि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने अज़दी कबिले के इब्ने लुत्बिया नामी शख़्स को सदकात वुसुल करने पर मामूर फ़रमाया, जब वह वापस आया तो उस ने कहा यह माल तुम्हारे लिए है और यह मुझे हदिया(तोहफ़ा दिया गया है) (यह सुन कर) नबी ﷺ ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो अल्लाह की हम्द व सना बयान की फिर फ़रमाया: “अम्मा बाद में तुम में से कुछ आदमियों को उन उमूर पर जो अल्लाह ने मेरे सुपुर्द किए है, मामूर करता हूँ तो उनमें से कोई कर कहता है, यह माल तुम्हारे लिए है और यह हदिया है, जो मुझे दिया गया है, वह अपने वालिदा या अपने वालिद के घर क्यों न बैठा रहा और वह देखता के आया इसे हदिया (तोहफ़ा) मिलता है या नहीं? उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम में से जो शख़्स इस माल सदकात में से जो कुछ लेगा वह रोज़ ए कियामत इसे अपने गर्दन पर उठाए हुए आएगा, अगर वह ऊंट हुआ तो वह आवाज़ कर रहा होगा, अगर गाय हुई तो वह आवाज़ कर रही होगी, और अगर वह बकरी हुई तो वह मिमिया रही होगी”, फिर आप ने अपने हाथ बुलंद किए हत्ता के हमने आप की बगलों की सफेदी देखी फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह क्या मैंने पहुंचा दिया, ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुंचा दिया ?” मुत्तफ़िक़ अलैह, इमाम खत्ताबी ने फ़रमाया: और आप ﷺ की रिवायत के अल्फाज़: “वो अपने माँ या अपने बाप के घर क्यों न बैठा रहा, पस वह यह देखता के आया इसे हदिया तोहफ़ा मिलता है या नहीं ?” में दलील है के हर वह काम जो किसी ममनूअ काम का वसिले बने तो वह भी ममनूअ है और अकद में दाखिल होने वाली हर चीज़ देखी जाएगी के आया जब वह चीज़ अकेली हो, तो इस का हुक्म इसी तरह होगा जिस तरह मिलाने से होगी या नहीं? शरह सुन्ना में इसी तरह है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2597) و مسلم (26 / 1832)، (4738) و البغوی فی شرح السنة (5 / 498 تحت ح 1568)

١٧٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَدِيِّ بْنِ عُمَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ مِنْكُم على عمر فَكَتَمَنَا مِخْيَطًا فَمَا فَوْقَهُ كَانَ غُلُولًا يَأْتِي بِهِ يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

1780. अदि बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम तुम में से जिस शख़्स को किसी काम पर मामूर करे और अगर वह हम से एक सुई या उस से भी कोई छोटी चीज़ छिपा ले तो यह खयानत होगी जिसे वह रोज़ ए कियामत लेकर हाज़िर होगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (30 / 1833)، (4743)

ज़कात का बयान	كتاب الزَّكَاة •
दूसरी फस्ल	الْفَصْل الثَّانِي •

١٧٨١ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ (وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ)»» كَبُرَ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ. فَقَالَ عُمَرُ أَنَا أُفَرِّجُ عَنْكُمْ فَانْطَلَقَ. فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ قد كبر على أَصْحَابك هَذِه الْآيَة. فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لم يفْرض الزَّكَاة إِلَّا ليطيب بهَا مَا بَقِيَ مِنْ أَمْوَالِكُمْ وَإِنَّمَا فَرَضَ الْمَوَارِيثَ وَذكر كلمة لتكون لمن بعدكم» قَالَ فَكَبَّرَ عُمَرُ. ثُمَّ قَالَ لَهُ: «أَلَا أُخْبِرُكَ بِخَيْرِ مَا يَكْنِزُ الْمَرْءُ الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ إِذَا نَظَرَ إِلَيْهَا سَرَّتْهُ وَإِذَا أَمَرَهَا أَطَاعَتْهُ وَإِذَا غَابَ عَنْهَا حفظته» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1781. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब यह आयत: “जो लोग सोना चाँदी ज़खीरा करते हैं ‹‹‹‹‹‹‘‘ नाज़िल हुई तो यह मुसलमानों पर बहोत बड़ा गिराह गुज़री, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में तुम्हारी इस मुश्किल को हल करता हूँ वह गए और अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! यह आयत आप के सहाबा पर बहोत बड़ा गिराह गुज़री है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने ज़कात इसलिए फ़र्ज़ की है ताकि वह तुम्हारे बाकी अमवाल को पाक कर दे, और उस ने विरासत को इसलिए फ़र्ज़ किया” रावी कहते हैं आप ने एक कलिमा ज़िक्र किया “ ताकि वह तुम्हारे बाद वालो के लिए हो जाए”, रावी बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने (ख़ुशी के साथ) नारा ए तकबीर बुलंद किया, फिर आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें आदमी के बेहतरीन खज़ाने के मुतल्लिक बताऊँ? वह स्वालेह बीवी है, जब वह उसकी तरफ देखे तो वह इसे खुश कर दे, जब वह इसे हुक्म दे तो वह उसकी इताअत करे और जब वह उस के पास न हो तो वह इस (के तमाम हुकुक) की हिफाज़त करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1664) * غیلان بن جامع : رواه عن عثمان بن عمیر ابی الیقظان عن جعفر بن ایاس عن مجاهد عن ابن عباس به (البیهقی (4 / 83) و ابو الیقظان ضعیف مدلس فالعلة مدمرة

١٧٨٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن جَابِرِ بْنِ عَتِيكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَيَأْتِيكُمْ رُكَيْبٌ مُبَغَّضُونَ فَإِذا جاؤكم فَرَحِّبُوا بِهِمْ وَخَلُّوا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَبْتَغُونَ فَإِنْ عَدَلُوا ص:٥٦ فَلِأَنْفُسِهِمْ وَإِنْ ظَلَمُوا فَعَلَيْهِمْ وَأَرْضُوهُمْ فَإِنَّ تَمَامَ زَكَاتِكُمْ رِضَاهُمْ وَلْيَدْعُوا لَكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1782. जाबिर बिन अतीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनकरीब कुछ सवार (छोटे काफला की सूरत में) तुम्हारे पास आएँगे, जिन को तुम ना पसंद करोगे, अगर वह तुम्हारे पास आए तो उन्हें खुशामदीद कहना और (ज़कात की मुद) में जो वह चाहे उन्हें लेने देना, अगर वह इंसाफ करेगा तो अपने फ़ायदा के लिए और अगर वह ज़ुल्म करेंगे तो वह उन की जान पर होगा और उन्हें खुश कर दो क्योंकि तुम्हारी ज़कात का इत्माम उन की रज़ामंदी है और उन्हें तुम्हारे हक़ में दुआ करनी चाहिए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1588) * صخر بن اسحاق : لین ، و عبد الرحمن بن جابر : مجهول ، و حدیث مسلم (989) یغنی عنه ، انظر الحدیث الآتی (1783)

١٧٨٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: جَاءَ نَاسٌ يَعْنِي مِنَ الْأَعْرَابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: إِنَّ نَاسًا مِنَ المصدقين يَأْتُونَا فيظلمونا قَالَ: فَقَالَ: «أَرْضُوا مُصَدِّقِيكُمْ وَإِنْ ظُلِمْتُمْ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1783. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कुछ आराबी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया, सदका वुसुल करने वाले कुछ लोग हमारे पास आते है तो वह हम पर ज़ुल्म करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने सदका वुसुल करने वालो को खुश करो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ख्वाह वह हम पर ज़ुल्म करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने सदका वुसुल करने वालो को खुश करो ख्वाह तुम पर ज़ुल्म किया जाए”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (1589) [و مسلم : 29 / 989، (2298)]

١٧٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بَشِيرِ بْنِ الْخَصَاصِيَّةِ قَالَ: قُلْنَا: أَنَّ أَهْلَ الصَّدَقَةِ يَعْتَدُونَ عَلَيْنَا أَفَنَكْتُمُ مِنْ أَمْوَالِنَا بِقَدْرِ مَا يَعْتَدُونَ؟ قَالَ: «لَا» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1784. बशीर बिन खसासी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने अर्ज़ किया: के अहल ए सदका हम पर ज़्यादती करते हैं किया हम उनकी ज़्यादती के मुताबिक अपने अमवाल में से छिपा लिया करे फ़रमाया: “नहीं”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1586) * دیسم : مستور لم یو ثقه غیر ابن حبان

١٧٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رَافع بن خديج قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَامِلُ عَلَى الصَّدَقَةِ بِالْحَقِّ كَالْغَازِي فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى بَيْتِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1785. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हक सदाकत के साथ सदकात वुसुल करने वाला शख़्स अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले शख़्स की तरह है, हत्ता कि वह सदका वुसुल करने वाला अपने घर वापस जाए”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2936) و الترمذی (645 وقال : حسن)

١٧٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا جَلَبَ وَلَا جَنَبَ وَلَا تُؤْخَذُ صَدَقَاتُهُمْ إِلَّا فِي دُورِهِمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1786. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने नबी ﷺ से रिवायत किया आप ﷺ ने फ़रमाया: “ज़कात वुसुल करने वाला ज़कवत से दूर बैठ कर माल ए ज़कवत अपने पास ना

बुलाए न ज़कात देने वाले अपना माल अपने घरो से दूर ले जाए और सदकात उन के घरो में वुसुल किए जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1591)

١٧٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اسْتَفَادَ مَالًا فَلَا زَكَاة فِيهِ حَتَّى يحول عيه الْحَوْلُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَذَكَرَ جَمَاعَةٌ أَنَّهُمْ وَقَفُوهُ على ابْن عمر

1787. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी माल से इस्तेफ़ादा करे तो साल गुज़रने से पहले उस पर कोई ज़कात नहीं होगी”| तिरमिज़ी, और उन्होंने एक जमाअत का ज़िक्र किया के उन्होंने इसे इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा पर मौकूफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (631) * عبد الرحمن بن زيد بن اسلم ضعيف جدًا و للحديث شواهد ضعفة و روى الترمذی (632) بسند صحيح عن ابن عمر رضی الله عنه قال :’’ من استفاد مالاً فلا زكوة فيه حتى يحول عليه الحول عند ربه ‘‘ و انظر الحديث الآتی (1810)

١٧٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّ الْعَبَّاسَ سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٥٦ فِي تَعْجِيل صَدَقَة قَبْلَ أَنْ تَحِلَّ: فَرَخَّصَ لَهُ فِي ذَلِكَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

1788. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ से साल गुज़रने से पहले ही अपने ज़कात जल्द अदा करने के बारे में मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने इस बारे में उन्हें इजाज़त मरहमत फरमाई| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1624) و الترمذی (678) و ابن ماجه (1795) و الدارمی (1 / 385 ح 1643) * الحكيم بن عتيبة مدلس و عنعن

١٧٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ: «أَلَا مَنْ وَلِيَ يَتِيمًا لَهُ مَالٌ فَلْيَتَّجِرْ فِيهِ وَلَا يَتْرُكْهُ حَتَّى تَأْكُلَهُ الصَّدَقَةُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: فِي إِسْنَادِهِ مقَال: لِأَن الْمثنى بن الصَّباح ضَعِيف

1789. उमर बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने लोगों को खुत्बा इरशाद फरमाते हुए फ़रमाया: “सुन लो! जो शख़्स किसी यतीम का सरपरस्त बने और यतीम का कुछ माल हो तो वह उस से तिजारत करे और इसे ऐसे ही पड़ा न रहने दे की ज़कात ही इसे ख़तम कर दे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी सनद में कलाम है, क्योंकि मुषनि बिन सबाह जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (641) * و للحديث طرق كلها ضعيفة

ज़कात का बयान • كتاب الزَّكَاة
तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

١٧٩٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ وَكَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ الْعَرَبِ قَالَ عُمَرُ: يَا أَبَا بَكْرٍ كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَمَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ إِلَّا بِحَقِّهِ وَحِسَابُهُ على الله ". قَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَاللَّهِ لَأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ فَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ الْمَالِ وَاللَّهِ لَوْ مَنَعُونِي عَنَاقًا كَانُوا يُؤَدُّونَهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنْعِهَا. قَالَ عُمَرُ: فَوَاللَّهِ مَا هُوَ إِلَّا أَن رَأَيْت أَن قد شرح الله صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ لِلْقِتَالِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَقُّ

1790. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ ने वफात पाई, और उन के बाद अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु खलीफा बने तो कुछ अरब मुरतद हो गए, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से कहा आप लोगों से कैसे किताल करेंगे, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ फरमा चुके हैं: “मुझे लोगों से किताल करने का हुक्म दिया गया है हत्ता कि वह कहे के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, जिस ने कह दिया अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नही, तो उस ने हक़ इस्लाम के अलावा अपने माल व जान को मुझ से महफ़ूज़ कर लिया, जबकि उस का हिसाब अल्लाह के जिम्मे है”, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: “अल्लाह की क़सम! जो शख़्स नमाज़ और ज़कात में फर्क करेगा तो मैं उन से ज़रूर किताल करूँगा क्योंकि ज़कात माल का हक़ है, अल्लाह की क़सम! अगर उन्होंने भेड़ का बच्चा जो वह रसूलुल्लाह ﷺ को दिया करते थे, मुझे देने से इनकार किया तो में उस के इनकार पर भी उन से ज़रूर किताल करूँगा, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मुझे तो बस यही समझ आई के अल्लाह ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के सीने को किताल के लिए खोल दिया, मैंने पहचान लिया के वह हक़ पर है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (13991400) و مسلم (32 / 20)، (124)

١٧٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ كَنْزُ أَحَدِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُجَاعًا أَقْرَعَ يَفِرُّ مِنْهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يَطْلُبُهُ حَتَّى يُلْقِمَهُ أَصَابِعه» . رَوَاهُ أَحْمد

1791. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से किसी एक का खज़ाना रोज़ ए कियामत गंजा अज़दहा बन जाएगा, इस खज़ाने का मालिक उस से फरार इख़्तियार करेगा, जबकि वह इसे छोड़ेगा नहीं हत्ता कि वह उसकी उंगलियों समेत इसे खा जाएगा”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (2 / 530 ح 10867) [و صحیح البخاری (4659) باختلاف یسیرا]

١٧٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ رَجُلٍ لَا يُؤَدِّي زَكَاةَ مَالِهِ إِلَّا جَعَلَ

اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي عُنُقِهِ شُجَاعًا» ثُمَّ قَرَأَ عَلَيْنَا مِصْدَاقَهُ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ: (وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يبلخون بِمَا آتَاهُم الله من فَضله)»» الْآيَة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

1792. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ने फ़रमाया: "जो शख़्स अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता, तो अल्लाह रोज़ ए कियामत इसे उसकी गर्दन में अज़दहा बनादेगा, फिर आप ने उस के मिसदाक अल्लाह अज्ज़वजल की किताब से तिलावत फरमाई: "जो लोग अल्लाह के अता किए हुए माल में बुखल करते हैं वह गुमान न करे ‹‹‹‹‹' आख़िर तक| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3012 وقال : حسن صحيح) و النسائى (5 / 11 ح 2443) و ابن ماجه (1784)

١٧٩٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا خَالَطَتِ الزَّكَاةُ مَالًا قَطُّ إِلَّا أَهْلَكَتْهُ» . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي تَارِيخِهِ وَالْحُمَيْدِيُّ وَزَادَ قَالَ: يَكُونُ قَدْ وَجَبَ عَلَيْكَ صَدَقَةٌ فَلَا تُخْرِجْهَا فَيُهْلِكُ الْحَرَامُ الْحَلَالَ. وَقَدِ احْتَجَّ بِهِ من يرى تعلق الزَّكَاةِ بِالْعَيْنِ هَكَذَا فِي الْمُنْتَقَى»» وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنْ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ بِإِسْنَادِهِ إِلَى عَائِشَةَ. وَقَالَ أَحْمَدُ فِي «خَالَطَتْ» : تَفْسِيرُهُ أَنَّ الرَّجُلَ يَأْخُذُ الزَّكَاةَ وَهُوَ مُوسِرٌ أَو غَنِي وَإِنَّمَا هِيَ لِلْفُقَرَاء

1793. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस माल में ज़कात खलत मलत हो जाए तो वह ज़कात उस को ख़तम कर देती है"| शाफ़ई इमाम बुखारी ने इसे अपने तारीख में रिवायत किया है और इमाम हुमैदी ने यह इज़ाफा नकल किया है, अगर तुम पर ज़कात वाजिब हो और फिर तुम उसे अदा न करे तो इस तरह हराम हलाल को तबाह कर देगा, उस से उन लोगों ने दलील ली है जो समझते है की ज़कात ऐन माल से अदा करना फ़र्ज़ है, मुन्तका मैं भी इसी तरह है, बयहकी ने इमाम अहमद बिन हंबल से अपने सनद से आइशा रदियल्लाहु अन्हा तक शौबुल ईमान में बयान किया है और इमाम अहमद ने " ज़कात का माल मिलाने", की तफसीर बयान करते हुए कहा उस से मुराद यह है कि कोई माल दार शख़्स ज़कात वुसुल करे जबकि यह फुकराअ का हक़ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الشافعى فى الام (2 / 59) و البخارى فى التاريخ الكبير (1 / 18 ح 549) و الحميدى 239 بتحقيقى) و البيهقى فى شعب الايمان (3522) و انظر المنتقى (20162017) * فيه محمد بن عثمان الجمحى : ضعفه الجمهور

किन किन चीजों पर ज़कात फ़र्ज़ होता है • بَابُ مَا يَجِبُ فِيهِ الزَّكَاةُ

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٧٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ مِنَ التَّمْرِ صَدَقَةٌ وَلَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسِ أَوَاقٍ مِنَ الْوَرِقِ صَدَقَةٌ وَلَيْسَ فِيمَا دُونَ خَمْسِ ذَوْدٍ من الْإِبِل صَدَقَة»

1794. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पांच वुसक से कम खजूर पर पांच उकिय्यह से कम चाँदी पर और पांच से कम ऊटों पर ज़कात नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1459) و مسلم (1 / 979)، (2263)

١٧٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ صَدَقَةٌ فِي عَبْدِهِ وَلَا فِي فَرَسِهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «لَيْسَ فِي عَبْدِهِ صَدَقَةٌ إِلَّا صَدَقَةُ الْفِطْرِ»

1795. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान पर उस के गुलाम और उस के घोड़े पर ज़कात नहीं”| और एक रिवायत में है: “उस के गुलाम पर सदका ए फितर के सिवा कोई सदका वाजिब नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1464 ، 1263) و مسلم (8 / 982)، (2273)

١٧٩٦ - (صَحِيح) وَعَن أنس بن مَالك: أَن أَبَا بكر رَضِي الله عَنهُ كَتَبَ لَهُ هَذَا الْكِتَابَ لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْبَحْرِينِ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هَذِهِ فَرِيضَةُ الصَّدَقَةِ الَّتِي فَرَضَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ وَالَّتِي أَمَرَ اللَّهُ عز وَجل بهَا رَسُوله فَمن سَأَلَهَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ عَلَى وَجْهِهَا فَلْيُعْطِهَا وَمَنْ سُئِلَ فَوْقَهَا فَلَا يُعْطِ: فِي أَرْبَعٍ وَعِشْرِينَ مِنَ الْإِبِلِ فَمَا دونهَا خَمْسٍ شَاةٌ. فَإِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا وَعِشْرِينَ إِلَى خَمْسٍ وَثَلَاثِينَ فَفِيهَا بِنْتُ مَخَاضٍ أُنْثَى فَإِذَا بلغت سِتا وَثَلَاثِينَ فَفِيهَا بنت لبون أُنْثَى. فَإِذا بلغت سِتَّة وَأَرْبَعين إِلَى سِتِّينَ ص:٥٦ فَفِيهَا حِقَّةٌ طَرُوقَةُ الْجَمَلِ فَإِذَا بَلَغَتْ وَاحِدَةً وَسِتِّينَ فَفِيهَا جَذَعَة. فَإِذا بلغت سِتا وَسبعين فَفِيهَا بِنْتَا لَبُونٍ. فَإِذَا بَلَغَتْ إِحْدَى وَتِسْعِينَ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فَفِيهَا حِقَّتَانِ طَرُوقَتَا الْجَمَلِ. فَإِذَا زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ فَفِي كُلِّ أَرْبَعِين بِنْتُ لَبُونٍ وَفِي كُلِّ خَمْسِينَ حِقَّةٌ. وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ إِلَّا أَرْبَعٌ مِنَ الْإِبِلِ فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا. فَإِذَا بَلَغَتْ خَمْسًا فَفِيهَا شَاةٌ وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ مِنَ الْإِبِلِ صَدَقَةَ الْجَذَعَةِ وَلَيْسَتْ عِنْده جَذَعَة وَعِنْده حقة فَإِنَّهَا تقبل مِنْهُ الْحِقَّةُ وَيُجْعَلُ مَعَهَا شَاتَيْنِ إِنِ اسْتَيْسَرَتَا لَهُ أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةَ الْحِقَّةِ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ الْحِقَّةُ وَعِنْدَهُ الْجَذَعَةُ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ الْجَذَعَةُ وَيُعْطِيهِ الْمُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ عِنْدَهُ صَدَقَةَ الْحِقَّةِ وَلَيْسَت إِلَّا عِنْده بِنْتُ لَبُونٍ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بِنْتُ لَبُونٍ وَيُعْطِي مَعهَا شَاتَيْنِ أَوْ عِشْرِينَ دِرْهَمًا. وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بنت لبون وَعِنْده حقة فَإِنَّهَا تقبل مِنْهُ الْحِقَّةُ وَيُعْطِيهِ الْمُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بَنْتَ لِبَوْنٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ وَعِنْدَهُ بِنْتُ مَخَاضٍ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ بِنْتُ مَخَاضٍ وَيُعْطَى مَعَهَا عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. وَمَنْ بَلَغَتْ صَدَقَتُهُ بَنْتَ مَخَاضٍ وَلَيْسَتْ عِنْدَهُ وَعِنْدَهُ بِنْتُ لَبُونٍ فَإِنَّهَا تُقْبَلُ مِنْهُ وَيُعْطِيهِ الْمُصَدِّقُ عِشْرِينَ دِرْهَمًا أَوْ شَاتَيْنِ. فَإِنْ لَمْ تَكُنْ عِنْدَهُ بِنْتُ مَخَاضٍ عَلَى وَجْهِهَا وَعِنْدَهُ ابْن لَبُونٍ فَإِنَّهُ يُقْبَلُ مِنْهُ وَلَيْسَ مَعَهُ شَيْءٌ. وَفِي صَدَقَةِ الْغَنَمِ فِي سَائِمَتِهَا إِذَا كَانَتْ أَرْبَعِينَ فَفِيهَا شَاة إِلَى عشْرين وَمِائَة شَاة فَإِن زَادَتْ عَلَى عِشْرِينَ وَمِائَةٍ إِلَى مِائَتَيْنِ فَفِيهَا شَاتَان. فَإِن زَادَتْ عَلَى مِائَتَيْنِ إِلَى ثَلَاثِمِائَةٍ فَفِيهَا ثَلَاثُ شِيَاهٍ. فَإِذَا ص:٥٦ زَادَتْ عَلَى ثَلَاثِمِائَةٍ فَفِي كُلِّ مِائَةٍ شَاةٌ. فَإِذَا كَانَتْ سَائِمَةُ الرَّجُلِ نَاقِصَةً مِنْ أَرْبَعِينَ شَاةً وَاحِدَةً فَلَيْسَ فِيهَا صَدَقَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا. وَلَا تُخْرَجَ فِي الصَّدَقَة هرمة وَلَا ذَات عور وَلَا تَيْسٌ إِلَّا مَا شَاءَ الْمُصَدِّقُ. وَلَا يجمع بَين متفرق وَلَا يفرق بَين مُجْتَمع خَشْيَةَ الصَّدَقَةِ وَمَا كَانَ مِنْ خَلِيطَيْنِ فَإِنَّهُمَا يَتَرَاجَعَانِ بَيْنَهُمَا بِالسَّوِيَّةِ. وَفِي الرِّقَةِ رُبُعُ الْعُشْرِ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ إِلَّا تِسْعِينَ وَمِائَةً فَلَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبُّهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1796. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें बहरीन की तरफ भेजा, तो उन्होंने मुझे यह तहरीर दी: “शुरू अल्लाह के नाम के साथ, जो बहोत मेहरबान और निहायत रहम करने

वाला है| यह फ़रीज़े ज़कात जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसलमानों पर फ़र्ज़ करार दिया, जिसके मुतल्लिक अल्लाह ने अपने रसूल को हुक्म फ़रमाया, जिस मुसलमान से इस तरीके पर ज़कात का मुतालबा किया जाए तो वह इसे अदा करे और जिस से इस मशरुअ तरीके से ज़्यादा का मुतालबा किया जाए तो वह न दे चोबीस और उन से कम ऊंट पर ज़कात में बकरिया ली जाएगी, हर पांच ऊंट पर एक बकरी है, जब ऊंट पच्चीस से पेंतीस हो जाए तो फिर इन पर ऊंट का एक सालाह मुअन्नस बच्चा बतौर ज़कात लिया जाएगा, जब ऊंट छत्तीस से पेंतालिस तक पहुँच जाए तो इन पर दो बरस की ऊंटनी वाजिब है, जब छियालीस से साठ तक पहुँच जाए तो इन पर तीन बरस मुकम्मल होने के बाद चोथे साल वाली ऊंटनी वाजिब है, जो गाभिन होने के काबिल हो जब इकसठ से पचत्तर हो जाए तो इन पर चार बरस मुकम्मल होने के बाद पाँचवीं बरस वाली ऊंटनी वाजिब है, जब वह चोहत्तर से नववे हो जाए तो इन पर दो दो साल की दो ऊंटनिया वाजिब है और जब इकानवे से एक सौ बीस हो जाए तो फिर इन पर तीन बरस मुकम्मल कर के चोथे साल की दो ऊंटनिया वाजिब हैं, जो के गाभिन होने के काबिल हो और जब एक सौ बीस से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हो जाए तो फिर हर चालीस पर दो सालाह ऊंटनी और हर पचास पर एक तीन और चार साल के दरमियान वाली ऊंटनी वाजिब है और जिस शख़्स के पास सिर्फ चार ऊंट हो तो उस पर कोई ज़कात फ़र्ज़ नहीं होती, अलबत्ता अगर उनका मालिक चाहे तो (नफ्ली सदका कर सकता है) जब पांच हो जाए तो फिर इन पर एक बकरी वाजिब है, और जिस शख़्स पर सदके में चार और पांच बरस के दरमियान की ऊंटनी फ़र्ज़ हो, लेकिन उस के पास उस के बजाए तीन और चार साल के दरमियान की ऊंटनी हो तो उन से यह कबूल कर ली जाएगी, और अगर इसे मयस्सर हो तो वह उस के साथ दो बकरिया मिलाएगा, या फिर बीस दिरहम और जिस शख़्स पर सदके में तीन और चार साल के दरमियान की ऊंटनी फ़र्ज़ हो लेकिन उस के पास इस बजाए चार और पांच साल के दरमियान की ऊंटनी हो तो उन से यह वुसुल की जाएगी और सदका वुसुल करने वाला इसे बीस दिरहम या दो बकरिया देगा, और जिस शख़्स पर तीन और चार साल के दरमियान की ऊंटनी फ़र्ज़ होती हो उस के पास यह न हो बल्कि उस के पास दो साल की ऊंटनी हो तो उन से यह कबूल कर ली जाएगी और वह उस के साथ दो बकरिया या बीस दिरहम अदा करेगा और जिस शख़्स पर सदके में दो साल की ऊंटनी फ़र्ज़ हो लेकिन उस के पास तीन और चार साल के दरमियान की ऊंटनी हो तो उन से यही कबूल कर ली जाएगी लेकिन सदका वुसुल करने वाला इसे बीस दिरहम या दो बकरिया देगा और जिस शख़्स पर सदके में दो साल की ऊंटनी फ़र्ज़ हो लेकिन उस के पास यह न हो बल्कि उस के पास एक साल की ऊंटनी हो तो उन से यही एक साल की ऊंटनी कबूल की जाएगी और वह उस के साथ बीस दिरहम या दो बकरिया अदा करेगा, और इसी तरह जिस शख़्स पर सदके में एक साल की ऊंटनी हो तो उन से यही कबूल कर ली जाएगी लेकिन सदका वुसुल करने वाला इसे बीस दिरहम या दो बकरिया अता करेगा अगर फ़र्ज़ करे उस के पास एक साल की ऊंटनी नहीं बल्कि उस के पास एक साल का ऊंट हो तो उन से इसे वुसुल कर लिया जाएगा और उस के साथ कुछ और नहीं होगा और चरने वाली बकरियों के बारे में सदका की शरह इस तरह है के जब वह चालीस से एक सौ बीस तक हो तो इन पर एक बकरी सदका है और जब एक सौ इक्कीस से दो सौ तक हो तो इन पर दो बकरिया है और जब दो सौ से तीन सौ तक हो तो इन पर तीन बकरिया है और जब तीन सौ से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हो जाए तो फिर हर सौ पर एक बकरी है और अगर किसी चरवाहे की बकरिया चालीस से कम (उनतालीस भी) हो गई तो इन पर ज़कात नहीं हाँ अगर उनका मालिक अपने मरीज़ से चाहे तो नफ्ली सदका कर सकता है, सदके में बूढ़ी बकरी, ऐब दार और सांढ नहीं दीया जाएगा मगर जो सदका वुसुल करने वाला चाहे और सदका के अंदेशे के पेशे नज़र मूतफर्क माल को जमा किया जाए न इकठ्ठे माल को मूतफर्क किया जाए और जो माल दो

शरीको का इकट्ठा हो तो वह ज़कात बकदर हिस्सा बराबर अदा करे चाँदी में चालीसवा हिस्सा है और अगर चाँदी सिर्फ एक सौ नववे (190) दिरहम हो तो उस पर कोई ज़कात नहीं इल्ला के उस का मालिक अदा करना चाहे”| (बुखारी)

رواه البخارى (1454)

١٧٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فِيمَا سَقَتِ السَّمَاءُ وَالْعُيُونُ أَوْ كَانَ عَثَرِيًّا الْعُشْرُ. وَمَا سقِيَ بالنضح نصف الْعشْر» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1797. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस खेती को बारिश या चश्मे सेराब करता है या वह खेती खुद खुद सेराब हो तो उस में दसवा हिस्सा है और जिसे कुंवो के पानी से सींचा जाए तो उस में बिसवा हिस्सा है”| (बुखारी)

رواه البخارى (1483)

١٧٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «العجماء جرحها جَبَّار والبشر جَبَّار والمعدن جَبَّار وَفِي الرِّكَازِ الْخمس»

1798. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जानवर का जख्म मुआफ़ है (इस पर कोई दियत मुआवज़ा नहीं) , कुंवो में और कान में मौत वाकेअ हो जाए तो उस पर कोई मुआवज़ा नहीं, और दफिने पर पांचवा हिस्सा ज़कात है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1499) و مسلم (45 / 1710)، (4465)

बَابُ مَا يَجِبُ فِيهِ الزَّكَاةُ • किन किन चीजों पर ज़कात फ़र्ज़ होता है

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٧٩٩ - (ضَعِيف) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَدْ عَفَوْتُ عَنِ الْخَيْلِ وَالرَّقِيقِ فَهَاتُوا صَدَقَةَ الرِّقَةِ: مِنْ كُلِّ أَرْبَعِينَ دِرْهَمًا دِرْهَمٌ وَلَيْسَ فِي تِسْعِينَ وَمِائَةٍ شَيْءٌ فَإِذَا بَلَغَتْ مِائَتَيْنِ فَفِيهَا خَمْسَةُ دَرَاهِمَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ ص:٥٦»» وَفِي رِوَايَةٍ لأبي دَاوُد عَن الْحَارِث عَنْ عَلِيٍّ قَالَ زُهَيْرٌ أَحْسَبُهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: " هَاتُوا رُبْعَ الْعُشْرِ مِنْ كُلِّ أَرْبَعِينَ دِرْهَمًا دِرْهَمٌ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ شَيْءٌ حَتَّى تَتِمَّ مِائَتَيْ دِرْهَمٍ. فَإِذَا كَانَتْ مِائَتَيْ دِرْهَمٍ فَفِيهَا خَمْسَةُ دَرَاهِمَ. فَمَا زَادَ فَعَلَى حِسَابِ ذَلِكَ. وَفِي الْغَنَمِ فِي كُلِّ أَرْبَعِينَ شَاةً شَاةٌ إِلَى عِشْرِينَ وَمِائَة ز فَإِن زَادَت وَاحِدَة فشاتان إِلَى مِائَتَيْنِ. فَإِن زَادَتْ فَثَلَاثُ شِيَاهٍ إِلَى ثَلَاثِمِائَةٍ فَإِذَا زَادَتْ على ثَلَاث مائَة فَفِي كُلِّ مِائَةٍ شَاةٌ. فَإِنْ لَمْ تَكُنْ

إِلَّا تِسْعٌ وَثَلَاثُونَ فَلَيْسَ عَلَيْكَ فِيهَا شَيْءٌ»» وَفِي الْبَقَرِ: فِي كُلِّ ثَلَاثِينَ تَبِيعٌ وَفِي الْأَرْبَعين مُسِنَّة وَلَيْسَ على العوامل شَيْء "

1799. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने घोड़े और गुलाम (की ज़कात) के बारे में दरगुज़र फ़रमाया, तुम हर चालीस दिरहम चाँदी पर एक दिरहम ज़कात दो, एक सौ नववे (190) दिरहम पर कोई ज़कात नहीं, जब दो सौ दिरहम हो जाए तो इन पर पांच दिरहम है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और हारिस अल औव्र अन अली की सनद से अबू दावुद की रिवायत है, ज़हीर बयान करते हैं, मेरा ख़याल है के यह हदीस नबी ﷺ से मरवी है के आप ﷺ ने फ़रमाया: “चालीसवा हिस्सा लाओ हर चालीस दिरहम पर एक दिरहम है और जब तक दो सौ दिरहम न हो जाए तुम पर कुछ भी फ़र्ज़ नहीं, जब दो सौ दिरहम हो जाए तो इन पर पांच दिरहम ज़कात है, जब दिरहम ज़्यादा होते जाए तो फिर इसी हिसाब से ज़कात होगी, बकरियों के बारे में है के हर चालीस बकरियों पर एक बकरी है और यह एक सौ बीस बकरियों तक एक ही है, और एक सौ इक्कीस से दो सौ तक दो बकरिया है, दो सौ एक से तीन सौ तक तीन बकरिया है, जब तीन सौ से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) हो जाए तो फिर हर सौ पर एक बकरी है, अगर उनतालीस बकरिया हो तो इन पर तुम्हारे ज़िम्मा कोई ज़कात नहीं, और गाय के बारे में हर तीस गाय पर गाय का एक सालाह बच्चा है, और चालीस पर दो सालाह बच्चा है, जबकि खेती बाड़ी वगैरा का काम करने वाले जानवरों पर ज़कात वाजिब नहीं”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (620) و ابوداؤد (1574) [و ابن ماجه : 1790] * الحارث الاعور لم ينفرد به و ابو اسحاق مدلس و عنعن

١٨٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْيَمَنِ أَمَرَهُ أَنْ يَأْخُذَ مِنْ الْبَقَرَة: مِنْ كُلِّ ثَلَاثِينَ تَبِيعًا أَوْ تَبِيعَةً وَمِنْ كل أَرْبَعِينَ مُسِنَّةً. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ والدارمي

1800. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी ﷺ ने उन्हें यमन की तरफ भेजा तो आप ने उन्हें मुझे गाय के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया के हर तीस पर गाय का एक साला नर या मादा बच्चा वुसुल करे और हर चालीस पर दो सालाह बच्चा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1578) و الترمذى (623 وقال : حسن) و النسائى (5 / 2526 ح 2452) و الدارمى (1 / 382 ح 19301932) [و ابن ماجه : 1803] * الاعمش مدلس و عنعن و فيه علة أخرى

١٨٠١ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُعْتَدِي فِي الصَّدَقَةِ كَمَانِعِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1801. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़कात वुसुल करने में ज़्यादती करने वाला ज़कात न देने वाले की तरह है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (1585) و الترمذى (646 وقال : غريب) [و ابن ماجه : 1808] * سعد بن سنان صدوق و لكن رواية يزيد بن ابى حبيب عن سعد بن سنان منكرة كما فى الضعفاء الكبير للعقيلى (2 / 119)

١٨٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ فِي حَبٍّ وَلَا تَمْرٍ صَدَقَةٌ حَتَّى يَبْلُغَ خَمْسَةَ أَوْسُقٍ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1802. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “पांच वुसक से कम गल्ले और खजूर पर कोई ज़कात नहीं”| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (5 / 40 ح 2487) [و مسلم : 45 / 979، (2267)]

١٨٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ قَالَ: عِنْدَنَا كِتَابُ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّمَا أَمَرَهُ أَنْ يَأْخُذَ الصَّدَقَةَ مِنَ الْحِنْطَةِ وَالشَّعِيرِ وَالزَّبِيبِ وَالتَّمْرِ. مُرْسل رَوَاهُ فِي شرح السّنة

1803. मुसई बिन तल्हा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हमारे पास मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु की वह तहरीर है जो नबी ﷺ ने उन्हें अता की थी जिस में उन्होंने इनको हुक्म फ़रमाया था के गंदुम जो किशमिश और खजूर में से ज़कात ली जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنه (6 / 40 بعد ح 1579 بدون سند) [و الحاکم (1 / 401) و البیهقی (4 / 128) و احمد (5 / 228)]
* سفیان الثوری مدلس و عنعن و للحدیث طرق کلها ضعیفة

١٨٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَتَّابِ بْنِ أَسِيدٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي زَكَاةِ الْكُرُومِ: «إِنَّهَا تُخْرَصُ كَمَا تُخْرَصُ النَّخْلُ ثُمَّ تُؤَدَّى زَكَاتُهُ زَبِيبًا كَمَا تُؤَدَّى زَكَاةُ النَّخْلِ تَمْرًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

1804. अत्ताब बिन असिदी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने अंगूरों की ज़कात के मुतल्लिक फ़रमाया: “खजूरो की तरह उनका अंदाज़ा किया जाएगा फिर उनकी ज़कात किशमिश से अदा की जाएगी, जिस तरह खजूरो की ज़कात छुवारो से अदा की जाती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (644 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (1603 وقال : سعيد [بن المسيب] لم يسمع من عتاب شيئًا)

١٨٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ حَدَّثَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «إِذَا خَرَصْتُمْ فَخُذُوا وَدَعُوا الثُّلُثَ فَإِنْ لَمْ تَدَعُوا الثُّلُثَ فَدَعُوا الرُّبُعَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1805. सहल बिन अबी हशमत ने हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “जब तुम अंदाज़ा कर लो तो फिर ज़कात वुसुल करो तो तिहाई हिस्सा छोड़ दो, अगर तुम तिहाई हिस्सा न छोड़ो तो फिर चोथाई छोड़ दो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (643) و ابوداؤد (1605) و النسائی (5 / 42 ح 2493)

١٨٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يبْعَث عبد الله ابْن رَوَاحَةَ إِلَى يَهُودٍ فَيَخْرُصُ النَّخْلَ حِينَ يَطِيبُ قَبْلَ أَنْ يُؤْكَلَ مِنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1806. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहु अन्हु को यहूदियों के पास भेजा करते थे जब खजूरो में मिठास जाती और वह अभी खाने के काबिल न होती तो वह उनका अंदाज़ा करते थे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1606) * مخبر ابن جريج مجهول و للحديث شواهد مرسلة عند مالك (2 / 703704 ح 14491450) و غيره و حديث ابی داود (3415) يغنی عنه

١٨٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم فِي الْعَسَل: «فِي كُلِّ عَشْرَةِ أَزُقٍّ زِقٌّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: فِي إِسْنَادِهِ مَقَالٌ وَلَا يَصِحُّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْبَاب كثير شَيْء

1807. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने शहद के बारे में फ़रमाया: “हर दस मश्किजो कनस्तर पर एक मश्किज़ा ज़कात है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी सनद पर कलाम किया गया है और इस बारे में नबी ﷺ से कोई ज़्यादा सहीह चीज़ साबित नहीं| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (629) * السند ضعيف وله شواهد عند ابی داود (1600) و ابن ماجه (1824) و غيرهما

١٨٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَتْ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ تَصَدَّقْنَ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ فَإِنَّكُنَّ أَكْثَرُ أَهْلِ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1808. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया जैनब रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो फ़रमाया: “औरतों की जमाअत सदका करो ख्वाह अपने ज़ेवरात से करो, क्योंकि रोज़ ए कियामत जहन्नम में तुम ज़्यादा होगी”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (635) * و اصله عند البخاری (1466) و مسلم (1000)، (2318)

١٨٠٩ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ امْرَأَتَيْنِ أَتَتَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي أَيْدِيهِمَا سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ لَهُمَا: «تُؤَدِّيَانِ زَكَاتَهُ؟» قَالَتَا: لَا. فَقَالَ لَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتُحِبَّانِ أَنْ يُسَوِّرَكُمَا اللَّهُ بِسِوَارَيْنِ مِنْ نَارٍ؟» قَالَتَا: لَا. ص:٥٦ قَالَ: «فَأَدِّيَا زَكَاتَهُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث قد رَوَاهُ الْمُثَنَّى بْنُ الصَّبَّاحِ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ نَحْوَ هَذَا وَالْمُثَنَّى بْنُ الصَّبَّاحِ وَابْنُ لَهِيعَةَ يُضَعَّفَانِ فِي الْحَدِيثِ وَلَا يَصِحُّ فِي هَذَا الْبَابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْء

1809. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की दो औरते रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उन के हाथो में सोने के दो कंगन थी, आप ﷺ ने उन से पूछा: “क्या तुम इस सोने

की ज़कात अदा करती हो? ” उन्होंने अर्ज़ किया, जी नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “क्या तुम पसंद करती हो के अल्लाह तुम्हें आग के दो कंगन पहना दे? उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर इस सोने की ज़कात अदा करो”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: मुषनि बिन सबाह ने इस हदीस को अम्र बिन शुऐब से इसी तरह रिवायत किया है, जबकि मुषनि बिन सबाह और इब्ने लहीअ दोनों हदीस में जईफ है, इस बारे में नबी ﷺ से कोई चीज़ सहीह साबित नहीं| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (637) * وله طريق آخر عند ابی داود (1563) و غيره و سند حسن

١٨١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَلْبَسُ أَوْضَاحًا مِنْ ذَهَبٍ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكَنْزٌ هُوَ؟ فَقَالَ: «مَا بلغ أَن يُؤدى زَكَاتُهُ فَزُكِّيَ فَلَيْسَ بِكَنْزٍ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد

1810. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं सोने के पायजेब पहना करती थी, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल, क्या यह भी खज़ाना है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो माल निसाब ज़कात को पहुँच जाए और उसकी ज़कात अदा कर दी जाए तो फिर वह खज़ाना नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (لم اجده) و ابوداؤد (1564) * عطاء بن ابی رباح : لم يسمع من ام سلمة کما قال احمد وغيره** روی مالک (1 / 256 ح 599) بسند صحيح عن ابن عمر قال فی الکنز :’’ هو المال الذی لا تؤدی منه الزکاة ‘‘

١٨١١ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَمُرَةَ بِنِ جُنْدُبٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْمُرُنَا أَنْ نُخْرِجَ الصَّدَقَةَ مِنَ الَّذِي نُعِدُّ لِلْبَيْعِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1811. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ हमें हुक्म दिया करते थे की हम तिजारत के लिए तैयार किए गए माल की ज़कात अदा करे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1562) * فيه خبيب : مجهول و جعفر بن سعد : ضعفه الجمهور ، و يويده حديث الترمذی (616) و سنده حسن

١٨١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ غَيْرِ وَاحِدٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ لِبِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ الْمُزَنِيِّ معادن الْقبلية وَهِيَ مِنْ نَاحِيَةِ الْفُرْعِ فَتِلْكَ الْمَعَادِنُ لَا تُؤْخَذُ مِنْهَا إِلَّا الزَّكَاةُ إِلَى الْيَوْمِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1812. रबीअ बिन अबी अब्दुल रहमान रहिमहुल्लाह बहोत से सहाबा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने बिलाल बिन हारिस अल मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु को कबिले की खाने अता फरमाइ, और यह फरअ की तरफ है और उन से आज तक सिर्फ ज़कात ही वुसुल की जाती है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3061) * السند ضعيف و للحديث شواهد عند ابن الجارود (371 و سنده حسن) و غيره وهوبها حسن

بَابُ مَا يَجِبُ فِيهِ الزَّكَاةُ • किन किन चीजों पर ज़कात फ़र्ज़ होता है

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٨١٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَلِيٍّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ فِي الْخَضْرَاوَاتِ صَدَقَةٌ ص:٥٦ وَلَا فِي الْعَرَايَا صَدَقَةٌ وَلَا فِي أَقَلَّ مِنْ خَمْسَةِ أَوْسُقٍ صَدَقَةٌ وَلَا فِي الْعَوَامِلِ صَدَقَةٌ وَلَا فِي الْجَبْهَةِ صَدَقَةٌ» . قَالَ الصَّقْرُ: الْجَبْهَةُ الْخَيل وَالْبِغَال وَالْعَبِيد. رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

1813. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सब्ज़ियों, अतिय्या करदा फलदार दरख्तों, पांच वुसक से कम अनाज इस्तेमाल में आने वाले मवेशियों और “ जबहा” पर ज़कात नहीं” सकर रावी ने बताया: “जबहा” से घोड़े खच्चर और गुलाम मुराद हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (2 / 9495 ح 1890) * فيه الصقر بن حبيب و احمد بن الحارث البصرى : ضعيفان

١٨١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ طَاوُسٍ أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ أَتَى بِوَقَصِ الْبَقَرِ فَقَالَ: لَمْ يَأْمُرْنِي فِيهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَيْءٍ. رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ وَالشَّافِعِيُّ وَقَالَ: الْوَقَصُ مَا لَمْ يَبْلُغِ الْفَرِيضَةَ

1814. ताउस से रिवायत है के मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु के पास निसाब से कम गाये लाइ गई तो उन्होंने ने फ़रमाया: नबी ﷺ ने इस बारे में मुझे कुछ नहीं फरमाया| दार कुतनी शाफ़ई और उन्होंने ने फ़रमाया: “وقص” से मुराद वह तादाद है जो निसाब तक न पहुंचे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (/ 99 ح 1910) و الشافعى فى الام (2 / 8) * سفيان بن عيينة مدلس و عنعن و طاؤس عن معاذ : منقطع

صَدَقَةِ الْفطر • सदक ए फ़ित्र

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

١٨١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَكَاةَ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ عَلَى الْعَبْدِ وَالْحُرِّ وَالذَّكَرِ وَالْأُنْثَى وَالصَّغِيرِ وَالْكَبِيرِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَأَمَرَ بِهَا أَنْ تُؤَدَّى قَبْلَ خُرُوجِ النَّاس إِلَى الصَّلَاة

1815. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसलमानों के हर गुलाम व आज़ाद मर्द, औरत और छोटे बड़े पर एक साअ खजूर या एक साअ (तकरीबन अढ़ाई किलो) जो सदका ए फितर फ़र्ज़ फ़रमाया,

और उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया के इसे नमाज़ ए ईद के लिए रवाना होने से पहले अदा कर दिया जाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1503) و مسلم (212 / 984)، (2278)

١٨١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كُنَّا نُخْرِجُ زَكَاةَ الْفِطْرِ صَاعًا مِنْ طَعَامٍ أَو صَاعا من شعير أَو صَاعا من تَمْرٍ أَوْ صَاعًا مَنْ أَقِطٍ أَوْ صَاعًا من زبيب

1816. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक साअ अनाज या एक साअ जौ या एक साअ खजूर या एक साअ पनीर या एक साअ किशमिश सदका ए फितर अदा किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1506) و مسلم (17 / 985)، (2283)

صَدَقَة الْفطر • सदक ए फ़ित्र

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٨١٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: فِي آخِرِ رَمَضَانَ أخرجُوا صَدَقَة صومكم. فرض رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذِهِ الصَّدَقَةَ صَاعًا مِنْ تَمْرٍ أَوْ شَعِيرٍ أَوْ نِصْفَ صَاعٍ مِنْ قَمْحٍ عَلَى كُلِّ حُرٍّ أَوْ مَمْلُوكٍ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى صَغِيرٍ أَوْ كَبِيرٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1817. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने रमज़ान के आख़िर में फ़रमाया अपने रोज़ो का सदका निकालो, रसूलुल्लाह ﷺ ने इस सदका को एक साअ खजूर या एक साअ जौ या आधा साअ गंदुम पर आज़ाद गुलाम हर मर्द औरत और हर छोटे बड़े पर फ़र्ज़ फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1622) و النسائی (5 / 5051 ح 25102512) * وقال : النسائی :'' الحسن لم یسمع من ابن عباس '' رضی الله عنه

١٨١٨ - (صَحِيح) وَعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: فَرَضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَكَاةَ الْفِطْرِ طُهْرَ الصِّيَامِ مِنَ اللَّغْوِ وَالرَّفَثِ وَطُعْمَةً لِلْمَسَاكِينِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1818. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सदका ए फितर रोज़ो को लग्व फहश बातो से तहारत और मसाकिन के लिए खाने के तौर पर फ़र्ज़ फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1609)



सदक ए फ़ित्र • صَدَقَة الْفطر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٨١٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مُنَادِيًا فِي فِجَاجِ مَكَّةَ: «أَلَا إِنَّ صَدَقَةَ الْفِطْرِ وَاجِبَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى حُرٍّ أَوْ عَبْدٍ صَغِيرٍ أَوْ كَبِيرٍ مُدَّانِ مِنْ قَمْحٍ أَوْ سِوَاهُ أَوْ صَاع من طَعَام» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1819. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत की के नबी ﷺ ने एक मुनादी (एलान) करने वाले को मक्का के बाज़ारों में भेजा के वह एलान करे: “सुन लो! सदका ए फितर दो मुद (तकरीबन सवा किलो) गंदुम या एक साअ दूसरा अनाज हर मुसलमान मर्द व ज़न आज़ाद गुलाम और छोटे बड़े पर वाजिब है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (674 وقال : غريب حسن) * ابن جريج مدلس و عنعن

١٨٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ ثَعْلَبَةَ أَوْ ثَعْلَبَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي صُعَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَاعٌ مِنْ بُرٍّ أَوْ قَمْحٍ عَنْ كُلِّ اثْنَيْنِ صَغِيرٍ أَوْ كَبِيرٍ حُرٍّ أَوْ عَبْدٍ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى. أَمَّا غَنِيُّكُمْ فَيُزَكِّيهِ اللَّهُ. وَأَمَّا فَقِيرُكُمْ فَيَرُدُّ عَلَيْهِ أَكْثَرَ مَا أعطَاهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1820. अब्दुल्लाह बिन सअलबत या सअलबत बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सुऐर अपने वालिद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक साअ गंदुम हर दो पर वाजिब है, छोटा हो या बड़ा आज़ाद हो या गुलाम मर्द हो या औरत, रहा तुम्हारा माल दार शख़्स तो अल्लाह उस का तज़किरा फरमादेगा और रहा तुम्हारा मुहताज शख़्स तो उस को दिए हुए से ज़्यादा दीया जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1619) * الزهری مدلس و عنعن

किसको सदका देना जाएज नहीं • بَاب مِمَّن لَا تحل لَهُ الصَّدَقَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٨٢١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِتَمْرَةٍ فِي الطَّرِيقِ فَقَالَ: «لَوْلَا أَنِّي أَخَافُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الصَّدَقَةِ لأكلتها»

1821. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने रास्ते में पड़ी हुई एक खजूर देखी तो फ़रमाया: "अगर मुझे उस के सदका के होने का अंदेशा न होता तो मैं उसे खा लेता"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2055) و مسلم (164 / 1071)، (2478)

١٨٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَخَذَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ تَمْرَةً مِنْ تَمْرِ الصَّدَقَةِ فَجَعَلَهَا فِي فِيهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كِخْ كِخْ» لِيَطْرَحَهَا ثُمَّ قَالَ: «أما شَعرت أَنا لَا نَأْكُل الصَّدَقَة؟»

1822. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु ने सदका की खजूरो में से एक खजूर ली और इसे मुंह में डाल लिया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ठहरो ठहरो"| ताकि वह इसे फेंक दें फिर फ़रमाया: "क्या तुम्हें मालुम नहीं के हम सदका नहीं खाते"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1491) و مسلم (161 / 1069)، (2473)

١٨٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن هَذِهِ الصَّدَقَاتِ إِنَّمَا هِيَ أَوْسَاخُ النَّاسِ وَإِنَّهَا لَا تَحِلُّ لِمُحَمَّدٍ وَلَا لِآلِ مُحَمَّدٍ» . رَوَاهُ مُسلم

1823. अब्दुल मुत्तलिब बिन रबिआ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये सदका तो लोगों (के माल का) मेल कुचेल है और यह मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद के लिए हलाल नहीं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (167 / 1072)، (2481)

١٨٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ سَأَلَ عَنْهُ: «أَهَدْيَةٌ أَمْ صَدَقَةٌ؟» فَإِنْ قِيلَ: صَدَقَةٌ: قَالَ لِأَصْحَابِهِ: «كُلُوا» وَلَمْ يَأْكُلْ وَإِنْ قِيلَ: هَدِيَّةٌ ضَرَبَ بِيَدِهِ فَأَكَلَ مَعَهم

1824. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में कोई खाने की चीज़ पेश की जाती तो आप ﷺ उस के मुतल्लिक दरियाफ्त फरमाते: "क्या यह हदिया है या सदका ?" अगर बताया जाता के सदका है तो आप ﷺ अपने सहाबा से फरमाते: "तुम खाओ", और आप खुद न खाते और अगर बताया जाता

के हदिया है तो आप अपना हाथ बढ़ाते और उन के साथ खाते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2576) و مسلم (175 / 1077)، (2491)

١٨٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ فِي بَرِيرَةَ ثَلَاثُ سُنَنٍ: إِحْدَى السُّنَنِ ص:٥٧ أَنَّهَا عُتِقَتْ فَخُيِّرَتْ فِي زَوْجِهَا وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ» . وَدَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْبُرْمَةُ تَفُورُ بِلَحْمٍ فَقُرِّبَ إِلَيْهِ خُبْزٌ وَأُدْمٌ مِنْ أُدْمِ الْبَيْتِ فَقَالَ: «أَلَمْ أَرَ بُرْمَةً فِيهَا لَحْمٌ؟» قَالُوا: بَلَى وَلَكِنَّ ذَلِكَ لَحْمٌ تُصُدِّقَ بِهِ عَلَى بَرِيرَةَ وَأَنْتَ لَا تَأْكُلُ الصَّدَقَةَ قَالَ: «هُوَ عَلَيْهَا صَدَقَةٌ وَلنَا هَدِيَّة»

1825. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, बरिरा रदियल्लाहु अन्हु की वजह से तीन अहकाम ए शरियत का पता चला उन्हें आज़ाद किया गया तो उन्हें अपने खाविंद के मुतल्लिक इख़्तियार दिया गया और रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “विला हक़ रासित आज़ाद करने वाले को मिलेगा”, और रसूलुल्लाह ﷺ घर तशरीफ़ लाए तो हंडिया में गोश्त उबल रहा था, पस रोटी और घर का सालन आप की खिदमत में पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैंने हंडिया में गोश्त नहीं देखा? अहले खाना ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं ज़रूर देखा है? लेकिन वह गोश्त बरिरा को सदके में दिया गया है, जबकि आप सदका तनावुल नहीं फरमाते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो उस के लिए सदका है जबकि हमारे लिए हदिया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5279) و مسلم (14 / 1504)، (3786)

١٨٢٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَبِّلُ الْهَدِيَّة ويثيب عَلَيْهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1826. आइशा (रजि) बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हदिया कबूल किया करते थे और उस के बदले में हदिया दिया भी करते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (2585)

١٨٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ دُعِيتُ إِلَى كُرَاعٍ لَأَجَبْتُ وَلَوْ أُهْدِيَ إِلَيَّ ذِرَاع لقبلت» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1827. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर मुझे दस्ती के गोश्त की दावत दि जाए तो मैं ज़रूर कबूल करूँगा और अगर मुझे दस्ती का गोश्त बतौर हदिया पेश किया जाए तो मैं कबूल करूँगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (2568)

١٨٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ الْمِسْكِينُ الَّذِي يَطُوفُ عَلَى النَّاسِ تَرُدُّهُ اللُّقْمَةُ وَاللُّقْمَتَانِ وَالتَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ وَلَكِنَّ الْمِسْكِينَ الَّذِي لَا يَجِدُ غِنًى يُغْنِيهِ وَلَا يُفْطَنُ بِهِ فَيُتَصَدَّقَ عَلَيْهِ وَلَا يَقُومُ فَيَسْأَلَ النَّاس»

1828. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मिस्किन वह नहीं जो एक या दो लुक्मो या एक दो खजूरो की खातिर लोगों से सवाल करता फिरे, लेकिन मिस्किन वह है जो इस क़दर खुशहाल नहीं के वह इसे बेनियाज़ कर दे और उस के मुतल्लिक पता भी न चले के उस पर सदका किया जा सके और वह लोगों से मांगे भी नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1479) و مسلم (101 / 1039)، (2393)

بَاب مِمَّن لَا تحل لَهُ الصَّدَقَة • किसको सदका देना जाएज नहीं

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٨٢٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي رَافِعٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ رَجُلًا مِنْ بَنِي مَخْزُومٍ عَلَى الصَّدَقَةِ فَقَالَ لِأَبِي رَافِعٍ: اصْحَبْنِي كَيْمَا تُصِيبُ مِنْهَا. فَقَالَ: لَا حَتَّى آتِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْأَلَهُ. فَانْطَلَقَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ: «إِنَّ الصَّدَقَةَ لَا تَحِلُّ لَنَا وَإِنَّ مَوَالِيَ الْقَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1829. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने बनू मख्ज़ुम कबिले के एक शख़्स को सदकात वुसुल करने के लिए भेजा, तो उस ने अबी राफीअ से कहा आप मेरे साथ चले ताकि आप भी उस में से हासिल करे तो उन्होंने कहा: नहीं? हत्ता कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर आप से दरियाफ्त कर लू, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “हमारे लिए सदका हलाल नहीं, क्योंकि कौम के आज़ाद करदा गुलाम भी इन्ही कौम के ज़िमरे में आते हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (657 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (1650) و النسائی (5 / 107 ح 2513)

١٨٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَحِلُّ الصَّدَقَةُ لِغَنِيٍّ وَلَا لِذِي مِرَّةٍ سَوِيٍّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

1830. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी माल दार शख़्स और ताकतवर सहिहुल खलकत शख़्स के लिए सदका लेना हलाल नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (652) و ابوداؤد (1634) و الدارمی (1 / 346 ح 1646)

١٨٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَة

1831. इमाम अहमद इमाम नसई और इमाम इब्ने माजा ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (2 / 389 ح 9049 مختصرًا) و النسائی (5 / 99 ح 2598) و ابن ماجه (1839)

١٨٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَجُلَانِ أَنَّهُمَا أَتَيَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ وَهُوَ يُقَسِّمُ الصَّدَقَةَ فَسَأَلَاهُ مِنْهَا فَرَفَعَ فِينَا النَّظَرَ وَخَفَضَهُ فَرَآنَا جَلْدَيْنِ فَقَالَ: «إِنْ شِئْتُمَا أَعْطَيْتُكُمَا وَلَا حَظَّ فِيهَا لِغَنِيٍّ وَلَا لِقَوِيٍّ مكتسب» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1832. अब्दुल्लाह बिन अदि बिन खियार बयान करते हैं, दो आदमियों ने मुझे बताया के वह हज्जतुल वदा के मौके पर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, आप इस वक़्त सदका तकसीम फरमा रहे थे, उन्होंने आप से सदका की दरख्वास्त की तो आप ने नज़र उठाकर हमें देखा तो आप ﷺ ने हमें ताकतवर देख कर फ़रमाया: “अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें दे देता हूँ लेकिन उस में किसी माल दार शख़्स और कमाई की ताकत रखने वाले शख़्स के लिए कोई हिस्सा नहीं”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1633) و النسائی (5 / 99 ح 2599)

١٨٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " لَا تَحِلُّ الصَّدَقَةُ لِغَنِيٍّ إِلَّا لِخَمْسَةٍ: لِغَازٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ لِعَامِلٍ عَلَيْهَا أَوْ لِغَارِمٍ أَوْ لِرَجُلٍ اشْتَرَاهَا بِمَالِهِ أَوْ لِرَجُلٍ كَانَ لَهُ جَارٌ مِسْكِينٌ فَتَصَدَّقَ عَلَى الْمِسْكِينِ فَأَهْدَى الْمِسْكِين للغني ". رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد

1833. अता बिन यस्सार रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पांच शख़्स के सिवा किसी माल दार शख़्स के लिए सदका हलाल नहीं, अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला, सदकात वुसुल करने वाला, किसी शख़्स को तावुन देना पड़ जाए, वह शख़्स जो अपने माल के ज़रिए इस सदका की चीज़ को खरीद ले गया, वह शख़्स जिस का पड़ोसी मिस्किन हो और इसे सदका दिया जाए और वह मिस्किन शख़्स माल दार शख़्स को बतौर हदिया भेज दे”| (सहीह)

صحیح ، رواه مالک (26831 ح 608) و ابوداؤد (1635)

١٨٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ: «أوابن السَّبِيل»

1834. और अबू दावुद की अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रिवायत में है : ’ या मुसाफ़िर”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1637) * عطية العوفی ضعيف و الزيادة صحيحة و لكن السياق ضعيف

١٨٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ زِيَادِ بْنِ الْحَارِثِ الصُّدَائِيِّ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَايَعْتُهُ فَذَكَرَ حَدِيثًا طَوِيلًا فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: أَعْطِنِي مِنَ الصَّدَقَةِ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَرْضَ بِحُكْمِ نَبِيٍّ وَلَا غَيْرِهِ فِي الصَّدَقَاتِ حَتَّى حَكَمَ فِيهَا هُوَ فَجَزَّأَهَا ثَمَانِيَةَ أَجْزَاءٍ فَإِنْ كُنْتَ مِنْ تِلْكَ الْأَجْزَاءِ أَعطيتك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1835. ज़ियाद बिन हारिस सुदाई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप की बैत की, उन्होंने एक तवील हदीस बयान की एक आदमी आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मुझे सदके में से कुछ दें, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “सदकात के मुआमले में अल्लाह ने किसी नबी या उस के अलावा किसी शख़्स की तकसीम के हुक्म को पसंद नहीं फरमाया, बल्कि इस मुआमले में उस ने खुद हुक्म फ़रमाया तो उसे आठ अजज़ा में तकसीम फ़रमाया, अगर तो तुम भी उन आठ अजज़ा मसारिफ़ में से हो तो में तुम्हें दे देता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1630) * عبد الرحمن بن زياد الافريقى : ضعيف

किसको सदका देना जाएज नहीं • بَاب مِمَّن لَا تحل لَهُ الصَّدَقَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٨٣٦ - (ضَعِيف) عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ: شَرِبَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ لَبَنًا فَأَعْجَبَهُ فَسَأَلَ الَّذِي سَقَاهُ: مِنْ أَيْنَ هَذَا اللَّبَنُ؟ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ وَرَدَ عَلَى مَاءٍ قَدْ سَمَّاهُ فَإِذَا نَعَمٌ مِنْ نَعَمِ الصَّدَقَةِ وَهُمْ يَسْقُونَ فَحَلَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا فَجَعَلْتُهُ فِي سِقَائِي فَهُوَ هَذَا: فَأَدْخل عمر يَده فاستقاءه. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1836. ज़ैद बिन असलम बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने दूध पिया तो वह उन्हें पसंद आया उन्होंने इस दूध पिलाने वाले शख़्स से पूछा यह दूध कहाँ से हासिल किया है? उस ने बताया के वह फलां घाट पर गया था वहां सदका के कुछ ऊंट थे और वह चरवाहे उन्हें पानी पिला रहे थे, उन्होंने उनका दूध धोया तो मैंने इसे अपने बर्तन में डाल लिया यह वह है, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अपना हाथ हलक में डाला और कै कर दी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (1 / 269 ح 610) و البيهقى فى شعب الايمان (5771) * السند منقطع ، زيد بن اسلم لم يدرک عمر رضى الله عنه

بَاب من لَا تحل لَهُ الْمَسْأَلَة وَمن تحل لَهُ • सवाल करना किसके लिए जाएज है और किसके लिए नाजाएज

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٨٣٧ - (صَحِيح) عَن قبيصَة بن مُخَارق الْهِلَالِي قَالَ: تَحَمَّلْتُ حَمَالَةً فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَسْأَلُهُ فِيهَا. فَقَالَ: «أَقِمْ حَتَّى تَأْتِينَا الصَّدَقَة فنأمر لَك بهَا» . قَالَ ثُمَّ قَالَ: «يَا قَبِيصَةُ إِنَّ الْمَسْأَلَةَ لَا تَحِلُّ إِلَّا لِأَحَدِ ثَلَاثَةٍ رَجُلٍ تَحَمَّلَ حَمَالَةً فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتَّى يُصِيبَهَا ثُمَّ يُمْسِكُ وَرَجُلٍ أَصَابَتْهُ جَائِحَةٌ اجْتَاحَتْ مَالَهُ فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتَّى يُصِيبَ قِوَامًا مِنْ عَيْشٍ أَوْ قَالَ سِدَادًا مِنْ عَيْشٍ وَرَجُلٍ أَصَابَتْهُ فَاقَةٌ حَتَّى يقوم ثَلَاثَة من ذَوي الحجى مِنْ قَوْمِهِ. لَقَدْ أَصَابَتْ فُلَانًا فَاقَةٌ فَحَلَّتْ لَهُ الْمَسْأَلَةُ حَتَّى يُصِيبَ قِوَامًا مِنْ عَيْشٍ أَوْ قَالَ سِدَادًا مِنْ عَيْشٍ فَمَا سِوَاهُنَّ من الْمَسْأَلَة يَا قبيصَة سحتا يأكلها صَاحبهَا سحتا» . رَوَاهُ مُسلم

1837. कबिस बिन मुखारिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने एक ज़मानत की ज़िम्मेदारी ले ली तो मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, ताकि उस के लिए में आप से सवाल करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम ठहरो हत्ता कि हमारे पास सदका आजाए, तो फिर हम तुम्हारी खातिर सदका का हुक्म देंगे,‘‘ फिर फ़रमाया: “कबिस सिर्फ तीन शख़्स के लिए सवाल करना जाईज़ है, वह आदमी जिस ने ज़मानत की हामी भरी तो उस के लिए सवाल करना जाईज़ है, हत्ता कि वह इसे अदा कर दे और फिर सवाल न करे, एक वह आदमी जिस को ऐसी आफत आ जाए के वह उस के माल को तबाह कर दे तो उस के लिए सवाल करना जाईज़ है, हत्ता कि वह अपने गुजरान दुरुस्त कर ले, और एक इस आदमी के लिए सवाल करना जाईज़ है के वह फाका में मुब्तिला है, हत्ता कि उसकी कौम में से तीन दाना आदमी गवाही दे दे के फलां आदमी वाकिअतन फाका में मुब्तिला है तो उस के लिए सवाल करना जाईज़ है, हत्ता कि वह अपने गुजरान दुरुस्त कर सके और कबिस उन तीन सूरतो के अलावा सवाल करना हराम है और अगर कोई सवाल करता है तो वह हराम खाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (109 / 1042)، (2404)

١٨٣٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَأَلَ النَّاسَ أَمْوَالَهُمْ تَكَثُّرًا فَإِنَّمَا يَسْأَلُ جمرا. فليستقل أَو ليستكثر» . رَوَاهُ مُسلم

1838. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स माल बढ़ाने की खातिर लोगों के माल में से सवाल करता है तो वह अंगारे मांग रहा है, वह कम मांगे या ज्यादा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 1041)، (2399)

١٨٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ص:٥٧ «مَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَسْأَلُ

النَّاسَ حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مُزْعَةُ لحم»

1839. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी लोगों से मांगता रहता है हत्ता कि जब वह रोज़ ए कियामत पेश होगा तो उस के चेहरे पर कोई गोश्त नहीं होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (174) و مسلم (104 / 1040)، (2398)

١٨٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُلْحِفُوا فِي الْمَسْأَلَةِ فوَاللَّه لَا يسألني أحدق مِنْكُمِ شَيْئًا فَتُخْرِجَ لَهُ مَسْأَلَتُهُ مِنِّي شَيْئًا وَأَنَا لَهُ كَارِهٌ فَيُبَارَكَ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتُهُ» . رَوَاهُ مُسلم

1840. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सवाल करने में पीछे न पड़ जाया करो अल्लाह की क़सम! जब तुम में से कोई शख़्स सवाल कर के मुझ से कोई चीज़ हासिल कर लेता है, जबकि मैं उस ना पसंद करता हूँ तो फिर मैं वह चीज़ इसे दे भी दो तो उस में बरकत नहीं होती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 1038)، (2390)

١٨٤١ - (صَحِيح) وَعَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ يَأْخُذَ أَحَدُكُمْ حَبْلَهُ فَيَأْتِيَ بِحُزْمَةِ حَطَبٍ عَلَى ظَهْرِهِ فَيَبِيعَهَا فَيَكُفَّ اللَّهُ بِهَا وَجْهَهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ النَّاسَ أَعْطَوْهُ أَوْ مَنَعُوهُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

1841. जुबैर बिन अव्वाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम में से कोई शख़्स अपने रस्सी लेकर जंगल में जाए अपने पुश्त पर लकड़ियों का गठ्ठा ला कर फरोख्त करे और इस तरह अल्लाह उस के चेहरे को सवाल करने से बचा ले तो यह उस के लिए सवाल करने से बेहतर है? मुमकिन है के वह इसे कुछ दे या न दें”| (बुखारी)

رواه البخاری (1471)

١٨٤٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَانِي ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي ثُمَّ قَالَ لِي: «يَا حَكِيمُ إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرٌ حُلْوٌ فَمَنْ أَخَذَهُ بِسَخَاوَةِ نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ. وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى» . قَالَ حَكِيمٌ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا أَرْزَأُ أَحَدًا بَعْدَكَ شَيْئًا حَتَّى أُفَارِقَ الدُّنْيَا "

1842. हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया तो आप ने मुझे अता कर दिया फिर मैंने आप से सवाल किया तो आप ने मुझे अता कर दिया, फिर आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “हकिम यह माल सर सब्ज़ो शिरी है, जिस ने सखावत नफ्स के साथ इसे हासिल किया तो उस के लिए उस में

बरकत दी जाती है, और जिस ने हरस व ताअम के साथ इसे हासिल किया तो उस के लिए उस में बरकत नहीं की जाती, और वह इस शख़्स की तरह है जो खाता है लेकिन सैर नहीं होता और ऊपर वाला हाथ निचले वाले हाथ से बेहतर है" हकिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया में आप के बाद जिंदगी भर किसी से कोई चीज़ नहीं मांगूंगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1472) و مسلم (96 / 1035)، (2387)

١٨٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَذْكُرُ الصَّدَقَةَ وَالتَّعَفُّفَ عَنِ الْمَسْأَلَةِ: «الْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى وَالْيَد الْعليا هِيَ المنفقة وَالْيَد السُّفْلى هِيَ السائلة»

1843. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फरमा थे और आप ने सदका करने और सवाल करने से बचने के लिए फ़ज़ाइल बयान करते हुए फ़रमाया: "ऊपर वाला हाथ निचले हाथ से बेहतर है, और ऊपर वाला हाथ खर्च करने वाला है जबकि निचला हाथ सवाल करने वाला है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1429) و مسلم (94 / 1033)، (2385)

١٨٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: إِنَّ أَنَاسًا مِنَ الْأَنْصَارِ سَأَلُوا ص:٥٧ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهُمْ ثُمَّ سَأَلُوهُ فَأَعْطَاهُمْ حَتَّى نَفِدَ مَا عِنْدَهُ. فَقَالَ: «مَا يَكُونُ عِنْدِي مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ أَدَّخِرَهُ عَنْكُمْ وَمَنْ يَسْتَعِفَّ يُعِفَّهُ اللَّهُ وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللَّهُ وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللَّهُ وَمَا أُعْطِيَ أَحَدٌ عَطَاءً هُوَ خَيْرٌ وَأَوْسَعُ مِنَ الصَّبْرِ»

1844. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अंसार के कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया तो आप ने उन्हें अता कर दिया हत्ता कि आप के पास जो कुछ था वह ख़तम हो गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे पास जो माल होता है में उसे तुम से बचाकर नहीं रखता, और जो शख़्स सवाल करने से बचता है तो अल्लाह इसे बचा लेता है, और जो शख़्स बेनियाज़ रहना चाहे तो अल्लाह इसे बेनियाज़ कर देता है, जो शख़्स सब्र करता है तो अल्लाह इसे साबिर बना देता है, और किसी शख़्स को सब्र से बेहतर और वसीअ तर कोई चीज़ अता नहीं की गई"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1469) و مسلم (124 / 1053)، (2424)

١٨٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِينِي الْعَطَاءَ فَأَقُولُ: أَعْطِهِ أَفْقَرَ إِلَيْهِ

مِنِّي. فَقَالَ: «خُذْهُ فَتَمَوَّلْهُ وَتَصَدَّقْ بِهِ فَمَا جَاءَكَ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَأَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ وَلَا سَائِلٍ فَخذه. وما لا فَلَا تتبعه نَفسك»

1845. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मुझे कोई माल अता करते तो मैं अर्ज़ करता आप इसे मुझ से ज़्यादा ज़रूरत मंद को अता कर दे तो आप ﷺ फरमाते: "इसे ले लो और इसे अपने माल में शामिल कर लो और इसे सदका करो और अगर बिन मांगे और बगैर इंतज़ार किए तुम्हारे पास माल जाए तो उसे ले लिया करो और जो ऐसा न हो उस के पीछे न पड़ो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1473) و مسلم (110 / 1045)، (2405)

بَاب من لَا تحل لَهُ الْمَسْأَلَة وَمن تحل لَهُ — सवाल करना किसके लिए जाएज है और किसके लिए नाजाएज

الْفَصْل الثَّانِي — दूसरी फस्ल

١٨٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَسَائِلُ كُدُوحٌ يَكْدَحُ بِهَا الرَّجُلُ وَجْهَهُ فَمَنْ شَاءَ أَبْقَى عَلَى وَجْهِهِ وَمَنْ شَاءَ تَرَكَهُ إِلَّا أَنْ يَسْأَلَ الرَّجُلُ ذَا سُلْطَانٍ أَوْ فِي أَمْرٍ لَا يَجِدُ مِنْهُ بُدًّا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

1846. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सवाल करना खराश है, आदमी उनकी वजह से अपने चेहरे पर खराशे डालता है, जो चाहे उन्हें अपने चेहरे पर बाकी रखे और जो चाहे उन्हें छोड़ दे, अलबत्ता आदमी बादशाह से सवाल करे या किसी ऐसी चीज़ के बारे में सवाल करे जिसके बगैर कोई चाराह न हो तो फिर सवाल करना जाईज़ है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1639) و الترمذى (681 وقال : حسن صحيح) و النسائى (5 / 100 ح 2600)

١٨٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من سَأَلَ النَّاسَ وَلَهُ مَا يُغْنِيهِ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَسْأَلَتُهُ فِي وَجْهِهِ خُمُوشٌ أَوْ خُدُوشٌ أَوْ كُدُوحٌ» . قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا يُغْنِيهِ؟ قَالَ: «خَمْسُونَ دِرْهَمًا أَوْ قِيمَتُهَا مِنَ الذَّهَبِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1847. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स इस क़दर मिलकियत रखने के बावजूद लोगों से सवाल करे जो इसे सवाल करने से बेनियाज़ कर दे तो वह रोज़ ए कियामत आएगा तो वह सवाल उस के चेहरे पर खराश की तरह होगा,'' सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह कितनी मिकदार है जो इसे सवाल करने से बेनियाज़ कर सकती है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "पचास दिरहम

या उस के मसावी सोना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1626) و الترمذی (650 وقال : حسن) و النسائی(5 / 97 ح 2593) و ابن ماجه (1820) و الدارمی (1 / 386 ح 1647) * حکیم بن جبیر : ضعیف ، و للثوری تدلیس عجیب لانه حدث به عن زبید عن محمد بن عبد الرحمن بن یزید : ولم یجاوزه ، ای مقطوعًا او مرسلاً !

١٨٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَأَلَ وَعِنْدَهُ مَا يُغْنِيهِ فَإِنَّمَا يَسْتَكْثِرُ مِنَ النَّارِ» . قَالَ النُّفَيْلِيُّ. وَهُوَ أَحَدُ رُوَاتِهِ فِي مَوْضِعٍ آخر: وَمَا الْغنى الَّذِي لَا يَنْبَغِي مَعَهُ الْمَسْأَلَةُ؟ قَالَ: «قَدْرُ مَا يُغَدِّيهِ وَيُعَشِّيهِ» . وَقَالَ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ: «أَنْ يَكُونَ لَهُ شِبَعُ يَوْمٍ أَوْ لَيْلَةٍ وَيَوْمٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1848. सहल बिन हंजलीय्या रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इस क़दर मिलकियत रखने के बावजूद सवाल करे जो इसे सवाल करने से बेनियाज़ कर सकती हो तो फिर वह आग में इज़ाफा कर रहा है” और नफ्ली जो इस रिवायत के रावी है उन्होंने दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया वह माल की कितनी मिकदार है जिसके होते हुए सवाल करना मुनासिब नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो सुबह व शाम खाने की मिकदार”, और एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया: “जिस के पास इतना माल हो जो उसकी सुबह व शाम की शक्म सीरी के लिए काफी हो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1629)

١٨٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي أَسَدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَأَلَ مِنْكُمْ وَلَهُ أُوقِيَّةٌ أَوْ عَدْلُهَا فَقَدْ سَأَلَ إِلْحَافًا» . رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1849. अता बिन यस्सार रहिमहुल्लाह बनू असद कबिले के एक आदमी से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से जो शख़्स अवका या उस के मसावी चाँदी की मिलकियत रखने के बावजूद सवाल करता है तो वह चिमट कर सवाल करने वालो के ज़िमरे में आता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (2 / 999 ح 1949) و ابوداؤد (1627) و النسائی (5 / 9899 ح 2597)

١٨٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُبْشِيِّ بْنِ جُنَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ الْمَسْأَلَةَ لَا تَحِلُّ لِغَنِيٍّ وَلَا لِذِي مِرَّةٍ سَوِيٍّ إِلَّا لِذِي فَقْرٍ مُدْقِعٍ أَوْ غُرْمٍ مُفْظِعٍ وَمَنْ سَأَلَ النَّاسَ لِيُثْرِيَ بِهِ مَالَهُ: كَانَ خُمُوشًا فِي وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَرَضْفًا يَأْكُلُهُ مِنْ جَهَنَّمَ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُقِلَّ وَمَنْ شَاءَ فليكثر ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1850. हुब्शी बिन जनादह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माल दार शख़्स के लिए सवाल करना जाईज़ है के काम करने की ताकत रखने वाले सहिहुल खलकत शख़्स के लिए, अलबत्ता इस शख़्स के लिए सवाल करना जाईज़ है जो इन्तिहाई मुहताज हो या तावुन तले दब गया हो, और जो शख़्स अपना माल बढ़ाने की खातिर लोगों से सवाल करता है तो रोज़ ए कियामत उस के चेहरे पर खराश होगी और वह

जहन्नम में गरम पत्थर खाएगा, जो चाहे कम करे जो चाहे ज़्यादा करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (653) * مجالد بن سعيد : ضعيف من جهة سوء حفظه

١٨٥١ - (ضَعِيف) وَعَن أنس بن مَالك: أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُهُ فَقَالَ: «أَمَا فِي بَيْتك شَيْء؟» قَالَ بَلَى حِلْسٌ نَلْبَسُ بَعْضَهُ وَنَبْسُطُ بَعْضَهُ وَقَعْبٌ نَشْرَبُ فِيهِ مِنَ الْمَاءِ. قَالَ: «ائْتِنِي بِهِمَا» قَالَ فَأَتَاهُ بِهِمَا فَأَخَذَهُمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ ص:٥٨ وَقَالَ: «مَنْ يَشْتَرِي هَذَيْنِ؟» قَالَ رَجُلٌ أَنَا آخُذُهُمَا بِدِرْهَمٍ قَالَ: «مَنْ يَزِيدُ عَلَى دِرْهَمٍ؟» مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا قَالَ رجل أَنا آخذهما بِدِرْهَمَيْنِ فَأَعْطَاهُمَا إِيَّاه وَأخذ الدِّرْهَمَيْنِ فَأَعْطَاهُمَا الْأَنْصَارِيُّ وَقَالَ: «اشْتَرِ بِأَحَدِهِمَا طَعَامًا فانبذه إِلَى أهلك واشتر بِالْآخرِ قدومًا فأتني بِهِ» . فَأَتَاهُ بِهِ فَشَدَّ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُودًا بِيَدِهِ ثُمَّ قَالَ لَهُ اذْهَبْ فَاحْتَطِبْ وَبِعْ وَلَا أَرَيَنَّكَ خَمْسَةَ عَشَرَ يَوْمًا ". فَذهب الرجل يحتطب وَيبِيع فجَاء وَقَدْ أَصَابَ عَشَرَةَ دَرَاهِمَ فَاشْتَرَى بِبَعْضِهَا ثَوْبًا وَبِبَعْضِهَا طَعَامًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ تَجِيءَ الْمَسْأَلَةُ نُكْتَةً فِي وَجْهِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ الْمَسْأَلَةَ لَا تَصْلُحُ إِلَّا لِثَلَاثَةٍ لِذِي فَقْرٍ مُدْقِعٍ أَوْ لِذِي غُرْمٍ مُفْظِعٍ أَوْ لِذِي دَمٍ مُوجِعٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى ابْن مَاجَه إِلَى قَوْله: «يَوْم الْقِيَامَة»

1851. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अंसार में से एक आदमी सवाल करने की गर्ज़ से नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे घर में कोई चीज़ नहीं? उस ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं एक टाट है जो हमारा ओढ़ना बिछोना है और एक प्याला है जिस में हम पानी पीते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन्हें मेरे पास लाओ”, वह उन्हें आप के पास लाए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें अपने हाथ में लेकर फ़रमाया: “उन्हें कौन खरीदता है” एक आदमी ने अर्ज़ किया, मैं उन्हें एक दिरहम में खरीदता हूँ आप ﷺ ने दस या तीन मर्तबा फ़रमाया: “दिरहम से ज़्यादा कौन बढ़ता है” फिर किसी और आदमी ने कहा में उन्हें दो दिरहम में खरीदता हूँ, आप ने वह दोनों चीज़े इसे दे दी और दो दिरहम लेकर इस अंसारी को दिए और फ़रमाया: “उन में से एक का खाना लेकर अपने घरवालो के सुपुर्द करो और दूसरे से एक कुल्हाड़ा लेकर मेरे पास आओ,‘‘ पस वह इसे लेकर आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से उस में दस्ता लगाया फिर फ़रमाया: “जा और लकड़िया इकट्ठी कर और फरोख्त कर और मैं पन्द्रह रोज़ तक तुम्हें न देखूं,‘‘ वह आदमी गया और लकड़िया इकट्ठी कर के फरोख्त करता रहा, वह आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस के पास दस दिरहम हो चुके थे उस ने कुछ रकम के कपड़े ख़रीदे और कुछ से गल्ला ख़रीदा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:” यह तुम्हारे लिए उस से बेहतर है के तुम सवाल करो और रोज़ ए कियामत तुम्हारे चेहरे पर नाकित हो, क्योंकि सिर्फ तीन शख़्स इन्तिहाई मुहताज शख्स, तावुन तले दबे हुए शख़्स और दियत की तकलीफ से दो चार शख़्स के लिए सवाल करना जाईज़ है”| अबू दावुद, और इब्ने माजा ने “ रोज़ ए कियामत” के अल्फाज़ तक बयान किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1641) و ابن ماجه (2198)

١٨٥٢ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَصَابَتْهُ فَاقَةٌ فَأَنْزَلَهَا بِالنَّاسِ لَمْ تُسَدَّ

فَاقَتُهُ. وَمَنْ أَنْزَلَهَا بِاللَّهِ أوشك الله لَهُ بالغنى إِمَّا بِمَوْتٍ عَاجِلٍ أَوْ غِنًى آجِلٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1852. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स फाके में मुब्तिला हो जाए और वह इसे लोगों पर पेश करे तो उस का फाका दूर नहीं होगा और जो शख़्स उस के मुतल्लिक अल्लाह से अर्ज़ करे तो करीब है के अल्लाह जल्द मौत दे कर या बदिर दौलत मंदी दे कर इसे गनी अता फरमादे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1645) و الترمذی (2326 وقال : حسن صحيح غريب)

بَاب من لَا تحل لَهُ الْمَسْأَلَة وَمن تحل لَهُ • सवाल करना किसके लिए जाएज है और किसके लिए नाजाएज

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٨٥٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ الْفِرَاسِيِّ أَنَّ الْفِرَاسِيَّ قَالَ: قُلْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ص:٥٨ أَسْأَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا وَإِن كنت لابد فسل الصَّالِحين» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1853. इब्ने फिरासी अपने बाप से रिवायत बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में सवाल कर लिया करू, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? अगर तुमने ज़रूर ही माँगना हो तो फिर स्वालेह लोगों से सवाल किया कर”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1646) و النسائی (5 / 95 ح 2588) * ابن الفراسی : لم اجد من و ثقه ، و مسلم بن مخشی و ثقه ابن حبان وحده

١٨٥٤ - (صَحِيح) وَعَن ابْن السَّاعِدِيّ الْمَالِكِي أنه قَالَ: استعملني عمر بن الْخطاب رَضِي الله عَنْهُم عَلَى الصَّدَقَةِ فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنْهَا وَأَدَّيْتُهَا إِلَيْهِ أَمَرَ لِي بِعُمَالَةٍ فَقُلْتُ إِنَّمَا عَمِلْتُ لِلَّهِ وَأَجْرِي على الله فَقَالَ خُذْ مَا أُعْطِيتَ فَإِنِّي قَدْ عَمِلْتُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَمَّلَنِي فَقُلْتُ مِثْلَ قَوْلِكَ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أُعْطِيتَ شَيْئا من غير أَن تسْأَل فَكل وَتصدق» . رَوَاهُ مُسلم وَأَبُو دَاوُد

1854. इब्ने साअदि रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे सदकात वुसुल करने पर मामूर फ़रमाया जब में इस काम से फारिग़ हुआ और वह उन के सुपुर्द कर दिएतो उन्होंने तनख्वाह लेने के लिए मुझे हुक्म फ़रमाया तो मैंने अर्ज़ किया: मैंने तो महज़ अल्लाह की खातिर यह काम किया था, और मेरा अज़र अल्लाह के जिम्मे है, उन्होंने फ़रमाया जो दिया जाए इसे कबूल कर, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में यह काम किया था तो आप ने भी मुझे तनख्वाह पेश की तो मैंने भी तुम्हारी तरफ ही अर्ज़ किया, था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया था: “जब बिन मांगे कोई चीज़ तुम्हें दी जाए तो उसे खाओ और सदका करो”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (1647) [و البخاری (7163 مطولاً) و مسلم (112 / 1045)، (2408)]

١٨٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ يَوْمَ عَرَفَةَ رَجُلًا يَسْأَلُ النَّاس فَقَالَ: أَفِي هَذَا الْيَوْمِ: وَفِي هَذَا الْمَكَانِ تسْأَل من يغر الله؟ فخفقه بِالدرةِ. رَوَاهُ رزين

1855. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अरफा के रोज़ एक आदमी को लोगों से सवाल करते हुए सूना तो उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम इस रोज़ इस जगह अल्लाह को छोड़ कर किसी और से मांग रहे हो, उन्होंने दुर्रे के साथ उसकी पिटाई की इसका कोई असल नहीं| (रवाह रजिन मझे नहीं मिली.)

لا اصل له ، رواه رزین (لم اجده)

١٨٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمر رَضِي الله عَنهُ قَالَ: تَعْلَمُنَّ أَيُّهَا النَّاسُ أَنَّ الطَّمَعَ فَقْرٌ وَأَنَّ الْإِيَاس غِنًى وَأَنَّ الْمَرْءَ إِذَا يَئِسَ عَن شَيْء اسْتغنى عَنهُ. رَوَاهُ رزين

1856. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फ़रमाया: लोगो! तुम जान लो के ताअम फकीरी है, जबकि लोगों से ना उम्मीदी गनी है, क्योंकि जब आदमी किसी चीज़ से ना उम्मीद हो जाता है तो वह उस से बेनियाज़ हो जाता है, इसका कोई असल नहीं| (रवाह रजिन मझे नहीं मिली.)

لا اصل له ، رواه رزین (لم اجده)

١٨٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَكْفُلُ لِي أَنْ لَا يَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا فَأَتَكَفَّلَ لَهُ بِالْجَنَّةِ؟» فَقَالَ ثَوْبَانُ: أَنَا فَكَانَ لَا يَسْأَلُ أَحَدًا شَيْئا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1857. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मुझे ज़मानत दे के वह लोगों से कोई चीज़ नहीं मांगेगा तो में उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ”, सौबान रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैं ज़मानत देता हूँ और आप किसी से कोई चीज़ नहीं मांगते थे| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1643) و النسائی (5 / 96 ح 2591)

١٨٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: دَعَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَشْتَرِطُ عَلَيَّ: «أَنْ لَا تَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «وَلَا سَوْطَكَ إِنْ سَقَطَ مِنْكَ حَتَّى تنزل إِلَيْهِ فتأخذه» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

1858. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे बुलाया जबकि आप मुझ से शर्त काइम कर रहे थे के तुमने लोगों से किसी चीज़ के बारे में सवाल नहीं करना,‘‘ मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम्हारा कोड़ा गिर जाए तो उस का सवाल भी नहीं करना हत्ता कि तुम नीचे उतर कर खुद इसे पकड़ो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (5 / 181 ح [21573] * ابن لھیعة ضعیف و للحدیث شاھد ضعیف عند احمد (5 / 172) و حدیث مسلم (1043)، (2403) یغنی عنه



بَاب الْإِنْفَاق وكراهية الْإِمْسَاك • सखावत की फ़ज़ीलत और बखील की मज़म्मत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٨٥٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كَانَ لِي مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا لَسَرَّنِي أَنْ لَا يَمُرَّ عَلَيَّ ثَلَاثُ لَيَالٍ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيْءٌ إِلَّا شَيْءٌ أَرْصُدُهُ لِدَيْنٍ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1859. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर ओहद पहाड़ जितना सोना मेरे पास हो तो मुझे ख़ुशी होगी के तीन दिन के बाद उस में से कुछ भी मेरे पास बाकी न बचे बजुज़ उस के जिसे में क़र्ज़ की अदाइगी के लिए रखलूँ”| (बुखारी)

رواه البخاری (2389)

١٨٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ يَوْمٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيهِ إِلَّا مَلَكَانِ يَنْزِلَانِ فَيَقُولُ أَحَدُهُمَا: اللَّهُمَّ أطع مُنْفِقًا خَلَفًا وَيَقُولُ الْآخَرُ: اللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تلفا "

1860. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर रोज़ सुबह के वक़्त दो फ़रिश्ते आसमान से नाज़िल होते हैं तो उनमें से एक कहता है, अल्लाह खर्च करने वाले को बदला अता फरमा जबकि दूसरा कहता है, अल्लाह बखील को तबाही से दो चार कर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1442) و مسلم (57 / 1010)، (2336)

١٨٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْفِقِي وَلَا تُحْصِي فَيُحْصِيَ اللَّهُ عَلَيْكِ وَلَا تُوعِي فَيُوعِيَ اللَّهُ عَلَيْكِ ارْضَخِي مَا اسْتَطَعْتِ»

1861. अस्मा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खर्च कर लेकिन शुमार न कर वरना अल्लाह तुझे भी गिन गिन कर देगा (माल को) रोक कर न रख वरना अल्लाह तुझ से रोक लेगा और जितना हो सके अता करती रहो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2591) و مسلم (88 / 1029)، (2375)

١٨٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَنْفِقْ يَا ابْن آدم أنْفق عَلَيْك "

1862. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है, इब्ने आदम खर्च कर में तुझ पर खर्च करूँगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5352) و مسلم (36 / 993)، (2308)

١٨٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا ابْنَ آدَمَ إِنْ تَبْذُلِ ص:٥٨ الْفَضْلَ خَيْرٌ لَكَ وَإِنْ تُمْسِكْهُ شَرٌّ لَكَ وَلَا تُلَامُ عَلَى كَفَافٍ وَابْدَأْ بِمن تعول» . رَوَاهُ مُسلم

1863. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इब्ने आदम अगर तो ज़ईदाज़ ज़ुरुरियात खर्च कर दे तो वह तेरे लिए बेहतर है और अगर तो उसे रोक रखे तो वह तेरे लिए बुरा है, लेकिन ज़रूरत के मुताबिक रख लेने पर तुझ पर कोई मलामत नहीं, और अपने ज़ेरे किफ़ालत लोगों पर पहले खर्च कर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (97 / 1036)، (2388)

١٨٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُنَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ قَدِ اضْطُرَّتْ أَيْدِيهِمَا إِلَى ثُدُيِّهِمَا وَتَرَاقِيهِمَا فَجَعَلَ الْمُتَصَدِّقُ كُلَّمَا تَصَدَّقَ بِصَدقَة انبسطت عَنهُ الْبَخِيلُ كُلَّمَا هَمَّ بِصَدَقَةٍ قَلَصَتْ وَأَخَذَتْ كُلُّ حَلقَة بمكانها»

1864. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बखील और सदका करने वाले की मिसाल इन दो आदमियों कि सी मिसाल है, जिन पर लोहे की ज़िराहे है और उन के हाथ उन के सीने और पसली तक बंधे हुए है, जब सदका करने वाला सदका करता है तो वह ज़िराह कुशादा होती चली जाती है और जब बखील सदका करने का इरादा करता है तो वह तंगी व जाती है और हर कड़ी अपने जगह पर जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1443) و مسلم (75 / 1021)، (2359)

١٨٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " اتَّقُوا الظُّلْمَ فَإِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاتَّقُوا الشُّحَّ فَإِنَّ الشُّحَّ أَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ: حَمَلَهُمْ عَلَى أَنْ سَفَكُوا دِمَاءَهُمْ وَاسْتَحَلُّوا مَحَارِمَهُمْ ". رَوَاهُ مُسلم

1865. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़ुल्म से बचो क्योंकि ज़ुल्म रोज़ ए कियामत अंधेरो का बाईस होगा और मज़ीद की हरस बुखल से बचो, क्योंकि उस ने तुम से पहले लोगों को हलाक किया और बाहम क़त्ल गारत करने और महारिम को हलाल करने पर उन्हें अमादा किया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (56 / 2578)، (6576)

١٨٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تصدقوا فَإِنَّهُ يَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ يَمْشِي الرَّجُلُ بِصَدَقَتِهِ فَلَا يَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهَا يَقُولُ الرَّجُلُ: لَوْ جِئْت بهَا بِالْأَمْسِ لَقَبِلْتُهَا فَأَمَّا الْيَوْمَ فَلَا حَاجَةَ لِي بهَا "

1866. हारिस बिन वहब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सदका किया करो क्योंकि तुम पर ऐसा वक़्त भी आएगा के आदमी अपना सदका लिए फिरेगा, लेकिन वह ऐसा शख़्स नहीं पाएगा जो इसे कबूल कर ले, आदमी जिसके पास वह जाएगा कहेगा अगर तुम कल इसे ले आते तो में उसे कबूल कर लेता, जबकि आज मुझे उसकी कोई ज़रूरत नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1411) و مسلم (58 / 1011)، (2337)

١٨٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَعْظَمُ أَجْرًا؟ قَالَ: " أَنْ تَصَدَّق وَأَنْتَ صَحِيحٌ شَحِيحٌ تَخْشَى الْفَقْرَ وَتَأْمُلُ الْغِنَى وَلَا تُمْهِلَ حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ قُلْتَ: لِفُلَانٍ كَذَا وَلِفُلَانٍ كَذَا وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ "

1867. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अज्र व सवाब के लिहाज़ से कौन सा सदका सबसे बेहतर है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो सदका जब तू तंदुरस्ती में करे जबकि माल की हरस तुम पर ग़ालिब हो और तुझे फकीरी का अंदेशा भी हो और तवंगरी का ताअम भी और सदका करने में देर न कर हत्ता कि जब सांस हलक तक पहुँच जाए और तो कहे इतना माल फलां के लिए और इतना फलां के लिए जबकि वह तो (खुद) फलां का हो चूका”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1419) و مسلم (92 / 1032)، (2382)

١٨٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: انْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ جَالِسٌ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ فَلَمَّا رَآنِي قَالَ: «هُمُ الْأَخْسَرُونَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ» فَقُلْتُ: فَدَاكَ أَبِي وَأُمِّي مَنْ هُمْ؟ قَالَ: " هُمُ الْأَكْثَرُونَ أَمْوَالًا إِلَّا مَنْ قَالَ: هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا مِنْ بَين يَدَيْهِ وَمن خَلفه وعني مينه وَعَن شِمَاله وَقَلِيل مَا هم "

1868. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, जबकि आप काबा के साए तले तशरीफ़ फरमा थे, जब आप ने मुझे देखा तो फ़रमाया: “रब काबा की क़सम वह नुकसान उठाने वाले हैं,‘‘ मैंने अर्ज़ किया: मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, वह कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो ज़्यादा माल वाले लेकिन वह लोग जिन्हों ने कहा इस तरफ भी इस तरफ भी और इस तरफ भी अपने आगे अपने पीछे और अपने दाएँ अपने बाएँ जबकि ऐसे लोग कम है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6638) و مسلم (30 / 990)، (2300)

بَاب الْإِنْفَاق وكراهية الْإِمْسَاك • सखावत की फ़ज़ीलत और बखील की मज़म्मत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٨٦٩ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السَّخِيُّ قَرِيبٌ مِنَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِنَ الْجَنَّةِ قَرِيبٌ مِنَ النَّاسِ بَعِيدٌ مِنَ النَّارِ. وَالْبَخِيلُ بَعِيدٌ مِنَ اللَّهِ بَعِيدٌ مِنَ الْجَنَّةِ بَعِيدٌ مِنَ النَّاسِ قَرِيبٌ مِنَ النَّارِ. وَلَجَاهِلٌ سَخِيٌّ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ مِنْ عَابِدٍ بَخِيلٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1869. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सखी शख़्स अल्लाह के करीब है, जन्नत के करीब और लोगों के करीब है और जहन्नम से दूर है, जबकि बखील शख़्स अल्लाह से दूर जन्नत से दूर लोगों से दूर और जहन्नम के करीब है और जाहिल सखी अल्लाह को आबिद बखील से ज़्यादा पसंद है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1961 وقال : غریب) * فیه سعید بن محمد الوراق ؛ ضعیف و للحدیث شواهد ضعیفة جداً

١٨٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ يَتَصَدَّقَ الْمَرْءُ فِي حَيَاتِهِ بِدِرْهَمٍ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَتَصَدَّقَ بِمِائَةٍ عِنْدَ مَوته» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1870. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर कोई शख़्स अपनी जिंदगी में एक दिरहम सदका करता है तो यह उस के लिए करीब अल मर्ग सौ दिरहम सदका करने से बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2866) * شرجیل بن سعد : ضعیف ، ضعفه الجمهور و اختلط ایضًا

١٨٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الَّذِي يَتَصَدَّقُ عِنْدَ مَوْتِهِ أَوْ يُعْتِقُ كَالَّذِي يُهْدِي إِذَا شَبِعَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ والدارمي وَالتِّرْمِذِيّ وَصحح

1871. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो शख़्स जो अपने मौत के करीब सदका करता है, या गुलाम आज़ाद करता है, तो वह इस शख़्स की तरह है जो शक्म सैर होने के बाद हदिया करे”, अहमद नसई, दारमी और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 448 ح 28083) و النسائی (6 / 238 ح 3644) و الدارمی (2 / 413 ح 3229) و الترمذی (2123)

١٨٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " خصلتان لَا تجتمعان فِي مُؤْمِنٍ:

الْبُخْلُ وَسُوءُ الْخُلُقِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

1872. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बुखल और बद इखलाकी जैसी खसलते किसी मोमिन में जमा नहीं हो सकती”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1962 وقال : غريب) * صدقة بن موسى : ضعيف ، ضعفه الجمهور

١٨٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ خِبٌّ وَلَا بَخِيلٌ وَلَا منان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1873. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फसाद लड़ाई पैदा कर ने वाला बखील और इहसान जतलाने वाला शख़्स जन्नत में दाखिल नहीं होगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1963 وقال : حسن غريب) * صدقة بن موسى و فرقد بن يعقوب السبخى ضعيفان

١٨٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «شَرُّ مَا فِي الرَّجُلِ شُحٌّ هَالِعٌ وَجُبْنٌ خَالِعٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «لَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيمَانُ» فِي كِتَابِ الْجِهَاد إِن شَاءَ الله تَعَالَى

1874. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी में इन्तिहाई हरस और इन्तिहाई बुज़दिली जैसी खसलते बुरी है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2511) 0 حديث ’’ لا يجتمع الشح و الايمان ‘‘ ياتى (3828)

बَاب الْإِنْفَاق وكراهية الْإِمْسَاك •	सखावत की फ़ज़ीलत और बखील की मज़म्मत का बयान
الْفَصْل الثَّالِث •	तीसरी फस्ल

١٨٧٥ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ بَعْضُ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قُلْنَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّنَا أَسْرَعُ بِكَ لُحُوقًا؟ قَالَ: " أَطْوَلُكُنَّ يَدًا فَأَخَذُوا قَصَبَةً يَذْرَعُونَهَا فَكَانَت سَوْدَة أَطْوَلهنَّ يدا فَعلمنَا بعد أَنما كَانَت طُولُ يَدِهَا الصَّدَقَةَ وَكَانَتْ أَسْرَعَنَا لُحُوقًا بِهِ زَيْنَبُ وَكَانَتْ تُحِبُّ الصَّدَقَةَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أَسْرَعكُنَّ لُحُوقا بِي أَطْوَلكُنَّ يَدًا» . قَالَتْ: فَكَانَتْ أَطْوَلَنَا يَدًا زَيْنَبُ؟ لِأَنَّهَا كَانَت تعْمل بِيَدِهَا وَتَتَصَدَّق

1875. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ की बाज़ अज़वाज ए मूतहरात ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, हम में से सबसे पहले आप से कौन मिलेगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से जिसके हाथ ज़्यादा दराज़ है,‘‘ वह लकड़ी लेकर अपने बाज़ जिन अपने लगी तो सवदा रदियल्लाहु अन्हा के हाथ उनमें से ज़्यादा दराज़ थे, फिर हमें बाद में पता चला के उन के हाथ लम्बी होने से मुराद सदका था और हम में से जैनब रदियल्लाहु अन्हु सबसे पहले आप से जा मिली और वह सदका करना पसंद किया करती थी| बुखारी और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में लम्बी हाथ वाली मुझे सबसे पहले मिलेगी,‘‘ वह बयान करती हैं, वह यह जानने के लिए उनमें से किसी के हाथ दराज़ है वह बाहम हाथ नापा करती थी, पस जैनब रदियल्लाहु अन्हु के हम में से हाथ ज़्यादा लम्बे थे क्योंकि वह अपने हाथ से काम किया करती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1420) و مسلم (101 / 2452)، (6316)

١٨٧٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " قَالَ رَجُلٌ: لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدِ سَارِقٍ فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ تصدق عَلَى سَارِقٍ فَقَالَ اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلَى سَارِقٍ لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدَقَةٍ فَخَرَجَ بِصَدَقَتِهِ فَوَضَعَهَا فِي يَدي زَانِيَةٍ فَأَصْبَحُوا يَتَحَدَّثُونَ تُصُدِّقَ اللَّيْلَةَ عَلَى زَانِيَةٍ فَقَالَ اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلَى زَانِيَةٍ لَأَتَصَدَّقَنَّ بِصَدقَة فَخرج بِصَدَقَتِهِ فوضعها فِي ص:٥٨ يَدي غَنِي فَأَصْبحُوا يتحدثون تصدق عَلَى غَنِيٍّ فَقَالَ اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلَى سَارِق وعَلى زَانِيَة وعَلى غَنِي فَأُتِيَ فَقِيلَ لَهُ أَمَّا صَدَقَتُكَ عَلَى سَارِقٍ فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعِفَّ عَنْ سَرِقَتِهِ وَأَمَّا الزَّانِيَةُ فَلَعَلَّهَا أَنْ تَسْتَعِفَّ عَنْ زِنَاهَا وَأَمَّا الْغَنِيُّ فَلَعَلَّهُ يَعْتَبِرُ فَيُنْفِقَ مِمَّا أَعْطَاهُ اللَّهُ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَلَفظه للْبُخَارِيّ

1876. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी आदमी ने कहा में सदका करूँगा, वह अपना सदका लेकर बाहर निकला तो उस ने इसे किसी चोर के हाथ में थमा दिया, सुबह हुई तो बातें होने लगी के रात किसी चोर पर सदका कर दिया गया, तो इस आदमी ने कहा ऐ अल्लाह! हर किस्म की हम्द तेरे ही लिए है, किसी चोर पर (सदका कर दिया गया) , मैं ज़रूर सदका करूँगा वह सदका लेकर निकला और इसे किसी ज़ानिया के हाथ पर रख दिया सुबह हुई तो बाते होने लगी के रात किसी ज़ानिया पर सदका कर दिया गया फिर इस आदमी ने कहा ऐ अल्लाह! हर किस्म की हम्द तेरे ही लिए है, (मैंने) किसी ज़ानिया पर (सदका कर दिया) , मैं ज़रूर सदका करूँगा वह सदका लेकर निकला और और किसी माल दार शख़्स के हाथ में दे दिया, सुबह हुई तो लोग बड़े ताज्जुब से बाते करने लगे के रात किसी माल दार पर सदका कर दिया गया, उस ने कहा ऐ अल्लाह! हर किस्म की हम्द तेरे ही लिए है, (मैंने) चोरी ज़ानिया और माल दार शख़्स पर (सदका कर दिया), इसे ख्वाब में बताया गया तुमने जो चोर पर सदका किया तो मुमकिन है के वह चोरी करने से बाज़ आ जाए, रही ज़ानिया तो मुमकिन है के वह ज़िनाकारी से बाज़ आ जाए और रहा माल दार शख़्स तो शायद के वह इबरत हासिल करे और अल्लाह के अता करदा माल में से खर्च करे”, बुखारी, मुस्लिम, और अल्फाज़ हदीस इमाम बुखारी के है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1421) و مسلم (78 / 1022)، (2362)

١٨٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «بَيْنَا رَجُلٌ بِفَلَاةٍ مِنَ الْأَرْضِ فَسَمِعَ صَوْتًا فِي سَحَابَةٍ اسْقِ حَدِيقَةَ فُلَانٍ فَتَنَحَّى ذَلِكَ السَّحَابُ فَأَفْرَغَ مَاءَهُ فِي حَرَّةٍ فَإِذَا شَرْجَةٌ مِنْ تِلْكَ الشِّرَاجِ قَدِ اسْتَوْعَبَتْ ذَلِكَ الْمَاءَ كُلَّهُ فَتَتَبَّعَ الْمَاءَ فَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ فِي حَدِيقَتِهِ يُحَوِّلُ الْمَاءَ بِمِسْحَاتِهِ فَقَالَ لَهُ يَا عَبْدَ اللَّهِ مَا اسْمُكَ فَقَالَ لَهُ يَا عَبْدَ اللَّهِ لِمَ تَسْأَلُنِي عَنِ اسْمِي فَقَالَ إِنِّي سَمِعْتُ صَوْتًا فِي السَّحَابِ الَّذِي هَذَا مَاؤُهُ يَقُول اسْقِ حَدِيقَةَ فُلَانٍ لِاسْمِكَ فَمَا تَصْنَعُ فِيهَا قَالَ أما إِذْ قُلْتَ هَذَا فَإِنِّي أَنْظُرُ إِلَى مَا يَخْرُجُ مِنْهَا فَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثِهِ وَآكُلُ أَنَا وَعِيَالِي ثُلُثًا وأرد فِيهَا ثلثه» . رَوَاهُ مُسلم

1877. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस असना में एक आदमी सहरा मैं था के उस ने बादलो में एक आवाज़ सुनी के फलां शख़्स के बाग़ को सेराब करो, वह बादल (वहां से) अलग हुआ और उस ने अपना पानी संगरेज़ो वाली ज़मीन पर बरसाया तो उन नालियों में से एक नाली ने वह सारा पानी समेट लिया, फिर वह आदमी पानी के पीछे पीछे गया तो देखा के एक आदमी अपने बाग़ में खड़ा अपने किस्सी के ज़रिए पानी के (बहाव के) रुख बदल रहा है, इस आदमी ने उस से दरियाफ्त किया, अल्लाह के बंदे तुम्हारा नाम किया है, उस ने कहा फलां उस ने बिलकुल वही नाम बताया जो उस ने बादलो में सुना था, इस आदमी ने कहा अल्लाह के बंदे तुमने मेरा नाम क्यों पूछा है? उस ने कहा मैंने इस बादल में जिस का यह पानी है, एक आवाज़ सुनी के वह तुम्हारा नाम लेकर कह रहा था, फलां शख़्स के बाग़ को सेराब करो, तुम उस में क्या करते हो? उस ने कहा: जो तुमने यह कह दिया, तो अब सुनो में उसकी पैदावार का तिहाई हिस्सा सदका करता हूँ, तिहाई हिस्सा में और मेरे अहल व अयाल खाते है और उस का तिहाई हिस्सा इस बाग़ पर खर्च कर देता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (45 / 2984)، (7473)

١٨٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ ثَلَاثَة فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ أَبْرَصَ وَأَقْرَعَ وَأَعْمَى فَأَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَبْتَلِيَهُمْ فَبَعَثَ إِلَيْهِمْ مَلَكًا فَأَتَى الْأَبْرَص فَقَالَ أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ لَوْنٌ حَسَنٌ وَجِلْدٌ حَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي الَّذِي قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ» قَالَ: «فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ قَذَرُهُ وَأُعْطِيَ لَوْنًا حَسَنًا وَجِلْدًا حَسَنًا قَالَ فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الْإِبِلُ - أَوْ قَالَ الْبَقر شكّ إِسْحَق - إِلَّا أَنَّ الْأَبْرَصَ أَوِ الْأَقْرَعَ قَالَ أَحَدُهُمَا الْإِبِلُ وَقَالَ الْآخَرُ الْبَقَرُ قَالَ ص:٥٨ فَأُعْطِيَ نَاقَةً عُشَرَاءَ فَقَالَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِيهَا» قَالَ: «فَأتى الْأَقْرَع فَقَالَ أَي شَيْء أحب إِلَيْك قَالَ شَعَرٌ حَسَنٌ وَيَذْهَبُ عَنِّي هَذَا الَّذِي قَدْ قَذِرَنِي النَّاسُ» . قَالَ: " فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ وَأُعْطِيَ شَعَرًا حَسَنًا قَالَ فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الْبَقَرُ فَأُعْطِيَ بَقَرَةً حَامِلًا قَالَ: «بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِيهَا» قَالَ: «فَأَتَى الْأَعْمَى فَقَالَ أَيُّ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ أَنْ يَرُدَّ اللَّهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَأُبْصِرَ بِهِ النَّاسَ» . قَالَ: «فَمَسَحَهُ فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيْهِ بَصَرَهُ قَالَ فَأَيُّ الْمَالِ أَحَبُّ إِلَيْكَ قَالَ الْغَنَمُ فَأُعْطِيَ شَاة والدا فأنتج هَذَانِ وَولد هَذَا قَالَ فَكَانَ لِهَذَا وَادٍ مِنَ الْإِبِلِ وَلِهَذَا وَادٍ مِنَ الْبَقَرِ وَلِهَذَا وَادٍ مِنَ الْغَنَمِ» . قَالَ: «ثُمَّ إِنَّهُ أَتَى الْأَبْرَصَ فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِينٌ قَدِ انْقَطَعَتْ بِيَ الْحِبَالُ فِي سَفَرِي فَلَا بَلَاغَ لِيَ الْيَوْمَ إِلَّا بِاللَّهِ ثُمَّ بِكَ أَسْأَلُكَ بِالَّذِي أَعْطَاكَ اللَّوْنَ الْحسن وَالْجَلد الْحسن وَالْمَال بَعِيرًا أتبلغ عَلَيْهِ فِي سَفَرِي فَقَالَ الْحُقُوق كَثِيرَة فَقَالَ لَهُ كَأَنِّي أَعْرِفُكَ أَلَمْ تَكُنْ أَبْرَص يَقْذَرُكَ النَّاسُ فَقِيرًا فَأَعْطَاكَ اللَّهُ مَالًا فَقَالَ إِنَّمَا وَرِثْتُ هَذَا الْمَالَ كَابِرًا عَنْ كَابِرٍ فَقَالَ إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللَّهُ إِلَى مَا كُنْتَ» . قَالَ: «وَأَتَى الْأَقْرَعَ فِي صُورَتِهِ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَ لِهَذَا وَرَدَّ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا رَدَّ عَلَى هَذَا فَقَالَ إِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَصَيَّرَكَ اللَّهُ إِلَى مَا كُنْتَ» . قَالَ: «وَأَتَى الْأَعْمَى فِي صُورَتِهِ وَهَيْئَتِهِ فَقَالَ رَجُلٌ مِسْكِينٌ وَابْنُ سَبِيلٍ انْقَطَعَتْ بِيَ الْحِبَالُ

فِي سَفَرِي فَلَا بَلَاغَ لِيَ الْيَوْمَ إِلَّا بِاللَّهِ ثُمَّ بِكَ أَسْأَلُكَ بِالَّذِي رَدَّ عَلَيْكَ بَصَرَكَ شَاةً أَتَبَلَّغُ بِهَا فِي سَفَرِي فَقَالَ قَدْ كُنْتُ أَعْمَى فَرَدَّ اللَّهُ إِلَيَّ بَصَرِي فَخُذْ مَا شِئْتَ وَدَعْ مَا شِئْتَ فَوَاللَّهِ لَا أجهدك ص:٥٨ الْيَوْم شَيْئًا أَخَذْتَهُ لِلَّهِ فَقَالَ أَمْسِكْ مَالَكَ فَإِنَّمَا ابْتُلِيتُمْ فقد رَضِي عَنْك وَسخط على صاحبيك»

1878. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बनी इसराइल के तीन आदमी थे, बरस में मुब्तिला शख़्स गंजा और अंधा अल्लाह ने उन्हें आज़माने का इरादा फ़रमाया, तो उनकी तरफ एक फ़रिश्ता भेजा, वह बरस के मरीज़ शख़्स के पास आया तो कहा तुम्हें कौन सी चीज़ ज़्यादा पसंद है? उस ने कहा अच्छा रंग और खुबसूरत जल्द और यह बीमारी मुझ से हटा दि जाए जिस की वजह से लोग मुझे ना पसंद करते हैं, रावी बयान करते हैं, उस ने उस पर हाथ फेरा तो उस का मर्ज़ जाता रहा और इसे बेहतरीन रंगत और बेहतरीन जल्द अता कर दी गई, इस फ़रिश्ते ने पूछा तुम्हें कौन सा माल ज़्यादा महबूब है? उस ने कहा ऊंट या उस ने कहा गाय”, इसहाक रावी को शक हुआ की बरस के मरीज़ और गंजे इन दोनों में से एक ने ऊंट कहा और दूसरे ने गाय कहा फ़रमाया: “इसे दस माह की हामिला ऊंटनी दे दी गई तो इस फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह इन के बारे में तुम्हें बरकत अता फरमाए”, रावी बयान करते हैं,: “फिर वह गंजे के पास गया तो उस ने कहा तुम्हें कौन सी चीज़ ज़्यादा पसंद है? उस ने कहा खुबसूरत ज़ुल्फे और मुझ से यह तकलीफ दूर कर दी जाए जिस की वजह से लोग मुझे ना पसंद करते हैं,'' रावी ने कहा: “उस ने उस पर हाथ फेरा तो वह तकलीफ जाती रही इसे खुबसूरत ज़ुल्फे अता कर दी गई, फिर उस ने पूछा तुम्हें कौन सा माल ज़्यादा महबूब है? उस ने कहा गाय इसे एक हामिला गाय दे दी गई और फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह उस में तुम्हें बरकत अता फरमाए, रावी ने कहा फिर वह नाबिने शख़्स के पास गया तो कहा तुम्हें कौन सी चीज़ ज़्यादा महबूब है? उस ने कहा अल्लाह मुझे मेरी बसारत लौटा दे, ताकि में उस के ज़रिए लोगों को देख सकू,'' रावी ने कहा: “उस ने उस पर हाथ फेरा तो अल्लाह ने इसे उसकी बसारत लौटा दी, फिर उस ने पूछा तुम्हें कौन सा माल ज़्यादा पसंद है? उस ने कहा बकरिया, फिर इसे हामिला बकरी दे दी गई फिर ऊंट, गाय और बकरी ने बच्चे दिए तो इस (बरस वाले) के यहाँ वादी भर ऊंट हो गए, उस के वहां वादी भर गाय हो गई और इस (नाबिने) के यहाँ वादी भर बकरिया हो गई”, रावी बयान करते हैं,: “फिर वह (फ़रिश्ता) इसी सूरत व हय्यत में बरस में मुब्तिला शख़्स के पास आया तो उस ने कहा मिस्किन आदमी हूँ, दौरान ए सफ़र असबाब ख़तम हो चुके हैं, आज मुझे सिर्फ अल्लाह का सहारा है या फिर मैं तुम से उस ज़ात के वास्ते से सवाल करता हूँ जिस ने तुझे बेहतरीन रंगत और बेहतरीन जल्द और माल अता किया की तुम मुझे एक ऊंट दे दो, जिसके ज़रिए में अपने मंजिल पर पहुँच जाऊंगा, इस शख़्स ने कहा हुकुक बहोत ज़्यादा हैं (किस किस को दू) , इस फ़रिश्ते ने कहा ऐसे लगता है की मैं तुम्हें पहचानता हूँ क्या तुम बरस में मुब्तिला नहीं थे? लोग तुझे ना पसंद करते थे और तुम फ़क़ीर थे, अल्लाह ने तुम्हें माल अता किया, इस शख़्स ने कहा यह माल तो मुझे आबाअ अजदाद से मिला है, इस फ़रिश्ते ने कहा अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें पहले की तरह कर देगा,'' रावी बयान करते हैं,: “फिर वह अपनी इसी सूरत में गंजे शख़्स के पास गया, तो उस ने इसे भी वही बात की है जो उस ने इस बरस वाले से कही थी और उस ने वैसे ही जवाब दिया, जैसे इस शख़्स ने जवाब दिया था, फ़रिश्ते ने कहा अगर तुम झूठे हो तो अल्लाह तुम्हें फिर पहले की तरह कर दे,'' रावी बयान करते हैं,: “फिर वह अपनी इसी सूरत व हय्यत में नाबिने शख़्स के पास गया, तो कहा मिस्किन आदमी और मुसाफ़िर हूँ मेरे दौरान ए सफ़र असबाब मुन्कतेअ हो गए है, आज मंजिल तक पहुँचने के लिए मुझे अल्लाह का सहारा है, और फिर मैं तुम से उस ज़ात का वसिले बना कर सवाल करता हूँ, जिस ने तुम्हारी बिनाई लौटाई की तुम एक बकरी दे दो जिसके ज़रिए में अपने मंजिल पर पहुँच जाऊंगा इस शख़्स ने कहा यक़ीनन में एक नाबीना

शख़्स था, अल्लाह ने मेरी बिनाई लौटा दी, जो चाहो ले जाओ और जो चाहो छोड़ जाओ, अल्लाह की क़सम! आज जो कुछ तुम अल्लाह की खातिर उठाओगे उस पर में तुम पर कोई सख्ती नहीं करूँगा, इस (फ़रिश्ते) ने कहा अपना माल अपने पास रखो, तुम्हारी तो आज़माइश की गई थी, अल्लाह तआला तुम पर राज़ी हो गया और तेरे दो साथियो पर नाराज़ हो गया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3464) و مسلم (6 / 2961)، (7431)

١٨٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم بجيد قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الْمِسْكِينَ لَيَقِفُ عَلَى بَابِي حَتَّى أَسْتَحْيِيَ فَلَا أَجِدُ فِي بَيْتِي مَا أَدْفَعُ فِي يَدِهِ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ادْفَعِي فِي يَدِهِ وَلَوْ ظِلْفًا مُحْرَقًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1879. उम्म बजिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मिस्किन मेरे दरवाज़े पर खड़ा हो जाता है, हत्ता कि मुझे हया आती है की मैं उस के हाथ पर रखने के लिए घर में कोई चीज़ नहीं पाती तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस के हाथ पर कुछ न कुछ रख दिया करो ख्वाह जला हुआ खुर ही क्यों न हो", अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: "ये हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (6 / 382383 ح 2768927691) و ابوداؤد (1667) و الترمذی (665)

١٨٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مولى لعُثْمَان رَضِي الله عَنهُ قَالَ: أَهْدِيَ لِأُمِّ سَلَمَةَ بُضْعَةٌ مِنْ لَحْمٍ وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْجِبُهُ اللَّحْمُ فَقَالَتْ لِلْخَادِمِ: ضَعِيهِ فِي الْبَيْتِ لَعَلَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُهُ فَوَضَعَتْهُ فِي كَوَّةِ الْبَيْتِ. وَجَاءَ سَائِلٌ فَقَامَ عَلَى الْبَابِ فَقَالَ: تَصَدَّقُوا بَارَكَ اللَّهُ فِيكُمْ. فَقَالُوا: بَارَكَ اللَّهُ فِيكَ. فَذَهَبَ السَّائِلُ فَدَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا أُمَّ سَلَمَةَ هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ أَطْعَمُهُ؟» . فَقَالَتْ: نَعَمْ. قَالَتْ لِلْخَادِمِ: اذْهَبِي فَأْتِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَلِكِ اللَّحْمِ. فَذَهَبَتْ فَلَمْ تَجِدْ فِي الْكَوَّةِ إِلَّا قِطْعَةَ مَرْوَةٍ فَقَالَ النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «فَإِن ذَلِك اللَّحْمَ عَادَ مَرْوَةً لِمَا لَمْ تُعْطُوهُ السَّائِلَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي دَلَائِل النُّبُوَّة

1880. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम बयान करते हैं, उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा को गोश्त का एक टुकड़ा बतौर हदिया पेश किया गया, जबकि नबी ﷺ को गोश्त पसंद था तो उन्होंने खादिम से फ़रमाया इसे घर में रखो, शायद के नबी ﷺ इसे तनावुल फरमाए, उस ने इसे घर के ताक में रखा और इतने में साइल दरवाज़े पर कर खड़ा हो गया और कहने लगा अल्लाह तुम्हें बरकत अता फरमाए सदका करो, अहले खाना ने भी कहा अल्लाह तुम्हें बरकत अता फरमाए (यानी तुम्हारा भला हो) , वह साइल चला गया तो नबी ﷺ तशरीफ़ ले आए आप ने फ़रमाया: "उम्म सलमा क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है के में उसे खालूँ ?" उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! और खादिम से फ़रमाया जाओ और रसूलुल्लाह ﷺ के लिए वह गोश्त लाओ, वह गई तो वहां ताक में (गोश्त के बजाए) सिर्फ एक सफ़ेद पत्थर पड़ा हुआ था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "वो गोश्त सफ़ेद पत्थर बन गया तुमने इसे साइल को क्यों न दिया ?"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی دلائل النبوة (6 / 300) * مولی لعثمان : مجهول ، و الجریری اختلط و علی بن عاصم : ضعیف ، ومن دونه نظر وله شاهد ضعیف جدًا عند البیهقی فی الدلائل (6 / 297) فیه خارجة بن مصعب : متروک و حدیث (1860) یغنی عنه

١٨٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس رَضِي الله عَنْهُمَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِشَرِّ النَّاسِ مَنْزِلًا؟ قِيلَ: نَعَمْ قَالَ: الَّذِي يُسْأَلُ بِاللَّهِ وَلَا يُعْطِي بِهِ ". رَوَاهُ أَحْمد

1881. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें मक़ाम व मर्तबा के लिहाज़ से बदतरीन शख़्स के बारे में बताऊँ ?” अर्ज़ किया गया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस से अल्लाह के नाम पर सवाल किया जाए और वह न दे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (319 ح 29312932) [و الترمذی (1652 وقال : حسن غریب) و النسائی (5 / 8384 ح 2570) وله شاھد عند احمد (1 / 226 ، 311)]

١٨٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ عَلَى عُثْمَانَ فَأَذِنَ لَهُ وَبِيَدِهِ عَصَاهُ فَقَالَ عُثْمَانُ: يَا كَعْبُ إِنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ تُوُفِّيَ وَتَرَكَ مَالًا فَمَا تَرَى فِيهِ؟ فَقَالَ: إِنْ ص:٥٩ كَانَ يَصِلُ فِيهِ حَقَّ اللَّهِ فَلَا بَأْسَ عَلَيْهِ. فَرَفَعَ أَبُو ذَرٍّ عَصَاهُ فَضَرَبَ كَعْبًا وَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا أُحِبُّ لَوْ أَنَّ لِي هَذَا الْجَبَلَ ذَهَبًا أُنْفِقُهُ وَيُتَقَبَّلُ مِنِّي أَذَرُ خَلْفِي مِنْهُ سِتَّ أَوَاقِيَّ» . أَنْشُدُكَ بِاللَّهِ يَا عُثْمَانُ أَسَمِعْتَهُ؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. قَالَ: نعم. رَوَاهُ أَحْمد

1882. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से अन्दर जाने की इजाज़त तलब की तो उन्होंने उन्हें इजाज़त दे दि और उन के हाथ में एक लाठी थी तो उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: काब अब्दुल रहमान रदियल्लाहु अन्हु वफात पा गए और उन्होंने माल छोड़ा है, इस बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? उन्होंने कहा: अगर तो वह इस बारे में अल्लाह का हक़ अदा किया करते थे, तो फिर कोई हरज नहीं, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने लाठी उठाई और काब को दे मारी, और कहा मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैं यह पसंद नहीं करता के अगर मेरे पास इस पहाड़ बराबर सोना हो और मैं उसे खर्च कर दू वह मुझ से कबूल भी हो जाए और फिर मैं अपने पीछे छे उकिय्यह छोड़ जाऊ”, उस्मान में तुम्हें अल्लाह की क़सम! देता हूँ क्या आप ने इसे सुना है? तीन मर्तबा कहा उन्होंने ने फ़रमाया: हाँ, | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (1 / 63 ح 453) * فیه ابن لھیعة ضعیف من جھة اختلاطه و صرح بالسماع و لاصل الحدیث شواھد عند احمد (5 / 148 ، 160 ، 176) و ابن ماجه (4132) و البخاری (7228 ، 2388) و مسلم (94)، (2302) و غیرھم فالمر فوع حسن بالشواھد بغیر ھذا السیاق

١٨٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: صَلَّيْتُ وَرَاءَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمَدِينَةِ الْعَصْرَ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَامَ مُسْرِعًا فَتَخَطَّى رِقَابَ النَّاسِ إِلَى بَعْضِ حُجَرِ نِسَائِهِ فَفَزِعَ النَّاسُ مِنْ سُرْعَتِهِ فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ فَرَأَى أَنَّهُمْ قَدْ عَجِبُوا مِنْ سُرْعَتِهِ قَالَ: «ذَكَرْتُ شَيْئًا مِنْ تِبْرٍ عِنْدَنَا فَكَرِهْتُ أَنْ يَحْبِسَنِي فَأَمَرْتُ بِقِسْمَتِهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ قَالَ: «كُنْتُ خَلَّفْتُ فِي الْبَيْتِ تِبْرًا مِنَ الصَّدَقَةِ فَكَرِهْتُ أَنْ أبيته»

1883. उक्बा बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने मदीना में नबी ﷺ के पीछे नमाज़ ए असर अदा की तो आप सलाम फेर कर खड़े हुए और तेज़ी के साथ लोगों की गरदने फलांगते हुए अपने बाज़ अज़्वाज ए मूतहरात के हुजरों की तरफ तशरीफ़ ले गए, सहाबा किराम आप की इस तेज़ी और जल्दी से परेशान हो गए,

जब आप उन के पास वापस तशरीफ़ लाए और आप ने देखा के उन्होंने आप की तेज़ी पर ताज्जुब किया है, आप ने फ़रमाया: “मुझे सोने की एक दल्ली टुकड़ा याद गई, जो हमारे पास थी, मुझे नागवार गुज़रा के वह मुझे अल्लाह की याद से रोके रखे, लिहाज़ा मैंने उसकी तकसीम का हुक्म फरमा दिया”, बुखारी, और सहीह बुखारी की दूसरी रिवायत में है फ़रमाया: “मैंने सदका की सोने की दल्ली घर छोड़ी थी मैंने इसे रातभर घर रखन ना पसंद किया| (बुखारी)

رواه البخارى (851 ، 1430)

١٨٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عِنْدِي فِي مَرضه سِتَّةُ دَنَانِيرَ أَوْ سَبْعَةٌ فَأَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أُفَرِّقَهَا فَشَغَلَنِي وَجَعُ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ثُمَّ سَأَلَنِي عَنْهَا: «مَا فَعَلَتِ السِّتَّةُ أَوِ السَّبْعَة؟» قلت: لَا وَالله لقد كَانَ شَغَلَنِي وَجَعُكَ فَدَعَا بِهَا ثُمَّ وَضَعَهَا فِي كَفِّهِ فَقَالَ: «مَا ظَنُّ نَبِيِّ اللَّهِ لَوْ لَقِيَ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ وَهَذِهِ عِنْدَهُ؟» . رَوَاهُ أَحْمد

1884. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने कहा: जब रसूलुल्लाह ﷺ बीमार हुए तो मेरे पास आप के छह या सात दीनार थे रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं उन्हें तकसीम कर दूँ, लेकिन नबी ﷺ की तकलीफ ने मुझे मसरूफ रखा, आप ने उन के मुतल्लिक फिर मुझ से पूछा: “आप ने उन छह या सात दिनारो का क्या किया ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह की क़सम! आप की तकलीफ ने मुझे मसरूफ कर दिया, उन्होंने वह मंगवाए फिर उन्हें अपने हथेली में रखा फ़रमाया: “अल्लाह का नबी क्या गुमान करे के वह अल्लाह अज्ज़वजल से मुलाकात करे और यह उस के पास हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 104 ح 25240) * موسى بن جبير : حسن الحديث كما حققته فى السراج المنير فى تحقيق تفسير ابن كثير ، ولم اكمل هذا الكتاب

١٨٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَى بِلَالٍ وَعِنْدَهُ صُبْرَةٌ مِنْ تَمْرٍ فَقَالَ: «مَا هَذَا يَا بِلَالُ؟» قَالَ: شَيْءٌ ادَّخَرْتُهُ لِغَدٍ. فَقَالَ: «أَمَا تَخْشَى أَنْ ص:٥٩ تَرَى لَهُ غَدًا بخارا فِي نَار جَهَنَّم يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْفِقْ بِلَالُ وَلَا تَخْشَ من ذِي الْعَرْش إقلالا»

1885. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ बिलाल रदियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ ले गए तो इस वक़्त खजूरो का एक ढेर उन के पास था, आप ने फ़रमाया: “बिलाल यह क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने कल के लिए कुछ ज़खीरा किया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम डरते नहीं के कल रोज़ ए कियामत तू उसे जहन्नम की आग देखेगा, बिलाल खर्च कर और अर्श वाली ज़ात से मुफलिसी का अंदेशा न कर”| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (1345 ، نسخة محققة : 1283) [و سنده حسن و فيه اختلاف كثير ، وله شواهد عند الطبرانى (1 / 340341) و غيره]

١٨٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السَّخَاءُ شَجَرَةٌ فِي

الْجَنَّةِ فَمَنْ كَانَ سَخِيًّا أَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْهَا فَلَمْ يَتْرُكْهُ الْغُصْنُ حَتَّى يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ. وَالشُّحُّ شَجَرَةٌ فِي النَّارِ فَمَنْ كَانَ شَحِيحًا أَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْهَا فَلَمْ يَتْرُكْهُ الْغُصْنُ حَتَّى يُدْخِلَهُ النَّارَ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

1886. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सखावत जन्नत में एक दरख्त है, पस जो शख़्स सखी होगा तो वह उसकी एक शाख को पकड़ लेगा, फिर शाख इसे नहीं छोड़ेगी हत्ता कि वह इसे जन्नत में ले जाएगी, जबकि बखील व तमअ जहन्नम का एक दरख्त है जो शख़्स बखील होगा तो वह उसकी एक शाख पकड़ लेगा और वह शाख इसे नहीं छोड़ेगी हत्ता कि इसे जहन्नम में ले जाएगी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10877 ، نسخة محققة : 10377) و ابن عدى فى الكامل (1 / 236) و ابن الجوزى فى الموضوعات (2 / 182) * فيه عبدالعزيز بن عمران : متروک ، و ابراهيم بن اسماعيل بن ابى حبيبة : ضعيف

١٨٨٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَادِرُوا بِالصَّدَقَةِ فَإِنَّ الْبَلَاءَ لَا يَتَخَطَّاهَا» . رَوَاهُ رَزِينٌ

1887. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सदका करने में जल्दी किया करो क्योंकि बला व मुसीबत उस से आगे नहीं पहुंच सकती"| (मुझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * و روى البيهقى (4 / 189) و ابن الجوزى فى الموضوعات (2 / 153) باسانيد ضعيفة جدًا عن مختار بن فلفل عن انس بن مالك به نحو المعنى ، و روى الطبرانى فى الاوسط (6 / 299 ح 5639) من حديث على رضى الله عنه نحوه و فيه عيسى بن عبدالله عن ابيه :متروک يروى عن ابيه اشياء موضوعة ، انظر لسان الميزان (4 / 461)

سदके की फ़ज़ीलत का बयान • بَاب فضل الصَّدَقَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٨٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ وَلَا يَقْبَلُ اللَّهُ إِلَّا الطَّيِّبَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِينِهِ ثُمَّ يُرَبِّيهَا لِصَاحِبِهَا كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُمْ فَلُوَّهُ حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ»

1888. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स हलाल कमाई से खजूर के बराबर सदका करता है, जबकि अल्लाह सिर्फ हलाल माल ही कबूल करता है तो अल्लाह इसे अपने दाएँ हाथ में कबूल फरमाता है, फिर इसे उस के मालिक के लिए इस तरह पढ़ाता है जिस तरह तुम में से कोई अपने घोड़े के बच्चे की परवरिश करता है, हत्ता कि वह पहाड़ की तरह हो जाती है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1410) و مسلم (63 / 1014)، (2342)

١٨٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا نقصت صَدَقَة من مَال شَيْئا وَمَا زَادَ اللَّهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلَّهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللَّهُ» . رَوَاهُ مُسلم

1889. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सदका से माल कम नहीं होता, दरगुज़र करने और मुआफ़ कर देने से अल्लाह बंदे की इज्ज़त में इज़ाफा फरमाता है, और जो कोई अल्लाह की खातिर आजिज़ी इख़्तियार करता है तो अल्लाह उस को बड़ा दर्जा अता फरमाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 2588)، (6592)

١٨٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الْأَشْيَاءِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَاب الْجنَّة واللجنة أَبْوَابٌ فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلَاةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلَاةِ وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَاد دعِي من بَاب الْجِهَاد وَمن كَانَ مَنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الرَّيَّانِ» . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا عَلَى مَنْ دُعِيَ مِنْ تِلْكَ الْأَبْوَابِ مِنْ ص:٥٩ ضَرُورَةٍ فَهَلْ يُدْعَى أَحَدٌ مِنْ تِلْكَ الْأَبْوَابِ كُلِّهَا؟ قَالَ: «نعم وَأَرْجُو أَن تكون مِنْهُم»

1890. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी चिज़ का जोड़ा अल्लाह की राह में खर्च किया, तो उसे जन्नत के दरवाज़ो से बुलाया जाएगा और जन्नत के आठ दरवाज़े है, जो शख़्स नमाज़ी होगा इसे बाब अल सलात से दावत दी जाएगी, जो मुजाहिद होगा इसे बाब अल जिहाद से आवाज़ दी जाएगी, जो अहल ए सदके में से होगा इसे बाब सदका से बुलाया जाएगा, रोज़दार को बाब अल रय्यान से आवाज़ दी जाएगी”| अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, वैसे ज़रूरी तो नहीं के किसी को इन सब दरवाज़ो से बुलाया जाए, फिर भी क्या किसी को उन तमाम दरवाज़ो से दावत दी जाएगी, आप ने फ़रमाया: हाँ में उम्मीद करता हूँ कि आप उन्हीं में से होंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1898) و مسلم (85 / 1207)، (2371)

١٨٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَصْبَحَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ صَائِمًا؟» قَالَ أَبُو بكر: أَنا قَالَ: «فن تَبعَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ جِنَازَةً؟» قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا. قَالَ: «فَمَنْ أَطْعَمَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مِسْكِينًا؟» قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا. قَالَ: «فَمَنْ عَادَ مِنْكُمُ الْيَوْمَ مَرِيضًا؟» . قَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا اجْتَمَعْنَ فِي امْرِئٍ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ مُسلم

1891. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज तुम में से कौन रोज़े से है?” अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, में, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आज तुम में से कौन जनाज़े के साथ शरीक हुआ ?” अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, में, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आज तुम में से किस ने मिस्कीनो को खाना खिलाया ?” अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैंने, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आज तुम में से किस ने मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) की ?” अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैंने

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स में यह खसलते जमा हो जाए तो वह जन्नत में दाखिल हो जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (87 / 1208)، (2374)

١٨٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لَا تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ»

1892. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान औरत कोई पड़ोसन अपने पड़ोसन के किसी हदिये को हकीर न समझे ख्वाह वह बकरी का खुर ही हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6017) و مسلم (90 / 1030)، (2379)

١٨٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ وَحُذَيْفَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ مَعْرُوف صَدَقَة»

1893. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु और हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर अच्छे काम, भली बात, भुला कलाम सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6021 عن جابر) و مسلم (52 / 1005، (2328) عن حذيفة)

١٨٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ شَيْئًا وَلَوْ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طليق» . رَوَاهُ مُسلم

1894. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नेकी के किसी भी काम को मामूली मत समझो ख्वाह तुम अपने भाई को कुशादाह पेशानी से मिलो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (144 / 2626)، (6690)

١٨٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ» . قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: «فَلْيَعْمَلْ بِيَدَيْهِ فَيَنْفَعَ نَفْسَهُ وَيَتَصَدَّقَ» . قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ؟ أَوْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: «فيعين ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوفَ» . قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَفْعَلْهُ؟ قَالَ: «فيأمر بِالْخَيرِ» . قَالُوا: فَإِن لمي فعل؟ قَالَ: «فَيمسك عَن الشَّرّ فَإِنَّهُ لَهُ صَدَقَة»

1895. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर मुसलमान पर सदका करना वाजिब है”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अगर वह न पाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने हाथो से कमाई

करे और अपने आप को फ़ायदा पहुंचाए, और सदका करे,'' उन्होंने अर्ज़ किया, अगर वह इस्तिताअत न रखे या न कर पाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ज़रूरत मंद मजबूर शख़्स की मदद करे,'' उन्होंने अर्ज़ किया, अगर वह यह भी न कर सके, आप ﷺ ने फ़रमाया: "नेकी का हुक्म करे,'' उन्होंने अर्ज़ किया, अगर न कर सके आप ﷺ ने फ़रमाया: "बुराई से रुक जाए क्योंकि यह भी उस के लिए सदका है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6022) و مسلم (55 / 1008)، (2333)

١٨٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كُلُّ سُلَامَى مِنَ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ: كُلَّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيهِ الشَّمْسُ يَعْدِلُ بَيْنَ الِاثْنَيْنِ صَدَقَةٌ وَيُعِينُ ص:٥٩ الرَّجُلَ عَلَى دَابَّتِهِ فَيَحْمِلُ عَلَيْهَا أَوْ يَرْفَعُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ صَدَقَةٌ والكلمة الطّيبَة صَدَقَة وكل خطْوَة تخطوها إِلَى الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ وَيُمِيطُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ صَدَقَة "

1896. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इंसान के हर जोड़ पर हर रोज़ सदका करना वाजिब है, दो आदमियों के दरमियान अदल करना सदका है, आदमी की उसकी सवारी के बारे में मदद करना वह इसे सवारी पर बिठाए या उस का सामान उस पर रखवाए यह भी सदका है, अच्छी बात करना सदका है, नमाज़ की तरफ हर कदम उठाना सदका है और रास्ते से तकलीफदेह चीज़ दूर कर देना सदका है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2989) و مسلم (56 / 1009)، (2335)

١٨٩٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَلَقَ كُلَّ إِنْسَانٍ مِنْ بَنِي آدَمَ عَلَى سِتِّينَ وَثَلَاثِمِائَةِ مَفْصِلٍ فَمَنْ كَبَّرَ اللَّهَ وَحَمِدَ اللَّهَ وَهَلَّلَ اللَّهَ وَسَبَّحَ اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ اللَّهَ وَعَزَلَ حَجَرًا عَنْ طَرِيقِ النَّاسِ أَوْ شَوْكَةً أَوْ عَظْمًا أَوْ أَمَرَ بِمَعْرُوفٍ أَوْ نَهَى عَنْ مُنْكَرٍ عَدَدَ تِلْكَ السِّتِّينَ وَالثَّلَاثِمِائَةِ فَإِنَّهُ يَمْشِي يَوْمَئِذٍ وَقَدْ زَحْزَحَ نَفْسَهُ عَنِ النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

1897. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर इंसान के तीनसो साठ जोड़ है जिस शख़्स ने (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर الحمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) لا اله الا الله (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह और اسْتَغْفَرَ اللَّهَ (अस्तगफिरुल्लाह) कहा और लोगों के रास्ते से पत्थर या कांटा या हड्डी को दूर कर दिया या नेकी का हुक्म या बुराई से मना किया और यह काम तीनसो साठ अदद के बराबर किया तो वह इस रोज़ इस तरह चलता है के उस ने अपने आप को जहन्नम से बचा लिया है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 1007)، (2330)

١٨٩٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ بِكُلِّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةً وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَفِي بُضْعِ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيَأْتِي أَحَدُنَا شَهْوَتَهُ وَيَكُونُ لَهُ فِيهَا أَجْرٌ؟ قَالَ: «أَرَأَيْتُمْ لَوْ وَضَعَهَا فِي حَرَامٍ أَكَانَ عَلَيْهِ فِيهِ وِزْرٌ؟ فَكَذَلِكَ إِذا وَضَعَهَا

فِي الْحَلَالِ كَانَ لَهُ أجر» . رَوَاهُ مُسلم

1898. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर तस्बीह सदका है, हर तकबीर सदका है, हर तस्बीह सदका है, हर तहलील (لا اله الا الله) कहना सदका है, अम्र बिल मारुफ़ सदका है, बुराई से मना करना सदका है और तुम्हारा अपने अहलिया से जिमाअ करना सदका है” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम में से कोई अपने शहवत पूरी करता है तो उस पर इसे अज़र मिलेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे बताओ अगर वह हराम तरीके से शहवत पूरी करते तो किया उस पर गुनाह होता, इसी तरह जब वह हलाल तरीके से इसे पूरा करेगा तो उसे अज़र मिलेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (53 / 1006)، (2329)

١٨٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ الصَّدَقَةُ اللِّقْحَةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً وَالشَّاةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً تَغْدُو بِإِنَاءٍ وَتَرُوحُ بِآخَرَ»

1899. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दूध देने वाली बेहतरीन ऊंटनी आरियतन (तोहफे में) देना और दूध देने वाली बेहतरीन बकरी जो सुबह व शाम बर्तन फिर देती तो अतिया (हफे में) देना बेहतरीन सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5608) و مسلم (74 / 1020)، (2358)

١٩٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا أَوْ يَزْرَعُ زَرْعًا فَيَأْكُلُ مِنْهُ إِنْسَانٌ أَوْ طَيْرٌ أَوْ بَهِيمَةٌ إِلَّا كَانَت لَهُ صَدَقَة»

1900. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब कोई मुसलमान सजर कारि (वृक्षारोपण) करता है या काश्तकारि करता है फिर कोई इंसान या परिंदे या कोई हैवान उस में से खा लेता है तो यह उस के लिए सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6012) و مسلم (12 / 1552)، (3973)

١٩٠١ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ عَنْ جَابِرٍ: «وَمَا سُرِقَ مِنْهُ لَهُ صَدَقَة»

1901. और सहीह मुस्लिम में जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: जो इस में से चोरी हो जाए तो वह भी इस के लिए सदका है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 1552)، (3968)

١٩٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غُفِرَ لِامْرَأَةٍ مُومِسَةٍ مَرَّتْ بِكَلْبٍ عَلَى رَأْسِ رَكِيٍّ يَلْهَثُ كَادَ يَقْتُلُهُ الْعَطَشُ فَنَزَعَتْ خُفَّهَا فَأَوْثَقَتْهُ بِخِمَارِهَا فَنَزَعَتْ لَهُ مِنَ الْمَاءِ فَغُفِرَ لَهَا بِذَلِكَ» . قِيلَ: إِنَّ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟ قَالَ: «فِي كُلِّ ذَاتِ كبد رطبَة أجر»

1902. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक बदकार औरत को बख्श दिया गया के वह कुंवो के किनारे एक कुत्ते के पास से गुज़रे जो के अपने ज़ुबान बाहर निकाले हांप रहा था, करीब था के शिद्दत प्यास इसे हलाक कर डाले, उस ने अपना जूता उतारा और इसे अपने दुपट्टे से बांध कर उस के लिए पानी निकाला तो उसे इस वजह से बख्श दिया गया,‘‘ अर्ज़ किया गया, क्या हैवानो के साथ हुस्ने सुलूक करने से भी हमारे लिए अज़र है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर जान दार चीज़ के साथ अच्छा सुलूक करने में अज़र है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3321) و مسلم (154 / 2245)، (5860)

١٩٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عُذِّبَتِ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ أَمْسَكَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ مِنَ الْجُوعِ فَلَمْ تَكُنْ تُطْعِمُهَا وَلَا تُرْسِلُهَا فَتَأْكُلَ مِنْ خَشَاشِ الْأَرْضِ»

1903. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक औरत को एक बिल्ली की वजह से अज़ाब में मुब्तिला किया गया उस ने इसे बांध रखा था हत्ता कि वह भूख की वजह से मर गई उस ने खुद इसे खिलाया ना इसे छोड़ा के वह खशरात अल अर्ज़ खा लेती”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3318) و مسلم (2242، (5852) کلاهما من حدیث ابی هریرة)

١٩٠٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَرَّ رَجُلٌ بِغُصْنِ شَجَرَةٍ عَلَى ظَهْرِ طَرِيقٍ فَقَالَ: لَأُنَحِّيَنَّ هَذَا عَنْ طَرِيقِ الْمُسلمين لَا يؤذيهم فَأُدْخل الْجنَّة "

1904. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक आदमी एक दरख्त की शाख के पास से गुज़रा जो के राह गुज़र पर थी, उस ने कहा में उसे मुसलमानों की राहे से हटा देता हूँ ताकि यह उन्हें तकलीफ न पहुंचाए, इसे (इस बिना पर) जन्नत में दाखिल कर दिया गया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (652) و مسلم (127 / 1914)، (4940)

١٩٠٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلًا يَتَقَلَّبُ فِي الْجَنَّةِ فِي شَجَرَةٍ قَطَعَهَا مِنْ ظَهْرِ الطَّرِيقِ كَانَتْ تُؤْذِي النَّاس» . رَوَاهُ مُسلم

1905. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने एक आदमी को एक दरख्त की वजह से जन्नत में इधर उधर फीरते देखा के उस ने राह गुज़र से इसे काट दिया था, जो के लोगों के लिए तकलीफ का बाईस था”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (129 / 1914 بعد ح 2617)، (6671)

١٩٠٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَرْزَةَ قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَنْتَفِعْ بِهِ قَالَ: «اعْزِلِ الْأَذَى عَنْ طَرِيقِ الْمُسْلِمِينَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيث عدي ابْن حَاتِمٍ: «اتَّقُوا النَّارَ» فِي بَابِ عَلَامَاتِ النُّبُوَّةِ

1906. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! मुझे कोई नफ़ामंद चीज़ बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुसलमानों की गुज़र गाह से तकलीफदेह चीज़ को हटा दे,‘‘ अनकरीब हम अदि बिन हातिम से मरवी हदीस: “दोज़ख से बचाव इख़्तियार करो,‘‘ को इंशाअल्लाह तआला बाब अलामत नबूवत में ज़िक्र करेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (131 / 2618)، (6673) 0 حديث عدى بن حاتم : اتقوا النار ياتى (5857)

सदके की फ़ज़ीलत का बयान • بَاب فضل الصَّدَقَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

١٩٠٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ جِئْتُ فَلَمَّا تَبَيَّنْتُ وَجْهَهُ عَرَفْتُ أَنَّ وَجْهَهُ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ. فَكَانَ أَوَّلُ مَا قَالَ: «أَيُّهَا النَّاسُ أَفْشُوا السَّلَامَ وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ وَصِلُوا الْأَرْحَامَ وَصَلُّوا بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِسَلَام» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

1907. अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो मैं भी आप की ज़ियारत के लिए आया, जब मैंने गौर के साथ आप का चेहरा मुबारक देखा तो मैंने पहचान लिया के आप का चेहरा किसी झूठे शख़्स का चेहरा नहीं, आप ﷺ ने सबसे पहले फ़रमाया: “लोगो! इस्लाम आम करो, खाना खिलाओ, सिलह रहमी करो और रात के वक़्त जबकि लोग सो रहे हो नमाज़ पढ़ो (इस तरह) तुम सलामती के साथ जन्नत में दाखिल हो जाओगे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2485 وقال : صحيح) و ابن ماجه (1334) و الدارمى (1 / 340341 ح 1668)

١٩٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اعْبُدُوا الرَّحْمَنَ وَأَطْعِمُوا

الطَّعَامَ وَأَفْشُوا السَّلَامَ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِسَلام» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

1908. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रहमान की इबादत करो, खाना खिलाओ और सलाम आम करो, तुम सलामती के साथ जन्नत में दाखिल हो जाओगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1855 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (3694)

١٩٠٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيتَةَ السَّوْءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

1909. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक सदका रब के गज़ब को ख़तम करता है और बुरी मौत को दूर करता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (664 وقال : غریب) * عبدالله بن عیسی : ضعیف و للحدیث شواهد ضعيفة

١٩١٠ - وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ وَإِنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ أَنْ تَلْقَى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ وَأَنْ تُفْرِغَ مِنْ دَلْوِكَ فِي إِنَاءِ أَخِيكَ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

1910. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर अच्छे काम सदका है, तुम्हारा अपने भाई को कुशादाह पेशानी से मिलना और तुम्हारा अपने बाल्टी से अपने भाई के बर्तन में पानी डाल देना भी नेकी में से है”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (3 / 344 ح 14766) و الترمذی (1970 وقال : حسن صحیح)

١٩١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَبَسُّمُكَ ص:٥٩ فِي وَجْهِ أَخِيك صَدَقَة وأمرك بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَة ن وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَإِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِي أَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ وَنَصْرُكَ الرَّجُلَ الرَّدِيءَ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ وَإِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيقِ لَكَ صَدَقَةٌ وَإِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِي دَلْوِ أَخِيكَ لَكَ صَدَقَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

1911. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारा अपने भाई को देख कर तबस्सुम फरमाना नेकी, का हुक्म करना, बुराई से रोकना, राह भोले शख़्स की रहनुमाई करना, नाबीना शख़्स की मदद करना, पत्थर कांटे और हड्डी को रास्ते से हटा देना और अपने डोल से किसी भाई के डोल में पानी डालना भी सदका है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1956)

١٩١٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَمَّ سَعْدٍ مَاتَتْ فَأَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «الْمَاءُ» . فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ: هَذِهِ لأم سعد. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1912. सईद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उम्म साद रदियल्लाहु अन्हु वफात पा चुकी हैं (इन के लिए) कौन सा सदका करना अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “पानी”, उन्होंने एक कुंवा खुदवाया और फ़रमाया यह उम्म साद के लिए है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1678) و النسائی (6 / 254 ح 3694) و للحدیث طرق کثیرۃ وھو حدیث حسن

١٩١٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا عَلَى عُرْيٍ كَسَاهُ اللَّهُ مِنْ خُضْرِ الْجَنَّةِ وَأَيُّمَا مُسْلِمٍ أَطْعَمَ مُسْلِمًا عَلَى جُوعٍ أَطْعَمَهُ اللَّهُ مِنْ ثِمَارِ الْجَنَّةِ. وَأَيُّمَا مُسلم سقا مُسْلِمًا عَلَى ظَمَأٍ سَقَاهُ اللَّهُ مِنَ الرَّحِيقِ الْمَخْتُوم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

1913. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मुसलमान किसी नंगे बदन मुसलमान को लिबास पहनाए, तो अल्लाह इसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा और जो मुसलमान किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाए तो अल्लाह इसे जन्नत के मेवे खिलाएगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाए तो अल्लाह इसे कस्तूरी से सीलबंद खालिस शराब पिलाएगा”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1682) و الترمذی (2449 وقال : غریب) * ابو خالد الدالانی مدلس و عنعن ولہ شاھد ضعیف جدًا عند الترمذی (1637) و باطل ، عند ایضًا (2449)

١٩١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن فَاطِمَة بنت قبيس قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ فِي الْمَالِ لَحَقًّا سِوَى الزَّكَاةِ» ثُمَّ تَلَا: (لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قبل الْمشرق وَالْمغْرب)»» الْآيَة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

1914. फ़ातिमा बिन्ते कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माल में ज़कात के अलावा भी हक़ है”| फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई: “नेकी यही नहीं के तुम अपने चेहरे मशरिक व मगरिब की तरफ कर लो”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (659660 وقال : ھذا حدیث اسنادہ لیس بذاک و ابو حمزۃ میمون الاعور یضعف) و ابن ماجہ (1789) و الدارمی (1 / 385 ح 1644)

١٩١٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ بُهَيْسَةَ عَنْ أَبِيهَا قَالَتْ: قَالَ: يَا رَسُول الله مَا لشَيْء الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: «الْمَاءُ» . قَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: «الْمِلْحُ» . قَالَ: يَا نَبِيَّ الله مَا لاشيء الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: «أَنْ تَفْعَلَ الْخَيْر خير لَك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1915. बुहयसत अपने वालिद से रिवायत करती हैं उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह कौन सी चीज़ है जिस से रोकना जाईज़ नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “पानी,‘‘ उन्होंने फिर अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! वह कौन सी चीज़ है जिस से रोकना जाईज़ नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नमक,‘‘ उन्होंने फिर अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! वह कौन सी चीज़ है जिस से रोकना जाईज़ नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह कि तुम भलाई के काम करो वह तुम्हारे लिए बेहतर है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (3476 و 1669) * سيار بن منظور و ابوه مستوران و ثقهما ابن حبان وحده

١٩١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من أحيى أَرْضًا مَيِّتَةً فَلَهُ فِيهَا أَجْرٌ وَمَا أَكَلَتِ الْعَافِيَةُ مِنْهُ فَهُوَ لَهُ صَدَقَةٌ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ والدارمي

1916. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स बंजर ज़मीन काश्त करता है तो उस के लिए इस काश्त करने में अज़र है और हर तालिब रीज़्क उस में से जो खा जाए तो वह उस के लिए सदका है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمى (2 / 267 ح 2610) [و الترمذى (1379) و النسائى فى الكبرىٰ (57565758)]

١٩١٧ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَنَحَ مِنْحَةَ لَبَنٍ أَو روق أَوْ هَدَى زُقَاقًا كَانَ لَهُ مِثْلَ عِتْقِ رَقَبَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1917. बराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दूध वाला जानवर अतिया (तोहफे में) दे दे या कोई क़र्ज़ दे दे या किसी को रास्ता बता दे तो उस के लिए गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1957 وقال : حسن صحيح غريب)

١٩١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي جُرَيٍّ جَابِرِ بْنِ سُلَيْمٍ قَالَ: أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ فَرَأَيْتُ رَجُلًا يَصْدُرُ النَّاسُ عَنْ رَأْيِهِ لَا يَقُولُ شَيْئًا إِلّا صَدَرُوا عَنْهُ قُلْتُ مَنْ هَذَا قَالُوا: هَذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْتُ: عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَرَّتَيْنِ قَالَ: «لَا تقل عَلَيْك السَّلَام فَإِن عَلَيْكَ السَّلَامُ تَحِيَّةُ الْمَيِّتِ قُلِ السَّلَامُ عَلَيْكَ» قلت: أَنْت رَسُول الله؟ قَالَ: «أَنا رَسُول الله الَّذِي إِذا أَصَابَكَ ضُرٌّ فَدَعَوْتَهُ كَشَفَهُ عَنْكَ وَإِنْ أَصَابَكَ عَامُ سَنَةٍ فَدَعَوْتَهُ أَنْبَتَهَا لَكَ وَإِذَا كُنْتَ بِأَرْض قفراء أَوْ فَلَاةٍ فَضَلَّتْ رَاحِلَتُكَ ص:٥٩ فَدَعَوْتَهُ رَدَّهَا عَلَيْكَ» . قُلْتُ: اعْهَدْ إِلَيَّ. قَالَ: «لَا تَسُبَّنَّ أَحَدًا» قَالَ فَمَا سَبَبْتُ بَعْدَهُ حُرًّا وَلَا عَبْدًا وَلَا بَعِيرًا وَلَا شَاةً. قَالَ: «وَلَا تَحْقِرَنَّ شَيْئًا مِنَ الْمَعْرُوفِ وَأَنْ تُكَلِّمَ أَخَاكَ وَأَنْتَ مُنْبَسِطٌ إِلَيْهِ وَجْهُكَ إِنَّ ذَلِكَ مِنَ الْمَعْرُوفِ وَارْفَعْ إِزَارَكَ إِلَى نِصْفِ السَّاقِ فَإِنْ أَبَيْتَ فَإِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِيَّاكَ وَإِسْبَالَ الْإِزَارِ فَإِنَّهَا مِنَ الْمَخِيلَةِ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمَخِيلَةَ وَإِنِ امْرُؤٌ شَتَمَكَ وَعَيَّرَكَ بِمَا يَعْلَمُ فِيكَ فَلَا تعيره بِمَا تعلم فِيهِ فَإِنَّمَا وَبَالُ ذَلِكَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ مِنْهُ حَدِيثَ السَّلَامِ. وَفِي رِوَايَةٍ: «فَيَكُونَ لَكَ أَجْرُ ذَلِكَ وَوَبَالُهُ عَلَيْهِ»

1918. अबू जुरय्यी जाबिर बिन सलीम बयान करते हैं, मैं मदीना आया तो मैंने एक आदमी को देखा के लोग उस के हुक्म की तामिल करते हैं, वह जो कहता है के उस पर अमल करते हैं, मैने पूछा यह कौन शख़्स है? उन्होंने बताया यह अल्लाह के रसूल! है, रावी बयान करते हैं, मैंने दो मर्तबा कहा, अलयका अस्सलाम या रसूल अल्लाह आप ﷺ ने फ़रमाया: "अलयका अस्सलाम कहो अलयका अस्सलाम तो मय्यत के लिए दुआ सलाम है, कहो अस्सलामु अलयकुम", रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ क्या आप ﷺ अल्लाह के रसूल! है? तो आप ने फ़रमाया: "मैं इस अल्लाह का रसूल हूँ कि अगर तुम्हें कोई तकलीफ पहुँच जाए और तू उस से दुआ करो तो वह तकलीफ को तुझ से दूर कर दे और अगर तू कहत साली में मुब्तिला हो जाए और उस से दुआ करे तो वह तुझे सर सब्ज़ी शादाबी अता फरमादे, जब तू किसी रेगिस्तान या सहरा में हो और तेरी सवारी गुम हो जाए फिर तू उस से दुआ करे तो वह इसे वापस लौटा दे मैंने अर्ज़ किया: मुझे कोई वसीयत फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "किसी को गाली न देना", रावी बयान करते हैं, मैंने फिर उस के बाद ना किसी आज़ाद को गाली दी न किसी गुलाम को न किसी ऊंट को ना ही किसी बकरी को, आप ﷺ ने फ़रमाया: "नेकी के किसी काम को हकीर न जानना, अगर तू अपने भाई से कुशादाह पेशानी से गुफ्तगू करे तो यह भी नेकी है, अपना आज़ार आधी पिंडली तक रख, अगर तू ऐसे न करे तो फिर टखनो तक और टखनो से नीचे आज़ार तहबंद सलवार पजामा वगैरा लटकाने से बचा कर, क्योंकि यह तकब्बुर है और अल्लाह तकब्बुर पसंद नहीं करता और अगर कोई आदमी तुझे गाली दे और तुझ पर ऐब लगाए जिसके मुतल्लिक वह जानता हो के वह ऐब तुम में मौजूद है, तो उस के मुतल्लिक जो तुम जानते हो उस पर ऐब न लगाओ उस का वबाल इसी पर होगा "| अबू दावुद, इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस से सलाम वाला हिस्सा रिवायत किया है और एक रिवायत में है: "तुम्हें उस का अज़र मिलेगा जबकि उस पर वबाल होगा"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4084) و الترمذى (27212722 وقال : حسن صحيح)

١٩١٩ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة إِنَّهُمْ ذَبَحُوا شَاةً فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَقِيَ مِنْهَا؟» قَالَتْ: مَا بَقِي مِنْهَا إِلَّا كتفها قَالَ: «بَقِي كلهَا غير كتفها» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

1919. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्हों यानी अहले बैत ने एक बकरी जिबह की तो नबी ﷺ ने दरियाफ्त फ़रमाया: "उस से कुछ बचा है?" उन्होंने अर्ज़ किया, उसकी दस्ती बची है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस की दस्ती के सिवा बाकी सब बच गया है" तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2470)

١٩٢٠ - (ضَعِيف) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ ك سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا إِلَّا كَانَ فِي حفظ من الله مادام عَلَيْهِ مِنْهُ خرقَة» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

1920. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान को लिबास फराहम करता है तो जब तक इस लिबास का एक टुकड़ा उस पर रहता

है तो वह शख़्स अल्लाह की हिफाज़त में रहता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (لم اجده) و الترمذی (2484 وقال : حسن غريب) [و صححه الحاكم (4 / 196) و تعقبه الذهبی] * خالد بن طهمان ابو العلاء : خلط قبل موته بعشر سنين و كان قبل ذلک ثقه ، قاله ابن معين ، فالحديث ضعيف من اجل اختلاطه

١٩٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ يَرْفَعُهُ قَالَ: " ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ: رَجُلٌ قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتْلُوا كِتَابَ اللَّهِ وَرَجُلٌ يَتَصَدَّقُ بِصَدَقَةٍ بِيَمِينِهِ يُخْفِيهَا أُرَاهُ قَالَ: مِنْ شِمَالِهِ وَرَجُلٌ كَانَ فِي سَرِيَّةٍ فَانْهَزَمَ أَصْحَابُهُ فَاسْتَقْبَلَ الْعَدُوَّ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَيْرُ مَحْفُوظٍ أَحَدُ رُوَاتِهِ أَبُو بكر بن عَيَّاش كثير الْغَلَط

1921. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु मरफ़ुअ रिवायत बयान करते हैं, फ़रमाया: "तीन शख़्स है जिन्हें अल्लाह पसंद करता है, दौरान ए तहज्जुद कुरान की तिलावत करने वाला, दाएँ हाथ से सदका करने वाला जो इसे अपने बाएँ हाथ से भी छुपा रखता है, और एक वह आदमी जो किसी लश्कर में हो और इस के साथी शिकस्त खा जाए, लेकिन वह फिर भी दुश्मन के सामने सीना सुपर्द रहे" | तिरमिज़ी और इन्हों ने फ़रमाया: यह हदीस महफ़ूज़ नहीं, उस का एक रावी अबू बक्र बिन अय्याश कसरत के साथ गलतिया करता है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2567) * سنده ضعيف و للحديث شواهد

١٩٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ وَثَلَاثَةٌ يُبْغِضُهُمُ اللَّهُ فَأَمَّا الَّذِينَ يُحِبُّهُمُ اللَّهُ فَرَجُلٌ أَتَى قَوْمًا فَسَأَلَهُمْ بِاللَّه وَلم يسألهم بِقَرَابَة بَيْنَهُ وَبَيْنَهُمْ فَمَنَعُوهُ فَتَخَلَّفَ رَجُلٌ بِأَعْيَانِهِمْ فَأَعْطَاهُ سِرًّا لَا يَعْلَمُ بِعَطِيَّتِهِ إِلَّا اللَّهُ وَالَّذِي أَعْطَاهُ وَقَوْمٌ سَارُوا لَيْلَتَهُمْ حَتَّى إِذَا كَانَ النَّوْمُ أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِمَّا يُعْدَلُ بِهِ فَوَضَعُوا رُءُوسَهُمْ فَقَامَ يَتَمَلَّقُنِي وَيَتْلُو آيَاتِي وَرَجُلٌ كَانَ فِي سَرِيَّة فلقي الْعَدو فهزموا وَأَقْبل بِصَدْرِهِ حَتَّى يُقْتَلَ أَوْ يُفْتَحَ لَهُ وَالثَّلَاثَةُ الَّذِينَ يُبْغِضُهُمُ اللَّهُ الشَّيْخُ الزَّانِي وَالْفَقِيرُ الْمُخْتَالُ والغني الظلوم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

1922. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन शख़्स ऐसे है जिन्हें अल्लाह पसंद करता है और तीन ऐसे है जिन्हें अल्लाह नापसंद करता है, रहे वह जिन्हें अल्लाह पसंद करता है तो उनमें से एक वह आदमी है जो किसी कौम के पास जाए और अल्लाह के नाम पर उन से सवाल करे, वह उन से अपने बाहमी क़राबत वजह से सवाल न करे, लेकिन वह इसे कुछ न दें, एक आदमी ने अपने साथियो से अलग हो कर छुपा तौर पर इसे कुछ दे दिया, जिसे सिर्फ अल्लाह जानता है और वह लेने वाला जानता है, और एक वह कौम जो सारी रात चलती रही हत्ता कि जब नींद उन्हें तमाम चीजों से ज़्यादा महबूब हो गई तो वह सो गए, इस असना में एक आदमी खड़ा हो कर खुशु व खुज़ू के साथ मुझ से दुआ करने लगा और मेरी आयात की तिलावत करने लगा, और (तीसरा) वह शख़्स जो किसी लश्कर में दुश्मन से बरसर पुरकार हो लेकिन वह शिकस्त खा जाए तो यह फिर भी सीना सुपर्द रहे, हत्ता कि इसे शहीद कर दिया जाए या इसे फतह हासिल हो जाए और वह तीन जिन्हें अल्लाह नापसंद करता है बुढा ज़ानि, मुतकब्बर फ़क़ीर और ज़ालिम मालदार है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2568) و النسائی (5 / 84 ح 2571 و 3 / 207208 ح 1616) و صححه ابن خزيمة (2456 ، 2464) و ابن حبان (813 ، 16021603) و الحاكم (2 / 113) و وافقه الذهبی

١٩٢٣ - (ضَعِيف) وَعَن أنس بن مَالك عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَمَّا خَلَقَ اللَّهُ الْأَرْضَ جَعَلَتْ تَمِيدُ فَخَلَقَ الْجِبَالَ فَقَالَ بِهَا عَلَيْهَا فَاسْتَقَرَّتْ فَعَجِبَتِ الْمَلَائِكَةُ مِنْ شِدَّةِ الْجِبَالِ فَقَالُوا يَا رَبِّ هَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنِ الْجِبَالِ قَالَ نعم الْحَدِيد قَالُوا يَا رَبِّ هَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الْحَدِيدِ قَالَ نَعَمِ النَّارُ فَقَالُوا يَا رب هَل من خلقك شَيْء أَشد من النَّار قَالَ نعم المَاء قَالُوا يَا رب فَهَل مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الْمَاءِ قَالَ نَعَمِ الرِّيحُ فَقَالُوا يَا رَبِّ هَلْ مِنْ خَلْقِكَ شَيْءٌ أَشَدُّ مِنَ الرِّيحِ قَالَ نَعَمِ ابْن آدم تصدق بِصَدقَة بِيَمِينِهِ يخفيها من شِمَالِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ»» وَذُكِرَ حَدِيثُ مُعَاذٍ: «الصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيئَةَ» . فِي كتاب الْإِيمَان

1923. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह ने ज़मीन पैदा फरमाई तो वह हिलने लगी तो फिर उस ने पहाड़ पैदा किए और उन्हें इस ज़मीन पर रखने का हुक्म फ़रमाया तो वह ठहर गई फरिश्तो को पहाड़ो की शिद्दत पर ताज्जुब हुआ तो उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! क्या तेरी मखलूक में पहाड़ो से शदीद तर कोई चीज़ है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हाँ, लोहा तो उन्होंने फिर अर्ज़ किया, रब जी! क्या तेरी मखलूक में लोहे से भी शदीद तर कोई चीज़ है? फ़रमाया हां पानी, उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! क्या तेरी मखलूक में पानी से शदीद तर कोई चीज़ है? फ़रमाया हां आग, उन्होंने अर्ज़ किया, क्या तेरी मखलूक में आग से भी शदीद तर कोई चीज़ है? फ़रमाया हां हवा, फिर उन्होंने अर्ज़ किया, रब जी! क्या तेरी मखलूक में हवा से भी शदीद तर कोई चीज़ है? फ़रमाया हां वह इब्ने आदम जो अपने दाएँ हाथ से सदका करता है तो उसे अपने बाएँ हाथ से छुपा रखता है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “सदका खताए मिटा देता है” किताब अल ईमान में ज़िक्र की गई है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3369) 0 الصدقة تطفی الخطیئة ، تقدم (29)

بَاب فضل الصَّدَقَة • सदके की फ़ज़ीलत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٩٢٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُنْفِقُ مِنْ كُلِّ مَالٍ لَهُ زَوْجَيْنِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِلَّا اسْتَقْبَلَتْهُ حَجَبَةُ الْجَنَّةِ كُلُّهُمْ يَدْعُوهُ إِلَى مَا عِنْدَهُ» . قُلْتُ: وَكَيْفَ ذَلِكَ؟ قَالَ: «إِنْ كَانَتْ إِبِلًا فَبَعِيرَيْنِ وَإِنْ كَانَت بقرة فبقرتين» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

1924. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो बंदा मुस्लिम अपने सारे माल से जोड़ा अल्लाह की राह में खर्च करता है तो जन्नत के तमाम दरबाने अपने अपनी नेअमतो के साथ उस का इस्तेकबाल करते हैं” मैंने अर्ज़ किया: वह कैसे खर्च करे फ़रमाया: “अगर ऊंट हो तो दो ऊंट और अगर गाय हो तो दो गाय”| (सहीह)

صحیح ، رواه النسائی (6 / 4849 ح 3187)

١٩٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ مَرْثَدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي بَعْضِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ ظِلَّ الْمُؤْمِنِ يَوْمَ الْقِيَامَة صدقته» . رَوَاهُ أَحْمد

1925. मर्सडी बिन अब्दुल्लाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के किसी सहाबी ने मुझे हदीस बयान की के इस ने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “रोज़ ए कियामत मोमिन का सदका ही उस के लिए बाईसे साया होगा”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 233 ح 18207) و ابن خزيمة (2432)و ابن اسحاق صرح بالسماع عند فالسند حسن] * وله شاهد صحيح عند ابن خزيمة (4 / 94 ح 2431) و ابن حبان (817) و صححه الحاكم (1 / 416) و وافقه الذهبى

١٩٢٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ وَسَّعَ عَلَى عِيَالِهِ فِي النَّفَقَةِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ وَسَّعَ اللَّهُ عَلَيْهِ سَائِرَ سَنَتِهِ» . قَالَ سُفْيَانُ: إِنَّا قَدْ جربناه فوجدناه كَذَلِك. رَوَاهُ رزين

1926. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स आशुराह के दिन अपने अहल व अयाल पर फराखी के साथ खर्च करता है तो अल्लाह पूरा साल इसे फराखी अता फरमा देता है” सुफियान शोरी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: हम उस का तजरुबा कर चुके हैं और हमने इसे इसी तरह पाया है| (ज़ईफ़)

ضعيف جذا ، رواه رزين (لم اجده) [و رواه البيهقى فى شعب الايمان (3792 ، نسخة محققة : 3513) باسناد مظلم عن هيصم بن شداخ عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة به] و هيصم بن شداخ : يروى عن الاعمش الطامات فى الروايات ، لا يجوز الاحتجاج به ، قاله ابن حبان فى المجروحين (3 / 97) و للحديث طرق ضعيفة جدًا

١٩٢٧ - (ضَعِيف) وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنْهُ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَة وَأَبِي سعيد وَجَابِر وَضَعفه

1927. और इमाम बयहकी ने इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु और जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से इसे शौबुल ईमान में ज़िक्र किया है और उन्होंने इमाम बयहकी ने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3795 ، نسخة محققة : 3515) عن ابى هريرة [فيه حجاج بن نصير : ضعيف و محمد بن ذكوان : منكر الحديث] 37933794 عن ابى سعيد نسخة محققة : 35133514 [فيه ايوب بن سليمان بن ميناء عن رجل عن ابى سعيد الخدرى] 3791 نسخة محققة : 3512 عن جابر [فيه محمد بن يونس الكديمى : كذاب عن عبدالله بن ابراهيم الغفارى : متروك] * و للحديث طرق لا يصح منها شى و اخطا السيوطى و غيره فصححه بالشواهد الواهية

١٩٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو ذَرٍّ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَرَأَيْتَ الصَّدَقَةُ مَاذَا هِيَ؟ قَالَ: «أَضْعَافٌ مُضَاعَفَةٌ وَعِنْدَ اللَّهِ الْمَزِيدُ» . رَوَاهُ أَحْمد

1928. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! मुझे बताइए के सदका का कितना सवाब है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “ज़्यादा से ज़्यादा सात सौ गुना और अल्लाह के यहाँ मज़ीद है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ احمد (5 / 178 ح 21879) [فیه المسعودی اختلط و ابو عمر الدمشقی ضعیف و قال الدارقطنی : متروک] (5 / 265 ح 22644) [فیه معان بن رفاعة ضعیف عن علی بن زید : متروک])

بَاب أفضل الصَّدَقَة • बेहतरीन सदके का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٩٢٩ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَحَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ الصَّدَقَةِ مَا كَانَ عَنْ ظَهْرِ غِنًى وأبدأ بِمن تعول» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ وَمُسلم عَن حَكِيم وَحده

1929. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेहतरीन सदका वह है जिसके पीछे गिना हो और सदका की इब्तिदा अपने ज़ेरे किफ़ालत लोगों से कर”| बुखारी, मुस्लिम ने सिर्फ हकिम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (14261427) و مسلم (95 / 1034)، (2386)

١٩٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُ نَفَقَةً عَلَى أَهْلِهِ وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا كَانَت لَهُ صَدَقَة»

1930. अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब मुसलमान अल्लाह की रज़ा और हुसूल सवाब की नियत से अपने अहल व अयाल पर खर्च करता है तो वह उस के लिए सदका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (55 ، 5351) و مسلم (48 / 1002)، (2322)

١٩٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دِينَار أنفقته فِي سَبِيل الله ودينار أنفقته فِي رَقَبَةٍ وَدِينَارٌ تَصَدَّقْتَ بِهِ عَلَى مِسْكِينٍ وَدِينَارٌ أَنْفَقْتَهُ عَلَى أَهْلِكَ أَعْظَمُهَا أَجْرًا الَّذِي أنفقته على أهلك» . رَوَاهُ مُسلم

1931. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक दीनार वह है जिसे तूने

अल्लाह की राह में खर्च किया, एक दीनार जो तूने गर्दन आज़ाद करने में खर्च किया, एक दीनार वह है जिसे तूने किसी मिस्किन पर खर्च किया और एक दीनार वह है जिसे तूने अपने अहल व अयाल पर खर्च किया उनमें से सबसे ज़्यादा बाईस ए अज़र वह है जो तूने अपने अहल व अयाल पर खर्च किया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (39 / 995)، (2311)

١٩٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ دِينَارٍ يُنْفِقُهُ الرَّجُلُ دِينَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى عِيَالِهِ وَدِينَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى دَابَّتِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَدِينَارٌ يُنْفِقُهُ عَلَى أَصْحَابه فِي سَبِيل الله» . رَوَاهُ مُسلم

1932. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेहतरीन दीनार वह है जिसे आदमी अपने अहल व अयाल पर खर्च करता है और वह दीनार है जिसे वह अपने जिहादी घोड़े पर खर्च करता है और वह दीनार है जिसे वह अपने मुजाहिद साथियो पर खर्च करता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (38 / 994)، (2310)

١٩٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلِيَ أَجْرٌ أَنْ أَنْفِقَ عَلَى بَنِي أَبِي سَلَمَةَ؟ إِنَّمَا هُمْ بَنِيَّ فَقَالَ: «أَنْفِقِي عَلَيْهِمْ فَلَكِ أَجْرُ مَا أَنْفَقْتِ عَلَيْهِم»

1933. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अगर में अबू सलमा के बेटो पर खर्च करूँ तो क्या मुझे अज़र मिलेगा जबकि वह मेरे भी बेटे है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इन पर खर्च करो तुम इन पर जो खर्च करोगी तो उस पर तुम्हें अज्र व सवाब मिलेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1467) و مسلم (47 / 1001)، (2320)

١٩٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَصَدَّقْنَ يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ وَلَوْ مِنْ حُلِيِّكُنَّ» قَالَتْ فَرَجَعْتُ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ فَقُلْتُ إِنَّكَ رَجُلٌ خَفِيفُ ذَاتِ الْيَدِ وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَمَرَنَا بِالصَّدَقَةِ فَأْتِهِ فَاسْأَلْهُ فَإِنْ كَانَ ذَلِك يَجْزِي عني وَإِلَّا صرفتها إِلَى غَيْرِكُمْ قَالَت فَقَالَ لِي عَبْدُ اللَّهِ بَلِ ائْتِيهِ أَنْتِ قَالَتْ فَانْطَلَقْتُ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ بِبَابِ رَسُولِ الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم حَاجَتي حَاجَتهَا قَالَتْ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قد ألقيت عَلَيْهِ المهابة. فَقَالَت فَخَرَجَ عَلَيْنَا بِلَالٌ فَقُلْنَا لَهُ ائْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ بِالْبَابِ تسألانك أتجزئ الصَّدَقَة عَنْهُمَا على أَزْوَاجِهِمَا وَعَلَى أَيْتَامٍ فِي حُجُورِهِمَا وَلَا تُخْبِرْهُ مَنْ نَحْنُ. قَالَتْ فَدَخَلَ بِلَالٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ هما» . فَقَالَ امْرَأَة من الْأَنْصَار وَزَيْنَب فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّ الزَّيَانِبِ» . قَالَ امْرَأَةُ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَهما أَجْرَانِ أجر الْقَرَابَة وَأجر الصَّدَقَة» . وَاللَّفْظ لمُسلم

1934. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया जैनब रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरतों की जमाअत सदका करो, ख्वाह अपने ज़ेवरात में से करो”, वह बयान करती हैं, मैं अपने शोहर अब्दुल्लाह के पास वापस आइ तो मैंने कहा आप ग़रीब आदमी है जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें सदका करने का हुक्म फ़रमाया है, आप उन के पास जा कर मसअला दरियाफ्त करे, अगर तो जाईज़ हो तो में तुम पर सदका करू, वरना फिर तुम्हारे अलावा किसी और पर करू वह बयान करती हैं, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे फ़रमाया, आप खुद ही जाए वह बयान करती हैं, मैं गई तो रसूलुल्लाह ﷺ के दरवाज़े पर एक अंसारी खातून खड़ी थी, इसे भी मेरे वाला मसअला ही दरपेश था, वह बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ बड़ी बा रोब शख्शियत थे, पस बिलाल रदियल्लाहु अन्हु हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हमने उन्हें कहा, रसूलुल्लाह ﷺ के पास जाओ और उन्हें बताओ के दरवाज़े पर दो औरते आप से मसअला दरियाफ्त करती हैं के वह अपना सदका अपने खाविंदो और उन के ज़ेर परवरिश यतीम बच्चो को दे सकती है, लेकिन उन्हें हमारे मुतल्लिक न बताना के हम कौन है, जैनब कहती है बिलाल रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप से मसअला दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से पूछा के वह दोनों कौन है उन्होंने अर्ज़ किया, एक अंसारी खातून और एक जैनब है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौन सी जैनब ?” उन्होंने अर्ज़ किया, अब्दुल्लाह की अहलिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इन दोनों के लिए दुगना अज़र है? कराबतदारी का अज़र और सदके का अज़र”| बुखारी, मुस्लिम, अल्फाज़ हदीस मुस्लिम के है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1466) و مسلم (45 / 1005)، (2318)

١٩٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ مَيْمُونَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ: أَنَّهَا أَعْتَقَتْ وَلِيدَةً فِي زَمَانِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَوْ أَعْطَيْتِهَا أخوالك كَانَ أعظم لأجرك»

1935. मय्मुना बिन्ते हारिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में एक लौंडी आज़ाद की, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से इस का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया: “अगर तुम उसे अपने मामुओ को दे देती तो तुम्हारे लिए ज़्यादा बाईस ए अज़र होता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3592) و مسلم (44 / 999)، (2317)

١٩٣٦ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَت: يَا رَسُول الله إِن لِي جَارَيْنِ فَإِلَى أَيِّهِمَا أَهْدِي؟ قَالَ: «إِلَى أقربهما مِنْك بَابا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1936. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल! मेरे दो पड़ोसी हैं, मैं उनमें से किसे हदिया दू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से जिस का दरवाज़ा तुम्हारे ज़्यादा करीब है”| (बुखारी)

رواه البخاری (2595)

١٩٣٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا طَبَخْتَ مَرَقَةً فَأَكْثر ماءها وتعاهد جيرانك» . رَوَاهُ مُسلم

1937. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम शोरबा बना, तो उस में पानी ज़्यादा डाला करो और अपने पड़ोसी का भी ख़याल रखा करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (142 / 2625)، (6688)

بَاب أفضل الصَّدَقَة • बेहतरीन सदके का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٩٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «جُهْدُ الْمُقِلِّ وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1938. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सा सदका अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “ग़रीब आदमी का मेहनत की कमाई से सदका करना और अपने ज़ेरे किफ़ालत लोगों से आगाज़ करना”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1677)

١٩٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الصَّدَقَةُ عَلَى الْمِسْكِينِ صَدَقَةٌ وَهِيَ عَلَى ذِي الرَّحِمِ ثِنْتَانِ: صَدَقَةٌ وَصِلَةٌ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

1939. सलमान बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मिस्किन पर सदका करना सिर्फ एक सदका है, जबकि रिश्तेदार पर दोहरा है, सदका और सिलह रहमी”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 214 ح 1802818030) و الترمذی (658 وقال : حسن) و النسائی (5 / 92 ح 2583) و ابن ماجه (1844) و الدارمی (1 / 397 ح 16871688)

١٩٤٠ - (صَحِيح) وَعَن أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: عِنْدِي دِينَار فَقَالَ: «أَنْفِقْهُ عَلَى نَفْسِكَ» قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ: «أَنْفِقْهُ عَلَى وَلَدِكَ» قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ: «أَنْفِقْهُ عَلَى أَهْلِكَ» قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ: «أَنْفِقْهُ عَلَى خَادِمِكَ» . قَالَ: عِنْدِي آخَرُ قَالَ: «أَنْت أعلم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1940. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने

अर्ज़ किया, मेरे पास एक दीनार है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे अपने जान पर खर्च कर” उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास एक और है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे अपने अहल व अयाल पर खर्च कर”, उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास एक और है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे अपने खादिम पर खर्च कर,‘‘ उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास एक और भी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “फिर तू बेहतर जानता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1691) و النسائی (5 / 62 ح 2536)

١٩٤١ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ النَّاسِ؟ رَجُلٌ مُمْسِكٌ بِعِنَانِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِالَّذِي يَتْلُوهُ؟ رَجُلٌ مُعْتَزِلٌ فِي غُنَيْمَةٍ لَهُ يُؤَدِّي حَقَّ اللَّهِ فِيهَا. أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِشَرِّ النَّاسِ ص:٦٠»» رَجُلٌ يُسْأَلُ بِاللَّهِ وَلَا يُعْطِي بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيّ

1941. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें बेहतरीन शख़्स के बारे में बताऊँ? अल्लाह की राह में अपने घोड़े की लगाम थामने वाला शख्स, क्या मैं तुम्हें उस के करीब शख़्स के बारे में बताऊँ? वह आदमी जो अपनी कुछ बकरिया लेकर अलग थलक रहता है और इस बारे में अल्लाह का हक़ अदा करता है, क्या मैं तुम्हें बदतरीन शख़्स के बारे में बताऊँ? वह आदमी जिस से अल्लाह के नाम पर सवाल किया जाए और वह न दे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1652 وقال : حسن غریب) و النسائی (5 / 8384 ح 2570) و الدارمی (2 / 201202 ح 2400)

١٩٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم بحيد قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُدُّوا السَّائِلَ وَلَوْ بِظِلْفٍ مُحْرَقٍ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ مَعْنَاهُ

1942. उम्म बजिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सवाली को कुछ दे कर वापस किया करो, ख्वाह कोई जली हुई खीरी हो”| मालिक, नसई और इमाम तिरमिज़ी और इमाम अबू दावुद ने इस मानी में रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواه مالک (2 / 923 ح 1779) و النسائی (5 / 8182 ح 2566) و الترمذی (665 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1667)

١٩٤٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اسْتَعَاذَ مِنْكُمْ بِاللَّهِ فَأَعِيذُوهُ وَمَنْ سَأَلَ بِاللَّهِ فَأَعْطُوهُ وَمَنْ دَعَاكُمْ فَأَجِيبُوهُ وَمَنْ صَنَعَ إِلَيْكُمْ مَعْرُوفًا فَكَافِئُوهُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا مَا تُكَافِئُوهُ فَادْعُوا لَهُ حَتَّى تُرَوْا أَنْ قَدْ كَافَأْتُمُوهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

1943. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स तुम में से अल्लाह के नाम पर पनाह तलब करे तो उसे पनाह दो जो अल्लाह के नाम पर सवाल करे तो उसे अता करो जो शख़्स तुम्हें दावत दे तो उसे कबूल करो और जिस शख़्स ने तुम्हारे साथ कोई नेकी की हो तो तुम उसे बदला दो अगर

तुम बदला चुकाने के लिए कुछ न पाओ तो उस के लिए इस क़दर दुआ करो की तुम्हें यकीन हो जाए के तुमने उस का बदला चूका दिया है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (2 / 68 ح 5365) و ابوداؤد (1672) و النسائی (5 / 82 ح 2568) * الاعمش مدلس و عنعن

١٩٤٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُسْأَلُ بِوَجْهِ اللَّهِ إِلَّا الْجنَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1944. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की ज़ात का वास्ते दे कर जन्नत के सिवा कुछ न माँगा जाए” | (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1671) * سلیمان بن قرم هو سلیمان بن معاذ : ضعیف ضعفه الجمهور و اخرج له مسلم (46 / 1480) متابعة

بَاب أفضل الصَّدَقَة • बेहतरीन सदके का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

١٩٤٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنس بن مَالك قَالَ: كَانَ أَبُو طَلْحَة أَكثر أَنْصَارِي بِالْمَدِينَةِ مَالًا مِنْ نَخْلٍ وَكَانَ أَحَبُّ أَمْوَالِهِ إِلَيْهِ بيرحاء وَكَانَت مُسْتَقْبل الْمَسْجِدَ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ قَالَ أنس فَلَمَّا نزلت (لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ)»» قَامَ أَبُو طَلْحَة فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُول: (لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ)»» وَإِنَّ أَحَبَّ مَالِي إِلَيَّ بَيْرَحَاءُ وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لله أَرْجُو بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ اللَّهِ فَضَعْهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ حَيْثُ أَرَاكَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَخٍ بَخٍ ذَلِكَ مَالٌ رَابِحٌ وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الْأَقْرَبِينَ» . فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَسَّمَهَا أَبُو طَلْحَة فِي أَقَارِبه وَفِي بني عَمه

1945. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु अंसार मदीना में खजूरो के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा माल दार थे, और उन्हें अपने अमवाल बाग़ात में बिरहा नामी बाग़ सबसे ज़्यादा पसंद था और वह मस्जिद के सामने था, रसूलुल्लाह ﷺ वहां तशरीफ़ लाया करते और वहां का शिरी पानी नोश फ़रमाया करते थे, अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब यह आयत नाज़िल हुई: “तुम नेकी हासिल नहीं कर सकते जब तक अपने पसंदीदा चीज़ खर्च न करो”, तो अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला फरमाता है “तुम नेकी हासिल नहीं कर सकते जब तक अपने पसंदीदा चीज़ खर्च न करो”, बेशक बिरहा बाग़ मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है और वह अल्लाह तआला के लिए सदका है, मैं उस के सवाब और उस के अल्लाह के यहाँ ज़खीरा होने की उम्मीद रखता हूँ, अल्लाह के रसूल! अल्लाह के हुक्म के मुताबिक आप जैसे और जहाँ चाहे इसे इस्तेमाल करे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बहोत खूब यह तो बहोत नफा बख्श माल है और तुमने जो कहा मैंने इसे सुन लिया, मैं तो यही चाहता हूँ कि तुम उसे अपने रिश्तेदारों में तकसीम कर दो”, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में ऐसे ही करूँगा, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने इसे अपने रिश्तेदारों और अपने चचाज़ाद भाइयो में तकसीम कर

दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1461) و مسلم (42 / 998)، (2315)

١٩٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصَّدَقَةِ أَنْ تُشْبِعَ كَبِدًا جَائِعًا» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1946. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेहतरीन सदका यह है कि तो किसी भूखे पेट को सैर कर दे“| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (3367 ، نسخة محققة : 3095) * فیه زری بن عبدالله : ضعیف

بَابُ صَدَقَةِ الْمَرْأَةِ مِنْ مَالِ الزَّوْجِ — बीवी का शौहर के माल से सदका करने का बयान

الْفَصْلُ الأول — पहली फस्ल

١٩٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذْ أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ طَعَامِ بَيْتِهَا غَيْرَ مُفْسِدَةٍ كَانَ لَهَا أَجْرُهَا بِمَا أَنْفَقَتْ وَلِزَوْجِهَا أَجْرُهُ بِمَا كَسَبَ وَلِلْخَازِنِ مِثْلُ ذَلِكَ لَا يَنْقُصُ بَعْضُهُمْ أَجْرَ بعض شَيْئا»

1947. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बीवी फिजूलखर्ची किए बगैर अपने घर के खाने से सदका करे तो उसे खर्च करने की वजह से, उस के शोहर को कमाई की वजह से अज़्र मिलेगा और खजानची को भी इतना ही अज़्र मिलेगा और कोई किसी के अज़्र में कमी नहीं करेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1437) و مسلم (79 / 1023)، (2364)

١٩٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ كَسْبِ زَوْجِهَا مِنْ غَيْرِ أَمْرِهِ فَلَهَا نِصْفُ أَجْرِهِ»

1948. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब औरत अपने खाविंद की कमाई से उसकी इजाज़त के बगैर खर्च करती हैं तो उस के लिए उस के अजर से आधा मिलता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5360) و مسلم (84 / 1026)، (2370)

١٩٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْخَازِنُ الْمُسْلِمُ الْأَمِينُ الَّذِي يُعْطِي مَا أُمِرَ بِهِ كَامِلًا مُوَفَّرًا طَيِّبَةً بِهِ نَفْسُهُ فَيَدْفَعُهُ إِلَى الَّذِي أمر لَهُ بِهِ أحد المتصدقين»

1949. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान अमिन खजानची जो हुक्म के मुताबिक खुशदिली से जिसे देने को कहा जाए मुकम्मल तौर पर पूरा देता है तो वह भी सदका करने वालो में शुमार होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1438) و مسلم (79 / 1023)، (2363)

١٩٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ أُمِّي افْتُلِتَتْ نَفْسَهَا وَأَظُنُّهَا لَوْ تَكَلَّمَتْ تَصَدَّقَتْ فَهَلْ لَهَا أَجْرٌ إِنْ تَصَدَّقت عَنْهَا؟ قَالَ: نعم "

1950. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि एक आदमी ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, के मेरी वालिदा अचानक फौत हो गई और मेरा इन के बारे में ख़याल है के अगर वह बात करती तो सदका करती तो अगर मैं इन की तरफ से सदका कर दे वह तो उन्हें अज़र मिलेगा आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1388) و مسلم (51 / 1004)، (2326)

بَابُ صَدَقَةِ الْمَرْأَةِ مِنْ مَالِ الزَّوْجِ • बीवी का शौहर के माल से सदका करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٩٥١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي خُطْبَتِهِ عَامَ حُجَّةِ الْوَدَاعِ: «لَا تُنْفِقُ امْرَأَةٌ شَيْئًا مِنْ بَيْتِ زَوْجِهَا إِلَّا بِإِذْنِ زَوْجِهَا» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا الطَّعَامَ؟ قَالَ: «ذَلِكَ أفضل أَمْوَالنَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1951. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हज्जतुल वदा के खुत्बा में फरमाते हुए सुना: “कोई औरत अपने खाविंद की इजाज़त के बगैर उस के घर से कोई चीज़ खर्च न करे”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! खाना भी नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो तो हमारा बेहतरीन माल है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (670 وقال : حسن)

١٩٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: لَمَّا بَايَعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النِّسَاءُ قَامَتِ امْرَأَةٌ جَلِيلَةٌ كَأَنَّهَا مِنْ نِسَاءِ مُضَرَ فَقَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّا كَلٌّ عَلَى آبَائِنَا وَأَبْنَائِنَا وَأَزْوَاجِنَا فَمَا يَحِلُّ لَنَا مِنْ أَمْوَالِهِمْ؟ قَالَ: «الرطب تأكلنه وتهدينه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1952. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतों से बैत ली तो एक बा वक़ार (गरिमावाली) बुलंद कामत खातून खड़ी हुई गोया वह मुज़िर कबिले की खातून थी, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! हम अपने बापों बेटो और शोहरो पर बोझ है सो उन के अमवाल में से हमारे लिए क्या हलाल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तरोताजा चीज़े जो तुम खाती हो और हदिया करती हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1686) * زیاد بن جبیر عن سعد مرسل (انظر المراسیل لابن ابی حاتم ص 61)

बीवी का शौहर के माल से सदका करने का बयान

بَابُ صَدَقَةِ الْمَرْأَةِ مِنْ مَالِ الزَّوْجِ

तीसरी फस्ल

الْفَصْلُ الثَّالِث

١٩٥٣ - (صَحِيح) عَنْ عُمَيْرٍ مَوْلَى آبِي اللَّحْمِ قَالَ: أَمَرَنِي مَوْلَايَ أَنْ أُقَدِّدَ لَحْمًا فَجَاءَنِي مِسْكِينٌ فَأَطْعَمْتُهُ مِنْهُ فَعَلِمَ بِذَلِكَ مَوْلَايَ فَضَرَبَنِي فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَدَعَاهُ فَقَالَ: «لِمَ ضَرَبْتَهُ؟» فَقَالَ يُعْطِي طَعَامِي بِغَيْرِ أَنْ آمُرَهُ فَقَالَ: «الْأَجْرُ بَيْنَكُمَا» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: كُنْتُ مَمْلُوكًا فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَأتصدق مِنْ مَالِ مَوَالِيَّ بِشَيْءٍ؟ قَالَ: «نَعَمْ وَالْأَجْرُ بَيْنَكُمَا نِصْفَانِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1953. अबी अल लहम के आज़ाद करदा गुलाम उमैर बयान करते हैं, मेरे आका ने गोश्त बनाने के मुतल्लिक मुझे हुक्म फ़रमाया तो इतने में एक मिस्किन मेरे पास आया मैंने उस में से कुछ इसे खीला दीया, मेरे आका को उस का पता चला तो उस ने मुझे मारा, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप से यह वाकिए का ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने इसे बुलाकर फ़रमाया: “तुमने इसे क्यों मारा ?” उस ने कहा यह मेरा खाना मेरे हुक्म के बगैर देता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अज़र तुम दोनों को मिलता है” और एक रिवायत में है उन्होंने कहा: में ममलुक था तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया क्या मैं अपने मालिको के माल में से कोई चीज़ सदका कर लिया करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ अज़र तुम्हारे दरमियान आधा आधा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (82 / 1025)، (2368)

سदका वापस लेने का बयान • بَاب من لَا يعود فِي الصَّدَقَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٩٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَمَلْتُ عَلَى فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَأَضَاعَهُ الَّذِي كَانَ عِنْدَهُ فَأَرَدْتُ أَنْ أَشْتَرِيَهُ وَظَنَنْتُ أَنَّهُ يَبِيعُهُ بِرُخْصٍ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَا تَشْتَرِهِ وَلَا تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ وَإِنْ أَعْطَاكَهُ بِدِرْهَمٍ فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا تَعُدْ فِي صَدَقَتِكَ فَإِنَّ الْعَائِدَ فِي صَدَقَتِهِ كالعائد فِي قيئه»

1954. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने किसी शख़्स को फी सबिलिल्लाह एक घोड़ा बतौर सवारी अता किया, तो उस ने इसे ज़ाए कर दिया, मैंने इसे खरीदना चाहा और मुझे ख़याल हुआ की वह इसे सस्ते दाम पर फरोख्त कर देगा, मैंने नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे मत खरीदो न अपना सदका वापस लो, ख्वाह वह इसे एक दिरहम में तुम्हें अता करे, क्योंकि अपना सदका वापस लेने वाला कुत्ते की तरह है जो अपने कै चाट जाता है” और एक रिवायत में है: “अपना सदका वापस न ले क्योंकि अपना सदका वापस लेने वाला अपने कै चाटने वाले की तरह है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1490) و مسلم (7 / 1622)، (4165)

١٩٥٥ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَتَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَت يَا رَسُول الله إِنِّي كنت تَصَدَّقْتُ عَلَى أُمِّي بِجَارِيَةٍ وَإِنَّهَا مَاتَتْ قَالَ: «وَجَبَ أَجْرُكِ وَرَدَّهَا عَلَيْكِ الْمِيرَاثُ» . قَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ كَانَ عَلَيْهَا صَوْمُ شَهْرٍ أفأصوم عَنْهَا قَالَ: «صومي عَنْهَا» . قَالَت يَا رَسُول الله إِنَّهَا لَمْ تَحُجَّ قَطُّ أَفَأَحُجُّ عَنْهَا قَالَ: «نعم حجي عَنْهَا» . رَوَاهُ مُسلم

1955. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर था जब एक खातून आप के पास आई उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने अपनी वालिदा को एक लौंडी सदका की थी और वह यानी वालिदा वफात पा गई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारा अज़र वाजिब हो गया और वह बतौर मीरास तुम्हारे पास वापस गई”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर एक माह के रोज़े उस के जिम्मे हो तो क्या मैं उसकी तरफ से रोज़े रखु, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की तरफ से रोज़े रखो”, इस औरत ने अर्ज़ किया, इस ने तो हज भी नहीं किया था, तो क्या मैं उसकी तरफ से हज करू आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ उसकी तरफ से हज”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (157 / 1149)، (2697)

रोज़ो का बयान — كتاب الصَّوْم

पहली फस्ल — الْفَصْل الأول

١٩٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا دخل شهر رَمَضَانُ فُتِحَتْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فُتِحَتْ أَبْوَابُ الرَّحْمَةِ»

1956. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब रमज़ान आता है तो आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं”, और एक रिवायत में है: “जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शैतान को जकड़ दिया जाता है” और एक रिवायत में है: “रहमत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1899) و مسلم (2 / 1079)، (2496)

١٩٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فِي الْجَنَّةِ ثَمَانِيَةُ أَبْوَابٍ مِنْهَا: بَابٌ يُسَمَّى الرَّيَّانَ لَا يدْخلهُ إِلَّا الصائمون "

1957. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत के आठ दरवाज़े है उनमें से एक दरवाज़े का नाम “ अल रय्यान” है? उस में से सिर्फ रोज़ादार ही दाखिल होंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3257) و مسلم (166 / 1152)، (2710)

١٩٥٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. وَمَنْ قَامَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ»

1958. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ईमान व इखलास और सवाब की नियत से रोज़े रखा तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं जो शख़्स ईमान व इखलास और सवाब की नियत से रमज़ान में कयाम करे तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, और जो शख़्स ईमान व इखलास और सवाब की नियत से शबे कद्र का कयाम करे तो उस के पिछले गुनाह बख्श दिए जाते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (37) و مسلم (175 / 760)، (1781)

١٩٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ يُضَاعَفُ الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: إِلَّا الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ يَدَعُ شَهْوَتَهُ وَطَعَامَهُ مِنْ أَجْلِي لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ: فَرْحَةٌ عِنْدَ فِطْرِهِ وَفَرْحَةٌ عِنْدَ لِقَاءِ رَبِّهِ وَلَخُلُوفِ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ وَالصِّيَامُ جُنَّةٌ وَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمِ أَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفُثْ وَلَا يصخب وفإن سَابَّهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلْيَقُلْ إِنِّي امْرُؤٌ صَائِم "

1959. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इब्ने आदम के हर नेक अमल को दस गुना से सातसो गुना तक बढ़ा दिया जाता है, अल्लाह तआला फरमाता है, रोज़े के सिवा, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा दूंगा, वह अपने ख्वाहिश और अपने खाने को मेरी वजह से तर्क करता है, रोज़ेदार के लिए दो खुशिया है, एक फरहत ख़ुशी तो उस के इफ्तार के वक़्त है, जबकि एक ख़ुशी अपने रब से मुलाकात के वक़्त है और रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के यहाँ कस्तूरी की खुशबू से भी ज़्यादा बेहतर है, और रोज़ा ढाल है, जिस रोज़ तुम में से किसी का रोज़ा हो तो वह फहश गोई और हज़यान से बचा करे, अगर कोई उसे बुरा-भला कहे या उन से लड़ाई झगड़ा करे तो वह कहे की मैं रोज़ेदार हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1904) و مسلم (163164 / 1151)، (2706 و 2707)

كتاب الصَّوْم • रोज़ो का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٩٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ صُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ وَمَرَدَةُ الْجِنِّ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ النَّارِ فلم يفتح مِنْهَا بَاب الْجَنَّةِ فَلَمْ يُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ وَيُنَادِي مُنَادٍ: يَا بَاغِيَ الْخَيْرِ أَقْبِلْ وَيَا بَاغِيَ الشَّرِّ أقصر ن وَلِلَّهِ عُتَقَاءُ مِنَ النَّارِ وَذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

1960. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतान और सरकश जिन्नो को जकड़ दिया जाता है, जहन्नम के तमाम दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं उनमें से कोई दरवाज़ा नहीं खोला जाता और जन्नत के तमाम दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उनमें से कोई दरवाज़ा बंद नहीं किया जाता और मुनादी (एलान) करने वाला एलान करता है खैर व भलाई के तालिब आगे बढ़ और शर के तालिब रुक जा और अल्लाह के लिए जहन्नम से आज़ाद करदा लोग है और हर रात ऐसे होता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (682 وقال :’’ هذا حديث غريب ‘‘ كما ياتى : 1961) و ابن ماجه (1642) * الاعمش عنعن و الحديث الآتى (1961) يغنى عنه

١٩٦١ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن رجل وَقَالَ التِّرْمِذِيّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

1961. और इमाम अहमद ने इसे किसी सहाबी से रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواہ احمد (4 / 311312 ح 18794 عن النبی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم بلفظ :'' فی رمضان تفتح ابواب السماء و تغلق ابواب النار و یصفد فیہ کل شیطان مرید و ینادی مناد کل لیلۃ : یا طالب الخیر ھلم و یا طالب الشر امسک'' و سندہ حسن) و انظر الحدیث السابق (1956)



रोज़ो का बयान • كتاب الصَّوْم

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٩٦٢ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُبَارَكٌ فَرَضَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ تُفْتَحُ فِيهِ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَتُغْلَقُ فِيهِ أَبْوَابُ الْجَحِيمِ وَتُغَلُّ فِيهِ مَرَدَةُ الشَّيَاطِينِ لِلَّهِ فِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَ خَيْرَهَا فَقَدْ حُرِمَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ

1962. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माहे मुबारक रमज़ान तुम्हारे पास आया है, अल्लाह ने उस का रोज़ा तुम पर फ़र्ज़ किया है, उस में आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और सरकश शैतान बंद कर दिए जाते हैं, इस (माह) में एक रात हज़ार महीनो से बेहतर है, जो शख़्स उसकी खैर व भलाई से महरूम कर दिया गया तो वह (हर खैर व भलाई से) महरूम कर दिया गया”| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (2 / 230 ح 7418) و النسائی (4 / 129 ح 2108)

١٩٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الصِّيَامُ وَالْقُرْآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَقُولُ الصِّيَامُ: أَيْ رَبِّ إِنِّي مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّهَوَاتِ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ وَيَقُولُ الْقُرْآنُ: مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِي فِيهِ فيشفعان ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

1963. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ा और कुरान बंदे के लिए सिफारिश करेंगे, रोज़ा अर्ज़ करेगा रब जी! मैंने दिन के वक़्त खाने पीने और ख्वाहिशात से इसे रोक रखा, उस के मुतल्लिक मेरी सिफारिश कबूल फरमा और कुरान अर्ज़ करेगा मैंने इसे रात के वक़्त सोने से रोके रखा, उस के मुतल्लिक मेरी सिफारिश कबूल फरमा इन दोनों की सिफारिश कबूल की जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (1994 ، نسخۃ محققۃ : 1839) [و احمد (2 / 174) و صححہ الحاکم علی شرط مسلم (1 / 554 ح 2036) و وافقہ الذھبی و سندہ حسن] * ابن لھیعۃ لم ینفرد بہ ، تابعہ عبداللہ بن وھب : أخبرنی حی بن عبداللہ بہ

١٩٦٤ - (حسن) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: دَخَلَ رَمَضَانُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ هَذَا الشَّهْرَ قَدْ حَضَرَكُمْ

وَفِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مَنْ أَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَهَا فَقَدْ حُرِمَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَلَا يُحْرَمُ خَيْرَهَا إِلَّا كل محروم» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

1964. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रमज़ान आया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये महीने जो तुम्हारे पास आया है उस में एक रात है जो के हज़ार महीनो से बेहतर है और जो शख़्स उस से महरूम कर दिया गया तो वह हर किस्म की खैर व भलाई से महरूम कर दिया गया और उसकी खैर से महरूम शख़्स हर किस्म की खैर व भलाई से महरूम है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1644) * قتادة عنعن و لحديثه شاهد منقطع عند النسائى (2108) و مرسل عند عبدالرزاق (7383)

١٩٦٥ - (ضَعِيف) وَعَن سلمَان قَالَ: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ يَوْمٍ ص:٦١ مِنْ شَعْبَانَ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ أَظَلَّكُمْ شَهْرٌ عَظِيمٌ مُبَارَكٌ شَهْرٌ فِيهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مَنْ أَلْفِ شهر جعل الله تَعَالَى صِيَامَهُ فَرِيضَةً وَقِيَامَ لَيْلِهِ تَطَوُّعًا مَنْ تَقَرَّبَ فِيهِ بخصلة من الْخَيْرِ كَانَ كَمَنْ أَدَّى فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ وَمَنْ أَدَّى فَرِيضَةً فِيهِ كَانَ كَمَنْ أَدَّى سَبْعِينَ فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ وَهُوَ شَهْرُ الصَّبْرِ وَالصَّبْر ثَوَابه الْجنَّة وَشهر الْمُوَاسَاة وَشهر يزْدَاد فِيهِ رِزْقُ الْمُؤْمِنِ مَنْ فَطَّرَ فِيهِ صَائِمًا كَانَ لَهُ مَغْفِرَةً لِذُنُوبِهِ وَعِتْقَ رَقَبَتِهِ مِنَ النَّارِ وَكَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَجْرِهِ شَيْءٌ» قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَيْسَ كلنا يجد مَا نُفَطِّرُ بِهِ الصَّائِمَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُعْطِي اللَّهُ هَذَا الثَّوَابَ مَنْ فَطَّرَ صَائِمًا عَلَى مَذْقَةِ لَبَنٍ أَوْ تَمْرَةٍ أَوْ شَرْبَةٍ مِنْ مَاءٍ وَمَنْ أَشْبَعَ صَائِمًا سَقَاهُ اللَّهُ مِنْ حَوْضِي شَرْبَةً لَا يَظْمَأُ حَتَّى يَدْخُلَ الْجَنَّةَ وَهُوَ شَهْرٌ أَوَّلُهُ رَحْمَةٌ وَأَوْسَطُهُ مَغْفِرَةٌ وَآخِرُهُ عِتْقٌ مِنَ النَّارِ وَمَنْ خَفَّفَ عَنْ مَمْلُوكِهِ فِيهِ غَفَرَ الله لَهُ وَأَعْتقهُ من النَّار» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

1965. सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने शाबान के आखिरी रोज़ हमें ख़िताब करते हुए फ़रमाया: “लोगो! एक बा बरकत माह अज़ीम तुम पर साया किया हुआ है, उस में एक रात हज़ार महीनो से बेहतर है, अल्लाह ने उस का रोज़ा फ़र्ज़ और रात का कयाम नफ्ल करार दिया है, जिस ने उस में कोई नफ्ल काम किया तो वह उस के अलावा बाकी महिनो में फ़र्ज़ अदा करने वाले की तरह है, और जिस ने उस में फ़र्ज़ अदा किया तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने उस के अलावा महिनो में सत्तर फ़र्ज़ अदा किए, वह माह सब्र है, जब के सब्र का सवाब जन्नत है, वह गम गसारी का महीने है, उस में मोमिन का रीज़्क बढ़ा दिया जाता है, जो उस में किसी रोज़दार को इफ्तारी कराए तो वह उस के गुनाहों की मगफिरत का और जहन्नम से आज़ादी का सबब होगी, और इसे भी इस रोज़ादार की मिस्ल सवाब मिलता है, और उस के अज़र में कोई कमी नहीं की जाती”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम सब यह इस्तिताअत नहीं रखते के हम रोज़दार को इफ्तारी कराए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह यह सवाब इस शख़्स को भी अता फरमा देता है जो लस्सी के घूंट या एक खजूर या पानी के एक घूंट से किसी रोज़दार की इफ्तारी कराता है, और जो शख़्स किसी रोज़दार को शक्म सैर कर देता है तो अल्लाह इसे मेरे हौज़ से पानी पिलाएगा, तो उसे जन्नत में दाखिल हो जाने तक प्यास नहीं लगेगी और वह ऐसा महीने है जिस का अव्वल अशरा रहमत उस का बिच मगफिरत और उस का आख़िर जहन्नम से खलासी है, और जो शख़्स उस में अपने ममलुक से रिआयत बरतेगा तो अल्लाह उसकी मगफिरत फरमादेगा और इसे जहन्नम से आज़ाद कर देगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3608) [و ابن خزيمة فى صحيحه (3 / 191192 ح 1887 وقال : ان صح الخير] * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف وله شاهد ضعيف جدًا عند ابن عدى (3 / 1157) و العقيلى (2 / 162) و غيرهما ، فيه سلام بن سليمان بن سوار منكر الحديث و سلمة بن الصلت : ليس بالمعروف وقال العقيلى : لا اصل له

١٩٦٦ - (ضَعِيف جدا) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ أَطْلَقَ كُلَّ أَسِيرٍ وَأَعْطَى كُلَّ سَائِلٍ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

1966. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब माहे रमज़ान आते तो रसूलुल्लाह ﷺ हर कैदी को आज़ाद फरमा देते और हर साइल को अता किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (3629) * فیه ابوبکر الهذلی : متروک

١٩٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْجَنَّةَ تُزَخْرَفُ لِرَمَضَانَ مِنْ رَأْسِ الْحَوْلِ إِلَى حَوْلٍ قَابِلٍ» . قَالَ: " فَإِذَا كَانَ أَوَّلُ يَوْمٍ مِنْ رَمَضَانَ هَبَّتْ رِيحٌ تَحْتَ الْعَرْشِ مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ عَلَى الْحُورِ الْعِينِ فَيَقُلْنَ: يَا رَبِّ ص:٦١ اجْعَلْ لَنَا مِنْ عِبَادِكَ أَزْوَاجًا تَقَرُّ بِهِمْ أَعْيُنُنَا وَتَقَرُّ أَعْيُنُهُمْ بِنَا ". رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

1967. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत को रमज़ान के लिए पूरा साल सजावट किया जाता है” फ़रमाया: “जब रमज़ान का पहला दिन होता है तो अर्श के नीचे जन्नत के पत्तो से हवा चलती हुई हवर-ईन तक पहुँचती है तो वह कहती है रब जी! अपने बंदो में से हमारे शौहर बना दे हम उन से अपनी आँखें ठंडी करे और वह हम से अपने आँखे ठंडी करे”,इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की हैं| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (3633) * فیه ولید بن ولید : مختلف فیه و ضعفه راجح و للحدیث شواهد کثیرة لا یصح منها شی

١٩٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «يُغْفَرُ لِأُمَّتِهِ فِي آخِرِ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَهِيَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنَّ الْعَامِلَ إِنَّمَا يُوَفَّى أجره إِذا قضى عمله» . رَوَاهُ أَحْمد

1968. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “रमज़ान की आखिरी रात उनकी यानी मेरी उम्मत को बख्श दिया जाता है”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! क्या यह शबे कद्र है? फ़रमाया: “नहीं, लेकिन जब काम करने वाला अपना काम मुकम्मल कर लेता है तो इसे पूरा पूरा अज़्र दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 292 ح 7904) * فیه هشام بن ابی هشام متروک ، رواه عن محمد بن الاسود عن ابی سلمة عن ابی هریرة به

चाँद को देखने का बयान • بَاب رُؤْيَة الْهِلَال

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

١٩٦٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصُومُوا حَتَّى تَرَوُا الْهِلَالَ وَلَا تُفْطِرُوا حَتَّى تَرَوْهُ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَاقْدِرُوا لَهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «الشَّهْرُ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ لَيْلَةً فَلَا تَصُومُوا حَتَّى تَرَوْهُ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا الْعِدَّةَ ثَلَاثِينَ»

1969. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम रोज़ा न रखो हत्ता कि तुम (रमज़ान का) चाँद देख लो और रोज़ा रखना मौकूफ न करो हत्ता कि तुम इस हिलाल शव्वाल को देख लो, अगर मतला अबरा आलूद हो तो उस के लिए तीस दिन का) अंदाज़ा कर लो”, और एक रिवायत में है फ़रमाया: “माह उनतीस दिन का भी होता है,तुम रोज़ा न रखो हत्ता कि तुम इस हिलाल रमज़ान को देख लो अगर मतला अबरा आलूद हो तो फिर तीस की गिनती मुकम्मल कर लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (19061907) و مسلم (3 / 1080)، (2498)

١٩٧٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صُومُوا لِرُؤْيَتِهِ وَأَفْطِرُوا لِرُؤْيَتِهِ فَإِنْ غم عَلَيْكُم فَأَكْمِلُوا عِدَّةَ شَعْبَانَ ثَلَاثِينَ»

1970. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस हिलाल रमज़ान की रुइयत पर रोज़ा रखो और इस हिलाल शव्वाल की रुइयत पर रोज़ा रखना मौकूफ कर दो और अगर मतला अबरा आलूद हो तो फिर शाबान की गिनती तीस तक मुकम्मल कर लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1909) و مسلم (1820 / 1081)، (2515)

١٩٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أمة أُميَّة لَا تكْتب وَلَا تحسب الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا» . وَعَقَدَ الْإِبْهَامَ فِي الثَّالِثَةِ. ثُمَّ قَالَ: «الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا» . يَعْنِي تَمَامَ الثَّلَاثِينَ يَعْنِي مَرَّةً تِسْعًا وَعِشْرِينَ وَمرَّة ثَلَاثِينَ "

1971. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक हम उम्मियी लिखने पढ़ने से नाबलद लोग है, हम हिसाब किताब नहीं जानते, महीने इस तरह और इस तरह और इस तरह होता है” तीसरी मर्तबा आप ने अंगूठे को बंद कर लिया फिर फ़रमाया: “महीने इस तरह इस तरह और इस तरह होता है” यानी मुकम्मल तीस यानी आप ने एक मर्तबा उनतीस और एक मर्तबा तीस का ज़िक्र किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1913) و مسلم (15 / 1081)، (2511)

١٩٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " شَهْرَا عِيدٍ لَا يَنْقُصَانِ: رَمَضَانُ وَذُو الْحِجَّةِ "

1972. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ईद के दो महीने रमज़ान और ज़ुलहिज्जा कम नहीं होते”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1912) و مسلم (31 / 1089)، (2531)

١٩٧٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَقَدَّمَنَّ أَحَدُكُمْ رَمَضَانَ بِصَوْمِ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ رَجُلٌ كَانَ يَصُوم صوما فليصم ذَلِك الْيَوْم»

1973. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स रमज़ान से एक या दो दिन पहले रोज़ा न रखे अलबत्ता अगर कोई शख़्स मामूल से रोज़े रखता चला आ रहा है तो वह इस रोज़ रोज़ा रख ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1914) و مسلم (21 / 1082)، (2518)

بَاب رُؤْيَة الْهِلَال • चाँद को देखने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

١٩٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا انْتَصَفَ شَعْبَانُ فَلَا تَصُومُوا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

1974. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आधा शाबान हो जाए तो फिर रोज़ा न रखो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2237) و الترمذی (738 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (1651) و الدارمی (2 / 1718 ح 1747)

١٩٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أحصوا هِلَال شعْبَان لرمضان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1975. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रमज़ान की खातिर शाबान के चाँद अय्याम की गिनती करो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (687) * ابو معاوية مدلس و عنعن

١٩٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ إِلَّا شَعْبَانَ وَرَمَضَانَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

1976. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ को शाबान के अलावा दो माह लगातार रोज़े रखते हुए नहीं देखा| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2336) و الترمذى (736 وقال : حسن) و النسائى (4 / 150 ح 2177) و ابن ماجه (1648)

١٩٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: «مَنْ صَامَ الْيَوْمَ الَّذِي يُشَكُّ فِيهِ فَقَدَ عَصَى أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1977. अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जिस शख़्स ने शक के दिन का रोज़ा रखा तो उस ने अबुल कासिम ﷺ की नाफ़रमानी की| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2334) و الترمذى (686 وقال : حسن صحيح) و النسائى (4 / 153 ح 2190) و ابن ماجه (1654) و الدارمى (2 / 2 ح 1689) * ابو اسحاق عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

١٩٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: " جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ الْهِلَالَ يَعْنِي هِلَالَ رَمَضَانَ فَقَالَ: «أَتَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: ص:٦١ «أَتَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ؟» قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «يَا بِلَالُ أَذِّنْ فِي النَّاسِ أَن يَصُومُوا غَدا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

1978. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आराबी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने कहा, मैंने रमज़ान का चाँद देखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम गवाही देते हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं”, उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम गवाही देते हो के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! है”, उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “बिलाल लोगों में एलान कर दो की वह कल रोज़ा रखे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2340) و الترمذى (691) و النسائى (4 / 131132 ح 21142115) و ابن ماجه (1652) و الدارمى (2 / 5 ح 1699) * سماک ثقة صدوق لکن سلسلة سماک عن عکرمة : سلسلة ضعيفة ، انظر سير اعلام النبلاء (5 / 248) و غيره

١٩٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: تَرَاءَى النَّاسُ الْهِلَالَ فَأَخْبَرْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي رَأَيْتُهُ فَصَامَ وَأَمَرَ النَّاسَ بِصِيَامِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

1979. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, लोग चाँद देखने के लिए जमा हुए तो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को बताया की मैंने उस को देख लिया है, आप ने रोज़ा रखा और लोगों को भी रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2342) و الدارمی (2 / 4 ح 1698)

चाँद को देखने का बयान • بَاب رُؤْيَة الْهلَال

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

١٩٨٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَحَفَّظُ مِنْ شَعْبَانَ مَالَا يَتَحَفَّظُ مِنْ غَيْرِهِ. ثُمَّ يَصُومُ لِرُؤْيَةِ رَمَضَانَ فَإِنْ غُمَّ عَلَيْهِ عَدَّ ثَلَاثِينَ يَوْمًا ثُمَّ صَامَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1980. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ शाबान की गिनती का दीगर महीनो की निस्बत ज़्यादा इह्तेमाम किया करते थे, फिर आप रमज़ान का चाँद नज़र आने पर रोज़ा रखते अगर मतला अबरा आलूद होता तो आप तीस दिन की गिनती फरमाते फिर रोज़ा रखते| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2325)

١٩٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الْبَخْتَرِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا لِلْعُمْرَةِ فَلَمَّا نَزَلْنَا بِبَطْنِ نَخْلَةَ تَرَاءَيْنَا الْهِلَالَ. فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ. وَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ لَيْلَتَيْنِ فَلَقِينَا ابْنَ عَبَّاسٍ فَقُلْنَا: إِنَّا رَأَيْنَا الْهِلَالَ فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ ثَلَاثٍ وَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: هُوَ ابْنُ لَيْلَتَيْنِ. فَقَالَ: أَيُّ لَيْلَةٍ رَأَيْتُمُوهُ؟ قُلْنَا: لَيْلَةَ كَذَا وَكَذَا. فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَدَّهُ لِلرُّؤْيَةِ فَهُوَ لِلَيْلَةِ رَأَيْتُمُوهُ ص:٦١»» وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ. قَالَ: أَهَلَلْنَا رَمَضَانَ وَنَحْنُ بِذَاتِ عِرْقٍ فَأَرْسَلْنَا رَجُلًا إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إن الله تَعَالَى قد أَمَدَّهُ لِرُؤْيَتِهِ فَإِنْ أُغْمِيَ عَلَيْكُمْ فَأَكْمِلُوا الْعِدَّةَ» . رَوَاهُ مُسلم

1981. अबू अल बख्तरी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हम उमरा के लिए रवाना हुए, जब हमने बत्ने नख्ला के मक़ाम पर पड़ाव डाला तो हम चाँद देखने के लिए इकट्ठे हुए तो कुछ लोगों ने कहा यह तीसरी रात का है, किसी ने कहा दूसरी रात का है, हम इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मिले तो हमने कहा, हम ने चाँद देखा तो किसी ने कहा वह तीसरी रात का है और किसी ने कहा दूसरी रात का है, उन्होंने ने फ़रमाया: तुमने किस रात इसे देखा था, हमने कहा फलां फलां रात, उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने इस रमज़ान की मुद्दत उसकी रुइयत मुकर्रर की है, वह रमज़ान इस रात से शुरू होता है जिस रात तुम उसे देखो और अबू अल बख्तरी रहिमहुल्लाह

की एक दूसरी रिवायत में है उन्होंने कहा, हम ने ज़ात अर्क के मक़ाम पर रमज़ान का चाँद देखा, तो हमने मसअला दरियाफ्त करने के लिए एक आदमी को इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के पास भेजा तो उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने इस शाबान को इस हिलाल रमज़ान की रुइयत तक दराज़ किया है, अगर मतला अबरा आलूद हो तो गिनती को मुकम्मल कर लो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2930 / 1088)، (2529 و 2530)

بَاب فِي مسَائِل مُتَفَرِّقَة من كتاب الصَّوْم • रोज़े से मुतल्लिक मुतफ़र्रिक मसाइल का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٩٨٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بركَة»

1982. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सहरी खाया करो क्योंकि सहरी खाने में बरकत है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1923) و مسلم (45 / 1095)، (2549)

١٩٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَصْلُ مَا بَيْنَ صِيَامِنَا وَصِيَامِ أَهْلِ الْكِتَابِ أَكْلَةُ السَّحَرِ» . رَوَاهُ مُسلم

1983. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारे और अहले किताब के रोज़ो में सहरी खाने का फर्क है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (46 / 1096)، (2550)

١٩٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ النَّاسُ بِخَيْرٍ مَا عَجَّلُوا الْفِطْرَ»

1984. सहल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तक लोग इफ्तारी करने में जल्दी करते रहेंगे वह खैर व भलाई पर रहेंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (1957) و مسلم(48 / 1098)، (2554)

١٩٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَقْبَلَ اللَّيْل من هَهُنَا وَأدبر النَّهَار من هَهُنَا وَغَرَبَتِ الشَّمْسُ فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ»

1985. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब रात इस तरफ से जाए और दिन इस तरफ पलट जाए और सूरज गुरूब हो जाए तो रोज़दार को चाहिए के वह इफ्तार करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1954) و مسلم (51 / 1100)، (2558)

١٩٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْوِصَالِ فِي الصَّوْمِ. فَقَالَ لَهُ رجل: إِنَّك تواصل يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: وَأَيُّكُمْ مِثْلِي إِنِّي أَبَيْتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي ويسقيني "

1986. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रोज़ो में विसाल करने से मना फ़रमाया तो किसी आदमी ने आप से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप तो विसाल फरमाते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से कौन मेरी तरह है, मैं रात को सोता हूँ तो मेरा रब मुझे खीला पिला देता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1965) و مسلم (57 / 1103)، (2566)

بَاب فِي مسَائِل مُتَفَرِّقَة من كتاب الصَّوْم — रोज़े से मुतल्लिक मुतफ़र्रिक मसाइल का बयान

الْفَصْل الثَّانِي — दूसरी फस्ल

١٩٨٧ - (صَحِيح) عَن حَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَجْمَعِ الصِّيَامَ قَبْلَ الْفَجْرِ فَلَا صِيَامَ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمَيُّ وَقَالَ أَبُو دَاوُد: وَقفه على حَفْصَة معمر والزبيدي وَابْنُ عُيَيْنَةَ وَيُونُسُ الْأَيْلِيُّ كُلُّهُمْ عَنِ الزُّهْرِيِّ

1987. हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स तुलुअ ए फज्र से पहले रोज़े की नियत न करे तो उस का रोज़ा नहीं”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, दारमी और अबू दावुद ने फ़रमाया: मअमर ज़ुबैदी इब्ने उयेना और युनुस अयली ने इस हदीस को हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा पर मौक़ूफ करार दिया है और इन सब ने ज़ुहरी से रिवायत किया है | (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواه الترمذی (730) و ابوداؤد (2454) و النسائی (4 / 196 ح 2334) و الدارمی (2 / 67 ح 1705) * ابن شھاب الزھری مدلس و عنعن و الموقوف صحیح، انظر سنن النسائی (2338 ، 2345)

١٩٨٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَمِعَ النِّدَاءَ أَحَدُكُمْ وَالْإِنَاءُ فِي يَدِهِ فَلَا يَضَعْهُ حَتَّى يَقْضِيَ حَاجَتَهُ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1988. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई आज़ान फज्र सुने और खाने पीने का) बर्तन उस के हाथ में हो तो वह अपने ज़रूरत पूरी करने के बाद इसे नीचे रखे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2350)

١٩٨٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَحَبُّ عِبَادِي إِلَيَّ أَعْجَلُهُمْ فطرا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

1989. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है, मुझे अपने वह बंदे ज़्यादा महबूब है जो उनमें से इफ्तार करने में जल्दी करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (700701 وقال : حسن غریب) * الولید بن مسلم و الزھری مدلسان و عنعنا

١٩٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَفْطَرَ أَحَدُكُمْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى تَمْرٍ فَإِنَّهُ بَرَكَةٌ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى مَاءٍ ص:٦٢ فَإِنَّهُ طَهُورٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ. وَلَمْ يَذْكُرْ: «فَإِنَّهُ بَرَكَةٌ» غَيْرُ التِّرْمِذِيِّ

1990. सलमान बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई इफ्तार करे तो वह खजूर से इफ्तार करे क्योंकि वह बाईस ए बरकत है, अगर वह न पाए तो फिर पानी से इफ्तार कर ले क्योंकि वह बाईस तहारत है”| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, दारमी लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा “ क्योंकि वह बाईस ए बरकत है” सिर्फ इमाम तिरमिज़ी ने यह अल्फाज़ एक दूसरी रिवायत से नकल किए है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 1718 ح 16326 ، 16328 ، 16332) و الترمذی (658 وقال : حسن) و ابوداؤد (2355) و ابن ماجه (1699) و الدارمی (2 / 7 ح 1708)

١٩٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُفْطِرُ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَى رطبات فَإِن لم تكن فتميرات فإنلم تكن تُمَيْرَات حسى حَسَوَاتٍ مِنْ مَاءٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب

1991. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, “नबी ﷺ नमाज़ ए मग़रिब पढ़ने से पहले चंद ताज़ा खजूरो से इफ्तार किया करते थे, अगर ताज़ा खजूरे न होती तो फिर चंद छुवारो से, और अगर छुवारे न होते तो फिर पानी

के चंद घूंट पि लिया करते थे”| तिरमिज़ी, अबू दावुद और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (696) و ابوداؤد (2356)

١٩٩٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من فَطَّرَ صَائِمًا أَوْ جَهَّزَ غَازِيًا فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِهِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَمُحْيِي السّنة فِي شرح السّنة وَقَالَ صَحِيح

1992. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी रोज़दार का रोज़ा इफ्तार कराए या किसी मुजाहिद की तय्यारी करा दे, तो उसे भी इस रोजादार या मुजाहिद की मिस्ल अज़र मिलता है” बयहकी की शौबुल ईमान और मुह्यी अल सुन्नी ने शरह सुन्ना में रिवायत किया और उन्होंने कहा: यह रिवायत सहीह है”| (हसन)

حسن ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (3953 ، نسخۃ محققۃ : 3667 ، السنن الکبریٰ لہ 4 / 240) و البغوی فی شرح السنۃ (6 / 377 ح 18181819) * سفیان الثوری مدلس و عنعن و للحدیث شواھد عند الترمذی (807 ، 1630) و ابن حبان (الاحسان : 4611 / 4630) و غیرہ

١٩٩٣ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَفْطَرَ قَالَ: «ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ الله» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

1993. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ रोज़ा इफ्तार करते तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे: “प्यास जाती रही रगे तर हो गई और अगर अल्लाह ने चाहा तो अज़र साबित हो गया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2357)

١٩٩٤ - (حسن) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ زُهْرَةَ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَفْطَرَ قَالَ: «اللَّهُمَّ لَكَ صَمْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ أَفْطَرْتُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد مُرْسلا

1994. मुआज़ बिन जुहरा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि नबी ﷺ जब इफ्तार करते तो आप ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थे: “अल्लाह मैंने तेरी ही लिए रोज़ा रखा और तेरे ही रीज़्क से इफ्तार किया”| अबू दावुद ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2358) * السند مرسل

• بَاب فِي مسَائِل مُتَفَرِّقَة من كتاب الصَّوْم — रोज़े से मुतल्लिक मुतफ़र्रिक मसाइल का बयान

• الْفَصْل الثَّالِث — तीसरी फस्ल

١٩٩٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَزَالُ الدِّينُ ظَاهِرًا مَا عَجَّلَ النَّاسُ الْفِطْرَ لِأَنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى يُؤَخِّرُونَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

1995. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तक लोग इफ्तार करने में जल्दी करते रहेंगे दीन ग़ालिब रहेगा क्योंकि यहूद व नसारा इफ्तार करने में ताखीर करते हैं”| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (2353) و ابن ماجه (1698)

١٩٩٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي عَطِيَّةَ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَمَسْرُوقٌ عَلَى عَائِشَةَ فَقُلْنَا: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ رَجُلَانِ مِنْ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَدُهُمَا يُعَجِّلُ الْإِفْطَارَ وَيُعَجِّلُ الصَّلَاةَ وَالْآخَرُ: يُؤَخِّرُ الْإِفْطَارَ وَيُؤَخِّرُ الصَّلَاةَ. قَالَتْ: أَيُّهُمَا يُعَجِّلُ الْإِفْطَارَ وَيُعَجِّلُ الصَّلَاةَ؟ قُلْنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ. قَالَتْ: هَكَذَا صَنَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْآخَرُ أَبُو مُوسَى. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

1996. अबू अतिय्या रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं और मसरुक आइशा रदियल्लाहु अन्हा की खिदमत में हाज़िर हुए तो हमने अर्ज़ किया: उम्मुल मुअमिनिन मुहम्मद ﷺ के सहाबा में से दो आदमी है उनमें से एक जल्दी इफ्तार करते हैं और जल्दी ही नमाज़ ए मग़रिब पढ़ते है, जबकि दूसरे देर से इफ्तार करते हैं और देर से नमाज़ पढ़ते है, उन्होंने ने फ़रमाया: उनमें से कौन जल्द इफ्तार करता है और जल्द नमाज़ पढ़ता है, हमने अर्ज़ किया: अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने भी ऐसे ही किया जबकि दूसरे अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु है| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (49 / 1099)، (2556)

١٩٩٧ - (حسن) وَعَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ قَالَ: دَعَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى السَّحُورِ فِي رَمَضَانَ فَقَالَ: «هَلُمَّ إِلَى الْغَدَاءِ الْمُبَارَكِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والنسائي

1997. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रमज़ान में मुझे सहरी की दावत देते हुए फ़रमाया: “मुबारक खाने की तरफ आओ”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2344) و النسائی (4 / 145 ح 2165)

١٩٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ سَحُورُ الْمُؤْمِنَ التَّمْرُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

1998. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन की बेहतरीन सहरी खजूर है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2345)

باب تَنْزِيه الصَّوْم • उन कामो का बयान जिन से रोज़े की हालत में बचना चाहिए

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

١٩٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّورِ وَالْعَمَلَ بِهِ فَلَيْسَ لِلَّهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابه» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

1999. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स रोज़े की हालत में झूठ और बुरे आमाल तर्क नहीं करता तो अल्लाह को कोई हाजत नहीं के वह शख़्स अपना खाना पीना छोड़ दे"| (बुखारी)

رواه البخاری (1903)

٢٠٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَبِّلُ وَيُبَاشِرُ وَهُوَ صَائِمٌ وَكَانَ أَمْلَكَكُمْ لأربه

2000. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ रोज़ा की हालत में बोसा ले लिया करते थे और गले मिल लिया करते थे और आप अपने ख्वाहिश पर तुम से ज़्यादा काबू रखने वाले थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1927) و مسلم (65 / 1106)، (2576)

٢٠٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُدْرِكُهُ الْفَجْرُ فِي رَمَضَانَ وَهُوَ جُنُبٌ مِنْ غَيْرِ حُلْمٍ فَيَغْتَسِلُ وَيَصُومُ

2001. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को रमज़ान में कभी जिमाअ की वजह से हालत जनाबत में सुबह हो जाती तो आप ग़ुस्ल करते और फिर रोज़ा रखते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1930) و مسلم (76 / 1109)، (2590)

٢٠٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ احْتَجَمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ وَاحْتَجَمَ وَهُوَ صَائِمٌ

2002. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने इहराम और रोज़ा की हालत में पछने (हिजामा) लगवाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1938) و مسلم (87 / 1202)، (2885)

٢٠٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من نسي وَهُوَ صَائِم فأل أَوْ شَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللَّهُ وسقاه»

2003. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स भूल जाए के वह रोज़े से है और वह खा ले या पि ले तो वह अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि इसे तो अल्लाह ने खिलाया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1933) و مسلم (171 / 1155)، (2716)

٢٠٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُول الله هَلَكت. قَالَ: «مَالك؟» قَالَ: وَقَعْتُ عَلَى امْرَأَتِي وَأَنَا صَائِمٌ. ص:٦٢ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ تَجِدُ رَقَبَةً تُعْتِقُهَا؟» . قَالَ: لَا قَالَ: «فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «هَلْ تَجِدُ إِطْعَامَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟» قَالَ: لَا. قَالَ: «اجْلِسْ» وَمَكَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَبينا نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ أُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ وَالْعَرَقُ الْمِكْتَلُ الضَّخْمُ قَالَ: «أَيْنَ السَّائِلُ؟» قَالَ: أَنَا. قَالَ: «خُذْ هَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ» . فَقَالَ الرَّجُلُ: أَعَلَى أَفْقَرَ مِنِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَوَاللَّهِ مَا بَيْنَ لَابَتَيْهَا يُرِيدُ الْحَرَّتَيْنِ أَهْلُ بَيْتٍ أَفْقَرُ م أَهْلِ بَيْتِي. فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى بَدَتْ أَنْيَابُهُ ثُمَّ قَالَ: «أَطْعِمْهُ أهلك»

2004. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की इतने में एक आदमी ने आप की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में तो मारा गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें क्या हुआ ?” उस ने अर्ज़ किया, मैं रोज़े की हालत में अपने अहलिया से जिमाअ कर बैठा हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम्हारे पास कोई गुलाम है जिसे तू आज़ाद कर दे ?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम लगातार दो माह रोज़े रख सकते ह ?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम साठ मिस्कीनो को खाना खिला सकते हो?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बैठ जाओ”, पस

नबी ﷺ ने तवक्क़फ़ फ़रमाया, हम इसी असना में थे की खजूरो का एक बड़ा टोकरा नबी ﷺ की खिदमत में पेश किया गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मसअला दरियाफ्त करने वाला कहाँ है" इस शख़्स ने अर्ज़ किया, मैं हाज़िर हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये लो इसे सदका कर दो", इस आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मैं अपने से ज़्यादा मुहताज शख़्स पर सदका करू? अल्लाह की क़सम! (मदीना में) दो पथरिले किनारों के दरमियान कोई ऐसा घर नहीं जो मेरे घरवालो से ज़्यादा ज़रूरत मंद हो (यह सुन कर) नबी ﷺ इस क़दर हँसे के आप के दांत मुबारक ज़ाहिर हो गए फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे अपने घरवालो को खिलाओ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1936) و مسلم (181 / 1111)، (2595)

بَاب تَنْزِيه الصَّوْم • उन कामो का बयान जिन से रोज़े की हालत में बचना चाहिए

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٠٠٥ - (ضَعِيف) عَن عَائِشَة: أَن النبي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يُقَبِّلُهَا وَهُوَ صَائِم ويمص لسنانها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2005. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ रोज़ा की हालत में कभी उनका बोसा ले लिया करते थे और उन की ज़ुबान चूस लिया करते थे| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2386) * فیہ محمد بن دینار صدوق لکنہ اختلط

٢٠٠٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ إِنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْمُبَاشَرَةِ لِلصَّائِمِ فَرخص لَهُ. وَأَتَاهُ آخَرُ فَسَأَلَهُ فَنَهَاهُ فَإِذَا الَّذِي رَخَّصَ لَهُ شَيْخٌ وَإِذَا الَّذِي نَهَاهُ شَابٌّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2006. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है किसी आदमी ने रोज़दार के लिए अपने अहलिया से गले मिलने के बारे में नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ने इसे रुखसत इनायत फरमा दी, फिर एक और आदमी आया और उस ने आप से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ने इसे रोक दिया, जिस शख़्स को रुखसत इनायत फरमाई थी वह बुढा आदमी था और जिसे रोक दिया था वह एक नोजवान शख़्स था| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2387)

٢٠٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من ذرعه الْقَيْء وَهُوَ ص:٦٢ صَائِمٌ فَلَيْسَ عَلَيْهِ قَضَاءٌ وَمَنِ اسْتَقَاءَ عَمْدًا فَلْيَقْضِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ

غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ عِيسَى بْنِ يُونُس. وَقَالَ مُحَمَّد يَعْنِي البُخَارِيّ لَا أَرَاهُ مَحْفُوظًا

2007. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को रोज़ा की हालत में कै आजाए तो उस पर कोई कज़ा नहीं और जो शख़्स जान बुझकर कै करे तो वह (रोज़े की) कज़ा करे”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, हम इसा बिन युनुस से मरवी हदीस के हवाले से ही इसे जानते हैं जबकि मुहम्मद यानी इमाम बुखारी ने फ़रमाया: में उसे महफ़ूज़ नहीं समझता| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (720) و ابوداؤد (2380) و ابن ماجه (1676) و الدارمی (2 / 14 ح 1736) * هشام بن حسان مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٢٠٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَعْدَانَ بْنِ طَلْحَةَ أَنَّ أَبَا الدَّرْدَاءِ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَاءَ فَأَفْطَرَ. قَالَ: فَلَقِيتُ ثَوْبَانَ فِي مَسْجِدِ دِمَشْقَ فَقُلْتُ: إِنَّ أَبَا الدَّرْدَاءِ حَدَّثَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَاءَ فَأَفْطَرَ. قَالَ: صَدَقَ وَأَنَا صَبَبْتُ لَهُ وضوءه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ والدارمي

2008. मअदान बिन तल्हा से रिवायत है के अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु ने इसे हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ ने कै की तो आप ने रोज़ा इफ्तार कर लिया, रावी बयान करते हैं, मैं दमिश्क की मस्जिद में सौबान से मिला तो मैंने कहा के अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे हदीस बयान की है के रसूलुल्लाह ﷺ ने कै की तो आप ने रोज़ा इफ्तार कर लिया उन्होंने कहा: उन्होंने (यानी अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु ने) ठीक कहा है और मैंने आप के लिए आप के वुज़ू का पानी उंडेला था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2381) و الترمذی (87)

٢٠٠٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مَا لَا أُحْصِي يَتَسَوَّكُ وَهُوَ صَائِمٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2009. आमिर बिन रबिआ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अनगिनत मर्तबा नबी ﷺ को रोज़ा की हालत में मिस्वाक करते हुए देखा है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (725) و ابوداؤد (2364) * عاصم بن عبيد الله ضعيف

٢٠١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اشتكيت عَيْنِي أَفَأَكْتَحِلُ وَأَنَا صَائِمٌ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ وَأَبُو عَاتِكَةَ الرَّاوِي يضعف

2010. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़

किया, मुझे आशूब ए चशम हो गया, मैं रोज़ा की हालत में सुरमा डाल लूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, तिरमिज़ी और उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी इसनाद क़वी नहीं, अबू आतिक रावी जईफ है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الترمذی (726) * ابو عاتکۃ ضعیف

٢٠١١ - (صَحِيح) وَعَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْعَرْجِ يَصُبُّ عَلَى رَأْسِهِ الْمَاءَ وَهُوَ صَائِمٌ مِنَ الْعَطَشِ أَوْ مِنَ الْحَرِّ. رَوَاهُ مَالك

2011. नबी ﷺ के किसी सहाबी से रिवायत है उन्होंने कहा, मैंने मक़ाम अरज पर नबी ﷺ को हालत ए रोज़ा में प्यास या गर्मी की वजह से सर पर पानी डालते हुए देखा| (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (1 / 294 ح 660) و ابوداؤد (2365)

٢٠١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى رَجُلًا بِالْبَقِيعِ وَهُوَ يَحْتَجِمُ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِي لِثَمَانِيَ عَشْرَةَ خَلَتْ مِنْ رَمَضَانَ فَقَالَ: «أَفْطَرَ ص:٦٢ الْحَاجِمُ وَالْمَحْجُومُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ. قَالَ الشَّيْخُ الْإِمَامُ مُحْيِي السُّنَّةِ رَحِمَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ: وَتَأَوَّلَهُ بَعْضُ مَنْ رَخَّصَ فِي الْحِجَامَةِ: أَيْ تَعَرَّضَا لِلْإِفْطَارِ: الْمَحْجُومُ لِلضَّعْفِ وَالْحَاجِمُ لِأَنَّهُ لَا يَأْمَنُ مِنْ أَنْ يَصِلَ شَيْءٌ إِلَى جَوْفِهِ بمص الملازم

2012. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ बकी में एक आदमी के पास से गुज़रे जब के वह पछने (हिजामा) लगवा रहा था, आप मेरा हाथ थामे हुए थे और रमज़ान की अठरा तारीख थी आप ﷺ ने फ़रमाया: “पछने लगाने और लगाने वाले का रोज़ा टूट गया”| अबू दावुद, इब्ने माजा दारमी अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी ने फ़रमाया: और जिन बाज़ हज़रात ने रोज़ा की हालत में पछने (हिजामा) लगाने की इजाज़त दि है उन्होंने यह तावील की है के पछने (हिजामा) लगाने वाला कमज़ोरी की वजह से इफ्तार के करीब पहुँच जाता है, जब के पछने (हिजामा) लगाने वाला इस चूसने की वजह से पेट में कोई चीज़ पहुँचने से बच नहीं सकता| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (2369) و ابن ماجہ (1681) و الدارمی (2 / 14 ح 1737) [و انظر شرح السنۃ (6 / 304 بعد ح 1759]

٢٠١٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَفْطَرَ يَوْمًا مِنْ رَمَضَانَ مِنْ غَيْرِ رُخْصَةٍ وَلَا مَرَضٍ لَمْ يَقْضِ عَنْهُ صَوْمُ الدَّهْرِ كُلِّهِ وَإِنْ صَامَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَةِ بَابٍ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: سَمِعْتُ مُحَمَّدًا يَعْنِي الْبُخَارِيّ يَقُول. أَبُو الطوس الرَّاوِي لَا أَعْرِفُ لَهُ غَيْرَ هَذَا الْحَدِيثِ

2013. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी रुखसत (सफ़र वगैरा) और मर्ज़ के बगैर रमज़ान का एक रोज़ा छोड़ दे, तो फिर अगर वह पूरी जिंदगी रोज़े रखता रहे तो वह

इस एक दिन के रोज़े के अज्र व सवाब को नहीं पा सकता", अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा दारमी और इमाम बुखारी ने تَرْجَمَة بَاب (तरजुमतुल बाब) में रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: मैंने मुहम्मद यानी इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह को फरमाते हुए सुना, मैं अबुल मुतव्विस रावी को इस हदीस के अलावा नहीं जानता के उस ने कोई और हदीस भी रिवायत की हो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 386 ح 9002) و الترمذی (723) و ابوداؤد (23962397) و ابن ماجه (1672) و الدارمی (2 / 10 ح 1721) و البخاری (الصوم باب اذا جامع فی رمضان 29 قبل ح 1935 ، تعلیقاً) * ابو المطوس لین الحدیث و ابوه مجهول

٢٠١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَمْ مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ صِيَامِهِ إِلَّا الظَّمأُ وَكَمْ مِنْ قَائِمٍ لَيْسَ لَهُ من قِيَامه إِلَّا السهر» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2014. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कितने ही रोज़दार है जिन्हें अपने रोज़े से सिर्फ प्यास हासिल होती है और कितने ही कयाम करने वाले हैं जिन्हें अपने कयाम से जागने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता"| दरमि और लकिट बिन सबीर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस वुज़ू की सुन्नत में बयान की गई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (2 / 301 ح 2723) 0 حدیث لقیط بن صبرة تقدم (405)

باب تَنْزِيه الصَّوْم • उन कामो का बयान जिन से रोज़े की हालत में बचना चाहिए

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٠١٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثٌ لَا يُفْطِرْنَ ص:٦٢ الصَّائِمَ الْحِجَامَةُ وَالْقَيْءُ وَالِاحْتِلَامُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَيْرُ مَحْفُوظٍ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ زيد الرَّاوِي يضعف فِي الحَدِيث

2015. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन चीज़े रोज़ा नहीं तोड़ती, पछने, कै और इहतिलाम"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस महफ़ूज़ नहीं, अब्दुल रहमान बिन ज़ैद रावी हदीस में जईफ है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (719) * عبد الرحمن بن زید بن اسلم ضعیف جدًا عن ابیه و للحدیث شواهد ضعیفة

٢٠١٦ - (صَحِيح) وَعَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ قَالَ: سُئِلَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ: كُنْتُمْ تَكْرَهُونَ الْحِجَامَةَ لِلصَّائِمِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: لَا إِلَّا مِنْ أَجْلِ الضَّعْفِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2016. साबित बुनानी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया गया तुम रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में रोज़दार के पछने (हिजामा) लगाने को ना पसंद किया करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: नहीं, सिर्फ कमज़ोरी के पेश नज़र| (बुखारी)

رواه البخاری (1940)

٢٠١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبُخَارِيِّ تَعْلِيقًا قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ يَحْتَجِمُ وَهُوَ صَائِمٌ ثُمَّ تَرَكَهُ فَكَانَ يَحْتَجِمُ بِاللَّيْلِ

2017. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह से मुअल्लक रिवायत है उन्होंने कहा: इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रोज़ा की हालत में पछने (हिजामा) लगाया करते थे, फिर इसे तर्क कर दिया, फिर आप रात के वक़्त पछने (हिजामा) लगवाते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (الصوم باب : 32 قبل ح 1938)

٢٠١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَطاء قَالَ: إِن مضمض ثُمَّ أَفْرَغَ مَا فِي فِيهِ مِنَ الْمَاءِ لَا يضيره أَنْ يَزْدَرِدَ رِيقَهُ وَمَا بَقِيَ فِي فِيهِ وَلَا يَمْضُغُ الْعِلْكَ فَإِنِ ازْدَرَدَ رِيقَ الْعِلْكَ لَا أَقُولُ: إِنَّهُ يُفْطِرُ وَلَكِنْ يُنْهَى عَنْهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَةِ بَابٍ

2018. अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अगर कुल्ली करे फिर मुंह के पानी को गिरा दे तो फिर अगर वह अपना थूक और जो पानी उस के मुंह में बाकी रह गया था निगल ले तो उस के लिए मुज़िर नहीं, अलबत्ता वह गोंद न चबाए अगर वह गोंद का लुआब निगल ले तो मैं नहीं कहता के वह रोज़ा तोड़ लेगा, लेकिन इसे उस से रोका जाएगा”| इमाम बुखारी ने इसे तर्जुमतुल बाब में रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخاری (الصوم باب : 28 بعد ح 1934)

मुसाफिर के रोज़े का बयान • بَاب صَوْم الْمُسَافِر

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٠١٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ حَمْزَةَ بْنَ عَمْرٍو الْأَسْلَمِيَّ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصُومُ فِي السَّفَرِ وَكَانَ كَثِيرَ الصِّيَامِ. فَقَالَ: «إِنْ شِئْتَ فَصم وَإِن شِئْت فَأَفْطر»

2019. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि हम्ज़ा बिन अम्र असलमी रदियल्लाहु अन्हु बहोत ज़्यादा रोज़े रखा करते थे, उन्होंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, क्या मैं दौरान ए सफ़र रोज़ा रख लिया करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम चाहो तो रोज़ा रखो और अगर तुम चाहो तो न रखो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1943) و مسلم (103 / 1121)(2625)

٢٠٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم لِسِتَّ عَشْرَةَ مَضَتْ مِنْ شَهْرِ رَمَضَانَ فَمِنَّا مَنْ صَامَ وَمِنَّا مَنْ أَفْطَرَ فَلَمْ يَعِبِ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ. رَوَاهُ مُسلم

2020. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने सोलह रमज़ान को रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में जिहाद किया, हम में से कुछ ने रोज़ा रखा हुआ था और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा हुआ था ,रोज़दार ने रोज़ा न रखने वाले को मायूब समझा न इफ्तार करने वाले ने रोज़दार को मायूब समझा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 1116)، (2615)

٢٠٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَرَأَى زِحَامًا وَرَجُلًا قَدْ ظُلِّلَ عَلَيْهِ فَقَالَ: «مَا هَذَا؟» قَالُوا: صَائِمٌ. فَقَالَ: «لَيْسَ مِنَ الْبِرِّ الصَّوْمُ فِي السَّفَرِ»

2021. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र में थे की आप ने हुजूम और एक आदमी देखा, जिस पर साया किया हुआ है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे क्या हुआ ?” सहाबा ने अर्ज़ किया, रोज़दार है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सफ़र में रोज़ा रखना कोई नेकी नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1946) و مسلم (92 / 1115)، (2612)

٢٠٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي السَّفَرِ فَمِنَّا الصَّائِمُ وَمِنَّا الْمُفْطِرُ فَنَزَلْنَا مَنْزِلًا فِي وم حَارٍّ فَسَقَطَ الصَّوَّامُونَ وَقَامَ الْمُفْطِرُونَ فَضَرَبُوا الْأَبْنِيَةَ وَسَقَوُا الرِّكَابَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذَهَبَ الْمُفْطِرُونَ ص:٦٢ الْيَوْمَ بِالْأَجْرِ»

2022. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के साथ शरीक ए सफ़र थे, हम में से कुछ रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा हुआ था, एक सख्त गरम दिन में हमने एक जगह पड़ाव डाला तो रोजादार तो निढाल हो कर गिर पड़े, जबकि जिन लोगों ने रोज़ा नहीं रखा हुआ था वह खड़े हुए और उन्होंने खैमे लगाए और सवारियों को पानी पिलाया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज रोज़ा न रखने वाले अज़र ले गए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2890) و مسلم (100 / 1119)، (2622)

٢٠٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الْمَدِينَةِ إِلَى مَكَّةَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ عُسْفَانَ ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَرَفَعَهُ إِلَى يَدِهِ لِيَرَاهُ النَّاسُ فَأَفْطَرَ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ وَذَلِكَ فِي رَمَضَانَ. فَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ: قَدْ صَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَفْطَرَ. فَمن شَاءَ صَامَ وَمن شَاءَ أفطر "

2023. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए तो आप ने रोज़ा रखा हत्ता कि आप मक़ाम उस्फान पर पहुंचे तो आप ने पानी मंगवाया और इसे हाथ से बुलंद किया ताकि लोगों से देख लें, पस आप ने रोज़ा इफ्तार कर लिया हत्ता कि आप मक्का पहुँच गए और यह रमज़ान का वाकिए है, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे रसूलुल्लाह ﷺ ने दौरान ए सफ़र रोज़ा रखा भी है और इफ्तार भी किया है, जो चाहे रोज़ा रखे और जो चाहे न रखे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1948) و مسلم (88 / 1113)، (2604)

٢٠٢٤ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَة لمُسلم عَن جَابر رَضِي الله عَنهُ أَنه شرب بعد الْعَصْر

2024. सहीह मुस्लिम में जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रिवायत में है की आप ने असर के बाद पानी पिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (91 / 1114)، (2611)

بَاب صَوْم الْمُسَافِر • मुसाफिर के रोज़े का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٠٢٥ - (صَحِيح) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ الْكَعْبِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن اللَّهَ وَضَعَ عَنِ الْمُسَافِرِ شَطْرَ الصَّلَاةِ وَالصَّوْمَ عَنِ الْمُسَافِرِ وَعَنِ الْمُرْضِعِ وَالْحُبْلَى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2025. अनस बिन मालिक काबी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने मुसाफिर से आधी नमाज़ साकित फरमा दी, जबकि मुसाफ़िर, दूध पिलाने वाली और हामिला खातून से रोज़ा साकित फरमा दिया”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2408) و الترمذی (715 وقال : حسن) و النسائی (4 / 180 ح 2276) و ابن ماجه (1667)

٢٠٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْمُحَبِّقِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ لَهُ حَمُولَةٌ تَأْوِي إِلَى شِبْعٍ فَلْيَصُمْ رَمَضَانَ من حَيْثُ أدْركهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2026. सलमा बिन मुहब्बक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के पास सवारी हो जो शक्म सीरी के मक़ाम पर इसे पहुंचा दे वह रोज़े रखे जहाँ भी वह रमज़ान को पा ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (24102411) * عبد الصمد بن حبيب ضعيف ضعفه الجمهور و حبيب بن عبدالله : مجهول



मुसाफिर के रोज़े का बयान • بَاب صَوْم الْمُسَافِر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٠٢٧ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَامَ الْفَتْحِ إِلَى مَكَّةَ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ كُرَاعَ الْغَمِيمِ فَصَامَ النَّاسُ ثُمَّ دَعَا بِقَدَحٍ مِنْ مَاءٍ فَرَفَعَهُ حَتَّى نَظَرَ النَّاسُ إِلَيْهِ ثُمَّ شَرِبَ فَقِيلَ لَهُ بَعْدَ ذَلِكَ إِنَّ بَعْضَ النَّاسِ قَدْ صَامَ. فَقَالَ: «أُولَئِكَ الْعُصَاةُ أُولَئِكَ الْعُصَاةُ» . رَوَاهُ مُسلم

2027. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ फतह मक्का के साल रमज़ान में मक्का के लिए रवाना हुए तो आप ने रोज़ा रखा, हत्ता कि आप मक़ाम कुराअ अल गमिम पर पहुंचे, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने भी रोज़ा रखा हुआ था, फिर आप ने पानी का प्याला मंगाया, इसे बुलंद किया हत्ता कि सहाबा किराम ने इसे देख लिया, फिर आप ने इसे नोश फ़रमाया उस के बाद आप को बताया गया के बाज़ लोगों ने रोज़ा रखा हुआ है, अभी तक इफ्तार नहीं किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो नाफरमान है वह नाफरमान हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (90 / 1114)، (2610)

٢٠٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَائِمُ رَمَضَانَ فِي السَّفَرِ كَالْمُفْطِرِ فِي الْحَضَرِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2028. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दौरान ए सफ़र रमज़ान का रोज़ा रखने वाला हालत कयाम में रोज़ा न रखने वाले की तरह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1666) * ابو سلمة لم يسمع من ابيه كما قال على بن المدينى و احمد و ابن معين و غيرهم فالسند منقطع

٢٠٢٩ - (صَحِيح) وَعَن حَمْزَة بن عَمْرو السّلمِيّ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَجِدُ بِي قُوَّةً عَلَى الصِّيَامِ فِي السَّفَرِ فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ؟ قَالَ: «هِيَ رُخْصَةٌ مِنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ فَمَنْ أَخَذَ بِهَا فَحَسَنٌ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَصُومَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2029. हम्ज़ा बिन अम्र असलमी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में

दौरान ए सफ़र रोज़ा रखने की कुव्वत रखता हूँ तो क्या दौरान ए सफ़र रोज़ा रखने पर मुझे गुनाह होगा, आप ﷺ ने फ़रमाया:“ वह अल्लाह अज्ज़वजल की तरफ से एक रुखसत है, जिस ने इसे ले लिया तो उस ने अच्छा किया और जो शख़्स रोज़ा रखना चाहे तो उस पर कोई गुनाह नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (107 / 1121)، (2629)

باب الْقَضَاء • क़ज़ा रोज़ो का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٢٠٣٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ يَكُونُ عَلَيَّ الصَّوْمُ مِنْ رَمَضَانَ فَمَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقْضِيَ إِلَّا فِي شَعْبَانَ. قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ: تَعْنِي الشّغل من النَّبِي أَو بِالنَّبِيِّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم

2030. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मुझ पर रमज़ान के रोज़े होते तो मैं सिर्फ शाबान में इन की कज़ा दे सकती थी, याह्या बिन सईद बयान करते हैं, उनकी मुराद यह है कि कज़ा में ताखीर नबी ﷺ की मशगुलियत की वजह से थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1950) و مسلم (151 / 1146)، (2687)

٢٠٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ لِلْمَرْأَةِ أَنْ تَصُومَ وَزَوْجُهَا شَاهِدٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ وَلَا تَأْذَنَ فِي بَيْتِهِ إِلَّا بِإِذْنِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2031. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी औरत के लिए अपने खाविंद के पास होते हुए उसकी इजाज़त के बगैर नफ्ली रोज़ा रखना जाईज़ नहीं और वह उसकी इजाज़त के बगैर किसी को उस के घर में आने की इजाज़त न दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (84 / 1026)، (2370)

٢٠٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاذَةَ الْعَدَوِيَّةِ أَنَّهَا قَالَتْ لِعَائِشَةَ: مَا بَالُ الْحَائِضِ تَقْضِي الصَّوْمَ وَلَا تَقْضِي الصَّلَاةَ؟ قَالَتْ عَائِشَةُ: كَانَ يُصِيبُنَا ذَلِكَ فَنُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّوْمِ وَلَا نُؤْمَرُ بِقَضَاءِ الصَّلَاةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2032. मुआज़ अद्विय्या रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया, हाइज़ा का क्या मुआमला है के वह रोज़ा की कज़ा देती है और नमाज़ की कज़ा नहीं देती, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: हम भी उस से दो चार होती थी तो हमें रोज़े की कज़ा का हुक्म दिया जाता था, जबकि नमाज़

की कज़ा का हुक्म नहीं दिया जाता था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 335)، (763)

٢٠٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صَوْمٌ صَامَ عَنْهُ وليه»

2033. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स फौत हो जाए और उस के ज़िम्मे रोज़े हो तो उसकी तरफ से उस का वारिस रोज़े रखेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1952) و مسلم (153 / 1147)، (2692)

بَاب الْقَضَاء • क़ज़ा रोज़ो का बयान
الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٠٣٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامُ شَهْرِ رَمَضَانَ فَلْيُطْعَمْ عَنْهُ مَكَانَ كُلِّ يَوْمٍ مِسْكِينٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: وَالصَّحِيحُ أَنه مَوْقُوف على ابْن عمر

2034. नाफेअ रहिमहुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स फौत हो जाए और उस के ज़िम्मे माहे रमज़ान के रोज़े हो तो उसकी तरफ से हर रोज़े के बदले एक मिस्कीनो को खाना खिलाया जाए”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: दुरुस्त बात यह है कि यह अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा पर मौकूफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (718) * محمد بن عبد الرحمن بن ابى ليلى : ضعيف مشهور

بَاب الْقَضَاء • क़ज़ा रोज़ो का बयान
الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٠٣٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ مَالِكٍ بَلَغَهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يُسْأَلُ: هَلْ يَصُومُ أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ أَوْ يُصَلِّي أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ؟ فَيَقُولُ: لَا يَصُومُ أَحَدٌ عَنْ أَحَدٍ. وَلَا يُصَلِّي أَحَدٌ عَنْ أحد. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

2035. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैं उन्हें यह खबर पहुंची है के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से

मसअला दरियाफ्त किया गया था, क्या कोई शख़्स किसी दूसरे की तरफ से रोज़ा रख सकता है, या कोई किसी दूसरे शख़्स की तरफ से नमाज़ पढ़ सकता है, उन्होंने ने फ़रमाया: “कोई किसी की तरफ से रोज़ा रख सकता है न कोई किसी की तरफ से नमाज़ पढ़ सकता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (1 / 303 ح 681) * هذا منقطع ، من البلاغات و روی البيهقی (4 / 254) بسند صحيح عن ابن عمر قال :’’ لا يصوم احد عن احد و لکن تصدقوا عند من ماله للصوم لکل يوم مسکينًا ‘‘ و صححه البيهقی

باب صيام التطوع • नफ्ल रोज़ो का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٠٣٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ حَتَّى نَقُولَ: لَا يُفْطِرُ وَيُفْطِرُ حَتَّى نَقُولَ: لَا يَصُومُ وَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتكْمل صِيَام شهر قطّ إِلَّا رَمَضَانَ وَمَا رَأَيْتُهُ فِي شَهْرٍ أَكْثَرَ مِنْهُ صِيَامًا فِي شَعْبَانَ»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَتْ: كَانَ يَصُوم شعْبَان كُله وَكن يَصُوم شعْبَان إِلَّا قَلِيلا

2036. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ नफ्ली रोज़े मुसलसल रखते रहते हत्ता कि हम कहती के आप रोज़ा रखना तर्क नहीं करेंगे और आप रोज़ा रखना तर्क फरमा देते हत्ता कि हम कहती के आप रोज़ा नहीं रखेंगे, और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को माहे रमज़ान के सिवा किसी और महीने के मुकम्मल रोज़े रखते हुए नहीं देखा, और मैंने आप को शाबान के अलावा किसी और माह में ज़्यादा रोज़े रखते हुए नहीं देखा| एक दूसरी रिवायत में है आप बयान करती हैं, आप ﷺ पूरा शाबान रोज़े रखा करते थे और आप शाबान में ज़्यादा रोज़े रखा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1969) و مسلم (175176 / 1156)، (2717 و 2721)

٢٠٣٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ شَقِيقٍ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُوم شهرا كُله؟ قَالَ: مَا عَلِمْتُهُ صَامَ شَهْرًا كُلَّهُ إِلَّا رَمَضَانَ وَلَا أَفْطَرَهُ كُلَّهُ حَتَّى يَصُومَ مِنْهُ حَتَّى مضى لسبيله. رَوَاهُ مُسلم

2037. अब्दुल्लाह बिन शकिक बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से कहा क्या नबी ﷺ पूरा महीने रोज़े रखा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: में आप के बारे में नहीं जानती के आप ने रमज़ान के अलावा किसी माह के पुरे रोज़े रखे हो, और ऐसे भी नहीं के आप ने किसी माह में कोई रोज़ा न रखा हो बल्कि आप हर माह कुछ रोज़े रखते थे हत्ता कि आप वफात पा गए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (173 / 1156)، (2718)

٢٠٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ سَأَلَهُ أَوْ سَأَلَ رَجُلًا وَعِمْرَانَ يَسْمَعُ فَقَالَ: «يَا أَبَا فُلَانٍ أَمَا صُمْتَ مِنْ سَرَرِ شَعْبَانَ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَإِذَا أَفْطَرْتَ فَصُمْ يَوْمَيْنِ»

2038. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ने इस (यानी मुझ) से या किसी आदमी से दरियाफ्त किया जबकि इमरान सुन रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू फलां क्या तुम ने शाबान के आख़िर के रोज़े नहीं रखे? उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम (रमज़ान के) रोज़े रखना छोड़ दो तो फिर दो दिन के रोज़े रख लेना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1983) و مسلم (199 / 1161)، (2751)

٢٠٣٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصِّيَامِ ص:٦٣ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ اللَّهِ الْمُحَرَّمِ وَأَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الْفَرِيضَةِ صَلَاةُ اللَّيْلِ» . رَوَاهُ مُسلم

2039. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रमज़ान के बाद अल्लाह के महीने मुहरिम (जिसने इहराम बांधा हो) का रोज़ा बेहतरीन रोज़ा है और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद रात की नमाज़ यानी तहज्जुद बेहतरीन नमाज़ है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (202 / 1163)، (2755)

٢٠٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَحَرَّى صِيَامَ يَوْمٍ فَضَّلَهُ عَلَى غَيْرِهِ إِلَّا هَذَا الْيَوْمَ: يَوْمَ عَاشُورَاءَ وَهَذَا الشَّهْرُ يَعْنِي شَهْرَ رَمَضَان

2040. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को इस दिन यौम ए आशुराह और इस माह यानी माहे रमज़ान के रोज़ो के सिवा किसी और दिन और किसी और माह के रोज़े का इहतेमाम करते हुए नहीं देखा और आप ने इस (आशुरा के) दिन को बाकी अय्याम पर फ़ज़ीलत दी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2006) و مسلم (131 / 1132)، (2662)

٢٠٤١ - (صَحِيح) وَعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: حِينَ صَامَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَوْمَ عَاشُورَاءَ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ يَوْمٌ يُعَظِّمُهُ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَئِنْ بَقِيتُ إِلَى قَابِلٍ لأصومن التَّاسِع» . رَوَاهُ مُسلم

2041. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने आशुराह का रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह तो वह दिन है के यहूद व नसारा उसकी ताज़ीम करते हैं,

तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर में आइन्दा साल तक जिंदा रहा तो मैं नववी मुहर्रम का भी रोज़ा रखूँगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (133134 / 1134)، (2666)

٢٠٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ: أَنَّ نَاسًا تَمَارَوْا عِنْدَهَا يَوْمَ عَرَفَةَ فِي صِيَامِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: هُوَ صَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَيْسَ بِصَائِمٍ فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ بقدح لبن وَهُوَ وَاقِف عل بعيره بِعَرَفَة فشربه

2042. उम्म फ़ज़्ल बिन्ते हारिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के कुछ लोगों ने अरफा के दिन उन के वहां रसूलुल्लाह ﷺ के रोज़े के बारे में इख्तिलाफ किया, तो कुछ ने कहा आप रोज़े से हैं और कुछ ने कहा के आप रोज़े से नहीं है, मैंने दूध का प्याला आप की खिदमत में भेजा आप मैदान ए अरफात में अपने ऊंट पर सवार थे तो आप ने इसे नोश फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1988) و مسلم (110 / 1123)، (2632)

٢٠٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَائِما فِي الْعشْر قطّ. رَوَاهُ مُسلم

2043. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को (ज़िल हिज्जा के) अशरा में कभी रोज़े से नहीं देखा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 1176)، (2789)

٢٠٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ كَيْفَ تَصُومُ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَوْله. فَلَمَّا رأى عمر رَضِي الله عَنْهُم غَضَبَهُ قَالَ رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ غَضَبِ اللَّهِ وَغَضب رَسُوله فَجعل عمر رَضِي الله عَنْهُم يُرَدِّدُ هَذَا الْكَلَامَ حَتَّى سَكَنَ غَضَبُهُ فَقَالَ عمر يَا رَسُول الله كَيفَ بِمن يَصُومُ الدَّهْرَ كُلَّهُ قَالَ: «لَا صَامَ وَلَا أَفْطَرَ» . أَوْ قَالَ: «لَمْ يَصُمْ وَلَمْ يُفْطِرْ» . قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُومُ يَوْمَيْنِ وَيُفْطِرُ يَوْمًا قَالَ: «وَيُطِيقُ ص:٦٣ ذَلِكَ أَحَدٌ» . قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُوم يَوْمًا وَيفْطر يَوْمًا قَالَ: «ذَاك صَوْم دَاوُد عَلَيْهِ السَّلَام» قَالَ كَيْفَ مَنْ يَصُومُ يَوْمًا وَيُفْطِرُ يَوْمَيْنِ قَالَ: «وَدِدْتُ أَنِّي طُوِّقْتُ ذَلِكَ» . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاث مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ فَهَذَا صِيَامُ الدَّهْرِ كُلِّهِ صِيَامُ يَوْمِ عَرَفَةَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ وَالسَّنَةَ الَّتِي بَعْدَهُ وَصِيَامُ يَوْمِ عَاشُورَاءَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

2044. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने दरियाफ्त किया आप रोज़ा कैसे रखते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ उसकी बात से नाराज़ हुए, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु ने आप की नाराज़ी देखी तो कहा, हम अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के नबी

होने पर राज़ी हैं, हम अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की नाराज़ी से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु बार बार यह बात दोहराते रहे, हत्ता कि आप ﷺ का गुस्से जाता रहा तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस शख़्स की क्या हालत है जो हमेशा रोज़े रखता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस ने रोज़ा रखा न इफ्तार किया", फिर उन्होंने अर्ज़ किया, इस शख़्स का क्या हाल है जो दो दिन रोज़ा रखता है और एक दिन नहीं रखता, आप ﷺ ने फ़रमाया: "कोई उसकी ताकत रखता है" फिर उन्होंने अर्ज़ किया, उस का क्या हाल है जो एक दिन रोज़ा रखता है और एक दिन नहीं रखता, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये तो दाउद (अ) का रोज़ा है" और फिर उन्होंने अर्ज़ किया, इस शख़्स का क्या हाल है जो एक दिन रोज़ा रखता है और दो दिन नहीं रखता, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं चाहता हूँ कि मुझे उसकी ताकत मिल जाए, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर माह (अय्यामे बिज के) तीन रोज़े और रमज़ान के रोज़े रखना यह हमेशा रोज़ा रखने के बराबर है, जबकि यौम ए अरफा (9 ज़िल हिज्जा) के रोज़े के बारे में अल्लाह से उम्मीद करता हूँ कि वह पिछले और आइन्दा साल के गुनाह मिटा देगा और यौम ए आशुराह के रोज़ा के बारे में में अल्लाह से उम्मीद करता हूँ कि वह पिछले साल के गुनाह मिटा देगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (196 / 1162)، (2746)

٢٠٤٥ - (صَحِيح) وَعَن أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَوْمِ الِاثْنَيْنِ فَقَالَ: «فِيهِ وُلِدْتُ وَفِيهِ أُنْزِلَ عَلَيَّ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2045. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से पीर के रोज़ा के बारे में दरियाफ्त किया गया तो आप ने फ़रमाया: "यही मेरा यौम ए पैदाइश है और हमें यौम ए नबूवत यानी इसी रोज़ मुझ पर वही नाज़िल की गई"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (198 / 1162)، (2750)

٢٠٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاذَةَ الْعَدَوِيَّةِ أَنَّهَا سَأَلَتْ عَائِشَةَ: أَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَصُومُ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ فَقُلْتُ لَهَا: مِنْ أَيِّ أَيَّامِ الشَّهْرِ كَانَ يَصُومُ؟ قَالَتْ: لَمْ يَكُنْ يُبَالِي مِنْ أَيِّ أَيَّام الشَّهْر يَصُوم. رَوَاهُ مُسلم

2046. मुआज़ अद्विय्या रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया क्या रसूलुल्लाह ﷺ हर माह तीन दिन रोज़ा रखा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: हां, फिर मैंने उन से पूछा आप महीने के कौन से अय्याम रोज़ा रखा करते थे, उन्होंने ने फ़रमाया: आप इस बात की परवाह नहीं किया करते थे की आप महीने के किन अय्याम में रोज़ा रखेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (194 / 1160)، (2744)

٢٠٤٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ سِتًّا مِنْ شَوَّال كَانَ كصيام الدَّهْر» . رَوَاهُ مُسلم

2047. अबू अय्यूब अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रमज़ान के रोज़े रखे, फिर उस के बाद शव्वाल के छे रोज़े रखा तो गोया उस ने ज़माने भर के मुसलसल रोज़े रखे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (204 / 1164)، (2758)

٢٠٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَوْمِ يَوْمِ الْفِطْرِ وَالنَّحْرِ

2048. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ईद उल फ़ित्र और ईद उल अदहा के दिन रोज़ा रखने से मना फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1991) و مسلم (141 / 827)، (2674)

٢٠٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا صَوْم فِي يَوْمَيْنِ: الْفطر وَالضُّحَى "

2049. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ईद उल फ़ित्र और ईद उल अदहा के दो अय्याम में रोज़ा रखना जाईज़ नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1197) و مسلم (140 / 827)، (2673)

٢٠٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ نُبَيْشَةَ الْهُذَلِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيَّامُ التَّشْرِيقِ أَيَّامُ أكل وَشرب وَذكر الله» . رَوَاهُ مُسلم

2050. नुबैशा अल हुज़ली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अय्याम तशरिक (11 12 13 ज़िल हिज्जा) खाने पीने और अल्लाह का ज़िक्र करने के दिन है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (144 / 1141)، (2677)

٢٠٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَصُومُ أَحَدُكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَّا أَن يَصَوْم قبله أَو يَصَوْم بعده»

2051. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई सिर्फ जुमा के दिन रोज़ा न रखे, इल्ला यह कि वह उस से पहले या उस के बाद रोज़ा रखे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1985) و مسلم (147 / 1144)، (2683)

٢٠٥٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَخْتَصُّوا لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ بِقِيَامٍ مِنْ بَيْنِ اللَّيَالِي وَلَا تَخْتَصُّوا يَوْمَ الْجُمُعَةِ بِصِيَامٍ مِنْ بَيْنِ الْأَيَّامِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ فِي صَوْمٍ يَصُومهُ أحدكُم» . رَوَاهُ مُسلم

2052. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम रातो में से सिर्फ शबे जुमा को कयाम के लिए खास करो न दिनों में से जुमा के दिन को रोज़ा के लिए खास करो, इल्ला यह कि वह जुमा का दिन तुम में से किसी के रोज़ा रखने के अय्याम में जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (148 / 1144)، (2684)

٢٠٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بَعَّدَ اللَّهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ سَبْعِينَ خَرِيفًا»

2053. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दौरान ए जिहाद एक दिन रोज़ा रखता है तो अल्लाह इस शख़्स को सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर जहन्नम से दूर कर देता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2840) و مسلم (168 / 1153)، (2711)

٢٠٥٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ؟» فَقُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: «فَلَا تَفْعَلْ صُمْ وَأَفْطِرْ وَقُمْ وَنَمْ فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا. لَا صَامَ مَنْ صَامَ الدَّهْرَ. صَوْمُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ صَوْمُ الدَّهْرِ كُلِّهِ. صُمْ كُلَّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَاقْرَأِ الْقُرْآنَ فِي كُلِّ شَهْرٍ» . قُلْتُ: إِنِّي أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ. قَالَ: " صُمْ أَفْضَلَ الصَّوْمِ صَوْمَ دَاوُدَ: صِيَامُ يَوْمٍ وَإِفْطَارُ يَوْمٍ. وَاقْرَأْ فِي كُلِّ سَبْعِ لَيَالٍ مَرَّةً وَلَا تَزِدْ عَلَى ذَلِكَ "

2054. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अब्दुल्लाह मुझे बताया गया है के तुम दिन को रोज़ा रखते हो और रात को कयाम करते हो” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! अल्लाह के रसूल, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसे न किया कर रोज़ा रखा कर और कभी न भी रखा कर, रात को कयाम भी किया कर और सोया भी कर, क्योंकि तेरे जिस्म का तुझ पर हक़ है, तेरी आँख का तुझ पर हक़ है, तेरी अहलिया का तुझ पर हक़ है और तेरे महमान का तुझ पर हक़ है, मुसलसल रोज़े रखने वाले का कोई रोज़ा नहीं, हर माह तीन दिन रोज़े रखना ज़माने भर के रोज़े रखने के बराबर है, हर महीने तीन रोज़े रखा कर और

हर माह कुरान मजीद मुकम्मल किया कर”, मैंने अर्ज़ किया: में उस से ज़्यादा की ताकत रखता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेहतरीन रोज़े रख, दाउद (अ) के रोज़े एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ्तार, सात दिन में कुरान मजीद मुकम्मल कर और उस पर इज़ाफा न कर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1975) و مسلم (181182 ، 187 ، 193 / 1159)، (2730 و 2743)

باب صيام التطوع • नफ्ल रोज़ो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٠٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2055. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पीर और जुमेरात के दिन रोज़ा रखा करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (745 وقال : حسن غريب) و النسائی (4 / 203 ح 2363)

٢٠٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تُعْرَضُ الْأَعْمَالُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ فَأُحِبُّ أَنْ يُعْرَضَ عَمَلِي وَأَنَا صَائِمٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2056. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पीर और जुमेरात के रोज़ आमाल पेश किए जाते हैं लिहाज़ा में पसंद करता हूँ कि मेरा अमल इस हाल में पेश किया जाए की मैं रोज़े से होऊँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (747 حسن غريب) [و اصله عند مسلم : 2565، (2747)]

٢٠٥٧ - وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ إِذَا صُمْتَ مِنَ الشَّهْرِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَصُمْ ثَلَاثَ عَشْرَةَ وَأَرْبَعَ عَشْرَةَ وَخَمْسَ عَشْرَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2057. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ए अबू ज़र जब तुम महीने में तीन रोज़े रखो तो तेरह चौदाह और पन्द्रह का रोज़ा रखो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (761 وقال : حسن) و النسائی (4 / 222 ح 2425) [و صححه ابن خزيمة (2128) و ابن حبان (943944)]

٢٠٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ مِنْ غُرَّةِ كُلِّ شَهْرٍ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَقَلَّمَا كَانَ يفْطر يَوْم الْجُمُعَةَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ إِلَى ثَلَاثَة أَيَّام

2058. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हर माह के शुरू में तीन रोज़े रखा करते थे और आप कम ही जुमा के दिन रोज़ा छोड़ा करते थे| तिरमिज़ी, नसई और अबू दावुद ने तीन दिन तक रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (742 وقال : حسن غریب) و النسائی (4 / 204 ح 2370) و ابوداؤد (2450) [و صححه ابن خزیمة (2129) و ابن حبان (الاحسان : 3637)]

٢٠٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ مِنَ الشَّهْرِ السَّبْتَ وَالْأَحَدَ وَالِاثْنَيْنِ وَمِنَ الشَّهْرِ الآخر الثُّلَاثَاء وَالْأَرْبِعَاء وَالْخَمِيس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2059. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी माह हफ्ते इतवार और पीर का रोज़ा रखते तो दूसरे माह मंगल बुध और जुमेरात का रोज़ा रखते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (746 وقال : حسن) * خیثمة بن عبد الرحمن لم یسمع من عائشة (نیل المقصود : 2128) و سفیان الثوری مدلس و عنعن

٢٠٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُنِي أَنْ أَصُومَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ أَوَّلُهَا الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيس. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2060. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मुझे हुक्म फ़रमाया करते थे की में हर माह तीन रोज़े रखु, उनकी इब्तिदा पीर से हो या जुमेरात से”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (2452) و النسائی (4 / 221 ح 2421)

٢٠٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُسلم الْقرشِي قَالَ: سَأَلت أَوْ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن صِيَام الدَّهْر فَقَالَ: «إِنَّ لِأَهْلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا صُمْ رَمَضَانَ وَالَّذِي يَلِيهِ وَكُلَّ ص:٦٣ أَرْبِعَاءَ وَخَمِيسٍ فَإِذًا أَنْتَ قَدْ صُمْتَ الدَّهْرَ كُلَّهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

2061. मुस्लिम रश रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया या आप से हमेशा रोज़ा रखने के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया गया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक तेरे घरवालो का तुझ पर हक़ है, रमज़ान और उस के साथ वाले माह और हर बुध जुमेरात का रोज़ा रखा कर (अगर तुमने ऐसे

कर लिया) तो तुमने (हुक्मन) ज़माने भर के रोज़े रखे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2432) و الترمذی (748 وقال : غريب) * عبيدالله القرشی : لم اعرفه بحرح ولا تعديل

٢٠٦٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَهَى عَنْ صَوْمِ يَوْمِ عَرَفَةَ بِعَرَفَةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2062. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने "अरफा (नौ ज़िल हिज्जा) के दिन मैदान ए अरफात में रोज़ा रखने से मना फ़रमाया"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2440) [ابن ماجه : 1732]

٢٠٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُسْرٍ عَنْ أُخْتِهِ الصَّمَّاءِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَصُومُوا يَوْمَ السَّبْتِ إِلَّا فِيمَا افْتُرِضَ عَلَيْكُمْ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ أَحَدُكُمْ إِلَّا لِحَاءَ عِنَبَةٍ أَوْ عُودَ شَجَرَةٍ فَلْيَمْضُغْهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

2063. अब्दुल्लाह बिन बूसर अपने बहन सम्माअ से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हफ्ते के दिन रोज़ा न रखो, इल्ला यह कि इस रोज़ और कोई ऐसा रोज़ा आ जाए जो तुम पर फ़र्ज़ किया गया है, अगर तुम में से कोई अंगूर का छिलका या किसी दरख्त की लकड़ी के मा सिवा कुछ न पाए तो उसे ही चबा ले", (ताकि सिर्फ हफ्ते का रोज़ा साबित न हो) | (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 368 ح 27651) و ابوداؤد (2421) و الترمذی (744 وقال : حسن) و ابن ماجه (1726) و الدارمی (2 / 19 ح 1756) [و صححه ابن خزيمه : 2163]

٢٠٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ جَعَلَ اللَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّارِ خَنْدَقًا كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2064. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स राह जिहाद में एक रोज़ा रखता है तो अल्लाह उस के और जहन्नम के बिच में ज़मीन व आसमान की मुसाफ़त जितनी एक खंदक बना देता है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1624 وقال : غريب) [و للحديث شواهد]

٢٠٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغَنِيمَةُ الْبَارِدَةُ الشِّتَاءِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ مُرْسل

2065. आमिर बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शर्दी में रोज़ा ठंडी गनीमत है”| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 335 ح 19167) و الترمذی (797) * السند مرسل و ابو اسحاق عنعن وله شواھد ضعیفة و روی البیھقی (4 / 297) بسند صحیح عن ابی ھریرة قال :’’ الغنیمة الباردة الصوم فی الشتاء ‘‘

٢٠٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي هُرَيْرَةَ: «مَا مِنْ أَيَّامٍ أحب إِلَى الله» فِي بَاب الْأُضْحِية

2066. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस ((ما من ایام احب الی اللہ)) बाब अल दहियत में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، تقدم (1471)

नफ्ल रोज़ो का बयान • باب صيام التطوع

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٠٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِمَ الْمَدِينَةِ فَوَجَدَ الْيَهُودَ صِيَامًا يَوْمَ عَاشُورَاءَ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا هَذَا الْيَوْمُ ص:٦٣ الَّذِي تَصُومُونَهُ؟» فَقَالُوا: هَذَا يَوْمٌ عَظِيمٌ: أَنْجَى اللَّهُ فِيهِ مُوسَى وَقَوْمَهُ وَغَرَّقَ فِرْعَوْنَ وَقَوْمَهُ فَصَامَهُ مُوسَى شُكْرًا فَنَحْنُ نَصُومُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَنَحْنُ أَحَقُّ وَأَوْلَى بِمُوسَى مِنْكُمْ» فَصَامَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَ بصيامه

2067. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने यहूदियों को यौम ए आशुरा का रोज़ा रखते हुए पाया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से दरियाफ्त किया: “ये कौन सा दिन है जिस का तुम रोज़ा रखते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, यह एक अज़ीम दिन है, अल्लाह ने इस रोज़ मुसा अलैहिस्सलाम और उनकी कौम को निजात दी जबकि फिरोन और उसकी कौम को गर्क किया, तो मुसा अलैहिस्सलाम ने शुक्र के तौर पर इस दिन का रोज़ा रखा, तो हम भी इस रोज़ का रोज़ा रखते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम तुम्हारी निस्बत मुसा अलैहिस्सलाम के ज़्यादा हक़दार हैं”, रसूलुल्लाह ﷺ ने इस रोज़ का रोज़ा रखा और उस का रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2004) و مسلم (127 / 1130)، (2656)

٢٠٦٨ - وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصُومُ يَوْمَ السَّبْتِ وَيَوْمَ الْأَحَدِ أَكْثَرَ مَا يَصُومُ مِنَ الْأَيَّامِ وَيَقُولُ: «إِنَّهُمَا يَوْمَا عِيدٍ لِلْمُشْرِكِينَ فَأَنَا أُحِبُّ أَن أخالفهم» . رَوَاهُ أَحْمد

2068. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ज़्यादातर हफ्ते और इतवार के दिन रोज़ा रखा करते थे और आप ﷺ फ़रमाया करते थे: “ये दोनों मुशरिकीन के अय्याम ए ईद है लिहाज़ा मैं इन की मुखालिफत करना पसंद करता हूँ”| (हसन)

اسناده حسن لذاته ، رواه احمد (6 / 324 ح 27286) [و صححه ابن خزيمة (3 / 318 ح 2167) و ابن حبان (الموارد : 941942) و الحاكم (1 / 436) و وافقه الذهبى] * عبدالله بن محمد بن عمر بن على ثقه و ثقه الذهبى فى الكاشف و ابن خزيمة و غيرهما

٢٠٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِصِيَامِ يَوْمِ عَاشُورَاءَ وَيَحُثُّنَا عَلَيْهِ وَيَتَعَاهَدُنَا عِنْدَهُ فَلَمَّا فُرِضَ رَمَضَانُ لَمْ يَأْمُرْنَا وَلَمْ يَنْهَنَا عَنْهُ وَلم يتعاهدنا عِنْده. رَوَاهُ مُسلم

2069. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ यौम ए आशुरा का रोज़ा रखने का हमें हुक्म फ़रमाया करते थे, उसकी हमें तरगीब दिया करते थे और उस के मुतल्लिक हमें नसीहत फ़रमाया करते थे, जब रमज़ान फ़र्ज़ किया गया तो आप ने उस के मुतल्लिक हमें हुक्म फ़रमाया न मना किया और ना ही हमें उस के मुतल्लिक नसीहत फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (125 / 1128)، (2652)

٢٠٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حَفْصَةَ قَالَتْ: أَرْبَعٌ لَمْ يَكُنْ يَدَعُهُنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صِيَامُ عَاشُورَاءَ وَالْعَشْرِ وَثَلَاثَةُ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ وَرَكْعَتَانِ قبل الْفجْر» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2070. हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, चार उमूर है जिन्हें नबी ﷺ तर्क नहीं किया करते थे, यौम ए आशुरा का रोज़ा ज़ुलहिज्जा के दस रोज़े हर माह तीन रोज़े और फज्र से पहले दो रकते| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه النسائى (4 / 220 ح 2418) * ابواسحاق الاشجعى لم اجد من و ثقه و حديث النسائى (2419) يغنى عنه عن حديثه

٢٠٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُفْطِرُ أَيَّامَ الْبيض فِي حضر وَلَا فِي سفر. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2071. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हज़र व सफ़र में अय्यामे बिज तेरह चौदाह और पन्द्रह तारीख का रोज़ा नहीं छोड़ते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (4 / 198199 ح 2347)

٢٠٧٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِكُلِّ شَيْءٍ زَكَاةٌ وَزَكَاةُ الْجَسَدِ الصَّوْمُ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2072. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर चीज़ की ज़कात है जबकि जिस्म की ज़कात रोज़ा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (1745) * موسی بن عبیدة : ضعیف و جمهان : مجهول و للحدیث طرق لا یصح منهاشی

٢٠٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَانَ يَصُومُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ. فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكَ تَصُومُ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ. فَقَالَ: " إِنَّ يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَالْخَمِيسِ يَغْفِرُ اللَّهُ فِيهِمَا لِكُلِّ مُسْلِمٍ إِلَّا ذَا هَاجِرَيْنِ يَقُولُ: دَعْهُمَا حَتَّى يصطلحا ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

2073. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ पिर और जुमेरात का रोज़ा रखा करते थे, आप से अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल, आप पिर और जुमेरात का रोज़ा रखते हैं, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक पिर और जुमेरात के रोज़ अल्लाह बाहम कतअ ताल्लुक करने वाले दो आदमियों के सिवा हर मुसलमान को बख्श देता है और वह फरमाता है, इन दोनों को छोड़ दो हत्ता कि वह दोनों सुलह कर ले”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 329 ح 8343) و ابن ماجه (1740)

٢٠٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ صَامَ يَوْمًا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ بَعَّدَهُ اللَّهُ مِنْ جَهَنَّمَ كَبُعْدِ غُرَابٍ طَائِرٍ وَهُوَ فرخ حَتَّى مَاتَ هرما» . رَوَاهُ أَحْمد

2074. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की खातिर एक रोज़ा रखता है, तो अल्लाह इसे जहन्नम से इस क़दर दूर फरमा देता है, जैसे एक उड़ने वाला कव्वा बचपन की उमर से उड़ना शुरू करे और बुढा होने तक उड़ता रहे, हत्ता कि वह फौत हो जाए”, वह सारी जिंदगी में जितना फासला तेअ करता है अल्लाह इस शख़्स को इतनी मुसाफ़त जहन्नम से दूर कर देता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 526 ح 10820) * فیه رجل هو عمرو بن ربیعة مجهول الحال و لهیعة ابو عبدالله مستور و ابن لهیعة عنعن و حدیث الترمذی (1622) یغنی عنه

٢٠٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنْ سَلَمَةَ بن قيس

2075. इमाम बय्हकी ने इसे सलमा बिन कैस से शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (3590) [و البزار (کشف الاستار : 1037)] * زبان بن فائد ضعیف ، و لهیعة و ابو الشعثاء عمرو بن ربیعة مجهولان و ابن لهیعة عنعن و انظر الحدیث السابق (2074)

नफ्ली रोज़े और इफ्तार का बयान • بَاب فِي الافطار من التَّطَوُّع

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٠٧٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ: «هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ؟» فَقُلْنَا: لَا قَالَ: «فَإِنِّي إِذًا صَائِمٌ» . ثُمَّ أَتَانَا يَوْمًا آخَرَ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُهْدِيَ لَنَا حَيْسٌ فَقَالَ: «أَرِينِيهِ فَلَقَدْ أَصْبَحْتُ صَائِمًا» فَأَكَلَ. رَوَاهُ مُسلم

2076. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ एक रोज़ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कोई चीज़ है" हमने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं फिर रोज़े से हूँ" फिर आप किसी रोज़ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हमें हईस खजूर घी और पनीर से तैयार करदा हलवा हदिया किया गया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे दिखाओ मैंने सुबह रोज़ा रखा हुआ था'' आप ने इसे खा लिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (170 / 1154)، (2715)

٢٠٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أُمِّ سُلَيْمٍ فَأَتَتْهُ بِتَمْرٍ وَسَمْنٍ فَقَالَ: «أَعِيدُوا سَمْنَكُمْ فِي سِقَائِهِ وَتَمْرَكُمْ فِي وِعَائِهِ فَإِنِّي صَائِمٌ» . ثُمَّ قَامَ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ الْبَيْتِ فَصَلَّى غَيْرَ الْمَكْتُوبَةِ فَدَعَا لأم سليم وَأهل بَيتهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2077. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा के यहाँ तशरीफ़ लाए तो उन्होंने खजूर और घी आप की खिदमत में पेश किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "घी और खजूरे वापस उन के बर्तन में डाल दो क्योंकि मैं रोज़े से हूँ", फिर आप खड़े हुए और घर के एक कोने में नफ्ल नमाज़ अदा की और उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा और उन के अहले खाना के लिए दुआ फरमाई| (बुखारी)

رواه البخارى (1982)

٢٠٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى طَعَامٍ وَهُوَ صَائِمٌ فَلْيَقُلْ: إِنِّي صَائِمٌ ". وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيُجِبْ فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيُصَلِّ وَإِنْ كَانَ مُفطرا فيطعم» . رَوَاهُ مُسلم

2078. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तुम में से किसी को खाने की दावत दिया जाए जबकि वह रोज़े से हो तो वह कहे: "मैं रोज़े से हूँ" और एक रिवायत में है: "जब तुम में से किसी को दावत दि जाए तो वह कबूल करे अगर वह रोज़े से हो तो वह दुआ करे और अगर रोज़े से न हो तो खाना खा ले"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (159 / 1150)، (2702)

नफ्ली रोज़े और इफ्तार का बयान • بَاب فِي الافطار من التَّطَوُّع •

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي •

٢٠٧٩ - (صَحِيح) عَنْ أُمِّ هَانِئٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْفَتْحِ فَتْحِ مَكَّةَ جَاءَتْ فَاطِمَةُ فَجَلَسَتْ عَلَى يَسَارِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأُمُّ هَانِئٍ عَنْ يَمِينِهِ فَجَاءَتِ الْوَلِيدَةُ بِإِنَاءٍ فِيهِ شَرَابٌ فَنَاوَلَتْهُ فَشَرِبَ مِنْهُ ثُمَّ نَاوَلَهُ أُمَّ هَانِئٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَقَدْ أَفْطَرْتُ وَكُنْتُ صَائِمَةً فَقَالَ لَهَا: «أَكُنْتِ تَقْضِينَ شَيْئًا؟» قَالَتْ: لَا. قَالَ: «فَلَا يَضُرُّكِ إِنْ كَانَ تَطَوُّعًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَحْمَدَ وَالتِّرْمِذِيِّ نَحْوُهُ وَفِيهِ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمَا إِنِّي كُنْتُ صَائِمَةً فَقَالَ: «الصَّائِم أَمِيرُ نَفْسِهِ إِنْ شَاءَ صَامَ وَإِنْ شَاءَ أفطر»

2079. उम्म हानी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, जब फतह मक्का का दिन था तो फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा आए और रसूलुल्लाह ﷺ की बाएँ जानिब बैठ गई, जबकि उम्म हानी रदियल्लाहु अन्हु आप के दाएँ जानिब थी, पस लौंडी बर्तन में मशरुब लाइ और इसे आप की खिदमत में पेश किया, आप ने उस से नोश फ़रमाया बाद में आप ने बर्तन उम्म हानी को दिया तो उन्होंने उस से पिया, फिर उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने तो रोज़ा तोड़ लिया है में तो रोज़े से थी, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “क्या तुम कोई कज़ा दे रही थी ?” उन्होंने कहा: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर नफ्ली था तो फिर तुम्हारे लिए मुज़िर नहीं”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, दारमी अहमद और तिरमिज़ी की एक रिवायत इसी तरह है और इस में है उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में तो रोज़े से थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नफ्ली रोज़दार अपने नफ्स का अमीर है, वह अगर चाहे तो रखे यानी पूरा करे और अगर चाहे तो इफ्तार कर ले”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (2456) و الترمذى (731732) و الدارمى (2 / 16 ح 17430) و احمد (6 / 341 ح 2743 ، 2 / 343 ح 27448) *
يزيد بن ابى زياد ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

٢٠٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ صَائِمَتَيْنِ فَعَرَضَ لَنَا طَعَامٌ اشْتَهَيْنَاهُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ فَقَالَتْ حَفْصَةُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ص:٦٤ إِنَّا كُنَّا صَائِمَتَيْنِ فَعُرِضَ لَنَا طَعَامٌ اشْتَهَيْنَاهُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ. قَالَ: «اقْضِيَا يَوْمًا آخَرَ مَكَانَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَذَكَرَ جَمَاعَةً مِنَ الْحُفَّاظِ رَوَوْا عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَائِشَةَ مُرْسَلًا وَلَمْ يذكرُوا فِيهِ عَن عُرْوَة وَهَذَا أصح»» وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ عَنْ زُمَيْلٍ مَوْلَى عُرْوَةَ عَن عُرْوَة عَن عَائِشَة

2080. इमाम ज़ुहरी उरवा से और वह आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: में और हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा रोज़े से थी हमें खाना पेश किया गया तो हमें उसकी ख्वाहिश हुई तो हमने उस में से खा लिया, हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम दोनों रोज़े से थी, हमें खाना पेश किया गया तो हमें उसकी ख्वाहिश हुई तो हमने उस में से खा लिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस की जगह किसी और दिन से कज़ा करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (735) و ابوداؤد (2457) * جعفر : صدوق يهم فى حديث الزهرى و الزهرى مدلس و عنعن

٢٠٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم عمَارَة بنت كَعْب إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَيْهَا فَدَعَتْ لَهُ بِطَعَامٍ فَقَالَ لَهَا: «كُلِي» . فَقَالَتْ: إِنِّي صَائِمَةٌ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الصَّائِمَ إِذَا أُكِلَ عِنْدَهُ صَلَّتْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ حَتَّى يَفْرَغُوا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

2081. उम्म उमारह बिन्ते काब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ उन के वहां तशरीफ़ लाए तो उन्होंने आप के लिए खाना मंगवा ی, तो आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “खाओ”, उन्होंने अर्ज़ किया, मैं रोज़े से हूँ नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब रोज़दार के पास खाया जाए तो फ़रिश्ते उस के लिए मगफिरत तलब करते रहते है यहाँ तक के खाने वाले खाने से) फारिग़ हो जाते हैं”| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (6 / 365 ح 27599) و الترمذی (785 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجہ (1748) و الدارمی (2 / 17 ح 1745)

बَاب فِي الافطار من التَّطَوُّع • नफ्ली रोज़े और इफ्तार का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٠٨٢ - عَن بُرَيْدَة قَالَ: دَخَلَ بِلَالٌ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَتَغَدَّى فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغَدَاءَ يَا بِلَالُ» . قَالَ: إِنِّي صَائِمٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَأْكُلُ رِزْقَنَا وَفَضْلُ رِزْقِ بِلَالٍ فِي الْجَنَّةِ أشعرت يَا بِلَال أَن الصَّائِم تُسَبِّح عِظَامه وَتَسْتَغْفِر لَهُ الْمَلَائِكَةُ مَا أَكَلَ عِنْدَهُ؟» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2082. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बिलाल रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप नाश्ता कर रहे थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बिलाल नाश्ता कर लो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में रोज़े से हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम अपना रीज़्क खा रहे हैं जबकि बिलाल का उम्दा रीज़्क जन्नत में है, बिलाल क्या तुम्हें मालुम है की जब रोज़दार के पास खाया जाए तो उसकी हड्डिया तस्बीह बयान करती हैं, और फ़रिश्ते उस के लिए मगफिरत तलब करते हैं”| (मौज़ू)

اسنادہ موضوع ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (3586) [و ابن ماجہ : 1749] * فیہ محمد بن عبد الرحمن من شیوخ بقیۃ : کذبوہ

कद्र की रात का बयान • بَاب لَيْلَة الْقدر

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٠٨٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَحَرَّوْا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ من رَمَضَان» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2083. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रमज़ान के आखिरी अशरे की ताक रातो में शबे कद्र तलाश करो”| (बुखारी)

رواه البخارى (2017)

٢٠٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عمر قَالَ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُرُوا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْمَنَامِ فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَرَى رُؤْيَاكُمْ قَدْ تَوَاطَأَتْ فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ فَمَنْ كَانَ مُتَحَرِّيهَا فَلْيَتَحَرَّهَا فِي السَّبْعِ الْأَوَاخِرِ»

2084. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि नबी ﷺ के चंद सहाबा को शबे कद्र हालत ए ख्वाब रमज़ान के आखिरी हफ्ते (सात अय्याम) में दिखाई गई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं देखता हूँ कि तुम्हारे ख्वाब आखिरी हफ्ते में मुत्तफिक मुवाफिक है, पस जो शख़्स इसे तलाश करना चाहे तो वह इसे आखिरी हफ्ते है तलाश करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2015) و مسلم (205 / 1165)، (2761)

٢٠٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: الْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ لَيْلَةَ الْقَدْرِ: فِي تَاسِعَةٍ تَبْقَى فِي سَابِعَةٍ تَبْقَى فِي خَامِسَةٍ تَبْقَى. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2085. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इस शबे कद्र को रमज़ान के आखिरी अशरे में तलाश करो शबे कद्र बाकी रहने वाली नौवीं रात सातवीं रात पाँचवीं रात (यानी इक्कीसवीं तेईसवीं और पच्चीसवीं रात) में है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2021)

٢٠٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اعْتَكَفَ الْعَشْرَ الْأَوَّلَ مِنْ رَمَضَانَ ثُمَّ اعْتَكَفَ ص:٦٤ الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ فِي قُبَّةٍ تُرْكِيَّةٍ ثُمَّ أَطْلَعَ رَأسه. فَقَالَ: «إِنِّي اعتكفت الْعشْر الأول ألتمس

هَذِه اللَّيْلَة ثمَّ اعتكفت الْعَشْرَ الْأَوْسَطَ ثُمَّ أَتِيتُ فَقِيلَ لِي إِنَّهَا فِي الْعشْر الْأَوَاخِر فَمن اعْتَكَفْ مَعِي فَلْيَعْتَكِفِ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ فَقَدْ أُرِيتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ ثُمَّ أُنْسِيتُهَا وَقَدْ رَأَيْتُنِي أَسْجُدُ فِي مَاءٍ وَطِينٍ مِنْ صَبِيحَتِهَا فَالْتَمِسُوهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ وَالْتَمِسُوهَا فِي كُلِّ وِتْرٍ» . قَالَ: فَمَطَرَتِ السَّمَاءُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَكَانَ الْمَسْجِدُ عَلَى عَرِيشٍ فَوَكَفَ الْمَسْجِدُ فَبَصُرَتْ عَيْنَايَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى جَبْهَتِهِ أَثَرُ المَاء والطين وَالْمَاء مِنْ صَبِيحَةِ إِحْدَى وَعِشْرِينَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ فِي الْمَعْنَى وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ إِلَى قَوْلِهِ: " فَقِيلَ لِي: إِنَّهَا فِي الْعشْر الْأَوَاخِر ". وَالْبَاقِي لِلْبُخَارِيِّ

2086. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने रमज़ान के पहले अशरे में एअतेकाफ़ किया, फिर आप ने दरमियाने अशरे में एक छोटे से खैमे में एअतेकाफ़ किया, फिर आप ने अपना सर बाहर निकाल कर फ़रमाया: “मैंने पहला अशरा एअतेकाफ़ किया में इस रात को तलाश करना चाहता था, फिर मैंने दरमियाने अशरे का एअतेकाफ़ किया, फिर मेरे पास फ़रिश्ता आया तो मुझे कहा गया के वह आखिरी अशरे में है, जो शख़्स मेरे साथ एअतेकाफ़ करना चाहे तो वह आखिरी अशरा एअतेकाफ़ करे, मुझे यह रात दिखाई गई थी फिर मुझे भुला दी गई, मैंने उसकी सुबह खुद को कीचड़ में सजदाह करते हुए देखा है, इसे आखिरी अशरे में तलाश करो और इसे हर ताक रात में तलाश करो”, रावी बयान करते हैं, इस रात बारिश हुई मस्जिद की छत शाखों से बनी हुई थी वह टपकने लगी, मेरी आंखो ने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप की पेशानी पर कीचड़ का निशान था और यह इक्कीसवीं की रात यानी इक्कीसवीं तारीख थी| मानी के लिहाज़ से बुखारी, मुस्लिम, उस पर मुत्तफिक और ((فقيل لی انها فی العشر الا واخر)) तक मुस्लिम के अल्फाज़ है, जब के बाकी सहीह बुखारी के अल्फाज़ है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2016) و مسلم (213 / 1167)، (2769)

٢٠٨٧ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُنَيْسٍ قَالَ: «لَيْلَة ثَلَاث وَعشْرين» . رَوَاهُ مُسلم

2087. अब्दुल्लाह बिन उनैस की रिवायत में है फ़रमाया तेईसवीं रात| (मुस्लिम)

رواه مسلم (218 / 1168)، (2775)

٢٠٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ قَالَ: سَأَلْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ فَقُلْتُ إِنَّ أَخَاكَ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ: مَنْ يَقُمِ الْحَوْلَ يُصِبْ لَيْلَةَ الْقَدْرِ. فَقَالَ C أَرَادَ أَنْ لَا يَتَّكِلَ النَّاسُ أَمَا إِنَّهُ قَدْ عَلِمَ أَنَّهَا فِي رَمَضَانَ وَأَنَّهَا فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ وَأَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ ثُمَّ حَلَفَ لَا يَسْتَثْنِي أَنَّهَا لَيْلَةُ سَبْعٍ وَعِشْرِينَ. فَقُلْتُ: بِأَيِّ شَيْءٍ تَقُولُ ذَلِكَ يَا أَبَا الْمُنْذِرِ؟ قَالَ: بِالْعَلَامَةِ أَوْ بِالْآيَةِ الَّتِي أَخْبَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهَا تَطْلُعُ يَوْمَئِذٍ لَا شُعَاعَ لَهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2088. ज़र्र बिन हुबैश बयान करते हैं, मैंने उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया आप के भाई इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं की जो शख़्स पूरा साल तहज्जुद पढ़ेगा वह शबे कद्र पा लेगा, तो उन्होंने ने फ़रमाया: अल्लाह उस पर रहम फरमाए उन्होंने यह इरादा किया के लोग उस पर ही एतमाद न कर ले, हालाँकि उन्हें मालुम है के वह शबे कद्र रमज़ान में है और आखिरी अशरे में है और वह सत्ताईसवी रात है, फिर उन्होंने इंशाअल्लाह कहे बगैर क़सम उठाकर कहा वह सत्ताईसवी शब् है, मैंने कहा अबू मुन्ज़र आप यह कैसे कहते हैं

उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी अलामत या निशानिया की बिना पर जो रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें बताई थी के इस रोज़ सूरज तुलुअ होगा तो उसकी शिआइ नहीं हुई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (179 / 762)، (1785)

٢٠٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَجْتَهِدُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مَا لَا يَجْتَهِدُ فِي غَيره. رَوَاهُ مُسلم

2089. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जिस क़दर आखिरी अशरे में (इबादत सखावत करने की) कोशिश करते थे वह उस के अलावा किसी और वक़्त नहीं करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (8 / 1175)، (2788)

٢٠٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ الْعَشْرُ شَدَّ مِئْزَرَهُ وَأَحْيَا ليله وَأَيْقَظَ أَهله

2090. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब आखिरी अशरा शुरू हो जाता तो रसूलुल्लाह ﷺ इबादत के लिए कमर बस्ता हो जाते, शब् बेदारी फरमाते और अपने अहले खाना को भी बेदार रखते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2024) و مسلم (7 / 1174)، (2787)

बَاب لَيْلَة الْقدر • कद्र की रात का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٠٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ عَلِمْتُ أَيُّ لَيْلَةٍ الْقَدْرِ مَا أَقُولُ فِيهَا؟ قَالَ: " قُولِي: اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعَفُ عَنِّي ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه وَالتِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

2091. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर में जानलूँ के कौन सी रात शबे कद्र है तो में उस में क्या दुआ करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कहो ऐ अल्लाह! बेशक तू दरगुज़र फरमाने वाला है, दरगुज़र को पसंद फरमाता है, पस मुझ से भी दरगुज़र फरमा”, अहमद इब्ने माजा तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 151 ح 25898) و ابن ماجه (3850) و الترمذى (3513) * عبدالله بن بريدة لم يسمع من عائشة رضى الله عنها كما قال الدارقطنى (السنن 3 / 233 ح 3517) و البيهقى (1187) / و دفاع ابن التركمانى باطل لان الخاص مقدم على العام و للحديث شواهد ضعيفة

٢٠٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْتَمِسُوهَا يَعْنَى لَيْلَةَ الْقدر فِي تسع بَقينَ أَو فِي سبع بَقينَ أَو فِي خمس بَقينَ أَوْ ثَلَاثٍ أَوْ آخِرِ لَيْلَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2092. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “शबे कद्र को इक्कीसवीं या तेईसवीं या पच्चीसवीं या सत्ताईसवीं या उनतीसवीं रात में तलाश करो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (794 وقال : حسن صحیح) [و صححه ابن خزیمة (2175) و ابن حبان (الاحسان : 3678) و الحاکم (1 / 438) و وافقه الذھبی]

٢٠٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ فَقَالَ: «هِيَ فِي كُلِّ رَمَضَانَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَقَالَ: رَوَاهُ سُفْيَان وَشعْبَة عَن أبي إِسْحَق مَوْقُوفا على ابْن عمر

2093. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से शबे कद्र के बारे में दरियाफ्त किया गया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो पुरे रमज़ान में है”| अबू दावुद, और उन्होंने ने फ़रमाया: सुफियान और शुअबा ने अबू इसहाक की सनद से इब्ने उमर से मौकूफ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (1387) * ابو اسحاق عنعن و للحدیث شواھد ضعیفة

٢٠٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أُنَيْسٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي بَادِيَةً أَكُونُ فِيهَا وَأَنا أُصَلِّي فِيهَا بِحَمْد الله فَمُرْنِي بِلَيْلَةٍ أَنْزِلُهَا إِلَى هَذَا الْمَسْجِدِ فَقَالَ: «انْزِلْ لَيْلَة ثَلَاث وَعشْرين» . قيل لِابْنِهِ: كَيْفَ كَانَ أَبُوكَ يَصْنَعُ؟ قَالَ: كَانَ يَدْخُلُ الْمَسْجِدَ إِذَا صَلَّى الْعَصْرَ فَلَا يَخْرُجُ مِنْهُ لِحَاجَةٍ حَتَّى يُصَلِّيَ الصُّبْحَ فَإِذَا صَلَّى الصُّبْحَ وَجَدَ دَابَّتَهُ عَلَى بَابِ الْمَسْجِدِ فَجَلَسَ عَلَيْهَا وَلحق بباديته. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2094. अब्दुल्लाह बिन उन्नीस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! में अपने जंगल में रहता हूँ और मैं अलहम्दु लिल्ला वही नमाज़ पढ़ता हूँ, आप मुझे एक रात के मुतल्लिक हुक्म फरमाइए की मैं इस रात इस मस्जिद में कयाम करू, आप ने फ़रमाया: “तेईसवी रात को कयाम कर”, उन के बेटे से पूछा गया आप के वालिद कैसे किया करते थे, उन्होंने बताया जब आप असर पढ़ लेते तो मस्जिद में दाखिल हो जाते और फिर आप किसी हाजत के लिए वहां से न निकलते हत्ता कि नमाज़ ए फजर पढ़ लेते, जब फज्र पढ़ लेते तो वह मस्जिद के दरवाज़े पर अपने सवारी पाते और उस पर सवार हो कर अपने जंगल में जाते| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (1380) [و صححه ابن خزیمة (2200) و اصله عند مسلم (1168)، (2775)]



कद्र की रात का बयान • بَاب لَيْلَة الْقدر

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٠٩٥ -(صَحِيح) عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُخْبِرَنَا بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى رَجُلَانِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ: «خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى فُلَانٌ وَفُلَانٌ فَرُفِعَتْ وَعَسَى أَنْ يَكُونَ خَيْرًا لَكُمْ فَالْتَمِسُوهَا فِي التَّاسِعَةِ وَالسَّابِعَةِ وَالْخَامِسَةِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2095. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ शबे कद्र के मुतल्लिक हमें बताने के लिए तशरीफ़ लाए, तो दो मुसलमान बाहम झगड़ रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम्हें शबे कद्र के मुतल्लिक बताने के लिए आया था, लेकिन फलां और फलां बाहम झगड़ पड़े तो वह मुझ से उठा ली गई और मुमकिन है के तुम्हारे लिए बेहतर हो, लिहाज़ा तुम उसे इक्कीसवी, तेईसवीं और पच्चीसवीं रात में तलाश करो”| (बुखारी)

رواه البخارى (2023)

٢٠٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ لَيْلَةُ الْقَدْرِ نزل جِبْرِيل عَلَيْهِ السَّلَام فِي كُبْكُبَةٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ يُصَلُّونَ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ قَائِمٍ أَوْ قَاعِدٍ يَذْكُرُ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ عِيدِهِمْ يَعْنِي يَوْمَ فِطْرِهِمْ بَاهَى بِهِمْ مَلَائِكَتَهُ فَقَالَ: يَا مَلَائِكَتِي مَا جَزَاءُ أَجِيرٍ وَفَّى عَمَلَهُ؟ قَالُوا: رَبَّنَا جَزَاؤُهُ أَنْ يُوَفَّى أَجْرَهُ. قَالَ: مَلَائِكَتِي عَبِيدِي وَإِمَائِي قَضَوْا فَرِيضَتِي عَلَيْهِمْ ثُمَّ خَرَجُوا يَعُجُّونَ إِلَى الدُّعَاءِ وَعِزَّتِي وَجَلَالِي وَكَرَمِي وَعُلُوِّي وَارْتِفَاعِ مَكَانِي لأجيبنهم. فَيَقُول: ارْجعُوا فقد غَفَرْتُ لَكُمْ وَبَدَّلْتُ سَيِّئَاتِكُمْ حَسَنَاتٍ. قَالَ: فَيَرْجِعُونَ مَغْفُورًا لَهُمْ ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2096. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब शबे कद्र होती है तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम फरिश्तो की जमाअत में तशरीफ़ लाते है, तो वह अल्लाह अज्ज़वजल के ज़िक्र में मसरूफ हर खड़े बैठें शख़्स पर रहमत भेजते है, जब उनकी ईद का दिन होता है तो अल्लाह तआला उनकी वजह से अपने फरिश्तो पर फख्र करते हुए फरमाता है, मेरे फरिश्तो इस मज़दूर की क्या जज़ा होनी चाहिए जो अपना काम पूरा करता है वह अर्ज़ करते हैं, परवरदिगार उसकी जज़ा यह है कि इसे पूरा पूरा बदला दिया जाए, अल्लाह तआला फरमाता है, मेरे फरिश्तो मेरे बंदो और मेरी लोंदियो ने मेरी तरफ से इन पर लगाया फ़रीज़े को पूरा कर दिया, फिर वह दुआए पुकारते हुए निकले है, मुझे मेरी इज्ज़त व जलाल, मेरे करम अलवा और अपने बुलंद मक़ाम की क़सम मैं इन की दुआए कबूल करूँगा, वह फरमाता है, वापस चले जाओ मैंने तुम्हें बख्श दिया और तुम्हारी खताओं को नेकियो में बदल दिया आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो इस हाल में वापस आते है की उनकी मगफिरत हो चुकी होती है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (3717) * فيه اصرم بن حوشب : كذاب

एतेकाफ़ का बयान • بَاب الِاعْتِكَاف

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٠٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللَّهُ ثُمَّ اعْتَكَفَ أَزْوَاجُهُ مِنْ بعده

2097. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ रमज़ान के आखिरी अशरे में एअतेकाफ़ करते रहे, हत्ता कि अल्लाह ने उन्हें फौत कर लिया, फिर आप की वफात के बाद अज़वाज ए मूतहरात ने एअतेकाफ़ किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2026) و مسلم (5 / 1172)، (2784)

٢٠٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَجْوَدَ النَّاسِ بِالْخَيْرِ وَكَانَ أَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَان وَكَانَ جِبْرِيلُ يَلْقَاهُ كُلَّ لَيْلَةٍ فِي رَمَضَانَ يَعْرِضُ عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقُرْآنَ فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ كَانَ أَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرّيح الْمُرْسلَة

2098. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खैर व भलाई में सबसे ज़्यादा सखी थे, और जब रमज़ान में जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप ﷺ से मुलाकात करते, तो आप ﷺ की सखावत बढ़ जाती, वह रमज़ान की हर रात आप से मुलाकात करते, तो नबी ﷺ उन्हें कुरान सुनाया करते थे, जब जिब्राइल आप से मुलाकात करते तो आप खैर व भलाई और सखावत करने में खुली हवा (तेज़ रफ़्तार आंधी) से भी बढ़कर होते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6 ، 1902) و مسلم (50 / 2308)، (6009)

٢٠٩٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: كَانَ يعرض على النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقُرْآنَ كُلَّ عَامٍ مَرَّةً فَعَرَضَ عَلَيْهِ مَرَّتَيْنِ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ وَكَانَ يَعْتَكِفُ كُلَّ عَامٍ عَشْرًا فَاعْتَكَفَ عِشْرِينَ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2099. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ को हर साल एक मर्तबा कुरान सुनाया जाता था और जिस साल आप की जान कब्ज़ की गई, इस साल दो मर्तबा सुनाया गया और आप हर साल दस दिन एअतेकाफ़ किया करते थे, लेकिन जिस साल आप की जान कब्ज़ की गई इस साल आप ने बीस रोज़ एअतेकाफ़ फ़रमाया| (बुखारी)

رواہ البخاری (4998)

٢١٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اعْتَكَفَ أَدْنَى إِلَيَّ رَأْسَهِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَأُرَجِّلُهُ وَكَانَ لَا يَدْخُلُ الْبَيْتَ إِلَّا لحَاجَة الْإِنْسَان "

2100. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ एअतेकाफ़ फ़रमाया करते तो आप अपना सर मुबारक मेरे करीब कर देते, जबकि आप मस्जिद में होते थे मैं आप के कंघी कर देती और आप सिर्फ इंसानी हाजत के तहत ही घर में तशरीफ़ लाया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2029) و مسلم (6 / 297)، (684)

٢١٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ عُمَرَ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " كُنْتُ نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَام؟ قَالَ: «فأوف بِنَذْرِك»

2101. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया, मैंने दौरे जाहिलियत में नज़र मानी थी की मैं मस्जिद ए हराम में एक रात एअतेकाफ़ करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने नज़र पूरी करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2032) و مسلم (27 / 1656)، (4292)

एतेकाफ़ का बयान • بَاب الِاعْتِكَاف

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢١٠٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْتَكِفُ فِي الْعَشْرِ الْأَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ فَلَمْ يَعْتَكِفْ عَامًا. فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمقبل اعْتكف عشْرين. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2102. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ रमज़ान के आखिरी दस दिन में एअतेकाफ़ किया करते थे, लेकिन आप ने एक साल एअतेकाफ़ न किया तो फिर आइन्दा साल आप ने बीस रोज़ का एअतेकाफ़ किया| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (803 وقال : حسن غریب صحیح) [و ابوداؤد (2463) و ابن ماجه (1770)] * و صححه ابن خزیمة (2226) و للحدیث شواھد کثیر

٢١٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي بن كَعْب

2103. इमाम अबू दावुद और इब्ने माजा ने इसे उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2463) و ابن ماجه (1770) [و صححه ابن خزيمة (2225) و ابن حبان (الموارد : 917) و الحاكم (1 / 439) و وافقه الذهبی]

٢١٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَعْتَكِفَ صَلَّى الْفَجْرَ ثُمَّ دَخَلَ فِي مُعْتَكَفِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2104. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ एअतेकाफ़ करने का इरादा फरमाते, तो आप ﷺ नमाज़ ए फजर अदा करते और फिर अपने एअतेकाफ़ की जगह में तशरीफ़ ले जाते| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2464) و ابن ماجه (1771) [و الترمذی (791) و البخاری (2033) و مسلم (1173)، (2785)]

٢١٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُ الْمَرِيضَ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فَيَمُرُّ كَمَا هُوَ فَلَا يُعَرِّجُ يَسْأَلُ عَنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2105. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ हालत ए एअतेकाफ़ में मरीज़ की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) कर लिया करते थे, आप ﷺ अपने हाल में चलते जाते और रुके बगैर उस का हाल दरियाफ्त कर लेते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2472) و ابن ماجه (لم اجده) و جاء فی هامش الهندية :'' قوله و ابن ماجه لا يوحد هذا فی اکثر النسخ المصححة ، و يوجد فی نسخة واحدة و کذاما و جدته فی سنن ابن ماجه فی ابواب الاعتکاف ، ص (183 حاشيه : 8) * فيه ليث بن ابی سليم ضعيف

٢١٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَة رَضِي الله عَنْهَا قَالَتْ: السُّنَّةُ عَلَى الْمُعْتَكِفِ أَنْ لَا يَعُودَ مَرِيضًا وَلَا يَشْهَدُ جِنَازَةً وَلَا يَمَسُّ الْمَرْأَةَ وَلَا يُبَاشِرُهَا وَلَا يَخْرُجُ لِحَاجَةٍ إِلَّا لِمَا لابد مِنْهُ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا بِصَوْمٍ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا فِي مَسْجِدٍ جَامِعٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2106. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एअतेकाफ़ करने वाले के लिए मस्नून यही है के वह ना किसी मरीज़ की मिलने जाए न जनाज़े में शिरकत करे, ना औरत से जिमाअ करे न इसे गले लगाए और किसी बहोत ही ज़रूरी काम के अलावा एअतेकाफ़ की जगह से बाहर न निकले, ना रोज़े के बगैर एअतेकाफ़ है न जामेअ मस्जिद के बगैर"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2473) * الزهری مدلس و عنعن



एतेकाफ़ का बयान • بَاب الِاعْتِكَاف

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢١٠٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا اعْتَكَفَ طُرِحَ لَهُ فِرَاشُهُ أَوْ يُوضَعُ لَهُ سَرِيرُهُ وَرَاءَ أسطوانه التَّوْبَة. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2107. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, जब आप एअतेकाफ़ फरमाते, तो तौबा के सुतून के पीछे आप ﷺ के लिए बिस्तर बिछा दिया जाता या चार पाई लगा दि जाती| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (1774)

٢١٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي الْمُعْتَكَفِ: «هُوَ يَعْتَكِفُ الذُّنُوبَ وَيُجْرَى لَهُ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَات كلهَا» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2108. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एअतेकाफ़ करने वाले के बारे में फ़रमाया: “वो गुनाहों से रुका रहता है और तमाम नेकियाँ करने वाले की तरह इसे नेकियो का सवाब मिलता रहता है”, जिन को वह पहले किया करता था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1781) * عبيدة بن بلال : مجهول الحال و فرقد بن يعقوب السبخی : ضعيف

फ़ज़ाइल ए कुरान का बयान • كتاب فَضَائِل الْقُرْآن

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢١٠٩ - (صَحِيح) عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُكُمْ من تعلم الْقُرْآن وَعلمه» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2109. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से बेहतरीन शख़्स वह है जिस ने कुरान सिखा और (दुसरो को) सिखाया"| (बुखारी)

رواه البخاری (5027)

٢١١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ: «أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَى بطحان أَو إِلَى العقيق فَيَأْتِي مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِي غَيْرِ إِثْمٍ وَلَا قَطْعِ رحم» فَقُلْنَا يَا رَسُول الله نُحِبُّ ذَلِكَ قَالَ: «أَفَلَا يَغْدُو أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمُ أَوْ يَقْرَأُ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ الله عز وَجل خير لَهُ من نَاقَة أَو نَاقَتَيْنِ وَثَلَاثٍ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثٍ وَأَرْبَعٍ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الْإِبِل» . رَوَاهُ مُسلم

2110. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए जबकि हम सफ में थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कौन पसंद करता है के वह हर रोज़ सुबह के वक़्त वादी बूटहान या वादी ए अकिक जाए और किसी गुनाह और कतअ रहमी का इर्तिकाब किए बगैर वहां से बड़ी कोहान वाली दो ऊंटनिया ले आए ?" हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम सब इसे पसंद करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई सुबह के वक़्त मस्जिद क्यों नहीं आता के वह अल्लाह तआला की किताब से दो आयते सिखा दे या पढ़े तो यह उस के लिए दो ऊंटनियो से बेहतर है, और तीन आयते उस के लिए तीन ऊंटनियो से और चार चार से बेहतर है और वह जितनी ज़्यादा होगी वह उतनी ही ऊंटनियो से बेहतर होगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (251 / 803)، (1873)

٢١١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ إِذَا رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ أَنْ يَجِدَ فِيهِ ثَلَاثَ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ» . قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ [ص:٦٥]: «فَثَلَاثُ آيَاتٍ يَقْرَأُ بِهِنَّ أَحَدُكُمْ فِي صلَاته خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثِ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ» . رَوَاهُ مُسلم

2111. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क्या तुम में से कोई पसंद करता है की जब वह अपने घर जाए तो वहां तीन बड़ी मोटी ताज़ी हामिला ऊंटनिया पाए ?" हमने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई शख़्स अपने नमाज़ में तीन आयात पढ़ता है तो वह तीन आयात उस के

लिए तीन मोटी ताज़ी हामिला ऊंटनियो से बेहतर है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (250 / 802)، (1872)

٢١١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ وَالَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَيَتَتَعْتَعُ فِيهِ وَهُوَ عَلَيْهِ شاق لَهُ أَجْرَانِ»

2112. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माहिर ए कुरान, इताअत गुज़ार मुअज्ज़ज़ लिखने वाले फरिश्तो के साथ होगा और जो शख़्स अटक अटक कर कुरान पढ़ता है और वह उस पर दुश्वार होता है तो उस के लिए दोहरा अज़र होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4937) و مسلم (244 / 798)، (1862)

٢١١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا حَسَدَ إِلَّا على اثْنَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللَّهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَقُومُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ وَرَجُلٌ آتَاهُ اللَّهُ مَالًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَار "

2113. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सिर्फ दो आदमियों पर रश्क करना जाईज़ है, एक वह आदमी जिसे अल्लाह ने कुरान (का इल्म) अता किया हो और वह दिन-रात इस (की तिलावत व अमल) का इहतेमाम करता हो और एक वह आदमी जिसे अल्लाह ने माल अता किया हो और वह दिन-रात उस में से खर्च करता हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5025) و مسلم (266 / 815)، (1894)

٢١١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مثل الْمُؤمن الَّذِي يقْرَأ الْقُرْآن كَمثل الْأُتْرُجَّةِ رِيحُهَا طِيبٌ وَطَعْمُهَا طَيِّبٌ وَمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي لَا يقْرَأ الْقُرْآن كَمثل التمرة لَا ريح لَهَا وطعمها حلوومثل الْمُنَافِقِ الَّذِي لَا يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الْحَنْظَلَةِ لَيْسَ لَهَا رِيحٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي يقْرَأ الْقُرْآن مثل الريحانة رِيحهَا طيب وَطَعْمُهَا مَرٌّ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: «الْمُؤْمِنُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَيَعْمَلُ بِهِ كَالْأُتْرُجَّةِ وَالْمُؤْمِنُ الَّذِي لَا يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَيَعْمَلُ بِهِ كَالتَّمْرَةِ»

2114. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान की तिलावत करने वाला मोमिन नारंगी की तरह है उसकी खुशबू भी अच्छी है और वह खुश ज़ाइका भी है, और कुरान की तिलावत न करने वाला मोमिन खजूर की तरह है, जिस की खुशबू नहीं, लेकिन उस का ज़ाइका शीरीन है, और कुरान न पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ की मिसाल इन्द्राइन (बूटी) की तरह है जिस की खुशबू नहीं और उस का ज़ाइका कड़वा है, जबकि कुरान पढ़ने वाला मुनाफ़िक़ तुलसी की तरह है जिस की खुशबू अच्छी है और ज़ाइका कड़वा है”| और एक

रिवायत में है: “कुरान पढ़ने और उस पर अमल करने वाला मोमिन तरंजिन की मिस्ल है जबकि कुरान न पढ़ने वाला लेकिन उस पर अमल करने वाला मोमिन खजूर की तरह है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5437) و مسلم 243 / 797)، (1860)

٢١١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن الله يَرْفَعُ بِهَذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهِ آخَرِينَ» . رَوَاهُ مُسلم

2115. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह इस किताब के ज़रिए कुछ लोगों को बड़ा दर्जा अता फरमाता है और कुछ लोगों को पस्ती का शिकार कर देता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (269 / 817)، (1897)

٢١١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ أَسَيْدَ بنَ حُضَيْرٍ قَالَ: بَيْنَمَا هُوَ يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ سُورَةَ الْبَقَرَةِ وَفَرَسُهُ مَرْبُوطَةٌ عِنْدَهُ إِذْ جَالَتِ الْفرس فسكت فَسَكَتَتْ فَقَرَأَ فجالت الْفرس فَسكت [ص:٦٥ فَسَكَتَتْ الْفرس ثُمَّ قَرَأَ فَجَالَتِ الْفَرَسُ فَانْصَرَفَ وَكَانَ ابْنُهُ يحيى قَرِيبا مِنْهَا فأشفق أَن تصيبه فَلَمَّا أَخَّرَهُ رَفْعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَإِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فِيهَا أَمْثَالُ الْمَصَابِيحِ فَلَمَّا أَصْبَحَ حَدَّثَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «اقْرَأْ يَا ابْنَ حُضَيْرٍ اقْرَأْ يَا ابْنَ حُضَيْرٍ» . قَالَ فَأَشْفَقْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنْ تَطَأَ يحيى وَكَانَ مِنْهَا قَرِيبا فَرفعت رَأْسِي فَانْصَرَفْتُ إِلَيْهِ وَرَفَعْتُ رَأْسِي إِلَى السَّمَاءِ فَإِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فِيهَا أَمْثَالُ الْمَصَابِيحِ فَخَرَجَتْ حَتَّى لَا أَرَاهَا قَالَ: «وَتَدْرِي مَا ذَاكَ؟» قَالَ لَا قَالَ: «تِلْكَ الْمَلَائِكَةُ دَنَتْ لِصَوْتِكَ وَلَوْ قَرَأْتَ لَأَصْبَحَتْ يَنْظُرُ النَّاسُ إِلَيْهَا لَا تَتَوَارَى مِنْهُمْ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَاللَّفْظُ لِلْبُخَارِيِّ وَفِي مُسْلِمٍ: «عرجت فِي الجو» بدل: «خرجت على صِيغَة الْمُتَكَلّم»

2116. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उसैद बिन हज़िर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि एक दफा वह रात के वक़्त सुरह बकरह तिलावत कर रहे थे और उनका घोड़ा उन के पास बंधा हुआ था, के घोड़ा अचानक उछलने लगा वह ख़ामोश हो गए तो वह (घोड़ा) भी ठहर गया, उन्होंने फिर पढ़ी तो घोड़ा फिर उछलने लगा वह ख़ामोश हो गए तो वह (घोड़ा) भी ठहर गया, उन्होंने फिर पढ़ी तो घोड़ा फिर उछलने लगा, वह फारिग़ हुए और उनका बेटा याह्या इस घोड़े के करीब ही था, लिहाज़ा उन्हें अंदेशा हुआ की वह इसे नुकसान न पहुंचाए और जब उन्होंने इसे दूर किया और आसमान की तरफ सर उठाया तो साइबान सा दिखाई दिया जिस में चिरागो की तरह रोशनी थी, जब सुबह हुई तो उन्होंने नबी ﷺ को बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इब्ने हज़िर पढ़, इब्ने हज़िर तुम पढ़ते रहते”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे अंदेशा हुआ की (अगर में पढ़ता रहता तो) वह याह्या को रोंद डालता, क्योंकि वह उस के करीब था, लिहाज़ा में उसकी तरफ मुतवज्जे हो गया, मैंने अपना सर आसमान की तरफ उठाया तो (ऊपर) साइबान की तरह कोई चीज़ थी और उस में चिरागो जैसी कोई चीज़ थी, मैं बाहर निकला हत्ता कि मैंने इस (रोशनी) को न देखा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम जानते हो वह क्या था ?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया: “वो फ़रिश्ते थे जो तुम्हारी आवाज़ के करीब हो गए थे, अगर तुम पढ़ते रहते तो वह वहीँ रहते और लोग उन्हें देख लेते और वह उन से छुपा न रहते”| मुत्तफ़िक़ अलैह

और यह अल्फ़ाज़ हदीस बुखारी के हैं और सहीह मुस्लिम में है: “में बाहर निकला” सीगा मुतकल्लम के बदल लफ्ज़: “वो फिज़ा में बुलंद हो गए” इस्तेमाल हुआ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5018) و مسلم (242 / 796)، (1859)

٢١١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ يَقْرَأُ سُورَةَ الْكَهْفِ وَإِلَى جَانِبِهِ حِصَانٌ مَرْبُوطٌ بِشَطَنَيْنِ فَتَغَشَّتْهُ سَحَابَةٌ فَجَعَلَتْ تَدْنُو وَتَدْنُو وَجَعَلَ فَرَسُهُ يَنْفِرُ فَلَمَّا أَصْبَحَ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «تِلْكَ السكينَة تنزلت بِالْقُرْآنِ»

2117. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी सुरह काह्फ़ पढ़ रहा था और उस के एक जानिब एक घोड़ा दो मज़बूत रस्सियों से बंधा हुआ था, पस बादल के टुकड़े ने इस आदमी को ढांप लिया और वह उस के करीब से करीब तर होने लगा, जबकि उस का घोड़ा बिदकने लगा, जब सुबह हुई तो वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप से उस का तज़किरह किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो सकिनत थी जो कुरान की वजह से नाज़िल हुई थी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5011) و مسلم (240 / 795)، (1856)

٢١١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى قَالَ: كُنْتُ أَصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ فَدَعَانِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَلم أجبه حَتَّى صليت ثُمَّ أَتَيْتُهُ. فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كنت أُصَلِّي فَقَالَ أَلَمْ يَقُلِ اللَّهُ (اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دعَاكُمْ)»» ثمَّ قَالَ لي: «أَلَا أُعَلِّمُكَ أَعْظَمَ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ» . فَأَخَذَ بِيَدِي فَلَمَّا أَرَادَ أَن يخرج قلت لَهُ ألم تقل لأعلمنك سُورَة هِيَ أعظم سُورَةً مِنَ الْقُرْآنِ [ص:٦٥ قَالَ: (الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ)»» هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتهُ ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

2118. अबू सईद बिन मअला रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था तो नबी ﷺ ने मुझे बुलाया मैंने आप की आवाज़ पर लब्बैक न कही, फिर मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! में नमाज़ पढ़ रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या अल्लाह ने नहीं फरमाया जब अल्लाह और उस का रसूल तुम्हें बुलाए तो तुम उनकी इताअत करो”, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं उस से पहले की तुम मस्जिद से बाहर निकलो, तुम्हें कुरान की अज़ीम सूरत न सिखाऊ”, आप ने मुझे हाथ से पकड़ लिया जब हमने मस्जिद से बाहर निकलने का इरादा किया तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमाया था की मैं तुम्हें कुरान की अज़ीम तर सूरत सिखाऊंगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(الحمد لله رب العالمين) “ सुरह फातिहा” वह सबअ मसानी और कुरान अज़ीम है जो मुझे दिया गया है”| (बुखारी)

رواه البخاری (4474)

٢١١٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَجْعَلُوا بِيُوتَكُمْ مَقَابِرَ إِنَّ

الشَّيْطَانَ يَنْفِرُ من الْبَيْت الَّذِي يقْرَأ فِيهِ سُورَة الْبَقَرَة» . رَوَاهُ مُسلم

2119. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान फरमाते हैं रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने घरो को कब्रिस्तान न बनाओ क्योंकि जिस घर में सूरह बकरह की तिलावत की जाए वहां से शैतान भाग जाता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (212 / 780)، (1824)

٢١٢٠ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «اقْرَءُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ اقْرَءُوا الزَّهْرَاوَيْنِ الْبَقَرَةَ وَسُورَةَ آلِ عِمْرَانَ فَإِنَّهُمَا تَأْتِيَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَأَنَّهُمَا غَمَامَتَانِ أَوْ كَأَنَّهُمَا غَيَايَتَانِ أَو فِرْقَانِ مِنْ طَيْرٍ صَوَافَّ تُحَاجَّانِ عَنْ أَصْحَابِهِمَا اقْرَءُوا سُورَةَ الْبَقَرَةِ فَإِنَّ أَخْذَهَا بَرَكَةٌ وَتَرْكَهَا حَسْرَةٌ وَلَا تستطيعها البطلة» . رَوَاهُ مُسلم

2120. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना ،" कुरान पढ़ा करो क्योंकि वह रोज़ ए कियामत अपने पढ़ने वालो के लिए सिफारिशी बनकर आएगा, सुरह बकरह और सुरह आले इमरान दो चमकती हुई रोशन सूरतो को पढ़ो, क्योंकि वह कियामत के दिन इस हाल में आएगी, गोया के वह दो बादल है या दो साइबान है या परिंदों के गोल है, जो सफे बांधे हुए अपने पढ़ने वालो के हक़ में बहस व मुबाहसा करेंगे, सुरह बकरह पढ़ा करो, क्योंकि इसे हासिल कर लेना बाईस ए बरकत और इसे तर्क कर देना बाईस हसरत है, और जादूगर इसे हासिल नहीं कर सकते"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (252 / 804)، (1874)

٢١٢١ - (صَحِيح) وَعَن النواس بن سمْعَان قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يُؤْتَى بِالْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَهْلِهِ الَّذِينَ كَانُوا يَعْمَلُونَ بِهِ تَقْدُمُهُ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَآلُ عِمْرَانَ كَأَنَّهُمَا غَمَامَتَانِ أَوْ ظُلَّتَانِ سَوْدَاوَانِ بَيْنَهُمَا شَرْقٌ أَوْ كَأَنَّهُمَا فِرْقَانِ مِنْ طَيْرٍ صَوَافَّ تحاجان عَن صَاحبهمَا» . رَوَاهُ مُسلم

2121. नव्वास बिन समआन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "कुरान और उस पर अमल करने वालो को रोज़ ए कियामत लाया जाएगा, सुरह बकरह और सुरह आले इमरान इस कुरान की सूरतो के आगे होगी, गोया वह सियाह बादल है, या दो साइबान है उन के दरमियान रोशनी है या वह परिंदों के दो गोल है, जो सफे बांधे हुए अपने पढ़ने वालो की तरफ से झगड़ा करेगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (253 / 805)، (1876)

٢١٢٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا الْمُنْذِرِ أَتَدْرِي أَيُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ مَعَك أعظم؟» . قَالَ: قُلْتُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: «يَا أَبَا الْمُنْذِرِ أَتَدْرِي أَيُّ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ مَعَك أعظم؟» . قَالَ: قُلْتُ [ص:٦٥ (اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ القيوم)»» قَالَ فَضرب فِي صَدْرِي وَقَالَ: «وَالله لِيَهنك الْعلم أَبَا الْمُنْذر» . رَوَاهُ مُسلم

2122. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अबू मुन्ज़र क्या तुम जानते हो के तुम्हें कुरआन ए करीम की कौन सी सबसे अज़ीम आयत याद है” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फिर फ़रमाया: “अबू मुन्ज़र क्या तुम जानते हो के तुम्हें कुरआन ए करीम की कौन सी सबसे अज़ीम आयत याद है” मैंने अर्ज़ किया: (الله لا اله الا هو الحى القيوم) उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आप ﷺ ने मेरे सिने पर हाथ मारा और फ़रमाया: “अबू मुन्ज़र तुम्हें इल्म मुबारक हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (258 / 810)، (1885)

٢١٢٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِحِفْظِ زَكَاةِ رَمَضَانَ فَأَتَانِي آتٍ فَجَعَلَ يَحْثُو من الطَّعَام فَأَخذته وَقلت وَالله لَأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِنِّي مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ وَلِي حَاجَةٌ شَدِيدَةٌ قَالَ فَخَلَّيْتُ عَنْهُ فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا هُرَيْرَة مَا فعل أسيرك البارحة» . قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً وَعِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ قَالَ: «أَمَا إِنَّهُ قَدْ كَذَبَكَ وَسَيَعُودُ» . فَعَرَفْتُ أَنَّهُ سَيَعُودُ لِقَوْلِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَّهُ سيعود» . فَرَصَدْتُهُ فَجَاءَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ: لَأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ دَعْنِي فَإِنِّي مُحْتَاجٌ وَعَلَيَّ عِيَالٌ لَا أَعُودُ فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟» قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ شَكَا حَاجَةً شَدِيدَةً وَعِيَالًا فَرَحِمْتُهُ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ قَالَ: «أَمَا إِنَّهُ قَدْ كَذبك وَسَيَعُودُ» . فرصدته الثَّالِثَة فَجَاءَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ لَأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُول الله وَهَذَا آخِرُ ثَلَاثِ مَرَّاتٍ إِنَّكَ تَزْعُمُ لَا تَعُودُ ثُمَّ تَعُودُ قَالَ دَعْنِي أُعَلِّمْكَ كَلِمَاتٍ ينفعك الله بهَا قلت مَا هُوَ قَالَ إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَاقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ (اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ)»» حَتَّى تَخْتِمَ الْآيَةَ فَإِنَّكَ لَنْ يَزَالَ عَلَيْكَ من الله حَافظ وَلَا يقربنك شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ فَخَلَّيْتُ سَبِيلَهُ فَأَصْبَحْتُ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا فَعَلَ أَسِيرُكَ؟» قُلْتُ: زَعَمَ أَنَّهُ [ص:٦٥ يُعَلِّمُنِي كَلِمَات يَنْفَعنِي الله بهَا فخليت سبيلهقال النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «أما إِنَّه قد صدقك وَهُوَ كذوب تعلم من تخاطب مُنْذُ ثَلَاث لَيَال» . يَا أَبَا هُرَيْرَة قَالَ لَا قَالَ: «ذَاك شَيْطَان» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2123. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सदका ए फितर की हिफाज़त करने पर मामूर फ़रमाया है पस एक शख़्स मेरे पास आया और गल्ले से लप भरने लगा, मैंने इसे पकड़ लिया और कहा में तुम है रसूलुल्लाह ﷺ के पास लेकर जाऊंगा, उस ने कहा में मुहताज हूँ मेरे बच्चे है और मैं बहोत ज़रूरत मंद हूँ, रावी बयान करते हैं, मैंने इसे छोड़ दिया सुबह हुई तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अबू हुरैरा गुज़िश्ता रात तेरे कैदी ने क्या किया ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उस ने सख्त ज़रूरत और बच्चो की शिकायत की तो मुझे उस पर रहम गया और मैंने इसे छोड़ दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने तुम्हारे साथ गलत बयानी की और वह फिर आएगा”, मैंने जान लिया के रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान के मुताबिक वह फिर आएगा, लिहाज़ा में उसकी ताक में बैठ गया, वह आया और गल्ला भरने लगा तो मैंने इसे पकड़ लिया और मैंने कहा में तुम्हें ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश करूँगा, उस ने कहा में ज़रूरत मंद और अयाल दार हूँ, मैं फिर नहीं आऊंगा मैंने उस पर तरस खाते हुए इसे छोड़ दिया, सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से पूछा: “अबू हुरैरा तुम्हारे कैदी का क्या हुआ ?” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उस ने सख्त ज़रूरत और बच्चो की शिकायत की तो मैंने उस पर रहम खाते हुए इसे छोड़ दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस ने तो तुम से गलत बयानी की और वह फिर आएगा”, मैंने जान लिया के रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान के मुताबिक वह ज़रूर आएगा में उसकी ताक में बैठ गया वह आया

और गल्ला भरने लगा तो मैंने इसे पकड़ लिया और कहा में तुम्हें ज़रूर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश करूँगा और यह तीसरी और आखिरी मर्तबा है, तुम कहते हो में फिर नहीं आऊंगा लेकिन फिर आ जाते हो, उस ने कहा मुझे छोड़ दो में तुम्हें चंद कलिमात सिखाऊंगा, जिन के ज़रिए अल्लाह तुम्हें फ़ायदा पहुंचाएगा, जब तुम सोने के लिए अपने बिस्तर पर आओ, मुकम्मल आयतुल कुर्सी पढ़ो इस तरह अल्लाह की तरफ से तुम पर एक मुहाफ़िज़ मुकर्रर हो जाएगा और शैतान तुम्हारे करीब नहीं आएगा, हत्ता कि सुबह हो जाएगी, मैंने इसे छोड़ दिया, सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तुम्हारे कैदी ने क्या किया ?” मैंने अर्ज़ किया: उस ने कहा के वह मुझे चंद कलिमात सिखाएगा जिन के ज़रिए अल्लाह मुझे फ़ायदा पहुंचाएगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने तुम से सच कहा हालाँकि वह झूठा है, क्या तुम जानते हो की तुम तीन रोज़ से किसी के साथ बाते करते रहे हो”, मैंने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो शैतान था”| (बुखारी)

رواه البخاری (2311)

٢١٢٤ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: بَيْنَمَا جِبْرِيلُ قَاعِدٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ نَقِيضًا مِنْ فَوْقِهِ فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: «هَذَا بَابٌ مِنَ السَّمَاءِ فُتِحَ الْيَوْمَ لَمْ يُفْتَحْ قَطُّ إِلَّا الْيَوْمَ فَنَزَلَ مِنْهُ مَلَكٌ فَقَالَ هَذَا مَلَكٌ نَزَلَ إِلَى الْأَرْضِ لَمْ يَنْزِلْ قَطُّ إِلَّا الْيَوْمَ فَسَلَّمَ وَقَالَ أَبْشِرْ بِنُورَيْنِ أُوتِيتَهُمَا لَمْ يُؤْتَهُمَا نَبِيٌّ قَبْلَكَ فَاتِحَةُ الْكِتَابِ وَخَوَاتِيمُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ لَنْ تَقْرَأَ بِحَرْفٍ مِنْهُمَا إِلَّا أَعْطيته» . رَوَاهُ مُسلم

2124. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, इस दौरान के जिब्राइल अलैहिस्सलाम नबी ﷺ के पास बैठें हुए थे की उन्होंने अपने सर के ऊपर से ज़ोर दार आवाज़ सुनी तो उन्होंने अपना सर उठाया और फ़रमाया: “ये आसमान से पहली मर्तबा एक दरवाज़ा खुला और उन से एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ है, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: यह जो फ़रिश्ता ज़मीन की तरफ नाज़िल हुआ है, उन से पहले कभी नाज़िल नहीं हुआ है, उस ने सलाम अर्ज़ किया, तो कहा आप को दो नूरो की खुशखबरी हो, वह आप ही को अता किए गए है, आप से पहले किसी नबी को नहीं दिए गए सुरह फातिहा और सुरह बकरह की आखिरी तीन आयात आप और आप के मुत्तबीइन इन दोनों में से जो हरफ दुआ पढेंगे वह आप को अता कर दिया जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (254 / 806)، (1877)

٢١٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْآيَتَانِ مِنْ آخَرِ سُورَةِ الْبَقَرَة من قَرَأَ بهما فِي لَيْلَة كفتاه»

2125. अबू मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुरह बकरह की आखिरी दो आयते ऐसी है की जो शख़्स रात के वक़्त उन्हें पढ़ ले तो वह उस के लिए काफी हो जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4008) و مسلم (255 / 807)، (1878)

٢١٢٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَفِظَ عشر آيَات من أول سُورَة الْكَهْف عصم من فتْنَة الدَّجَّال» . رَوَاهُ مُسلم

2126. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सुरह काहफ़ की इब्तिदाई दस आयात याद कर ले तो इसे फितने दज्जाल से बचा लिया जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (257 / 809)، (1883)

٢١٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيَعْجَزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ فِي لَيْلَةٍ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟» قَالُوا: وَكَيْفَ يَقْرَأُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ؟ قَالَ: «قُلْ هُوَ الله أحد» يعدل ثلث الْقُرْآن ". رَوَاهُ مُسلم

2127. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम में से कोई रात में तिहाई कुरान पढ़ने से आजिज़ है”, सहाबा ने अर्ज़ किया, तिहाई कुरान कैसे पढ़ा जा सकता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुरह इखलास तिहाई कुरान के बराबर है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (259 / 811)، (1886)

٢١٢٨ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ البُخَارِيّ عَن أبي سعيد

2128. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने इसे अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخارى (7374)

٢١٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ رَجُلًا عَلَى سَرِيَّةٍ وَكَانَ يَقْرَأُ لأَصْحَابه فِي صلَاتهم فيختم ب (قل هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)»» فَلَمَّا رَجَعُوا ذَكَرُوا ذَلِكَ [ص:٦٥ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «سَلُوهُ لِأَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذَلِكَ» فَسَأَلُوهُ فَقَالَ لِأَنَّهَا صفة الرَّحْمَن وَأَنا أحب أَن أَقرَأ بِهَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَخْبِرُوهُ أَن الله يُحِبهُ»

2129. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक आदमी को किसी लश्कर का अमीर बना कर भेजा, वह अपने साथियो को नमाज़ पढ़ाते तो किराअत के आख़िर में सुरह इखलास पढ़ता, जब वह वापस आए तो उन्होंने नबी ﷺ से उस का तज़किरह किया, तो आप ने फ़रमाया: “उस से पूछो के वह ऐसे क्यों करता था ?” उन्होंने उस से पूछा तो उस ने कहा क्योंकि वह रहमान की सिफत है और मैं उसे पढ़ना पसंद करता हूँ, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इसे बता दो की अल्लाह इसे पसंद फरमाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7375) و مسلم (263 / 813)، (1890)

٢١٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُحِبُّ هَذِهِ السُّورَةَ: (قُلْ هُوَ الله أحد)»» قَالَ: إِنَّ حُبَّكَ إِيَّاهَا أَدْخَلَكَ الْجَنَّةَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وروى البُخَارِيّ مَعْنَاهُ

2130. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में सुरह इखलास से मुहब्बत करता हूँ आप ने फ़रमाया: “बेशक तुम्हारी उस से मुहब्बत ही तुम्हें जन्नत में ले जाएगी”| तिरमिज़ी, और इमाम बुखारी ने उस का मफ्हुम बयान किया है| (बुखारी तिरमिज़ी)

رواه البخارى (2774) و الترمذى (2901)

٢١٣١ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَلَمْ تَرَ آيَاتٍ أُنْزِلَتِ اللَّيْلَةَ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ قَطُّ (قل أعوذ بِرَبّ الفلق)»» و (قل أعوذ بِرَبّ النَّاس)»» رَوَاهُ مُسلم

2131. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम्हें मालुम नहीं के आज रात ऐसी आयात नाज़िल हुई के उन जैसी पहले नहीं देखी गई, सूरत अल फलक और सूरत अल नास”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (264 / 814)، (1891)

٢١٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ كُلَّ لَيْلَةٍ جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيهِمَا فَقَرَأَ فيهمَا (قل هُوَ الله أحد)»» و (قل أعوذ بِرَبّ الفلق)»» و (قل أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ)»» ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا مَا اسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهِ يَبْدَأُ بِهِمَا عَلَى رَأْسِهِ وَوَجْهِهِ وَمَا أَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهِ يَفْعَلُ ذَلِكَ ثَلَاث مَرَّات "»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ ابْنِ مَسْعُودٍ: لَمَّا أُسْرِيَ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَابِ الْمِعْرَاج إِن شَاءَ الله تَعَالَى

2132. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब नबी ﷺ अपने बिस्तर पर आराम करते तो आप हर रात अपने दोनों हाथ इकठ्ठे करते, फिर सुरह इखलास, सुरह फलक और सुरह नास पढ़ कर हाथो पर फूंक मारते, फिर जहाँ तक मुमकिन होता उन्हें अपने जिस्म पर फिराते, आप ﷺ अपने सर चेहरे और अपने जिस्म के अगले हिस्से पर हाथ फिराते और आप तीन मर्तबा ऐसा करते| # रसूलुल्लाह ﷺ के मेअराज से मुतल्लिक इब्ने मसउद (र) से मरवी हदीस हम इंशाअल्लाह तआला बाब अल मेअराज में ज़िक्र करेंगे| (मुत्तफ़क़ अलैह:)

متفق علیه ، رواه البخاری (5017) و مسلم (لم اجده) 0 حديث ابن مسعود یاتی (5865)

كتاب فَضَائِل الْقُرْآن • फ़ज़ाइल ए कुरान का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢١٣٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثَةٌ تَحْتَ الْعَرْشِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْقُرْآنُ يُحَاجُّ الْعِبَادَ لَهُ ظَهْرٌ وَبَطْنٌ وَالْأَمَانَةُ وَالرَّحِمُ تُنَادِي: أَلَا مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللَّهُ وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ اللَّهُ ". رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2133. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तीन चीज़े रोज़ ए कियामत अर्श के नीचे होगी कुरान बंदो की तरफ से झगड़ा करेगा उस का ज़ाहिर भी है और बातिन भी और अमानत भी जबकि रहम आवाज़ देगा, सुन लो, जिस ने मुझे मिलाया अल्लाह इसे मिलाए और जिस ने मुझे कतअ किया अल्लाह इसे कतअ करे”, इमाम बगवी रहिमहुल्लाह ने इसे शरह सुन्ना में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (13 / 2223 ح 3433) * فيه كثير بن عبدالله اليشكرى لم يوثقه غير ابن حبان (7 / 354) و اوراده العقيلى فى الضعفاء و الحسن بن عبد الرحمن بن عوف : لم يوثقه غير ابن حبان ، فهو مجهول الحال

٢١٣٤ - (حسن) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: اقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا فَإِنَّ مَنْزِلَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَة تقرؤها ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2134. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हामिल आमिल कुरान से कहा जाएगा पढ़ता जा और चढ़ता जा और वैसे तरतील से पढ़ो जैसी तो दुनिया में तरतील के साथ पढ़ा करता था और तो जहाँ आखिरी आयत पढ़ेगा वही तेरी मंजिल होगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 192 ح 6799) و الترمذى (2914 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (1464) و النسائى (فى الكبرىٰ 5 / 22 ح 8056 ، فضائل القرآن : 81) [و صححه ابن حبان (1790) و الذهبى فى تلخيص المستدرك (1 / 553)]

٢١٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الَّذِي لَيْسَ فِي جَوْفِهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيح

2135. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के पेट (दिल) में कुरान का कुछ हिस्सा न हो वह बे आबाद घर की तरह है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2913) و الدارمى (2 / 429 ح 3309) * قابوس : فيه لين

٢١٣٦ - (ضَعِيف جدا) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: مَنْ شَغَلَهُ الْقُرْآنُ عَنْ ذِكْرِي وَمَسْأَلَتِي أَعْطَيْتُهُ أَفْضَلَ مَا أُعْطِي السَّائِلِينَ. وَفَضْلُ كَلَامِ اللَّهِ عَلَى سَائِرِ الْكَلَامِ كَفَضْلِ اللَّهِ عَلَى خَلْقِهِ ". رَوَاهُ [ص:٦٥ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2136. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रब तबारक व तआला फरमाता है, कुरान ने जिस शख़्स को मेरे ज़िक्र और मुझ से सवाल करने से मशगुल रखा हो में उसे उस से बेहतर अता करता हूँ जो सवाल करने वालो को दिया जाता है, और अल्लाह के कलाम को दीगर कलामो पर ऐसे ही बढ़त हासिल है जैसे अल्लाह को अपने मखलूक पर बढ़त हासिल है”| तिरमिज़ी, दारमी बयहकी की शौबुल ईमान और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2926) و الدارمى (2 / 441 ح 3359) و البيهقى فى شعب الايمان (2 / 353 ح 2015) * محمد بن الحسن بن ابى يزيد : ضعيف و للحديث شواهد

٢١٣٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا لَا أَقُولُ: آلم حَرْفٌ. أَلْفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيمٌ حَرْفٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب إِسْنَادًا

2137. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कुरआन ए करीम का एक हरफ पढ़ता है तो इसे उस के बदले में एक नेकी मिलती है और नेकी दस गुना बढ़ जाती है, मैं नहीं होता के (الم) एक हरफ है. बल्कि अलिफ़ एक हरफ है. लाम एक हरफ है. ميم(मीम) एक हरफ है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है, सनद के लिहाज़ से ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2910) و الدارمى (2 / 429 ح 3311 موقوف على ابن مسعود رضى الله عنه

٢١٣٨ - (ضَعِيف جدا) وَعَنِ الْحَارِثِ الْأَعْوَرِ قَالَ: مَرَرْتُ فِي الْمَسْجِدِ فَإِذَا النَّاسُ يَخُوضُونَ فِي الْأَحَادِيثِ فَدَخَلْتُ عَلَى عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَأَخْبَرْتُهُ قَالَ: أَوَقَدْ فَعَلُوهَا؟ قلت نعم قَالَ: أما إِنِّي قَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «أَلا إِنَّهَا سَتَكُون فتْنَة» . فَقلت مَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «كتاب الله فِيهِ نبأ مَا كَانَ قبلكُمْ وَخبر مَا بعدكم وَحكم مَا بَيْنكُم وَهُوَ الْفَصْلُ لَيْسَ بِالْهَزْلِ مَنْ تَرَكَهُ مِنْ جَبَّارٍ قَصَمَهُ اللَّهُ وَمَنِ ابْتَغَى الْهُدَى فِي غَيْرِهِ أَضَلَّهُ اللَّهُ وَهُوَ حَبْلُ اللَّهِ الْمَتِينُ وَهُوَ الذِّكْرُ الْحَكِيمُ وَهُوَ الصِّرَاطُ الْمُسْتَقِيمُ هُوَ الَّذِي لَا تَزِيغُ بِهِ الْأَهْوَاءُ وَلَا تَلْتَبِسُ بِهِ الْأَلْسِنَةُ وَلَا يَشْبَعُ مِنْهُ الْعُلَمَاءُ وَلَا يَخْلِقُ على كَثْرَةِ الرَّدِّ وَلَا يَنْقَضِي عَجَائِبُهُ هُوَ الَّذِي لَمْ تَنْتَهِ الْجِنُّ إِذْ سَمِعَتْهُ حَتَّى قَالُوا (إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنا بِهِ)»» مَنْ قَالَ بِهِ صَدَقَ وَمَنْ عَمِلَ بِهِ أُجِرَ وَمَنْ حَكَمَ بِهِ عَدَلَ وَمَنْ دَعَا إِلَيْهِ هُدِيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ» . رَوَاهُ [ص:٦٦ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ إِسْنَادُهُ مَجْهُولٌ وَفِي الْحَارِث مقَال

2138. हारिस अअवर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं मस्जिद से गुज़रा तो लोग बातो में मशगुल थे, मैं अली रदियल्लाहु अन्हु के पास गया और उन्हें बताया तो उन्होंने ने फ़रमाया: क्या उन्होंने ऐसे किया है? मैंने कहा जी हां! उन्होंने ने फ़रमाया: सुन लो! बेशक मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सुन लो! अनकरीब फितने

पैदा होंगे”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उन से बचने का क्या तरकीब है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की किताब उस में पिछले कोमो के अहवाल और मुस्तकबिल के अखबार और तुम्हारे मसाइल का हल है, वह फैसलाकुन है, बे फ़ायदा नहीं, जिस ने अज़राह तकब्बुरसे तर्क कर दिया, अल्लाह ने इसे हलाक कर डाला, जिस ने उस के अलावा किसी और चीज़ से हिदायत तलाश करने की कोशिश की तो अल्लाह ने इसे गुमराह कर दिया, वह अल्लाह की मज़बूत रस्सी यानी वसीला है, वह ज़िक्र हकिम और सिरातुल मुस्तकीम है, उसकी वजह से न ख्वाइश टेढ़ी होती है न ज़बाने इख्तिलात वल तिबास का शिकार होती है और न उलेमा उन से सैर होते हैं, कसरते तकरीर से न वह पुरानी होती है और ना ही उस के अजाइब ख़तम होते हैं, वह ऐसी किताब है के जिसे सुन कर जिन्न बेसाख्ता पुकार उठे के “ हम ने अजीब कुरान सुना है जो रश्द भलाई की तरफ रहनुमाई करती हैं लिहाज़ा हम उस पर ईमान ले आए”, जिस ने उस के हवाले से कहा उस ने सच कहा जिस ने उस के मुताबिक अमल किया यह अज़र पा गया, जिस ने उस के मुताबिक फैसला किया उस ने अदल किया, और जिस ने उसकी तरफ बुलाया वह सिरातुल मुस्तकीम की तरफ हिदायत पा गया “, तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: इस हदीस की सनद मजहूल है और हारिस पर कलाम किया गया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (2906) و الدارمی (2 / 435 ح 3334 ، 3335) * الحارث الاعور : ضعيف جدًا

٢١٣٩ - (ضَعِيف) وَعَن معَاذ الْجُهَنِيّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَعَمِلَ بِمَا فِيهِ أُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ضَوْءُهُ أَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ فِي بُيُوتِ الدُّنْيَا لَوْ كَانَتْ فِيكُمْ فَمَا ظَنُّكُمْ بِالَّذِي عَمِلَ بِهَذَا؟» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

2139. मुआज़ जुहनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने कुरान पढ़ा और उस के मुताबिक अमल किया तो रोज़ ए कियामत उस के वालिदेन को एक ताज पहनाया जाएगा, जिस की रोशनी तुम्हारे दुनिया के घरो में चमकने वाले सूरज की रोशनी से ज़्यादा अच्छी होगी, तुम्हारा इस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जिस ने उस के मुताबिक अमल किया तो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 440 ح 15730) و ابوداؤد (1453) * زبان ضعيف و صححه الحاكم (1 / 567568) فتعقبه الذهبی بقوله :’’زبان ليس بالقوی ‘‘ و روی الحاكم (1 / 567 ح 2086) عن بريدة قال قال رسول الله صلی الله عليه و آله وسلم من قرا القرآن و تعلمه و عمل به البس يوم القيامة تاجًا من نور ضوؤه مثل ضوء الشمس و بكسی و الدايه حلتلان لا يقوم بهما الدنيا فيقولان : بما كسينا فيقال باخذ ولد كما القرآن ‘‘ و صححه الحاكم علی شرط مسلم و وافقه الذهبی و سنده حسن و رواه احمد (5 / 348 ح 22950) و البغوی فی شرح السنة (4 / 454 ح 1190) مطولاً و قال البغوی : حسن غريب

٢١٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَوْ جُعِلَ الْقُرْآنُ فِي إِهَابٍ ثُمَّ أُلْقِيَ فِي النَّار مَا احْتَرَقَ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2140. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अगर कुरान को चमड़े में रख कर आग में डाल दिया जाए तो वह जलेगा नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (2 / 430 ح 3313) * ابن لهيعة صرح بالسماع و حدث به قبل اختلاطه و الحمدلله

٢١٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيِّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَاسْتَظْهَرَهُ فَأَحَلَّ حَلَالَهُ وَحَرَّمَ حَرَامَهُ أَدْخَلَهُ اللَّهُ بِهِ الْجَنَّةَ وَشَفَّعَهُ فِي عَشَرَةٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ كُلِّهِمْ قَدْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب وَحَفْص بن سُلَيْمَان الرَّاوِي لَيْسَ هُوَ بِالْقَوِيِّ يَضْعُفُ فِي الْحَدِيثِ

2141. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने कुरान पढ़ा इसे याद किया और उस के हलाल को हलाल और उस के हराम को हराम जाना तो अल्लाह इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा और उस के अहले खाना के उन दस लोगों के बारे में उसकी सिफारिश कबूल फरमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी थी”, अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और हफ्स बिन सुलेमान रावी क़वी नहीं| वह हदीस में जईफ समझा जाता है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه [عبدالله بن] احمد (1 / 148149 ح 1278) و الترمذى (2905) و ابن ماجه (216) و الدارمى (لم اجده) * حفص بن سليمان : متروک الحديث مع امامته فى القراءة (ضعفه الجمهور) و كثير بن زاذان : مجهول

٢١٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ لِأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ: «كَيْفَ تَقْرَأُ فِي الصَّلَاةِ؟» فَقَرَأَ أُمَّ الْقُرْآنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا أنزلت فِي التَّوْرَاة وَلَا فِي الْإِنْجِيل وَلَا فِي الزبُور وَلَا فِي الْفرْقَان مِثْلُهَا وَإِنَّهَا سَبْعٌ مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُعْطِيتُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَرَوَى الدَّارِمِيُّ مِنْ قَوْلِهِ: «مَا أُنْزِلَتْ» وَلَمْ يَذْكُرْ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

2142. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “तुम नमाज़ में कैसे किराअत करते हो?” उन्होंने सुरह फातिहा पढ़ी तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! इस जैसी सूरत ना तौरात व इन्जील में उतरी है न ज़बूर व कुरान (यानी बाकी कुरान) में वह सबअ मसानी और कुरान अज़ीम है जो मुझे दिया गया है”, तिरमिज़ी और इमाम दारमी ने (ماانزلت) के अल्फाज़ से हदीस बयान की है और उन्होंने उबई बिन काब का ज़िक्र नहीं किया और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2875) و الدارمى (2 / 446 ح 3376) [و صححه ابن خزيمة : 500501 ، 861) و ابن حبان (1714) و الحاكم على شرط مسلم (2 / 258 ، 1 / 557) و وافقه الذهبيوله لون آخر عند ابن حبان (1714) و الحاكم (1 / 557)]

٢١٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ فَاقْرَءُوهُ فَإِن مثل الْقُرْآن لمن تعلم وَقَامَ بِهِ كَمثل جراب محشو مسكا يفوح رِيحُهُ كُلَّ مَكَانٍ وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهُ فَرَقَدَ وَهُوَ فِي جَوْفِهِ كَمَثَلِ جِرَابٍ أُوكِئَ عَلَى مسك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

2143. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान सीखो और इसे पढ़ो क्योंकि कुरान सिखने वाला इसे पढ़ने और उस का इहतेमाम करने वाला कस्तूरी से भरी हुई थेली की तरह है, जिस की खुशबू हर जगह फ़ैल जाती है और जिस ने इसे सिखा लेकिन सोया रहा, हालाँकि वह हाफिज़ है तो वह

कस्तूरी की बंद थेली की तरह है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2876) و النسائی (فی الکبریٰ 5 / 228 ح 8749) و ابن ماجه (217) [و صححه ابن خزیمة (1509 ، 2540) و ابن حبان (1789) و الحاکم علی شرط الشیخین (1 / 443) و وافقه الذھبی]

٢١٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ قَرَأَ (حم)»» الْمُؤْمِنَ إِلَى (إِلَيْهِ الْمَصِيرُ)»» وَآيَةَ الْكُرْسِيِّ حِينَ يُصْبِحُ حُفِظَ بِهِمَا حَتَّى يُمْسِيَ. وَمَنْ قَرَأَ بِهِمَا حِينَ يُمْسِي حُفِظَ بهما حَتَّى يصبح ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدرامي وَقَالَ التِّرْمِذِيّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

2144. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सुरह मोमिन की पहली आयात (اليه المصير) तक और आयतुल कुर्सी सुबह के वक़्त पढ़ता है तो वह उन के सबब शाम तक महफ़ूज़ रहेगा और जो शख़्स शाम के वक़्त उन्हें पढ़ेगा तो वह उनकी वजह से सुबह होने तक महफ़ूज़ रहेगा”| तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2879) و الدارمی (2 / 449 ح 3389) * عبد الرحمن الملیکی : ضعیف

٢١٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ كتب كتابا قبل أَن يخلق السَّمَوَات وَالْأَرْضَ بِأَلْفَيْ عَامٍ أَنْزَلَ مِنْهُ آيَتَيْنِ خَتَمَ بِهِمَا سُورَةَ الْبَقَرَةِ وَلَا تُقْرَآنِ فِي دَارٍ ثَلَاثَ لَيَالٍ فَيَقْرَبَهَا الشَّيْطَانُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2145. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने ज़मीन व आसमान की तखलीक से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी उस से दो आयते उतार कर सुरह बकरह को मुकम्मल किया गया और जिस घर में उन्हें तीन रात पढ़ा जाए तो शैतान इस घर के करीब नहीं आता”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2882) و الدارمی (2 / 449 ح 3390) [و صححه ابن حبان (1726) و الحاکم (1 / 562 ، 2 / 260) و وافقه الذھبی]

٢١٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي الدَّرْدَاء قَالَ ك قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَرَأَ ثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ أَوَّلِ الْكَهْفِ عُصِمَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

2146. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सुरह काहफ़ की पहली तीन आयते पढ़ता है वह फितने दज्जाल से महफ़ूज़ रहेगा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (2886) * ھذا شاذ ، اختلف الرواة فی قولھم : فی اول سورة الکھف اوفی آخر السورة ، وھو الراجح

٢١٤٧ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ قَلْبًا وَقَلْبُ الْقُرْآنِ (يس)»» وَمَنْ قَرَأَ (يس)»» كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِقِرَاءَتِهَا قِرَاءَةَ الْقُرْآنِ عَشْرَ مَرَّاتٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2147. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर चिज़ का दिल होता है और कुरान का दिल सुरह यासीन है, जो शख़्स एक मर्तबा सुरह यासीन पढ़ता है तो उसकी किराअत की वजह से अल्लाह तआला उस के लिए दस मर्तबा कुरान पढ़ने का सवाब लिख देता है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2887) و الدارمی (2 / 456 ح 3419) * هارون ابو محمد : مجهول

٢١٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَرَأَ (طه)»» و (يس)»» قبل أن يخلق السَّمَوَات وَالْأَرْضَ بِأَلْفِ عَامٍ فَلَمَّا سَمِعَتِ الْمَلَائِكَةُ الْقُرْآنَ قَالَتْ طُوبَى لِأُمَّةٍ يَنْزِلُ هَذَا عَلَيْهَا وَطُوبَى لِأَجْوَافٍ تَحْمِلُ هَذَا وَطُوبَى لِأَلْسِنَةٍ تَتَكَلَّمُ بِهَذَا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2148. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान की तखलीक से हज़ार बरस पहले सुरह ताहा (طه) और सुरह यासीन की तिलावत फरमाई जब फरिश्तो ने कुरान सुना तो उन्होंने कहा: इस उम्मत के लिए खुशखबरी हो जिस पर यह उतारा जाएगा, उन मुबारक दिलों के लिए खुशखबरी हो जो इसे याद करेंगे और इसे पढ़ने वाली ज़ुबान के लिए खुशखबरी हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا موضوع ، رواه الدارمی (2 / 456 ح 3417) [و ابن حبان فی المجروحین (1 / 108) و ابن الجوزی فی الموضوعات (1 / 110) * ابراهيم بن مهاجر بن مسمار : ضعيف و عمر بن حفص بن ذكوان متروک

٢١٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَرَأَ (حم)»» الدُّخَانِ فِي لَيْلَةٍ أَصْبَحَ يَسْتَغْفِرُ لَهُ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب وَعمر بن أبي خَثْعَمٍ الرَّاوِي يُضَعَّفُ وَقَالَ مُحَمَّدٌ يَعْنِي الْبُخَارِيَّ هُوَ مُنكر الحَدِيث

2149. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स रात के वक़्त सूरत हा मीम अल दुखान की तिलावत करता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के लिए मगफिरत तलब करते हैं”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, उमर बिन अबी खसअम रावी को जईफ करार दिया गया है और मुहम्मद यानी इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: वह मुनकर उल हदीस है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (2888) * عمر بن ابی خثعم : منكر الحديث كما نقل الترمذی عن البخاری رحمهما الله

٢١٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَرَأَ (حم)»»

الدُّخَانِ فِي لَيْلَةِ الْجُمْعَةِ غُفِرَ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَهِشَام أَبُو الْمِقْدَام الرَّاوِي يضعف

2150. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स शबे जुमा को सुरह दुखान की तिलावत करता है तो उसे बख्श दिया जाता है"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, निज़ हिश्शाम अबिल मिक्दाम रावी को जईफ करार दिया गया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (2889) * هشام بن زياد ابو المقدام : متروک

٢١٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْرَأُ الْمُسَبِّحَاتِ قَبْلَ أَنْ يَرْقُدَ يَقُولُ: «إِنَّ فِيهِنَّ آيَةً خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ آيَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2151. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ सोने से पहले मुसब्बिहात (सुरह अल इसराअ, अल हदीद, अल हशर, अल सफ्फा, अल जुमा, अल तगाबीन और अल आला) की तिलावत किया करते थे, आप ﷺ फ़रमाया करते थे: "उन में एक आयत है जो के हज़ार आयात से बेहतर है"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2921 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (5057) [و احمد (4 / 128) و البيهقی فی شعب الايمان (2503)]

٢١٥٢ - وَرَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ مُرْسَلًا»» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2152. इमाम दारमी रहिमहुल्लाह ने खालिद बिन मअदान से इसे मुरसल रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 458 ح 3427) [و النسائی فی الکبریٰ (10551)] * السند مرسل وله شواهد منها الحديث السابق (2151)

٢١٥٣ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ سُورَةً فِي الْقُرْآنِ ثَلَاثُونَ آيَةً شَفَعَتْ لِرَجُلٍ حَتَّى غُفِرَ لَهُ وَهِيَ: (تَبَارَكَ الَّذِي [ص:٦٦ بِيَدِهِ الْمُلْكُ)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

2153. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुरान में तीस आयात की एक सूरत है उस ने एक आदमी के बारे में सिफारिश की हत्ता कि इसे बख्श दिया गया और वह सूरत अल मुल्क है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 299 ح 7962) و الترمذی (2891 وقال : حسن) و ابوداؤد (1400) و النسائی (فی الکبریٰ 11612) و ابن ماجه (3786) [و صححه ابن حبان (1766) و الحاکم (2 / 497498) و وافقه الذهبی]

٢١٥٤ - (ضَعِيف) وَعَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ضَرَبَ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خِبَاءَهُ عَلَى قَبْرٍ وَهُوَ لَا يَحْسَبُ أَنَّهُ قَبْرٌ فَإِذَا فِيهِ إِنْسَان يَقْرَأُ سُورَةَ (تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ)»» حَتَّى خَتَمَهَا فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هِيَ الْمَانِعَةُ هِيَ الْمُنْجِيَةُ تُنْجِيهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2154. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ के एक सहाबी ने किसी कब्र की जगह पर अपना खैमा नसब किया, जबकि उन्हें पता नहीं था वह कब्र है, उस में एक इंसान सूरत अल मुल्क पढ़ रहा था, हत्ता कि उस ने इसे मुकम्मल किया, पस वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप को उस के मुतल्लिक बताया, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ये मानेह " और " मुन्जी" है उसे अल्लाह के अज़ाब से बचाएगी", तिरमिज़ी और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2890) * قال البیهقی :'' تفرد به یحیی بن عمرو بن مالک وهو ضعیف '' (اثبات عذاب القبر : 146 بتحقیقی)

٢١٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَنَامُ حَتَّى يَقْرَأَ: (آلم تَنْزِيل)»» و (تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ»» وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ. وَكَذَا فِي شرح السّنة. وَفِي المصابيح

2155. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ सूरत-उल सज़दा और सूरत अल मुल्क पढ़े बगैर नहीं होते थे अहमद तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है, शरह सुन्ना मैं भी इसी तरह है, जबकि मसाबिह में है के यह ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (3 / 340 ح 14714) و الترمذی (2892) و الدارمی (2 / 455 ح 3414) و البغوی فی شرح السنة (4 / 472 ح 1207) و ذکره فی مصابیح السنة (2 / 123 ح 1554) * ابو الزبیر مدلس و عنعن

٢١٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس وَأنس بن مَالك رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (إِذا زلزلت)»» تعدل نصف الْقُرْآن (قل هُوَ الله أحد)»» تعدل ثلث الْقُرْآن و (قل يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ)»» تَعْدِلُ رُبْعَ الْقُرْآنِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2156. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सूरत अल ज़ुलज़ला आधे कुरान के बराबर है, सूरत अल इखलास तिहाई कुरान के बराबर है और सूरत अल काफिरून चोथाई कुरान के बराबर है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2894 وقال : غریب) * یمان بن المغیرة : ضعیف ، وقال الذھبی فی تلخیص المستدرک (1 / 566) : ضعفوه

٢١٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ:

أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ فَقَرَأَ ثَلَاثَ [ص:٦٦ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُورَةِ (الْحَشْرِ)»»   وَكَّلَ اللَّهُ بِهِ سَبْعِينَ أَلْفَ مَلَكٍ يُصَلُّونَ عَلَيْهِ حَتَّى يُمْسِيَ وَإِنْ مَاتَ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ مَاتَ شَهِيدًا. وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُمْسِي كَانَ بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

2157. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स सुबह के वक़्त तीन मर्तबा (أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ) और सूरतुल खशर की आखिरी तीन आयात पढ़ता है तो अल्लाह उस के ले सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुकर्रर फरमा देता है, जो शाम तक उस के लिए दुआएं रहमत करते रहते है, और अगर वह इसी रोज़ फौत हो जाए तो वह शहादत की मौत मरता है और जो शख़्स शाम के वक़्त उन्हें पढ़ता है तो इसे भी हमें मंज़िलत व फ़ज़ीलत हासिल हो जाती है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2922) و الدارمى (2 / 458 ح 3428) * خالد بن طهمان : ضعيف من جهة حفظه و لم يثبت بانه حدث بهذا الحديث قبل اختلاطه

٢١٥٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَرَأَ كُلَّ يَوْمٍ مِائَتَيْ مَرَّةٍ (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)»»   مُحِيَ عَنْهُ ذُنُوبُ خَمْسِينَ سَنَةً إِلَّا أَنْ يَكُونَ عَلَيْهِ دَيْنٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَتِهِ «خَمْسِينَ مَرَّةٍ» وَلَمْ يَذْكُرْ «إِلَّا أَنْ يَكُونَ عَلَيْهِ دين»

2158. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स हर रोज़ दो सौ मर्तबा सुरह इखलास पढ़ता है, तो क़र्ज़ के सिवा उस के पचास साल के गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”| तिरमिज़ी, दारमी और उनकी रिवायत में पचास मर्तबा का ज़िक्र है और उन्होंने (إِلَّا أَنْ يَكُونَ عَلَيْهِ دين) के अल्फाज़ ज़िक्र नहीं है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2898) و الدارمى (2 / 461 ح 3441) * حاتم بن ميمون : ضعيف

٢١٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مِنْ أَرَادَ أَنْ يَنَامَ عَلَى فِرَاشِهِ فَنَامَ عَلَى يَمِينِهِ ثُمَّ قَرَأَ مِائَةَ مَرَّةٍ (قل هُوَ الله أحد)»»   إِذا كَانَ يَوْم الْقِيَامَةِ يَقُولُ لَهُ الرَّبُّ: يَا عَبْدِي ادْخُلْ عَلَى يَمِينِكَ الْجَنَّةَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2159. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं,: “जो शख़्स अपने बिस्तर पर सोने का इरादा करे और अपने दाएँ पहलु पर लेट कर सौ मर्तबा सुरह इखलास पढ़ कर सो जाए, तो रोज़ ए कियामत रब इसे फरमाएगा मेरे बंदे अपने दाएँ जानिब से जन्नत में दाखिल हो जाओ”, तिरमिज़ी और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2898 وقال : غريب) * حاتم بن ميمون ضعيف كما تقدم (2158)

٢١٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلًا يَقْرَأُ (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)»» فَقَالَ: «وَجَبَتْ» قُلْتُ: وَمَا وَجَبَتْ؟ قَالَ: «الْجنَّة» . رَوَاهُ مَالك وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2160. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक आदमी को सुरह इखलास पढ़ते हुए सूना तो फ़रमाया: "वाजिब हो गई", मैंने अर्ज़ किया: क्या वाजिब हो गई? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जन्नत"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (1 / 208 ح 487) و الترمذی (2897 وقال : حسن صحیح غریب) و النسائی (2 / 171 ح 995) [و صححه الحاکم (1 / 566) و وافقه الذھبی]

٢١٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ فَرْوَةَ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ أَبِيهِ: أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَقُولُهُ إِذَا أَوَيْتُ إِلَى فِرَاشِي. فَقَالَ: «اقْرَأْ (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ)»» فَإِنَّهَا بَرَاءَةٌ مِنَ الشِّرْكِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

2161. फर्वत बिन नौफल रहिमहुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं की उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखाईए की जब में बिस्तर पर लेटू तो उसे पढ़ लिया करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: "सूरत अल काफिरून पढ़ा करो क्योंकि वह शिर्क से बराअत और तोहिद का एलान है"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3403) و ابوداؤد (5055) و الدارمی (2 / 459 ح 3430)

٢١٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: بَيْنَا أَنَا سير مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الْجُحْفَةِ وَالْأَبْوَاءِ إِذْ غَشِيَتْنَا رِيحٌ وَظُلْمَةٌ شَدِيدَةٌ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَوِّذُ ب (أعوذ بِرَبّ الفلق)»» و (أعوذ بِرَبِّ النَّاسِ)»» وَيَقُولُ: «يَا عُقْبَةُ تَعَوَّذْ بِهِمَا فَمَا تَعَوَّذَ مُتَعَوِّذٌ بِمِثْلِهِمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2162. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं जुहफा और अबवाअ के दरमियान रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र कर रहा था के अचानक आंधी और शदीद तारीकी हम पर छा गई तो रसूलुल्लाह ﷺ सूरत अल फलक और सूरत अल नास के ज़रिए पनाह तलब करने लगे और आप ﷺ फरमाने लगे: "उक्बा इन दोनों सूरतो के ज़रिए पनाह तलब करो किसी पनाह तलब करने वाले ने इन दोनों जैसी पनाह नहीं पाई"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1463) * ابن اسحاق مدلس و عنعن و حدیث ابی داود (1462) یغنی عنه

٢١٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ خَبِيبٍ قَالَ: خَرَجْنَا فِي لَيْلَةِ مَطَرٍ وَظُلْمَةٍ شَدِيدَةٍ نَطْلُبُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَدْرَكْنَاهُ فَقَالَ: «قُلْ» . قُلْتُ مَا أَقُولُ؟ قَالَ: « (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)»» وَالْمُعَوِّذَتَيْنِ حِينَ تُصْبِحُ وَحِينَ تُمْسِي ثَلَاثَ مَرَّاتٍ تَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

2163. अब्दुल्लाह बिन खुबैब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम बरसात में एक शदीद तारिक रात में रसूलुल्लाह ﷺ की तलाश में निकले तो हमने आप को पा लिया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "कहो", मैंने अर्ज़ किया:

में क्या कहूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम सुबह व शाम तीन मर्तबा सुरह इखलास और सूरत अल फलक और सूरत अल नास पढ़ा करो वह तुम्हें हर चीज़ के लिए काफी हो जाएगी"| (हसन)

اسناده حسن : رواه الترمذی (3575 وقال : حسن صحیح غریب) و ابوداؤد (5082) و النسائی (8 / 251 ح 54325433)

٢١٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَقْرَأُ سُورَةَ (هُودٍ)»» أَوْ سُورَةَ (يُوسُفَ)»» ؟ قَالَ: " لَنْ تَقْرَأَ شَيْئًا أَبْلَغَ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ)»» رَوَاهُ أَحمد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

2164. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या मैं सुरह हूद पढु या सुरह युसूफ आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम अल्लाह के यहाँ सूरत अल फलक से बुलुगतर कोई चीज़ नहीं पढ़ सकोगे"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 149 ح 17474) و النسائی (2 / 158 ح 954) و الدارمی (2 / 461462 ح 3442) [و صححه ابن حبان (17761777) و الحاکم (2 / 540) و وافقه الذهبی]

كتاب فَضَائِل الْقُرْآن • फ़ज़ाइल ए कुरान का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢١٦٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْرِبُوا الْقُرْآنَ وَاتَّبِعُوا غَرَائِبَهُ وَغَرَائِبُهُ فَرَائِضُهُ وَحُدُودُهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2165. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुरान के मानी बयान करो और उस के "ग़राएब'' की इत्तेबा करो उस के "ग़राएब'' उस के फ़राइज़ व हुदूद हैं"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (2293 ، نسخۃ محققۃ : 2095) * فیه معارک بن عباد : ضعیف ، عن عبدالله بن سعید بن ابی سعید المقبری : متروک

٢١٦٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قِرَاءَةُ الْقُرْآنِ فِي الصَّلَاةِ أَفْضَلُ مِنْ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ فِي غَيْرِ الصَّلَاةِ وَقِرَاءَةُ الْقُرْآنِ فِي غَيْرِ الصَّلَاةِ أَفْضَلُ مِنَ التَّسْبِيحِ وَالتَّكْبِيرِ وَالتَّسْبِيحُ أَفْضَلُ مِنَ الصَّدَقَةِ وَالصَّدَقَةُ أَفْضَلُ مِنَ الصَّوْمِ وَالصَّوْمُ جُنَّةٌ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2166. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "दौरान ए नमाज़ किराअत कुरान, नमाज़ के अलावा किराअत कुरान से अफज़ल है, और नमाज़ के अलावा किराअत कुरान, तस्बीह व तकबीर से

अफज़ल है, और तस्बीह (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहना सदका से अफज़ल है, सदका रोज़े से अफज़ल है, जबकि रोज़ा जहन्नम से ढाल है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2243 ، نسخة محققة : 2049) * فيه فضيل بن سليمان النميرى : ضعيف فى غير الصحيحين و ضعفه الجمهور عن رجل من بنى مخزوم : مجهول ، عن ابيه عن جده عن عائشة الخ

٢١٦٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَوْسٍ الثَّقَفِيِّ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قِرَاءَةُ الرَّجُلِ الْقُرْآنَ فِي غَيْرِ الْمُصْحَفِ أَلْفُ دَرَجَةٍ وَقِرَاءَتُهُ فِي الْمُصحف تضعف عل ذَلِك إِلَى ألفي دَرَجَة» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2167. उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन औस सक्फी अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आदमी का ज़बानी कुरान पढ़ना हज़ार दरजे रखता है, जबकि उस का कुरआन ए करीम से देख कर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से दो हज़ार दरजे रखता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2218 ، نسخة محققة : 2026) [و ابن عدى فى الكامل (7 / 2754] * فيه عثمان بن عبدالله بن اوس : روى عنه جماعة و وثقه ابن حبان و قال الذهبى :'' محله الصدق و لكن فى ادراكه جد نظر '' (!) و ابو سعيد بن عوذ : رجاء بن الحارث المكى المكتب : ضعيف ضعيفه ابن معين و الجمهور

٢١٦٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ هَذِهِ الْقُلُوبَ تَصْدَأُ كَمَا يَصْدَأُ الْحَدِيدُ إِذَا أَصَابَهُ الْمَاءُ» . قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا جِلَاؤُهَا؟ قَالَ: «كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ» . رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْأَرْبَعَةَ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2168. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये दिल जंग आलूद हो जाते हैं, जिस तरह लोहा पानी लगने से जंग आलूद हो जाता है", अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल, उनकी चमक किस तरह आती है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मौत को कसरत से याद करना और कुरान की तिलावत करना", बयहकी ने चारो अहादीस को शौबुल ईमान में ज़िक्र किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2014) * له سندان ، فى احدهما عبد الرحيم بن هارون : كذاب ، و فى الثانى عبدالله بن عبدالعزيز بن ابى داود : ضعيف جداً

٢١٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَيْفَعَ بْنِ عَبْدٍ الْكَلَاعِيِّ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ سُورَةِ الْقُرْآنِ أَعْظَمُ؟ قَالَ: (قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ)»» قَالَ: فَأَيُّ آيَةٍ فِي الْقُرْآنِ أَعْظَمُ؟ قَالَ: آيَةُ الْكُرْسِيِّ (اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ)»» قَالَ: فَأَيُّ آيَةٍ يَا نَبِيَّ اللَّهِ تُحِبُّ أَنْ تُصِيبَكَ وَأُمَّتَكَ؟ قَالَ: «خَاتِمَةُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فَإِنَّهَا مِنْ خَزَائِنِ رَحْمَةِ اللَّهِ تَعَالَى مِنْ تَحْتِ عَرْشِهِ أَعْطَاهَا هَذِهِ الْأُمَّةَ لَمْ تتْرك خيرا من يخر الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

2169. अयफा बिन अब्दुल कला ईय्यी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के

रसूल! कुरान में सबसे अज़ीम सूरत कौन सी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सूरत अल इखलास”, उन्होंने अर्ज़ किया, तो फिर कुरान में सबसे अज़ीम आयत कौन सी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आयतुल कुर्सी”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! आप कौन सी आयत पसंद फरमाते हैं के वह आप को और आप की उम्मत को मिल जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुरह बकरह का आखिरी हिस्सा क्योंकि वह अल्लाह तआला के अर्श के नीचे उसकी रहमत के खज़ानो में से है जो उस ने इस उम्मत को दी है और वह दुनिया व आखिरत की तमाम भलाइयो पर मुश्तमिल है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 447 ح 3383) * ايفع : تابعی صغير كما فی الاصابة (1 / 135) فالسند منقطع

٢١٧٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ مُرْسَلًا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فِي فَاتِحَةِ الْكِتَابِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2170. अब्दुल मलक बिन उमैर मुरसल रिवायत बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सूरह फातिहा में हर बीमारी से शिफा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 445 ح 3373) و البيهقی فی شعب الايمان (2370) * سفيان بن عيينة مدلس و عنعن و الخبر مرسل

٢١٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَنْ قَرَأَ آخِرَ آلِ عِمْرَانَ فِي لَيْلَة كتب لَهُ قيام لَيْلَة. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2171. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जो शख़्स रात के किसी हिस्सा में सुरह आले इमरान का आखिरी हिस्सा पढ़ता है, उस के लिए रात के कयाम का सवाब लिख दिया जाता है,| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 452 ح 3399) * سفيان بن عيينة مدلس و عنعن و الخبر مرسل

٢١٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَكْحُولٍ قَالَ: مَنْ قَرَأَ سُورَةَ آلِ عِمْرَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ صَلَّتْ عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ إِلَى اللَّيْل. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2172. मकहुल बयान करते हैं, जो शख़्स जुमा के रोज़ सुरह आले इमरान पढ़ता है तो रात तक फ़रिश्ते उस के लिए रहमत की दुआए करते रहते है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمی (2 / 452 ح 3400 ، نسخة محققة : 3440)

٢١٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جُبَير بن نفير رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ خَتَمَ سُورَةَ

الْبَقَرَةِ بِآيَتَيْنِ أُعْطِيتُهُمَا مِنْ كَنْزِهِ الَّذِي تَحْتَ الْعَرْشِ فَتَعَلَّمُوهُنَّ وَعَلِّمُوهُنَّ نِسَاءَكُمْ فَإِنَّهَا صَلَاةٌ وقربان وَدُعَاء» . رَوَاهُ الدَّارِمِي مُرْسلا

2173. जुबेर बिन नुफैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने सुरह बकरह का इख्तिताम दो आयातों से फ़रमाया है, वह मुझे अर्श के नीचे इस खज़ाने से अता की गई हैं, पस उन्हें सीखो और उन्हें अपनी औरतों को सिखाओ, क्योंकि वह बाईसे रहमत बाईस तकर्रुब और दुआ है”, इसे दारमी ने मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (2 / 450 ح 3393 ، نسخة محققة : 3433) [و ابوداؤد فى المراسيل (91) و الحاكم (1 / 562 ح 2067) من حديث جبير بن نفير رحمه الله به] * السند مرسل وله لون آخر عند الحاكم (1 / 562 ح 2066) و سنده ضعيف من اجل عبدالله بن صالح المصرى

٢١٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن كَعْب رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «اقرؤوا سُورَة هود يَوْم الْجُمُعَة» . رَوَاهُ الدَّارِمِي مُرْسلا

2174. काब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जुमा के रोज़ सुरह हूद पढ़ा करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (2 / 454 ح 3407 ، نسخة محققة : 3447) [و ابوداؤد فى المراسيل (59) و البيهقى فى شعب الايمان (2438)] * سنده صحيح الى كعب الاحبار رحمه الله و لكنه ضعيف لا رساله

٢١٧٥ - (حَسَنٍ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «من قَرَأَ سُورَة الْكَهْف فِي يَوْم الْجُمُعَة أَضَاء لَهُ النُّور مَا بَيْنَ الْجُمْعَتَيْنِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِير

2175. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स जुमा के रोज़ सूरत अल काह्फ़ पढ़ता है तो उस के लिए दो जुमो की दरमियानी मुद्दत के लिए नूर चमकता रहता है”| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (لم اجده ، و فى السنن الكبرى 3 / 249 و سند حسن لذاته) [و صححه الحاكم (2 / 368) فرد عليه الذهبى و اخطا ، و الصواب فى نعيم بن حماد بانه : حسن الحديث و للحديث شاهد موقوف عند الدارمى (3410) و سنده صحيح]

٢١٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خَالِد بن معدان قَالَ: اقرؤوا المنجية وَهِي (آلم تَنْزِيل)»» فَإِن بَلَغَنِي أَنَّ رَجُلًا كَانَ يَقْرَؤُهَا مَا يَقْرَأُ شَيْئًا غَيْرَهَا وَكَانَ كَثِيرَ الْخَطَايَا فَنَشَرَتْ جَنَاحَهَا عَلَيْهِ قَالَتْ: رَبِّ اغْفِرْ لَهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُكْثِرُ قِرَاءَتِي فَشَفَّعَهَا الرَّبُّ تَعَالَى فِيهِ [ص:٦٦ وَقَالَ: اكْتُبُوا لَهُ بِكُلِّ خَطِيئَةٍ حَسَنَةٍ وَارْفَعُوا لَهُ دَرَجَةً ". وَقَالَ أَيْضًا: " إِنَّهَا تُجَادِلُ عَنْ صَاحِبِهَا فِي الْقَبْرِ تَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ مِنْ كِتَابِكَ فَشَفِّعْنِي فِيهِ وَإِنْ لَمْ أَكُنْ مِنْ كِتَابِكَ فَامْحُنِي عَنْهُ وَإِنَّهَا تَكُونُ كَالطَّيْرِ تَجْعَلُ جَنَاحَهَا عَلَيْهِ فَتَشْفَعُ لَهُ فَتَمْنَعُهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْر " وَقَالَ فِي (تبَارك)»» مثله. وَكَانَ خَالِد لَا يَبِيتُ حَتَّى يَقْرَأَهُمَا. وَقَالَ طَاوُوسُ: فُضِّلَتَا عَلَى كُلِّ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ بِسِتِّينَ حَسَنَةً. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

2176. खालिद बिन मअदान रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुन्जी (अज़ाब ए कब्र हशर से बचाने वाली सूरत) जो के सूरत-उल सज़दा है पढ़ा करो, क्योंकि मुझे खबर मिली है के एक आदमी सिर्फ इसे ही पढ़ा करता था, जबकि वह बहोत गुनाहगार था, पस इस सूरत ने उस पर अपने पर बिछा दिए और अर्ज़ किया, रब जी! इसे बख्श दो क्योंकि वह मुझे कसरत से पढ़ा करता था, रब तआला ने उस के मुतल्लिक उसकी सिफारिश कबूल फरमा ली और फ़रमाया: “उस की हर गलती के बदले उस के लिए नेकी लिख दो और उस का दर्जा बुलंद कर दो”| और उन्होंने (खालिद बिन मअदान) ने यह भी कहा: “वो अपने पढ़ने वाले के मुतल्लिक कब्र में झगड़ा करेगी और कहेगी ए अल्लाह! अगर में तेरी किताब में से हूँ तो फिर उस के मुतल्लिक मेरी सिफारिश कबूल फरमा, और अगर में तेरी किताब में से नहीं हूँ तो फिर मुझे उस से ख़तम फरमादे और वह परिंदे की तरह होगी और उस पर अपने पर फैला देगी, वह उसकी सिफारिश करेगी और इसे अज़ाब ए कब्र से बचा लेगी”, और उन्होंने खालिद बिन मअदान ने सूरत अल मुल्क के मुतल्लिक भी इसी तरह बयान किया है, और वह इन दोनों सूरतो को पढ़े बगैर नहीं सोया करते थे और ताउस (रह) बयान करते हैं, इन दोनों सूरतो को कुरान की हर सूरत पर साठ नेकियो से फ़ज़ीलत दी गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (2 / 454455 ح 3411 ، نسخة محققة : 3451) * ام عبدالله عبدة بنت خالد بن معدان لم اجد من وثقها0 حديث : انها تجادل عن صاحبها فى القبر ، رواه الدارمى (2 / 455 ح 3413 و سنده حسن) و حديث : قال طاؤس فضلنا على كل سورة ،،، الدارمى (2 / 455 ح 3425 و سنده ضعيف) فيه ليث بن ابى سليم : ضعيف

٢١٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَرَأَ (يس)»» فِي صَدْرِ النَّهَارِ قضيت حَوَائِجه» رَوَاهُ الدَّارِمِيّ مُرْسلا

2177. अता बिन अबी रबाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुझे खबर पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दिन के पहले हिस्से में सुरह यासीन पढ़ता है तो उसकी तमाम ज़ुरुरियात पूरी कर दी जाती है”, इमाम दारमी ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (2 / 457 ح 3421 ، نسخة محققة : 3421) من حديث عبد الرحمن بن الاسود رحمه الله فالسند مرسل

٢١٧٨ - (ضَعِيف) وَعَن معقل بن يسَار الْمُزنِيّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَرَأَ (يس)»» ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ تَعَالَى غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنبه فاقرؤوها عِنْدَ مَوْتَاكُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2178. मुअकिल बिन यस्सार मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स अल्लाह की रज़ा की खातिर सुरह यासीन पढ़ता है तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं इसे अपने करीब अल मर्ग लोगों के पास पढ़ा करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2458) * فيه رجل : مجهول

٢١٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ سَنَامًا وَإِنَّ سَنَامَ الْقُرْآنِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَإِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ لُبَابًا وَإِنَّ لباب الْقُرْآن الْمفصل. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2179. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: हर चीज़ की एक चोटी होती है और कुरान की चोटी सूरत अल बकरह है और हर चिज़ का एक मगज़ होता है और कुरान का मगज़ मुफ़स्सल सूरते (सूरत अल हुजुरात से अल नास तक) हैं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمی (2 / 447 ح 3380 ، نسخة محققة : 3420)

٢١٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «لكل شَيْء عروس وعروس الْقُرْآن الرَّحْمَن» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2180. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हर चिज़ का हुस्न व जमाल होता है जबकि कुरान का हुस्न व जमाल सूरत रहमान है”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (2494 ، نسخة محققة : 2265) * فیه احمد بن الحسن : دبیس منکر الحدیث ، لیس بثقة و ابو عبد الرحمن السلمی الصوفی : ضعیف جداً و علی بن الحسین بن جعفر لعله ابن کرنیب البزار و کان کذاباً

٢١٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَرَأَ سُورَةَ [ص:٦٦ الْوَاقِعَةِ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ لَمْ تُصِبْهُ فَاقَةٌ أَبَدًا» . وَكَانَ ابْنُ مَسْعُودٍ يَأْمُرُ بَنَاتَهُ يَقْرَأْنَ بهَا فِي كل لَيْلَة. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2181. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स हर रात सूरत अल वाकिया पढ़ता है तो वह कभी फाके का शिकार नहीं होगा और इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु अपने बेटो को हुक्म दिया करते थे की वह हर रात इसे पढ़ा करे| इमाम बयहकी ने इन दोनों को शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (2498 ، نسخة محققة : 2269) * السند مظلم و فیه شجاع : لم اعرفه و ابو الاحوص اسماعیل بن ابراھیم الاسفرائینی ینظر فیه

٢١٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: " كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم يجب هَذِهِ السُّورَةَ (سَبِّحِ اسْمِ رَبِّكَ الْأَعْلَى)»» رَوَاهُ أَحْمد

2182. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ इस सूरत (सूरत उल आला) को पसंद करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه احمد (1 / 96 ح 742) * فیه ثوبر بن ابی فاختة : ضعیف رمی بالرفض

٢١٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَقْرِئْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: " اقْرَأْ ثَلَاثًا مِنْ ذَوَاتِ (ألر)»» فَقَالَ: كَبُرَتْ سِنِّي وَاشْتَدَّ قَلْبِي وَغَلُظَ لِسَانِي قَالَ: " فَاقْرَأْ ثَلَاثًا مِنْ ذَوَاتِ (حم)»» فَقَالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ. قَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَقْرِئْنِي سُورَةً جَامِعَةً فَأَقْرَأَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (إِذَا زُلْزِلَتْ الأَرْض)»» حَتَّى فَرَغَ مِنْهَا فَقَالَ الرَّجُلُ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَا أَزِيد عَلَيْهَا أبدا ثمَّ أدبر الرَّجُلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ»» أَفْلَحَ الرُّوَيْجِلُ " مَرَّتَيْنِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

2183. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे पढ़ाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अलिफ़ लाम रा (الرٰ) वाली सूरतों (युनुस, हूद, युसूफ, इब्राहीम, अल हुज्र) में से तीन सूरते पढ़ो”, उस ने अर्ज़ किया, मैं बुढ़ा हो गया हूँ, मेरा दिल सख्त हो गया है, और मेरी ज़ुबान मोटी हो गई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हा मीम (حٰم) वाली सूरतों (अल मोमिन, अल फुस्सिलत, अश्शौरी, अल ज़ुख्रुफ़, अल दुखान, अल जासिया, अल अहकाफ) में से तीन सूरते पढ़ो”, उस ने फिर वही अर्ज़ किया, इस आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे कोई जामेअ सूरत पढ़ाए, तो फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे सूरत अल ज़ुलज़ला पूरी पढ़ाई तो इस आदमी ने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया, मैं उस पर कभी भी इज़ाफा न करूँगा, फिर वह आदमी वापस चला गया तो, रसूलुल्लाह ﷺ ने दो मर्तबा फ़रमाया: “वो आदमी फलाह पा गया “| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 169 ح 6575 مختصراً) و ابوداؤد (1399)

٢١٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا يَسْتَطِيعُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ أَلْفَ آيَةٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ؟» قَالُوا: وَمَنْ يَسْتَطِيعُ أَنْ يَقْرَأَ أَلْفَ آيَةٍ فِي كل يَوْم؟ قَالَ: " أَمَا يَسْتَطِيعُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ: (أَلْهَاكُمُ التكاثر)»» ؟)»» رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2184. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम में से कोई हर रोज़ हज़ार आयत पढ़ने की ताकत नहीं रखता ?” उन्होंने अर्ज़ किया, हर रोज़ हज़ार आयत कौन पढ़ सकता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम में से कोई सूरतुल तकासुर नहीं पढ़ सकता!”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2518 ، نسخة محققة : 2287) * فيه عقبة بن محمد عقبة : لم اجد من وثقه و قال المنذرى :’’ لا اعرفه ‘‘ و قال الحاکم فی المستدرک (1 / 566567) :’’ عقبة هذا غير مشهور ‘‘ و اقره الذهبی

٢١٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ مُرْسَلًا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ [ص:٦٧ قَرَأَ (قل هُوَ الله أحد)»» عشر مَرَّات بني لَهُ بِهَا قَصْرٌ فِي الْجَنَّةِ وَمَنْ قَرَأَ عِشْرِينَ مَرَّةً بُنِيَ لَهُ بِهَا قَصْرَانِ فِي الْجَنَّةِ وَمَنْ قَرَأَهَا ثَلَاثِينَ مَرَّةً بُنِيَ لَهُ بِهَا ثَلَاثَةُ قُصُورٍ فِي الْجَنَّةِ» . فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذًا لَنُكَثِّرَنَّ قُصُورَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُ أَوْسَعُ من ذَلِك» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2185. सईद बिन मुसय्यब रहिमहुल्लाह नबी ﷺ से मुरसल रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स दस मर्तबा सुरह इखलास पढ़ता है, तो उस के बदले में उस के लिए जन्नत में एक महल बना दिया जाता है, जो

शख़्स बीस मर्तबा पढ़ता है तो उस के लिए जन्नत में दो महल बना दिए जाते हैं, और जो शख़्स तीस मर्तबा पढ़ता है तो उस के लिए उस के बदले में जन्नत में तीन महल बना दिए जाते हैं", उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! तो तो हम अपने महल ज़्यादा कर लेंगे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह उस से भी ज़्यादा कशाईश फराखी वाला है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 459 ، 460 ح 3432 ، نسخة محققة : 3472) * السند حسن الى سعيد بن المسيب و الخبر مرسل

٢١٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْحَسَنِ مُرْسَلًا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَرَأَ فِي لَيْلَةٍ مِائَةَ آيَةٍ لَمْ يُحَاجِّهِ الْقُرْآنُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ وَمَنْ قَرَأَ فِي لَيْلَةٍ مِائَتَيْ آيَةٍ كُتِبَ لَهُ قُنُوتُ لَيْلَةٍ وَمَنْ قَرَأَ فِي لَيْلَةٍ خَمْسَمِائَةً إِلَى الْأَلْفِ أَصْبَحَ وَلَهُ قِنْطَارٌ مِنَ الْأَجْرِ» . قَالُوا: وَمَا الْقِنْطَارُ؟ قَالَ: «اثْنَا عَشَرَ ألفا» . رَوَاهُ الدَّارمِي

2186. हसन बसरी से मुरसल रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स रात में सौ आयात तिलावत करता है, तो इस रात कुरान उस से झगड़ा नहीं करता, जो शख़्स रात में दो सौ आयात पढ़ता है तो उस के लिए रातभर का कयाम लिख दिया जाता है, और जो शख़्स रात में किन्तार आयात तिलावत करता है तो सुबह के वक़्त उस के लिए दोहरा अज़र होगा", उन्होंने अर्ज़ किया, किन्तार से क्या मुराद है? फ़रमाया: "बारह हज़ार"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 466 ح 3426 ، نسخة محققة : 3502) * السند مرسل و یونس بن عبید بن دینار العبدی البصری مدلس و عنعن

तिलावत ए कुरान और दरस ए कुरान के आदाब का बयान

بَاب آدَاب التِّلَاوَة ودروس الْقُرْآن

पहली फस्ल

الْفَصْل الأول

٢١٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَاهَدُوا الْقُرْآنَ فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَهْوَ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنَ الْإِبِلِ فِي عُقُلِهَا»

2187. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुरान की खबर गिरी करते रहो उस ज़ात की क़सम जिसके हाथो में मेरी जान है! वह (कुरान सीनों से) निकल जाने में इस ऊंट के निकल जाने से भी ज़्यादा तेज़ है जिस की रस्सी खुल चुकी हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5033) و مسلم (231 / 791)، (1844)

٢١٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " بئس مالأحدهم أَنْ يَقُولَ: نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ بَلْ نُسِّيَ وَاسْتَذْكِرُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنْ صُدُورِ الرِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ ". مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَزَادَ مُسلم: «بعقلها»

2188. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी के लिए यह कहना बहोत ही बुरा है की मैं फलां आयत भूल गया हूँ, बल्कि यूँ कहे मुझे भुला दी गई है, कुरान याद करते रहा करो, क्योंकि वह आदमियों के सीनों से निकल जाने में खुले हुए ऊटों से भी ज़्यादा तेज़ है”| बुखारी, मुस्लिम, और इमाम मुस्लिम ने ((بعقلها)) के अल्फाज़ का इज़ाफा किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5032) و مسلم (228 / 790)، (1841)

٢١٨٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ الْقُرْآنِ كَمَثَلِ صَاحِبِ الْإِبِلِ الْمُعَقَّلَةِ إِنْ عَاهَدَ عَلَيْهَا أَمْسَكَهَا وَإِنْ أَطْلَقَهَا ذَهَبَتْ»

2189. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हाफिज़ कुरान बंधे हुए ऊटों के मालिक की तरह है, अगर वह उस का ख़याल रखेगा तो उसे रोके रखेगा और अगर इसे छोड़ देगा तो वह चले जाएँगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5031) و مسلم (226 / 789)، (1839)

٢١٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «اقرؤوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمْ فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فقومُوا عَنهُ»

2190. जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुरान इस वक़्त तक पढ़ो जब तक तुम्हार दिल उस पर मुतवज्जे हो और जब तुम्हारे ख़यालात मुन्तशर हो जाए तो फिर इसे पढ़ना छोड़ दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5060) و مسلم (34 / 2667)، (6777)

٢١٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ: كَيْفَ كَانَتْ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: كَانَت مدا مَدًّا ثُمَّ قَرَأَ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَمُدُّ بِبَسْمِ اللَّهِ وَيَمُدُّ بِالرَّحْمَنِ وَيَمُدُّ بِالرَّحِيمِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2191. क़तादाह बयान करते हैं, अनस रदियल्लाहु अन्हु से नबी ﷺ की किराअत के बारे में दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: वह मद्द के साथ थी फिर उन्होंने (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) पढ़ी और بِسْمِ اللَّهِ और الرَّحْمَنِ और الرَّحِيمِ को मद्द के साथ पढ़ा यानी लम्बा कर के पढ़ा| (बुखारी)

رواه البخاری (5046)

٢١٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَذِنَ اللَّهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ»

2192. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह ने इतनी तवज्जो से किसी चीज़ को नहीं सुना जितना उस ने नबी को तरन्नुम के साथ कुरान पढ़ते हुए तवज्जो से सुना"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (50235024) ومسلم (232 / 792)، (1845)

٢١٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَذِنَ اللَّهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسنِ الصَّوْتِ بِالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ»

2193. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह ने इतनी तवज्जो से किसी चीज़ को नहीं सुना जितना उस ने अपने नबी को खुश आवाज़ के साथ बा आवाज़े बुलंद कुरान पढ़ते हुए सुना"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7544) و مسلم (233 / 792)، (1847)

٢١٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2194. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स खुश आवाज़ से कुरान नहीं पढ़ता वह हम में से नहीं''| (बुखारी)

رواه البخارى (7527)

٢١٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُود قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: «اقْرَأْ عَلَيَّ» . قُلْتُ: أَقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: «إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي» . فَقَرَأْتُ سُورَةَ النِّسَاءِ حَتَّى أَتَيْتُ إِلَى هَذِهِ الْآيَةِ (فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدا)»» قَالَ: «حَسْبُكَ الْآنَ» . فَالْتَفَتُّ إِلَيْهِ فَإِذَا عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ

2195. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर थे की आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "मुझे कुरान सुनाओ", मैंने अर्ज़ किया: में आप को कुरान सुनाउ जबकि वह आप पर नाज़िल किया गया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं अपने अलावा किसी और से इसे सुनना चाहता हूँ", मैंने सूरत अल निसा तिलावत की हत्ता कि जब में इस आयत (فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰي هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا) पर पहुंचा

तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब बस करो”, मैंने आप की तरफ देखा तो आप की आँखे अश्कबार थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4582) و مسلم (247248 / 800)، (1867)

٢١٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ: «إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ» قَالَ: آللَّهُ سَمَّانِي لَكَ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . قَالَ: [ص:٦٧ وَقَدْ ذُكِرْتُ عِنْدَ رَبِّ الْعَالَمِينَ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . فَذَرَفَتْ عَيْنَاهُ. وَفِي رِوَايَةٍ: " إِنَّ اللَّهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ (لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا)»» قَالَ: وَسَمَّانِي؟ قَالَ: «نَعَمْ» . فَبَكَى

2196. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “अल्लाह ने मुझे हुक्म फ़रमाया है की मैं तुम्हें कुरान सुनाउ”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह ने मेरा नाम लिया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा रब्बुल आलमीन के यहाँ ज़िक्र किया गया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, (यह सुन कर) उनकी आंखो में (ख़ुशी के) आंसू बहने लगे और एक रिवायत में है: “अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है की मैं तुम्हें सूरतूल बय्यिना सुनाउ”, उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा नाम लेकर आप को बताया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ”, पस वह रोने लगे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (49604961) و مسلم (245 / 799)، (1864)

٢١٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِن يُسَافَرَ بِالْقُرْآنِ إِلَى أَرْضِ الْعَدُوِّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «لَا تُسَافِرُوا بِالْقُرْآنِ فَإِنِّي لَا آمن أَن يَنَالهُ الْعَدو»

2197. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कुरान लेकर दुश्मन की सर ज़मीन (दारुल हर्ब) की तरफ सफ़र करने से मना फ़रमाया| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की एक रिवायत में है: “कुरान लेकर सफ़र न करो क्योंकि अगर दुश्मन (यानी कुफ्फार) इसे पा ले तो मुझे (इस की बेहुरमती का) अंदेशा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2990) و مسلم (92 / 1869)، (4839)

तिलावत ए कुरान और दरस ए कुरान के आदाब का बयान

- بَاب آدَاب التِّلَاوَة ودروس الْقُرْآن

दूसरी फस्ल

- الْفَصْل الثَّانِي

٢١٩٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ قَالَ: جَلَست فِي عِصَابَةٍ مِنْ ضُعَفَاءِ الْمُهَاجِرِينَ وَإِنَّ بَعْضَهُمْ لِيَسْتَتِرُ بِبَعْضٍ مِنَ الْعُرْيِ وَقَارِئٌ يَقْرَأُ عَلَيْنَا إِذْ جَاءَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ عَلَيْنَا فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَكَتَ الْقَارِئُ فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «مَا كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ؟» قُلْنَا: كُنَّا نَسْتَمِعُ إِلَى كتاب الله قَالَ فَقَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي جَعَلَ مِنْ أُمَّتِي مَنْ أُمِرْتُ أَنْ أَصْبِرَ نَفْسِي مَعَهُمْ» . قَالَ فَجَلَسَ وَسَطَنَا لِيَعْدِلَ بِنَفْسِهِ فِينَا ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ هَكَذَا فَتَحَلَّقُوا وَبَرَزَتْ وُجُوهُهُمْ لَهُ فَقَالَ: «أَبْشِرُوا يَا مَعْشَرَ صَعَالِيكِ الْمُهَاجِرِينَ بِالنُّورِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ قَبْلَ [ص:٦٧ أَغْنِيَاءِ النَّاسِ بِنصْف يَوْم وَذَاكَ خَمْسمِائَة سنة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2198. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मुहाजरिन की एक कमज़ोर जमाअत के साथ बैठा हुआ था, और उनमें से बाज़ (आम लिबास की वजह से) हुर्रिया होने की वजह से एक दूसरे के पीछे छिपे हुए थे और कारी हमें कुरान सुना रहा था के रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और आकर खड़े हो गए, जब रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हो गए तो कारी ख़ामोश हो गया, आप ﷺ ने सलाम किया और फिर फ़रमाया: “तुम क्या कर रहे थे ?” हमने अर्ज़ किया: हम ध्यान से कुरआन ए करीम सुन रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरी उम्मत में ऐसे लोग बना दिए, जिन के पास ठहरने का मुझे हुक्म दिया गया है”, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ हमारे बिच में बैठ गए ताकि आप हम सब को बराबर खुश किस्मती बख्श सके, फिर आप ने अपने हाथ से इस तरह इरशाद फ़रमाया तो उन्होंने हल्का बना लिया और वह सब आप के सामने गए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुहाजरिन की जमाअत फुकराअ तुम्हें कियामत के रोज़ मुकम्मल नूर की खुशखबरी हो तुम माल दार लोगों से आधे साल पहले और वह पांच सौ साल है, जन्नत में जाओगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3666) * العلاء بن بشير : مجهول ، و حديث مسلم (7463) ، و ابن حبان (الموارد : 2566) يغنى عنه

٢١٩٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «زَيِّنُوا الْقُرْآنَ بِأَصْوَاتِكُمْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2199. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने आवाज़ों के ज़रिए कुरान को सजावट करो”| (सहीह)

رواه احمد (4 / 285 ح 18713) و ابوداؤد (1468) و ابن ماجه (1342) و الدارمی (2 / 474 ح 3503)

٢٢٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَا من امْرِئٍ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ ثُمَّ يَنْسَاهُ إِلَّا لَقِيَ اللَّهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَجْذَمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ والدارمي

2200. सईद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कुरान पढ़ता हो लेकिन फिर वह इसे भूल जाए तो वह रोज़ ए कियामत हालत कोढ़ में अल्लाह से मुलाकात करेगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1474) و الدارمی (2 / 437 ح 3343) * یزید بن ابی زیاد : ضعیف و عیسی بن فائد : مجھول ، ولم یسمعه من سعد ، بینهما رجل مجھول

٢٢٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَمْ يَفْقَهْ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فِي أَقَلَّ مِنْ ثَلَاث» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

2201. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स तीन दिन से कम मुद्दत में कुरान ख़तम करता है तो वह कुरान फहमी से महरूम रहता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2949 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1394) و الدارمی (1 / 350 ح 1501)

٢٢٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْجَاهِرُ بِالْقُرْآنِ كالجاهر بِالصَّدَقَةِ ولامسر بِالْقُرْآنِ كَالْمُسِرِّ بِالصَّدَقَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2202. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बुलंद आवाज़ से कुरान पढ़ने वाला एलानिया सदका करने वाले की तरह है, जबकि आहिस्ता कुरान पढ़ने वाला छिपा कर सदका करने वाले की तरह है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2919) و ابوداؤد (1333) و النسائی (5 / 80 ح 2562)

٢٢٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ صُهَيْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا آمَنَ بِالْقُرْآنِ مَنِ اسْتَحَلَّ مَحَارِمَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيّ

2203. सहियब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शख़्स का कुरान पर ईमान नहीं जो उसकी हराम करदा अशियाअ को हलाल जानता है”| तिरमिज़ी, इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं इस हदीस की इसनाद क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2918) * فیه یزید بن سنان : ضعیف و ابو المبارک : مجھول ، وله طریق ضعیف عند عبد بن حمید (1003)

٢٢٠٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مليكَة عَنْ يَعْلَى بْنِ مُمَلَّكٍ أَنَّهُ سَأَلَ أُمَّ سَلَمَةَ عَنْ قِرَاءَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا هِيَ تَنْعَتُ قِرَاءَةً مُفَسَّرَةً حَرْفًا حَرْفًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2204. लैस बिन साद इब्ने अबी मुलयका से वह यअली बिन मुमल्लक से रिवायत करते हैं की उन्होंने उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से नबी ﷺ की किराअत के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ की किराअत वाज़ेह और हरफ हरफ यानी अलग अलग थी| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2923 وقال : حسن صحيح غريب) و ابوداؤد (1466) و النسائی (2 / 181 ح 1023) * يعلی بن مملک : حسن الحديث و ثقه الترمذی و ابن حبان

٢٢٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَطِّعُ قِرَاءَتَهُ يَقُولُ: الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ثُمَّ يَقِفُ ثُمَّ يَقُولُ: الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ثُمَّ يَقِفُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِمُتَّصِلٍ لِأَنَّ اللَّيْثَ رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ يَعْلَى بْنِ مَمْلَكٍ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ وَحَدِيثُ اللَّيْث أصح

2205. इब्ने जुरैज़ इब्ने अबी मुलयका से और वह उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ अपने किराअत ठहर ठहर कर किया करते थे, आप (الحمد لله رب العالمين) पढ़ते फिर वक्फ़ फरमाते फिर (الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) पढ़ते, फिर वक्फ़ फरमाते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी सनद मुतस्सिल नहीं, क्योंकि लैस ने यह हदीस इब्ने अबी मुलयका अन यअली बिन मुमल्लक अन उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा की सनद से रिवायत की है और लैस की हदीस ज़्यादा सहीह है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2927) و ابوداؤد (4001)] * ابن جريج مدلس و عنعن و ابن ابی مليكة لم يسمع من ام سلمة و حديث احمد (6 / 288) يغنی عنه

بَاب آدَاب التِّلَاوَة ودروس الْقُرْآن • तिलावत ए कुरान और दरस ए कुरान के आदाब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٢٠٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَفينَا الْأَعرَابِي والأعجمي قَالَ: «اقرؤوا فَكُلٌّ حَسَنٌ وَسَيَجِيءُ أَقْوَامٌ يُقِيمُونَهُ كَمَا يُقَامُ الْقِدْحُ يَتَعَجَّلُونَهُ وَلَا يَتَأَجَّلُونَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2206. जाबिर बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम कुरान पढ़ रहे थे और हम में आराबी और अजमी भी थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “पढ़ो सब ठीक है, अनकरीब ऐसे लोग आएँगे जो इसे इस तरह

(मुबालिगा के साथ) दुरुस्त करेंगे जैसे तीर दुरुस्त किया जाता है, वह दुनिया मैं ही जज़ा चाहेंगे और इसे आखिरत तक मोअख़्ख़र नहीं करेंगे", (यानी वह तलब दुनिया के लिए पढेंगे) | (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (830) و البيهقى فى شعب الايمان (2642)

٢٢٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «اقرؤوا الْقُرْآنَ بِلُحُونِ الْعَرَبِ وَأَصْوَاتِهَا وَإِيَّاكُمْ وَلُحُونَ أَهْلِ الْعِشْق وَلُحُون أهل الْكِتَابَيْنِ وسيجي بعدِي قوم يرجعُونَ بِالْقُرْآنِ ترجع الْغِنَاءِ وَالنَّوْحِ لَا يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ [ص:٦٧ مَفْتُونَةٌ قُلُوبُهُمْ وَقُلُوبُ الَّذِينَ يُعْجِبُهُمْ شَأْنُهُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2207. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुरान अरबी लहजे और अरबी आवाज़ से पढ़ा करो और अहल अशक और यहूद व नसारा के लहजो से बचो और मेरे बाद ऐसे लोग आएँगे जो नगमे और नोहे की तरह आवाज़ दोहरा दोहरा कर कुरान पढेंगे और वह कुरान का पढ़ना उन के हलक से नीचे (दिल तक) नहीं उतरेगा, उन के और उन लोगों का दिल जो उनकी हालत पर दीवाने होंगे फितने से दो चार होंगे", बयहकी की शौबुल ईमान और रजिन ने इसे अपने किताब में रिवायत किया है | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف منكر ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (26492650 نسخة محققة : 2406) [و ابن عدى فى الكامل (2 / 510)] * فيه حصين بن مالك الفزارى : ليس بمعتمد ، و شيخه ابو محمد رجل مجهول و الخبر منكر

٢٢٠٨ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «حَسِّنُوا الْقُرْآنَ بِأَصْوَاتِكُمْ فَإِنَّ الصَّوْتَ الْحَسَنَ يُزِيدُ الْقُرْآنَ حُسْنًا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2208. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अपने आवाज़ों से कुरान को हसीन बनाओ क्योंकि अच्छी आवाज़ कुरान के हुस्न में इज़ाफा करती है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الدارمى (2 / 474 ح 3504 ، نسخة محققة : 3544) [و الحاكم (1 / 575 ح 2125)] * و للحديث شواهد معنوية

٢٢٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ طَاوُوسٍ مُرْسَلًا قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ النَّاسِ أَحْسَنُ صَوْتًا لِلْقُرْآنِ؟ وَأَحْسَنُ قِرَاءَةً؟ قَالَ: «مَنْ إِذَا سَمِعْتَهُ يقْرَأ أَرَأَيْت أَنَّهُ يَخْشَى اللَّهَ» . قَالَ طَاوُوسٌ: وَكَانَ طَلْقٌ كَذَلِك. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

2209. ताउस रहिमहुल्लाह रिवायत करते हैं, नबी ﷺ से दरियाफ्त किया गया कौन लोग अच्छी आवाज़ और अच्छी किराअत से कुरान पढ़ते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिसे तुम कुरान पढ़ते सुनो और उस पर खशियत ए इलाही ज़ाहिर हो", ताउस बयान करते हैं, तलक रहिमहुल्लाह इसी तरह थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمى (2 / 471 ح 3492 ، نسخة محققة : 3532) * فيه عبد الكريم بن ابى المخارق : ضعيف و الخبر مرسل و للحديث شواهد ضعيفة

٢٢١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُبَيْدَةَ الْمُلَيْكِيِّ وَكَانَتْ لَهُ صُحْبَةٌ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَهْلَ الْقُرْآنِ لَا تَتَوَسَّدُوا الْقُرْآنَ وَاتْلُوهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ مِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَأَفْشُوهُ وَتَغَنُّوهُ وَتَدَبَّرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ وَلَا تَعْجَلُوا ثَوَابَهُ فَإِنَّ لَهُ ثَوَابًا» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2210. उबैदतुल मुलय्की रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अहल ए कुरान, कुरान के मुआमले में सुस्ती तग़ाफ़ुल (गफलत बरतना) न बरतो जैसे उसकी तिलावत का हक़ है, वैसे सुबह व शाम उसकी तिलावत करो इस (की तालीमात) को आम करो उस के अलावा दूसरी चीजों से बेनियाज़ हो जाओ, उस पर तदब्बुर करो ताकि तुम फलाह पा जाओ दुनिया में उस का सवाब हासिल करने की कोशिश न करो क्योंकि आखिरत में उस का सवाब बहोत ज़्यादा हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2007 ، نسخة محققة : 1852 ، 1854) * فيه ابوبكر بن ابى مريم : ضعيف ، و علل أخرى ، ولاصل الحديث شواهد

بَاب اخْتِلَاف الْقرَاءَات وَجمع الْقُرْآن • कुरान की किराअत और जमा करने में इख्तिलाफ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٢١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ يقْرَأ سُورَة الْفرْقَان على غير مَا أقرؤوها. وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْرَأَنِيهَا فَكِدْتُ أَنْ أَعْجَلَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَمْهَلْتُهُ حَتَّى انْصَرَفَ ثُمَّ لَبَّبْتُهُ بِرِدَائِهِ فَجِئْتُ بِهِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقلت يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى غَيْرِ مَا أَقْرَأْتَنِيهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْسِلْهُ اقْرَأ " فَقَرَأت الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ يَقْرَأُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَكَذَا أُنْزِلَتْ» . ثُمَّ قَالَ لي: «اقْرَأ» . فَقَرَأت. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَكَذَا أنزلت إِن الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَءُوا مَا تيَسّر مِنْهُ» . مُتَّفق عَلَيْهِ. وَاللَّفْظ لمُسلم

2211. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने हिश्शाम बिन हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु को सूरतुल फुरकान इस अंदाज़ से हट कर पढ़ते हुए सुना जिस अंदाज़ से में उसे पढ़ता था, और जिस तरह रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सिखाया था, करीब था की मैं फ़ौरन उस से तर्ज़ इनकार करता, लेकिन मैंने इसे मुहलत दि हत्ता कि वह (कीराअत से) फारिग़ हो गया, फिर मैंने उसकी गर्दन में उसकी चादर डाली और इसे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में ला कर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने इसे इस अंदाज़ से हट कर सूरतुल फुरकान पढ़ते हुए सुना है जिस अंदाज़ से आप ने इसे मुझे पढ़ाया है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे छोड़ दो (और इसे फ़रमाया) पढ़ो”, उस ने इसी किराअत से पढ़ा जो मैंने उससे सुनी थी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसी तरह नाज़िल की गई है”, फिर मुझे फ़रमाया: “पढ़ो”, मैंने पढ़ा तो फ़रमाया: “इसी तरह नाज़िल की गई है, क्योंकि कुरान

सात लहजो में मुझ पर उतारा गया है, उनमें से जिस लहजे में आसानी से पढ़ सको पढ़ो", बुखारी, मुस्लिम, और अल्फाज़ हदीस मुस्लिम के है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2419) و مسلم (27 / 818)، (1899)

٢٢١٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلًا قَرَأَ وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ خِلَافَهَا فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَعَرَفْتُ فِي وَجهه الْكَرَاهِيَة فَقَالَ: «كِلَاكُمَا مُحْسِنٌ فَلَا تَخْتَلِفُوا فَإِنَّ مَنْ كَانَ قبلكُمْ اخْتلفُوا فهلكوا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2212. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने एक आदमी को कुरान पढ़ते हुए सुना, जबकि मैंने नबी ﷺ को उस से मुख्तलिफ पढ़ते हुए सुना था, मैं उसे नबी ﷺ की खिदमत में ले आया और आप को बताया तो मैंने आप के चेहरा मुबारक पर नागवारी के असरात देखे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम दोनों ठीक हो, बाहम इख्तिलाफ न करो क्योंकि जो लोग तुम से पहले थे उन्होंने इख्तिलाफ किया तो वह हलाक हो गए"| (बुखारी)

رواه البخاری (2410)

٢٢١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: كُنْتُ فِي الْمَسْجِدِ فَدَخَلَ رَجُلٌ يُصَلِّي فَقَرَأَ قِرَاءَةً أَنْكَرْتُهَا عَلَيْهِ ثُمَّ دَخَلَ آخَرُ فَقَرَأَ قِرَاءَةً سِوَى قِرَاءَةِ صَاحِبِهِ فَلَمَّا قَضَيْنَا الصَّلَاةَ دَخَلْنَا جَمِيعًا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ إِنَّ هَذَا قَرَأَ قِرَاءَةً أَنْكَرْتُهَا عَلَيْهِ وَدخل آخر فَقَرَأَ سوى قِرَاءَة صَاحبه فَأَمَرَهُمَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَآ فَحَسَّنَ شَأْنَهُمَا فَسَقَطَ فِي نَفْسِي مِنَ التَّكْذِيبِ وَلَا إِذْ كُنْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَلَمَّا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا قَدْ غَشِيَنِي ضَرَبَ فِي صَدْرِي فَفِضْت عَرَقًا وكأنما أنظر إِلَى الله عز وَجل فَرَقًا فَقَالَ لِي: «يَا أُبَيُّ أُرْسِلَ إِلَيَّ أَن اقْرَأ الْقُرْآنَ عَلَى حَرْفٍ فَرَدَدْتُ إِلَيْهِ أَنْ هَوِّنْ عَلَى أُمَّتِي فَرَدَّ إِلَيَّ الثَّانِيَةَ اقْرَأْهُ عَلَى حَرْفَيْنِ فَرَدَّدَتْ إِلَيْهِ أَنْ هَوِّنْ عَلَى أُمَّتِي فَرَدَّ إِلَيَّ الثَّالِثَةِ اقْرَأْهُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ وَلَكَ بِكُلِّ رَدَّةٍ رَدَدْتُكَهَا مَسْأَلَةٌ تَسْأَلُنِيهَا فَقُلْتُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِي وَأَخَّرْتُ الثَّالِثَةَ لِيَوْمٍ يَرْغَبُ إِلَيَّ الْخَلْقُ كُلُّهُمْ حَتَّى إِبْرَاهِيم صلى الله عَلَيْهِ وَسلم» . رَوَاهُ مُسلم

2213. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मस्जिद मैं था, के एक आदमी आया और नमाज़ पढ़ने लगा, उस ने इस अंदाज़ से किराअत की के मैंने इस किराअत को गैर मारुफ़ और अजनबी सा महसूस किया, फिर दूसरा आदमी आया तो उस ने अपने साथी की किराअत के अलावा, एक दूसरे अंदाज़ में किराअत की जब हमने नमाज़ पढ़ ली, तो हम सब रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो मैंने अर्ज़ किया: इस शख़्स ने किराअत की तो मैंने उस का इनकार किया, फिर दूसरा शख़्स आया तो उस ने अपने साथी की किराअत के अलावा दूसरे अंदाज़ में किराअत की, नबी ﷺ ने इन दोनों को (पढ़ने का) हुक्म फ़रमाया तो इन दोनों ने किराअत की तो आप ने उनकी हालत (कीराअत) को सराहा, तो मेरा दिल में तकज़ीब का ऐसा शुबा पैदा हो गया जो के मेरे दौरे जाहिलियत मैं भी नहीं था, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ पर तारी कैफियत देखी तो आप ﷺ ने मेरे सिने पर हाथ मारा तो मैं पसीने से शराबोर हो गया और मुझ पर ऐसा खौफ तारी हुआ की गोया में अल्लाह को देख रहा हूँ, आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "उबई मुझे पैग़ाम भेजा गया कि मैं एक लहजे पर कुरान पढू, लेकिन मैंने इस (कासिद) को अल्लाह तआला की तरफ वापस भेजा के मेरी उम्मत पर आसानी की जाए, दूसरी मर्तबा यह पैग़ाम आया

की में उसे दो लहजो में पढ़ु मैंने फिर इसे वापस भेजा के मेरी उम्मत पर आसानी की जाए तीसरी मर्तबा यह पैग़ाम आया की में उसे सात लहजो में पढ़ु और आप के हर बार लौटाने के बदले एक मकबूल दुआ है, लिहाज़ा आप दुआ करे मैंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को बख्श दे, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को बख्श दे, और मैंने तीसरी मर्तबा को इस रोज़ के लिए मोअख़्ख़र कर लिया जिस रोज़ तमाम लोग हत्ता कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम मेरी तरफ रगबत व रुजू करेंगे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (273 / 820)، (1904)

٢٢١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَقْرَأَنِي جِبْرِيل على حرف فَرَاجعه فَلم أزل استزيده ويزيدني حَتَّى انْتهى إِلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ» . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: بَلَغَنِي أَنَّ تِلْكَ السَّبْعَةَ الْأَحْرُفَ إِنَّمَا هِيَ فِي الْأَمْرِ تَكُونُ وَاحِدًا لَا تَخْتَلِفُ فِي حَلَالٍ وَلَا حرَام

2214. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने मुझे एक लहजे (किरात) पर पढ़ाई, तो मैंने इसे वापस भेजा, मैं उन से मज़ीद लहजो (किरात) की दरख्वास्त करता रहा और वह मुझे मज़ीद लहजे (किरात) अता फरमाते रहे, हत्ता कि सात लहजे मुकम्मल हुए", इब्ने शैबा बयान करते हैं, मुझे यह बात पहुंची के वह सात लहजे (किरात) दिन के मुआमले में एक ही है, वह हलाल व हराम में मुख्तलिफ नहीं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4991) و مسلم (272 / 819)، (1902)

بَاب اخْتِلَاف الْقرَاءَات وَجمع الْقُرْآن • कुरान की किराअत और जमा करने में इख्तिलाफ का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٢١٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَقِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جِبْرِيلَ فَقَالَ: " يَا جِبْرِيلُ إِنِّي بُعِثْتُ إِلَى أُمَّةٍ أُمِّيِّينَ مِنْهُمُ الْعَجُوزُ وَالشَّيْخُ الْكَبِيرُ وَالْغُلَامُ وَالْجَارِيَةُ وَالرَّجُلُ الَّذِي لَمْ يَقْرَأْ كِتَابًا قَطُّ قَالَ: يَا مُحَمَّد إِن الْقُرْآن أونزل عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَحْمَدَ وَأَبِي دَاوُدَ: قَالَ: «لَيْسَ مِنْهَا إِلَّا شَافٍ كَافٍ» . وَفِي رِوَايَةٍ لِلنَّسَائِيِّ قَالَ: " إِنَّ جِبْرِيلَ وَمِيكَائِيلَ أَتَيَانِي فَقَعَدَ جِبْرِيلُ عَنْ يَمِينِي وَمِيكَائِيلُ عَنْ يَسَارِي فَقَالَ جِبْرِيلُ: اقْرَأِ الْقُرْآنَ عَلَى حَرْفٍ قَالَ مِيكَائِيلُ: اسْتَزِدْهُ حَتَّى بَلَغَ سَبْعَة أحرف فَكل حرف شاف كَاف "

2215. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जिब्राइल अलैहिस्सलाम से मिले फ़रमाया: "जिब्राइल मुझे एक अनपढ़ उम्मत की तरफ मबउस किया गया है, उनमें से कुछ बूढ़ी औरते है, कुछ बूढ़े आदमी है, छोटे बच्चे और बच्चिया है, और ऐसे आदमी भी है, जिन्होंने कभी कोई किताब नहीं पढ़ी", उन्होंने

ने फ़रमाया: "मुहम्मद ﷺ)! कुरान सात लहजो पर उतारा गया है| तिरमिज़ी, अहमद और अबू दावुद की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: "उन में से हर एक लहजा शाफी व काफी है"| और नसई की रिवायत है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिब्राइल व मिकाइल मेरे पास आए तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे दाएँ जबकि मिकाइल अलैहिस्सलाम मेरे बाएँ तरफ बैठ गए, तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: कुरान को एक लहजे पर पढ़ो, मिकाइल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: उन से ज़्यादा तलब करे हत्ता कि वह सात लहजो पर पहुंचे और हर लहजा शाफी व काफी है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2944 وقال : حسن صحیح) و احمد (5 / 51 ح 20788 ، 5 / 41 ، 114 ، 122) و ابوداؤد (1477) و النسائی (2 / 154 ح 942) * روایة ابی داود :'' لیس منها الا شاف کاف '' لها شاهد عند احمد (5 / 122 ح 21450) و سنده صحیح

٢٢١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ مَرَّ عَلَى قَاصٍّ يَقْرَأُ ثُمَّ يَسْأَلُ. فَاسْتَرْجَعَ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فليسأل الله بِهِ فَإِنَّهُ سَيَجِيءُ أَقوام يقرؤون الْقُرْآنَ يَسْأَلُونَ بِهِ النَّاسَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ

2216. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह एक वाइज़ के पास से गुज़रे जो के कुरान पढ़ता, फिर कुछ तलब करता, उस पर उन्होंने (إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ) पढ़ा, फिर कहा मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स कुरान पढ़े तो वह अल्लाह से तलब करे, क्योंकि ऐसे लोग भी आएँगे जो कुरान पढेंगे और उस के अवज़ लोगों से सवाल करेंगे"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (4 / 432433 ح 21026) و الترمذی (2917 وقال : حسن) * سلیمان الاعمش و الحسن البصری مدلسان و عنعنا

بَاب اخْتِلَاف الْقرَاءَات وَجمع الْقُرْآن • कुरान की किराअत और जमा करने में इख्तिलाफ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٢١٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ يَتَأَكَّلُ بِهِ النَّاسَ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَوَجْهُهُ عظم لَيْسَ عَلَيْهِ لحم» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2217. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स कुरान पढ़ता है और उस के ज़रिए लोगों से माल खाता है तो वह रोज़ ए कियामत आएगा तो उस का चेहरा हड्डियों का ढांचा होगा, उस पर गोश्त नहीं होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (2625 ، نسخة محققة : 2384) [و ابن حبان فی المجروحین (1 / 148)] * احمد بن میثم : یروی المناکیر ، و سفیان الثوری مدلس و عنعنان صح السند الیه

٢٢١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَعْرِفُ فَصْلَ السُّورَةِ حَتَّى يَنْزِلَ عَلَيْهِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2218. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) के नाज़िल होने के बाद सूरत के फर्क का पता चलता था| (के पहली सूरत मुकम्मल हो गई है) (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (788)

٢٢١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: كُنَّا بِحِمْصَ فَقَرَأَ ابْنُ مَسْعُودٍ سُورَةَ يُوسُفَ فَقَالَ رَجُلٌ: مَا هَكَذَا أُنْزِلَتْ. فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: وَاللَّهِ لَقَرَأْتُهَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَقَالَ: «أَحْسَنْتَ» فَبَيْنَا هُوَ يُكَلِّمُهُ إِذْ وَجَدَ مِنْهُ رِيحَ الْخَمْرِ فَقَالَ: أَتَشْرَبُ الْخَمْرَ وَتُكَذِّبُ بِالْكِتَابِ؟ فَضَرَبَهُ الْحَد

2219. अल्कमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम हम्स (मुल्के शाम) में थे, तो इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने सुरह युसूफ तिलावत फरमाई किसी आदमी ने कहा इस तरह तो नाज़िल नहीं हुई, तो अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! मैंने इसे रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी में पढ़ा था, तो आप ﷺ ने फ़रमाया था: “तुमने बहोत खूब पढ़ा”, इस असना में के वह शख़्स उन से बाते कर रहा था तो उन्होंने उन से शराब की बू महसूस की तो उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम शराब पीते हो और कुरान की तकज़ीब करते हो, पस उन्होंने उस पर हद काइम की| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5001) و مسلم (249 / 801)، (1870)

٢٢٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ مَقْتَلَ أَهْلِ الْيَمَامَةِ. فَإِذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عِنْدَهُ. قَالَ أَبُو بَكْرٍ إِنَّ عُمَرَ أَتَانِي فَقَالَ إِنَّ الْقَتْلَ قَدِ اسْتَحَرَّ يَوْمَ الْيَمَامَةِ بِقُرَّاءِ الْقُرْآنِ وَإِنِّي أَخْشَى أَنِ اسْتَحَرَّ الْقَتْلُ بِالْقُرَّاءِ بِالْمَوَاطِنِ فَيَذْهَبُ كَثِيرٌ مِنَ الْقُرْآنِ وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَأْمُرَ بِجَمْعِ الْقُرْآنِ [ص:٦٨ قُلْتُ لِعُمَرَ كَيْفَ تَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ عُمَرُ هَذَا وَاللَّهِ خَيْرٌ فَلم يزل عمر يراجعني فِيهِ حَتَّى شرح الله صَدْرِي لذَلِك وَرَأَيْت الَّذِي رَأَى عُمَرُ قَالَ زَيْدٌ قَالَ أَبُو بَكْرٍ إِنَّكَ رَجُلٌ شَابٌّ عَاقِلٌ لَا نَتَّهِمُكَ وَقَدْ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَتَتَبَّعِ الْقُرْآنَ فَاجْمَعْهُ فَوَاللَّهِ لَوْ كَلَّفُونِي نَقْلَ جَبَلٍ مِنَ الْجِبَالِ مَا كَانَ أَثْقَلَ عَلَيَّ مِمَّا أَمَرَنِي بِهِ مِنْ جمع الْقُرْآن قَالَ: قلت كَيفَ تَفْعَلُونَ شَيْئًا لم يَفْعَله النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم. قَالَ هُوَ وَاللَّهِ خير فَلم أزل أراجعه حَتَّى شرح الله صَدْرِي للَّذي شرح الله لَهُ صدر أبي بكر وَعمر. فَقُمْت فَتَتَبَّعْتُ الْقُرْآنَ أَجْمَعُهُ مِنَ الْعُسُبِ وَاللِّخَافِ وَصُدُورِ الرِّجَال حَتَّى وجدت من سُورَة التَّوْبَة آيَتَيْنِ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الْأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ (لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ)»» حَتَّى خَاتِمَةِ بَرَاءَةَ. فَكَانَتِ الصُّحُفُ عِنْدَ أَبِي بَكْرٍ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللَّهُ ثُمَّ عِنْدَ عُمَرَ حَيَاته ثمَّ عِنْد حَفْصَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2220. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, लड़ाई यमाम के बाद अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने मेरी तरफ पैग़ाम भेजा, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु उन के पास मौजूद थे, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उमर मेरे पास आए तो उन्होंने ने फ़रमाया: लड़ाई यमाम में बहोत से कारी शहीद हो गए और मुझे अंदेशा हुआ की अगर किसी और लड़ाई में कारी शहीद हो गए तो इस तरह कुरान का बहोत सा हिस्सा जाता

रहेगा, और मैं समझता हूँ कि आप जमा कुरान का हुक्म फरमाइए, लेकिन मैंने उमर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया आप वह काम कैसे करेंगे जो रसूलुल्लाह ﷺ ने नहीं किया? तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! यह (जमा कुरान) बेहतर है, उमर रदियल्लाहु अन्हु मुसलसल मुझे कहते रहे, हत्ता कि अल्लाह ने इस काम के लिए मेरा सीना खोल दिया और अब उस में मेरा वही मोक़्फ़ि है जो उमर रदियल्लाहु अन्हु का है, ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: आप अकलमंद नोजवान है और आप पर किसी किस्म का कोई इलज़ाम नहीं, और आप रसूलुल्लाह ﷺ की वही लिखा करते थे, आप कुरान इकट्ठा करे और इसे एक जगह जमा करे, अल्लाह की क़सम! अगर वह मुझे किसी पहाड़ को मुन्तकिल करने पर मामूर फरमाते तो वह मुझ पर इस जमा कुरान के हुक्म से ज़्यादा आसान था, वह (ज़ैद (र)) बयान करते हैं, मैंने कहा तुम वह काम कैसे करते हो जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ने नहीं किया? तो उन्होंने (अबू बक्र (र)) ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! वह बेहतर है, पस अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु मुसलसल मुझे कहते रहे हत्ता कि अल्लाह ने इस काम के लिए मेरा सीना खोल दिया, जिसके लिए उस ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उमर रदियल्लाहु अन्हु का सीना खोल दिया था, मैंने कुरान तलाश करना शुरू किया और मैंने खजूर की शाखों, पत्थर की सिल्लो और लोगों के सीनों (हाफिज़ो) से कुरान इकट्ठा किया हत्ता कि मैंने सूरतुल तौबा का आखिरी हिस्सा (لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ) आख़िर तक सिर्फ अबू खुजैमा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु के यहाँ पाया, वह सहिफा कुरान करीम का नुस्खा अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पास रहा हत्ता कि अल्लाह ने उन्हें फौत कर दिया, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु की जिंदगी में उन के पास रहा और फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु की बेटी हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा के पास। (बुखारी)

رواه البخارى (4986)

٢٢٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ قَدِمَ عَلَى عُثْمَانَ وَكَانَ يُغَازِي أَهْلَ الشَّامِ فِي فَتْحِ أَرْمِينِيَّةَ وَأَذْرَبِيجَانَ مَعَ أَهْلِ الْعِرَاقِ فَأَفْزَعَ حُذَيْفَةَ اخْتِلَافُهُمْ فِي الْقِرَاءَةِ فَقَالَ حُذَيْفَةُ لِعُثْمَانَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَدْرِكْ هَذِهِ الْأُمَّةَ قَبْلَ أَنْ يَخْتَلِفُوا فِي الْكِتَابِ اخْتِلَافَ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى فَأَرْسَلَ عُثْمَانُ إِلَى [ص:٦٨ حَفْصَةَ أَنْ أَرْسِلِي إِلَيْنَا بِالصُّحُفِ نَنْسَخُهَا فِي الْمَصَاحِفِ ثُمَّ نَرُدُّهَا إِلَيْكِ فَأَرْسَلَتْ بِهَا حَفْصَةُ إِلَى عُثْمَانَ فَأَمَرَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَعَبْدَ اللَّهِ بْنَ الزبير وَسَعِيد بن الْعَاصِ وَعبد الرَّحْمَن بْنَ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ فَنَسَخُوهَا فِي الْمَصَاحِفِ وَقَالَ عُثْمَانُ لِلرَّهْطِ الْقُرَشِيِّينَ الثَّلَاثِ إِذَا اخْتَلَفْتُمْ فِي شَيْءٍ مِنَ الْقُرْآنِ فَاكْتُبُوهُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ فَإِنَّمَا نَزَلَ بِلِسَانِهِمْ فَفَعَلُوا حَتَّى إِذَا نَسَخُوا الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ رَدَّ عُثْمَانُ الصُّحُفَ إِلَى حَفْصَةَ وَأَرْسَلَ إِلَى كُلِّ أُفُقٍ بِمُصْحَفٍ مِمَّا نَسَخُوا وَأَمَرَ بِمَا سِوَاهُ مِنَ الْقُرْآنِ فِي كُلِّ صَحِيفَةٍ أَوْ مُصْحَفٍ أَنْ يُحْرَقَ قَالَ ابْن شهَاب وَأَخْبرنِي خَارِجَة بن زيد بن ثَابت سَمِعَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ فَقَدْتُ آيَةً مِنَ الْأَحْزَابِ حِينَ نَسَخْنَا الْمُصْحَفَ قَدْ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ بِهَا فَالْتَمَسْنَاهَا فَوَجَدْنَاهَا مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيِّ (مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا الله عَلَيْهِ)»» فَأَلْحَقْنَاهَا فِي سُورَتِهَا فِي الْمُصْحَفِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2221. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के हुज़ैफ़ा बिन यमान रदियल्लाहु अन्हु उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के पास आए जबकि वह (हज़रत उस्मान (र)) आरमीनिया और अज़रबैजान से लड़ाई और फतह के सिलसिला में अहले शाम और अहल ईराक को तैयार कर रहे थे हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु उन (अहले शाम व ईराक) के इख्तिलाफ किराअत की वजह से परेशान थे हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु ने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से कहा अमीरुल मोमिनीन उन से पहले के यह उम्मत यहूद व नसारा की तरह कुरआन ए करीम के बारे में

इख्तिलाफ का शिकार हो जाए, आप उस का तदराक फरमा लें, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा की तरफ पैग़ाम भेजा के वह हमें मुसहफ़ भेजे हम उसकी नकले तैयार कर के वापस दे देंगे, हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने वह नुस्खा उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया तो, उन्होंने ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु सईद बिन अल आस रदियल्लाहु अन्हु और अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु को मामूर फ़रमाया तो उन्होंने उसकी नकले तैयार की और उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने तीनो कुरैशीयो से फ़रमाया, जब कुरान की किसी चीज़ के बारे में तुम्हारे और ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु के बिच में कोई इख्तिलाफ हो जाए, तो उसे ज़ुबान कुरैश के मुताबिक लिखना, क्योंकि कुरान उनकी ज़ुबान में उतरा है, उन्होंने ऐसे ही किया हत्ता कि जब उन्होंने मुसहफ़ से नकले तैयार कर ली तो उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने वह मुसहफ़ हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा को वापस कर दिया और तमाम इलाको में वह नकले भेज दें और हुक्म जारी कर दिया के उस के अलावा किसी के पास कुरान का जो नुस्खा है, उसे जला दिया जाए| इब्ने शैबा बयान करते हैं, ख़ारिजह बिन ज़ैद बिन साबित ने मुझे बताया की ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु ने बताया की जब हमने मुसहफ़ की नकल तैयार की तो सुरह अहज़ाब की वह आयत जो मैं रसूलुल्लाह ﷺ से सुना करता था न मिली तो हमने इसे तलाश किया तो हमने इसे खुजैमा बिन साबित अंसारी रदियल्लाहु अन्हु के यहाँ पाया वह आयत यह थी (لمِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا الله عَلَيْهِ) पस हमने इसे मुसहफ़ में उसकी सूरत (अल अहज़ाब) में मिला दिया | (बुखारी)

رواه البخاری (49874988)

٢٢٢٢ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: قلت لعُثْمَان بن عَفَّان مَا حملكم أَنْ عَمَدْتُمْ إِلَى الْأَنْفَالِ وَهِيَ مِنَ الْمَثَانِي وَإِلَى بَرَاءَةٍ وَهِيَ مِنَ الْمَئِينِ فَقَرَنْتُمْ بَيْنَهُمَا وَلم تكْتبُوا بَينهمَا سَطْرَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَوَضَعْتُمُوهَا فِي السَّبع الطول مَا حملكم على ذَلِك فَقَالَ عُثْمَانُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّا يَأْتِي عَلَيْهِ الزَّمَان وَهُوَ تنزل عَلَيْهِ السُّور ذَوَات الْعدَد فَكَانَ إِذا نزل عَلَيْهِ الشَّيْء دَعَا بعض من [ص:٦٨ كَانَ يَكْتُبُ فَيَقُولُ: «ضَعُوا هَؤُلَاءِ الْآيَاتِ فِي السُّورَةِ الَّتِي يُذْكَرُ فِيهَا كَذَا وَكَذَا» فَإِذَا نَزَلَتْ عَلَيْهِ الْآيَةُ فَيَقُولُ: «ضَعُوا هَذِهِ الْآيَةَ فِي السُّورَةِ الَّتِي يُذْكَرُ فِيهَا كَذَا وَكَذَا» . وَكَانَتِ الْأَنْفَالُ مِنْ أَوَائِلِ مَا نَزَلَتْ بِالْمَدِينَةِ وَكَانَتْ بَرَاءَة من آخر الْقُرْآن وَكَانَت قصَّتهَا شَبيهَة بِقِصَّتِهَا فَظَنَنْت أَنَّهَا مِنْهَا فَقُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يبين لنا أَنَّهَا مِنْهَا فَمِنْ أَجْلِ ذَلِكَ قَرَنْتُ بَيْنَهُمَا وَلِمَ أكتب بَينهمَا سَطْرَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَوَضَعْتُهَا فِي السَّبْعِ الطُّوَلِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2222. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से कहा: तुम्हें किसी चीज़ ने अमादा किया है की तुमने सुरह अन्फाल का क़सद किया जबकि वह मसानी (सूरतो में से) है और सुरह बराअत (तौबा) का कसद क्या जबकि वह मीन (दो सौ आयतों वाली सूरतो) में से है और तुमने इन दोनों सूरतो को मिलाया और तुमने उन के दरमियान (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) भी नहीं लिखी और तुमने इसे सात लम्बी सूरतो में रख दीया ऐसा करने पर किस चीज़ ने तुम्हें उभारा उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ की यह सूरते हाल थी के कभी तवील वक़्त गुज़र जाता और आप पर कोई सूरत नाज़िल न होती और मूतअद्दद आयात वाली सूरते नाज़िल होती और जब आप पर कुछ हिस्सा नाज़िल होता तो आप किसी कातिब वही को बुलाते और इसे फरमाते: “उन आयात को फलां सूरत में जहाँ फलां फलां तज़किरह है, शामिल कर दो”, सुरह अन्फाल वह सूरत है जो कयाम मदीना के इब्तिदाई दौर में नाज़िल हुई थी, जबकि सुरह बराअत (तौबा) नुज़ूल

के लिहाज़ से नुज़ूल कुरान के आखिरी दौर में नाज़िल हुई और वैसे मज़मून दोनों एक दूसरे के मुशाबह (अनुरूप) थी, रसूलुल्लाह ﷺ वफात पा गए और आप ने वज़ाहत न फरमाई के वह सुरह तौबा इस सुरह अन्फाल में से है इसीलिए मैंने इन दोनों को मीला लिया और (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) न लिखी और मैंने इसे सात लम्बी सूरतो में शामिल किया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 57 ح 399) و الترمذی (3086 وقال : حسن) و ابوداؤد (786) * یزید الفارسی و ثقه ابن حبان و الترمذی و غیرهما فهو حسن الحدیث و اخطا من ضعف هذا الحدیث

